भारत २०२७

सत्ताइस वर्षक गवाही

(मैथिली कादम्बरी)



गजेन्द्र ठाकुर

प्रथम संस्करण २०२७ • विदेह

भारत २०२७

[मैथिली कादम्बरी]

भारत २०२७

सत्ताइस वर्षक गवाही

(मैथिली कादम्बरी)

गजेन्द्र ठाकुर

प्रथम संस्करण २०२७

प्रकाशन-विवरण

भारत २०२७ [मैथिली कादम्बरी]

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

© २०२७ गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुर

सर्वाधिकार सुरक्षित।

प्रथम संस्करण : २०२७

पुस्तक-विन्यास : ६ × ९ इञ्च; देवनागरी युनिकोड; मुद्रणयोग्य पाठ आ शीर्षक-विन्यास।

साहित्यिक सूचना

एहि कादम्बरीक पात्र, अभियोजन, न्यायालयीन संवाद आ २०२७ क न्यायिक परिणति काल्पनिक छथि। ऐतिहासिक घटना आ विधिक पृष्ठभूमिक सन्दर्भ कथा-निर्माणक प्रयोजनसँ देल गेल अछि।

अनुक्रम

प्रथम खण्ड — न्यायालयक पहिल दुआरि

अध्याय १ — दण्डाधिकारीक कोठरी..... १

दरभंगा, जुलाई २०००

अध्याय २ — जप्तीक सूची..... २२

दरभंगा, जुलाई–अक्टूबर २०००

अध्याय ३ — संसदक छाया..... ४२

दिल्ली आ दरभंगा, दिसम्बर २००१

अध्याय ४ — मरुधरक भूमि..... ६२

जोधपुर, जनवरी २००२; पूर्वस्मृति २००१

अध्याय ५ — जकर घर जरल..... ८१

अहमदाबाद, फरवरी–दिसम्बर २००२; मरुधर आ दिल्लीक समानान्तर घटना

अध्याय ६ — मौन साक्षीक घर..... १०१

दरभंगा आ जोधपुर, जनवरी–दिसम्बर २००३

अध्याय ७ — समुद्रक प्रलय..... १२०

छोट अण्डमान, दिसम्बर २००४–जनवरी २००५

अध्याय ८ — पहिल निर्णय..... १३९

दरभंगा, दिसम्बर २००४ — समानान्तर घटनाक्रम

द्वितीय खण्ड — अभिलेख, अधिकार आ उच्च न्यायालय

अध्याय ९ — सूचनाक पहिल अधिकार..... १५९

दरभंगा आ कमलपुर, सन् २००५

अध्याय १० — धनशोधनक नव विधि १७९

दरभंगा, कमलपुर आ मुम्बई, सन् २००५–२००६

अध्याय ११ — मरुधरक दोसर अभिलेख १९९

जोधपुर, सन् २००६–२००७

अध्याय १२ — चन्द्रयान आ अभियुक्त २१९

सन् २००८ : लुधियाना, बेंगलुरु, मुम्बई आ दरभंगा

अध्याय १३ — श्रमिकक बकाया २४०

सन् २००९–२०१० : लुधियाना

अध्याय १४ — जनान्दोलनक मंच २६१

सन् २०१०–२०११ : दिल्ली, सोनपुरा आ लुधियाना

अध्याय १५ — साक्षी बनल स्त्री २८२

सन् २०१२ : दिल्ली, दरभंगा आ लुधियाना

अध्याय १६ — उच्च न्यायालयक प्रश्न ३०३

जोधपुर आ राजस्थान उच्च न्यायालय, दिसम्बर २०१२ सँ जनवरी २०१३

तृतीय खण्ड — डिजिटल धन आ बदलैत देश

अध्याय १७ — खेलक भीतरक सौदा ३२४

दिल्ली, दरभंगा आ लुधियाना; मई सँ नवम्बर २०१३

अध्याय १८ — मंगलक बाट आ पहचानक अधिकार ३४५

सन् २०१४ · जोधपुर, बेंगलुरु, दिल्ली आ दरभंगा

अध्याय १९ — स्क्रीनपर लिखल वाक्य ३६६

सन् २०१५ : जोधपुर, जयपुर, दिल्ली आ दरभंगा

अध्याय २० — नगदीक अन्तिम रात्रि ३८८

सन् २०१६ : लुधियाना, चण्डीगढ़, दरभंगा आ जोधपुर

अध्याय २१ — निजताक नाम..... ४०९

सन् २०१७ : जोधपुर, लुधियाना, चण्डीगढ़, दिल्ली आ दरभंगा

अध्याय २२ — गरिमाक अनेक अर्थ..... ४३१

सन् २०१८ : जोधपुर, दरभंगा, दिल्ली, लुधियाना आ चण्डीगढ़

अध्याय २३ — चन्द्रमाक अन्हार, घाटीक सवाल..... ४५२

सन् २०१९ : श्रीहरिकोटा, जोधपुर, श्रीनगर, दिल्ली आ दरभंगा

अध्याय २४ — बन्द न्यायालय, खुलल पीड़ा..... ४७४

सन् २०२० : लुधियाना, जोधपुर, दिल्ली, दरभंगा, चण्डीगढ़ आ अण्डमान

चतुर्थ खण्ड — राज्य, नागरिक आ नव विधि

अध्याय २५ — साँसक मूल्य..... ४९६

लुधियाना, दरभंगा, जोधपुर आ दिल्ली; सन् २०२१

अध्याय २६ — खेतक नामपर आवाज..... ५१७

सन् २०२१ : हरनामपुर, लुधियाना, चण्डीगढ़ आ दिल्लीक सीमापर किसान आन्दोलन

अध्याय २७ — अपराध आ जमानतक कसौटी..... ५३९

दिल्ली, दरभंगा आ चण्डीगढ़, सन् २०२२

अध्याय २८ — चन्द्रयानक उजास..... ५६२

बेंगलुरु, जोधपुर आ दरभंगा, सन् २०२३

अध्याय २९ — चुनावी धनक अभिलेख..... ५८४

सन् २०२४ : जोधपुर, दिल्ली, लुधियाना आ दरभंगा

अध्याय ३० — परीक्षाक प्रश्न के चोरौलक?..... ६०७

जोधपुर, बेंगलुरु आ दिल्ली, सन् २०२४

अध्याय ३१ — नव संहिता, पुरान अभियोग..... ६३०

दिल्ली, जोधपुर आ लुधियाना; जुलाई सँ दिसम्बर २०२४

अध्याय ३२ — विश्वविद्यालयक बन्द कोठरी..... ६५२

जोधपुर आ कोटा; सन् २०२४ क समानान्तर घटनाक्रम

पञ्चम खण्ड — सत्ताइस वर्षक हिसाब

अध्याय ३३ — जुआक नव कानून..... ६७६

सन् २०२५ : दरभंगा, जोधपुर आ दिल्ली

अध्याय ३४ — पाँच सय नामक बही..... ६९८

जोधपुर, लुधियाना, खरड़ आ मोहाली; दिसम्बर २०२५ सँ मार्च २०२६

अध्याय ३५ — खाता रोकल गेल..... ७२१

जोधपुर, लुधियाना, खरड़ आ दरभंगा; अप्रैल सँ सितम्बर २०२६

अध्याय ३६ — विशेष न्यायालयक कठोर प्रश्न..... ७४५

जोधपुर, मुम्बई, दरभंगा आ दुबई; सितम्बर–अक्टूबर २०२६

अध्याय ३७ — उच्च न्यायालयमे सत्ताइस वर्ष..... ७६७

जोधपुर आ दरभंगा; अक्टूबर–दिसम्बर २०२६

अध्याय ३८ — असत्यक मूल्य..... ७९०

जोधपुर, लुधियाना, दरभंगा, मुम्बई आ दुबई; नवम्बर–दिसम्बर २०२६

अध्याय ३९ — सर्वोच्च न्यायालयक समक्ष..... ८१२

दिल्ली, जोधपुर, दरभंगा, लुधियाना, मुम्बई आ अण्डमान; जनवरी–फरवरी २०२७

अध्याय ४० — जिला अदालतक बरामदा..... ८३५

दरभंगा, जोधपुर, लुधियाना, बेंगलुरु आ अण्डमान; मार्च–अप्रैल २०२७

प्रथम खण्ड — न्यायालयक पहिल दुआरि

अध्याय १ — दण्डाधिकारीक कोठरी

दरभंगा, जुलाई २०००

जुलाईक ओहि भोरमे दरभंगाक पुरान न्यायालयक छतसँ पानि टपकि रहल छल। राति भरि बरसल मेघ कचहरीक आँगनकेँ कीचड़सँ भरि देने छल; कचहरीक फाटकक लग चायवला अपन चूल्हि पर रखल पितराक केतलीक ढक्कन उठबैत छल आ भापसँ ओकर चश्मा धुँधला भऽ जाइत छल। भिजल कागजक गन्ध, पुरान काठक अलमारी, मोहर लगल पन्ना आ भीजल जूताक माटि—सभ मिलिकय एकटा एहन गन्ध बनौने छल, जे न्यायालयसँ बाहर दुर्लभ छल। कोनो लोक लेल ओ गन्ध आशाक छल, दोसर लेल भयक, आ अधिकांश लेल दिन-भरि प्रतीक्षाक।

दस बजबामे एखनो आध घण्टा छल। बरामदामे एक वृद्धा अपन साड़ीक कोरमे बन्हल कागज खोलि फेर बन्हैत छलीह। हुनकर पुत्र बारम्बार कहैत छलनि—“माए, कागज भीजि जाएत।” माए उत्तर नहि दैत छलीह। बगलमे एक किशोर अपन पिताक हाथ पकड़ने ठाढ़ छल। ओकरा नहि बुझाइत छल जे न्यायालयमे लोक एतेक धीरे किएक बजैत अछि, जखन कि सभक भीतर एतेक जोरक बात चलि रहल अछि।

एहि भीड़मे एक पुलिसक गाड़ी प्रवेश केलक। गाड़ीक पिछिला दरवाजा खुलल। दू सिपाहीक बीच नीलकान्त साह उतरला। हुनकर कुर्ताक बाँह भिजल छल; एक पएरक चप्पलमे कीचड़ एतेक भरल छल जे ओ चलिते चलिते ढील भऽ जाइत छल। माथक केश रातिक पसीना आ बरखाक पानिसँ एक-दोसरासँ सटल छल। नीलकान्तक आँखि बरामदाक भीड़मे ककरो खोजैत छल। पुलिसक कठोर हाथ हुनकर काँधपर छल, मुदा आँखिक बेचैनीक कारण हाथ नहि, दूर ठाढ़ ओकर बेटा छल।

बारह वर्षक अमरेश फाटक लग अपन माए निर्मलाक संग ठाढ़ छल। निर्मलाक हाथमे पीतलरङ्गक एकटा डिब्बा छल, जाहिमे रातिसँ बनल दू रोटी आ तरकारी राखल छल। ओ पुलिसक गाड़ी देखिते आगाँ बढ़य चाहलीह, मुदा द्वारपर ठाढ़ सिपाही रोकि देलक। “पेशी भऽ जाय,” ओ कहलक। निर्मला पूछलीह, “खेनाइ तँ दऽ सकैत छी?” सिपाही किछु क्षण हुनका देखलक, फेर कहल, “एखन नहि।” निर्मला डिब्बा छातीसँ सटा लेलनि। अमरेश पिता दिसि एक बेर ताकलक। नीलकान्त ओहि एक नजरमे ई कहबाक यत्न कएलनि जे घबराएब नहि; मुदा हुनकर ओठ हिलल नहि।

एहि दृश्यसँ किछु दूर एक कारी छाता मोड़ैत शिवनारायण झा बरामदामे प्रवेश कएलनि। मध्यम कद, सावधान चाल, पचास वर्ष पार कएल चेहरापर एहन धैर्य जे पहिल दृष्टिमे लोक ओकरा कठोरता बुझि सकैत छल। हुनकर संग एक युवती छलि—रेवती। हाथमे पुस्तक, काँधपर कपड़ाक झोरा आ आँखिमे प्रश्नक बेचैनी। रेवतीक विधिक पढ़ाइ एखन पूरा नहि भेल छल; मुदा न्यायालयक कोठरी हुनका कतेको पुस्तकसँ बेसी आकृष्ट करैत छल।

“पहिने परिवारसँ भेटू,” रेवती कहलीह।

“भेटब,” शिवनारायण उत्तर देलनि, “मुदा पहिने कागज देखब। लोकक दुःख बुझब आवश्यक अछि; दुःखक कारणेँ बिना कागज देखल बहस करब ठीक नहि।”

रेवती चुप भेलीह। ई वाक्य हुनका कठोर लगल, मुदा ओ बुझैत छलीह जे पिता बेमतलब कठोर शब्द नहि बजैत छथि। बरामदामे लोकक दुःख एतेक छल जे कागज नहियेँ देखल जाए तँ प्रत्येक व्यक्तिक कथा स्वयंमे पूरा सत्य लागि सकैत छल।

नीलकान्तक घर दरभंगाक एक पुरान बाजारक पछिला गलीमे छल। गलीक दुनू कात पीपड़ आ नीमक छाँह पड़ैत छल, मुदा बरखाक समय ओहिमे गन्ध भरि जाइत छल। घरक आगाँ एक छोट दुकान छल—खाद्यान्न, तेल, साबुन आ दैनिक वस्तुक। नीलकान्त बजारक छोट व्यापारी छलाह; लोक कहैत छल जे हुनकर हिसाबक हाथ बहुत तेज अछि। महीनाक पहिल सप्ताहमे जकर घरमे नकदीक अभाव रहैत छल, ओकरा नीलकान्तक दुकानसँ उधार

भेटि जाइत छल। एहि उधारक कारण हुनकर दरिद्रक बीच प्रतिष्ठा छल, मुदा एहि हिसाबक कारण शंका सेहो बढ़ि सकैत छल।

रातिक करीब एगारह बजे पुलिस हुनकर घर आयल छल। बरखा पड़ि रहल छल। दुकानक किवाड़ आधा बन्द छल। नीलकान्त भोजन करबाक तैयारीमे छलाह। तीन लोक भीतर आएल; दू वर्दीमे, एक सादा कपड़ामे। हुनका सभक हाथमे सूचना छल जे दुकानक पछिला कोठरीमे अवैध दाँवक हिसाब रखल जाइत अछि। नीलकान्त पहिने हँसि देलनि। “अहाँ गलत घर आएल छी,” ओ कहने छलाह। मुदा जखन अलमारी खोलल गेल, पैघ बही, किछु कागज, नगद राशि आ पुरान ताशक दू गड्डी निकालल गेल, हँसी थमि गेल।

निर्मला दरवाजापर ठाढ़ छलीह। ओ बहीखाताकेँ पहचानैत छलीह; किएक तँ ओही बहीमे हुनकर उधार देल चाउर, तेल आ दालक हिसाब सेहो छल। मुदा ओहि राति एक अनजान अधिकारी कोनो पन्ना खोलेने कहलनि जे एहि अंकसभक अर्थ साधारण व्यापारक नहि। नीलकान्त कहने छलाह, “जकर हिसाब अछि, ओकर नाम लिखल अछि। बुझब होय तँ पूछू।” अधिकारी उत्तर देने छल, “ओहिना पूछब।” तकर बाद एक-एक पन्ना अलग राखल गेल। पुलिसक लिखल जप्ती-सूचीपर नीलकान्तकेँ हस्ताक्षर करबाक कहल गेल; ओ कहलनि जे सूची पूरा पढ़ने बिना हस्ताक्षर नहि करताह।

रेवतीक ध्यान एहि बातपर गेल जे निर्मला रातिक विवरण सुनबैत समय बारम्बार ‘हम देखलहुँ’ आ ‘हमरा कहल गेल’क अन्तर राखि रहल छलीह। परिवारक भयक भीतर सेहो हुनका स्मृतिमे किछु स्पष्ट छल आ किछु अस्पष्ट। शिवनारायण पूछलनि, “अलमारी के खोललक?”

“चाभी ई देने छलाह,” निर्मला कहलनि, “मुदा पहिने कोठरीमे के-के प्रवेश कएल, से हम सभ नहि देखलहुँ। बच्चा रोबैत छल।”

“बहीक सभ पन्ना एक्के ठाम छल?”

“एकटा पैघ बही छल। आन पातर कागज अलग छल। बादमे सभकेँ एकहि मेजपर राखि देल गेल।”

शिवनारायण हुनकर बात एक छोट कागजपर लिखि लेलनि। रेवती देखैत रहलीह जे पिता अपन मुवक्किलक पक्षमे सुविधाजनक कथन मात्र नहि खोजैत छथि; हुनका ओ बात सेहो चाही जे बादमे प्रतिकूल साबित भऽ सकैत अछि। निर्मलाक एक-एक उत्तर हुनकर लेखामे स्थान पबैत छल।

न्यायालयक दोसर बरामदामे उपनिरीक्षक दीनानाथ प्रसाद केस-डायरीक पन्ना पलटि रहल छलाह। रात्रिक अभियानक बाद हुनकर आँखि लाल छल। ओ अपन वरिष्ठक समक्ष दिनक कार्यवाहीक तैयारी करैत छलाह। दीनानाथ दुष्ट व्यक्ति नहि छलाह; हुनकर विश्वास छल जे नीलकान्तक दुकानमे साधारण व्यापारसँ अतिरिक्त किछु चलैत छल। अनेक महीनासँ बाजारक एक भागमे अज्ञात लोकक आवागमनक शिकायत छल। दू घरक युवक बारम्बार धन गुमाओलक, आ हुनकर परिवार हुनका सभक शिकायत देबाक आग्रह कएलक।

मुदा शिकायतक हर अंश अदालतमे प्रमाण नहि बनि सकैत छल। दीनानाथ जानैत छलाह जे पहिल पेशीमे आरोपीकेँ कब, कतय, कोन आधारपर पकड़ल गेल, कतेक समय धरि पुलिस हिरासतमे रहल आ आगाँक अनुसन्धान लेल कोन कारणसँ हिरासत आवश्यक अछि—एहि प्रश्नक उत्तर देब पड़त। ओ एहि लेल कागज ठीक करैत छलाह।

सादा कपड़ावला कर्मचारी एकटा पातर कागज हुनका दिसि बढ़ौलक। “ई नामक सूची छैक। एकर जाँच बाँकी अछि।”

“बिना जाँच पूरा भेल मुख्य कागजमे कोना लगायब?” दीनानाथ कहलक।

“साहेब कहने छथि, सब जोड़ि दियौ।”

दीनानाथ किछु क्षण सूची देखलक। ओकरा ओ बात नागवार लगल। “जे देखल अछि, से लिखब। जे सुनल अछि, से अलग राखब,” ओ कहलक। ई ओकर दैनिक सेवाक अनुशासन छल; वीरताक प्रदर्शन नहि। किन्तु ओहि छोट सावधानीक प्रभाव अगिला कतेको वर्ष धरि रहबाक छल।

दीनानाथक लग जे शिकायत आएल छल, तकर आरम्भ सेहो साधारण नहि छल। तीन मास पहिने एक माए थाना पहुँचल छलीह। हुनकर लड़का घरसँ दू गो बैल बेचि आनि राखल

धनक एक हिस्सा गमा देने छल। ओ बतौने छल जे बजारक एक कुनामे लोक राति-बेराति बैठि खेलक परिणामपर दाँव रखैत अछि। मुदा लड़का नीलकान्तक नाम नहि लेने छल। दोसर व्यक्ति स्पष्ट नाम देलक, मुदा ओकर अपन नीलकान्तसँ पुरान उधार-विवाद छल। दीनानाथ एहि दुनू बातकेँ अलग-अलग कागजमे रखने छलाह। ओ जानैत छलाह जे उधार वसूलबाक कलह कखनो अपराधक शिकायत बनि जाइत अछि, आ वास्तविक अपराध कखनो निजी शत्रुताक आड़िमे लुका रहैत अछि।

बजारक एक चबूतरापर बैसनिहार वृद्ध लोकक बीच बहस चलैत छल जे ताश खेलब स्वयंमे खराब काज अछि कि नहि। केओ कहल जे दिन भरि मजदूरी कऽ थाकल लोक साँझमे कागजक पत्ता खेलैत अछि, ताहिमे अपराध की? दोसर कहल जे खेलक नामपर घरक अन्नक पैसा लगबैत छी तँ बच्चाक अधिकार बेचैत छी। ई बहसमे विधिक निर्णयक कठोर परिभाषा नहि छल; मुदा लोकजीवनक नैतिक अनुभव छल। दीनानाथ जखन पहिल बेर एहि समूहसँ प्रश्न पूछने छलाह, तँ सभ एक-दोसराक मुँह ताकने छल। कोनो व्यक्ति अपन पड़ोसीक विरुद्ध खुलि बाजय तैयार नहि छल।

एक दिन एक गुप्त सूचना आयल। सूचना देनिहार कहने छल जे नीलकान्तक दुकानक पछिला कोठरीमे साधारण उधारक अतिरिक्त सट्टाक हिसाब राखल जाइत अछि। ओ किछु संक्षिप्त चिह्न आ अङ्क बतौने छल। दीनानाथ ओहि चिह्नक अर्थ समझबाक प्रयास कएलनि, मुदा एहि नतीजापर नहि पहुँचलाह जे एक-एक चिह्न निश्चय एहि अपराधकेँ प्रमाणित करैत अछि। तइयो शिकायतकेँ अनदेखा करब उचित नहि छल। पुलिसक उत्तरदायित्व केवल विश्वास करब नहि, परीक्षण सेहो छल।

दीनानाथक अपन बेटा नवमी कक्षामे पढ़ैत छल। राति घर लौटिते ओ पुछने छल—“बाबू, जँ कागजमे नाम लिखल अछि, तँ ओ नामक लोक दोषी होइत अछि?” दीनानाथ पहिने कहने छलाह, “नाम नाम होइत अछि।” फेर बच्चा पुछने छल—“हमरा नामपर केओ लिखि देत तँ?” दीनानाथ उत्तर नहि दऽ सकलाह। ओ अपन बेटाकेँ भोजन करबाक कहलनि। आब न्यायालयमे पेश करबाक सूची देखिते ओहि प्रश्नक पुनरावृत्ति हुनकर भीतर होइत छल।

जप्तीक समयक एक छोट विवरण हुनका विशेष चिन्ता दैत छल। पुलिसक सूचीमे पैघ बहीक पृष्ठ-संख्या लिखल छल, मुदा ढीला कागजक गिनती पहिल विवरणसँ मेल नहि खाइत छल। सम्भव छल जे रातिक जल्दबाजीमे गलती भेल; सम्भव ईहो जे केओ बादमे कागज जोड़ल। दीनानाथ ई आशंका केस-डायरीमे अलग लिखने छलाह। हुनका विश्वास छल जे ककरो विरुद्ध सुदृढ़ अभियोजन तैयार करबाक पहिल शर्त स्वयं अपन अभिलेखक ईमानदारी अछि।

दस बजिकय बारह मिनटपर रेवती आ शिवनारायण न्यायिक दण्डाधिकारीक कोठरीक बाहर पहुँचलाह। भीतर पुरान छतपंखा घूमैत छल। गर्मी कम नहि करैत छल, केवल कागजक कात हिलबैत छल। न्यायालयक लेखनिक एक-एक प्रकरण पुकारैत छलाह। जकर नाम पुकारल जाइत, ओकर परिवार बरामदामे एकाएक सीधा भऽ ठाढ़ भऽ जाइत। कतहु शुल्कक झंझट, कतहु जमानतदारक पहचान, कतहु पुलिसक कागज अधूरा। न्यायालयक प्रक्रिया सामान्य लोकक लेल एक अजनबी भाषा छल।

रेवती अपन पुस्तकसँ एक पृष्ठ बाहर कएलनि। ओहिमे संविधानक एक अनुच्छेदक भाषा लिखल छल—गिरफ्तार व्यक्तिकेँ विधिसम्मत समयमे दण्डाधिकारीक समक्ष उपस्थित करबाक सुरक्षा। ओ पिता दिसि देखलीह। शिवनारायण कहने छलाह जे पुस्तकक वाक्य आ अदालतक व्यवहारक बीच बड़ दूरी रहैत अछि; मुदा ई दूरी बुझि कऽ ओहि सुरक्षाकेँ त्यागि देबाक नहि।

“केस-डायरी देखबाक अवसर भेटत?” रेवती फुसफुसा कऽ पुछलीह।

“जतेक विधि अनुमति दैत अछि,” पिता कहलनि। “पुलिसक प्रत्येक आन्तरिक टिप्पणी आज हमरा नहि भेटत। हम जे जानि सकैत छी, ताहिसँ पहिल प्रश्न तैयार करब। अनिश्चित बातकेँ निश्चित कहल, तँ न्यायाधीश हमरो नहि मानताह।”

कोठरीक बाहर नीलकान्तकेँ लकड़ीक एक बेंचपर बैसाओल गेल छल। हुनका देखिते निर्मला रोटीवला डिब्बा आगाँ बढ़ौलीह। एक सिपाही एहि बेर इशारासँ रोकलनि, मुदा शिवनारायण पूछलनि जे भोजनक व्यवस्था कोना होयत। सिपाही कहलक जे पेशीक बाद

देखल जाएत। नीलकान्त एक बेर पाछाँ मुड़ि बेटाकेँ देखलनि। अमरेश जेबमे राखल एक छोट पेन्सिल घुमबैत छल। ओ पिताक दुकानक हिसाब सीखबाक आरम्भ कएने छल; ओकरा लग संसारक प्रत्येक प्रश्नक उत्तर संख्यामे मिलैत छल।

“राज्य विरुद्ध नीलकान्त साह,” लेखनिक पुकारलक।

सिपाही नीलकान्तकेँ भीतर लऽ गेल। रेवती सेहो पिता संग प्रवेश कएलनि। कोठरीक भीतर न्यायिक दण्डाधिकारी विमलाकान्त मिश्र बैसल छलाह। हुनकर सामने फाइलक ढेर, एकटा जलक गिलास आ लाल कपड़ासँ बन्हल पुरान अभिलेख छल। हुनकर दृष्टि पहिने नीलकान्तपर गेल, तकर बाद पुलिस अधिकारीपर।

“गिरफ्तारीक समय?” न्यायाधीश पुछलनि।

दीनानाथ निर्धारित विवरण देलनि।

“आरोपीकेँ कारण जनाओल गेल?”

“जी, लिखित रूपसँ सूचना देल गेल अछि।”

“चिकित्सकीय परीक्षण?”

दीनानाथ सम्बन्धित कागज आगाँ बढ़ौलनि।

न्यायाधीश नीलकान्त दिसि देखलनि। “अहाँक कोनो शिकायत अछि? मारपीट, भोजन अथवा औषधिक आवश्यकता?”

नीलकान्त पहिने चुप रहलाह। ओ मानि लेने छलाह जे पुलिस जतेक कहत, ओतबे सत्य रहत। मुदा प्रश्न फेर पुछल गेल। “हमरा मारल नहि गेल,” ओ कहलनि, “मुदा रातिसँ खेनाइ नहि भेल अछि। आ हमर बहीमे दुकानक हिसाब सेहो अछि।”

न्यायाधीश भोजनक व्यवस्था सुनिश्चित करबाक निर्देश दर्ज करौलनि। फेर पुलिसक प्रार्थना-पत्र दिसि देखलनि। अनुसन्धान लेल अतिरिक्त पुलिस हिरासतक माँग छल।

सरकारी पक्षक अधिवक्ता उठलाह। ओ संक्षेपमे कहलनि जे स्थानीय बाजारमे नियमित रूपसँ दाँवक हिसाब राखबाक शिकायत छल; आरोपीक घरसँ पैघ बही आ किछु नगद भेटल अछि; अन्य व्यक्तिक पहचान लेल पूछताछ आवश्यक अछि।

शिवनारायण अपन स्थानसँ उठलाह। “माननीय न्यायालय,” ओ धीमे स्वरमे शुरू कएलनि, “प्रार्थना हमर ई नहि अछि जे अनुसन्धान एतहि समाप्त कऽ देल जाए। प्रार्थना ई अछि जे हिरासतक आवश्यकता स्पष्ट रूपसँ बताओल जाए। जकर घरसँ बही भेटल, ओकरा सभ पन्नाक लेखक आ सभ प्रविष्टिक अर्थक एकमात्र उत्तरदायी मानि लेब हड़बड़ी होयत।”

सरकारी अधिवक्ता कहलनि, “अभियुक्त व्यवसायी छथि। हुनकर लग खाता भेटल अछि। ओही आधारपर प्रश्न अछि।”

“खाताक अस्तित्व प्रश्न उठबैत अछि,” शिवनारायण कहलनि, “मुदा ओ प्रश्नक उत्तर नहि अछि। बहीमे उधार देल चाउरक हिसाब अछि, तेलक अछि, नगद जमा कएल गेल राशिक अछि। पुलिस जकरा दाँवक संकेत कहैत अछि, ओहि प्रविष्टिक पृथक अर्थ देखाउ।”

न्यायाधीश बीचमे पूछलनि, “बचाव पक्ष आज एहि बहीक सम्पूर्ण विचारण चाहैत अछि?”

“नहि,” शिवनारायण तुरन्त उत्तर देलनि। “एखन केवल एतेक चाहैत छी जे सम्पूर्ण दोषक पूर्वधारणा पुलिस हिरासतक स्वतन्त्र कारण नहि बनय। केस-डायरीमे जाँचक विशेष आवश्यकता जे अछि, से न्यायालय परखय।”

रेवतीकेँ एहि उत्तरमे एकटा सूक्ष्म शिक्षा भेटल। पिता बहीखातासँ निर्दोष साबित करबाक प्रयत्न नहि करैत छलाह। ओ केवल एतबे कहैत छलाह जे आजक प्रश्न अनुसन्धान लेल हिरासत अछि; अपराधक अन्तिम निर्णय नहि। ओहि सीमासँ स्पष्ट राखब न्यायालयक भाषा जानबाक पहिल शर्त छल।

दीनानाथसँ न्यायाधीश पूछलनि—“कोन व्यक्ति नामक पहचान लेल पुलिस हिरासत आवश्यक अछि? जे सूची संलग्न अछि, तकर स्रोत की?”

दीनानाथ कहलक, “एकाधिक व्यक्तिक नाम बहीमे अछि। किछु पहिचान भऽ गेल, किछु जाँच बाँकी अछि।”

“आरोपीक सहयोग बिना किछु विशेष पुनर्प्राप्ति होयबाक अपेक्षा अछि?”

दीनानाथ कागज पलटलक। ओकरा काल्हिक वरिष्ठक निर्देश स्मरण आयल। ओ चाहितो तथ्यसँ बेसी नहि कहि सकल। “एखन सुनिश्चित नहि।”

शिवनारायणक आँखि एक क्षण लेल रेवती दिसि गेल। ई विजयक नजर नहि छल। ई एकटा स्मरण छल: न्यायालयक निर्णायक क्षण धेरै बेर छोट उत्तरमे जन्म लैत अछि।

सरकारी अधिवक्ता एकर बाद किछु दस्तावेजक संरक्षण आ आरोपी द्वारा सम्भावित प्रभावक प्रश्न उठौलनि। शिवनारायण कहलनि जे ई चिन्ता न्यायालय उपयुक्त शर्त आ उपलब्ध उपायसँ विचार कऽ सकैत अछि। नीलकान्तक स्थायी घर, दुकान, परिवार आ स्थानीय पहिचानक विवरण रखल गेल। एखन जमानतक अलग आवेदन विचारणाधीन छल।

न्यायाधीश कागज देखैत रहलाह। कोठरीमे किछु क्षण कागजक खड़खड़ाहट छोड़ि कोनो स्वर नहि छल। बाहर बरखा फेर आरम्भ भऽ गेल छल। नीलकान्त अपन पाँजरक लग हाथ राखि ठाढ़ छलाह। हुनका अदालतक तर्कक आधा हिस्सा बुझाइत छल, आधा नहि; मुदा एतेक अवश्य बुझलनि जे हुनकर भविष्यक विषयमे एकटा निर्णय होमय जा रहल अछि।

न्यायाधीश लिखौलनि जे तत्काल पुलिस हिरासतक विशेष आवश्यकता प्रस्तुत सामग्रीसँ पर्याप्त रूपेँ स्थापित नहि भेल अछि। मामलाक जाँच जारी रहत; उपयुक्त अवधि लेल न्यायिक हिरासतक आदेश देल गेल, अगिला दिन जमानत आवेदनपर सुनबाई निर्धारित भेल। केस-डायरी आ जप्ती सम्बन्धी पूर्ण विवरण प्रस्तुत करबाक निर्देश देल गेल। आदेशक अभिप्राय दोषक अन्तिम निर्णय नहि अछि, ई सेहो स्पष्ट कएल गेल।

आदेश लिखल जाएबाक समय रेवतीक नजर न्यायाधीशक लेखनिकपर पड़ल। लेखनिक बहुत तेज हाथसँ कथित घटनाक नाम, अभियुक्तक परिचय, अधिवक्ताक तर्कक सार आ अगिला तारीख लिखैत छलाह। प्रत्येक शब्दक बाद ओ निबक अग्रभागेँ पन्ना छुइँछुइँ करैत छलाह, मानू एक सामान्य दिनकेँ भविष्यक अभिलेखमे बदलि रहल होथि। रेवती सोचलीह जे एहि कोठरीमे आइ कही गेल बहुतेक बात लोकक स्मृतिसँ किछु दिनमे मेटा जाएत; मुदा लिखल आदेश बहुत वर्ष धरि बचि सकैत अछि।

नीलकान्तक आँखि कागजसँ बेसी न्यायाधीशक मुखपर छल। ओ बुझैत छलाह जे हुनका न्यायालयक एक प्रश्नक सही उत्तर देबाक अवसर भेटल, मुदा दुकानक बहीक सभ रहस्यक स्पष्टीकरण एखन नहि देल गेल। हुनका एहि बातक चिन्ता छल जे पुलिसक अधिकारी पुनः पूछताह आ ओ बहीमे उधारक ग्राहकक नाम ठीकसँ नचिन्हि पेलाह तँ? कतेको ग्राहककेँ ओ घरक नामसँ लिखैत छलाह; कतेकोक वास्तविक नाम अन्य छल। किछु लोक दुनू प्रकारक पहचानसँ परिचित, किछु केवल एकसँ।

ओ न्यायालयसँ कहबाक इच्छा करैत छलाह जे पच्चीस वर्षक व्यापारमे हजारो उधार लिखल जाइत अछि। कखनो ग्राहक स्वयं रकम मुँहजबानी कहैत अछि, कखनो ओकर परिवारक कोनो सदस्य। लिखावट अनेक हाथक भऽ सकैत अछि। मुदा शिवनारायण पहिने हिनका समझौने छलाह जे पूछल प्रश्नक उत्तर दियौ, बिना आवश्यकता अनुमान नहि जोड़ू। नीलकान्त ओहि सावधानीक पालन करबाक प्रयत्न करैत छलाह। हुनका ई भान नहि छल जे भविष्यक एक पैघ विवादमे ई सावधानी कतेक महत्त्वपूर्ण होएत।

न्यायाधीश अपन आदेशक एक अंश फेर पढ़लनि, ताकि सम्बन्धित अधिकारी प्रक्रिया बुझि सकथि। रेवतीकेँ स्पष्ट भेल जे पुलिस हिरासतक प्रार्थना अस्वीकार भेलाक अर्थ अभियुक्त मुक्त भऽ गेल नहि; आ न्यायिक हिरासतक आदेशक अर्थ अपराध सिद्ध भऽ गेल सेहो नहि। विधिक अवस्थाक ई भेद सामान्य भाषामे खो जाइत अछि। बाहर प्रतीक्षा करैत परिवार सम्भवतः मात्र एतेक बुझत जे नीलकान्त घर नहि लौटला। अदालत ओहि मानवीय पीड़ाकेँ पूरा समाप्त नहि कऽ सकैत छल; मुदा उचित कारण लिखि कऽ अपन निर्णयक उत्तरदायित्व निश्चित कऽ सकैत छल।

जखन नीलकान्त पुनः बरामदा पार करैत छलाह, निर्मला डिब्बा हुनकर दिशि बढ़ौलीह। सिपाही एहि बेर डिब्बा लऽ कऽ भीतरक व्यवस्थासँ सम्बन्धित व्यक्तिकेँ देबाक आश्वासन देलक। निर्मला आ अमरेशकेँ छोट सुख भेटल—कमसँ कम रोटी हुनका धरि पहुँचबाक आशा। किन्तु अमरेश बुझैत छल जे ओकर पिताकेँ रोटी नहि, घर चाही। ओ धैर्य राखबाक प्रयत्न करैत छल, मुदा ओकर आँखि भरि आयल।

नीलकान्तक चेहरापर निराशाक एक छाया आयल। ओ आशा कएने छलाह जे घर फेर जाएताह। निर्मलाक डिब्बा ओकरा फेर हाथमे नहि भेटल। मुदा शिवनारायण धीरे कऽ बुझौलनि—“पुलिस हिरासत आ न्यायिक हिरासत एक नहि। काल्हि जमानतपर पृथक सुनबाई होयत। हम सभ काल्हि तैयारीसँ आएब।”

“हम कखन घर जाएब?” नीलकान्त पुछलनि।

शिवनारायण सरल उत्तर नहि गढ़लनि। “न्यायालय जे निर्णय करत, से विधि आ प्रमाणपर निर्भर होयत। हम अहाँक पक्ष ठीकसँ रखब।”

एहि स्पष्ट उत्तरमे आश्वासन छल, मुदा झूठ वचन नहि। नीलकान्त सिर झुका लेलनि। रेवती देखलीह जे पिता मुवक्किलक मन राखबाक लेल भविष्यक निश्चय नहि करैत छथि। हुनकर पेशाक ई कठोर नैतिकता छल।

न्यायालयसँ बाहर निकलिते निर्मला शिवनारायणकेँ घेरि लेलीह। “काल्हि घर आबि जाएताह ने?”

“जमानतक आवेदन राखल जाएत,” ओ कहलनि। “अहाँ घरक कागज, दुकानक वैध हिसाब, पहचान-पत्र आ जे लोक जमानतदार बनि सकैत छथि, हुनका सभक विवरण आनू।”

अमरेश पुछलक, “बाबूजी चोर छथि?”

कोनो उत्तर तुरन्त नहि आयल। बरामदाक अनेको लोक ओहि प्रश्नक दिशि ताकय लगल। शिवनारायण बच्चाक आँखि देखलनि। “अदालत एखन ई तय नहि कएने अछि,” ओ कहलनि। “अभियोग लगब आ अपराध सिद्ध होयब दू अलग बात अछि।”

“तखन पुलिस किएक लऽ गेल?”

“किछु संदेह आ किछु प्रमाणक जाँच लेल पुलिसक काज होइत अछि। मुदा संदेहपर अन्तिम निर्णय नहि होइत अछि।”

अमरेशक लेल उत्तर कठिन छल। ओकरा पिताक बिना दुकान खोलबाक जिम्मेदारीक चिन्ता छल। ओ चाहैत छल जे कोनो बड़ लोक साफ कहि दियैक—पिता निर्दोष छथि। मुदा सभ वयस्क लोक कागज, गवाही आ कालिहक बात करैत छलाह।

बरामदाक पश्चिमी छोरपर एक वृद्ध कागजक ढेरमे अपन अगिला सुनबाईक तारीख खोजैत छलाह। हुनकर बेटा रेवतीसँ रास्ता पुछलक। रेवती बतौलीह जे अभिलेख-विभाग कोन दिसि अछि। ओहि समय हुनका महसूस भेल जे एकहि भवनमे कतेको जीवनक समय एक-दोसरासँ बिलकुल अलग चलैत अछि। नीलकान्तक लेल काल्हि एक दिनक दूरी छल; वृद्धक लेल चारि महीनाक। एक नव विवाहित स्त्रीक लेल आगामी निर्णयक अर्थ मायके अथवा ससुरारक घर छल; दोसर व्यक्ति लेल एक छोट खेतक सीमा। न्यायालय एक समयमे अलग-अलग मानवीय घड़ियालक टिक-टिक सुनैत छल।

दोपहरक बाद शिवनारायण अपन कक्षमे पहुँचलाह। ओ कक्ष कचहरीक लग एक पुरान मकानमे छल। कोठरीमे लकड़ीक मेज, कानूनक पुस्तक, पितराक घड़ी, जलक सुराही आ रेवती लेल एक अतिरिक्त कुर्सी। खिड़कीसँ भीजल नीमक पात देखाइत छल। मेजपर ओ पुलिसद्वारा उपलब्ध कराओल प्रारम्भिक जप्ती-विवरण, निर्मलाक कथन आ अपन टिपणी अलग-अलग रखलनि।

“अहाँ एतबे पूछलहुँ जे पुलिस हिरासत किएक चाही,” रेवती कहलनि। “दाँवक खेल कौशलक अछि कि संयोगक, ताहिपर तर्क नहि कएलहुँ।”

“आज ओ तर्क आगाँ बढ़ेने की लाभ होइत?”

“आरोपक आधार कमजोर भऽ सकैत छल।”

“कखनो-कखनो,” शिवनारायण कहलनि, “समय सँ पहिने कहि देल तर्क अपना पक्षकेँ कमजोर करैत अछि। पहिने ई बुझू जे आरोप कोन प्रकारक खेल, कोन रकम, कोन लेनदेन आ कोन कानूनक आधारपर अछि। रमीक सम्बन्धमे सर्वोच्च न्यायालय पुरान निर्णय देने अछि। घुड़दौड़क सम्बन्धमे सेहो कौशलक प्रश्नपर निर्णय अछि। मुदा रमीक निर्णयक नाम लेबाक

मात्रेँ प्रत्यक्ष अवैध सट्टाक हिसाब वैध नहि भऽ जाइत अछि। कानूनक मिसालक अर्थ ओकर तथ्य आ लागू विधिक सीमा सँ निर्धारित होइत अछि।”

“तँ अहाँ मानैत छी जे नीलकान्त गलती कएने होथि?”

“हम मानैत छी जे एकर जाँच होयबाक चाही। अधिवक्ताक काज मुवक्किलक कहबाक अधिकारक रक्षा अछि, ओकर बदला सत्य गढ़ब नहि। अभियोजनकेँ अपन आरोप सिद्ध करबाक अछि। हमरा ओकर साक्ष्यक परीक्षण करबाक अछि। दूनू काजक बीच न्यायालय ठाढ़ अछि।”

रेवती अपन पुस्तक बन्द कऽ देलनि। एहि उत्तरमे पिता ककरो महिमा नहि गढ़लनि; ओ केवल दायित्वक बाँट स्पष्ट कएने छलाह। मुदा रेवतीकेँ एही सादगीमे एकटा गम्भीर विचार भेटल—कानून व्यक्ति नहि, प्रक्रियाक भरोसा माँगैत अछि।

शिवनारायण नीलकान्तक दुकानक हिसाब-रजिस्टरक उपलब्ध पुरान प्रतिलिपि खोललनि। निर्मला कहने छलीह जे बहीमे उधारक ग्राहकक नाम आ वस्तुक मात्रा लिखल जाइत छल। किछु पन्नामे चाउरक बोरा, तेलक टीन, सरिसवक तेल आ साबुनक हिसाब छल। बीच-बीचमे केवल नाम आ अङ्क। एक पन्नापर नीली स्याही, दोसरपर कारी। पन्ना मोड़बाक ढङ्ग सेहो भिन्न।

रेवती धीरे-धीरे नाम पढ़य लगलीह। रामबृक्ष, शम्भू, सुरेश, जुगल, लखनी, करीमन, सीताराम। दरभंगाक बाजारमे एहन नाम हजारो छल। एक नामक समानतासँ विशेष व्यक्ति चिन्हब असम्भव छल। ओ किछु अङ्क जोड़लीह। हिसाब ठाढ़ नहि होइत छल, किएक तँ किछु प्रविष्टिक आगाँ रकमक अर्थ लिखल नहि छल।

“एहि अंकक अर्थ की?” ओ पूछलीह।

“एखन नहि जनैत छी,” शिवनारायण कहलनि। “जे नहि जनैत छी, ओकरा ‘नहि जनैत छी’ लिखू।”

रेवती अपन कागजपर तीन पंक्ति बनौलीह—जे प्रत्यक्ष देखल; जे कहल गेल; जे एखन बुझल नहि। ओ एहिसँ पहिने कोनो विश्वविद्यालयी नोट एहन ढङ्गसँ नहि बनाने छलीह। ओ तीन पंक्ति आगामी जीवनमे कतेको बेर लौटबाक छल।

रेवतीक स्मृतिमे अपन घरक पुरान एक घटना जागि उठल। ओ दस वर्षक छलीह जखन गामक एक परिवार सीमा-विवादमे पिताकेँ भेटबाक आएल छल। गामक सभ लोक कहैत छल जे एकटा पक्ष बेईमान अछि; किएक तँ ओकर घर पैघ छल आ ओ गरीब किसानकेँ जमीन छोड़बाक दबाव दैत छल। शिवनारायण तखन सेहो सबसँ पहिने पुरान अभिलेख मँगौने छलाह। रेवती नाराज भऽ पुछने छलीह जे गरीब किसानक पक्ष तुरंत किएक नहि लैत छी। पिता कहने छलाह—“गरीबी एकटा सत्य अछि, मुदा जमीनक सीमा दोसर प्रश्न। दुनू सत्यक न्याय अलग-अलग प्रमाण चाही।”

बालिकाकेँ तखन उत्तर नहि रुचल छल। अनेक वर्ष बाद बुझलीह जे पिता गरीबक दुखक अवहेलना नहि करैत छलाह। ओ केवल एहि भयमे रहैत छलाह जे सहानुभूतिक उत्साहमे गलत दाबीकेँ समर्थन देल जाए तँ अन्ततः ककरो वास्तविक अधिकार नष्ट भऽ सकैत अछि। तथापि रेवती अपन पितासँ एक बातपर असहमत छलीह। ओकरा लगैत छल जे कानूनक सही उपयोग गरीबक लेल इतना महँग आ कठिन किएक अछि? सत्य बोलबासँ पूर्व कतेक कागज, कतेक तारीख आ कतेक शुल्क जुटेबाक पड़ैत अछि? पिता एहि प्रश्नक पूर्ण उत्तर नहि दैत छलाह।

रेवती अपन कॉलेजक पुस्तकालयमे कौशल आ संयोग सम्बन्धी निर्णय पढ़ने छलीह। एकर तथ्य, खेलक प्रकृति, राज्यक लागू कानून, लाभ कमेबाक तरीका—सभ एक-दोसरसँ जुड़ल छल। न्यायालयक भाषा कठोर छल, मुदा ओकर भीतर लोकजीवनक एक पुरान प्रश्न छल: मनुष्य अपन विद्या आ अभ्याससँ जे करैत अछि, ओ कखन संयोगपर निर्भर दाँव बनि जाइत अछि? आ जँ खेलमे कौशल अछि, तँ तकर आड़िमे कोनो दोसरा प्रकारक अवैध कारोबार चललासँ सभ किछु स्वतः वैध भऽ जाएत? रेवतीकेँ एकर सरल उत्तर नहि भेटल।

ओ विचार कएलनि जे नीलकान्तक वर्तमान प्रकरणमे सभसँ महत्त्वपूर्ण ई नहि जे ताशक गड्डी भेटल; महत्त्वपूर्ण ई जे कतेक रकम, कोन विधिक आरोप आ कोन प्रविष्टिसँ कोन

गतिविधि प्रमाणित होइत अछि। बरामद सूचीमे एक पुरान ताशक गड्डी छल। ओ दुकानक बच्चासभक खेलक वस्तु भऽ सकैत अछि, अथवा कथित गतिविधिसँ जुड़ल सामग्री सेहो। ओकर अर्थ परिवेश आ प्रमाण तय करत। ई एहन विचार छल जे पुस्तकमे छोट अनुच्छेद छल, मुदा न्यायालयमे एक व्यक्तिक स्वतंत्रतासँ जुड़ि गेल छल।

“अहाँ जे लिखि रहल छी, से हमरा देखाउ,” शिवनारायण कहलनि। रेवती अपन तीन पंक्तिक टिपणी देखौलीह। पिता फेर पूछलनि, “एहि मेजपर जे राशि लिखल अछि, ओकर स्रोत?” रेवती कहलीह, “अज्ञात।” “आ जे नाम?” “एक कागजपर लिखल अछि; पहिचानक पुष्टि नहि।” “बस,” पिता कहलनि, “तखन अहाँक आजक अध्ययन व्यर्थ नहि गेल।”

बाहरसँ एक बूढ़ व्यक्ति आयलाह। ओ नीलकान्तक दुकान लगक एक पुरान व्यापारी कमलेश्वर दास छलाह। शिवनारायणक कक्षमे प्रवेश कए ओ सिर झुकौलनि। “हम सुनलहुँ, नीलकान्त पकड़ाएल छथि,” ओ कहलनि। “ओ हमर घरक लेल बीसो वर्षसँ उधार दैत रहलाह।”

“अहाँ हुनकर हिसाब पहचानैत छी?”

“किछु। मुदा सब नहि।”

“जे नहि पहचानैत छी, तकर बारेमे अनुमान नहि करू,” शिवनारायण कहलनि। “अहाँ जकर प्रत्यक्ष अनुभव राखैत छी, ओतबे कहू।”

कमलेश्वर दास बैसि गेलाह। हुनकर घरमे दू बेटीक विवाहक खर्च छल, आ कएक बेर नीलकान्त अल्प ब्याजपर वस्तु उधार देने छलाह। ओ नीलकान्तकेँ सन्त मानैत छलाह। शिवनारायण ई धारणा सुनलनि, मुदा ओकर आधार पुछलनि। बुजुर्ग कहैत रहलाह जे गरीबक मदति करनिहार लोक खराब होइये नहि सकैत। शिवनारायण विनम्र स्वरमे कहलनि, “सहायता करबाक गुण आ कोनो विशिष्ट आरोपक सत्य दू पृथक प्रश्न अछि।”

कमलेश्वरक चेहरापर असन्तोष आयल। “अहाँ हुनकर अधिवक्ता छी कि विरोधी?”

“हम हुनकर अधिवक्ता छी,” शिवनारायण उत्तर देलनि। “तेँ हुनका केवल प्रशंसा नहि, सच्चा गवाही चाही।”

रेवती एहि वाक्यकेँ अपन टिपणीमे लिखि लेलनि। एखन ओकरा लग पिता कठोर नहि, विश्वसनीय देखाइत छलाह।

साँझ भऽ रहल छल। आकाशमे मेघक पाछाँसँ चन्द्रमा निकलबाक प्रयास करैत छल, मुदा न्यायालयक बरामदामे पानि एखनो जमा छल। अमरेश दुकान खोलि देलने छल। निर्मला दुकानक कोठरीमे बैसि ग्राहकसँ हिसाब पूछैत छलीह। पहिल ग्राहक सरिसव तेल लेबाक आएल। ओ पुछलक—“नीलकान्तजी काल्हि आबि जाएताह?” निर्मला मुसकि नहि सकलीह। “अदालतमे बात होयत,” ओ कहलनि।

दुकानक एक छोट भित्तिपर विद्यालयक वर्षान्त-परीक्षाक प्रमाणपत्र टाँगल छल। अमरेश गणितमे पहिल आएल छल। प्रमाणपत्रक नीचाँ पिताक लिखल वाक्य छल—“हिसाब साफ राखिह।” अमरेश ओ पंक्ति देखलक आ भीतरसँ किछु टूटैत अनुभव केलक। ओ सहसा बूझल जे अङ्क ठीक जोड़ि लेब मात्रेँ हिसाब साफ नहि होइत अछि। के लिखलक, के लेल, किएक, आ ओकर सत्यक साक्षी के अछि—ई सभ प्रश्न अंकक बाहर रहैत अछि।

जखन रेवती अपन पिताक कार्यालयसँ बाहर निकलि रहल छलीह, लेखनिक नारायण बाबू पुरान फाइलक एक पन्ना लऽ कऽ आबि गेलाह। हुनकर चश्माक डंडी सूतसँ बन्हल छल। ओ कहलनि जे अगिला दिनक सुनबाईक सूची तैयार होइत अछि; मुदा एक आवेदनक प्रतिलिपि समयपर जमा करबाक अछि। शिवनारायण शांतिसँ कागज जाँचलनि। नारायण बाबू रेवतीकेँ देखिकय मुस्कुरौलनि, “पढ़ाइ केहन चलि रहल अछि?” रेवती कहलनि, “आज बुझलहुँ जे किताबमे लिखल प्रत्येक शब्दक जीवन एतय अलग अछि।”

नारायण बाबू कहलनि, “हम तीस वर्षसँ एहि बरामदामे छी। एक बात देखलहुँ—लोक जखन आबैत अछि तँ कहैत अछि, हमर बात पहिने सुनू। जखन जाएत अछि तँ कहैत अछि, हमर बात पूरा सुनल गेल कि नहि। दुनू एक नहि।” शिवनारायण मुस्कुरौलनि। “आ तीस वर्षमे कागजक संख्या?” ओ पुछलनि। “बढ़िते गेल,” नारायण बाबू उत्तर देलनि, “मुदा लोकक दुखक नाप नहियेँ घटल, नहियेँ बढ़ल कहि सकैत छी। प्रत्येक दुख अपन घरमे भरि जाइत अछि।”

एहि छोट वार्तासँ रेवतीक भीतर एक विचित्र शान्ति आयल। ओ महसूस कएलनि जे न्यायालयक वास्तविक शक्ति कोनो एक तेज वकील, कठोर पुलिसकर्मी अथवा धीर न्यायाधीशक व्यक्तित्वसँ नहि बनैत। अनेक लोक, अनेक कागज, गलती सुधारबाक अवसर, विरोधी पक्षकेँ सुनबाक धैर्य आ लिखल कारण—एहिसभसँ न्यायिक संस्था बनैत अछि। ई संस्था अपूर्ण भऽ सकैत अछि; मुदा एकर अपूर्णता देखब आ एकरा सुधरबाक प्रयत्न करब दुनू नागरिकक कर्तव्य अछि।

घरक मार्गमे रेवती एकटा पुरान गाछक नीचाँ ठाढ़ भेलीह। पातसँ बूँद खसि रहल छल। हुनका बुझायल जे आइ जे बहीखाता न्यायालयमे पहुँचल, ओ केवल नीलकान्तक कारोबारी कागज नहि; ओ बाजारक विश्वास, पुलिसक शंका, परिवारक भय आ कानूनक धैर्यक बीच राखल एकटा अज्ञात वस्तु अछि। ओकर अर्थ न अदालतक पहिल दिन निश्चित छल, न रेवतीक पहिल दृष्टिमे।

साँझक शहरक जीवन अपन गति पकड़ि रहल छल। बाजारक कोनामा पानक दुकानपर तर्क चलैत छल। एक लोक कहैत छल जे नीलकान्तक विरुद्ध पुलिस बहु दिनसँ देखैत छल, ताहिसँ ओकर दोष निश्चित अछि। दोसर कहैत छल जे पुलिस बिना कारण पकड़ैत अछि, ताहिसँ ओ निर्दोष अछि। दुनू कथन रेवतीकेँ अधूरा लगल। एकटा गिरफ्तारी अपराध सिद्ध नहि करैत; तहिना पुलिसक सम्भावित त्रुटि मात्रसँ हर आरोप खारिज सेहो नहि होइत। बाजारमे लोक बहस जितबाक लेल बोलैत छल; न्यायालयमे प्रमाणक भार उठेबाक पड़ैत छल।

नीलकान्तक दुकानक पुरान उधारक ग्राहकसभ सेहो विभाजित छलाह। किछु कहलनि जे एहन घटना हुनकर विश्वास तोड़ि देलक। किछु दुख प्रकट कएलनि। एक ब्याजपर ऋण देनिहार व्यापारी अवसर देखलक—नीलकान्तक अनुपस्थितिमे ग्राहक अपन बकाया ओकर लग आबि सकैत छथि। कारोबारक आपसी स्पर्धा आ न्यायिक अभियोगक सम्बन्ध एतबे भरि छल जे लोक अपन लाभ लेल कथा बदलि सकैत छल। रेवती एहि अर्थमे समझलीह जे समाजक हर बयानक पाछाँ व्यक्ति, हित आ अनुभव अलग होइत अछि।

निर्मला ओहि राति दुकानक हिसाब पुनः देखबाक प्रयत्न कएलनि। एक गामक ग्राहकक नामक आगाँ दू बोरा चाउर लिखल छल। ग्राहककेँ बुला कऽ पूछलनि तँ ओ स्वीकार केलक जे

एक बोरा ओ लऽ गेल छल आ दोसर ओकर भाइक परिवार। बहीमे दूनू एक नामक नीचाँ लिखल। एहिमे धोखा नहि छल; केवल छोट व्यापारीक पुरान पद्धति छल। मुदा ओहि क्षण निर्मलाकेँ भय भेल जे जँ एहन भिन्नता अभियोगक सामग्रीमे पहुँचत तँ ओकर व्याख्या के करत? कोन अधिकारी आ कोन वकील गामक परम्परागत घरक नामक अर्थ बुझत?

मायकेसँ आएल हुनकर भाय कहलनि जे दुकान बन्द कऽ देबाक चाही। निर्मला असहमत भेलीह। “दुकान बन्द करब तँ अमरेशक पढ़ाइ कोना चलत? आ जकरा उधार देने छी, ओ सभ घरक आटा कोना आनत?” हुनका लग दुकान केवल अर्थोपार्जन नहि, पड़ोसीक बीच बाँटि राखल विश्वास छल। मुदा एहिमे कतेक हिसाब अज्ञात छल, से आब हुनका स्वयं बुझबाक छल। ओ निर्णय कएलनि जे जतेक प्रतिलिपि बचल अछि, सभ अलग रखतीह; न कोनो पन्ना फाड़तीह, न ककरो कहबापर बदलतीह।

रात्रिमे अमरेशक पाठशालाक गुरुजी आइलाह। ओ बालककेँ पढ़ाइ नहि छोड़बाक कहलनि। अमरेश पूछलक जे जखन कागजपर गलत नाम लिखल रहैत अछि, तखन गणितमे जोड़ सही होयबाक लाभ की? गुरुजी किछु क्षण सोचलनि। “गणित बतबैत अछि जे अंक जोड़लासँ की होइत अछि,” ओ कहलनि, “मुदा नामक सत्य मनुष्य खोजैत अछि। पढ़ाइ दूनू बुझबाक शक्ति दैत अछि।” अमरेश चुप भऽ गेल। ओकरा एहन लगल जे ओकर विद्यालयक छोट पुस्तक एखन न्यायालयक बड़ फाइलसँ बात करैत अछि।

अगिला दिनक तैयारी लेल रेवती पुनः शिवनारायणक कक्षमे एलीह। पिता पुरान निर्णयक पुस्तक खोलने छलाह। कागजक पात पतझरक पात सन पीयर भऽ गेल छल। रेवती पूछलीह, “जमानत होयत?”

“आशा करैत छी,” पिता कहलनि। “मुदा आशाकेँ आदेश नहि लिखू। परिस्थिति बदललासँ तर्क सेहो बदलि सकैत अछि।”

“हम अमरेशकेँ की कहियैक?”

“सत्य। अदालतक आजक आदेश जे अछि, ओ कहू। कालिहक अपेक्षा जे अछि, से अपेक्षा कहू। तकरा आश्वासन बनाकय नहि देऊ।”

रेवती बाहर निकलि रहल छलीह तखने शिवनारायण बहीक एक नाम फेर पढ़लनि। हुनकर भृकुटि तनिक सिमटि गेल। ओ नाम पर पेंसिलसँ कोनो रेखा नहि खींचलनि। सिर उठाकय केवल पूछलनि—“कमलेश्वर दास कहने छलाह ने जे एहि नामक पुरान ग्राहक आब नहि छथि?”

“कोन नाम?”

“रामकिशुन महतो।”

रेवती नाम देखलीह। प्रविष्टिक आगाँ रकम लिखल छल, आ तिथि पिछिला मासक छल। “ई व्यक्तिक घर कतय?” ओ पूछलीह।

“एखन निश्चित नहि,” पिता कहलनि। “कमलेश्वरसँ फेर पूछब। समान नामक लोक सेहो भऽ सकैत छथि।”

ओहि राति रेवती अमरेशक घर गेलीह। निर्मला बरामदामे तुलसीक लग दीप रखने छलीह। अमरेश अगिला दिनक पाठ पढ़ैत छल, मुदा पुस्तकक एक पन्नापर ओकर आँखि बारम्बार लौटि जाइत छल। रेवती ओकरा कहलीह जे अदालत काल्हि जमानत सुनत; ओहि बातकेँ निर्णय नहि, अवसर बुझबाक अछि। अमरेश सिर हिलौलक।

निर्मला धीरे कऽ पूछलीह, “रामकिशुन महतोक नाम बहीमे अछि?”

रेवती चौंकि गेलीह। “अहाँ जनैत छी?”

“हमरा विवाहक समयसँ दुकानमे उधार लेबय अबैत छलाह। पाँच वर्ष भेल, मरि गेलाह। हुनकर बेटा आब आन गाममे रहैत अछि।”

“एकहि नामक आन लोक?”

“भऽ सकैत अछि,” निर्मला कहलनि, “मुदा जे रामकिशुनकेँ हम जनैत छी, ओ तँ नहि छथि।”

रेवती बहुत सावधानीसँ उत्तर देलनि—“आब नाम, ठाम आ तिथिक पुष्टि करब। एक नामसँ निष्कर्ष नहि काढब।”

निर्मला किछु नहि बाजलीह। हुनकर चेहरापर आश्चर्य आ भयक एक मिश्रित छाया छल। बहीमे मृत व्यक्तिक नाम देखल जाए तँ ओ केवल कागजक त्रुटि होइत अछि कि जीवित लोकक धोखा—एहि प्रश्नक उत्तर हुनका नहि बुझाइत छल।

राति गहराएल। रेवती घर लौटैत समय दरभंगाक सुनसान सड़कपर चलि रहल छलीह। चाँद आ बादलक बीच छोट-छोट उजासक टुकड़ा गिरैत छल। दूर कतहु रेलगाड़ीक सीटी बजल। हुनकर झोरामे पुरान न्यायिक निर्णयक पुस्तक, जमानतक कागजक प्रतिलिपि आ एक छोट पन्ना छल, जाहिपर तीनटा पंक्ति बनल छल—प्रत्यक्ष, कथन, अज्ञात।

रेवतीकेँ अचानक अमरेशक प्रश्न स्मरण भेल—“बाबूजी चोर छथि?” हुनका अनुभव भेल जे न्यायालयक समक्ष प्रत्येक नामक पाछाँ एहन कोनो प्रश्न होइत अछि, जे न्यायिक भाषा मे छोट होइत अछि मुदा परिवारक भीतर बहुत पैघ। नीलकान्त विरुद्ध आरोपक जाँच होयत, दोष सिद्ध होयत कि नहि से अदालत कहत। मुदा मृत व्यक्तिक नामक पाछाँ जे जीवन छल, ओकर कथा ककरो स्मृतिमे बचल अछि कि नहि, से सेहो जाँचबाक अछि।

ओ घर पहुँचि पिताक मेजक लग ठाढ़ भेलीह। शिवनारायण दीपकक उजासमे पढ़ि रहल छलाह। रेवती धीरे कहलनि, “रामकिशुन महतो पाँच वर्ष पहिने मरि गेलाह—एहन गवाही भेटल अछि। मुदा नामक एकरूपता आ व्यक्ति-पहिचान जाँचब बाँकी अछि।”

शिवनारायण पुस्तक बन्द कएलनि। “ठीक,” ओ कहलनि। “एहि बातकेँ एखन आरोप नहि बनाउ। पहिने ओकर जीवनक सही पता लगाउ। मृतकक नाम सँ जे हिसाब चलैत अछि, ओहि हिसाबक अर्थ निकालबाक पहिने जीवित साक्षी खोजू।”

रेवती ओहि राति बहुत देर धरि नहि सुतलीह। हुनकर सामने काल्हिक जमानत, पुलिसक बही, पिता कहने विधिक सीमा आ मृत ग्राहकक नाम एक संग घूमैत रहल। नीलकान्त साह लेल न्यायालयमे पहिल दिन समाप्त भऽ गेल छल; मुदा रेवतीक लेल ओहि दिन एक नव प्रश्नक आरम्भ छल।

कागजपर लिखल नामक लेल के उत्तरदायी अछि? लिखनिहार? पढ़निहार? जकर नाम अछि, ओ स्वयं? कि ओ संस्था, जे नामकेँ प्रमाण मानि लैत अछि?

ओहि राति नगर जागल छल।

खिड़कीक बाहर फेर मेघ गरजल। दरभंगाक राति पानिसँ भरल छल। कचहरीक पुरान भवनमे सभ बत्ती बन्द भऽ गेल छल। ताहिमे राखल जप्त बहीखाता निस्पन्द छल; ओकर पन्नामे किछु सच्चा उधार, किछु सम्भावित अपराध, आ किछु एहन नाम छल जे अपन अर्थ कहबाक लेल एखन धरि ककरो प्रतीक्षा करैत छल।

अध्याय २ — जप्तीक सूची

दरभंगा, जुलाई–अक्टूबर २०००

बादल रातिभरि गरजल छल, मुदा भोर होइत-होइत कचहरीक छज्जापर पानिक बूँद गनल जा सकैत छल। निर्मला साह डिब्बामे रोटी नहि, एहि बेर कागज रखने छलीह। घरक जमिनक रसीद, दुकानक पुरान अनुमति-पत्र, अमरेशक विद्यालयक प्रमाणपत्र आ दू जन जमानतदारक परिचय-संबंधी अभिलेख—सभ एकटा पुरान साड़ीक कोरमे लपेटल। हुनका रेवती कहलने छलीह जे न्यायालयक समक्ष अपन घर आ कारोबारक स्थायित्व देखायब उपयोगी भऽ सकैत अछि। निर्मला राति भरि ई सोचैत रहलीह जे घरक स्थायित्व देखय लेल अदालतकेँ एतेक प्रमाण किएक चाही, जखन कि ओहि घरक दीवालपर नीलकान्त स्वयं ईंट उठाकय राखने छलाह।

अमरेशक विद्यालय ओहि दिन खुलल छल। ओ माएसँ कहलनि जे आइ विद्यालय नहि जाएत। निर्मला पहिने मना कएलनि, फेर ओकर जिद देखि चुप भेलीह। अमरेशक आँखि लाल छल। पिछिला राति ओ बारम्बार जागि उठैत छल आ पुछैत छल जे बाबूजीक खेनाइ भेल कि नहि। ओकरा पिताक गिरफ्तारीसँ बेसी ई चिन्ता खाइत छल जे घरक भोजनक थारी एक आदमीक प्रतीक्षा करैत खाली रहि गेल। नीलकान्तक बिना दुकानक किवाड़ खोलबाक साहस निर्मलाकेँ नहि भेल छल, मुदा घरक भीतर पहिने सँ उधार लेने ग्राहकसभक चिंता सेहो हुनका छल।

शिवनारायण झा अपन कार्यालयमे जमानतक आवेदन पढ़ि रहल छलाह। रेवती हुनकर सामने एकटा छोट विवरण लिखैत छलीह—नीलकान्तक स्थायी घर, व्यापार, पूर्व आपराधिक अभिलेखक उपलब्ध जानकारी, पळायनक आशंका, साक्षीपर प्रभावक सम्भावना, आ पुलिसक जाँचमे सहयोग। पिता सँ सीखल छलीह जे ‘कभी नहि भागत’ जेकाँ पूर्ण वचन अदालतमे कमजोर पड़ि सकैत अछि। जकर प्रमाण अछि, ओहि बातकेँ प्रमाणक सीमामे कहबाक अछि। जकरा जनबाक उपाय नहि, ओकरा आश्वासन नहि बनायब।

“माए बहुत डरैत छथि,” रेवती कहलनि। “अमरेश सेहो। की हुनकर भय न्यायालयकेँ कहबाक चाही?”

“अवश्य,” शिवनारायण उत्तर देलनि, “मुदा भय जमानतक एकमात्र आधार नहि। घरक आश्रित लोकक कठिनाइ, अभियोगक प्रकृति, अनुसन्धानक आवश्यकता, व्यक्ति भागि जाएत कि नहि—सभ पर विचार होइत अछि। न्यायाधीशक सामने जँ भावुकता मात्र राखब, तँ अभियोजनक विशिष्ट आशंका अनुत्तरित रहि जाएत।”

रेवती अपन कागजमे लिखलनि—दुःखक भाषा अलग, विधिक प्रश्नक भाषा अलग; मुदा दूनूक सम्बन्ध काटि देब असम्भव। एहि पंक्तिक नीचाँ ओ किछु खाली स्थान छोड़लनि। हुनका लगल जे एहि खाली स्थानकेँ भरबाक लेल काल्हिसँ बेसी समय चाही।

दस बजिकय किछु समय बाद जमानतपर सुनबाई आरम्भ भेल। न्यायिक दण्डाधिकारी विमलाकान्त मिश्र पहिने अभियोजनक संक्षिप्त उत्तर पढ़लनि। उपनिरीक्षक दीनानाथ प्रसाद लिखने छलाह जे जाँच जारी अछि आ किछु ग्राहकक पहचान शेष अछि। सरकारी अधिवक्ता कहलनि जे नीलकान्तक दुकान बाजारक बीचमे अछि, जाहिसँ ओ सम्भावित साक्षीसभ धरि पहुँचि सकैत छथि। शिवनारायण एहि आशंकाकेँ अनसुना नहि कएलनि। ओ कहलनि जे न्यायालय उपयुक्त शर्त निश्चित कऽ सकैत अछि, मुदा बिना विशिष्ट कारणक व्यक्ति अनिश्चित काल धरि हिरासतमे रहय, से उचित नहि।

न्यायाधीश नीलकान्तसँ पूछलनि, “अहाँक दोकानमे कतेक लोक काज करैत अछि?” नीलकान्त उत्तर देलनि, “हम आ घरक लोक। कखनो बोरा उतारबाक लेल मजदूर आबैत अछि।” फेर पुछल गेल, “जप्त अभिलेखक अतिरिक्त दोसर हिसाब रखने छी?” नीलकान्त कहलनि जे पुरान उधारक पन्ना आ वस्तुक खरीदक रसीद हुनकर घरमे छल। न्यायाधीश स्पष्ट कएलनि जे जमानतपर सुनबाईमे एहि सभक अन्तिम सत्यता तय नहि होयत।

दीनानाथकेँ सेहो प्रश्न भेल। हुनका किछु नामक पहचान लेल समय चाही छल, मुदा हिरासतक बिना जाँच असम्भव अछि, एहन विशिष्ट कारण ओ प्रस्तुत नहि कऽ सकलाह। अभियोजन एक शर्तक माँग केलक जे नीलकान्त उपलब्ध रहथि आ जाँचमे हस्तक्षेप नहि

करथि। बचाव पक्ष सहमति देलक जे कानूनसम्मत शर्त स्वीकार्य रहत। कचहरीक भीतर खड़खड़ाइत पंखाक नीचाँ न्यायाधीश किछु पंक्ति लिखलनि, पढ़लनि, फेर एक शब्द काटि दोसर लिखलनि।

शर्तसहित जमानत स्वीकृत भेल। जमानतदारक सत्यापन आ आवश्यक बन्धपत्रक प्रक्रिया पूरा भेलापर नीलकान्तकेँ मुक्त करबाक आदेश भेल। निर्मलाकेँ ई वाक्य पूर्ण रूपसँ बुझायल नहि; ओ रेवतीक मुख दिसि ताकैत रहलीह। रेवती धीरे कऽ कहलीह, “आदेश भेल अछि। कागजक प्रक्रिया पूरा होयबाक बाद घर जा सकताह। मुकदमा चलत।” निर्मलाक चेहरापर राहत आयल, मुदा रेवती पछिला तीन शब्द फेर दोहरौलीह—“मुकदमा चलत।”

अमरेश पुछलक, “तँ बाबूजी निर्दोष साबित भऽ गेलाह?” रेवती सिर हिलौलीह। “नहि। जमानतसँ दोषी वा निर्दोषक निर्णय नहि होइत अछि।” अमरेशक आँखिमे पहिने निराशा, फेर बुझबाक असफल प्रयास देखायल। ओकरा संसार दू भागमे चाही छल—घरमे छथि तँ निर्दोष, कारागारमे छथि तँ अपराधी। अदालत ओहि सरल बाँटकेँ स्वीकार नहि करैत छल।

ओहि साँझ नीलकान्त घर पहुँचलाह। दुकानक किवाड़ खोलबामे हुनकर हाथ काँपल। भीतर धूरि जमि गेल छल; तीन दिनक बन्दीमात्रेँ जेना सामानक गन्ध बदलि गेल हो। निर्मला पहिने हुनकर लेल जल आनलीह, फेर भोजन। अमरेश बाबूजीक लग बैसि गेल। घरक कोनो सदस्य तुरन्त बहीखाताक बात नहि उठौलक। भोजनक बाद नीलकान्त अपन पुरान चौकीपर बैसलाह, जाहिपर ओ सांझमे हिसाब लिखैत छलाह। चौकी खाली छल, किएक तँ पैघ बही पुलिसक नियन्त्रणमे छल।

“हमरा ओ कागज फेर देखबाक अछि,” निर्मला कहलनि। “जकर प्रतिलिपि घरमे अछि, से अलग राखने छी।” नीलकान्त हुनका ताकलनि। “हम नहि चाहैत छलहुँ जे अहाँ सभ एहि झंझटमे पड़ू।” निर्मला उत्तर देलनि, “दोकानक चाउरक हिसाब हमहूँ जनैत छी। जँ ओहि बातक साक्षी बनब पड़त तँ बनब। मुदा जकरा नहि जनैत छी, तकरा नहि जनैत छी कहब।” नीलकान्त पहिल बेर हुनकर आँखिमे अपन आशंकासँ अलग एकटा दृढ़ता देखलनि।

नीलकान्तक दुकानक बगलमे एक माटिक घर छल जाहिमे पान बेचयवाली विधवा चम्पा अपन दू बच्चा संग रहैत छलि। ओकरा नीलकान्त महीनाक अन्तमे उधार चाउर दैत छल। गिरफ्तारीक तीन दिन चम्पाक लेल एहन बीतल जेना बाजारक रास्ता एकाएक सुकि गेल। दोसर दुकानदार उधार देबाक पहिने पुरान बकायाक प्रमाण माँगलक। चम्पा कहलनि, “हम पैसा देब, मुदा दिन दू दिनक अवसर चाही।” दुकानदारक उत्तर छल जे ओकरो व्यापार अपन हिसाबपर चलैत अछि। चम्पाक कठिनाइमे कोनो षड्यन्त्र नहि छल, केवल गरीबक जीवनक ओ नाजुक डोर छल जाहिपर एक दुकानदारक अनुपस्थिति सेहो असर करैत अछि।

निर्मला चम्पाकेँ घरक भीतर बुलाकय दाल आ चाउर देलनि। चम्पा पैसा देबाक दिन लिखबा चाहलक, मुदा निर्मला कहलनि जे एखन लिखबाक जरूरत नहि। फेर स्वयं रुकि गेलीह। बहीक विवाद देखलाक बाद बिना लिखल हिसाबक जोखिम हुनका बुझा गेल छल। ओ एक अलग पुरान कापी निकालि चम्पाक नाम, वस्तुक मात्रा आ तिथि लिखलनि; चम्पासँ कहलीह जे ओ चाहथि तँ अपन कागजपर सेहो लिखि राखथि। “अहाँ हमरा अविश्वास करैत छी?” चम्पा पुछलक। निर्मला कहलनि, “नहि, हम अपन स्मृतिक सीमा मानैत छी।” ई एक छोट परिवर्तन छल—अविश्वासक कारणेँ नहि, परस्परक अधिकार सुरक्षित रखबाक हेतु लिखल प्रमाण।

बाजारमे एक पुरान सट्टाक चर्चा सेहो उठैत छल। जे युवक शिकायतक कारण पुलिस लग पहुँचल छल, ओकर माए एक दिन नीलकान्तक दुकानक सामने ठाढ़ भेलीह। ओ भीतर नहि गेलीह। निर्मला बाहर आबि पूछलनि जे की चाही। महिलाक आँखिमे क्रोध छल। “हमर बेटा बैल बेचिकय पैसा गमौलक। अहाँ सभ कहैत छी सभ हिसाब चाउरक अछि, मुदा हमर घरक धन कतय गेल?” निर्मला चुप भेलीह। हुनका नहि बुझाइत छल जे ओ महिलाकेँ की उत्तर देथि। अपन परिवारक रक्षा करैत ओ आन परिवारक दुःखकेँ नकारि नहि सकैत छलीह।

ओहि राति निर्मला नीलकान्तसँ ओहि महिलाक बात कहलनि। नीलकान्त तुरन्त उत्तर नहि देलनि। बहुत देर बाद कहलनि, “हमर दुकानमे जे कागज भेटल, ओकर किछु प्रविष्टि हमरा स्वयं बुझबाक अछि। जँ केओ हमर भरोसाक दुरुपयोग कएने हो, ओकरा बचायब नहि। मुदा हमरा जे नहि कएल, से स्वीकार सेहो नहि करब।” निर्मला पूछलीह, “आ जँ किछु गलती

अहाँक अपन भेल हो?” नीलकान्त पत्नी दिशि देखलनि। ई प्रश्न कचहरीक कोनो अधिवक्तासँ बेसी कठिन छल। ओ कहलक, “तकर उत्तरसँ भागब नहि, जखन ओकर सच बुझि लेब।” निर्मलाकेँ उत्तर अपूर्ण लगल, मुदा ओ पहिल बेर अपन पतिक भयकेँ भयक रूपमे देखलीह, केवल लाजक रूपमे नहि।

आगिला किछु सप्ताह दरभंगाक बाजार अपन साधारण लयमे लौटबाक प्रयास करैत रहल। नीलकान्त दुकान खोललनि, मुदा ग्राहकसभक व्यवहार बदलि गेल। किछु चुपचाप खरीदारी करैत छलाह, किछु कुतूहलसँ पुरान पछिला कोठरी दिसि तकैत छलाह। एक ग्राहक हँसि कऽ पुछलक जे पुलिसक छापा पड़ला बाद दाम घटल कि बढ़ल। नीलकान्त हँसलाह नहि। ओ तौल ठीक कएलनि आ ग्राहकेँ बकाया लौटौलनि। दुकानदारक साधारण मर्यादा आब ओकर प्रतिरोधक तरीका बनि गेल छल।

दीनानाथ प्रसाद जाँचक समय बहीक पन्नासभ अलग-अलग देखलनि। जप्तीक मूल विवरणमे पैघ बहिक संख्या एक छल, मुदा ढीला पन्नाक गिनती दू प्रतिलिपिमे मेल नहि खाइत छल। पहिल पन्नामे सत्रह ढीला कागज लिखल छल; कार्यालयक बादक नकलमे उन्नैस। ओ अपन सहकर्मी चन्द्रकिशोरकेँ पूछलनि, “दू पन्ना बढ़ल कोना?” चन्द्रकिशोर उत्तर देलक जे सम्भवतः दूटा आधा पन्ना अलग गनल गेल छल। दीनानाथ कहलक, “सम्भव बातकेँ सम्भव लिखू। जे देखलहुँ, ओहि दिनक मूल सूचीमे जे अछि, से बदलल नहि जाए।”

जप्तीक गवाह दू व्यक्ति छलाह। पहिल, पड़ोसक किराना व्यापारी मथुरानन्द कापड़ि, जे दुकानक गलीक अगिला मोड़पर रहैत छलाह। दोसर, रफीक अन्सारी, जकरा राति घरसँ बुलाओल गेल छल। मथुरानन्दक हस्ताक्षर स्पष्ट छल, रफीक अपन नाम उर्दू लिपिमे लिखने छलाह आ कार्यालयक नकलमे ओकर हिन्दी उच्चारणक वर्तनी बदलि गेल छल। दीनानाथ जानैत छलाह जे एक अक्षरक भिन्नता अपने आपमे झूठ नहि, मुदा ई भिन्नता बिना स्पष्टीकरणक छोड़ब न्यायालयमे प्रश्न उत्पन्न करैत।

रेवतीकेँ एहि अन्तरक सूचना पुलिसक कागजसँ तुरन्त नहि भेटल। न्यायिक अभिलेखक विधिसम्मत उपलब्ध प्रतिलिपि आ परिवार लगक पुरान पन्नासभक तुलना करैत समय प्रथम संदेह भेल। निर्मलाक लग ओ राति लिखल एक छोट सूची छल जाहिमे ओ अपन घरसँ

उठाओल वस्तु लिखने छलीह—पैघ बही, एक पुरान पातर बहिक गठरी, धातुक छोट डिब्बा, किछु नगद आ दूक पन्नावला हिसाब। ओ कागज जप्ती-साक्षीक सूची नहि छल; भयक बीच निर्मलाक अपन स्मृति छल। रेवती दूनू कागजकेँ एक समान प्रमाण नहि मानलनि।

“हमरा याद अछि,” निर्मला कहलीह, “अलमारीक ऊपरसँ दूक पातर कागज ओ सभ नीचे अनलक। मुदा पहिने मेजपर कतेक पन्ना राखल छल, से नहि गनि सकलहुँ।” रेवती पूछलीह, “अहाँ अपन लिखल सूची कहिया बनौलहुँ?” “उहे राति, पुलिस जाएबाक बाद।” “तिथि लिखने छी?” “नहि।” “तखन अपन स्मृति अलग कहू, आ कागजक लिखल बात अलग।” निर्मला एक क्षण चुप भेलीह। “अहाँ सभ वकील लोक प्रत्येक बातकेँ दू भागमे किएक बाँटैत छी?” रेवती कहलीह, “जाहिसँ ककरो बात गलत रूपमे प्रस्तुत नहि हो।”

सितम्बरक आरम्भमे अनुसन्धानक उपलब्ध सामग्रीसँ नियमानुसार अभियोग-पत्र न्यायालयमे पहुँचल। न्यायिक दण्डाधिकारी आरोपक कानूनी अवस्थाक परीक्षण करैत छलाह। विचारणक पहिल दिनक अपेक्षा एहि दिनक भीड़ कम छल। अनेक लोक जकरा कचहरी बाहरसँ महल बुझाइत छल, भीतरक नित्य श्रम देखि आश्चर्य करैत छल। लेखनिक कागज गनैत, अहलमद फाइलक क्रम देखैत, अधिवक्ता आदेश-पत्रक प्रतिलिपि माँगैत। एहि सबक बीच एक परिवारक भविष्यक प्रश्न कखनो-कखनो एक फाइलक वजनमे समा जाइत छल।

शिवनारायण रेवतीकेँ एक दिन स्पष्ट कएलनि, “जप्तीक साक्षीसभक प्रति-परीक्षण विचारणमे होएत, जमानतक सुनबाईमे नहि। पहिने अभियोजन अपन साक्षी प्रस्तुत करत, प्रतिरक्षा प्रश्न करत। आ हमर अधिकारक सीमा सेहो अछि। पुलिसक केस-डायरीक प्रत्येक पन्ना हम अपन इच्छा सँ नहि पढ़ि सकैत छी। जे अभिलेख विधि देबाक अनुमति दैत अछि, ओहिमे रहि तैयारी करब।” रेवतीकेँ ई सीमा असुविधाजनक लगल, मुदा ओ बुझि रहल छलीह जे प्रक्रियाक कठिनाई कोनो पक्षक सुविधा अनुसार बदलल नहि जा सकैत।

बाजारक बूढ़ व्यापारी कमलेश्वर दास ओहि बीच रेवती लग आबि कहने छलाह जे रामकिशुन महतो नामक ग्राहक पाँच वर्ष पहिने मरि गेलाह। रेवती कखनहुँ बिना जाँच एहि कथनकेँ अपराधक प्रमाण नहि बनौलनि। ओ ग्रामक एक शिक्षकसँ उपलब्ध परिवारक

विवरणक बारेमे पूछलीह, मुदा व्यक्तिगत सूचना लऽ कऽ सार्वजनिक अफवाह नहि फैलौलीह। एकहि नामक दोसर व्यक्ति रहि सकैत छल; पुरान उधारक खातामे मरि चुकल लोकक नामक नीचाँ ओकर परिवारक भुगतान सेहो लिखल जा सकैत छल। अपन अधिवक्ता पिताक संग ओ एहि सम्भावना सभक सूची बनौलनि।

नीलकान्तकेँ रामकिशुनक नाम पूछल गेल तखन ओ कहलक, “हम अपन पुरान ग्राहकेँ जनैत छलहुँ। ओ बहुत दिन पहिने नहि रहलाह। हुनकर घरसँ केओ आन सामान लऽ गेल होयत, से याद नहि पड़ैत अछि।” शिवनारायण कहलनि, “याद नहि हो तँ याद नहि, एतबे कहू। याद बनाएब नहि।” नीलकान्त गम्भीर भऽ गेलाह। हुनका अचानक लगल जे हुनकर व्यापारक छोट-छोट अधूरा हिसाब आब केवल रुपैयाक नहि, स्मृतिक साक्ष्य बनि गेल अछि।

मथुरानन्दक गवाहीसँ पहिने कचहरीक छोट प्रतीक्षालयमे एक असुविधाजनक दृश्य घटल छल। हुनकर बेटा राजीव भेटय आएल आ धीमे स्वरमे पूछलक जे पिता सच्चा कहताह कि नीलकान्तक मदति लेल किछु बदलि देताह। मथुरानन्द उत्तर देलनि, “हमर नामपर झूठ चाहैत छी?” राजीव कहलक जे नीलकान्त अनेक वर्षसँ घरक सहायता करैत आएल छथि। पिता ओकरा बुझौलनि, “सहायता लेल कृतज्ञ होइब, मुदा जे नहि देखलहुँ, ओ देखलहुँ कहब तँ ई कृतज्ञता नहि, झूठ होयत।” राजीव चुप भऽ गेल। साक्षीक सम्बन्ध कागजसँ मात्र नहि, समाजक दीर्घकालीन ऋणसँ सेहो जुड़ल छल।

एक कोनमे रफीक अन्सारी अपन सिलाइयन्त्रक टूटल पायाक चिंता करैत बैसल छलाह। कचहरी आबय लेल दुकान एक दिन बन्द करब पड़ल छल। जँ आइ गवाही नहि भेल तँ फेर एक दिनक हानि। रेवती पूछलीह जे ओ केहन अनुभव करैत छथि। रफीक कहलनि, “पुलिस कहैत अछि, आऊ। अदालत कहैत अछि, समयपर आऊ। ग्राहक कहैत अछि, कपड़ा काल्हि चाही। हमर दिनक दाम के देत?” रेवती उत्तर नहि देलनि। हुनका बुझायल जे न्यायिक प्रक्रिया सामाजिक समयक उपयोग करैत अछि, मुदा ओ समय सभकेँ समान मूल्यपर उपलब्ध नहि।

न्यायालयक भीतर पहिने दू आन प्रकरण पुकारल गेल। एक वृद्ध अपन जमीनक सीमांकनक कागज लेने ठाढ़ छलाह; एक युवती पतिक भरण-पोषण सम्बन्धी आवेदनक सूचना खोजैत छलीह। रेवतीकेँ लगल जे एकहि बरामदाक अन्तःकरण अनेक प्रकारक प्रतीक्षा

सँ बनल अछि। नीलकान्तक बहीक प्रश्न ओकरा लेल संसारक केन्द्र छल, मुदा ओहि वृद्धक लेल खेतक सीमा, ओहि युवती लेल घरक भोजन केन्द्र छल। न्यायालयक दैनन्दिन क्रम लोकक पीड़ाकेँ कतारमे बदलि दैत अछि, परन्तु कतारक भीतर प्रत्येक पीड़ाक अपन इतिहास रहैत अछि।

दूर एक तम्बाकू-विक्रेता अदालतक कथा सुना रहल छल जे फलाँ साक्षी पलटि गेल, ताहिसँ नीलकान्त आब बचि जाएत। शिवनारायण ई सुनि रेवतीकेँ कहलनि, “साक्षीक स्मृति अंशतः अस्पष्ट भेलाक अर्थ ओ पलटि गेल नहि। समाचार बनबयवला लोक पूरा गवाही कम पढ़ैत अछि। अहाँ जे सुनलहुँ, ओकरा लिखित बयानसँ मिलाकय देखू।” रेवती अपन भीतरक उत्साहकेँ सावधान कएलनि। हुनका सेहो मथुरानन्दक ‘नहि देखलहुँ’ कहब प्रतिरक्षाक विजय जेकाँ लागल छल। मुदा अभियोजनक अन्य साक्ष्य एखन शेष छल।

अक्टूबरक एक भोरि मथुरानन्द कापड़ि साक्षी बनि उपस्थित भेलाह। हुनकर माथपर पसीना छल। अपन दुकानक देखरेख बेटाक जिम्मा दऽ कचहरी आएल छलाह। भीतरक कोठरीमे न्यायिक दण्डाधिकारी विमलाकान्त मिश्र बैसल छलाह। सरकारी पक्ष पहिने हुनकर परिचय आ घटनाक रातिक उपस्थिति सम्बन्धी प्रश्न कएलक। मथुरानन्द बतौलनि जे पुलिस बुलौने छल, ओ गलीसँ आएलाह, आ दुकानक पछिला भागमे किछु कागज आ नगद देखलनि।

“अहाँ जप्तीक सूचीपर हस्ताक्षर कएने छी?” अभियोजन पुछलक। मथुरानन्द अपन हस्ताक्षर पहचानलनि। कागज हुनकरा देखाओल गेल; ओ सहमति देलनि जे एकर ऊपरक नाम हुनकर अछि। सरकारी अधिवक्ता पुनः पुछलक, “ई सूची अहाँक उपस्थितिमे तैयार भेल छल?” मथुरानन्द पहिने ‘हँ’ कहलक, फेर किछु क्षण सोचि जोड़लक, “हमरा देखबाक समय बहिखाता मेजपर राखल छल; सभ वस्तु कहाँसँ आयल, से सभ नहि देखलहुँ।” न्यायालयक लेखनिक ओहि वाक्यकेँ ठीकसँ दर्ज कएलनि।

शिवनारायण उठलाह। हुनकर आवाज तेज नहि छल। “मथुरानन्दजी, अहाँकेँ पुलिसक लोक घरसँ लऽ गेल छलाह?” “हाँ, राति हमरा दुआरिपर सिपाही आयल छल।” “अहाँ पहुँचला समय अलमारी खुलल छल कि बन्द?” साक्षी आँखि मुँदलक। “खुलल बुझाइत अछि।” “बुझाइत अछि कि अहाँ स्पष्ट देखलहुँ?” “हम पहुँचला पर पल्ला खुलल छल।”

“पल्ला के खोललक, देखलहुँ?” “नहि।” शिवनारायण रुकि गेलाह। उत्तर लिखल जाएबाक समय ओ अगिला प्रश्न नहि पुछलनि। रेवती देखि रहल छलीह जे मौन सेहो प्रति-परीक्षणक एक अङ्ग अछि।

“अहाँ हस्ताक्षर करबाक पहिने सूची पूरा पढ़लहुँ?” मथुरानन्द कहलनि, “पढ़लहुँ, मुदा राति बहु भेल छल। अक्षर छोट छल।” “अहाँ अपन चश्मा लेने छलहुँ?” “नहि।” “अहाँक आँखिक चश्मा दूरक लेल कि निकटक?” मथुरानन्दक चेहरापर असहज हँसी आयल। “निकटक पढ़बामे चाही।” “तखन अहाँ जे पढ़ि सकलहुँ, से कतेक?” न्यायाधीश बीचमे कहलनि, “प्रश्न ठोस राखू, साक्षीकेँ अनुमानक जालमे नहि फँसाउ।” शिवनारायण सिर झुकौलनि। ओ पुनः पुछलनि, “सूचीमे लिखल ढीला कागजक संख्या अहाँ स्वयं गनने छलहुँ?” उत्तर आयल—“नहि।”

सरकारी अधिवक्ता तुरन्त उठि कहलनि जे साक्षीक सूचीपर हस्ताक्षर आ वस्तु देखबाक कथन एखन सेहो उपस्थित अछि। न्यायाधीश प्रश्नक दायरा स्वीकार करैत कहलनि जे साक्षीक देखल घटना आ ओकर नहि देखल घटना दूनू दर्ज होयत। रेवती एहिमे कोनो एक पक्षक सम्पूर्ण विजय नहि देखलीह। मथुरानन्द अलमारी खोलब नहि देखने छलाह, मुदा मेजपर बहीखाता देखने छलाह। ओ सूची नहि गनने छलाह, मुदा हस्ताक्षर पहचानैत छलाह। ई आधा-आधा सच ककरो सरल कथा पसिन्न नहि पड़ैत छल।

शिवनारायण अगिला प्रश्न कएलनि, “जप्तीक सूचीमे सत्रह ढीला पन्नाक उल्लेख अछि। अहाँ हुनकर गिनतीक साक्षी छी?” मथुरानन्द उत्तर देलनि, “हम सभ कागज एकत्र देखलहुँ, गनल नहि।” “नीलकान्तक घरक कोन मेजपर?” “पछिला कोठरीक बाम कात।” “अहाँ पहिने कतेक बेर ओ कोठरी देखलहुँ?” “कखनो-कखनो चाउर लऽ जाएबाक समय।” “ओहि कोठरीमे ग्राहकक उधारक हिसाब सेहो राखल जाइत छल?” “हाँ, हम अपन नामक हिसाब सेहो देखलहुँ।” अदालतमे एक क्षण मौन छा गेल। जप्त बहीक साधारण व्यापारिक उपयोगक स्वतन्त्र संकेत भेटल छल। मुदा अभियोजन एखन सेहो आरोपक पृथक प्रविष्टिक अर्थ स्थापित करबाक अधिकार रखैत छल।

मथुरानन्द अपन गवाही पूरा कऽ बाहर आएलाह तखन नीलकान्त हुनका कृतज्ञतासँ देखलक। मथुरानन्द कतहु नहि रुकलाह। ओ केवल कहलक, “जे देखलहुँ, से कहलहुँ। हमरा दुकान खोलबाक अछि।” नीलकान्त बुझल जे साक्षी अपन मित्रताक शपथ नहि लेने आयल छल; ओकरा जे स्मरण छल, ओतबे कहि गेल। ई बुझब नीलकान्तक लेल सहज नहि छल। ओ चाहैत छल जे पूरा बाजार ओकर समर्थनमे ठाढ़ भऽ जाए, मुदा प्रत्येक व्यक्तिक स्मृतिक अपन सीमा छल।

अगिला सुनबाईमे रफीक अन्सारी उपस्थित भेलाह। ओ दरजीक काज करैत छलाह आ अपन हाथक अँगुरीमे सुइक एक छोट घाव देखबैत छलाह। अभियोजन हुनका जप्ती-साक्षीक रूपमे प्रस्तुत केलक। ओ बतौलनि जे पुलिस हुनका बुलौने छल, ओ किछु बेर दुकानक पछिला कोठरीमे ठाढ़ रहलाह, आ कागजपर अपन नाम लिखलनि। सूचीमे हुनकर नामक वर्तनीक भिन्नतापर बचाव पक्ष प्रश्न उठौलक। रफीक स्वाभाविक हँसी हँसलाह। “हम अपन नाम अपना लिपिमे लिखने छी; आन व्यक्ति दोसर अक्षरमे लिखने अछि। एहिसँ हम दू आदमी नहि भऽ जाइत छी।”

रेवती अपन कापीमे एहि उत्तरक कात छोट रेखा खींचलनि। बहीमे रामकिशुनक नाम, साक्षीक नामक दू वर्तनी आ मनुष्यक पहिचान—तीनू बात एक्कठ्ठा भऽ गेल। हुनका लगल जे नाम लिखबाक अधिकार जतेक सहज प्रतीत होइत अछि, ततेक सहज नहि। लिखनिहार आ पढ़निहार दुनूक आदत नामक आकार बदलि सकैत अछि। मुदा पहिचान बदललासँ कानूनक दृष्टिमे व्यक्ति स्वतः बदलि नहि जाइत।

शिवनारायण रफीकसँ पुछलनि, “अहाँ जप्ती शुरू होयबाक पहिने पहुँचल छलहुँ कि बादमे?” रफीक उत्तर देलनि, “दुकान खुलल छल, हम तखन गेलहुँ। मुदा अलमारीसँ बही बाहर आनल जा चुकल छल।” “जे वस्तु अहाँक समक्ष लपेटल गेल, ओकर चिन्ह देखलहुँ?” “किछु पन्नापर धागा बन्हल देखलहुँ। पैघ बही अलग छल।” “अहाँकेँ जे कागजक प्रति देल गेल, तकर बारेमे की कहब?” “हमरा सूची नहि देल गेल। घरवाला लोककेँ की देल गेल, से नहि जनैत छी।” न्यायाधीश एहि उत्तरकेँ दर्ज करबाक कहलनि।

सरकारी अधिवक्ता आपत्ति कएलनि जे गवाहकेँ हुनकर स्मृतिक बाहर अनुमान कराएल जा रहल अछि। शिवनारायण स्पष्ट कएलनि जे ओ अनुमान नहि, प्रत्यक्ष उपस्थिति आ जप्तीक क्रम पुछैत छथि। न्यायाधीश किछु प्रश्न स्वीकार कएलनि, किछुकेँ फेर स्पष्ट रूपमे पुछबाक कहलनि। रेवतीक लेल ई छोट-छोट टोक महत्वपूर्ण छल। जिरह हुनकर पुस्तकमे गिनाओल तेज प्रश्नक शृंखला नहि, न्यायालयक नियन्त्रणमे चलयवला सत्यक कठिन परीक्षा छल।

रफीकक गवाहीक बाद न्यायाधीश एक दिन लेल सुनबाई समाप्त कएलनि। अभियोजन दीनानाथ प्रसाद आ आन साक्षीकेँ निर्धारित तिथिपर उपस्थित करबाक जिम्मेदारी लेल। कचहरीक बाहर कमलेश्वर दास रेवतीकेँ रोकलनि। “अहाँ रामकिशुनक घर गेलहुँ?” ओ पूछलनि। रेवती कहलीह, “अभिलेखक सत्यापित विवरणक प्रतीक्षा अछि।” कमलेश्वर कहलनि, “हुनकर बेटा सुदर्शन अलग गाममे बसैत अछि। ओकरा पूछल जा सकैत अछि।” रेवती उत्तर देलनि जे जँ उचित कानूनी मार्गेँ गवाही चाही होयत, तँ समन वा अन्य विधिसम्मत प्रक्रियासँ आबय देल जाएत।

ओहि साँझ शिवनारायण आ रेवती दुकानक पुरान हिसाबक घरमे बचल प्रतिलिपि देखलनि। निर्मला चाउरक बोरा, दालक मात्रा, तेलक टीन आ उधारक क्रम बुझबैत छलीह। किछु ग्राहक पूरा नामसँ लिखल छल, किछुकेँ केवल गामक नाम अथवा पेशासँ चिन्हल गेल छल। “ई सभ हमरा रीतिसँ चलैत छल,” नीलकान्त कहलनि। “बाबूजीसँ एहेन सीखल।” शिवनारायण पुछलनि, “रीति सही होयब आ प्रत्येक प्रविष्टिक सत्य होयब एक बात नहि। अहाँ अलग-अलग हाथक लिखावट पहचानैत छी?” नीलकान्त किछु पन्नापर ध्यान देलक, फेर चुप भऽ गेल।

“ई अक्षर हमर नहि,” ओ एक जगह कहलनि। “ककर?” शिवनारायण पुछलनि। “बुझि नहि पड़ैत। दुकानमे जखन बहुत भीड़ होइत, कोनो ग्राहक अपना सामानक नाम लिखि दैत। अमरेश सेहो दू-चारि बेर छोट हिसाब लिखने अछि। मुदा ई अक्षर नहि ओकर सन अछि, नहि हमर।” रेवती ओहि पन्नाक सीधा फोटो वा प्रतिलिपि बनाबय नहि दैत, पहिने उपलब्ध

वैधानिक अभिलेखक स्थिति स्पष्ट करबाक बात कएलनि। पुलिसक नियन्त्रणवला मूल बही आ घरक निजी प्रतिलिपि मिलान बिना निष्कर्ष सम्भव नहि छल।

अमरेश ओहि समय कोठरीक दुआरिपर ठाढ़ छल। ओकरा अपन लिखल हिसाबक स्मृति आयल। एक दिन ओ बाबूजीक आदेशपर रामबृक्षक चाउर लिखने छल। ओकर अक्षर बड़ा टेढ़ा छल। ओ डरि गेल जे कतहु बाबूजीक मुकदमामे ओकर नाम नहि आबि जाए। निर्मला ओकर मुख देखि पुछलीह, “की भेल?” अमरेश धीरे कहलक, “हमहूँ बहीमे लिखने छी।” नीलकान्त ओकरा निकट अनलनि। “जे लिखने छी, ओहेन कहू। लिखब स्वयंमे अपराध नहि।” बच्चा एहि उत्तरपर भरोसा करय चाहलक, मुदा अदालतक बरामदा ओकर स्मृतिमे एखनो भारी छल।

किछु दिन बाद दीनानाथ प्रसाद साक्षी बनि उपस्थित भेलाह। अभियोजन हुनकासँ अनुसन्धानक क्रम, जप्तीक वस्तु, उपलब्ध शिकायत आ अभिलेखक संरक्षण सम्बन्धी प्रश्न कएलक। दीनानाथ स्पष्ट कएलनि जे पहिल राति हुनका जे प्रत्यक्ष भेटल, ओहि सम्बन्धमे हुनकर विवरण अछि। बाहरी सूचना देनिहारक कथन स्वतंत्र पुष्टि बिना अन्तिम प्रमाण नहि मानल जा सकैत। न्यायालयक कक्षमे ओ वर्दीमे नहि, साधारण साफ पोशाकमे उपस्थित छलाह। रेवतीकेँ ओहि रातिक सतर्क अधिकारीक चेहरा स्मरण आयल।

शिवनारायणक प्रति-परीक्षण आरम्भ भेल। “अहाँ पहिल विवरणमे ढीला कागज सत्रह लिखने छी?” दीनानाथ कहलनि, “हाँ।” “कार्यालयक बादक नकलमे उन्नैस किएक?” “एक सम्भावना अछि जे आध पन्ना अलग गनल गेल। मुदा हम एहि कारणक अन्तिम पुष्टि नहि कऽ सकलहुँ।” “मूल गिनती कसक समक्ष भेल?” दीनानाथ दू साक्षीक नाम बतौलनि, फेर स्वीकार कएलनि जे प्रत्यक्ष गिनती सभक सामने नहि भेल छल। “ई भिन्नता अहाँ जाँच-पञ्जीमे दर्ज कएने छी?” “हाँ, प्रश्नक रूपमे।”

“अहाँ कहैत छी प्रश्नक रूपमे,” शिवनारायण कहलनि, “तखन ई अन्तर एखन धरि अनिर्णीत अछि?” दीनानाथ उत्तर देलनि, “एहि विशेष बिन्दुपर, हँ। अन्य वस्तुक जप्ती आ जाँचक आधारसँ एकरा अलग देखल जाए।” शिवनारायण एक क्षण अधिकारीकेँ देखलनि। ओहि उत्तरमे प्रतिरक्षा पक्षक प्रश्नक स्वीकृति छल, मुदा सम्पूर्ण जाँचक परित्याग नहि। शिवनारायण दोसर प्रश्न कएलनि, “नीलकान्तक दुकानक वैध उधार-व्यापारक बारेमे अहाँ

जाँच कएने छी?” अधिकारी कहलक जे किछु ग्राहकक बयान लेल गेल अछि। “सभ ग्राहकक?” “नहि।”

सरकारी अधिवक्ता पुनः प्रश्न करबाक अवसर माँगलक। ओ दीनानाथसँ पुछलक जे सत्रह आ उन्नैसक अन्तर जप्त पैघ बहीक अस्तित्वकेँ बदलैत अछि कि नहि। अधिकारी उत्तर देलनि, “पैघ बहीक अस्तित्वपर नहि; किछु ढीला पन्नाक पहचान आ संख्या अलग प्रश्न अछि।” सरकारी अधिवक्ता एहि आधारपर अभियोजनक मूल कथन सुरक्षित रखबाक प्रयत्न केलक। शिवनारायण पुनः प्रश्न करैत कहलनि जे जप्त वस्तुक अस्तित्व आ ओकर प्रत्येक पन्नाक प्रामाणिकता एक समान नहि। न्यायालय दूनू उत्तर दर्ज कएलक, निष्कर्ष सुरक्षित रखलक।

जखन दीनानाथक गवाही समाप्त भेल, रेवती एकटा प्रश्न अपन पितासँ पुछबाक चाहलीह—एहि अधिकारीक लिखल केस-पञ्जीमे अनिश्चितता छल, मुदा पुलिसक अभियोगमे दृढ़ता किएक? शिवनारायण कहलनि, “अभियोजनक काज उपलब्ध प्रमाणसँ आरोप स्थापित करबाक अछि। अनुसन्धानक अधिकारी जे नहि जनैत अछि, ओकरा कहबाक अधिकार रहबाक चाही। दूनू स्वर अलग होइतो प्रक्रियाक भीतर स्थान पबैत अछि।” रेवती बुझलीह जे सत्यक प्रश्नक उत्तर पुलिस अथवा बचाव पक्षक एकल आवाजमे नहि, समस्त प्रमाणक परीक्षणमे खोजल जाएत।

ओहि दिन कचहरीक आँगनमे छाता बेचयवला एक बूढ़ लोक बैठल छल। ओकरा रोज अदालतक लोक चाही छल; बरखा नहि पड़ल तँ व्यापार घटैत छल। रेवती कचहरीसँ बाहर ओकरा पुछलीह, “अहाँ कतेक वर्षसँ एतय छी?” बूढ़ उत्तर देलक, “सताइस वर्ष।” रेवती चौंकि गेलीह। “तखन अदालत बहुत बदलल होयत?” बूढ़ कहलक, “न्यायाधीश बदललाह, वकील बदललाह, कागजक रंग बदलल। मुदा जकरा सुनबाईक दिन बुझाइत नहि, ओ एखनो हमरा पुछैत अछि।” बूढ़क एहि उत्तरमे न कानून छल, न उपदेश; कचहरीक रोजक जीवनक साक्ष्य छल।

रेवती ओ बूढ़क बात पिताकेँ कहलीह। शिवनारायण मुस्कुरौलनि। “कागजक प्रतिलिपि लोककेँ देल जा सकैत अछि,” ओ कहलनि, “मुदा ओकर अर्थ बुझबाक सहायता नहि भेटल तँ

न्याय दूर रहि जाइत अछि।” हुनका अपन जवानीक एक घटना स्मरण भेल जे एक अनपढ़ महिला अदालतसँ जमानतक आदेश मिलने बादो महीना भरि एहि प्रतीक्षामे रहलि जे कोनो सिपाही घर आबि ओकर पतिकेँ छोड़ि जाएत। कागजी आदेशक कार्यान्वयनक विधि ओ नहि जनैत छलीह। “न्यायक दुआरि खोलब पर्याप्त नहि,” शिवनारायण कहलनि, “भीतरक बाटो देखायब पड़ैत अछि।”

ताहि साँझ निर्मलाक घरमे नेहक एक छोट सभा भेल। चम्पा, कमलेश्वरक पत्नी आ पड़ोसक दू महिला आबि बैसलीह। हुनका सभक चर्चा अपराधक अभिलेखपर नहि, बच्चाक पढ़ाइ आ दुकानक विश्वासपर छल। एक महिला कहलीह जे पुलिस आएला बाद ओकर पति नीलकान्तक दुकानसँ सामान नहि आनय चाहैत अछि। दोसर कहलीह जे नीलकान्तक दोषी होयबाक निर्णय अदालत करत; एखन परिवारक अन्नक सम्बन्ध तोड़ब उचित नहि। निर्मला ककरो पक्षमे निर्णय नहि देलीह। ओ केवल सुनैत रहलीह—समाजक अपन-अपन अनौपचारिक अदालत सेहो चलैत अछि।

अमरेश एहि वार्ताकेँ भीतरसँ सुनि रहल छल। ओकरा प्रौढ़ लोकक निर्णयक तीव्रता देखिकय आश्चर्य भेल। जकरा बाबूजीक दुकानमे उधार भेटैत छल, ओ विश्वासक बात करैत छल; जकर पैसा गुमल छल, ओ अपराधक। बालक पहिल बेर बुझलक जे सभ लोक अपन अनुभवसँ सत्यक दिशा देखैत अछि, मुदा दृष्टिक दिशा आ वस्तुक पूरा आकार अलग होइत अछि। राति ओ विद्यालयक कापीमे लिखलक—“अदालतमे सभ गवाहीक क्रम होइत अछि, मुदा घरमे सभ बात एक्के बेर बाजल जाइत अछि।”

एहि पंक्तिक नीचाँ ओ अपन पिताक नाम लिखलक। ओकरा आश्चर्य भेल जे नाम लिखला मात्रसँ कागजपर कोनो दोष अथवा निर्दोषता नहि उतरैत। कखनो-कखनो न्यायालयक लोक जे बात दिन भरि गवाहीसँ खोजैत छथि, बच्चा रातिक एकान्तमे ओकर अर्थ बुझबाक बाटपर पहिल पएर रखैत अछि। आब अमरेश चाहैत छल जे ओ अपन पिता सँ सभ प्रश्न पुछि सके, मुदा किछु प्रश्नक उत्तर घरमे नहि, एक दिन साक्ष्यक परीक्षा पछाति न्यायालयमे भेटत।

अदालतसँ बाहर आबिते रेवती पिता सँ कहलनि, “आज दीनानाथ सत्य छिपौलनि नहि।” शिवनारायण कहलनि, “सत्यक प्रति कर्तव्यक प्रश्न व्यक्ति केकर पक्षमे अछि, ताहिसँ छोट

नहि होइत अछि। पुलिसक अधिकारी सेहो साक्षी अछि। ओकरा निन्दा करब हमरा काज नहि; ओकर देखल आ अनुमानक अन्तर देखब आवश्यक अछि।” रेवती पुछलीह, “जँ ओकर अनिश्चितता अभियोजनकेँ हानि पहुँचाओत?” पिता उत्तर देलनि, “तबो अनिश्चितता लुकेबाक अनुमति नहि अछि। अदालतकेँ जे अनिश्चित अछि, से जनबाक अधिकार अछि।”

दीनानाथ स्वयं सेहो एहि दिन चैनसँ नहि छलाह। वरिष्ठ अधिकारीक अपेक्षा छल जे जप्ती-प्रकरण निष्कलंक देखाओल जाए। मुदा दीनानाथ केँ अपन लिखल मूल टिप्पणीपर पछतावा नहि भेल। ओ कार्यालय लौटि अधीनस्थकेँ कहलनि, “अभिलेखमे सुधार करबाक अछि तँ सुधारक विधि रहत। मूल पन्ना काटिकय नव सत्य बनायब नहि।” सहकर्मी सिर हिलौलक। दुनू बीच नीलकान्त दोषी अछि कि नहि, एहि विषयमे एकटा शब्द नहि बाजल गेल। ओहि दिन हुनकर काज अभिलेखक उत्तरदायित्व छल।

राति घरमे अमरेश विद्यालयक कापी खोलने बैसल छल। ओ ‘सत्य’ शब्दक अर्थ लिखबाक अभ्यास करैत छल। गुरुजी गृहकार्य देने छलाह—एक वाक्य बनाउ। अमरेश पहिने लिखलक, “सत्य ओ अछि जे हम देखलहुँ।” फेर काटि देलक। ओकरा याद आयल जे मथुरानन्द अलमारी नहि खुलैत देखलाह, मुदा मेजपर बही देखने छलाह। ओ फेर लिखलक, “जे हम देखलहुँ, ओहि बारेमे सत्य कहि सकैत छी; जे नहि देखलहुँ, तकरा जाँचबाक चाही।” गुरुजीक लेल ई वाक्य बहुत लम्बा छल, मुदा अमरेशकेँ पहिल बेर अपन मनक बात लिखल लगल।

कमलेश्वर दास रेवतीकेँ अपन पुरान व्यापारक एक घटना सुनौलनि। अनेक वर्ष पहिने ओ नीलकान्तसँ पाँच बोरा चाउर लेने छलाह। लिखल गेल छल चारि बोरा, किएक तँ पाँचम बोरा ओही दिन नीलकान्तक एक सम्बन्धी अपन नामपर लऽ गेल छल। महिनाक अन्तमे दूनू परिवारक हिसाब एक संग जोड़ल गेल आ विवाद भऽ गेल। आखिर दूनू व्यक्ति बैसि कागज सुधारने छलाह। “कागज गलत छल,” कमलेश्वर कहलनि, “मुदा गलत लिखनिहारक मन गलत नहि छल। एहन भेद देखबाक बुद्धि अदालतकेँ चाही।” रेवती उत्तर देलनि, “आ जँ जानबूझिकय रकम बदली देल गेल हो?” वृद्ध कहलनि, “तखन ओकरा सेहो देखबाक चाही। हम अपन अनुभव कहैत छी, सभक प्रमाण नहि।”

बाजारक लेखन-पद्धति एक इतिहास रखैत छल। केओ अङ्क रोमन रूपमे नहि, स्थानीय देवनागरीमे लिखैत छल; केओ गामक नाम संक्षेप करैत; केओ बकायाक आगाँ लाल चिह्न दैत। रेवती बहिखाताक पुरान निजी प्रतिलिपि देखैत एक दिन ध्यान देलनि जे एक लाल रेखाक अर्थ परिवारमे ‘उधार चुकल’ छल, मुदा आन व्यापारीक हिसाबमे ओही रेखाक अर्थ ‘अझुका उधार’ होइत छल। एकरे कारण ओ अदालतमे कोनो चिह्नक अर्थ स्वयं निश्चित करबाक साहस नहि कएलनि। प्रमाणक अर्थ ओकर प्रसंगसँ बनैत अछि, आकारसँ मात्र नहि।

शिवनारायण रेवतीकेँ अपन कार्यालयक एक पुरान मुकदमाक अनुभव सुनौलनि। एक दीवानी वादमे नापीक कागजपर खेतक दिशा उल्टा लिखल गेल छल। दस वर्षक विवादक बाद एक दिन वृद्ध नापीकारक गवाहीसँ स्पष्ट भेल जे नक्शा बनबैत समय उत्तरक निशान गलत राखल गेल। “दस वर्ष,” पिता कहलनि, “एक छोट निशानक अर्थपर लोक झगड़ैत रहल। मुदा ओहि दस वर्षमे जमीनपर जे झगड़ा, शंका आ वैमनस्य जन्मल, ओकर मुआवजा कोन न्यायालय देत?” रेवती पुछलीह, “तखन न्यायालयक काज व्यर्थ?” “नहि,” पिता कहलनि, “व्यर्थ ओ काज अछि जे त्रुटि जनितो ओकरा सही मानि राखय। न्यायालय सुधारक अवसर अछि, समय वापस देबाक जादू नहि।”

ओहि साँझ रेवती कानूनक पुस्तकसँ विशेषज्ञ-साक्ष्यक अध्याय पढ़लीह। हुनका देखायल जे हस्तलेखक विशेषज्ञ एक मत देत, मुदा ककरो लिखावट जाननिहार व्यक्ति, दस्तावेजक परिस्थिति आ अन्य वस्तुनिष्ठ प्रमाण सेहो महत्त्वपूर्ण रहत। ओ एक सहेलीकेँ पत्र लिखलीह जे अदालतमे ‘विज्ञान’ शब्दक अर्थ अंतिम निर्विवाद उत्तर नहि, परीक्षणक एक विधि सेहो होइत अछि। सहेली भौतिकी पढ़ैत छलीह। ओ उत्तरमे लिखलनि जे मापक उपकरण गलत होयत तँ वैज्ञानिक सेहो फेर मापैत अछि। विधिक ज्ञान आ वैज्ञानिक अनुशासन एहि छोट पत्राचारमे एक-दोसराक निकट आयल।

अगिला सुनबाईसँ पहिने शिवनारायण अनुरोध तैयार कएलनि जे जप्त बहीक विवादित लिखावटक सम्बन्धमे उपयुक्त विशेषज्ञक मत लेल जाए। रेवती पूछलीह, “केवल अक्षर भिन्न लगलासँ विशेषज्ञ बोलायब जरूरी अछि?” “जरूरी होयबाक आधार न्यायालय परखत,” पिता कहलनि। “पहिने ई देखबाक अछि जे कोन प्रविष्टिक लेखकक पहचान विवादमे निर्णायक

अछि। विशेषज्ञक मत अन्तिम सत्य नहि, न्यायालयक परीक्षणक एक साधन अछि। पुरान साक्ष्य-विधिमे विशेषज्ञक अभिमत, सिद्ध हस्तलेख आ सम्बन्धित व्यक्तिक गवाहीक अलग स्थान अछि।”

रेवती एहि आवेदनक भाषा बारम्बार सुधारलीह। पहिल पंक्तिमे लिखने छलीह—“स्पष्ट अछि जे लेख नीलकान्तक नहि।” शिवनारायण ओ पंक्ति काटि देलनि। “एखन स्पष्ट नहि,” ओ कहलनि। “लिखू जे लिखावटक लेखक-सम्बन्धी वास्तविक विवाद उत्पन्न भेल अछि; तुलनात्मक परीक्षण आवश्यक होयबाक कारण प्रस्तुत करैत छी।” रेवती निराश नहि भेलीह। हुनका बुझायल जे आवेदनक एकटा शब्द बदललासँ अधिवक्ताक दाबी सत्यक नजदीक आबि सकैत अछि।

नीलकान्तकेँ एहि बातपर किछु संतोष भेल। “तखन हमर नहि लिखल पन्ना अलग भऽ जाएत?” ओ पुछलक। शिवनारायण उत्तर देलनि, “हो सेहो सकैत अछि, नहि सेहो। विशेषज्ञक मत, मूल बहीक अवस्था, लिखावटक ज्ञात नमूना आ गवाही—सभ देखल जाएत। कोनो बातक वचन नहि देब।” नीलकान्तक चेहरापर थकावट छल। न्यायालयमे प्रत्येक आशाकेँ एक सम्भावना बनाकय राखल जाइत छल, मुदा एहि सावधानीक बिना निर्णयक न्यायसंगत आधार नहि बनैत।

ओम्हर कमलेश्वर दास रामकिशुन महतोक बेटाक पता लऽ आएलाह। बेटा सुदर्शन अपन गाम छोड़ि निकट बजारमे रहैत छल। ओकर पिता सचमुच पाँच वर्ष पहिने मरने छलाह, मुदा ओहि नामक दोसर रामकिशुन सेहो एक अलग टोला मे छल, से कमलेश्वर जानि नहि पएने छलाह। रेवती एहि विवरणकेँ पक्का सत्य नहि मानलनि। ओ पिताक संग निर्णय कएलनि जे आवश्यक भेल तँ विधिसम्मत साक्षीकेँ बुलाओल जाएत। एहि सुनबाईमे मृतकक नामक पहेली एखन अलग रखबाक छल; जप्तीक सूची आ लिखावटपर न्यायालयक प्रश्न सामने छल। रेवती चाहैत छलीह जे दू अधूरा रहस्य एक-दोसराक प्रमाण बनि नहि जाए।

बरामदामे कागजक गठरी सम्हारैत बैसल लोकसभकेँ एहि मुकदमाक रहस्यक भनक नहि छल। हुनकर अपन-अपन पीड़ा छल, आ प्रत्येक पीड़ा अगिला सुनबाईक प्रतीक्षा करैत छल।

न्यायालयक ओहि दिनक बरामदामे वर्षाक अन्तिम पानि खसि रहल छल। विमलाकान्त मिश्रक समक्ष विशेषज्ञ-परीक्षण सम्बन्धी आवेदन प्रस्तुत भेल। सरकारी अधिवक्ता कहलनि जे अभियोजन सेहो विवादित कागजक स्रोत स्पष्ट करबाक पक्षमे अछि, मुदा परीक्षणक विषय सीमित होयबाक चाही। न्यायाधीश पूछलनि, “कुन पन्ना? कुन हस्तलेख? कुन उपलब्ध नमूना?” शिवनारायण एक-एक विवरण देखौलनि। ओ ककरो दोषी वा निर्दोष घोषित नहि करैत छलाह; केवल परीक्षणयोग्य प्रश्न निर्धारित करैत छलाह।

न्यायाधीश आवेदनपर कारणयुक्त आदेश लिखौलनि। विवादित पन्नाक संरक्षण, उपलब्ध नमूनाक सत्यापन आ उपयुक्त विशेषज्ञक मत प्राप्त करबाक प्रक्रिया विधिसम्मत रूपसँ विचारल जाए, से निर्देश देल गेल। विशेषज्ञक अभिमतक मूल्य अन्तिम विचारणमे अन्य साक्ष्यसँ मिलाकय परखल जाएत। रेवती आदेशक प्रत्येक शब्द सुनलीह। हुनका पिता एक बेर आँखिसँ इशारा कएलनि—ई जीत नहि, सत्यक एक नव परीक्षणक दुआरि अछि।

एहि बीच नीलकान्तक दुकानपर एक अपरिचित व्यक्ति आएल। ओ एक छोट तेलक टीन खरीदलक, दाम देलक, फेर जखन निर्मला पाछाँ मुड़लीह तँ धीमे स्वरमे पूछलक, “जप्त बहीक पैंतालीसम पन्ना अहाँ देखलहुँ?” नीलकान्त चौंकि गेलाह। “अहाँ के?” अपरिचित कहलक, “हमरा नामसँ कोनो लाभ नहि। बस, ई जानि लिअ जे सभ लिखावट एक हाथक नहि।” ओकर आवाजमे धमकी नहि, एकटा अजीब उतावलापन छल। नीलकान्त उत्तर देबाक पहिने ओ गलीमे चलि गेल।

निर्मला एहि घटनाक विवरण रेवतीकेँ कहलनि। रेवती तुरन्त सलाह देलनि जे अनुमानक आधारपर अपरिचितकेँ अपराधी अथवा उद्धारकर्ता नहि मानल जाए। नीलकान्तकेँ जे प्रत्यक्ष स्मरण अछि, से अलग लिखि राखल जाए। दूकानक अन्य व्यक्ति केओ ओकरा देखने छल कि नहि, से पूछल जा सकैत अछि। शिवनारायण सेहो एहि सूचना केँ कानूनसम्मत उपायसँ सम्बन्धित अनुसन्धान-अधिकारी धरि पहुँचौने उचित मानलनि।

रात्रिमे रेवती अपन नोटक पुरान तीन पंक्ति फेर खोललीह—प्रत्यक्ष, कथन, अज्ञात। ओहि दिन पहिल पंक्तिमे लिखलनि: मथुरानन्द मेजपर बही देखलनि; रफीक बही बाहर आबि चुकलाक बाद पहुँचलाह; दीनानाथ दू प्रतिलिपिक पन्ना-संख्याक अन्तर स्वीकार कएलनि।

दोसर पंक्तिमे लिखलनि: अपरिचित व्यक्ति पैंतालीसम पन्नाक चर्चा कएने अछि। तेसर पंक्तिमे: ओ व्यक्ति के छल, पन्नापर की अछि, लिखावट ककर, आ रामकिशुनक प्रविष्टिसँ एकर कोनो सम्बन्ध अछि कि नहि।

शिवनारायण भीतर आबि पुछलनि, “आब की बुझलहुँ?” रेवती कहलनि, “जप्तीक सूचीमे सभ वस्तुक नाम अछि, मुदा वस्तुक यात्रा नहि। कोन हाथ उठौलक, के देखलक, कखन गनल गेल, के लिखलक—एहि प्रश्नसँ कागजक अर्थ बदलि जाइत अछि।” पिता किछु नहि कहलनि। ओ केवल मेजपर एक पुरान लकड़ीक पेटी राखलनि जाहिमे बीते वर्षसभक न्यायिक प्रतिलिपि छल। “एहि पेटीमे कतेको मुकदमाक उत्तर अछि,” ओ कहलनि, “मुदा कोनो मुकदमाक पूरा जीवन नहि।”

पाछाँ कचहरीक अभिलेख-कक्षमे जप्त बही अपन निर्धारित स्थानपर सुरक्षित छल। ओकर पैंतालीसम पन्नाक किनारमे नील स्याहीक एक नाम लिखल छल, तकर नीचाँ कारी स्याहीमे रकम। अक्षरक आकार आसपासक पन्नासँ भिन्न छल। एकरे आधारपर ई तय नहि भऽ सकैत छल जे नाम गलत अछि, रकम झूठ अछि, अथवा पन्ना कोनो अनधिकृत व्यक्तिक लिखल अछि। मुदा ई अवश्य छल जे एहि एक पन्नाक लेखनक बारेमे आब न्यायालये प्रश्न उठि चुकल छल।

रातिक अन्तिम पहरमे अमरेश सुतल छल। निर्मला दीपकक लग बैसल छलीह। नीलकान्त बिना बोलने बाहरी गलीक अन्हार देखैत छलाह। हुनका अपरिचित व्यक्तिक प्रश्न फेर सुनाइत छल—पैंतालीसम पन्ना देखलहुँ? ओहि पन्नाक बारेमे ओ स्वयं कतेक जनैत छलाह, से कहबाक साहस एखन हुनकासँ नहि भेल।

दूर कचहरीक पुरान भवन चुप छल। जप्तीक सूची मेजेपर उपलब्ध वस्तु गनैत छल; मुदा कोनो सूची ई नहि कहि सकैत छल जे प्रत्येक हस्ताक्षरक पाछाँ केकर भय, प्रत्येक नामक पाछाँ केकर जीवन, आ प्रत्येक रकमक पाछाँ केकर अभाव छल। रेवती घर घुरैत सेहो ओहि प्रश्नसँ मुक्त नहि भऽ सकलीह, जे कतेको वर्ष धरि हुनका पाछाँ करत: न्यायालयमे पहुँचल कागजक लेखक के अछि—आ ओकर अर्थ के निर्धारित करत?

अध्याय ३ — संसदक छाया

दिल्ली आ दरभंगा, दिसम्बर २००१

दिसम्बरक दिल्लीमे भोरि देरीसँ उजागर होइत अछि। धुँआ आ कुहेसाक बीच सड़कक बत्ती बुझि गेलाक बादो किछु काल धरि ओकर पीयर छाया हवा मे झूलैत रहैत अछि। रेवती झा अपन छात्रावासक खिड़की खोललीह तँ दू कबूतर छज्जापर सटल बैसल छल। आँगनमे नीमक पात झड़ि रहल छल। ओ अपन मेजपर राखल दण्ड-प्रक्रियाक पुस्तक बन्द कएलनि। राति भरि ओ गिरफ्तारीक बाद पहिल पेशी, पुलिसक निवेदन आ जमानतक न्यायिक विवेकक विषय पढ़ने छलीह। किताबमे सभ प्रक्रिया क्रमसँ चलैत छल; हुनका अपन पिताक अदालत याद आबि गेल, जतय क्रमक बीच मनुष्य ठाढ़ रहैत छल—भिजल कुर्ता, ठण्ढसँ काँपैत हाथ, आ घरमे प्रतीक्षा करैत बच्चा।

दिल्ली आएल हुनका एक वर्षसँ बेसी भऽ गेल छल। पढ़ाइ सँग-सँग एक वरिष्ठ अधिवक्ताक कार्यालयमे ओ अभिलेख क्रमबद्ध करबाक काम सीखैत छलीह। दरभंगासँ पिता प्रत्येक पन्द्रह दिनपर पत्र पठबैत छलाह। पत्रमे घरक कुशलक बाद न्यायालयक कोनो एक घटना अवश्य रहैत छल—कखनो एकटा गलत पता, कखनो साक्षीकेँ नहि भेटल यात्रा-भत्ता, कखनो अदालतक आदेशक प्रति लेल प्रतीक्षा करैत किसान। रेवती अपन उत्तरमे अधिनियमक धारा नहि, प्रश्न लिखैत छलीह। पिछिला पत्रमे लिखने छलीह—“जे कागज पर नाम अछि, ओकरा ओहि नामक मनुष्य मानबाक पहिने कोन प्रश्न पुछबाक चाही?” पिता उत्तर देने छलाह—“नाम पूछू, फेर पूछू लिखनिहार के छल, फेर पूछू ओहि समय ओ मनुष्य कतय छल।”

तेरह दिसम्बरक दिन विश्वविद्यालयमे हुनकर पूर्वाह्नक कक्षा छल। दिल्लीक उत्तर दिशिसँ आएल मित्र रईस मीर संग ओ पुस्तकालयक सीढ़ीपर भेटलीह। रईस श्रीनगरक छल, मुदा दिल्लीमे रहैत काल अपन परिचय बारम्बार देबय पड़ैत छलैक—लोक ओकर उच्चारण सुनि पहिने ठाम पूछैत, तकर बाद पढ़ाइ। ओ हँसिकय कहैत, “हम एतय विधि पढ़य आएल छी, अपन जन्मस्थानक सफाइ देबय नहि।” रेवती ओकर वाक्यक भीतरक थकावट बुझैत छलीह।

ओहि भोर ओ दूनू दुपहरियामे साक्ष्य-अधिनियमक अध्ययन करबाक विचार कएलनि। कोनो अनिष्टक आभास नहि छल।

दुपहरक किछु पहिने विश्वविद्यालयक बरामदामे लोक अचानक ठमकि गेल। एक छात्र दौड़ैत आबि कहल जे संसद भवनपर सशस्त्र आक्रमण भेल अछि। पहिने ककरो विश्वास नहि भेल। ककरो कहल विस्फोट, ककरो कहल गोली चलल, ककरो कहल समाचार गलत अछि। रेडियो रखनिहार चौकीदारक कोठरीक आगाँ भीड़ जुटि गेल। समाचार-वाचकक स्वर असाधारण रूपसँ कठोर छल। संसद परिसरमे हमला भेल छल; सुरक्षा-कर्मी सभ आक्रमण रोकबाक प्रयासमे प्राण देलनि। रेवतीक मुँहसँ शब्द नहि निकलल। कानूनक पुस्तक पढ़ैत ओ जे भवनक कल्पना करैत छलीह, ताहिपर आक्रमणक अर्थ हुनका बुझायल—व्यक्तिक मृत्यु, राष्ट्रक भय आ संस्थाक रक्षा एक्के क्षणमे उपस्थित भऽ गेल छल।

रईस रेडियोक ठीक पाछाँ ठाढ़ छल। ओकरा एक छात्र पूछलक, “अहाँक ओतय एहन बातक कोनो खबर छल?” प्रश्नक स्वरमे जिज्ञासासँ अधिक आशंका छल। रईस पलटिकय देखलक। “हम विधि पढ़ैत छी,” ओ धीरे कहल, “गुप्त समाचार नहि राखैत छी।” प्रश्न करनिहार छात्र अपन शब्दपर लजायल कि नहि, ई रेवती बुझि नहि सकलीह। मुदा भीड़क बीच जे चुप्पी पसरल, ताहिमे ओ एक नव प्रकारक डर चिन्हलीह—एकटा देशव्यापी हिंसाक समाचार आ एक निर्दोष व्यक्तिक परिचयक बीच लोक कतेक जल्दी पुल बना सकैत अछि।

ओहि साँझ दिल्लीक अनेक सड़कपर सशस्त्र पहरा छल। विश्वविद्यालयक फाटक जल्दी बन्द भऽ गेल। पुस्तकालयक पहरेदार विद्यार्थीक पहचान देखैत छल। रेवती छात्रावास लौटलीह तँ हुनकर सहेली माधवी कहलीह जे घरसँ लगातार दूरभाष आबि रहल अछि—सभ पूछैत अछि दिल्ली सुरक्षित अछि कि नहि। रेवती माता केँ समाचार देलनि जे ओ सुरक्षित छथि। माता पहिने रो पड़लीह, फेर पुछलीह, “संसदक लोक बचि गेलाह?” रेवती कहलनि, “हमरा सभ विवरण नहि मालूम। जे लोक रक्षा करैत प्राण देलनि, हुनकर समाचार सुनि मन भारी अछि।” हुनका सही संख्या अथवा घटना-विवरणक अनुमान लगायब अनुचित बुझायल।

रात्रिमे पिता सँ बात भेल। शिवनारायणक स्वर थाकल छल। ओ कहलनि, “आज एतय कचहरीमे सेहो सभक चेहरापर भय छल। हमर देशक संसदपर आक्रमण भेल अछि, एकरा

सामान्य घटना कोना कहब?” रेवती पुछलीह, “डरक समयमे न्यायालयक काज बदलि जाइत अछि?” पिता उत्तर देलनि, “काजक कठिनाइ बढ़ैत अछि। जे गिरफ्तार भेल, ओकर आरोपक कानूनी परीक्षा होयब बन्द नहि होइत। आक्रमण रोकनिहार लोककेँ सम्मान देब आ आरोपितक अधिकारक रक्षा करब परस्पर विरोधी नहि अछि।” रेवती ओहि वाक्यकेँ अपन लिखबाक कापीमे उतारि लेलनि।

दरभंगामे ओहि दिन नीलकान्त साहक दुकान साँझे बन्द भऽ गेल छल। अमरेश आब तेरह वर्षक होमयवला छल; समाचार सुनिकय ओकरा संसदक चित्र याद पड़ल जे पाठ्यपुस्तकमे देखल छल। ओ पितासँ पुछलक, “जतय देशक सभ बात होइत अछि, ओतय गोली चलय लगल तँ हमर सन लोकक के सुनत?” नीलकान्त ओकर प्रश्नक उत्तर देबासँ पहिने देरी कएलनि। “जकरा रक्षा करबाक काज छल, ओ सभ ठाढ़ रहल,” ओ कहलनि, “हमरा सभ हुनकर ऋणी छी।” निर्मला चूल्हिपर खिचड़ी हिलबैत छलीह। परिवारक अपन मुकदमाक चिन्ता अचानक बहुत छोट लगल, मुदा मिटि नहि गेल।

अगिला दिन शिवनारायण अदालत गेलाह तँ बरामदाक पुरान घड़ी दस बजने छल। दीनानाथ प्रसाद पुलिसक वर्दीमे उपस्थित छलाह। हुनकर आँखि रातिक पहरासँ थाकल छल। दीनानाथ कहलनि, “बजारमे अस्थिरता अछि। अफवाहक ढेर लगल अछि। जकरा जे बात सुनाइत अछि, से पुलिस धरि पहुँचबैत अछि।” शिवनारायण पुछलनि, “सभ सूचना एक समान लिखैत छी?” दीनानाथ पहिनका सन उत्तर देलनि, “देखल, सुनल आ अनुमान—अलग रखबाक चाही। मुदा भीड़क भयक समय एहि अन्तरक रक्षा करब कठिन अछि।” दुनू अपन-अपन काज दिसि बढ़ि गेलाह।

नीलकान्तक बहीक पैंतालीसम पन्ना ओहि मासमे सेहो विशेषज्ञक प्रतीक्षामे छल। मूल पन्नाक सुरक्षित रखबाक आदेश छल; तुलनाक लेल उपयुक्त लिखावट जुटाओल जा रहल छल। अदालतमे तारिख बढ़लाक समय शिवनारायण नीलकान्तकेँ स्पष्ट कहलनि जे विशेषज्ञक मत आबि गेलापर सेहो समस्त विवाद अपने-आप समाप्त नहि होयत। नीलकान्त असन्तुष्ट छलाह। “हमर बेटा एक वर्षसँ पूछैत अछि—पन्ना के लिखलक?” शिवनारायण उत्तर देलनि,

“ताहि प्रश्नक उत्तर लेल जल्दीसँ बेसी विश्वसनीयता चाही।” नीलकान्त चुप भऽ गेलाह, मुदा हुनकर चेहरापर इंतजारक चोट रहि गेल।

हमलाक तीन दिन बाद दरभंगाक एक संकरा गलीमे कागजक दुकान चलौनिहार फैज़ान आलमकेँ पुलिस पूछताछ लेल लऽ गेल। फैज़ान बीस वर्षक छल, साँझमे स्नातकक कक्षा करैत आ दिनमे छायाचित्रक नकल बनबैत छल। ओकर दुकानमे विवाहक निमन्त्रण, विद्यालयक सूचना, छोट व्यवसायीक बिल आ अनेक तरहक छपल कागज बनैत छल। नगरक एक कार्यालयक प्रवेश-पत्र सन देखाइत दू कागज ओहि दुकानसँ भेटल छल; पुलिसकेँ आशंका भेल जे सरकारी मुहरक नकल बनाओल गेल अछि। फैज़ान कहलक जे कागजक मूल नमूना एक ग्राहक देलक, मुदा ओहि ग्राहकक नाम पूरा नहि जनैत अछि। पुलिस एहि कथनसँ सन्तुष्ट नहि छल।

दुकानक आगाँ ओहि समय जे भीड़ जुटल, ताहिमे किछु लोक ‘देशद्रोही’ शब्द बजबय लागल। ककरो प्रवेश-पत्र देखल नहि छल; तइयो शब्द आगू बढ़ैत रहल। पुलिसक एक उपनिरीक्षक अशोक राय भीड़केँ हटबैत कहलनि जे प्रकरण एखन जाली अभिलेखक अनुसन्धानक अछि, संसदपर आक्रमणसँ कोनो स्थापित सम्बन्ध नहि। हुनकर सावधानीक स्वर भीड़क भीतर गुम भऽ जाइत छल। फैज़ानक माए शहीदा खातून बरामदामे ठाढ़ कनैत छलीह। ओ पुलिसकेँ केवल एतेक पुछैत छलीह—“हमर बेटाक अपराध की लिखल गेल अछि?” भीड़ एहि सरल प्रश्नक उत्तर देबाक बदला ओकर घरक दरवाजापर दोषक छाया बना देलक।

अशोक राय फैज़ानक सहकर्मी बिनोदसँ अलग बात कएलनि। बिनोद कहलक जे प्रवेश-पत्रक नमूना एक अज्ञात ग्राहक देने छल। पुलिस ओकर कथन लिखलक। मुदा बिनोदक पहिल कथनमे ‘सरकारी कार्यालय’ शब्द छल, दोसरमे ‘कारखाना’। ई अन्तर छोट नहि छल। अशोकक सहायक जल्दीमे कहलनि जे कागज बनौनिहार सभकेँ एकहि उद्देश्यक सहभागी मानि लेल जाए। अशोक टोकलक—“जे जालसाजीक आरोप अछि, तकरा प्रमाणित करबाक अछि। भीड़क चिल्लाहट कानूनक धारा नहि।” दीनानाथ प्रसाद, जे ओहि दिन अन्य अनुसन्धानक काजसँ थानामे छलाह, ई बात सुनि अपन पुरान जप्ती-सूची स्मरण कएलनि।

फैज़ानक बहिन नाजिया उच्च विद्यालयमे पढ़ैत छलि। ओ अपन भाइकेँ पुस्तकक दोकानसँ कागज आनय कहने छलीह। आब ओही गलीसँ गुजरैत लोक ओकरा प्रश्न करैत छल—“तोहर भाय की बनबैत छल?” नाजिया पहिने प्रतिकार कएलक, फेर मौन भऽ गेलि। विद्यालयमे एक शिक्षिका ओकरा अलग बजा कहलनि, “जाँचक बात जाँच करयवला पर छोड़। पढ़ाइ छोड़ब नै।” नाजियाकेँ शिक्षकक सहानुभूति सुख दैत छलि, मुदा ताहिसँ ओकर घरक रोजक भय कम नहि भेल।

शहीदा संध्यामे शिवनारायणक कार्यालय पहुँचलि। हुनका एहि अधिवक्ताक नाम एक पुरान ग्राहक बतौने छल। शिवनारायण नीलकान्तक प्रकरणक कागज बन्हि रहल छलाह। ओ शहीदाकेँ बैसबाक कहलनि, जल देलनि आ एक-एक प्रश्न पुछलनि। गिरफ्तारीक समय, कागजक प्रकार, दुकानदारक दायित्व, जप्तीपर हस्ताक्षर, पुलिसक उपस्थित व्यक्ति—सभ लिखलनि। शहीदा बारम्बार कहैत छलीह, “हमर बेटा निरपराध अछि।” शिवनारायण कहैत रहलाह, “अहाँक भरोसा महत्त्वपूर्ण अछि; अदालतमे हम जकरा दस्तावेजसँ देखौने जा सकैत अछि, से खोजब।” हुनका ज्ञात छल जे एक मायक विश्वासकेँ ठुकराएब निर्दयता अछि, मुदा ओकरा न्यायिक प्रमाणक स्थान देब सेहो अन्याय होयत।

एहि बेर रेवती दिल्लीमे छलीह। पिता ओकरा दूरभाषपर प्रकरणक बात सुनौलनि। रेवती पुछलीह, “संसदक हमलासँ जोड़ि आरोप लिखल गेल?” पिता उत्तर देलनि, “जे कागज हमरा भेटल, ताहिमे जालसाजी-सम्बन्धी आरोप अछि। लोकक कहब अलग। हम एहि दूनूक भेद अदालतक सामने रखब।” रेवती सोचलीह जे आक्रमणक दुःखक उचित उत्तर सुरक्षा-व्यवस्था सुदृढ़ करब होइत अछि; निर्दोष सिद्ध नहि भेल मनुष्यकेँ पहचानक आधारपर दोषी मानि लेब नहि। ओ पिता सँ कहलनि, “हम छुट्टीमे आबी। कागज पढ़ि सीखबाक अछि।” शिवनारायण कहलनि, “आबू। मुदा सुनू—पीड़ितक परिवारक भय आ राष्ट्रक शोक दुनूकेँ गंभीरतासँ बुझू।”

फैज़ानकेँ दण्डाधिकारीक समक्ष उपस्थित कएल गेल तखन शहीदा आ नाजिया बरामदामे बैसल छलीह। विमलाकान्त मिश्र पुलिससँ गिरफ्तारीक समय, जप्त सामग्री, आरोपक स्वरूप आ आगाँक जाँचक आवश्यकता पूछलनि। अशोक राय कहलनि जे जाली प्रवेश-पत्रक मूल

नमूना आ देनिहार व्यक्तिक खोज आवश्यक अछि। सरकारी पक्षक आशंका छल जे फैज़ानकेँ तत्काल छोड़ला पर दुकानक अन्य अभिलेख बदलल जा सकैत अछि। शिवनारायण कहलनि जे दुकान पहिनेसँ पुलिसक निरीक्षणमे अछि; अभियुक्तक भागबाक सम्भावना आ साक्ष्य-नष्ट करबाक वास्तविक आधार अलग स्थापित कएल जाए।

न्यायाधीश ओहि दिन जमानतपर अन्तिम निर्णय नहि देलनि। आवश्यक अभिलेख आ पुलिसक प्रतिवेदन प्रस्तुत करबाक लेल तिथि निर्धारित कएलनि; हिरासतक विषयमे कारण दर्ज कएलनि। शहीदा बुझलीह जे बेटा एखन घर नहि लौटत। ओ अदालतक बाहर आबि शिवनारायणसँ पुछलनि, “जँ कल फेर नहि छोड़त?” अधिवक्ता कहलनि, “तखन अगिला विधिक उपाय अछि। मुदा हम किछु वचन नहि देब जे न्यायाधीशक अधिकारमे अछि।” शहीदाक आँखि भरि गेल। हुनका सत्य चाही छल, केवल आश्वासन नहि; तइयो सत्यक एहि मन्द यात्रासँ ओ थाकि गेल छलीह।

अमरेश ओहि दिन नाजियाकेँ अदालतमे देखलक। दुनू एक-दोसराक नाम नहि जनैत छल, मुदा एकहि बेंचपर बैसल छल। अमरेश अपन पिताक मुकदमाक पुरान अनुभवसँ जानि चुकल छल जे निर्णयमे समय लगैत अछि। नाजिया पुछलक, “तोहर पिताजी कतेक दिनमे घर आयल छलाह?” अमरेश उत्तर देलक, “पहिल पेशीक बाद जमानत भेल। मुदा मुकदमा एखन चलि रहल अछि।” नाजिया दोसर प्रश्न कएलक, “तखन घर आयब आ निर्दोष होयब एक नहि?” अमरेश सिर हिलौलक। ओकरा अपन तेरह वर्षक आयुमे एहि भेदक भार असह्य लगल।

साँझ नीलकान्तक घरमे अमरेश एहि भेटक बात सुनौलक। निर्मला ओकर बात सुनि दीर्घ साँस लेलीह। नीलकान्त कहलक, “लोक पहिने दोष लगबैत अछि; बादमे पूछैत अछि।” निर्मला तुरन्त उत्तर देलीह, “अहाँ अपने मामला मे किछु हिसाब मानि लेने छी। सभ दोष केओ आनपर नहि डालि सकैत।” नीलकान्त चुप भऽ गेलाह। परिवारमे पहिल बेर अमरेश सामने माता-पिता अपन मुकदमाक सत्यपर एना स्पष्ट बात कएलनि। बालक देखलक जे माया सत्यकेँ बदलि नहि दैत; कखनो माया सत्य कहबाक साहस बनैत अछि।

दिल्लीमे आक्रमणक बादक सप्ताह मानो दू अलग कालमे बाँटि गेल छल। घड़ीक समय सामान्य चलैत छल; बस सभ रस्तापर निकलैत छल, विद्यालयमे परीक्षा होइत छल,

दूकानसभ खुलैत छल। मुदा प्रत्येक सार्वजनिक भवनक दुआरिपर सशस्त्र पहरा बढ़ल छल आ लोकक आँखि अनजान चेहराकेँ अधिक देर धरि देखैत छल। रेवती एक दिन सायंकाल पुस्तकालयसँ लौटैत संसद भवनक दिसि बढ़यवला मार्गपर ठमकि गेलीह। दूरसँ ओहि भवनक दीवार नहि, ओकर सुरक्षा-घेराक एक भाग मात्र देखाइत छल। ओ कल्पना कएलनि जे जे लोक ओहि दिन द्वारपर ठाढ़ रहि आक्रमण रोकने छलाह, हुनकर घरक सामान्य दिन कोना आरम्भ होइत होयत। केओ अपन बच्चाकेँ विद्यालय पठौने होयत, केओ घरे घुरि खेनाइ करबाक वचन देने होयत। इतिहासक पैघ तिथि हुनकर परिवारक लेल एक निजी रिक्तता भऽ गेल छल।

रेवती अपन विधि-अध्ययनक मित्रसभकेँ एक छोट बैठकीमे बजौलीह। विषय छल—राज्यक सुरक्षाक उत्तरदायित्व आ आरोपित व्यक्तिक संरक्षण। केओ कठोर सुरक्षा कानूनक समर्थन करैत छल, केओ आशंका करैत छल जे आपात भय सामान्य न्यायिक विवेककेँ हटा देत। रईस आरम्भमे चुप छल। अन्तमे ओ कहलक, “जँ हमर घर श्रीनगरमे अछि तँ हमरा आक्रमणक विरोध करबाक अधिकार कम नहि भऽ जाइत। मुदा जखन प्रश्नकर्ता हमरा पहिनेहि अपराधीक कतारमे राखि दैत अछि, तखन हमर उत्तर ओकरा सुनाइत नहि।” दोसर छात्र, बिहारक सुधांशु, स्पष्ट कहल, “जे लोक संसदक रक्षा करैत मारल गेलाह, हुनका न्याय चाही। ओ न्याय निरपराधक विरुद्ध शंका बढ़ेलासँ कोना भेटत?” सभ मौन भेल।

बहसक बाद रईस आ रेवती विश्वविद्यालयक बाहर चाय पीबय बैसलाह। रईस अपन माएक पत्र देखौलक। माए लिखने छलीह जे पहाड़क ओहि पार सेहो लोक समाचार सुनि स्तब्ध छथि। परिवार दिल्लीमे बेटाक सुरक्षासँ चिन्तित अछि। पत्रक अन्तमे लिखल छल—“अपन पाठ नहि छोड़िह, आ ककरो संग अनावश्यक विवाद नहि करिह।” रईस हँसबाक प्रयत्न केलक। “माए हमरा पढ़बाक लेल पठौने छथि, चुप रहबाक शपथ नहि,” ओ कहलक। रेवती उत्तर देलीह, “अहाँक बजबाक अधिकार छी। मुदा कखनो चुप रहब सेहो अपन रक्षा होइत अछि।” ओ दूनू बुझैत छलाह जे व्यक्तिगत जीवनक सावधानी आ सार्वजनिक न्यायक माँग सदैव एक सरल मार्गपर नहि चलैत।

पुस्तकालयमे रेवती भारतीय साक्ष्य-अधिनियमक प्रासंगिक अध्याय पढ़ैत छलीह। एक पुरान निर्णयमे न्यायालय अनुमान आ प्रमाणक भेदक चर्चा कएने छल। ओ अपन कापीमे तीन कोठरी बनौलीह—‘देखल’, ‘कहल गेल’, ‘अनुमान’। दरभंगाक पहिल बहीखातासँ शुरू भेल ई अभ्यास दिल्लीमे सेहो हुनका सहारा दैत छल। तेरह दिसम्बरक घटनापर समाचारपत्र पढ़ैत ओ कखन घटना, कखन सरकारी प्रारम्भिक वक्तव्य आ कखन पत्रकारक अनुमान अछि, अलग चिह्न लगबैत छलीह। एहि अनुशासनसँ हुनकर शोक कम नहि भेल; ओकर स्वरूप स्पष्ट भेल।

एक दिवस हुनकर वरिष्ठ अधिवक्ता विमलेश पाठक कार्यालयमे कहलनि, “अधिकांश नव अधिवक्ता सोचैत छथि जे न्यायालयमे जितबाक लेल सर्वाधिक तेज स्वर चाही। मुदा हम जेठ लोकसँ सीखलहुँ जे चुप रहबाक सही समय चिन्हब एतय बड़ कौशल अछि।” रेवती पुछलीह, “जँ सरकारक पक्ष असहमत होएत?” पाठक उत्तर देलनि, “तखन ओकर पक्ष पूरा सुनब। जँ पीड़ितक दुःख बेसी अछि, तखन ओकरा सेहो सुनब। प्रतिपक्षक अधूरा वाक्यक उत्तर दऽ दैत छी तँ बादमे अपना तर्को अधूरा रहि जाइत अछि।” ओहि दिन कार्यालयमे एक रेलकर्मी अपन सेवासँ सम्बन्धित कागज लऽ आएल छल। पाठक ओकरा पूरा बात कहबाक अवसर देलनि। रेवती देखलीह—विधिक धैर्य केवल न्यायालयमे नहि, कार्यालयक पहिल भेटमे शुरू होइत अछि।

दरभंगामे एहि बीच पुरान बहीक पैंतालीसम पन्नाक प्रश्न फेर उठल। विशेषज्ञक तुलनाक लेल जप्त दस्तावेजक निर्धारित नमूना उपलब्ध कराओल जा रहल छल। नीलकान्तक दुकानपर आएल अपरिचित व्यक्तिक पहिचान एखनो अस्पष्ट छल। निर्मला ओकर रूपक जे विवरण देने छलीह, ताहिसँ पुलिसकेँ निश्चित व्यक्ति नहि भेटल। शिवनारायण नीलकान्तकेँ कहने छलाह जे अपूर्ण वर्णनपर ककरो नाम लादब नहि। नीलकान्त एहि सावधानीसँ दिक्क छलाह—हुनका लागैत छल जे जकरा संदेह करैत छथि, ओकरा तुरन्त पकड़बाक चाही। दीनानाथ उत्तर देलनि, “जे संदेह अछि, ओकर जाँच करब। आरोप कएलाक बाद मनुष्यक नाम साफ करब पहिनेसँ कठिन होइत अछि।”

पुरान बहीक सन्दर्भमे कमलेश्वर दास फेर अदालतक कार्यालय पहुँचलाह। ओ एक छोट व्यापारी छलाह, हुनकर व्यापार नीलकान्तक उधारपर कतेको बेर चलल छल। ओ एक

नामवला खाताक असल लेनदेनक बारेमे विवरण देबाक तैयार छलाह। शिवनारायण बुझबैत कहलनि जे मित्रक पक्षमे बोलबाक इच्छा आ प्रत्यक्ष ज्ञान एक नहि अछि। कमलेश्वर कहलक, “हम नीलकान्तक पक्ष नहि लेब, जे अपने देखलहुँ से कहब।” रेवतीकेँ पत्र लिखैत पिता एहि वाक्यक प्रशंसा कएलनि। संगहि लिखलनि जे साक्षीक पहिचानक संग ओकर सम्भावित स्वार्थ सेहो परखबाक चाही।

फैज़ानक मामलामे पुलिस नगरक एक कार्यालयसँ लिखित सूचना प्राप्त कएलक। कार्यालय कहलक जे भेटल प्रवेश-पत्र ओकर आधिकारिक निर्गत अभिलेखसँ मेल नहि खाइत अछि। एकर अर्थ जाली कागजक आशंका सुदृढ़ भेल, मुदा फैज़ान ओकर निर्माणक अपराधी अछि, एखन एहि प्रश्नक उत्तर नहि भेटल। ग्राहकक कथित नाम ‘प्रमोद’ लिखल छल, मुदा कोनो पूरा पता नहि। बिनोदक अनुसार ग्राहकक एक हाथमे पुरान पट्टी छल; अशोक राय एहि स्मृतिकेँ अकेला पहिचानक आधार नहि मानलनि। ओ अग्रिम जाँचक अनुमति लेल आवश्यक आवेदन तैयार कएलनि।

नगरमे अफवाह फैलल जे फैज़ानक घरसँ राष्ट्र-विरोधी पत्र भेटल अछि। अशोक एहि कथनक स्रोत पूछलनि, तँ तीन लोक तीन अलग व्यक्ति बतौलक। पुलिसक उपलब्ध जप्ती-अभिलेखमे एहन पत्रक उल्लेख नहि छल। उपनिरीक्षक एक स्थानीय समाचार-पत्रक संवाददाताकेँ कहलक जे प्रकाशित समाचारमे पुष्टि भेल अभिलेख आ अफवाह अलग राखय। संवाददाता पहिने सनसनीखेज शीर्षक चाहैत छल। दोसर दिन ओकर समाचारमे एक शब्द अधिक महत्त्वपूर्ण भेल—‘कथित’। मुदा एतेकसँ घरक दीवारपर लागल बदनामक दाग मेटायल नहि।

शहीदा घरमे बेटाक कपड़ा धोबैत छलीह। प्रत्येक कुर्तामे पढ़बाक कागजक छोट-छोट पर्ची भेटैत छल। नाजिया ओहिमे सँ एक पुस्तकालयक पर्ची उठेलक आ कहलक, “भैया दरभंगा संग्रहालयक चित्र लेबाक गेल छलाह। ओ कागजपर एतेक प्रेम करैत छथि जे पुरान भवनक तस्वीर रखैत छथि।” शहीदा उत्तर देलीह, “कागज बिनु लोकक बात नहि पहुँचैत, मुदा कागजे लोककेँ बाँधि सेहो दैत अछि।” ओहि घरमे फोटो बनबैत युवकक अनुपस्थिति एखन प्रत्येक वस्तुमे देखाइत छल—रंगक सूखल डब्बा, आध बनल निमन्त्रण, चाय रखने ओटा।

रेवती दिसम्बरक अन्तिम सप्ताहमे दरभंगा पहुँचलि। स्टेशनपर पिता प्रतीक्षा करैत छलाह। ओहि दिन ठण्ढ एतेक छल जे साँसक भाप चेहरापर उड़ैत छल। शिवनारायण पूछलनि, “दिल्लीमे पढ़ाइ ठीक अछि?” रेवती कहलनि, “पढ़ाइ चलि रहल अछि, मुदा एहि बेर कागजसँ अधिक लोकक चेहरा पढ़लहुँ।” पिता किछु क्षण हुनका देखलनि। “तखन पढ़ाइ बेकार नहि गेल,” ओ उत्तर देलनि। गाड़ीसँ घर जाइत रेवती शहरक परिचित दुकानसभ देखलीह। एक बंद दूकानक किवाड़पर मोटा अक्षरमे लिखल छल—‘देश पहिने’। हुनका ई वाक्य प्रिय लगल, मुदा प्रश्न उठल जे देशक भीतर नाजियाक घरकेँ स्थान के देत।

घर पहुँचि रेवती पहिने माताक पएर छुलनि, फेर अमरेशक पाठ्यपुस्तक देखबाक बहानासँ नीलकान्तक घर गेलीह। निर्मला हुनका बैसय देलीह आ गरम दुध देलनि। अमरेश लम्बा भऽ गेल छल; ओकर आवाजमे बालपनक पातर सुर एखनो रहल, मुदा प्रश्नक ढंग बदलि गेल छल। ओ कहल, “दीदी, दिल्लीमे संसदक पहरा बढ़ि गेल?” रेवती हँ कहलीह। अमरेश पूछलक, “एतय जँ केओ फैज़ान भाइकेँ देखिकय डेराइत अछि, तखन ओकरा सेहो पहरा कहब?” रेवती किछु क्षण सोचलीह। “पहरा खतरा रोकबाक लेल अछि,” ओ कहलनि, “निर्णय देबाक लेल नहि। पहरा दैत व्यक्ति सेहो गलती कऽ सकैत अछि, ताहि लेल नियम अछि।”

नीलकान्त एहि बीच पैंतालीसम पन्नाक चर्चा फेर छेड़लनि। “एक आदमी हमरा देखाबय आबि कहि गेल जे सभ लिखावट एक हाथक नहि। ओ सच कहलक कि नहि, हम नहि जनैत छी। मुदा ओ पन्ना हमर निद्रा हरि लेने अछि।” रेवती पूछलीह, “अहाँ स्वयं ओहि पन्नापर लिखल नाम पढ़ने छी?” नीलकान्त उत्तर देलनि, “आंशिक। ओहि राति हमरा पूरा बही देखबाक अवसर नहि देल गेल।” “तखन नामक बारेमे अहाँक अनुमानकेँ अनुमान रूपेँ राखू,” रेवती कहलनि। नीलकान्त मुस्कुरौलनि। “अहाँ अपन बाबू सन बजय लगलहुँ।” निर्मला कहलीह, “अहाँ दुनू कहब सुनैत छी तँ बुझाइत अछि न्यायालय घरमे आबि गेल।”

शिवनारायणक कार्यालयमे पुरान मेजपर नीलकान्तक मुकदमाक प्रतिलिपि राखल छल। रेवती ध्यानसँ देखलीह जे मूल जप्ती-सूची, बादक नकल आ न्यायालयमे दर्ज आदेश अलग-अलग क्रममे रखल गेल अछि। पिता हुनका बुझौलनि जे प्रत्येक कागजक आपसी सम्बन्ध

पन्नाक संख्या मात्रसँ नहि, ओकर प्राप्ति, हस्ताक्षर, दिनांक आ लेखनक परिस्थितिसँ निर्धारित होइत अछि। “दू कागजक अंक भिन्न होएत तँ विरोध अछि,” ओ कहलनि, “मुदा विरोधक अर्थ सदैव जालसाजी नहि। कखनो साधारण गिनतीक त्रुटि; कखनो बड़ अनियमितता। निष्कर्ष धरि पहुँचबाक पहिने ककरो लाभ आ ककरो हानि होइत अछि, से नहि, वस्तुक इतिहास देखब।”

रेवती फैज़ानक मामलाक उपलब्ध दस्तावेज सेहो पढ़लीह। पुलिसक आवेदनमे भेटल प्रवेश-पत्र, छापक उपकरण आ दुकानक किछु लेखा-विवरणक जिक्र छल। सरकारी कार्यालयक उत्तर प्रवेश-पत्रकेँ आधिकारिक निर्गत सूचीसँ बाहर बतबैत छल। फैज़ानक कथन छल जे ग्राहक नमूना लऽ आयल। बिनोदक दू बयानमे ग्राहकक परिचयक अन्तर छल। रेवती लिखलीह—“कागज जाली होयबाक प्रश्न आ जाली बनौने व्यक्तिक ज्ञानक प्रश्न भिन्न।” पिता ओकर वाक्यक नीचाँ रेखा खींचि कहलनि, “एकरे न्यायालयमे साफ करब।”

शिवनारायण रेवतीकेँ शहीदाक घर लऽ गेलाह। गलीमे लोकक आवाज पहिल दिनसँ मन्द भऽ गेल छल, मुदा परस्पर दूरी बनी रहल। शहीदा किवाड़ खोलि स्वागत कएलनि। नाजिया चूल्हिपर चाय राखने छलि। घरमे फैज़ानक एक छायाचित्र टाँगल छल—ओ एक विद्यालयक वार्षिकोत्सवमे बच्चासभक फोटो खींचि रहल छल। रेवती पुछलीह, “एहि चित्रक दिन याद अछि?” शहीदा हँ कहलीह; ओकरा विद्यालयक नाम, मास आ फोटो लेल भेटल रकम सेहो स्मरण छल। रेवती ओकरा ध्यानसँ सुनलीह। हरेक स्मृति प्रमाण नहि होइत, मुदा प्रश्न तैयार करबाक आधार बनि सकैत अछि।

नाजिया अपन भाइकेँ लिखल एक पत्र देखौलक। ओ लिखने छलि—“अहाँ कागज बनबैत छी, ताहि कारणेँ लोक अहाँकेँ गलत बुझलक। की कागज बनबेनिहारक सभ कागजक विचार सेहो ओकर होइत अछि?” रेवती पत्र पढ़ि चुप भेलीह। शहीदा पुछलीह, “ई पत्र अदालतमे दऽ सकैत छी?” शिवनारायण उत्तर देलनि, “बेटीक भावना अदालत बुझि सकैत अछि, मुदा प्रवेश-पत्रक वास्तविक विवादक प्रमाण बनबाक लेल अन्य बात चाही। ई पत्र भाइ लेल राखू।” शहीदा मन भारी कय पत्र फेर मोड़ि देलीह। हुनका बुझायल जे मातृत्वक भाषा आ अदालतक प्रमाण अलग अछि, मुदा दुनू आवश्यक अछि।

अगिला प्रभात पुलिस कार्यालयक एक लिपिक फैज़ानक दुकानमे छापल पुरान व्यवसायिक पत्रक प्रतिलिपि लऽ आयल। लिपिकक कथन छल जे किछु पुरान आदेश-पत्रक अक्षर ओहि प्रवेश-पत्रसँ मिलैत अछि। अशोक राय ओकरा स्पष्ट कहलनि जे एकहि मुद्रणक अक्षर अनेक प्रेसमे होइत अछि; ताहिसँ एकटा व्यक्तिक दोष निर्धारित नहि होइत। जाँचमे आब ग्राहकक परिचय, आदेश दैत समय उपस्थित लोक आ लेखा-विवरणक पुष्टिक आवश्यकता अछि। अशोक अपन थानाक प्रमुखकेँ लिखित प्रगति प्रतिवेदन देलनि। हुनकर वरिष्ठक मनमे जल्दी परिणामक अपेक्षा छल, मुदा अशोक जानैत छलाह जे जल्दबाजीक गलती पूरा विचारणकेँ दुर्बल करि सकैत अछि।

संध्यामे रेवती आ पिता न्यायालयक लगक पुरान पुस्तक-विक्रेताक दूकानपर गेलाह। ओतय भारतीय संविधानक प्रति, दण्ड-प्रक्रियाक पुस्तक आ अलग-अलग उच्च न्यायालयक निर्णयक संग्रह छल। शिवनारायण एक पुस्तक उठाकय पन्ना पलटलनि। “देखू,” ओ कहलनि, “कानूनक पुस्तकमे जमानतक विवेकक चर्चा अछि। एतय न्यायाधीशक समक्ष अपराधक प्रकृति, उपलब्ध सामग्री, भागबाक आशंका, साक्षीपर प्रभाव आ जाँचक आवश्यकता देखबाक प्रश्न उठत। मुदा जमानत दयब अर्थात दोषमुक्त करब नहि।” रेवती उत्तर देलीह, “आ जमानत नहि देब सेहो दोषी घोषित करब नहि।” पिता प्रसन्न भऽ हँ कहलनि।

अमरेश ओहि राति बाजारक चबूतरापर फैज़ानक मित्र बिनोदकेँ देखलक। बिनोदक हाथ काँपि रहल छल। ओ कम आवाजमे कहलक, “हम जे ग्राहकक बारेमे पहिने कहलहुँ, सभ याद नहि छल। पुलिस जखन पूछैत अछि, तखन लगैत अछि जे तत्काल उत्तर चाही। मुदा स्मृति अधूरी अछि।” अमरेश पुछलक, “तँ जे नहि जनैत छी से नहि कहलहुँ?” बिनोद उत्तर देलक, “पहिने हँ कहि देलहुँ। आब असली बात कहब तँ लोक कहत हम पलटि गेलहुँ।” अमरेश ओकरा समझेबाक लेल उपयुक्त शब्द नहि खोजि पाबलक। ओ केवल कहलक, “रेवती दीदी कहैत छथि जे जे देखल ओ अलग, जे अनुमान ओ अलग।” बिनोद चुप भेल।

बिनोद अगिला दिन स्वेच्छासँ जाँच-अधिकारीकेँ एक स्पष्टीकरण देलक। ओ स्वीकार केलक जे ग्राहकक हाथमे पट्टी होयबाक स्मृति निश्चित अछि, मुदा ग्राहक कोन कार्यालयक

नाम लेने छल, से स्पष्ट नहि। अशोक राय एहि नव कथनकेँ पुरान बयानक स्थानपर चुपचाप नहि रखलनि; दून्हू कथन अभिलेखमे सुरक्षित कएलनि, जतेक विधिसम्मत छल। ई सावधानी पुलिसक पक्षकेँ तुरन्त सुदृढ़ नहि बनौलक, मुदा अदालतमे वास्तविक अन्तर उजागर होयबाक बाट खोललक।

रेवती एहि घटनाकेँ सुनि पुछलीह, “जँ साक्षी अपन गलती सुधारैत अछि तँ ओकरा विश्वास करबाक आधार घटैत अछि?” शिवनारायण उत्तर देलनि, “कखनो घटैत अछि; कखनो ई सुधार ओकर ईमानदारीक चिह्न होइत अछि। न्यायालयकेँ समय, कारण, लाभ आ अन्य साक्ष्य सभ देखय पड़त। साक्षीक एकटा बदलल शब्दसँ निश्चय नहि, प्रश्न जन्मैत अछि।” रेवती अपन कापीमे लिखलीह—“गवाहीक परिवर्तन स्वयंमे निर्णय नहि, परीक्षणक आरम्भ।”

दिसम्बरक अन्तिम सप्ताहमे फैज़ानक जमानत-प्रार्थनापर पुनः सुनबाई निश्चित भेल। बरामदामे सवेरेसँ भीड़ छल। शहीदा अपन साड़ीक पल्लू सँ हाथ पोंछि रहल छलीह; नाजिया विद्यालयक पुस्तक साथ लेने छलीह, जकर पन्ना ओ बारम्बार खोलैत, मुदा पढ़ि नहि सकैत छलि। बगलमे एक वृद्ध व्यक्ति जमीनक वादक तारीख पूछैत छल। दोसर कात एक युवा महिला भरण-पोषणक आवेदनक प्रति पकडने बैसल छलि। कचहरीक सामान्य भीड़मे राष्ट्रक शोकक भारी छाया रहल, मुदा लोक अपन निजी न्यायिक कामसँ अनुपस्थित नहि भऽ सकैत छल। जिनगी एतय कखनहु एकहि घटना पर ठाढ़ नहि रहैत।

विमलाकान्त मिश्रक कोठरीमे फैज़ानकेँ उपस्थित कएल गेल। सरकारी पक्ष कहलक जे जाली प्रवेश-पत्रसँ सार्वजनिक संस्थाक सुरक्षापर सम्भावित खतरा उत्पन्न होइत अछि। शिवनारायण एहि कथनक सामान्य महत्त्व स्वीकार कएलनि, मुदा ठोस प्रश्न उठौलनि—“एहि अभियुक्तक विरुद्ध उपलब्ध सामग्रीमे की स्पष्ट अछि? ओकर दुकानसँ कागज भेटल, ओ एहि तथ्यसँ भागि नहि रहल अछि। मुदा ओ जाली उपयोगक योजना जनैत छल, एहि सम्बन्धमे कोन पुष्ट सामग्री अछि?” न्यायाधीश सरकारी अधिवक्तासँ पुछलनि जे प्रवेश-पत्रक प्रयोग भेलाक प्रमाण उपलब्ध अछि कि नहि। उत्तर आयल—“एहि समय जाँच जारी अछि; प्रयोग भेलाक पुष्ट विवरण एखन नहि।”

सरकारी पक्ष तर्क देलक जे जाँच पूरा होयबाक पहिने आरोपितकेँ छोड़ला पर ग्राहक वा सहकर्मीकेँ प्रभावित कएल जा सकैत अछि। शिवनारायण कहने छलाह जे एहि आशंकाकेँ गंभीरतासँ देखबाक चाही। ओ प्रस्ताव रखलनि जे न्यायालय उचित शर्त लगाकय उपस्थितिक व्यवस्था सुनिश्चित कऽ सकैत अछि; तकर निर्णय न्यायाधीशक विवेकमे अछि। फैज़ानक स्थायी निवास, पढ़ाइक अभिलेख आ दुकानक कारोबारक कागज प्रस्तुत भेल। एक बात स्पष्ट कएल गेल—प्रवेश-पत्र जाली होयबाक आशंका अदालतक अवहेलना योग्य नहि, मुदा जमानतक प्रश्नमे प्रत्यक्ष आरोपितक भूमिका आ जाँच प्रभावित होयबाक सम्भावना देखल जायत।

न्यायाधीश शिवनारायणकेँ पुछलनि, “की अहाँ मानैत छी जे दस्तावेज गलत अछि?” शिवनारायण कहलनि, “सरकारी कार्यालयक उत्तरमे ओकर आधिकारिक निर्गत सूचीसँ बाहर होयबाक बात अछि। हम एहि तथ्यकेँ नहि नकारैत छी। हमर निवेदन एहि बातपर अछि जे ओकर निर्माण, आशय आ उपयोगमे फैज़ानक व्यक्तिगत सहभागिता कतेक प्रमाणित अछि। एहि अवसरपर अपराधक अन्तिम निर्णय नहि माँगैत छी।” एहि उत्तरसँ रेवतीकेँ पिताक विधिक अनुशासनक अर्थ फेर बुझायल। सुविधाक लेल पूरा अभियोजन नकारि देब सेहो असत्यक एक रूप भऽ सकैत छल।

अशोक राय जाँचक प्रगति बतबैत कहलनि जे बिनोदक दू कथन सुरक्षित अछि आ ग्राहकक परिचय एखन स्थापित नहि। न्यायाधीश पुछलनि जे दुकानक मूल उपकरण वा जप्त वस्तुक संरक्षणक व्यवस्था अछि कि नहि। अशोक निर्धारित अभिलेखक अनुसार उत्तर देलनि। कोठरीमे निस्तब्धता छल। शहीदा दरवाजाक पाछाँसँ बेटाक चेहरा देखबाक प्रयत्न करैत छलीह। रेवती महसूस करैत छलीह जे एहि छोट कोठरीमे निर्णयक एक वाक्य घरक भोजन, छात्रक परीक्षा आ दुकानक जीविकापर असर करत; तइयो न्यायालय निजी दुःखकेँ मात्र निर्णयक आधार नहि बना सकैत अछि।

विमलाकान्त मिश्र आदेश लिखबाक पहिने थोड़े समय कागज देखलनि। तकर बाद ओ संक्षेपमे कारण दर्ज कएलनि—अपराधक आरोपक गंभीरता, तत्काल उपलब्ध साक्ष्यक स्थिति, अभियुक्तक स्थानीय सम्बन्ध, जाँचक आवश्यकता आ सम्भावित साक्षीपर प्रभावक

विषय। ओ उचित बन्धपत्र आ उपस्थितिक शर्तसहित फैज़ानकेँ जमानत देबाक आदेश कएलनि; साक्षीक सम्पर्क अथवा उपलब्ध अभिलेखमे हस्तक्षेप नहि करबाक निर्देश सेहो देलनि। आदेशमे स्पष्ट रहल जे जमानतपर निर्णय अपराधक गुण-दोषक अन्तिम निष्कर्ष नहि। सरकारी पक्षक जाँच जारी रहत आ अभियुक्तकेँ आवश्यक अवसरपर उपस्थित होयब पड़त।

शहीदा आदेश सुनिते उठि गेलीह, मुदा फैज़ान तुरन्त घर नहि लौटि सकल। बन्धपत्र, जमानतदारक परीक्षण आ आदेशक कार्यान्वयनक औपचारिकता शेष छल। रेवती शहीदाकेँ एहि प्रक्रियाक विवरण बुझौलीह। शहीदा पहिने पुछलीह, “मने ओ निर्दोष मानल गेल?” रेवती बहुत धीरे उत्तर देलीह, “नहि, माए। एखन ओकर जमानत भेल अछि। ओकर विरुद्ध आरोपक परीक्षण आगाँ होयत।” शहीदा किछु क्षण आँखि बन्द कएलनि। फेर कहलनि, “एतेक दिनमे हम दू शब्दक अन्तर सीखलहुँ—छुटब आ निर्दोष सिद्ध होयब।”

बरामदामे एक वृद्ध अधिवक्ता ककरो कहैत छलाह जे एहन समयमे कठोरता आवश्यक अछि। दोसर कहलक, “कठोरता नहि, ठीक प्रमाणपर कठोरता।” रेवती एहि वार्ताकेँ सुनीह, मुदा सहभागी नहि भेलीह। हुनका लग अदालतक आदेशक प्रति छल, आ ओहि कागजक किनारपर विमलाकान्तक हस्ताक्षर। कानूनक सही प्रयोगक अर्थ एहि बेर कोनो सिद्धान्तक चमक नहि, एक युवकक अपन घर पहुँचेबाक सशर्त अवसर छल। साथे एक आरोपक अपूर्ण उत्तर सेहो छल।

फैज़ान आखिरकार घर पहुँचल तखन गलीक किछु लोक दरवाजापर ठाढ़ भऽ देखैत रहल। नाजिया दौड़िकय ओकर हाथ पकड़लक। शहीदा ओकरा भोजन परोसलीह। फैज़ान पहिल बेर चुपचाप रोटी तोड़लक, फेर कहलक, “दूकानमे जे कागज छल, ओकरा आनयवला आदमीकेँ हम पहचानबाक प्रयत्न करब। मुदा लोक फेर कहत जे हम झूठ बजैत छी।” शहीदा उत्तर देलीह, “जे देखलहुँ, से कहिह। जे नहि देखलहुँ, तकरा अपना कथनमे नहि जोड़िह।” रेवतीकेँ ई वाक्य सुनि निर्मलाक पहिल गवाही याद पड़ल—हम देखलहुँ, हमरा कहल गेल।

राति गलीमे छोट बालकसभ खेलैत छल। एक बच्चा फैज़ानकेँ ‘देशद्रोही’ कहि चिल्लौलक, दोसर ओकरा चुप करबौलक। फैज़ान ओहि बातपर क्रोधसँ काँपि उठल, मुदा नाजिया ओकर हाथ पकड़ि घर भीतर लऽ गेल। जमानतक आदेश पुलिसक हिरासतक प्रश्न

बदलि देने छल; समाजक मनमे उठल अभियोगक त्वरित निवारण ओकर सामर्थ्यसँ बाहर छल। फैज़ान एखन घरमे छल, मुदा अपन पुरान जीवनमे नहि।

शिवनारायण राति कार्यालय बन्द करैत कहलक, “आज एकटा जीवनकेँ समय भेटल। न्यायालय ओकरा निर्दोषता लिखि नहि देने अछि।” रेवती उत्तर देलीह, “मुदा अभियोजनक जाँच सेहो बन्द नहि भेल। तखन ई निर्णय दुनू पक्षक उत्तरदायित्व जीवित रखैत अछि।” पिता ओकरा देखलनि। “बहसक पाछाँ ई बुझब जरूरी अछि। जे जीत सिर्फ एक पक्षक अधिकार बचबैत अछि आ दोसरक सत्यक खोज बन्द करैत अछि, ओकरा अन्तिम न्याय कहब कठिन।”

दिसम्बरक अन्तिम सप्ताहमे दरभंगाक गाछसभक पातपर कुहेसाक पानि जमैत छल। साँझक समय कचहरीक बरामदामे ठण्ढ हवा बहैत छल, मुदा कागजक गठरी सम्हारैत लोक आगाँक तारीखक प्रतीक्षा करैत रहैत छल। रेवती एक दिन पिता संग पुरान अभिलेख-कक्षमे गेलीह। अदालतक कर्मचारी सूखल कपड़ासँ अलमारीक काठ पोंछि रहल छल। ओकर कहब छल जे वर्षान्तमे पुरान नोंदक जाँच करबाक अछि। रेवती नीलकान्तक बहीक निर्धारित अभिलेखक नोंद देखबाक सम्बन्धमे पिता सँ पूछलीह। शिवनारायण बुझौलनि जे न्यायालयक अनुमति आ सम्बन्धित प्रक्रियाक बिना मूल जप्त वस्तु खोलि नहि सकैत छी। जकरा जाँचबाक अधिकार अछि, ओकरा सेहो वस्तुक सुरक्षित अवस्था बनौने राखबाक दायित्व अछि।

नीलकान्तक प्रकरणमे विशेषज्ञक कार्यालयसँ एक पत्र आएल। ओहिमे लिखल छल जे उपलब्ध लिखावट-सामग्रीक आधारपर विवादित पन्नासभक तुलना चलि रहल अछि; किछु नमूना अस्पष्ट अछि, तेँ अधिक स्पष्ट रूप चाही। शिवनारायण पत्र पढ़िकय नीलकान्तकेँ कहने छलाह जे विलम्ब असुविधाजनक अछि, मुदा अनुमानक आधारपर तुरन्त घोषणा करब ठीक नहि। नीलकान्तक पैंतालीसम पन्नाक चिन्ता फेर बढ़ल। ओ कहलक, “जँ ओ आदमी दुबारा आएल तँ हम ओकर नाम पूछब।” शिवनारायण कहलनि, “नाम पूछू, मुदा स्वयं जाँचकर्ताक भूमिका नहि लिअ। जे कहत, लिखि राखू; पुलिसक जाँचसँ बचबाक हेतु नहि, सत्यक विधिक बाटपर रखबाक हेतु।”

दीनानाथकेँ एक दिन मथुरानन्दक घरसँ समाचार भेटल जे वृद्धक दृष्टि कमजोर भऽ रहल अछि। ओ पहिल जप्तीप्रकरणक महत्त्वपूर्ण साक्षी छलाह। दीनानाथ स्वयं भेटि हुनकर स्वास्थ्य पूछलनि; गवाहीक विषयमे किछु कहबाक प्रयास नहि कएलनि। घरसँ बाहर निकलिते वृद्धक बेटा पुछलक, “बाबू, हमर पिताजी न्यायालय नहि जा सकताह तँ मामला बिगड़ि जाएत?” दीनानाथ उत्तर देलनि, “ओहि समय हुनकर अवस्था आ उपलब्ध विधिक उपाय देखल जाएत। साक्षीक स्वास्थ्यक विषयमे अदालतकेँ सत्य बताउ।” अधिकारी अपन कार्यालय लौटि लिखलक जे वृद्ध साक्षीक शारीरिक कठिनाइक सूचना प्राप्त भेल। ई छोट सूचना एक दिन विचारणक प्रक्रियामे महत्त्वपूर्ण होयबाक छल।

शिवनारायणक मेजपर राखल दूनू प्रकरणक कागज रेवतीकेँ अक्सर एक-दोसरसँ बात करैत बुझाइत छल। नीलकान्तक बहीमे पुरान उधार, दाँव आ पन्नाक भिन्न लिखावट छल। फैज़ानक दुकानमे छपल प्रवेश-पत्र, अज्ञात ग्राहक आ बिनोदक बदलल स्मृति। पहिल प्रकरणमे मुद्दा छल जे प्रत्येक अङ्कक लिखलक; दोसरमे प्रश्न छल जे छपल कागजक वास्तविक उद्देश्य के जनैत छल। दूनू प्रकरण समाजक दृष्टिमे अपराधक कथा भऽ चुकल छल, मुदा अदालतमे कथनकेँ प्रमाणमे बदलबाक कठिन यात्रा अलग-अलग चलैत छल।

रेवती एक साँझ पिता सँ पुछलीह, “अहाँकेँ कखनो लगैत अछि जे अदालत बहुत धीरे चलैत अछि?” शिवनारायण उत्तर देलनि, “लगैत अछि। विलम्बसँ लोकक जीवन नष्ट होइत अछि, एहि विषयमे कोनो सान्त्वना नहि। मुदा जल्द निर्णय आ न्यायपूर्ण निर्णयक बीच प्रतिद्वन्द्व होयत तँ दूनू बचाबय पड़त। अदालतक आलस्यक बचाव नहि; समयबद्ध सत्य-परीक्षणक आवश्यकता अछि।” रेवती कहलीह, “एहि दून्हूक बीच जे बरामदामे बैसल अछि, ओकर जीवनक घड़ी अलग चलैत अछि।” पिता दीर्घ क्षण हुनका देखलनि। “अहाँ सही कहैत छी। केसक तारीख आ मनुष्यक उम्र एक गति सँ नहि बढ़ैत।”

शिवनारायण एखन वृद्ध नहि छलाह, मुदा २००१ क अन्त धरि हुनकर कनपट्टीक केस उज्जर होबय लागल छल। पिता-पुत्रीक बीच एहन बातक अवसर कम छल। अधिकांश दिन ओ न्यायालय, पुस्तक आ परिवारक काममे व्यस्त रहैत छलाह। ओहि साँझ रेवती पहिल बेर पुछलीह जे पिता अधिवक्ता किएक बनलाह। शिवनारायण कहलनि, “हमर बाबू एक छोट

खेतक विवादमे निरन्तर अदालत जाइत छलाह। हुनका मुकदमा जीतबाक चाहना छल, मुदा हुनका नहि बुझाइत छल जे आदेशक पंक्ति केना लिखल अछि। हम ओहि पंक्ति पढ़बाक इच्छा सँ विधि पढ़लहुँ।” रेवती कहलनि, “तखन न्याय हमरा सभक घरमे बहुत पहिनेसँ आबि रहल अछि।” पिता हँसि देलनि।

रेवतीक दिल्लीवला मित्र रईसक पत्र आयल। पत्रमे लिखल छल जे विश्वविद्यालयक कक्षा फेर नियमित भेल अछि, मुदा किछु विद्यार्थी एखन सेहो भयक कारण घर लौटि गेलाह। रईस अपन नामसँ जुड़ैत अनावश्यक प्रश्नसभक उल्लेख कएलक, संगहि विश्वविद्यालयक एक शिक्षकक बात सेहो—“पढ़ब जँ बन्द करब तँ भयक विजय होयत।” पत्रक अन्तमे ओ रेवतीकेँ अपन पहिल सहपाठी-स्मरण लिखलक: “जे दिन अहाँ रेडियो लग चुप बैसल छलीह, हमरा बुझायल जे शोकक भाषा सभक समान होइत अछि; शंकाक भाषा हम लोक स्वयं बनबैत छी।” रेवती पत्र अपन कापीमे रखलीह।

अमरेश एहि बीच विद्यालयमे गणतन्त्र दिवसक तयारी करैत छल। गुरुजी हुनका संसदक भूमिकापर छोट निबन्ध लिखबाक काज देलनि। अमरेश लिखलक जे संसदमे नियम बनैत अछि आ अदालत ओहि नियमक अनुसार प्रश्न परखैत अछि। फेर ओ रुकि गेल। ओकरा पिताक मुकदमा याद आबि गेल। ओ लिखलक—“नियम लोक लेल बनैत अछि, मुदा नियमक अर्थ बुझाबयवला लोक सेहो चाही।” गुरुजी ओकर वाक्यक आगाँ लाल स्याहीमे ‘नीक’ लिखलनि। घर लौटि अमरेश निबन्ध माए कैं सुनौलक। निर्मला बर्तन धोइत सुनैत रहलीह; हुनकर मनमे उठल जे हुनकर बेटाक बचपनक भाषा आब न्यायालयक प्रतीक्षासँ बनि रहल अछि।

एक साँझ नीलकान्त शहीदाक घर गेलाह। साथमे तेल, चाउर आ दूटा पुस्तक लऽ गेलाह। शहीदा पहिने स्वीकार करबाक चाहलीह नहि; नीलकान्त कहलनि, “ऋण बुझि नहि, पड़ोसीक नेह बुझि लिअ।” फैज़ान ओतय उपस्थित छल। नीलकान्त ओकरा पुछलनि जे ओ फेर दुकान खोलत कि नहि। फैज़ान उत्तर देलक, “दुकान खोलब। मुदा जकरा हमरा पर भरोसा छल, ओ लोक आब नइ अबैत अछि।” नीलकान्त कहलक, “विश्वास लिखि देल जाइत नहि। दिन-

दिनक काजसँ लौटैत अछि। हमरो एही बातक सीख भेटल।” दुनू पुरुष एक-दोसरासँ अलग अपराध-सन्देहक सामना करैत छल, मुदा सामाजिक बदनामक भार साझा छल।

फैज़ान ओहि दिन एकटा पुरान निमन्त्रणक नमूना नीलकान्तकेँ देखौलक। ओ कहलक जे एहन कागजमे अनेक हाथक सुधार होइत अछि—नाम ग्राहकक, डिजाइन दुकानदारक, मुहर कार्यालयक। “जे चीज छपल अछि, ओकर सभ शब्द छापनिहारक होइत अछि?” ओ पुछलक। नीलकान्त उत्तर देलक, “हमर बहीमे सेहो सभ अंक हमर नहि होइत। मुदा हमर दुकानमे जे होइत छल तकरा हम नजरअन्दाज कऽ सकैत छलहुँ कि नहि, ई प्रश्नक उत्तर हमरा देब पड़त।” फैज़ान चुप भेल। एहि स्वीकारक भीतर आत्मरक्षासँ अधिक उत्तरदायित्वक भाव छल।

रेवतीक मनमे न्यायालयक एक असामान्य तुलना उभरल। संसदपर आक्रमणक दिन सुरक्षाकर्मी लोक तत्काल निर्णय लेनिहार परिस्थिति मे छलाह; अदालतमे न्यायाधीशकेँ समय आ प्रक्रिया देल जाइत अछि। पहिल ठाम दुविधाक क्षण जीवन-मृत्युक छल, दोसर ठाम दोष-सिद्धिक दीर्घ परीक्षणक। दुनूकेँ एकहि गति चाही कहब अनुचित होयत। राज्यक सुरक्षा-कर्तव्यक सम्मान आ न्यायालयक संयम—दुनू बिना एक-दोसरक वैधता घटौने सहअस्तित्वमे रहि सकैत अछि। ई विचार ओ राति अपन कापीमे लिखलीह, मुदा पुस्तकमे जकाँ उपदेशक रूपमे नहि। ओ पहिने फैज़ानक माएक ओंगरीक काँपब स्मरण कएलनि, फेर संसदक द्वारपर प्राण देनिहार सिपाहिक परिवार।

वर्षक अन्तिम दिन एक चिट्ठी राजस्थानसँ पहुँचल। मरुधर महाविद्यालयक एक अध्यापकक परिचय शिवनारायणक पुरान मित्रक माध्यमसँ छल। चिट्ठीमे भूमि-मुकदमाक नब सुनबाईक उल्लेख छल; शिक्षण न्यास परिसरक विस्तार करय चाहैत छल, जखन कि किसान परिवार पुरान सीमांकनक कागजपर अडिग छल। अध्यापक लिखने छलाह जे छात्रावासक निर्माणक विलम्बसँ अनेक ग्रामीण छात्र किरायाक कोठरीमे रहैत छथि। किसानक बेटी अपन परिवारक खेत पर अधिकारक प्रश्न उठबैत छलीह। दूनू पक्ष अपन कठिनाइकेँ सत्य बुझैत छल। शिवनारायण चिट्ठी रेवतीकेँ देखौलनि। “एहि शहरमे सेहो कागजक कथा चलि रहल अछि,” ओ कहलनि।

रेवती चिट्ठीक अन्तिम पृष्ठ देखलीह। एक पुरान नक्शाक नकलक उल्लेख छल, जकर उत्तर-दक्षिणक दिशा विवादित बताओल गेल छल। हुनका पिताक पहिने सुनाओल दीवानी वादक नापीक भूल याद आयल। मुदा ओ ई नहि मानलीह जे पहिल वादक भूल एहि वादमे सेहो दोहराओल गेल अछि। ओ कहलीह, “पहिने मूल नक्शा देखबाक चाही।” शिवनारायण हँ कहलनि। “आ एकर मूल ककरा लग अछि, से सेहो।” दरभंगाक छोट कार्यालयसँ एक राजस्थानी न्यायालयक दुआरि खुलयवला छल।

ओहि राति शहरमे नव वर्षक स्वागत लेल किछु दुकानमे बत्ती लागल छल। बहुत लोकक लेल वर्ष बदलि रहल छल, मुदा नीलकान्तक मुकदमा, फैज़ानक आरोप, शहीदाक चिन्ता आ सुन्न पड़ल राजधानीक स्मृति रातिक बारह बजिते समाप्त नहि होयबाक छल। रेवती अपन कापीक अन्तिम पृष्ठपर लिखलीह—“सन् २००१: संसदक रक्षा लेल प्राण देनिहारक स्मृति; आरोपक सत्य-परीक्षणक न्यायिक कर्तव्य; आ एक परिवारक प्रतीक्षा। एहि तीनूकेँ अलग नहि करबाक अछि, मुदा एकरे नामपर एक-दोसराक स्थान हड़पब नहि।”

भोरिमे पिता अपन कार्यालयक पुरान पेटी खोलेलनि। नीलकान्तक बहीक प्रति एक भागमे, फैज़ानक जमानतक आदेश दोसर भागमे, राजस्थानक पत्र तेसर भागमे राखल गेल। शिवनारायण कागजसभ क्रमसँ राखि पेटी बन्द कएलनि। बाहर गलीमे अमरेश विद्यालयक लेल निकलि रहल छल। ओ पुछलक, “बाबूजी, अगिला वर्ष सभ मुकदमा समाप्त भऽ जाएत?” शिवनारायण ओकरा देखलनि। “नहि जनैत छी,” ओ कहलनि। “मुदा अगिला वर्ष प्रश्न ठीकसँ पुछबाक काज बन्द नहि होएत।” रेवती दुआरि लग ठाढ़ ई उत्तर सुनैत रहलीह।

कुहेसा छँटैत छल। पुरान कचहरीक घण्टी बजल। दूरक एक रेलक सीटी सुनाइत छल। जे देश संसदक आघातसँ उठि रहल छल, ओहिमे असंख्य घर अपन-अपन छोट न्यायिक प्रतीक्षा संग नव भोरि दिसि बढ़ि रहल छल। दरभंगाक एकटा बहीखाता, एक छापाखानाक जाली कागज आ जोधपुरक पुरान नक्शा एखन एकहि कथा नहि छल। मुदा रेवतीक जीवनमे ई तीनू प्रश्न एक सीखक रूपमे प्रवेश कऽ चुकल छल—कागजक भीतर लिखल नामकेँ मनुष्यसँ अलग देखबाक सामर्थ्य आ मनुष्यक पीड़ाकेँ कागजसँ बाहर नहि फेकबाक उत्तरदायित्व।

अध्याय ४ — मरुधरक भूमि

जोधपुर, जनवरी २००२; पूर्वस्मृति २००१

जोधपुरक जनवरीक भोरि दरभंगाक जाड़सँ भिन्न होइत अछि। एतय कुहेसा कम रहैत अछि, मुदा पाथरक देवाल राति भरि जे शीत सहेजि रखैत अछि, से दिनक पहिल पहर धरि हाथमे लगैत रहैत अछि। रामदेव मण्डल अपन खाटसँ उठि आँगनक कच्चा धरतीपर पएर रखलनि तँ माटिक भीतरक ठण्ढ हुनका पहिचानल लागल। चालीस वर्ष पहिने ओ मिथिलाक एक गामसँ मजदूरी करबाक लेल पश्चिम आएल छलाह। पहिने पाथर काटलनि, फेर छोट ठेकेदारक लग हिसाब रखलनि, आ अन्ततः अपन कमाइसँ शहरक बाहर किछु कृषि-भूमि किनलनि। एहि भूमिपर हुनकर जड़ जन्मसँ नहि छल, मुदा श्रमसँ पड़ल छल। ओहि माटि पर खजूरक दू गाछ, एक बेरीक झाड़ आ कूपक पुरान घेरा छल। कूपमे आब पानि कम छल; रामदेवक पत्नी जीवनी देवी कहैत छलीह जे कूप वृद्ध भऽ गेल अछि, मुदा रामदेवक लेल ओ घरक सबसँ पुरान जीवित साक्षी छल।

गामसँ आएल लोक हुनका एखनो ‘मण्डलजी’ कहैत छल; आस-पड़ोसक मारवाड़ी परिवार अपन उच्चारणमे ‘रामदेवसा’ बजबैत छल। रामदेव अपन नामक एहि दू रूपक बीच कहियो विरोध नहि देखलनि। १९७८ क एक पंजीकृत विक्रयपत्र हुनकर लोहेक सन्दूकमे राखल छल। खरीदारक हस्ताक्षरक ठाम हुनकर अँगूठाक निशान छल, आ दस्तावेज पढ़ि सुनौनिहार पुरान लिपिकक हस्ताक्षर दोसर किनारपर। रामदेव स्वयं अपन बच्चाक पढ़ाइ करा-करा कागज पढ़बाक अभ्यास कएने छलाह। ‘खसरा एक सय सतासी बटा दू’ हुनकर लेल केवल अङ्क नहि छल; एहि अंकमे खेतक उत्तर दिसक सीम, दक्षिणक पगरिया, कूप धरि जायवला गामक लोकक बाट आ परिवारक भविष्य बान्हल छल।

दू वर्षसँ मरुधर महाविद्यालयक भवन दूरसँ ऊपर उठैत देखाइत छल। पहिने ओतय एकटा छोट शिक्षण-कक्ष छल, फेर पुस्तकालय, फेर विज्ञान-विभाग। रामदेव शिक्षाक विरोधी नहि छलाह। हुनकर बेटा विमल ओही संस्थामे लेखाशास्त्र पढ़ैत छल आ बेटी कुसुम महाविद्यालयमे

प्रवेशक आशा राखैत छलीह। विवाद तखन उठल जखन न्यासक ठेकेदार खसरा एक सय सतासी बटा तीनक नामपर खूँटा गाड़ैत-गाड़ैत रामदेवक बोइनवारी दिस बढ़ि गेल। एक दिन ओ कामसँ लौटलाह तँ कूपक दक्षिणी भीतसँ सटल तीनटा लाल चिह्न देखलनि। मजदूरसभ कहलक जे छात्रावासक नींव एतहि पड़त। रामदेव पुछलनि, “एतय के अनुमति देलक?” मजदूरक मुखिया एक नकल नक्सा देखौलक। नक्सामे रेखा सीधा छल; रामदेवक खेतमे ओ रेखा टेढ़ होइत छल।

ओहि दिनक घटना नव नहि छल। पिछिला वर्षक सावनमे न्यासक दू सदस्य रामदेवक घर आएल छलाह। हुनका सभ एक प्रस्ताव देने छल—बाँकी भूमि छोड़ि विवादित पट्टीक मूल्य लेब, तखन महाविद्यालय छात्रावास बना सकत। रामदेव ओहि पट्टीक बिक्रीसँ मना कएलनि। ओ कहलनि जे खेतक आधा भाग मात्र अन्न नहि, घरक बाटो अछि। जीवनी देवी चाहैत छलीह जे बात परस्पर सहमतिसँ सुलझि जाय। हुनका ईहो चिन्ता छल जे बेटाक पढ़ाइ महाविद्यालयमे चलैत अछि; न्यास नाराज भेल तँ ओकरा कठिनाइ होयत। मुदा न्यासक पत्रमे जे क्षेत्रफल लिखल छल, तकर सीमा हुनकर पंजीकृत कागजसँ मेल नहि खाइत छल। रामदेव अन्हार होइत घरक सन्दूक खोलि पुरान विक्रयपत्र कुसुमसँ पढ़बौलनि। कुसुमक स्वर काँपैत छल, मुदा वाक्य स्पष्ट छल—पूर्वमे सार्वजनिक पगरिया, पश्चिममे पुरान कूपक देवाल।

दिसम्बर २००१ क अन्तमे शिवनारायण झाक कार्यालयसँ एक उत्तर आएल छल। रामदेवक एक पुरान मित्र दरभंगामे रहैत छलाह, हुनके माध्यमसँ पत्र गेल छल। शिवनारायण लिखने छलाह जे जोधपुरक सक्षम स्थानीय अधिवक्ताक सहायता लेलहुँ, मूल दस्तावेज सुरक्षित राखू, आ विवादित सीमाक तत्काल वास्तविक दशाक प्रमाण जुटाउ। पत्रक अन्तमे एहि बातपर बल छल जे निर्माणक रुकाबट आ स्वामित्वक अन्तिम निर्णय अलग प्रश्न अछि। कागज रामदेवक हाथमे पहुँचैत-हुँचैत नव वर्ष आरम्भ भऽ गेल छल। ओ अपन बेटाकेँ कहलनि, “हम महाविद्यालय बन्द कराबय नहि जाइत छी; हमर खेतक जे भाग अछि, ओकरा बिना पूछने खोदि नहि लेथि।” विमल एहि वाक्यकेँ सुनी अपन कापी बन्द कएलक। ओकर शिक्षकसभमे किछु न्यासक प्रशंसा करैत छलाह। ओ बुझैत छल जे अपन पिता आ अपन शिक्षण-संस्थानक बीच ठाढ़ रहब आसान नहि होयत।

जीवनी देवी चूल्हिपर बाजराक रोटी सेंकैत छलीह। ओ पूछलनि, “एतेक कागजक लड़ाइमे घरक खर्च कोना चलत?” रामदेव उत्तर देलनि, “हम पाथर फेर काटि लेब, मुदा कूपक कातक माटि जँ गेल तँ नव कागजसँ वापस नहि आएत।” जीवनी ओकर कठोरता बुझैत छलीह। मुदा ओ भीतरसँ ईहो जनैत छलीह जे खेतक स्वामित्वक संग परिवारक नातागोता, पड़ोसीक भरोसा, बच्चाक पढ़ाइ आ कर्जा देनिहारक मन सभ जुड़ल अछि। कुसुम अपन माँकेँ पुछलक जे अदालतमे स्त्री जा सकैत अछि कि नहि। जीवनी कहलीह, “जँ घरक भूमि हमर श्रमसँ सेहो बचल अछि तँ न्यायालयक बरामदामे हमर पएर किएक नहि पड़त?” दोसर दिन ओ रामदेवक संग जोधपुर गेलीह।

शहरक दीवानी न्यायालयक भवनक बरामदामे एकहि समय अनेक संसार उपस्थित छल। कोनो परिवार उत्तराधिकारक कागज लेने छल, कोनो व्यापारी बकायाक दावा, कोनो वृद्ध अपन बेटाक विरुद्ध भरण-पोषणक प्रार्थना। किछु लोक ठेठ मारवाड़ी बजैत छल, किछु हिन्दी, किछु गुजराती, आ एक मजदूर-समूहक बोलीमे रामदेवकेँ मिथिलाक परिचित स्वर सुनायल। ओ अपन कागजक गठरी छातीसँ सटौने बैसलाह। स्थानीय अधिवक्ता सुरेश पारीक हुनका भेटलाह। पारीक पहिने खेतक सीमा, पंजीकृत विक्रयपत्र, काबिज रहबाक अवधि आ निर्माणक वर्तमान अवस्था विस्तारसँ पुछलनि। तकर बाद कहलनि, “दीवानी वादमे प्रथम बात अहाँक अधिकारक आधार होयत। दोसर बात ई जे विवादित भूमि जँ बदलि गेल तँ अन्तिम निर्णय बेअसर भऽ सकैत अछि। मुदा न्यायालयक सामने स्पष्ट प्रमाण राखय पड़त।”

रामदेव अपन पंजीकृत कागज खोललनि। पारीक तकर प्रमाणित प्रति तैयार करबाक सलाह देलनि आ राजस्व अभिलेखक उपलब्ध प्रतिलिपिसँ मिलान कएलनि। रामदेवक मूल विक्रयपत्रमे खसरा नम्बर स्पष्ट छल, मुदा सीमाक वर्णनमे ‘पुरान कूपक पश्चिमी भित्ति’ लिखल छल; राजस्व नकलमे कूपकेँ पूरबक चिन्हक रूपमे देखाओल गेल छल। “ई अन्तर किएक?” पारीक पूछलनि। रामदेव कहलक जे कूपक घेरामे समय-समयपर मरम्मत भेल अछि, मुदा ओ अपन ठामसँ कखनो नहि हटल। अधिवक्ता कहलनि जे स्मृति महत्त्वपूर्ण अछि, तथापि सर्वेक्षण, नक्शा आ पड़ोसी भूभागक विवरणसँ एकरा पुष्ट करय पड़त। ओ रामदेवकेँ असम्भव विजयक आश्वासन नहि देलनि। “जे साबित कऽ सकब, से कहब,” ओ कहलनि।

रामदेव एहि उत्तरसँ असन्तुष्ट नहि भेलाह। हुनका एहिमे अपन पुरान मजदूरीक नियम याद पड़ल—जतेक पाथर उठाबय सकू, ततेकक भार लिअ।

न्यासक नाम ‘मरुधर शिक्षण न्यास’ छल। ओकर प्रमुख शरद कोठारी कपड़ाक व्यवसायसँ अर्जित धनक एक हिस्सा महाविद्यालयमे लगौने छलाह। शहरमे हुनकर परोपकारक प्रतिष्ठा छल। एकटा पुस्तकालय, निर्धन विद्यार्थीक किछु छात्रवृत्ति आ विज्ञानक उपकरण हुनकर सहयोगसँ आएल छल। न्यासक सचिव प्रह्लाद वैद्य छात्रावास विस्तारक प्रमुख समर्थक छलाह। वैद्यक तर्क छल जे दूरदराजसँ पढ़य आएल छात्रासभक लेल सुरक्षित निवास-गृहक आवश्यकता तुरन्त अछि। ताहि तर्कमे सत्य छल। मुदा निर्माणक तात्कालिक आवश्यकता भूमि-सीमाक अधिकार स्वतः नहि देत। शरद कोठारी एहि बातकेँ बुझैत छलाह, प्रह्लाद जल्दीमे छलाह, आ ठेकेदार हर दिन मजदूरक वेतनक हिसाब देखैत छल। तीनू अलग कारणसँ एकहि निर्माणकेँ आगाँ बढ़ेबाक पक्षमे छलाह।

महाविद्यालयमे इतिहास पढ़ौनिहार ईश्वरदत्त राठौड़ एक दिन कक्षा समाप्त कय रामदेवक बेटा विमलकेँ बजौलनि। “अहाँक घरक विवादक चर्चा छात्रसभमे अछि,” ओ कहलनि। विमल सकुचायल। “हम अपने शिक्षकसँ एहि विषयमे कोनो सहायता नहि मँगैत छी।” राठौड़ उत्तर देलनि, “सहायताक अर्थ न्यासक विरुद्ध ठाढ़ होयब नहि; सहायताक अर्थ विद्यार्थीकेँ पढ़बासँ नहि रोकब सेहो अछि। अहाँ पाठ्यक्रम छोड़ू नहि।” ओ परिसरक पुरान चित्र देखौलक जतय वर्तमान पुस्तकालयक ठाम एक बेर खेत छल। “शिक्षा जखन भूमि लैत अछि,” ओ कहलनि, “तखन ओकर इतिहासमे ओहि भूमिक पूर्व जीवन सेहो लिखल रहबाक चाही।” विमल घर लौटि एहि बातक उल्लेख कएलक। रामदेव पहिल बेर सुनलनि जे महाविद्यालयक भीतर सेहो कोई हुनकर प्रश्नकेँ बुझैत अछि।

छात्रावासक निर्माणक विरोधमे कोनो विशाल आन्दोलन नहि छल। किछु विद्यार्थी भवन शीघ्र बनय चाहैत छलाह। नसीमा बानो, बीकानेरसँ आएल प्रथम-वर्षक छात्रा, महाविद्यालयसँ दू कोस दूर किरायाक कोठरीमे रहैत छलि। साँझक अन्तिम बस छूटि गेल तँ ओकरा घर धरि पैदल जाय पड़ैत छल। ओकर माँ प्रत्येक सप्ताह पूछैत छलीह जे छात्रावास कहिया तैयार होयत। नसीमा रामदेवक खेतपर चलैत विवादक समाचार सुनि कहलक, “हमरा रहबाक जगह

चाही, मुदा ककरो खेत छीनि नहि।” संगिनीसब हँसि देलक—“तँ फेर कोना बनत?” नसीमा उत्तर नहि दे सकलि। ओकर मौनमे शिक्षाक वैध आकांक्षा आ स्वामित्वक अधिकारक बीचक कठिन प्रश्न उपस्थित छल।

पारीक दीवानी वादक प्रारूप तैयार कएलनि। रामदेव मण्डल आ हुनकर पत्नी जीवनी विवादित पट्टीपर स्वामित्व, काबिजी आ अनधिकृत निर्माण रोकबाक प्रार्थनाक आधार प्रस्तुत कएलनि। वादमे सम्पूर्ण महाविद्यालयक भूमि पर अधिकारक दावा नहि छल। केवल खसरा एक सय सतासी बटा दू आ लगक एक सय सतासी बटा तीनक सीमाक विशिष्ट भूभाग विवादित कहल गेल। वादसँ अलग अन्तरिम निषेधाज्ञाक आवेदन देल गेल, जाहिमे फोटो, विक्रयपत्रक प्रति, राजस्व नकल आ निकटवर्ती पड़ोसीक शपथपत्र लगाओल गेल। पारीक रामदेवकेँ स्पष्ट कहलनि, “विचारणमे पछिला तथ्य बदलल जाए तँ अदालतसँ छिपायब नहि। भूमि पर जे काज न्यायालयक आदेशसँ पहिने भेल, ओकरा सेहो साँच-साँच बतायब।” रामदेव सहमति देलनि। हुनका अपन दावाक सीमा याद राखबाक छल।

पहिल सुनबाईमे दीवानी न्यायाधीश सुधांशु माथुर पक्षक आवेदन देखलनि। शरद कोठारीक न्यासकेँ सूचना पठेबाक व्यवस्था कएल गेल। वादक प्रारम्भिक तथ्य देखैत न्यायालय बुझौलक जे एकपक्षीय दूरगामी आदेश देबाक पहिने प्रतिपक्षकेँ सुनब उचित होयत, मुदा विवादित पट्टीपर तत्काल नब निर्माणक आशंकाक विवरण अगिला तिथिमे देखल जाएत। रामदेव बरामदामे निकलिते पारीकसँ पुछलनि, “आइ खेत बचि गेल?” पारीक उत्तर देलनि, “आइ न्यायालय अहाँक प्रश्न स्वीकार कएने अछि; खेतक स्वामित्वक निर्णय एखन नहि भेल।” जीवनी देवी बुझेबाक प्रयत्न कएलनि, “हमरा सभ धैर्य रखय पड़त। मुदा जाबत सुनबाई हो, ठेकेदार खूँटा आगाँ नहि बढ़ाबय, एहि लेल की कएल जाए?” पारीक कहलक जे अगिला आदेशक सीमाकेँ ध्यानसँ पढ़ब आवश्यक अछि।

ओहि राति निर्माणस्थलपर ठेकेदार नन्दलाल चौधरी अपन मिस्त्रीसभक संग नापी करैत छल। ओकरा अगिला सप्ताह बालिका-छात्रावासक पहिल नींवक काम शुरू करबाक ठेका भेटल छल। ओ श्रमिकसभकेँ कहलनि जे विवादित रेखासँ दूरक भागमे काज चलाओ। मुदा एक युवक मिस्त्री पुछलक, “रेखा अछि कतय?” नन्दलालक हाथमे न्यासक नक्सा छल;

ओहि नक्सामे कूपक चिन्ह ओहि स्थानसँ अलग छल जतय अन्हारमे कूपक पाथर चमकि रहल छल। ओ किछु क्षण रुकल, फेर कहलक, “भोरिमे नापी फेर देखब।” एहि छोट सावधानीक कारण ओहि राति कूपक घेरा सुरक्षित रहल।

दोसर दिन रतनाराम भाटी, जे रामदेवक खेतसँ सटल भूमि जोतैत छल, अपन ऊँटक पाछाँ-पाछाँ आबि ठाढ़ भेल। ओ खेतक पश्चिमी सीमा बहुत वर्षसँ देखैत छल। रामदेव पुछलनि जे ओ अदालतमे गवाही देत कि नहि। रतनाराम उत्तर देलक, “जे देखलहुँ, से कहब; जे नहि देखलहुँ, से नहि कहब।” रामदेव चाहैत छलाह जे ओ स्पष्ट कहि देत जे विवादित पट्टी हमेशा मण्डल परिवारक रहल। मुदा रतनाराम एक बात जोड़लक, “बीस वर्ष पहिने सीमक किछु खूँटा हटल छल। कोन वर्ष, से हमरा याद नहि।” रामदेवक मनमे चिन्ता उठल। ओ पहिने एहन भंगुर स्मृतिक चर्चा करबाक सोचने नहि छलाह। जीवनी देवी कहलीह, “जँ अपने लोक साँचक किछु कठिन बात कहत तँ पहिने हमरे सुनब उचित अछि। न्यायालयमे आधा कथा कहबासँ अपना सभकेँ की लाभ?” रामदेव सहमत भऽ गेलाह।

साँझमे विमल अपन पिता संग खेतक परिक्रमा कएलक। ओ कागजपर अनुमानित दूरी लिखैत गेल। खूँटासँ खूँटाक दूरी नापबाक लेल रस्सीक प्रयोग कएल, मुदा ओ जानैत छल जे ओकर नापी आधिकारिक सर्वेक्षण नहि। “हमरा गणितक शिक्षक कहैत छथि जे मापनक त्रुटि सेहो गनबाक चाही,” विमल कहलक। रामदेव हँसलनि, “माटि नापैत काल माटिक मालिकक पीड़ा सेहो गनि सकैत छी?” विमल उत्तर देलक, “पीड़ाक माप नहि होइत, मुदा कागजक रेखा गलत हो तँ ई बात संख्यासँ देखाओल जा सकैत अछि।” पिता बेटाक बात ध्यानसँ सुनलनि। वृद्ध होइत शरीरक श्रम आ नव पीढ़ीक पुस्तक-ज्ञान एक क्षण लेल साथ ठाढ़ भऽ गेल। ओ दिनसभमे रामदेव बेटाक पढ़ाइकेँ केवल घरक प्रतिष्ठाक साधन मानैत छलाह; आब हुनका बुझायल जे पढ़ाइ विवादक सही प्रश्न रखबाक सामर्थ्य सेहो दैत अछि।

शरद कोठारी अपन घरमे न्यासक कार्यकारिणीक बैठक बजौलनि। प्रह्लाद वैद्य एक मोट फाइलसँ निर्माणक नक्शा, दानदाताक प्रतिज्ञापत्र आ विद्यार्थीक आवासीय आवश्यकताक सूची निकाललनि। “जँ काम ठमक गेल तँ अगिला वर्ष छात्रासभक प्रवेश घटि जाएत,” ओ कहलनि। कोठारी पुछलनि, “कृषकक भूमि कतेक विवादित अछि?” वैद्य उत्तर देलनि, “छोट

पट्टी मात्र। ओकरा मूल्य देल जा सकैत अछि।” कोठारी कहलक, “पैसासँ सभ अधिकार बदलि नहि जाइत। विक्रयपत्रक रेखा देखलहुँ?” वैद्य झुँझलायल, “न्यासक सर्वेक्षक देखलनि।” तखन कोठारी निर्देश देलनि जे न्यायालयमे समस्त मूल अभिलेख प्रस्तुत करबाक तैयारी हो। सचिव मुँह चुप कऽ लेलनि। हुनका भय छल जे एहि निर्देशसँ दू वर्ष पहिने भेल एक नापीक भूल उभरि सकैत अछि। ओ भूल स्वार्थसँ भेल छल कि असावधानीसँ, से स्वयं वैद्य निश्चयपूर्वक नहि जनैत छलाह।

न्यासक विधिक पक्ष स्थानीय अधिवक्ता रजनीकान्त भण्डारी संभालैत छलाह। भण्डारी न्यायालयमे अनेक भूमि-विवाद देखलनि छल। ओ कोठारीसँ कहलनि, “अन्तरिम राहतक प्रश्नमे स्वामित्वक अन्तिम फैसला खोजब गलत होयत। अहाँक नक्सा आ किसानक नक्सा अलग अछि। कखन कागज बनल, के प्रमाणित केलक, नापी केना भेल—ई सभ स्पष्ट करब।” कोठारी पुछलनि, “हम छात्रावासक निर्माण जारी राखि सकैत छी?” भण्डारी उत्तर देलनि, “जे भूमि निर्विवाद अछि, ताहिपर निर्माणक सम्बन्धमे न्यायालयक निर्देश अलग होयत। विवादित पट्टीपर काज करबाक जिद अहाँकहि पक्षकेँ नुकसान दऽ सकैत अछि।” कोठारी हुनका बात मानबाक कहलनि। मुदा प्रशासनक गति कागजक गति नहि होइत; अगिला भोरि धरि मजदूर, बालू आ पाथर परिसरमे आनि देल गेल छल।

कुसुम महाविद्यालयक पुस्तकालयक बाहरी सीढ़ीपर नसीमा बानोसँ भेटलि। दुनू पहिने परिचित नहि छलीह। कुसुम अपन भाइकेँ पुस्तक देबाक आएल छलि; नसीमा प्रवेशक आवेदनक विवरण पूछबाक लेल ठाढ़ छलि। कुसुमकेँ देखिकय छात्रासभक एक समूह फुसफुसायल—“भूमि-विवादवला घरक बेटी।” नसीमा ओकरा भीतर बजौलनि। “अहाँक नाम कुसुम अछि?” ओ पुछलि। “हँ।” “हम सुनलहुँ जे अहाँक खेतपर छात्रावास बनत।” कुसुम कहलक, “हमर खेतपर नहि, न्यास जे खेत अपन कहैत अछि ओहि सीमा पर विवाद अछि।” नसीमा मुस्कुरायलि, “तँ हमरा सभकेँ ओ सीमा बुझय पड़त।” दुनू मिलि कागजपर एक छोट चित्र बनौलक, मुदा कुसुम बीचमे चित्र मिटा देलक। “घरक भीत नहि, कागजक रेखा मेटल जा सकैत अछि,” ओ कहलक। नसीमा उत्तर देलि, “मुदा कखनो कागजक रेखा भीतसँ कठोर होइत अछि।”

कुसुम अपन माएक संग बाजार जा पुस्तक लेल कागज खरीदलक। जीवनी देवी चाहैत छलीह जे बेटी स्नातक करय, मुदा घरक खर्च आ मुकदमाक व्यय बढ़ल छल। महाविद्यालयक छात्रवृत्ति आवेदन भरबाक समय कुसुमकेँ बुझायल जे जमीन राखनिहार परिवार अनिवार्य रूपसँ धनी नहि होइत। घरमे खेत अछि, मुदा फसलक आय कम, पानि सीमित, आ विवादक कारण जमीनक किछु भागमे खेती सम्भव नहि। छात्रवृत्तिक अधिकारी वार्षिक आयक प्रमाण मँगलक। रामदेव हँसलनि—“आयक हिसाब तऽ ओहि खेतपर निर्भर अछि जे हम बचा नहि पा रहल छी।” कुसुम ई व्यंग्य सुनि नहि हँसलि। ओ प्रश्न करैत छलीह जे न्यायिक प्रक्रिया लंबा चलल तँ ओकर उच्चशिक्षा कतेक दिन प्रतीक्षा करत? ओ माएक हाथ पकड़ि कहलि, “हम पढ़ाइ नहि छोड़ब, मुदा पितासँ कहू जे सभ कागज हमरा सेहो पढ़य देथि।”

अगिला सुनबाईक पहिने पारीकक कार्यालयमे रामदेव, जीवनी, विमल आ रतनाराम बैसलाह। अधिवक्ता प्रत्येक व्यक्तिसँ अलग-अलग प्रश्न पुछलनि। रामदेव भूमि किनेबाक वर्ष बतौलनि; जीवनी कूपक मरम्मतक समय याद कएलनि; विमल अपन रस्सीसँ कएल नापीक विवरण देलक; रतनाराम खूँटा हटल रहबाक अनिश्चित स्मृति स्वीकार केलक। पारीक लिखलनि जे परिवारक निजी मापन आधिकारिक प्रमाण नहि। ओ रामदेवकेँ कहलक, “अहाँक कथा बलवान अछि जँ हुनकर भीतर विरोधाभासकेँ सेहो ठाम देब।” रामदेवक चेहरापर थकान छल। “हम एहि उम्रमे सत्यकेँ एतेक टुकड़ामे किएक देखैत छी?” ओ पूछलनि। पारीक उत्तर देलनि, “किएक तँ न्यायालयकेँ पहिने ई सुनिश्चित करय पड़ैत अछि जे कोन भाग केकर ज्ञानक भीतर अछि।”

अदालतमे न्यासक लिखित उत्तर आबि गेल। भण्डारी कहलनि जे विवादित रेखा न्यासक १९९८ क क्रयपत्र आ बादक अधिकृत नक्शासँ मेल खाइत अछि। न्यासकेँ जमीन विक्री करनिहार परिवारक पुरान स्वामित्वक अभिलेख सेहो प्रस्तुत कएल गेल। पारीक दावीक पुरान श्रृंखला देखबाक माँग कएलनि। न्यायाधीश माथुर प्रश्न करैत छलाह जे वास्तविक कब्जा केकर, निर्माणक कोन भाग पूरा, आ कोन भागपर नब नींव पड़बाक अछि। न्यासक तर्क छल जे निर्माण रोकला पर सार्वजनिक हित प्रभावित होयत। रामदेवक पक्ष कहलक जे विवादित पट्टी खोदि देल गेल तँ पुरान कूप आ पगरिया नष्ट भऽ सकैत अछि। न्यायालय दुनू पक्षकेँ

विवादित भूभागक स्पष्ट रेखांकित चित्र आ समर्थनकारी शपथपत्र अगिला तिथिमे देबाक कहलनि।

सुनबाईक बाद बरामदामे न्यासक सचिव प्रह्लाद वैद्य रामदेवक लग गेलाह। “आपसी बातसँ काज सुलझाउ,” ओ कहलनि, “हम उचित मूल्य देब।” रामदेव उत्तर देलनि, “अहाँ भूमि जे अपना कहैत छी, ओकर मूल्य हमरा किएक देब चाहैत छी?” वैद्य किछु क्षण ठमकलाह। “विवाद मिटेबाक लेल।” रामदेव कहलक, “विवाद पहिने बुझू। जँ भूमि हमर नहि निकलत तँ हम एक कड़ी सेहो नहि लब। जँ हमर निकलत तँ बिक्रीक अधिकार हमरा रहत। छात्रावासक नामपर अधिकारकेँ दान मानि लेब जरूरी नहि।” वैद्य नाराज होइत चलि गेलाह। पारीक दूरसँ एहि वार्ता देखैत छलाह। ओ रामदेवकेँ कहलक जे न्यायालयक बाहर आपसी समझौता सदैव सम्भव अछि, मुदा ओकर शर्त स्पष्ट आ स्वतन्त्र सहमतिसँ निर्धारित होयबाक चाही।

ओहि दिन शहरक समाचारपत्रमे छोट शीर्षक छल—‘छात्रावास निर्माण भूमि-विवादमे फँसल’। समाचारक भीतर न्यासक सचिवक कथन विस्तृत छल, रामदेवक पक्ष केवल दू पाँति। एक स्थानीय संवाददाता गजेन्द्र ओझा अगिला दिन खेत देखने आएल। ओ रामदेवसँ पुछलक, “अहाँ विकास रोकैत छी?” रामदेव ओकरा कूप धरि लऽ गेलाह आ पुरान देवाल देखौलक। “विकास जँ एकटा घरक बाट काटि आगाँ बढ़त तँ ओकरा विकास कहबासँ पहिने भूमि नापू,” ओ कहलनि। पत्रकार न्यासक निर्माण-स्थल सेहो देखलक, छात्रासभक आवासीय कठिनाइ सुनलक। अगिला अंकमे ओकर समाचारक शीर्षक बदलि गेल —‘छात्रावासक आवश्यकता आ भूमि-सीमाक विवाद’। ओ कोनो पक्षकेँ अपराधी घोषित नहि केलक। कुसुम समाचार पढ़ि कहलक, “कमसँ कम आब लोक बुझत जे विवाद जमीनक अछि, शिक्षाक विरोधक नहि।”

शरद कोठारी समाचार पढ़लनि तँ हुनका अनपेक्षित राहत भेटल। ओ सार्वजनिक कार्यमे भरोसा राखैत छलाह, मुदा सार्वजनिक प्रशंसा हुनकर निर्णयकेँ सही बनाबय पर्याप्त नहि। ओ प्रह्लादसँ पुछलनि जे खेतक कूप निर्माणक पुरान नक्शामे किएक नहि देखाओल अछि। प्रह्लाद उत्तर देलनि जे सर्वेक्षणक समय कूप प्रयोगहीन बुझायल छल। कोठारी कहलनि, “प्रयोगहीन वस्तु आ अस्तित्वहीन वस्तु एक नहि। कूप जँ पुरान सीमा-चिह्न अछि तँ नक्शामे ओकर महत्त्व

अछि।” वैद्य किछु कहि नहि सकलाह। न्यासक कार्यकारिणीमे पहिल बेर एक सदस्य माँग कएलनि जे स्थलीय सीमांकनक प्रमाणित प्रतिवेदन प्राप्त कएल जाय। किछु सदस्यकेँ ई अनावश्यक विलम्ब बुझायल, मुदा कोठारी एहि माँगक समर्थन कएलनि।

फरवरीक एक रविवार रामदेवक परिवार खेतपर छोट पूजा करबाक विचार केलक। पूजा परिवारक आस्था छल; ओहि विवादक कानूनी प्रमाण नहि। जीवनी देवी कूपक घेरापर पानि छिड़कलनि, कुसुम बेरक गाछक नीचाँ दीप राखलक, विमल पुरान रस्सी बन्हलक। रामदेव कूपक देवाल छुने छलाह कि दूरसँ महाविद्यालयक घंटी सुनाइत छल। ओ हँसि पड़लाह—“एहि ठाम हमरा बेटा किताब पढ़ैत अछि, एतहि हम अपन खेत बचबय न्यायालय जाएत छी।” जीवनी उत्तर देलीह, “किताब आ खेतक लड़ाइ नहि, गलत रेखाक लड़ाइ अछि।” हुनकर वाक्य कुसुम लिखि लेलि। बादमे ओहि वाक्यकेँ एक विद्यार्थी-पत्रिकामे प्रकाशित करबाक सोच बनौलक, मुदा पिता रोकलनि—“मुकदमा चलैत अछि; अपन बात अदालतमे कहब।” कुसुम पुछलक, “तखन घरक बात लिखबो अपराध अछि?” पिता चुप भऽ गेलाह।

महाविद्यालयक विज्ञान-विभागमे एक सेमिनार चलैत छल। विषय छल—मरुभूमिमे पानिक संरक्षण। वक्ता बतबैत छलाह जे सूखल कूपक इतिहासमे भूतल-पानिक स्तर, बसावट आ खेतीक पुरान ज्ञान भेटैत अछि। नसीमा संग कुसुम सेहो सुनय बैसलि। वक्ता कूपकेँ केवल जल-संग्रह नहि, भूभागक स्मृतिक रूपमे देखबैत छलाह। कुसुम प्रश्न पुछलक, “जँ नब नक्शामे पुरान कूप नहि देखायल जाए तँ की भूमि-इतिहास बदलि जाइत अछि?” वक्ता कहलक, “नक्शामे नहि देखेनाइ इतिहासक अभाव नहि, अभिलेखक अपूर्णता होयत।” विद्यार्थीसभ तालि बजौलक। कुसुम घर लौटि माएक कहलक, “हम भूगोल पढ़ब चाहैत छी।” जीवनी हँसि देलीह—“पहिने अपन खेतक भूगोल समझि लिअ, फेर संसार नापू।”

विमल अपन सहपाठी महेशसँ एक बात सुनलक जे न्यासक कर्मचारी रामदेवक परिवारकेँ लालची कहैत छथि। महेश कहलक, “अहाँक पिता जँ छात्रावासक लेल भूमि छोड़ि देथि तँ नाम पट्टिकापर लिखल जाएत।” विमल उत्तर देलक, “दान ओ होइत अछि जे अपना अधिकारसँ स्वतन्त्र मनसँ देल जाय। जकर स्वामित्व एखन विवादित अछि, ओकरा छोड़ब दान नहि।” महेश मुस्कुरायल, “अहाँ वकील बनब?” विमल कहलक, “नहि, हम लेखा पढ़ैत

छी। मुदा लेखामे सेहो जकर रकम अछि, तकर नाम सही लिखबाक नियम अछि।” एहि सामान्य वार्ताक पाछाँ विमलक आन्तरिक भय छल। शिक्षकसभक निर्णयक असर ओकर परीक्षापर पड़त कि नहि? राठौड़ ओकरा आश्वासन देलनि जे पाठक मूल्यांकनकेँ भूमिक विवादसँ अलग राखल जाएत। ओ आश्वासन लिखित नहि छल, मुदा छात्रक मनमे ओकर महत्त्व गहिर छल।

न्यायालयक कार्यालयमे राजस्व अभिलेखक प्रमाणित प्रतिलिपि लेबाक लेल दूनू पक्षक प्रतिनिधि अलग-अलग दिन उपस्थित भेल। एक पुरान नक्शा नकल-कक्षमे राखल छल। ओकर कागजक कात पीयर भऽ गेल छल; किछु चिन्ह धुँधला छल। सरकारी लिपिक दस्तावेजक उपलब्धता बतौलनि, मुदा मूल नक्शा तात्कालिक रूपेँ पक्षकारक हाथमे देब असम्भव छल। पारीक निरीक्षणक विधिक अनुमति आ प्रमाणित प्रतिलिपिक आवेदन देलनि। भण्डारी सेहो उपलब्ध प्रतिलिपि मँगलनि। दू पक्ष एकहि कागजक प्रति चाहैत छल, मुदा दुनू हुनका अपना कथा सँ जोड़ि देखैत छल। न्यायालयक लिपिकक लेल ई एक पुरान राजस्व पत्र छल, रामदेवक लेल जीवित जमीन, न्यासक लेल निर्माणक सीमा। कागज अपन मौन रखैत छल।

मार्चक आरम्भमे निर्माणस्थलपर एक असामान्य दृश्य घटल। नन्दलालक मजदूरसभ निर्विवाद भागमे पाथरक ढेरी लगबैत छल। एक बैलगाड़ी सँ पाथर उतारैत समय पहियाक धक्का एक पुरान सीम-खूँटाकेँ लागल। खूँटा खसि गेल। रामदेव खेतपर पहुँचलाह तखन लाल चिह्नक एकटा पाथर अपन ठामसँ अलग देखलनि। ओ पहिने क्रोधमे नन्दलालक कॉलर पकड़बाक लेल बढ़लाह, मुदा विमल बीचमे आबि ठाढ़ भेल। नन्दलाल कहलनि जे ई जानि-बुझिकय नहि भेल; ओकर मजदूर दूनू पक्षक विवाद नहि जनैत छल। रामदेव कहलक, “अहाँ सभ खूँटा देखब नहि तँ अदालत जमीन नापत कोना?” नन्दलाल कहलक, “हमरा सभकेँ छात्रावास बनबय देल गेल अछि, न्यायालयमे हिसाब देब हमारा काज नहि।” विमल उत्तर देलक, “मुदा जे भूमि विवादित अछि, ओकर वर्तमान रूप नष्ट नहि होयबाक चाही।” ओ सभ झगड़ा बढ़ेनाइ छोड़ि पारीककेँ समाचार देलक।

पारीक तुरन्त स्थलपर गेलाह। ओ गिरल पाथरक चित्र बनबौलनि, ककरो ओहि स्थान फेर भरि देबाक अनुमति नहि देलनि, आ वास्तविक घटना सम्बन्धी जानकारी शपथपत्रक रूपमे रखबाक सलाह देलनि। मुदा हुनकर प्रश्न रामदेवकेँ अप्रिय लागल—“खूँटा पहिने कोन दिशिमे झुकल छल, अहाँक साक्षी के छथि?” रामदेव कहलक, “हम अपन आँखिसँ गिरैत नहि देखलहुँ।” पारीक उत्तर देलनि, “तखन हम ओकरा जानि-बुझि हटाओल गेल कहि नहि सकैत छी।” रामदेव मुँह झुका लेलनि। कोर्टमे विजयक आकांक्षा हुनका एक क्षण लेल अधूरा तथ्यकेँ अपन पक्षक प्रमाण बनाबय प्रेरित कएने छल; अधिवक्ता ओकरा रुकबेलनि। जीवनी देवी एहि बातपर प्रसन्न भेलीह। “खेत हमर अछि जँ साँच अछि,” ओ कहलीह, “तखन झूठक सहारा कोन आवश्यकता?”

न्यासक सदस्यसभ ओहि घटनाकेँ अपन अपमान बुझलनि। प्रह्लाद वैद्यक मत छल जे रामदेव निर्माण रोकबाक लेल विवाद बढ़बैत छथि। शरद कोठारी अलग बात कहलनि—“पाथर खसि गेल, से मजदूरक असावधानी भऽ सकैत अछि; मुदा सीमकेँ असुरक्षित छोड़ल हमर भूल अछि।” हुनका सलाह भेल जे विवादित पट्टीक चारू दिस कोनो स्थायी संरचना नहि बनाओल जाय, जाबत अदालत सुनि नहि लेत। नसीमा बानो एहि बीच महाविद्यालयमे छात्रावासक याचना-पत्रक हस्ताक्षर अभियान आरम्भ कएलनि, मुदा ओ पन्नाक ऊपर एकटा अतिरिक्त वाक्य लिखौलीह—“भूमि-स्वामित्वक विवादक विधिसम्मत निवारणक बाद निर्माण शीघ्र पूरा हो।” किछु विद्यार्थी एहि शर्तक विरोध कएलनि। नसीमा कहलीह, “हमरा रहबाक आवश्यकता तात्कालिक अछि। एहि कारण आनक अधिकार निरस्त नहि होइत।” ओकर हस्ताक्षर-पत्र न्यासक सचिवकेँ असहज करैत छल।

अन्तरिम सुनबाईक दिन न्यायालयक बरामदामे दूनू परिवारक लोक छलाह। रामदेव अपन घरक पीयर पटवाला फाइल लेने छलाह; शरद कोठारीक हाथमे न्यासक छापवला नील फाइल छल। पारीक अपन निवेदन छोट राखलनि। ओ पंजीकृत विक्रयपत्रक सीमा, पुरान कूपक वर्तमान अवस्था, विवादित पट्टीपर नब नींव पड़बाक सम्भावना आ नुकसानक अपरिवर्तनीयता बतौलनि। तकर बाद स्पष्ट कएलनि जे वादी सम्पूर्ण महाविद्यालयक निर्माण रोकय नहि चाहैत छथि। भण्डारी तर्क देलनि जे न्यासक स्वामित्व-दस्तावेज उपलब्ध अछि, छात्रावास

सार्वजनिक हितक अछि, आ विलम्बसँ शिक्षण-सत्र प्रभावित भऽ सकैत अछि। ओ एहि बातपर बल देलनि जे वादीक किछु नक्शा-प्रतिलिपिमे अनिश्चितता अछि। न्यायाधीश माथुर दूनू पक्षकेँ सुनलनि आ प्रत्येक दस्तावेजक तिथि नोट कएलनि।

माथुर पुछलनि, “वादीक विक्रयपत्रमे कूपक जे वर्णन अछि, ओ कूप एखन उपयोगमे अछि?” पारीक कहलनि, “पानिक मात्रा कम अछि, मुदा ढाँचा पुरान आ अस्तित्वमे अछि।” भण्डारी उत्तर देलनि, “न्यासक नक्सामे एकटा आन पुरान जलकुंडक उल्लेख अछि; वादी जकरा कूप कहैत छथि, संभव अछि से ओहि स्थलसँ अलग हो।” न्यायाधीश प्रश्न कएलनि, “दू जल-संरचनाक भौतिक निरीक्षण भेल?” दूनू पक्षक उत्तर संतोषजनक नहि छल। माथुर अगिला प्रश्न कएलनि, “कतेक हिस्सा निर्विवाद अछि?” भण्डारी एक रेखाचित्र प्रस्तुत कएलनि। पारीक ओहि रेखाचित्रक किछु भाग स्वीकार कएलनि। न्यायाधीश कहलनि, “तखन कमसँ कम एतेक स्पष्ट अछि जे न्यायालयक समक्ष पूरा शिक्षण परिसरक स्वामित्व नहि, सीमाक एक पट्टी पर विवाद अछि।” एहि एक वाक्यसँ बरामदामे बाहर प्रतीक्षारत लोकक भय किछु घटल।

भण्डारी एकटा विद्यार्थी-आवास आवश्यकता-सूची रखलनि। न्यायाधीश नसीमाक हस्ताक्षर सेहो देखलनि। ओ पुछलनि जे बालिका-छात्रावासक योजना विवादित पट्टी छोड़ि आगाँ बढ़ि सकैत अछि कि नहि। न्यासक तकनीकी प्रतिनिधि कहलनि जे भवनक पश्चिमी भागक नींव भिन्न रूपेँ बनाई जा सकैत अछि, मुदा लागत बढ़त। पारीक कहलक, “लागतक वृद्धि भूमि-अधिकारक नष्ट होयबाक तुलनामे अलग प्रकारक क्षति अछि।” न्यायाधीश तत्काल ककरो पक्ष नहि लेलनि। ओ पुछलनि जे न्यायालयक अन्तिम निर्णयक पहिने विवादित भूमि बदलि गेल तँ ओकर पुरान अवस्था पहिचानब कतेक कठिन होयत। एहि प्रश्नक उत्तरमे दूनू पक्षक प्रतिनिधि चुप रहल। छात्रावासक निर्माणक दलील तात्कालिक छल, मुदा पाथरक कूप आ सीमक नाश दीर्घकालिक भऽ सकैत छल।

रामदेव सुनबाईक समय कम बजलाह। न्यायाधीश हुनका एक प्रश्न पूछलनि—“अहाँ चाहैत छी जे पूरा महाविद्यालयक काज बन्द हो?” रामदेव हाथ जोड़ि उत्तर देलनि, “नहि, माननीय न्यायालय। हमर बेटा एतहि पढ़ैत अछि। हमर बेटी एतहि पढ़ब चाहैत अछि। हम

चाहैत छी जे हमर कूपक बाट आ खेतक सीमा जाबत नापी स्पष्ट नहि हो, ककरो कोदालिसँ नहि बदलय।” न्यायाधीश हुनकर उत्तर दर्ज करबौलनि। भण्डारीकेँ एहि उत्तरसँ राहत सेहो भेल; ओ बुझैत छलाह जे वादी व्यापक रोकक माँग नहि करैत अछि। जीवनी देवी पाछाँ बैसल छलीह। हुनका पति कतबा सरल शब्दमे संघर्षक केन्द्र कहि देलनि, से देखिकय आँखि भरि आयल। मुदा ओ आँसू पोंछि लेलनि। एहि कोठरीमे हुनका अपन पीड़ाक स्थान भेटल छल; एखन निर्णय शेष छल।

सुनबाई समाप्त भेला पर अदालत कारणयुक्त अन्तरिम आदेश लिखबाक लेल समय लेलनि। बरामदामे लोक लगैत-लगैत अनुमान करय लागल—न्यास जीतत, किसान जीतत, सभ निर्माण बन्द होएत, वा खेतक आधा भाग बिकि जाएत। पारीक परिवारकेँ चेतौलनि जे आदेश नपढ़ने कोनो निष्कर्ष नहि निकालू। रामदेव पुछलनि, “जँ हारि गेलहुँ?” अधिवक्ता कहलक, “अन्तरिम आदेश स्वामित्वक अन्तिम फैसला नहि होइत। आगाँक विधिक उपाय उपलब्ध रहैत अछि।” शरद कोठारी अपन वकीलसँ ओही बात पूछलनि। भण्डारी उत्तर देलनि, “अन्तरिम प्रश्नमे सीमित रोक भेल तँ ओहि आधारपर स्वामित्वक निष्कर्ष निकालब अनुचित होयत।” दू पक्षक अधिवक्ता अपन-अपन मुवक्किलकेँ एकहि प्रक्रिया दू भिन्न अनुभवसँ बुझा रहल छलाह।

अदालतसँ बाहर निकललापर कुसुम आ नसीमा सीढ़ीक लग भेटलीह। नसीमा पुछलि, “अहाँक माँ ठीक छथि?” कुसुम कहलक, “माँ चिन्तामे छथि। अहाँक निवासक समस्या कखन सुलझत?” नसीमा उत्तर देलि, “कहब कठिन अछि। मुदा जँ एहि कारण अहाँक घरक पगरिया कटि जायत तँ हमरा भवनमे रहैत खुशी नहि होएत।” कुसुम पहिल बेर नसीमाक हाथ पकड़लक। “हमरा सभक पिता एक-दोसरासँ नहि लड़ैत छथि,” ओ कहलक, “कागज आ रेखासँ लड़ैत छथि।” नसीमा धीरे उत्तर देलि, “कागजक लेखक मनुष्य होइत अछि; तें ओकर उत्तरदायित्व सेहो मनुष्यक होयत।” कुसुम एहि वाक्यकेँ मनमे राखि लेलि। हुनका लगैत छल जे ओ केवल भूगोल नहि, कानून सेहो पढ़ब चाहैत अछि।

दू दिन बाद अन्तरिम आदेशक प्रति उपलब्ध भेल। न्यायालय प्रथमदृष्ट्या प्रस्तुत अभिलेख, विवादित सम्पत्तिक वर्तमान दशा, सम्भावित अपूरणीय क्षति आ दूनू पक्षक सुविधा-

असुविधाक तुलनापर विचार केने छल। आदेशमे स्पष्ट छल जे स्वामित्वक अन्तिम निर्धारण नहि भेल अछि। विवादित पट्टीपर, विशेष रूपसँ पुरान कूप आ तत्काल आसपासक क्षेत्रमे, अगिला विधिसम्मत आदेश धरि नब स्थायी निर्माण अथवा वर्तमान सीमचिह्नक परिवर्तनपर रोक लगाओल गेल। निर्विवाद भूभागमे न्यास अपना स्वामित्व आ आवश्यक अनुमतिक अधीन निर्माण जारी राखि सकैत छल। पक्षसभकेँ स्थलनिरीक्षण आ सीमांकन सम्बन्धी आवश्यक अभिलेख प्रस्तुत करबाक अवसर देल गेल। न्यायालय ईहो स्पष्ट कएलक जे आदेशक पालनक विवरण राखल जाय, आ कोनो पक्ष उपलब्ध विधिक उपचार लेबासँ वञ्चित नहि अछि।

रामदेव आदेशक प्रति पढ़बौलनि। “हम जीतलहुँ?” ओ पारीकसँ फेर पुछलनि। पारीक कहलक, “अहाँक विवादित भागकेँ वर्तमान रूपमे रखबाक अस्थायी सुरक्षा भेटल अछि। स्वामित्वक विचारण एखन बाकी अछि।” शरद कोठारी अपन कार्यालयमे आदेश पढ़लनि आ सचिवकेँ लिखित निर्देश देलनि जे कूपक आसपास कोनो मजदूर नहि जाए। प्रह्लाद वैद्य कहलक, “निर्माण महँग भऽ जाएत।” कोठारी उत्तर देलनि, “अनुचित नींवपर सस्तो भवन महँग पड़ैत अछि।” ओ विद्यार्थी आवासक योजना फेर बनबेबाक आदेश देलनि। नन्दलाल ठेकेदार कूपक कातक पाथर हटा दूर राखबौलक। ओहि दिन विवादित पट्टीपर पहिल बेर कोदालिक आवाज बन्द भेल। दू घरमे अलग-अलग प्रकारक राहत छल, मुदा कोनो घरमे सम्पूर्ण विजयक उत्सव नहि।

जीवनी देवी साँझ खेतपर गेलीह। कूपक घेरापर हाथ राखि कहलीह, “आब कमसँ कम अहाँक पाथर आजु राति नहि टूटत।” रामदेव मुस्कुरायलाह। “अहाँ कूपसँ बात करैत छी?” जीवनी कहलीह, “जे घरमे आदमी सभ वकील आ कागजक भाषा बजय लागल, ओतय कूपसँ बात करब सहज अछि।” कुसुम हँसि देलक। विमल न्यायालयक आदेशक भाषा बुझबाक लेल पारीकक कापीसँ शब्द लिखैत छल—प्रथमदृष्ट्या, अस्थायी, विवादित, अपूरणीय। ओ पिताकेँ बुझौलक जे आदेशक परिधि निश्चय करबाक लेल स्थलपर सीमा पुनः नापय पड़त। रामदेव कहलनि, “तखन परसुकामे फेर कागज।” विमल कहलक, “हँ, मुदा आब कोदालीक पहिने कागज पढ़ल जाएत।”

किछु दिन बाद स्थानीय राजस्व कार्यालयसँ १९८२ क एक नकल उपलब्ध भेल। कागज घिसल छल। पारीक ओकरा न्यायालयमे रखबाक पहिने मूल दस्तावेजक विवरणसँ मिलान चाहैत छलाह। रामदेव अपन घरमे ओहि नकल खोललनि तँ देखलनि जे कूपक चिन्ह हुनकर विक्रयपत्रमे लिखल दिशासँ भिन्न ठाम अछि। “ई तऽ न्यासक नक्साक पक्षमे जाएत,” विमल कहलक। रामदेवक मुँह उतरि गेल। कुसुम ध्यानसँ चित्र देखैत छलीह। ओकरा नकलक माथापर उत्तरक चिह्नक दिशा अजीब बुझायल। कागजक लिखित सीमामे ‘पुरान पगरिया’ दक्षिण कहल गेल छल, मुदा पगरियाक रेखा नक्शामे उत्तर दिस छल। कुसुम अपन भूगोलक पुस्तकसँ दिशाक चित्र बनौलक। दू कागज एकहि ठामकेँ अलग दृष्टिसँ देखबैत छल।

रामदेव पारीककेँ नकल देखौलनि। अधिवक्ता पहिल दृष्टिमे कहलनि जे पुरान नक्शा प्रतिकूल भऽ सकैत अछि। कुसुम धीरे कहलक, “नक्शा घुमाकय देखू।” पारीक कागज घुमौलनि। लिखल अङ्क उलटा भेल, मुदा कूप आ पगरियाक आपसी स्थान एक बेर विक्रयपत्रक वर्णनसँ मेल खाइत बुझायल। अधिवक्ता तुरन्त उत्साहित नहि भेलनि। “कागज घुमौने दिशा सिद्ध नहि होइत,” ओ कहलक, “हमरा मूल नक्शाक उत्तर-चिह्न, नकलक प्रमाणिकता आ नापीक माप-दण्ड देखबाक चाही।” कुसुम कहलक, “हमारा तँ केवल ई देखायल जे नकलमे उत्तरक तीर कागजक कोना पर नहि, बीचक पुरान मुहरक लग अछि।” पारीक ध्यानसँ देखलनि। सचमुच ओहि ठाम किछु स्याहीक धब्बा छल जे भिन्न तीर सन देखाइत छल।

दूसर भोरि पारीक भण्डारीकेँ पत्र लिखलनि जे उपलब्ध नकलमे दिशाचिह्न आ सीम-वर्णनक असङ्गति अछि, तेँ मूल राजस्व नक्शाक निरीक्षण आवश्यक अछि। भण्डारी उत्तर देलनि जे न्यास सेहो संयुक्त स्थलीय परीक्षणक विरोध नहि करत, बशर्ते न्यायालयक विधिसम्मत प्रक्रिया पालन हो। शरद कोठारी एहि उत्तरपर हस्ताक्षर करैत कहलनि, “जँ हमरा नक्शामे त्रुटि अछि तँ सुधरय चाही; किसानक कागजमे अछि तँ ओहो स्पष्ट हो।” प्रह्लाद वैद्यकेँ ई उदारता जोखिमपूर्ण बुझायल। मुदा न्यासक मुखिया आब विवादक दीर्घकालीन परिणाम बुझि रहल छलाह। हुनका लग शिक्षाक प्रतिष्ठा केवल भवनसँ नहि, न्यायपूर्ण व्यवहारसँ बनैत अछि।

कुसुमक पढ़ाइमे एहि घटना अनपेक्षित परिवर्तन आनि देलक। ओ मरुधर महाविद्यालयक भूगोल-विभागमे प्रवेशक आवेदन भरलक आ अपन प्रस्तावित अध्ययन-विषयमे लिखलक —‘पुरान जलस्रोत आ भूमि-अभिलेखमे दिशाक चिन्ह’। शिक्षक राठौड़ ओकर आवेदन पढ़ि कहलक, “अहाँकेँ अपन घरक विवाद अध्ययनक विषय बनाबय सावधानी चाही; शोधमे निष्कर्ष पहिने निश्चित नहि कएल जाइत अछि।” कुसुम उत्तर देलि, “हम निष्कर्ष नहि जनैत छी। मुदा नक्शा जे नहि देखबैत अछि, ओकर बारेमे पूछय चाहैत छी।” राठौड़ ओकरा प्रवेशक नियम बुझौलनि आ अध्ययनक लेल उपयुक्त पुस्तकक नाम देलनि। ओ न्यायालयमे रामदेवक पक्षक साक्षी बनबाक प्रतिज्ञा नहि केलनि; शिक्षकक भूमिका स्पष्ट राखलनि।

राति खेतक ऊपर आकाश उज्जर छल। राजस्थानक शीतल हवामे कूपक भीतरसँ हलका प्रतिध्वनि सुनाइत छल। रामदेव अपन पुरान सन्दूक फेर खोललनि। एक तरफ १९७८ क विक्रयपत्र, दोसर तरफ १९८२ क नक्शाक नकल, तेसर तरफ न्यासक १९९८ क कागज। ओ सभकेँ एक-दोसरक लग राखि देखैत रहलाह। सत्ताइस वर्षक भविष्यमे एहि कागजक चर्चा सर्वोच्च न्यायालय धरि पहुँचत, से हुनका सपनामे सेहो नहि छल। हुनका केवल एतेक चिन्ता छल जे जँ पगरिया भरि देल जायत तँ खेतपर पानि कोना पहुँचत आ बच्चा घरक पछिला दुआरिसँ कोना निकलत।

जीवनी ओहि समय पानि देबाक लेल आबि कहलीह, “आब सुतू। आदेश भऽ गेल, कूप एखन सुरक्षित अछि।” रामदेव पुछलनि, “अहाँकेँ कोन नक्शा सही बुझाइत अछि?” जीवनी दूनू कागज देखलीह। “हम कागज नहि नापि सकैत छी,” ओ कहलीह, “मुदा जकरा अहाँ उत्तर कहैत छलहुँ, ओहि दिससँ गर्मीमे छाया परैत छल। हम दैनिक जीवनसँ दिशा सीखलहुँ।” कुसुम माएक वाक्य सुनि चौंकि गेलि। नक्शाक दिशासँ भिन्न एक जीवित स्मृति सामने छल, मुदा ओकर वैज्ञानिक परीक्षण एखन बाकी छल। ओ दीपकक लग कापी खोलि लिखलि —“कूपक पूर्वी देवालपर साँझक छाया, माँक कथन; जाँच आवश्यक।” एहि पाँतिमे ओ निष्कर्ष नहि, प्रश्न लिखलक।

आगाँक दिनमे राजस्व कार्यालयसँ मूल नक्शा निरीक्षणक तिथि निश्चित होयबाक समाचार आएल। कागजक दू नकल मात्र नहि, मूलमे बनल उत्तर-चिह्न आ कातक काटल अंश सेहो

देखबाक अवसर भेटत। पारीक एहि समाचारक उल्लेख न्यायालयक अगिला कार्यवाहीक तैयारीमे कएलनि। एक लिपिक धीरे बतौलक जे पुरान सर्वेक्षण-पञ्जीमे १९८२ क नापीक दिन अलग अछि, मुदा नक्शाक नकलपर लिखल तिथि दोसर। पारीक ओकरा लिखित प्रमाणक बिना अभिलेखमे तथ्यक रूपमे नहि रखलनि। तथापि एहि अन्तरकेँ जाँचय योग्य मानलनि। रामदेव पुछलनि, “ई ककर भूल?” अधिवक्ता उत्तर देलनि, “एखन भूल कहबो जल्दी होयत। पहिने ई बुझू जे दू तिथि अलग किएक अछि।”

कूपक नालीक प्रश्न उठलासँ पहिने न्यायालयमे दूनू पक्षक बीचक सम्पर्क बदलि रहल छल। पारीक आ भण्डारी प्रत्येक उपलब्ध कागजक सूची बनौने छलाह। भण्डारी न्यासक अधिवक्ता होइतहुँ स्पष्ट कहलनि जे सरकारी मूल अभिलेखमे जे भेटत, ओकरा अपन पक्षक अनुकूल बनबाक शर्तपर स्वीकार नहि कएल जा सकैत। पारीक सेहो अपन मुवक्किलकेँ चेतौलनि जे न्यायालयक अन्तरिम आदेशकेँ विजयक प्रचारक साधन नहि बनाउ। रामदेव ई सलाह सुनि खेतपर आएल एक समाचारपत्रक संवाददातासँ कहलनि, “न्यायालय केवल कोदाली रोकलक; हमर स्वामित्वक निश्चय नहि केलक।” हुनका आवाजमे निराशा नहि, संयम छल। सन् २००० क बहीखाताक चर्चा दरभंगामे भऽ रहल छल, मुदा एतय जोधपुरमे एक पुरान नक्शा अपनहि भाषा खोलबाक प्रतीक्षामे छल।

मरुधरक प्राचार्य विद्यार्थीक संयुक्त बैठक बजौलनि। छात्रावासक एक निर्विवाद भागमे कार्य जारी रहल छल, मुदा प्रस्तावित पुस्तकालयक अतिरिक्त कोठरी एखन स्थगित छल। प्राचार्य कहलनि जे महाविद्यालयक उद्देश्य केवल प्रमाणपत्र देब नहि, सार्वजनिक जीवनमे नियमक सम्मान सिखाएब सेहो अछि। एक छात्र पुछलक, “जँ वादी गरीब अछि तँ न्यास ओकरा तुरन्त अधिक पैसा दऽ विवाद समाप्त किएक नहि करैत?” प्राचार्य उत्तर देलनि, “पैसाक प्रस्ताव स्वीकार करब अथवा नहि करब, ई अधिकारक प्रश्न अछि। जे चीज पर दोसरक स्वामित्वक दावा अछि, तकर मूल्य तोकबाक पूर्व अधिकारक स्थिति बुझय पड़त।” ई बात सर्वसम्मत नहि भेल। किछु विद्यार्थी कहैत छल जे पढ़ाइ महत्त्वपूर्ण, विवाद गौण। मुदा नसीमा अपन कापीमे लिखलक जे शिक्षा आ न्यायकेँ परस्पर विरोधी ठहराएब स्वयं शिक्षाक अपमान अछि।

कुसुम एक दिन कूपसँ दू मुट्ठी माटि उठाकय अलग-अलग काँचक बरनीमे रखलक। एक बरनीमे कूपक पुरान देवालक कातक माटि छल, दोसरमे नब निर्माणस्थलक। विमल पुछलक, “की एहिसँ जमीनक स्वामित्व सिद्ध होयत?” कुसुम हँसि देलक। “नहि, कदापि नहि। हम केवल माटिक बनावट बुझय चाहैत छी। न्यायालयक कागज हेतु विशेषज्ञ चाही, माटिक विज्ञान हेतु प्रयोग। दुनू ठाम प्रश्न पहिने स्पष्ट करबाक अछि।” भाइ-बहिनक एहि वार्तामे जीवनी सुनैत छलीह। हुनका लागि सभसँ पैघ बात ई छल जे दीर्घ मुकदमा बच्चाक अध्ययन छीनि नहि लऽ रहल अछि; उलटे अध्ययनकेँ नव प्रश्न दऽ रहल अछि। मुदा ओ भीतरसँ जानैत छलीह जे एहन संतुलन आर्थिक थकान बढ़लापर टिकत कि नहि, से भविष्य बताओत।

रात्रिक अन्तमे कुसुम पन्ना उलटि एकटा छोट निशान देखलक जे रामदेवक पुरान विक्रयपत्रमे सेहो छल—कूपक लग बेरक गाछ नहि, ओकर पश्चिममे बनल एक पुरान वर्षाजलक नाली। १९८२ क नकलमे नालीक रेखा आधा छपल छल, जखन कि न्यासक नब नक्शामे ओकर उल्लेखहि नहि। “बाबूजी,” कुसुम कहलि, “जँ नाली ओहि ठाम छल, तँ कूपक दिशा पुनः देखबाक पड़त।” रामदेव खाटपरसँ उठि आएलाह। हुनकर आँखि थाकल छल, मुदा ओ बेटीक कापीपर एकटा रेखा देखलनि आ कहलनि, “एहि रेखाकेँ अदालतमे सत्य कहि नहि दिह। एकरा जाँचबाक प्रश्न कहिह।” कुसुम माथ हिलौलक। बाहर मरुधरक राति गहिर छल। विवादित पट्टीपर कोदाली थमकि गेल छल, मुदा पुरान नक्साक भीतर सँ एक नव प्रश्न जागि उठल छल—कागजक उत्तर दिशा के निर्धारित केने छल, आ ओहि निर्णयक समय वास्तविक भूमि कतय ठाढ़ छल?

अध्याय ५ — जकर घर जरल

अहमदाबाद, फरवरी–दिसम्बर २००२; मरुधर आ दिल्लीक समानान्तर घटना

अहमदाबादक ओहि फागुनमे धूपक रङ्ग बुझाइत छल जेना ककरो पुरान पीतल चमकबैत-चमकबैत थाकि गेल हो। सलीम अंसारी अपन पुस्तक-बन्हबाक दोकानक सामने कागजक कतरन झाड़ि रहल छलाह। दोकान बहुत पैघ नहि छल; दू काठक मेज, कागज काटबाक लोहेक यन्त्र, सूत आ लेइक डिब्बा, आ देवालपर टाँगल एकटा घड़ी। विद्यालयक परीक्षाक महीना लग आबि रहल छल, तेँ उत्तरपुस्तिका आ रजिस्टर बन्हबाक काम बढ़ल छल। सलीमकेँ पुस्तकक पन्ना जोराबयमे एकटा विशेष सुख भेटैत छल। ओ कहैत छलाह, “जे कागज अलग-अलग रहैत अछि, ओकर बात बिखरल रहैत अछि; सिललाक बाद ओकरा क्रम भेटैत अछि।” हुनकर बेटी सायरा ई वाक्य सुनिकय हँसैत छलि। ओ विश्वविद्यालयमे इतिहास पढ़बाक सपना देखैत छलि, मुदा घरक आमदनी एखन ओकर परीक्षाक खर्च धरि जोड़ि पबैत छल।

सलीमक घर दोकानसँ चारि गली पाछाँ छल। जमीला बेगम भोरमे घरक आँगन झाड़ैत छलीह, हकीम यूसुफ खाटपर बैसि पुरान चश्मासँ अखबार देखैत छलाह, आ छोट बेटा फैज़ अपन बहिनक कापीमे नदीक चित्र बनबैत छल। हुनकर घरक अगलबगल हिन्दू, मुसलमान आ जैन परिवार रहैत छल। बगलमे कान्ताबेन पटेलक सिलाइक छोट काम छल। रमेश प्रजापति माटिक बर्तन बेचैत छलाह। गलीक जीवनमे झगड़ा नहि होइत छल, एहन बात नहि; पानिक नाली, ठेला राखबाक ठाम, दुकानदारक उधार—सभपर तकरार होइत छल। मुदा रोजक तकरारक भीतर एकटा सामान्य भरोसा छल जे राति परस्परक फाटक बन्द रहत आ भोरमे फेर खुलत।

सायरा २७ फरवरीक साँझ बीकानेरमे पढ़ैत अपन मौसेरी बहिन नसीमा बानोकेँ पत्र लिखने छलि। नसीमा मरुधर महाविद्यालयक छात्रावासक प्रतीक्षामे छलि, आ सायराकेँ अपन दोसर वर्षक प्रवेश लेल ओकरासँ किछु जानकारी चाही छल। पत्रमे सायरा अपन इतिहासक

शिक्षकक चर्चा कएने छलि जे कहलनि—“इतिहासक पाठमे राजा-रानी कम, सामान्य लोकक लिखल पाती बेसी पढ़ू।” ओ लिखने छलि जे घरक दोकानमे पुरान सरकारी रजिस्टर बन्हबाक समय मनुष्यक नाम देखिकय ओकरा विचित्र लागैत अछि: जे लोक कागजमे छथि, हुनकर वास्तविक जीवन कतेक भिन्न भऽ सकैत अछि। पत्रक अन्तमे ओ नसीमासँ मरुधरक छात्रवृत्तिक प्रपत्र मँगने छलि। पत्र डाकघरमे पठेबाक पहिने ओहि राति रेडियोपर गोधराक रेलगाड़ीमे लागल आगि आ मृत्युक समाचार सुनल गेल। घरमे भोजनक थारी परोसैत जमीला स्तब्ध भेलीह।

हकीम यूसुफ रेडियो बन्द नहि कएलनि। ओ बहुत दिनसँ रोगीक जड़ी-बूटीक उपचार छोड़ि देने छलाह, मुदा समाचार सुनबाक आदत नहि छोड़ने छलाह। सलीम पुछलनि, “एतेक लोक कोना मरि गेल?” यूसुफ उत्तर नहि देलनि। ओ केवल एतेक कहलनि जे जकरा आगि लेल जिम्मेवार ठहराएल जाए, ओकरा विधिक जाँच आ न्यायालयक समक्ष प्रस्तुत करबाक चाही; निर्दोषक घर जरौने सँ मृतक फेर नहि उठत। सायरा अपन पत्र मोड़ि सन्दूकमे रखि देलक। ओकरा लगैत छल जे देशक दूरक घटना ओही प्रकार दूर रहत, जेना भूगोलक पुस्तकमे पर्वतक चिन्ह। दोसर भोरिसँ ओकर ई विश्वास टूटय लागल।

२८ फरवरीक पूर्वाह्न बजारमे दोकान जल्दी-जल्दी बन्द होमय लागल। सलीम सामनेक किराना दोकानदारसँ कारण पुछलनि। उत्तर भेटल—भीड़ निकलल अछि, घर चलू। किछु दूरसँ नारा सुनाइत छल; ओहि आवाजमे अपन पड़ोसक परिचित लोकक स्वर अलग करब कठिन छल। सलीम दोकानक लोहेक पल्ला नीचाँ कएलनि, मुदा भीतर किछु विद्यालयी रजिस्टर, छात्रवृत्तिक प्रमाणपत्रक जिल्द आ अपन हिसाबक बही रहि गेल। ओ बही उठा लेबाक सोचलनि; फेर देखलनि जे गलीक मोड़पर लोक दौड़ि रहल अछि। जमीला दरवाजापर ठाढ़ छलीह। सलीम बही छोड़ि घर दिस मुड़ि गेलाह। एहि छोट निर्णयक अर्थ ओ कएक मास बादो बुझबाक यत्न करताह—कोन वस्तु बचाओल जा सकैत छल, आ कोन वस्तु पहिने बचाओल आवश्यक छल।

दुपहर धरि गलीक वायु बदलि गेल। धुआँक गन्ध, लोहेक फाटकपर प्रहारक आवाज, ककरो घरे लुकयक आज्ञा, ककरो नाम लऽ बजेनाइ। हिंसाक पाछाँ स्थानीय लोकक विशिष्ट

भूमिका छल, मुदा ओ क्षणमे सलीम सभ चेहरा देखबाक स्थिति मे नहि छलाह। कान्ताबेन अपन घरक पिछिला दुआरि खोलि जमीला आ बच्चासभकेँ भीतर बजौलक। “तेजी करू,” ओ केवल एतेक कहलक। हकीम यूसुफ सीढ़ी उतरैत काल ठोकर खा गेलाह। कान्ताबेनक बेटा हर्षद हुनकर हाथ पकड़ि भीतर लऽ गेल। सलीम अन्तिम बेर अपन घरक दुआरि दिस ताकलनि। ओतय उभ रहल आँगनक निमक गाछपर धुआँक छाया पड़ि रहल छल।

कान्ताबेनक घरक नीचला कोठरीमे सात व्यक्ति सिमटि गेलाह। माथपर चादर ओढ़ने फैज़ काँपैत छल। सायरा ओकर हाथ पकड़ने छलीह, मुदा ओकर अपन हाथो काँपि रहल छल। कान्ताबेन परिवारकेँ पानि देलनि आ फाटकक भीतरसँ बाहरी आवाज सुनैत रहलीह। हर्षद अपन मित्रक फोनपर पुलिसकेँ समाचार देबाक प्रयास केलक; सम्पर्क भेल कि नहि, से स्पष्ट नहि छल। सलीमकेँ एहि बीच अपन दोकानक दिशासँ काँच फूटबाक आवाज सुनायल। ओ आगाँ बढ़बाक यत्न कएलनि, मुदा कान्ताबेन रोकि देलनि—“दोकान पाछाँ बनत। आदमी नहि बनत।” सलीम चुप भऽ गेलाह। ई वाक्य साँच छल, मुदा दोकानमे काजक संग हुनकर समस्त कमाइक स्मृति छल, जकर नष्ट होयबाक कल्पना सहब कठिन छल।

दोपहरक किछु बाद भीड़ दोसर गली दिस बढ़ल। सलीम अपन घरक छतपर धुआँ देखलनि। कान्ताबेनक पड़ोसी प्रेमजी मकवाणा नगरपालिका लेल पानिक नलक मरम्मत करैत छलाह। ओ सड़कक कात गाड़ी छोड़ि घर लौटबाक प्रयत्नमे छलाह। ओहिना लौटैत हुनका एकटा परिचित स्थानीय व्यक्ति किछु आन लोकक संग सलीमक दोकान लग देखाइत छल। प्रेमजी ओकर मुख साफ देखलनि कि भयमे अनुमान लगौलनि, से बादमे हुनकर जीवनक केन्द्रीय प्रश्न बनत। एहि समय ओ केवल धुआँ आ जँता लगल फाटकक कात छितरायल पुस्तकक कतरन देखलनि। ओ सलीमक घर दिस नबढ़ि कान्ताबेनकेँ संकेत केलनि जे पाछाँ सँ सुरक्षित मार्ग अछि।

साँझ ढललापर परिवारक लोक एक सहायता-गाड़ीक संग सुरक्षित स्थान धरि पहुँचौल गेलाह। गाड़ीक भीतर सभक नाम लिखल जाइत छल, मुदा लिखनिहार स्वयं थाकल छल। हकीम यूसुफक नाम ‘यूसुफ हकीम’ लिखल गेल, जखन कि हुनकर परिचयपत्रमे ‘मुहम्मद यूसुफ’ छल। सायरा अपन नामक वर्णक्रम बतौलि, मुदा गाड़ीक हल्लामे लिखनिहार ‘सायरा’

क स्थानपर ‘सायबा’ लिखि देलक। जमीला आग्रह कएलनि जे नाम ठीक कएल जाए। सहायताकर्मी कहलनि, “पहिने सुरक्षित पहुँचू, बादमे ठीक करब।” ई उचित तात्कालिक क्रम छल, मुदा ओही त्रुटि भविष्यक राहत-अभिलेखमे उतरि गेल। कागजपर गलत लिखल एक अक्षर कोना बारम्बार लौटैत अछि, एहि दिन परिवारकेँ एकर ज्ञान नहि छल।

राहत शिविरमे पहिल रात्रि कोनो घड़ीसँ नहि नापल जा सकैत छल। बच्चासभक रोदन, पानीक पंक्ति, जख्मी लोकक कराह आ जे परिजन नहि पहुँचलाह हुनकर नामक पुकार। जमीला एक परित्यक्त चादरक कात बैसलि। सलीमक हाथमे दोकानक चाभीक एक गुच्छा छल, जे हुनका स्वयमे नहि बुझाइत छल किएक एखनो पकड़ेने छथि। हकीम यूसुफ थाकिकय आँखि मुनि लेने छलाह। सायरा दुआरिपर बैसल एक स्वयंसेविकासँ कागज मँगलक। ओ अपन परिवारक सही नाम, उमेर आ पुरान ठेकाना लिखलक, ताकि गाड़ीक सूचीमे भेल गलती ठीक कराओल जा सकय। स्वयंसेविका ओ कागज देखिकय कहलनि, “एहि प्रति अपनासँ अलग नहि करिह।” सायरा पहिल बेर अनुभव केलक जे सही नाम लिखल कागज जीवन बचौने व्यक्ति धरि पहुँचबाक मार्ग बनि सकैत अछि।

दू दिन बाद सलीम आ प्रेमजी, राहतक व्यवस्था करैत एक अधिकारीक अनुमतिसँ, अपन पुरान मोहल्ला देखय गेलाह। अग्निदग्ध घरसभक बीच कतेको ठाम देवाल बचल छल, मुदा भीतरक जीवन नष्ट। सलीमक दोकानमे काठक मेज कारी भऽ गेल छल। लोहेक कागज-काट यन्त्रक एक भाग वक्र भऽ गेल छल। पुस्तकक पन्ना आधा जरल, आधा भीजल अवस्था मे जमीनपर सटल छल। जमीला जकर सन्दूकमे बेटीकेँ प्रमाणपत्र राखबाक सीख देलनि छल, ओ सन्दूकक ढक्कन खुलल छल। सलीम बोललाह नहि। प्रेमजी पुछलनि, “किछु प्रमाण बचल?” सलीम लोहाक पेटी उठौलनि। भीतर एकटा जारल कपड़ाक पोटली आ आधा भीजल कापी छल। विद्यालयक परिणामक मूल प्रमाणपत्र नहि भेटल।

प्रेमजी घटना देखबाक समय अपन भय नुकौने छलाह, मुदा लौटैत रस्तामे ओ बारम्बार पाछाँ ताकैत रहलाह। हुनकर पत्नी सावित्री पुछलीह जे पुलिसकेँ ओ की कहने छथि। प्रेमजी उत्तर देलनि, “जे देखलहुँ से कहब।” सावित्री हुनका अपन छोट बेटाक स्कूलक पथ देखौलनि। “तखन ईहो बुझू जे गवाहीक बाद ओकरा रोज एही गलीसँ जाय पड़त,” ओ कहलीह। दूनू

बहुत देर चुप रहलाह। प्रेमजी बुझैत छलाह जे जकर परिवार जरल, ओकरा बचावक लेल देखल बात नुकाएब उचित नहि; मुदा अपन परिवारक दैनिक सुरक्षाक भीत सेहो वास्तविक छल। सामाजिक साहसक कथा एतयसँ आरम्भ भेल—जतय सही बात कहबाक इच्छा आ ओकर परिणामक भय एकहि मनमे ठाढ़ छल।

मार्चक आरम्भमे राहत-शिविरमे पुलिसक अधिकारी आ कर्मचारी आयलाह। किछु लोक प्राथमिकीमे उल्लिखित घटनासभक बारेमे अपन जानकारी देलनि; किछु पहिने दर्ज शिकायतमे अतिरिक्त विवरण लिखबाबय चाहैत छलाह। सलीम हुनकर दोकान आ घरपर भेल आक्रमणक समय, देखल दृश्य आ जकर नाम स्वयं नहि जानैत छलाह ओकर विवरण अलग-अलग कहलनि। अधिकारी बारम्बार पुछैत छलाह जे ओ आरोपितक चेहरा देखलनि कि नहि। सलीम साँच कहलनि—“हम सबकेँ नहि देखलहुँ। धुआँ छल, आवाज छल। जकरा देखलहुँ, ओकर पहिचानक बात अलग अछि।” अधिकारीक अधीरता हुनका लगल, मुदा ओ ओकरा अप्रिय होयबाक कारण अपन स्मृति नहि बदललनि।

प्रेमजीक कथन लेल पुलिस अलग तिथि राखलक। ओ कहलक जे सलीमक दोकान लग भीड़मे अपन परिचित मोहल्लाक एक व्यक्तिक चेहरा देखलक। अधिकारी नाम लिखलनि, समय पुछलनि, दिशाक ब्योरा लेलक। प्रेमजीक कथन पुलिसक अन्वेषणक सामग्री बनल; ओ एखन अदालतमे शपथ लऽ देल साक्ष्य नहि छल। एहि अन्तरकेँ ओहि दिन प्रेमजी पूर्ण रूपेँ नहि बुझलाह। सायरा एक नब कापीमे पुलिसक आगमन, परिवारक बात आ गवाहक चिन्ता लिखि रखलक। ओकरा इतिहास पढ़बाक इच्छा छल; आब ओकरा लगैत छल जे इतिहास ककरो बहुत बाद लिखल पुस्तक मात्र नहि, घटना घटैत समयक काँपैत हस्ताक्षर सेहो होइत अछि।

बीकानेरक नसीमा बानोकेँ समाचार जोधपुरक किरायाक कोठरी धरि देरिसँ पहुँचल। ओ पहिने गोधराक दुःखद समाचार सुनने छलि, फेर गुजरातमे भड़कल हिंसाक। मुदा खाला जमीला आ बहिन सायराक ठेकाना नहि भेटलापर ओकरा राति सुतब कठिन भऽ गेल। एक मित्रक घरक दूरभाषसँ कतेको प्रयास पछाति राहत-शिविरक एक स्वयंसेविकासँ बात भेल। ‘सभ जीवित छथि,’ ई दू शब्द नसीमाकेँ पहिल बेर राहत देलक। मुदा जखन ओकरा पता चलल जे सायराक प्रमाणपत्र जरि गेल आ परिवार लौटबाक अवस्था मे नहि अछि, तँ ओकरा

मरुधर महाविद्यालयक छात्र-सहायताक कोष स्मरण भेल। ओ प्राचार्यक कार्यालयमे एक आवेदन देलक—नहि राजनीतिक भाषण, नहि ककरो विरुद्ध असिद्ध आरोप; केवल विस्थापित विद्यार्थी लेल प्रमाणित शैक्षणिक सहायता।

प्राचार्य पहिने आवेदन पढ़ि पूछलनि, “अहाँक बहिन एतय नामांकन चाहैत छथि?” नसीमा कहलि, “ओ अपन पढ़ाइ जारी राखय चाहैत छथि। कागज नहि रहल, मुदा विद्यालयमे ओकर नाम अवश्य रहल होयत।” प्राचार्य प्रवेशक नियम आ प्रमाणपत्रक सत्यापनक आवश्यकता बतौलनि। इतिहासक अध्यापक ईश्वरदत्त राठौड़, जे रामदेवक भूमि-विवादक कारण विद्यार्थीक जीवनमे पहिनेसँ ध्यान दैत छलाह, ओ उपस्थित छलाह। ओ पुछलनि, “विद्यालयसँ प्रमाणित नकल मँगाओल जा सकैत अछि कि नहि?” प्राचार्य कहलनि जे होय सकैत अछि; संस्थाक स्तरपर अस्थायी अध्ययन-सहायताक व्यवस्था सेहो विचारल जा सकैत अछि, मुदा औपचारिक प्रवेशक नियम छोड़ल नहि जा सकैत। नसीमा ओहि उत्तरमे पहिल बेर ठोस उपाय देखलक।

राठौड़ नसीमाकेँ छात्रवृत्तिक सामान्य प्रपत्र देखौलनि। ओ कहलक, “कागजक अभावक कारण जे पढ़ाइ छूटि रहल अछि, ओकर समाधान खोजब चाही। मुदा गलत प्रमाणपत्र बनबायब समाधान नहि।” नसीमा हँसलि नहि। ओकरा भान छल जे सायराक घरमे आइ भोजनक चिन्ता अछि, आ ओ एतय पुस्तकक चर्चा करैत अछि। राठौड़ ओकर मौन बुझि कहलक, “भोजन पहिने अछि, शिक्षा ओकर विरोधी नहि। जँ ओ एतय अबैत छथि तँ रहबाक व्यवस्था सेहो देखब पड़त।” ओ बालिका-छात्रावासक अधूरा निर्माणक विषय स्मरण कएलनि। रामदेवक जमिनपर जे अन्तरिम निषेधाज्ञा भेल छल, ओकरा नसीमा गलत नहि मानैत छलि, मुदा एहि नब घटनासँ छात्रावासक आवश्यकता ओकरा आओर तीव्र बुझायल।

कुसुम मण्डल पुस्तकालयक बाहर नसीमाकेँ उदास बैसल देखलक। पहिने दूनूक भेट छात्रावास आ कूपक विषयमे भेल छल। कुसुम लग जा पुछलक, “घरमे सभ कुशल?” नसीमा ओकरा खालाक घरक कथा कहलि। कुसुमक आँखि भरि आयल। ओ अपन पिता रामदेवक भूमि-विवादमे छात्रावासक आवश्यकताक प्रश्न पर बहस सुनने छलि; मुदा आब ओकर सामने एहन लड़कीक कथा छल जकरा शिक्षाक दोसर अवसर राखय लेल पत्रक मूल प्रति धरि नहि

बचल। कुसुम कहलक, “हमर माँ कहैत छथि जे कागजक गलत रेखासँ जमीन गुमि सकैत अछि। अहाँक बहिनक कागज जारि देल गेल; की कागजक संग ओकर पढ़ाइ सेहो जरि जाएत?” नसीमा उत्तर देलक, “हम एहि प्रश्नक उत्तर खोजि रहल छी।”

एहि बीच सायरा राहत-शिविरमे बालिकासभकेँ पढ़बय लागलि। कतेको बच्चाक पुस्तक नष्ट भेल छल। ओ टूटल पेन्सिल, रद्दी कागज आ स्वयंसेवकसँ भेटल पुरान कापीक पन्नासँ अक्षर लिखबबैत छलि। एक छोटी बच्ची पूछलक, “हमर घरक नक्शा बना दी?” सायरा ओकरा जमीनपर घरक चारि रेखा खींचबय कहलक। बच्ची एकटा कोठरी बनौलक, ओहिमे तीन व्यक्ति आ छतपर पक्षी। सायरा देखलक जे बच्ची अपन मृत पिताक स्थान सेहो चिन्हित कएने अछि। ओ ओकरा रोकेलनि नहि। इतिहासक पाठमे जे तिथि लिखल जाइत अछि, ओकर भीतर एहन असंख्य निजी दृश्य रहैत अछि। सायरा एहि बातकेँ लिखि राखलक, मुदा बच्चीक नाम ककरो अनधिकृत रूपसँ नहि देलक।

राहत-शिविरक बाहरी फाटकपर प्रतिदिन अनेक गाड़ी अबैत छल। कोनो आटा लाबैत, कोनो औषधि, कोनो बच्चासभक वस्त्र। किछु लोक अपन नाम प्रकाशित कराबय चाहैत छल, किछु बिना किछु कहने सामान उतारि चलि जाइत छल। जमीला अनुभव कएलनि जे सहायता देनिहारक हाथमे धर्म, भाषा, जाति आ विचारक भिन्नता अछि। एक वृद्ध हिन्दू शिक्षक अपन सेवानिवृत्तिक बचतसँ कापी अनने छलाह; एक मुसलमान महिला चिकित्सक दिनभरि बच्चासभक जाँच करैत छलीह; एक दलित युवक पानिक पंक्ति लगबैत छल। हुनका सभमे मतभेद सेहो छल, मुदा भुखायल बच्चाकेँ भोजन देबाक घड़ीमे ककरो पहिने परिचयपत्र देखबाक फुरसत नहि छल। एही समानान्तर जीवनकेँ सायरा अपन कापीमे ‘आगिक बीच बचल लोक’ नाम देलक।

कान्ताबेन पटेल सुरक्षित मार्गसँ शिविर धरि पहुँचलीह। ओ सलीमक परिवार लेल किछु वस्त्र, फैज़क स्कूलक पुरान पुस्तक आ सायराक आधा जरल एकटा जिल्द अनने छलीह। ओ जिल्द हुनका अपन घरक पिछिला कोठरीमे भेटल छल। सायरा ओहि कागजक कोर देखिकय चौंकि गेलि—ई ओकर इतिहासक नोटक पन्ना छल। आगिक ज्वाला दुआरि धरि पहुँचल छल, मुदा पन्नाक भीतर लिखल किछु पंक्ति बचल छल। सायरा कहलक, “काकी, ई पुस्तक

अहाँकेँ कतय भेटल?” कान्ताबेन कहलीह, “जे दिन पाछाँ गेलहुँ, ओतय राखल देखलहुँ। राखि देने छलहुँ। किताबक अधजरल पन्नाकेँ कचरा कोना कहैतहुँ?” हुनकर आँखि नम भऽ गेल।

कान्ताबेन शिविरमे बेसी देर नहि रुकलीह। हुनकर अपन घरपर सेहो भयक छाया छल; पड़ोसक किछु लोक हुनका पर दोष लगबैत छल जे ओ सलीमक परिवारकेँ शरण किएक देलनि। ओहि प्रश्नक उत्तर ओ प्रत्येक बेर एके दैत छलीह—“ओ हमरा पड़ोसी छथि।” मुदा एहि सरल उत्तरक सामाजिक मूल्य ओ चुकबैत छलीह। सिलाइक दू पुरान ग्राहक कपड़ा देब बन्द कऽ देने छल। एक अज्ञात व्यक्ति हुनकर फाटकपर कारी रङ्गसँ अपशब्द लिखि गेल छल। हर्षद ओ अक्षर धिो देने छल, मुदा डेलापर खरोंच बचल छल। सलीम अपन बचल पैसा हुनका देब चाहलनि; कान्ताबेन कहलीह, “एखन अहाँकेँ बेसी आवश्यकता अछि।”

जमीला एकटा बातपर अड़ि गेलीह—सायरा फेर पढ़त। सलीम कहैत छलाह जे पहिने घर चाही। जमीला प्रतिवाद करैत छलीह, “घर बिना पढ़ाइ कठिन अछि, मुदा पढ़ाइ छोड़लापर घरक फेर निर्माणक उपायो छोट भऽ जाएत।” हकीम यूसुफ मूक सहमति दैत छलाह। ओ अपन जीवनमे कतेको बेर घर बदलने छलाह; एहि बेर बालबच्चाक पढ़ाइ टूटि गेल तँ जकरा ‘अस्थायी’ कहल जा रहल अछि, से कतेक दीर्घ भऽ जाएत, ओकर अनुमान हुनका छल। सायरा अपन माँकेँ कहलक जे नसीमा पत्र पठौने अछि। ओहि पत्रमे मरुधरक छात्रवृत्ति, पुस्तकालय आ प्रमाणपत्रक सत्यापनक उपाय छल। सलीम पत्र ध्यानसँ पढ़लनि; ओ ताहिमे ‘प्रवेश सम्भव होयत’ पढ़लनि, ‘निश्चित प्रवेश’ नहि।

ओम्हर मरुधरक मैदानमे कुसुम आ नसीमा प्राचार्यक परामर्शसँ एक छोट पुस्तक-सङ्ग्रह आरम्भ कएलनि। कोनो विद्यार्थीक पुरान इतिहासक पुस्तक, कोनो भूगोलक मानचित्र, कोनो शब्दकोश। कुसुमक पिता रामदेव अपन खेतक विवादमे व्यस्त रहितहुँ एकटा काठक सन्दूक दान देलनि, जाहिमे पुस्तक सुरक्षित राखल जा सकय। नसीमा धन्यवाद देलक। रामदेव कहलनि, “हमर माटिक मुकदमा चलि रहल अछि, मुदा शिक्षाक दुआरि बन्द करबाक ई कारण नहि।” सन्दूकपर कोनो दानदाताक नाम नहि लिखल गेल। मात्र कागजक एक पर्ची लगाओल गेल—“जकर पुस्तक नष्ट भेल, ओकरा लेल।” एहि छोट आयोजनमे महाविद्यालयक विद्यार्थी

अपन-अपन कारणसँ सम्मिलित भेलाह; ककरो विचार एके नहि छल, मुदा कतेको हाथ मिलल।

अप्रैलक आरम्भमे अहमदाबादक एक अधिवक्ता विनय देसाई सलीमक परिवारसँ भेटबाक लेल शिविर पहुँचलाह। ओ स्थानीय विधिक सहायता समूहसँ जुड़ल छलाह आ ओहि सप्ताह अनेक परिवारक शिकायतक क्रमबद्ध अभिलेख तैयार करैत छलाह। देसाई नहि कहने छलाह जे ओ सभकेँ न्याय दिला देत; ओ पुछैत छलाह जे ककरा की प्रत्यक्ष देखल, ककरा की सुनल, कोन कागज बाँचल आ ककरा गवाह बनबाक इच्छा अछि। सलीम हुनका अपन दोकानक विवरण देलनि। देसाई कहलक, “दोकानक क्षति आ आगि लगौनिहारक आपराधिक उत्तरदायित्व—दू अलग विषय अछि। दूनूक प्रमाण अलग-अलग तैयार होयत।” जमीला पुछलीह, “जे कागज सभ जारि गेल, तकरा की करब?” देसाई कहलनि, “जँ सार्वजनिक अभिलेखमे नकल अछि तँ ओहि बाटेँ खोजब।”

विनय देसाई नीलकान्तक मुकदमा अथवा शिवनारायणक परिवारसँ परिचित नहि छलाह। मुदा दिल्लीमे पढ़ि रहल रेवती अपन सहपाठीक माध्यमसँ गुजरातमे उपलब्ध विधिक सहायता-कार्यक सूचना सुनलीह। ओ पितासँ अनुमति नहि, सलाह मँगलीह। शिवनारायण कहलनि, “जँ जाउ तँ वकीलक रूपमे नहि, विद्यार्थी स्वयंसेविकाक रूपमे। ककरो जीतक वचन नहि देब, आ ककरो कथन अपन शब्दमे बदलि नहि देब।” रेवती हुनकर ई सावधानी याद रखलीह। दिल्लीसँ पहुँचल स्वयंसेवकक छोट समूह दस्तावेजक नकल, परिवारक सम्पर्क-ठेकाना आ विद्यालयसँ प्रमाणपत्र पुनः प्राप्त करबाक अनुरोध तैयार करय लागल। ओकरा लोकनिक मुख्य काज सुनब छल; अदालतमे पक्ष राखबाक अधिकार ओहि समय रेवतीकेँ नहि छल।

सायरा आ रेवतीक भेट शिविरक एक अस्थायी पाठशालामे भेल। सायरा बच्चासभकेँ माटिपर भारतक नक्शा बनबैत छलीह। रेवती पुछलनि, “अहाँ पढ़बैत छी?” सायरा कहलि, “हम स्वयं विद्यार्थी छी। किताब नहि अछि, मुदा जे याद अछि से लिखि रहल छी।” रेवती ओकर कापी देखलीह। पहिल पन्नापर नामक सूची, दोसरपर परिवारक खोएल वस्तु, तेसरपर बच्चासभक घरक चित्रक विवरण। रेवती कहलीह, “ई सभ न्यायालय लेल तैयार साक्ष्य नहि

अछि, मुदा स्मृति सुरक्षित रखबाक महत्त्वपूर्ण प्रयास अछि। अहाँ तारीख आ जकर बात अछि, ओकर स्रोत अलग लिखू।” सायरा पुछलक, “हम जे देखलहुँ, तकरा केओ मानत?” रेवती उत्तर देलनि, “हम नहि जनैत छी न्यायालय की मानत। मुदा अहाँ जे प्रत्यक्ष देखलहुँ, से अछूता राखू।”

रेवतीक एहि उत्तरसँ सायरा सन्तुष्ट नहि भेलि। ओ चाहैत छलि जे कोनो अनुभवी लोक कहलथि—सभ ठीक भऽ जाएत। मुदा रेवतीक असमर्थतामे एकटा सच्चाई छल। राहत-शिविरमे बहुतो लोक आश्वासन दैत छलाह, जकरा पूरा करबाक शक्ति हुनका नहि छल। सायरा धीरे कहलि, “जखन घर जरैत छल तखन हम धुआँ देखलहुँ, किछु आवाज सुनलहुँ। मुदा जे नाम लोक कहैत छथि, सभकेँ हम अपन आँखिसँ नहि देखलहुँ।” रेवती कहलनि, “तखन गवाहीमे एहि भेदकेँ राखू। अपन दुःखक प्रमाण लेल आनक नाम कल्पना करबाक आवश्यकता नहि।” सायरा एहि वाक्यक कठोरता मनमे रखलक। ओकरा अपमान नहि, अपन स्मृतिक सम्मान बुझायल।

रेवती देसाईसँ भेटलीह। हुनका भेटल पुलिसक कथनक एक नकलक प्रश्नपर देसाई स्पष्ट कएलनि जे अन्वेषणक दौरान पुलिस द्वारा दर्ज कथन न्यायालयमे स्वतः मूल साक्ष्य नहि बनैत अछि। साक्षीक बादक न्यायालयीन गवाही आ अन्य स्वतंत्र प्रमाणक अपन महत्त्व अछि। यदि साक्षी अपन बयान बदलय, तँ विरोधाभास कानूनी प्रक्रियासँ देखाओल जा सकैत अछि। रेवती अपन कापीमे एहि विचारक सूक्ष्मता लिखलनि। ओहि दिन हुनका पहिल बेर बुझायल जे न्यायालयक भाषा कतेक सावधानी मँगैत अछि। समाचारपत्रमे छपल ‘गवाह बदलि गेल’ कहब सरल अछि; मुदा कोन घड़ी, कोन अधिकारी समक्ष, की कथन बदलल, आ किएक—एहि प्रश्नक उत्तर बिना ओ वाक्य अधूरा अछि।

प्रेमजी मकवाणाकेँ एहि बीच दू बेर अपरिचित लोक भेटल। पहिल बेर नगरपालिकाक कार्यालयक बाहर एक आदमी कहलक जे पुरान झगड़ा भूलि घर-गृहस्थी देखू। दोसर बेर सावित्रीकेँ गलीमे ककरो मुँहसँ सुनब पड़ल जे प्रेमजी बहुत बजैत छथि। स्पष्ट धमकीक प्रमाण केहन छल, से प्रेमजीकेँ नहि बुझायल; मुदा संकेत मात्रसँ परिवारमे भय घर बना लेलक। ओकर बेटा दिलीप विद्यालय जाएबासँ आनाकानी करय लागल। सावित्री प्रेमजीसँ कहलीह,

“तों जे देखलह से नहियेँ बदलत। मुदा हमरा सभकेँ सुरक्षा के देत?” प्रेमजी चुप रहला। ककरो विरुद्ध झूठ कहबाक पक्षमे ओ नहि छलाह; सत्य कहि परिजनकेँ जोखिममे राखबाक विचार सेहो हुनका विचलित करैत छल।

एक साँझ प्रेमजी देसाईक कार्यालय पहुँचलाह। ओ विस्तृत रूपेँ कहलनि जे पुलिससमक्ष देल कथन पछाति हुनका सामाजिक दबाव अनुभव होइत अछि। देसाई हुनका शिकायत लिखबय, सम्बन्धित पुलिस-अधिकारीकेँ सूचित करबय आ उपलब्ध विधिसम्मत सुरक्षाक अनुरोध करबाक बाट बतौलनि। ओ एहि बातक आश्वासन नहि देलनि जे २००२ मे कोनो सर्वत्र लागू व्यवस्थित गवाह-सुरक्षा योजना तुरन्त उपलब्ध अछि। स्थानीय प्रशासनक कर्तव्य आ व्यवहारक अन्तर ओ स्पष्ट कएलनि। प्रेमजी पूछलनि, “जँ हम अदालतमे ओहि व्यक्तिक नाम लिअ तँ ओकर दण्ड निश्चित होयत?” देसाई उत्तर देलनि, “नहि। अहाँक गवाही एक प्रमाण होएत; न्यायालय समस्त विश्वसनीय प्रमाणक आधारपर निर्णय करत।” प्रेमजीकेँ एहि उत्तरमे राहत नहि भेटल, मुदा ओ सच्चा छल।

शहरक एक समाचारपत्र सलीमक दोकानक जारल चित्र छापलक। समाचारमे परिवारक हानिक वर्णन छल, मुदा खबरक शीर्षक बहुत ऊँच छल—‘संगठित भीड़क साजिशक निर्णायक प्रमाण’। सलीम पत्रकारकेँ कहलनि जे हुनकर बयानकेँ एहन अन्तिम निष्कर्षक रूप नहि देल जाए। पत्रकारक युवा सहायक स्वीकार केलक जे शीर्षक सम्पादनक समय बदलल गेल। एहि घटनासँ परिवारक भीतर नव विवाद उठल। जमीला चाहैत छलीह जे दुनिया हुनकर दुःख जनय। सलीम चाहैत छलाह जे समाचार सही रहय, नहि तँ जखन अदालतमे प्रश्न उठत तँ कतेको लोक कहत जे ओ सभ अतिशयोक्ति करैत छथि। सायरा अपन कापीमे लिखलक —“हमर घर जरल, एहि बातकेँ पैघ बनाबय लेल झूठक आवश्यकता नहि।”

मईक गरमी बढ़ल। राहत-शिविरक छत दिनक पहरमे असह्य तपैत छल। हकीम यूसुफकेँ पुरान श्वासक बीमारी सताबय लागल। जमीला औषधिक पंक्ति लगैत छलीह। एक युवा चिकित्सक हुनकर जाँच कय उचित उपचार देलनि, आ एहि संग कहलनि जे धूलि, धुआँ आ भीड़क बीच निरन्तर रहबाक कारण अवस्था बिगड़ि सकैत अछि। सलीम सुरक्षित किरायाक कोठरी खोजबाक निर्णय लेलनि। मुदा दोकान नष्ट, घर जारल, धन कम, आ किराया देबाक

पहिने अग्रिम पैसा चाही। सहायता शिविरक व्यवस्था अस्थायी छल, मुदा सामान्य जीवनमे लौटबाक बाट दीर्घ छल। ओहि बीच सायराक माध्यमिक परिणामक अभिलेख स्कूलसँ नकल रूपमे भेटल। एहि एक कागजसँ परिवारकेँ पहिल बेर भविष्यक एक ठोस आधार भेटल।

अहमदाबादक एक स्थानीय विद्यालयमे पढ़ौनिहार मास्टर मुकुन्द जोशी अपन विद्यार्थीक नामांकन सम्बन्धी सार्वजनिक अभिलेख खोजयमे सलीमक सहायता कएलनि। ओ सलीमक पुरान दोकानक ग्राहक छलाह। विद्यालयक रजिस्टरमे सायराक परीक्षा-सम्बन्धी विवरण सुरक्षित छल; ओकरा प्रमाणित करबाक निर्धारित प्रक्रिया अपनाओल गेल। मुकुन्द कहलनि, “एहि दफ्तरमे जे पुरान नकल बचल अछि, ओहि कारण एखन एक बालिकाक पढ़ाइ बचि सकैत अछि।” सलीम पुछलनि, “आ जे बच्चाक नाम धरि नहि लिखल गेल छल?” मुकुन्द उत्तर देलनि, “ओकर अधिकार समाप्त नहि होइत। मुदा ओकरा स्थापित करबाक काज कठिन भऽ जाइत अछि।” एहि संवादमे प्रशासनक नियमित अभिलेख आ नागरिकक अपूर्ण जीवनक दूरी स्पष्ट भेल।

शिविरक एक साँझ धर्मस्थलक पुरान सङ्गीतक चर्चा उठल। हकीम यूसुफ अपन बचपनक लोकगीत सुनबैत छलाह, जकर शब्द सायराकेँ आधा बुझाइत छल। कान्ताबेन सेहो भेटय आएल छलीह; ओ अपन माएक गाओल एक गुजराती लोरीक धुन गुनगुनौलीह। फैज़ पुछलक जे ककर गीत सही अछि। यूसुफ हँसि कहलनि, “दुनू अलग अछि, तेँ दुनू सुनबाक अछि।” बाहर किछु लोक एखनो एक-दोसराक नाममे भय खोजैत छल; भीतर एक छोट बच्चाक प्रश्न संगीतक सहारे उत्तर पबैत छल। कथाक ई क्षण घटनाक घाव नहि मेटौलक, मुदा मनुष्यक बीच शेष बचल सम्बन्धकेँ उपस्थित कएलक।

जूनमे राहत शिविरक भविष्य सम्बन्धी सूचना फैलल। कतहु सरकारी व्यवस्था समेटबाक बात छल, कतहु स्वयंसेवी समूहक सहायता जारी छल। सलीमक परिवार एखन अपन पुरान घरमे लौटयक अवस्था मे नहि छल। एक परिचित व्यक्तिक सहयोगसँ किरायाक दू कोठरी भेटल, जतय छतक पंखा धीमे घूमैत छल आ खिड़कीसँ सड़कक धूलि अबैत छल। जमीला ओहि घरमे पहिल दिन सुकल चूल्हि पर रोटी बनौलीह। रोटी खाइत समय फैज़ पुछलक, “ई हमर घर अछि?” जमीला कहलीह, “एखन एतय रहब।” फैज़ फेर पूछलक, “पहिल घर?”

जमीला उत्तर नहि दे सकलीह। सलीम कहलक, “घरक दीवाल फेर बनि सकैत अछि; ओकर भीतर जे लोक रहैत छथि, हुनका बचौने राखब पहिल काज छल।”

प्रेमजी एक दिन एहि किरायाक कोठरीमे सलीमसँ भेटय आएलाह। ओ अपन कथन बदलबाक विचार बतौलनि। सलीम सन्न रहि गेलाह। “अहाँ जे देखलहुँ, से नहि कहब?” प्रेमजीक आवाज थरथरायल, “हम जाहि व्यक्तिक चेहरा देखलहुँ कहने छलहुँ, ओकरा ओहि घड़ीक हल्लामे स्पष्ट देखलहुँ कि भयमे पहिचान मानि लेलहुँ—आब हमरा शंका अछि।” सलीम जानैत छलाह जे प्रेमजी पहिले पर्याप्त निश्चित स्वरमे बजने छलाह। ओ पूछलनि, “शंका आब आयल अछि कि ककरो डर अछि?” प्रेमजी आँगनक बाहर ताकलनि। ‘दुनू बातक अन्तर कहब कठिन अछि,’ ओ स्वीकार कएलनि। सलीमक मन दुखसँ भरि उठल, मुदा ओ प्रेमजीकेँ गवाहीक निर्देश नहि देलनि। ओ केवल कहलनि, “अहाँ अपन मनक सही बात अलग करबाक प्रयत्न करू। हमर घरक आगि अपनासँ नहि लागल छल।”

सलीमक एहि वाक्यक बाद प्रेमजी रातिभरि सुतल नहि। सावित्री ओकरा कहलीह, “जो देखलह से देखलह; जे नहि देखलह से गढ़ू नहि। मुदा डरक बात कहबमे लाज किएक?” प्रेमजी पुछलक, “जँ हम कहब जे धमकी लागल, तँ पुलिस पूछत प्रमाण कतय अछि।” सावित्री उत्तर देलनि, “जकरा देखलह, ओकरा जनबहुँ जरूरी अछि; जकरा नहि देखलह, ओकरा नाम नहि लेबहुँ। मुदा अप्पन भय नुकायबासँ सत्य पूर नहि होएत।” ओहि राति प्रेमजी अपन मनमे तीन वाक्य अलग-अलग लिखलक—‘हम घटनास्थल लग छलहुँ’; ‘हम भीड़मे एक परिचित सन चेहरा देखलहुँ’; ‘हम निश्चित रूपेँ ओकर पहिचान कएलहुँ’। तेसर वाक्यपर ओकर हाथ रुकि गेल।

रेवती एहि समय दिल्ली लौटि अपन पढ़ाइमे लागल छलीह। गुजरातसँ आयल कागज, सायराक पत्र आ देसाईक टिप्पणी ओ अपन लोहाक पेटीमे अलग-अलग रखैत छलीह। शिवनारायण पुछलनि, “एहि काजसँ की सीखलहुँ?” रेवती कहलीह, “पहिल, घायल मनुष्यक कथामे अधूरापन होयब स्वाभाविक अछि। दोसर, अधूरा कथाकेँ झूठ कहल नहि जा सकैत। तेसर, ओकरा पूरा करबाक लेल जे हम अपने अनुमान जोड़ब, से अन्याय होएत।” पिता बहुत देर धरि सुनलनि, फेर कहलनि, “एक बात आ जोड़ू—गवाही देनिहारक भय सेहो

घटना अछि। भय प्रमाणक स्थान नहि लैत, मुदा ओकरा उपेक्षित करबो उचित नहि।” रेवती एहि चौथी बातकेँ कापीक पाछाँ लिखलनि।

जुलाईमे पुलिसक अन्वेषणक एक भाग आगाँ बढ़ल। किछु व्यक्तिक विरुद्ध आरोपपत्र प्रस्तुत करबाक तैयारी होइत छल, मुदा घटना-ब्योराक अलग-अलग संस्करण छल। विनय देसाई सलीमकेँ समझौलनि जे प्राथमिकी, पुलिस द्वारा दर्ज साक्षीक कथन, चिकित्सकीय अभिलेख, जप्तीक विवरण आ अन्य प्रमाणक अपन-अपन स्थान अछि। आरोपपत्र दायर भेलाक मात्रासँ अपराध सिद्ध नहि होइत। सलीमकेँ ई सभ बात थकाबय लागल। ओकरा दोकानक कुल क्षति, बेटीकेँ पढेबाक पैसा आ किरायाक अगिला महीनाक चिन्ता बेसी तत्काल छल। मुदा कानूनी जाँच छोड़ि देल गेल तँ आगि लगौनिहारक दायित्वक प्रश्न अनुत्तरित रहि जाएत। ओ कागजक पोटली फेर बन्हलनि।

एहि बीच एकटा स्थानीय न्यायिक दण्डाधिकारीक समक्ष किछु साक्षीक कथन विधिसम्मत रूपेँ लेखबद्ध करबाक प्रक्रिया आरम्भ भेल। प्रेमजीक नाम सेहो प्रस्तावित छल। ओकरा बताओल गेल जे न्यायिक अधिकारीक समक्ष देल कथन स्वेच्छासँ होयबाक चाही; ककरो निर्देशपर लिखल वाक्य नहि। प्रेमजी कोर्टक तारीखक प्रतीक्षा करैत रहलाह। ओकरा एखन धरि स्पष्ट नहि छल जे अपन पहिल पुलिसक कथनसँ कोन बात राखत, कोन बात सुधारत। सावित्री चाहैत छलीह जे ओ अपन शंकाकेँ सेहो कहय। सलीम चाहैत छलाह जे ओ पहिने जे परिचित चेहरा देखने कहने छल, ओकरा भूलि नहि जाए। दुनू इच्छाक बीच प्रेमजी अपन स्मृतिक वास्तविक स्वरूप खोजैत छलाह।

न्यायालयक तिथि लग आबिते प्रेमजीक घरमे एक अनाम पत्र भेटल। पत्रमे स्पष्ट धमकी नहि, मुदा एकटा वाक्य छल—“बच्चाक बाट याद राखू।” सावित्री पत्र पढ़ि काँपि उठलीह। प्रेमजी पत्रकेँ जलाबय चाहलनि। सावित्री रोकि देलनि—“जँ ई वास्तवमे भय देखेबाक प्रयास अछि, तँ एकरा सुरक्षित राखू।” प्रेमजी पत्र देसाईकेँ देखौलनि, आ सम्बन्धित पुलिसक समक्ष शिकायतक प्रति प्रस्तुत कएल गेल। ककरा द्वारा पत्र पठाओल गेल, से स्थापित नहि भेल। देसाई प्रत्येक तथ्य अलग लिखलनि—पत्र प्राप्तिक समय, लिखावट, लिफाफा, प्राप्त

करनिहार। ओ कहने छलाह, “प्रमाणक मूल्य ओकर आकारसँ नहि, ओकर सत्यापनीयतासँ होइत अछि।”

अगस्तक वर्षा आबि गेल। अहमदाबादक किछु गल्लीमे पानि ठाढ़ छल; जारल भवनक भीजल दीवाल फेर झड़य लागल। सलीम किरायाक कोठरीक कोनमे एक छोट मेज लगा पुस्तक-जिल्दक काम फेर शुरू कएलनि। हर्षद अपन परिचित विद्यालयसँ कापी-बन्हबाक छोट काम अनबाक प्रयास केलक। सलीम आरम्भमे सहायता स्वीकार करबाक लेल संकोच करैत छलाह। कान्ताबेन कहलीह, “अहाँ जखन काम करब तँ ओकर दाम भेटत। ई दान नहि।” एहि वाक्यसँ सलीमक स्वाभिमान आ आजीविका एक साथ बचल। सायरा नब पुस्तकक आवरणपर नाम लिखबैत छलीह, आ फैज़ कागजक छोट टुकड़ासँ नाव बनबैत छल। हिंसाक पाछाँ जीवन फेर आरम्भ करबमे एहन छोट-छोट कामक अर्थ बहुत पैघ होइत अछि।

नसीमा आ कुसुम एहि मास छात्रसहायताक कोषक पहिल हिसाब सार्वजनिक कएलनि। कतेक पुस्तक आएल, केकरा देल गेल, कतेक बचल—सभ स्पष्ट लिखल छल। प्राचार्य एहि सावधानीक प्रशंसा कएलनि। एक विद्यार्थी पुछलक जे निजी दानक नाम राखल जाए कि नहि। नसीमा कहलि, “जँ दानदाता सहमत होथि तँ लिखू; मुदा पुस्तक प्राप्त करनिहारक निजी विपत्ति सार्वजनिक करबाक आवश्यकता नहि।” कुसुम एकटा अलग पन्नामे सायराक प्रमाणपत्रक प्रक्रियाक स्थिति लिखलक—विद्यालयक नकल प्राप्त, आवेदन अपूर्ण, निवासक प्रश्न शेष। ओ एहि पन्नाकेँ चन्दा-हिसाबसँ अलग रखलक। सहायता आ निजी जीवनक मर्यादा एक समान नहि होइत।

सितम्बरमे प्रेमजी न्यायिक दण्डाधिकारीक भवनक बरामदामे पहुँचलाह। ई सलीमक सामान्य क्षतिपूर्ति आवेदनक कार्यालय नहि छल; एहि ठाम एक विशिष्ट आपराधिक अन्वेषणसँ सम्बन्धित स्वैच्छिक कथन लिखल जएबाक छल। देसाई हुनका केवल ई बुझौलनि जे जे प्रत्यक्ष देखल, वही कहू; कानूनक उद्देश्य ककरो रुचिक अनुसार कथन बनबेनाइ नहि। सावित्री बाहर बैसलि। प्रेमजीक हाथमे कोनो बड़ फाइल नहि छल, केवल एकटा कपड़ाक रूमाल। ओ रूमाल बारम्बार मोड़ैत छलाह। सलीम ओकरा संग नहि गेलाह; ओ बुझैत छलाह जे साक्षीक स्वतंत्र कथनक समय पीड़ित परिवारक उपस्थिति सेहो दबाव बनि सकैत अछि।

न्यायिक अधिकारी प्रेमजीक कथनक स्वैच्छिकताक विषयमे पुछलनि। प्रेमजी उत्तर देलनि जे ओ अपन इच्छा सँ आएल छथि, मुदा पछिला दिनसभमे भय अनुभव कएने छथि। जखन घटनास्थलक विवरणक बात उठल तँ प्रेमजी पहिले आगि, धुआँ आ लोकक दौड़बाक बात कहलनि। तकर बाद ओहि व्यक्तिक प्रश्न आयल जकर नाम पुलिसक प्रारम्भिक लेखबद्ध कथनमे छल। प्रेमजी किछु देर चुप रहलाह। अधिकारी हुनका अपन देखल बात कहबाक लेल समय देलनि। प्रेमजी कहलनि, “हम एकटा परिचित सन चेहरा देखलहुँ। ओहि घड़ी विश्वास छल जे अमुक व्यक्ति छथि। आब हम निश्चित नहि कहि सकैत छी जे ओही छलाह।” ओहि कथनक साथहि प्रेमजी अपना प्रति भेल भय देखेबाक प्रयासक विवरण सेहो देलनि।

एहि प्रकार न्यायिक अधिकारीक समक्ष प्रेमजी अपन पहिल पुलिस-समक्ष कथनक एक महत्त्वपूर्ण अंशसँ हटि गेलाह। मुदा एकर अर्थ ई नहि जे पहिल कथन स्वतः मिटि गेल, अथवा नव कथन मात्रसँ आरोपित निर्दोष वा दोषी सिद्ध भऽ गेल। दूनू कथनक परिस्थितिक अर्थ, अन्य स्वतंत्र प्रमाण आ भविष्यक विचारणमे देल गवाहीक मूल्य उपयुक्त विधिक प्रक्रियामे जाँचल जाएत। प्रेमजी एहि सूक्ष्मता केना बुझताह, से हुनका नहि मालूम छल। कोठरीसँ बाहर निकलैत हुनका केवल एतेक अनुभव भेल जे एकटा बोझ उतरल अछि, दोसर बोझ चढ़ि गेल अछि। सावित्री हुनकर आँखि देखिते बुझि गेलीह जे बात सरल नहि रहल।

सलीमकेँ समाचार देसाईसँ भेटल। ओ सुनलनि जे प्रेमजी पहचानक निश्चित दावा नहि कएलनि। पहिने हुनका क्रोध आयल। ओ चिल्लाएबाक चाहलनि जे जकर घर जरल ओहि परिवारक सत्यकेँ ककरो भयक कारण छोट नहि कएल जाए। मुदा देसाई कहलक, “सलीमभाइ, अहाँक घरक हानि, जप्त वस्तु, जख्मक विवरण आ अन्य गवाहीक अस्तित्व प्रेमजीक एक वाक्यसँ समाप्त नहि होइत। ओ जे देखल होथि, ओकर सही सीमा जानब न्यायालयक काज अछि।” सलीम पुछलनि, “तँ अपराधी बचि जायत?” देसाई उत्तर देलनि, “ई निष्कर्ष एखन काढब उचित नहि। जाँचमे जे अन्य प्रमाण अछि, ओकरा सेहो देखबाक अछि।”

साँझमे सलीम अपन नब दोकानक मेजपर पुरान चाभीक गुच्छा राखलनि। ओ गुच्छा आब कोनो फाटक नहि खोलैत छल, मुदा हुनका अपन पुरान घरक आकार स्मरण करबैत छल।

सायरा पुछलक, “बाबू, प्रेमजी काका झूठ बजलाह?” सलीम दीर्घ समय चुप रहलाह। फेर कहलनि, “हम नहि जनैत छी। भयमे आदमीक आँखि गलत देखैत अछि, आ भयमे देखल बात नुकबो सकैत अछि। एहि दू मध्ये कोन बात भेल, से बिना प्रमाणकेँ हम नहि कहब।” सायरा पुछलक, “तखन हम की लिखी?” सलीम कहलक, “जकरा हम स्वयं सुनलहुँ, ओहि बातकेँ लिखू। ककरो मनक भीतरक निर्णय अपनासँ नहि बनाउ।”

ओहि राति रेवती दिल्लीमे अपन पिता शिवनारायणकेँ एक विस्तृत पत्र लिखलीह। ओ प्रेमजीक पहचान सम्बन्धी विवादक विवरण देलनि, मुदा साक्षीक नाम आ संवेदनशील निजी जानकारी पत्रक बाहर सुरक्षित रखलीह। लिखलीह जे न्यायालयमे साक्षीक कथन बदलला पर मात्र ओकरा धोखेबाज कहि देब अनुचित होयत; तथापि धमकीक भय सिद्ध करबाक लेल सेहो प्रमाण चाही। ओ पूछलीह जे जखन न्यायिक प्रक्रियामे सत्यक स्वर कँपैत अछि, तखन अधिवक्ता कोना ओकरा सुनबाक योग्य बनाएत। पत्रक अन्तमे सायराक विषयमे लिखलीह —“ओ इतिहास पढ़ब चाहैत छथि, मुदा ओकर पहिल इतिहास अपन घरक जरल देवालपर लिखल अछि।”

शिवनारायण पत्र पढ़ि अपन मेजक पेटी खोललनि। ओहिमे नीलकान्त साहक पहिल मुकदमाक जप्तीक नकल छल, जाहिमे एक मृत व्यक्तिक नामक प्रविष्टि विवादित छल। ओ कागज निकाड़ि देखलनि। गुजरातक जारल घर आ दरभंगाक जप्त बही—दूनू घटना अलग छल, हुनका बीच कोनो एक अपराधी जाल नहि छल। तथापि एक सामान्य प्रश्न उठैत छल: ककरो नाम लिखल अछि तँ ओकर अर्थ के सत्यापित करत? लिखनिहार, देखनिहार, जाँचनिहार कि न्यायालय? शिवनारायण बेटीकेँ उत्तर लिखलनि—“प्रमाणक सत्कार करबाक अर्थ पीड़ाक अवहेलना नहि, आ पीड़ाक सम्मान करबाक अर्थ प्रमाणक बिना फैसला नहि। दूनूकेँ एक संग राखब वकालतक कठिन तपस्या अछि।”

हकीम यूसुफ एहि दिनसभमे अधिक दुर्बल भऽ गेल छलाह। जमीला हुनका खाटपर बैसाकय गरम पानि दैत छलीह। एक दिन यूसुफ सायरासँ पूछलनि जे ओ आगाँ की पढ़त। सायरा कहलि, “इतिहास।” यूसुफ पुछलनि, “इतिहासमे की लिखबह?” सायरा उत्तर देलक, “हम जे देखलहुँ, से। आ जे नहि देखलहुँ, तकरा नहि देखल कहि।” यूसुफ मुस्कुरायलाह।

“अहाँक किताबमे दोकानक नाम जरूर लिखिह,” ओ कहलनि। सायरा कहलक, “दोकानक नाम नहि, ओकरा बनौनिहार सभक नाम लिखब। कान्ताबेनक सेहो, हर्षदक सेहो, प्रेमजीक सेहो।” यूसुफ आँखि मुनि लेलनि। ओहि नामसभक अर्थ समान नहि छल, मुदा सभ ओहि जीवनक भाग छल जकरा बचल रहबाक अधिकार छल।

एक दिन विनय देसाईक कार्यालयसँ समाचार आयल जे घटनासम्बन्धी अन्वेषणक अन्य पक्षपर सेहो काज चलि रहल अछि। किछु स्थलीय साक्ष्यक परीक्षण, जप्तीक प्रतिलिपि आ विभिन्न साक्षीक कथनक मिलान आवश्यक अछि। सलीम चाहैत छलाह जे दोषी शीघ्र दण्डित होथि, मुदा देसाई कहलक जे शीघ्रताक नामपर अधूरा आरोप भविष्यक विचारणमे दुर्बल बनि सकैत अछि। अभियुक्तक अधिकार आ पीड़ितक न्याय-वांछा केना साथ रहि सकैत अछि, एहि कठिन प्रश्नपर दूनू बीच लम्बा संवाद भेल। सलीम अन्तमे कहलनि, “हमरा समय बहुत भारी लागैत अछि।” देसाई उत्तर देलनि, “हाँ, विलम्ब सेहो अन्याय बनि सकैत अछि; मुदा जल्दबाजीमे गलत व्यक्तिकेँ दण्ड दयब न्याय नहि।”

नवम्बरक भोरमे कान्ताबेन अपन सिलाइक कामक कोठरी फेर खोललीह। पहिल ग्राहक लौटल, फेर दोसर। हर्षद हुनका कहलनि जे घरक दुआरिपर लिखल पुरान अपशब्दक निशान आब रंगाइ देने छल। कान्ताबेन कहलीह, “दीवाल रंगि गेल, मुदा जे लोक लिखने छल ओकर मन बदलल कि नहि, से हमरा नहि बुझाइत अछि।” ओ सलीमक परिवारकेँ सँझिया चाय लेल निमन्त्रण पठौलनि। जमीला पहिने संकोच कएलनि। बहुत दिनक बाद ओ पुरान मोहल्लाक निकट जाएबाक साहस जुटौलीह। ओहि साँझ चायक प्यालाक बीच कतेको सामान्य बात भेल—सिलाइक दाम, शीतक आगमन, फैज़क पढ़ाइ। आगिक कथा ओहि समय सभकेँ चुप करैत छल, मुदा सभ बातचीत केवल आगि नहि छल।

सलीम कान्ताबेनक घरसँ लौटैत पुरान दोकानक जगह देखलनि। लोहेक पल्लाक एक भाग एखन धरि टेढ़ छल। ओ ओहि ठाम ठाढ़ रहि किछु देर चुप रहलाह। सायरा हुनकर संग छलि। ओ कहलि, “बाबू, एतय फेर पुस्तक बन्हल जाएत?” सलीम उत्तर देलनि, “जँ सम्भव भेल तँ हँ। मुदा ई दोकान पहिल जेकाँ नहि रहत।” सायरा पुछलक, “किएक?” सलीम कहलक, “पहिले हम पुस्तकक पन्ना जोड़ैत छलहुँ। आब हमरा बुझायल जे लोकक जीवनक फाटल

पन्ना जोड़ब बहुत कठिन अछि। किछु पन्ना फेर नहि भेटत।” ओहि स्थानपर ठाढ़ बेटी अपन पिताक चेहरामे पराजय नहि, थाकल धैर्य देखलक।

वर्ष समाप्त होमय लगल तँ शिवनारायणक कार्यालयमे २००३ लेल नव तारीखसभ लिखल जा रहल छल। नीलकान्तक मुकदमाक अगिला साक्ष्य-परीक्षण, जोधपुरक भूमि-अभिलेखक मूल निरीक्षण, आ गुजरातक एक परिवारक विधिक सहायता सम्बन्धी कागज—तीनू अलग फाइलमे छल। रेवती अपन अध्ययनक पेटी खोलि पिताक उत्तर फेर पढ़लीह। हुनका स्मरण भेल जे सन् २००० मे नीलकान्तक बहीखातामे मृत रामकिशुनक नाम भेटल छल, २००२ मे सायराक जीवित नाम गलत लिखल गेल, आ प्रेमजीक अपन देखल चेहराक नामपर निश्चितता डगमगा गेल। एहि तीनू घटनाक बीच कोनो छुपल नियन्ता नहि छल; सभमे नाम, भय, स्मृति आ प्रमाणक मनुष्यगत सीमा छल।

रात्रिमे सायरा अपन कापीक अन्तिम पन्नापर एकटा वाक्य लिखलक—“हमरा घरक आगि देखल अछि, मुदा आगि लगौनिहार सभक चेहरा नहि।” ओ वाक्य लिखिकय बहुत देर ताकैत रहलि। तकर नीचाँ दोसर पंक्ति जोड़लक—“जे देखल अछि, ओकरा कहबाक साहस चाही; जे नहि देखल, ओकरा नहि कहबाक साहस सेहो चाही।” ओ कापी बन्द कय तकियाक नीचाँ रखलक। बाहर शीतक पहिल हवा चलि रहल छल। दूर शहरमे कतेको घरमे दीप जरि रहल छल, कतेको घर एखन अन्हारमे छल। न्यायालयक अभिलेखमे प्रेमजीक बदलल कथन सुरक्षित छल; सलीमक घरक नुकसानक अन्य प्रमाण अलग अस्तित्व रखैत छल; सायराक शैक्षणिक प्रमाणपत्रक नव नकल ओकर पोटलीमे छल। ओहि राति कोनो फैसला अन्तिम नहि भेल। मुदा जारल घरक राखिसँ तीनटा भिन्न प्रश्न उठि चुकल छल—के आगि लगौलक, के देखलक, आ जे बचल अछि तकर जीवन फेर कोना बनत।

दिसम्बरक अन्तिम सप्ताहमे विनय देसाईक कार्यालयसँ प्रेमजीक न्यायिक कथनक उपलब्ध प्रमाणित अंश सलीमक अधिवक्ताकेँ भेटल। देसाई ओकरा पढ़लनि, फेर चुप भऽ गेलाह। पुलिसक प्रारम्भिक लेखबद्ध कथनमे जकर नाम स्पष्ट छल, न्यायिक दण्डाधिकारीक समक्ष ओकर पहिचानक निश्चितता प्रेमजी स्वयं स्वीकार नहि कएने छलाह। एहि परिवर्तनक कारण भय छल, स्मृतिक त्रुटि छल कि दुनू—कागज उत्तर नहि दैत छल। देसाई अलमारीसँ

साक्षीक सुरक्षाक आवेदन निकाललनि। बाहर वर्षक अन्तिम साँझ उतरि रहल छल। ओ बुझैत छलाह जे आगिक क्षतिक प्रमाण बचि रहल अछि, मुदा आगि लगौनिहारक पहिचानक एक मुख्य कड़ी आब न्यायालयमे कठिन प्रति-परीक्षणक प्रतीक्षा करत।

अध्याय ६ — मौन साक्षीक घर

दरभंगा आ जोधपुर, जनवरी–दिसम्बर २००३

पूसक अन्तिम भोरमे दरभंगाक पुरान कचहरीक बरामदा ओहि प्रकार सुनसान छल जेना रातिक अन्तिम प्रहरमे बन्द रेलवे स्टेशन होइत अछि। कचहरीक आँगनमे एकटा पीपरक पात झरि रहल छल; ओकर नीचाँ रातिभरि राखल काठक बेंच भीजल नहि, शीतसँ ओसल छल। अहलमद रामविलास अपन कार्यालयक किवाड़ खोलि पहिने झाड़ू उठौलनि। ओ जनैत छलाह जे अदालतक दिन लोकक चेहरासँ नहि, फाइलक क्रमसँ शुरू होइत अछि। पहिल गठरीमे भरण-पोषणक आवेदन छल, दोसरमे किरायाक वाद, तेसरमे नीलकान्त साहक विचारण। नीलकान्तक फाइलक बाहर लाल स्याहीमे एक शब्द लिखल छल—साक्ष्य। रामविलासकेँ ई शब्द कखनो साधारण नहि लगैत छल, कारण कागज जखन साक्ष्य बनैत अछि तँ ओकरा केवल सुरक्षित राखब नहि, ककरो जीवनक प्रश्नक समक्ष खोलबो पड़ैत अछि।

नीलकान्त अपन दुकानक किवाड़ भोरहि खोलि देने छलाह। जमानतपर बाहर एलाक बाद हुनकर पहिल इच्छा छल जे पुरान उधारवला ग्राहक फेर अबथि। मुदा दू वर्षसँ अधिक समयमे बाजार ओकरा पहिनेक जेकाँ नहि देखैत छल। केओ चाउर लेबय अबैत आ अतिरिक्त दाम गनि दैत, जेना उधारक सम्बन्धसँ बचय चाहैत हो। केओ चुपचाप नमस्कार करैत, मुदा दुकानक पछिला कोठरी दिसि एक बेर अवश्य ताकैत। निर्मला एहि दृष्टिसभकेँ पहचानि चुकल छलीह। ओ प्रत्येक ग्राहकक पछाँ सन्देह नहि खोजैत छलीह, तथापि घरमे एकटा एहन मौन बसि गेल छल जे सामान्य बातचीतक बीचोमे उपस्थित रहैत छल। अमरेश आब पन्द्रह वर्षक होमय जा रहल छल। विद्यालयसँ लौटिकय ओ बहीक सफा पन्नामे दाल आ तेलक हिसाब लिखैत, मुदा ओकर पिताक पुरान बही न्यायालयक अभिलेखागारमे बन्द छल।

शिवनारायण झा अपन कार्यालयमे ओहि भोरि रेवतीक पत्र पढ़ि रहल छलाह। रेवती दिल्लीसँ छुट्टीमे आएल छलीह; हुनकर विधिक अध्ययनक अन्तिम अभ्यास चलि रहल छल। गुजरातक सलीम अंसारी आ सायरा सम्बन्धी विवरण हुनकर मनमे बसल छल। ओहि

परिवारक जरल घरक प्रमाण आ प्रेमजी मकवाणाक बदलैत पहिचानक कथन हुनका बुझौने छल जे साक्षीक मौन सदिखन झूठक संकेत नहि। मुदा दरभंगामे नीलकान्तक मौन एक अलग प्रकारक छल: ओ पैंतालीसम पन्नाक लिखावट विषयमे किछु जनैत छलाह, मुदा पूरा बात कहबाक लेल तैयार नहि देखाइत छलाह। रेवती अपन पितासँ पुछलनि, “जँ मुवक्किल जानबूझि किछु नहि कहथि, तँ अधिवक्ताकेँ की करबाक चाही?” शिवनारायण उत्तर देलनि, “पहिने ई सुनिश्चित करू जे हुनकरा प्रश्न स्पष्ट बुझायल अछि। फेर ई जे ओ कोन बातक उत्तर देबाक लेल बाध्य छथि आ कोन बात गोपनीय परामर्शमे रहत। अहाँ अपन सुविधानुसार हुनकर मौनकेँ निर्दोषताक प्रमाण नहि बना सकैत छी।”

रेवती पिताक सामने दूटा कागज रखलनि। पहिल कागज २००० क जप्ती-सूचीक ओ प्रति छल जाहिमे ढीला पन्नाक संख्या तैंतीस लिखल छल। दोसरमे पैंतीस। विशेषज्ञ-परीक्षण लेल मूल बहीक एक भाग भेजबाक आदेश भेल छल, मुदा परीक्षण-प्रतिवेदन एखन प्राप्त नहि भेल। रेवती कहलनि, “संख्या बदलल अछि। एकर अर्थ कोनो कागज जोड़ल वा हटाओल गेल, एहन मानल जाए?” शिवनारायण आँखि उठौलनि। “एकर अर्थ एखन केवल एतेक जे दू प्रतिमे अन्तर अछि। गलत गणना, प्रतिलिपिक त्रुटि, अथवा वस्तुक वास्तविक फेरबदल—सभ सम्भावनाक लेल प्रमाण चाही। अभियोजन जँ एतय अपन साक्ष्यक शृंखला स्पष्ट नहि कऽ सकत तँ ओकर निष्कर्ष कमजोर होएत; मुदा एहि अन्तरसँ मात्र सभ जप्त वस्तु अदृश्य नहि भऽ जाएत।” रेवती अलग पन्नापर तीन सम्भावना लिखलीह। हुनकर पहिल अध्ययन एहि प्रकार अनुमानक सीमा खींचब सँ शुरू भेल छल।

ओहि दिन कचहरीक बरामदामे मथुरानन्द कापड़ि सेहो उपस्थित छलाह। ओ २००० मे जप्तीक सूचीपर हस्ताक्षर कएने छलाह आ बादमे न्यायालयमे अपन सीमित देखल बात कहलने छलाह। हुनकर पुत्र राजीव विवाह करि अलग दुकान खोलि लेने छल। मथुरानन्दकेँ एखनहुँ लोक पुछैत छल जे नीलकान्त दोषी ठहराएल जायत कि नहि। ओहि प्रश्नसँ थाकिकय ओ अपन उत्तर छोट कऽ देने छलाह: “हम मेजपर बही देखलहुँ; अपराधक फैसला हम नहि करतहुँ।” कतेको ग्राहक हुनका एहि कारण साहसी कहैत, किछु कायर। मुदा ओ बुझि गेल छलाह जे लोकक प्रशंसा आ निन्दा सत्यक माप नहि। आइ ओ अपन दोसर काजसँ कचहरी

आएल छलाह। नीलकान्तक मुकदमाक अगिला साक्षी एकटा युवा थोक-विक्रेता छल, जकरा ओ पहिने जनैत छलाह। मथुरानन्द ओकरा सलाह नहि देलनि; केवल कहलक जे प्रश्न सुनिकय जे जनैत छियौ से कहिह, आ नहि जनैत छियौ तँ ओहो कहिह।

नव साक्षीक नाम छल प्रभाकर महतो। ओ दरभंगाक बाहरी बाजारमे अनाजक छोट थोक-कारोबार करैत छल। अभियोजनक अनुसार नीलकान्तक बहीमे लिखल किछु संक्षिप्त चिह्न प्रभाकरक लग उपलब्ध भुगतानक विवरणसँ मिलैत छल। प्रभाकर घबरायल नहि देखाइत छल, मुदा ओकर जेबमे हाथ बारम्बार जाइत छल, जतय ओ अपन पिता देने चाँदीक एक छोट सिक्का रखने छल। अदालतमे प्रवेशसँ पहिने सरकारी अधिवक्ता ओकरा केवल एतेक कहलनि जे उपलब्ध अभिलेखसँ जुड़ल बात न्यायालयकेँ बताउ; अनुमान लगायब नहि। प्रभाकर मुस्कुरायल, “हम हिसाब करैत छी, महाशय। अनुमानमे व्यापार बर्बाद होइत अछि।” सरकारी अधिवक्ता ओहि उत्तरसँ प्रसन्न भेलाह, मुदा हुनका एखन नहि बुझायल जे प्रतिरक्षा पक्ष प्रभाकरक हिसाबहि सँ किछु प्रतिकूल प्रश्न निकालयवला अछि।

न्यायिक दण्डाधिकारी विमलाकान्त मिश्र अदालतमे पहुँचलाह तँ पहिलें किछु अल्पकालीन आवेदन निपटौलनि। नीलकान्तक प्रकरण पुकारल गेलापर ओकरा समक्ष अभियोजनक साक्षी उपस्थित कएल गेल। प्रभाकर अपन नाम, व्यापार आ नीलकान्तसँ पूर्व परिचय बतौलक। सरकारी पक्ष ओकरा किछु पावतीक प्रमाणित प्रतिलिपि देखौलक। प्रभाकर कहलक जे नीलकान्तक दुकानपर अनाजक नियमित आपूर्ति होइत छल, मुदा किछु समय अलग मदमे नगद भुगतानक चर्चा सेहो सुनने छल। ‘सुनने छलहुँ’ शब्द सुनिते न्यायाधीश स्पष्ट करौलनि जे प्रभाकर की प्रत्यक्ष देखल आ की दोसरसँ सुनल, से अलग-अलग दर्ज हो। प्रभाकर अपन वास्तविक पावती पहचानलक; ओकर हस्ताक्षर ओहि पन्नापर छल। प्रतिलिपिक अङ्क न्यायालयमे पढ़ल गेल। रेवती नोट कएलनि—एहि साक्ष्यसँ वास्तविक अनाज-व्यवहारक अस्तित्व प्रमाणित होइछ, ओकर बाहरक प्रत्येक अनुमान नहि।

सरकारी अधिवक्ता प्रभाकरसँ पुछलनि, “एहि चौदह हजारक भुगतानक बदला अनाज गेल छल?” प्रभाकर पहिने उत्तर देलक, “किछु माल गेल छल।” अदालत पुछलक, “किछु कहैत छी तँ शेषक अर्थ की?” प्रभाकर अपन कागज देखलक। “मूल बिल बारह हजार आठ सयक

छल। शेष रकम एक पुरान देनदारीक समायोजन छल।” सरकारी अधिवक्ता पुछलनि जे पुरान देनदारी कोन व्यापारसँ सम्बन्धित छल। प्रभाकर कहलक, “ई हमरा मूल बही देखला पर कहब सम्भव होएत; एखन निश्चित नहि।” शिवनारायण एहि उत्तरकेँ ध्यानसँ सुनलनि। अभियोजनक अपेक्षा छल जे सामान्य व्यापारक बाहरो धनक प्रवाह देखाओल जाए; मुदा साक्षी अपन स्मृतिक सीमा स्वयं निर्धारित कऽ रहल छल। न्यायालय प्रतिरक्षा लेल पावतीसभक निरीक्षणक समुचित अवसर निश्चित केलक।

शिवनारायण उठि प्रभाकरसँ पुछलनि, “अहाँ नीलकान्तक दुकानमे रात्रिक सट्टा देखलहुँ?” प्रभाकर उत्तर देलक, “नहि।” “ककरो दाँव लगबैत देखलहुँ?” “नहि।” “अहाँक अपन पावतीपर अंक लिखनिहार के?” “हमर मुनीम, कतेको बेर हम स्वयं।” “तखन प्रत्येक रकम अहाँक हाथक नहि?” “नहि।” शिवनारायण एतहि रुकि गेलाह, फेर पुछलनि, “जे पुरान देनदारीक समायोजन कहैत छी, तकर समर्थनमे मूल अभिलेख अछि?” प्रभाकर उत्तर देलक, “घरक पुरान पेटीमे रहबाक चाही; खोजब पड़त।” शिवनारायण अभियोजनकेँ तुच्छ देखेबाक प्रयत्न नहि कएलनि। उलटे ओ कहलनि जे जँ अभिलेख प्राप्त हो तँ न्यायालयक विधिसम्मत प्रक्रियासँ राखल जाए। प्रभाकरक चेहरापर राहत आयल। ओकरा लगैत छल जे वकील ओकरा झूठा साबित करबाक लेल बैसल छथि; एखन ओकरा बुझायल जे प्रश्नक लक्ष्य ओकर स्मृतिक सीमा सेहो अछि।

मुदा शिवनारायणक अगिला प्रश्न कठिन छल। “अहाँक मुनीम वर्ष २००० मे कतेक वयसक छल?” प्रभाकर कहलक, “उन्नैस-बीस।” “ओकर नाम?” “नरेश।” “ओ आब कतय?” प्रभाकर एक क्षण चुप रहल। “ओ दू वर्ष पहिने काम छोड़ि चलि गेल।” “अहाँ ओहि व्यक्ति लग पहुँचबाक उपाय जनैत छी?” “ओकर माएक गामक नाम जनैत छी, मुदा ठेकाना पक्का नहि।” अदालतमे एक नव नाम दर्ज भेल—नरेश। एहि नामक कारण अभियोजनक मामला स्वतः कमजोर वा सुदृढ़ नहि भेल, मुदा बहीक अनेक हाथक सम्भावनाकेँ स्पष्ट जाँचक आधार भेटल। विमलाकान्त मिश्र कहलनि जे अन्य आवश्यक साक्ष्यक सम्बन्धमे पक्षसभ नियमानुसार आवेदन देथि। नीलकान्त पहिल बेर आँखि नीचाँ करि बैसलाह, जेना नरेश नाम हुनकरा अपेक्षासँ अधिक परिचित हो।

अवकाशक समय रेवती पिताकेँ पुछलनि, “नीलकान्तजी नरेशकेँ जनैत छथि?” शिवनारायण उत्तर देलनि, “हमर अनुमान अछि जे जनैत छथि। मुदा हुनकरा सँ पूछने बिना एकरा तथ्य नहि मानब।” नीलकान्तकेँ अलग कोठरीमे विधिक परामर्श लेल बजाओल गेल। ओ आरम्भमे कहलनि जे थोक-बाजारमे कतेको मुनीम अबैत-जाइत रहल छथि, प्रत्येकक नाम याद राखब कठिन अछि। शिवनारायण सरल स्वरमे कहलनि, “ठीक अछि। मुदा विशेष प्रश्न अछि: की नरेश कखनो अहाँक दुकानमे सेहो हिसाब लिखने छल?” नीलकान्त पहिने नकारात्मक उत्तर देबाक प्रयत्न कएलनि, फेर चुप भऽ गेलाह। ओ पानि पीबि कहलनि, “कखनो दू-चारि दिनक लेल, जखन हमर हाथ दुखाइत छल।” रेवती नोट कएलनि जे पहिने ई बात कहल नहि गेल छल।

शिवनारायण पुछलनि, “तखन अहाँ जे कहैत छलहुँ जे बहीक प्रत्येक पन्ना अहाँ स्वयं नहि लिखलहुँ, तकर उदाहरण नरेश होइ सकैत अछि?” नीलकान्त कन्धा झुकौलनि। “होइ सकैत अछि।” “अहाँ निश्चित नहि?” “नहि।” पिता-बेटी दूनूकेँ ई उत्तर असुविधाजनक लागल। नीलकान्त अन्तमे कहलनि, “किछु पन्ना हम लिखलहुँ; किछु दोकानक लड़का। बहीमे उधार छल। मुदा किछु लोक आबि खेलक परिणामक हिसाब लिखबैत छल, ताहिमे हम अपन समझसँ असावधान रहलहुँ।” ओहि वाक्यपर शिवनारायण रुकलाह। “अहाँ जखन खेलक परिणाम कहैत छी, तकर अर्थ स्पष्ट करू।” नीलकान्त कहलनि, “एक-दू लोक खेलक नतीजापर पैसा देब-लेबाक बात करैत छल। हम कखनो हुनकर रकमक बीच उधारक समायोजन कएने छलहुँ। मुदा जे सभ आरोप अछि, से हम नहि स्वीकार करैत छी।”

रेवतीकेँ अपन शरीरमे अचानक शीत अनुभव भेल। ओ एतेक वर्षसँ नीलकान्तकेँ एक व्यापारीक रूपमे देखैत छलीह जकर बहीमे किछु विवादित पन्ना अछि। आब मुवक्किल स्वयं किछु दाँव-सम्बन्धी धनक चर्चा कएने छल। शिवनारायणक चेहरापर क्रोध नहि आयल। ओ पुछलनि, “एहि बातक कोनो लिखित अभिलेख अछि?” नीलकान्त कहलनि, “जप्त बहीमे जे छै, सेए। हमरा हर बात याद नहि।” शिवनारायण स्पष्ट कएलनि जे गोपनीय अधिवक्ता-परामर्शक सीमा अछि; ओ न्यायालयमे असत्य तथ्य रखि बचाव नहि करताह। किछु लिखावट स्वीकार करब अथवा अपन ऊपर विशिष्ट आपराधिक उत्तरदायित्व स्वीकार करब दू अलग

प्रश्न अछि। तत्काल कोनो सार्वजनिक स्वीकारोक्ति तैयार नहि भेल; तथ्यक परीक्षणक काज एखन शेष छल।

रेवती बाहर निकललीह तँ आँगनमे अमरेश अपन साइकिलक चेन ठीक करैत छल। विद्यालयसँ छुट्टी लऽ पिता संग आएल छल। ओ पुछलक, “आज बाबूजी बचि जेताह?” रेवती पहिनेक जेकाँ कोनो सरल आश्वासन नहि देलीह। “आज साक्षी बाजलाह। फैसला बादमे होएत।” अमरेश चेनक कारी तेल अँगुरीसँ पोछि कहलक, “आइ विद्यालयमे एक लड़का कहलक जे बहीमे जे लिखल अछि, सभ बाबूजीक अपराध अछि। दोसर कहलक जे पुलिस सभ बनौने अछि। हमर ककर बात मानू?” रेवती उत्तर देलीह, “अहाँ अपन पितासँ प्रश्न पूछि सकैत छी। मुदा न्यायालय जाँचि रहल अछि। कोनो दू कठोर कथनक बीच एकरा बुझबाक धैर्य चाही।” अमरेश तखन पुछलक, “अहाँकेँ धैर्य सहजसँ अबैत अछि?” रेवती पहिल बेर हँसलीह। “नहि। हमरो सीखय पड़ैत अछि।”

माघक अन्तिम सप्ताहमे विशेषज्ञक कार्यालयसँ एक पत्र आयल। विवादित पन्नाक परीक्षण पूर्ण होमयमे विलम्ब छल, कारण मूल लेखन, उपलब्ध नमूनाक गुणवत्ता आ स्याहीक भिन्नतासँ सम्बन्धित प्रश्न अलग-अलग छल। पत्रमे ककरो लेखक घोषित नहि कएल गेल। दीनानाथ प्रसाद पत्र पढ़ि निराश भेलाह। ओ चाहैत छलाह जे न्यायालयमे एक वैज्ञानिक प्रतिवेदनसँ संदेह समाप्त भऽ जाए। मुदा सरकारी कार्यालयक एक सहकर्मी हुनका बुझौलक, “हस्तलेखक मिलान लेखकक पहिचानपर राय दऽ सकैत अछि; प्रत्येक पन्ना कखन लिखल गेल, से हर स्थिति मे निश्चित नहि कहि सकैत।” दीनानाथ पत्र न्यायालयमे विधिसम्मत माध्यमसँ प्रस्तुत करबाक तैयारी कएलनि। हुनकर अपना स्मृतिमे जप्तीक रातिक थकान, अलमारीक खुलल पल्ला आ सूची बनबैत कर्मचारीक हड़बड़ी एखनहुँ उपस्थित छल। ओ निर्णय लेने छलाह जे अपना स्मृतिक कमजोरीकेँ कोनो आधिकारिक निश्चिततासँ नहि ढाँपताह।

दीनानाथक घरमे हुनकर पत्नी सुमित्रा एहि लम्बा मुकदमाक चिन्तासँ ऊबि गेल छलीह। कतेको बेर रात्रिभरि थाना, भोरमे अदालत, फेर अभिलेखक तैयारी। “अहाँ घरे आबैत छी तँ एतय सेहो फाइलहि बजैत छी,” ओ कहैत छलीह। दीनानाथ उत्तर देलनि, “भुल भेल तँ लोक

कहत पुलिस जानबूझि केलक।” सुमित्रा पुछलीह, “जँ सही कएलहुँ तँ?” दीनानाथ चुप रहलाह। एक पुलिसक अधिकारिक घरक सामान्य मौन अदालतक लिखल कार्यवाहीमे कतहु नहि देखाइत छल, मुदा ओहि मौनमे सेहो न्यायिक प्रक्रियाक मूल्य चुकाओल जाइत छल। हुनकर दस वर्षक बेटी विद्यालयक नाटकमे सत्यवादी राजाक भूमिका लेनिहार छलि। ओ पितासँ पुछलक, “सत्य बजब एतेक कठिन अछि?” दीनानाथ कहलक, “कखनहुँ जे सुनलहुँ, ओकरा देखलहुँ नहि कहब कठिन होइत अछि।”

एहि बीच रामकिशुन महतोक परिचयक प्रश्न आगाँ बढ़ल। कमलेश्वर दासक सहायता सँ रेवतीकेँ हुनकर पुत्र गंगेश महतोक ठेकाना भेटल। गंगेश बेनीपुरक कातक गाममे रहैत छलाह आ वर्षक आध समय सहरसामे खेतक काज करैत छलाह। रेवती पिता सँ परामर्श कऽ सामान्य पूछताछ लेल गेलीह। ओ कोनो पुलिस-अन्वेषक नहि छलीह, तेँ अपन परिचय स्पष्ट कएलनि आ गंगेशकेँ ईहो कहलनि जे हुनकर इच्छा बिना कोनो निजी जानकारी सार्वजनिक नहि कएल जाएत। गंगेश पिता मरलाक वर्ष, स्थानीय मृत्यु-पञ्जीमे दर्ज तिथि आ पुरान राशन-पत्रक विवरण बतौलनि। मुदा ओ पुछलनि, “अहाँक मुकदमासँ हमर बाबूक की सम्बन्ध? ओ तँ जीवनभरि खेतमे रहला, शहरक बाजारमे घी आ अनाज बेचय जाइत छलाह।” रेवती कहलीह जे एक पुरान खातामे समान नाम अछि; व्यक्ति निश्चित करबाक प्रश्न शेष अछि।

गंगेश अपन घरक मड़ैया सँ एक लोहाक सन्दूक निकाललनि। सन्दूकमे पिताक बटुआ, पुरान खतियानक नकल, विवाहक निमन्त्रण आ एक पातर कापी छल। कापीक पहिल पन्नापर रामकिशुनक लिखल अक्षर छल; ओ खेतीक खर्च राखैत छलाह। गंगेश कहलक, “बाबू शहरमे उधार दैत छलाह कि लैत छलाह, सभ नहि जनैत छी। मुदा एक बात याद अछि: ओ मरलाक पहिले अपन खेतक अनाजक बकाया लेल शहर गेल छलाह।” रेवती पुछलीह, “केकर लग?” गंगेश नाम याद करय लगल। “कदाचित् साहजी, मुदा कोन साह, नहि जनैत छी। हमर गाममे साह नामक कतेको व्यापारी छलाह।” रेवती ओहि अस्पष्ट उत्तरकेँ लिखित प्रमाणक रूपमे नहि, जाँचबाक प्रश्नक रूपमे रखलीह। ओ सन्दूकक कागज हाथ नहि लगौलीह; केवल गंगेशकेँ कहलनि जे सुरक्षित राखथि।

घरक बाहर गंगेशक पत्नी मालती धानक बोरी खुलि रहल छलीह। ओ रेवतीकेँ पानि देलनि आ पुछलनि, “मृत लोकक नामपर फेर मुकदमा उठि सकैत अछि?” रेवती कहलीह, “मृत व्यक्ति मुकदमाक अभियुक्त नहि छथि; मुदा हुनकर नाम ककरो अभिलेखमे अछि तँ ओकर सही अर्थक जाँच होएत।” मालती आँखि तानिक कहलनि, “हमर सासु कहैत छलीह जे रामकिशुन घरमे कागज राखैत छलाह, किएक तँ मौखिक भरोसा कतेको बेर टूटि जाइत अछि। आब ओ कागजहि हुनकर स्मृति बनल अछि।” रेवतीकेँ बुझायल जे मृत्यु-पञ्जी केवल समयक अन्तिम तिथि कहैत अछि; व्यक्तिक सम्पूर्ण आर्थिक सम्बन्ध नहि। तथापि एक बात स्पष्ट होइत छल: २००० क सूचीमे जे रामकिशुन नाम छल, ओकरा जीवित खाताधारकक रूपमे बिना जाँच देखायब सम्भव नहि।

मार्चक आरम्भमे दरभंगाक न्यायालयमे गंगेशकेँ साक्षी बनायबाक प्रश्न उठल। शिवनारायण तुरन्त गवाहीक आग्रह नहि कएलनि। ओ पहिने पुष्टि चाहैत छलाह जे बहीक पैंतालीसम पन्नाक नामक संग गंगेशक पिताक पहिचान जोड़बाक स्वतंत्र आधार अछि कि नहि। सरकारी पक्ष सेहो ओहि प्रश्नपर सहमत भेल जे केवल एकहि नाम होयब पर्याप्त नहि। न्यायाधीश सुनलनि जे मूल दस्तावेजक परीक्षण एखन बाकी अछि। “अदालत प्रत्येक समान नामक व्यक्तिक घर धरि नहि पहुँचि सकैत,” ओ कहलनि, “मुदा जँ विवादित प्रविष्टिक अर्थमे पहिचान निर्णायक अछि, तँ आवश्यक साक्ष्यक विधिसम्मत प्रस्तुति विचारणीय अछि।” रेवतीकेँ अपन अध्यापनक पुस्तकसँ बेसी एहि एक वाक्यमे प्रक्रिया बुझायल—न्यायालय उत्सुकता पूरी करबाक संस्था नहि, विवादित प्रासंगिक तथ्यक परीक्षणक संस्था अछि।

दरभंगामे सुनबाईक बाद शिवनारायणकेँ राजस्थानसँ पारीक अधिवक्ताक पत्र भेटल। मरुधरक जमीन-विवादमे १९८२ क मूल राजस्व नक्शाक निरीक्षण लेल तिथि निर्धारित भेल छल। पारीक लिखने छलाह जे नकलपर उत्तरक चिह्न संदिग्ध अछि, पुरान वर्षाजलक नालीक रेखा आधा छपल अछि, आ शिक्षण न्यासक नब नक्शामे ओकर उल्लेख नहि। शिवनारायण उत्तरमे सलाह देलनि—“कागजक दोष देखबाक पहिने मूलक संरचना, तिथि, माप आ सरकारी संरक्षणक इतिहास जाँचू। कुसुमक निरीक्षण महत्त्वपूर्ण सूत्र अछि; ओकरा अन्तिम निष्कर्ष मत बनाउ।” पत्र पठा ओ रेवती दिसि देखलनि। “एकटा मुकदमाक चिह्न दोसरक उत्तर

नहि,” ओ कहलनि। रेवती हँकार देलीह। हुनका पैंतालीसम पन्नाक स्याही आ राजस्थानक उत्तर-चिह्न दुनू स्मरण छल; समानता केवल सावधानीक पाठमे छल, अपराधमे नहि।

जोधपुरमे ओहि समय कुसुम अपन भूगोलक कक्षामे पुरान जलस्रोतक अध्ययन करैत छलीह। प्राध्यापक राठौड़ विद्यार्थीसँ पुछने छलाह जे मरुभूमिमे जलक चिह्न सदिखन वर्तमान पानिसँ पहिचानल जा सकैत अछि कि नहि। कुसुम अपन घरक कूप आ नालीक उदाहरण देलक, मुदा परिवारक मुकदमाक नाम नहि लेलक। राठौड़ कहलक, “जे रेखा नक्शामे अछि, ओकर स्थलपर इतिहास रहि सकैत अछि; आ जे रेखा नक्सामे नहि, ओहो स्थलपर अस्तित्व रखि सकैत अछि। मुदा अपन मनक चित्रकेँ प्रमाणित नक्शाक स्थान नहि देब।” विद्यार्थीसभ तँ ई बात शैक्षणिक चर्चा बुझि सुनलक, कुसुम लेल ई अपन घरक रातिक चिन्ता छल। ओकर पिता रामदेव मण्डल प्रत्येक भोरि कूपक कात जाइत छलाह आ पानीक पुरान नालीक सूखल बाट देखैत छलाह। निर्माण एखन न्यायालयक सीमित रोकक कारण रुकल छल, मुदा अदालतक आदेशसँ खेतक फसल नहि बढ़ैत।

रामदेवक घरमे शिक्षण न्यासक विषयमे मतभेद बढ़ि रहल छल। पुत्र विमल कहैत छल जे उपयुक्त मुआवजा भेटय तँ किछु विवाद छोड़ि देबाक चाही; कुसुम कहैत छल जे स्वामित्वक सीमा स्पष्ट भेला बिना रुपैया लेल गेल तँ भविष्यक पथ आ जलनिकासीक प्रश्न शेष रहत। जीवनी देवी दुनूकेँ सुनैत छलीह। ओ कहलीह, “पैसाक बाट आ पानिक बाट दूनू चाही। एकरा एक-दोसरक विरोधी बनौने किएक छी?” रामदेव उत्तर देलनि, “हमरा केवल ई चाही जे पुरान कूपक पाट एक दिन बिना कहल भरि नहि देल जाए।” बेटी पुछलक, “जँ मूल नक्शा न्यासक पक्षमे गेल तँ?” रामदेव अपन हाथक माटि झाड़ि कहलनि, “तखन सत्य हमरा विरुद्ध होएत। मुदा सत्य देखल जाए, एतबाहि मांग अछि।”

मूल नक्शाक निरीक्षणक दिन राजस्व कार्यालयक एक छोट कोठरीमे दूनू पक्षक प्रतिनिधि उपस्थित छलाह। पारीक, न्यासक अधिवक्ता भण्डारी, सर्वेक्षणक अधिकारी, आ रामदेव दूरी बनाकय बैसलाह। कुसुमकेँ निरीक्षकक रूपमे आधिकारिक अधिकार नहि छल; ओ बाहर प्रतीक्षा करैत छलीह। अधिकारी पञ्जी खोलि मूल कागजक अवस्था बतौलनि। किनार घिसल छल, एक ठाम पुरान स्याही पसरि गेल छल। पारीक मूल उत्तर-चिह्नक दिशा देखौलनि;

भण्डारी कहलक जे न्यासक नक्शामे दिशाक निर्धारण एहि चिह्नसँ मेल खाइत अछि। मुदा नालीक पुरान रेखा कागजक कातमे गेल छल, जकर पूरा आकार स्पष्ट नहि। अधिकारी निरीक्षणक विवरण दर्ज कएलनि, तत्काल कोनो पक्षक स्वामित्व घोषित नहि। दूनू अधिवक्ता सहमत भेलाह जे आवश्यक हो तँ न्यायालयक देखरेखमे स्थलीय मापनक निवेदन कएल जाए।

बाहर आबिते पारीक कुसुमकेँ कहलक, “अहाँक शंका पूरै गलत नहि छल, मुदा प्रमाण नहि भेटल जे उत्तर-चिह्न उल्टा छापल गेल।” कुसुम निराश नहि देखायल। “नालीक रेखा?” ओ पुछलक। “अपूर्ण अछि। ओकरा आधारपर निष्कर्ष निकालय कठिन।” कुसुम कहलक, “तखन स्थलपर पुरान नालीक माटि देखबाक चाही?” पारीक उत्तर देलनि, “माटिक जाँच अपन स्थानपर, विधिक सीमांकन अपन स्थानपर। जँ न्यायालय विशेषज्ञ नियुक्त करत तँ तकर पद्धति आ प्रश्न स्पष्ट होएत।” रामदेव बेटी दिसि ताकलनि। ओकरा खिन्नता छल, मुदा ओहि दिनकेँ पराजय नहि मानलनि। एक भ्रम समाप्त भेल छल—नक्शा घुमौने मात्र उत्तर नहि बदलैत। जाँचक अगिला प्रश्न आब सीमारेखा आ जलनिकासीक सम्बन्धमे छल।

शरद कोठारी शिक्षण न्यासक कार्यालयमे निरीक्षणक समाचार पढ़लनि। प्रह्लाद वैद्य कहलक, “निर्माण एतेक दिन रोकल अछि, आब अधिक रकम देल जाय आ किसान हटि जाय।” शरद उत्तर देलनि, “विवादित अधिकारक निर्णय केवल रकमसँ नहि होइत। मुदा विद्यार्थीसभक कोठरीक आवश्यकता सेहो वास्तविक अछि।” प्राचार्य आग्रह कएलनि जे निर्विवाद भूमि पर छात्रावासक निर्माण चलैत रहय, आ कूप लगक सीमा पर न्यायालयक आदेश अक्षुण्ण। प्रह्लाद असन्तुष्ट भऽ उठि गेल। शरद अपन डायरीमे लिखलनि—“जे शिक्षा न्यायबोध सिखेबाक दावा करैत अछि, ओकर भवन विधिसम्मत आधारपर बनबाक चाही।” ओ नहि जनैत छलाह जे अगिला वर्षसभमे ओकर अपन संस्था अलग प्रकारक वित्तीय आ प्रशासनिक विवाद देखत। एहि समय ओकर संघर्ष खेतक सीमा आ विद्यार्थीसभक आश्रय छल।

दरभंगामे रेवती वापस आयलीह तँ निर्मलाक घरमे एक असामान्य शान्ति छल। दुकान खुलल छल, मुदा नीलकान्त पछिला कोठरीमे बैसल छलाह। निर्मला कहलनि जे ओ किछु

रातिसँ बहुत कम सुतैत छथि। अमरेश पिताक पुरान कापी खोलि लिखबाक अभ्यास कएलक, मुदा पिता तुरन्त बन्द करा देलनि। “ई कापी नहि,” ओ कहलनि। अमरेश पुछलक, “किएक? ओहिमे तऽ लिखल अछि।” नीलकान्त उत्तर नहि देलनि। निर्मला कहलीह, “बाबूजी थाकल छथि।” अमरेश भीतर चलि गेल, मुदा ओकर मनमे एक नव भय जन्मल: कागजपर लिखल संख्या मात्रसँ नहि, पिताक ओकरा देखि चुप भऽ जाएबसँ सेहो अपराधक छाया बढ़ैत अछि।

रेवती निर्मलाकेँ अलग पुछलनि जे नीलकान्तक हाथ दुखब कखनसँ आरम्भ भेल छल। निर्मला कहलीह, “बर्खाक दिनमे पुरान गठियाक पीड़ा रहैत छल। एक-दू बेर नरेश नामक लड़का हिसाब लिखने होएत; हमरो एकर अस्पष्ट स्मृति अछि।” “अहाँ नरेशकेँ देखलहुँ?” “एक-दू बेर। कोनो रिश्तेदार नहि। थोक-विक्रेताक संग आएल छल।” “पैंतालीसम पन्नाक लेखन देखलहुँ?” निर्मला सिर हिलौलीह। “नहि। बहीमे जे लिखल छल, ओकर प्रत्येक पन्ना हम नहि देखैत छलहुँ।” रेवती एहि उत्तरकेँ विशेष महत्त्व देलीह। निर्मला अपन पतिक पक्षमे काल्पनिक निश्चितता बना सकैत छलीह; मुदा ओ ताहि राह नहि गेलीह। एहि एक सीमित कथनसँ हुनकर विश्वसनीयता रेवतीक नजरिमे बढ़ल।

ओही साँझ रेवती सायरा अंसारीक पत्र पढ़लीह, जे गुजरातसँ आएल छल। सायरा अपन पढ़ाइ जारी रखबाक समाचार देने छलि आ लिखने छलि जे सलीमक पुरान दोकानक एक भाग फेर उपयोगमे आबि रहल अछि। प्रेमजीक बदलल बयानक बाद परिवारमे विश्वासक प्रश्न कठिन बनल छल, मुदा सायरा इतिहास पढ़बाक संकल्प नहि छोड़ने छलि। पत्रक अन्तमे ओ लिखने छलि—“एकटा साक्षी जे नहि देखल, ओकरा नहि देखल कहि सकय; मुदा जे देखल, ओकरा भयक कारण नुकायब नहि चाही। हम एहि दू बातक बीच भेद लिखि रहल छी।” रेवती पत्र अपन मेजपर रखलीह। नीलकान्त, रामदेव आ सलीमक प्रकरण एकहि अपराधसँ जुड़ल नहि छल; तीनू घरमे अपन-अपन विधिसम्मत सत्य खोजबाक कठिनाइ छल।

वैशाखक आरम्भमे दरभंगाक अदालतमे विशेषज्ञ-परीक्षणक प्रतिवेदन पहुँचल। अहलमद रामविलास ओकर प्राप्ति, सील आ संलग्न पन्नाक विवरण जाँचि निर्धारित अभिलेखमे रखलनि। प्रतिवेदनमे लिखल छल जे विवादित बहीक अनेक पन्नाक अक्षर उपलब्ध स्वीकृत नमूनासँ उल्लेखनीय समानता रखैत अछि, मुदा पैंतालीसम पन्नाक एक संक्षिप्त नाम-

प्रविष्टिक सम्बन्धमे पर्याप्त निश्चित राय देब सम्भव नहि भेल। ओहि पन्नाक किछु अंकक बनावट अन्य नमूनासँ भिन्न छल; स्याहीक रंगक अन्तर लिखनिहारक पहिचान सिद्ध नहि करैत छल। नीलकान्तक समर्थक किछु व्यक्ति बाहर सुनिते कहि उठल जे बही झूठ सिद्ध भऽ गेल। दोसर लोक कहल जे विशेषज्ञ सभ अपराध प्रमाणित कऽ देलक। रामविलास कागज गोटियाकय कहलक, “जकर प्रतिवेदन आधा सावधान अछि, ओकरा बाजारे पूरा घोषणा बना देने अछि।”

सरकारी पक्ष प्रतिवेदन प्रस्तुत कऽ विशेषज्ञकेँ न्यायालयक समक्ष स्पष्टीकरण लेल उपस्थित करबाक आग्रह कएलक। नियमानुसार तिथि निश्चित भेल। जखन विशेषज्ञ आएलाह तँ शिवनारायणक प्रथम प्रश्न एकदम छोट छल—“की अहाँ एतय उपस्थित आरोपित व्यक्तिक लिखावट आँखिसँ देखि प्रत्येक पन्नाक लेखक निश्चित कऽ सकैत छी?” विशेषज्ञ उत्तर देलनि, “केवल आँखिसँ नहि; तुलना आ विश्लेषणक आधारपर अभिमत देल जाइत अछि, ताहूमे सीमा रहैत अछि।” सरकारी अधिवक्ता पुछलनि, “किछु नमूनासँ समानता भेटल?” “हँ, अनेक पन्नामे।” शिवनारायण पुछलनि, “पैंतालीसम पन्नाक नाम?” “निश्चित निष्कर्ष नहि।” अदालत दूनू उत्तर स्पष्ट दर्ज कएलक। प्रतिवेदन न तऽ सर्वथा व्यर्थ भेल, न सर्वोच्च प्रमाण बनल। रेवती देखलीह जे वैज्ञानिक भाषा कतेक संयमित होइत अछि, आ बाजारक भाषा कतेक बेसी निश्चितता चाहैत अछि।

मुकदमाक अगिला सुनबाईमे उपनिरीक्षक दीनानाथ प्रसादकेँ जप्ती-सूचीक दू प्रतिलिपिमे संख्या-अन्तर सम्बन्धी प्रश्न पूछल गेल। एहि बेर दीनानाथ अपन पुरान कथनसँ हटबाक प्रयत्न नहि कएलनि। ‘एक प्रतिमे तैंतीस आ दोसरमे पैंतीस लिखल अछि,’ ओ स्वीकार कएलनि। “मूलमे कतेक ढीला पन्ना छल?” सरकारी पक्ष प्रश्न करैत अछि। दीनानाथ उत्तर देलनि, “जे समकालीन जप्ती अभिलेखमे पुष्ट अछि, ओहि धरि हम कहि सकैत छी; बादक गिनतीसँ मूल रातिक प्रत्येक वस्तुक क्रम फेर स्थापित नहि कएल जा सकैत अछि।” शिवनारायण पुछलनि जे सूची बनौनिहार कर्मचारीक अलग विवरण उपलब्ध अछि कि नहि। दीनानाथ उपलब्ध कागजक आधार बतौलनि, मुदा जतय स्मृति निश्चय नहि छल, ओहि ठाम ‘नहि जनैत छी’

कहलनि। न्यायाधीश स्पष्ट कएलनि जे अन्तरक महत्त्व समस्त साक्ष्यक साथे अन्तिम निर्णयमे परखल जाएत।

अदालतसँ बाहर दीनानाथकेँ एक परिचित पुलिसकर्मी कठोर स्वरमे कहलक, “अहाँ एतेक सावधानी किएक करैत छी? अपराधी बचि गेल तँ?” दीनानाथ उत्तर देलनि, “जे लिखल गेल से कहबाक हमरा कर्तव्य अछि। पन्ना दोसर संख्या मे छल तँ एकर दोष ककर, से हमरा जाँचबाक अछि; झूठ समान संख्या कहि देला पर अपराधी पकड़ाएत, ई कोन भरोसा?” सहकर्मी चुप भऽ गेल। दीनानाथक भीतर सेहो भय छल जे ओकर विभाग ओकरा कमजोर अधिकारी मानि सकैत अछि। मुदा ओ अपन बेटीकेँ सत्य बोलबाक शिक्षा देनिहार पिता छलाह। साँझ घरे पहुँचला पर ओ बेटीकेँ नाटकक अभ्यास करैत देखलनि। बेटी पुछलक, “बाबू, हम राजाक भूमिका नीक निभेलहुँ?” दीनानाथ कहलक, “हाँ। मुदा राजा बनबाक खेलसँ बढ़ि अपन भूल मानबाक साहस सीखिह।” बेटीकेँ ई वाक्य पूरा नहि बुझायल, तइयो ओ हँसि देलक।

आषाढ़क वर्षा आरम्भ भेल तँ नरेशक ठेकानाक समाचार भेटल। प्रभाकरक पुरान मुनीम आब समस्तीपुरक लग एक छापाखानामे हिसाबक काम करैत छल। रेवतीक मनमे तुरन्त ओकरा भेटबाक इच्छा उठल, मुदा शिवनारायण कहलनि जे साक्षीसँ सम्पर्क करबाक प्रत्येक काज विधिसम्मत आ पारदर्शी होयबाक चाही। अभियोजन आ न्यायालयकेँ सूचना देल गेल; आवश्यक भेलापर नियमानुसार ओकर उपस्थिति सुनिश्चित कएल जएत। नरेश स्वयं पत्र पठा बतौलक जे ओ १९९९ आ २००० मे प्रभाकरक मुनीम छल, आ बाजारक किछु दोकानमे अस्थायी रूपसँ हिसाब लिखैत छल। ओ नीलकान्तक दुकानक नाम सेहो स्वीकार कएलक, मुदा कोन पन्ना ओकर लिखल अछि, से बिना देखल निश्चय नहि कहि सकैत छल। शिवनारायण पत्रक एक शब्दपर अटकला—‘अस्थायी’। ओ रेवतीकेँ कहलनि, “एहि शब्दक भीतर तिथि आ जिम्मेदारी दुनू अस्पष्ट अछि; अदालतमे विस्तार चाही।”

नरेश न्यायालयमे उपस्थित भेल तखन ओकर चेहरा थाकल छल। ओ कागजसँ बेसी स्याहीक गन्धमे दिन बितबैत छल। सरकारी अधिवक्ता ओकर परिचय पूछलनि, फेर बहीमे लिखल किछु अङ्क देखौलनि। नरेश कहलक जे गिनतीक एक शैली ओकर परिचित लगैत

अछि। न्यायाधीश प्रश्न कएलनि, “परिचित लगब आ अपना लिखल पहचानब एक नहि। अहाँ कोन बात कहैत छी?” नरेश मुस्कुरेबाक प्रयास केलक। “हमरा लगैत अछि जे एहन अंक हम लिखैत छलहुँ, मुदा केवल एहि आधारपर ई अपना लिखल नहि कहब।” प्रति-परीक्षणमे शिवनारायण पुछलनि जे ओ नीलकान्तक दुकानमे कखनो दिनक उधारक हिसाब लिखने छल। नरेश हँ कहलनि। “रात्रिक सट्टाक लेखन?” नरेश उत्तर देलक, “हमरा ओहि काजक प्रत्यक्ष ज्ञान नहि।” ओहि उत्तरसँ नीलकान्तकेँ निश्चिन्तता नहि भेटल; ओकर व्यापारिक स्मृति आ वास्तविक उत्तरदायित्वक प्रश्न एखन सेहो खुलल छल।

नरेशक गवाहीक बाद अभियोजन किछु कागजक आर्थिक प्रसंग प्रस्तुत कएलक। एक स्वतंत्र शिकायतकर्ताक बयानमे दाँवक कारण धन-हानिक उल्लेख छल; मुदा ओ व्यक्ति नीलकान्तकेँ धन देबाक प्रत्यक्ष घटना स्वयं नहि देखल कहैत छल। दोसर अभिलेखमे किछु खेलक परिणामक संग मिलैत चिह्न छल, जकर अर्थपर पक्षसभक असहमति छल। न्यायाधीश प्रत्येक साक्षीकेँ ओकर ज्ञात सीमा धरि प्रश्न करबाक अवसर देलनि। एक सुनबाईमे सरकारी अधिवक्ता कहि उठलनि, “एतेक संयोग एकत्र कोना भऽ सकैत अछि?” शिवनारायण उत्तर देलनि, “संयोगक संख्या प्रश्न उठबैत अछि, मुदा आरोपक प्रत्येक आवश्यक घटक प्रमाणसँ स्थापित करबाक दायित्व समाप्त नहि करैत।” अदालत दूनूक कथन सुनि तिथि देलक। एहि लम्बा प्रक्रियामे नीलकान्तक दुकानक सामान्य ग्राहकी धीरे-धीरे फेर स्थिर होइत रहल, मुदा हर नव सुनबाई घरमे एक रात्रिक बेचैनी छोड़ि जाइत छल।

सावनमे अमरेश विद्यालयक वाद-विवादमे भाग लेलक। विषय छल—‘न्यायमे विलम्ब आ न्यायमे जल्दबाजी’। ओ अपन घरक मुकदमाक नाम नहि लेलक। कहलक जे जल्दबाजीमे गलत निर्णयसँ निर्दोषक क्षति होइत अछि, मुदा अन्तहीन विलम्बसँ आरोपित आ पीड़ित दुनूक जीवन ठहरि जाइत अछि। गुरुजी पूछलनि जे बीचक बाट की अछि। अमरेश कहलक, “काम समयपर हो, मुदा प्रश्न पूरा सुनल जाए।” विद्यालयमे ई उत्तर सामान्य छल, मुदा निर्मला लेल गम्भीर। ओ विद्यालयक बरामदामे बैसल छलीह आ पिताक मुकदमाक पहिल दिनसँ बेटाक बदलैत स्वर देखैत छलीह। घर लौटैत अमरेश पुछलक, “माए, बाबूजी हमरा सभटा बात कहैत

छथि?” निर्मला ठाढ़ भऽ गेलीह। ओ उत्तर देलीह, “हम स्वयं सभटा नहि जनैत छी। मुदा जे नहि जनैत छी, तकरा कल्पना कऽ बाबूजीकेँ दोषी अथवा निर्दोष नहि बनायब।”

ओहि राति निर्मला नीलकान्तसँ सीधा पुछलनि, “खेलक पैसाक हिसाब अहाँ कखनो राखलहुँ?” नीलकान्त बहुत देर चुप रहलाह। ओहि प्रश्नक सामना अदालतमे नहि, अपन घरक भीतर करैत छलाह। अन्ततः कहलनि, “एक बेर नहि, किछु बेर। लोक अपन जीत-हारक रकमक बारेमे विवाद करैत छल। हम बाजारेक बिचौलियाक कहने अंक जोड़ने छलहुँ। हमरा लगैत छल जे हम उधारक हिसाब राखि रहल छी; मुदा आब बुझैत छी जे एहन हिसाब राखबो एक उत्तरदायित्व अछि।” निर्मलाक आवाज काँपि उठल। “तखन अहाँ पहिने किएक नहि कहलहुँ?” “भय छल। सभ आरोप एक्के बेर हमरा पर आबि पड़त।” निर्मला आँखि नीचाँ कए कहलीह, “अहाँ जे कएल अछि, से स्वीकार करबाक साहस चाही। जे नहि कएल, तकरा अपने माथापर नहि लिअ।” ई वाक्य वकालती परामर्श नहि छल; ई पत्नी द्वारा अपन पतिकेँ देल कठिन नैतिक माँग छल।

भादवमे शिवनारायण नीलकान्तसँ फेर विस्तृत परामर्श कएलनि। नीलकान्त किछु पन्नापर अपन लिखावट पहचानलनि। किछु व्यापारिक प्रविष्टि संग ओ किछु खेलक परिणामसँ सम्बन्धित संख्याक समायोजन कएने होयबाक बात कहलनि, मुदा पैंतालीसम पन्नापर रामकिशुन महतोक नामक नीचाँ लिखल नव तिथि आ रकम अपन लिखल अस्वीकार कएलनि। शिवनारायण ओकरा कहलनि जे ई निजी परामर्श अदालतमे तत्काल जिरहक विषय नहि बनल अछि; अभियुक्तक विधिसम्मत अधिकार आ विचारणक अवस्था अनुसार आगाँक रणनीति तय होएत। ‘मुदा,’ ओ जोड़लनि, “हम न्यायालयक समक्ष एहन दावा नहि रखब जे अहाँ कहियो कोनो खेलक हिसाबक नजदीक नहि गेलहुँ। एहन पूर्ण निषेध अहाँक अपन कथनसँ मेल नहि खाइत।” नीलकान्त धीरे सिर हिलौलनि। ओकरा पहिल बेर बुझायल जे कम आरोपक सत्य स्वीकार करब कखनो-कखनो सभ आरोपसँ इन्कार करबाक तुलना मे अधिक कठिन होइत अछि।

रेवती परामर्शक बाद अपन पितासँ पुछलनि, “की हम ओहि बातकेँ अपराध स्वीकार करब कहि सकैत छी?” शिवनारायण स्पष्ट कएलनि, “नहि। लेखनक स्वीकार, आर्थिक व्यवहारक

आंशिक वर्णन आ आरोपित अपराधक सभ वैधानिक तत्व स्वीकार करब भिन्न बात छथि। पुलिस, अभियोजन आ न्यायालयक अपना-अपन भूमिका अछि। अधिवक्ताक गोपनीय परामर्शकेँ सनसनीक सामग्री नहि बनाउ।” रेवती पुछलीह, “तखन बचावक आधार बदलि गेल?” पिता उत्तर देलनि, “बचावक आधार पहिनेसँ प्रमाणक सही परीक्षण छल। जँ अहाँक मनमे छल जे हमर काज प्रत्येक असुविधाजनक तथ्य मेटेबाक अछि, तँ ओ आधार गलत छल। हम अभियोजनक अप्रमाणित दाबी स्वीकार नहि करब; मुदा मुवक्किलक पक्षमे असत्य गढ़ब सेहो नहि।” रेवती अपन कापीमे लिखलीह—अधिवक्ता सत्यक मालिक नहि, ओकर विधिसम्मत परीक्षणक सहभागी अछि।

आसिनक आरम्भमे जोधपुरसँ कुसुमक पत्र आएल। ओ लिखने छलि जे न्यायालयक निर्देशानुसार प्रस्तावित स्थलीय मापनक तैयारी चलैत अछि। पुरान कूपक कातक नालीक अवशेष स्पष्ट छैक, मुदा कोन समयक अछि से विशेषज्ञक मत बिना निश्चित नहि। मरुधर परिसरमे विद्यार्थीसभ अस्थायी पुस्तकालय बनौने छथि। नसीमा बानो आ कुसुम सहायताक कोषक हिसाब फेर सार्वजनिक कएने छलीह; सायरा अंसारी लेल पुस्तक पठाओल गेल। रेवती पत्र पढ़ि सन्तुष्ट भेलीह। न्यायालयक अन्तरिम आदेश किसानकेँ सीमित सुरक्षा देने छल, मुदा छात्रसभ अपन शिक्षाक बाट अलग खोजने छल। दुनू पक्षक गरिमा बनल रहब सम्भव छल, जँ ओ सभ एक-दोसरक आवश्यकता मानथि। कुसुम अन्तमे लिखने छलि—“हमर पिता कूप बचेबाक संघर्ष करैत छथि; हम चाहैत छी छात्रावास सेहो बनय। नापी सत्य कहत तँ दूनूकेँ बाट भेटत।”

कार्तिकक दिनमे दरभंगाक अदालतमे अभियोजनक शेष साक्षीसभक सूचीपर चर्चा भेल। विशेषज्ञक मत, प्रभाकरक पावती, नरेशक सीमित गवाही आ दीनानाथक जप्ती-विवरण आब न्यायिक अभिलेखमे छल। गंगेश महतोक परिवारसँ प्राप्त किछु प्रमाणित अभिलेखक उपलब्धता सम्बन्धमे अलग निवेदन प्रस्तुत भेल। सरकारी अधिवक्ता कहलक जे रामकिशुन नाम एक प्राचीन देनदारक संकेत सेहो भऽ सकैत अछि। शिवनारायण उत्तर देलनि जे एकर समर्थनमे मूल अभिलेख चाही, मात्र तर्क नहि। न्यायाधीश निर्देश देलनि जे पक्षसभ प्रासंगिक प्रमाणक प्रश्न सीमित राखथि, अनावश्यक गवाहीसँ विचारण लम्बा नहि करथि। एहि आदेशक

बाद दूनू पक्ष एकटा बातपर सहमत भेल—अगिला वर्ष विचारणक शेष अवस्था आगाँ बढ़ेबाक चाही। नीलकान्तक मुँहपर प्रतीक्षाक थकान स्पष्ट छल।

निर्मला जखन निर्णयक सम्भावना सुनलीह तँ हुनकर मनमे राहतक संग भय सेहो आयल। एतेक दिन घरमे तारीखक प्रश्न छल, आब फैसलाक प्रश्न। ओ अमरेशक पुरान कापी देखलीह, जाहिमे बच्चा लिखने छल—“नाम लिखलासँ दोष नहि उतरैत।” आब ओहि कापीक अगिला पन्नापर युवकक हस्ताक्षर छल, अक्षर अधिक स्थिर। निर्मला पुछलीह, “तों बाबूसँ नाराज छह?” अमरेश उत्तर देलक, “किछु बातपर हँ। मुदा हम हुनकर पुत्र छी, ई बात बदलत नहि।” निर्मला ओकर माथपर हाथ रखलीह। नीलकान्त दुआरिक पछिला कोठरीसँ ई बात सुनि रहल छलाह। हुनका लगल जे पुत्रक ई छोट उत्तर दुनू प्रकारक सत्य समेटैत अछि—सम्बन्ध सुरक्षित, उत्तरदायित्व शेष।

अगहनमे एक साँझ शिवनारायण अपन कार्यालयक पुरान पेटी खोललनि। नीलकान्तक बहीक प्रतिलिपि, जोधपुरक नक्शाक पत्र, गुजरातसँ आयल सायराक शैक्षणिक अभिलेखक जानकारी—तीनू अलग गठरीमे छल। रेवती कहलीह, “हमर मन करैत अछि तीनू कथाक एकहि सूत्र अछि।” पिता उत्तर देलनि, “मानवीय प्रश्नक सूत्र अछि, अभियोजनक नहि। ककरो नाम गलत लिखल गेल, ककरो जमीनक दिशा अस्पष्ट, ककरो देखल चेहराक स्मृति हिलल—एहि सभमे प्रमाणक आवश्यकता समान अछि। मुदा न्यायालयमे प्रत्येक प्रकरण अपन स्वतंत्र तथ्यक आधारपर चलत।” रेवती पुछलीह, “तखन ई सत्ताइस वर्षक कथा केना एक बनत?” शिवनारायण हँसलाह। “देश एक अछि कहिकय ओकर सभ मुकदमा एक नहि होइत। न्यायालयक बरामदामे अलग लोक एक्के छततल बैसैत छथि, ताहिसँ हुनकर दुखक आकार एक नहि भऽ जाइत।”

राति गहराएलापर नीलकान्त अपन दुकानक पछिला कोठरीमे गेलाह। ओहि ठाम जप्त बहीक रिक्त स्थानपर आब नव खाताक पन्ना राखल छल। ओ एकटा पन्ना खोलि अपन हाथे लिखलनि—चाउर पाँच किलो, तेल दू सेर, उधार चौवन रुपैया। फेर कलम रोकि देलनि। एतेक साधारण हिसाबक भीतर ओकरा पहिनेक जीवनक शान्ति स्मरण भेल। किछु वर्ष पहिने ओ बुझैत छलाह जे नाम आ रकम लिखि देला पर सम्बन्ध स्पष्ट भऽ जाइत अछि। आब ओ जनैत

छलाह जे अंकक आशय, लेखकक इच्छा, धनक वास्तविक उपयोग आ दोसर व्यक्तिक विश्वासक बीच अन्तर होइत अछि। ओ निर्मलाकेँ बजौलनि। “जँ किछु गलत कएल अछि, तँ ओकर परिणाम सहब,” ओ कहलनि, “मुदा रामकिशुनक ओ पन्ना हम नहि लिखलहुँ।” निर्मला उत्तर देलीह, “तखन जे सत्य अछि, ओकरा अन्त धरि एकहि स्वरमे कहू।”

गंगेश महतोक घरसँ एक दिन मृत्यु-पञ्जीक प्रमाणित नकल आयल। रेवती ओकरा पढ़ि देखलीह जे रामकिशुन महतोक मृत्यु १९९५ मे दर्ज अछि, मुदा ओहि अभिलेखमे व्यक्तिक पिताक नामक वर्तनी एकटा आन पुरान कागजसँ भिन्न छल। “आब तँ सिद्ध भऽ गेल जे २००० मे ई व्यक्ति नहि छलाह,” रेवती कहलीह। शिवनारायण उत्तर देलनि, “जे व्यक्तिक मृत्यु दर्ज अछि, ओ २००० मे जीवित नहि छलाह—ई बात अभिलेख समर्थन करैत अछि। मुदा विवादित बहीक ओ नाम ओही व्यक्तिक अछि कि दोसरक, आ नब तिथिक रकम पुरान देनदारीक प्रतिलिपि अछि कि कोनो आन लेखन—ई प्रश्न शेष अछि।” रेवती एहि सूक्ष्म अन्तरकेँ फेर लिखलीह। हुनका लगल जे न्यायालयक सत्य प्रायः एक्के बेर पूरा आकाश नहि खोलैत; कखनो एक छोट खिड़की खुलैत अछि आ ओकर बाहर फेर दोसर प्रश्न देखाइत अछि।

नीलकान्त एक दिन गंगेशक नाम सुनिते अपन पुरान उधारक स्मृति बतौलनि। रामकिशुन जखन जीवित छलाह, किछु समय हुनका लग अनाजक हिसाब रहैत छल; मरलाक बाद हुनकर पुत्रक संग कोनो प्रत्यक्ष व्यवहार भेल कि नहि, से नीलकान्त स्पष्ट नहि स्मरण करैत छलाह। रेवती पुछलीह, “जँ पुरान रकम नब बहीमे उतरि गेल, तखन लिखनिहार ककरा कहब?” नीलकान्त कहलक, “हम नहि जनैत छी। ई बात हम सहज कहि रहल छी, बहाना नहि।” रेवती हुनकर चेहरा देखलीह। सचमुच स्मृति कमजोर छल कि अपराधक भय—ओ निर्णय नहि कएलनि। अपन अधिवक्ता पिताकेँ एतबे बतौलीह जे स्मृतिक अभावकेँ जबरदस्ती निश्चित कथनमे बदलल नहि जा सकैत अछि।

ओहि महीनामे प्राचार्य राठौड़क एक पत्र शिवनारायण लग आयल। मरुधरक विद्यार्थीसभक अस्थायी पुस्तकालयमे आब खेत, जल, इतिहास आ न्यायसम्बन्धी पुस्तकसभ राखल गेल अछि। कुसुम पुरान नालीक दू छायाचित्र आ ओकर स्थलीय नाप अलग-अलग सुरक्षित कएने छलीह, मुदा ओकरा न्यायालयक आधिकारिक सीमांकनक विकल्प नहि मानने छलीह।

शिवनारायण रेवतीकेँ पत्र देखौलनि। “कृषकक बेटी जे सीखि रहल अछि, से हम अदालतमे कतेको वर्षसँ सिखा रहल छी,” ओ कहलनि। रेवती उत्तर देलीह, “आ ओ अपन घरक बाहरक विद्यार्थीसभ लेल सेहो पुस्तकालय खोलने छथि। न्याय कखनो आदेशक बाहर नागरिकक आचरणमे सेहो देखाइत अछि।” पिताक चेहरापर सन्तोषक हलुक रेखा उभरल।

दिसम्बरक अन्तिम सुनबाईमे विमलाकान्त मिश्र अगिला प्रक्रियागत तिथि निश्चित कएलनि। आदेशक भाषा सादा छल: उपलब्ध साक्ष्यक परीक्षण जारी, शेष आवश्यक प्रश्नक निर्णय नियमानुसार। बाहर लोक एक-दोसरासँ पुछैत छल जे कखन दोषी ठहराएल जाएत, कखन छोड़ल जाएत। शिवनारायण कोनो अनुमान नहि देलनि। रेवती अमरेशकेँ केवल अगिला तिथि आ ओहि दिनक वास्तविक आदेश बतौलनि। कचहरीक पुरान पीपरक नीचाँ बेंच आब फेर शीतसँ ओसल छल। वर्ष आरम्भक भोरिसँ ओकर रङ्ग भिन्न नहि छल, मुदा अदालतक फाइलमे अनेक नव पन्ना जोड़ि गेल छल। पन्नासभक अर्थ एक-दोसरसँ टकराइत छल; न्यायाधीशक अगिला कार्य ओहि टकराहटक विधिसम्मत मूल्यांकन छल।

जखन सभ चलि गेलाह, रामविलास अहलमद फाइल गोटियाकय अलमारीमे रखलनि। ओ पैंतालीसम पन्नाक सुरक्षित प्रतिलिपिपर एक बेर दृष्टि देलनि, फेर फाइल बन्द कएलनि। ककरो आवाज नहि छल। मुदा दूर गलीमे अमरेश अपन साइकिलक घंटी बजा रहल छल; निर्मला घरमे साँझक भोजन बना रहल छलीह; जोधपुरमे कुसुम कूपक नालीक नब रेखाचित्र तैयार करैत छलीह; गुजरातमे सायरा अपन इतिहासक कापीमे बचल घरक कथा लिखैत छलीह। एहि सभ घरमे साक्षी अलग रूपेँ उपस्थित छल—कागज, माटि, स्मृति, मौन। नीलकान्तक मुकदमामे आब एक बात स्पष्ट छल: किछु लिखावट ओ अपन हाथक मानैत छल, मुदा मृत रामकिशुन महतोक नामसँ जुड़ल नव प्रविष्टि अस्वीकार करैत छल। ई ओकर अपन कथन छल, न्यायालयक अन्तिम निष्कर्ष नहि। अगिला वर्ष ओ कथनकेँ प्रमाणक समक्ष राखबाक छल।

अध्याय ७ — समुद्रक प्रलय

छोट अण्डमान, दिसम्बर २००४–जनवरी २००५

दिसम्बरक छब्बीस तारीख। रविदिनक भोरि एखनो पूर्ण रूपेँ फूटल नहि छल। छोट अण्डमानक हट बे नामक समुद्री बसातमे नमकक गन्ध रहैत छल, मुदा ओहि भोरि शिशिर हलदरकेँ पानिक गन्धसँ पहिने माटिक एक विचित्र थरथराहट बुझायल। ओ अपन छोट नावक रस्सी कसि रहल छलाह। पएरक नीचाँक धरती एना काँपल जे बाँसक खम्भा धऽ ठाढ़ रहबाक आवश्यकता भऽ गेल। समुद्रक कात दिन बितेनिहार शिशिर बहुत आँधी देखने छलाह; समुद्रसँ पहिने धरती उठि बैसय, से कम देखने छलाह।

घरमे सुधा चाउर धोइत छलीह। भूकम्पक पहिल झटका लगिते माटिक हाँड़ी खसि पड़ल, आ अनीश निद्रासँ जागि कानय लागल। ओकर दीदी मौसमी ओकर हाथ पकड़ि दुआरि दिसि दौड़लीह। सुधा सभकेँ बाहर निकलबाक कहलनि। नारीक स्वरमे भय छल, मुदा ओहि भयकेँ निर्देश बनाबय पड़ैत छल। कालीमणि दादी आँगनक एक कोनमे बैसल छलीह; उठबाक प्रयत्नमे हुनकर घुटना टुटैत सन भेल। शिशिर नाव छोड़ि दौड़लाह आ दादीकेँ बाँहिसँ उठौलनि। धरती थमला पर किछु क्षण लेल पड़ोसी सभ एक-दोसराक मुख देखैत रहल।

पहिल भयक बाद समुद्र असामान्य देखायल। जकर लहर सदिखन घाटक पत्थर छुइत छल, ओ पानि मानो पछुआइत गेल। किछु बालक दूरसँ चिल्लायल जे तटक नीचाँक उजड़ल भाग देखा रहल अछि। शिशिरक अनुभव ई छल जे जखन पानि अपन परिचित चालि छोड़ि दे, तखन तटपर ठाढ़ रहब उचित नहि। ओ सुधाकेँ कहलनि, “बच्चासभकेँ लऽ ऊँच जगह दिसि जाउ। हमरा नाव आ जालक चिन्ता छोड़ू।” मुदा ओ स्वयं द्वारक भीतर रहि गेल छोट कपड़ाक गठरी उठय लेल फेर घुरलाह।

सुधा पहिने दादीकेँ सम्हारलनि, फेर अनीशकेँ छातिसँ लगौलनि। मौसमी घरक भीतरक विद्यालयक कापी याद कएलक। “हमर परीक्षा,” ओ कहलक। सुधा ओकरा उत्तर देबाक

समय नहि देलनि। सामनेसँ पड़ोसी बासुदेव चिल्लबैत अबैत छल—“ऊपर, ऊपर! तट नहि देखू!” हवादार रविदिनक ओहि भोरिमे समुद्रसँ एक एहन गर्जना उठल जे ओकरा झंझा कहब छोट होइत। सुधाकेँ केवल एतेक स्मरण रहल जे ओ कालीमणिक हाथ नहि छोड़लनि। आ शिशिर दुआरक चौखटमे अन्तिम बेर देखायलाह।

पानिक पहिल प्रहारमे घरक बाँसक भित्ति एना मुड़ल जे मानो कोनो हाथ कागज मोड़ि रहल हो। सुधा बच्चा आ दादीकेँ धकेलैत माटिक एक उँच चबूतरा दिसि बढ़लीह। क्षण भरिक भीतर सड़क, घाट, नारिकेलक छाया आ लोकक आवाज सभ पानिक नीचाँ गुम भऽ गेल। अनीशक पएरक जूता खुलि गेल, मुदा सुधा ओकरा उठेबाक प्रयत्न नहि कएलनि। ओकरा एकहि प्रश्न छल—सभ जिअत रहथि। ओहि समय शिशिर कतय छथि, ई प्रश्न पूछबासँ पहिने पानि फेर धक्का देलक।

जखन पहिल पैघ लहरक वेग घटल, तखन धरती ओहिना नहि बचल छल जेना भोरिसँ पहिने छल। कालीमणिक गाल कटि गेल छल, मौसमीक एक बाँहि छिलायल छल, अनीश काँपि रहल छल। सुधा एक गाछक मोट डारि पकड़ने छलीह। ओ अपन पतिक नाम पुकारलनि—“शिशिर!” उत्तर केवल लोकक पुकार आ टूटैत लकड़िक आवाज छल। दूर कतहु नाव उलटल देखाइत छल, मुदा ओ नाव शिशिरक छल कि दोसरक, से चिन्हब असम्भव। सुधा फेर नाम पुकारलनि। समुद्र एकरो उत्तर नहि देलक।

दुपहर धरि लोक ऊँच भूमिपर जुटैत रहल। केकरो घरक पता नहि, केकरो बच्चा नहि, केकरो माता नहि। एहन स्थिति छल जाहिमे ककरो अपन पीड़ा पूर्ण रूपेँ कहबाक अवसर नहि छल। जे लोक दू गोटेकेँ सम्हारि सकैत छल, से तीन गोटेकेँ उठेबाक प्रयत्न करैत छल। एक वृद्ध मछुआरा, हरिहर, अपन घायल पएर घिसटैत लोककेँ बतबैत छल जे पानि फेर आबि सकैत अछि। ताहि लेल कोनो व्यक्ति नीचाँ नहि उतरय। ककरो ओहि बातक वैज्ञानिक कारण ज्ञात नहि छल; अनुभव मात्र सबसँ सुरक्षित निर्देश बनल।

अनीश पहिल बेर ओहि दिन बुझलक जे भूख आ भय एकहि समय मनुष्यकेँ अलग-अलग दिशा खींचैत अछि। पेटमे भोजन नहि छल, मुदा भोजन माँगैत लज्जा होइत छल। मौसमी ओकरा अपन भीजल आँचलसँ मुँह पोछलक। दादी कहलीह, “पहिने पानि चाही।” सुधा

एकटा बचल लोटाक खोज करैत छलीह। समुद्रक चारूकात पानि छल, मुदा पीबय योग्य पानि भेटनाइ कठिन भऽ गेल छल। खारापन आब मुँहक स्वाद नहि, जीवनक सीमा बनि गेल छल।

साँझक आगाँ एक स्थानीय शिक्षक, रघुपति नायर, बचल लोकक नाम लिखबाक आरम्भ कएलनि। हुनकर लग आधा भीजल नकल-बही छल, जाहिमे पहिले विद्यालयक उपस्थितिक अङ्क लिखल गेल छल। शिक्षक पहिल पन्ना फाड़ि नव नामावली बनौलनि—जीवित, घायल, हराओल। एहन सूची बनबैत समय हाथ काँपैत छल। नामक बाद ‘हराओल’ लिखबाक अर्थ मृत्यु नहि छल; मुदा ओहि शब्दमे असह्य अनिश्चितता छल। सुधा शिशिर हलदरक नाम दैत कहलीह, “हुनका मृत नहि लिखू। खोज चलि रहल अछि।” नायर पेन्सिल उठाकय ‘अनुपस्थित, खोज आवश्यक’ लिखलनि।

राति एक क्षतिग्रस्त विद्यालयक कक्षमे काटल गेल। छत आंशिक बचल छल; लोक भीजल भूमि पर बैसल रहथि। शिक्षक बच्चासभकेँ दीवारसँ दूर राखलनि। कालीमणि अपन बचपनक तुफानक कथा कहबाक चेष्टा कएलनि, मुदा दोसर वाक्यपर हुनकर स्वर रुकि गेल। सुधा अनीशकेँ सुतएबाक लेल कहलीह, “पिता नावक लग गेल छथि। खोजि रहल होयताह।” ओ स्वयं बुझैत छलीह जे ई आश्वासनक प्रमाण नहि अछि। मुदा बच्चाकेँ एखन अन्धकारसँ बेसी अन्धकार नहि देल जा सकैत छल।

दोसर दिन भोरि बचावक स्थानीय टोली तट धरि गेल। शिशिरक नावक एक भाग भेटल, जालक डोरी एक नारिकेलक गाछमे अटकल छल। आदमी नहि भेटल। सुधा लकड़िक टुकड़ा हाथमे लेने बहुत देर बैसल रहलीह। बासुदेव कहलक, “नाव बाँचल नहि, मुदा आदमी कखनो ऊपरक गाछ धऽ बचि जाइत अछि।” हरिहर कहलनि, “नाम हराओल सूचीमे रखू, मृत्यु नहि लिखू।” दूनू बात सत्यक सम्भावना छल, निर्णय नहि। सुधाकेँ बुझायल जे धरती जखन प्रमाण मिटा दैत अछि, तखन अपन व्यक्ति जिअत अछि कि नहि, से जानबो एकटा कठिन साधना बनि जाइत अछि।

अण्डमान-निकोबारक अलग-अलग द्वीपसँ असमान समाचार अबैत छल। कतहु घाट टूटल, कतहु सम्पर्क बन्द, कतहु पानि जमीनक भीतर घुसि गेल। सैन्य आ असैनिक बचाव टोलीक बारेमे लोक सुनैत छल, मुदा प्रत्येक स्थान धरि सहायता पहुँचबामे समय लगैत छल। शिक्षक

नायर लोककेँ जतेक बात स्वयं देखलनि, ओतेक मात्र बतबैत छलाह। ‘ओहि द्वीपपर सभ नष्ट भऽ गेल’ जकाँ वाक्य ओ रोकैत छलाह। ओ कहैत छलाह—“जे पुष्टि भेल अछि, तेहेन बात लिखू।” अपन छोट भीजल बहीमे ओ सूचना आ अफवाहक दू पृथक किनार बनाबय चाहैत छलाह।

तीसर दिन अनीश विद्यालयक बहीक किनार बैसल-बैसल एकटा कागजक टुकड़ा देखलक। ओहि पर ओकर पिताक नामक प्रथम अक्षर छल। कागज पानिमे गलल छल; अक्षर स्पष्ट नहि। “ई हमर बाबूजीक कागज अछि,” ओ उत्साहसँ कहलक। नायर कागज धूपमे सुखय लेल रखलनि आ कहलनि, “होइतो सकैत अछि, नहि सेहो। अहाँक वस्तु अछि तँ सम्हारि रखू।” सुधाकेँ ओहि उत्तरमे कठोरता नहि, करुणा अनुभव भेल। शिक्षक बच्चाक आशा नहि तोड़लनि, मुदा आशाकेँ तथ्य बनाकय लिखलो नहि।

विद्यालयक उपस्थितिक पुरान बहीमे अनीशक नामक अगिला पंक्तिमे मौसमीक नाम छल। सुधाकेँ अचानक स्मरण भेल जे घरमे काठक पेटीमे विवाहक कागज, शिशिरक नावक पञ्जीकरण-पत्र, राशन-पत्र आ दुनू बच्चाक जन्मक अभिलेख राखल छल। ओहि पेटीकेँ शिशिर ताला लगबैत छलाह। “हम कागज बचौलहुँ नहि,” सुधा कहलीह। कालीमणि पहिल बेर कड़ा स्वरमे उत्तर देलनि—“अहाँ बच्चासभ बचौलहुँ। एकरासँ पैघ कोनो कागज नहि।” मुदा सुधा जानैत छलीह जे आगाँ सरकारी कार्यालयमे ई उत्तर पर्याप्त नहि होयत।

समुद्रक ताण्डवक बीचोबीच जीवनक सूक्ष्म व्यवस्था फेर जन्म लेबय लागल। एक समूह भोजन पकबैत, दोसर घाव धोइत, तेसर हराओल लोकक सूचना लऽ घूमैत। अपनहि नाव गमौने लोक आनक जालक अवशेष बटोरि रखैत छल। सबहक बीच मतभेद सेहो छल: पहिले केकरा पानी, केकरा दवाई, केकरा कम्बल? तखन कालीमणि कहलीह, “जे चलि नहि सकैत अछि, ओकरा पहिने देऊ।” एकटा नव अनौपचारिक नियम बनल; कोनो सरकारी मोहर नहि, मुदा ओकर पालन अनेक लोक कएलनि।

चौथ दिन तक राहतक पहिल व्यवस्थित सामग्रीक किछु हिस्सा विद्यालय धरि पहुँचल। ओहि संग दवाई, सूखल भोजन, चादर आ अस्थायी शिबिरक सूचना छल। सैनिक दलक एक सदस्य अपन नाम नहि बतौलक; ओ घायल वृद्धकेँ उठाकय बाहर लऽ गेल। अनीश देखलक जे

जे आदमी सैनिकक वेश पहिरने अछि, ओहो घायल कालीमणिक पएर सम्हारैत समय बहुत धीरे चलैत अछि। बालकक मनमे पहिल बेर भयक संग भरोसा पुनः जागल। बाहर आकाश नील छल, जखन कि धरतीपर समुद्रक खारि माटि एखन धरि जमल छल।

राहत-कक्षमे नाम लिखबाक लेल एक लम्बा पाँति लागल। एक सरकारी कर्मचारीक लग सफेद कागजक पन्ना छल। ओ परिवारक मुखियाक नाम, स्थायी निवास, सदस्यक संख्या, घरक क्षति आ आजीविकाक साधन पुछैत छल। सुधा अपन नाम कहलीह। कर्मचारी पुछलक, “पति?” “शिशिर हलदर, हराओल।” पन्नापर लिखनिहार युवक जल्दबाजीमे ‘शिशिर’ केँ ‘शिशिरा’ बनौलक। सुधा ओकरा रोकलनि। “नाम शिशिर अछि। अन्तमे आ नहि अछि।” युवक दूबेर लिखि नाम ठीक कएलक। एतबे छोट संशोधनमे सुधाकेँ अपन पतिक उपस्थिति सन लागल।

“घरक कागज?” अगिला प्रश्न आयल। सुधा सिर हिलौलनि। “पानि लऽ गेल।” “नावक कागज?” “ओहो।” “तखन कोना सिद्ध होयत जे नाव हुनक छल?” युवक एतबे पुछि अगिला परिवार दिसि देखय लागल। सुधा कुछु कहबाक पहिने रघुपति नायर आगाँ बढ़लाह। “हम विद्यालयक नामावली आ पुरान बस्तीक सूचीसँ परिवार पहिचानैत छी। पड़ोसी सेहो गवाही देत।” कर्मचारी कहलक, “हम एकरा टिप्पणीमे लिखि देब। अंतिम जाँच आन कार्यालय करत।” सुधा बुझलीह जे सहायता भेटबाक पहिल पथ नामक सही अक्षरसँ शुरू होइत अछि।

ओहि दुपहर मौसमीक पएरमे बढ़ैत सूजन देखि स्वास्थ्यकर्मी ओकरा प्राथमिक उपचार-कक्ष लऽ गेल। ओतय तमिल, बांग्ला, हिन्दी आ अनेक स्थानीय बोलीक शब्द एक संग सुनाइत छल। चिकित्सकक संग एक परिचारिका अनेको बच्चाकेँ अलग-अलग बुझबैत छलीह। मौसमी पुछलक, “हम फेर दौड़ि सकब?” परिचारिका कहलीह, “घाव साफ राखब, आराम करब। एखन जल्दीमे निर्णय नहि।” ओहि उत्तरमे बचबाक संभावना छल, मुदा चमत्कारक वचन नहि। अनीश सोचलक—चिकित्सक आ शिक्षक दुनू एखन एकहि बात कहैत छथि, जे नहि जनैत छी, से नहि कहब।

साँझमे एक युवती राहत-सामग्रीक संग आयलीह। ओकर नाम देवजानी लकड़ा छल। ओ झारखण्डसँ किछु वर्ष पहिने पोर्ट ब्लेयरमे आबि बसल छलीह आ स्वास्थ्य-साक्षरता सम्बन्धी

एक छोट स्वैच्छिक समूहसँ जुड़ल छलीह। ओ लोकक नाम लिखैत समय पुछलनि, “अहाँ जे नाम कहब, हम फेर पढ़ि सुनाएब। गलती रहत तँ एखने सुधारी।” सुधा एकरा विस्मयक संग देखलीह। सरकारी पन्नाक हड़बड़ी आ एहि युवतीक सावधानीमे अलग संसार छल। देवजानीक समूहक लग धन कम छल, मुदा ओकरा समय देबाक इच्छा छल।

देवजानीक हाथमे एक लाल रंगक कपड़ाक थैला छल। ओहिमे औषधिक अलावा कागजक खाली पन्ना, पेन्सिल, छोट सूत आ कपड़ा बाँधबाक पट्टी छल। सुधा पुछलनि, “अहाँ लोक एहि द्वीपपर कतेक दिन रहब?” “जतेक दिन सम्भव होयत,” देवजानी कहलीह, “मुदा एखन हम सहायता देबाक स्थिति बताबैत छी, स्थायी पुनर्वासक वचन नहि दऽ सकैत छी।” ओ अपन समूहक नोंद-बहीमे शिशिरक नाम हराओल व्यक्ति रूपमे दर्ज कएलनि आ सुधाकेँ एक प्रतिलिपि देलनि। पहिल बेर परिवारक हाथमे कोनो प्रमाणक नव कागज आयल।

एहि कागजक मूल्य सुधा मात्र बुझैत छलीह। विद्यालयक भीजल बही, राहतक प्रारम्भिक सूची आ देवजानीक लिखल विवरण—तीनू एक-दोसरासँ मेल खाइत छल, मुदा केओ नावक स्वामित्व नहि सिद्ध करैत छल। अनीश पुछलक, “माँ, कागज जिअत रहैत अछि?” सुधा उत्तर देबाक पहिने ठमकलि। “जँ सम्हारि राखी तँ रहैत अछि। मुदा कागज आदमीक सगरो कथा नहि कहि पबैत अछि।” बालक ओहि बातकेँ खेलक पहेली नहि बुझलक; ओ देखैत छल जे घर नहि रहलापर ओकर मायक हाथमे कागजक भार बढ़ि गेल अछि।

शिशिरक स्मृति हर वस्तुमे घुरि आबैत छल। ऊँच भूमि पर बैसल अनीशकेँ एक पुरान दिन याद आयल जखन पिता पहिल बेर ओकरा नावमे लऽ गेल छलाह। शिशिर कहने छलाह, “धारक रंग मात्र देखि समुद्रक गहिराइ नहि बूझि सकब। तटसँ दूर जायब तँ पानि नीचे बदलैत रहैत अछि।” ओहि दिन पिता माछक जाल खोलैत-खोलैत समुद्रक नामसमूह सिखौने छलाह। अनीश एखन समुद्र दिसि देखलक आ बुझलक जे पिताक शिक्षा छल, नहि समुद्रक विश्वास।

कालीमणि राति-राति शिशिरक बाल्यकाल सुनबैत छलीह। ओ कहैत छलीह जे शिशिर छोट रहिते पानिमे गिरि गेल छल आ हुनकर पिता एक लम्ब बाँससँ ओकरा निकालने छलाह। “ओ पानि नहि छोड़ैत छल,” कालीमणि कहलीह। सुधा सासुक वाक्य सुनैत छलीह, मुदा कोनो उत्तर नहि दैत छलीह। ओ जनैत छलीह जे आशा अक्सर स्मृतिक पाछाँ लुकैत अछि।

मुदा एहन स्मृति जीवन बचेनिहार दवाई जकाँ सेहो होइत अछि। दादीक कथा सुनि अनीश राति किछु क्षण लेल सुतल।

पाँचम दिन दूटा सूची बनल—एक बचल लोकक, दोसर हराओल लोकक। एकहि परिवारक नाम दू ठाम लिखल भेटैत छल, किछु नाम कोनो ठाम नहि। नायरक छोट बही प्रशासनक एक सहायक कर्मचारी लग पहुँचायल गेल। कर्मचारी ओहि सूचीकेँ आधिकारिक अभिलेखक एकमात्र आधार नहि बनौलक; ओ दोसर स्रोतसँ मिलानक बात कहलक। एहि सावधानीसँ किछु लोक असन्तुष्ट भेलाह। “हम एतय जिअत बैसल छी, तखन हमर जीबित होयबाक प्रमाण आओर चाही?” एक वृद्धा पुछलनि। ओकर प्रश्नक तत्काल उत्तर ककरो लग नहि छल।

सुधा पाँतिमे ठाढ़ रहैत-रहैत सीखि गेलीह जे जे व्यक्ति एक दिन पहिने अपन घरे मछुआराक पत्नी छल, से आब राहतक प्रार्थिनी बनि गेल अछि। ओहि परिवर्तनमे ओकर स्वाभिमान कम नहि भेल छल, मुदा लोकक नजर बदलि गेल छल। किछु कर्मचारी सहानुभूतिसँ बोलैत छल; किछु आपदाक थकानमे कर्कश भऽ गेल छल। सुधा अपन माँग दोहरबैत छलीह—“हमरा बच्चासभक भोजन, सासुक दवाई आ पतिक खोजक समाचार चाही।” एतबे। ओ एखन स्थायी घर माँगबाक विचार धरि पहुँचबे नहि कऽ सकलीह।

देवजानी एक दिन हुनका बतौलनि जे अनेक स्थानपर नाव आ जाल नष्ट भेल अछि; भोजनक संग आजीविका पुनः सुरू करबाक व्यवस्था सेहो जरूरी होयत। सुधा कहलीह, “नाव रहिते शिशिर खेतक अनाजो मँगबैत छलाह। नाव नहि तँ हमरा की काज?” देवजानी पुछलनि, “अहाँ जाल मरम्मत करैत छलहुँ?” “हाँ, कोनो-कोनो दिन। माछ छाँटैत छलहुँ। दामक हिसाबो राखैत छलहुँ।” देवजानी उत्तर देलनि, “तखन अहाँक श्रमक नाम कागजमे आयब आवश्यक अछि।” एहि वाक्यसँ सुधाक भीतर दबि गेल क्रोधक पहिल स्वर जागल।

बालकसभक बीच शिक्षा फेर शुरू करबाक प्रयत्न भेल। रघुपति नायर एक गाछक नीचाँ वर्णमाला लिखौलनि। किछु बालकक हातमे कापी नहि, किछुक लग पेन्सिल आधा टूटल छल। ओ समुच्चय बनाकय कहलक, “काल्हि जे पढ़ने रही, ओतयसँ आज शुरू नहि कऽ सकब।

मुदा एतयसँ शुरू करब।” मौसमी कापीक बदला चपट पत्थरपर अक्षर खींचलक। अनीश समुद्रक ध्वनि सुनि घबड़ा गेल, फेर बहिनक लिखल ‘श’ अक्षरकेँ चुपचाप देखैत रहल।

ओहि साँझ एक वृद्ध पुरुष राहत-कक्षमे अबैत कहलाह जे हुनका तटक दोसर भागमे शिशिर सन व्यक्ति देखाइत छल। सुधा तुरन्त उठलीह। देवजानी पूछलनि, “कखन? कतय? अहाँ स्वयं देखलहुँ?” वृद्धक उत्तर अस्पष्ट छल। शायद तीन दिन पहिने, शायद आन व्यक्ति। देवजानी ओकर बात लिखि रखलनि, मुदा सुधाकेँ कहलीह, “हम जाँचक प्रयत्न करब। एखन एहि आधारपर निष्कर्ष नहि देल जा सकैत अछि।” सुधाक आशा फेर जागल, तकर संग ओकर शरीर काँपि उठल। ओहि राति ओकरा पहिल बेर बुझायल जे असत्य समाचार सेहो कतेक थकबैत अछि।

दिसम्बरक अन्तिम दिनसभमे समुद्रक गर्जनाक अपेक्षा कागजक चरमराहट बढ़ि गेल। राहतक सामग्रिक संग प्रशासनक नव पञ्जी आएल, जकर प्रत्येक घरक एक संख्या छल। बस्तीक एक भाग पानिमे धसल होने पुरान घरक ठिकान पहिचाननाइ कठिन छल। कर्मचारी जमीनक स्थितिक नक्सा देखैत-देखैत पूछैत छल जे घरक सामने कोन गाछ छल, पाछाँ कोन पथ, लगक कूपक दूरी कतेक। सुधा उत्तर दैत छलीह, मुदा जे पथ छल से आब नहि छल। समुद्र हुनकर पतिसँ संगहि भूगोलो बदलि देने छल।

एक वृद्ध नाविकक मुँहसँ बचल एकटा कथा सुनायल—सुनामीक पहिल प्रहारक समय जकरा सभकेँ ऊँच भूमिक दिशा बुझायल, ओ सभ अनेक जान बचौलनि। मुदा कतेकोकेँ समुद्रक पानि अचानक हटबाक अर्थ नहि बुझायल। एहि अनुभवपर विद्यालयक शिक्षक लोकसँ चर्चा कएलनि। “बच्चासभकेँ आपदाक पहिचान सिखेबाक चाही,” ओ कहलक। एक अधिकारी सुनैत छलाह। ओ वचन नहि देलनि, मुदा एहि बातकेँ अपन दिनचर्याक बहीमे लिखलनि। भविष्यक चेतावनी-व्यवस्थाक कल्पना ओहि दिनक भीजल जमीनपर जन्म लऽ रहल छल।

देवजानी लोककेँ अपन बचल कागज अलग-अलग कपड़ामे सम्हारबाक कहलनि। ओ पहिने एक परिवारक निकट रहैत छलि जकर नावक कागज सूखि गेलापर अक्षर छूटि गेल छल। सुधाक लग शिशिरक विवाहक कागजक एक अधजड़ल कोना भेटल। घरक बचेबाक

स्थान नहि रहल, मुदा टुटल पेटीक काठक पाछाँ ओ कागज अटकल छल। कागजपर शिशिरक नाम पढ़ल जा सकैत छल; ओकर पिताक नाम आ विवाहक महीना धुँधला छल। देवजानी कहलीह, “जे पढ़ल जा सकैत अछि, ओकर छायाप्रति बनबायब। बाकी खाली स्थानकेँ अनुमानसँ नहि भरब।”

अनीश कागजकेँ जतेक ध्यानसँ देखलक, ओतेक अपन पिताक चेहराकेँ देखबाक चेष्टा कएलक। छः दिनमे चेहराक स्पष्टता कम होइत अछि कि नहि, एहि विचारसँ ओ डरि गेल। ओ दीदीसँ पुछलक, “बाबूजीक आवाज याद अछि?” मौसमी चुप रहलि, फेर पिताक एक पुरान वाक्य दोहरौलनि—“जालक गाँठ खोलब सीखू; फाड़ब सरल अछि।” अनीश मुसुकायब चाहलक, मुदा मुसुकान अर्धमे थमि गेल। ओहि राति दूनू बच्चा पिताक आवाजक नकल नहि, ओकर शब्दक अर्थ बुझबाक प्रयत्न करैत रहल।

पाँच रातिक बाद राहत-शिविरमे एक लिखित सूचना टाँगल गेल जे किछु स्थायी कागजक नकल बादमे सम्बद्ध कार्यालयसँ प्राप्त करबाक प्रबन्ध कएल जाएत। प्रशासन एखन जीवनरक्षा आ आवासक तात्कालिक व्यवस्था प्राथमिक मानैत छल। किछु लोक नारा लगौलनि जे पहिने नाव चाही, किछु कहलक घर। सुधाकेँ ककरो विरोध गलत नहि बुझायल। बिना नाव भोजन कमाएब कठिन, बिना छत बच्चाक राति काटब कठिन। मुदा कतेको लोकक लग जमीनक मूल कागज नहि रहला कारण स्थायी घरक स्थान सेहो विवादित भऽ सकैत छल।

एक बस्तीमे दू परिवार एकहि तटीय भूमि अपन कहैत छल। पहिने धरतीक चिन्ह स्पष्ट छल: दूटा नारिकेल गाछक बीच सँ पानि उतरैत, तकर बाद पथ, तकर अगिला भाग घर। आब दू गाछमे एकटा नहि, पथ नहि। दूनू परिवारक मुखिया बचि गेल छलाह, मुदा जकर घरक स्वामित्वपर चर्चा छल, ओकर मानचित्र समुद्र धोलक। कर्मचारी कहलनि, “आब निर्णय नहि देब। स्थल-जाँच, पुरान अभिलेख आ गवाहक बात सभ लेल जायत।” एक अधीर युवक कहलक, “एतेक दिन कतय रहब?” ओकर प्रश्न पर सरकारी फाराममे कोनो तुरन्त उत्तर लिखल नहि छल।

सुधा ओहि विवाद देखि अपन घरक स्थानक चिन्ह स्मरण करबाक प्रयत्न कएलनि। दुआरक बाम कोनमे एक आमक गाछ, दहिनमे उलटा राखल नावक पुरान काठ, पाछाँ एक साँकड़ि नाली। आमक गाछक जड़ि समुद्र निकालि देने छल। नाली पानिमे भरि गेल। केवल एक ढलल पत्थर बचल छल, जेकरा हर वर्ष शिशिर सीधा करैत छलाह। ओ पत्थरकेँ अपन घरक अन्तिम गवाही मानि सुधा आ अनीश एक बेर दूरसँ देखय गेल। पहरा दैत व्यक्ति आगाँ नहि बढ़य देलक। “जमीन एखन असुरक्षित अछि,” ओ कहलक। सुधा पाछाँ घुरि गेलीह। जकर घर बचल नहि, ओकरा घर धरि पहुँचेबाक बाटो बन्द छल।

नव वर्षक पहिल भोरि समुद्रक रङ्ग बहुत साफ छल। कतेको लोक कहलक जे एतेक नील पानि पहिने नहि देखलहुँ। सुधा ओहि सौन्दर्यसँ डरैत छलीह। पानि जँ सुन्दर अछि तँ कतेक विनाशकारी भऽ सकैत अछि, ई ओकर जीवनक नब शिक्षा छल। देवजानी एकटा छोट समूहक संग महिला सभकेँ भेंटलीह। ओ पूछलनि जे केकरा सीबन, जाल-मरम्मत, भोजन पकायब, माछ सुखायब, हिसाब राखब, बच्चा पढ़ायब अबैत अछि। महिलासभ आरम्भमे अपन कामकेँ हुनक पूछल ‘कौशल’ नहि बुझलीह। बादमे प्रश्नक उत्तर बढ़ैत गेल।

कालीमणि कहलीह, “सुधा जालक गाँठ बान्हैत अछि। ससुराल अएलापर शिशिर हुनका सीखौने छल।” सुधा हँसलीह नहि। “हम नाव चलायब नहि जनैत छी,” ओ कहलीह। देवजानी उत्तर देलनि, “आज नाव चलायबाक प्रश्न नहि। जहिना-जहिना बस्ती फेर बसत, जाल, भोजन, हिसाब आ बच्चाक देखरेख सभ उपयोगी होयत।” ओ एहि बातकेँ सहायता नहि, श्रमक सम्मान रूपमे देखबय चाहैत छलीह। सुधा पहिल बेर अपन हाथक रेखापर दृष्टि देलनि। ओहिमे समुद्रक नुनक पुरान फाटल निशान छल।

नव वर्षक दोसर दिन खबर आयल जे किछु हराओल लोक आन द्वीपक सुरक्षित स्थानधरि पहुँचि गेल छथि। राहत-कक्षमे नाम पढ़ल गेल। सुधा प्रत्येक नाम सुनैत छलीह; शिशिर नहि। मुदा एक ‘शिरीष हलधर’ नामपर ओकर कान ठाढ़ भेल। कागजमे उमर, घर आ पारिवारिक जानकारी अधूरा छल। सुधा शिक्षकसँ पुछलनि—“ई हमर शिशिर भऽ सकैत छथि?” नायर कहलनि, “हम एहि ठामे निश्चित नहि कऽ सकैत छी। जाँचक अनुरोध देब।” दूनू नामक

मिलान लेल लिखित आग्रह तैयार भेल। ई आशाक नव किरण छल, मुदा ओकरा सत्य कहबाक अवसर एखन नहि छल।

एक स्वयंसेवक फुसफुसा कऽ कहलक जे शिरीष हलधर जीवित छथि। सुधा धावत-धावत देवजानी लग गेलीह। देवजानी ओकर हाथ धऽ बैसौलनि। “सूचीमे एखन केवल नाम अछि, सत्यापन नहि। हम अहाँसँ आशा नहि छीनब, मुदा अपुष्ट समाचारकेँ निश्चय कहि नहि सकैत छी।” एहि शब्दपर सुधा रोए पड़लीह। “हमर जीवन मानो एक अक्षरपर अटकल अछि। शिशिर आ शिरीषक बीच हम कतय जाउ?” देवजानीक लग उत्तर नहि छल। ओ केवल सुधाकेँ अपन कानयक स्थान देलनि।

ओहि दिन एक अन्य परिवारक त्रासदी सुधाकेँ देखय पड़ल। एक वृद्धा अपन पुत्रक नाम मृतक-सूचीमे देखलीह, जखन कि पुत्र दोसर राहत-केन्द्रमे घायल अवस्थामे छल। बादमे सुधार भेल, मुदा ओहि गलत सूचना परिवारकेँ एक रातिक गहिर अन्धकारमे धकेलि देने छल। विद्यालयक शिक्षक लिखित सुधारक समय मूल प्रविष्टि मेटबाक बदला बदललक कारण आ दिनाङ्क राखबाक आग्रह कएलनि। “काल्हि केओ पूछत जे नाम किएक बदलल,” ओ कहलक, “तखन अभिलेख स्वयं अपन इतिहास बतय।” प्रशासनिक युवक ओहि बातकेँ उपयोगी बुझलक।

शिविरमे एक सायंकाल दुरभाग्यक संग एक विवाद उठल। स्थानीय बस्तीवासी कहैत छल जे बाहरी सहायताक कोषक व्ययक हिसाब स्पष्ट होयबाक चाही। किछु स्वयंसेवक आहत भेलाह—“हम राति-दिन काज करैत छी, तखन अविश्वास किएक?” देवजानी दूनू पक्षकेँ कहलीह, “हिसाब माँगब आरोप नहि; जे धन लोकक दुःखक नामपर आएल, ओकर उपयोग देखब तिनकर अधिकार अछि। मुदा कोनो व्यक्तिक अपमान बिना प्रमाण नहि।” एहन नियम छोट समूहमे स्वीकार भेल। सामाजिक सेवाक गरिमा ओकर पारदर्शितासँ बढ़ैत अछि, से सुधा सुनि रहलि।

शिशिरक नावक सट्टा-उधार नहि छल; ओ एक साधारण ऋण लेने छलाह, जकर किछु किश्त चुकायल जा चुकल छल। नाव नष्ट भेला पर कतेक बकाया अछि, एहि प्रश्नपर एक साहूकारक प्रतिनिधि आबि पूछलक। सुधा पहिने उत्तर नहि देलनि। बादमे शिक्षककेँ कागज

देखेबाक आग्रह कएलनि। साहूकारक पुरान बही सेहो आंशिक नष्ट छल। किछु गोटे कहलक जे आपदामे ऋण मेटि जाएबाक चाही; दोसर कहलक जे ऋणदाताक देनदारी सेहो अछि। सुधा बुझलीह जे प्राकृतिक विपत्ति मनुष्यक आर्थिक सम्बन्ध अपने आप समाप्त नहि करैत; ओ तकर न्यायिक जटिलता बढ़ा दैत अछि।

राहतक व्यवस्था क्रमशः बढ़ैत गेल। टुटल घाट, सम्पर्कक बाधा, जहाज आ विमानक उपलब्धता, औषधि पहुँचएबाक कठिनाइ—एहि सभक कारण हर परिवार धरि समान समयमे सहायता पहुँचेब सम्भव नहि छल। एक अधिकारी जनसभामे स्पष्ट कहलनि, “हम एखन सभ प्रश्नक समाधान नहि देब। प्राथमिकता भोजन, उपचार, आश्रय आ हराओल लोकक खोज अछि।” ओहि स्वीकारोक्तिसँ किछु लोक रोष करैत छल, मुदा सुधाकेँ लागल जे असम्भव वचनक अपेक्षा ई वाक्य बेसी उपयोगी अछि।

जनवरीक पहिल सप्ताहमे पोर्ट ब्लेयरसँ आएल एक समूह किछु राहतकेन्द्रक स्थिति देखबाक लेल पहुँचल। ओहिमे एक अधिवक्ता मालविका सेन छलीह। ओ कहलीह जे आपदामे कागज नष्ट भेला पर सभ अधिकार समाप्त नहि होइत, मुदा अलग-अलग दाबीक लेल अलग प्रमाण आ प्रक्रिया होइत अछि। लोक हुनका चारूकात जमा भऽ गेल—केकरा घर चाही, केकरा नाव, केकरा परिवारक सदस्यक मृत्यु प्रमाणित करायब अछि, केकरा बच्चाक विद्यालयमे नाम लिखायब अछि। मालविकाक आँखि सामने एक विशाल मुकदमा नहि, हजारो अलग-अलग जीवनक अलग प्रश्न छल।

सुधा हुनका शिशिरक विषयमे बतौलनि। विवाहक अधजड़ल कागज देखौलनि। हराओल सूची आ जीवित लोकक अलग सूची सेहो देखौलनि। मालविका पहिने सभ सुनलनि, तकर बाद धीरे कहलीह, “हराओल व्यक्ति केँ मृत कहबाक प्रश्न बहुत सावधानीसँ देखबाक होयत। खोज जारी अछि तँ एखन अदालत वा कार्यालयमे जे प्रमाण अछि से ओहि हिसाबसँ प्रस्तुत करब। जीवनरक्षाक सहायता आ स्थायी सम्पत्ति-अधिकारक दावा एकहि आवेदन नहि अछि।” सुधा पुछलनि, “तखन हमर बच्चासभक नामपर किछु होयत कि नहि?” “हुनकर अधिकारक लेल उपलब्ध प्रमाण सुरक्षित करब पहिल काज अछि।”

शिविरक एक युवक मालविकासँ कहलक, “कागज नहि अछि तँ अदालतमे कोना जाउ?” मालविका उत्तर देलनि, “अदालतमे गवाह सेहो होइत छथि, पञ्जीकृत अभिलेखक नकल सेहो मँगाओल जा सकैत अछि। मुदा जे नहि जनैत छी से गढ़ि नहि सकैत छी।” ओहि वाक्यसँ देवजानी नायरक बही देखौलनि। मालविका एक-एक पन्नाक मूल तिथि, लिखनिहार व्यक्ति आ बादक संशोधन देखैत छलीह। ओ कहलीह, “एहि बहीक सहायता सम्भव अछि; मुदा एकर मूल्य ओहि बातपर निर्भर करत जे लिखनिहार स्वयं की देखलनि, की सुनलनि।”

अनीश अदालत शब्द पहिने टीवीक समाचारमे सुनने छल। ओकरा लागैत छल जे अदालत एकटा पैघ घर होइत अछि जतय सभकेँ तुरन्त सत्य कहि देबाक पड़ैत अछि। ओ मालविकासँ पुछलक, “अहाँ बाबूजीकेँ खोजि देब?” प्रश्न सुनि आसपासक लोक चुप भऽ गेल। मालविका ओकर आँखि देखैत कहलीह, “हम खोज करनिहार लोककेँ खबर देबाक कागज ठीक करबा सकैत छी। बाबूजी कतय छथि, ई हमरा नहि ज्ञात।” अनीश थोड़े देर चुप रहल, फेर कहलक, “तखन हम सब कागज ठीक करब।” एहि उत्तरमे कोनो बालोचित उत्साह नहि, एक कठिन निश्चय छल।

मालविका नगरक कार्यालयमे उपलब्ध पुरान नाव-पञ्जीक नकल मँगबयक मार्ग बतौलनि। ओ सुधाक ओरसँ सीधे कानूनी सफलता प्रतिज्ञा नहि कएलनि; लिखित निवेदन तैयार करबाक मदति कएलनि। निवेदनमे नावक सम्भावित पञ्जीकरण नम्बर, शिशिरक पूरा नाम, बस्तीक पहिचान, पुरान ऋणक जानकारी आ नष्ट अभिलेखक विवरण राखल गेल। रघुपति नायर अपन विद्यालयक पञ्जीकरणक नकल बादमे देबाक आश्वासन देलनि। सुधाकेँ पहिल बेर बुझायल जे कागज हराएब आ अधिकार हराएब एक नहि, मुदा पहिल बात दोसर बातकेँ कठिन बना सकैत अछि।

८ जनवरीक सन्देशमे राहत, अस्थायी आश्रय, बच्चासभक परीक्षा, आजीविका आ पुनर्वासक व्यापक उपाय सम्बन्धी सरकारी घोषणा पहुँचल। विद्यालयमे बैसल लोक सावधानीसँ समाचार सुनलनि। स्थायी घरक बातपर किछु लोकक आँखि चमकल; नाव-जालक चर्चा उठिते हरिहर अपन भीजल हाथ जोड़ि बैसल। सुधाक मनमे प्रश्न उठल—नाव पुनः भेटत तँ ओकरा चलाएत के? कालीमणि कहलीह, “शिशिर नहि लौटथि तँ नावक

अधिकार पर अहाँक नाम एखनसँ दर्ज करायब आवश्यक अछि।” ई वाक्य आशाक विरोध नहि छल; ई भविष्यक भयक स्वीकार छल।

मौसमीक विद्यालयक परीक्षा आगाँ बढ़ेबाक समाचार अएलापर ओकर मुँहपर पहिल बेर स्पष्ट राहत आयल। “हम पढ़ि सकब,” ओ कहलक। अनीश पुछलक, “कापी कतय?” नायर एकटा पन्ना ओकर हाथमे देलनि। बच्चाक सामने साहित्य आ गणितक प्रश्न फेर आबि गेल, मुदा ओहिमे समुद्रक ध्वनि मिसाइत रहल। शिक्षक पाठक बीच बच्चासँ कहैत छलाह जे केओ डर महसूस करैत अछि तँ बाहर जा सकैत अछि; पाठ याद राखब जतेक जरूरी, अपन मनक बात कहब सेहो ओतेक जरूरी अछि।

सरकारी प्रारम्भिक पञ्जीमे सुधाक नाम ‘सुधा देवी’, स्वयंसेवी पञ्जीमे ‘सुधा हलदर’, पुरान विद्यालयक अभिभावक पञ्जीमे ‘सुधा शिशिर हलदर’ लिखल भेटल। नामक भिन्न रूप आपसमे विरोधी नहि छल, मुदा मिलान करनिहार कर्मचारीकेँ शंका भेल। मालविका कहलनि, “नाम अलग रूपमे लिखल भेला पर पहचानक अन्य तथ्य देखब आवश्यक अछि। जन्मक स्थान, परिवारक सदस्य, गवाह आ उपलब्ध अभिलेख सभ मिलि एक व्यक्ति पहिचानाइत छथि।” सुधा सोचलीह जे मनुष्यक जीवन कागजमे टुकड़ा-टुकड़ा लिखल जाएत अछि; अदालत ओकरा जोड़बाक प्रयत्न करैत अछि।

ओहि समय शिरीष हलधर नामक सम्भावित जीवित व्यक्तिक खोजक उत्तर पहुँचल। ओ दोसर द्वीपक एक अलग व्यक्ति छल, पिता आ उमर दोसर। सुधा घंटो धरि ओहि कागजक ओर देखैत रहलीह। ओ पुरुष जिअत छल, मुदा शिशिर नहि। अनीशक सामने ओ कहलीह, “गलत नामक कारण हम आशा कएलहुँ। आशा हमर अपराध नहि छल।” कालीमणि सून भऽ गेलीह। मौसमी अपन बहिनपना बचबैत अनीशकेँ लऽ बाहर चलि गेलीह। ओहि दिन घरमे पिताक नाम पहिल बेर बिना पुकारने रहि गेल।

मालविका एक बेर पुनः आबि सुधाकेँ स्पष्ट कएलनि जे पति लापता रहितहुँ बच्चासभक राहत, आश्रय, शिक्षा आ उपलब्ध अन्य सहायता सम्बन्धी आवेदन समुचित ढंगसँ कएल जा सकैत अछि। मरलाक निश्चित दिन आ मृत्युक प्रमाण सम्बन्धी जटिल प्रश्न अलग अछि। सुधा धीरे पूछलनि, “जँ हम हुनका जीवित मानि प्रतीक्षा करी तँ सहायता नहि भेटत?” मालविका

उत्तर देलनि, “कोनो सामान्य नियम एना नहि अछि जे जीवितक आशा रखलासँ लोक सहायता-अयोग्य भऽ जाइत अछि। हर योजनाक अपन शर्त अछि; हम ओहि शर्त देखब।” सुधाकेँ राहत आ अनिश्चितता दुनू एक संग अनुभव भेल।

एक दिन अनीश देवजानीक संग राहत-सामग्रीक गिनतीमे बैसल। ओ चाउरक बोरी गनैत-गनैत पुछलक, “ई सभ नाम लिखलासँ केओ चोरी नहि करत?” देवजानी कहलीह, “नाम लिखल रहबासँ अपने-आप ईमानदारी नहि आबैत अछि; मुदा जाँच करब सरल होइत अछि।” अनीश फेर पुछलक, “जँ लिखनिहार गलत लिखि दे?” देवजानी उत्तर देलनि, “तखन दोसर व्यक्ति जाँचत, सुधारक कारण लिखत। एहि लेल गवाह आ प्रतिलिपि चाही।” बालकक प्रश्न शिक्षकक कक्षासँ निकलि एक नब सार्वजनिक शिक्षामे प्रवेश करि रहल छल।

जनवरीक एक प्रभाते बासुदेव सुधाकेँ पुरान घाटक लग लऽ गेल। समुद्रमे नव उतरनिहार बालु आ उलटल काठक बीच एक लोहेक छोट पट्टी भेटल छल। ओहि पट्टीपर नावक पुरान क्रमाङ्कक दू अङ्क पढ़ल जा सकैत छल। बासुदेव कहलक, “शिशिरक नावमे एहन पट्टी छल कि नहि, अहाँ चिन्हू।” सुधा पट्टी उठाकय देखलीह; ओ निश्चित नहि भेलीह। शिशिरक नावक रङ्ग, डारि आ नोकक आकार हुनका स्मरण छल, मुदा पट्टीक अङ्क नहि। ओ कखनो नव जीवनक आशामे झूठ निश्चय करबाक चेष्टा नहि कएलनि। “सम्भव अछि,” ओ कहलीह, “मुदा पक्का नहि।”

अधिवक्ता मालविका एहि वस्तुकेँ लिखित निवेदनक संग प्रमाणक रूपमे तुरन्त जोडबासँ पहिने मूल स्थान, भेटनिहार व्यक्तिक कथन आ पट्टीक पहिचान जाँचबाक सलाह देलनि। बासुदेव नाराज भेल—“हम एतेक कष्टेँ आनलहुँ, तखन सेहो सन्देह?” सुधा हुनका कहलीह, “अहाँ हमर हित चाहैत छी। मुदा जँ गलत पट्टी हमरा नावक कहल जाएत तँ दोसर परिवारक अधिकार नष्ट होएत।” बासुदेवक रोष घटल। ओ पहिल बेर बुझलक जे अपन दुःखमे सत्यक सावधानी राखब एक कठिन उदारता अछि।

राहत-शिविरक एक कोनमे एक परिवार अपन बच्चाक जन्मतिथिपर विवाद करैत छल। विद्यालयक पञ्जीमे एक वर्ष, स्वास्थ्यक कागजमे दोसर। माता कहलीह, “हमरा दिन याद अछि, मुदा लिखल ककरो आनक हाथे गेल।” सुधाकेँ अपन मायक कहब स्मरण भेल—घरक

लोक स्मृति सँ वंश सम्हारैत अछि, कार्यालय कागजसँ। दुनू जँ अलग भऽ जाए तँ गरीब लोक बीचमे फँसि जाइत अछि। ओहि परिवारक महिला सुधासँ पूछलनि, “अहाँक कागज फेर भेटल?” सुधा उत्तर देलनि, “किछु भेटल, किछु एखन समुद्रमे अछि।”

रघुपति नायर बचल बच्चासभ लेल एकटा विशेष पञ्जी तैयार कएलनि। ओहि पञ्जीमे पहिल स्तम्भ नामक, दोसर पूर्व विद्यालयक, तेसर वर्तमान आश्रयक आ चारिम अभिभावकक सम्पर्कक छल। जकर पिता-माता लापता छलाह, ओहि स्थानपर ओ ‘खोज जारी’ लिखैत छलाह। एना करिते समय कतेको स्वयंसेवक कहैत छलाह जे ई केवल विद्यालयक काज अछि। नायर उत्तर दैत छलाह, “बच्चाक पढ़ाइ आ ओकर पहिचान एक-दोसरसँ अलग नहि। एकर नाम जँ फेर गलत लिखल जाएत तँ आपदा समाप्त भेलो पर ओकर कठिनाइ समाप्त नहि होयत।”

मौसमी एक साँझ शिक्षककेँ अपन पिताक विषयमे एक छोट पत्र लिखि देलक। ओहिमे छल—“बाबूजी, हम बचि गेलहुँ। अनीश सेहो अछि। दादीक पएर ठीक होइत अछि। अहाँ कतय छी?” शिक्षक पत्र पढ़ि किछु नहि कहलनि। ओ ओकरा एक कोरा लिफाफामे रखबाक व्यवस्था कएलनि। ओहि पत्रक कोनो डाक-पता नहि छल। तथापि मौसमी चाहैत छलि जे पत्र लिखल रहय। ओकरा लग शब्द राखब तकरा छोड़ि देबाक नाम नहि छल; अनुपस्थित व्यक्तिसँ सम्बन्ध जीवित रखबाक तरीका छल।

सुधा अपन नामक फेर एकटा लिखित बयान तैयार कएलनि। ई बयान कोनो आरोपपत्र नहि छल, न कोनो न्यायिक गवाही। ओ केवल शिशिरकेँ अन्तिम बेर देखबाक समय, स्थान, घरक स्थिति, परिवारक सदस्य आ बचावक घटनाक स्पष्ट स्मृति लिखबैत छलीह। देवजानी पूछलनि, “जे समय अहाँ निश्चित नहि जनैत छी, तकरा अनुमान लिखू?” सुधा कहलीह, “दिसम्बरक छब्बीस तारीख भोरि। घड़ीक समय हमरा नहि ज्ञात।” ओहि वाक्यसँ बयान कम नाटकीय भेल, मुदा बेसी साँच बनल।

मालविका बयान पढ़ि कहलीह जे बादमे न्यायालयमे ककरो कथन प्रस्तुत होइत अछि तँ ओकर स्रोत आ बनबाक परिस्थिति पूछल जा सकैत अछि। ‘आइ अहाँ सभ जे लिखि रहल छी, ई काल्हिक सत्यापनमे मदति करि सकैत अछि; मुदा एखन एकर विधिक मूल्य हम

निर्धारित नहि करब,’ ओ स्पष्ट कएलनि। सुधा ओहि सावधानीकेँ स्वीकार कएलनि। हुनका लागल जे जखन पति नहि लौटलाह, तखन जीवनक सभ छोट बातक निर्णय पहिने सँ देब उचित नहि। अदालत सेहो शायद ताहि लेल समय लैत अछि जे निर्णय केवल चोटक आवेगमे नहि होय।

एक स्थानीय अधिकारी शिविरमे आबि कहलनि जे क्षतिग्रस्त घरक स्थायी पुनर्निर्माण लेल सुरक्षित भूमि चुनबाक विषयमे वैज्ञानिक जाँच चलत। लोकक मनमे सवाल उठल जे जकरा पूर्वज समुद्रक कात बसल छल, ओ अपन पहिचानक संग दूर कतय जाएत? हरिहर कहलक, “जँ घर ऊपर देल जायत तँ नाव नीचे कोना रखब?” कालीमणि कहलीह, “जँ घर फेर नीचाँ देल जायत तँ बच्चा केना बचत?” एहि दुनू वाक्यक बीच पुनर्वासक कठिन नीति छल। कोनो एक निर्णय सभ परिवारकेँ समान राहत नहि दऽ सकैत छल।

सुधाक हाथमे आब तीन गोट कागज सुरक्षित छल—विद्यालयक नकल, खोज-सूचीक विवरण आ बचल विवाहक अंश। चारिम कागज नाव-पञ्जीक नकल लेल देल आवेदनक प्रति छल। देवजानी ओकरा कपड़ाक भीतरी तहमे रखबाक एक छोट थैली सीबि देलनि। “पानि फेर आबि सकैत अछि,” ओ कहलीह, “मुदा एहि बेर अहाँ एकटा प्रति आन ठाम रखू।” सुधा एक प्रति नायर लग आ एक देवजानी लग सुरक्षित रखबाक निर्णय कएलनि। एहि सरल बँटवारासँ कागजक नष्ट होयबाक खतरा घटल; परिवारक भविष्य एखनहुँ अनिश्चित रहल।

माघक पहिल दिन एक पत्र आयल जे नाव-पञ्जीकरणक उपलब्ध पुरान अनुक्रमणिकामे शिशिर हलदर नामक व्यक्ति दर्ज देखाइत छथि, मुदा मूल प्रविष्टिक पर्याप्त स्पष्ट नकल लेल आओर खोज आवश्यक अछि। सुधा पत्रक अक्षर धीरे-धीरे पढ़लीह। ‘दर्ज देखाइत छथि’—ई छोट वाक्य हुनका लेल शिशिरक नावक रूपमे एकटुकड़ा जमीन छल। मुदा नावक पञ्जीमे नाम भेटब, शिशिरक जीवित होयबाक प्रमाण नहि। ई अन्तर सुधा स्वयं कहि सकैत छलीह। कालीमणि पत्र सिरपर राखि आँखि मुनि लेलीह।

अनीश विद्यालयक अस्थायी कक्षमे ओहि दिन हिसाबक प्रश्न हल करैत छल। शिक्षक पूछलनि जे तीन नावमेसँ एक डूबि जाए तँ कतेक बचत। किछु बालक उत्तर देलक ‘दू’। अनीशक पेंसिल ठमकि गेल। नायर प्रश्न बदलि देलनि। बाहर आबिकय अनीश कहल,

“मास्टर साहेब, किताबमे नाव गनब सरल अछि। समुद्रमे एक नाव डूबलाक बाद नावक संग लोक सेहो गुम भऽ सकैत अछि।” शिक्षक ओहि बालकक माथ छुलनि। “आइ गणित नहि करब तँ सेहो चलत,” ओ कहलक। अनीश अपन कापी बन्द कऽ दीदीक कात बैसि गेल।

सायंकाल सुधा आ देवजानी नव बनल आश्रयक आगाँ बैसल छलीह। देवजानी झारखण्डमे अपन छोट बेटी मीराक विषयमे बतौलनि। “ओ पुछैत अछि जे माए एतेक दूर किएक गेल?” सुधा कहलीह, “कहियौ, लोकक घर टुटल छल, ताहि लेल।” देवजानी उत्तर देलनि, “हम कहैत छी, घर फेर बनय मे समय लागत, मुदा लोकक बीच विश्वास एखनसँ बनय पड़त।” सुधा पुछलनि, “विश्वास जँ टूटि जाए?” “तखन ओकर हिसाब राखू, जेना अहाँ कागज राखैत छी; आ फेर लोककेँ परखू।” ओहि बातपर दूनू महिला देर धरि निःशब्द रहलि।

माघक ओहि राति सुधा सपनामे शिशिरकेँ देखलीह। ओ नावपर बैसल छलाह आ दूरसँ कहैत छलाह जे जालक गाँठ ढीला अछि। सुधा उठि गेलीह। छातिमे धड़कन छल। ओ अनीश आ मौसमिक सुतल मुख देखलीह, फेर कालीमणिक पएरपर चादर चढ़ौलनि। सपनाक विषयमे केओकेँ नहि कहलीह। ओ जानैत छलीह जे न्यायालयमे सपना प्रमाण नहि, मुदा एक स्त्रीक मनमे स्मृति आ आशाक मिलन होइत अछि। दुनू जगत अलग रहि सकैत अछि, एक-दोसराकेँ नष्ट कएने बिना।

अगिला भोरि ओ राहत-कार्यालय गेलीह आ कहलनि जे नाव-पञ्जीक नकलक आवेदन प्राप्त भेलाक स्वीकृति हुनका चाही। कर्मचारी कागज देखलक आ प्राप्तिक मोहर लगा देलक। छोट गोल मोहरक आवाज सुनि सुधाक आँखि भरि आयल। एहि आवाजमे पतिक नाम नहि छल, न नाव, न घर, न क्षतिक मूल्य। मुदा एकटा बात छल—ओ अपन निवेदन देलनि आ कार्यालय ओकर प्राप्ति स्वीकार केलक। आब फेर पूछबाक लेल एक निश्चित आरम्भिक बिन्दु रहत।

ओहि दिन समुद्र पर ऊजरा प्रकाश पड़ल छल। अनीश मायक हाथमे कागज देखैत कहलक, “ई कागज बाबूजीकेँ फेर आनि देत?” सुधा ओकर कात बैसलि। “नहि, बौआ। कागज आदमीकेँ घुराबि नहि सकैत अछि।” अनीशक आँखि नीचाँ झुकि गेल। सुधा फेर

कहलीह, “मुदा जखन केओ कहत जे बाबूजी छलाहे नहि, अथवा घर हमर छलहि नहि, तखन हम कहि सकब जे हम सभ छलहुँ; हमरा सभक जीवन छल।” अनीश कागज सम्हारि लेलक।

साँझमे रघुपति नायर अपन बचल उपस्थितिक बही बन्द कएलनि। जे पन्नापर पहिने ‘अनुपस्थित, खोज आवश्यक’ लिखल छल, ताहि पर एखन एक नब टिप्पणी जोड़ल गेल —“परिवारक लिखित निवेदन प्राप्त; खोजक समाचार प्रतीक्षित।” शिशिरक नामक अगिला रिक्त स्थान एखनहुँ रिक्त छल। मुदा नायर पहिल बेर बुझलनि जे रिक्त स्थानक अर्थ शून्यता नहि होइत; ओ प्रतीक्षाक अधिकारक स्थान सेहो होइत अछि। घाटक पानिमे एक टूटल नावक काठ हिलैत छल। दूर आश्रयमे अनीश पिताक लिखल नाम पढ़बाक अभ्यास करैत छल। समुद्र अपन उत्तर नहि देलक। परिवार अपन प्रश्नक अक्षर सम्हारि लेलक।

अध्याय ८ — पहिल निर्णय

दरभंगा, दिसम्बर २००४ — समानान्तर घटनाक्रम

दरभंगाक कचहरीमे ओहि भोरि कुहेसाक एहन आवरण छल जे सामनेक पीपरक ऊपरका डारि धरि स्पष्ट नहि देखाइत छल। पहराक आदमी लाठीक टोकसँ भीजल पात एक दिस सरकबैत फाटक खोललक। चाय बनौनिहार जगदीश अपन छोट अँगीठीमे कोइला सुलगबैत छल आ राखसँ निकलैत धुआँ कुहेसामे मिलि जाइत छल। एतय दिनक पहिल ध्वनि न्यायाधीशक नहि, कागजक होइत छल—खटखटाइत मोहर, खुलैत अलमारी, रस्सी खोलबाक चरमराहट। चारि वर्ष पहिने एहि बरामदामे नीलकान्त साह पुलिसक बीच उतारल गेल छलाह। आइ ओ अपन पएरसँ आएल छलाह, जमानतक शर्तक पालन करैत; मुदा बरामदाक ईंट ओकरा एखनहुँ पहिल रातिक कीचड़ स्मरण करबैत छल।

निर्मला हुनकर संग छलीह। घरसँ निकलैत समय ओ चूल्हि पर राखल दाल उतारि देलनि, चाबी अमरेशकेँ सौंपलनि आ कहलीह जे दुकानक हिसाब देखैत रहिह। अमरेश आब बालक नहि रहल छल; ओकर कद पितासँ बहुत कम नहि छल। ओ विद्यालयक कापी बन्द करैत कहलनि, “हमो चलब।” निर्मला उत्तर देलनि, “तोहर पढ़ाइ?” ओ कहलक, “चारि वर्षसँ एहि एक दिनक प्रतीक्षा कएलहुँ। आज बिनु सुनने किताबमे मन नहि लागत।” निर्मला ओहि स्वरमे जिद नहि, एकटा थाकल परिवारक माँग सुनलीह। तीनू एक संग निकललाह। गल्लीक मोड़पर नीलकान्त ठमकलाह। हुनकर पुरान दुकानक किवाड़मे नव रङ्ग लागल छल, मुदा ऊपरक लकड़ीमे पुलिसक पुरान जाँचक समयक खरोंच एखनहुँ देखाइत छल।

शिवनारायण झाक कार्यालयमे रेवती रातिसँ अभिलेखक क्रम मिलबैत छलीह। ओ चारि अलग गठरी बनौने छलीह—जप्तीक मूल बही, गवाहक कथन, विशेषज्ञक अभिमत आ विवादित पन्नासँ सम्बन्धित अभिलेख। प्रत्येक पन्नाक बाहरी किनारपर छोट चिह्न छल, जे अदालतक भीतर ओकरा खोजबामे मदति करत। रेवतीक लग एकटा पाँचम पन्ना सेहो छल—

उपहासक नहि, प्रश्नक। ओहिपर लिखल छल: “की देखल गेल? के देखलक? कखन देखलक? की मात्र मानि लेल गेल?” शिवनारायण ओहि पन्नापर दृष्टि दऽ कहला, “एहि बेर प्रश्नक संग उत्तरक सीमा सेहो लिखू। आज भाषण लम्बा करबासँ किछु नहि होएत; जकर समर्थन अभिलेख नहि करैत, ओकरा न्यायाधीश किएक स्वीकार करताह?”

रेवतीक मनमे नीलकान्तक चारि वर्ष पुरान पहिल पेशी आबि गेल। ओहि दिन हुनका लग वकालतक पुस्तक छल, अनुभव अल्प। आइ ओ स्वयं अभिलेख खोलि अधिवक्ता पितासँ असहमति व्यक्त कऽ सकैत छलीह। हुनका चिन्ता छल जे अभियोजन दू-चारि सच्चा दाँवक हिसाबक आधारपर पूरा दुकानकेँ अवैध सट्टाघर कहि देत; हुनका ईहो चिन्ता छल जे प्रतिरक्षा पक्ष एक दूषित पन्नाक आधारपर सभ साक्ष्य अस्वीकार करय चाहत। पिताकेँ ओ कहलीह, “हम कोनो एहन कथन नहि चाहैत छी जे नीलकान्तजीकेँ निष्कलंक व्यापारी कहि दे। हुनकर अपन शब्द एखन हमरा स्मरण अछि।” शिवनारायण उत्तर देलनि, “निष्कलंकता अदालतक अनिवार्य प्रश्न नहि। आरोपित अपराधक निर्दिष्ट घटक स्थापित भेल कि नहि—ई प्रश्न अछि।”

कचहरीमे अहलमद रामविलास फाइलक रस्सी खोलि रहल छलाह। हुनकर हाथ चारि वर्षक परिचयसँ एक-एक पन्नाक मोटाइ पहचानैत छल। मूल बहीक पृष्ठसंख्या, जप्तीक दू प्रतिलिपि, सरकारी विशेषज्ञक हस्ताक्षर, गवाहसभक बयान आ न्यायालयक आदेश अलग-अलग स्थानपर सुरक्षित छल। किछु लोक पहिनेसँ दरवाजापर ठाढ़ छलाह। केओ नीलकान्तक पक्षक, केओ अपन उत्सुकताक कारण, केओ केवल एहि लेल जे बाजारमे सुनने छल—आइ किछु निश्चय होयत। रामविलास कागजक ऊपर हाथ राखि कहला, “ई कोनो हाट नहि। न्यायाधीश जे कहताह से सभ सुनब, मुदा निर्णयक पहिनेसँ फैसला बजब ककर अधिकार अछि?” लोक थोड़ेक हटि गेल।

न्यायिक दण्डाधिकारी विमलाकान्त मिश्र अपन कक्षमे प्रवेश कएलनि तँ सरकारी अधिवक्ता अभिलेखक लग ठाढ़ भेला। विचारणक शेष औपचारिकता आ अन्तिम बहसक क्रम न्यायालय निश्चित कएलक। अदालतक समक्ष अभियुक्तकेँ आरोपक परिस्थिति सम्बन्धी विधिसम्मत प्रश्न पहिने प्रस्तुत भऽ चुकल छल; नीलकान्त अपना उत्तरमे किछु व्यापारिक लेखन स्वीकार कएने छलाह, किछु बात अस्वीकार कएने छलाह, आ अनिश्चित तथ्यपर निश्चय

व्यक्त नहि कएने छलाह। न्यायाधीश स्पष्ट कएलनि जे निजी अधिवक्ता-परामर्श ककरो विरुद्ध स्वतः साक्ष्य नहि; निर्णय ओहि सामग्रीपर होयत जे विधिसम्मत रूपसँ न्यायिक अभिलेखमे अछि। रेवती ई बात अपन कापीमे फेर लिखलीह, कारण घरमे सुनल सत्य आ अदालतमे प्रस्तुत प्रमाणक बीचक सीमा हुनका सदिखन आकर्षित करैत छल।

सरकारी अधिवक्ता अपन बहस तीन भागमे रखलनि। पहिल—नीलकान्तक दुकानमे नियमित वैध कारोबारक संग दाँवक हिसाब राखल जाएबाक संकेत। दोसर—किछु अङ्क खेलक परिणाम आ नगद भुगतानसँ मेल खाइत अछि। तेसर—जप्त वस्तु आ गवाहक सम्मिलित कथनसँ नीलकान्तक जानबूझि सहभागिताक अनुमान। ओ किछु पन्ना न्यायाधीशकेँ देखौलनि, मुदा न्यायाधीश प्रश्न कएलनि, “सभ पन्ना एकहि लेखकक प्रमाणित अछि?” सरकारी अधिवक्ता कहला, “नहि, माननीय न्यायालय। विशेषज्ञ अनेक पन्नामे समानता देखौने छथि, किछु पन्ना विषयमे निश्चित राय नहि देलनि।” “तखन अपन निष्कर्ष ओही सीमा धरि राखू,” न्यायाधीश कहलनि। सरकारी अधिवक्ता अपन पन्ना उलटि फेर बहस आरम्भ कएलनि।

ओ पहिने दीनानाथ प्रसादक जप्ती-विवरण पढ़लनि। दीनानाथक गवाहीमे जे वस्तु दुकानक पछिला कोठरीसँ बरामद होयबाक कथन छल, ओकरा स्वतंत्र जप्ती-साक्षी मथुरानन्द कापड़ि आ रफीक अंसारीक सीमित देखल बातसँ जोड़लनि। मुदा रेवतीक चिन्हित पन्नापर दू संख्या चमकि रहल छल—तैंतीस आ पैंतीस। जप्तीक दू प्रतिलिपिमे ढीला पन्नाक गणना अलग छल। न्यायाधीश पुछलनि, “एहि अन्तरक ठोस स्पष्टीकरण प्रस्तुत अछि?” सरकारी अधिवक्ता कहला, “कर्मचारीक लेखनमे त्रुटि होयबाक सम्भावना अछि।” न्यायाधीश शांत स्वरमे कहला, “सम्भावना स्पष्टीकरणक स्थान नहि लैत। न्यायालय साक्ष्यक उपलब्ध सीमा देखत। एतय गलती भेल, वस्तु बदलल गेल, अथवा गणना दू प्रकारेँ भेल—ककर पुष्टि अछि?” सरकारी अधिवक्ता मानलनि जे एहि विशेष प्रश्नक निश्चित समाधान अभिलेखमे नहि।

एहि स्वीकारोक्तिसँ बरामदामे कानाफूसी भऽ सकैत छल, मुदा न्यायाधीश तुरन्त अगिला प्रश्नपर बढ़लाह। “जप्तीक दू सूचीमे अन्तर रहबासँ मूल बहीक सभ प्रविष्टिक अस्तित्व नष्ट

भऽ जाइत अछि?” सरकारी पक्ष उत्तर देलक—नहि; मूल बहीक उपलब्धता, वस्तुक सील आ अन्य गवाहीक मूल्यांकन अलग आवश्यक अछि। शिवनारायण सेहो एहि बातक विरोध नहि कएलनि। हुनकर बहसक लक्ष्य ई नहि छल जे एक अंकक त्रुटिसँ समस्त अपराध ढहि जाए; ओ चाहैत छलाह जे दू कागजक भिन्नताकेँ अपराधक प्रमाणमे वृद्धि करबाक लेल उपयोग नहि कएल जाए। अदालत एही सीमाक भीतर प्रश्न तय कएलक। रेवती अनुभव कएलनि जे असहमतिक बीचोमे किछु विधिक आधार साझा रहि सकैत अछि।

अवकाशक समय निर्मला बरामदाक अन्तिम बेंचपर बैसल छलीह। अमरेश बाहरसँ पानी आनि देलक। निर्मला गिलास छुअलनि तक नहि। “बाबूजीक कतेक अपराध सिद्ध भऽ सकैत अछि?” ओ पुत्रसँ पुछलनि, जेना अमरेशक उमर बढ़ि गेल अछि तँ ओकरा कानूनक उत्तर सेहो ज्ञात होएत। अमरेश धीरे कहलक, “हम नहि जनैत छी। मुदा बाबूजीक जे काम गलत छल, ओकरा नहि कहि देलासँ ओ मेटत नहि।” निर्मला ओकर चेहरा देखैत रहलीह। पहिने जे बालक पिता संग खेलब चाहैत छल, आब ओकर स्वरमे दया आ कठोरता दुनू छल। “तखन घरक की होयत?” ओ पुछलनि। अमरेश कहलक, “घर तऽ एखनहुँ अछि। मुदा सब किछु पहिने जेकाँ नहि होयत।”

दूर एक खम्भाक लग दीनानाथ प्रसाद ठाढ़ छलाह। ओ साक्षीक रूपमे अपन भाग पूरा कऽ चुकल छलाह, मुदा अन्तिम बहस सुनबाक अनुमति मिलला पर आयल छलाह। हुनका लग एकटा प्रश्न एखनहुँ बेचैनी जगबैत छल—जप्तीक समयक पन्नागिनतीक त्रुटि। ओ राति कर्तव्य निभौलनि कि नहि? अपन ऊपर हुनकर भरोसा छल, मुदा दू प्रतिलिपिमे अङ्क किएक बदलल, तकर पूर्ण उत्तर हुनका नहि। ओहि समय मथुरानन्द अपन व्यापारिक कामसँ कचहरी आएलाह। दीनानाथकेँ देखिकय ठमकलाह। दूनू वर्षसभमे एक-दोसरासँ बहुत कम बात कएने छलाह। आइ मथुरानन्द कहला, “हम जे नहि देखलहुँ से नहि कहलहुँ। अहाँ सेहो ओहिना कएलहुँ। एतेक बात लेल मन खिन्न नहि करू।” दीनानाथ उत्तर देलनि, “प्रश्न एतबे नहि। हमर लिखल कागजसँ ककरो जीवन बदलि सकैत अछि।”

मथुरानन्दक लग एक पुरान स्मृति छल। रातिक छापामे बही मेजपर राखल देखल छलाह; बही अलमारीसँ कखन निकालल गेल, से नहि देखल। रफीक अंसारी सेहो किछु वस्तु मेजपर

आनलाक बाद पहुँचल छलाह। दूनू अपन सीमित प्रत्यक्ष ज्ञान न्यायालयमे स्पष्ट कएने छलाह। एही सीमा नीलकान्तक प्रतिरक्षाकेँ सहारा दैत छल, मुदा दीनानाथक समस्त कार्य शून्य नहि करैत छल। “हमरा लगैत छल जे अदालतमे गवाही देब मतलब मित्र अथवा शत्रु चुनब,” मथुरानन्द कहला। “आब बुझैत छी जे कतेक बेर लोक मित्रता बचबैत सत्य कहि सकैत अछि, आ कतेक बेर मित्रताक कारण चुप रहबो अपराध होएत।” दीनानाथ उत्तर नहि देलनि; हुनकर चेहरापर थकानक संग राहत आयल।

फेर सुनबाई आरम्भ भेल। सरकारी पक्ष प्रभाकर महतोक पावतीक प्रसंग उठौलक। चौदह हजार रुपैयाक एक भुगतान, बारह हजार आठ सय रुपैयाक अनाजक बिल, शेषक कथित पुरान देनदारी—अङ्क दुनू पक्षकेँ ज्ञात छल। अभियोजन कहलक जे एहन समायोजनक कारण साधारण व्यापारक अतिरिक्त वित्तीय व्यवहारक सम्भावना बनैत अछि। शिवनारायण पुछलनि, “प्रभाकर स्वयं कहला जे मूल पुरान बही बिना ओ शेष देनदारीक अर्थ निश्चित नहि कहि सकैत छथि। अनिश्चितता अभियोजनक दावाक विकल्प कोना बनत?” न्यायाधीश अभिलेखक ओर देखलनि। “एहि भुगतानक कोन अंशक सम्बन्ध प्रत्यक्ष रूपेँ अवैध दाँवसँ जोड़ल गेल अछि?” सरकारी पक्ष एक दोसर साक्षीक कथनक उल्लेख केलक, जे हारल धनक बारेमे सुनने छल, मुदा नीलकान्तकेँ स्वयं धन दैत नहि देखल। एहि बिन्दुपर बहसक आकाश क्रमशः साँकड़ि रहल छल।

शिवनारायण अपन प्रति-बहस तत्काल आरम्भ नहि कएलनि। ओ पितृवत् गम्भीर स्वरमे न्यायालयसँ आग्रह कएलनि जे एक पुरान न्यायिक आदेशक मूल बहीमे दर्ज साक्ष्य-अनुक्रम फेर देखल जाए। न्यायाधीश अनुमति देलनि। रेवती पन्ना देलनि। ओहिमे नरेशक गवाही छल—ओ प्रभाकरक मुनीम छल; नीलकान्तक दुकानमे कखनो उधारक लेखन सेहो कएने छल; बहीक किछु अङ्क हुनका परिचित लगैत छल; मुदा एक निर्दिष्ट विवादित पन्ना अपन लिखल होने निश्चित नहि कहने छल। शिवनारायण कहला, “ई गवाही नीलकान्तक सभ पन्ना निर्दोष नहि बनबैत अछि; मात्र एक बात स्थापित करैत अछि—एकहि बहीमे अनेक हाथक लेखन सम्भव छल।” न्यायाधीश सिर हिलौलनि। सरकारी अधिवक्ता एहि सीमित कथनपर असहमति नहि कएलनि।

विशेषज्ञक मतक प्रश्न आरम्भ भेल। सरकारी पक्ष किछु लेखनमे नीलकान्तक नमूनासँ समानता देखौलक। शिवनारायण मानलनि जे ओहि रायकेँ उपेक्षित नहि कएल जा सकैत अछि। मुदा ओ जोर देलनि जे पैंतालीसम पन्नाक नामक संक्षिप्त प्रविष्टिपर विशेषज्ञ निश्चित राय देबाक असमर्थता स्पष्ट कएने छथि। “स्याहीक भिन्नता लेखनक तिथिक प्रमाण नहि,” ओ कहलनि, “आ अक्षरक समानता स्वतः प्रत्येक अंकक आर्थिक उद्देश्य नहि बतबैत अछि।” न्यायाधीश न्यायालयक अभिलेखमे विशेषज्ञक वास्तविक शब्द फेर पढ़बौलनि। ओहि क्षण न्यायालयक वातावरणमे एक प्रकारक विराम आयल। जे लोक बाहरे विशेषज्ञक नामसँ अंतिम सत्यक प्रतीक्षा करैत छल, ओ भीतर देखलक जे विज्ञान स्वयं अपन ज्ञानक सीमा कहैत अछि।

रामकिशुन महतोक प्रश्नपर न्यायाधीश विशेष ध्यान देलनि। गंगेश महतोक माध्यमसँ आयल मृत्यु-पञ्जीक प्रमाणित नकलमे १९९५ क मृत्यु दर्ज छल। मुदा पुरान कागजमे पिताक नामक वर्तनी भिन्न छल; बाजारमे समान नामक दोसर व्यक्तिक सम्भावना सेहो उठल छल। सरकारी अधिवक्ता कहला, “एहि नामसँ पुरान देनदारी चलि रहल हो, तकरा पूर्ण रूपेँ अस्वीकार नहि कएल जा सकैत।” शिवनारायण उत्तर देलनि, “पूर्ण अस्वीकार नहि, मुदा पूर्ण स्वीकार सेहो नहि। जे पन्नापर नब तिथि अछि, ओकर लेखक, वास्तविक व्यक्ति आ आर्थिक कारण तीनू अप्रमाणित छथि।” न्यायाधीश पुछलनि, “की मृत्यु-पञ्जी अकेले सिद्ध करैत अछि जे विवादित प्रविष्टि धोखाधड़ी लेल बनाओल गेल?” शिवनारायण स्पष्ट कहलनि —“नहि।” एकदम छोट उत्तर छल, मुदा ओहि उत्तरसँ रेवतीक मनमे हुनकर पिता प्रति विश्वास गहिर भेल।

रेवती सोचैत छलीह जे सहज रास्ता छल—मृत व्यक्तिक नामक प्रत्येक उल्लेखकेँ षड्यन्त्र कहि देब। ताहिसँ मुवक्किलक पक्षक लोक खुश होइत। मुदा ई कहनाइ ओहि नामक दोसर सम्भावित व्यक्ति आ पुरान देनदारीक वास्तविकताकेँ मेटा दैत। वास्तविक जीवनमे नामक मिलान केवल अङ्क नहि, वंश, गाम, पिता, व्यवहारक दिन आ गवाहक स्मृतिसँ बनैत अछि। ओहि सन्दर्भमे हुनका जोधपुरक कुसुमक लिखल पत्र स्मरण भेल—कूपक पुरान नाली देखाइत अछि, मुदा नाली कोन वर्ष बनल से मापनक बिना निश्चित नहि। एहि सबक समानता

अपराधक नहि, प्रमाणक पद्धतिक छल। एक घरक कागज, एक गामक खेत आ एक व्यापारीक बही अलग प्रकरण छल, तथापि प्रत्येकमे नामक पाछाँ धरतीक कोनो तथ्य छल।

अगिला दिन सरकारी पक्ष अपन अन्तिम तर्कक दोसर भाग राखलक। ओ कहलनि जे नीलकान्तक दुकानमे वैध व्यापारक आड़मे दाँवक हिसाब राखल गेल; न्यायालय उपलब्ध प्रमाणकेँ अलग-अलग टुकड़ामे देखला पर सञ्जालक समग्र चित्र छूटि जाएत। ओहि तर्कमे महत्त्व छल। न्यायाधीश पूछलनि, “समग्र चित्र कहबाक लेल प्रत्येक टुकड़ाक प्रमाणिकता निश्चित नहि चाही?” सरकारी अधिवक्ता कहलनि जे परिस्थितिजन्य साक्ष्यक सम्मिलित शक्ति होइत अछि। न्यायाधीश उत्तर देलनि, “अवश्य। मुदा जकरा निश्चित करबाक आधार नहि, ओकरा कई बेर जोड़ि देनेसँ निश्चितता उत्पन्न नहि होइत।” सरकारी पक्ष किछु प्रत्यक्ष आर्थिक प्रविष्टि आ जिम्मेदारीक संकेतक सूची तैयार कएलक। बहसक केन्द्र धीरे-धीरे सीमित आरोपपर आबि गेल।

शिवनारायण एहि स्थानपर एक कठिन निर्णय लेलक। ओ न्यायालयक समक्ष नीलकान्तक सभ व्यवहारक नैतिक पक्ष बचायबाक प्रयत्न नहि कएलनि। “व्यापारी हिसाब लिखैत छथि, एही कारण हुनका शुचिता प्रमाणपत्र नहि देल जा सकैत,” ओ कहलनि। “जँ विशिष्ट दाँव-संबंधी कामक समर्थनमे विधिसम्मत साक्ष्य अछि तँ ओकरा परखू। मुदा जे सम्बन्ध नहि देखाओल गेल अछि, से केवल बाजारक हल्लासँ सिद्ध नहि होयत।” रेवतीकेँ एहन बहसक आवश्यकता बुझायल। मुवक्किलक निजी परामर्शमे अनियमित हिसाबक उल्लेख छल, मुदा ओ गोपनीय कथन सार्वजनिक साक्ष्य नहि। बचाव अपन तथ्य न्यायालयक अभिलेखपर टिका रहल छल, न झूठक पूर्ण इन्कारपर।

नीलकान्त अपन कातक कुर्सीपर बैसल सुनैत छलाह। कतेको बेर ओ चाहैत छलाह जे उठि कहि देथि—हम अपन गलती जनैत छी, मुदा हमरा सभ अपराधक मुखिया नहि मानू। हुनकर अधिवक्ता हुनका पहिने समझौने छलाह जे अदालतमे बोलबाक विधिसम्मत अवस्था आ समय होइत अछि; अचानक बोलल शब्दक प्रभाव एहन भऽ सकैत अछि जेकरा बादमे ठीक करब कठिन। ओ अपन हाथ घुटनापर रखि देलनि। घुटनाक पुरान पीड़ा उभरि रहल छल। चारि वर्षक मुकदमामे हुनका ई कष्ट नव बात नहि छल। नव बात ई छल जे हुनका भीतर अपने प्रति

क्रोध उत्पन्न भेल छल। जे काज ओ छोट लाभ अथवा मित्रताक नामपर सामान्य मानि लेने छलाह, ओहि काजक हिसाब आब पत्नी आ पुत्रक जीवनमे दर्ज भऽ चुकल छल।

अवकाशक बाद न्यायाधीश नीलकान्तक व्यक्तिगत कथन सम्बन्धी पूर्व अभिलेख देखलनि। ओ अभियुक्तक विधिसम्मत उत्तरक सीमा स्पष्ट करैत रहलाह। नीलकान्त किछु व्यवसायिक प्रविष्टि अपन लिखल मानने छलाह; किछु पूछल प्रश्नक स्पष्ट स्मृति नहि होने स्वीकार कएने छलाह; सम्पूर्ण कथित अवैध सट्टा-सञ्चालन अस्वीकार कएने छलाह। अदालत एहन उत्तरकेँ न तऽ स्वयंसिद्ध दोषमुक्ति मानल, न अपराधस्वीकार। अभियोजनकेँ अपन प्रमाण स्वतन्त्र रूपसँ स्थापित करबाक दायित्व छल। एहि सूक्ष्म प्रसंगपर रेवतीक मनमे विधिक अध्ययनक एक पुरान पंक्ति नव अर्थमे जागल—अभियुक्तक मौन अथवा सीमित उत्तरक रिक्त स्थानमे अभियोजन अपन इच्छानुसार कथा नहि लिखि सकैत।

साँझमे शिवनारायण कार्यालय लौटला तखन एक पत्र हुनकर प्रतीक्षा करैत छल। जोधपुरसँ अधिवक्ता पारीक लिखने छलाह जे मरुधरक भूमि-विवादमे सीमांकनक नव तिथि निश्चित भेल अछि। कुसुम पुरान कूपक विषयमे प्रश्न उठौने छलीह; छात्रावासक निर्माणक कार्य स्थगित भागमे एखन नहि बढ़ल अछि। पत्र पढ़ि शिवनारायण रेवतीकेँ कहला, “अहाँ एतय संख्याक हिसाब देखैत छी, ओतय नक्साक रेखा। दूनू कागज मनुष्यक जीवन बदलैत अछि।” रेवती उत्तर देलनि, “मुदा दुनू कागज देखबाक पद्धति एक नहि। जोधपुरमे धरती अछि, एतय लेखन। कतेक ठाम जमीनपर पएर राखि सत्यापित करब पड़ैत अछि, कतेक ठाम गवाहक स्मृति सँ।” शिवनारायण सिर हिलौलनि। “आ कतेक बेर हुनका सभकेँ आपसमे मिलेनाइ पड़ैत अछि।”

ओहि राति शिवनारायण स्वयं पुरान गवाहीक सूची खोललनि। हुनका ध्यान एक गवाहपर गेल—माधव ठाकुर, जे बजारक एक छोट कपड़ा-दोकान चलबैत छल आ वर्ष २००१ मे न्यायालयमे साक्षी बनल छल। ओ नीलकान्तक दुकानपर कखनो खेलक परिणामक कागज राखल देखबाक दावा कएने छल, मुदा साक्षी-बयानक एक महत्त्वपूर्ण अंश लोकक ध्यानसँ छूटि गेल छल। माधव कहने छल जे एक सायंकाल दू व्यक्ति नीलकान्तकेँ ‘पुरान हिसाब’ देखबैत छल, आ नीलकान्त हुनका बीच नगद रकमक अन्तर जोड़ि देलक। माधव स्वयं दाँव

लगबैत नहि देखल, न ककरो हारक रकम नीलकान्तकेँ सीधे देबैत। ओ कागजक प्रकृति संबंधमे अपन अनुमान बतौने छल। शिवनारायण बुझि गेलाह जे एहि साक्षीक भरोसापर व्यापक सट्टा-सञ्चालन सिद्ध करब कठिन होयत, मुदा किछु आर्थिक कार्यवाहीक वास्तविकताक प्रश्न अनुत्तरित नहि रहत।

रेवती माधवक कथन फेर पढ़लीह। ओ पुछलनि, “ओ स्वयं जखन दाँव नहि देखलनि, तखन न्यायालय किछु अपराध कोना सिद्ध मानि सकैत अछि?” शिवनारायण उत्तर देलनि, “प्रत्यक्ष साक्षी अकेला मार्ग नहि। परिस्थितिक श्रृंखला, विश्वसनीय दस्तावेज, स्वीकार्य कथन आ सम्बन्धित व्यवहारक बीच यथार्थ सम्बन्ध होय तँ सीमित आरोप सिद्ध भऽ सकैत अछि। मुदा एहि प्रकरणमे हम ध्यान राखब जे मात्र अंकक मिलान पर्याप्त नहि। सभसँ आवश्यक ई जे न्यायाधीश अपन कारण स्पष्ट लिखथि।” रेवती पुछलीह, “जँ सभ सन्देहक लाभ मुवक्किलकेँ भेटि गेल?” “तखन सेहो हम स्वीकृत तथ्यक नैतिक प्रश्न नहि मेटा सकब। अदालतक निर्णय आ घरक आत्मपरीक्षणक मार्ग एक नहि।”

अमरेशक घरमे ओहि राति कोनो खुलल बहस नहि भेल। नीलकान्त भोजनक बाद पिताक पुरान लकड़ीक बक्सा सँ एक छोट तराजू निकाललनि। ओकर एक पलड़ा वर्षसभसँ थोड़े टेढ़ छल। ओ तराजूकेँ मेजपर रखि देखलनि—चाउर तौलय लेल ओ कखनो-कखनो पलड़ा सीधा करैत छलाह, मुदा एक दिन बिना ध्यान देने रखि देने छलाह तँ ग्राहक कम सामान लेने चलि गेल छल। तखन ओ ग्राहककेँ खोजि दू मुठ्ठी चाउर पहुँचा देने छलाह। आइ हुनका ई छोट घटना स्मरण भेल। रुपये आ बहीमे एतेक सीधा सुधार सम्भव नहि छल। जे धन आन व्यक्तिक हार-जीतक कारणेँ चलल, तकर वास्तविक स्रोत ओ अपन हाथे नहियोँ देखल हो, तथापि ओकर हिसाब जोड़बाक जिम्मेदारी सँ सम्पूर्ण भागि नहि सकैत छलाह।

निर्मला कोठरीमे आबि पुछलनि, “अहाँ तराजू किएक खोलने छी?” नीलकान्त कहलनि, “एहि दुनू पलड़ामे वजन एकहि वस्तुक होइतो फरक पड़ैत अछि। अदालत हमरा भीतरक वजन कोना जनत?” निर्मला पानि राखि बैसलीह। “अदालतकेँ अहाँक मन नहि तौलबाक छैक। ओतय जे प्रमाण अछि, ओकर विचार होयत। हमरा संग अहाँ जे छुपेलहुँ से अलग बात अछि। अहाँ हमरा पहिल दिन कहलहुँ जे सभ बही चाउर-दालक अछि। आब तऽ स्वयं कहैत

छी जे किछु खेलक हिसाब सेहो लिखलहुँ।” नीलकान्त उत्तर नहि देलनि। निर्मला फेर कहलीह, “हम अहाँक साथ छोड़ब नहि। मुदा अहाँ हमरा बच्चाक सामने ई नहि कहू जे घरक दुख मात्र पुलिसक कारणेँ अछि।” एहि वाक्यसँ नीलकान्तकेँ चारि वर्षक कचहरीसँ अधिक पीड़ा भेल।

अगिला सप्ताह जिला पुस्तकालयमे रेवती अधिवक्ताक पेशागत उत्तरदायित्वसँ सम्बन्धित पुस्तक खोजि रहल छलीह। पढ़ैत-पढ़ैत हुनकर ध्यान बारम्बार एहि बातपर जाइत छल जे एक मुवक्किलसँ अपन कथाक कठिन हिस्सा कहब बहुत कठिन अछि। ओ सोचलीह—किएक बाल्यकालसँ मनुष्यकेँ कहल जाइत अछि जे झूठ नहि बजू, मुदा जखन अपमानक भय उपस्थित होइत अछि तँ सचक टुकड़ा चुनिकय राखय चाहैत अछि? अदालतमे ई टुकड़ा अलग रूपमे देखाइत अछि; घरमे ओ संबंधक मध्य पड़ल दरार बनि जाइत अछि। रेवती लेखनक कापी खोलि एक छोट प्रसंग लिखलीह: “लोक ककरो अपन अपराधक पूरा भार देब नहि चाहैत; आ ककरो आनक अपराधक भार स्वयं उठेबाक बाध्य नहि कएल जाउ।” ओ एहि पंक्तिक एक प्रति अमरेशकेँ नहि देलीह। ओ जनैत छलीह जे परिवारक कष्ट साहित्यिक सीखक वस्तु मात्र नहि।

कातिक मासमे दरभंगाक अदालत अन्तिम बहसक शेष दिन निश्चित केलक। सरकारी अधिवक्ता अपन समापनमे स्वीकार कएलनि जे पैंतालीसम पन्नाक लेखक निश्चित नहि अछि आ तैंतीस-पैंतीसक संख्या-अन्तरक निर्णायक स्पष्टीकरण नहियेँ भेटल। मुदा ओ आग्रह कएलनि जे अन्य अनेक पन्नाक लिखावट, दुकानक उपलब्धता, माधवक सीमित दृश्य आ खेलक परिणामसँ मेल खाइत चिह्नक सम्मिलित मूल्यांकन हो। ‘हम सभ आरोपक समान बल नहि कहि रहल छी,’ ओ स्पष्ट कएलनि, “मुदा जे सिद्ध अछि, ओकरा केवल शेष अनिश्चितता कारणेँ अनदेखा नहि कएल जाउ।” एहि वाक्यपर शिवनारायणक चेहरापर विरोधक अपेक्षा सजगता आयल। अभियोजन आब साक्ष्यक वास्तविक सीमा भीतर अपन सर्वाधिक ठोस दावा राखि रहल छल।

शिवनारायण अपन अन्तिम बहस आरम्भ कएलनि तँ न्यायालयमे असाधारण शान्ति छल। ओ पहिने चारि वर्षक सुनबाईक इतिहास नहि गनौलनि; एकदम एक बही खोललनि।

“माननीय न्यायालय, एहि बहीमे उधारक चाउर अछि, तेल अछि, नगद जमा अछि, आ किछु एहन संक्षिप्त चिन्ह अछि जकर सम्बन्ध खेलक परिणामसँ जोड़ल गेल अछि। हमर निवेदन एहि वस्तुक अस्तित्व अस्वीकार करब नहि। प्रश्न ई अछि जे एकर कोन भागक आशय, लेखक आ कानूनी उत्तरदायित्व विश्वसनीय ढंगसँ स्थापित भेल?” ओ पन्नासभ अलग-अलग चिन्हित कएलनि। “जतय प्रत्यक्ष गवाही अपूर्ण अछि, ओहि जगह अनुमानकेँ प्रत्यक्ष प्रमाण कहि नहि सकैत छी। जतय विशेषज्ञ अनिश्चित छथि, ओतय हुनका निश्चित बनाबब उचित नहि। आ जतय व्यापारिक पावती अस्तित्वमे अछि, ओतय ओकरा बिना कारण अपराधक खाता नहि बना सकैत छी।”

ओहि तर्कक बीच शिवनारायण एक क्षण नीलकान्तक ओर देखलनि। “अभियुक्तक नागरिक अधिकार एहि कारण नहि घटैत जे बजारमे ओकर प्रतिष्ठा खराब अछि। समान रूपेँ ओकर दोकानक पुरान सेवा-कार्य एहि कारण अपराधकेँ वैध नहि बनाबैत। न्यायालयक अधिकार आ दायित्व दोसर अछि—विशिष्ट आरोपक सत्यता निश्चय करब।” विमलाकान्त मिश्र कलम रोकि हुनकरा देखलनि। “अहाँक अनुसार कोन साक्ष्य स्वीकृत अछि?” शिवनारायण अनेक मूल व्यावसायिक प्रविष्टिक प्रमाणिकता अस्वीकार नहि कएलनि; ओकरा अपराधक साक्ष्य रूपमे प्रयोग करबाक प्रश्नपर असहमति रखलनि। ओहि उत्तरमे पक्षक मर्यादा आ सीमाक रेखा साफ छल। रेवतीक कापीमे पंक्ति बनल—“साक्ष्य स्वीकार करब, ओकर हर अर्थ स्वीकार करब नहि।”

बाहर अमरेश पुरान पीपरक नीचाँ बैसल छल। कचहरीमे छोट बच्चाक सङ्ग आएल एक महिला केकरो प्रतीक्षा करैत छलीह। बच्चा सड़कपर चलैत मिठाईवला दिसि ताकैत छल। अमरेश जेबमे हाथ रखि देखलक जे ओकरा लग दसो रुपैया नहि अछि। घरक कारोबार फेर चलि रहल छल, मुदा चारि वर्षक वकील-खर्च, कागजक नकल, यात्रा आ दुकानक घटल भरोसाक कारण संचय लगभग समाप्त छल। ओ पहिने कखनो एहि गणनाक उल्लेख मित्रसभसँ नहि कएने छल। ओकरा लागैत छल जे पिताक अपराध विषयमे सार्वजनिक रूपसँ प्रश्न करब घरक अपमान अछि। मुदा ओ एहि बातसँ सेहो आहत छल जे हुनकर पिताक कारण

जे लोक पैसा गमौलनि, हुनकर घरक कष्टक चर्चा कोनो करैत नहि अछि। ओ दुनूक बीच एक उत्तर खोजैत रहल।

रामविलास अहलमद अन्तिम बहसक दिनक आदेश साफ अक्षरमे दर्ज कएलनि। न्यायाधीश निर्णय सुनएबाक तिथि निश्चित कएलनि। लोक बाहर निकलिते पूछय लगल—किसकेँ सजा होएत, के छूटत? रामविलास ओहि प्रश्नकेँ सभसँ कठिन मानैत छलाह। न्यायालयमे कोनो निर्णय लिखल नहि गेल छल, मुदा बाजारे कथासभ प्रारम्भ भऽ गेल। एक छोट समाचारपत्र लिखलक जे सट्टेबाजी प्रकरणमे निर्णायक मोड़। दोसर लिखलक जे चारि वर्षक अभियोजन ढहि रहल। दुनू शीर्षक हुनकरा असावधान लगल। ओहिमे आदेशक वास्तविक वाक्य—‘निर्णय लेल तिथि नियत’—कतहु नहि छल। रामविलास एक प्रतिलिपि फाइलमे राखि शेष कागज गनलनि।

दीनानाथ घर लौटि अपन पत्नी सुमित्राकेँ कहलनि, “आज बात समाप्त भेल, आब फैसला शेष अछि।” सुमित्रा प्रश्न कएलनि, “तँ अहाँकेँ डर किएक लगैत अछि?” दीनानाथ स्वीकार कएलनि जे जाँचमे जे त्रुटि भेल, ओकरा अदालत अनदेखा नहि करत। “जँ कोनो दोषी छूटि गेल तँ?” सुमित्रा कहलनि, “जँ अहाँ अपना गलती नुकायब तँ दोषीक दण्डक आधार सेहो कमजोर करब। जाँचक काम साँच हिसाब राखब अछि, फैसला लिखब नहि।” बेटी अपन अभ्यासक कागज लऽ हुनका कात आबि बैसलीह। ताहिपर लिखल छल—“सत्य कहब साहस अछि।” दीनानाथ मुस्कुराएलाह। विद्यालयक एहन सरल वाक्य अदालतक अभिलेखमे कतेक कठिन बनैत अछि, से बेटीकेँ ओ एखन नहि बुझा सकैत छलाह।

निर्णयक तिथिसँ तीन दिन पहिने कुसुमक पत्र पहुँचि गेल। राजस्थानमे कूपक सीमांकनक विवाद एखन जारी छल; आधिकारिक मापनमे दू पुरान नक्शाक भिन्न दिशा देखाइत छल। प्राचार्य राठौड़ विद्यार्थीसभकेँ कहने छलाह जे न्यायालयक आदेश मानब, मुदा शिक्षकसभक कक्षा रोकिनाइ आवश्यक नहि। नसीमा बानो आ कुसुम अस्थायी पुस्तकालयमे एक नब किताब रखौने छलीह—भारतीय संविधानपर सरल परिचय। पत्रक अन्तिम पंक्तिमे कुसुम लिखने छलि: “ककरो जमीन बाँचय आ ककरो पढ़ाइ नहि रुकय—एहन उत्तरक प्रतीक्षामे छी। मुदा जँ एक दिन निर्णय हमर पक्षमे नहि होएत तँ सेहो हम कागज पढ़ब छोड़ब नहि।” रेवती

पत्रकेँ अपन फाइलसँ अलग रखलनि। ओहि संघर्षक परिणाम दरभंगाक अपराध-विचारणसँ स्वतंत्र छल, किन्तु विवेकक शिक्षा एक समान छल।

निर्णयक भोरि नीलकान्त बहुत जल्दी जागि गेलाह। निर्मला देखलीह जे ओ दुकानक आगाँ पानी छिड़कि झाड़ू दऽ रहल छथि। एतय नहियोँ साफ करबाक आवश्यकता छल, मुदा हाथक काज मनक भयक संग चलि रहल छल। ओ पुछलीह, “अहाँ एखन तकि खेनाइ कएलहुँ नहि?” नीलकान्त कहला, “भूख नहि अछि।” निर्मला थारीमे दू छोट रोटी राखि देलनि। “अदालतमे खाली पेट नहि जाउ।” अमरेश अपन विद्यालयक नीला स्वेटर पहनलक। घरक किवाड़ बन्द करैत नीलकान्त दुआरक एक छोर छुलनि—मानो चारि वर्षक न्यायिक संघर्षक बीच घरक अस्तित्वक पुष्टि करैत छथि।

कचहरीक बरामदा ओहि दिन सामान्यसँ बेसी भरल छल। जगदीशक चायघरमे लोक कागजवला समाचार पढ़ि रहल छल। कोनो कहैत छल जे नीलकान्त निर्दोष साबित होयत, कोनो कहैत छल जे सीधा जेल पठा देल जायत। शिवनारायण पहुँचलाह तँ हुनकरा देखिकय सभ चुप नहि भेल; लोक बेसी प्रश्न करय लगल। ओ ककरो भविष्यवाणी नहि देलनि। केवल परिवारकेँ कहला, “जे निर्णय होएत से सुनब, लिखल आदेश पढ़ब, तकर बाद आगाँक बाट सोचब। आज न्यायालयक वाक्यकेँ बाजारेक वाक्यसँ बदलय नहि देब।” रेवतीक हाथमे अपन कापी छल, मुदा ओ पहिल बेर ओकरा बन्द राखलनि। आइ सुनबाक दिन छल।

विमलाकान्त मिश्र निर्णय-पत्र लऽ कक्षमे आएलाह। पहिल पंक्तिमे अभियोजनक परिचय, आरोप आ विचारणक समयावधि छल। ओ स्पष्ट कएलनि जे न्यायालय पुरान स्थानीय खेल-सम्बन्धी लागू विधिक प्रावधानक आधारपर आरोपक परीक्षण करैत अछि; केवल नैतिक निन्दा दोष-सिद्धिक आधार नहि। ओकर बाद साक्ष्यक सार पढ़ल गेल। मथुरानन्द कापड़ि जप्तीक सम्पूर्ण प्रक्रिया नहि देखल कहने छथि; रफीक अंसारी किछु वस्तु बाहर आनलाक बाद पहुँचल; दीनानाथ दू प्रतिलिपिक पन्नासंख्याक अन्तर स्वीकार कएने छथि। न्यायाधीश प्रतिरक्षाक एहि बिन्दुकेँ गम्भीरता देने छलाह, किन्तु उपलब्ध मूल बहीक समस्त भाग एकहि कारणेँ अप्रमाणित ठहराएबासँ मना कएलनि।

फेर विशेषज्ञक मत पढ़ल गेल। अनेक पन्नाक लेखन नीलकान्तक उपलब्ध नमूनासँ मिलैत अछि; पैंतालीसम पन्नाक विवादित नामक लेखनपर निश्चित लेखक-निर्णय सम्भव नहि। न्यायालय कहलनि जे एहन सीमा स्वयं विशेषज्ञक विश्वसनीयताकेँ नष्ट नहि करैत; ओकर मतकेँ ओहि सीमा धरि प्रयोग कएल जाएत। प्रभाकरक अनाज-व्यापारक पावतीकेँ वैध वस्तु-विक्रयक प्रमाण मानल गेल; अतिरिक्त रकमक अवैध प्रयोजन अनिश्चित रहने स्वीकार कएल गेल। नरेशक गवाही बहीमे अनेक हाथक सम्भावनाकेँ समर्थन करैत अछि, मुदा ओकर बयानसँ प्रत्येक पन्नाक लेखक निश्चित नहि होइत। रेवतीक ध्यान एक-एक वाक्यपर छल—न्यायालय प्रमाणक श्रेणी बनबैत जा रहल छल।

रामकिशुन महतोक नामक प्रसंगपर विमलाकान्त मिश्र अपन आवाज थोड़े धीमा कएलनि। “मृत्यु-पञ्जीमे उल्लिखित व्यक्तिक १९९५ क मृत्यु सम्बन्धी तथ्यक प्रासंगिकता अछि,” ओ कहलनि। “मुदा विवादित बहीमे प्रयोग कएल नाम ओहि व्यक्तिकेँ अवश्य सूचित करैत अछि, ई सन्देहातीत स्थापित नहि। मृत व्यक्तिक नामक बगलमे नब रकम रहब स्वयं ई सिद्ध नहि करैत जे अभियुक्तेँ जालसाजी कएलनि।” ओहि विशेष आरोपपर न्यायालय अभियोजनक प्रमाण अपर्याप्त मानलक। नीलकान्तक काँध एक क्षण ढील भेल। निर्मला ओकरा देखलीह, मुदा सन्तोष व्यक्त नहि कएलनि—निर्णय एखन शेष छल।

अगिला भागमे न्यायाधीश किछु विशिष्ट लेखाक चर्चा कएलनि, जकरा स्थानीय खेल-परिणामक लिखित सङ्केत आ नगद समायोजनसँ जोड़बाक समर्थनमे बहीक लेखक-संबंधी प्रमाण, पूर्व साक्षीक सीमित प्रत्यक्ष अवलोकन आ संबंधित व्यवहारक सम्मिलित परिस्थिति उपलब्ध छल। ओ स्पष्ट कएलनि जे प्रमाणक एहि श्रृंखलासँ नीलकान्तक द्वारा किछु समय अवैध दाँवक हिसाब जानबूझि राखबाक सीमित भूमिका स्थापित होइत अछि। मुदा व्यापक सट्टा-सञ्चालन, बहुतो ग्राहकसँ धन वसूलबाक कुल दाबी, आ पैंतालीसम पन्नाक कथित छलक प्रमाण पर्याप्त नहि। न्यायालय आरोपवार निर्णय लिखने छल, न एकटा समग्र ‘भल’ अथवा ‘खराब’ व्यक्तित्वक निर्णय।

नीलकान्तकेँ किछु सीमित प्रकरणमे दोषी ठहराएल गेल; अन्य प्रकरणमे सन्देहक उचित लाभ देल गेल। निर्णयक शब्द सुनिते निर्मलाक आँखि भरि आयल। खुशी कि दुःख, ओ तय

नहि कऽ सकलीह। जँ सभ आरोप सिद्ध भेल रहितए तँ परिवारक भय आओर पैघ होइत; जँ सभ असिद्ध भेल रहितए तँ नीलकान्तक अपन कबूलल नैतिक गलती केना बुझल जाइत? एखन न्यायालयक निर्णय दूनू कठोर छोरसँ अलग छल। अमरेश पिताक ओर देखलक। नीलकान्तक ओठ बन्द छल। ओकरा पता छल जे एहि दिन घरक इतिहासमे ‘छुटि गेलाह’ अथवा ‘दण्डित भेलाह’ जकाँ छोट वाक्य पर्याप्त नहि होयत।

निर्णयक बाद सरकारी पक्षक एक पुरान शिकायतकर्ता सेहो बरामदामे ठाढ़ छल। ओकर नाम रमापति ठाकुर छल, जे किछु वर्ष पहिने खेलक लोभमे अपन घरक बचत गमौने छल। न्यायालयक अभिलेखमे ओकर कथनक सीमा स्पष्ट छल—ओ अपना हारक घटना जानैत छल, मुदा नीलकान्त स्वयं प्रत्येक लेनदेनक सञ्चालक छलाह, ई प्रत्यक्ष नहि देखलने छल। आइ ओ नीलकान्तकेँ देखिकय कहलक, “हमरा जे गमल से केवल रुपैया नहि। घरमे हमरा बातपर केओ भरोसा नहि करैत अछि।” नीलकान्त उत्तर देबाक साहस नहि कएलनि। रमापति फेर कहलक, “अहाँक घरक दुख सुनैत छी। हमरा घरक दुख ककरा कहब?” ओकर आवाजमे प्रतिशोधसँ अधिक थकान छल। ई प्रश्न नीलकान्तक दोष-सिद्धिक सीमा बदलि नहि सकैत छल, मुदा नीलकान्तक मनमे अपन कारोबारक कारणेँ उपजल आनक क्षतिक स्मृति फेर खोलि देलक।

रेवती ओहि बातचीतसँ दूर ठाढ़ छलीह। ओ जानैत छलीह जे रमापतिक व्यक्तिगत क्षतिक प्रत्येक हिस्सा एहि विचारणमे नीलकान्तसँ जोड़ि प्रमाणित नहि भेल अछि। तइयो ओहि मनुष्यक पीड़ा सत्य छल। पितासँ ओ कहलीह, “हमर कानूनी उत्तर ओकरा पूरा सान्त्वना नहि देत।” शिवनारायण कहला, “विधि जे सिद्ध कऽ सकैत अछि, ओकरा स्पष्ट कहय पड़ैत अछि। बाकी पीड़ा बुझबाक लेल नागरिकक मन चाही। मुदा ओहि पीड़ाकेँ अतिरिक्त दोष-सिद्धिक स्थानमे रखब न्याय नहि।” रेवती रमापतिकेँ पानि देलीह। ओ पानि पीबि चलि गेल। पछाति न्यायालयमे दण्ड-सम्बन्धी सुनबाई आरम्भ भेल, मुदा बरामदामे कहल ओकर प्रश्न रेवतीक संग रहल।

अदालत दण्डक मात्रा सम्बन्धी निवेदन लेल अलग समय देलक। नीलकान्तक पूर्व जीवन, अपराधक सिद्ध सीमित रूप, विचारणक लम्बा समय, परिवारक आश्रित स्थिति आ वैधानिक

व्यवस्था सम्बन्धी तर्क सुनल गेल। सरकारी पक्ष न्यायालयकेँ जनहित आ अनियमित आर्थिक व्यवहारक सामाजिक प्रभाव स्मरण करौलक। शिवनारायण साक्ष्यसँ बाहरक भावुक कथासभसँ बचैत सीमित दण्डक आग्रह कएलनि। न्यायाधीश स्पष्ट कएलनि जे धनक क्षति भोगनिहार सभ व्यक्तिक अलग सम्भावित उपचारक प्रश्न एहि एक निर्णयसँ स्वतः समाप्त नहि होइत। विधिसम्मत दण्डनिर्धारणक बाद विधिसम्मत अर्थदण्डक आदेश देल गेल, आ अन्य आरोपक दोषमुक्ति यथावत् रहल। आदेशक प्रतिलिपि उपलब्ध होयबाक बाद अपीलक विधिक विकल्प पक्षसभक समक्ष खुला छल।

बाहर लोकक प्रश्न आरम्भ भेल। “छुटि गेलाह?” एक पड़ोसी पुछलक। “सजा भेल?” दोसर कहलनि। अमरेश दुनूक प्रश्न सुनलक। ओकरा जे उत्तर देब उचित लगल से सरल नहि छल। “किछु आरोप सिद्ध भेल,” ओ कहलक, “किछु नहि। लिखल फैसला पढ़ू।” पड़ोसी हँसि देलक—“तेँ ककरो साफ उत्तर नहि?” अमरेश दृढ़ स्वरमे उत्तर देलक, “साफ उत्तरक अर्थ छोट उत्तर नहि होइत।” निर्मला सुनैत रहलीह। चारि वर्ष पहिने ओहि बालकसँ पिता चोर छथि कि नहि, ई प्रश्न कएल गेल छल। आइ बालक स्वयं लोककेँ निर्णयक सीमा बुझबैत छल। ओकरा भीतर वयसक परिवर्तनक ई दिन परिवारक आधा जीवन एक संग लिखि गेल छल।

शिवनारायण कक्षसँ निकलिते रेवतीकेँ कहला, “निर्णय पूर्ण पढ़बाक बिना समाचारकेँ भरोसा नहि करब।” रेवती कहलीह, “हमरा एक बात बुझायल। न्यायालय जे आरोप सिद्ध नहि मानलक, ओकरा हम अखबारक अनुमानसँ दोषी नहि बना सकैत छी। आ जे सीमित दोष सिद्ध मानलक, ओकरा केवल परिवारक कष्ट कारणेँ मेटा नहि सकैत छी।” पिताक चेहरापर थाकल मुस्कान आयल। “आज अहाँ किताबक एक अध्याय पूरा कएलहुँ,” ओ कहला। “बुझबाक लेल पूरा जीवन चाही।” रेवती पिताक हाथ छुलनि। ओहि क्षण अदालतक धूल आ धूपक बीच हुनका अपन विधिक जीवनक वास्तविक आरम्भक अनुभव भेल।

नीलकान्त कार्यालयमे एकान्तमे शिवनारायणक संग बैसलाह। “हम अपील करब?” ओ पुछलनि। शिवनारायण कहलनि, “पहिने लिखित आदेश पढ़ि देखब जे कोन निष्कर्षपर विधिक चुनौती सम्भव अछि। अपन अधिकारक उपयोग करब, मुदा झूठ आश्वासन नहि देब।”

नीलकान्त पुछलनि, “जँ अपील नहि करी तँ लोक कहत जे हम सभ अपराध स्वीकार कएलहुँ?” शिवनारायण उत्तर देलनि, “लोक जे कहत ओकर अन्त नहि। न्यायालयक आदेशमे आरोपवार निर्णय अछि। अपीलक प्रश्न कानूनी आधार आ अहाँक निर्णयसँ जुड़ल अछि, बाजारेक प्रतिष्ठासँ मात्र नहि।” नीलकान्तक आवाज धीमा भेल। “हम अपन पत्नीकेँ सेहो साँच आधा कहलहुँ।” एहि बेर अधिवक्ताकेँ कोनो विधिक उत्तर नहि देबाक छल। ओ केवल सुनैत रहलाह।

घर घुरला पर निर्मला चूल्हि फेर सुलगौलनि। हुनका मनमे मन्दिर जाएबाक इच्छा उठल, मुदा ओहि इच्छाक संग क्रोध सेहो छल। नीलकान्त धीरे कहलनि, “आज हम सभ किछु नहि जीतलहुँ।” निर्मला बर्तन राखि हुनका देखलीह। “हम जीतबाक लेल चारि वर्ष प्रतीक्षा नहि कएलहुँ। हम चाहैत छलहुँ जे जे भेल से स्पष्ट हो। जे अहाँक गलती अछि से स्वीकार करू, आ जे आनक लिखल अछि से अपने माथापर नहि लिअ।” नीलकान्त पुछलनि, “अहाँ हमरा क्षमा कऽ देलहुँ?” निर्मला बहुत देर विचार कए उत्तर देलीह, “क्षमा कोनो न्यायिक आदेश नहि जे एक तिथिमे लिखि देल जाउ। हमर विश्वास फेर बनय मे समय लागत। मुदा हम एखनहुँ एहि घरमे छी।”

अमरेश अपन कापी खोलि अदालतक दिनक ब्योरा लिखय बैसल। ओ पहिल पंक्तिमे ‘बाबूजी दोषी’ लिखलक, फेर रुकि गेल। दोसर पंक्तिमे ‘बाबूजी निर्दोष’ लिखय चाहलक, मुदा ईहो अपूर्ण लागल। अन्तमे ओ लिखलक—“अदालत अलग-अलग बात पर विचार केलक।” ओहि वाक्यक नीचाँ लिखलक जे जप्ती-सूचीक दू गिनती अलग छल, मुदा बहीमे किछु वास्तविक आर्थिक लेखन सेहो छल। ओहि उम्रमे ओकरा विधिक पारिभाषिक शब्द नहियेँ अबैत छल, मुदा ओ अपन घरक निर्णयकेँ दू शब्दमे समेटय नहि चाहैत छल। नीलकान्त ओकर कापी देखलनि। “तों हमरा बारेमे लिखैत छह?” ओ पुछलनि। अमरेश कहलक, “हम ओकरा बारेमे लिखैत छी जे अदालत कहलक, आ जे हमरा बुझायल।” पिता चुप रहलाह।

ओहि राति रेवतीकेँ सायराक एक पत्र सेहो भेटल। गुजरातमे ओकर विद्यार्थी-जीवन फेर चलि रहल छल; जरल घरक शैक्षणिक अभिलेखक स्थानपर किछु नकल प्राप्त भेल छल। सायरा लिखने छलीह जे कतेको दिन विद्यालयमे अपन पुरान नाम पुकारल गेलापर हुनका

आँखि भरि अबैत छल। ‘हम पढ़ब छोड़लहुँ तँ घर जरौनिहारक जित होयत,’ ओ लिखने छलीह। रेवती पत्र पढ़िकय बुझलीह जे नीलकान्तक निर्णय आ सायराक जीवनक संघर्षक बीच आपराधिक सम्बन्ध कोनो नहि, मुदा अन्यायक बाद नाम आ अभिलेख फेर प्राप्त करबाक जिजीविषा समान छल। ओ पिताकेँ पत्रक अंश पढ़ि सुनौलनि। शिवनारायण कहला, “एहन गवाही हमेशा अदालतमे नहि पहुँचैत, मुदा इतिहासक लेल आवश्यक रहैत अछि।”

दिसम्बरक अन्तिम सप्ताहमे देशभरि सर्दीक समाचार छल। दरभंगाक कचहरीमे वर्षान्तक काज समेटल जा रहल छल। रामविलास नीलकान्तक निर्णय-पत्रक प्रमाणित प्रतिलिपि तैयार करबाक आवेदनक प्राप्ति दर्ज कएलनि। कोनो पक्ष अपील करत कि नहि, से एखन निश्चित नहि। ओ कागज सुरक्षित रखलनि आ नव वर्षक फाइलक स्थान बनौलनि। हुनका कार्यालयक पुरान अलमारीमे एक-एक मुकदमा मनुष्यक अधूरा कथा जेकाँ लगैत छल। निर्णय लागल फाइल सेहो पूर्ण जीवन नहि बनैत अछि; ओकर बाहर परिवार, बाजार, खेत, विद्यालय आ हर वर्षक नव भय चलैत रहैत अछि।

छब्बीस दिसम्बरक समाचार सँ दूर समुद्रमाथि अकल्पनीय विपत्ति आबि पड़ल। दरभंगाक रेडियोपर सुनामीक पहिल खबर पहुँचल। रेवती शय्या लग बैसल छलीह। समाचारमे अण्डमान-निकोबारक नाव, घर, हराओल परिवार आ राहतक कठिनाइ छल। ओ पितासँ कहलीह, “ओतय लोकक कागज सेहो गुम भऽ गेल होयत।” शिवनारायण उत्तर देलनि, “पहिने लोकक प्राण बचय। फेर दस्तावेज जुटेबाक, नाम मिलेनाइ, घरक अधिकारक प्रश्न आएत। कोनो कागज नहि बचल हो तँ साँच घटना सेहो नष्ट नहि होइत, मुदा ओकरा सिद्ध करब कठिन भऽ जाइत अछि।” हुनका एखन ज्ञात नहि छल जे अण्डमानक एक बालक अनीश अपन पिताक नावक क्रमाङ्कक टुकड़ा खोजैत, एक दिन न्यायालयक प्रश्नसँ परिचित होयत।

नीलकान्त ओहि समाचारक समय दुकानमे दाल तौलि रहल छलाह। एक ग्राहक कहलक जे समुद्र अनेक घर बहा देने अछि। नीलकान्त रेडियोकेँ ध्यानसँ सुनलनि। हुनकर अपन मुकदमाक कष्ट अचानक छोट नहि भेल, मुदा ओ बुझलाह जे किछु लोकक समक्ष एखन न्यायालयक तारीख नहि, जीवन बचबाक पहिल आवश्यकता अछि। ओ घरमे राखल बचतसँ

थोड़ेक सहायता देबाक विचार कएलनि। निर्मला कहलीह, “सहायता देब, मुदा घरक बकाया सेहो अछि। जतेक देब सम्भव अछि, ओतेक स्पष्ट हिसाब राखू।” नीलकान्त ओहि राति पहिल बेर नव बहीमे दानक रकम अपन हाथसँ लिखलनि, नामक संग तिथि, कारण आ प्राप्तिक स्थान रखलनि। ओहि नव लेखनमे कोनो गुप्त अङ्क नहि छल।

रेवती वर्षक अन्तिम राति अपन कापी बन्द करबाक पहिने एक बेर न्यायालयक निर्णयक शब्दक सार लिखलीह—“जे सिद्ध अछि, ओकर उत्तरदायित्व; जे सिद्ध नहि, ओकर विरुद्ध अनुमान नहि।” एहि वाक्यक अगिला पंक्तिमे ओ जोड़लनि—“न्यायालयक निर्णय पछाति सेहो नागरिकक जीवन चलैत अछि।” चारि वर्षक मुकदमामे शिवनारायणक शिष्याक रूपमे ओ जे सीखने छलीह, ओकरा आब आगामी वर्षसभमे अलग रूपसँ परखबाक छल। सूचना-अधिकारक नव युग, बदलैत बैंक, डिजिटल अभिलेख, छात्रक अधिकार आ सैकड़ो नामक नब सूचीक कथा एखन हुनका अज्ञात छल। मुदा ओ जनैत छलीह जे प्रत्येक नव कागजक आरम्भमे एक प्रश्न उचित होइत अछि—एहि नामक पाछाँ कोन मनुष्य अछि?

नीलकान्त रातिक अन्तिम प्रहरमे अपन घरक बाहर निकललाह। बाजारक दोसर छोरपर किछु दुकान बन्द छल। हुनका याद आयल जे कतेक लोक पहिने खेलक हिसाबक लेल हुनकर कोठरीमे अबैत छल। कतेकक चेहरा स्मरण छल, कतेकक नहि। हुनका अदालतक सीमित दण्ड आ असिद्ध आरोपक निर्णय दुनू याद छल। ओ आकाश दिसि देखलनि। तारा नीकसँ नहि देखाइत छल। निर्मला दुआरसँ बजौलनि—“भीतर आउ, शीत बढ़ि गेल।” ओ घुरि देखलनि आ धीरे कहलनि, “हमरा मनमे एक बात घूमैत अछि। हमर जे काम छल, ओकर हिसाब अदालत देलक। मुदा हमर नामपर आन जे लिखलक, ओकर हिसाब के देत?” निर्मला किछु क्षण चुप रहलि। “जे नहि जनैत छी, ओकरा खोजबाक अछि,” ओ कहलीह। “मुदा एखन घरमे आबि जाउ।”

भोर होइत-होइत कुहेसा फेर बजारमे उतरि आयल। कचहरीक पहिल निर्णयक कागज अलमारीमे छल, घरक नव बही दुकानक मेजपर। दुनू पन्नापर नीलकान्त साहक नाम लिखल छल, मुदा दुनूक अर्थ भिन्न छल। एक पन्ना चारि वर्षक विचारणक परिणाम छल, दोसर आगाँक दिनक साधारण व्यापारक आशा। दूर समुद्रक कात एक दोसर परिवार अपन हराओल

नावक नाम लिखबय लेल कागज खोजि रहल छल। एहि दू स्थानक लोक एक-दोसराकेँ नहि जनैत छल। तथापि देशक अलग-अलग कोनमे आब एकहि कठिन प्रश्न उठि रहल छल—कागजपर लिखल नाम जँ मनुष्यक जीवनसँ अलग भऽ जाए, तँ ओकरा फेर मिलाओत के?

द्वितीय खण्ड — अभिलेख, अधिकार आ उच्च न्यायालय

अध्याय १ — सूचनाक पहिल अधिकार

दरभंगा आ कमलपुर, सन् २००५

कार्तिकक पहिल ठण्ढ दरभंगाक कचहरीमे एखन धरि नीकसँ नहि उतरल छल। दुपहरिया धरि धरती गरम रहैत, मुदा भोरमे कोठरीक खिड़की लग बैसला पर माटिक गन्धमे शीतक अन्हार मिलि जाइत। रेवती झा अपन पिताक कार्यालयक पुरान अलमारी खोलि रहल छलीह। ऊपरका खण्डमे नीलकान्त साहक मुकदमाक प्रमाणित निर्णय-पत्र राखल छल। चारि वर्ष धरि जे कागज रोज हुनकर आँखिक आगाँ रहैत छल, ओ आब स्थिर फाइल बनि गेल छल। ताहि फाइलक काते एकटा पातर नीला लिफाफा छल, जाहिपर लिखल छल—कमलपुर मध्य विद्यालय, बिरौल। भेजनिहारक नाम शारदा देवी। रेवती एखन धरि हुनका नहि जनैत छलीह।

लिफाफाक भीतर चारि पन्नाक चिट्ठी आ विद्यालयक छात्रवृत्ति-पञ्जीक एकटा पुरान नकल छल। चिट्ठीक पहिल पाँति सोझर छल—“हम विद्यालयमे पढ़बैत छी। हमर लड़िका सभक नाम उपस्थितिक पञ्जीमे अछि, मुदा छात्रवृत्तिक पञ्जीमे हुनकर नाम रहितहुँ पाइ नहि पहुँचैत छनि। हम एखन केवल ई जनय चाहैत छी जे सरकारसँ विद्यालयकेँ केतेक राशि भेटल, कोन दिन भेटल, आ कोन कागजपर वितरण लिखल गेल।” एकर बाद शारदा अपन गाँवक तीन बालिकाक नाम लिखने छलीह। किछु पाँति काटल छल। अन्तमे छोट अक्षरमे प्रश्न छल —“कागज देखबाक कोनो विधि आबि गेल अछि, से समाचारमे सुनलहुँ। की हम सेहो माँगि सकैत छी?”

रेवती चिट्ठी दुबारा पढ़लीह। हुनका शारदाक हस्ताक्षरमे अधैर्य नहि, सावधानी देखायल। ककरो चोर कहबाक इच्छा नहि छल। सूचना माँगबाक आग्रह छल। ओ लिफाफा लऽ भीतर गेलीह। शिवनारायण झा खिड़कीक कात बैसल छलाह। हुनकर आगाँ नीलकान्तक एक छोट

निवेदन छल—दण्डादेशक शेष शर्तक पालन सम्बन्धी। न्यायालयक निर्णय भऽ गेल छल, मुदा परिवारक जीवनमे ओकर कार्यान्वयन अबहियो चलि रहल छल।

“देखू बाबूजी,” रेवती कहलनि, “एक शिक्षिका लिखने छथि। वितरण पञ्जीमे नाम अछि, छात्राकेँ पाइ नहि भेटल। ओ सरकारी अभिलेख देखय चाहैत छथि।” शिवनारायण चश्मा ठीक कएलनि। “शिक्षिकाक अपना विद्यालयक हिसाब नहि भेटैत छनि?” रेवती उत्तर देलनि, “प्रधानाध्यापक कहलथिन जे प्रखण्ड कार्यालयमे पूछू। प्रखण्ड कार्यालय कहलक विद्यालयमे पूछू। से चिट्ठीमे लिखने छथि।” शिवनारायण दीर्घ श्वास लेलनि। “एहि प्रकारक दुआरि-दुआरि घुमेनाइ बहुत पुरान अभ्यास अछि। आब नव कानून अछि। मुदा कानूनक अक्षर कागजपर लिखला सँ कार्यालयक किवाड़ अपने नहि खुजैत।”

जून मासमे सूचना-अधिकारक नव कानून राष्ट्रपति स्वीकृति पाबि चुकल छल। ओकर किछु संस्थागत व्यवस्था तत्क्षण लागू भेल, आ बाँकी अधिकारक व्यापक प्रयोग बारह अक्टूबरसँ सम्भव भेल। एहि तिथिक भिन्नता शिवनारायण अपन मेजक कात टाँगल एक छोट टिप्पणीमे लिखने छलाह। रेवती पुछलनि, “बारह अक्टूबर बीति गेल। एखन शारदा आवेदन दऽ सकैत छथि?” “दऽ सकैत छथि,” पिता कहलनि, “मुदा जे अभिलेख अस्तित्वमे अछि, से माँगू। “केओ चोरी किएक कएलक” एहि प्रश्नक उत्तर सूचना-अधिकारक अधिकारी अन्वेषण कऽ नहि देत। कहू—स्वीकृति-पत्र, राशि भेटबाक विवरण, भुगतान-पञ्जी, नामावली आ वितरणक प्रमाणित नकल चाही।”

शिवनारायण फेर पुछलनि, “पत्रमे बच्चासभक नाम अछि। हुनकर निजी विवरण अनावश्यक रूपेँ बाहर नहि पठाउ। अभिभावकक आवश्यक अनुमति आ सार्वजनिक अभिलेखक सीमा बुझू।” रेवती बुझेने छलीह जे पिताक पुरान अनुभव नव कानूनमे सेहो काज दऽ रहल अछि। नीलकान्तक बहीमे नाम रहब आ अपराधक सम्बन्ध सिद्ध होयब अलग छल। एहिठाम नाम रहब आ वास्तविक छात्रवृत्ति भेटब अलग अछि। दूनू अवस्थामे कागज मनुष्यक स्थानापन्न बनि गेल छल।

कमलपुर पहुँचबाक बाट दरभंगासँ पहिने पक्की सड़क, फेर काँच रस्ताक दू फाँकसँ होइत छल। पोखरिक कात मखानक पात परती जकाँ बिछल छल। कातमे घास काटैत महिला,

माथपर डाला लेने बालिका आ धान काटि घुरैत किसान भेटैत छलाह। नव कानूनक समाचार एहि लोकसभ धरि पूरा नहि पहुँचल छल; मुदा विद्यालयमे चाउरक माप आ पुस्तकक अभावक खबर सभकेँ छल। रेवती शारदाकेँ पत्र लिखि कहलनि जे आवेदनक प्रारूप तैयार करथि; ओ अगिला सप्ताह भेटय अएतीह।

शारदा देवी विद्यालयक बरामदामे पढ़बैत छलीह। कक्षाक भीतर चारि पाँतिकेँ छह भागमे बाँटि देल गेल छल। तेसर कक्षाक बालक जोड़-घटाव करैत छल, पाँचमक बच्चा भारतक नदीक नाम लिखैत छल, आ दू बालिका एकहि पुस्तक बारी-बारी पढ़ैत छलि। फुलवा नामक बालिका कापीक कोनमे सुइसँ बनाओल फूलक चित्र रखैत छलि। शारदा ओकरा पुछलनि, “पाठमे ई फूल किएक?” फुलवा हँसि कहलक, “पुस्तकक चित्र घसि गेल अछि, तेँ अपने बनौने छी।” शारदा सेहो मुस्कुरौलीह, मुदा हुनकर आँखि पुस्तकक फाटल पन्नापर ठहरि गेल।

विद्यालयमे पाँच शिक्षकक पद स्वीकृत बताओल जाइत छल। नियमित रूपसँ पढ़बयवला शिक्षक तीन छथि। एक अस्वस्थ छथि, एक पदक स्थिति परस्पर विरोधी अभिलेखमे अलग-अलग लिखल अछि। प्रधानाध्यापक गौरीशंकर यादव प्रातःसँ कागजक गठरी मिलबैत रहैत छलाह। ओ खराब व्यक्ति नहि छलाह; विद्यालयक छप्पर टपकैत अछि, पानि लेल चापाकल कएक दिनसँ बन्द अछि, शिक्षकक मासिक मानदेय समयपर नहि पहुँचैत अछि—एहि सभसँ जुझैत हुनकर अपन थाकलपना छल। मुदा शारदा जखन छात्रवृत्तिक पञ्जी देखबाक माँग कएलनि, ओ तुर्ते किछु कठोर भऽ गेलाह।

“अहाँ हमरा चोरीक आरोप दऽ रहल छी?” प्रधानाध्यापक पुछलनि। शारदा अपन हाथमे राखल कापी बन्द कएलनि। “नहि, हम केवल अभिलेख देखय चाहैत छी। फुलवाक माए चारि बेर पूछय आइल छलीह। हुनका की उत्तर दी?” “राशि प्रखण्डसँ अबैत अछि। सभ दिन एकहि बेर नहि भेटैत अछि।” “से हम जनैत छी। मुदा पञ्जीमे फुलवाक लग भुगतानक दिन लिखल अछि। माए कहैत छथिन जे पाइक नामो नहि देखलनि।” गौरीशंकर कहला, “भेटक दिन आ भुगतानक दिनमे भेद होइत अछि। कार्यालयसँ स्वीकृति भऽ गेल रहत, मुदा नगद वितरण बादमे भेल होयत।” शारदा उत्तर देलनि, “तेँ दू कागज देखब आवश्यक अछि।”

ओहि समय विद्यालयक फाटकपर फुलवाक माए सरयू देवी आयलीह। हुनकर हाथमे अधपक धानक दू मुठ्ठी छल; खेतसँ सीधा आएल छलीह। माथपर पसीना आ पएरमे माटि छल। “मास्टरनीजी, बच्चीक कपड़ा लेल किछु पाइ आयत?” ओ पुछलनि। शारदा सामनेक बालकसभकेँ पढ़बाक कहलनि आ सरयूकेँ कोनमे लऽ गेलीह। “हम कागजक हिसाब माँगि रहल छी। एखन निश्चय नहि कहि सकैत छी।” सरयू चुप रहलि। हुनकर हाथक धानक मुठ्ठी धीरे-धीरे ढील पड़ि गेल। “जँ नाम छैक तँ पाइओ होयत, ई हम बुझैत छी,” ओ कहलीह। “मुदा हमर घरमे जे नहि पहुँचल, ओकर हिसाब कागतपर पहुँचि गेल, से केना?”

एहि छोट वाक्यमे शारदाकेँ कानूनक कठिनाइ देखायल। सरकारी अभिलेखमे कोनो शब्द लिखल जाइत अछि, आ गाँवक जीवन ओकर सत्यापित अर्थ माँगैत अछि। शारदा सरयूकेँ अपन अगिला भेटक दिन बतौलनि। ओ आश्वासन नहि देलनि जे पाइ अवश्य भेटत। “पहिने पञ्जी देखी,” ओ कहलीह। सरयू धानक मुठ्ठी बाँधि बाहर निकसलीह। हुनकर पछिला पएरक निशान बरामदाक गीला माटिमे रहि गेल।

बारह अक्टूबरक अगिला सप्ताहमे रेवती कमलपुर पहुँचलि। विद्यालयक बरामदामे बैसल लोक हुनकरा ‘वकीलनी’ कहि बजाबय लगल। रेवती कहलीह, “हम एतय न्याय करय नहि आएल छी। लिखल हिसाब बुझबाक लेल आएल छी।” शारदा एकरा सुनि हँसलीह। ओ दुनू बरामदाक पुरान मेजपर कागज पसरौलीह। कक्षाक भीतर बच्चासभ तालमे पहाड़ा बजैत छल, आ बाहर दू महिला प्रश्न कऽ रहल छलीह—कुन मासक छात्रवृत्ति, कोन वर्गक बालिका, के कतेक पाबयवला छल। एहि क्रममे हर नामक संग एक घरक वास्तविकता खुलैत गेल।

रेवती आवेदनमे माँग निश्चित कएलनि—वर्ष २००२ सँ २००५ धरि स्वीकृत छात्रवृत्ति राशि, प्रखण्डसँ विद्यालयकेँ पठाओल आदेशक नकल, विद्यालयक प्राप्ति-पञ्जी, वितरणक सार्वजनिक भागक प्रमाणित विवरण, विद्यालयक शिक्षक-पदक स्वीकृत स्थिति आ उपलब्ध व्यय-प्रतिवेदन। ओ स्पष्ट लिखलनि जे व्यक्तिगत चिकित्सकीय अथवा परिवारक अनावश्यक निजी सूचना नहि चाही। आवेदनमे आरोपक शब्द नहि छल। शारदा पढ़िकय पुछलनि, “हम “छात्रवृत्ति किएक नहि भेटल” नहि लिखी?” रेवती कहलीह, “ओकर उत्तर अभिलेखमेसँ निकालब। प्रश्नकेँ एहन बनाउ जे कार्यालयक लग जे अछि, से नकारब कठिन हो।”

प्रधानाध्यापक गौरीशंकर आवेदन पढ़बाक बाद कहलनि, “अहाँ सभ हमरा बिनु बजौने प्रखण्ड धरि जा रहल छी?” रेवती उत्तर देलनि, “अहाँक विद्यालयक अपन अभिलेखक प्रति देखबाक आग्रह तऽ पहिने शारदा देने छलीह। आब जे सरकारी कार्यालयक नियन्त्रणमे अछि, ओकरा लेल निर्धारित अधिकारी लग आवेदन जाएत। अहाँ सेहो चाही तँ विद्यालयक उपलब्ध कागज देबाक व्यवस्था कऽ सकैत छी।” गौरीशंकरक चेहरा थोड़े ढील भेल। “रोज विद्यालय चलाउ, आ तीन-तीन दफ्तरक हिसाब देऊ। मुदा हम किछु नुकायब नहि चाहैत छी।” शारदा धीमे कहलीह, “तँ एखन शुरू करू।”

प्रखण्ड कार्यालयक दीवाल पर चूना खसल छल। भीतरक बरामदामे एक पेटीमे पुरान लेखा-पञ्जी भरल छल, जकरा ऊपर ‘शिक्षा’ लिखल कागज लगभग मेटा गेल छल। शारदा आ रेवती जखन पहुँचलि, दुपहरियाक घंटी बजि गेल छल। बाहर खिरकी लग खड़ा शिक्षक ककरो अनुपस्थितिक हिसाब मिलबैत छलाह। एक कर्मचारी कहलक, “सूचना माँगबाक कागज? एहन आवेदन एतय पहिल बेर देखैत छी।” रेवती उत्तर देलनि, “एहि विभागक नामित लोक सूचना अधिकारी के छथि?” कर्मचारी अपन बगलमे बैसल बालेश्वर झाकेँ देखलक। बालेश्वर कहलक, “सरकारसँ आदेश आयल अछि, मुदा कार्यालयक पञ्जी एखन नव बनि रहल अछि। आवेदन प्राप्त करबामे कोनो बाधा नहि।”

शारदा फाइलक कागज हुनका सौंपलीह। बालेश्वर प्रश्न कएलक, “एहि सूचनाक अहाँ की करब?” शारदा कहलीह, “विद्यालयमे विद्यार्थीकेँ पढ़बैत छी। ओकर नामपर जे सहायता स्वीकृत अछि, तकर हिसाब जनब।” बालेश्वर मुस्की देलक। “गाँवमे लोक एखन धरि आवेदन लिखि भेटबा लेल चक्कर काटैत छल। आब अभिलेखक नकल माँगत।” ओकर स्वरमे हलकी हँसी छल कि चिंता, से रेवती स्पष्ट नहि बुझलीह। ओ केवल पुछलनि, “प्राप्तिक मुहर लगि सकैत अछि?” बालेश्वर एकटा मोट पञ्जी खोललक, तिथि लिखलक, आवेदनक विषयक संक्षिप्त उल्लेख कएलक आ प्राप्ति-संख्या दऽ देलक।

शारदा ओहि पातर कागजकेँ जेहन देखलीह, तेहन कोनो छात्र अपन पहिल उत्तीर्णताक अंकपत्रकेँ देखैत अछि। एकरा आधारपर हुनका आइ कोनो पाइ नहि भेटल, कोनो अधिकारी दोषी नहि मानल गेल, मुदा ई लिखित प्रमाण छल जे प्रश्न उचित दुआरि धरि पहुँचल। रेवती

कहलनि, “प्राप्ति सुरक्षित राखू। समयक गिनती एहि दिनसँ करब। सूचना अधिकारी सामान्य रूपसँ तीस दिनक भीतर निर्णय देबापर बाध्य छथि। जँ अभिलेख उपलब्ध नहि, कारण लिखि बताओल जायत; जँ आंशिक रोक होयत तँ ओकर वैधानिक आधार सेहो चाही।” शारदा पुछलनि, “जँ उत्तर नहि आयल?” “तखन पहिल अपीलक बाट अछि। मुदा पहिने निर्धारित समय पूरा होय दिअ।”

अधिकारीक कोठरीसँ बाहर निकलिते आँगनमे एक छोट झड़प देखल गेल। दू मासमे मानदेय नहि भेटल शिक्षक अपन अभिलेखक सुधार चाहैत छलाह। कर्मचारी कहलनि, “फाइल पटना गेल अछि।” शिक्षकक उत्तर छल, “फाइल जहाँ गेल हो, घरक चूल्हि तऽ एतहि अछि।” रेवती एक पल ठाढ़ भेलीह। हुनका शारदाक आवेदनक प्रभावक डर लगल। जँ अभिलेख सार्वजनिक भेल तँ केवल चोर पकड़बाक सम्भावना नहि, एहन त्रुटि सेहो भेटत जेकर दोषी ककरो बनौनाइ सहज नहि। शिक्षकक रोकल वेतन, विद्यार्थीकेँ नहि भेटल सहायता, निर्माणक विलम्ब—एहि सबहक कारण एकहि कार्यालयक अलग-अलग कोठरीमे नुकायल रहि सकैत अछि।

अक्टूबरक अन्तिम सप्ताहमे कमलपुर विद्यालयक रोजक दिनचर्या बदलल नहि। भोरमे सरयू कचिया लऽ खेत जा रहल छलीह; दुपहरिया फुलवा विद्यालयमे आबि घटावक प्रश्न करैत छलि। मुदा शारदा आब प्रत्येक दिन पञ्जीमे तिथि लिखैत छलीह। फुलवा एकदिन पुछलक, “मास्टरनीजी, अहाँ एतेक दिन किएक गनैत छी?” शारदा कहलीह, “एकटा पत्रक उत्तरक बाट देखैत छी।” “ककर पत्र?” “सरकारक।” फुलवा आश्चर्यसँ देखलक। “सरकार सेहो पत्र लिखैत अछि?” शारदा मुस्कुराइत कहलीह, “सरकारक लोक लिखैत छथि। उत्तर पढ़ि बुझब कि केहन पत्र आएल अछि।”

गाँवक किछु लोककेँ शारदाक काज पसिन्न नहि पड़ल। हाटमे एक व्यापारी कहलक, “कागजक फेरमे विद्यालय बन्द भऽ जाएत। बालक पढ़ब छोड़ि कचहरी जाएत।” दोसर वृद्ध उत्तर देलक, “विद्यालय खुलल रहबाक अर्थ कागज बन्द रहब नहि।” कोनो अनाम व्यक्ति अफवाह पसारलक जे शारदा प्रधानाध्यापकक स्थान चाहैत छथि। शारदा सुनलीह तऽ दुख भेल, मुदा ओ तत्काल ककरो आरोप दऽ प्रत्युत्तर नहि देलनि। ओ अपन सहशिक्षिका रुक्मिणी

मण्डलकेँ कहलनि, “हम पढ़बय लेल आएल छी। संस्था चलबनि सेहो सभक दायित्व अछि। मुदा जँ प्रश्न कएलासँ पदक लोभक आरोप लगत, तँ प्रश्न करबाक साहस के राखत?”

रुक्मिणी पहिने चुप छलीह। फेर अपन कक्षाक एक घटना सुनौलीह। बरखा मे विद्यालयक छतसँ पानि टपकय लागल छल। तीन बालिका एकटा कोनामे बैसि किताब बचबैत छलीह। शारदा कार्यालयसँ त्रिपाल माँगने छलीह, मुदा अभिलेखमे छत-मरम्मतिक खर्च बीतल वर्ष पूरा देखाओल गेल छल। “छत मरम्मतिक स्वीकृति आ वास्तविक मरम्मति अलग होइत अछि,” रुक्मिणी कहलीह। “कतेको काज आधा होइत अछि, आधा रोकल जाइत अछि। मुदा कागजमे सभ समाप्त। ई देखय चाहैत छी।” शारदा हुनकर हाथ पकड़ि कहलीह, “हम कोनो निष्कर्ष पहिनेसँ नहि लिखब। चलू, पहिले बरखा रोकबाक उपाय करी।”

विद्यालयक भोजन बनौनिहार मालती पासवान अपन दैनिक काजसँ बेसी एक शब्दक चिन्तामे रहैत छलीह—तौल। अनाजक बोरी आ रजिस्टरक मात्रा बराबर नहि देखाइत छल, मुदा कखनो बोरी कम आयल, कखनो विद्यालयमे बच्चा अधिक, कखनो छुट्टीक कारण भोजन कम बनल। मालती विद्यालयक आँगनमे राखल लोहेक तराजू देखबैत कहलीह, “हम जतेक चाउर कढ़ैत छी, ओतेक लिखू। जे नहि पहुँचल, ओकरा हमर नाममे नहि चढ़ाउ।” प्रधानाध्यापक कहलनि, “अहाँपर आरोप के कऽ रहल अछि?” मालती उत्तर देलीह, “आरोप एखन केओ नहि कएलक। मुदा आगाँ जँ कागज खुलत, सभसँ पहिने हमर नाँव देखत।” एही भयमे साधारण कर्मचारीक न्याय-संबंधी चिन्ता छिपल छल।

छठक पहिने कमलपुरमे बजार भरि गेल। सरयू देवी माटिक दीया आ सुप बेचबाक तैयारीमे छलीह। हुनकर पतिक कमाइ अस्थिर छल; बरखाक समय ईंट-भट्ठामे काज बन्द भऽ गेल छल। फुलवाक बड़की बहिन जसोदा विद्यालय छोड़ि ससुराल चलि गेल छलीह। शारदाकेँ एहिमे एक असहाय प्रश्न देखाइत छल—जँ सहायता देबामे विलम्ब होइत अछि, तँ ओकर असर भोगनिहार बच्चा फेर विद्यालय लौटत कि नहि? कागज पर रकमक भुगतानक तिथि किछु दिनक अन्तर होयत, मुदा जीवनमे ओही विलम्ब कखनो शिक्षा छूटबाक कारण भऽ जाइत अछि।

छठक भोरि घाटपर आकाशक लालिमा पानिमे पड़ल छल। सरयू ढाकक टोकरी लऽ ठाढ़ छलीह। शारदा हुनका भेटलीह। सरयू कहलीह, “हम अपन बेटीकेँ पढ़ेब। जे पुस्तक नहि भेटल, बजारसँ पुरान किनि लेब। मुदा ई जनबाक अछि जे ओकर नामपर जे पाइ अएल, से कतय रहल।” शारदा कहलनि, “समय पूरा होइत अछि। पत्र अबिते अहाँकेँ पढ़ि सुनाएब।” सरयू ओही समय एकटा विशेष आग्रह कएलनि—“सुनब, मुदा हमरा सँ हस्ताक्षर नहि कराउ। हम लिखि नहि सकैत छी; अंगूठा दऽ सकैत छी। पहिने सभ पढ़ि सुनाउ।” शारदा हुनकर बात मनमे गाड़ि लेलीह।

नवम्बरक दोसर सप्ताहमे विद्यालयमे विभागक पहिल उत्तर पहुँचल। प्रधानाध्यापक स्वयं लिफाफा लऽ शारदाक कक्षा धरि आएलाह। ओ कहलनि, “अहाँक सूचना-आवेदनक नकल अछि। हमर माध्यमसँ पठाओल गेल अछि।” शारदा पहिने विद्यार्थीसभक पठन पूरा करौलनि; फेर लिफाफा खोललीह। तीन पन्ना छल। पहिलमे विद्यालयक अनुदानक कुल स्वीकृति, दोसरमे किछु तिथिक व्यय-सार, तेसरमे शिक्षकक स्वीकृत पदक सूची। छात्रवृत्ति-वितरणक हस्ताक्षर सहित पञ्जी नहि छल; ओकर स्थानपर लिखल छल—“वितरण सम्बन्धी विस्तृत सूची विद्यालय स्तरपर उपलब्ध होयबाक सम्भावना।”

शारदा प्रधानाध्यापककेँ पूछलनि, “एहि उत्तरमे सूची विद्यालयमे अछि कहल गेल अछि। अहाँक लग कोन प्रति अछि?” गौरीशंकर किछु क्षण विचार कएलनि। “पुरान सन्दूकमे होयत। सात वर्षक कागज रहैत अछि। खोजब।” शारदा कहलनि, “हम खोजयमे मदति करब।” गौरीशंकर एतय कोनो प्रतिवाद नहि कएलनि। ओ कहला, “हँ, मुदा अभिलेख अपने हाथेँ घुमाउ नहि। लेखा देखनिहार कर्मचारीक उपस्थितिमे खोजब।” रेवतीकेँ एहि उत्तरमे उचित सावधानी देखायल। मूल अभिलेखकेँ नुकयब सेहो अनुचित, मुदा ओकर संरक्षणक बेवस्था बिना सामूहिक खोज सेहो जोखिमपूर्ण छल।

ओहि दिन रेवती पटना गेल छलीह। हुनका शारदाक समाचार पत्रमे भेटल। ओ फोनपर कहलीह, “उत्तर आंशिक अछि। जे सूचना विद्यालयमे कहल गेल अछि, ओकरा विद्यालयसँ उपलब्ध करबाक प्रयास करू। विभागक उत्तरमे जँ किछु अंश नहि देल गेल, ओकर कारण लिखल अछि कि नहि, देखू। पहिल अपीलक बात बादमे तय करब।” शारदा पुछलनि, “अहाँ

अदालत जा रहल छी?” ‘नहि,’ रेवती स्पष्ट कएलनि। “सूचना नदेबाक विषयमे पहिने अधिनियमक भीतर जे उपाय अछि, से अपनाएब। जाली हिसाबक आपराधिक शिकायत बादक अलग प्रश्न अछि। एकरा घुलाबू नहि।”

विद्यालयक पुरान कोठरीमे सन्दूक खुलल। ताहिमे पन्ना पील पड़ि गेल छल; एक कोनसँ चूहा काटि देने छल। बालेश्वर, जे प्रखण्ड कार्यालयक कर्मचारी छल, पुरान छात्रवृत्ति-पञ्जी खोजबाक लेल गौरीशंकरक आग्रहपर आएल। शारदा, रुक्मिणी आ मालती दुआरपर ठाढ़ छलीह। बालेश्वर एक-एक गठरीकेँ वर्षक अनुसार राखलक। २००२ क नामावली, २००३ क अवकाश-पञ्जी, २००४ क वेतन-प्रतिवेदन, २००५ क छात्रवृत्ति-स्वीकृति—सभ मिलल-जुलल छल। एक गठरीमे भीजल पन्नाक बीच मसिक दाग छल, जकरा पढ़ब कठिन।

बालेश्वर कहलक, “एतय जे कागज अछि, से पूर्व वर्षक मूल प्रविष्टि। हम ओहिमे संशोधन नहि करब। जतेक नकल बनत, मूलसँ मिलाकय बनत।” गौरीशंकर ओकरा धन्यवाद देलनि। शारदा एक कागज देखलनि जाहिपर फुलवाक नाम छल; ओकर सम्मुख भुगतानक कोठरीमे आड़ी रेखा खिंचल छल। दोसर सार-विवरणमे ओहि वर्गक पूरा छात्रवृत्ति राशि वितरण दिखाओल गेल। शारदा तुरन्त कहलनि, “एहि दू पन्नामे अन्तर अछि।” गौरीशंकर उत्तर देलनि, “सार प्रखण्डक कुल राशि होयत; छात्राक व्यक्तिगत भुगतान नहि।” शारदा चुप भेलीह। हुनका एहि सम्भावनाकेँ सेहो जाँचबाक छल।

ओहि साँझ गौरीशंकर अपन घरमे पत्नी सीताकेँ कहला, “विद्यालयमे जे सन्दूक छल, ओकरा खोलब पड़ल। लोक सोचैत अछि जे प्रधानाध्यापक सभ कागज अपन हाथेँ लिखैत अछि। एतय दस वर्षमे पाँच गो अधिकारी बदलल।” सीता पुछलनि, “तँ कागज ठीक अछि?” “सभ ठीक अछि, ई हम कहि नहि सकैत छी। जे दिन हम एतय अएलहुँ, ताहिसँ पहिलुक हिसाब सेहो अछि।” सीता कहलीह, “अहाँ जँ नहि जनैत छी, तँ अज्ञान कहू। जे जानैत छी, तकर सत्य कहू।” गौरीशंकरकेँ पत्नीकेँ उत्तर देबाक लेल कोनो तर्क नहि भेटल।

दिसम्बरक पहिल सप्ताहमे रेवती पुनः कमलपुर अएलीह। तखन धरि शारदाकेँ प्राप्त उत्तरक तीस दिनक समय पूरा भऽ चुकल छल, आ किछु माँगल जानकारी एखन धरि उपलब्ध नहि भेल छल। ओ सभ उपलब्ध अभिलेखक सूची तैयार कएलनि। शारदाक पहिल आवेदनक

प्रति, कार्यालयक प्राप्ति, आंशिक उत्तर, विद्यालयक सन्दूकसँ देखाओल दू पन्नाक विवरण—सभ क्रमबद्ध कएल गेल। रेवती कहलीह, “एखन अपीलमे माँग स्पष्ट रखू—जे सूचना माँगल गेल आ नहि भेटल, ओकरा देब अथवा वैधानिक कारण बताउ। अपील अधिकारी अभियोजनक न्यायाधीश नहि छथि; हुनकर काज सूचना-निर्णयक परीक्षण अछि।” शारदाक पहिल अपील लेल तैयार निवेदनमे कोनो व्यंग्य नहि छल। ओ लिखने छलीह जे सूचना अधिकारीक उत्तरमे स्वीकृत अनुदानक समष्टि भेटल, मुदा विद्यालयकेँ प्राप्त वास्तविक रकमक पूर्ण विवरण, छात्रवृत्तिक वितरण-पञ्जीक नकल आ शिक्षकक पदस्थिति सम्बन्धी माँगल किछु अभिलेख नहि भेटल। “हमरा जे उपलब्ध अछि, ओकर उपयुक्त नकल देल जाय; जे अभिलेख उपलब्ध नहि अछि, ओकर अनुपलब्धताक तथ्य लिखित रूपमे स्पष्ट कएल जाय।” रेवती ई वाक्य देखिकय प्रसन्न भेलीह। आरोपसँ पहिने अभिलेखक अस्तित्वक निश्चितता चाही—ई हुनकर पिताक पुरान शिक्षा छल।

शारदा एतबा कागजसँ थाकि गेल छलीह। ओ कहलनि, “छात्राकेँ पढ़बैत घड़ी शब्द सरल चाही। एतय एक शब्द लेल आधा दिन बितैत अछि।” रेवती पुछलनि, “तखन छोड़ि देब?” “नहि,” शारदा तुरन्त उत्तर देलनि, “एहि विद्यालयक कागज पढ़बा बिना हम बच्चाकेँ सच लिखबाक उपदेश कोना देब?” ओ अपन थकानपर हँसलीह। रेवती बुझलीह जे एहि स्त्रीक साहस ऊँच स्वरमे नहि, दिन-दिनक अभ्यासमे अछि। शारदाक कक्षा अबहो नियमित चलैत छल; झूठ पकड़बाक शौक ओकरा पाठ्यक्रमसँ नहि हटा सकल छल।

प्रखण्ड कार्यालयक पहिल अपील अधिकारीक कोठरीमे छोट एक भेंट निर्धारित भेल। ओहि दिन अपीलक सामान्य अभिलेख परीक्षण भेल; कोनो खुलल अदालती विचारण नहि। अधिकारी उमाशंकर प्रसाद आवेदनक विवरण पढ़लनि आ सूचना अधिकारीसँ पुछलनि जे शेष अभिलेख कतय अछि। बालेश्वर कहलनि, “विद्यालयक सन्दूकमे किछु भेटल, प्रखण्डक वेतन-प्रतिवेदन अलग स्थानपर अछि। मूल प्रमाणित नकल लेल जाँच चाही।” अधिकारी प्रश्न कएलनि, “तँ लिखित उत्तरमे स्पष्ट स्थिति किएक नहि देल गेल?” बालेश्वरक लग सहज उत्तर नहि छल। “एहि तरहक आवेदनक अभ्यास कम अछि,” ओ कहलनि। अधिकारी उत्तर देलनि, “अभ्यास कम रहब नियमक स्थान नहि लऽ सकैत अछि।”

शारदाकेँ बजबाक अवसर भेटल। ओ कहलीह, “हम सभ विद्यालयक दू सूची देखलहुँ। एकमे फुलवाक भुगतानक स्थान खाली अछि; दोसरमे ओकर वर्गक पूर्ण वितरण लिखल अछि। ई अन्तरक स्पष्टीकरण चाहैत छी, मुदा पहिने नकल चाहैत छी ताकि ककरो गलत आरोप नहि लगाबी।” अधिकारी पुछलनि, “अहाँ शिक्षक छथि?” “हँ।” “तखन अपन प्रधानाध्यापककेँ पहिने किएक नहि कहलहुँ?” “कहलहुँ। उहाँ प्रखण्डसँ पूछबाक कहलनि। प्रखण्ड फेर विद्यालयसँ पूछलक।” उमाशंकर एक क्षण मुस्कुरौलनि नहि। हुनकर लेखनिक केँ मात्र आदेश-टिप्पणी लिखबाक कहलनि।

उमाशंकर निर्णय तत्काल नहि देलनि। उपलब्ध अभिलेखक सूची, प्रखण्ड कार्यालयक पास जे नकल अछि तकर विवरण आ निबन्धित समयमे उपयुक्त सूचना उपलब्ध करबाक प्रश्नपर लिखित आदेश दयबाक बात कहलनि। शारदा बाहर अएलापर पुछलनि, “ई अदालतक फैसला भेल?” रेवती कहलीह, “नहि। ई सूचना-अधिकारक अपीलीय प्रक्रिया अछि। एकर उद्देश्य सूचना देल वा नहि देल गेल तकर प्रश्नपर निर्णय अछि। जँ कागजमे जालसाजी होयत तँ ओकर जाँच लेल पृथक विधिक मार्ग अछि।” शारदा सिर हिलौलीह। एक छोट अधिकारीक कोठरी आ अदालतक न्यायिक मंचमे अन्तर आब हुनका स्पष्ट होइत गेल।

दिसम्बरक मध्यमे शिक्षा कार्यालयक लेखा-शाखासँ एक गठरी विद्यालय पहुँचल। सीलबन्द लिफाफामे प्रमाणित नकल नहि, पहिने जाँच लेल माँगल पुरान प्रतिवेदनक छाया प्रति छल। गौरीशंकर शारदाकेँ बजौलनि। “ई देखू,” ओ कहलनि, “छात्रवृत्तिक हिसाबक संग शिक्षकक वेतन-सार सेहो अछि। हमरा बुझाइत अछि जे पुरान वर्षक मिलान गलत भऽ गेल अछि।” शारदा पुछलनि, “गलत मिलान केनाइ अपराध अछि?” गौरीशंकर कहलनि, “नहि अवश्य। कखनो भूल होइत अछि। मुदा जे गड़बड़ी सुधारबाकेँ चाही, ओकरा वर्षभरि अनदेखा कएल जाए तखन प्रश्न बढ़ैत अछि।” एहि पहिल स्पष्ट स्वीकारसँ शारदाकेँ प्रधानाध्यापकक प्रति किछु भरोसा लौटैत देखायल।

लेखा-शाखाक प्रतिवेदनमे शिक्षकक नाम वर्णक्रमसँ नहि, पदक्रमसँ राखल छल। प्रधानाध्यापक, सहायक शिक्षक, अस्थायी व्यवस्था, स्वीकृत रिक्ति—एहि चारि शीर्षक छल। शारदा कागज उलटैत छलीह तखन एक नामपर आँखि ठहरि गेल—माधवेश्वर मिश्र। नामक

आगाँ पद लिखल छल, मासिक उपस्थिति आ स्वीकृत वेतनक सार सेहो। शारदाकेँ स्मरण छल जे विद्यालयमे हुनका ‘माधव बाबू’ कहैत छलाह। ओ वर्षसभ पहिने बच्चासभकेँ नदीक पाठ पढ़बैत छलाह; कक्षाक दीवालपर अपन हाथसँ कोसीक नक्शा बनौने छलाह। मुदा ओ आब जीवित नहि छथि।

“माधव बाबूक नाम एतय किएक?” शारदा पूछलनि। गौरीशंकर पन्ना लग आँखि झुकौलनि। “हो सकैत अछि पुरान देयक हो। मृत्युक बादक बकाया वेतन सेहो निर्गत होइत अछि। नकलमे जे कुल राशि देखाइत अछि से वास्तविक भुगतान नहि, स्वीकृति सेहो होयत।” “मुदा एतय तिथि २००४ क अछि,” शारदा कहलीह। “मृत्युक अगिला वर्ष।” गौरीशंकर उत्तर देलनि, “एहि लेल पूरा मूल वेतन-पञ्जी आ प्राप्ति देखब। एक पन्नासँ कोनो निष्कर्ष निकालू नहि।” एतय पहिल बेर हुनकर सावधानी शारदाकेँ मात्र बचावक उपाय नहि, आवश्यक विधिक विवेक बुझायल।

शारदाकेँ माधवेश्वरक घरक स्मृति छल। पत्नीक नाम कलावती देवी। दू बेटा छलाह; बड़का पढ़ाइ छोड़ि हाटमे दुकान सम्भालैत छलाह। माधवेश्वरक मृत्यु २००३ क चैत्रमे लम्बा अस्वस्थताक बाद भेल छल। शारदा ओहि दिन विद्यालयमे छलीह। पूरा परिसरक बच्चा आँसू बहबैत छल। हुनकर तस्वीर प्रधानाध्यापकक कोठरीक दीवालपर एखनो टाँगल छल, जकर काँचपर धूलि जमा भऽ गेल छल। ओहि तस्वीरक नीचाँ आइ लिखल वेतन-प्रविष्टि शारदाकेँ विचित्र लागल—स्मृति आ सरकारी हिसाबमे समय दू अलग गति सँ चलि रहल छल।

ओहि साँझ शारदा कलावतीक घर गेलीह। आँगनमे एक छोट तुलसी चौरा छल, आ कोनमे धान सुकायल छल। कलावती शारदाकेँ देखिते भीतर बजौलीह। “विद्यालयसँ की बात अछि?” ओ पुछलनि। शारदा सीधा प्रश्न नहि कएलनि। पहिने बच्चासभक हालचाल पुछलनि, माधवेश्वरक पुरान पाठक चर्चा कएलनि। कलावती कहलीह, “ओ बच्चाकेँ कहल करैत छलाह जे नदीक नक्शा कागजमे छोट होइत अछि, मुदा पानी ओकर बात नहि मानैत।” दुनू स्त्री एक क्षण हँसलीह। फेर शारदा वेतनक प्रतिवेदनक बात उठौलीह।

कलावती सुनिकय चकित भेलीह, मुदा क्रुद्ध नहि। “मृत्युक बाद किछु बकाया वेतन भेटल छल,” ओ कहलीह। “दू-तीन कागजपर अंगूठा देने रही। बहुत दिन दौड़य पड़ल छल। सभ

रकम एक बेर नहि भेटल। कतेक भेटल ठीक हिसाब हमरा एखन याद नहि।” शारदा पूछलनि, “कागज राखने छी?” “पुरान सन्दूकमे होयत।” कलावती एक छोट लाल कपड़ामे बन्हल कागजक गठरी बाहर कएलनि। पत्नी-पतिक विवाहक पुरान चित्र, मृत्यु प्रमाणपत्र, एक जमा-पावती आ किछु वेतन-बकायक लिखित सूचना भेटल। शारदा कागजक क्रम याद कएलनि, मुदा अनुमति बिना कोनो वस्तु लऽ नहि गेलीह।

कलावतीक बड़का बेटा नवीन भीतर आबि गेल। “माए, ई कागज के देखैत अछि?” ओ किछु कठोर स्वरमे पुछलक। शारदा कहलीह, “विद्यालयक हिसाबमे अहाँक पिताक नाम देखलहुँ। ई जाँचब आवश्यक अछि जे बकाया वेतनक सही लेखा अछि कि कोनो भिन्न प्रविष्टि।” नवीनक आँखि लाल भऽ गेल। “हमर बाबू जीवित छलाह तखन वेतन लेल दफ्तरक चक्कर काटलनि। मृत्यु भेल तखन हम सभ कागज लऽ घूमलहुँ। आब वर्षक बाद बाबूक नाम उठत तँ लोक कहत हम गलत पाइ लेने छी।” शारदा ओकरा समझौलीह, “ककरो दोष नहि लगाओल गेल अछि। दोष लगेबाक पहिने सत्य जनबाक प्रयत्न अछि। अहाँक मायक अधिकारक रक्षाक लेल सेहो कागज आवश्यक अछि।”

नवीनक कठोरता धीरे-धीरे कम भेल। ओ अपन पिताक मृत्यु प्रमाणपत्रक नकल तैयार करबाक अनुमति देलक, मुदा मूल कागज घरमे रखबाक शर्त रखलक। शारदा स्वीकार कएलनि। ओ घरसँ निकलैत समय कलावती अपन हाथ धरि कहलीह, “माधवक नाममे जे पाइ छल, ओकर हक हमरा रहय। मुदा जँ ओकर नामपर केओ मरलाक बाद पाठ पढ़ौने देखबैत अछि, तँ ओ ककर हकमे लिखल जाइत अछि?” शारदा एहि प्रश्नक उत्तर तखन नहि देलीह। कारण ओ स्वयं जनैत नहि छलीह जे अभिलेखमे उपस्थिति लिखल अछि कि केवल बकाया वेतनक आदेश।

कातिकक दीपावलीक बादसँ अगहनक धान कटि गेल छल। कमलपुरक रास्ता पर पुआलक गन्ध छिड़िआ गेल छल। शारदा जखन विद्यालय पहुँचलि, गौरीशंकर एक फाइल लऽ ठाढ़ छलाह। “माधव बाबूक पुरान वेतन-पञ्जी भेटल,” ओ कहलनि। “ओहिमे मृत्यु पछातिक एक वर्षक प्रविष्टि अछि, मुदा अलग-अलग कोठरीमे अर्थ भिन्न अछि। एहिठाम “बकाया स्वीकृत” आ ओतय “उपस्थिति” जेकाँ शब्द लिखल अछि। हमरा लेखा-बिभागसँ मिलेनाइ

आवश्यक अछि।” शारदा फाइल भीतर देखलीह। सचमुच एक समान नाम अलग पन्नापर अलग अर्थक संग छल।

रेवतीकेँ पत्र लिखल गेल। ओ दरभंगामे अपन कार्यालयसँ उत्तर देलनि, “मृत्यु प्रमाणपत्रक नकल, वेतन-पञ्जीक प्रमाणित प्रति आ भुगतानक वास्तविक निर्गमक विवरण तीनू अलग जुटाउ। मुदा कलावतीक निजी सूचना प्रकाशित नहि करू। हुनकर नामक सम्भावित दुरुपयोगक समाचार पहिने अखबारमे देब उचित नहि। निरीक्षण आ अपीलक विधिक मार्ग पहिने पूरा होय।” पत्रक अन्तिम पाँतिमे रेवती लिखने छलीह—“अभिलेख पर प्रश्न करब किसी व्यक्ति पर आरोप करबाक समान नहि अछि।”
शारदाक पहिल अपीलपर दिसम्बरक अन्तिम भागमे लिखित निर्देश पहुँचलक। अधिकारी अभिलेखक उपलब्धताक स्थिति स्पष्ट करबाक, जे नकल वैधानिक रूपसँ देल जा सकैत अछि तकर आपूर्ति करबाक आ अनुपलब्ध कागजक कारण लिखबाक कहलनि। एहि आदेशमे विद्यालयक ककरो कर्मचारीक अपराधक निर्णय नहि छल। शारदा आदेशक एक पृष्ठ पर लाल पेंसिलसँ चिह्न लगौलीह—‘प्रमाणित नकल’। हुनका बुझायल जे कागज मात्र देखब आ ओकर स्रोतसँ प्रमाणित प्रति पाबब भिन्न बात अछि। रेवतीकेँ ओ तखन फोन कएलनि। रेवती कहलनि, “आब धैर्य राखू। विधिसम्मत नकल भेटला पर ओकर अनुकृति सुरक्षित रखू, मूलसँ तुलना करू। आब जे बात कहब, तकर आधार पहिले सँ अधिक स्पष्ट होयत।”

नव नकल अएलापर फुलवाक वितरणक कथित प्राप्ति-पञ्जीमे अंगूठाक छाप देखायल। सरयू देवीक नामक आगाँ छाप छल, मुदा दिन २००४ क भादव मासक। सरयू जखन कागज देखलीह, हुनकर चेहरा बदलि गेल। “ई हमर छाप नहि,” ओ कहलीह। शारदा तुरन्त नहि कहलनि जे छाप जाली अछि। “अहाँ कखन-कखन विद्यालयमे अंगूठा देने छी, स्मरण करू,” ओ कहलीह। सरयू कहलनि, “बालिकाक दाखिलाक समय, आ एक बेर भोजनक पञ्जीमे। मुदा भादव मासक एहि दिन हम अपन मायक घरमे रही। ओहि समय बेटीक बुखार छल, हम ओकरा संग ओतहि रही।” शारदा उत्तर देलनि, “ओतय रहबाक गवाही भेटि सकैत अछि, मुदा एहि अभिलेखक मूल परीक्षण सेहो चाही।”

सरयू नाराज होइत कहलीह, “अहाँ सभ कागजक बात करैत छी। हम कहैत छी जे हमरा पाइ नहि भेटल। हमरा कतेक बेर बोलय पड़त?” शारदा हुनका ठामहि बैसौलीह। “जतेक आवश्यक हो, सेतो कम हो,” ओ कहलीह। “मुदा जँ ककरो विरुद्ध आरोप उठाओल जाए, तँ ओकरा सुनबाक अधिकार सेहो अछि। हम अहाँक पीड़ा घटाबय चाहैत छी, नव अन्याय पैदा नहि।” सरयू पहिने ई सुनिकय चुप रहलीह। फेर धीर स्वरमे कहलीह, “जकर पाइ गुम भेल, ओकरा न्याय धरि पहुँचबाक बाटे एतेक लम्बा किएक?” एहि प्रश्नक उत्तर शारदा कतहु नहि खोजि सकलीह।

रेवती सरयू आ शारदासँ दरभंगामे भेटलीह। ओ पञ्जीक प्रमाणित प्रति, सरयूक बयान आ विद्यालयक उत्तर अलग-अलग रखलीह। “हुनकर अंगूठाक छापक विषयमे हम एखन किछु अन्तिम नहि कहब,” रेवती कहलीह। “मुदा जँ हुनकर हस्ताक्षर अथवा अंगूठाक छाप बिना अनुमति लेनदेनक प्राप्ति बतबैत अछि, तँ जालसाजीक आशंकासँ सम्बन्धित शिकायतक विधिक बाट अछि। पुलिसक जाँच लेल निवेदन आ न्यायिक दण्डाधिकारीक समक्ष परिवाद—दूनूक उपयुक्तता परिस्थिति अनुसार अलग विचार करब।” शिवनारायण लग बैसल छलाह। ओ बीचमे कहलनि, “सरयूकेँ ई बुझब आवश्यक अछि जे न्यायालयमे अपन कथनक सत्यताक उत्तरदायित्व हुनकर अछि। हुनकर क्रोध हमरा बुझाइत अछि, मुदा कथन ओही कहथि जे स्वयं जानैत छथि।”

सरयू शिवनारायण दिसि देखलीह। “हम लिखि नहि सकैत छी,” ओ कहलीह, “मुदा झूठ किएक कहब?” शिवनारायण उत्तर देलनि, “लिखब जननाइ सत्यक एकमात्र प्रमाण नहि। मुदा अपन स्मृतिमे जहाँ सन्देह अछि, से सन्देह सेहो कहू। अहाँ २००४ क तिथि पूरा स्मरण करैत छी कि अपन मायक घर गेल समयक स्मृतिसँ जोड़ैत छी?” सरयू सोचलीह। “मायक घर गेल छलहुँ, तिथि तऽ नहि गनने रही। खेतमे पानि भरल छल। जसोदाक मामा हमरा आनय आएल छलाह।” शिवनारायण कहलनि, “एहि बातक गवाही खोजि सकैत छी। अहाँ अपन यादक सीमाकेँ नहि नुकाउ।”

दरभंगाक न्यायिक दण्डाधिकारीक न्यायालयक बरामदामे शारदा पहिल बेर सरयू संग पहुँचलि। समक्ष राखल लिखित परिवादमे ककरो नाम बिना प्रमाणक निश्चित अपराधी बनाकय

नहि लिखल गेल। कथित फर्जी प्राप्तिक तथ्य, विद्यालयक अभिलेख आ सरयूक व्यक्तिगत कथन संक्षेपमे प्रस्तुत छल। न्यायालयक कर्मचारी आवेदन प्राप्त करबाक विधि बतौलक। सरयूकेँ शपथपूर्वक अपन जानकारी रखबाक अवसर निर्धारित भेल; ओ कहलीह जे छात्रवृत्ति धन हुनका नहि भेटल आ सम्बन्धित दिन ओ विद्यालयमे प्राप्ति नहि देने छलीह। हुनकर कथनक अन्य भाग प्रमाणक परीक्षण लेल शेष राखल गेल।

न्यायिक दण्डाधिकारी प्रश्न कएलनि, “अहाँ ई छाप अपन नहि मानैत छी?” सरयू उत्तर देलनि, “हम नहि जनैत छी जे ई छाप के देलक। मुदा ओहि पाइ लेल हम अंगूठा नहि देने रही। ई हमरा याद अछि।” दण्डाधिकारी पुछलनि, “विद्यालयक ककरो व्यक्तिकेँ एहन करैत देखलहुँ?” “नहि,” सरयू कहलीह। “तेँ जे नहि देखल, ओकर नाम कहब नहि।” एतेक सरल उत्तरमे शिवनारायणक बहुवर्षक शिक्षा जकाँ किछु छल। रेवती एक क्षण सरयू दिसि देखलीह। ओ स्त्री निरक्षर छलीह, मुदा अपन ज्ञानक सीमा अदालतमे स्पष्ट कहि सकैत छलीह।

न्यायालय आवेदनक अगिला विधिसम्मत परीक्षण लेल समय निर्धारित केलक। तत्काल कोनो व्यक्तिक गिरफ्तारी नहि भेल, नहि फर्जी छापक निष्कर्ष दर्ज भेल। सरयू बाहर अएलापर पुछलीह, “एतेक कहला पछाति सेहो आज किछु नहि भेल?” रेवती कहलीह, “आइ अहाँक बात न्यायालयक अभिलेखमे आयल। ई छोट बात नहि। मुदा अपराध सिद्ध करब अलग बाट अछि।” सरयू ओहि समय संतुष्ट नहि भेलीह। हुनकरा विद्यालयसँ बेटी लेल पाइ चाही छल। न्यायालयक प्रक्रिया अपन गतिसँ चलैत छल। दुनू समय एक-दोसरसँ मेल नहि खाइत छल।

बरामदाक एक कोनमे निर्मला साह अपन बेटा अमरेश संग ठाढ़ छलीह। नीलकान्तक पुरान निर्णयक पश्चातवर्ती एक कागजक प्रति लेल आएल छलीह। रेवती हुनका देखिते भेटलीह। अमरेश आब पहिनेसँ लम्बा भऽ गेल छल। ओ शारदा आ सरयूकेँ देखिकय पुछलक, “एहि सभक काज की?” रेवती कहलनि, “विद्यालयक छात्रवृत्तिक हिसाब।” अमरेश एक क्षण चुप रहल। फेर कहलक, “फेर बहीक नाम?” रेवतीकेँ ओकर पहिल बचपनक प्रश्न स्मरण आयल —“बाबूजी चोर छथि?” आब युवक अपन अनुभवसँ अभिलेखक सामाजिक असर बुझैत

छल। “हँ,” रेवती कहलीह, “मुदा एहि बेर जे नाम अछि, ओकर घरक बेटी विद्यालय जाइत अछि।”

निर्मला सरयूकेँ पुछलीह, “बच्चीक कतेक बरख?” “नौ।” “पढ़ैत अछि?” “हँ, मुदा पुस्तक आधा अछि।” निर्मला अपन हाथमे रखल छोट कपड़ाक थैलीसँ एक कापी निकालि सरयूकेँ देलनि। “ई हमर दुकानमे बचल छल। ले जाउ।” सरयू पहिने असहज भेलीह, मुदा निर्मला कहलीह, “ई छात्रवृत्तिक बदला नहि अछि। ओ अपन अधिकारसँ भेटबाक चाही।” एहि वाक्यक बाद कापीक छोट उपहार दया नहि, स्त्रीसभक बीच सम्मानक सम्बन्ध बनि गेल। रेवती देखलीह जे पाँच वर्ष पहिने न्यायालयक बरामदामे ठाढ़ निर्मला आइ दोसर स्त्रीक दुख बिना निर्णयक प्रतीक्षा कएने बुझि सकैत छथि।

शारदा न्यायालयक बरामदामे ठाढ़ एक क्षण लोकसभक चेहरा देखैत रहलीह। केओ पैतृक जमिनक कागज लेने छल, केओ विवाहक विवाद, केओ पुत्रक गिरफ्तारी, केओ मजदूरीक अभिलेख। हुनकर विद्यालयक मामिला एतय एक छोट धागा छल। मुदा ओहि धागाक अन्तमे फुलवा जेकाँ बालिकाक भविष्य बन्हल छल। रेवती कहलनि, “अहाँ जँ विद्यालयसँ घुरि घर जाइत समय एकटा बात स्मरण राखी, तँ ई राखू—अदालतमे पहुँचलाक अर्थ सम्बन्ध तोड़ब नहि। प्रधानाध्यापक, शिक्षक, अभिभावक सभकेँ कालिहयो एकहि विद्यालय चलएबाक अछि।” शारदा कहलीह, “से हमरा सबसँ बेसी कठिन लगैत अछि। प्रश्न केलहुँ तँ एक पड़ोसी हमरा देखि बात बन्द कऽ देलक। मुदा विद्यालयमे बच्चाक सामने हम ओहि घरक बेटाक नामेँ पुकारैत छी।” रेवती उत्तर देलनि, “एहिमे अहाँक शिक्षाक बल अछि। अपराध सिद्ध भेल तँ उत्तरदायित्व निर्धारित होयत; त्रुटि भेल तँ सुधार होयत; आ किछु आरोप असत्य निकलल तँ निर्दोषक प्रतिष्ठा बचेनाइ सेहो आवश्यक होयत।” शारदा आगाँ बढ़लीह। हुनकर आँखि सामनेक बरामदामे बैसल एक वृद्धापर पड़ल, जे नामक पहिल अक्षर सही लिखबाक प्रयास करैत छलि। शारदा हुनका कागज सीधा करबाक मदति कएलनि। वृद्धा धन्यवाद कहलीह; हुनका नहि बुझायल जे मदति करनिहार स्त्री आइ अपने एक पैघ लिखित प्रश्नक बाट पर निकलल अछि।

गाँव घुरला पर शारदा विद्यालयक प्रधानाध्यापककेँ सरयूक परिवादक विषयमे बतौलीह। गौरीशंकरक चेहरा फक्क भऽ गेल। “हमरा विरुद्ध मामला?” ओ पुछलनि। शारदा कहलनि, “अभिलेखमे जे संदिग्ध प्राप्ति अछि, ओकर जाँचक प्रश्न अछि। एखन न्यायालय कोनो व्यक्ति दोषी मानि नहि लेलक।” गौरीशंकर कुर्सीपर बैसि गेलाह। “हम जखन पद सम्हारलहुँ, पुरान रजिस्टर एतय छल। जँ हमर हस्ताक्षर नहि अछि, तँ हमरा सेहो बचावक अवसर चाही।” “अवश्य,” शारदा उत्तर देलनि। “सेहो सूचना-प्रक्रियाक उद्देश्य अछि—कागजक स्रोत स्पष्ट हो।”

ओहि साँझ विद्यालयमे रुक्मिणी छात्रसभक निबन्धक कापी जाँचैत छलीह। फुलवा ‘हमर विद्यालय’ शीर्षकपर पाँच वाक्य लिखने छलि। पहिल—हमर विद्यालयमे नीमक गाछ अछि। दोसर—हम सभ ओतय पढ़ैत छी। तेसर—बरखामे छप्परसँ पानि टपकैत अछि। चारिम—हमरा पुस्तक कम अछि। पाँचम—हमर मास्टरनीजी कागज पढ़ैत छथि। रुक्मिणी अन्तिम वाक्यपर मुस्कुराइत लाल स्याही नहि लगौलीह। ओ सोचलीह जे बालिकाक दृष्टिमे शिक्षकक पाठ आ शिक्षकक अभिलेख-पठन अलग काज नहि रहि गेल अछि। दुनू एकहि विद्यालयक कथा अछि।

शारदा रातिमे कलावतीक घरसँ भेटल कागजक विवरण अपन कापीमे मिलबैत छलीह। पहिल पन्नामे माधवेश्वर मिश्रक मृत्यु चैत्र २००३ मे लिखल छल। दोसरमे मृत्युक पश्चात् स्वीकृत बकाया वेतनक संकेत छल, जकरा कलावती एक समय प्राप्त कएने छलीह। तेसरमे प्रखण्ड लेखा-पञ्जीक सार छल। एतय एक नव विसंगति देखायल—२००४ क किछु महीनाक आगाँ केवल ‘बकाया स्वीकृत’ नहि, ‘नियत उपस्थितिक आधारपर वेतन-गणना’ लिखल छल। ई शब्द वैध बकाया-सारक संग मेल नहि खाइत छल।

ओ राति रेवतीकेँ पत्र लिखलीह। “माधवेश्वर बाबूक पत्नी बकाया वेतन भेटबाक बात स्वीकार करैत छथि। मुदा पुरान पञ्जीमे मृत्यु पछाति कतिपय मासक उपस्थितिक आधारपर हिसाब लिखल देखाइत अछि। कोन अधिकारी कखन ई प्रविष्टि कएलनि, स्पष्ट नहि। मूल अभिलेखक परीक्षण आवश्यक अछि। एहि विषयमे अहाँक मत चाहैत छी।” पत्र लिखिते शारदाकेँ असुविधा भेल जे ओ एक मृत शिक्षकक बारेमे एतेक कागज पसरबैत छथि। हुनका

माधवेश्वरक मुस्कुराहट स्मरण आयल—पाठमे नदीक नक्शा बनबैत समय ओ कहने छलाह, “जे धार कागजमे सीधा देखाइत अछि, मैदानमे ओ बहुधा टेढ़ रहैत अछि।”

अगिला दिन शारदा विद्यालयक दीवालपर टाँगल माधवेश्वरक तस्वीर लग गेलीह। काँचक धूलि अपन साड़ीक कोरसँ पोंछलीह। गौरीशंकर भीतर आएलाह। “अहाँ एतय?” ओ पुछलनि। “माधव बाबूक पढ़ाओल नदीक नक्शा एखन देखैत छी,” शारदा कहलीह। “हुनकर नामक पञ्जी देखलासँ हमरा हुनकर पढ़ाओल स्मरण भेल।” गौरीशंकर तस्वीर दिसि देखलनि। “ओ नीक शिक्षक छलाह। हुनकर दाह-संस्कारमे हम गेल रही।” शारदा चकित भेलीह। “अहाँ सेहो?” “हँ। हुनकर घर हम जनैत छी। जँ पुरान हिसाबमे त्रुटि अछि, तँ सत्य हमरा लेल सेहो महत्त्वपूर्ण अछि।”

ठीक ओहि समय बालेश्वर प्रखण्ड कार्यालयसँ एक प्रमाणित नकल लऽ पहुँचल। कागजमे तीन तिथिक आगाँ माधवेश्वर मिश्रक नाम, विद्यालयक उपस्थितिक कोठरीमे चिह्न, आ वेतनक स्वीकृत रकम दर्ज छल। गौरीशंकर तुरन्त नकलक मूल अभिलेख-संख्या देखलनि। “ई कोन पञ्जीसँ बनल?” बालेश्वर कहलनि, “जकर मूल प्रखण्डक कोषागार-सम्बद्ध अभिलेखमे सुरक्षित अछि। अभिलेखक स्रोतक मिलान लेल अधिकारी अलग पत्र पठौने छथि।” शारदा पुछलनि, “ई महीना हुनकर मृत्युक बादक नहि अछि?” बालेश्वर सिर हिलौलक। “हँ। एतय जो लिखल अछि, ओहि कारणेँ मूल देखबाक आवश्यकता अछि।”

साँझक ढलैत उजासमे विद्यालयक बरामदा सुनसान भऽ गेल। नीमक पात माटिपर खसि रहल छल। शारदा प्रमाणित नकलकेँ किताबक भीतर राखलनि, ताकि कोन नहि मुड़य। पहिल पन्नामे छात्रवृत्तिक कुल वितरण, दोसरमे फुलवाक नाम लग विवादित प्राप्ति, आ तेसरमे माधवेश्वर मिश्रक मृत्यु पछातिक उपस्थितिक प्रविष्टि छल। ई तीनू कागज एकहि अपराधक प्रमाण नहि छल। सम्भव छल जे एकर कारण तीन अलग त्रुटि होथि। सम्भव ईहो छल जे किछु प्रविष्टिक पाछाँ जानबूझि छल कएल गेल हो। मुदा जाँच बिना दुनूमे सँ कोनो निष्कर्ष उचित नहि छल।

शारदा पञ्जी बन्द कए रेवतीकेँ पठेबाक पत्रमे अन्तिम वाक्य जोड़लनि—“हम मृत व्यक्तिक नाम पर लिखल वेतनक बात कहि सकैत छी; मुदा ओ पैसा के लेने अछि, से एखन

नहि जनैत छी।” बहुत देर धरि ओ एहि वाक्यकेँ देखैत रहलीह। ओहि राति हुनका नीलकान्त साहक विवादित बहीक पैंतालीसम पन्नाक कथा स्मरण भेल, जे रेवती सुनौने छलीह। एक पन्नापर नाम छल, मुदा नामक पाछाँ मनुष्यक वास्तविक भूमिका अनिश्चित। आब एक मृत शिक्षकक नाम सरकारी लेखामे उपस्थित छल, जखन कि हुनकर खाली आसनपर वर्षोंसँ आन लोक पढ़बैत छल।

दुआरपर विद्यालयक चौकीदार शंकर पासवान किवाड़ बन्द करबाक लेल ठाढ़ छलाह। ओ कहला, “मास्टरनीजी, आजहुँ कागज पूरा नहि भेल?” शारदा धीरे उत्तर देलनि, “कागज पूरा भेल तऽ प्रश्न शुरू भेल।” चौकीदार बुझि नहि सकलाह। ओ किवाड़क सिटकिनी लगा देलनि। भीतर दीवालपर नदीक पुरान नक्शा छायामे रहि गेल। कागजक धार सीधा छल, मुदा बाहरक माटिमे पानी अपन बाटेँ बहि रहल छल। एखन न्यायालयमे कोनो अपराध सिद्ध नहि भेल छल; केवल एकटा नाम अपन लिखल समयसँ असहमत ठाढ़ छल।

अध्याय १० — धनशोधनक नव विधि

दरभंगा, कमलपुर आ मुम्बई, सन् २००५–२००६

अगहनक धान कमलपुरक खलिहानमे सुखायल छल, मुदा शारदा देवीक विद्यालयक पञ्जी एखनो पूरा नहि सुकल छल। कागजक एक पन्नापर वर्ष २००४ क तिथिक आगाँ माधवेश्वर मिश्रक नाम लिखल छल। शिक्षकक देहावसान २००३ मे भऽ गेल छल, तइयो बादक महिनासभक आगाँ उपस्थिति देखाओल गेल छल। शारदा ओहि पन्नापर अँगुरी राखि बहुत बेर बैसलीह। हुनका ककरो चोरी पकड़बाक उत्साह नहि छल; हुनकरा ई भय छल जे जँ मृत्यु पछाति किछु बकाया वेतन वैध रूपेँ पत्नीकेँ भेटल हो आ ओहि भुगतानकेँ गलत बुझि लेल जाए, तँ एक विधवाक सम्मानपर अनावश्यक आघात पड़त। आ जँ कोनो दोसर व्यक्तिक हाथेँ मृत शिक्षकक नाम चलैत रहल हो, तँ मौन रहब विद्यालयक बालकसभसँ अन्याय होयत।

शारदाक पत्र दरभंगा पहुँचल तखन रेवती झा अपन मेजपर दूटा फाइल अलग कऽ रहल छलीह। एक फाइलमे फुलवाक छात्रवृत्तिक विवाद छल, दोसरमे माधवेश्वरक कथित उपस्थितिक पन्ना। शिवनारायण झा ओहि अलगावकेँ देखि संतुष्ट भेलाह। “एकहि सन्दूकमे भेटल कागज एकहि अपराधक प्रमाण नहि बनैत अछि,” ओ कहलनि। “पहिने ई जाँचू जे वेतनक भुगतानक आदेश कहिया निर्गत भेल, रकम केकर खातामे गेल, आ उपस्थितिक चिह्न के लिखलक। विधवाकेँ भेटल बकाया आ जीवित शिक्षकक नामपर काढल वेतन दूटा अलग वस्तु अछि।” रेवती उत्तर देलनि, “शारदा ताहि कारणेँ हड़बड़ाइत नहि छथि। हुनका संशय अछि, मुदा आरोपक नाम तय नहि कएने छथि।” बाहर कचहरीक बरामदामे नब वर्षक वादपत्र लऽ लोक जमय लागल छल।

ओहि दिन डाकसँ एक मोट पत्रिका पहुँचल। पत्रिकाक मुखपृष्ठपर नव आर्थिक विधिक विषय छल। रेवती पन्ना पलटलनि; धनशोधन रोकबाक उद्देश्यसँ बनल कानून १ जुलाई २००५ सँ प्रभावी भऽ गेल छल। शिवनारायणक चेहरा गम्भीर भऽ गेल। “नव कानूनक नाम सुनिते

पुरान प्रत्येक रुपैया अपराधजन्य नहि भऽ जाइत अछि,” ओ कहलनि। “अपराधसँ आयल सम्पत्ति, निर्धारित मूल अपराध आ धनक दाग नुकायबाक प्रयत्नक बीच सम्बन्ध बुझबाक पड़त।” रेवती पुछलनि, “जँ मनुष्य विदेशमे ईमानदारीसँ कमाय आ घरे पाइ पठबय, तँ ओकरा पर एहन सन्देह किएक उठय?” पिता कहलनि, “सन्देह उठबाक कारण हो सकैत अछि; सन्देह मात्र निर्णय नहि अछि।” एहि छोट कथनक अर्थ रेवतीकेँ ओहि समय पूरा नहि बुझायल।

दरभंगाक एक ग्राहक ओहि दुपहरिया कार्यालयमे पहुँचल। ओकर नाम गोपी देवी छल। ओ अपन हाथक पुरान थैलीसँ विदेशी डाकक लिफाफा निकालि मेजपर रखलीह। “हमर बेटा केशव दुबईमे भवन बनाबयवला टोलीमे काज करैत अछि,” ओ कहलीह। “ओ महिनाक पाइ पठबैत अछि। पहिने नियमित भेटैत छल। एहि बेर बैंक कहलनि जे प्राप्तकर्ताक नाम मेल नहि खाइत अछि।” रेवती हुनकर कागज देखलनि। पत्रमे केशव अपन मायक नाम ‘गोपी पासवान’ लिखने छल, जखन कि बैंकक पुरान पञ्जीमे ‘गोपी देवी’ छल। पिताक नाम आ गाँवक पता समान छल। गोपी कहलीह, “हमर बेटा अपना हाथक फाटल चमड़ीसँ कमाइ करैत अछि। बैंकक कागजपर हम दूटा केना भऽ गेलहुँ?” रेवती तत्काल उत्तर नहि देलनि।

गोपीक पाछाँ हुनकर बहू मालती सेहो आइल छलीह। मालतीक गोदीमे तीन वर्षक अंजली छलि, जकरा बाहरक पिपराही दिसि देखबाक उत्सुकता छल। मालती धीरे कहलीह, “घरमे एखन गेहूँ किनबाक पाइ कम अछि। केशव कहलनि जे पन्द्रह दिन पहिने पठा देलहुँ। बैंक कहैत अछि जाँच होयत।” शिवनारायण कागज हाथमे लऽ देखलनि। धन भेजनिहार संस्थाक नाम, दिन, प्राप्तिक संकेत आ बैंकक शाखा लिखल छल। ओ पुछलनि, “केशव ककर माध्यमेँ पठौने अछि?” मालती कागज दिसि इशारा कएलनि। “अधिकृत स्थानसँ, जहाँ कम्पनीक सभ मजदूर जाइत छथि। ओ स्वयं कहलनि जे रसीद राखि लेब।” शिवनारायण कहलनि, “रसीद ठीक राखल गेल अछि। मुदा बैंकक प्रविष्टि आ प्रेषकक कागज मिलान करबाक पड़त।”

रेवती गोपीकेँ नहि कहलनि जे नव धनशोधन कानूनक कारणेँ पाइ रोकल गेल अछि। बैंकक पत्रमे केवल नामक मेल नहि होयबाक उल्लेख छल। ओ बैंकसँ लिखित कारण, भुगतानक स्थिति आ आवश्यक सुधारक सूची माँगबाक निवेदन तैयार कएलनि। “अपन नाम एक रूपमे

स्थापित करबाक कागज साथ राखू,” ओ कहलीह। “मुदा बैंक जँ आवश्यकतासँ बेसी प्रमाण माँगैत हो अथवा बिना कारण महिनो धरि राखैत हो, तकरो जाँच होयत।” गोपी बूझलीह जे कागज भरलासँ पाइ तुरन्त नहि भेटत। ताहिसँ हुनकर चेहरापर निराशा रहि गेल, मुदा कमसँ कम प्रश्नक दुआरि निश्चित भऽ गेल।

साँझमे शिवनारायण अपना पुरान निर्णय-पत्रक कोनपर अँगुरी फिरौलनि। नीलकान्त साहक बहीक पैंतालीसम पन्ना हुनका याद आयल। नीलकान्त किछु कारोबार स्वीकार कएने छलाह, मुदा मृत रामकिशुन महतोक नामक एक प्रविष्टि नकारने छलाह। आब शारदाक विद्यालयमे मृत माधवेश्वरक उपस्थितिक पन्ना, आ गोपीक बैंकमे जीवित स्त्रीक दू अलग नाम। तीनू घटनामे कागज मनुष्यक स्थान लऽ रहल छल। तथापि तीनू एकहि अपराध नहि छल। रेवती कहलनि, “बाबूजी, कखनो हमरा लगैत अछि जे अभिलेखक भुलक्कड़पन मनुष्यसँ बेसी बलवान भऽ गेल अछि।” शिवनारायण उत्तर देलनि, “अभिलेख भूल नहि करैत; ओकरा बनौनिहार, पढ़निहार आ माननिहार मनुष्य भूल करैत अछि।”

जनवरीक पहिल सप्ताहमे रेवतीकेँ मुम्बई जाएबाक अवसर भेटल। एक विधि-परिचर्चामे नव धनशोधन-निवारण कानूनक आरम्भिक अर्थपर चर्चा छल। संगहि दरभंगाक ओही बैंकक मुख्य कार्यालयमे गोपीक शिकायतक स्थिति बुझबाक अनुमति भेटल। रेवती पहिने शारदाकेँ पत्र लिखलीह—“माधवेश्वर बाबूक वास्तविक भुगतान-प्रमाणक प्रतीक्षा करू। मूल पञ्जी सुरक्षित रखबाक आग्रह दियौक। जँ प्रखण्ड अधिकारी निरीक्षण स्वीकार करथि, तकर लिखित प्रति लियौक।” शारदाक उत्तर छोट छल—“हम प्रश्नकेँ आरोप नहि बनायब; मुदा प्रश्न छोड़बो नहि।” रेवती पत्र अपन फाइलमे रखि यात्रा लेल निकललीह।

मुम्बईक उपनगरमे बिहानक रेलसँ उतरल रेवतीकेँ शहरक गति अपन गाँवक गाड़ीसँ भिन्न देखायल। लोकक भीड़ तेज चलैत छल, मुदा सभक चेहरापर एक समान हड़बड़ी नहि छल। केओ समाचारपत्र पढ़ैत छल, केओ टिफिनक डिब्बा पकड़ने, केओ मोबाइलपर घरक हाल पुछैत। लोकल रेलक भीतर एक मैथिली बजैत मजदूरक स्वर सुनि रेवती ठमकि गेलीह। ओ अपन संगिनीकेँ कहि रहल छल—“घरमे माए बीमार छथि, एहि बेर पाइ देरीसँ भेजलहुँ।”

रेवतीकेँ गोपीक घर याद आयल। विदेशसँ आबयवला वैध धन आ शहरक भीतर घूमैत रोजी-रोटी दुनू एकहि भारतीय परिवारक शिरामे बगैत अछि।

विधि-परिचर्चामे उपस्थित अधिवक्ता, बैंक अधिकारी आ वित्तीय अनुसन्धानक लोक सभ अपन-अपन भाषा लऽ आएल छलाह। एक अधिकारी कहैत छलाह जे अपराधी धनकेँ निर्दोष देखेबाक प्रयत्न दुरन्त चुनौती अछि। एक बैंकक विधि-पदाधिकारी कहैत छलाह जे ग्राहकक पहिचान आ व्यवहारक उचित अभिलेख नहि राखल गेल तँ वैध ग्राहक सेहो गलत शंकाक शिकार बनि सकैत छथि। रेवती नोट लिखलीह—“नाम मिलान, स्रोत मिलान, वास्तविक लाभार्थी, आ निर्दिष्ट मूल अपराधक सम्बन्ध: चारि प्रश्न अलग।” अगिला वक्ता पुछलनि, “धनशोधनक उद्देश्य अपराधसँ उपजल धनकेँ पकड़ब अछि; बाहरी देशसँ आएल प्रत्येक रुपैया नहि।” सभागारमे एक क्षणक लेल स्वर शान्त भऽ गेल।

एक वरिष्ठ विधिवेत्ता स्पष्ट कएलनि जे अधिनियम २००२ मे बनल, मुदा ओकर प्रभावी दिन १ जुलाई २००५ अछि। ओहि वर्षक आरम्भिक संरचनाकेँ बादक संशोधनसँ स्वत: एक समान नहि बूझबाक चाही। निर्धारित सूचीमे पड़यवला मूल अपराध, ओकर कथित लाभ आ आरोपीक विशिष्ट भूमिका कानूनक केन्द्रमे अछि। रेवती एहि बातकेँ ध्यानसँ लिखलीह। हुनका लगा जे एखन बहुत लोक नव शब्द ‘धनशोधन’ सुनिते कोनो अप्रिय बैंक लेनदेनकेँ ओही नामसँ बजाबय लगत। विधि-विद्यालयक किताब पढ़निहार रेवती बुझैत छलीह जे एहन नामक असावधान उपयोग मनुष्यक प्रतिष्ठापर गहिर असर करैत अछि।

परिचर्चाक विश्राममे एक सज्जन रेवती लग आबि कहला, “अहाँ मिथिलासँ आएल छी?” ओ अपन परिचय देलनि—अभिजीत झा, मुम्बईमे बैंकक विधिक अनुपालन विभागमे कार्यरत। हुनकर परिवार मधुबनीक छल। रेवती गोपीक मामलाक सामान्य रूप सुनौलीह, निजी विवरण नहि। अभिजीत कहला, “नामक रूपांतर, शाखाक पुरान प्रविष्टि आ विदेशसँ पठाओल निर्देशमे अन्तर प्राय: कागजक जाँचक कारण बनैत अछि। मुदा देरीक कारण लिखित देब बैंकक दायित्व अछि। ग्राहककेँ अपराधी जकाँ व्यवहार करब उचित नहि।” रेवती पुछलनि, “अहाँक बैंकमे एहन विवाद कतेक अबैत अछि?” अभिजीत उत्तर देलनि, “एतेक जे हम हर पन्नाक पाछाँ परिवार देखबाक अभ्यास करैत छी।”

दोसर दिन रेवती अभिजीतक संग एक उपभोक्ता-विवाद सम्बन्धी सार्वजनिक सुनबाई देखबाक गेलीह। ओहि मंचपर विदेशसँ आयल धनक विलम्बित जमा सम्बन्धी एक पुरान प्रकरण छल। पक्षकारक वकील बैंकक सेवामे कमी कहैत छल, जखन कि बैंक उचित जाँच पूरा होयबाक समय माँगने छल। मंचक अध्यक्ष लिखित अभिलेख, देरीक अवधि आ ग्राहकसँ माँगल प्रमाण देखलनि; ओहि दिन कोनो अन्तिम निर्णय नहि भेल। रेवती नोट कएलनि जे बैंकक सेवा-सम्बन्धी दाबी आ धनशोधनक आपराधिक आरोप एक दूसरेक बदला नहि छथि। जँ सेवामे त्रुटि अछि तँ ओकर उपचार अपन मंचपर, आ जँ अपराध अछि तँ ओकर अनुसन्धान अपन वैधानिक बाटेँ।

मंचक पुरान कोठरीमे पंखाक शब्द एतेक तेज छल जे ओकरे नीचाँ राखल कागजक पन्ना बारम्बार उठि जाइत छल। एक कर्मचारी रबरक भारी टुकड़ा राखि पन्ना स्थिर कएलक। अध्यक्ष पुछलनि, “जकर भुगतानमे देरी भेल, ओकरा समयपर कारण बताओल गेल छल कि नहि?” बैंकक प्रतिनिधि कहलनि जे आन्तरिक परीक्षण आवश्यक छल। “आवश्यक छल,” अध्यक्ष उत्तर देलनि, “मुदा ग्राहककेँ सूचना देबाक सीमा आ विवेकपर सेहो विचार होयत।” रेवती ध्यान देलनि जे न्यायालयक प्रश्न अपराधक छानबीन नहि, सेवाक न्यायसंगत उपलब्धता सम्बन्धी छल। एक शब्द अलग मंचपर अलग उत्तरदायित्व बनबैत अछि।

ग्राहक पक्षक वृद्धा नीलिमा देवी अपन लिखित कथनमे कहने छलीह जे देरीक कारण हुनकर पुत्रीकेँ विद्यालयमे प्रवेश-शुल्क समयपर नहि देल जा सकल। बैंकक अधिकारी प्रश्न कएलनि जे ई क्षति पूर्ण रूपेँ बैंकक देरीसँ भेल अथवा परिवारक अन्य आर्थिक कठिनाइसँ। वृद्धाक वकील प्रवेश-शुल्कक अन्तिम तिथि, बैंकक प्राप्ति-रसीद आ पूर्व पत्रक नकल रखलनि। अध्यक्ष तत्काल कोनो दण्ड नहि सुनौलनि। ओ दुनू पक्षसँ देरीक वास्तविक कारण आ क्षतिक सम्बन्धपर स्पष्ट लिखित विवरण माँगलनि। रेवतीकेँ एहि सीमित आदेशमे नाटकीय घोषणासँ बेसी न्यायिक शक्ति अनुभव भेल। न्यायालय जकर विषय नहि अछि, तकरा अपन अधिकारमे नहि खींचलक।

बाहर नीलिमा देवी खिड़की लग बैसि रहलि। रेवती हुनका नमस्कार कएलनि। वृद्धा कहलीह, “हमरो बेटा विदेशमे अछि। ओ बेटीक पढ़ाइ लेल पाइ पठौलक। बैंक कहलक जाँच

होयत। हम कहलीहुँ जे पढ़ाइक तिथि तऽ जाँचक बाट नहि देखत।” रेवती हुनका अपन गोपीक प्रकरणक विषय बतबय चाहलीह, मुदा गोपनीयता विचारि रुकि गेलीह। ओ केवल पुछलनि, “अहाँक लड़िका जखन पठबैत अछि, तँ पत्रो अबैत अछि?” वृद्धा कहलीह, “पत्र कम अबैत अछि। फोनपर आवाज अबैत अछि। मुदा पाइ अटकि जाए तँ आवाजमे चिन्ता उतरि जाइत अछि।” रेवतीकेँ बुझायल जे विदेशक श्रमिकक घरमे धनक अभावसँ पहिने विश्वासक अभाव उतरैत अछि।

अभिजीत ओहि बातकेँ सुनि कहला, “जाँचक आदेश लिखनिहार कर्मचारीक आगाँ कखनो एक दिनक समय होइत अछि, ग्राहकक घरमे ओही दिनक भोजनक अभाव। एहि दूरीकेँ सम्हारब बैंकिंगक वास्तविक कठिनाइ अछि।” रेवती पुछलनि, “तखन बैंकक अधिकारी प्रश्न उठेतहि दोषी भऽ जाए?” “नहि,” अभिजीत उत्तर देलनि, “आन ग्राहकक धन आ सार्वजनिक विश्वास सुरक्षित राखब सेहो ओकर कर्तव्य अछि। मुदा रोकक कारण, अवधि आ आवश्यक प्रमाणक प्रश्नसँ भागल नहि जा सकैत।” दुनू ओहि दिनक कार्यवाहीक नोट मिलौलनि। अभिजीत अपन कापीमे विशेष रूपसँ लिखलनि—“खाताक रोक, भुगतानक विलम्ब आ अपराधक संदेह: तीनू एक नहि।”

मुम्बईक विधि-पुस्तकालयसँ निकलि रेवती एक छोट बैंक शाखाक बाहर पहुँचलि, जतय बड़का साइनबोर्डक नीचाँ छोट अक्षरमे ग्राहक शिकायतक प्रक्रिया लिखल छल। किछु महिला आ वृद्ध लोक बारीक अक्षर पढ़ि नहि पबैत छलाह। एक चौकीदार हुनका सँ नाम पुछि काउण्टर दिसि पठबैत छल। रेवती सोचलीह जे सूचना देखेबाक कानूनक औपचारिक पालन आ लोककेँ ओकर अर्थ बुझा देब अलग प्रयत्न अछि। एही कारण शारदा विद्यालयमे पञ्जी स्वयं नहि, सरयूक बोलीक माध्यमसँ पढ़ि सुनबैत छलीह। ओ एक पन्नापर दरभंगाक बैंक लेल सरल भाषामे आवेदनक मसविदा लिखलीह, जाहिसँ गोपी अपन नामक अन्तर स्पष्ट करि सकथि।

दुपहरिया भोजनक समय अभिजीत अपन घरक कथा सुनौलनि। हुनकर पिता मधुबनीमे डाकक काज करैत छलाह। गामक विदेश गेल मजदूर अपन घरक पत्र हुनकरा हाथेँ पठबैत छल। कतेको पत्रमे कागजक भीतर पैसा नहि, सुगन्धित तेलक छोट पुड़िया वा बच्चाक चित्र रहैत छल। “पिताजी कहैत छलाह जे प्रत्येक लिफाफामे दू पता होइत अछि—बाहर लिखल

आ भीतर मनमे बसल,” अभिजीत कहलनि। “बैंकक लेखामे केवल बाहरक पता बचैत अछि।” रेवती उत्तर देलनि, “ताहि लेल अदालतमे एतेक गवाही आवश्यक होइत अछि। एक पन्नाक अक्षर मनुष्यक सम्पूर्ण परिस्थिति नहि खोलैत।” भोजनक बाद दुनू अपन-अपन काजमे घुरि गेलाह।

सुनबाईक बाहर एक वृद्ध व्यक्ति रेवतीकेँ पुछलनि, “बेटी, पाइ विदेशसँ आए तँ दोषी मानल जाइत अछि की?” रेवती कहलीह, “नहि। बाहर मेहनति कऽ पठाओल पाइ दोषक चिह्न नहि।” वृद्धक नाँव हरिदास छल; ओकर बेटा ओमानमे निर्माणक काज करैत छल। ओ कहला, “हमरा लड़िका बड़ दिनसँ घर नहि आएल। ओकर भेजल पाइमे ओकर चेहराक खबर रहैत अछि। बैंक ओकरा संदेहक पन्नामे राखत तँ हमरा कतेक कष्ट होयत।” रेवती एहि वाक्यकेँ मनमे रखलीह। कानूनक चर्चामे जे ‘प्रेषण’ शब्द कहल जाइत छल, ओ वृद्धक लेल पुत्रक श्रम छल।

ओहि साँझ अभिजीत रेवतीकेँ एक छोटे पुस्तकालयमे लऽ गेलाह। पुरान वाणिज्य-पत्रिका, विदेशी व्यापारक विवरण आ बैंकिंग नियमक पुस्तकसभ ओतय छल। ओ कहलनि, “कागजक हिसाब जेना गाँवक विद्यालयमे अनियमित भऽ सकैत अछि, तेना बड़ कार्यालयमे सेहो। मुदा पैघ रकम देखिते अपराधक कल्पना करब वैज्ञानिक परीक्षण नहि।” रेवती उत्तर देलनि, “हमर बाबूजी कहैत छथि जे बहीक एक पन्ना गवाही देत, मुदा फैसला नहि सुनाओत।” अभिजीत हँसला। “एहि बातकेँ एक दिन हम अपन सहकर्मी सभकेँ सुनाएब।” पुस्तकालयक बाहर संध्या उतरि आयल छल। समुद्रक नूनगर गन्ध हवा मे छल; मुम्बईक भवनसभक शीशामे अन्तिम सूर्यक रेखा अटकले रहि गेल।

गोपीक बैंक-शिकायतक मुख्य कार्यालयमे लिखित उत्तर भेटल। खाताक नामक रूप-संशोधन लेल शाखासँ आवश्यक कागज माँगल गेल छल; धनक निर्देश गलत लाभार्थी क्रमांकक कारण एक अस्थायी जाँचमे रहल छल। बैंक अधिकारी स्वीकार कएलनि जे प्रारम्भिक पत्रमे ई कारण स्पष्ट नहि लिखल गेल छल। रेवती पुछलनि, “ग्राहककेँ देरीक पूर्ण कारण समयपर नहि बताओल गेल—एकर लिखित स्वीकार देब सम्भव अछि?” अधिकारी पहिले संकोच कएलनि। अभिजीत, जे ओहि बैंकक कर्मचारी नहि छलाह, बाहर प्रतीक्षा करैत

रहलाह; ओ आन्तरिक निर्णयमे नहि पड़लाह। अन्ततः अधिकारी एक संशोधित स्पष्टीकरण दैत छथि, मुदा भुगतानक तिथि निश्चित नहि करैत छथि। रेवती एहि सीमा सहित उत्तर स्वीकार कएलनि।

रेलमे घुरैत रेवती अपन बगलमे बैसल वृद्ध महिलासँ बात करबाक लगलीह। महिला कहलीह जे हुनकर बेटा मुंबईमे पहिने मिलमे काम करैत छल, आब कपड़ा बेचैत अछि। ओ पूछलीह, “अहाँ वकील छी? सभ प्रश्न अदालतमे जाएत?” रेवती उत्तर देलनि, “नहि। जतेक विवाद लिखल स्पष्टीकरण, सुधार आ उचित समझौतासँ सुलझि सकैत अछि, ओतेक सुलझनाइ नीक। मुदा जँ अधिकार रोकल जाए, तँ अदालतक दुआरि चाही।” महिला हँसलीह। “तखन अहाँ अदालतसँ बेसी अदालतक बाहरक काज करैत छी।” रेवती सोचलीह जे एहि वाक्यमे अपमान नहि, न्यायिक जीवनक गहिर सच अछि।

फेर अभिजीतक एक पत्र आएल। एक व्यापारिक संस्थाक नामक विषयमे ओ रेवतीसँ सामान्य विधिक राय चाहैत छलाह। संस्था विदेशी व्यापारीक संग कारोबारक दाबी करैत छल; एक खातेपर नामधारी कम्पनी आ वास्तविक माल पहुँचबाक अभिलेखमे अन्तरक शिकायत उठल छल। अभिजीत लिखने छलाह, “ई एखन केवल अनुबन्ध आ अभिलेख-संबंधी जिज्ञासा अछि। जाँचक बिना धनशोधन कहब अनुचित।” पत्रमे कम्पनीक नाम छल—‘सहगल व्यापार गृह’। रेवती पहिल बेर एहि नामकेँ देखलीह। नामक साथेँ कोनो अपराधक निष्कर्ष नहि छल; सहगल शहरक पुरान व्यापारिक परिवारसभमे एक छल। तथापि अभिजीतकेँ दस्तावेजक तिथिमे एक विशेष विसंगति देखायल छल।

रेवती अभिजीतकेँ उत्तर लिखलीह जे व्यापारिक विवादक पक्षकार, मूल चालान, मालक वास्तविक सुपुर्दगी आ बैंकक अभिलेख अलग-अलग जाँचल जाए। “कम्पनीक नाम, ओकर निदेशकक परिवार आ कोनो एक कर्मचारीक आचरणकेँ एकहि प्रमाण नहि मानू,” ओ लिखलीह। अभिजीत फोनपर कहलनि, “हमरो ईहे बुझाइत अछि। मुदा एक ग्राहक दोसर व्यापारीक विरुद्ध सार्वजनिक आरोप लगबय चाहैत छथि।” रेवती उत्तर देलनि, “पहिने प्रमाण जुटाउ। नहि तँ तथ्यक स्थान बदला आ व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा लऽ लेत।” ओहि समय धरि सहगल परिवार हुनकर लेल मात्र कागजक एकटा नाम छल, मनुष्य नहि।

फाल्गुन लगबासँ पहिने केशव पासवानक घरमे एक अनपेक्षित दृश्य घटल। गोपी देवीक बैंकसँ एक सूचना आयल जे नामक सुधार आ प्रेषण-निर्देशक मिलान पछाति रकम उपलब्ध कराओल जाएत। मालती पहिने विश्वास नहि कएलनि। ओ बैंक गेलीह; शाखाक कर्मचारी कागज देखिकय आवश्यक प्रक्रिया पूरा कएलनि। देरीक कारण कतेको घरक खर्च रोकल रहल छल, मुदा एखन कमसँ कम धनक असल स्रोतपर अपराधक आरोप नहि लगल। गोपी पहिल काज स्वरूप नातिन अंजलीक लेल ऊनी कपड़ा किनलीह। मालती पुछलक, “केशवकेँ कहि दी जे पैसा भेटि गेल?” गोपी कहलीह, “पहिने ई सेहो कहिहे जे ओकर घामक कमाइ ककरो कृपासँ नहि, अपन अधिकारसँ भेटल।”

ओहि दिन साँझ रेवतीकेँ गोपीक धन्यवादक पत्र भेटल। पत्रमे धनक रकम नहि लिखल छल, केवल अंजलीक नव स्वेटरक रंगक उल्लेख छल। रेवती शिवनारायणकेँ सुनौलीह। पिता कहलनि, “एहि विवादकेँ अनावश्यक आपराधिक आरोप बनौने बिना सुलझेलहुँ, से नीक। मुदा जँ बैंकक सेवामे वास्तविक त्रुटिसँ क्षति भेल हो, तँ परिवारसँ पूछू जे ओ क्षतिपूर्तिक वैधानिक उपचार चाहैत अछि कि नहि। निर्णय हुनकर हो।” रेवती सहमत भेलीह। हुनकर मनमे मुम्बईक परिचर्चाक कठोर शब्द आ गोपीक घरक नरम स्वर एक संग रहि गेल।

कमलपुरमे शारदा देवी एहि बीच विद्यालयक छतपर नव तिरपाल देखलनि। गौरीशंकर प्रधानाध्यापक कहला जे मरम्मतिक एक छोट स्वीकृति प्राप्त भेल अछि। शारदा पूछलनि, “माधवेश्वर बाबूक उपस्थितिक मूल पञ्जीक निरीक्षणक की भेल?” प्रधानाध्यापक उत्तर देलनि, “प्रखण्ड अधिकारी कहलनि जे अभिलेखक नकलक तुलना होयत। हमो चाहैत छी जे ई आरोप हमरा कार्यालयपर अनावश्यक रूपेँ नहि रहय।” शारदा कहलीह, “मूल अभिलेख सुरक्षित रहय, से पहिल आवश्यकता अछि।” फुलवा भीतर बैठि पढ़ैत छलि। ओकर पेंसिलक नोक भाँगि गेल तऽ रुक्मिणी नव नोक बना देलनि। पञ्जीकेँ जाँचबाक संघर्षक बीच विद्यालयक जीवन अपन सामान्य गति छोड़ल नहि छल।

शारदा कलावती देवीकेँ भेटलीह। माधवेश्वरक विधवा अपन पुरान कागजक गठरी फेर खोलने छलीह। ओ कहलीह, “हम बकाया वेतन पएने रही। मुदा जँ आगाँ मासक उपस्थितिक नामपर किछु काढल गेल, तँ ओ हमर घर नहि आएल।” शारदा कागज ध्यानसँ देखलीह।

प्राप्त रकमक दू स्पष्ट रसीद छल, आ एक तेसर प्रविष्टि जकर स्रोत अस्पष्ट छल। शारदा बिना अनुमानक प्रखण्ड कार्यालयकेँ नव प्रश्न लिखलीह—भुगतानक प्रकार, स्वीकृति आदेश, प्राप्तकर्ताक विवरण आ मृत्युक तिथि पछातिक उपस्थितिक चिह्नक स्रोत। ओ कलावतीसँ कहलनि, “अहाँक पतिक नाम हम दुःख देबाक लेल नहि, ओकर लिखल बातक सही अर्थ बुझबाक लेल पढ़ैत छी।”

प्रखण्ड कार्यालयमे बालेश्वर नामक लिपिक शारदाक प्रश्न पढ़ि असहज भेल। ओ कहलक, “एहि पुरान कागजक खोजमे हमरा ऊपरक बाबूसभ नाराज हेताह।” शारदा उत्तर देलनि, “बिना जाँचक ककरो दोष नहि लिखल। अहाँ जे भेटैत अछि से नकल दियौक, जे नहि भेटैत अछि तकर लिखित स्थिति दियौक।” बालेश्वर थोड़े देर चुप रहल। बादमे ओ स्वीकार कएलक जे पुरान वेतन-पञ्जीक एक पन्ना शाखाक कार्यालयमे आ दोसर पन्नाक मूल जिला लेखा कार्यालयमे देखाओल जाइत अछि। “दूटा ठाम लिखल तिथिक मेल नहि अछि,” ओ कहलक। शारदा एकरा सुनि चकित भेलीह। एखन ओकरा चोरीक सिद्धि नहि, अभिलेखक देखरेखमे त्रुटिक सम्भावना स्पष्ट भेल।

हुनका दरभंगामे आएब पड़ल। रेवती दुनू पन्नाक नकल अलग रखलीह। पहिलमे माधवेश्वरक नाम लग ‘बकाया स्वीकृत’ लिखल छल, दोसरमे ओकर मृत्यु पछातिक मासमे ‘उपस्थित’ चिह्न। शिवनारायण सुझाव देलनि जे मूल पञ्जीक विधिवत निरीक्षण आ लेनदेनक वास्तविक निर्गम देखबाक आवेदन कएल जाए। फुलवाक छात्रवृत्तिक प्रकरण अलग प्रक्रिया मे चलैत छल; ओकर प्रश्न एहि प्रकरणमे मिलाकय किसी एक व्यक्ति विरुद्ध व्यापक आरोप नहि बनाएब। शारदा कहलीह, “गाँवमे सभ कहल करैत अछि जे एक बेर कचहरीक नाम उठल तऽ विद्यालय बदनाम भऽ जायत। मुदा बिना पूछने बच्चासभक भविष्य सेहो बदनाम होइत अछि।” शिवनारायण हौले कहलनि, “अहाँ विद्यालयक रक्षा ओकर कागजक सत्यसँ करैत छी।”

मुम्बईसँ लौटला पछाति रेवतीक कार्यालयमे आर्थिक विधिक चर्चा बढ़ि गेल। एक दिन नीलकान्त साह स्वयं पहुँचलाह। हुनकर दुकान आब दाल-चाउरक नियमित व्यापार करैत छल। ओ कहलनि, “शहरमे कहैत अछि जे नव कानूनसँ प्रत्येक पुरान सट्टेबाजक सम्पत्ति जप्त भऽ

जाएत। हमर पुरान निर्णयक बाद ई बात सुनि लोक फेर अंगुली देखबैत अछि।” शिवनारायण कागज रखि कहलनि, “जकर अपराध जतेक सिद्ध भेल, न्यायालयक निर्णय ओतेक कहलक। नव कानून कखनसँ लागू अछि, ओकरा अन्तर्गत कोन मूल अपराध पड़ैत अछि, आ अपराधजन्य सम्पत्तिक संबंध की अछि—बिना जाँचक ककरो जप्तीक घोषणा नहि कएल जा सकैत।” नीलकान्त राहतक साँस लेलक। रेवती देखलीह जे कानूनक आधा सुनल समाचार कतेक सहज भय बनि जाइत अछि।

नीलकान्त एखन पुरान मुकदमाक एक अन्य प्रश्न उठौलक। “रामकिशुन महतोक नामक पन्ना हमरा ऊपर दोषसँ नहि जुड़ल, मुदा ओकर लेखन के करलक? न्यायालयक निर्णयमे से नहि खुलल।” शिवनारायण कहलनि, “जे प्रश्न विचारणक सीमा बाहर रहल, ओकर उत्तर निर्णयमे नहि देल जा सकल। जँ नव प्रमाण उपलब्ध हो, तकर अपन विधिक बाट अछि। मुदा ककरो नाम अनुमानसँ नहि जोड़ू।” नीलकान्त चुप भेल। ओ बहीक पन्नाकेँ अपन जीवनक एक अजस्र छाया बुझैत छल। रेवतीकेँ लगल जे शारदाक मृत शिक्षकक पन्नासँ ई कथा अनायास प्रतिध्वनित होइत अछि, मुदा दुनूक पाछाँ एकहि हाथक कल्पना करब कथाक आकर्षण हो सकैत अछि, सत्यक नहि।

माघक एक भोर अभिजीतक फोन फेर आयल। “सहगल व्यापार गृहक नामक जँ अहाँक लग उल्लेख करब अनुचित नहि हो, तँ एक भिन्न तथ्य अछि,” ओ कहलनि। रेवती पुछलनि, “कहू।” “कम्पनीक व्यापारिक अनुबन्धमे माल पहुँचबाक दिन आ बैंकक भुगतान-आदेशक दिनक अन्तर अछि। एक पक्ष एतय माल देरीसँ पहुँचल कहैत अछि; दोसर कहैत अछि जे ओ दिन अलग खेपक छल।” रेवती उत्तर देलनि, “ई विवादक मूल दस्तावेज पबिते सुलझबाक सम्भावना अछि।” अभिजीत कहलनि, “हम ताहि लेल स्थानीय वाणिज्य विशेषज्ञक मत लेबाक कहने छी।” ओहि समय ई केवल व्यापारिक मतभेद छल। रेवती नहि चाहैत छलीह जे भविष्यक डर वर्तमानक तथ्यकेँ ढाँपि दे।

सहगल व्यापार गृहक कार्यालय मुंबईक एक पुरान व्यावसायिक भवनमे छल। सुदर्शन सहगल, ओकर वरिष्ठ भागीदार, आयात-निर्यातक काजमे अपन पैंतीस वर्षक अनुभवक गर्व करैत छल। कम्पनीमे नवीन पीढ़ीक युवक विक्रान्त सेहो आबि रहल छल, जे लेखा-विज्ञान पढ़ि

अपन पिताक व्यवसाय बुझय चाहैत छल। सुदर्शन कहैत छल, “व्यापार भरोसापर चलैत अछि; कागज तकर स्मृति अछि।” विक्रान्त प्रत्युत्तर दैत छल, “जे कागजक मेल नहि राखत, ओकर भरोसा कोना बचत?” पिता-पुत्रक ई बात कार्यालयक सामान्य वाद-विवाद छल, एखन कोनो अपराधक स्वीकारोक्ति नहि। मुदा अभिजीतक लग आयल कागज देखबैत छल जे अभिलेखक स्मृति कखनो व्यापारीक स्मृतिसँ भिन्न भऽ जाइत अछि।

सुदर्शनक कार्यालयमे एक दिन निर्यातक सामानक आपूर्तिक शिकायत लऽ छोट व्यापारी आबि गेल। ओकर नाम मोहनलाल मेहता छल। ओ कहैत छल जे मालक मात्रा आधा भेटल। सुदर्शन ओकरा गोदामक प्राप्ति-पत्र देखौलक। दुनू कागजक अङ्क अलग छल। विक्रान्त हस्तक्षेप कएलक—“पहिने एहन संभावना जाँचू जे अलग खेपक कागज एकठाम जोड़ि देल गेल।” मोहनलाल कठोर स्वरमे कहलक, “हमर कारखानामे आधा माल आएल, हमर घाटा पूरा अछि।” सुदर्शन ओहि दिन विवादक लिखित परीक्षण स्वीकार कएलक। न्यायालयक दुआरि एखन दूर छल, मुदा कागजक अन्तर लाभ आ घाटाक वास्तविक कारण बनि चुकल छल।

मोहनलाल मेहता अपन कारखानामे घुरला पर मालक गिनती फेर करौलक। पुरान पञ्जीमे पाँच किसिमक कपड़ा छल, जखन कि गोदामसँ आयल पोटलीमे दू किसिमक कपड़ा कम देखाइत छल। कारखानाक कामगार बासुदेव कहलक जे एक गाड़ी बरखाक कारण देरीसँ पहुँचने छल। मोहनलाल पूछलक, “तखन प्राप्तिक कागजपर पूरा मात्रा किएक लिखल अछि?” बासुदेव उत्तर देलक, “हम कागज नहि लिखने रही; हम माल उतारने रही।” एहि अन्तरक कारण मोहनलाल अपन शिकायतक भाषा बदललक। पहिने ओ ‘जालसाजी’ लिखने छल; बादमे अधिवक्ताक सलाहपर ‘मात्राक विसंगति आ अनुबन्धक उल्लङ्घनक आशंका’ लिखलक। शब्द बदललासँ घाटा कम नहि भेल, मुदा आरोपक भार प्रमाणक अनुकूल भेल।

सुदर्शन सहगल एखन धरि अपन कार्यालयमे ग्राहकक शिकायत व्यक्तिगत अपमान बुझैत छल। एकदिन विक्रान्त हुनका कहलनि, “बाबूजी, जँ हम कागज लुकेब तँ व्यापारीक भरोसा जे राखबाक चाहैत छी, से अपने हाथेँ तोड़ब।” सुदर्शन क्रुद्ध भेलाह। “हम कागज नहि लुका रहल छी। कर्मचारीक गलतीसँ गलत तारीख लिखल अछि।” विक्रान्त उत्तर देलक, “तखन

गलती ठीक लिखिते नब कागज बनाउ, मुदा पुरान कागज सुरक्षित राखू।” पिता ओकरा देर धरि देखैत रहलाह। “अहाँक पढ़ल कानून हमरा व्यापारक पुरान अभ्याससँ लड़ि रहल अछि,” ओ कहलनि। विक्रान्त हँसलक, “जँ अभ्यास ठीक अछि तँ ओकरा कागजसँ डरबाक कारण नहि।”

एक व्यावसायिक मध्यस्थक समक्ष दुनू पक्ष भेटल। ओ न्यायालय नहि छल, मुदा लिखित अनुबन्धक आधारपर समाधानक सम्भावना परखबाक स्थान छल। मोहनलाल कहलक, “हमर मजदूर दामक प्रतीक्षा करैत अछि। जँ माल नहि भेटत, तँ उत्पादन रुकत।” सुदर्शन उत्तर देलनि, “हमर गोदामक हिसाबमे माल निकलल अछि।” मध्यस्थ कहलक, “तखन गाड़ीपर माल चढ़ेबाक अभिलेख, प्राप्तिक चिन्ह आ भुगतानक तिथि तीनू देखू।” किछु घण्टाक चर्चा पछाति एक खेपक ठिकाना स्पष्ट भेल, दोसरक विवाद शेष रहल। विक्रान्त देखलक जे जँ प्रमाण अधूरा अछि तँ सबसँ उँच स्वरवला व्यापारीक कथन अन्तिम नहि बनैत।

ओहि राति मोहनलाल अपन घरमे पत्नीकेँ कहलक जे विवाद अधूरा अछि। पत्नी पुछलनि, “अहाँ सुदर्शनकेँ चोर कहि अएलहुँ?” मोहनलाल चुप भेल। “क्रोधमे कहने रही।” पत्नी कहलीह, “जँ ठगी कएलक तँ प्रमाणसँ लड़ू, मुदा जँ गलती भेल तँ गलतीकेँ अपराध बनौने दुनूक घाटा बढ़त।” मोहनलाल अपन बेटी दिसि देखलक, जे भोजनक बाद गृहकार्य लिखि रहल छलि। ओ सोचलक जे बजारमे प्रतिष्ठा एक दिनमे टूटैत अछि, मुदा फेर उठेबामे अनेक वर्ष लगि जाइत अछि। अगिला दिन ओ अपन वकीलकेँ कहलनि जे शिकायतमे उपलब्ध कागजसँ बाहरक निश्चित आरोप हटाओल जाए।

विक्रान्त अपन सहपाठी नमनसँ समुद्रक कात भेटल। नमन वित्तीय लेखांकन पढ़ैत छल आ विदेशमे व्यवसाय करबाक सपना देखैत छल। ओ कहलक, “एखन व्यापारक सीमा कागज नहि, दूरदेशक ग्राहक अछि।” विक्रान्त उत्तर देलक, “दूरदेशक ग्राहकक नाम जानब आसान, ओकर वास्तविक काज बुझब कठिन।” नमन हँसि कहलक, “अहाँ तऽ वकील जेकाँ बोलैत छी।” विक्रान्त मनमे सोचलक जे भविष्यमे विदेशमे काज करबाक अवसर भेटल तँ ओ अपन पिताक पुरान व्यापारसँ अलग नब व्यवस्था बनाओत। ओहि समय ओकर सपना सामान्य

महत्वाकांक्षा छल। ओ अपन जीवनक अगिला बीस वर्षक आरोप, विकल्प आ परिणाम नहि देखैत छल।

मुम्बईक दक्षिणी भागमे किछु पुरान व्यापारिक भवनक बीच रातिक अन्हार उतरैत छल। सुदर्शन एक पुरान खाताक पन्ना खोलि पत्नीकेँ देखौलक। “एहि शहरमे हमरा पिता खाली हाथ आएल छलाह,” ओ कहलनि, “एक छोट दुकानसँ काज शुरू कएलनि। आब कागजक एक विसंगति देखिकय लोक हमरा सब पर संदेह करैत अछि।” पत्नी शान्त स्वरमे उत्तर देलनि, “पिताक परिश्रम अहाँक पूँजी अछि; मुदा ग्राहकक अधिकारो सत्य अछि।” सुदर्शन पन्ना बन्द कएलनि। पिता-पुत्रक बीच ओहि राति पहिल बेर ई स्पष्ट भेल जे प्रतिष्ठा पुरखा सँ भेटि सकैत अछि, किन्तु प्रतिदिनक व्यवहारमे ओकर रक्षा करब अपने पड़ैत अछि।

आगाँक सप्ताहमे अभिजीत एक सहकर्मी सँ सुनलक जे देशमे नव वित्तीय कानूनक लागू होयबाक कारण अनेक व्यापारी भयभीत छथि। केओ वैध कर-सम्बन्धी जाँचकेँ धनशोधन कहि रहल अछि, केओ सामान्य विदेशी भुगतानकेँ। अभिजीत अपन कार्यालयक आन्तरिक अभ्यासमे एक उदाहरण उठौलक—“जँ विदेशसँ अधिकृत माध्यमेँ आयल रकम ग्राहकक नामक लिप्यन्तरणमे अटकि जाए, तँ पहिने नाम आ निर्देश जाँचू। जँ व्यापारिक चालानक मात्रा मेल नहि खाए, तँ ओ अनुबन्धक प्रश्न सेहो भऽ सकैत अछि। मूल अपराध आ अपराधजन्य धनक सम्बन्ध सिद्ध भेल बिना सबकेँ एक श्रेणी नहि बनाउ।” वरिष्ठ अधिकारी एहि स्पष्टताकेँ सराहलनि।

रेवतीकेँ एहि छोट शिक्षण-प्रसंगक खबर भेटल तखन हुनका अपन न्यायालयक पहिल वर्ष याद आयल। शिवनारायण नीलकान्तक जप्ती-पन्नाक प्रत्येक चिह्न परखबैत छलाह। तखन युवा रेवतीकेँ लगैत छल जे एतेक सावधानी निर्णयकेँ धीमा करैत अछि। आब बुझाइत छल जे सावधानीक अभाव निर्णयकेँ गलत दिशा देबैत अछि। न्यायालयक गति आवश्यक अछि, मुदा गति आ हड़बड़ी एक नहि। ओ अपन कापीमे लिखलीह—“धनक स्रोतक परीक्षा करैत समय धनसँ जीवन चलबयवला मनुष्यक प्रतिष्ठा नहि बिसरू।” ई कथन ओ ककरो मंचपर नहि पढ़लीह; अपन अनुभवक निजी स्मृति बनाकय रखलीह।

विक्रान्त राति कार्यालयमे रुकि पुरान फाइल मिलबैत छल। ओकरा एक पन्नाक कोनमे ‘एस-१९’ सन एक छोट आन्तरिक चिह्न भेटल। ओ पिता सँ पूछलक, “ई कोड की दर्शबैत अछि?” सुदर्शन कहलनि, “पुरान गोदामक बहीक क्रम होयत। पहिने ओही लोकसँ पूछू जे माल गनैत छल।” विक्रान्त पन्नाक नकल रखलक, मुदा ओकरा एखन कोनो अर्थ नहि बुझल। अगिला दिन ओ अपन मित्रसँ आर्थिक कारोबारक नव अवसरपर चर्चा करैत छल। ओकर भविष्यक निर्णय एखन खुलल छल; पाठक ओकरा २०२६ क आरोपक प्रकाशमे पहिनेसँ दोषी नहि मानि सकैत छल।

दरभंगामे शिवनारायणकेँ रेवती मुम्बईक अवलोकन सुनौलीह। पिता पुछलनि, “एहि कानूनक विषयमे सभसँ बेसी की सीखलहुँ?” रेवती कहलीह, “विदेशसँ आयल पाइ देखिते भय नहि। बड़ रकम देखिते अपराध नहि। आ कानूनक नाम देखिते पुरान मामला नव अपराध नहि। पहिने स्रोत, भूमिका, लागू समय आ सम्बन्ध।” शिवनारायण मुस्कुरेलाह। “ई बात वकीलक अभ्यासमे टिकत तँ बहुत अनर्थ बचत।” रेवती हुनकर चेहरापर थकानक चिह्न देखलीह। समय हुनका धीरे-धीरे बुजुर्ग बना रहल छल, मुदा न्यायालयक प्रतिप्रश्नमे हुनकर मन एखन तेज छल।

मालती पासवानक घरमे फेर केशवक पत्र आएल। ई बेर ओ पैसा समयपर पठौने छल। पत्रमे लिखने छल—“हमर काजक ठाम ऊँच भवन उठैत अछि। रोज हम लोहेक सिढ़ी चढ़ैत छी। जखन बेलुका ओतयसँ नीचे देखैत छी, तखन घरक आमक गाछ स्मरण अबैत अछि।” मालती चिट्ठी अंजलीकेँ पढ़ि सुनौलक। बच्ची पूछलक, “बाबूजी अपन गाम देखैत छथि?” मालती कहलक, “नहि, मुदा गाम हुनका देखैत अछि।” गोपी देवी ई सुनि हँसलीह। धनक अन्तरराष्ट्रीय यात्रा परिवारक मिलनक बदला नहि छल। अगिला वर्ष केशव घुरत कि नहि, से एखन निश्चित नहि। तथापि घरक चूल्हि नियमित जरय लागल।

एक स्थानीय समाचारपत्रमे नव आर्थिक कानूनपर शीर्षक छपल—‘विदेशी पाइपर कठोर निगरानी’। लेखमे वैध प्रेषण आ अपराधजन्य धनक अन्तर स्पष्ट नहि छल। गोपीक पड़ोसी समाचार सुनि कहलक, “अहाँक बेटा विदेशसँ पैसा पठबैत अछि, सावधान रहू।” गोपी ओकरा उत्तर देलनि, “हमर बेटा ईंट उठा रहल अछि, चोरी नहि। जाँच करयवला कागज देखय, हमर

बेटाक थकान नहि बुझल तँ कमसँ कम ओकर रसीद तऽ देखय।” एहि उत्तरमे ओ कानूनक ज्ञाता नहि बनलीह; केवल अपन घरक आयक सत्य जानैत छलीह। रेवती समाचारक कतरन अपन फाइलमे रखलीह, जेना आधा शीर्षकक नुकसानक स्मृति सुरक्षित रहय।

एहि बीच कमलपुरक विद्यालयक मुद्दामे अधिकारीक एक पत्र प्राप्त भेल। मूल अभिलेखक तुलना लेल तिथि निर्धारित कएल गेल छल, आ प्रासंगिक पन्नाक सुरक्षित रखबाक निर्देश छल। शारदा पत्र पढ़ि रुक्मिणीकेँ देखौलीह। “एखन तऽ कोनो दोष सिद्ध नहि,” रुक्मिणी कहलीह। “सेही लेल तऽ जाँच आवश्यक अछि,” शारदा उत्तर देलनि। विद्यालयक मध्यान्ह भोजन बनेबाक समय मालती पासवान नावक दोसर स्त्री—जे गोपीक बहू नहि, विद्यालयक पाकशालामे काम करैत छलीह—आँचलसँ पसीना पोंछि कढ़ाही हिलबैत छलीह। नाम समान होइतहुँ मनुष्यक जीवन अलग होइत अछि, ई बात शारदाकेँ अपन अभिलेख-कार्यक बीच बारम्बार स्मरण होइत छल।

निरीक्षणक दिन जिला कार्यालयक प्रतिनिधि, प्रखण्डक लेखाकर्मी आ विद्यालयक प्रधानाध्यापक उपस्थित भेलाह। शारदाकेँ सार्वजनिक भाग देखबाक अवसर भेटल; निजी दस्तावेजक मर्यादा राखल गेल। प्रतिनिधि मृत्युक तिथि, बकाया भुगतानक आदेश आ उपस्थितिक प्रविष्टिक मूल पन्ना अलग रखलनि। ओ तत्काल ककरो दोषी घोषित नहि कएलनि। एक कोनमे छापल निर्देश छल जे अभिलेखक सुधारक कार्य विधिवत टिप्पणीक संग होयबाक चाही। शारदा देखलीह जे एक पन्नाक काज अधूरी छूटल अछि—ओहि पर रकमक लेखा अछि, मुदा वास्तविक प्राप्तिक साक्ष्य अलग पञ्जीमे देखाओल गेल। जे पञ्जी खोजल जा रहल अछि, ओकर स्थान स्पष्ट नहि।

गौरीशंकरक माथपर पसीना आयल। “विद्यालयक नाम खराब भऽ जायत,” ओ फुसफुसौलनि। शारदा उत्तर देलनि, “नाम खराब तखन होयत जखन गलत लिखलकेँ ठीक कहि छोड़ि देब। जँ त्रुटि अछि तँ सुधार हो; जँ अपराध अछि तँ जाँच हो; जँ विधवाक बकाया अछि तँ ओकर सम्मान रहय।” अधिकारी एहि वाक्यपर ध्यान देलनि। ओ कहलनि, “वास्तविक निर्गमक विवरण बिनु कोनो निष्कर्ष सुरक्षित नहि।” विद्यालयक घण्टी बजल। शारदा कक्षामे घुरि गेलीह। फुलवा अपन नव कापीमे नदीक नाम लिखि रहल छलि।

रेवती एक साँझ पिता सँ पुछलनि, “अहाँक नजरमे धनशोधनक नव कानून समाजक सामान्य जीवनमे की बदलब?” शिवनारायण उत्तर देलनि, “समय बताओत। कानूनक उद्देश्य आवश्यक अछि—अपराधक लाभकेँ दागविहीन देखेबाक जाल रोकब। मुदा जँ जाँचक असावधानीसँ गोपीक वैध प्रेषण वा शारदाक विद्यालयक बकाया सेहो अपराधक आभास बनि जाए, तँ निर्दोषक रक्षा करबाक स्वतंत्र विवेक चाही।” रेवती कहलीह, “आ जँ अपराधी सचमुच पैघ व्यापारक कागजमे नुकायल हो?” पिता उत्तर देलनि, “तखन कागजक आड़ हटाउ, मुदा प्रमाणक क्रम बिसरू नहि।” एहि उत्तरमे कठोरता आ करुणा एकठाम छल।

फेर एक अप्रत्याशित पत्र अभिजीतसँ आयल। पत्रमे सहगल व्यापार गृहक विवादक पक्षसभक बीच प्रथम मेल-मिलापक प्रयास सफल नहि होयबाक सूचना छल। अभिजीतक संक्षिप्त टिप्पणी—“व्यापारिक पन्नामे हस्ताक्षरक समय आ माल प्राप्तिक समयक विषयमे आपसी असहमति अछि; साक्ष्यक स्वतन्त्र परीक्षण आवश्यक।” रेवती एहि पत्रकेँ सामान्य व्यावसायिक विवादक फाइलमे राखलीह। ओकरे बगलमे गोपीक सफल नाम-संशोधनक पत्र छल, आ ऊपर शारदाक विद्यालयक अधूरा पञ्जी। तीनू कागज धनक छल, मुदा तीनूकेँ एक अर्थ देब असत्य होयत।

फुलवाक छात्रवृत्ति-संबन्धी परिवादमे दरभंगाक दण्डाधिकारीक समक्ष अगिला उपस्थिति भऽ रहल छल। सरयू देवी अपन खेतक काज छोड़ि अएलीह। गौरीशंकर प्रधानाध्यापक सेहो उपलब्ध कागजक नकल लऽ पहुँचलाह। न्यायालय एखन ककरो विरुद्ध दोष घोषित नहि कएने छल। दण्डाधिकारी पुछलनि जे विवादित अंगूठाक छापक मूल पञ्जी सुरक्षित अछि कि नहि। सरयू कहलीह, “हम ओहि रकमक प्राप्ति लेल छाप नहि देने रही। मुदा विद्यालयक आन कागजपर छाप देने छी।” दण्डाधिकारी हुनकर ई भिन्नता अभिलेखमे लिखबौलनि। सभ छाप एक मानि लेब सुविधाजनक छल, सत्य नहि।

गौरीशंकर अपन कथनमे कहलनि जे ओहि वर्षक किछु वितरण हुनकर पदभार ग्रहण करबाक पहिने भेल छल। शारदा, जे प्रत्यक्ष साक्षी नहि छलीह, केवल अभिलेखक प्राप्ति आ अपनी देखल स्थितिक विवरण देलीह। रेवती बाहर सुनैत छलीह जे विद्यालयक एक पुरान सहायक कर्मचारी उपस्थितिक पञ्जी सुरक्षित रहबाक स्थान बतबैत अछि। दण्डाधिकारी

आवश्यक जाँचक सीमा निर्धारित कए अगिला तिथि देलनि। न्यायालयसँ निकलिते सरयू पुछलीह, “हमर बेटीकेँ पाइ भेटबाक दिन फेर दूर गेल?” रेवती कहलीह, “एहि विचारणमे दोषक प्रश्न अछि; छात्रवृत्तिक वास्तविक देय रकमक लेल विभागसँ अलग आग्रह जारी रहत।” सरयू एहि दू बाटक अन्तर बुझि हताशो भेलीह, मुदा आवाज नहि छोड़लीह।

बरामदामे गौरीशंकर रेवती लग आएलाह। “गाँवमे हमर नाम चोर कहि बजाओल जा रहल अछि,” ओ कहलनि। रेवती उत्तर देलनि, “हम प्रमाणसँ बाहर ककरो दोषी नहि कहने छी। अहाँक जिम्मामे जे अभिलेख अछि, ओकर मूल सुरक्षा आवश्यक अछि। जँ अहाँक पदभारसँ पहिने किछु भेल अछि, तँ तकर तिथि आ अधिकारीक विवरण दियौक।” गौरीशंकरक आँखि थाकल छल। “हम विद्यालय चलाबी कि कागज जाँचि?” ओ पुछलनि। रेवती कहलीह, “विद्यालय चलबैत काल्हि बालकक नामपर स्वीकृत पाइक सही हिसाब राखब सेहो शिक्षाक काज अछि।” ओहि वाक्यक उत्तर गौरीशंकर नहि देलनि।

ओहि दिन रेवतीक दृष्टि एक छोट बालकपर पड़ल, जे अपन मायक संग कचहरी आएल छल। बालक बरामदाक एक कोनमे खड़ीक टुकड़ा लऽ फर्शपर गोल बनबैत छल। ओकर माए पूछलीह, “कचहरीमे एतेक दिन किएक लगैत अछि?” शिवनारायण, जे दूरसँ आबि रहल छलाह, उत्तर देलनि, “कखनो अनावश्यक देरी होइत अछि, जकरा घटेबाक दायित्व सभक अछि; आ कखनो प्रमाण जाँचबाक उचित समय लगैत अछि। दुनू देरी एक नहि।” रेवती पिताक हाथसँ फाइल लेलनि। वृद्ध अधिवक्ताक स्वरमे समयक थकान छल, मुदा साक्षीक प्रति धैर्य एखन बनल छल।

फुलवा ओहि साँझ विद्यालयसँ घुरि मायक कात बैसल छलि। सरयू ओकरा न्यायालयक वृत्तान्त नहि सुनौलीह। ओ केवल कहलीह जे विद्यालयक पाइक प्रश्न एखन जाँचमे अछि। फुलवा कापी खोलेलक आ पुछलक, “जँ पाइ नहि भेटत तँ पढ़ब छोड़ि देब?” सरयू ओकर माथ सहलौलीह। “पढ़ब किएक छोड़ब? पाइ हमर अधिकार अछि, पढ़ब तोहर।” ई छोट वाक्य शारदा पहिने सुनने छलीह; ओहि दिन सरयू अपन शब्दमे फेर कहि रहल छलीह। न्यायालयक कागज जँ देरियो लगैत छल, बच्चीक पढ़ाइ एखन चलैत रहबाक चाही।

शिवनारायण अपन शयनकक्षमे पुरान कापी निकाललनि। पहिल पन्नापर लिखल छल—“व्यक्तिक नामक पाछाँ ओकर भूमिका बुझू।” ओहि पन्नाक नीचाँ रेवती बच्ची रहैत लिखने छलीह—“अदालतमे सभ किछु सच कहैत छथि की?” पिता ओ प्रश्नकेँ देखिते मुस्कुरेलाह। सन् २००० क दण्डाधिकारीक कोठरीमे जे प्रश्न उठल छल, ओकर पूरा उत्तर सन् २००६ मे सेहो नहि भेटल। किन्तु अनुभव हुनका ई सिखौने छल जे सत्यकेँ बचाएब लेल सन्देह आ जाँचक बीच बाट खोलि राखब पड़ैत अछि। कागजक रूप बदलत, न्यायिक मंच बदलत, अपराधक साधन बदलत, मुदा मानवीय विवेकक आवश्यकता नहि बदलत।

सुदर्शन सहगलक कार्यालयमे ओहि मासक अन्तिम दिन फेर गिनती भेल। मोहनलालक विवादक एक खेपक मालक ठिकाना भेटल, मुदा देरीक कारण कतेक घाटा भेल, तकर हिसाबमे दुनू पक्ष सहमत नहि भेल। विक्रान्त अपन पिताक सामने एक कागज रखलक जाहिमे जे स्थापित अछि आ जे एखन विवादित अछि, तकर दू अलग कोठरी छल। सुदर्शन पहिने विरक्त भेलाह, फेर पन्ना पढ़ि कहला, “जे सिद्ध अछि से लिख, जे नहि अछि तकरा झूठ नहि कह।” विक्रान्त एहन सरल वाक्य सुनि आश्चर्यचकित भेल; व्यवसायिक मतभेदक बीच पिता एखनो अपन प्रतिष्ठासँ बेसी अभिलेखक उत्तरदायित्व मानि रहल छलाह।

मधुबनीमे अभिजीतक पिता अपन पुरान डाकक थैला सम्हारैत छलाह। बेटाक पत्रमे मुम्बईक बैंकिंगक जटिलता पढ़ि ओ उत्तर लिखलनि—“लोकक नाम शुद्ध लिखब सेहो एक सेवा अछि। हम डाक पहुँचबैत काल्हि पतेमे गामक नाम गलत भेटय तँ लोकसँ पूछैत रही। केवल कागज घुरा दैत तँ पत्रक प्रतीक्षा करनिहारक बात के सुनित?” अभिजीत पत्र पढ़ि दीर्घ समय मौन रहलाह। अपन कार्यस्थलक नियम आ पिताक सामान्य सावधानी हुनका एकहि अर्थक दू रूप बुझायल। ओ रेवतीकेँ चिट्ठीक एहि विचारक उल्लेख कएलनि। रेवती मुस्कुरौलीह, मुदा मनमे ओकर सामाजिक भार अनुभव कएलनि।

चैत्रक आरम्भमे कमलपुरक शारदा विद्यालयक बरामदामे बैसल एक पत्र लिखि रहल छलीह। ओहि पत्रमे तीन माँग छल—अपूर्ण भुगतानक मूल स्रोत, अनुपस्थितिक चिह्न लिखनिहारक अभिलेखीय पहचान, आ विद्यार्थीकेँ वास्तविक छात्रवृत्ति भेटबाक तिथि। ओहि समय बाहर आमक मञ्जरि लगल छल। फुलवा अपन घरसँ एक छोट पात लऽ आयल आ

शारदाक मेजपर रखलक। “मास्टरनीजी, आम फुलायल अछि,” ओ कहलक। शारदा पात देखिकय हँसलीह। “हँ, आ जँ गाछ नीक रहत तऽ फलो देत।” फुलवा पुछलक, “पन्ना जँ नीक रहत तँ?” शारदा कहलीह, “पन्ना ठीक पढ़ल गेल तँ ककरो हक नहि हरायत।”

अगिला दिन दरभंगामे रेवती एकटा पत्रक मसविदा पूरा करैत छलीह। अभिजीतकेँ लिखल छल—“अहिना आर्थिक विवादक कारण गम्भीर भऽ सकैत अछि, मुदा कोनो परिवार, कम्पनी अथवा विदेशक नामक आधारपर निष्कर्ष नहि निकालू। प्रमाण जहाँ धरि जाए, ताहिसँ आगाँ अनुमानक अधिकार न्यायालयक नहि।” पत्र बन्द करिते हुनकर नजर मेजपर राखल नव कानूनक पुस्तकपर गेल। पुस्तकक पन्ना स्वच्छ छल, अक्षर छपल। ओहि पुस्तकक बाहरे लोकक जीवनमे कतेको अछोप प्रश्न छल। रेवती बुझलीह जे आगामी वर्षसभमे हुनका केवल कानून नहि, पाइक संग चलैत मनुष्यक भय, श्रम, लोभ, आ स्मृति सेहो पढ़य पड़त।

साँझक अन्तिम उजासमे रेवती कार्यालयक फाटक बन्द करैत छलीह। सड़कक दोसर कात एक रिक्शावाला अपन दिनक कमाइ गनैत छल; बगलमे बैंकक कर्मचारीक कोट परल छल; दूर चाय बेचैत बालक डिब्बाक ढक्कन लगबैत छल। एहि लोकसभक पाइ अलग-अलग मार्गसँ घूमि फेर घर धरि पहुँचल छल। अपराधजन्य पाइको कखनो एही सामान्य जीवनक अभिलेखमे नुकएबाक प्रयत्न करि सकैत छल। मुदा सामान्य जीवनकेँ अपराधक छायासँ एकरूप मानि लेल जाए, तँ न्यायकेँ अपनहि आधार गमाबय पड़त। रेवती फाटकक सिटकिनी लगौलीह। दूरक मन्दिरसँ साँझक घण्टी सुनायल। अपन मेजपर सहगल व्यापार गृहक नामवला पत्र सुरक्षित छल, मुदा ओकर पाछाँक कथा एखन कोनो न्यायालय नहि, स्वयं समय लिखबाक छल।

अध्याय ११ — मरुधरक दोसर अभिलेख

जोधपुर, सन् २००६–२००७

जोधपुरमे भोरक उजास माटिक रंगसँ बन्हल रहैत अछि। आकाश स्वच्छ रहितौँ घरक देवाल, कूपक भीजल पाथर आ नीमक पातपर रातिक शीत अपन चिन्ह छोड़ि दैत अछि। फागुन २००६ क एक भोर रामदेव मण्डल कूपक घेरापर हाथ रखि देर धरि ठाढ़ रहलाह। कूपक पानि कम भऽ गेल छल, मुदा विवाद कम नहि भेल छल। चारि वर्ष पहिने जे कूपक कात तीनटा लाल खूँटा गाड़ल गेल छल, ओहिमे दूटा अदालतक आदेश पछाति हटि चुकल छल। तेसर खूँटा बालु भरल माटिमे आधा धँसल छल, जेना कोनो लोक अपन कही बातकेँ वापस लेबाक साहस नहि कऽ सकल हो। रामदेवक बेटा विमल आब लेखाशास्त्रक अन्तिम वर्षमे छल। बेटी कुसुम भूगोल पढ़ि रहल छलीह। घरमे कागजक संदूक ओतेकहि आदरसँ राखल जाइत छल जतेक अन्नक मड़बा; मुदा अन्न प्रत्येक वर्ष कमाइ आ खर्च भेलासँ बदलैत छल, कागजक विवाद अपन पुरान ठामपर अटकल छल।

जीवनी देवी घैलमे पानि भरैत कहलीह, “आजु न्यायालय जाएब तँ दूटा बात अवश्य पुछब। पहिल, नापी कहिया पूरा होयत; दोसर, हमर खेतक पगरियापर जे नब पाथर राखल अछि, ओ के हटाओत?” रामदेव कहलनि, “अधिवक्ता पारीक कहैत छथि जे आयोगक प्रतिवेदन आबि गेल अछि। ओ देखलापर बुझाएत।” जीवनी उत्तर देलनि, “चारि वर्षमे एकटा कूपक उत्तर आ दक्षिण नहि बुझायल? हमरा खेतमे ठाढ़ कऽ देथिन, हम बिना नक्शाक बताय देब। मुदा हमर कहलकेँ कागजक बराबर के मानत?” रामदेव मुस्कुरेबाक प्रयास कएलनि। ओ जनैत छलाह जे पत्नी बातक जड़ धरि पहुँचि जाइत छथि। कुसुम भीतरसँ कापीक एक पन्ना लेने अएलीह। ओहिमे कूप, पगरिया, नाली आ महाविद्यालयक प्राचीर अलग रंगक रेखासँ बनल छल।

“माय,” ओ कहलीह, “अहाँ जे देखैत छी, से हम लिखि लेब। अदालतमे बिना अधिकारक नापी नहि कहब; मुदा कूपक उपयोगक इतिहासक गवाही तऽ अहाँ देब सकैत छी।”

मरुधर महाविद्यालयमे ओहि दिन प्रवेश-सूचना टाँगल जाएवला छल। नव पाठ्यवर्षक आवेदन शुरू होमयसँ पहिने छात्रावासमे स्थान, शुल्कमे छूट, आरक्षित स्थानक पालन आ निर्धन विद्यार्थीक सहायता सम्बन्धी नियम सार्वजनिक करबाक माँग किछु विद्यार्थीक समूह कएने छल। ईश्वरदत्त राठौड़, जे इतिहास पढ़बैत छलाह, अपन कक्षासँ निकलि सूचना-पट्टक लग ठमकलाह। कागजपर शुल्कक विभिन्न शीर्षक छल, मुदा छात्रावासक अस्थायी निवासमे कतेक कोठरी वास्तवमे उपलब्ध अछि, तकर स्पष्ट संख्या नहि छल। नसीमा बानो आब वरिष्ठ छात्रा छलीह। चारि वर्ष पहिने दूरक किरायाक घरसँ पैदल आबयवाली ओहि छात्राक केशमे पहिल युवावस्थाक आत्मविश्वास आबि गेल छल, मुदा भोरक बस पकड़बाक कठिनाइ नहि हटल छल। ओ राठौड़सँ पुछलनि, “जे छात्रासभ शहरक बाहरसँ अबैत छथि, हुनका लेल सूची कखन लागल जायत? केवल शुल्क लिखलासँ रहबाक घर नहि भेटत।”

राठौड़ उत्तर देलनि, “न्यासक सचिवकेँ लिखित पुछू। हम अध्यापकक रूपमे जानकारी माँगब। मुदा ओ बात सेहो मनमे राखू जे विवादित भूमिपर भवन बनाबय आग्रह करब रामदेवक अधिकारक विरुद्ध होयत।” नसीमा कहलीह, “हम ओ बात चारि वर्षसँ बुझैत छी। कुसुम हमर सखी अछि। मुदा जे भूमि निर्विवाद अछि, ओतय छोट सुरक्षित निवासक व्यवस्था किएक नहि भेल?” एहि प्रश्नक उत्तर राठौड़ लग नहि छल। ओ देखैत छलाह जे एक आवश्यक न्यायिक रोककेँ किछु लोक सम्पूर्ण संस्थागत निष्क्रियताक बहाना बना लेने छल। नसीमा अपन सखीसँ कहलीह, “हमर आ अहाँक लड़ाइ अलग नहि अछि। अहाँक खेत सुरक्षित रहय, आ हमरासभकेँ पढ़बाक लेल सुरक्षित ठाम भेटय। मुदा न्यासक कागजमे ई दुनू माँग परस्पर विरोधी लिखल जाइत अछि।” कुसुम ओकरा हाथ पकड़ि कहलीह, “अहाँ एहेन शब्द लिखू जाहिमे दुनू बात एक संग रहय।”

दुपहरिया धरि छात्रसभ पुस्तकालयक बरामदामे जमा भेल। विमल अपन बहिनक आग्रहपर बैठकीमे आयल छल। राकेश मेघवाल, जे गामसँ रोज चौंतीस कोसक बसयात्रा कऽ पढ़य अबैत छल, फीसक रसीद उठाकय कहलक, “एतय शिक्षाक शुल्क अलग अछि,

प्रयोगशालाक अलग, विकासक अलग। हमर पिताक नाम सरकारी सूचीमे एहन वर्गमे अछि जकरा लेल सहायता उपलब्ध कहैत अछि; मुदा लेखाक कक्षमे कहल गेल जे पहिने पूरा शुल्क जमा करू, फेर कागज आएत।” किछु विद्यार्थी तकरा तुरन्त भेदभावक प्रमाण कहय लागल। राठौड़ रोकलनि, “राकेशक शिकायत जाँच योग्य अछि। मुदा कोन सहायता राज्य सरकारक अछि, कोन संस्थाक अपन व्यवस्था, कोन प्रवेश-नियम लागू अछि—ई सभ पहिने स्पष्ट करू। जे प्रावधान एतय लागू नहि, ओकर नाम लिखि आन्दोलन कएला सँ हमर वास्तविक माँग कमजोर होयत।”

न्यासक सचिव प्रह्लाद वैद्यकेँ एहन बैठकीक समाचार साँझ धरि पहुँचल। ओ शरद कोठारीक कार्यालयमे प्रवेश करैत कहलनि, “अध्यापक राठौड़ विद्यार्थीसभकेँ भड़का रहल छथि। छात्रावासक निर्माण रामदेवक मुकदमासँ रोकल अछि, मुदा सभ दोष हमरा ऊपर दैत अछि।” शरद कोठारी अपन चश्मा उतारलनि। “विद्यार्थीक लिखित माँग पढ़लहुँ?” “अभियो नहि।” “तखन हुनकर दोष केना तय कएलहुँ?” वैद्यक उत्तर नहि बनल। कोठारी कहला, “विवादित पट्टीपर रोक अछि। हमर अपन पुरान भवनक दू कोठरी खाली अछि। ओकर उपयोगपर विचार किएक नहि भेल? आ शुल्कक सूची सार्वजनिक करब दान नहि, व्यवस्थाक दायित्व अछि।” वैद्य कहला जे पुरान भवनमे मरम्मत चाही। कोठारी निर्देश देलनि जे खर्चक नाप-जाँच कराओल जाए। मुदा हुनका पत्ते नहि छल जे एही कार्यालयमे किछु मास पहिने तैयार एक नापी-प्रतिवेदनक प्रति राजस्व अभिलेखक मूलसँ मेल नहि खाइत अछि।

सुरेश पारीकक कार्यालयमे रामदेव, जीवनी आ कुसुम बैसल छलाह। पारीक एकटा पातर प्रतिवेदन खोललनि। शीर्षक छल—‘विवादित खसरा सीमाक स्थलीय निरीक्षण’। तीन पृष्ठमे दूरीक अङ्क, कूपक दिशा, दीवालक वर्तमान स्थिति आ एक परिशिष्ट नक्शा छल। रामदेव पुछलनि, “एहि कागजमे हमर कूप कुन ठाम अछि?” पारीक एक बिन्दुपर अँगुरी रखलनि। कुसुम कागज देखिते ठमकि गेलि। ओ कहलीह, “एहि परिशिष्टमे जे उत्तरक चिह्न अछि, ओ १९८२ क नकलक चिह्नसँ मिलैत अछि। मुदा हम मूल राजस्व नक्शाक निरीक्षणमे जे घिसल किनार देखल रही, से एतय नहि अछि।” पारीक उत्तर देलनि, “नव प्रतिवेदनमे पुरान कागजक घिसल किनार बनेबाक आवश्यकता नहि। मुख्य बात ई जे नापी केना कएल गेल।” कुसुम

कागजक अन्तिम पाँति पढ़लि—‘प्रस्तुत अभिलेखक आधारपर सीमांकन’। ‘अभिलेखक आधारपर’ शब्द ओहि समय हुनका माटिसँ अधिक भारी बुझायल।

पारीक कहलनि जे न्यायालयक आदेशानुसार एक स्थानीय निरीक्षणक विवरण तैयार कएल गेल छल, मुदा स्थलीय निरीक्षण करनिहारक काम वर्तमान स्थिति दर्ज करब अछि; स्वामित्वक अन्तिम निष्कर्ष न्यायाधीशक अधिकारमे रहैत अछि। कागजमे भू-अभिलेख विभागक सहायक सर्वेक्षक हरिराम जोशीक एक तकनीकी टिप्पणी सेहो लगाओल गेल छल। हुनक टिप्पणीमे लिखल छल जे पुरान दिशाक विवाद उपलब्ध नकलसँ सुलझि जाइत अछि। कुसुम प्रश्न कएलि, “ओ मूल कागज देखलनि की?” पारीक कहला, “प्रतिवेदनमे स्पष्ट नहि अछि। ई प्रश्न अगिला सुनबाईमे उठाएब।” रामदेव तुरन्त कहला, “अहाँ ई नहि कहू जे सभ झूठ अछि। जे सही अछि, ओकरा सही राखू। जे नहि बुझाइत, ओकरा पुछू।” चारि वर्षक मुकदमासँ हुनकर वाक्य बदलि गेल छल। पहिने ओ ‘हमर भूमि’ कहैत छलाह; आब ओकरा संग ‘केहन प्रमाण’ जोड़य लागल छलाह।

न्यायालयमे एहि बीच दोसर प्रकारक हलचल चलि रहल छल। एक युवक नकल-शाखासँ कागज लऽ दौड़ि रहल छल, दू वृद्ध भाई उत्तराधिकारक वादमे एक-दोसरासँ नजरि बचबैत छलाह, आ एक महिला अपन विवाहक सम्बन्धमे आदेशक प्रतीक्षा करैत छलीह। रामदेवकेँ एहन भीड़ चारि वर्ष पहिने अद्भुत बुझायल छल; आब प्रत्येक लोकक हाथमे फाइल देखिकय हुनका विचार अबैत छल जे न्यायालय केवल कठोर शब्दक भवन नहि, अनेक अधूरा जीवनक मिलनस्थल अछि। रजनीकान्त भण्डारी न्यासक प्रतिनिधि संग पहुँचलाह। ओ पारीककेँ प्रणाम कएलनि। कतेको बेरक विरोधी सुनबाईसँ दुनू अधिवक्ताक बीच एक पेशागत सावधानी विकसित भेल छल। ककरो प्रश्नक उत्तर दोसरा लेल पूर्व-स्वीकृति नहि छल, मुदा कागजक प्रति समयपर उपलब्ध कराएब दुनू आवश्यक बुझैत छलाह।

न्यायाधीश सुधांशु माथुरक समक्ष तकनीकी टिप्पणीक उपयोगितापर चर्चा शुरू भेल। पारीक कहला, “माननीय न्यायालय, प्रतिवेदनक नापी आ पुरान नक्साक आधारक भिन्नता स्पष्ट करबाक आवश्यकता अछि। हमर आग्रह ई नहि जे प्रतिवेदन तुरन्त अस्वीकार हो; हमर आग्रह ई जे एहि विशेष अंशक लेखकसँ प्रश्न करबाक अवसर देल जाए।” भण्डारी उत्तर

देलनि, “प्रतिवेदन न्यायालयक आदेशक पालनमे जमा भेल अछि। केवल पक्षकारक असहमति एकरा अस्वीकृत करबाक आधार नहि होयत।” न्यायाधीश कहला, “दूनू बात सही सीमा धरि स्वीकार्य अछि। प्रतिवेदन तैयार करबाक पद्धति प्रश्नसँ परे नहि। मुदा एखन हम स्वामित्व तय नहि करब।” उचित प्रक्रिया अनुसार हरिराम जोशीक स्पष्टीकरण आ सम्बन्धित मूल अभिलेख प्रस्तुत करबाक व्यवस्था निर्धारित भेल। रामदेव बाहर निकसिकय पुछलनि, “आब फेर नापी?” पारीक उत्तर देलनि, “पहिने जे नापी कहैत छथि, ओकर आधार बुझब।”

कुसुम राति अपन कापीमे दू चित्र बनौलीह। पहिल चित्रमे १९७८ क विक्रयपत्रमे वर्णित पगरिया आ कूपक दीवाल छल। दोसरमे १९८२ क प्रमाणित नकलमे बनल दिशाचिह्न। तेसर चित्र बनेबाक समय ओ रुकि गेलि। विश्वविद्यालयक भूगोल-पुस्तकमे लिखल छल जे पृथ्वीपर कोनो बिन्दुक अवस्थाक मानचित्रण लेल स्थिर आधार, माप-दण्ड आ विश्वसनीय दिशाक आवश्यकता अछि। ओ माएक हाथक छाया देखिकय याद राखने दिशा स्वयं प्रमाणिक सर्वेक्षण नहि छल, मुदा तकरा पूर्णतः व्यर्थ सेहो नहि कहि सकैत छलि। ओ अपन शिक्षक राठौड़ लग कापी लेने गेलि। राठौड़ कहलनि, “अध्ययनक पहिल अनुशासन—जे हम नहि जनैत छी, ओकरा लेखनमे “नहि जनैत छी” लिखब।” कुसुम ओहि वाक्यकेँ कापीक ऊपर लिखि लेलीह।

राठौड़ कुसुमकेँ भूगोल-विभागक युवा अध्यापक ललित चतुर्वेदीसँ भेटबौलनि। चतुर्वेदी भूमि-मापनक पद्धति पढ़बैत छलाह। ओ कापी देखलनि आ कहलनि, “अहाँक प्रश्न उचित अछि। मुदा घरेलू चित्र न्यायालयक आधिकारिक नापी नहि बनत। हम अहाँकेँ सर्वेक्षणक इतिहास बुझा सकैत छी, अदालतक विशेषज्ञक स्थान नहि लऽ सकैत छी।” कुसुम पूछलि, “जँ पुरान नक्शाक नकलमे उत्तरक चिह्न गलत उतारल गेल हो?” “तखन मूलसे मिलान आवश्यक। जँ मूलक चिह्न अस्पष्ट हो, तखन आसपासक स्थिर बिन्दु, पुरान सीमक विवरण आ वर्तमान स्थलीय दशा संयुक्त रूपेँ जाँचब पड़त।” ओहि वार्तासँ कुसुमकेँ विजयसँ बेसी पद्धतिक भरोसा भेटल। घर लौटैत ओ सोचैत रहलि जे माटि अपन पर नापल रेखाक विरोध नहि करैत, मुदा मनुष्य ओकर अर्थपर लड़ैत अछि।

एहि बीच प्रवेशक कागजक प्रश्न सेहो बढ़ि गेल। नसीमा, राकेश आ कुसुम छात्रसभक ओरसँ एक संयुक्त निवेदन तैयार कएलनि। ओहिमे चारि माँग स्पष्ट छल—प्रवेशक प्रकाशित मानदण्ड, शुल्कमे छूटक लागू प्रावधान, छात्रावासक वास्तविक उपलब्ध स्थान, आ शिकायत सुनबाक निश्चित व्यवस्था। राकेश चाहैत छल जे एक पाँति जोड़ल जाए—‘भेदभाव होइत अछि’। नसीमा कहलीह, “जतय भेल अछि, ओहि छात्रक तथ्यसँ लिखू। सभ अधिकारीकेँ दोषी कहला सँ पहिने कागज देखू।” कुसुम जोड़लि, “जँ हम अपन खेतक नक्शा देखबाक माँग करैत छी तँ महाविद्यालयक विद्यार्थी शुल्कक हिसाब देखबाक माँग किएक नहि करत?” एहि वाक्यपर विद्यार्थीसभ सहमत भेल। निवेदन पर हस्ताक्षर करैत एक छात्रा कहलि, “हमर नाम छापब नहि। घरक लोक पढ़ाइ रोकि देताह।” नसीमा ओकर भयर सम्मान कएलनि; सार्वजनिक सूचीमे सहमति बिना नाम नहि राखल गेल।

प्रह्लाद वैद्य एहि निवेदनकेँ पढ़ि पहिने क्रोध कएलनि। हुनका लगैत छल जे विद्यार्थीसभक तर्क न्यासक दानक अवमानना अछि। मुदा शरद कोठारी कहला, “दानक अर्थ कृतज्ञता माँगबाक अधिकार नहि। विद्यालय जँ सार्वजनिक प्रवेशक व्यवस्था चलबैत अछि तँ ओकर नियम विद्यार्थीकेँ बुझाएब पड़त।” कोठारी वित्तक अधिकारीसँ शुल्कक शीर्षकक विवरण मँगौलनि। ताहिमे एक प्रावधानक शब्द अस्पष्ट छल—‘सामान्य सुविधा अंश’। ओ अधिकारीसँ पुछलनि, “ई अंश के तय केलक?” उत्तर आयल, “पछिला कार्यकारिणी।” “निर्णयक प्रति?” अधिकारी चुप रहल। कोठारीक दृष्टि प्रह्लाद पर गेल। वैद्य कहला, “पुरान फाइलमे होयत।” कोठारी आदेश देलनि जे सम्बन्धित फाइल निकालल जाए आ अनुपलब्ध भेला पर अस्पष्टता लिखित रूपेँ स्वीकार कएल जाए; विद्यार्थीकेँ झूठ आश्वासन नहि।

ओहि साँझ जीवनी देवी खेतक मेड़पर बैसल छलीह। नसीमा हुनका भेटबाक आएलि। “काकी, छात्रासभक रहबाक प्रश्नपर अपन माँग फेर देलहुँ,” ओ कहलीह। जीवनी ओकरा पानि देलीह। “अहाँक घरसँ महाविद्यालय दूर अछि?” “बस छुटि जाए तँ बहुत दूर।” “हमर कुसुम तँ पैदल जाएत, मुदा अन्हारमे पगरिया कोन स्त्री लेल सुरक्षित अछि?” नसीमा चुप भेलीह। जीवनी कहलीह, “हम अपना भूमि छोड़ि नहि देब, मुदा अहाँकेँ घर भेटबाक विरोध सेहो नहि करब। जँ कोनो दिवस न्यासक लोक हमरसँ पूछत जे विवादित हिस्सा छोड़ि दोसरो

ठाम कोठरी बना सकैत अछि कि नहि, हम ओहि दिन खुशी होएब।” नसीमा अपन ओढ़नीक किनार दबौने कहलीह, “अहाँक एहि बातक कोनो कागज बनत?” जीवनी हँसलीह, “जँ कागज चाही तँ कुसुम लिखि देत।”

ओही सप्ताहमे परिसरमे आरक्षणपर तीक्ष्ण चर्चा उठल। समाचारपत्रमे केन्द्रीय उच्चशिक्षा संस्थानक सम्बन्धमे चलैत विधायी बहस पढ़िकय किछु छात्र मानि लेने छल जे प्रत्येक निजी महाविद्यालयमे तत्क्षण एकहि नियम लागू भऽ गेल। राठौड़ कक्षामे कहलनि, “राज्यक प्रावधान, विश्वविद्यालयक सम्बद्धता, संस्थाक प्रकृति आ देशक नव विधायिक चर्चाकेँ एकहि सूची नहि बनाउ। नियमक सही स्रोत देखल बिना समर्थन वा विरोध दूनू अधूरा रहत।” कुसुम पुछलि, “मुदा जकरा विद्यालय धरि पहुँचनाइ कठिन अछि, ओकरा नियम समझबाक अवसर के देत?” राठौड़ कहला, “एही लेल सार्वजनिक भाषा आवश्यक अछि।” नसीमा चाहैत छलीह जे प्रवेश-सूचनाक प्रति गामक विद्यालयसभ धरि पहुँचे। राकेश जोड़लक जे शुल्कक वास्तविक सीमा बताएब सेहो जरूरी अछि। बहस नारा सँ हटि अपन गामक पहिल पीढ़ीक विद्यार्थीक जीवनपर पहुँचि गेल।

प्रवेश-कक्षमे एक दिन मेघा नामक ग्रामीण छात्रा अपन प्रमाणपत्र लऽ एलीह। ओकरा आवेदनक एक खानेमे ककरो हाथसँ गलत चिह्न लगि गेल छल, आ कर्मचारी ओहि कारण फॉर्म लौटा देने छल। नसीमा ओकरा समझौलीह जे पहिने त्रुटिक लिखित सुधार माँगू। कर्मचारी फॉर्म फेर देखलक आ उचित दस्तावेजसँ मिलान कय त्रुटि सुधारलक। मेघा कुसुमसँ कहलीह, “एतबा छोट बात लेल हम तीन दिन बस पकड़ि आएल छी।” कुसुम उत्तर देलि, “कागजक छोट भूल लोकक जीवनमे बहुत पैघ भऽ जाइत अछि।” ओहि दिन राठौड़ अपन कक्षामे प्रश्न उठौलनि जे शिक्षण संस्थाक सफलताक माप केवल उत्तीर्ण विद्यार्थीक संख्या होयत कि जे विद्यार्थी पहिल दुआरि धरि पहुँचि नहि पाबैत अछि, हुनकर संख्या सेहो। ककरो लग तुरन्त उत्तर नहि छल।

दू सप्ताह बाद न्यासक कार्यकारिणी दू पुरान कक्ष मरम्मत कराय विद्यार्थिनीसभक अस्थायी निवासमे उपयोगक प्रस्ताव स्वीकृत कएलक। एहि प्रस्तावसँ सभ समस्या दूर नहि भेल; क्षमता कम छल, पानिक व्यवस्था अधूरी, एक महिला परिचारिकाक नियुक्ति शेष।

तथापि नसीमा एहि निर्णयकेँ विजय नहि, आरम्भ कहलनि। राकेशक शुल्क-शिकायतक जाँच सेहो शुरू भेल। रिकॉर्डमे एक सहायता-योजनाक रकम स्वीकृत छल, मुदा लाभार्थीक सूची नब पाठ्यवर्षक अनुरूप अद्यतन नहि भेल छल। लेखा-कर्मचारी स्वीकार कएलनि जे अनेक विद्यार्थीकेँ फॉर्म भरबाक समय सही जानकारी नहि देल गेल। ई प्रशासनिक चूक छल कि कोनो व्यक्ति जानबूझि अवसर रोकलक—एकर जाँच शेष रखल गेल। विद्यार्थीसभक माँग तखन एखनसँ अधिक अनुशासित भऽ गेल।

राकेशक घर नगरसँ बहुत दूर एक छोट बस्तीमे छल। ओकर पिता मानसून असफल भेल वर्षमे खेतिहर मजदूरी करैत, दोसर समय पाथर तोड़ैत छलाह। प्रवेश-निवेदनक समाचार घर पहुँचला पर पिता पहिने डेराएलाह। “हमर बेटा न्यासक विरुद्ध मुकदमा करैत अछि?” ओ पुछलनि। राकेश कहलक, “मुकदमा नहि, बाबू। केवल जे नियम अछि से देखय चाहैत छी।” पिता उत्तर देलनि, “नियम देखि पेट भरत?” राकेश अपन शुल्कक रसीद देखौलक। “जँ सहायता समयपर भेटत तँ हम अगिला मासक बसक भाड़ा बचा सकब। पढ़ाइ छोड़य नहि पड़त।” माए दुनू बीच चुपचाप ठाढ़ छलीह। ओ फटकल गेहूँ सँ एक मुठ्ठी दाना हटबैत कहलीह, “लोक हमरा बच्चाकेँ पढ़बय कहलनि, आब ओ नियम माँगैत अछि तँ डेर किएक?” पिता किछु नहि बजलाह। पछिला दिन ओ राकेशकेँ अपन पुरान अँगूठाछापवला मजदूरी-पञ्जी देलनि—“कागज रखब सीखू। हम नहि सीखलहुँ, एही लेल बहुत बेर मेहनतिक हिसाब दूसराक भरोसे छोड़लहुँ।”

कुसुमक घरमे ओहि राति विमल एक नब चिन्ता सामने आनलक। “बाबूजी, खेतक विवादमे खर्च बढ़ैत अछि। हम पढ़ाइ समाप्त कऽ कोनो लेखा-काम खोजब,” ओ कहलक। रामदेव ओकरा एकटक देखलनि। “अहाँ पढ़बाक लेल जे चाहैत छलहुँ, से छोड़ि काज किएक?” विमल उत्तर देलक, “घरक कर्ज अछि, कुसुमक शुल्क अछि, कूपक मरम्मत अछि।” जीवनी देवी कहलीह, “घरक भार अपन-अपन भागमे बाँटल जाइत अछि; मुदा दबावमे जे निर्णय लेब, तकर असर बरसों रहत।” विमल पिता लग बैठि एक पन्नापर परिवारक आय-व्यय लिखलक। न्यायालयक शुल्क, प्रतिलिपिक खर्च, खेतक घटल उपज, छात्रावासक प्रवेश, सभ एकहि पन्नापर आबि गेल। रामदेव कहला, “ई पन्नामे घरक दुख

देखाइत अछि, मुदा कुसुमक पढ़ाइ छोड़बाक आदेश नहि।” विमल हँसल, “तखन हमर काज होएत जे एहि दुखक हिसाब ठीक रखी।”

एक दिन सुरेश पारीककेँ राजस्व कार्यालयसँ दू पत्र प्राप्त भेल। पहिलमे १९८२ क मूल सर्वेक्षण-पञ्जीक निरीक्षणक पुरान विवरण छल; दोसरमे हरिराम जोशी द्वारा २००५ मे तैयार तकनीकी टिप्पणीक सन्दर्भ। पत्रक तिथिसभ मिलबैत पारीक देखलनि जे टिप्पणी तैयार भेल दिन हरिराम कथित रूपसँ राजस्व अभिलेखागारमे मूल नक्शा निरीक्षण कएने छलाह, मुदा मूल निरीक्षणक पञ्जीमे हुनकर नाम नहि छल। ई स्वयं निर्णायक तथ्य नहि छल—किछु अभिलेख निरीक्षण-पञ्जीमे अलग ढंगसँ दर्ज होइत अछि। मुदा जे टिप्पणी ‘मूल अभिलेखक अनुरूप’ लिखैत अछि, ओकर लेखक वास्तविक मूल देखलनि कि प्रमाणित नकल, ई प्रश्न आवश्यक छल। पारीक भण्डारीकेँ पत्र पठौलनि, प्रतिलिपि संलग्न कएलनि आ कहलनि जे न्यायालयमे प्रश्न उठायबासँ पहिने दोनों पक्ष सहमत अभिलेख जुटाउ। भण्डारी लिखलनि—“प्रश्न उचित अछि; तथापि मूल देखबाक अनुमति आ नकलक प्रमाणिकता भिन्न बात।” ई पत्र-विनिमयक सावधानी रामदेवकेँ आरम्भमे धीरे लगैत छल, मुदा ओ बुझि गेलाह जे जल्दी आरोप लगेनाइ मुदा देर धरि ओकर प्रमाण उठाएब कठिन बनबैत अछि।

हरिराम जोशी सरकारी कार्यालयक पुरान सहायक कर्मचारी छलाह। हुनकर दैनन्दिन काज खेतक सीमा देखब, कागजक प्रति मिलेनाइ आ विभागक अधिकारीकेँ स्थलीय जानकारी देब छल। ओ अभिलेखक ढेर आ सीमित साधनक बीच काज करैत छलाह। कथामे हुनका पहिनेसँ छल करनिहार मानि नहि चलल जाएत। एक भोर ओ अपन पुत्रीकेँ विद्यालय पठाकय कार्यालय पहुँचलाह तँ न्यायालयमे उपस्थितिक सूचना भेटल। सहकर्मी गोकुल पुछलक, “अहाँ मरुधरक प्रकरणमे गलत किछु लिखने छी?” हरिराम उत्तर देलनि, “गलत लिखलहुँ कि नहि, से एखन नहि कहि सकैत छी। हम जे देखलहुँ, से याद अछि। मुदा जे पन्ना लिखल गेल, ताहिमे “मूल” शब्द कोना आयल, से देखय पड़त।” गोकुल कहलक, “अहाँक हस्ताक्षर तँ अछि।” हरिराम चुप रहलाह। ओ घरमे रखल अपन पुरान डायरीक तिथि देखबाक सोचलनि, मुदा न्यायालयक कागजक बदला निजी स्मृति पर्याप्त नहि होएत, से सेहो बुझैत छलाह।

सुनबाईक पहिने न्यासक कार्यालयमे प्रह्लाद वैद्य आ शरद कोठारीक बीच तीक्ष्ण चर्चा भेल। वैद्य चाहैत छलाह जे स्थलीय टिप्पणीक आधारपर अन्तरिम रोक हटेबाक प्रार्थना कएल जाए। “चारि वर्ष बीति गेल। विद्यार्थीसभ हमरा अयोग्य कहैत अछि,” ओ कहलनि। कोठारी उत्तर देलनि, “विद्यार्थीक प्रश्नक उत्तर छात्रावासक सुधार अछि, विवादित भूमि कब्जा करब नहि।” “मुदा प्रतिवेदन हमरा पक्षमे अछि।” “प्रतिवेदनक आधार स्पष्ट हो। तकर बाद जँ न्यायालय उचित बुझत तँ आदेश देत।” वैद्य कहला, “अहाँ एतेक सावधानी करैत छी जे संस्थाक काज ठाढ़ भऽ गेल अछि।” कोठारी अपन पुरान कारीगर दिन याद कएलनि। “गलत मापपर काटल कपड़ाकेँ सीबि नहि सकैत छी, वैद्यजी। संस्थाक नींव तऽ कपड़ासँ बेसी भारी अछि।” ओहि वाक्यक पाछाँ नैतिक विश्वास मात्र नहि, अपन व्यापारक दीर्घ अनुभव छल।

न्यायालयक बरामदामे हरिराम जोशी पहिल बेर रामदेवसँ आमना-सामना भेलाह। रामदेव हुनका देखिकय उठि ठाढ़ होमय चाहलनि; पारीक इशारासँ रोकलनि। साक्षीकेँ सुनबाईक पहिने पक्षकारसँ विवादित तथ्यपर चर्चा करब उचित नहि। हरिराम सेहो दूरी बनौने रहलाह। पारीक एक छोट कापीमे प्रश्न लिखने छलाह—मूल नक्शा कखन देखल? निरीक्षण-पञ्जीमे प्रवेश अछि? नापी लेल कोन स्थिर बिन्दु आधार बनल? तकनीकी टिप्पणीक कोन अंश व्यक्तिगत अवलोकन आ कोन कार्यालयक नकलपर आधारित? भण्डारी अपन प्रश्न लिखैत छलाह—प्रतिवेदनक उद्देश्य की छल? मूल निरीक्षण नहि करबाक स्थिति रहल तँ उपलब्ध अभिलेखक प्रमाणिकता केहन छल? न्यायाधीश माथुर एहि प्रश्नसभकेँ व्यक्तिगत आरोपक नाटकीय मंच नहि, तथ्यक सुनियोजित परीक्षण बनाबय चाहैत छलाह।

हरिरामक शपथ लएल गेल। पारीक पहिने हुनकर पद, अनुभव आ टिप्पणीक हस्ताक्षर सम्बन्धी साधारण प्रश्न पुछलनि। हरिराम स्वीकार कएलनि जे टिप्पणी पर हुनकर हस्ताक्षर अछि। “अहाँ एहि टिप्पणीमे लिखने छी जे पुरान राजस्व नक्शाक मूल दिशाचिह्नसँ वर्तमान रेखा मेल खाइत अछि?” “हँ, एहन शब्द अछि।” “अहाँ व्यक्तिगत रूपसँ मूल नक्शा देखलहुँ?” हरिराम क्षणभरि ठमकलाह। “हमरा कार्यालयमे एक प्रमाणित नकल उपलब्ध कराओल गेल छल। मूल नक्शा स्वयं खोलि नहि देखलहुँ।” कोठरीमे मौन छा गेल। पारीक फेर पुछलनि, “तखन “मूल दिशाचिह्न” शब्द अहाँक प्रत्यक्ष निरीक्षणक आधारपर लिखल नहि

छल?” हरिराम उत्तर देलनि, “नकलमे जे मूलक चिह्नक पुनरुत्पादन बताओल गेल छल, तकरा हम एहि रूपमे लिखलहुँ। शब्द-चयन अधिक स्पष्ट होयबाक चाही छल।” न्यायाधीश हुनकर उत्तर ठीक-ठीक अभिलेखमे दर्ज करौलनि।

पारीक नहि चाहलनि जे एक स्वीकारसँ पूरा प्रतिवेदन शून्य घोषित करि देथि। ओ पुछलनि, “अहाँ स्थलीय निरीक्षणमे गेलहुँ?” हरिराम उत्तर देलनि, “दू बेर।” “की देखलहुँ?” “कूपक वर्तमान घेरा, प्राचीरसँ दूरी, पगरियाक जिर्ण अवशेष, आ एक पानि-नालीक पुरान मार्ग।” “एहि सभक माप अपने लेलहुँ?” “किछु दूरी हम लेलहुँ; किछु न्यायालयद्वारा नियुक्त स्थानीय निरीक्षकक नापी-अभिलेखसँ ग्रहण कएलहुँ।” “कोन दूरी अपने लेलहुँ, कोन दोसराक लेल, एकरा पृथक कएने छी?” हरिराम कागज खोललनि। दू अंकक लग अपन हस्ताक्षरक छोट चिह्न छल, मुदा तीन अंकक स्रोत स्पष्ट नहि छल। ओ कहलनि जे भिन्न स्रोत अलग लिखब नीक होइत। न्यायाधीश पूछलनि, “अहाँ अपन रिपोर्टक ओहि सीमा स्वीकार करैत छी?” हरिराम कहलनि, “हँ, माननीय न्यायालय।” रेवती एतय उपस्थित नहि छलीह, मुदा जोधपुरमे बैसल कुसुमकेँ पिताक कात एहि उत्तरमे न्यायालयक एक छोट विजय नहि, सत्यक आवश्यक संयम भेटल।

भण्डारी उठलाह। ओ हरिरामसँ पुछलनि, “नकल भिन्न अभिलेखागारसँ प्रमाणित छल कि केवल असत्यापित छायाप्रति?” हरिराम कहलनि, “कार्यालयक छाप आ प्रमाणन छल।” “तखन मूल नहि देखलासँ नकलक प्रत्येक अंक स्वतः गलत भऽ जाइत अछि?” “नहि।” “अहाँक अपन स्थलीय निरीक्षणमे कूपक जे वर्तमान स्थान देखल, से सही अछि?” “जतय हम देखलहुँ, ओकर विवरण सही लिखल।” “अहाँ स्वामित्वक निर्णय देने छलहुँ?” “नहि। हम नक्शा आ वर्तमान स्थलक सम्बन्धपर टिप्पणी देने रही।” भण्डारी न्यायालय दिस मुख कऽ कहलनि, “एहि सीमामे प्रतिवेदन उपयोगी रहैत अछि।” पारीक उत्तर देलनि, “उपयोगिताक सीमा स्पष्ट भेल—एतबे हमर आग्रह छल।” न्यायाधीश हुनका सभकेँ रोकि कहला, “ई न्यायालय कोनो साक्षीकेँ गलती स्वीकार करबाक कारणेँ दण्डित करबाक मंच नहि। मुदा गलतीक कारण जे निष्कर्ष अस्थिर भेल, तकरा यथावत् स्वीकार करबो सम्भव नहि।”

बाहर निकललापर रामदेव पारीककेँ धीमे स्वरमे पुछलनि, “आब कूप हमर साबित भऽ गेल?” पारीक कहला, “नहि। आजु ई सामने आयल जे टिप्पणीक किछु हिस्सा मूलक प्रत्यक्ष दर्शनपर आधारित नहि। ताहिसँ विरोधी पक्षक सम्पूर्ण अधिकार स्वतः समाप्त नहि होइत। हमरा सभकेँ नब विश्वसनीय नापी चाही।” रामदेव माथ हिलौलनि। ओहि दिन हुनकर मनमे निराशा आ राहत साथे आयल। चारि वर्ष धरि जे कागजक एक पाँति हुनका भय दैत रहल, ओहि पाँतिक सीमा स्पष्ट भेल; मुदा खेतक सीमा एखन धुँधल अछि। जीवनी कहलीह, “ई न्यायालय सच बजबाबैत अछि, मुदा कतेक दिन लगैत अछि।” पारीक उत्तर देलनि, “सच बजबाक साहस छोट बात नहि; समयक पीड़ा छोट कहब तऽ अहाँक कष्टक अपमान होयत।” हुनकर वाक्यमे पेशागत संयम छल, आ अनुत्तरित न्यायिक विलम्बक स्वीकारोक्ति सेहो।

हरिराम स्वयं अपन कार्यालय लौटि पुरान डायरी खोललनि। २००५ क आश्विन मासक एक पन्नामे लिखल छल—‘मरुधर; नक्शाक नकल; पश्चिमी कूप’। अगिला पन्नामे एक अन्य स्थलपर निरीक्षणक उल्लेख छल। ओ डायरी देखि कऽ अपन सहकर्मीकेँ कहला, “एहि डायरीसँ मात्र सिद्ध नहि होएत जे सरकारी अभिलेखक प्रति गलत अछि। मुदा हम जे मूल देखल मानि लिखलहुँ, से यादक त्रुटि छल।” सहकर्मी पुछलक, “अहाँकेँ दण्ड भेटि सकैत अछि?” हरिराम कहला, “जे काजमे असावधानी भेल, ओकर जवाब देब पड़त। मुदा तथ्य नुकाबि रखला सँ गलती घटत नहि।” ओ न्यायालय लेल एक लिखित स्पष्टीकरण तैयार कएलनि। ताहिमे अपन जानकारीक सीमाक उल्लेख कएलनि, आ जँ आवश्यक हो तँ मूल अभिलेखक उपस्थितिमे संयुक्त नापीक प्रस्ताव रखलनि। ओ अपन पद बचायबाक इच्छा त्यागल नहि छल; मुदा पद बचेबाक लेल असत्य कहबाक निर्णय सेहो नहि लेलक।

एहि घटनाक समाचार महाविद्यालयमे पहुँचल तँ विद्यार्थीसभमे फेर अस्पष्ट चर्चा चलि गेल। केओ कहलक जे न्यासक जालसाजी प्रमाणित भऽ गेल, केओ कहलक किसानक दावा टूटि गेल। कुसुम छात्रसभा लग ठाढ़ भऽ स्पष्ट कहलीह, “न्यायालय कोनो जालसाजीक फैसला नहि देलक। एक टिप्पणी लिखनिहार कहलनि जे मूल नक्शा देखबे बिना नकलक आधारपर शब्द लिखल। एहि स्वीकारक अर्थ अछि जे तकर आधार जाँचबाक चाही।” एक युवक पुछलक, “अहाँ अपन पिताक जीत नहि चाहैत छी?” कुसुम उत्तर देलक, “चाहैत छी। मुदा जे

विजय असत्य लिखिकय भेटत, ओ अगिला नापीमे फेर ढहि जाएत।” नसीमा कुसुमक कात आबि ठाढ़ भेलीह। ओ कहलीह, “हम सभ छात्रावास माँगैत छी, मुदा कोनो झूठ नक्सापर नहि। कुसुमक प्रश्न हमर प्रश्नक विरोधी नहि।” एहि दिन पहिल बेर विद्यार्थीसभ देखलक जे एकहि मञ्चपर किसानक भूमि आ स्त्री-छात्रावासक माँग संगहि राखल जा सकैत अछि।

राठौड़ अध्यापकसभक एक बैठकीमे एही बात उठौलनि। ओ कहलनि, “पाठ्यक्रममे इतिहास लिखबैत काल हम मूल स्रोत आ पछिला व्याख्याक अन्तर पढ़बैत छी। जँ अपन संस्थाक वर्तमान समस्यामे ई भेद नहि मानब तँ पढ़ाइ निरर्थक भऽ जाएत।” प्रधानाचार्य महेन्द्रनाथ पाठक कहला, “शिक्षकक काज केवल पढ़ेबाक नहि, संस्थाक प्रतिष्ठा सुरक्षित रखबाक सेहो अछि।” राठौड़ उत्तर देलनि, “प्रतिष्ठा सत्यक विरोधसँ नहि बचैत। विद्यार्थी शान्तिपूर्वक लिखित माँग देने छथि; हम ओकरा अनुशासनभङ्ग किएक मानब?” एक वरिष्ठ अध्यापक बीचमे कहला जे सार्वजनिक विवादसँ प्रवेश प्रभावित भऽ सकैत अछि। राठौड़ उत्तर देलनि, “गोपन रखने प्रश्न प्रवेश नहि बढ़बैत। प्रमाणित नियम आ उचित सुविधा माता-पिताक भरोसा बढ़बैत अछि।” अन्तमे बैठक निर्णय लेलक जे प्रवेश-सूचना स्पष्ट बनाओल जाए आ छात्रावासक मरम्मतिक अवस्थाक विवरण विद्यार्थीसभकेँ देल जाए।

रामदेवक घरमे ओहि राति रतनाराम भाटी आएल। चारि वर्ष पहिने ओ सीमक पुरान खूँटा सम्बन्धमे अस्पष्ट स्मृति बतौने छल। आजु ओ कहलक, “हमर पुरान पिता जे नाली साफ करैत छलाह, ओहि नालीक पाथर एखन खेतक किनारमे भेटत।” कुसुम पुछलि, “अहाँ निश्चित छी जे ओही नाली अछि?” रतनाराम कहलक, “निश्चित एतबे छी जे एतय पानिक रस्ता छल; ओकर नाप आ वर्ष बताय नहि सकब।” कुसुम कापी खोलि ओकर कथन लिखलि, मुदा ओकरा अदालतक सिद्ध प्रमाण नहि कहलि। जीवनी बोलीह, “रतनाराम, अहाँ हमर जे बात सही नहि जानैत छी, से नहि कहू।” भाटी हँसि देलनि। “आब अहाँ सभ स्वयं अधिवक्ता भऽ गेलहुँ।” रामदेव उत्तर देलनि, “कचहरी लोककेँ एतेक सिखा दैत अछि जे अपूर्ण बातपर शपथक भार कतेक भारी होइत अछि।”

वर्षाक आरम्भमे जोधपुरक आकाशमे धूलक बादल उठैत छल। ओहि समय न्यासक कार्यकारिणी नब छात्रावासक अस्थायी व्यवस्था देखबाक लेल पुरान भवन पहुँचल। शरद

कोठारी, वैद्य, राठौड़ आ तीन विद्यार्थी-प्रतिनिधि उपस्थित छलाह। कोठरीक छतमे चूनाक पट्टी झड़ि रहल छल; आँगनमे पानि जमबाक सम्भावना छल; रात्रिक प्रकाशक पर्याप्त व्यवस्था नहि छल। नसीमा सूची देखौलीह—“केवल कोठरीक संख्या लिखला सँ निवास सुरक्षित नहि बनत।” प्रह्लाद वैद्य प्रश्न कएलनि, “अहाँ सभकेँ एखन सब किछु पूर्ण चाही?” नसीमा उत्तर देलीह, “नहि। हम जे अछि से साफ-साफ लिखल चाहैत छी। जे अधूरा अछि, ओकर समय आ जिम्मेदार व्यक्ति। आ जखन धरि मरम्मत नहि हो, असुरक्षित भागमे कोनो छात्राकेँ राखल नहि जाए।” वैद्य एहि शब्दसभमे विरोध नहि, व्यावहारिक सावधानी सुनलक। ओ पहिल बेर अपन कागजमे मात्र लागत नहि, जोखिमक विवरण सेहो लिखलक।

राकेशक शुल्क-शिकायतक जाँचमे एक निर्णायक अन्तर निकलल। संस्थाक अपन सहायता-कोषमे आवेदनक अन्तिम तिथि दाखिला-दफ्तरक सूचना-पट्टपर लिखल छल, मुदा अनुसूचित जाति तथा जनजातिक पात्र विद्यार्थीक राज्य-सम्बद्ध सहायता-पत्रक प्रस्तुति लेल अलग तिथि छल। दाखिला-शाखाक एक कर्मचारी दुनू सूचीकेँ एक मानि अनेक छात्रकेँ फेर आवेदन करबाक कहलने छल। ई एक व्यक्तिक जानबूझि शोषण छल कि कार्यालयक अव्यवस्था—निर्णय तत्काल सम्भव नहि। प्रधानाचार्य पाठक लिखित सुधार-सूचना जारी कएलनि, आ जे छात्र समयसीमाक भ्रमसँ वञ्चित भेल छथि हुनकर आवेदन फेर देखबाक समिति बनल। राकेश समितिक समक्ष अपन रसीद देखौलक। एक सदस्य पुछलक, “अहाँ पहिने किएक नहि आएलहुँ?” राकेश उत्तर देलक, “हम तीन बेर आएल रही। पहिल दू बेर “काल्हि आउ” कहल गेल, तेसर बेर “समय बीति गेल”। एहि तीन दिनक कोनो लिखल निशान हमरा लग नहि, एहि लेल ई बात केवल हमर गवाही अछि।”

समितिक बैठकक बाद राकेश नसीमा आ कुसुमकेँ कहलक जे ओकरा अपन सहायताक अंतिम उत्तर एखन नहि भेटल। “लोक कहत जे जीत भेल,” ओ कहलनि, “मुदा घरक भाड़ा तँ हमरा आजु दियए पड़त।” नसीमा अपन अल्प बचतसँ मदद देबाक प्रस्ताव कएलनि। राकेश मना करैत कहलक, “अहाँक अपन किराया बाकी अछि। हम काज खोजब।” कुसुम अपन भाई विमलक नाम सुझौलीह, जे एक स्थानीय पुस्तक-विक्रेताक हिसाब सप्ताहमे दू दिन मिलबैत छल। विमल राकेशकेँ पुस्तक-सूची बनबय मदति करबाक अवसर देलक। एहि छोट

सहायतासँ आन्दोलनक प्रश्न समाप्त नहि भेल, मुदा पात्रसभक मित्रता केवल भाषणमे नहि, रोजक जिम्मेदारीमे प्रकट भेल। राठौड़ ई दृश्य देखलनि तँ अपन विद्यार्थीक विषयमे पहिनेक निष्कर्ष बदललनि। हुनका बुझायल जे युवासभक आक्रोशक भीतर जीविकाक गणना सेहो रहैत अछि; केवल आदर्शक भाषामे ओकरा बुझल नहि जा सकैत अछि।

दीवानी मुकदमाक अगिला कार्यवाही लेल पारीक मूल नक्शा, १९८२ क प्रमाणित नकल, १९७८ क विक्रयपत्र, स्थलीय निरीक्षणक चित्र आ हरिरामक लिखित स्पष्टीकरणक क्रमबद्ध अनुक्रम तैयार कएलनि। भण्डारी सेहो प्रतिवेदनक विश्वसनीय हिस्सासभ छाँटि रखलनि। न्यायाधीश माथुर पक्षसभसँ पुछलनि जे मूल अभिलेखक संरक्षणक संग कोन प्रकारक नव परीक्षण सम्भव अछि। पारीक कहलनि, “स्वतन्त्र तकनीकी अधिकारी द्वारा वर्तमान सीमचिह्नक मापन, मूल अभिलेखक निरीक्षण आ दुनू पक्षक उपस्थितिमे तुलना।” भण्डारी सहमत भेलाह, मुदा जोड़लनि जे नब परीक्षण विवादित भूभागसँ बाहर न्यासक निर्विवाद निर्माणकेँ रोकय नहि चाही। न्यायाधीश कहला, “अन्तरिम आदेशक सीमा पूर्ववत् स्पष्ट अछि। नब परीक्षण केवल तथ्य स्पष्ट करबाक लेल होएत, स्वामित्वक पूर्वनिर्णय नहि।” पक्षसभकेँ अधिकारीक योग्यता, खर्च आ परीक्षणक विषयपर लिखित सुझाव देबाक अवसर भेटल।

एहि बीच शरद कोठारीक स्वास्थ्य कमजोर भऽ रहल छल। ओ साँझक समय महाविद्यालयक पुस्तकालयमे आयलाह आ पुरान दान-पञ्जी देखलनि। ओहि पञ्जीमे हुनकर पहिल अनुदानक उद्देश्य लिखल छल—“जे विद्यार्थी पैसाक अभावमे पुस्तक नहि किनि सकैत अछि, तकरा पुस्तकालय उपलब्ध कराएब।” प्रह्लाद वैद्य लग ठाढ़ छल। कोठारी कहला, “हम पहिने पुस्तक देब चाहैत रही; आब भवनसँ अपन नाम जोड़ि देबामे बेसी लगि गेलहुँ की?” वैद्य उत्तर देलक, “भवन सेहो आवश्यक अछि।” “अवश्य। मुदा भवनक नींव जँ पड़ोसीक अधिकारक प्रश्नकेँ दबा देत तँ हमरा नामक पाथर कतबा दिन टिकत?” प्रह्लाद पहिल बेर दीर्घ समय धरि मौन रहल। ओ बुझैत छल जे कोठारीक मृत्यु पछाति न्यासक जिम्मेदारी ओकरा अधिक उठेबाक पड़ि सकैत अछि। ओहि भयमे पछिला वर्षसभक प्रत्येक जल्दी निर्णयक अर्थ बदलैत छल।

घर घुरलापर प्रह्लाद अपन पत्नी सरोजसँ कहलक, “महाविद्यालयमे सभ लोक हमरा कठोर बुझैत अछि।” सरोज पूछलीह, “अहाँ स्वयं के बुझैत छी?” ओ कहलनि, “हम भवन बनबैत छी, आ लोक हमरा किसानक शत्रु कहैत अछि।” सरोज उत्तर देलीह, “अहाँ भवन बनबैत छी कि नियमक कागज जल्दी पूरा करब चाहैत छी?” प्रह्लाद एकटक ताकलक। “ई दुनू भिन्न अछि?” “भिन्न होयत। जँ छात्रा सुरक्षित कोठरी माँगैत अछि, ओ भवनक पक्षमे अछि। जँ किसान अपन कूप बचबैत अछि, ओ खेतीक पक्षमे अछि। अहाँ ई दुनूकेँ अपन विरोधी बनौने छी।” सरोजक वाक्यपर प्रह्लादकेँ क्रोध नहि, थकान अनुभव भेल। ओ राति देर धरि परियोजनाक पुरान चित्र देखैत रहल। एकरे भीतर हुनका एहि सम्भावनाक पहिल संकेत भेटल जे भवनक मार्ग आ खेतक पगरिया अलग रखि योजना बनि सकैत अछि।

कुसुम भूगोलक पाठ्यक्रममे स्थानीय जलस्रोतपर लघु अध्ययन करैत छलीह। ओ महाविद्यालयक अनुमतिसँ नगरक तीन पुरान कूपक चित्र, वर्षाक पानिक बहाव आ पगरियाक स्थिति दर्ज कएलनि। अपन घरक कूपकेँ अध्ययनमे राखबाक समय ओ शिक्षककेँ स्पष्ट कहलीह जे एहि विषयमे हुनकर परिवारक दीवानी विवाद चलि रहल अछि। चतुर्वेदी एहि खुलासाक प्रशंसा कएलनि। “शोधमे अपन सम्बन्ध नुकाएब उचित नहि,” ओ कहलनि। “मुदा सम्बन्ध रहबाक कारण प्रत्येक अवलोकन स्वतः गलत नहि होइत। प्रश्न अछि जे अहाँ मापक पद्धति, सीमाक विवेचन आ विरोधी परिणामक सम्भावना लिखैत छी कि नहि।” कुसुम एक पन्ना छोड़ि दैत छलीह जतय अपन मूल अनुमान लिखबाक छल। ओ निश्चय कएलनि जे नव मापन आबिते फेर चित्र बनौतीह। एहि संयममे हुनका अपन पिताक संघर्षक एक गहिर अर्थ भेटल—अधिकारकेँ प्रिय मानब आ प्रमाणकेँ अनुशासित रखब परस्पर विरोधी नहि।

असोजक एक दुपहरिया रतनाराम भाटीक बारीमे वर्षाक पहिल पैघ धार उतरि गेल। पानि पुरान नालीक कथित मार्गसँ एक ओर बहल, मुदा कूपक उत्तरक चिह्नपर जमल गादक कारण रास्ता बदलि गेल। रामदेव ओ दृश्य देखबाक लेल दौड़लाह। पारीककेँ संदेश पठाओल गेल जे आजुक जलप्रवाहक चित्र उपलब्ध अछि। अधिवक्ता उत्तर देलनि—“प्राकृतिक बहाव देखबाक तथ्य उपयोगी होय सकैत अछि, मुदा वर्तमान पानि एकर प्रमाण नहि जे १९८२ क सीमा कोन छल।” रामदेव ई वाक्य पढ़ि हँसलाह। “कचहरी हमरा वर्षाक पानि पर सेहो शङ्का करब

सिखा देलक।” जीवनी कहलीह, “पानिपर नहि, पानिसँ निकालल निष्कर्षपर।” कुसुम माक एहि उत्तरकेँ अपना अध्ययनमे लिखलि। एहि छोट वार्तामे चारि वर्षक न्यायिक संघर्षक सम्पूर्ण शिक्षा समेटल छल।

रेवती झाकेँ जोधपुरसँ पारीकक पत्र भेटल तँ ओ दरभंगाक कार्यालयमे शारदा देवीक विद्यालयक वेतन-अभिलेख देखैत छलीह। एक ठाम मृत माधवेश्वर मिश्रक नाम बादक मासमे उपस्थितिक पञ्जीमे छल, दोसर ठाम सर्वेक्षक मूल नक्शा देखबे बिना मूलक दिशाचिह्नक उल्लेख कएने छल। रेवती दुनू फाइल एक-दोसरक कात रखलीह, मुदा समान त्रुटि-समान अपराधक निष्कर्ष नहि कएलनि। शिवनारायण पुछलनि, “जोधपुरक लोक की कहैत छथि?” रेवती उत्तर देलीह, “हरिराम स्वयं अपन ज्ञानक सीमा स्वीकार कएलनि। विद्यालयमे एखन तक लिखनिहारक पहचान स्पष्ट नहि।” पिता कहला, “दूनू ठाम जे नहि जनैत छी, से स्वीकार करबाक साहस महत्त्वपूर्ण अछि। मुदा एकटा अभिलेखक चूकक जाँच स्वयं मनुष्यक सम्मानक विरुद्ध नहि बनय।” रेवती पत्रक अन्तमे पारीककेँ लिखलीह जे नब सर्वेक्षणक आदेश प्राप्त भेलापर ओकर प्रति पठाउ।

ओहि राति शिवनारायण अपन पुरान नीलकान्त साहक फाइल खोलि एक पन्ना देखलनि। रामकिशुनक नामवाला विवादित प्रविष्टि न्यायालयमे दोषसिद्धिक आधार नहि बनल छल। मुदा बही लिखनिहारक वास्तविक परिचय अनसुलझल रहि गेल। ओ रेवतीकेँ कहला, “कानून सभ रहस्यक अन्तिम उत्तर नहि दैत। कोनो आरोप असिद्ध होएबक अर्थ घटना कहियो नहि घटल, से नहि; आ कोनो प्रशासनिक गलती भेटबक अर्थ अपराध अवश्य भेल, सेहो नहि।” रेवती कहलीह, “तखन कथाकारकेँ न्यायालयसँ अलग स्थान चाही।” पिता हँसलाह। “कथाकार जे जीवन देखैत अछि, ओकर अन्तिम अध्याय अदालतक आदेशसँ बेसी दूर धरि जा सकैत अछि।” रेवतीकेँ अपन दिल्लीक एक सहपाठी याद पड़ल, जे पत्रकारिता पढ़बाक लेल विधि-अध्ययन छोड़ने छल। ओ सोचलीह जे प्रत्येक समाजक कहानीक एकटा अभिलेखागार अदालत अछि, मुदा लोकक स्मृति न्यायिक फाइलक बाहर सेहो बाँचि रहैत अछि।

आब वर्ष २००७ क आरम्भ छल। मरुधर महाविद्यालयमे नव पाठ्यवर्षक प्रवेशक लेल सार्वजनिक सूचना-पट्ट फेर सजल। ई बेर छात्रावासक उपलब्ध स्थानक संख्या, अस्थायी

कक्षक मरम्मतिक दशा आ शुल्कक अलग-अलग शीर्षक स्पष्ट लिखल छल। राकेशक सहायता-आवेदनक पुनर्विचार भेल; पात्रता आ आवश्यक अभिलेखक परीक्षण पछाति ओकरा किछु सहायता स्वीकृत भेल। जे भाग नहि भेटल, तकर कारण लिखित रूपमे देल गेल। राकेश निर्णय पढ़ि कहलक, “हमरा सम्पूर्ण रकम नहि भेटल, मुदा एखन कमसँ कम जनैत छी जे किएक नहि भेटल।” नसीमा कहलीह, “जँ कारण गलत अछि तँ ओकर सुधारक मार्ग सेहो अछि।” कुसुम दुनूकेँ देखैत सोचलि जे न्यायक एक रूप अन्तिम निर्णय अछि, दोसर रूप ई जे लोककेँ अपन प्रश्नक उत्तर भेटय। मुदा एहि छोट सुधारक कारणेँ सम्पूर्ण शिक्षा-व्यवस्थाक असमानता समाप्त भऽ गेल, एना ककरो नहि बुझायल।

नव सर्वेक्षणक आदेशक दिन न्यायालयमे असाधारण भीड़ नहि छल। रामदेव अपन पुरान सफेद पाग पहिरने छलाह; जीवनीक आँचलमे मूल विक्रयपत्रक नकल सुरक्षित छल; कुसुम अपन कापी घरमे राखने छलीह। न्यायाधीश माथुर पक्षसभक सुझाव सुनि निश्चित कएलनि जे मूल अभिलेखक उपलब्धता, स्थिर सीमचिह्न, वर्तमान स्थलस्थितिक निरीक्षण आ परस्पर विरोधी नकलक भिन्नता जाँचबाक लेल स्वतंत्र तकनीकी सहायता लेल जाए। आदेशमे ईहो स्पष्ट छल जे पूर्वक सीमित अन्तरिम निषेधाज्ञा यथावत् रहत, स्वामित्वपर अन्तिम निष्कर्ष नहि आयल अछि, आ नब अधिकारीक प्रतिवेदनपर दूनू पक्षकेँ आपत्ति रखबाक अधिकार रहत। भण्डारी आदेशक एक पाँति ध्यानसँ पढ़लनि—“मूल अभिलेख उपलब्ध नहि भेला पर ओकर अभाव आ वैकल्पिक स्रोत स्पष्ट लिखल जाए।” पारीक सेहो एही पाँतिक लग कलम रोकलनि। दुनूकेँ ज्ञात छल जे पुरान गलतीक पुनरावृत्ति रोकबाक ई न्यूनतम उपाय अछि।

सुनबाई समाप्त भेलाक बाद हरिराम जोशी न्यायालयक द्वारपर किछु दूरीसँ रामदेवकेँ देखलनि। ओ हुनका लग नहि गेलाह; रामदेव सेहो नहि। मुदा रामदेवक मनमे हरिरामक प्रति जे क्रोध छल, ताहिमे परिवर्तन अएल। जँ ओ व्यक्ति जिरहमे असत्य पर अड़ि रहल होइत तँ मुकदमा कतेक बेर भ्रमक भीतर घूमैत। हरिरामक स्वीकारसँ रामदेवक स्वामित्व सिद्ध नहि भेल, मुदा परीक्षणक दिशा साफ भेल। रामदेव मनहि मन कहलनि—“गलती लिखनिहार प्रत्येक हाथ अपराधी नहि, आ अधिकार छीननिहार प्रत्येक हाथ उघार नहि।” एहि विचारक संग ओ बाहरी बरामदामे उतरला। विमल हुनकरा सम्हारि पुछलक, “बाबूजी, आब आशा

अछि?” रामदेव उत्तर देलनि, “आशा साँच देखबाक अछि। जमीन हमर निकलल तँ रखब; नहि निकलल तँ धरतीक नाम झूठ लिखि नहि राखब।”

ओहि साँझ शरद कोठारीक कार्यालयमे नब छात्रावासक परिवर्तित रेखाचित्र आयल। नन्दलाल ठेकेदार बतौलक जे निर्विवाद भागमे भवनक एक हिस्सा बनाओल जा सकैत अछि, आ पगरियाक मार्ग खुलल रहत। खर्च पहिनेसँ अधिक छल; समय सेहो लागयवला छल। कोठारी कागज देखैत कहलनि, “अधिक खर्चक कारण अधिकारकेँ छोट नहि बनाओल जाए।” प्रह्लाद वैद्य एखन तुरन्त विरोध नहि कएलक। ओ केवल पूछलक, “विद्यार्थीसभकेँ समयक सही अनुमान कहिया देब?” कोठारी कहला, “जखन गणना पूरा हो। जे जनैत छी, से कहब; जे नहि जनैत, सेहो स्पष्ट कहब।” प्रह्लाद अपन पुरान भाषा बदलि दैत छल—कार्य जल्दी होएत, एकर खोखला आश्वासनक बदला प्रमाणित चरणक विवरण। सरोजकेँ ओ राति कहलक जे छात्रावासक काज देर भेल, मुदा शायद आब पहिल बेर सही आधारपर चलत।

घरमे जीवनी कूपक पानि निकालि तुलसीक क्यारिमे देलीह। कुसुम भूमि-नक्शाक दू पन्ना सन्दूकमे राखलि आ तेसर खाली पन्नापर लिखलि—“नव नापीक प्रतीक्षा।” बगलमे प्रवेश-सूचनाक नकल छल, जाहिपर छात्रावासक सीमित स्थान आ सहायता-नियमक शब्द अधिक स्पष्ट छल। ओकरा बुझायल जे चारि वर्षक न्यायालयीन संघर्ष जमीनक मात्र नहि रहल; ई संस्थाकेँ अपन कागजक उत्तरदायित्व बुझेबाक प्रश्न बनल। नसीमा जे राति छात्रावासक अस्थायी कोठरी देखबाक गेलीह, ओ कुसुमकेँ पत्र लिखलीह—“एखन सुरक्षित द्वार लागल अछि, मुदा पानिक पाइप एखन अधूरा अछि। हम ई बात सेहो लिखब।” एहि एक पाँतिमे सखीक पढ़ाइ, जीवनीक कूप आ रामदेवक पगरिया एक संग जीवित छल।

राति खेतक पश्चिमी कातसँ ठण्ढ हवा उठल। रामदेव सन्दूक बन्द करैत अपन पिताक पुरान कथन स्मरण कएलनि—“माटि केकरो नाम नहि पढ़ैत; मनुष्य अपन नाम पढ़ि ओकरा सीमा बनबैत अछि।” ओहि राति हुनका बुझायल जे सीमाक लिखावट बदलि सकैत अछि, मुदा बिना जाँच ओकरा बदलल अथवा बचाओल दुनू अन्याय अछि। दूर मरुधर महाविद्यालयक नव विद्युत-दीप जलि रहल छल। छात्रावासक एक अधूरा भवनक कात खेतक पुरान कूप चमकि रहल छल। कुसुम खिड़की लग बैसि लिखैत छलीह—“सर्वेक्षक मूल नक्शा देखबे बिना

प्रतिवेदनक एक निष्कर्ष देलक। ओ गलती स्वीकार कएलक। एखन सही नापी होएत।” ओ कलम रोकि देलीह। कागजक अन्हार किनारपर अगिला वर्षक इतिहास ठाढ़ छल, जकरा ओ एखन नहि जनैत छलीह; मुदा एकटा बात स्पष्ट छल—प्रमाण बिना उच्चारित निर्णायक शब्द देर-सवेर न्यायालयक दुआरिपर फेर लौटैत अछि।

अध्याय १२ — चन्द्रयान आ अभियुक्त

सन् २००८ : लुधियाना, बेंगलुरु, मुम्बई आ दरभंगा

भादवक अन्तिम साँझ लुधियानाक कारखानाक फाटकपर जे भीड़ जुटल छल, ओकरा ककरो राजनीतिक सभा नहि कहल जा सकैत छल। लोकक हाथमे झण्डा नहि, वेतनक पर्ची छल; ककरो जेबमे घरक चिट्ठी, ककरो मनमे विद्यालयक शुल्कक हिसाब। दरबान सूर्यास्तसँ पहिनहि मुख्य फाटकक आधा पल्ला बन्द कऽ देने छल। भीतरसँ करघाक आवाज अबिते छल, मुदा पिछला सप्ताहक अपेक्षा ओकर लयमे अजीब विराम छल। रामलखन पासवान मशीनसँ उतरि अपन हथेली देखलनि। कपड़ाक महीन रेशा आ तेलक कालिख बीच हुनकर अँगुलीक चिरल त्वचा देखाइत छल। ओहू हथेलीपर एहि सप्ताह अतिरिक्त श्रमक एकटा रुपैया नहि चढ़ल छल। कारखानाक समाचार-पट्टपर लिखल छल जे विदेशक बाजारमे मन्दी आएल अछि, ताहिसँ नब आदेश घटल अछि। रामलखन समाचारक आर्थिक भाषा नहि बुझैत छलाह। ओ केवल एतेक बुझैत छलाह जे महीनाक अन्तमे सुनीताक विद्यालयक शुल्क देबाक अछि, आ छोट बेटा दीपकक जूता फेर टूटि गेल अछि।

सुनीता फाटकक बाहरे अपन पिताक प्रतीक्षा करैत छलीह। सोलह बरखक ई लड़की विद्यालयक पुरान थैला कन्हापर लेने छलि। ओकरा गणित प्रिय छल, मुदा आजुक हिसाबमे कोनो आनन्द नहि छल। पिता बाहर अएलाह तँ ओ पुछलक, “आइ फेर देर भेल?” रामलखन मुस्की दैत कहलनि, “देर भेल तँ भला होइत; देरक मजूरी भेटैत। आजु भीतर काजे कम छल।” सुनीता कारखानाक दीवालपर चिपकल सूचनाक पन्ना पढ़लक। ‘वैश्विक वित्तीय संकट’, ओ धीरेसँ उच्चारण कएलक। “ई वैश्विक संकट हमर घरमे कोना आबि गेल?” पिताक उत्तर छोट छल—“जखन दूरक बाजारक काज बन्द होइत अछि, तखन एतुक मशीन

सेहो चुप होइत अछि।” सुनीता पहिल बेर महसूस कएलक जे ओकर घरक रोटी कतेक दूर धरि फैलल अदृश्य व्यापारसँ बन्हल अछि।

कारखानाक प्रबन्धक धर्मपाल खुराना ओहि दिन श्रमिकक प्रतिनिधिसभकेँ अपन कोठरीमे बजौने छलाह। हुनकर मेजपर दूटा अलग फाइल छल—एकमे निर्यातक आदेश, दोसरमे वेतनक हिसाब। ओ कहला, “हमरा सभक आँगनमे संकट नहि बनल; समुद्रपारक खरीदार अपन मालक माँग घटा देलक।” श्रमिकक अग्रज बलदेव सिंह उत्तर देलनि, “समुद्रपारक खरीदार नहि देत तँ हमरा पाँतिक चुल्हि बुझि जाएत, ई न्याय कतय अछि? कारखानाक लाभक समय हमर श्रम सँ हुनका फायदा भेटल, संकटमे जोखिम सभकेँ समान किएक नहि बाँटल जाए?” धर्मपाल तत्काल निर्णय नहि देलनि। हुनकर लेखाकार गुपचुप एक कागज सरकौलक, जाहिमे किछु अस्थायी श्रमिकक नाम लाल सियाहीमे घेरल छल। रामलखन अपन नाम देखि चुप भऽ गेलाह। बलदेव ओहि सूचीक लिखित आधार माँगलनि। ई प्रश्न आगाँ एकटा श्रम-विवादक पहिल दस्तावेज बनत, मुदा ओहि साँझ एकर उत्तर नहि भेटल।

दरभंगामे शिवनारायण झा ओहि सप्ताहक समाचारपत्र पढ़ैत छलाह। मुम्बईक व्यापार, अमेरिकाक बैंक आ भारतक निर्यात-उद्योगपर संकटक उल्लेख छल। रेवती लग बैसल छलीह; हुनकर सामने कमलपुरक विद्यालयक अभिलेख आ जोधपुरक भूमि-विवादक नव सूचना छल। “पिताजी, दरभंगाक अदालतमे नीलकान्तक बहीखाताक जे प्रश्न उठल छल, से लुधियानाक मजदूरक पर्चीमे फेर देखाइत अछि,” ओ कहलीह। शिवनारायण आँखि उठौलनि। ‘रूप समान देखाइत अछि तँ घटनाकेँ एक नहि मानू,’ ओ सावधान कएलनि। “हिसाबक कागजमे एकटा गलत पाँति भऽ सकैत अछि; मुदा तकर परिणाम पाँतिक बाहर जियत मनुष्यपर पड़ैत अछि। पहिने कागजक जनम देखू, तखन दोषक अनुमान।” रेवती एहि वाक्यकेँ अपन डायरीमे लिखलनि। ओकरा एखन नहि बुझाइत छल जे वर्षक अन्त धरि ई वाक्य एकदम नव घटनामे ओकर सहारा बनत।

कार्तिकक आरम्भमे बेंगलुरुसँ निरंजन झाक पत्र आयल। निरंजन शिवनारायणक बहिनक पुत्र छलाह। बहुत बरखसँ उपग्रह-संचारक तकनीकी काजमे रहलाह आ भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठनक एक सहयोगी अभियान्त्रिक समूहसँ जुड़ल छलाह। पत्रमे ककरो

गोपनीय प्रयोगक विवरण नहि छल; ओ केवल एतेक लिखने छलाह जे भारत अपन पहिल चन्द्र-अभियानक प्रक्षेपण दिस बढ़ि रहल अछि, आ छोट-छोट परीक्षणक कठोर अनुशासनक बिना कोनो पैघ सपना पूरा नहि होइत। ओ लिखने छलाह—“लोक आकाशमे उजास देखत, मुदा ओ उजासक पाछाँ कतेको राति कागज, गणना आ यन्त्रसँ सवाल करैत बितैत अछि।” शिवनारायण पत्र रेवतीकेँ पढ़ौलनि। बेटी कहलनि, “अदालतमे सेहो पुरान पन्ना फेर-फेर देखय पड़ैत अछि।” पिता हँसलाह, “हँ, मुदा अदालतक गणनामे मनुष्यक स्वतंत्रता जोड़ल रहैत अछि।”

बेंगलुरुक निरंजन अपन पत्नि मैत्रेयी आ आठ वर्षक बेटी अवनिसँ सँझुक भोजनपर बैसल छलाह। अवनि विद्यालयसँ बनाओल कागजक चन्द्रमा मेजपर राखि पुछलक, “बाबू, चन्द्रमा लग गेलापर की चन्द्रमासँ कोनो आवाज अबैत अछि?” निरंजन कहलनि, “ओहि ठामसँ यन्त्रक संकेत पृथ्वीपर पहुँचैत अछि, तकर अर्थ वैज्ञानिक पढ़ैत छथि। संकेत मात्र आवाज नहि, एकटा सूचना अछि।” अवनि पुछलक, “जँ संकेत गलत आएल?” पिता उत्तर देलनि, “तखन जाँच होएत—यन्त्रमे गड़बड़ी, मापकमे त्रुटि, कि हमरा बुझबामे भूल। हम सभ अपन पसिन्न निष्कर्ष पहिने नहि लिखैत छी।” मैत्रेयी मुस्की देलीह। “एहि बातकेँ विद्यालयक शिक्षकसभ सेहो याद राखथि,” ओ कहलीह। “अभियोग लगाउ सँ पहिने बच्चाक बात सुनब आवश्यक अछि।” निरंजन चुपचाप बेटी बनाओल चन्द्रमाकेँ देखैत रहलाह; वैज्ञानिक जीवनक अनुशासन आ घरक संवाद ओहि क्षण एक-दोसरसँ मिलि गेल।

२२ अक्टूबर २००८ क प्रातः श्रीहरिकोटासँ पीएसएलवी-सी११ चन्द्रयान-१ केँ लऽ उड्डयन कएलक। दूरदर्शनपर प्रक्षेपणक दृश्य देखैत दरभंगाक रेवती अपन कार्यालयक कागज किछु क्षण लेल बन्द कएने छलीह। धुआँ, अग्नि आ आकाश दिस उठैत यानक चित्रक संग सूचनाक आवाज अबैत छल। शिवनारायण धीरेसँ कहलनि, “हमर देशक नव अध्याय।” रेवती उत्तर देलीह, “आ एकर प्रत्येक पाँतिक पाछाँ गणनाक जाँच।” ओकरा निरंजनक पत्रक वाक्य स्मरण छल। दूर मुम्बईक बैंकमे कार्यरत अभिजीत झा सेहो भोजनक छोट अवकाशमे सहकर्मीसँ संग टेलीविजनक सामने ठाढ़ छलाह। लुधियानाक कारखानाक समाचार-पट्टपर दिनक अन्तमे किसी श्रमिक हाथसँ लिखि देलक—‘चन्द्रयान सफलतासँ उड़ल’। रामलखन

एकटक ओ पाँति देखलनि। कारखानाक भीतरक असुरक्षा नहि घटल छल, मुदा मनुष्यक सामूहिक श्रमकेँ एक दोसर परिणाम भेटल अछि, ई अनुभूति हुनका क्षणभर लेल बल देलक।

अवनि साँझ बाबूसँ फोनपर पुछलक, “हमर कागजक चन्द्रमा लेल कोनो ठाम अछि?” निरंजन कहलनि, “अहाँक चन्द्रमा घरक मेजपर रहत, मुदा अहाँक पढ़ाइ जँ आगाँ बढ़त तँ चन्द्रमाकेँ बुझबाक प्रश्न बहुत दूर धरि पहुँचत।” निरंजन ओहू बात स्पष्ट कएलनि जे आजुक प्रक्षेपण सफल भेल अछि, पूर्ण वैज्ञानिक अभियानक काज एखन आगाँ अछि। अवनि पुछलक, “तखन सभ लोक आइए पूरा जीत किएक कहैत छथि?” ओ कहलनि, “एक कठिन बाटक पहिल द्वारि खुलल अछि। बाकी बाट चलबाक अछि।” ई वाक्य रेवती धरि पत्रमे पहुँचत। ओकरा लगनाइ छल जे अदालतक अन्तरिम आदेश आ अन्तिम निर्णय बीच सेहो एहि प्रकारक दूरी रहैत अछि।

नवम्बरक पहिल सप्ताह मुम्बईमे अभिजीत झा अपन कार्यालयक खिड़कीसँ समुद्रक पार्श्वक ऊँच भवन देखैत छलाह। बैंकमे विदेशसँ आएल वैध रकम, व्यापारिक भुगतान आ खाताधारकक परिचयक जाँच ओकर दैनिक काज छल। ओ दिन एक छोट कारोबारक कर्मचारी रमेश साव अपन मालिकक निर्देश लऽ बैंक आएल। ओकर कारखानामे विदेशक आदेश घटल छल; व्यापारक एक देरीसँ चुकायल रकम बैंकक रोकमे अटकल छल। रमेश कहलक, “बाबू, हमर मालिक कहैत छथि जे पैसा एतय अछि, मुदा हाथमे नहि। तखन मजदूरसभकेँ की उत्तर दी?” अभिजीत लिखित कारण देखौलनि—व्यापारिक सन्दर्भपत्रमे एक संख्या अस्पष्ट अछि। ओ आश्वासन देलनि जे प्रमाणित कागज भेटलापर नियमक भीतर निर्णय कएल जाएत। ओ स्वयं नियम टारि रुपैया मुक्त नहि करि सकैत छलाह। रमेश निराश छल, मुदा ओकरा पहिल बेर कारण कागजपर लिखल भेटल छल।

रमेश मूलतः मधुबनीक एक छोट गामसँ आएल छल। ओकर पिता खेतिहर मजदूर छलाह; मुम्बईक गोदाममे रमेश सामानक आवक-जावकक अभिलेख रखैत छल। कपड़ा आ मशीनक पुर्जाक खेप परोसैत एक छोट व्यापारिक संस्थामे ओकर पदक नाम बड़ सुनाइत छल, मुदा मजूरी मामूली छल। मालिक सुधाकर देशमुख कहलनि, “आब सभ कागजक काम रमेश बुझैत अछि। बैंक, गोदाम, परिवहन—सभतए ओएह जाएत।” एहि प्रशंसामे जिम्मेदारी छल, संगहि

जोखिम सेहो। रमेश अपन जेबमे राखल पहचानपत्र आ पुरान रोजगार-प्रमाणपत्रक बीच नामक अक्षर एक जकाँ नहि पबैत छल। गाममे नाम ‘रमेश्वर’ लिखल छल; महानगरमे सभ ओकरा ‘रमेश’ कहैत छल। ओ कखनो ध्यान नहि देलक जे अलग दफ्तरमे दूनू रूप अलग-अलग लिखल गेल अछि।

१४ नवम्बरक समाचार आयल जे चन्द्रयानक चन्द्र-पृष्ठ परीक्षण-उपकरणक निर्धारित अवतरण प्रक्रिया सम्पन्न भेल। निरंजन फोनपर शिवनारायणकेँ बतौलनि जे वैज्ञानिक उपकरणक संकेतक अर्थ समझबाक काज एखन निरन्तर चलत। “हम सभ जे मापन कएने छी, तकर सीमा सेहो लिखैत छी,” ओ कहला। शिवनारायण उत्तर देलनि, “अच्छा न्यायाधीश सेहो एहि प्रकार कहैत छथि—जतेक सिद्ध भेल, ओतेकेँ मानब। बाकी नहि।” रेवतीक मनमे जोधपुरक सर्वेक्षक हरिराम जोशीक मूल नक्शा नहि देखने हेबाक स्वीकार स्मरण भेल। वैज्ञानिकक मापन, जमीनक नापी आ न्यायालयक गवाहीक संसार अलग छल, मुदा एक साझा मर्यादा स्पष्ट छल—अपन देखलासँ आगाँक बातकेँ प्रत्यक्ष ज्ञान कहि नहि सकैत छी।

नवम्बरक मध्य धरि लुधियानाक कारखानामे ठेकाक श्रमिक घटेबाक सूचना आरो स्पष्ट भऽ गेल। धर्मपाल खुराना कहलनि जे अन्तरराष्ट्रीय खरीद घटल अछि, मुदा कतिपय नियमित ग्राहकक भुगतान सेहो देरमे अबैत अछि। बलदेव सिंह वेतन-पञ्जी आ कार्य-दिवसक मूल विवरण माँगलनि। “हमरा सभकेँ खाली काज घटल सुनाओल जाइत अछि,” ओ कहलनि, “कतेक घटल, केकर कतेक दिन, से लिखि दिअौ।” रामलखनक नाम अस्थायी सूचीमे छल। सुनीताक परीक्षा नजदीक छल। घरे सुनीता पिताकेँ कहलनि जे ओ साँझमे छोट बच्चासभकेँ पढ़ा किछु रुपैया जुटा सकैत अछि। रामलखन मना कएलनि—“पहिने अपन पढ़ाइ।” सुनीता उत्तर देलकि—“हमर पढ़ाइ आ अहाँक मजूरीक हिसाब अलग कोना होएत? हमर पुस्तक अहाँक करघासँ अबैत अछि।” पिता चुप रहलाह। तकर बाद ओ पहिल बेर बेटीकेँ कारखानाक लिखित सूचना पढ़बाक लेल कहला।

एहि बीच दरभंगामे शिवनारायणक पुरान सहकर्मी एकटा पत्र पठौने छलाह। मुम्बईक व्यापारिक संस्थामे परिचयपत्र-संबंधी विवादक सम्भावना छल। शिवनारायण ओ पत्र रेवतीकेँ देखौलनि, मुदा तत्काल कानूनी राय नहि देलनि। “अभिलेखक मूल देखल जाए,” ओ

कहलनि। रेवती अभिजीत झाकेँ पत्र लिखलीह, कारण बैंकक विवरण हुनकरा लग रहैत छल। अभिजीत उत्तर देलनि जे ग्राहकक निजी जानकारी बिना विधिसम्मत स्वीकृतिक नहि देल जा सकैत अछि; हँ, सही नाम-संशोधनक सामान्य प्रक्रिया ओ बुझा सकैत छथि। रेवती एहि उत्तरसँ असन्तुष्ट नहि भेलीह। हुनका बुझाइत छल जे ईमानदार बैंककर्मी अपन सीमा जखन मानैत अछि, तखन अनेक निरपराध लोक सुरक्षित रहैत छथि।

२६ नवम्बरक राति मुम्बईसँ समाचारक पहिल ध्वनि आयल तँ अभिजीत बैंकक काज समाप्त कऽ उपनगरीय रेलसँ घर घुरबाक बाटमे छलाह। स्टेशनक भीड़मे लोक मोबाइलपर एक-दोसराकेँ फोन करैत छल, किछु चेहरापर विस्मय, किछुपर भय। ओहिसँ पहिने शहरमे सामान्य दिनक आवाज छल—ठेला, मोटर, रेल आ चाय बेचयवला लोकक। खबर अएल जे अलग-अलग स्थानपर गोली चलल अछि। अभिजीत एक परिचितक घरमे शरण लेब उचित बुझलनि। परिवारकेँ फोन करैत कहला, “हम सुरक्षित छी, मुदा शहरक समाचार पूरा नहि अछि। अहाँ सभ अफवाह नहि फैलाबी।” फोनक दोसर पार हुनकर माए केवल एक प्रश्न पुछलीह—“बेटा, तोहर आवाज ठीक अछि ने?” अभिजीत कहला, “हँ, माए।” एहि छोट उत्तरक भीतर ओ रातिक सम्पूर्ण असुरक्षा दबल छल।

मुम्बईक २६–२९ नवम्बरक आतंकी आक्रमण देशकेँ गहिर आघात देलक। सार्वजनिक समाचारमे मारल गेल निरपराध लोक, सुरक्षाकर्मी, बन्धक बनल परिवार आ बचावक कठिन कार्यवाहीक विवरण अबैत रहल। दरभंगा, जोधपुर आ लुधियानाक लोक ओहि घटनाक समाचारकेँ अपन-अपन अनुभव आ भयक बीच अलग-अलग ढंगसँ सुनैत छलाह। दरभंगाक रेवती समाचारक सामने निःशब्द बैसल छलीह। शिवनारायण कहलनि, “देशपर ई आक्रमण अछि; पीड़ितसभक प्रति हमरा सभक दायित्व अछि।” ओकरा बाद ओ जोड़लनि, “मुदा न्यायालयमे जे अपराधी ठहराओल जाए, तकर अपराध प्रमाणसँ निर्धारित होएत। भयक कारण सभ सन्दिग्ध मनुष्यकेँ एक बना देब न्याय नहि।” रेवती एहि बातक गम्भीरता समझलीह। ओ राति कोनो वकालती भाषण लिखबाक समय नहि छल; ओ शोकक राति छल।

रमेश साव ओहि समय गोदामक कर्मचारीक संग शहरक एक सुरक्षित दफ्तरमे अटकल छल। मालक कतेको खेपक आवागमन स्थगित छल। एक उपशाखाक अधिकारी सामानक प्रवेश-पत्रसभक पुनः परीक्षण करबाक निर्देश देने छल। जखन काज पुनः शुरू भेल, रमेशक परिचयपत्रक संख्या एक पुरान गोदाम-पञ्जीसँ मेल नहि खाइत छल। प्रबन्धक सुधाकर देशमुख कहलनि, “अहाँ पहिले एहि पत्रकेँ ठीक कराउ।” रमेश अपन पुरान आवेदन देखलक; ओहिमे नामक एक अक्षर भिन्न छल, आ प्रमाणपत्रपर कार्यालयक मोहर धुँधली पड़ि गेल छल। ओ सोचलक, ई रोजक दफ्तरक त्रुटि अछि, दोसर नकल बनि जाएत। मुदा गोदामसँ एक मूल्यवान पुर्जाक खेपक किछु भाग कम भेटलापर दफ्तरक शंका एकाएक गम्भीर भऽ गेल।

शहरमे भयक वातावरण छल, मुदा गोदामसँ कम भेल मालक शिकायत अपन अलग स्वरूपक छल। व्यापारिक कम्पनीक प्रबन्धक पुलिसकेँ लिखित सूचना देने छल जे किछु महँगा यन्त्र-पुर्जा खातासँ मेल नहि खाइत। ओहि रिपोर्टमे रमेशक नाम प्रवेश-पञ्जी लिखनिहार कर्मचारीक रूपमे छल। जाँच-अधिकारी सुरेश पाटिल पहिने कार्यालयक कागज माँगलनि, तकर बाद रमेशक बयान लेलनि। “अहाँ एहि तिथिक प्रवेशपत्रपर हस्ताक्षर कएने छी?” “हम सामानक गिनती लिखने छी; प्रवेशपत्रपर मोहर दफ्तरक अछि।” “नामक अलग रूप किएक?” “गामक प्रमाणपत्रपर रमेश्वर, काजक परिचयपत्रपर रमेश। दफ्तर तकरा छोट लिखैत छल।” सुरेश उत्तरक संगहि पत्रक धुँधली मोहर देखलनि। ओ मनमे अनुमान बनबैत छलाह, मुदा अभियोगक कागज लेल अनुमान पर्याप्त नहि अछि—ई हुनकर प्रशिक्षणक मूल पाठ छल।

एक दिन पछाति जाँचक अवधि मे गोदामक पहरेदार जगदीश शेट्टी कहलक जे एक राति रमेश कार्यालयक नियमित समयक बाद आएकय एक पन्ना लऽ गेल छल। रमेश स्वीकार कएलक जे ओ देरीसँ आएल छल, मुदा कारण बतौलक—मालक आवक-पञ्जीक एक असंगति दूर करबाक निर्देश। सुधाकर देशमुख एहि निर्देश देबाक बात तत्काल नहि मानलनि। “हमरा याद नहि,” ओ कहला। रमेशकेँ ई वाक्य कौआक करुण आवाज जकाँ लगल। कल्हि धरि जकर कामक प्रशंसा करैत छलाह, आइ ओकरा अपन निर्देश याद नहि। रमेशक मनमे भय

छल, मुदा तकरा संग क्रोध सेहो। ओ पुलिससँ कहलक, “हमर काजक कापी मँगाउ। ओहिमे मालिकक लिखल सूचना अछि।” जाँच-अधिकारी कापीक खोज शुरू कएलनि।

अभिजीतकेँ एहि प्रकरणक समाचार गोदामक व्यापारिक बैंक-लेनदेनक कारण भेटल। ओ ग्राहकक गोपनीयता भंग नहि कएलनि, मुदा बैंकक विधिक विभागक सहकर्मीकेँ लिखित रूपसँ सुझौलनि जे बैंकक काज केवल प्राप्त अभिलेखक प्रामाणिक उत्तर देब अछि, ककरो अपराधी घोषित करब नहि। ओ रेवतीकेँ व्यक्तिगत पत्रमे लिखलनि—“मुम्बईक एहन रातिक बाद लोकक धैर्य घटल अछि। मुदा एखन जे व्यापारिक विवाद अछि, तकर अलग तथ्य अछि। जँ किछु अभिलेख चाही, निर्धारित प्रक्रियासँ माँगू।” रेवती पत्र पढ़ि तुरन्त मुम्बई जाएब निश्चित नहि कएलनि। ओ पहिने रमेशक परिवारसँ सम्पर्क करबाक प्रयत्न कएलनि। ओकरा एकटा कागजमे बाबूक पुरान गामक नाम भेटल छल—मधुबनीक एक बस्ती, जतय शिवनारायणक परिचित शिक्षक रहैत छलाह।

मधुबनीमे रमेशक पिता गंगाराम साव माटिक चूल्हि लग बैसल छलाह। बेटा मुम्बई गेलाक बाद घरक खर्च नियमित चलैत छल, मुदा एखन दू मासँ रकम कम पहुँचल छल। महानगरमे भेल आतंकी हमलाक समाचार सुनि ओ तीन राति ठीकसँ सुतल नहि छलाह। जखन रमेशक फोन आयल, ओ राहतसँ पहिने एक बात पुछलनि—“तोहर जान सुरक्षित ने?” रमेश कहलनि, “जान सुरक्षित अछि, मुदा काजमे संकट आबि गेल।” गंगारामकेँ एहन कथनक अर्थ बुझबामे देर लागल। ओकरा लागल, जकर शहरपर हमला भेल, ओतय कोनो साधारण गोदामक कागजक झगड़ा किएक चलैत होएत? बेटा बुझौलक—“बाबू, शहरक दुःख अलग अछि; हमर काजक अभिलेख अलग। मुदा लोकक मन एखन सब बातमे सशंकित अछि।”

रेवती आब मुम्बईक एक अधिवक्ता मित्र नलिनी देशपाण्डेसँ सम्पर्क कएलनि। नलिनी अपन व्यवहारक सरलताक लेल परिचित छलीह। ओ कहलीह, “जँ रमेशकेँ गिरफ्तार कएल जाए, तँ पहिने ई देखू जे गिरफ्तारीक आधार की अछि, ओकरा कोन आरोपसँ परिचित कराओल गेल, आ ओकर कानूनी सहायता सुनिश्चित अछि कि नहि। मुम्बईक हमलाक कारण शहरक व्यथा गम्भीर अछि, मुदा एतुक व्यापारिक मुकदमा ओहिसँ अलग रहत। पत्रकारक शब्दमे दू बात जोड़ि लिखल गेल तँ अदालतकेँ ओ नहि मानबाक चाही।” रेवती एतबे सुनि

आश्वस्त भेलीह। ओकरा याद अएल जे २००१ क दरभंगाक सुरक्षा-आशंकाक एक पृथक मामलामे ओ अपन पितासँ एहनहि पाठ सीखने छलीह।

मुम्बईमे दिसम्बरक पहिल सप्ताहक एक दिन रमेशकेँ गिरफ्तार कएल गेल। जाँच-अधिकारीक लिखित अभिलेखमे आरोप छल जे गोदामक किछु व्यापारिक प्रवेशपत्रमे जानबूझि फेरबदल कएल गेल अछि आ एक खेपक मालक अभावसँ तकर सम्बन्ध हो सकैत अछि। गिरफ़्तारीक समय रमेश अपना मायक देल पुरान रुद्राक्षक डोरि अँगुरिएक भीतर पकड़ि लेने छल। ओ अपन दोष स्वीकार नहि कएलक। ओकर विरुद्ध जप्त कागजक मूल प्रति एखन विशेषज्ञक परीक्षणमे पठेबाक छल। जाँचक प्रारम्भिक अवस्था छल; न्यायालयमे दोष सिद्ध नहि भेल छल। ओकर एक सहकर्मी कहलक, “हम एहि दफ्तरमे सेहो काज करैत छी; तखन हमरा किएक नहि पकड़ल?” रमेश उत्तर नहि देलक। ओकरा बुझाइत छल जे पुलिसक प्रश्नक उत्तर देब एक काज अछि, आ पड़ोसीक न्यायिक निष्कर्ष सुनब दोसर।

न्यायिक दण्डाधिकारीक समक्ष पहिल पेशीक समय सरकारी अधिवक्ता जाँचक आवश्यकता बतौलनि। “जप्त अभिलेखक मूल प्रति, पञ्जीक हस्ताक्षर आ मालक वास्तविक गिनतीक परीक्षण शेष अछि,” ओ कहलनि। “अभियुक्तसँ किछु प्रश्नक उत्तर आवश्यक अछि।” नलिनी देशपाण्डे, जे परिवारक अनुरोधपर बचावमे उपस्थित छलीह, पुछलनि जे गिरफ्तार अभियुक्तसँ जानकारी लेलाक समय ओकर अधिकारक पालन भेल कि नहि। न्यायाधीश पहिने गिरफ्तारी आ प्रस्तुतिक अभिलेख देखलनि, तकर बाद दुनू पक्षक सीमित तर्क सुनलनि। सुनबाई दोष-सिद्धिक नहि, आगाँक अनुसन्धानमे हिरासतक औचित्यक छल। अदालत एहि अन्तरकेँ स्पष्ट कएलक। ओहि कोठरीमे बाहरक २६/११ क शोकक समाचार नहि, एक विशिष्ट व्यापारिक अभियोगक कागजपर विचार होइत छल।

रमेश न्यायाधीशसँ केवल एकटा बात कहल चाहैत छल—“हमर नाम दूनू कागजमे अलग अछि, मुदा हम ओएह आदमी छी।” नलिनी ओकरा आश्वस्त कएलनि जे उचित समयपर एही विषयक प्रमाण प्रस्तुत कएल जाएत। न्यायाधीश रिमाण्ड सम्बन्धी लिखित आदेशमे जाँचक आवश्यकता आ उपलब्ध सामग्रीक सीमा उल्लेख कएलनि; अभियुक्तकेँ विधिसम्मत सहायता आ परिवारसँ सम्पर्कक अधिकारक विषय दर्ज भेल। नलिनी बाहर आबि गंगारामकेँ

फोन कएलनि—“आब एहन नहि जे कागज देखिते सजा भऽ गेल। अगिला न्यायिक अवसरपर जमानतक प्रार्थना राखब। एखन मूल अभिलेख जुटाउ।” गंगाराम किछु क्षण चुप रहलाह। हुनका अपन बेटाक बचपनक विद्यालयक प्रमाणपत्र कतय अछि, से याद आएल—ओ पिताक पुरान सन्दूकमे छल।

सुनीता ओहि दिन लुधियानामे अपन विद्यालयक पुस्तकालयसँ कानूनपर एक छोटी पुस्तक लऽ घर घुरल छलि। ओकर विद्यालयक शिक्षिका श्रमिकक अधिकारपर निबन्ध लिखबाक विषय देने छलीह। सुनीता पिताक वेतन-पर्चीकेँ अपन निबन्धक आधार बनौने छलि, मुदा ओहि पर्चीपर मुद्रित संक्षेप शब्द बुझब कठिन छल। बलदेव सिंहकेँ पुछलक। बलदेव कहला, “प्रमाणक लेल जकरा सभक लिखब जरूरी अछि, ओहि शब्दकेँ सरल बनौनाइ जरूरी अछि। मुदा अदालत अपन नियमपर चलत।” सुनीता उत्तर देलक, “हम अदालत नहि गेल छी। मुदा जखन लिखल शब्द हमर पिताक दिन घटा दैत अछि, तखन ओकर अर्थ बुझनाइ हमर अधिकार नहि?” बलदेव दीर्घ निःश्वास लेलनि। ओ कहला, “एहि प्रश्नकेँ हमरा सभक अगिला बैठकमे राखू।” सुनीता अपन निबन्धक शीर्षक लिखलक—‘मजदूरीक कागज आ घरक आगि’।

जोधपुरमे मरुधर महाविद्यालयक विद्यार्थीसभ चन्द्रयानक सफल प्रक्षेपणपर एक वैज्ञानिक गोष्ठी आयोजित कएने छलाह। कुसुम, नसीमा आ राकेश अलग-अलग विभागसँ आबि सभामे बैसल छलाह। भूगोलक अध्यापक ईश्वरदत्त राठौड़ चन्द्रमाक स्थलाकृति, पृथ्वीक दूरस्थ चित्र आ सर्वेक्षणक पद्धतिपर सरल व्याख्यान देलनि। कुसुम पुछलि, “जँ चन्द्रमाक छवि एतेक दूरसँ जाँचल जा सकैत अछि, तँ हमर कूपक पुरान स्थान नापब एतेक कठिन किएक?” सभागारमे हँसी फूटल, मुदा राठौड़ प्रश्नकेँ हल्का नहि मानलनि। ओ कहला, “कारण उपग्रहक छवि, ऐतिहासिक जमिनक स्वामित्व आ कानूनी अभिलेख तीनू अलग वस्तु छथि। मापनक विधि समान जकाँ बुझाइत अछि, मुदा अधिकारक प्रश्नमे तिथि, दस्तावेज आ मानवीय व्यवहार सेहो जुड़ैत अछि।” कुसुम संतुष्ट छलीह जे हुनकर प्रश्नक जटिलता स्वीकार कएल गेल।

नसीमा ओहि सभाक बाद कुसुमक संग पुस्तकालय गेलि। दीवालक नव रंगक भीतर पुरान सीलनक निशान एखनो छल। दूनू एक नक्शाक पुस्तक देखलीह। कुसुम कहलीह, “अहाँक घरक पुरान सायराक प्रवेशक कागज सुरक्षित अछि ने?” नसीमा उत्तर देलीह, “हँ। मुदा

ओकरा सुरक्षित राखनाइ पर्याप्त नहि। ओकरा माननिहार विद्यालय आ कार्यालय चाही।” कुसुम अपन खेतक मूल नकलक बात बतौलि। ओ कहलीह, “हमरो घरमे कागज सुरक्षित अछि। अदालत फेर नापी कहलक, कारण एक कागजक रेखा दोसरक संग नहि मिलैत।” नसीमा ओकर हाथ पकड़ि कहलीह, “एकटा कागज मनुष्यकेँ बचबैत अछि, दोसर कागज ओकरा वर्षो फँसा दैत अछि। मुदा एकर अर्थ ई नहि जे कागज छोड़ि दी।”

दरभंगाक शिवनारायण अपन मुम्बई यात्रा रेवतीक संग निश्चित कएलनि। हुनकर वयस बढ़ल छल, मुदा आँखिक तेज कम नहि भेल छल। ओ कहलनि, “हम एहि व्यापारिक अभियोगमे मुख्य अधिवक्ता नहि। नलिनी एतुक न्यायालयक नियम आ अभिलेख बुझैत छथि। हम परिवारक कागज मिलाबयमे मदति देब।” रेवती मुस्की देलीह। “अहाँ अप्पन सीमा मानैत छी, ई हम शैशवसँ देखैत आएल छी,” ओ कहलीह। शिवनारायण उत्तर देलनि, “सीमा मानब हार नहि। न्यायालयमे असीम अधिकारक दावा प्रायः सत्यकेँ कमजोर करैत अछि।” एहि यात्रामे हुनकर उद्देश्य मुम्बईक हमलाक अनुसन्धान देखब नहि, बल्कि एक गिरफ्तार कर्मचारीक व्यक्तिगत दस्तावेजक सत्यापित क्रम जुटाएब छल।

गंगाराम साव सन्दूक खोलि बेटाक विद्यालयक प्रमाणपत्र, जन्मसम्बन्धी नकल आ पुरान रोजगारक एक कागज निकाललनि। कागजक कोन पसीनाक कारण पीयर पड़ि गेल छल। ओ रेवतीसँ कहला, “एहि मे रमेश्वर लिखल अछि; शहरमे रमेश। मुदा हम तकरा रमेशे कहैत आएल छी।” रेवती समझौलकनि जे नामक छोट भिन्नताक समर्थनमे प्रमाण मिलि सकैत अछि, मुदा मालक अभावक आरोपक उत्तर अलग चाही। गंगाराम पुछलनि, “एकर बाद बेटा निर्दोष मानल जाएत?” रेवती उत्तर देलीह, “एहि दस्तावेजसँ नामक प्रश्न स्पष्ट होएत। बाकी अपराधक आरोपक प्रमाण अदालत देखत। हम अहाँकेँ अधूरा आश्वासन नहि देब।” वृद्ध पिता अपन आँखि पोंछलनि। हुनका सांत्वना चाही छल, मुदा रेवतीक स्पष्ट उत्तरकेँ ओ असत्य वचनसँ उत्तम बुझलनि।

मुम्बई पहुँचिकय रेवती आ शिवनारायण अभिजीत झासँ एक चायघरमे भेटलाह। अभिजीतक चेहरापर ओहि रातिक थकानक अंश एखन छल। ओ कहला, “शहर धीरे-धीरे काजमे लौटि रहल अछि, मुदा लोकक मनमे जकरा सभ हम नहि देखैत छी, ओ घाव बहुत

गहिर अछि।” शिवनारायण शान्त स्वरमे उत्तर देलनि, “ओ घावकेँ लिखबाक अधिकार इतिहासकार, पत्रकार आ पीड़ितक अछि। हमरा एहि मुकदामे केवल ताहि व्यक्ति पर विचार करबाक अछि जकरा विरुद्ध अभिलेख प्रस्तुत भेल अछि।” अभिजीत बैंकक सामान्य परिचय-संशोधन नियमक एक सार्वजनिक विवरण देलनि। ग्राहक विशेषक गोपनीय प्रविष्टि नहि। रेवती ओकरा अपन फाइलमे राखलनि। एक पुरान न्यायिक विचार फेर सामने आयल—बैंकक जिम्मेदारी सेहो सही सीमा राखब अछि।

नलिनी देशपाण्डेक कार्यालयमे रमेशक काजक पुरान कापी पहुँचल। कापीमे काजक तिथि, गाड़ी संख्या आ गोदामक ढोआईक सामान्य विवरण छल। एक पन्नामे सुधाकर देशमुखक हस्ताक्षरसँ मिलैत एक छोट चिह्न छल—‘देरक पर्ची फेर बनाबू’। नलिनी तत्काल ओकरा निर्णायक प्रमाण नहि माननलि। ओ पुछलनि, “ई लिखावट केकर? मूल कापी केकर पास छल? एतय चिह्न कब लिखल गेल?” रेवती कहलनि जे लेखकीय परीक्षण उपयोगी भऽ सकैत अछि, मुदा मूल कापीक लगातार सुरक्षा सम्बन्धी जानकारी सेहो जुटेबाक आवश्यकता अछि। शिवनारायण चुप रहलाह; हुनका २००० क नीलकान्तक पैंतालीसम पन्ना स्मरण होइत छल। ओहि अनुभवसँ ओ जानैत छलाह जे एक स्वीकार्य कागज सेहो समस्त कथानकक उत्तर नहि होइत अछि।

मुकदमाक पहिल महत्त्वपूर्ण लिखित निवेदनमे नलिनी कहलनि जे जाँच प्रारम्भिक अवस्थामे अछि, मुदा रमेशक स्थायी पारिवारिक पता, वैध रोजगारक पुरान अभिलेख, नामक भिन्न रूपक स्पष्टीकरण आ जाँचमे सहयोगक इच्छा उपलब्ध अछि। सरकारी पक्ष उत्तर देलक जे मालक अभाव आ सम्भावित फेरबदल केवल नामक भिन्नतासँ समाप्त नहि होइत। अदालत किछु मूल पत्रक पुष्टि आ आवश्यकीय जाँचक स्थिति पुछलक। ओहि दिन जमानतक निर्णय टारि देल गेल, मुदा अनावश्यक विलम्ब नहि होए, से सम्बन्धी अगिला तिथि निश्चित भेल। रमेशक परिवार अदालतक बाहर आशाक संग नहि, बल्कि ठोस अगिला काजक सूची लऽ निकलल—कागजक प्रमाणित नकल, कामक पुरान सहयोगीक पता आ गोदामक मालक दोहरी गणना।

गोदामक मालक दोहरी गिनती करबाक प्रश्न सभसँ कठिन निकलल। रमेशक पुरान सहकर्मी हेमन्त कुलकर्णी कहलक जे एक खेप गोदामक पाछाँक भण्डारण-कक्षमे राखल गेल छल, मुदा मुख्य पञ्जीमे ओकर प्रविष्टि नहियेँ भेल हो। सुधाकर देशमुख एहि सम्भावनाकेँ तुरन्त अस्वीकार कएलनि। “हमर व्यवस्था एहन नहि,” ओ कहला। हेमन्त प्रतिवाद कएलक —“व्यवस्था जँ पूर्ण अछि तँ आजु कमी किएक भेटल?” एहि प्रश्नमे कोनो अपराधी आरोप नहि छल, केवल गणनाक असंगति छल। जाँच-अधिकारी पाटिल दुनू पक्षक बयान अलग लिखलनि। ओ गोदामक पाछाँक कक्षक सूची मँगौलनि। किछु मालक पेटी ओतय भेटल, मुदा सभ नहि। ताहिसँ आरोपक आकार घटल कि नहि, एखन अन्तिम उत्तर नहि छल; तथापि पहिल रिपोर्टक कुल गिनती भरोसाक योग्य नहि रहल।

सुधाकर देशमुख ओहि राति अपन कार्यालयमे एकसर बैसल छल। ओकर सामने विदेशक ग्राहकक अस्वीकृत आदेश छल, गोदामक मालक हानि सम्बन्धी नव अनुमान छल आ रमेशक गिरफ्तारीक समाचार छल। ओ अपन मुनीमकेँ पुछलक, “जँ रामेश्वर निर्दोष निकलत तँ हमर कम्पनीक नाम की होएत?” मुनीम उत्तर देलक, “अपराध-शिकायत देब आ अपराध सिद्ध होयब अलग बात अछि। मुदा जँ हमरा सभ अपन गलती जानिते छुपाएब तँ दोष हमर होएत।” सुधाकर चुप भऽ गेल। ओकरा रमेशक पुरान परिश्रम स्मरण अएल—राति देर धरि पञ्जी मिलाएब, ग्राहकक पत्रक उत्तर लिखब, गोदाममे भेल क्षतिक सही विवरण देब। ओकर मनमे एक भिन्न भय जन्म लेलक: कतहु मालिकक अपन अव्यवस्था कर्मचारीक अपराध बनि नहि गेल हो।

शिवनारायणक सामने केसक नकल रखल गेल तँ ओ रमेशक पहिल बयान आ गोदामक मालिकक पूरक बयान पढ़लनि। ओ कहला, “हिनकर कथनमे अन्तर अछि। पहिने कहल गेल जे देर रातिक प्रवेश अनधिकृत छल, पछाति कहल गेल जे अनुमति याद नहि। स्मृतिसँ जुड़ल एहन अन्तरक कारण पुछल जाए।” नलिनी सावधान कएलनि, “जमानतक सुनबाईमे पूरा प्रति-परीक्षण नहि करब। जतेक आवश्यक अछि, ओतेक दस्तावेजक आधार पर आरोपक गम्भीरता आ अभियुक्तक भूमिकाक स्थिति देखायब।” रेवती एहि मर्यादाकेँ मानलीह। निराधार निश्चितता एतय बचावकेँ दुर्बल करि सकैत छल। ओ नोट कएलनि: “एकटा वाक्यक

बदलाब अपनेमे दोषी अथवा निर्दोषक अन्तिम प्रमाण नहि; ओकर ऐतिहासिक परिस्थितिक जाँच आवश्यक।”

लुधियानाक बलदेव सिंह एतय एक पृथक संघर्ष लड़ि रहल छलाह। कारखानाक प्रबन्धन तेसर सूची निकाललक, जाहिमे किछु श्रमिकक कार्य-दिन घटाओल गेल छल। रामलखनक नाम सेहो ओहिमे छल। बलदेव पुछलनि जे कटौती सभ समान श्रेणीक श्रमिकपर लागू भेल कि किछु विशेष लोककेँ चुनल गेल। धर्मपाल कहला जे उत्पादन घटल अछि आ किछु विभागक मशीन बन्द रखनी। श्रमिकसभ प्रतिवाद कएलनि जे खण्डित कामक कारण बदल-बदलि कतेको अस्थायी कर्मचारीक दिन घटल, मुदा स्थायी लेखा-कार्यालयमे कोनो कटौती नहि अछि। एहि विवादक उत्तर एक क्षणमे नहि भेटब छल। सुनीता अपन पिता सँ कहलनि, “एहि बेर खाली नारा नहि; हरेक लोक अपन पूर्व दिनक पर्ची लऽ आबय।” रामलखन बेटीकेँ पहिल बेर श्रमिक-मण्डलीक बीच अपन मत दैत देखलनि। ओ गर्वित भेलाह, मुदा ओकरा पढ़ाइ छूटि जायत, एहि चिन्तासँ सेहो भरल छलाह।

दिसम्बरक ओहि ठण्ढ दिन स्कूलक एक कार्यक्रममे सुनीता विज्ञानपर छोट भाषण देबाक निमन्त्रण पओलक। ओ चन्द्रयानक प्रक्षेपणक समाचार पढ़ने छलि, चित्र सेहो देखले छलि, मुदा वैज्ञानिक उपकरणक तकनीकी विवरण ओकरा पूरा नहि बुझाइत छल। ओ विद्यालयक अध्यापकसँ पुछलक, “हम जे बुझैत छी, ओतबे कहल जाए?” अध्यापक उत्तर देलनि, “हँ। जकर बारेमे पूरा ज्ञान नहि, तकरा अनुमान कहू।” सुनीता मंचपर कहलकि जे देश चन्द्रमा धरि उपकरण पठाबय सकैत अछि; ताहिमे शिल्पी, अभियन्ता, गणनाकर्मी आ वैज्ञानिकक अनेक वर्षक श्रम अछि। फेर ओ पुछलक—“हमर गामक विद्यालयमे जँ प्रयोगशालाक एकटा तराजू नहि, तखन विज्ञानक सपना प्रत्येक बालक धरि केना पहुँचे?” सभामे किछु क्षण मौन रहल। तकर बाद विद्यार्थी ताली देलक। ओ प्रसन्नता आ प्रश्नक संग घर घुरलि।

बेंगलुरुमे निरंजनकेँ अवनिक विद्यालयसँ एक पत्र भेटल। बच्चासभ चन्द्रयान-विषयक प्रदर्शनी देखय चाहैत छल, मुदा साधनक अभाव छल। निरंजन अपन सहकर्मीसँ सार्वजनिक विज्ञान-प्रदर्शनक उपयुक्त सामग्री जुटेबाक विचार कएलनि। निजी प्रयोगक संवेदनशील जानकारी बाहर देबाक प्रश्न नहि छल; सामान्य वैज्ञानिक पद्धति आ चन्द्रमाक उपलब्ध

प्रकाशित चित्रक शिक्षामूलक उपयोग सम्भव छल। मैत्रेयी कहलीह, “अवनि तारा गनैत-गनैत थाकि जाइत अछि, मुदा जँ ओहि चित्रकेँ अपन विद्यालयमे लगाओत तँ ओकर खुशी बेसी होएत।” निरंजन सोचलनि—विज्ञानक सफलता केवल प्रक्षेपणक क्षण नहि; ओकर प्रकाश विद्यालयक विद्यार्थीधरि पहुँचब सेहो एक प्रकारक उत्तरदायित्व अछि। एहि विचारसँ हुनकर मन लुधियानाक एहन विद्यार्थीक दिशि गेल जेकरा उपकरणक अभावमे प्रश्न बुझब कठिन होइत होएत।

मुम्बईक दण्डाधिकारीक समक्ष अगिला सुनबाईमे रमेशक परिचयक भिन्न रूपक सम्बन्धमे मूल विद्यालयक अभिलेखक प्रमाणित नकल आ रोजगारक पुरान दस्तावेज प्रस्तुत भेल। सरकारी पक्ष बतौलक जे मालक कमी सम्बन्धी जाँच एखन बाकी अछि; पहिल गोदाम-पञ्जीक गिनती आ वास्तविक भण्डारमे अन्तरक पुनः परीक्षण चलि रहल अछि। नलिनी कहलीह जे अभियुक्तक स्थायी पता, परिवार आ सहयोगक प्रतिज्ञा अछि, आ मूल दस्तावेज सरकारी कब्जामे अछि; ओ फरार होयबाक अथवा साक्ष्य नष्ट करबाक ठोस आशंकाक आधार अलगसँ प्रस्तुत होयबाक चाही। अदालत दुनू पक्षक तर्क सुनि निर्णयक कारण लिखलक। रमेशक व्यक्तिगत उत्तरदायित्वक अंतिम परीक्षण विचारणमे होएत, मुदा वर्तमान परिस्थिति जमानत लेल पर्याप्त अछि—एहन निष्कर्षपर न्यायालय पहुँचल।

जमानतक आदेश सुनिते रमेशक आँखि भीजि गेल, मुदा ओहि क्षण ओकरा सजा-मुक्ति मिलल नहि छल। नलिनी बाहर कहलीह, “अहाँक विरुद्ध जाँच आ विचारणक सम्भावना शेष अछि। आदेशमे देल शर्तक पालन करू; साक्षीक संग अनावश्यक सम्पर्क नहि राखू; दस्तावेज कखनियो छुपाउ नहि।” रमेश घुटना मोड़ि बापकेँ प्रणाम करय चाहलक। गंगाराम ओकर हाथ पकड़ि उठौलनि—“पहिने घर चल।” शिवनारायण दूर ठाढ़ देखैत छलाह। हुनका नीलकान्त साहक पहिल जमानतक दिन स्मरण भेल। ओ रेवतीकेँ कहलनि, “एक बात याद राखू—जमानत निर्दोषताक प्रमाण नहि, आ जमानत नहि भेटब दोषी होयबाक प्रमाण नहि। मनुष्यक सम्मान आ मुकदमाक मर्यादा अलग प्रश्न छथि।”

गोदामक मालिक सुधाकरकेँ जमानतक समाचार भेटल तँ ओ असन्तुष्ट छल। ओकर लेखाकार धीरेसँ कहलक, “मालिक, जमानत अदालतक आदेश अछि; जाँच बन्द नहि भेल।”

सुधाकर उखड़ि पड़बाक बदला नब भण्डार-जाँच आदेशित कएलक। दू पुरान पेटीक पर्ची दूसरे खेपक संग बदलि गेल रहबाक सम्भावना उठल। एखनहुँ किछु सामानक हिसाब मेल नहि खाइत छल; मुदा पहिल रिपोर्टमे जे सम्पूर्ण हानि देखाओल गेल छल, ओ अबाधित सत्य नहि रहल। जाँच-अधिकारी पाटिल एहि नव तथ्यकेँ केस-डायरीमे लिखलनि। हुनका अभियुक्तक रिहाईसँ निजी हार नहि भेल छल; उलटे जाँचक जरूरी दिशा स्पष्ट भेल। हुनकर एक सहकर्मी कहलक, “आब एतेक प्रश्नकेँ कतेक दिन खींचब?” पाटिल उत्तर देलनि, “जतेक धरि तथ्यक सही गिनती नहि होए। झूठ आरोपितक संग सत्य पीड़ित सेहो अन्याय भोगैत अछि।”

रमेशक घर घुरबाक समय मुम्बईक रेलवे स्टेशनपर भोरक भीड़ छल। किछु स्थानपर अबहुँ शोकक छाया, किछु ठाम साधारण कारोबारक चहल-पहल छल। रमेश देखलक जे समाचारपत्रक मुख्य पन्नापर सुरक्षा-व्यवस्थाक चर्चा अछि, भीतरी पन्नामे व्यापारिक मन्दीक खबर, आ एक कोनमे चन्द्रयानक वैज्ञानिक अनुसन्धानक लेख। एकहि कागजपर शोक, जीविका आ जिज्ञासा लिखल छल। ओकरा अपन गामक सूर्यास्त स्मरण अएल। ओ सोचलक, मुम्बईक भव्य भवन ओकरा सधिया छोट बनबैत छल, मुदा एखन ओ बुझैत अछि जे ओकर नामक त्रुटि सुधारक लेल पिता अपना सन्दूकक पन्ना धरि पहुँचि गेलाह। मनुष्यक घरक सँ छोट कागज कखनो अति पैघ संकटसँ बचा सकैत अछि।

रेवती मुम्बईसँ दरभंगा घुरैत रेलक खिड़कीपर माथ टिकौने छलीह। शिवनारायण आधा निद्रामे छलाह। ओकरा याद अएल जे पहिल बेर पिता जखन ओकरा अदालत लऽ गेल छलाह तँ ओ आश्चर्यसँ पुछने छलीह जे दोषी कतेक जल्दी पहिचानल जाइत अछि। आब कतेको वर्षक अनुभव पछाति उत्तर सोझे नहि रहि गेल छल। नीलकान्तक किछु दोष सिद्ध भेल छल, किछु नहि; रामदेवक जमीनक प्रश्न एखन अनिर्णीत छल; रमेशक नामक भिन्नता जमानतक प्रसंगमे स्पष्ट भेल, मुदा मालक विवाद जारी रहल। रेवती अपनी डायरीमे लिखलीह —“अदालतक निर्णयक भीतर सेहो अनिर्णीत जीवन शेष रहैत अछि।” फेर एकटा पाँति जोड़लीह—“आइ ककरो भयसँ ककरो दोषक संक्षिप्त निर्णय नहि करब।”

लुधियानामे वर्षक अन्तिम श्रमिक-बैठकीमे सुनीता अपन निबन्ध पढ़बाक साहस जुटौलक। ओ पढ़लक जे आर्थिक मन्दी एक दूरक शब्द अछि, मुदा श्रमिकक दिनक कागजपर ओकर

प्रत्यक्ष प्रभाव अछि। ओ पढ़लक जे न्यायिक विवादक पहिने सही अभिलेख रखनाइ एक सामुदायिक आवश्यकता अछि। बलदेव ओकर पाठ सुनि कहलनि, “हमरा सभक शिकायतक अलग-अलग तिथि लिखित राखब। जतेक दिन काज भेटल, जतेक वेतन भेटल, कतय गणना मेल नहि खाइत—सभ।” रामलखन अपन पर्ची थैला सँ निकालि मेजपर रखलनि। बीस लोक अपन-अपन कागज बाहर केलक। ई कोनो अदालत नहि छल; मुदा भविष्यमे अदालत कागज माँगत तँ एही साँझक श्रम काम आएत। ओहि समय एक युवा अस्थायी श्रमिक नवीन साह दरवाजापर ठाढ़ सभ देखैत छल। ओकर नजर कागजपर नहि, लोकक मुखपर छल—कतेको दिनक बेरोजगारीसँ थाकल, मुदा प्रश्न करबाक साहस पुनः पबैत।

नवीन पिछला मास नौकरी छूटलाक बाद अनेक दरवाजा खटखटा चुकल छल। ओकर गाम दरभंगाक निकट छल, मुदा लुधियानामे मामा लग रहैत छल। पढ़ाइ अधूरी छल; अंकक हिसाब ओ नीक राखैत छल। एक परिचित ओकरा चण्डीगढ़क बाहरी क्षेत्रमे एक निजी वित्तीय सेवा-संबंधी दफ्तरमे काजक प्रस्ताव देलक। कहल गेल, लिखित हिसाब, ग्राहकक रसीद आ व्यापारिक कागज सँभालबाक कार्य अछि; वेतन कारखानासँ दोब्बर भेटत। नवीन पुछलक, “कम्पनीक नाम आ पञ्जीकरणक विवरण की अछि?” परिचित उत्तर देलक, “पहिने भेट कर; सभ बुझा देत।” नवीनक मन एक क्षण लेल प्रलोभित भेल। मायक दवाइ, घरक ऋण, अपन जीवनक ठहराव—सभ एक साथ स्मरण अएल। मुदा सुनीताक बैठकमे सुनल वाक्य ओकरा रोकलक—“कागजक स्रोत बुझू।” ओ परिचितसँ लिखित प्रस्ताव माँगल।

ओ प्रस्ताव अन्ततः एक साधारण पता आ अस्पष्ट कार्य-विवरणसहित पहुँचल। नवीन देखलक जे कागजमे कार्यालयक दूरभाष छल, मुदा नियुक्ति देनिहार अधिकारीक पूरा परिचय नहि। ओ परिचितकेँ पुछलक, “एकरा लिखबाक लेल किएक कठिनाइ?” परिचित नाराज भेल, “तू नौकरी खोजैत छे कि मुकदमा?” नवीन उत्तर देलक, “हम नौकरी खोजैत छी, तेँ ई पुछैत छी।” ओहि राति ओ निर्णय नहि कएलक। भविष्यक कथा लेल एहि प्रस्तावक महत्त्व एखन केवल एतबे अछि जे बेरोजगारीक दबाव मनुष्यकेँ अधूरी जानकारीमे निर्णायक बाट चुनबाक स्थितिमे पहुँचबैत अछि। प्रस्ताव देनिहार दोषी अछि कि नहि, एकर कोनो प्रमाण एखन उपलब्ध नहि छल।

दरभंगाक शिवनारायण वर्षक अन्तिम दिन अपन छोट पुस्तकालयमे नीलकान्तक पुरान प्रकरणक प्रतिलिपि रखैत छलाह। रेवती आउर कागजक बण्डल लऽ आयलि। पिता पुछलनि, “ई कोन कागज?” ओ कहलनि, “मुम्बईक केसक क्रम-सूची। अपन मुवक्किलक नहि, एक मित्रक सहायता लेल पढ़ने छी। मूल अधिवक्ता नलिनी छथि।” शिवनारायण मुस्की देलनि। “ठीक।” ओ चन्द्रयानक समाचारवाला एक पुरान अखबार निकाललनि आ रेवतीक पन्नाक बगलमे रखलनि। चन्द्रमाक चित्रक नीचाँ लिखल छल जे यात्रा वैज्ञानिक अन्वेषणक नब चरण खोलि रहल अछि। रेवती कहलनि, “एहि चित्रक पाछाँ ओ लोक छथि जे प्रत्येक मापन फेर देखैत छथि।” पिता उत्तर देलनि, “आ एहि फाइलक पाछाँ ओ लोक छथि जकर जीवन गलत मापनसँ बदलि सकैत अछि।”

निरंजन झा दिसम्बरक अन्तमे घर लेल लिखल पत्रमे एकटा घटना सुनौलनि। विद्यालयक प्रदर्शनमे अवनि एक बच्चाकेँ चन्द्रमाक चित्र बुझबैत छलि, मुदा एक चित्रक चिह्न उलटा लगि गेल छल। बच्चासभ हँसल, अवनि लाजसँ चुप भऽ गेलि। निरंजन ओकरा कहला जे त्रुटि देखायब उपहासक कारण नहि, सुधारक अवसर अछि। अवनि फेर चित्र उलटि सही कएलक आ मित्रसभकेँ बतौलक जे वैज्ञानिक गिनतीक जाँच एहि लेल करैत छथि जे गलत अर्थ नहि निकसय। पत्रक अन्तमे ओ लिखलनि—“देशक एक वर्षमे शोक सेहो अछि, उपलब्धि सेहो। ककरो कारणसँ दोसरक सत्य कम नहि होइत।” शिवनारायण वाक्य पढ़ि देर धरि शान्त रहलाह। हुनका लागल, ई वर्षक उचित लेखा एतबे अछि।

दरभंगाक गाममे गंगाराम अपन बेटा रमेशक लौटबाक बाद सेहो पूर्ण चैन नहि पाबि रहल छलाह। बेटा जमानतपर छल, ओकर रोजगार अनिश्चित छल, आ मुम्बईक व्यापारिक अभियोगक विचारण शेष छल। मुदा घरमे एक परिवर्तन आयल छल। जखन गामक एक व्यक्ति कहलनि, “अरे, अदालत छोड़ि देलक तँ दोष नहि छल,” गंगाराम धीरेसँ उत्तर देलनि, “अदालत एखन दोषक फैसला नहि कएने अछि। बेटा बाहर अछि, हम तकरा ईमानदारीसँ अगिला तिथिपर पठाएब।” गामक लोक अचरजसँ तकलक। कतेको लोक कानूनी शब्दकेँ विजय अथवा पराजयक सोझ अर्थमे सुनैत छल। गंगाराम अपन दुःखसँ एक गम्भीर अन्तर सीखि लेने छलाह।

लुधियानाक सुनीता एक सादा कापी तैयार कएलक। पहिल पन्नापर पिताक नाम, दोसरपर कार्य-दिन, तेसरपर देल गेल वेतन, चारिमपर कटल दिनक कारणक समाचार। ओ प्रत्येक पन्नाक तिथिपर जोर देलक। “हम न्यायालयमे नहि जाएब एखन,” ओ मायक प्रश्नक उत्तरमे कहलकि, “मुदा जँ कखनो जाएब, तँ अपन स्मृतिसँ बेसी कागजक सहारा चाही।” माता उत्तर देलीह, “कागजसँ अधिक लोकक गवाही सेहो होइत अछि।” सुनीता मुस्की देलक —“दूनू रहत।” अपन कापीक अन्तमे ओ लिखलक—“अगिला बरखक प्रश्न: मजदूरीक पूरा हिसाब।” ओहि प्रश्नक उत्तर खोजैत सुनीता आगू लोकसभक बीच अधिक स्पष्ट स्वरमे बाजबाक साहस पाबय लगलीह।

जोधपुरमे सायरा अंसारी आब महाविद्यालयक छात्रा छलि। २००२ मे आगिसँ जकर शैक्षणिक कागज नष्ट भेल छल, ओकर नव अभिलेख तयार करबमे नसीमा आ कुसुम मदति कएने छलीह। चन्द्रयानक समाचार सुनि सायरा विज्ञानक प्रदर्शनीमे अपन गामक रात्रि-आकाशक चित्र लगौलक। सभाक एक व्यक्ति पुछलक, “अहाँक पुरान विद्यालयक प्रमाणपत्रक झंझट समाधान भऽ गेल?” सायरा कहलीह, “जतेक आवश्यक छल, ओ मान्य भेल; मुदा जे घरक स्मृति जरि गेल, तकर प्रमाणपत्र कतय सँ बनत?” प्रश्नकर्ता मौन भऽ गेल। सायरा फेर चन्द्रमाक चित्र दिस इशारा कएलक—“दूरक वस्तुकेँ बुझबाक लेल लोक संगठित परिश्रम करैत छथि। अपन लगक मनुष्यकेँ बुझबाक लेल सेहो ओतेकेँ धीरज किएक नहि राखैत छी?” ओहि राति नसीमा अपन डायरीमे ई वाक्य सुरक्षित कएलनि।

कमलपुरक विद्यालयमे शारदा देवी विद्यार्थीसँ एही वर्षक घटना पूछलीह। किओ चन्द्रयान कहलक, किओ मुम्बईक समाचार, किओ वर्षामे टूटल पुल। फुलवा कहलक, “मास्टरनी, एकहि बरखमे एतेक अलग घटना किएक होइत अछि?” शारदा उत्तर देलीह, “बरख स्वयं कोनो एक कथा नहि कहैत अछि। लोक सभ अपन-अपन जीवनमे ओकर अर्थ पबैत अछि।” ओ बच्चासभकेँ कहलीह जे एक पन्नापर मन प्रसन्न करनिहार घटना लिखू, दोसर पन्नापर दुःख देनिहार। फुलवाक पहिल पन्नामे चन्द्रयान छल, दोसरमे बाबूक बिना काजक तीन दिन। शारदाकेँ बुझायल जे देशक इतिहास लिखब आ ग्रामीण बालिकाक विद्यालय-डायरी पढ़ब दू अलग कार्य होइतहुँ दुनू आवश्यक छथि। मृत माधवेश्वर मिश्रक वेतन-अभिलेखक अनुसन्धान

एखन जारी छल, मुदा ओ विद्यार्थीकेँ ओहि झगड़ाक कारण पढ़ाइ छोड़बाक नहि देबय चाहैत छलीह।

मुम्बईमे अभिजीतक सहकर्मी फरहत शेख हमलाक दिन एक मित्रकेँ गमा देने छलीह। कार्यालयमे ककरो ई साहस नहि होइत छल जे हुनका दुःखपर प्रश्न करथि। अभिजीत एक दिन चुपचाप हुनकर मेजपर कार्यक सामान्य अभिलेख रखि पूछलनि जे किछु दिन छुट्टी आवश्यक अछि कि नहि। फरहत कहलीह, “काज करबासँ मन कखनो सम्हरैत अछि; मुदा जे लोक मरलाह, हुनकर जीवनकेँ समाचारक संख्या मात्र नहि बनाउ।” अभिजीत उत्तर देलनि, “हमर परिचितक एक व्यापारिक अभियोग चलैत अछि। कतहु लोक ई कहैत छथि जे एहन दिनमे कागजक चिंता किएक? मुदा हम बुझैत छी जे शहरक शोक आ एक कर्मीक न्यायिक अधिकारमे विरोध नहि।” फरहत पहिल बेर अपन सहकर्मीकेँ देखिकय कहलीह, “दूनूक रक्षा जरूरी अछि। मृतकक स्मृति आ जीवितक न्याय—ई दुनू अलग काज नहि छोड़ल जाए।”

नलिनी अपन कार्यालयक कनिष्ठ अधिवक्ता मेघनाथकेँ रमेशक पत्र-पञ्जी देखबैत कहलीह, “कागज ठीक होए तखनो साक्षी आवश्यक भऽ सकैत अछि। साक्षी सत्य कहय, एकर लेल ओकरा पहिने डराओल नहि जाए।” मेघनाथ पुछलक, “मालक कमीक जो मूल तथ्य अछि, ओकर जाँच कतेक दिन चलत?” नलिनी उत्तर देलीह, “हम समयक अनुमान नहि देब। किन्तु हर अगिला सुनबाईमे जाँचक वास्तविक प्रगति पूछब।” ओ एक कागजपर तीन विषय लिखलीह—गिनतीक मूल अभिलेख, लेखकीय अनुमतिक स्रोत आ अभियुक्तक दस्तावेज। मेघनाथ चाहैत छल जे ई तीनू विषयकेँ एकहि प्रबल तर्क बनाओल जाए। नलिनी रोकलीह—“जकरा प्रमाण नहि भेटल, तकरा कथाक सोझ पाँति बनाकय न्यायालयमे नहि रखब।”

लुधियानाक कारखानामे महिलासभक एक अलग गोष्ठी भेल। कपड़ा छाँटयवाली चम्पा देवी कहलनि जे काम घटलासँ हुनका सभक दिन पहिनेसँ कटि रहल अछि, मुदा निर्णयक लिखित कारण नहि भेटैत। सुनीता सभक नाम आ तिथि पूछलक, किन्तु चम्पा पुछलीह, “अहाँ ई पन्ना कोना बचाएब? खोइ गेल तँ?” सुनीता अपन दूटा कापी बनौलक—एक मूल, एक नकल—आ चम्पाकेँ कहलक जे ओ सेहो अपन विवरण घरमे राखथि। एहन साधारण

अभिलेख-सुरक्षा ककरो अपराध लुकएबाक उपक्रम नहि, बल्कि श्रमिकक अपन श्रमक स्मृति बचएबाक उपाय छल। रामलखन दूरसँ सुनैत छलाह। हुनका लागल जे बेटी पढ़ाइ करैत-करैत ई सीखि रहल अछि जे लिखित पन्नाक अर्थ जकरा पर हस्ताक्षर अछि, तकर जीवनसँ जुदा नहि होइत।

शिवनारायण अपन जन्मगामक एक पुरान परिचितसँ भेटलाह। परिचित कहलनि, “दूर चन्द्रमापर पहुँचबाक समय आइल; एखन धरि कचहरीक मुकदमा छोट नहि भेल।” शिवनारायण उत्तर देलनि, “चन्द्रयान बनौनिहारक गणना न्यायालयक कार्यविधिसँ भिन्न अछि। वैज्ञानिकक सफलता पर गर्व कएल जाए, संगहि अदालतक देरी पर प्रश्न सेहो उठाओल जाए। एकर एकटा दोसराकेँ झुठलाबैत नहि।” परिचित पुछलनि, “आ मुम्बईक हमलाक बाद कठोरता?” शिवनारायण कहला, “अपराधपर दृढ़ता आ निर्दोषक अधिकारक रक्षा एक दोसराक शत्रु नहि। जकर विरुद्ध प्रमाण अछि, ओकर विचारण हो; जकर विरुद्ध नहि, ओकरा संदेहक स्थायी नाम नहि बनाउ।” ओहि दिन हुनका अपन बेटीक शिक्षा सफल होइत देखाइत छल, कारण रेवती एहि प्रश्नक उत्तर आब स्वयं देबामे समर्थ छलीह।

वर्षक अन्तिम साँझ रेवती अपन कार्यालयक झरोखासँ देखलीह जे सड़कपर दीपक जलय लगल अछि। दूरतक ओहि देशक जीवन फैलल छल जाहिमे श्रीहरिकोटासँ चन्द्रयान उठल, मुम्बईमे निरपराध लोकक प्राण गेल, कारखानामे काम घटल, किसान अपन भूमि बचेबाक प्रतीक्षा करैत रहल, आ एक गोदामक कर्मचारी अपन नामक लिखावट स्पष्ट करबाक लेल न्यायालय पहुँचल। एहि सभ घटनाक कारण एक नहि छल। हुनकर पीड़ा, आशा आ सत्यक आधार अलग-अलग छल। मुदा मनुष्यक एक साझा आवश्यकता रेवतीकेँ देखाइत छल—ककरो भविष्यपर निर्णय होए, तँ पहिने तथ्यक जाँच हो। ओ अपन कापी बन्द कएलनि। फाटकपर डाकिया एक पत्र छोड़ि गेल छल। लुधियानासँ आएल ओहि पत्रमे मजदूरसभक बकाया वेतनक हस्ताक्षरित सूची छल। रेवती खोलि पढ़लीह। पहिल नाम—रामलखन पासवान। तकर नीचाँ नब अक्षरमे लिखल छल—“एहि हिसाबक गवाही हमर बेटी सुनीता सेहो देत।”

अध्याय १३ — श्रमिकक बकाया

सन् २००९–२०१० : लुधियाना

माघक कुहेस लुधियानाक कारखाना-फाटकपर एना लटकल छल, मानू भोरक उजासकेँ भीतर प्रवेश करबाक अनुमति नहि भेटल हो। सीटी बजल, मुदा बाहर ठाढ़ लोकक पाँति पहिनुक दिनसँ छोट छल। रामलखन पासवान अपन पुरान कोटकेँ छाती लग खींचलनि। हुनकर कन्हापर रखल कपड़ाक थैला असाधारण रूपसँ हलुक छल; ओहिमे रोटीक डिब्बा नहि, तीन मासक वेतन-पर्ची आ सुनीताक लिखल कापी छल।

सुनीता फाटक धरि संग आएल छलीह। आब ओ विद्यालयक अन्तिम कक्षाक परीक्षा देबाक तयारीमे छलीह, मुदा भोरमे किताबक बदला पिताक उपस्थिति-पञ्जीक नकल देखैत छलीह। पिछला वर्ष ओ जे दू कापी बनौने छलीह, ताहिमे एक घरमे रहैत छल, दोसर बलदेव सिंहक संग। ओ कहलीह, “बाबूजी, आजु लिखित उत्तर बिना नहि घुरब।” रामलखन मुस्की देबाक प्रयत्न कएलनि। “कारखानामे उत्तर कागजपर नहि, सीटीपर भेटैत अछि।”

कारखानाक देवालसँ सटि बनल चाय-दोकानपर श्रमिकसभक गोष्ठी रहैत छल। चम्पा देवी अपन हाथक अँगुरी देखबैत कहलीह, “मासक पन्द्रह दिन बुलौलनि, पर्चीमे दस दिन लिखलनि। जँ पाँच दिनक काजे नहि भेल, हमर हाथक ई सूईक चोट कतयसँ आयल?” हुनकर काज काटल कपड़ाक टुकड़ा छाँटब छल। मशीनपर रहल श्रमिकक नाम उपस्थिति-पञ्जीमे जल्दी चढ़ैत, छँटाईक महिलासभक दिन प्रायः ठेकेदारक खाता सँ गनल जाइत।

बलदेव सिंह पगड़ीक छोर सम्हारैत कएलनि, “अहाँ सभ अलग-अलग कागज लऽ कऽ नहि जाउ। पहिने सभकेँ एक सूचीमे राखू—जकर मजदूरी देर भेल, जकर दिन काटल गेल, आ जकरा बिना लिखित कारणक काजसँ हटाओल गेल। ई तीनटा बात एक नहि अछि।” ओ

स्वयं कपड़ा बुनबाक मशीनक पुरान मिस्त्री छलाह। हुनकर भाषामे कानूनक बड़ शब्द कम, कामक ठोस उदाहरण बेसी रहैत छल।

दरवाजापर सुरक्षा-कर्मी किरपाल प्रत्येक श्रमिकक पर्ची देखैत छल। नवीनक नाम पाँतिमे नहि छल। पिछला वर्ष काज छुटलाक बाद ओ चण्डीगढ़क बाहरी इलाकामे कहल गेल वित्तीय कार्यालय देखय गेल छल, मुदा अनिश्चित नियुक्ति-पत्र देखिकय परत आएल। आब ओ कखनहुँ कारखानाक छोट काज करैत, कखनहुँ पुस्तक-पञ्जी सँख्याकेँ फेर लिखैत। ओ सुनीताकेँ कहलनि, “कागज कहियो हलुक नहि बुझू। हमर नाम नौकरीक सूचीमे नहि छल, मुदा पाछाँक मासक कटल मजदूरीमे अछि।”

भितर धर्मपाल खुराना कार्यालयक झरोखासँ कुहेस देखैत छलाह। पिछला वर्षक निर्यात-आदेश घटल छल, आ विदेशी खरीददारक दू भुगतान देरीमे छल। मुदा कारखाना बन्द नहि छल। जखन छिटपुट काज भेटैत, ओ छोट समूहकेँ बजबैत; कोनो श्रमिककेँ आधा दिनक बाद घुरबैत, तकर कारण सभकेँ स्पष्ट नहि रहैत। धर्मपालकेँ अपन परिवार आ ऋणक चिन्ता छल, मुदा हुनकर चिन्ता वेतनक पर्चीमे बिना स्पष्टीकरणक काटल रकमक न्याय नहि ठहरि सकैत छल।

लेखापाल हरजीत कौरक सामने दू पञ्जी छल। पहिल कारखानाक भीतरक सीटी आ पहरेदारक उपस्थिति-पत्र, दोसर ठेकेदार हरनामक भुगतान-सूची। किछु नाम दुनूमे छल, किछु केवल एकमे। हरजीत देखलीह जे रामलखनक कार्य-दिनक संख्यामे दू दिनक अन्तर अछि। ओ धर्मपालसँ कहलीह, “जँ ई गलती अछि तँ अखने सुधारि देल जाए।” धर्मपाल कहलक, “पहिने ठेकेदारकेँ पुछू।” हरजीत कहलीह, “मुदा मजदूरकेँ पर्ची कम्पनीक मोहरसँ देल गेल अछि।”

दुपहरिमे बलदेवक नेतृत्वमे चार श्रमिक धर्मपालसँ भेटबाक अनुमति पओलनि। रामलखन कापी खोललनि। चम्पा अपन कटल दिन देखौलीह। नवीन पुरान नियुक्ति-पत्रक धुँधला छाप दिखौलक। धर्मपाल सभ सुनलनि, मुदा कहला, “बाजारमे मंदी अछि। हमरा सभपर सेहो देनदारी अछि।” बलदेव उत्तर देलनि, “आर्थिक कठिनाइ समस्त दिनक लिखल प्रमाणकेँ मिटा नहि दैत। जँ काज नहि भेटल, लिखू; जँ काज कएलक, ओकर सही हिसाब दियौ।”

धर्मपाल एक क्षण चुप रहल। हुनका लेल बलदेवक आग्रहक उत्तर केवल नकद निकालब नहि छल, कारण लेखा-विवाद हुनकर कार्यालयक अन्दर धरि पहुँचैत छल। ओ कहला, “सात दिनमे लिखित विवरण देब।” बलदेव पुछलनि, “सभक?” “जकर आवेदन अछि।” “तखन आवेदन सभ मिलिकय देब।” एहि छोट बातचीतमे आगामी वर्षक मुकदमाक पहिल रेखा खिंचल।

घर घुरलापर रामलखन थैला मेजपर रखलनि। पत्नी फूलकुमारी चूल्हिमे आगि सम्हारैत छलीह। “आजु किछु भेटल?” ओ पुछलीह। “सात दिनक वचन।” फूलकुमारी कहलीह, “सात दिनमे किराया देबाक तिथि आएत। वचनसँ घरक मालिकक खाता नहि भरत।” सुनीता सुतल छोट भाइकेँ देखलक। घरमे धनक अभावक कारण केओ भावुक घोषणा नहि करैत छल; चाउरक माप आ किरायाक तिथि समस्त तर्कसँ बेसी कड़गर रहैत छल।

सुनीता अपन गणितक कापी खोललक। एक पन्नामे पाँच दिन काटल, दोसरमे दू दिनक अन्तर, तेसरमे अवकाश कहल दिनक बादो मशीन चलबाक गवाही। ओ प्रत्येक पंक्तिक सामने सवालक चिह्न बनौलक। फूलकुमारी देखलीह आ कहलीह, “अहाँ पढ़बाक बात छोड़ि ई कागजमे किएक लागल छी?” सुनीता उत्तर देलक, “हम पढ़ाइये तँ करैत छी। संख्या जँ गलत भए जाए, जीवनक हिसाब गलत होइत अछि।”

सात दिन पछाति कारखानासँ आयल उत्तर एक पन्नाक छल। कम्पनी उत्पादनमे गिरावट स्वीकार करैत, मजदूरी-भुगतानमे विलम्बक कारण बतबैत आ किछु उपस्थितिक विसंगति ठेकेदारक अभिलेख पर छोड़ैत छल। कोनो श्रमिकक व्यक्तिगत दिनक गणना ओकर संग नहि छल। बलदेव पन्ना पढ़िकय कहला, “उत्तर लिखल अछि, उत्तर देल नहि गेल अछि।” चम्पा कहलीह, “हमर पाँच दिन कतय गेल, से तऽ एतयो नहि अछि।”

नगरक श्रम कार्यालयक छोट बरामदा कारखानाक दरवाजासँ अलग संसार छल। एतय दब आवाजमे आवेदन पढ़ल जाइत, आ पंखाक नीचाँ फाइलक कोन मुड़ैत रहैत। बलदेव, रामलखन, चम्पा आ नवीन आएलाह। सुनीता बाहिर बैसि सभक नाम लिखैत छलीह। सहायक कर्मचारी प्रारूप देखिकय पुछलनि, “केकर दावा कटौतीक अछि आ केकर काज समाप्त कएल गेल?” बलदेव किछु क्षण रुकलनि।

कर्मचारी बुझौलनि जे देरीसँ वेतन देब वा नियम-विरुद्ध काटबाक प्रश्नक लेल मजदूरी भुगतानसँ सम्बन्धित नियुक्त प्राधिकारीक अलग प्रक्रिया उपलब्ध अछि; कारखानाक कामक अवस्था, सेवा-समाप्ति आ सामूहिक औद्योगिक विवादमे मेल-मिलापक मार्ग सेहो रहैत अछि। “सभ शिकायतकेँ एके प्रार्थनापत्रमे लिखि दैब, मुदा एके आदेशमे सभ हल होएत, ई नहि बुझू,” ओ कहला। सुनीता बाहरसँ सुनैत छलि। ओकरा एतय पहिल बेर कानूनक दुआरि एकसँ बेसी देखायल।

रामलखन अपन नामक सामने अंगूठा राखबाक समय ठमकि गेलाह। ओ हस्ताक्षर नहि करि पबैत छलाह। सुनीता पुछलक, “बाबूजी, हम पढ़ि सुनाबी?” कर्मचारी कहलनि, “आवेदनकर्ता स्वयं बुझि सहमति देथि, तखन अंगूठा लगाउ।” सुनीता सम्पूर्ण वाक्य पढ़ि सुनौलक, कटौतीक तिथिसभ बतौलक आ पिता सँ पुछलक, “एहि मे किछु गलत अछि?” रामलखन कहलनि, “एक मासक नाम गलतीसँ छूटि रहल।” नव पंक्ति जोड़ल गेल।

चम्पा देवी अपन नाम लिखब जानैत छलीह, मुदा आवेदनमे ‘अनधिकृत कटौती’ शब्द पढ़ि नहि पबैत छलीह। ओ कहलनि, “हमरा पाँच दिनक काजक धन चाही। ई जे शब्द लिखल अछि, ओ हमरे कहबाक अर्थ अछि कि नहि?” बलदेव पूरा अर्थ सरल भाषामे स्पष्ट कएलनि। ओहि क्षण स्त्री अपन नामक नीचाँ हस्ताक्षर कएलनि। सुनीता अनुभव केलक जे कागजपर लिखल शब्द तखने अपन होइत अछि जखन ओकर अर्थ लिखबेनिहार बुझैत हो।

मेल-मिलापक पहिल बैठकीमे धर्मपाल आयलाह, संग हरजीत आ कम्पनीक एक सलाहकार छलाह। बलदेवक संग तीन श्रमिक बैसल छलाह। अधिकारी आरम्भमे स्पष्ट कएलनि जे एतय आपसी समाधान खोजबाक प्रयास होएत; विवादक मूल अधिकारक अंतिम निर्णय एहि टेबुलपर नहि देल जाएत। धर्मपाल उत्पादन-आदेशक कागज देखौलनि। बलदेव अपना श्रमिकक दिनक अलग पञ्जी प्रस्तुत कएलनि। अधिकारी दुनू अभिलेखक सुसंगति जाँचबाक लेल समय देलनि।

बैठकी पछाति धर्मपाल हरजीतसँ नाराज स्वरमे कहलनि, “अहाँ कार्यालयक पञ्जी श्रमिकक सामने किएक देखौने?” हरजीत शान्त रहलीह। “हम केवल ओ कागज देखौने छी जे कम्पनीक भितर बनल अछि। ओकरा नुकौला सँ संख्या नहि बदलब,” ओ कहलीह। “अहाँ

जँ कहब तँ लिखित उत्तर हम ठीकसँ तैयार कऽ देब, मुदा गलत हिसाब पर अपन हस्ताक्षर नहि करब।” धर्मपाल उत्तर नहि देलनि।

फागुनक अन्तमे रामलखनक घरमे होलीक रङ्ग अल्प छल। छोट बेटा दीवालपर पीयर रेखा बनौलक। फूलकुमारी उधारक मसाला सँ तरकारी बनौलीह। सुनीता परीक्षा लेल इतिहासक पाठ पढ़ैत छलि, मुदा पढ़ाइ बीच-बीचमे कारखानाक कागज याद करबैत छल। ओकरा परीक्षा मे ‘औद्योगीकरणक लाभ’ लिखबाक विषय भेटल तँ ओ बड़ कारखानाक उत्पादनक संग मजदूरक वेतनक प्रश्न सेहो जोड़लक। शिक्षिका ओकर लेखन पढ़िकय कहलीह, “तर्क नीक अछि, मुदा उदाहरणमे तारीख आ स्रोत देल करू।”

एहि बीच कारखानाक महिलासभ अपन एक पृथक बैठक कएलनि। चम्पा चाहैत छलीह जे ओ सभक नाम संयुक्त आवेदनमे रहय, मुदा लाजो कौर कहलीह, “हमर घरक लोककेँ पता चलत तँ हमरा बाहर काज करबाक रोक लगाय देत।” नव विवाहित कमला केँ ठेकेदार धमकी देल छल जे विरोध केला पर ओकरा फेर काज नहि भेटत। सुनीता कहलीह, “ककरो नाम बिना इच्छा नहि जोड़ल जाएत। मुदा जे दिन काज कएल अछि, ओकर लेखा लोक अपन लग सुरक्षित राखथि।”

सुनीता महिलासभ लेल चित्र सहित छोट पन्ना तैयार केलक—तिथि, काजक समय, जकर निगरानीमे काज भेल, भुगतान भेटल कि नहि। ओकरा ई पुस्तकालयक पढ़ाइ वा विद्यालयक प्रश्नपत्र सन नहि बुझायल; ओ लोकक दिनक स्मृति बचेनाइ बुझलक। चम्पा अपन बच्चाकेँ कहलीह जे पन्ना एक बार उच्च स्वरमे पढ़ि सुनाबथि। साँझक पहिल दीपक जलैत-जलैत पाँच महिलाक दिनक हिसाब लिखल जा चुकल छल।

चैतक आरम्भमे कारखानाक एक पुरान मशीन बन्द पड़ल। मशीन चलौनिहार इकबाल हुसैन हाथमे छोट चोट लगलाक कारण दू दिनक विश्राममे छल। कम्पनीक पञ्जीमे ओकर नाम अनुपस्थित लिखल गेल, मुदा जखन ओकरा चोट लगल छल, ओ दिनक सूचना पहरेदारक कापीमे उपलब्ध छल। इकबाल कहलक, “हमरा भिन्न सहायता चाही। कटल दिनक पैसा एक प्रश्न अछि, चोटक उपचार दोसर।” बलदेव ओकरा चिकित्सकीय कागज सुरक्षित रखबाक सलाह देलनि, कारण कार्यस्थलक दुर्घटना-संबंधी दावा अलग विधिक प्रश्न बनि सकैत छल।

सुनीता इकबालक घर गेलि। दरवाजा खोलि ओकर पत्नी नाजिया मुस्की देलीह, मुदा भीतरक कोठरीमे औषधिक गन्ध आ मशीनक तेलक मिश्रित वासना छल। इकबाल अपन हाथ देखबैत कहलक, “बड़ चोट नहि अछि। मुदा सूईक एक छोट टाँका सेहो काज बन्द करबैत अछि।” ओकर चारि बरखक बेटी कपड़ाक चटकीला टुकड़ा सँ गुड़िया बनबैत छलि। सुनीता देखलक जे कारखानाक बचेखुचे टुकड़ासँ एहि घरमे बच्चाक खेलौना बनैत अछि, मुदा ओकरा बेचि पिता औषधि नहि किनि सकैत।

लुधियानाक एहि बस्तीमे घरक दरवाजा दिनमे बन्द रहैत, रातिमे लोक खुला गलीमे कुर्सी निकालि बैसैत। सुनीता पहिने एकरा साधारण पड़ोसीपन बुझैत छलि। आब ओकरा बुझायल जे एहि गलीमे प्रत्येक परिवारक अपन अलग मुकदमा अछि। ककरो घरमे रोग, ककरो बेटी लेल विद्यालयक शुल्क, ककरो गामक वृद्ध पिताक उपचार। श्रमिकक वेतन नहि देनाइ केवल कार्यालयक संख्या नहि, एकसाथ एतेक घरक समय रोकि देनाइ छल।

कम्पनीक वकील अरुण सूरी पहिल नियुक्त प्राधिकारीक सुनबाई लेल कागज तैयार करैत छलाह। ओ युवा छलाह, मुदा अदालतक बरामदाक व्यवहार जनैत छलाह। धर्मपाल हुनका कहलनि, “एहि लोकक सूची झूठा अछि।” अरुण पुछलनि, “की एकर प्रत्येक तिथि गलत अछि?” धर्मपाल कहलक, “सबटा एक नहि। ठेकेदारक किछु त्रुटि होयत।” अरुण स्पष्ट कएलनि, “तखन सामूहिक असत्यक तर्क नहि रखब। जे स्वीकार्य अछि, से पहिने अलग करू। न्यायालयमे नकारल बात पछाति अभिलेखसँ प्रमाणित भेल तँ कम्पनीक विश्वास घटत।”

हरजीत कौर दिनक हिसाब मिलाबैत पबैत छलीह जे रामलखनक दू दिन कम्पनीक रातिक अतिरिक्त पालीमे दर्ज अछि, मुदा ठेकेदारक पञ्जीमे सामान्य दिनक अन्तर्गत नहि अछि। चम्पाक पाँच दिनमे तीन दिनक उपस्थितिक हस्ताक्षर तँ भेटैत अछि, दू दिन पर अलग प्रश्न अछि। नवीनक मामलामे काज छुटलाक तिथि आ अन्तिम भुगतानक दस्तावेज नहि मिलैत। ओ अपन नोटक एक कोनमे लिखलीह—‘तीन श्रमिक, तीन भिन्न स्थिति’।

ओम्हर बलदेवसँ एक बाहरी समूहक व्यक्ति भेटबाक इच्छा जतौलक। व्यक्ति कहैत छल जे श्रमिकक संघर्षकेँ पैघ बनाय देत, मंच सजाबत, समाचारपत्रमे नाम छपाओत। बदलामे

समूहक नामसँ अनुदान-संग्रहक अनुमति चाहैत छल। बलदेव अपन साथीसभसँ पूछलनि, “एहि लोककेँ हमर वेतनक पञ्जी देखल अछि?” उत्तर नहि छल। बलदेव कहला, “पहिने श्रमिक अपन दावा बुझथि। हमर दुखक कारोबार करबाक अधिकार हमरा सभ नहि देने छी।” सुनीता ओहि संवादकेँ मनमे रखलक, कारण मंचपर ऊँच आवाज आ कार्यालयमे सही संख्या दुनू अलग काज छल।

जेठक एक दुपहरिया सुनीताक विद्यालयमे अभिभावकक बैठक छल। फूलकुमारी पुछलीह, “अहाँक परीक्षा पास भऽ जाएत ने?” सुनीता कहलीह, “हम हिसाबमे नीक छी। भाषा मे किछु त्रुटि रहैत अछि।” शिक्षक कहला, “ई बालिका निरन्तर देखल उदाहरण लिखैत अछि। मुदा घरक चिन्ता पढ़ाइकेँ खाइ रहल अछि।” फूलकुमारी अपमानित नहि, चिन्तित भेलीह। घर लौटैत बेटीकेँ कहलीह, “बाबूक कागज हमहुँ राखि सकैत छी। अहाँ पुस्तक नहि छोड़ू।” सुनीता सहमति देलक, मुदा बुझेने छल जे पुस्तक आ कागज दुनू ओकर जीवनमे एकसाथ चलत।

मजदूरी भुगतान सम्बन्धी प्राधिकारीक पहिल सुनबाईक दिन बरामदामे बलदेवक हाथमे लाल फीता लागल गठरी छल। सुनीता बाहर सँ अपन पिताक थैला पकड़ौने छलीह। भीतर आसनपर बैसल अधिकारी पहिले पक्षक परिचय आ अधिकारक्षेत्रक प्रश्न देखलनि। कम्पनीक अधिवक्ता कहलनि जे किछु व्यक्ति प्रत्यक्ष कर्मचारी नहि, ठेकेदारक अधीन काज करैत छलाह; ताहिसँ दावा अलग पद्धतिसँ उठबाक चाही। श्रमिकक प्रतिनिधि उत्तर देलनि जे भुगतानक वास्तविक व्यवस्था आ जारी पर्चीक आधार स्वयं कम्पनीक अभिलेखमे भेटैत अछि।

अधिकारी कहलनि, “दावाक स्वीकार्यता आ मूल रकमक प्रश्नकेँ एक नहि करू। पहिने काजक सम्बन्ध आ भुगतानक उत्तरदायी व्यक्ति देखल जाए।” रामलखन अपन पर्ची सम्हारलनि। ओ बड़ आवाजमे बाजय नहि चाहैत छलाह, मुदा सुनीताक लिखल कापीक प्रत्येक पन्ना हुनका अपन श्रमक दिन सन लगैत छल। अधिकारी पहिल सुनबाईमे विस्तृत साक्ष्य पूरा नहि कएलनि; पक्षसभकेँ मूल पञ्जी प्रस्तुत करबाक समय देलनि आ अगिला तिथि निर्धारित कएलनि।

बाहर निकलिते चम्पा पुछलीह, “आइ हम जितलहुँ कि हारलहुँ?” बलदेव कहला, “आइ केवल एतबे भेल जे हमर बात नियत स्थानपर लिखि लेल गेल।” चम्पा खिन्न भेलीह। “घरमे बच्चा पुछत, पैसा भेटल कि नहि। हम की उत्तर देब?” सुनीता धीरे सँ कहलीह, “अहाँ कहू जे अब हिनका सभकेँ मूल पञ्जी अनबाक अछि। जखन पञ्जी अएत तखन हमर दिनक हिसाब सेहो पुछल जाएत।” ओ जानैत छलि जे ई उत्तर भोजनक स्थान नहि लऽ सकैत।

किछु सप्ताह बाद कम्पनीक भितरी आ बाहरी पञ्जीक प्रमाणित नकलक तुलना लेल सुनबाई भेल। हरजीतकेँ दस्तावेजक रचनाक सम्बन्धमे बयान देबाक लेल बजाओल गेल। ओ अपन कामक सीमा स्पष्ट कएलीह—“हम वेतन-पर्ची निकालैत छी; पहरेदारक पहिल उपस्थिति आ ठेकेदारक हस्तलिखित सूची दोसर स्थानसँ अबैत अछि।” कम्पनीक अधिवक्ता पुछलनि, “अहाँ स्वयं सभ श्रमिकक प्रत्येक दिन निरीक्षण करैत छी?” ओ कहलनि, “नहि।” श्रमिकक पक्ष पुछलनि, “अहाँक हस्ताक्षरवला पर्ची जारी होइत छल?” “हँ।”

अधिकारी एक पर्चीक कोन देखलनि। ओतय रकमक सामने काटल शब्द ‘अनुपस्थिति’ छल, मुदा किएक अनुपस्थित मानल गेल, ओकर विवरण नहि। हरजीत कहलीह जे किछु दिनक काज पाली बदललाक कारण पहिल पञ्जीमे दोहराओल गेल छल। अधिकारी कहलनि, “तखन दू पञ्जीमे मेल नहि अछि; हमरा बुझबाक अछि जे वास्तविक कार्य-दिन कोन आधारपर निर्धारित भेल।” प्रतिरक्षा पक्ष उचित समय माँगलक। सुनीता पहिल बेर अपन कापीक दिनक संख्या न्यायक भाषा बनैत देखलक।

धर्मपाल घर लौटि पिता कर्णेल सिंह खुरानाक पुरान चित्रक सामने ठाढ़ रहल। हुनकर पिता ई उद्योग आरम्भ कएने छलाह, जखन कारखानामे केवल छओ मशीन छल। चित्रक नीचाँ लिखल छल—‘विश्वास सँ उद्योग’। धर्मपाल मनमे सोचलक जे कोनो कारोबारी हर मास पूराक पूरा भुगतान नहि कऽ सकैत, जँ ग्राहक देरी करय। मुदा ओ ईहो देखैत छल जे श्रमिकक उपस्थितिक कागज बदलि गेल तँ ग्राहकक देरीसँ अलग बेईमानीक प्रश्न उत्पन्न होइत अछि।

ओ राति धर्मपाल हरजीतकेँ बजौलक। “तीन दिनमे सभ पञ्जी एकठाम रखू। जे भुगतानक गलती अछि, ओकर सुधारपत्र तयार करू,” ओ कहलक। हरजीत पुछलीह, “ठेकेदारक मूल कापी?” धर्मपाल कहलक, “ओतय सँ मँगाउ।” “जँ नहि देत?” “तखन

लिखित रूपसँ उल्लेख करू जे कापी नहि भेटल।” एहि उत्तरमे धर्मपालक पहिल तात्कालिक स्वीकार छल, मुदा ओकरा एखन अपने कार्यालयक गलत गणनाक परिमाण नहि बुझायल छल।

रातिक अन्तमे एक युवा मजदूर जगदीश छतपर सुनीताक परिवार लग आयल। ओकरा ठेकेदारक कार्यालयसँ कहल गेल छल जे जँ ओ बलदेवक समूह छोड़ि देत तँ अगिला मास नियमित काज भेटि सकैत अछि। जगदीशक माँ अस्वस्थ छलि। ओ रामलखनसँ पुछलक, “अहाँ हमर स्थानमे रहितहुँ तँ की करितहुँ?” रामलखन उत्तर देलनि, “हम तोरा अपन साहस उधार नहि दऽ सकैत छी। मुदा जे कागजपर सही अछि, ओकरा गलत लिखब मत।” जगदीश चुपचाप चलि गेल।

पावसक पहिल मेघमालाक दिन कारखानामे मशीनक आवाज फेर तेज भेल। किछु निर्यात-आदेश लौटल छल। मजदूर खुश होयब चाहैत छलाह, मुदा पुरान हिसाब शेष छल। बलदेव स्पष्ट कएलनि जे उद्योगक नव काज स्वागतयोग्य अछि; एतबसँ पुरान देनदारी नहि मिटत। सुनीता ओकर वाक्य मनमे लिखलक—नव उजास पुरान छाया मिटेबाक बहाना नहि।

एहि बीच चम्पाक पति जगमोहन घर लौटि कहलक जे ओ अपन पत्नीकेँ कचहरीमे देखय नहि चाहैत अछि। “लोक कहत जे हमर घरक औरत झगड़ा करैत अछि,” ओ कहलनि। चम्पा शान्त स्वरमे पुछलीह, “हम जे दिन काज कएल, ओकर रुपैया माँगब झगड़ा अछि?” जगमोहनक उत्तर नहि छल। पाछाँक रातिमे ओ बेटाकेँ विद्यालयक शुल्क लेल धन खोजैत देखलक, तखन चम्पाक पर्ची उठा कऽ एक-एक दिन गनलक। अगिला सुनबाईक दिन ओ घरक बाहर ठाढ़ भऽ पत्नीकेँ शुभकामना देलक।

सावनमे एक दिन बलदेवकेँ एक अपरिचित व्यक्ति भेटल, जकरा अपन परिचय पत्रकारक रूपमे देने छल। ओ कहलक, “अहाँक कारखानामे सबटा मजदूर गुलाम बनाओल गेल अछि, हम एहि शीर्षकसँ समाचार देब।” बलदेव कहलनि, “ई शीर्षकमे हमर साक्ष्य नहि अछि। हम पाँच दिनक भुगतान, उपस्थिति-पञ्जी आ उचित कार्यशर्तक प्रश्न उठा रहल छी।” पत्रकार पुछलक, “तखन समाचार पैघ कोना बनत?” बलदेव उत्तर देलनि, “हमर दुःख पैघ करबाक आवश्यकता नहि। हमर दिनक सही हिसाब छापू।”

सुनीता पत्रकारक प्रश्न सुनैत छलि। ओ सोचलक जे झूठ सँ नान्हि जीत भेटि सकैत अछि, मुदा सत्यक पाछाँ उभरैत लोकक भरोसा अधिक टिकाउ होइत अछि। ओ एक पुरान लिफाफामे नौकरीक विज्ञापन आ वर्ष २००८ क कटल वेतनक पर्ची रखलक। नव कागजक उपर तिथि लिखल गेल। तकर नीचाँ ओ अपन नाम नहि, ‘श्रमिकक काजक दिन’ लिखलक, कारण अभिलेख व्यक्तिगत प्रसिद्धि लेल नहि, सबकेँ अपन श्रम गनबाक अधिकार लेल बनैत छल।

भादवक प्रारम्भमे मजदूरी-प्राधिकारीक समक्ष प्रमाणक सुनबाईक दिन आयल। बरामदामे चारि पक्षक प्रतीक्षा छल—रामलखनक समूह, ठेकेदार हरनाम, कम्पनीक प्रतिनिधि आ गवाह। सुनीता अपन परीक्षा देकर लौटल छलीह। आजु ओकरा भीतर गवाही देबाक अधिकार नहि छल, कारण ओ स्वयं ओहि कार्य-दिनक प्रत्यक्ष साक्षी नहि; ओ केवल पिताक अभिलेख सम्हारबाक मदति करैत छलि। एहि सीमा केँ ओ अपमान नहि, प्रमाणक नियम बुझि स्वीकार केलक।

रामलखन सँ हुनकर काजक आरम्भ, पाली, मजदूरीक दर आ भुगतानक प्रचलित पद्धति पुछल गेल। ओ धीरे-धीरे उत्तर देलनि। “अहाँ कहैत छी जे चौदह तारीख राति धरि काज कएलहुँ; ओकर लिखित समर्थन कोन अछि?” श्रमिकक प्रतिनिधि सुनीताक कापी नहि, पहरेदारक प्रवेश-रजिस्टरक प्रमाणित प्रति रखलनि। रामलखन कहलनि, “हम एहि गेटसँ रोज गेलहुँ। जखन सीटी बन्द भेल, हम बाहर आएलहुँ।” प्रश्न पुछनिहार कम्पनीक वकील चाहैत छलाह जे कागजक विषय स्वयं कागज सँ निर्धारित हो, न केवल स्मृतिसँ।

अरुण सूरी पुछलनि, “अहाँ समयक पहिने घुरि गेल दिन सेहो अछि?” रामलखन कहला, “हँ, एक बेर बालक बीमार पड़ल छल, आधा दिन घुरि गेलहुँ।” “ओ दिनक पूरा मजदूरी चाहैत छी?” “नहि। आधा दिन जतेक बनत, ततेक। हम जे कएलहुँ ओहि पर अधिकार माँगैत छी।” न्यायिक अधिकारी हुनकर उत्तर लिखबेलनि। रामलखनक ई स्वीकार श्रमिक पक्षक घोषणापर टिकल दावा नहि, वास्तविक कार्य-दिनक अधिक विश्वसनीय चित्र बनौलक।

चम्पाक साक्षीमे प्रश्न अलग छल। किछु दिन ओकरा कारखानाक भीतरक पञ्जीमे पूर्ण रूपसँ दर्ज नहि कएल गेल छल, कारण ठेकेदार महिला छँटाई-दलक उपस्थिति अलग कापीमे

रखैत छल। चम्पा कहलीह, “हम मुख्य हॉलक पाछाँक कोठरीमे कपड़ा छाँटैत छलहुँ। हमर सीटी कारखानाक सीटीए रहैत छल, मुदा नाम दोसर कापीमे।” अरुण पुछलनि, “अहाँ प्रत्येक दिनक भुगतान केकर हाथसँ पबैत छलहुँ?” ओ कहलीह, “हरनामक मुनीम। पर्ची कम्पनीक छापवाली।” अधिकारी दुनू प्रतिलिपि मँगौलनि।

ठेकेदार हरनामक उपस्थितिक सूची पाहुनक संग अबैत छल। ओकरा देखि चम्पाक चेहरा कठोर भऽ गेल। सूचीमे ओकर नामक स्थानपर किछु दिन ‘चम्पा’ आ किछु दिन ‘सी. देवी’ लिखल छल। हरनाम कहलक जे दुनू नाम एके व्यक्तिक अछि। अरुण पुछलनि, “तखन ई दू नामक कारण किछु दिन दू बेर गनल गेल अछि कि नहि?” हरनाम तुरन्त मना केलक, मुदा मूल पञ्जीक दू पृष्ठ देखिकय ओकर आवाज धीमा भऽ गेल।

अधिकारी एक पृष्ठक नीचाँ लिखल हस्ताक्षर देखलनि। ओहिमे ‘प्राप्त’ शब्दक लग एक अँगूठाक चिह्न छल। चम्पा कहलीह, “ई हमर नहि।” अधिकारी कहलनि जे अँगूठाक चिह्नक प्रामाणिकताक प्रश्न उपयुक्त परीक्षणसँ निर्धारित होएत; तत्काल घोषणा कएला सँ तथ्य सिद्ध नहि होइत। हरनामक मुनीम उपस्थित नहि छल। तकरा अगिला तिथिपर अभिलेखसहित बजाओल जाएबाक निर्देश देल गेल।

बाहर चम्पा पहिल बेर रो पड़लीह। “हम पाँच दिनक धन लेल आएल छलहुँ; आब हमर अंगूठा दोसर आदमीक कागजपर देखाइत अछि।” सुनीता हुनकर पाछाँ पानि लऽ गेलि। “अहाँकेँ पक्के कहबाक अधिकार अछि जे ई चिह्न अहाँक नहि। मुदा न्यायालयकेँ जाँच करबाक समय सेहो चाही,” ओ कहलक। चम्पा आँखि पोंछि पूछलीह, “जँ चिह्न गलत सिद्ध भेल तँ सभ दिनक धन भेटत?” सुनीता मना कएलक—“जतबा प्रमाणित होयत, ओतबा लेल अलग निर्णय होएत।”

हरजीत कार्यालय लौटिकय ओहि पृष्ठक प्रति देखलीह। हुनकर हस्ताक्षर जकरा ‘भुगतान प्रमाणित’ लेल लगबैत छलथि, तकर नीचाँ मुनीमक दू प्रकारक मोहर छल। ओ तत्काल सरकारी जाँचकर्ताकेँ निष्कर्ष नहि लिखलीह, केवल कार्यालयक प्रबन्धनकेँ पत्र देलीह जे मूल दस्तावेज सुरक्षित राखल जाए। अपन नकलपर तिथि लिखिकय रखलीह। हुनकर पतिकेँ ई

काम अनावश्यक जोखिम बुझायल। हरजीत कहलीह, “हम श्रमिकक पक्ष नहि, कागजक सही अर्थक पक्षमे ठाढ़ छी। गलत हस्ताक्षरक बोझ हमरा किएक उठायब?”

जगदीशक नाम एखन दोसर विवादमे आयल छल। उत्पादन घटलाक कारण ओहिकेँ काजसँ हटेबाक पत्र देल गेल; पत्रमे लिखल छल जे अस्थायी नियोजनक अवधि समाप्त। जगदीशक दाबी छल जे ओ अनेक वर्षसँ एकहि मशीनपर लगनसँ काज कएने छल आ ओकर सेवाक निरन्तरता तोड़ि-तोड़ि कागज बनाओल गेल। कम्पनीक दाबी छल जे ओ ठेकेदारक सामयिक श्रमिक छल। ई प्रश्न मजदूरीक काटल दिनसँ अलग पड़ैत छल। बलदेव ओकरा औद्योगिक विवाद सम्बन्धी मेल-मिलापक आवेदनमे सहयोग देलनि।

नियोजकक पत्र पाबि जगदीश घरक छतपर चढ़ि बहुत देर धरि सून सड़क देखैत रहल। ओकर माँ भीतर खाँसैत छलीह। ओ ई डर ककरो नहि बतौलक जे उपचारक उधार बढ़ि जाएत। सुनीता अपन पुस्तक लऽ ओतय आयलि, कारण जगदीश ओकर पढ़ाइमे कखनहुँ अंकक कठिन प्रश्न बुझबैत छल। ओ पूछलक, “आब तोहर गणित की कहैत अछि?” सुनीता उत्तर देलक, “जे शेष अछि, ओकरा शून्य मानी लेना गलत अछि।” जगदीश हँसब चाहलक, मुदा हँसि नहि सकल।

बलदेवक गोष्ठीमे एहन प्रश्न उठल जे जगदीशक सेवा-समाप्तिक कारण श्रमिकसभ एक दिन मशीन नहि चलाबी। किछु लोक सहमत छल, किछु लोककेँ वेतनक नब हानि असह्य छल। सुनीता कहलक, “हमर बाबूक बकाया आ जगदीशक नौकरी दुनू अलग दावा अछि। जँ सभ काज बन्द करब तँ जे लोक चाहैत नहि, तकर आवाज के सुनत?” बलदेव कहला, “विरोधक रूप सेहो सहमति सँ तय होय।” गोष्ठीमे तत्काल काज रोकबाक निर्णय नहि भेल। सभ लिखित सामूहिक निवेदन देबाक पक्षमे सहमत भेल।

पत्रकेँ कतेको हाथसँ पढ़ल गेल। हरबंस नामक एक पुराने श्रमिक एहि बातपर अड़लाह जे ‘कारखाना चोर अछि’ सन वाक्य बिना प्रमाण नहि लिखल जाए। चम्पा कहलीह जे भुगतानक कटौती दस्तावेजमे स्पष्ट अछि, ताहि लेल शिकायतक भाषा कमजोर नहि होय। अन्तमे लिखल गेल—“हमरा सभक कार्य-दिन आ वेतनक उपलब्ध अभिलेखमे अन्तर अछि; उचित परीक्षण आ भुगतानक प्रार्थना करैत छी।” एहि पंक्तिपर सभक सहमति भेल।

नवम्बर २००९ मे वर्षक अन्तिम कृषि-बाजारक समाचार कारखानाक बस्तीमे सेहो पहुँचैत छल। पंजाबक खेतमे धानक कटनी भऽ रहल छल, मुदा कारखानाक श्रमिकक घरमे अनाज बाजारसँ किनल जाइत छल। रामलखन अपन गामक खेतक बात याद करैत छलाह। ओ खेत छोड़ि औद्योगिक शहरमे आयल छलाह ताकि बच्चासभ पढ़ि सकय। एखन ओकरा लागैत छल जे खेतक अनिश्चित वर्षा आ कारखानाक अनिश्चित सीटीमे भिन्नता कम अछि।

एक रवि दिन सुनीता विद्यालयक प्रमाणपत्र लऽ घर आएलि। परिणाम नीक छल। प्रधानाध्यापिका हुनका महाविद्यालयमे पढ़बाक सलाह देलीह। रामलखन कागज देखिकय प्रसन्न भेलाह, मुदा फूलकुमारी जेबक हिसाब पूछलीह। “बेटीक पढ़ाइमे पैघ खर्च होएत,” ओ कहलीह। रामलखन शान्त स्वरमे कहला, “हमर वेतनक जे बकाया अछि, तकरा केवल घरक देनदारी नहि बुझू; ओहि मे एकर पढ़ाइ सेहो अछि।” सुनीता कागज तह कऽ मेजपर रखलक।

ठेकेदारक मुनीम रतनलाल अन्ततः सुनबाईमे आयल। ओकरा पुछल गेल जे भुगतान पञ्जीक अँगूठाक चिह्न केकर उपस्थितिमे लगल। ओ पहिने कहलनि जे प्रत्येक श्रमिक व्यक्तिगत रूपसँ भुगतान लैत। चम्पा नामक दिनपर प्रश्न भेल तँ ओ कहलनि, “कखनो समूहक मुखिया सेहो धन लैत छल।” अधिकारी प्रश्न कएलनि, “की लिखित अधिकारपत्र छल?” रतनलाल उत्तर देबाक पहिने पञ्जी देखलक। तत्क्षण कोनो प्रामाणिक अधिकारपत्र प्रस्तुत नहि भऽ सकल।

अरुण सूरी अपन मुवक्किलक पक्षरक्षामे प्रश्न कएलनि जे पञ्जीक प्रतिलिपि अनेक हाथसँ गुजरि चुकल अछि। “जँ नकलमे त्रुटि भेल हो?” ओ पुछलनि। श्रमिकक प्रतिनिधि मूल अभिलेख मँगबाक आग्रह कएलनि। अधिकारी मूल पञ्जीक उपस्थिति सुनिश्चित करबाक निर्देश देलनि। चम्पा नीकसँ बुझि गेल छलीह जे एक गवाहक उलझन मात्र ओकर दावा पूर्णतः सिद्ध नहि करैत, मुदा ओहो बुझलीह जे अपन प्रश्न दस्तावेज सँ बाहर नहि रहि गेल अछि।

दिसम्बरक अन्तिम दिन हरजीत एकटा नव तुलना-पत्र तैयार कएलीह। ओ कार्यालयक कागज पर ककरो दोष नहि लिखलीह; केवल मूल प्रवेश-पञ्जी, उत्पादन-कक्षक हाजिरी आ भुगतान-पर्चीक दिनक अन्तर अंकित कएलीह। नौ नामक सामने एकहि प्रकारक त्रुटि देखाइत

छल। ओहिमे रामलखन, चम्पा आ एक एहन कर्मचारीक नाम छल जे तीन मास पहिने नौकरी छोड़ि चुकल छल। हरजीत हुनकर नामक बगलमे प्रश्नक चिह्न बनौलीह।

नव वर्षक पहिल बिहान कारखानाक दीवालपर नव उत्पादन-वर्षक शुभकामना लिखल गेल। नीचाँ बलदेवक हाथसँ टाँगल एक छोट सूचना छल—“पुरान मजदूरी सम्बन्धी आवेदनक अगिला तिथि फागुनमे।” एहि दोहरा सूचना-पट्टकेँ सुनीता बहुत देर धरि देखैत रहलि। ओकरा बुझायल जे उत्पादनक नव वर्ष आ न्यायिक हिसाबक पुरान वर्ष एकसाथ चलि सकैत अछि। उद्योग अपन बाट बढ़ैत अछि, मुदा श्रमिकक अपूर्ण दिन पाछाँ रहि जायत तँ ओकरा कोनो कैलेंडर नहि मिटा सकैत।

सन् २०१० क पहिल जाड़ बितैत-बितैत सुनीता महाविद्यालयमे नाम लिखेबाक कागज जुटौलक। शिक्षा संस्थाक कर्मचारी फीसक विवरण देखौलक आ कहलनि जे छात्रवृत्तिक आवेदनक अलग तिथि अछि। सुनीताकेँ अपन गामक शारदा देवीक विद्यालयक समाचार याद आयल, जतय छात्रीक नाम पञ्जीमे होइतहुँ धन नहि भेटैत छल। ओ निर्णय कएलक जे एहि बेर अपन फीस आ आवेदनक प्रत्येक प्रति सुरक्षित रखत। बाबूजीक मजदूरीक मुकदमासँ ओकरा ई एकटा शिक्षा भेटल छल।

रामलखन ओकरा पढ़ाइ करबैत चाहैत छलाह, मुदा एक समय ओ कहि बैसलाह, “बेटी, जँ दोसर वर्षक खर्च नहि जुटल तँ?” सुनीता अपन परीक्षा-प्रमाणपत्र मेजपर राखलक। “जँ नाम नहि लिखाएब, तँ दोसर वर्ष धरि पहुँचबे नहि करब,” ओ कहलि। फूलकुमारी हँसैत कहलीह, “आब ई लड़की अपने वकील सन बाजैत अछि।” सुनीता मना केलक—“हम वकील नहि। हमरा कागज पढ़बाक अभ्यास अछि।” मुदा भीतर ओ बुझैत छलि जे कागज पढ़बाक क्षमता जीवनक रास्ता खोलि सकैत अछि।

कारखानामे धर्मपाल नव आदेशक कारण श्रमिक बढ़ेबाक बात सोचैत छलाह। हुनका सामने पुरान आवेदनक गठरी रहैत छल। अरुण सूरी कहला, “जँ त्रुटि अछि तँ समुचित भुगतान करैत जाउ। रोकल रकमपर हर दिनक विवादक खर्च बढ़ैत अछि।” धर्मपाल कहलक, “अहाँ श्रमिकक वकील सन बाजैत छी।” अरुण मुस्की देलनि। “अहाँक वकील छी। ताहि लेल ई कहैत छी। गलत प्रविष्टि बचौला सँ कम्पनीक रक्षा नहि होइत।”

एक दिन हरनाम ठेकेदार धर्मपालसँ एकान्तमे भेटलक। ओ कहलक जे महिलासभक काजक अनुपस्थिति अलग मापसँ निर्धारित होइत छल, ताहि कारण दू पञ्जीमे अन्तर स्वाभाविक अछि। धर्मपाल पुछलक, “जे दिन उत्पादन दर्ज अछि, तखन श्रमिकक अनुपस्थिति कोना?” हरनाम उत्तर देलक, “दोसर दल काज कएने होयत।” धर्मपाल मूल पञ्जीक पन्ना देखलक। हुनका पहिल बेर बुझायल जे विशिष्ट दिनक समर्थनमे अनुमानक बदला वास्तविक उपस्थितिक साक्ष्य आवश्यक अछि।

मजदूरी-प्राधिकारीक अगिला सुनबाईमे कम्पनी एक सुधारपत्र प्रस्तुत केलक। रामलखनक दू दिनक गणनामे गलती मानि रकम देबाक प्रस्ताव छल; चम्पाक तीन दिनक बकाया सेहो स्वीकार कएल गेल। मुदा शेष दू दिन आ अँगूठाक चिह्नक विवाद एखन जँचा जा रहल छल। रामलखन पुछलनि, “जँ हम ई स्वीकार करी तँ बाकी दावा मिटि जाएत?” अधिकारी स्पष्ट कएलनि जे लिखित स्वीकारक सीमा समझि तखन सहमति दी। श्रमिकक प्रतिनिधि आ कम्पनीक अधिवक्ता आवेदनक स्वरूप परस्पर देखलनि।

रामलखन स्वीकृत दू दिनक रकम लेल स्वीकारपत्रपर हस्ताक्षरक बदला अँगूठा लगौलनि, मुदा पत्रमे लिखाओल गेल जे शेष कथित कटौतीपर दावा जारी रहत। चम्पा अपन तीन दिनक रकम तत्काल नहि लेने छलीह; ओ कहलीह जे भुगतानक गणना आ चिह्नक प्रामाणिकताक निर्णय लिखित रूपमे हो। अधिकारी हुनका समझौलनि जे निर्विवाद रकम अलग प्राप्त करबासँ शेष विवाद स्वतः समाप्त नहि होइत, जँ कागजमे स्पष्ट रहय। चम्पा सहमति देलीह।

एहि छोट राहतक समाचार बस्तीमे दू रूपेँ पहुँचल। किछु लोक कहलक जे कारखाना हारि गेल; दोसर कहलक जे श्रमिकसभ बिकि गेलाह। बलदेव पहिल सार्वजनिक गोष्ठीमे दुनू बात अस्वीकार कएलनि। “हम ककरो हरबय नहि, अपन दिनक सही मजदूरी पाबय आएल छी। जे स्वीकार भेल अछि, ओकर हिसाब सुरक्षित राखू। जे अस्वीकार अछि, ओकर प्रमाण देखू।” सुनीता बुझि गेल छलि जे अदालतक सुनबाईक बादो प्रचारक मुकदमा बाहर चलैत अछि।

जगदीशक सेवाक प्रश्न एहि बीच एक निर्णायक मोड़ लेल। मेल-मिलापक अधिकारीक समक्ष श्रमिकक पक्ष ओकर लगातार काजक पर्ची प्रस्तुत केलक, जखनकि कम्पनी ठेकेदारक छोट-छोट समयावधिक नियुक्ति-पत्र। अधिकारी दुनू पक्षसँ पूछलनि जे सेवा-समाप्तिक

वास्तविक परिस्थिति की छल। समझौता नहि भेल। विवादक उचित वैधानिक मार्गपर आगाँ बढ़बाक सम्बन्धमे प्रतिवेदन तैयार भेल। बलदेव जगदीशकेँ कहलनि, “एहि चरणमे नौकरी वापस भेटल नहि। कागज केवल देखबैत अछि जे विवाद समाप्त नहि भेल अछि।”

जगदीश ताहि दिन घुरि अपन मायक कात बैसल। ओ कहलक, “आइ लोक हमर सेवा पर बहस कएने छल, मुदा हमरा भूख आइये लागैत अछि।” माय कहलीह, “तोहर हातमे हुनर अछि। दोसर काज खोज, आ न्याय चाहबाक बाट सेहो छोड़ि नहि दिह।” जगदीश पछिला वर्षक भाँति किसी अनिश्चित कार्यालयक ललचौनिहार प्रस्तावक पाछाँ नहि गेल। ओ एक पड़ोसीक छोट मशीन-दुकानमे अस्थायी काज आरम्भ कएलक, संगहि पुरान दावाक कागज सुरक्षित रखलक।

सुनीताक महाविद्यालयमे पहिल दिन एक अध्यापक विद्यार्थीसँ पुछलनि, “अहाँ सभ किएक पढ़य आएल छी?” कियो नौकरी, कियो ज्ञान, कियो परिवारक इच्छा कहलनि। सुनीता उत्तर देलक, “हम एहन शब्द बुझय चाहैत छी जकरा लिखि देला पछाति आम लोक अपना अधिकारसँ वञ्चित नहि होथि।” कक्षामे किछु विद्यार्थी मुस्कुरौलनि। अध्यापक पुछलनि, “कोन शब्द?” सुनीता कहलीह, “उपस्थिति, कटौती, स्वीकृति, उत्तरदायित्व।” अध्यापक मौन भेलाह, फेर कहला, “तखन पढ़ाइ अहाँक घरमे पहिनेसँ आरम्भ भऽ चुकल अछि।”

फुलकुमारी महाविद्यालयक पहिल मासक शुल्क लेल तीन घरमे कपड़ा सिलबाक काज लेलनि। हुनकर सिलाईक मशीन पुरान छल, मुदा सुई बारीक चलैत छल। चम्पा एकदिन हुनका देखय एलीह। “हमरा अपन बेटीक पोशाक सिलाबय अछि,” ओ कहलीह। फूलकुमारी मूल्य कम कएलनि। चम्पा विरोध कएलीह—“अहाँक काजक सेहो पूरा दाम अछि। हम अपन मजदूरीक पूरा दाम माँगैत छी, तँ अहाँक श्रमकेँ सस्तो किएक कराबी?” दुनू महिला एक-दोसराक हाथ पर हाथ रखि हँसलीह।

कारखानाक लेखा-कक्षमे हरजीतक समक्ष एकटा एहन प्रविष्टि आयल जेकरा देखि ओ चौंकि उठलीह। भुगतान-सूचीमे ‘हरदेव चौहान’ नामक व्यक्ति लेल सत्रह दिनक रकम दाखिल छल, मुदा पहरेदारक प्रवेश-पञ्जीमे एहि नामक किछु पता नहि। हरजीत पहिने अनुमान लगौलीह जे ई बाहरी मरम्मत-कर्मी होयत। धर्मपालसँ पूछलनि तँ ओ कहलक, “सम्भव

अछि।” ठेकेदार हरनाम कागज नहि देखेबाक बहाना बनौलक। हरजीत ओकरा असत्य घोषित नहि कएलीह; नामक सत्यापन हेतु पत्र लिखि देलनि।

किछु दिन बाद हरदेव नामक एक व्यक्ति स्वयं कार्यालय पहुँचल। ओ कहलक जे ओ पुरान समयमे मशीनक पुर्जा पहुँचेबाक काज करैत छल, नियमित श्रमिक नहि। सूचीमे ओकर नाम आ सत्रह दिनक भुगतान किएक अछि, से ओ नहि जनैत। हरजीत ओकर पहिचानक पुरान विवरण मँगौलीह। ओ खिन्न भऽ कहलनि, “हम कागज दऽ सकैत छी, मुदा हमरा चोरीक शंका सँ नहि देखू।” हरजीत कहलीह, “अहाँक नामक सहायता चाही, आरोप नहि।”

ई घटना रामलखनक कटल दिनक विवादसँ पृथक छल। मुदा कारखानाक पञ्जीमे नाम आ भुगतानक मिलानक समस्या कतेक गहिर अछि, तकर संकेत देलक। धर्मपाल एक स्वतंत्र लेखा-परीक्षणक आदेश देलक। बलदेवकेँ ई बात समाचारसँ नहि, कम्पनीक औपचारिक पत्रसँ भेटल। ओ कहलनि, “गलती जँ आन्तरिक अछि तँ सुधारब सरकार, कम्पनी आ श्रमिक सभक हितमे अछि। मुदा जँ जालसाजी भेटत तँ ओकर पृथक जाँच होएत।”

शरदक एक दिन प्राधिकारीक समक्ष शेष मजदूरी-दावाक सुनबाई फेर भेल। पक्षसभ पुरान पञ्जी, काजक उत्पादन-हिसाब आ भुगतानक प्रमाण प्रस्तुत कएलनि। चम्पाक दू विवादित दिनसँ एक दिनक कार्यक पर्याप्त समर्थन भेटल; दोसर दिनपर प्रमाण विरोधी छल। अधिकारी पक्षसभसँ स्पष्ट करौलनि जे ओहि एक दिनक अनिश्चितताक कारण शेष प्रमाणित दिनक अधिकार नकारल नहि जाएत।

अन्तरिम रूपेँ स्वीकार कएल गेल रकमक बाद शेष प्रश्नपर आदेश सुरक्षित राखल गेल। अरुण सूरी अपन मुवक्किलकेँ कहलनि जे जे राशि निर्विवाद रहल, ओकरा देनाइ उचित छल; विवादित भागक निर्णयक प्रतीक्षा होएत। चम्पा बाहर आबि कहलीह, “आजु हम पढ़लहुँ जे एकहि पन्नामे तीन दिन सही, एक दिन विवादित आ एक दिन असिद्ध होयब सम्भव अछि।” सुनीता कहलक, “एक पन्नामे पाँचू दिन एकहि रंगक नहि होइत।”

नगरमे दशहराक चहल-पहल छल। कारखानाक बाहर रंगीन कपड़ाक गठरी सजल रहैत छल। सुनीता एकदिन अपन मित्र अमनदीपसँ सुनलक जे न्यायालयक मामलाकेँ कारण किछु

ग्राहक कम्पनी सँ सौदा घटा देने छथि। ओ घर आबि रामलखन सँ पुछलक, “हमर दावा सँ रोजगार घटत तँ?” रामलखन कहला, “गलत हिसाब सहि लएब तँ रोजगार बाँचत, ई निश्चय कोना? उद्योग चलय आ श्रमिकक्केँ देल धन ठीक होय—दुनू सम्भव अछि।”

धर्मपालक कार्यालयमे एहि बीच ग्राहकक एकटा नव आदेश आयल। ओ श्रमिकसभक प्रतिनिधिक संग बैठक तय कएलक। “हम अहाँ सभसँ लड़ैत-लड़ैत काज नहि चला सकब,” ओ कहलक। बलदेव उत्तर देलनि, “हमहु काज बन्द करबाक लेल नहि आएल छी। हमरा लिखित वेतन-व्यवस्था, वास्तविक उपस्थितिक आधार आ अपीलक मार्ग चाही।” हरजीत एक साधारण द्वि-प्रतिलिपि उपस्थितिक व्यवस्था सुझौलीह जाहिमे श्रमिक चाहि तँ अपन दिनक नकल देख सकय। धर्मपाल सहमति देलक।

भेटघाटक अन्तमे चम्पा कहलीह, “हम सभक्केँ हस्ताक्षर करबाक पहिने पूरा पढ़ि सुनाओल जाए।” धर्मपाल आश्चर्यसँ देखलक। “एहि मे की कठिनाइ?” चम्पा उत्तर देलीह, “कठिनाइ रहैत तँ हमर बकाया एतेक दिनक बाद कतय पहुँचैत?” कार्यालयमे केओ हँसल नहि। हरजीत अपन सामनेक कागज उठाकय कहलनि, “दू भाषा मे सरल निर्देश राखब। जकरा पढ़ब नहि अबैत, ओकरा पढ़ि सुनाओल जाए।” एहि प्रस्तावपर सभक सहमति भेल।

कार्तिकक अन्तिम सुनबाईमे नियुक्त प्राधिकारी लिखित आदेश सुनौलनि। जकर कार्य-दिनक समर्थन अभिलेखसँ भेल, ओहि दिनक रोकी राखल मजदूरी देबाक निर्देश कएल गेल। किछु देरीक कारण कम्पनीक आर्थिक कठिनाइ आ पञ्जीक असमानता सम्बन्धी व्याख्या दर्ज भेल, मुदा जे कटौतीक वैधानिक आधार कम्पनी स्पष्ट नहि कऽ सकल, तकरा उचित नहि मानल गेल। चम्पाक एक विवादित दिनक दावा पर्याप्त साक्ष्यक अभावमे स्वीकार नहि भेल; ओकरा अन्य वैधानिक उपचारक उपलब्धता सम्बन्धी जानकारी देल गेल। आदेश प्रत्येक व्यक्तिक नामक सामने अलग कारण लिखैत छल।

रामलखनक आँखि आदेश पढ़ैत-पढ़ैत थाकि गेल। सुनीता बगलमे बैसि एक पन्नाक बाद दोसर पन्ना पढ़ि सुनौलक। “हमरा सभक्केँ पूरा जीत भेटल?” पिता पुछलनि। सुनीता उत्तर देलक, “जतेक सिद्ध भेल अछि, ततेक लेल आदेश अछि। जे असिद्ध रहल, ओकरा झूठ नहि

कहल गेल; केवल अदालत एहि अभिलेखपर ओकरा मानि नहि सकल।” रामलखन कागज मोड़ि रखलनि। हुनकरा पहिल बेर न्यायिक भाषाक सीमा दुःख आ सन्तोष दुनू रूपमे बुझायल।

अरुण सूरी धर्मपालकेँ अपीलक वैधानिक सम्भावना बतौलनि। धर्मपाल आदेशक प्रत्येक पन्ना पढ़लनि। ओ पुछलनि, “जँ हम अपील नहि करी तँ की लोक मानि लेत जे हम अपराधी छी?” अरुण उत्तर देलनि, “ई मजदूरी सम्बन्धी निर्णय अछि; एकर अर्थ अपन कानूनक दायरामे अछि। अहाँ वैधानिक दायित्व पूरा करब तँ कोनो आपराधिक दोषक स्वतः स्वीकार नहि होयत।” धर्मपाल सोचलनि जे कारोबारी प्रतिष्ठाक रक्षा अनिश्चित मुकदमा बढ़ौला सँ बेसी सही व्यवस्था बनौला सँ भऽ सकैत अछि। ओ प्रमाणित रकम अदा करबाक निर्देश देलक।

अगिला सप्ताह चम्पा जे भुगतान पओलीह, तकर किछु हिस्सा बेटीक विद्यालयक शुल्कमे गेल। जखन शिक्षक पुछलनि जे देरी किएक भेल, चम्पा कहलीह, “दिनक धन देरीसँ भेटल।” बच्ची पुछलक, “अम्मा, पैसा कोतय छल?” चम्पा उत्तर देलीह, “कागजक भीतर अटकल छल।” बेटी अपन कापी खोलि धीरेसँ लिखलक—“कागजमे नाम सही राखब।” ओकरा ई पाठ विद्यालयक पुस्तकमे नहि, घरक अनुभवमे भेटल छल।

बलदेव एक छोट सभा राखलनि। “हम सभक दावा एक रूपेँ समाप्त नहि भेल अछि,” ओ कहला। “जगदीशक सेवा-समाप्तिक विषय अलग मंचपर जएत। इकबालक चोटक उपचारक कागज अलग सुरक्षित अछि। जे वेतनक आदेश भेटल अछि, ओकर पालन देखब। आ उपस्थितिक नव व्यवस्था प्रभावी भेल कि नहि, से प्रत्येक मास देखब।” सभा शान्त रहल। एतेक दिनक झगड़ाक बाद लोक जयकारा सुनय चाहैत छलाह, मुदा बलदेव गिनती पूरा करैत छलाह।

ओहि साँझ हरजीत अपन कार्यालयमे दराज बन्द करैत एक पुरान पत्र देखलीह। हरदेव चौहानक नामक सत्यापनक उत्तर एखन नहि आयल छल। ई मजदूरीक निर्णीत रकमसँ अलग प्रश्न छल; तकरा लोकक समक्ष आरोप बनाकय फेकब उचित नहि। हरजीत अनुस्मारक लिखलीह, ओकर प्रति अपन कार्यालयक सुरक्षित फाइलमे रखलीह आ दराज बन्द कएलनि। हुनका अनुमान नहि छल जे नाम, धन आ वास्तविक व्यक्तिक ई प्रश्न अनेक वर्ष बाद दोसर रूपमे देशक अन्य न्यायालयसभ धरि घुमि सकैत अछि।

सुनीता महाविद्यालयक पुस्तकालयसँ इतिहासक पुस्तक लऽ घुरैत छलि। ओकर मित्र अमनदीप अखबार देखबैत कहलक जे दिल्लीमे सार्वजनिक ठेकाक खर्च, पैघ आयोजन आ भ्रष्टाचारक आरोपपर बहस तेज भऽ रहल अछि। “आब सभ आन्दोलन शहरमे जएत,” ओ कहलक। सुनीता पुछलक, “ककर आन्दोलन?” “जेकरा अन्याय भेटल।” सुनीता मुस्कुरौलक। “आन्दोलन शब्दसँ पहिने केकर दाबी अछि, से जानब जरूरी अछि। हमर बाबूक पाँच दिनक हिसाब बिना देखलहुँ तँ तोहर समाचारमे ओकरा जगह भेटत?” अमनदीप अखबार मोड़ि देलक।

घरे पहुँचिकय सुनीता आदेशक प्रमाणित नकलक संग पिताक पुरान पर्ची एक लिफाफामे रखलक। लिफाफापर तिथि लिखि एक वाक्य जोड़लक—“जकर नाम, तकर आवाज।” ओहि राति फूलकुमारी पहिल बेर किरायाक बकाया पूर्ण देलीह। घरक मालिक रसिद लिखिते समय कहलनि, “अहाँ लोक बहुत कागज रखैत छी।” फूलकुमारी हाथ बढ़ाकय रसिद लेलनि। “कागजक कारणे आजु बुझाइत अछि जे कतबा देलहुँ,” ओ शान्त स्वरमे उत्तर देलीह।

दू दिन पछाति सुनीता जगदीशक अस्थायी कार्यशाला गेलि। ओ छोट मशीनक एक पहिया खोलि रखल छल, मुदा ओकर नजर बारम्बार दरवाजापर पड़ैत छल। “श्रम कार्यालयसँ किछु समाचार?” सुनीता पुछलक। जगदीश कहलक, “एखन केवल अगिला सुनबाईक तिथि। मालिकक पक्ष अपन दस्तावेज देत।” सुनीता ओकरा रामलखनक आदेशक प्रति देखाबय चाहलीह, फेर रुकि गेलि। प्रत्येक परिवारक खुशी दोसरक अधूरा दुःखपर असावधान ढंगसँ नहि राखल जाए। जगदीश स्वयं पुछलक, “अहाँक बाबूक किछु पैसा भेटल ने?” ओ हँ कहलि। जगदीश सन्तोषक साँस लेल। “तखन ई प्रमाण रहल जे कागजक भीतर बन्द दिन कखनो बाहर सेहो अबैत अछि।” ओ फेर पहिया घुमा देलक। मशीनक हलुक ध्वनि आँगनमे भरि गेल। सुनीता बुझि गेलि जे ककरो संघर्ष पूरा भेला पछाति दोसरक संघर्ष समाप्त नहि होइत; तथापि एकटा छोट परिणामक साहस दोसर मनुष्यकेँ बिना छलक आशा देत।

राति गहिर भेल। दूर कारखानाक सीटी दोसर पालीक अन्तक समाचार देलक। रामलखन झरोखा खोलि सुनलनि, फेर बन्द कएलनि। घरमे सुनीता पाठ पढ़ि रहल छलि, छोट भाइ सुतल छल, आ फूलकुमारी सिलाईक आखिरी टाँका लगबैत छलीह। बकाया मजदूरीक

मुकदमा किछु अंशमे पूरा भेल छल; जगदीशक संघर्ष शेष छल; हरजीतक सुरक्षित फाइलमे एक अनुत्तरित नाम रहि गेल छल। शहरक ऊपर कुहेस फेर उतरि रहल छल, मुदा घरक मेजपर राखल रसिद स्पष्ट पढ़ल जाइत छल।

अध्याय १४ — जनान्दोलनक मंच

सन् २०१०–२०११ : दिल्ली, सोनपुरा आ लुधियाना

दिल्लीक अक्टूबरक हवा सन् २०१० मे धूरि, पानि आ उत्सवक मिलल गन्ध लऽ कऽ बहैत छल। राष्ट्रमण्डल खेलक समाप्तिक बाद सड़कक किछु रंगीन पट्टी एखनहुँ टँगल रहैत छल, जखनकि मैदानक आसपासक श्रमिकसभ ठेका-काज पूरा कऽ अपन अगिला रोजगार खोजैत छलाह। समाचारपत्रमे भारतक खिलाड़ीसभक पदकक विवरण छल; तकर बगलमे सार्वजनिक निर्माणक व्यय आ सामानक दरपर उठैत प्रश्न छल। रेवती झा एकहि पन्नाक दुनू समाचार पढ़लीह। विजय आ हिसाब एक-दोसराक विरोधी नहि, मुदा अक्सर विजयक कोलाहलमे हिसाबक आवाज सुनाइ नहि दैत अछि।

ओ दिल्ली आएल छलीह एकटा पृथक अपीलक कागज बुझबाक लेल। सत्र न्यायालयक पुरान निर्णयसँ सम्बन्धित एक अधिवक्ता-गोष्ठीमे शिवनारायणकेँ आमन्त्रण छल, मुदा पिता अपन स्वास्थ्यक कारण नहि आबि सकलाह। रेवती कैँ कहलनि, “वक्तव्य सुनबाक संग न्यायालयक बरामदा सेहो देखियौ। लोक ओतय अपन राज्यक वास्तविक चेहरा बुझैत अछि।” रेवती दिल्लीमे रहने पुरान सहपाठी उर्मिला वत्सक घर ठहरलीह। उर्मिला एक छोट समाचारपत्रमे सार्वजनिक खर्चक संवाददाता छलि।

उर्मिलाक मेजपर कागजक तीन गठरी राखल छल। पहिल खेलक आयोजनक विवरण, दोसर स्थानीय नगर-परिषदक वाचनालय निर्माणक सूचना आ तेसर न्यायालयमे चलैत एक ठेका-विवादक नकल। रेवती पुछलनि, “एहि तेसर गठरीक खेलसँ कोन सम्बन्ध?” उर्मिला उत्तर देलीह, “प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहि। लोक खेलक पैघ खर्चपर प्रश्न करैत अछि, मुदा हमर जिलामे एकटा छोट वाचनालयक पच्चीस कुर्सी धरि कागजमे अटकल अछि। हम सोचलहुँ, जे हिसाब राजधानीमे पूछल जाइत अछि, से गामक वाचनालयमे किएक नहि?”

दस्तावेज दरभंगाक उत्तर-पश्चिमी सोनपुरा नगरक छल। नगर-परिषद दू वर्ष पहिने एक सार्वजनिक वाचनालय आ सभागार बनबय लेल अनुदान स्वीकृत कएने छल। पुरान विद्यालयक एक कोठरीक सुधार, खिड़की, पुस्तकक आलमारी, पंखा आ श्रव्य-सुविधाक अलग अनुमान तैयार भेल। लेखामे पूर्ण भुगतानक चिन्ह छल, मुदा पुस्तकालयक रखवारि महेश्वर दास उर्मिलाकेँ लिखने छलाह—“आलमारीक एक पल्ला एखन धरि नहि आयल, आ पंखाक तार दीवालसँ लटकि रहल अछि।”

रेवती पन्ना देखलीह। “भवनक काम अधूरा अछि, तकर अर्थ अपने-आपमे चोरी नहि। कखन पूरा होयबाक करार छल, कुन मालक प्राप्ति दर्ज अछि, भुगतानक शर्त की रहल, पहिने से देखब।” उर्मिला मुस्की देलीह। “हम समाचार चाहैत छलहुँ, अहाँ प्रश्न देलहुँ।” रेवती कहलनि, “प्रश्नक सहारे लिखल समाचार यदि ठोस हो, तँ ओकर आयु नारा सँ बेसी होइत अछि।” ई वाक्य उर्मिलाकेँ चुभल नहि; ओ अपन कागजमे पाँच प्रश्न लिखि लेलनि।

सोनपुरामे पुस्तकालयक देखभाल करनिहार महेश्वर दास कियो पैघ अधिकारी नहि छलाह। पैंसठ वर्षक देह, माथपर पसीना, आ कागजक पुरान गन्धक संग हुनकर दिन कटैत छल। पुस्तकक पृष्ठ फाटय तँ ओ गोंद लगबैत छलाह; लड़का सभ परीक्षा पढ़य अबथि तँ ओ राति ढेड़ घंटा बेसी खोलि रखैत छलाह। नगर-परिषदक ठेकाक राशि सँ पंखा लगित तँ ग्रीष्ममे बच्चासभकेँ कम कष्ट होइत। ओहि लेल ओ अनेक माससँ कार्यालयक चक्कर काटैत छलाह।

एक रवि दिन महेश्वरक समक्ष शारदा देवी पहुँचलि। कमलपुरक विद्यालयमे छात्रवृत्तिक अभिलेख लऽ कए ओ पहिने सूचना-अधिकारक सहायता लेने छलीह। महेश्वर कहला, “अहाँ विद्यालयक कागज पढ़बै छी। हमरा ई वाचनालयक लेखा बुझा दियौ।” शारदा एक कागजपर तीन शीर्षक बनौलनि—स्वीकृति, प्राप्ति, उपयोग। “जतय धनक स्वीकृति अछि, ओतय वस्तु पहुँचल कि नहि; जँ पहुँचल तँ के ग्रहण केलक; जँ नहि पहुँचल तँ भुगतानक कारण की? एहि क्रममे लिखू।”

पुस्तकालयक नव भवनमे ओहि दिन एकटा लम्बा मेजक चारू दिस बालकसभ बैसल छल। ककरो रोजगार-परीक्षाक पुस्तक, ककरो इतिहास, ककरो कृषि-सूचना चाही। सरयू देवी अपन नातिन फुलवाकेँ लऽ अबैत छलीह। फुलवा पुछलक, “मास्टरनी, एहि आलमारीमे

किताब कम आ खाली ठाम बेसी किएक अछि?” शारदा उत्तर देलीह, “जतेक पुस्तक आबय चाही, तकरा एखन धरि नहि अएलाक कारण जाँचल जाएत।” महेश्वरकेँ ई उत्तर पसिन पड़ल। ओ पूर्ववत् ‘सभ चोर छथि’ कहिकय निष्कर्ष देबाक बदला प्रश्नक सूची तैयार करय लगलाह।

दूसर दिस ठेका पओनिहार ‘उज्ज्वल निर्माण सहकार’ क संचालक रघुपति नारायण अपन कार्यालयमे असन्तुष्ट बैसल छल। ओकर कहब छल जे नगर-परिषद मूल कामक बाद अतिरिक्त मरम्मतिक आदेश देने छल, मुदा अतिरिक्त कामक भुगतान रोकि देने अछि। वाचनालयमे किछु वस्तु नहि देखाएब हुनकर अनुसार ठेकेदारक चूक नहि, भण्डारणक स्थान-परिवर्तनक परिणाम छल। ओकर अधिवक्ता प्रतिभा चौधरी दस्तावेज देखि कहलीह, “अहाँ नगर-परिषद विरुद्ध देय रकमक दीवानी दावा करैत छी, मुदा परिषदक भुगतान-पञ्जीमे अहाँक सम्पूर्ण प्राप्तिक हस्ताक्षर किएक अछि?” रघुपति कहलक, “अग्रिम भुगतानक हिसाब छल।” प्रतिभा उत्तर देलीह, “कागजमे जे लिखल अछि से अग्रिम नहि, अन्तिम प्राप्ति अछि। ई अन्तरक स्पष्टीकरण चाही।”

सोनपुरा नगर-परिषदक कनिष्ठ लेखाकार हेमन्त मिश्रक हाथमे पूरा हिसाब छल, मुदा ओकरा सभ पन्नाक उत्पत्ति ज्ञात नहि छल। नियुक्ति ओकर २००९ मे भेल; पहिल वर्षक किछु आदेश ओकरा पूर्ववर्ती कर्मचारी देल छल। साइन करबाक अधिकार सीमित छल, आ किछु पन्नापर अधिकारीक गोल मुहर एहन छल जेकर तिथि पाछाँसँ लगाओल बुझाइत छल। हेमन्तक मनमे प्रश्न उठैत छल, मुदा नौकरी बचेनाइ आ सत्य कहनाइ दुनू एक-दोसरक विरोधी होएत, ई ओ स्वीकार नहि करैत छल। ओ मूल प्रविष्टिक प्रति अलग रखि अपन वरिष्ठकेँ लिखित मिलानक आग्रह पठौलक।

जाड़क शुरुआतमे नगर-परिषदक एक खुलल बैठकमे वाचनालयक प्रश्न उठल। अध्यक्ष कहलनि, “नगरमे बहुत जरूरी काज अछि; एकटा आलमारीक दरवाजापर एतेक विवादक की लाभ?” शारदा देवी बिना क्रोधक कहलीह, “काज छोट होए तँ हिसाब सेहो छोट होएत; तखन उत्तर देनाइ बेसी सरल होयबाक चाही।” सभामे किछु लोक ताली बजौलक, मुदा महेश्वर ताली नहि बजौलनि। ओ पुछलनि जे परिषद अपन अभिलेख दैत कब, आ पुस्तकालयक बच्चासभ पंखाक मरम्मति कब देखत।

दरभंगामे रेवती घर घुरलीह तँ शिवनारायण नीकसँ समाचार सुनलनि। ओ कहला, “सार्वजनिक व्ययक प्रश्न तीन जगह जएत। नागरिक सूचना माँगत; लेखापरीक्षा होयत; अपराधक समर्थन भेटल तँ पुलिस अथवा सक्षम न्यायालयक रास्ता खुलत। एहि तीनूकेँ एक मंचपर जोड़ि नारा देलासँ कानून नहि बनि जाइत।” रेवती सहमति देलीह। “मुदा मंचपर लोककेँ एक संग देखलासँ ककर समस्या एकसन अछि, से बुझाइत अछि,” ओ उत्तर देलीह। पिता मुस्कुरेलाह। “तँ मंचक कान आ न्यायालयक आँखि दुनू चाही।”

ओहि समय लुधियानामे सुनीता पासवान महाविद्यालयक पुस्तकालयमे सार्वजनिक लेखा-विधि सम्बन्धी लेख पढ़ैत छलि। रामलखनक मजदूरी-सम्बन्धी आदेशक नव व्यवस्था कारखानामे लागू भेल छल, मुदा जगदीशक सेवा-विवाद एखन समाप्त नहि भेल छल। सुनीता देखैत छलि जे कारखानाक मजदूरी-पञ्जी आ नगरक ठेका-रजिस्टरमे मूल प्रश्न एक अछि—कागजपर दर्ज रकम वास्तवमे ककर श्रम, ककर वस्तु आ ककर अधिकारक अछि। ओकर सहपाठी अमनदीप कहलनि, “दिल्लीमे खेल भेल, हिसाबपर बखेड़ा भेल; आब सभ ठाम भ्रष्टाचारक विरोध।” सुनीता कहलीह, “विरोध ठीक अछि। मुदा रामलखनक आदेश जकाँ प्रत्येक दावा देखब चाही। अन्यथा जे सचमुच बकाया अछि, ओकर आवाज सेहो भीड़मे हराइ जाएत।”

सन् २०१० क अन्तिम मासमे भारतक खिलाड़ीसभक उपलब्धिक चित्र महेश्वर दास पुस्तकालयमे टाँगि देलनि। छोट बालकसभ पदक गनैत छलाह; एक बच्ची पुछलक, “जँ खेल एतेक नीक भेल तँ ओकर खर्चमे त्रुटि किएक?” महेश्वर कहला, “खेलाड़ी अपना काजसँ जीतैत छथि; सार्वजनिक धनक हिसाब अलग लोक रखैत छथि। एकर प्रशंसा आ दोसरक जाँच दुनू होएत।” बच्ची चित्रक बगलमे खाली आलमारी देखलक। तकरा गणनाक पहिल पाठ ओही ठाम भेटल।

नव वर्षक पहिल मासमे उर्मिलाक समाचार प्रकाशित भेल। शीर्षक छल—‘सोनपुराक वाचनालय : स्वीकृत सामान आ देखल सामानमे अन्तर’। ओ लेखमे प्रत्येक वस्तुक रकम नहि लिखलीह, कारण किछु अङ्क अस्पष्ट छल। जकरा देखल गेल, तकरा देखल लिखलनि; जकरा मात्र सुनल गेल, तकरा सूचना देनिहारक कथन बतौलनि। नगर-परिषदक उत्तर लेल

खाली स्थान नहि छोड़लनि, पूरा उत्तर छापलनि। अध्यक्षक कथन छल जे अन्तिम लेखापरीक्षा शेष अछि। समाचार पढ़िकय किछु लोक हुनका कायर कहलक; किछु लोक पहिल बेर अखबारक प्रति काटि कार्यालयमे प्रश्न लऽ गेल।

रघुपति नारायण क्रुद्ध भेल। ओकर कारखानामे काज करनिहार कारीगरसभ ई समाचारक कारण ठेकाक भविष्यसँ चिन्तित भेलाह। ओ प्रतिभा चौधरीकेँ कहलनि, “मानहानिक दावा करब।” प्रतिभा पूरा लेख पढ़लीह। “जतय अहाँक उत्तर छपल अछि आ प्रश्न अभिलेखसँ उठल अछि, ओतय पहिने अपन लेखा साफ करब। जँ तथ्यात्मक त्रुटि भेटत तँ सम्पादककेँ सुधार लेल लिखब। विरोधी समाचार आ असत्य समाचार एक नहि।” रघुपति खिन्न भऽ कागज मेजपर रखलक। हुनका पहिल बेर बुझायल जे वकीलक काज ओकर प्रत्येक क्रोधक समर्थन नहि।

जनवरीक अन्तमे पुस्तकालयक देखरेख समिति सूचना-अधिकारक आवेदनक उत्तर पओलक। प्रतिलिपिसभमे चारि तिथि अलग ढंगसँ लिखल छल। स्वीकृत सामग्रीक सूचीमे चौंतीस पुस्तकक नाम छल, उपलब्धता-पञ्जीमे अट्ठाइस। एक पंखाक भुगतानपत्रपर नगर-परिषदक भण्डारपालक हस्ताक्षर छल, मुदा सार्वजनिक पुस्तकालयक ग्रहण-पञ्जीमे ओकर उल्लेख नहि छल। महेश्वर कहला, “छओ पुस्तक कतय गेल?” शारदा उत्तर देलीह, “पहिने निश्चित करू जे ओ वास्तवमे किनल गेल छल कि नाम मात्र दर्ज भेल। पुस्तक हराएब आ पुस्तक नहि किनब दुनू अलग बात।”

हेमन्त मिश्रकेँ परिषदक वरिष्ठ अधिकारी मौखिक रूपसँ कहलनि जे ई अन्तर पुरान वर्षक ‘अभिलेख-मिलान’ मानि पूरा कऽ दिअ। हेमन्त विनम्रतासँ लिखित आधार मँगलक। अधिकारी असन्तुष्ट भेलाह—“अहाँ नव कर्मचारी छी, एतेक नियम कहियासँ?” हेमन्त उत्तर देलक, “नियम हमरा बचेनिहार वस्तु अछि। लिखित आदेश भेटत तँ हम ओकर पाछाँक कारण देख सकब।” ओहि दिन घर आबि ओकर माँ देखलीह जे बेटा भोजन नहि कऽ रहल अछि। ओ पुछलीह, “बेटा, कागजक लड़ाइमे तोहर की?” हेमन्त कहलक, “आई जे हस्ताक्षर करब, काल्हि ओकर जवाब हमरा देब पड़त।”

फरवरीक दोसर सप्ताह सोनपुरा दीवानी न्यायालयमे रघुपतिक ठेका-देय सम्बन्धी वादक पहिल अर्थपूर्ण सुनबाई भेल। प्रतिभा चौधरी करारक शर्त पढ़ि सुनौलनि। नगर-परिषदक अधिवक्ता हरिदेव सिन्हा प्रतिवाद कएलनि जे अतिरिक्त कामक लिखित स्वीकृति आवश्यक छल, आ पूर्व भुगतानक समायोजन सेहो बाँकी अछि। न्यायाधीश पूछलनि—“विवादित काम पूरा भेल, तकर स्वीकार्य साक्ष्य कोन?” रघुपतिक पक्ष निर्माणस्थलक चित्र प्रस्तुत केलक; परिषदक पक्ष भुगतान-आदेशक प्रति। चित्रमे भवन छल, मुदा चित्रमे लिखित कामक प्रत्येक मद प्रमाणित नहि होइत।

रेवती दर्शकक पाँतिमे बैसल छलीह। वाचनालय समिति हुनकासँ सलाह लेने छल, मुदा ओ दीवानी वादक पक्षकार नहि छलीह। सुनबाई समाप्त भेला पर महेश्वर आग्रह कएलनि—“अहाँ न्यायाधीशकेँ किएक नहि कहलहुँ जे किताब हराएल अछि?” रेवती बुझौलनि, “अहाँक प्रश्न महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा एहि वादमे पक्षसभक दावा अलग अछि। समुचित मार्गेँ अभिलेख मँगबाक आ सार्वजनिक सम्पत्तिक जाँचक आग्रह करब; बेवजह न्यायालयक मध्य ठाढ़ भऽ आरोप करब नहि।” महेश्वर अपन छड़ी जमीनपर टिकौलनि। “तखन कानूनमे बहुत दुआरि अछि।” रेवती कहलीह, “दुआरि बहुत अछि, ताहिसँ सही दुआरि चुनबाक जिम्मेदारी सेहो बहुत अछि।”

ओहि दिन अदालतक बाहर शारदा अपन विद्यालयक छात्रवृत्ति प्रकरणक स्मृति सुनौलनि। “मृत माधवेश्वर मिश्रक नाम उपस्थितिमे रहबाक कारणे हम पहिने बहुत आक्रोशित छलहुँ,” ओ कहलीह। “मुदा जाँचमे दू पञ्जीक भिन्न अर्थ निकलल। एक भुगतानक आदेश, दोसर उपस्थिति। दुनू मेला देलहुँ तँ कुछ नव प्रश्न उठल, मुदा बिना जाँच चोर कहनाइ उचित नहि छल।” महेश्वर कहला, “मुदा जँ सच्चा चोर अछि तँ ओकरा बचबय लेल ई सावधानी काम नहि करत?” रेवती उत्तर देलीह, “सावधानी अपराधीकेँ नहि, सत्यकेँ बचबैत अछि। सत्यकेँ समय लगैत अछि, किन्तु झूठक दोष लगाओल तुरन्त भऽ जाइत अछि।”

चैत्रक आरम्भमे दिल्लीक समाचार बदलल। भ्रष्टाचार-विरोधी जनान्दोलनक तैयारी, कानून निर्माणक माँग आ सार्वजनिक जीवनमे पारदर्शिताक चर्चा तीव्र भेल। उर्मिला राजधानीमे एक सभास्थलक प्रत्यक्ष दृश्य देखलीह। भीड़मे विद्यार्थी, सेवानिवृत्त अधिकारी, गृहिणी, किसान,

कार्यालय-कर्मी आ बेरोजगार युवा एक संग छलाह। ककरो हाथमे भिन्न नारा, ककरो मनमे भिन्न आशा। एक वृद्ध महिला कहलीह, “हमरा घूस देल बिना पेंशनक कागज नहि चलैत।” एक युवक कहलक, “हमर नियुक्तिक परीक्षा पारदर्शी हो।” एक किसान कहलक, “अनुदानक घोषणा होइत अछि, मुदा हमरा धरि पहुँचैत नहि।”

५ अप्रैल २०११ कैं दिल्लीमे अन्ना हजारेक अनशन आरम्भ भेल। उर्मिला एहि वास्तविक राष्ट्रीय घटनाक समाचार लिखैत छलीह। मंचपर हजारो लोकक उत्साह, व्यवस्थापकक घड़ी-घड़ीक घोषणा, स्वयंसवेकक पानि-वितरण आ समाचारवाहकक होड़ संगहि देखाइत छल। उर्मिला एक पाँतिमे लिखलीह—“माँग साझा अछि, मुदा कष्टक कथा सभक अलग।” ९ अप्रैल कैं अनशन समाप्त भेला पछाति ओ घर घुरलीह तँ ओकर लेखमे केवल नेतालोकक संवाद नहि, भीड़मे भेटल सामान्य मनुष्यसभक नाम आ शिकायत सेहो छल।

दिल्लीक एहि जनचेतनासँ प्रेरित भऽ सोनपुरामे ‘सार्वजनिक हिसाब अध्ययन मण्डली’ बनल। एकर संयोजनक दायित्व स्थानीय अध्यापिका अर्पणा देवी लेलनि। शारदा, महेश्वर, दू युवा व्यापारी, एक सेवानिवृत्त नापी-कर्मी आ तीन विद्यार्थी सभामे रहलाह। अर्पणा पहिल बैठकमे स्पष्ट कएलनि—“हम सभ कोनो दलक प्रतिपक्ष अथवा पक्षक प्रचारक नहि; हमरा परिषदक वाचनालयक सामानक मिलान चाही। जे दोषी होय, ओकर नाम प्रमाणसँ आबय; जे निर्दोष होय, ओकर सम्मान सुरक्षित रहय।”

मुदा मंच बनेबामे पहल करनिहार दोसर व्यक्ति कैलाश मल्लिक छल। ओ तेज स्वरमे बजैत छल, कागजक छोट बातकेँ पैघ घोषणामे बदलि दैत छल, आ लोक जुटेबामे निपुण छल। कैलाशक अपन एक छपाई-दुकान छल, जे बैनर आ पर्चा बनबैत छल। ओ अर्पणाकेँ कहलनि—“भीड़ नहि जुटत तँ अधिकारी कागज नहि देखत। हमरा नारा बनाबय दिअ।” अर्पणा उत्तर देलीह—“नारा बनाउ, मुदा जे प्रमाण नहि अछि, ओकर आरोप नहि लिखू। आ खर्चक हिसाब सभक समक्ष राखू।” कैलाश सहमति देलक, मुदा ओकर चेहरापर ई शर्त बोझ जकाँ लगल।

सुनीता लुधियानाक महाविद्यालयमे एही समय एक चर्चामे सहभागी भेलि। अध्यापक पूछलनि—“जनान्दोलनक मूल अधिकार की?” कियो अभिव्यक्ति कहलनि, कियो संगठन। सुनीता कहलीह—“जकर नामपर सभा अछि, ओकर वास्तविक माँग सुनेबाक अधिकार।”

विद्यार्थीसँ हँसीक हलुक स्वर उठल। ओ आगाँ कहलीह—‘रामलखनक मजदूरीक दावामे एक दिन सिद्ध, एक दिन असिद्ध, किछु भाग स्वीकृत छल। जँ सभटाकेँ एक शब्द ‘अन्याय’ कहि देब तँ भुगतानक गणना अटकत। जनान्दोलनमे सेहो एही सावधानी चाही।’ अध्यापक ओकरा अपन अनुभव विस्तारसँ लिखबाक आग्रह कएलनि।

मोहल्लाक चायघरमे अर्पणा आ कैलाशक बीच पहिल खुलल मतभेद भेल। कैलाश एक मोट मोटे पर्चा देखौलक—“वाचनालयक समस्त धन लूटि लेल गेल।” अर्पणा पुछलीह, “समस्त धनक समर्थनमे कोन अभिलेख अछि? भवन तऽ ठाढ़ अछि; बच्चासभ पढ़ैत अछि।” कैलाश कहलक, “लोक आधा सत्य सुनत नहि।” अर्पणा उत्तर देलीह, “तँ आधा सत्य पूरा झूठ बनाकय कहब? भवनक जे काम भेल, ओकरा मानू। जे नहि भेल, तकरा सिद्ध करू। अन्यथा अन्तमे दोषी ओही लोक लाभ उठाओत जे हमर अतिशयोक्तिपर हँसि सकत।”

कैलाश अपन पर्चा फेर छपबाकेँ टारि देलक, मुदा राति दुकानमे एक दोसर मसौदा तयार करौलक। ओहिमे कोनो व्यक्तिक नाम नहि छल, केवल बहुत पैघ अङ्क आ अस्पष्ट आक्रोश छल। ओकर छोट भाइ दिगम्बर पुछलक—“ई कतेक सत्य अछि?” कैलाश कहलक, “लोककेँ जागेबाक लेल लिखल अछि।” दिगम्बर उत्तर देलक, “जगेबाक लेल झूठ लगत तँ ओकर निन्न वापस आबि जायत।” कैलाश ओकर बातपर क्रोध नहि कएलक, मुदा मसौदा सन्दूकमे बन्द कऽ देलक।

२ अप्रैल २०११ क राति सोनपुराक वाचनालयक बाहिर खाली मैदानमे लोक रेडियो आ छोट दूरदर्शनक सामने ठाढ़ छल। भारतक क्रिकेट विश्वकप-विजयक समाचार अबिते बालकसभ एक-दोसराकेँ पकड़ि कुदय लगल। महेश्वर दास अपन लाठी हवा मे उठौलनि। कुसुम आ नसीमाक पुरान सहपाठी सभ सेहो भीड़मे छलाह। एक वृद्ध किसान कहला, “देखू, देशक बेटा सभ कतेक मेहनति करैत अछि।” किछु दूर ठाढ़ रेवती बुझलीह जे लोकक सम्मिलित आनन्दक ई क्षण किसी ठेका-भ्रष्टाचारक आरोपसँ छोट नहि कएल जा सकैत। ओहि देशमे उत्सव आ शिकायत दुनू अपन स्थान माँगैत छल।

खेलक उत्सवक दोसर दिन पुस्तकालयक दरवाजापर एक चिट्ठी टँगल भेटल। एकर नीचाँ ‘जन-जागरण समिति’ लिखल छल, मुदा लेखकक नाम नहि। चिट्ठीमे कहल गेल छल जे

वाचनालयक सम्पूर्ण रकम एक गुप्त समूह खा गेल। महेश्वर चिट्ठी उतारि देलनि। अर्पणा विरोध कएलीह—“ई कागज फाड़ि नहि दिअ; एहन लेखन सेहो जाँचक बात अछि। मुदा एकरा सत्यक सूचना बुझि बालकसभकेँ डेराउ नहि।” महेश्वर पुछलनि, “ई के टाँगलक?” कोनो उत्तर नहि। केवल वाचनालयक टूटल पंखा एखनहुँ अचल छल।

रघुपतिक दीवानी वादमे परिषद मूल भण्डार-पञ्जी प्रस्तुत केलक। न्यायाधीश देखा रहल छलाह जे एकहि वस्तुक आपूर्ति आ स्थापना अलग-अलग तिथिपर दर्ज अछि। प्रतिभा चौधरी रघुपतिक पक्षसँ कहलनि जे सामान खरीदि भण्डारमे राखल जा सकैत अछि आ बादमे स्थापना भेल होयत। हरिदेव सिन्हा उत्तर देलनि जे किछु सामानक अन्तिम भुगतान स्थापना प्रमाणपत्रपर निर्भर छल। न्यायाधीश दुनू पक्षसँ उक्त शर्तक मूल करार प्रस्तुत करबाक निर्देश देलनि। ई छोट निर्देश बाहरक मंचमे कोनो नारा नहि बनल, मुदा महेश्वर लेल एहि मे महत्त्वपूर्ण आशा छल।

सुनबाईक बाद रघुपति महेश्वरकेँ पथपर रोकलक। “अहाँ वाचनालय रखैत छी, हमरा बदनाम किएक करैत छी?” महेश्वर कहला, “हम अहाँक नाम कहियो नहि लिखलहुँ। हम केवल वस्तुक हिसाब माँगलहुँ।” रघुपति कहलनि, “हमर लोक काम कएने छथि। ओ सभक मजदूरी कोन देत?” महेश्वर शान्त स्वरमे उत्तर देलनि, “कामक सही दाम देल जाए। मुदा नहि पहुँचल पंखाक दामो कामक दाम अछि की?” रघुपति किछु नहि बजलक। एतेक ठोस प्रश्नक सामने ओकरा पहिल बेर अपन खाताक प्रत्येक प्रविष्टि फेर जाँचबाक आवश्यकता लागल।

हेमन्त परिषदक गोदाम गेल। ओतय एक पुरान अलमारीमे कागज, तार, टूटा पंखा आ अनेक धातुक पुरजा पड़ल छल। भण्डारपाल महादेव साह कहलनि, “एहि सामानमे वाचनालयक किछु वस्तु होयत।” हेमन्त पुछलक, “पहिचानक चिह्न अछि?” महादेव एक छोट कागज देखौलक जे वर्षा मे भीजि आधा मटिआ गेल छल। तकरा पर केवल ‘वा—१२’ स्पष्ट छल। हेमन्त तुरंत वस्तु वाचनालयक मानि नहि लेलक। ओ प्रत्येक वस्तुक बाहरी वर्णन, मात्रा आ गोदाममे भेटबाक तिथि लिखलक, आ परिषदकेँ निरीक्षणक सूचना पठौलक।

महेश्वर एहि नव भण्डार-सूचनाक बाद निराश होबाक बदला प्रसन्न भेलाह। “जँ पंखा एतय अछि, तँ बच्चासभक ठाम किएक नहि?” ओ पुछलनि। रेवती उत्तर देलीह, “ई प्रश्नक उत्तर

प्रमाणसँ चाही। गोदाममे भेटल वस्तु भुगतानक पञ्जीसँ मेल खाइत अछि कि नहि, से जाँची। जँ मेल खाए तँ स्थानान्तरणक गलती अछि, जँ नहि तँ दोसर प्रश्न उठत।” अर्पणा निश्चय कएलीह जे समिति एहि जाँचक बाद सार्वजनिक बैठक करत, पहिने नहि।

दिल्लीमे उर्मिला अप्रैलक अन्तिम दिनसभमे फेर व्यस्त भेलीह। राष्ट्रीय भ्रष्टाचार-विरोधी जनान्दोलनक संग संसदक भूमिका, विधेयकक भाषा आ नागरिक समूहक अधिकारपर अनेक विचार छल। केओ त्वरित परिवर्तनक पक्षमे, केओ संस्थागत विधिनिर्माणक सावधानीक पक्षमे। उर्मिला एक वरिष्ठ विधिवेत्तासँ पुछलनि—“लोकक नैतिक माँग आ संसदक प्रक्रिया टकराए तँ?” ओ उत्तर देलनि, “लोक दबाव दऽ सकैत अछि, सरकारक आलोचना कऽ सकैत अछि, मुदा कानूनक अन्तिम पाठ संविधानक प्रक्रियासँ बनत। एहि कारण लोकक सवाल दबा देब सेहो अनुचित, प्रक्रिया छोड़ि देब सेहो।”

उर्मिलाक लेख सोनपुरामे पढ़ल गेल तँ कैलाशक मण्डलीक एक सदस्य कहलक, “दिल्लीमे हजारो लोक जुटैत अछि; हमरा सभकेँ सेहो एक हजार लोक चाही।” अर्पणा पुछलीह, “कतेक वाचनालयक सदस्य छथि?” ओ कहलक, “शायद एक सय।” “तखन एक सय सदस्यक सही अभिलेख पहिने बनाउ,” अर्पणा कहलीह। “बाकी लोक साथ देथि तँ स्वागत अछि, मुदा भीड़क संख्या सत्यक स्थानापन्न नहि।” कैलाश मण्डलीक खजांची बनबाक प्रस्ताव रखलक। अर्पणा कहलीह—“खजांची बनू, मुदा आय-व्ययक हर रसीद पर अगिला सभामे प्रश्न सुनबाक तयारी राखू।”

मईमे मण्डलीक पहिल जनसभा भेल। किसान अपन सिंचाइक अधूरा नहरक विषय उठौलनि। विद्यालयक अध्यापक छात्रवृत्तिक विलम्ब सुनौलनि। एक दिव्यांग युवक सार्वजनिक भवनक सीढ़ीक कारण प्रवेशक कठिनाइ बतौलक। महेश्वर वाचनालयक पुस्तकक सूची देखौलनि। अर्पणा सभा आरम्भमे स्पष्ट कएलीह—“एहि सभ प्रश्नक सक्षम कार्यालय आ उपचार भिन्न अछि; हम सभ प्रत्येकक अलग रजिस्टर बनायब।” किछु लोक असन्तुष्ट भेल—हुनका एक पैघ घोषणापत्र चाही छल। किन्तु जकर पीड़ा वर्षोसँ अनसुनी छल, ओ अपन नाम लिखल देखि आस्वस्त भेल।

सुनीता एहि सभामे नहि छलि; ओ लुधियानामे परीक्षा देबामे व्यस्त छलीह। मुदा अमनदीप ओकरा समाचार भेजलक जे एक ‘राष्ट्रीय आन्दोलन’क नामपर किछु लोक औद्योगिक मजदूरक बकाया-विवादकेँ अपन पर्चामे जोड़य चाहैत छथि। सुनीता पत्र लिखलक —“जगदीशक सेवा-समाप्ति अलग प्रकरण अछि। जे मजदूरीक आदेश भेटल अछि, ओकर पालन करब अत्यावश्यक अछि। ककरो मंचपर हमर पिता अथवा चम्पाक नाम बिना हुनकर अनुमति नहि लिखल जाए।” बलदेव ई पत्र कारखानाक नोटिस-बोर्डपर टाँगि देलनि।

एक दिन उर्मिला सोनपुरा पहुँचलि आ मण्डलीक आय-व्यय देखबाक इच्छा व्यक्त कएलीह। कैलाश एक लाल जिल्दवला पुस्तक देखौलक। पहिल पन्नामे दानक नाम, दोसरमे माइक, तेसरमे पर्चा, चारिममे यात्रा-व्यय। ओ घमण्डसँ कहलक, “सभ खुलल अछि।” उर्मिला नामक बगलमे रकमक जोड़ देखलीह। एक पन्नाक योग ओहि पन्नाक रसीदसँ नहि मिलैत छल। कैलाश कहलक, “ककरो लिखबामे भूल भेल होएत।” उर्मिला ओकरा अपराधी नहि कहलीह; प्रश्न लिखि लेलनि—दूटा रसीद एकहि क्रम-संख्यासँ किएक? छपाईक बिलक तिथि सभासँ पहिलुक किएक? कैलाश उत्तरक लेल समय माँगलक।

अर्पणा सार्वजनिक सभामे ई सवाल उठौलीह। एक कार्यकर्ता कहलनि, “हम सभ भ्रष्टाचारक विरुद्ध लड़ैत छी; आब अपने घरक खाता पर प्रश्न करब तँ शत्रु हँसत।” अर्पणा कहलीह, “जँ हम अपन खाता नहि खोलब तँ शत्रु हँसय चाही। लोककेँ पूछब सिखा रहल छी, तखन लोक हमरासँ सेहो पूछत। ई अपमान नहि, आन्दोलनक परीक्षा अछि।” महेश्वर दास धीरेसँ कहला, “पुस्तकालयक पंखा किन्निहारक हिसाब माँगलहुँ, तखन मंचक पर्चा छपेनिहारक हिसाब किएक नहि?”

कैलाशक मनमे पहिल बेर ग्लानि आ क्रोध एक संग उठल। ओकर दुकानक वास्तविक खर्च छल, स्वयंसेवकसभ भोजन खएने छलाह, भाड़ाक माइक आयल छल; मुदा जल्दबाजीमे किछु देनदारीक रसिद एकहि पन्नामे दोहरायल गेल छल। किछु खर्च ओकर छोट भाइ नकद देने छल, तकर प्रमाण नहि छल। ई त्रुटि छल कि जानबूझि कएल गेल फेरबदल, ओ स्वयं सेहो निष्पक्ष समीक्षा बिना नहि कहि सकैत छल। ओकरा अपन प्रतिष्ठासँ बेसी भय ई छल जे पारदर्शिताक सभामे ओकरा सबसँ अधिक प्रश्न पुछल जायत।

बरखाक पहिल धार खसल तँ पुस्तकालयक छत फेर टपकय लागल। महेश्वर आ फुलवा पुस्तकसभ उपरका तखतापर उठबैत रहलाह। बाहर भ्रष्टाचार-विरोधी पोस्टर भीजि गेल, ओकर स्याहि बहय लागल। शारदा एक पुरान पुस्तक कोमल कपड़ासँ पोछि कहलीह —“कतेक पैघ नारा लगाउ, जँ एहि छतमे छेद अछि तँ पुस्तक बचत नहि।” अर्पणा उत्तर देलीह, “आ छत बचेबाक लेल जे पैसा आयल छल, ओहि पर प्रश्न उठेलासँ पुस्तक नहि बँचत, जँ काम नहि भेल।” दुनू महिला आधा राति धरि पुस्तकेँ सुखबैत रहलीह।

जुलाई २०११ मे रेवती पटना उच्च न्यायालयक एक दोसर प्रकरणक तैयारीमे व्यस्त छलीह। वाचनालयक प्रश्नक सम्बन्धमे शारदा अपन समस्त आवेदनक नकल हुनका पठौलीह। रेवतीकेँ याद आयल जे शिवनारायण सदा कहैत छलाह—“अधिवक्ता लोकक क्रोध उधार नहि लैत अछि; ओ ओकर तथ्य पढ़ैत अछि।” ओ पत्रसँ लिखलीह जे नगर-परिषदक वैधानिक अभिलेख आ दीवानी वादक मूल दस्तावेजक निरीक्षण होयब आवश्यक अछि। जँ जाली हस्ताक्षरक विशिष्ट आधार भेटत तँ सम्बन्धित आपराधिक प्रक्रिया अलग आरम्भ कएल जा सकैत अछि; मात्र अधूरा कामक आरोप अपनहि बलपर जालसाजी सिद्ध नहि करैत।

ओही मास दीवानी न्यायालयमे एक महत्त्वपूर्ण पन्ना आयल। परिषदक पक्ष कथित ‘अन्तिम सामग्री-ग्रहण’ पत्र प्रस्तुत केलक। ओकर नीचाँ ‘म. दास’ लिखल छल आ एक घुमावदार हस्ताक्षर। रघुपतिक अधिवक्ता प्रतिभा पुछलनि, “की एहि पत्रक आधारपर भुगतानक एक हिस्सा रोकेल गेल?” परिषदक हरिदेव कहला, “पत्र अंतिम ग्रहण देखबैत अछि, तैं शेष दावाक सीमा निर्धारित होइत अछि।” न्यायाधीश पुछलनि—“म. दास के? पदनाम कहाँ? मूल प्रति कतय?” हरिदेव उत्तर देबाक लेल अगिला तिथि मँगलनि।

बाहर आबि महेश्वर पत्रक नकल देखलनि। हुनकर हाथ काँपि गेल। “ई हमर हस्ताक्षर नहि,” ओ कहला। रेवती हुनका तुरन्त अदालतमे चिल्लेबासँ रोकलीह। “अहाँक नाम महेश्वर दास, मुदा म. दास अन्य व्यक्ति सेहो भऽ सकैत अछि। पत्रक मूल देखि, कार्यालयक पञ्जी आ तिथिक आधारपर कथन करब।” महेश्वर अपन पुरान नियुक्तिपत्र निकालि देखौलनि। ताहि पर हस्ताक्षर पूर्ण नामेँ छल। पत्रपर ‘म. दास’ लिखल छल आ कागजक ऊपर पुस्तकालय नहि, ‘नगर भण्डार’ लिखल देखाइत छल।

हेमन्त एहि प्रश्नक कारण विभागक कर्मचारी-पञ्जी पलटल। ओहि वर्ष नगर-भण्डारमे एक अस्थायी कर्मी मनमोहन दास काज करैत छल। ओ २०१० क अन्त धरि कार्यालयमे छल, बादमे दोसर नगर चलि गेल। हेमन्तकेँ ई नव बात भेटलासँ महेश्वरक हस्ताक्षर जाली होयबाक प्रश्न समाप्त नहि भेल; केवल एक अन्य सम्भावना उत्पन्न भेल। ओ मूल कागज मँगबाक लिखित निवेदन कएलक। एक पुरान कर्मी कहलक, “सभकेँ बचा रहल छे।” हेमन्त उत्तर देलक, “हम अनुमानसँ ककरो नहि बचबैत, नहि फँसाबैत।”

उर्मिला एहि पर समाचार लिखबाक पहिने तीन बेर जाँच केलक। पहिल बेर महेश्वरक कथन, दोसर बेर कर्मचारी-पञ्जीक नकल, तेसर बेर करारक अर्थ। समाचारक शीर्षक बनल —‘ग्रहणपत्रक हस्ताक्षर पर प्रश्न; परिषदसँ मूल नकलक माँग’। कैलाश एहि शीर्षकसँ असन्तुष्ट भेल। ‘जाली हस्ताक्षरक पर्दाफाश’ लिखल जाए, से चाहैत छल। उर्मिला कहलनि, “जाली कहनिहारक नाम महेश्वर अछि; अदालत नहि कहने। जाँच पूरा भेलापर जे सिद्ध होएत, लिखब।” कैलाशक चेहरापर छाया पड़ल। ओ मनमे सोचलक—एहन सावधानीसँ की लोक मंचपर जुटत? मुदा उर्मिलाक समाचार पढ़िकय एक वृद्ध कर्मी स्वयं अपन पुरान नियुक्ति-पत्र देखेबाक लेल तैयार भेल।

अगस्तक पहिल सप्ताह दिल्लीमे राष्ट्रमण्डल खेलक सार्वजनिक लेखापरीक्षा सम्बन्धी सरकारी प्रतिवेदन संसदमे प्रस्तुत भेल। समाचारपत्रमे आयोजनक सफल खेल-प्रदर्शन आ ठेकाक अनियमितता सम्बन्धी परीक्षण दुनू छपल। रेवती उर्मिलाकेँ पत्र लिखलीह—“एहि प्रतिवेदनमे सार्वजनिक धनक प्रश्न जतेक गम्भीर अछि, ओतेक गम्भीर खेलाड़ीक उपलब्धि सेहो अछि। एकटा सत्य दोसरकेँ मेटाय नहि।” उर्मिला खेलक महिला पदक विजेताक एक पुरान बातचीत संग लेखापरीक्षाक निष्कर्षकेँ दू स्वतंत्र भागमे लिखलीह।

सोनपुरामे कैलाश पत्रिकाक समाचार लऽ सभामे पहुँचल। “देखू, दिल्लीक खेलमे सेहो लेखापरीक्षक प्रश्न उठौलनि; हमर छोट वाचनालयक की जाँच नहि होयत?” अर्पणा सहमत छलीह—“जाँच होयत। मुदा राजधानीक प्रतिवेदनमे जे ठेका कहल गेल अछि, ओकरा हमरा नगरक ठेकासँ जोड़ि अपराधक एकहि सञ्जाल मत कहू। प्रक्रिया, खर्च, उत्तरदायित्वक समान प्रश्न होयब एक बात अछि; एकहि लोक द्वारा कराएल गेल, ई दोसर बात।” सभाक एक युवा

कहलनि, “एतेक सूक्ष्म अन्तर जनता कोना बुझत?” शारदा उत्तर देलीह, “जँ पढ़ाओल जाए, तँ बुझत।”

१६ अगस्त कैं दिल्लीमे भ्रष्टाचार-विरोधी जनान्दोलनक नव चरणक समय अनेक लोक टेलिविजनक सामने बैसल छल। गिरफ्तारी, विरोध आ अनशनक समाचार फैलल। अर्पणा दिल्लीक वास्तविक घटनाकैं समझबाक लेल उर्मिलासँ दूरभाषपर बात कएलीह। उर्मिला भीड़मे छलि, मुदा ओकर आवाज स्पष्ट छल—“एतय कियो भ्रष्टाचारसँ पीड़ित छथि, कियो केवल इतिहासक क्षण देखय आएल अछि, कियो अपन दलक नारा लऽ घुसय चाहैत अछि। सभकैं एक रंगमे लिखब तऽ गलत होएत।”

उर्मिलाक समीप एक पेंशनभोगी महिला ठाढ़ छलीह। ओ अपन पतिक मृत्यु-पछाति कतेको महीना पेंशनक कागजक चक्कर काटने छलीह। हुनका लोकपालक विधिक संरचनाक समस्त विवरण ज्ञात नहि, मुदा ओकरा एक एहन व्यवस्था चाही छल जतय कार्यालयक उत्तरदायित्व निर्धारित हो। दोसर दिस एक विधि-विद्यार्थी संसदक भूमिका, न्यायपालिकाक स्वतन्त्रता आ शिकायतक समयबद्ध उपचारक प्रश्न उठबैत छल। उर्मिला दुनूक वाक्य लिखलीह; एकटा दोसरासँ कम वास्तविक नहि छल।

१९ अगस्त कैं दिल्लीक रामलीला मैदानमे अनशनक नव दृश्य शुरू भेल। उर्मिला ओतय रिपोर्ट लिखैत छलीह। स्वयंसेवकसभ बोतलमे पानि दैत छलाह, चिकित्सक स्वास्थ्यक देखभाल करैत छलाह, मंचक व्यवस्थापक समाचारवाहककैं संकेत दैत छलाह। मंचक एक कोनमे लिखल शब्द छल—‘जनता’। उर्मिला पुछलीह, “जनता कोन स्वरमे बजैत अछि?” उत्तर ओकरा एक मंचसँ नहि, अलग-अलग लोकसँ भेटल। कोनो युवकक नौकरी, कोनो वृद्धक पेंशन, कोनो छात्राक छात्रवृत्ति, कोनो किसानक फसलक भुगतान।

सोनपुरामे एक सँझ कैलाश प्रस्ताव रखलक जे अगिला सप्ताह ‘भ्रष्टाचार विरुद्ध विशाल सभा’ आयोजित हो, जतय स्थानीय ठेकाक सभ शिकायत एकटा पैघ आरोपपत्रमे लिखल जाए। अर्पणा कहलीह, “आरोपपत्र न्यायालय अथवा सक्षम जाँचक अभिलेखक भाषा अछि; मंचक पर्चा ओकर स्थान नहि लेत। हम ज्ञापन बनायब, जाहिमे जे तथ्य उपलब्ध अछि, ओ

स्पष्ट लिखब।” कैलाश क्रुद्ध भऽ कहलक, “अहाँ सभ आन्दोलनकेँ कागजमे बन्द करि देने छी।” शारदा उत्तर देलीह, “कागजमे बन्द नहि; कागजसँ जिम्मेदार बनबैत छी।”

अगिला दिन महेश्वरक समक्ष गोदामक मूल सामग्री-ग्रहण पत्रक निरीक्षण भेल। पत्रपर म. दासक लिखावट पुरान दफ्तरक दू दस्तावेजसँ मिलैत देखाइत छल, मुदा लिखावट विशेषज्ञक परीक्षण बिना निष्कर्ष देब उचित नहि। भण्डारपाल महादेव साह बतौलनि जे मनमोहन दास २०१० मे किछु चालान लैत छल। ओहि संग, पुस्तकालयक घटी रहल छह पुस्तकेँ पुस्तकालयसँ दू गली दूर एक बालिका विद्यालयमे भेटल। विद्यालयक अध्यापिका कहलीह जे परीक्षा तैयारी लेल किताब अस्थायी रूपेँ पठाओल गेल छल, मुदा स्थानान्तरणक पत्रक प्रति नहि भेटल।

महेश्वरकेँ छह पुस्तक भेटलासँ आधा चैन भेटल। शारदा कहलीह, “देखलहुँ, सम्पूर्ण पुस्तक चोरीक आरोप गलत होयत। किछु वस्तु बिन लिखित सूचना आन ठाम गेल। एहि त्रुटिक सुधार आवश्यक अछि।” महेश्वर कहला, “आ पंखा?” विद्यालयक अध्यापिका उत्तर देलीह, “हमर कक्षामे सेहो पंखा नहि अछि।” अर्पणा अपन पञ्जीमे लिखलीह—छह पुस्तकक भौतिक स्थिति स्पष्ट; स्थानान्तरण-पत्र अनुपलब्ध; पंखा आ तारक स्थिति एखन अनिर्णीत। कैलाश एहि अधूरा निष्कर्षसँ व्याकुल छल। ओकरा एक साफ शत्रु चाही छल, मुदा वास्तविकता लगातार अलग-अलग चेहरा देखबैत छल।

रेवतीकेँ एहि बीच दिल्लीसँ उर्मिलाक पत्र भेटल। ओ लिखने छलीह जे भ्रष्टाचार-विरोधी जनआन्दोलनमे भिन्न-भिन्न विचारक लोक साथ छथि, मुदा प्रत्येक सार्वजनिक माँगक न्यायसंगत परीक्षण आवश्यक अछि। रेवती उत्तरमे लिखलीह—“जन-सभा विधिक परिवर्तनक माँग करय; अदालत विशिष्ट विवादक निर्णय करय। दुनूक स्थान अलग अछि, मुदा दुनू एक-दोसराकेँ उत्तरदायित्व सिखा सकैत अछि।” पत्रक अन्तमे रेवती अपन पिताक पुरान वाक्य लिखलीह—“प्रमाण बिना अभियोग नहि, आ अभियोगक भयमे प्रश्न बन्द नहि।”

२७ अगस्तक दिन सोनपुराक जनसभासँ पहिने दीवानी न्यायालयमे वाचनालयक वादक सुनबाई भेल। रघुपतिक पक्ष मूल करार आ किछु कामक पूरा होयबाक तसवीर प्रस्तुत केलक। परिषदक पक्ष एक स्वीकृति-प्रपत्र देखौलक जाहिमे भवनक मरम्मति स्वीकार छल, मुदा पंखा

आ पुस्तक-आलमारीक उपकरणक अन्तिम जाँच शेष लिखल छल। न्यायाधीश पुछलनि—“जँ उपकरणक जाँच शेष छल, तँ पूरा भुगतानक प्रविष्टिक आधार की?” हरिदेव सिन्हा उत्तर देलनि जे लेखा-विभागसँ स्पष्ट विवरण प्राप्त करबाक समय चाही। न्यायालय अगिला तिथि निश्चित कएलक आ मूल अभिलेख सुरक्षित राखबाक आदेश देलक।

प्रतिभा चौधरी बाहर आबि रघुपतिकेँ कहलीह, “अहाँक अतिरिक्त कामक दावा एखन समाप्त नहि भेल, मुदा जे सामग्रीक बारेमे मूल करार मौन नहि अछि, ओकर वास्तविक स्थिति बताबय पड़त।” रघुपति एक क्षण अपन कारखानाक कामगारसभकेँ स्मरण केलक। “हम कारीगरक दाम देने छी,” ओ कहलक। प्रतिभा उत्तर देलीह, “तकर प्रमाण प्रस्तुत करू। परिषदक त्रुटि होय तँ ओकरा सेहो अदालत देखत। मुदा कोनो पक्षक अधूरा हिसाबसँ दोसर पक्षक पूरा सत्य नहि बनैत।”

ओहि दिन शारदा, महेश्वर आ अर्पणा न्यायालयक आदेशक नकल पढ़लनि। कैलाश चाहैत छल जे सभामे ‘न्यायालय भ्रष्टाचार मानि लेलक’ घोषित हो। अर्पणा ओकरा पन्ना देखौलनि—“न्यायालय मात्र अभिलेख सुरक्षित राखबाक आ विवरण माँगबाक आदेश देलक। जँ हम एकरा दोष-सिद्धि कहब तँ हमरा अपन सभाक सभसँ पैघ तर्क कमजोर करब।” कैलाश थकानसँ माथ झुका लेलक। ओकरा बारम्बार लगैत छल जे सच्चा प्रश्नक स्पष्ट भाषा भीड़ जुटेबाक उत्साहकेँ कम करैत अछि। अर्पणाकेँ लगैत छल जे भीड़ जतेक बेसी हो, असत्यक हानि ततेक बढ़ि सकैत अछि।

दिल्लीमे एही दिन संसदमे लोकपाल सम्बन्धी विभिन्न दृष्टिकोणपर चर्चा भऽ रहल छल। उर्मिलाक समाचारमे सरकार, विरोधी पक्ष आ जनान्दोलनक मत स्वतंत्र रूपेँ दर्ज छल। सायंकाल ओ समाचार पठौलक कि संसदक चर्चासँ एक राजनीतिक मार्ग खुलल अछि, मुदा कानून निर्माणक पूरा काज शेष अछि। ओ लिखलीह—“जनताक आवाज विधिक भाषा धरि पहुँचबाक लेल संघर्ष करैत अछि; विधिक भाषा जनताक जीवनमे अर्थ पाबय चाहैत अछि।” ई वाक्य पढ़ि रेवती पिता दिसि देखलीह। शिवनारायण पुछलनि—“अहाँकेँ ई संवाद नीक लागल?” रेवती कहलनि, “हाँ, कारण ई कोनो पक्षकेँ सम्पूर्ण सत्यक स्वामी नहि बनबैत।”

२८ अगस्त कैं अनशन समाप्त भेला पर सोनपुरामे मिठाइ बाँटल गेल। कैलाश माइकपर कहलक—“आब हमरा नगरक भ्रष्टाचारक अन्त निश्चय!” महेश्वर सभाक पाछाँसँ उत्तर देलनि—“हमर वाचनालयक पंखा आबो बन्द अछि।” सभामे हँसी उठल, मुदा कैलाशक भाषण एही वाक्यसँ बदलि गेल। ओ कहलक, “ठीक अछि, पहिले एहि पंखाकेँ ठीक कराओल जाए।” अर्पणा हाथ उठा कऽ कहलीह, “वाचनालयक पंखा नगरक हिसाबक प्रतीक भऽ सकैत अछि, मुदा ओकरा सचमुच ठीक कराओल सेहो चाही।”

सभाक बाद अर्पणा कैलाशसँ आय-व्ययक नकल फेर मँगलीह। कैलाश अपन भाइ दिगम्बरक छपाई-पञ्जी लऽ आयल। एकहि क्रम-संख्याक दू रसीदमेसँ एक आदेशक प्रति छल, दोसर भुगतानक; ओहि कारण द्विगुण खर्चक शंका हटि गेल। मुदा एकटा अज्ञात दानक प्रविष्टि रहि गेल। रकम अठारह हजार सात सय छल। कैलाश कहलक जे किछु समर्थक संयुक्त रूपसँ देने छलाह। अर्पणा पुछलीह—“नाम, तिथि, देनिहारक स्वीकृति?” कैलाशक पास पूरा उत्तर नहि छल।

दिगम्बर एकान्तमे भाइकेँ कहलनि, “बिना नामक धन लऽ आन्दोलन चलाओलहुँ तँ काल्हि केओ कहत जे ओकरा बदला भाषण चाही।” कैलाश उत्तर देलक, “हम ककरो हाथक कठपुतली नहि। माइक, मंच, पोस्टर, पानी—सभमे पाइ लगैत अछि।” दिगम्बर शान्त स्वरमे कहलक, “खर्चक जरूरत अछिए। मुदा जे धनक स्रोत नहि जानैत, ओकरा खर्चक निर्णय सेहो खुलल रूपमे देबाक चाही। नहि तँ बचावक कोनो कागज नहि रहत।” कैलाश बाहरक आकाश देखलक। उत्सवक आवाज दूर भऽ गेल छल, आ ओकर हाथमे लाल जिल्दवला पुस्तकक वजन बढ़ि गेल छल।

अर्पणा अगिला दिन अध्ययन मण्डलीमे एक प्रस्ताव रखलीह—दान-पञ्जीक पूर्ण समीक्षा धरि बिना नामक रकमक शेष हिस्सा उपयोग नहि हो; पहिलसँ भेल खर्चक समर्थनमे उपलब्ध रसीद देखाओल जाए; आ वाचनालयक तथ्यगत प्रतिवेदनकेँ मंचक खर्चक विवादसँ अलग राखल जाए। किछु सदस्य कहलनि जे एतेक आत्मपरीक्षणसँ आन्दोलन टूटि जायत। शारदा उत्तर देलीह, “जँ एकर आधार केवल अपरीक्षित आरोप अछि तँ टूटब उचित; जँ आधार सच्चा

जनकष्ट अछि तँ प्रश्न पुछलासँ ओ मजगूत होयत।” प्रस्ताव बहुमतसँ स्वीकार भेल, मुदा कैलाश उपस्थित नहि छल।

सोनपुराक न्यायिक दण्डाधिकारीक समक्ष महेश्वरक पृथक परिवादक प्रारम्भिक निवेदन सेहो एहि समय तैयार भेल। हुनकर शिकायत केवल एतेक छल जे एक सामग्री-ग्रहणपत्रपर ‘म. दास’ नामक हस्ताक्षर लिखल अछि, जकरा हुनकर मानल जा रहल अछि, मुदा ओ अपन हस्ताक्षर नहि मानैत छथि। अधिवक्ता रेवती कहलनि जे मूल अभिलेख, सम्बन्धित कर्मीक पहचान आ तिथिक जाँच बिना ककरो विरुद्ध जालसाजीक निश्चित आरोप जोड़ब उचित नहि। न्यायालयसमक्ष प्रारम्भिक कथनमे महेश्वर एहि सीमाकेँ बनौने रखलनि। दण्डाधिकारी परिवादक प्रारम्भिक परीक्षणक अगिला तिथि निर्धारित कएलनि; केओ दोषी घोषित नहि भेल।

बाहर आबि महेश्वर थाकल स्वरमे पुछलनि, “एकटा हस्ताक्षर लेल एतेक दुआरि किएक?” रेवती कहलीह, “जँ केवल एक नामसँ किसीकेँ अपराधी मानि लेल जाए, तँ किछु वर्ष बाद अहाँक नामपर सेहो कोनो अनजान कागज आएब सम्भव अछि।” महेश्वरकेँ ई तर्क बुझाइत छल, मुदा जीवनक देरी कठिन लगैत छल। “तखन वाचनालयक बालक केतबा दिन प्रतीक्षा करत?” ओ पुछलनि। रेवती उत्तर देलीह, “कानूनी जाँच चलैत रहय, संगहि परिषदसँ वास्तविक पंखा आ पुस्तकक व्यवस्था तुरन्त माँगू। सेवा प्राप्ति आ अपराधक निर्णय दू अलग अधिकार अछि।”

सितम्बरक पहिल सप्ताह नगर-परिषद पंखा ठीक करबाक लेल एक छोट मरम्मति आदेश देलक। पुस्तकालयक छतसँ टपकैत पानि रोकेबाक व्यवस्था सेहो आरम्भ भेल। महेश्वर बालकसभकेँ फेर भीतरी कोठरीमे बैसाय लगलाह। फुलवा पहिल बेर नव पंखाक मन्द हवा अनुभव कएलक। ओ शारदासँ पुछलक, “आब मुकदमा समाप्त?” शारदा कहलीह, “नहि। पंखा चलब एक काम अछि; जकरा लेल जे रकम देल गेल, तकर सही हिसाब दोसर काम। मुदा पंखा चलि रहल अछि, ईहो सत्य अछि।” फुलवा अपन पुस्तक खोलि पढ़य लागलि।

लुधियानामे सुनीता अगस्तक समाचारक बाद कारखानाक महिलासभक संग एक छोट बैठक रखलक। जगदीशक सेवाविवाद आगाँ बढ़ि रहल छल; हरजीतक हरदेव चौहानवला

फाइल एखन खुलल छल। सुनीता कहलीह, “दिल्लीमे जनसभा भेल, संसदमे चर्चा भेल, नीक बात अछि। मुदा हमर कारखानाक हाजिरी एखनहुँ सटीक रहय, तकरा रोज देखब पड़त। जँ हम दिल्लीक जयकारामे अपन साथीकेँ बिसरि जाएब, तँ ई ककर विजय?” चम्पा आ फूलकुमारी सहमति मे माथ हिलौलनि।

उर्मिला दिल्ली घुरि अपन लेखमे सोनपुराक अनुभव जोड़लीह। ओ लिखलीह जे जनान्दोलन राज्यकेँ उत्तरदायी बनबाक माँग करैत अछि, मुदा स्वयंसेवी मंचकेँ सेहो अपन दान-पञ्जी खोलेबाक साहस चाही। लेखमे कैलाशक नाम अपराधी जकाँ नहि छल। ओकर स्पष्टीकरण आ मण्डलीक समीक्षा-निर्णय दुनू छपल। उर्मिला समाचार पठाइते मनमे सोचलीह जे एतेक बरख पत्रकारिता कएलहुँ, मुदा अबहुँ एकटा खाली स्थान देखिकय सन्देह आ प्रमाणक बीचक दूरी पार करबाक लोभ लगैत अछि। ओ लोभपर नियन्त्रण करब ओकर पेशाक तपस्या छल।

शिवनारायण सोनपुराक कागजक नकल पुस्तकालयमे राखि रहल छलाह। रेवती हुनका पूछलीह, “अहाँ पहिने कहने छलहुँ, मंचक कान आ न्यायालयक आँखि चाही। आब की बुझैत छी?” शिवनारायण कहला, “एखन जोड़ियौ—पुस्तकालयक बच्चाक प्रतीक्षा। मंच आवाज सुनत, अदालत प्रमाण परखत, मुदा जीवनक आवश्यकता आजु अछि। जँ न्यायिक सतर्कताक नामपर जीवनक काज वर्षो अटकत, तखन हमरा अपन काजक बारेमे सेहो सोचब पड़त।” रेवती देखलीह जे वयसक संग पिता कठोर नहि, बेसी जटिल बनि रहल छथि।

ओहि राति कैलाश अपन दुकान बन्द करबाक पहिने लाल बहीक पन्ना फेर खोललक। अठारह हजार सात सय रुपैयाक बगलमे नामक स्थान खाली छल। ओ अपन हाथसँ ‘देनिहारक पुष्टि बाँकी’ लिखलक, फेर दिगम्बरकेँ कहलनि, “एहि रकमक स्रोतक लिखित विवरण बिना हम कोनो नव पर्चा नहि छपब।” भाइ पुछलक, “तखन आन्दोलन?” कैलाश कहलक, “आन्दोलन लोकक अछि। हमर दुकान बन्द भेलासँ आन्दोलन बन्द नहि होयबाक चाही।” ओकर स्वरमे पहिल बेर विजयक ऊँच आवाज नहि, हार-जीतक बाहरक किछु थाकल बुद्धि छल।

रेवतीक मेजपर तीन कागज एक संग राखल छल—नीलकान्त साहक सन् २००४ क न्यायिक निर्णय, रामलखनक बकाया मजदूरीक आदेश आ सोनपुराक वाचनालयक मूल अभिलेख माँगबाक नव प्रार्थना। तीनू फाइल अलग समय, अलग व्यक्ति आ अलग विधिसँ सम्बन्धित छल। मुदा रेवतीकेँ ओकर बीच एक छोट सूत्र देखाइत छल—ककरो नामपर लिखल गेल बातकेँ सत्य मानबाक पहिने ओहि व्यक्तिक आवाज सुनल जाए। बाहर सितम्बरक वर्षा खिड़कीपर बजि रहल छल। दूर कियो भ्रष्टाचारक विरोधमे नारा लगा रहल छल; भीतर एक स्त्री सावधानीसँ अगिला सुनबाईक तिथि लिखि रहल छलीह।

ओहि बीच सोनपुराक छात्रा बिन्दु पुस्तकालयक नव पंखाक नीचाँ बैसि लिखैत छलि। ओकर निबन्धक विषय छल—‘हमर नगरक भविष्य’। ओ अपन निबन्धमे नहि लिखलक जे सभ अधिकारी खराब छथि अथवा सभ आन्दोलनकारी नीक। ओ लिखलक जे नगरमे एक दिन अस्पतालक औषधि समयपर भेटय, विद्यालयक पुस्तक पूरा रहय, किसानक फसलक दाम मिलय आ वाचनालयक हिसाब कियो निडर भऽ पूछय सकय। महेश्वर ओकर कापी देखलनि आ कहला, “तोरा ई सभ के सिखौलक?” बिन्दु उत्तर देलक, “अहाँ सभ झगड़ा कएने रही, हम सुनैत रही।”

किछु दिन बाद अर्पणा, शारदा आ रेवती एक संग परिषदक सार्वजनिक सूचना-पट्ट धरि गेलीह। ओतय वाचनालयक काजक नव स्थिति लिखल छल, मुदा दान-पञ्जीक प्रश्न ओहि पट्टपर नहि छल—ओ जन-मण्डलीक अपन दायित्व छल। अर्पणा कहलीह, “हमर लड़ाइ सरकारसँ अछि, मुदा हमर पहिल काज अपन वचन निभेनाइ अछि।” शारदा उत्तर देलीह, “लोकक भरोसा दोसरसँ मागल नहि जाइत; अपन हिसाब देलासँ बनैत अछि।” रेवती बिना किछु कहने कागजक तिथि देखैत रहलीह।

पछिला दिनक एकटा समाचारपत्रक पन्ना हवा सँ उड़ि न्यायालयक बरामदामे आबि खसल। ओकर एक दिस क्रिकेट विजयक पुरान चित्र छल, दोसर दिस भ्रष्टाचार-विरोधी जनसभाक भीड़। पन्नाक कोन भीजि गेल छल, मुदा दुनू चित्र स्पष्ट छल। शिवनारायण ओहि पन्नाकेँ उठाकय कूड़ादानमे रखि देलनि। हुनका बुझाइत छल जे इतिहासक छवि अखबारमे छपैत अछि, मुदा ओकर अर्थ लोकक घर, विद्यालय, खेत आ न्यायालयमे धीरे-धीरे खुलैत

अछि। जनान्दोलनक मंच अपन आवाज छोड़ि गेल छल; आब ओकर शब्दसभकेँ अभिलेख आ कर्मक कसौटीपर ठाढ़ होयबाक छल।

अध्याय १५ — साक्षी बनल स्त्री

सन् २०१२ : दिल्ली, दरभंगा आ लुधियाना

नवम्बर २०१२ क एक भोरि दिल्लीक सत्र न्यायालयक बरामदामे बैसल स्त्री अपन हाथमे राखल कागज नहि पढ़ि रहल छलि। कागजमे ओकर अपन नाम छल, मुकदमाक संख्या छल, आ ओहि घटनाक तिथि छल जकर बाद ओकरा तिथि देखबो कठिन लागय लगल छल। बरामदामे लोकक गप, अधिवक्ताक पदचाप, चाय बेचयवला बालकक स्वर आ कोठरीक दुआरि खुलबाक आवाज एक संग चलैत छल। ओहि सभमे एक आवाज ओकरा फेर-फेर सुनाइत छल—घड़ीक सुइयाक आवाज। घरमे पुरान घड़ी बन्द भऽ गेल छल, मुदा ओ अपन भीतर एक अदृश्य घड़ी चलैत अनुभव करैत छलि।

स्त्रीक नाम माधवी कर्ण छल। मुदा न्यायालयक बाहर हुनकर परिचय सार्वजनिक नहि कएल जाए, एहि लेल रेवती हुनका पहिनेहि बुझा देने छलीह जे अपन नामक संरक्षण हुनकर अधिकार अछि। माधवी समस्तीपुरक निकट एक गाँवसँ दिल्ली आएल छलीह। दिनमे एक प्रशिक्षण-संस्थानक लेखा-कक्षमे काम, साँझमे पढ़ाइ, रातिमे छोट किरायाक कोठरी। ओकर सपना शिक्षिका बनबाक छल; एहि लेल ओ बचत करैत छलीह, नोट बनबैत छलीह, आ छुट्टीक दिन पुस्तकालय जाइत छलीह। वर्षक बीच जे घटना भेल, से ओकर सपना समाप्त नहि केलक, मुदा सपनाक बाटपर लगातार प्रश्नचिह्न लिखि देलक।

रेवती न्यायालयक दुआरिसँ किछु दूर माधवीक संग बैसल छलीह। हुनका मुख्य अभियोजन चलएबाक अधिकार नहि छल; सत्र न्यायालयमे ओ काज लोक अभियोजक अमल दासक छल। रेवती पीड़िताक पक्षसँ सहायता देबाक लेल उपस्थित छलीह, अभिलेख पढ़ने छलीह, प्रश्नक सम्भावित क्रम बुझने छलीह। ओ माधवीकेँ कोनो उत्तर रटबैत नहि छलीह। केवल कहने छलीह, “जे स्मरण अछि, से कहब। जे नहि स्मरण अछि, ओहो कहब। वकीलक प्रश्नक उत्तर सभ बेर ओकर अपेक्षा अनुसार देब आवश्यक नहि।”

माधवी पुछने छलि, “जँ पहिने कहबामे किछु छूटि गेल हो तखन?” रेवती उत्तर देने छलीह, “जकर कारण अछि, से कहब। किछु छूटलासँ अपने-आपमे सभ बात झूठ नहि होइत। मुदा अदालत ओहि छूटल बातक महत्त्व परखत। एहि बातसँ हम अहाँकेँ बचा नहि सकैत छी, आ बचेबाक चेष्टा सेहो नहि करब।” एहि उत्तरमे माधवीकेँ असहज सत्य भेटल छल। ओ अदालतक सहायता चाहैत छलि, गढ़ल आश्वासन नहि।

कोठरीक भीतर न्यायाधीश कावेरी भटनागर कार्यवाही आरम्भ करबाक तैयारीमे छलीह। आरोप छल जे संस्थानक वरिष्ठ कर्मचारी शेखर मल्होत्रा माधवीक संग ओकर अनिच्छाक विरुद्ध गम्भीर यौन-अपराध कएने छल। शेखर आरोप अस्वीकार करैत छल। घटना जूनक एक साँझक बताओल गेल छल। पुलिस अनुसन्धान पछाति आरोपपत्र दायर कएने छल; आरम्भिक न्यायिक प्रक्रिया पूरा भेलाक बाद मामला सत्र न्यायालयमे विचारण लेल पहुँचल छल। अभियुक्तक अपराध सिद्ध भऽ गेल, एहन कोनो स्थिति एखन नहि छल।

कार्यवाही गोपनीय रूपसँ चलबाक व्यवस्था छल। बाहरक भीड़केँ प्रवेश नहि भेटल। पत्रकार उर्मिला बाहर रहलीह; ओ एहि मुकदमाक समाचार लिखय चाहैत छलीह, मुदा न्यायालयक भीतरक कथन आ पीड़िताक परिचय सार्वजनिक करबाक सीमा बुझैत छलीह। गवाहीक आरम्भसँ पहिने न्यायाधीश उपस्थित व्यक्तिसभकेँ प्रक्रियाक गोपनीयता स्मरण करौलनि। माधवी पहिल बेर अनुभव कएलक जे दुआरि बन्द होयब प्रत्येक बेर कैद नहि होइत; कहियो ककरो गरिमा बचेबाक उपाय सेहो होइत अछि।

अमल दासक प्रश्न साधारण छल। “अहाँ ओहि संस्थानमे की काज करैत छलीह?” माधवी कहलकि जे प्रवेश-शुल्कक हिसाबक नकल, छात्रक सहायता-अनुदानक अभिलेख आ भुगतानक प्राप्ति-पत्र क्रममे राखब ओकर जिम्मेदारी छल। “जूनक ओहि दिन कार्यालयमे किएक रहलहुँ?”—“छात्रवृत्तिक सूची फेर जाँचबाक छल। साँझक बस छूटि गेल छल। हमर संग दू सहकर्मी पहिने निकलि गेल छलीह।” ओकर स्वर प्रारम्भमे मन्द छल, मुदा शब्द स्पष्ट छल।

प्रश्न आगाँ बढ़ल। माधवी ओहि साँझक घटनाक विवरण अपन सामर्थ्य अनुसार देलक। ओ कोनो दृश्यकेँ अनावश्यक विस्तार नहि देलक। ओ बतौलक जे ओकर मना करबाक

बावजूद अभियुक्त बल प्रयोग कएने छल, आ ओ तत्क्षण भय आ असहायताक अनुभव कएने छलि। न्यायालयक लेखाकार ओकर शब्द दर्ज करैत छल। अभियोजनक पुछताछक बीच माधवी पानि मँगलक। न्यायाधीश विरामक अनुमति देलनि। शेखर अपन अधिवक्ता अविनाश बत्राक संग शान्त बैसल छल; ओकर चेहराक भावसँ ककरो दोष वा निर्दोषताक निर्णय नहि भऽ सकैत छल।

माधवीक माता जानकी बाहर प्रतीक्षा करैत छलीह। गवाहक स्वर नहि सुनाइत छल, मुदा बरामदाक हर पदचाप हुनका बेटी दिस बजैत बुझाइत छल। गाँवमे जखन माधवी दिल्ली आएबाक निर्णय लेने छलि, जानकी मुँहदेखनीक किछु बचल रकम ओकर हाथमे देने छलीह। पिता रामनरेश कहने छलाह, “पढ़ाइमे देरी मत करू।” घटना पछाति दुनू पहिने घर घुरा लेबाक बात सोचने छलाह। मुदा बेटी कहलकि, “जँ हम घुरि जाएब तँ हमर पढ़ाइ के पूरा करत?” ओहि प्रश्नमे घरक प्रेम आ व्यक्तिक इच्छा दूनू उपस्थित छल।

मुकदमाक पहिल जानकारी पुलिस धरि घटना भेलाक दू दिन पछाति पहुँचने छल। ओहि दू दिनक बहुत चर्चा घरमे भेल छल। माधवी पहिल राति कोठरीमे बन्द बैसल छलीह। दोसर दिन संस्थानक एक सहकर्मीकेँ बात कहने छलीह। सहकर्मी भयभीत भेलि; नौकरी, सामाजिक निन्दा आ परिवारक प्रतिक्रियाक अनेक प्रश्न ओकर मुँहपर छल। तेसर दिन एक स्त्री-सहायता केन्द्रक कार्यकर्त्री माधवीकेँ उपयुक्त चिकित्सकीय देखभाल आ पुलिसमे शिकायतक अधिकार बुझौने छलीह। सहायता केन्द्रक कार्यकर्त्री कोनो एक राजनीतिक दलक प्रतिनिधि नहि छलीह; हुनकर काज पीड़ित स्त्रीक निर्णयक आदर करैत सहायता देब छल।

चिकित्सकीय परीक्षणमे किछु अवलोकन दर्ज भेल। चिकित्सक स्पष्ट लिखने छलाह जे परीक्षणक समय, प्रत्यक्ष निष्कर्ष आ हुनकर सीमासँ बेसी बात ओ कहि नहि सकैत छथि। माधवीक बयानक सत्यता पूरा-पूरा चिकित्सकीय कागजपर निर्भर नहि छल, आ नहि केवल चोटक अभावसँ ओकर आरोप झूठ सिद्ध होइत छल। रेवती एहि बातकेँ विशेष ध्यानसँ पढ़ने छलीह। शिवनारायण पिताक संग बातचीतमे ओ कहने छलीह, “अदालतमे शरीरक कागज आ मनुष्यक गवाही एक-दोसराकेँ सुनबाक चाही, एक-दोसराकेँ चुप नहि करएबाक।”

पुलिस अधिकारी सुधीर रावत पहिल विवरण दर्ज कएने छलाह। तकर बाद न्यायिक दण्डाधिकारीक समक्ष माधवीक कथन सेहो लिखाओल गेल। ओहि दुनू अभिलेखक अलग विधिक स्थान छल। प्रतिरक्षा पक्षक अधिकार छल जे विचारणक समय लागू नियम अनुसार प्रासंगिक विरोधाभासक प्रश्न उठाबय; मुदा पुलिसक लिखल बयान अपने-आपमे न्यायालयक प्रत्यक्ष गवाहीक स्थान नहि लैत छल। माधवी एहि सूक्ष्मताकेँ शब्दमे नहि बुझैत छलीह, मुदा ओकर जीवनक अगिला किछु मास एहि अन्तरपर निर्भर छल।

पहिल दिनक मुख्य प्रश्न समाप्त भेलापर न्यायाधीश अगिला सुनबाई निश्चित कएलीह। माधवी बाहर आयलि तँ उर्मिला दुआरिसँ किछु दूर हटि गेलि। ओ पुछए नहि चाहैत छलीह जे भीतर की कहल गेल। बदला केवल एतेक पुछलक, “अहाँकेँ घर जाएबामे सहायता चाही?” माधवी मुँह हिलौलक। “हम जाएब।” उर्मिला पहिल बेर बुझलक जे पत्रकारक कतेको उपयोगी प्रश्न ओहि समय नहि पूछल प्रश्न सेहो होइत अछि।

ओहि साँझ रेवती घर घुरलीह तँ शिवनारायण पुरान कागज पढ़ि रहल छलाह। सोनपुराक वाचनालयक सामग्री-ग्रहणपत्रपर ‘म. दास’ लिखल विवादित हस्ताक्षरक नकल मेजपर छल। रेवती कहलीह, “एक ठाम कागजपर नाम अछि, व्यक्ति कहैत छथि हमर नहि। दोसर ठाम एक स्त्री अपन देहपर घटल बात कहैत छथि, लोक पहिल कागजक अक्षर देखय चाहैत अछि।” शिवनारायण उत्तर देलनि, “दूनू ठाम प्रमाण परखब आवश्यक अछि, मुदा प्रमाणकेँ मनुष्यक विरुद्ध अस्त्र नहि, न्याय लेल साधन बनायब।”

रेवती राति बहुत देर धरि मुकदमाक कागज पलटैत रहलीह। ओकरा देखाइत छल जे संस्थानक प्रवेश-कक्षमे उपस्थिति-पञ्जी छल, द्वारक चाबी दुइ कर्मचारीक हाथमे रहैत छल, आ भवनक पछिला दुआरि कहियो खुलल रहैत छल। पुलिस ओहि दुआरिक फोटो लेने छल, मुदा स्थानक प्रकाश-व्यवस्थाक पूर्ण विवरण नहि छल। ओ अपन टिप्पणीमे प्रश्न लिखलक—घटनाक समयक पुष्टि कोन स्वतंत्र स्रोतसँ होयत? ओ उत्तर गढ़बाक बदला प्रश्न सुरक्षित रखलक।

दिल्लीक दोसर भागमे माधवीक किरायाक कोठरीक बल्ब झिलमिला रहल छल। ओ पुस्तक खोलि बैसलि, मुदा एक पाँति तीन बेर पढ़लापर सेहो अर्थ नहि बुझाइत छल। ओकर

सहपाठिनी बिमला चाय लऽ आयलि। बिमला पुछलक, “काल्हि वर्गमे जायब?” माधवी किछु क्षण सोचि कहलकि, “जायब। जँ हम न्यायालयक कारण पढ़ाइ छोड़ि देब तँ जे हमरे सँ छीनी लेल गेल अछि, ओकर संख्या बढ़ि जायत।” बिमला बिना उपदेश देने ओकरा लग बैसि रहलि।

दू सप्ताह पछाति प्रति-परीक्षणक दिन आयल। ओहि बीच माधवी अपन संस्थानसँ अवकाशक आवेदन देने छलीह, मुदा ओकरा उत्तर नहि भेटल छल। कार्यालयक एक सूचना-पट्टपर अनुपस्थितिक विवरण चिपकल छल। ओ कहलकि, “हमर नामक आगाँ निस्सन्देह दिन गनल जा सकैत अछि। मुदा ओहि दिनसभक कारण कोन पञ्जीमे लिखल जायत?” बिमला सुझाव देलक जे श्रमिक-अधिकारक स्वतंत्र विधिक उपाय सेहो देखल जाए। रेवती बतौलीह जे सेवाक प्रश्न आ आपराधिक विचारण दू अलग मार्ग छथि; एकर समाधान एकहि न्यायालयसँ अनिवार्य रूपेँ नहि भेटत।

अविनाश बत्रा अपन प्रतिरक्षाक तैयारी करैत छलाह। हुनकर मुवक्किल शेखर मल्होत्रा पहिलसँ कहैत छल जे माधवीक आरोप निराधार अछि। शेखरक परिवार सेहो भयमे छल। हुनकर पत्नीकेँ पड़ोसी प्रश्न करैत छल, बेटी विद्यालयमे सहपाठीक फुसफुसाहट सुनैत छलि। अविनाश हुनका स्पष्ट कएलनि, “हमर काज पीड़िताकेँ अपमानित करब नहि, अभियोजनक दावाक प्रमाण परखब अछि। अहाँक परिवारक पीड़ा सत्य अछि, मुदा ओहिसँ दोसर पक्षक बयान मिथ्या नहि भऽ जाइत।” शेखर असन्तोषसँ मुँह फेरलक, मुदा अपन अधिवक्ताक बात रोकेबाक सामर्थ्य ओकरा नहि छल।

न्यायालयमे अविनाश पहिल प्रश्न समय सम्बन्धी कएलनि। माधवी जूनक ओहि साँझ पाँच बजिकय कतेक मिनटपर लेखा-कक्षसँ निकलल छलीह? माधवी कहलक जे ठीक मिनट स्मरण नहि। हुनका बसक अन्तिम फेराक समय स्मरण छल। अविनाश उपस्थितिक पञ्जी देखबैत कहला जे संस्थानक सुरक्षाकर्मी साढ़े पाँच बजे मुख्य दुआरि बन्द करबाक उल्लेख कएने अछि। माधवी उत्तर देलक जे ओहि दिन पछिला दुआरिसँ बाहर आयल छलीह। न्यायाधीश लिखौलनि—समयक आंशिक स्मृति आ निकलबाक दुआरिक कथन।

“अहाँ जूनक पहिल बयानमे पछिला दुआरिक उल्लेख कएने छलीह?” अविनाश पुछलनि। माधवी कहलक, “पुलिसकेँ कहने रहियैक जे मुख्य दुआरिसँ नहि निकललहुँ। ओ की

लिखलनि से हम पढ़ि नहि पबैत छली।” अविनाश अभिलेखमे ओकर हस्ताक्षर देखौलनि। माधवी स्वीकार केलक जे हस्ताक्षर ओकर अछि, मुदा जोड़लक—“ताहि सँ ई नहि सिद्ध होइत जे हर शब्द हम अपने लिखलहुँ।” न्यायाधीश आवश्यक अंशक विधिसम्मत परीक्षणक निर्देश देलनि।

एहिमे अविनाशक तर्क छल जे आरोप लगबैत समय व्यक्तिक स्मृति स्थिर रहबाक चाही। अमल दास प्रतिवाद करैत कहला जे समयक सूक्ष्म अन्तर अपराधक मूल प्रश्नसँ कतेक सम्बन्धित अछि, से अदालत स्वयं परखत। न्यायाधीश दुनू पक्षकेँ स्मरण करौलनि जे प्रति-परीक्षणक उद्देश्य विश्वसनीयता जाँचब अछि, वकीलक सम्भाषणमे विजय प्राप्त करब नहि। प्रश्न जेना-तेना भावनात्मक अपमानक रूप लेबय लागैत, ओ रोकि दैत छलीह।

अविनाश चिकित्सकीय प्रतिवेदनक विषय उठौलनि। हुनकर प्रश्न छल जे परीक्षण घटना पछाति भेल, तकर किछु शारीरिक अवलोकनसँ घटना घटलाक निश्चित समय सिद्ध नहि होइत। माधवी कहलकि, “हम समय चिकित्सकक कागजसँ नहि बतबैत छी। हम अपन देखल-भोगल समय कहैत छी।” न्यायाधीश पीड़िताकेँ चिकित्सकीय निष्कर्षक विशेषज्ञ व्याख्या करबाक दायित्व नहि देलनि। ओहि विषयमे चिकित्सकक गवाही अलग सुनल जायत, से स्पष्ट कएलनि।

जखन अविनाश एक अनुपयुक्त व्यक्तिगत प्रश्न उठौलनि, अमल दास आपत्ति कएलनि। न्यायाधीश प्रश्नक प्रसङ्गिकता पूछलनि आ तकर सीमाक निर्णय देलनि। माधवीकेँ पहिल बेर अनुभव भेल जे न्यायालयमे ओकरा उत्तर देब आवश्यक अछि, मुदा प्रत्येक प्रश्नक अपमान सहब अनिवार्य नहि। ओ थाकल छलीह; आँखिक कोनमे पानि छल, तथापि ओ अपन शब्द स्वयमे चुनैत छलीह। प्रति-परीक्षणक अर्थ ओकर व्यक्तित्वक विलयन नहि, कथनक परीक्षा छल।

दोपहरक विराममे जानकी बेटीकेँ पानि देलीह। जानकीक चेहरापर किछु दिनसँ निद्राक अभाव देखाइत छल। ओ पुछलीह, “एतेक पुरान बात फेर-फेर कहबै तँ घाव नहि बढ़त?” माधवी कहलकि, “घाव तखन बढ़ैत अछि जखन सभ कहैत अछि जे ई घटबे नहि कएल। एक बेर सुनल जायत तँ हमरा आगाँ जायबामे सहूलियत होयत।” जानकी चुप रहलीह। हुनका

बुझाइत छल जे बेटीक साहसक अर्थ ओ पीड़ा नहि अछि जे मातार्केँ समाप्त करय पड़य; साहसक अर्थ पीड़ाक भीतर अपन निर्णयक अधिकार बचेने रहब अछि।

बाहर बरामदामे उर्मिला महिला सुरक्षापर लिखल एक अध्ययनक पन्ना देखैत छलीह। दरभंगाक सोनपुरासँ शारदा ओकरा विद्यालयक छात्रासभक आवागमनक कष्टक पत्र पठौने छलीह। एकटा छात्रा साँझक वर्ग छोड़ि देलक, कारण घरसँ विद्यालय धरि सुनसान सड़क छल। दोसरक पिता ओकर पढ़ाइ बन्द करबय चाहैत छलाह। उर्मिला बुझलीह जे न्यायालयक भीतरक एक मुकदमा देशक समस्त महिलाक अवस्थाक स्थानापन्न नहि अछि; मुदा समाजक डर प्रत्येक छोट निर्णयमे प्रवेश करैत अछि।

ओहि साँझ रेवती सोनपुराक शारदार्केँ पत्र लिखलीह। “अहाँ छात्रासभसँ पुछू जे विद्यालय आवय-जायमे सबसँ कठिन स्थान कतय अछि। हुनकर उत्तरक आधारपर प्रकाश, सार्वजनिक परिवहन आ सुरक्षित मार्गक माँग करू। कोनो दुखद घटनाक प्रतीक्षा करबाक आवश्यकता नहि।” शारदा उत्तर देलीह जे विद्यालयक लग एक टूटल बत्ती एक वर्षसँ बन्द अछि आ नगरक आवेदनमे बारम्बार लिखल गेल अछि। महिला सुरक्षाक प्रश्न ओकरा लेल घोषणापत्र नहि, बत्ती बालेबाक जिम्मेदारी छल।

एहि बीच लुधियानामे सुनीता पासवान अपन सहकर्मीसभसँ एक कक्षमे भेटलि। कारखानाक महिलाओंक लम्बा कार्यदिवस, बिन निश्चित परिवहनक रात्रि फेरक कष्ट आ ठेकेदारक व्यवहारपर चर्चा होइत छल। एक श्रमिक कहलक, “न्यायालय हमर मजदूरीक हिसाब देखैत अछि। मुदा हम राति घर सुरक्षित पहुँचब, से के देखत?” सुनीता प्रस्ताव रखलक जे व्यवस्थापनसँ लिखित मार्गदर्शिका आ सुरक्षित आवागमनक व्यवस्था माँगल जाए। एकटा मुकदमा सामाजिक सुधारक सभटा आवश्यकता नहि सम्हारि सकैत।

दिल्लीमे फेर सुनबाईक दिन चिकित्सक डॉ. श्रुति नारंग उपस्थित भेलीह। ओ जूनक चिकित्सकीय परीक्षणक समय अपन अभिलेखमे जे प्रत्यक्ष देखलनि, से मात्र बतौलनि। ओकरा समयक सीमित अनुमान देबाक प्रश्न भेल। ओ स्पष्ट कहलीह, “एहि कागजसँ घटनाक सम्पूर्ण परिस्थिति, सहभागी व्यक्तिक पहचान वा इच्छा-अनिच्छाक अन्तिम निर्णय नहि

होइत।” अभियोजन आ प्रतिरक्षा दुनू हुनकर मतक अर्थ अपन पक्षमे देखबाक चेष्टा कएलक; न्यायाधीश विशेषज्ञ मतक सीमा अभिलेखमे दर्ज करौलनि।

अविनाश पुछलनि जे चिकित्सकक प्रतिवेदनमे उल्लेखित संकेत अन्य कारणसँ सेहो उत्पन्न भऽ सकैत अछि कि नहि। डॉ. नारंग किछु सम्भावनाक सीमा बतौलनि आ जोड़लनि जे निश्चित उत्तर लेल अन्य विश्वसनीय साक्ष्यक मूल्यांकन आवश्यक अछि। अमल दास प्रतिप्रश्नमे पुछलनि जे प्रतिवेदनमे प्रत्येक सम्भावना नकारल गेल अछि कि नहि। चिकित्सक कहलीह, “वैद्यकीय विज्ञानमे “नहि देखल” आ “नहि घटल” एकहि बात नहि।” एहि शब्दसँ कोनो पक्षक अन्तिम विजय नहि भेल, मुदा गवाहीक ईमानदारी बढ़ल।

एक दोसर दिन सुरक्षाकर्मी नियामुद्दीनकेँ बोलाओल गेल। ओ पन्द्रह वर्षसँ संस्थानक दुआरिपर काम करैत छल। ओकर हस्तलिखित पञ्जीमे ओहि दिन पाँच बजिकय तीस मिनटपर मुख्य दुआरि बन्द होयबाक प्रविष्टि छल। “पछिला दुआरि?” अमल दास पुछलनि। नियामुद्दीन कहलनि, “ओहिपर हमर पहरा नहि छल।” “तखन ओहि साँझ ओ दुआरि खुलल वा बन्द छल, अहाँ कहि सकैत छी?”—“नहि।” न्यायालयकेँ एहन उत्तर सुनबाक अभ्यास चाही छल, जकरामे साक्षी अपन ज्ञानक सीमा स्वीकार करैत अछि।

अविनाश अपन प्रति-परीक्षणमे नियामुद्दीनसँ पूछलनि जे आरोपी सामान्यतः कार्यालय सँझमे कतेक देर धरि रहैत छल। ओ कहलक, “कहियो रहैत छलाह, कहियो नहि।” “ओहि दिन देखलियनि?”—“भोरिमे।” “साँझमे?”—“स्मरण नहि।” अभियोजनक अनुमानक एक सहज मार्ग बन्द भऽ गेल; सुरक्षाकर्मी आरोपीक साँझक उपस्थितिक प्रत्यक्ष प्रमाण देबामे असमर्थ छल। माधवी एहि गवाहीकेँ सुनैत चुप छलीह। ओकर अपन कथन एक दिशा दैत छल, मुदा अन्य अभिलेखकेँ साँच करबाक काम कोनो एक स्त्रीक स्मृतिपर नहि छोड़ल जा सकैत छल।

शेखर मल्होत्राक परिवारक भीतर सेहो तनाव बढ़ैत छल। ओकर पत्नी मीना एक राति कहलक, “हम अहाँकेँ पति जकाँ जनैत छी, मुदा कार्यालयमे की भेल, से हम देखल नहि। हम अहाँक अपराध नहि चाहैत छी, आ दोसर स्त्रीक दुखकेँ असत्य कहबाक अधिकारो नहि जनैत छी।” शेखर क्रोधसँ उठल, फेर बैसि गेल। मीना ओकर मौनकेँ स्वीकारोक्ति नहि मानलक; ओ

केवल अपन अज्ञानकेँ अज्ञान रहय देलक। एहि एक निर्णयमे ओकर कठिन नैतिक स्थिति स्पष्ट छल।

रेवती एक दिन राति पिता संग पुरान कोठरीमे बैसल छलीह। शिवनारायण किछु दिनसँ कम काज करैत छलाह। बेटी पुछलीह, “जँ अदालतमे कठिन प्रश्नक कारण पीड़िता टूटि जाए, तँ अभियुक्तक प्रतिरक्षाक अधिकार कोना सुरक्षित राखी?” शिवनारायण कहला, “प्रश्न कठिन हो, से आवश्यक भऽ सकैत अछि। प्रश्न अपमानजनक हो, से न्याय नहि। न्यायाधीशक कर्तव्य प्रश्नक प्रसङ्गिकता आ स्त्रीक गरिमा दुनू देखब। वकीलक कर्तव्य जीतबाक लोभमे मनुष्यकेँ नष्ट नहि करब।”

ओहि राति माधवी अपन नोटबुक खोललक। पहिल पन्नापर अंग्रेजीक व्याकरणक अभ्यास छल; दोसरपर गणितक सूत्र। तेसरपर ओ किछु दिन पहिने लिखने छलि—“हम अदालतमे के छी?” ओहिपर आजु उत्तर लिखलक—“हम केवल मामला नहि छी। हम अपन जीवनक साक्षी छी।” तकर बाद ओ फेर पहिल पन्नाक व्याकरणक अभ्यास पूरा करय लगलि। ओकर पढ़ाइ एखनहुं लड़ाइ छल, मुदा ककरो विरुद्ध प्रतिशोधक नहि; अपन भविष्य लेल।

नवम्बरक अन्तिम सप्ताहमे संस्थानक कार्यालयसँ एक पत्र आयल। माधवीक अनुपस्थितिक कारण पूछल गेल छल; ओहि पत्रमे ओकर शिकायतक उल्लेख नहि छल। जानकी क्रोधसँ कहलीह, “ओ सभकेँ सभ बात ज्ञात अछि, तैयो कागजमे केवल अनुपस्थित लिखैत अछि।” रेवती कहलीह, “कागजमे जे लिखल अछि, ओहिपर उत्तर देब; अपन आवश्यक सुरक्षाक माँग अलग आवेदनमे उठाउ।” ओहि प्रकार एकहि घटना तीन दिशामे फैलि रहल छल—आपराधिक न्याय, रोजगारक सुरक्षा आ व्यक्तिगत जीवनक पुनर्निर्माण।

रेवती संस्थानक कर्मचारी-नियमावली पढ़लीह। कार्यालयक सूचना-पट्टपर महिलाक कार्यस्थल-सुरक्षा सम्बन्धी किछु लिखल नहि छल। सर्वोच्च न्यायालयक पूर्ववर्ती विशाखा-निर्देशसभक चर्चा कएलापर प्रबन्धक कहलक जे संस्था छोट अछि। रेवती कहलीह, “संस्था छोट होयब स्त्रीक गरिमाकेँ छोट नहि करैत।” मुदा ओ एहि प्रश्नकेँ सत्र न्यायालयक आपराधिक विचारणमे बलपूर्वक नहि जोड़लीह। कार्यस्थलपर सुरक्षित वातावरण, शिकायत सुनबाक व्यवस्था आ सेवाशर्तक उपचार लेल स्वतंत्र संस्थागत प्रयास आवश्यक छल। माधवी

चाहैत छलीह जे एक दिन फेर कार्यालय जा सकय, बिना एहि आशंकाक जे न्यायालयमे बाजलाक कारण ओकर रोजगार समाप्त होयत।

माधवी अपन उत्तर स्वयं लिखलक। “स्वास्थ्य आ न्यायिक कार्यवाहीक कारण एहि अवधिमे नियमित काजमे उपस्थित नहि रहि सकलहुँ। कृपया आवश्यक अवकाश आ कार्यस्थलक सुरक्षा पर विचार कएल जाए।” बिमला कहलक, “अहाँ मुकदमाक पूरा विवरण नहि लिखलहुँ।” माधवी उत्तर देलक, “हर दफ्तरक पञ्जीमे हमर जीवनक सभ बात लिखब आवश्यक नहि। जे आवश्यक अछि, से पर्याप्त अछि।” अपन शब्दक सीमा स्वयं तय करब ओकर लेल एक नब सामर्थ्य छल।

रेवतीक मित्र उर्मिला समाचार-पत्रक सम्पादकीय कक्षमे एक सभामे शामिल भेलीह। एक नव पत्रकार सुझाव देलक जे ‘पीड़िताक साहस’क शीर्षकसँ विस्तृत मानवीय कथा छपय। उर्मिला पुछलक, “साहसक नामपर अहाँ हुनकर परिवार, मुहल्ला, विद्यालय आ रोजगारक कतेक निशान छापब? ओहि संकेतसँ लोक नाम चिन्हि लेत तँ?” सम्पादक कहला, “मुकदमाक भीतरक गवाहीक विवरण अनुमति बिना नहि, परिचयो नहि।” नव पत्रकारकेँ अनुभव भेल जे समाचारक अधिकार आ मनुष्यक गोपनीयता एक-दोसरासँ संघर्षमे आबि सकैत अछि।

सोनपुरामे शारदा देवी विद्यालयक छात्रासभक यात्रा-विवरण संकलित कएलनि। एक छात्राक घरसँ विद्यालय डेढ़ कोस दूर, दोसरक बाटमे बन्द पड़ल पोखरि, तेसरक मार्गमे शराबक छोट दोकानक बाहर झुंड। ओ सभ ठामक स्थान, समय आ वास्तविक कठिनाइ लिखलनि। प्रधानाध्यापक पुछलनि, “ई सभक की करब?” शारदा कहलीह, “पहिने गामक बैठक, तकर बाद संबंधित कार्यालयकेँ आवेदन। डरक चर्चा करब पर्याप्त नहि; बाट सुरक्षित करबाक काज चाही।”

बैठकमे एक पिता कहला, “हम बेटीकेँ साँझमे बाहर नहि जाए देब।” शारदा पुछलीह, “तखन बेटी अस्पतालमे परिचारिका बनलापर रातिक ड्यूटी केना करत?” पिता उत्तर नहि दऽ सकलाह। एक वृद्धा कहलीह, “हमर समय सेहो महिलासभ बाहर निकलैत छलीह, मुदा

ओकरा गिनतीमे के राखैत छल?” ओहि वाक्यमे पीढ़ीसभक अनुभव छल। सुरक्षाक अर्थ स्त्रीकेँ घरमे बन्द करब नहि, सुरक्षित समाज बनायब होयबाक प्रश्न उठल।

दिल्लीमे अभियोजनक अगिला साक्षी संस्थानक लेखा-सहायक शोभा छलीह। ओ माधवीक संग काम करैत छलीह। ओकर बयानमे आरोपक घटना प्रत्यक्ष देखबाक दावा नहि छल; ओ कहलक जे घटना पछाति माधवी ओकरा भय आ बेचैनीक अवस्थामे बात कहने छलि। बचाव पक्ष ओकरा पुछलनि जे जूनक तिथि ठीक कतेक छल। शोभा पहिले कहलीह, ‘एगारह होयत,’ फेर स्वीकार कएलक जे ओकरा तिथि पूरा स्मरण नहि।

अविनाश एक पन्ना देखौलनि—शोभाक अपन अवकाश-आवेदन। “अहाँ ओहि सप्ताह दू दिन संस्थानमे अनुपस्थित छलीह?” शोभा कहलीह, “दू दिन रहलहुँ, मुदा जे दिन माधवी बात कहलक, ओ दिन आएल छलहुँ।” पञ्जीमे तिथिक हस्ताक्षर स्पष्ट नहि। न्यायाधीश कएलनि जे एहि बिन्दुक पुष्टि पञ्जीक मूल प्रति आ कार्यालयक अन्य अभिलेखसँ करब आवश्यक अछि। एहि अनिश्चिततासँ शोभाक सम्पूर्ण व्यक्तित्व न विश्वसनीय बनल, न अविश्वसनीय; एक विशेष तिथिक प्रमाणक प्रश्न खुलल रहल।

शोभाक परिवार सेहो घटना बाद विचलित छल। ओकर पिता पुछने छलाह, “तूँ किएक अदालत जाएब? जे देखलें नहि, से कहबामे जोखिम अछि।” शोभा उत्तर देने छलि, “हम जे नहि देखलहुँ से नहि कहब। जे सुनलहुँ आ जे अवस्थामे देखलहुँ, से किएक नुकाबी?” ओकर उत्तर माधवी लेल आश्वासन छल, मुदा अदालत लेल ओकर सीमित साक्ष्यक प्रकार निश्चित करैत छल। कथनक समर्थन आ घटना प्रत्यक्ष देखब दू अलग वस्तु छल।

अमल दास अभियोजनक कार्यालयमे रेवतीसँ भेटलाह। “माधवीक बयानमे समयक किछु अन्तर अछि,” ओ कहला, “मुदा मूल आरोपपर ओकर कथन स्थिर अछि।” रेवती पूछलीह, “पछिला दुआरिक फोटो आ कर्मचारीक आवागमन-पञ्जी पूरा भेटल?” अमल कहला, “पुलिसक संग्रह अधूरा अछि। जँ आओर आवश्यक सामग्री भेटय तँ विधिसम्मत रूपेँ न्यायालयक समक्ष राखब पड़त।” दूनू अधिकारीक दायित्व आ न्यायिक मर्यादाक विषयमे सहमत छलाह; दोषी साबित करबाक जल्दबाजी सत्यक स्थान नहि लऽ सकैत छल।

एहि समय शिवनारायणक स्वास्थ्यमे किछु गिरावट आयल। हुनका साँझक किछु समय पुस्तक खोलब कठिन होइत छल। रेवती पिता लग बैसि २००० क नीलकान्त साहक मुकदमाक एक दृश्य स्मरण करौलीह—मृत रामकिशुनक नामवला पन्ना। पिता मुस्की देलनि। “तखन ओ आदमी अपन किछु गलती स्वीकार कएलक, मुदा सब आरोप नहि। न्यायालय ओही भिन्नता देखलक। आ एहि नव मुकदमामे?” रेवती कहलीह, “एतय ककरो देह आ गरिमा सम्बन्धी आरोप अछि। तथापि प्रमाणक सावधानी छोड़बाक नहि। पीड़िता कैं बोलबाक सुरक्षा आ अभियुक्तकैं उचित प्रतिरक्षाक अवसर एकहि न्यायिक व्यवस्थाक दू आवश्यकता छथि।”

दिसम्बर आरम्भ भेल तँ दिल्लीक साँझ जल्दी उतरय लागल। माधवीक किरायाक भवनक छतपर वस्त्र सुखबय राखल छल, पवनमे एक लाल चुनरी बारम्बार गिरय चाहैत छलि। बिमला ओकरा उठाकय भीतर अनलक। “ई रंग छोड़ि दैत अछि,” ओ कहलक। माधवी हँसलि, “तखन दू बेर धोइ देब।” महीनसभ बाद ओ साधारण बातपर हँसलि। बिमलाकैं बुझायल जे एहन छोट हँसीकैं कोनो मुकदमाक आदेशमे नहि लिखल जाइत, मुदा एहि पर जीवनक बचल हिस्सा निर्भर रहैत अछि।

दोसर दिस शेखर मल्होत्राक पत्नी मीना एक स्वयंसेवी विधिक सहायता-सभा गेलि। ओ आपन परिचय बतबामे संकोच कएलक। एक वृद्ध अधिवक्त्री हुनका कहलीह, “अहाँक परिवारक स्थिति कठिन अछि। मुदा मुकदमाक पीड़िता पर दवाब देब अथवा जनमत निर्माणक लेल ओकर परिचय फैलाएब उचित नहि। अहाँ चाही तँ अपन बच्चाक सहयोग लेल सहायता लऽ सकैत छी।” मीना अपन बेटी लेल विद्यालयसँ बात करबाक निश्चय कएलक। न्यायसंगत प्रक्रियाक भीतर आरोपीक परिवारक गरिमा सेहो विषय बनल।

एक साँझ नगरक बसमे किछु युवक महिलाक सुरक्षापर चर्चा करैत छल। एक कहलक, “सड़कपर अधिक पुलिस होयत तँ सभ ठीक।” दोसर उत्तर देलक, “बस समयपर चलय, रात्रिक बत्ती जलय, शिकायत सुनल जाए, तँ?” बगलमे बैसल महिला कहलीह, “आ घरमे लोक बेटीपर विश्वास करथि, से जोड़ू।” तीनू उपाय परस्पर-विरोधी नहि छल। माधवी अपन

सीटपर बैसलि ई चर्चा सुनैत रहलि; ओकरा पुछबाक इच्छा भेल जे अधिकार केवल भयक समय किएक स्मरण पड़ैत अछि। मुदा ओ चुप रहि अपन गन्तव्यपर उतरि गेलि।

दिसम्बरक दोसर सप्ताहमे प्रति-परीक्षणक एक नव दौर आरम्भ भेल। अविनाश अपन फाइलसँ पछिला दुआरिक रूपरेखा निकाललनि। “अहाँ कहैत छी ओहिसँ बाहर आयलहुँ। मुख्य सीढ़ीसँ कतेक दूरी?” माधवी अनुमान देलक। अविनाश स्थानक माप देखौलनि। किछु अन्तर भेटल। माधवी कहलक, “हम ओहि समय दूरी नापि नहि रहल छलीह।” न्यायाधीश कहलनि जे घटनास्थलक विशिष्ट माप विशेषज्ञ वा स्थल-अभिलेखसँ निश्चित होयत; साक्षीक अनुमानक स्थान अलग अछि।

अविनाश पुछलनि, “बाहर आबि अहाँ पहिने ककरा देखलहुँ?” माधवी किछु क्षण सोचलक। “पहिने ककरो नहि।” “तकर बाद?”—“बगल दिस सड़कक एक पीयर बत्ती।” “आ दोसर मनुष्य?” माधवीक हाथ थरथराएल। न्यायाधीश पानि देबाक निर्देश देलनि। अविनाश प्रश्नक स्वर मन्द कएलनि। “हम केवल ओहि समयक क्रम बुझय चाहैत छी।” माधवी आँखि बन्द कएलक। ओकरा एक स्त्रीक आवाज स्मरण पड़ि रहल छल—“एतय बैसि जाउ।”

ओहि दिन प्रतिरक्षाक प्रश्न समाप्त नहि भेल। माधवी कहलकि जे ओकरा थोड़बेक विराम चाही। न्यायाधीश ओकरा समय देलनि। विराममे रेवती कोनो नव कथा सुझौने बिना कहलीह, “जे स्मरण आबि रहल अछि, ओकर वास्तविकता खुद परखू। जँ निश्चित नहि, तँ अनिश्चित कहब। जँ स्मरण स्पष्ट अछि, तँ गवाहीमे सत्य कहब।” माधवी उत्तर देलक, “हमरा एक महिला स्मरण पड़ैत छथि। मुदा हम हुनकर नाम पहिने कहने नहि छली।” रेवती ओकरा प्रश्नक अर्थ बुझलीह, मुदा उत्तरक दिशा निर्धारित नहि कएलीह।

विराम पछाति माधवी फेर साक्षीक स्थानपर बैसलि। न्यायाधीश पुछलीह जे ओ अपन कथन आगाँ बढ़ेबाक लेल तैयार अछि कि नहि। माधवी स्पष्ट कहलक—“हम एक बात पहिने नहि कहने छलहुँ।” कोठरीमे बैसल व्यक्ति सभ सतर्क भऽ गेलाह। न्यायाधीश ओकरा बिना रोकने कहबाक अवसर देलनि, मुदा साथे दर्ज करौलनि जे नव तथ्यक प्रासंगिकता आ स्वीकार्यताक परीक्षण विधिक प्रक्रियासँ होयत।

“पछिला दुआरिसँ बाहर अएलापर हम सीढ़ीक कोनमे बैसि गेल रही। ओतय सफाइक काज करनिहार पूनम साहनी आयलि। ओ हमरा पानि देने छलीह। अपना ओढ़नीक एक कोनसँ हमरा मुँह पोछय देने छलीह। किछु देर हमर संग ठाढ़ रहलीह, तकर बाद हम बाहरक सड़क धरि गेलहुँ।” माधवीक आवाज एक बेर टूटल, फेर स्थिर भेल। “हम हुनकर नाम पहिने नहि कहलहुँ, कारण हुनका काज छूटि जायत, एहन भय छल।”

अविनाश तुरन्त पुरान बयानक पन्ना देखलनि। “अहाँ पहिल पुलिस-विवरणमे एहि महिला कैं उल्लेख नहि कएने छलीह?”—“नहि।” “दण्डाधिकारीक समक्ष कथनमे?”—“ओतहु नहि।” “किएक?” माधवी उत्तर देलक, “ओ हमरासँ कहने छलीह जे संस्थानक कोनो विवादमे हुनकर नाम नहि आनब। हुनकर दूटा छोट बच्चा छल। हमहुँ ओहि समय लोकक भयमे छलीह। हम सोचलहुँ जे जे हमर संग भेल, से कहब पर्याप्त होयत।” अविनाश पुछलनि, “आ आब एतय कहबाक निर्णय किएक?” माधवी कहलक, “अहाँ पूछलहुँ बाहर ककरा देखलहुँ। हम जँ नहि कहैतहुँ तँ आधा स्मृति लुकबैतहुँ।”

न्यायाधीश एहि नव कथनकैं तत्काल सत्य मानि नहि लेलीह। ओ पूछलीह, “अहाँ कहैत छी पूनम घटनाक बाद भेटल छलीह, घटनाक समय नहि?” माधवी उत्तर देलक, “हँ, हमरा घटना घटैत समय हुनका देखल स्मरण नहि अछि।” ई अन्तर महत्त्वपूर्ण छल। पूनम सम्भवतः माधवीक तत्कालीन अवस्थाक साक्षी भऽ सकैत छलीह; कथित अपराधक प्रत्यक्षदर्शी, से एखन नहि कहल जा सकैत छल।

अमल दास आग्रह कएलनि जे नव नामक जाँच लेल समुचित अवसर भेटय। अविनाश कहला, “हमर पक्षकैं सेहो एहि नव कथनक पूर्ण प्रति, सम्भावित साक्षीक जाँच आ प्रति-परीक्षणक अवसर चाही। एहन सूचना विचारणक बीच पहिल बेर आएल अछि; केवल एहि आधारपर भरोसा नहि कएल जा सकैत।” न्यायाधीश सहमति देलनि जे अभियोजन नव व्यक्तिक उपलब्धता, प्रासंगिकता आ आवश्यक विधिक कदमक विषयमे आवेदन देय, प्रतिरक्षाकैं सुनल जाए, आ न्यायालय उचित आदेश देत।

कोठरीसँ बाहर निकलि माधवी पाछाँ मुड़ि नहि देखलक। रेवती हुनकर संग बरामदाक शान्त कोन धरि गेलीह। “हम गलत कएलहुँ?” माधवी पुछलक। रेवती कहलीह, “ककरो रक्षा

करबाक भयमे नाम नहि कहब आ न्यायालयमे पूछलापर नाम कहब—एहि दुनूक अर्थ बुझय पड़त। अहाँक कारण बताओल गेल अछि। आब अदालत निर्णय करत जे एहि नव कथनक वजन कतेक अछि। हम एखन जे नहि जानैत छी, से सत्य कहि नहि सकैत छी।” माधवीक मुखपर सन्तोष नहि, मुदा एक भारी संकोचक स्थानपर स्पष्टता आयल।

अविनाश अपन मुवक्किलकेँ अलग भेटलाह। शेखर कहलक, “आब नव स्त्री आनल जा रहल अछि। ई सब बनाओल अछि।” अविनाश उत्तर देलनि, “अहाँकेँ जे जानकारी अछि, से दी। कोनो साक्षीकेँ झूठ कहय लेल ओकर भूमिका, अभिलेख आ कथन परखय पड़त। बिना परीक्षणक हमरो निष्कर्षक उपयोग न्यायालयमे नहि।” शेखर पुछलक, “जँ ओ स्त्री कहय जे माधवीकेँ देखल?”—“तखन हम पूछब कखन, कतय, कोन अवस्थामे। जँ ओ प्रत्यक्ष घटना नहि देखलनि तँ ओकरा ओहि सीमामे सुनल जाएत। अहाँक दोष तय करबाक दायित्व एखन न्यायालयपर अछि।”

पूनम साहनीक पता खोजब सहज नहि छल। ओ संस्थानक नियमित नियुक्त कर्मचारी नहि, सफाइ-सेवा दैनिहार एक निजी उद्यमसँ जुड़ल छलीह। ओहि वर्ष जून पछाति उद्यमक करार बदलल छल। कर्मचारी-पञ्जीमे पूनमक नामक आगाँ स्थानान्तरण लिखल छल, मुदा पता आधा अधूरा। एक अधिकारी कहलक, “ओ अपन गाम चलि गेलि।” दोसर कहलक, “एखन पश्चिम दिल्लीमे रहतीह।” अमल दास पुलिस-अधिकारीसँ वैधानिक प्रक्रिया अनुसार पता आ सेवा-अभिलेखक सत्यापन करएबाक निवेदन कएलनि। ककरो घरक निजी पता समाचारक सामग्री नहि बनाओल गेल।

रेवतीक मनमे सोनपुराक वाचनालयक ‘म. दास’ हस्ताक्षरक विवाद फेर उभरल। ओहि ठाम महेश्वर दासक नामसँ मनमोहन दासक भिन्नता स्थापित करबाक प्रश्न छल; एतय एक पूनमक नाम साँझक गवाहीक नव सम्भावना बनल। दूनू मामलामे नाम भेटब अन्तिम सत्य नहि। ओ सोचलीह—कतेक असहज अछि जे सामान्य जीवनमे अपन पहिचान सहज अछि, अदालतमे ओ प्रमाणक एक कठिन धरातल बनि जाइत अछि।

दिसम्बरक मध्य धरि दिल्लीमे ठण्ढ बढ़ल। एक राति माधवी छात्रावासक पुरान मित्रसँ भेटबाक लेल दक्षिण दिल्ली गेलि। घर घुरैत बसमे भीड़ छल। बिमला ओकरा आग्रह कएने

छलि जे देर भऽ जाए तँ सुरक्षित सवारी लियौ। माधवी एहि सल्लाहमे प्रेम बुझलक, मुदा साथे एक कटु प्रश्न सेहो—प्रत्येक मार्गक सुरक्षा सुनिश्चित नहि, ताहि लेल प्रत्येक महिला स्वयं सदा गणना करय। ओ घुरि एलापर डायरीमे लिखलक जे सुरक्षित नगर केवल सावधान नागरिकक भरोसापर नहि चलि सकैत।

१६ दिसम्बरक राति दिल्लीमे एक भयावह घटना घटल। अगिला भोरिसँ समाचारक भाषा बदलि गेल। एक युवतीपर सामूहिक यौन हिंसा आ गम्भीर अत्याचारक समाचार सामने आयल; ओकर मित्र सेहो आहत छल। अस्पताल, पुलिस आ सड़कक समाचार पढ़ैत माधवीक हाथ काँपल। मुदा ओ ओहि युवतीक जीवनकेँ अपन कथाक विस्तार जकाँ नहि देखलक। ओकरा बुझायल जे प्रत्येक पीड़िताक अलग परिवार, अलग सपन, अलग अनुभव होइत अछि। दोसर स्त्रीक दुःखकेँ अपन सार्वजनिक छवि बनायब अनुचित अछि।

१७ दिसम्बरसँ दिल्लीक सड़कपर विरोधक स्वर उठय लागल। विद्यार्थी, महिला, पुरुष, चिकित्साकर्मी, शिक्षक, श्रमिक—अनेक लोक सार्वजनिक सुरक्षा आ उत्तरदायित्वक माँग करैत छलाह। उर्मिला समाचार संकलनक लेल गेलि। ओकरा मंचपर अनेक वाक्य सुनाइत छल, मुदा ओ देखलक जे एक साधारण छात्रा अपन छोट कागजपर लिखने अछि—“हम राति घर घुरि सकी।” एकरासँ पैघ राजनीतिक घोषणाक बीच ई माँग छोट नहि छल।

किछु लोक तत्काल कठोर दण्डक माँग करैत छलाह। किछु महिला-अधिकार कार्यकर्त्री कहैत छलीह जे उचित अनुसन्धान, संवेदनशील पुलिस, सार्वजनिक परिवहन, शिक्षण आ न्यायिक प्रक्रियाक सुधार सेहो आवश्यक अछि। एक युवा अधिवक्ता प्रतिवाद कएलक —“अदालतसँ पहिने दोष निश्चित करब न्याय नहि।” भीड़मे सहमति आ असहमति दुनू छल। उर्मिला एहि अनेक स्वरकेँ अपन समाचारमे अलग-अलग स्थान देलक। सार्वजनिक वेदना एकहि विचारक अनिवार्य स्वीकृति नहि होइत।

माधवी अपन कोठरीमे समाचार सुनैत छलीह। जानकी गामसँ फोन कएलीह। “दिल्लीमे बहुत भीड़ अछि; तूँ घर घुरि आ।” माधवी उत्तर देलक, “हम एखन पढ़ाइ आ मुकदमाक बीच छी। हम सुरक्षित छी, माँ। भीड़ हमरा लेल नहि अछि, मुदा हुनका सभक प्रश्न हमर प्रश्नसँ मिलैत अछि।” जानकी किछु देर चुप रहलीह। फेर कहलीह, “तूँ जे बाट चुनने छह, ओहिमे

लोकक साथ भेटय। मुदा अपन खयबाक आ सुतबाक ध्यान सेहो राखिह।” सामान्य मातृ-स्नेहमे अनिश्चित भविष्यक भार छल।

उर्मिला दिल्लीक विरोध पर समाचार लिखैत समय माधवीक मुकदमाक उल्लेख नहि कएलनि। ओकर सम्पादक पूछलनि, “अहाँ एतबे दिनसँ एक सत्र न्यायालयक प्रकरणक बाहर जाइत छी, ओकर तुलना करब उपयोगी होयत?” उर्मिला उत्तर देलीह, “ओहि विचारणक गोपनीयता अछि। हम भीड़केँ एक स्त्रीक बिना अनुमति ओकर जीवनक दुआरि खोलबाक अधिकार नहि देब।” सम्पादक सहमत भेलाह। सार्वजनिक आक्रोशक न्यायसंगत स्वरूपमे गोपनीयताक सम्मान आवश्यक छल।

सोनपुरामे शारदा विद्यालयक बालिकासभसँ दिल्लीक समाचार सम्बन्धमे चर्चा कएलीह। ओ घटना घिनौना कहि स्त्रीकेँ घरमे राखबाक उपदेश नहि देलीह। ओकरा बदला पुछलीह, “अहाँ सभक बाटमे कोन बत्ती बन्द अछि? कोन वाहन समयपर नहि चलैत? कुन कार्यालय शिकायत नहि सुनैत?” बालिकासभ उत्तर लिखलनि। अर्पणा नगर-परिषदक बैठकमे कागज प्रस्तुत कएलीह। परिषदक एक सदस्य कहला, “अहाँ सभ राष्ट्रीय घटनाक बहाने स्थानीय राजनीति करैत छी।” अर्पणा उत्तर देलीह, “स्थानिक समस्या देशक प्रश्नसँ बाहर नहि अछि। जे बत्ती बन्द अछि, ओकरा जलएबाक आदेश नगर देत, सर्वोच्च न्यायालय नहि।”

लुधियानामे सुनीता आ चम्पा कारखानाक महिला-कर्मचारीसभक संग छोट सभामे बैसलि। एक श्रमिक अपन रात्रिक पालीसँ घर पहुँचबाक अनुभव सुनौलक। ठेकेदारक आदमी कहलक जे “परिवार अपन व्यवस्था करय।” सुनीता पुछलक, “जखन कारखाना रात्रिमे काम लैत अछि, तखन महिलाक सुरक्षित बाहर निकलबाक व्यवस्था केकर दायित्व?” सभामे अनुचित व्यवहारक शिकायतक मार्ग आ प्रमाण-संरक्षणक विषय उठल। जगदीशक पुरान मजदूरी-विवाद एखनहुँ पृथक छल। दू संघर्षक बीच सम्बन्ध जीवनक छल, न्यायिक फाइलक नहि।

जखन दिल्लीक आन्दोलन तीव्र भेल, शिवनारायण रेडियोपर समाचार सुनैत रहला। ओ रेवतीसँ कहला, “देशक क्रोध महत्त्वपूर्ण अछि। मुदा न्यायाधीशकेँ क्रोधसँ प्रमाणक स्थान नहि भरबाक चाही।” रेवती कहलीह, “आ न्यायालयकेँ एतेक शान्त सेहो नहि होयबाक चाही जे

पीड़िताक आवाज सुनाइए नहि।” पिता बेटीकेँ देखलनि। “तखन न्यायालयक भाषा तैयार होइत अछि—भावनाक उपेक्षा नहि, भावनाक प्रमाण बनाओल नहि।”

२३ दिसम्बरक साँझ रेवतीक लग पुलिस-जाँचसँ सम्बन्धित एक आवेदनक प्रति आयल। सफाइ-सेवा उद्यमक कर्मचारी-पञ्जीमे पूनम साहनीक नाम भेटल छल, मुदा ओकर उपस्थिति एक मासक भीतर तीन बेर काटिकय फेर लिखल गेल छल। अभियोजन चाहैत छल जे मूल पञ्जी न्यायालयमे मँगाओल जाए। प्रतिरक्षा पक्षकेँ सूचनाक नकल भेजल गेल। रेवती कागज देखैत सोचलीह जे जँ मूल पुस्तकमे फेरबदल अछि, तँ तकर कारण साधारण लेखाकीय त्रुटि सेहो भऽ सकैत अछि। केवल काटल पाँति अपराधक घोषणा नहि।

ओम्हर पूनम पश्चिम दिल्लीक एक छोट बस्तीमे अपन दू बच्चाक संग रहैत छलीह। नव करारक बाद ओकर मजदूरी घटि गेल छल। एक सरकारी कर्मचारीक पूछताछक बात सुनिते ओ भयभीत भेलीह। “हम तऽ ककरो मारल-पीटल नहि देखलहुँ,” ओ कहलीह। अधिकारी उत्तर देलनि, “अहाँ जतेक देखलहुँ, ओतेक कहब। नहि देखल बात कहबाक ककरो आवश्यकता नहि।” पूनम पुछलीह, “हमर नौकरी फेर जायत तँ?” अधिकारी तत्काल आश्वासन नहि देलनि; उपलब्ध सहायता आ समुचित कानूनी संरक्षणक मार्गक जानकारी देलनि। एहन सत्यक मूल्य अक्सर कमजोर व्यक्तिक जीवनमे बेसी पड़ैत अछि।

पूनमक पड़ोसिन एक पत्र लिखबाक सलाह देलकि। पूनम कागजपर लिखलक जे जूनक एक साँझ कार्यस्थलक पछिला सीढ़ीक कात एक युवा महिला केँ व्याकुल अवस्थामे देखल छलि, ओकरा पानि देने छलि। ओ ककरो घटना घटैत नहि देखल छलि। लिखित विवरणमे ओ घटना-कालनिर्धारणक पूर्ण निश्चितता व्यक्त नहि केलक। चिट्ठी अपन पासे राखलक, कारण ककरा देब, से तय नहि करि पबैत छलि। बच्चासभ ओकरा आसपास अभ्यास-पुस्तक खोलने छल। माँक भय आ बालकक सामान्य गृहकार्य एकहि मेजपर उपस्थित छल।

सत्र न्यायालयमे अगिला सुनबाईक दिन अभियोजन मूल सेवा-पञ्जी आ पूनमक सम्भावित साक्ष्य सम्बन्धमे आवेदन प्रस्तुत केलक। अविनाश बत्रा लिखित आपत्ति देलनि जे विलम्बसँ आएल नामक कारण हुनकर पक्षक तैयारीक अवसर प्रभावित होइत अछि। न्यायाधीश कहलीह जे न्यायालय उपयुक्त प्रक्रिया अपनौत, नवीन तथ्यक उपयोगक सीमा

निर्धारित करत आ प्रतिरक्षाक प्रति-परीक्षणक अधिकार सुरक्षित रहत। ओहि दिन ककरो दोषक विषयमे निर्णय नहि भेल। मुद्दा केवल एतेक छल—सत्यक सम्भावित स्रोतकेँ केना न्यायसंगत रूपसँ सुनल जाए।

दुआरिसँ बाहर रेवती आ अविनाश पहिल बेर शान्त स्वरमे बात कएलनि। अविनाश कहला, “आइ अहाँक पक्षक नामक सूचीमे एक नव साक्षी जुड़ल। जँ काल्हि दस नव नाम आएत तँ विचारण कखन पूरा होयत?” रेवती उत्तर देलीह, “अहाँक आपत्ति उचित अछि। मुदा जँ आवश्यक साक्षी भेटैत छथि, तँ केवल देरीक कारण हुनका अनसुना करबो कठिन अछि। हुनका वास्तवमे की ज्ञात अछि, से परखबाक समान अवसर दुनू पक्षकेँ चाही।” अविनाश सहमत भऽ हाथ जोड़ि आगाँ बढ़लाह। अदालतक प्रतिद्वन्द्विता बाहर व्यक्तिगत शत्रुतामे बदलल नहि।

ओही साँझ समाचार आयल जे दिल्लीक १६ दिसम्बरक हिंसाक शिकार युवतीक दशा अत्यन्त गम्भीर अछि। २९ दिसम्बरमे हुनकर निधनक समाचार सँ देश शोकमे डुबि गेल। उर्मिला समाचार-पत्रक लेल एक छोट लेख लिखलीह। ओ पीड़िताक जीवनकेँ केवल दुखक प्रतीक नहि बनौने छलीह; ओ पूछलनि जे सार्वजनिक सुरक्षा, चिकित्सकीय सहायता, जाँचक उत्तरदायित्व आ न्यायालयमे गरिमाक व्यवस्था पर ठोस कदम कोना उठत। रोषक बीच प्रश्नक स्पष्टता रखब ओकरा पत्रकारिताक धर्म बुझायल।

माधवी अपन घरक खिड़कीसँ ठण्ढ पवनक आवाज सुनैत छलीह। ओहि नवम्बरमे ओकरा अदालतक पहिल दिन याद आयल—बन्द दुआरि, पानि, शान्त न्यायाधीशक प्रश्न। आब देशक सड़कपर लाखो लोकक दुःख छल, मुदा ओकर अपन मुकदमा अपन गति सँ चलैत छल। ओ कहलक, “हम चाहैत छी जे दोसर स्त्रीक संग एहन नहि हो। मुदा हमर न्यायालय हमरा बतौत जे हमर घटनामे की सिद्ध भेल। भीड़ हमरा लेल साक्षी नहि बनि सकैत।”

वर्षक अन्तिम दिन शारदा सोनपुराक विद्यालयमे नव वर्षक उपस्थितिक पञ्जी तैयार करैत छलीह। बिन्दु, फुलवा आ अन्य छात्रासभ एक छोट अर्जीद्वारा विद्यालयक लग बन्द बत्ती सुधारबाक माँग कएने छलीह। नगर-परिषदक कारीगर आयल, तार जाँचलक आ कहलक जे एक सप्ताहमे काम होएत। छात्रासभ तारीख लिखि लेलक। शारदा कहलीह, “जखन

अधिकारी वचन देथि, तकर दिन लिखबाक सीखू। आ जखन सुधार भऽ जाए, से सेहो लिखू।” एहि शिक्षामे भय नहि, नागरिकक अधिकारक व्यवहार छल।

लुधियानामे सुनीता नव वर्षक पहिल वेतन-पञ्जी जाँचबाक प्रस्ताव तैयार कएलक। ओकरा हरदेव चौहानक पुरान अनुत्तरित नाम एखनहुँ स्मरण छल, मुदा ओहि नामकेँ बिना प्रमाण कारखानाक कोनो नव अपराधसँ नहि जोड़लक। जँ हरदेव वास्तवमे काम कएने छल, तकरा अपन मजदूरीक अधिकार छल; जँ दोसर व्यक्ति ओकर नाम उपयोग कएलक, तखन अन्य प्रश्न उठत। न्यायालयक अनुभव सुनीताकेँ सिखौने छल जे नामकेँ व्यक्ति सँ जोड़बाक पहिने जीवनक सत्य खोजब आवश्यक अछि।

शिवनारायण अपन पुरान लकड़ीक सन्दूकमे किछु पत्र क्रमबद्ध करैत छलाह। २००० क नीलकान्तक निर्णय, २००४ क सुनामीक समाचार, २००५ क सूचनाक आवेदन, आ २०१२ क स्त्री-अधिकारक सार्वजनिक विमर्श। रेवती कहलीह, “ई सभ अलग मुकदमा अछि, मुदा हमरा मनमे एकहि प्रश्न लौटैत अछि—ककरो कहबाक अवसर कतेक भेटैत अछि?” पिता कहला, “आ दोसर प्रश्न जोड़ू—ओ कहलक, तकरा प्रमाणक कसौटीपर न्यायपूर्वक कोना परखल जाए?” दुनू प्रश्न बिना एक-दोसरकेँ नष्ट कएने साथ रहि सकैत छल।

जनवरीक पहिल सप्ताहक सुनबाई लेल न्यायालयक सूची आएल। पूनमकेँ विधिसम्मत सूचना देबाक प्रक्रिया आरम्भ भेल छल; ओकर सम्भावित गवाही एखन अभिलेखक अन्तिम सत्य नहि बनल छल। अभियोजन एक मूल सेवा-पञ्जी प्रस्तुत करबाक तैयारीमे छल, प्रतिरक्षा ओकर लिखावट आ तिथिक पुष्टि चाहैत छल। माधवी ई सुनि कहलक, “ओ आयतीह तँ हम हुनका धन्यवाद देब।” रेवती उत्तर देलीह, “एखन धन्यवाद नहि, पहिने हुनकर अपन सत्य सुनब। हुनकर बात अहाँक स्मृतिसँ भिन्न होयत तँ ओहो सम्भव अछि।” माधवी एहि कठिन उत्तरकेँ स्वीकार कएलक।

ओहि राति माधवी अपन कोठरीमे वर्गक पुस्तक रखि एक खाली पन्ना खोललक। ओ लिखलक—“साक्षी बनब केवल अदालतमे ठाढ़ होयब नहि। जे कहब, तकर सीमा जनब सेहो अछि।” किछु देर बाद ओ पन्ना बन्द कएलक आ अगिला दिनक परीक्षाक लेल पढ़य लगलि।

दूर शहरमे शोकक मोमबत्तीसभ धीरे-धीरे बुझि रहल छल, मुदा ओकर टेबुलपर छोट बल्ब जलैत छल। नीक समाजक भविष्यकेँ ओ ओही प्रकाशमे पढ़बाक कोशिश करैत छलीह।

अगिला भोरि रेवतीक मेजपर जोधपुरसँ एक पुरान पत्र आयल। मरुधरक भूमि-विवाद उच्च न्यायालयमे नव सुनबाईक लेल सूचीबद्ध भेल छल। कुसुम पत्रमे लिखने छलीह जे किसान परिवारक माटि आ छात्रसभक पढ़ाइकेँ एक-दोसराक विरोधी बनौने बिना न्याय चाही। रेवती पत्र पढ़ि माधवीक मुकदमाक फाइल सावधानीसँ बन्द कएलीह। एक अदालतमे स्त्रीक बयानक अधूरा प्रश्न छल, दोसरमे किसानक नक्शाक अधूरा प्रश्न। दुनू स्थानपर ओ एकहि पाठ लऽ जा रहल छलीह—कागजमे लिखल सत्य मनुष्यक जीवन सुनल बिना पूरा नहि होइत।

अध्याय १६ — उच्च न्यायालयक प्रश्न

जोधपुर आ राजस्थान उच्च न्यायालय, दिसम्बर २०१२ सँ जनवरी २०१३

दरभंगामे जनवरीक पहिल डाक आबि रहल छल। आँगनक ओस एखन सुखल नहि छल, तखने रेवती झा एकटा पीयर लिफाफा खोललनि। लिफाफाक भीतर जोधपुरसँ सुरेश पारीकक पत्र, राजस्थान उच्च न्यायालयक सुनबाई-सूचीक नकल आ दू पृष्ठक अपील-सार छल। कागजक कोन घिसल छल। पुरान भूमि-विवादक तिथि पंद्रह जनवरी निश्चित भेल छल। रेवतीक आँखि अपनहि नवम्बर आ दिसम्बरक दिल्ली-प्रवासक कागजपर गेल। माधवीक आपराधिक विचारणमे पूनम साहनीक सम्भावित गवाहीक प्रश्न एक ओर पड़ल छल; मरुधरक खेतक सीमा दोसर ओर। न्यायिक दायित्वक ई दू बाट एक-दोसराकेँ काटैत नहि छल, मुदा समय दुनू एकहि देहसँ माँगैत छल।

शिवनारायण झा बरामदामे बैसल समाचारपत्र मोड़लनि। बेटीकेँ पत्र देखैत देखि पुछलनि, “जोधपुरक बात अछि?” रेवती सिर हिलौलनि। “रामदेव मण्डलक अपील। प्रथम न्यायालयक अंतिम निर्णयक बाद पहिल अपीलक सुनबाईमे मूल नापीक त्रुटि फेर मुख्य भऽ गेल अछि।” शिवनारायण कागज पढ़लनि। हुनकर आँखि एक पाँतिपर ठमकल। “एतय लिखल अछि जे हरिराम जोशी मूल नक्शा देखलाक बात वापस लेने छलाह। ई स्वीकार कहिया भेल?” “२००६ क विचारणक समय। २००७ मे नव नापी भेल, तकर प्रतिवेदन फेर विवादित रहल। वर्षो पछाति २०११ क अन्तमे दीवानी न्यायालय निर्णय देलक।” शिवनारायण धीरे उत्तर देलनि, “तखन उच्च न्यायालयकेँ कोनो नब कथा नहि, पहिने दर्ज सम्पूर्ण अभिलेख पढ़बाक अछि।”

जोधपुरमे ओहि समय रामदेव मण्डलक घरक कूपपर पात झरल छल। कूपक चारूकात बनल पुरान घेरामे दूटा पाथर फेर ढीला भऽ गेल छल। जीवनी देवी एखन प्रत्येक घैल पानि खींचबाक समय घेराक मजगूती देखैत छलीह। हुनकर लग जमीनक मुकदमा कागजक अंश नहि छल। बरखा आयलापर खेतक पानि कतय जाएत, शिशिरमे गामक छोट बालक कूपक लगसँ सुरक्षित बाटैं केना चलत, आ घरक पाछाँक दू गाछक छाँह बाँचत कि नहि—ई सभ एकरे भाग छल। रामदेव राति खाँसैत छलाह। हुनकर घुटना मेड़ धरि जाएब कठिन बना देने छल। ताहियो ओ प्रत्येक सुनबाईक तिथि स्वयं पूछैत छलाह।

कुसुम मण्डल बाबूक सामने प्रथम न्यायालयक निर्णय खोललक। ओकर कोनपर लाली स्याहीमे तीन शब्द लिखल छल—“पगरिया शेष रहल।” न्यायालय २०११ मे शिक्षण न्यासक मुख्य भूखण्डक पंजीकृत क्रय-पत्रकेँ मान्यता देने छल। रामदेवक उत्तर-पश्चिमी खेतक स्वामित्व सम्बन्धी किछु घोषणा सेहो स्वीकार कएने छल। मुदा कूपसँ लगैत पुरान पगरिया आ पानि-निकासक अधिकारपर निर्णायक स्पष्ट निष्कर्ष लिखल नहि गेल छल। न्यायाधीश कहलने छलाह जे प्रस्तावित निर्माणसँ अधिकारक हानि प्रमाणित नहि भेल; एही कारण स्थायी निषेधाज्ञाक विस्तृत माँगक एक हिस्सा अस्वीकृत भेल। किसान परिवार ओहि अस्वीकृत हिस्साक अपील कएने छल। न्यासकेँ सेहो आदेशक एक सीमा कठिन बुझाइत छल, मुदा ओकर अलग आपत्तिसभ विधिक क्रममे दर्ज छल।

“बाबूजी,” कुसुम कहलक, “हमरा सभ एहि बेर न्यायालयसँ कोनो आदमीकेँ अपमानित करबाक अधिकार नहि माँगबाक अछि। एकदम स्पष्ट बाट चाही। जे माटि हमर अछि, ओकरा पर हमर अधिकार; जे न्यास किनलक, ओकरा पर ओकर अधिकार; आ जे पानि सभ बरखसँ बटि-बटि बहैत अछि, ओकर बाट कागजसँ गायब नहि होए।” रामदेव बेटीकेँ देखलनि। “तों एतेक पढ़ि गेलें जे हमरा मनक बात तीन पाँतिमे कहि सकैछें,” ओ कहलनि। कुसुम मुस्की देलक। “पढ़लहुँ अहाँक केसक कागजसँ। पढ़ाइ सँ भिन्न ई पाठ छल।” जीवनी भीतरसँ बजलीह, “मुदा न्यायालयमे गामक बाटकेँ केवल मनक बात कहिकय नहि बचाओल जा सकैत अछि।”

अगिला भोरि रेवती जोधपुर पहुँचलि। बसक खिड़कीसँ दूर धरि पाथरक रङ्ग आ खुरखुर माटि देखाइत छल। शहरमे पुरान नील वर्णक दीवाल, नव व्यापारिक भवन आ महाविद्यालयक दीर्घ बस-पंक्ति एक-दोसरक कात उपस्थित छल। रेवतीकेँ २००२ क पहिल यात्रा स्मरण भेल। तखन कुसुम महाविद्यालयक छात्रा छलीह, नसीमा ओकर सखी, राकेश मेघवाल प्रतिदिन बसमे भीड़ सहैत छल। आब कुसुम विद्यालयमे पढ़बैत छलीह आ कानूनक पुस्तक सेहो स्वयं पढ़ैत छलीह। नसीमा सामाजिक सहायता-सम्बद्ध कार्यमे लागल छलीह। राकेश अपन पढ़ाइ पूरा कऽ एक छोट कार्यालयमे काम करैत छल। परिसरक गाछसभ ऊँच भऽ गेल छल, मुदा विवादित कूपक दिशा एखनहुँ न्यायालयक अभिलेखमे उलझल छल।

सुरेश पारीक अपन कार्यालयमे नक्शाक तीनटा प्रति मेजपर पसारि देने छलाह। रेवती आबिते ओ कहला, “एहि प्रतिमे १९८२ क दिशाचिह्न; एहि मे २००२ क आयोगक रेखा; आ तेसर २००७ क नव मापन। तीनूकेँ एकक ऊपर दोसर राखि देबासँ समाधान नहि होइत। सभक अपना स्रोत आ सीमा अछि।” रेवती मूल लिखित गवाहीक पन्ना खोललीह। “हरिराम जोशीक उत्तर शब्दशः अछि ने?” “हँ। ओ कहने छलाह—मूल नक्शा स्वयं नहि देखलहुँ, प्रमाणित नकलक आधारपर लिखलहुँ। मुदा स्थलपर जे वर्तमान कूप देखल, तकर स्थान सही चिन्हलहुँ। एहि स्वीकारकेँ छात्रसभ न्यासक जालसाजीक प्रमाण बुझने छल, मुदा हम अपन मुवक्किलकेँ सेहो ओ निष्कर्ष नहि मानबाक कहलहुँ।”

रेवती पूछलीह, “प्रथम न्यायालय तकर मूल्यांकन कोना कएलक?” पारीक एक पाँति देखौलनि। निर्णयमे हरिरामक स्थलीय वर्णनकेँ स्वीकार्य मानल गेल छल, परन्तु मूल नकलक दिशा सम्बन्धी अविश्वसनीय हिस्साकेँ निश्चित आधार नहि मानल गेल। ताहियो कूपक बगलसँ पुरान पगरियाक वास्तविक चौड़ाइ आ पानि-निकासक निरन्तर उपयोगपर अलग प्रश्न तैयार नहि कएल गेल। “यही अपीलक केन्द्र अछि,” पारीक कहलनि। “हमरा सभ पुनः पूरा खेत नापबाक आग्रह नहि। एक आवश्यक अनिर्णीत प्रश्नकेँ न्यायसंगत पद्धतिसँ परीक्षण चाही।” रेवती उत्तर देलीह, “मुदा जँ निर्णयक शेष अंश उपलब्ध प्रमाणेँ टिकैत अछि, तकरा उलटबाक कारण नहि। अदालतकेँ सीमित निवेदन सुनबाक चाही।”

शरद कोठारीक स्वास्थ्य आब नाजुक रहैत छल। न्यासक कार्यालयमे हुनकर पहिल कुर्सी खाली पड़ल छल, मुदा ओ समय-समयपर पुस्तकालय धरि पहुँचैत छलाह। प्रह्लाद वैद्य एखन सचिव छलाह। ओ सालो धरि निर्माण रोकल रहबाक कारण व्यय आ विद्यार्थीक असुविधाक मोट फाइल तैयार कएने छलाह। रेवती हुनकर भेट चाहलीह नहि; पक्षकारसभसँ प्रत्यक्ष विवादित तथ्यपर अनौपचारिक बातचीतसँ बचबाक निर्णय छल। मुदा परिसरक सार्वजनिक बैठकमे विद्यार्थी-सहायता, छात्रावासक क्षमता आ विवादरहित जमिनपर निर्माणक सम्भावनापर बोलबाक निमन्त्रण स्वीकार कएलनि। ओतय सभ पक्षक प्रतिनिधि उपस्थित छलाह।

बैठकमे नसीमा उठि कहलीह, “एगारह वर्षसँ छात्रावास शब्द प्रत्येक दानक अपीलमे लिखल जाइत अछि। छह वर्ष पहिने दू कक्ष मरम्मत भेल। ओहि दिन हम सभ आशा कएने रही जे नव आगन्तुक छात्रा सुरक्षित रहत। आब संख्या कतेक बढ़ल?” प्रह्लाद कागज देखिकय उत्तर देलनि, “तेइस अतिरिक्त स्थान बनल।” राकेश पुछलनि, “पिछला वर्ष प्रवेश चाहनिहार छात्रा कतेक छलीह?” “छियासी।” सभाक मौनमे अन्तर स्पष्ट छल। कुसुम कहलीह, “तैँ किसानक कूपक पगरिया पर भवन बढ़ा देब न्यायसंगत समाधान नहि। निर्विवाद भूमिपर भवन बनाउ। जे बँचल अछि, ओकरा सुधारू।” प्रह्लादक चेहरापर कष्ट छल, मुदा ओ आंकड़ा काटि नहि सकलाह।

साँझमे शरद कोठारी नसीमाकेँ पुस्तकालयमे बजौलनि। वृद्धक हाथ काँपैत छल। “बेटी,” ओ कहला, “हम जखन पहिल दान देलहुँ तँ पुस्तकक अलमारी चाहैत रही। आब भवनक नामपर एतेक कागज बनल जे लोक पुस्तक ओहिमे रखने उद्देश्ये बिसरि गेल।” नसीमा उत्तर देलीह, “भवन बिना छात्रा रहत कतय? मुदा भवनक नामपर आनक जमिन नहि लेब।” कोठारी सहमति देलनि। “मुकदमा जीतब आ शिक्षा देब एक समान काज नहि। हम चाहैत छी न्यास कानूनी अधिकारक भीतर अपन दायित्व पूरा करय।” हुनकर आवाजमे क्रोध नहि, लम्बा समयक थकान छल।

उच्च न्यायालयक भवनक बरामदामे पंद्रह जनवरीक भोरि पाथरक सीढ़ीपर हलुक धूप पड़ल छल। प्रत्येक कोठरीक बाहर नामक सूची छल। अधिवक्तासभ कारी वस्त्रमे फाइल

दबौने जा रहल छलाह, पक्षकार अपन वकीलक चेहरा खोजैत छलाह। रामदेव पहिल बेर उच्च न्यायालयक परिसरमे एतेक दूर आबि बैसल छलाह। हुनका लग कमरक पट्टीमे एक छोट कागज छल जाहिपर कुसुम लिखने छलि—“पगरिया, कूप, नाली; तीनू अलग बात।” जीवनी सेहो संग छलीह। पारीक हुनका कहने छलाह जे अपीलक बहसमे मुख्य काम अधिवक्ताक होएत; न्यायाधीश जँ पक्षकारक कथन चाहताह तँ उचित प्रक्रिया अपनताह। रामदेवकेँ एतबे पर्याप्त बुझायल।

न्यासक ओरसँ अधिवक्ता हेमराज भण्डारी उपस्थित छलाह। भण्डारी आ पारीक बरामदामे एक-दोसराकेँ प्रणाम कएलनि। दुनू पहिने अनेक दीवानी प्रकरणमे आमने-सामने रहल छलाह। भण्डारी रेवतीकेँ देखि कहला, “अहाँक बहसक चर्चा पारीकजी कएने छथि। एतय पुरान सर्वेक्षणक प्रश्न अछि; सार्वजनिक उत्तेजनाक नहि।” रेवती उत्तर देलीह, “हमर चाहना सेहो अभिलेखक स्पष्ट पाठ अछि।” भण्डारी मुस्की देलनि। “अभिलेखक पाठ प्रायः स्पष्ट रहैत अछि; ओकर अर्थपर वाद बढ़ैत अछि।” पारीक कहला, “कखनो अभिलेख स्वयं अस्पष्ट होइत अछि। एहि बेर दुनू समस्या अछि।” तखने अदालतक परिचारक सुनबाई सूचीमे ओहि वादक संख्या पुकारलक।

न्यायमूर्ति पद्मजा राठौड़क एकलपीठमे प्रथम अपील सूचीबद्ध छल। रेवती उठलीह। हुनकर हाथमे चारि रंगक कागज नहि, केवल तीन चिन्हित खण्डक पुस्तक छल—विक्रयपत्र, २००६ क साक्षी-परीक्षण आ २०११ क निर्णय। न्यायमूर्ति पुछलनि, “अपीलार्थीक मुख्य आपत्ति की अछि? सम्पूर्ण विक्रयकेँ चुनौती देल जा रहल अछि कि केवल अधिकारक एक अंश?” रेवती स्पष्ट कहलीह, “माननीय न्यायालय, शिक्षण न्यासक वैध क्रयक पूर्ण भागकेँ रद्द करबाक आग्रह नहि। हमर आपत्ति सीमक समीपक कूपक पहुँच, पगरियाक निरन्तर उपयोग आ जल-निकासक अनिर्णीत प्रश्न सम्बन्धमे अछि।”

न्यायमूर्ति निर्णयक संबंधित पृष्ठ पढ़लनि। “प्रथम न्यायालय लिखैत अछि जे स्थायी निषेधाज्ञाक लेल पर्याप्त प्रमाण नहि। तखन अहाँ अतिरिक्त प्रमाणक आधार प्रस्तुत करैत छी कि पूर्वसँ दर्ज प्रमाणक गलत मूल्यांकन?” रेवती उत्तर देलीह, “मुख्यतः पहिने दर्ज प्रमाणक अपूर्ण मूल्यांकन। एक अलग निवेदन अतिरिक्त अभिलेखक संबंधमे अछि, मुदा ओकर ग्राह्यता

न्यायालय स्वतंत्र रूपसँ देखत। हम नहि चाहैत छी जे अपीलकेँ प्रथम विचारणक फेर आरम्भ मानल जाए।” न्यायमूर्ति सिर हिलौलनि। भण्डारीक ओर देखिकय कहलनि, “प्रत्यर्थीक उत्तर।”

भण्डारी अपन बहस ठाढ़ कएलनि। “न्यास पंजीकृत विक्रयपत्रक आधारपर दश वर्षसँ क्षेत्रक उपयोग करैत अछि। चिह्नित निर्माणक बहुतो भाग निर्विवाद भूमिपर अछि। अपीलार्थी आजु जे पगरियाक दावा करैत छथि, ओकर चौड़ाइ मूल वादपत्रमे स्पष्ट नहि। मापी सम्बन्धी दोषकेँ सम्पूर्ण निर्णयनक आधार बदलबाक कारण नहि बनाओल जा सकैत।” न्यायमूर्ति पुछलनि, “प्रथम न्यायालय पगरियाक उपयोगक अलग प्रश्न रचने छल?” भण्डारी रुकलाह। “विस्तृत शीर्षकसँ नहि, मुदा सामान्य स्वामित्वक प्रश्नक भीतर साक्ष्यपर विचार भेल।” “कुन पृष्ठ पर?” भण्डारी फाइल पलटलनि। एक मिनट धरि कागजक खड़खड़ाहट सुनाइत रहल।

रेवती हुनका रोकलीह नहि। भण्डारी निर्णयक एक भाग पढ़लनि, जाहिमे कूपक अस्तित्वक उल्लेख छल, परन्तु लोकक आवागमनक निरन्तरता आ नालीक दिशाक चर्चा नहि छल। न्यायमूर्ति कहलनि, “कूपक अस्तित्व, कूप धरि जाइत बाट आ पानि बहबाक अधिकार तीनटा अलग तथ्य छथि। एकर प्रमाण सेहो अलग होयत। हमरा ई जानबाक अछि जे प्रथम न्यायालय वास्तवमे कोन प्रश्न पर निर्णय देने अछि।” रेवती मनहि मन कुसुमक छोट कागजक तीन शब्द स्मरण कएलनि। न्यायालयक प्रश्न ओहि क्रममे सामने छल, मुदा एकर अर्थ ई नहि जे रामदेवक दावा स्वतः सफल भेल।

अगिला प्रश्न हरिराम जोशीक गवाहीक छल। रेवती न्यायालयकेँ २००६ क सही पृष्ठ देखौलनि। “एतय साक्षी कहैत छथि जे ओ मूल नक्शा नहि देखलनि; प्रमाणित नकलसँ निष्कर्ष निकाललनि। फेर ओ वर्तमान कूपक स्थिति स्वयं देखबाक बात स्वीकार करैत छथि। अपीलार्थी एहि दुनू अंशकेँ अलग मूल्य देबाक आग्रह करैत छथि।” न्यायमूर्ति पुछलनि, “नकल प्रमाणित छल तँ मूल नहियेँ देखला मात्रसँ नकल अवैध भऽ जाएत?” रेवती तत्काल नहि कहलीह। “नहि। मुदा जखन अलग-अलग नकलमे दिशाचिह्नक विरोध अछि, तखन

लेखकीय विश्वासक स्रोत देखब आवश्यक अछि। मूल देखलाक गलत उल्लेख तकर वजन घटबैत अछि, प्रत्येक अन्य निरीक्षण नष्ट नहि करैत।”

भण्डारी उत्तर देलनि, “मूल नक्शाक अनुपलब्धता सरकारी अभिलेखागारक काजक कठिनाइ अछि। हमर मुवक्किल ओकर रखवाला नहि। आयोगक स्थलीय दूरी नापल गेल छल; ओकरा केवल एक टिप्पणीक त्रुटिसँ हटाओल उचित नहि।” न्यायमूर्ति कहलनि, “ई आपत्ति महत्त्वपूर्ण अछि। एक सरकारी अभिलेखक दोषक पूरा भार निजी पक्ष पर दऽ नहि सकैत छी। मुदा जकर प्रतिवेदनपर निर्णयन निर्भर अछि, ओकर आधार जाँचल जाएत।” सुनबाईक अन्दर सहमति आ असहमति एकहि समय उपस्थित छल। बरामदामे रामदेव एहि सूक्ष्म अन्तरक शब्द नहि सुनि पाबि रहल छलाह, मुदा न्यायालयमे एहन वाक्य लिखल जा रहल छल जाहिसँ हुनकर खेतक बाट निर्धारित हो सकैत छल।

न्यायमूर्ति फेर पुछलनि, “२००७ क नव सर्वेक्षणमे की भेटल?” पारीकक निर्देशपर रेवती एक विस्तृत नक्शा खोललीह। स्थिर चिह्नक रूपमे एक पुरान नहरक पुलिया, राजमार्गक दूरी आ कूपक घेराक स्थान दर्शाओल छल। “नव प्रतिवेदन कूपक वर्तमान स्थिति स्थापित करैत अछि। मुदा पुरान नालीक मार्गक दूनू रूपक उल्लेख करैत अछि—एक राजस्व नकलमे, दोसर स्थानीय साक्षीक स्मृतिमे। आयोग स्पष्ट लिखैत अछि जे बिना पुरान स्थिर सीमचिह्नक जाँच पूर्ण निष्कर्ष कठिन अछि।” भण्डारी प्रतिवाद कएलनि, “ओहू आयोगक निरीक्षणमे निर्माणाधीन भवनक बाहरी किनार कूपसँ पर्याप्त दूरीपर अछि।” रेवती उत्तर देलीह, “भवनक दीवालक दूरी आ पगरियाक स्वतन्त्र अस्तित्व अलग प्रश्न अछि।”

न्यायमूर्ति एक क्षण लेल चश्मा उतारलनि। “अपीलार्थी कोन राहत चाहैत छथि? पूरा मामला पुनः चलाउ, कि सीमित तथ्य निर्धारित कराउ?” रेवती उत्तर देलीह, “जँ माननीय न्यायालय उपलब्ध साक्ष्यसँ निर्णय देबा योग्य छथि तँ ओही मार्ग उचित। जँ न्यायालयक अनुसार एक आवश्यक तथ्यकेँ प्रथम विचारणमे परीक्षण नहि देल गेल, तँ उचित विधिक प्रावधानमे सीमित प्रश्न पठेबाक विनती अछि। हम सम्पूर्ण विचारण दोबारा आरम्भ करबाक आग्रह नहि करैत छी।” भण्डारी कहलनि, “आ हमर आग्रह अछि जे अपीलक नामपर

पक्षकारक छूटल प्रमाण भरबाक अवसर नहि बनबाक चाही।” न्यायमूर्ति दुनू बिन्दु दर्ज करबाक कहलनि।

मध्याह्नक विराममे रेवती बाहर अएलीह तँ कुसुम तुरंत पुछलक, “हमर बाट बाँचत?” रेवती कहलीह, “एखन नहि कहि सकैत छी। न्यायालय पहिने देखत जे पुरान निर्णयमे पगरियाक प्रश्न पर्याप्त सुनल गेल अछि कि नहि। जँ पुनः परीक्षणक आदेश होए, तखन अपील पूर्ण जीतल नहि मानल जाएत।” कुसुमक चेहरापर एक क्षण निराशा झलकली। “बारह वर्षसँ एहि बातक परीक्षणे चलैत अछि,” ओ कहलक। रेवती मुस्कुरेलीह नहि। “आ एही कारण हमरा सभकेँ निश्चित परिणामक झूठ आश्वासन नहि देबाक अछि।” जीवनी धीमे स्वरमे कहलीह, “तारीख हमरा हाथसँ कूपक पानि नहि खींचत। मुदा जँ न्यायालय लिखि देत जे कोन बाट एखन बन्द नहि होयत, तखन घरक काज चलत।”

अदालतक भोजनावकाशक समय प्रह्लाद वैद्य अपन कार्यालयक लेखा सम्बन्धी कागज देखैत बैसल छलाह। हुनकर दिमागमे निर्माणक बढ़ल मूल्य छल। जे भवन २००२ मे थोड़े धनसँ बनबाक छल, २०१३ मे तकर खर्च बहुत बढ़ि गेल। न्यासक एक सदस्य कहलनि, “किसानसभ अदालतकेँ देर करबैत छथि।” प्रह्लाद उत्तर देबाक पहिने शरद कोठारीक पत्र देखलक। पत्रमे लिखल छल—निर्विवाद भूमिपर छात्रावासक दोसर भाग तुरन्त आरम्भ करू; विवादित जमीनपर न्यायालयक आदेशक प्रतीक्षा करू। प्रह्लाद सोचलक जे निर्माणक विलम्बक पूर्ण दोष किसान परिवारपर राखब उचित नहि। न्यास अपन आन्तरिक निर्णयमे सेहो वर्ष गमा देने छल। पहिल बेर ओ एहि बातकेँ अपन दिनपञ्जीमे लिखलक।

ओहि साँझ रामदेवक घरमे भोजनक समय एक असामान्य अतिथि आएलाह। ईश्वरदत्त राठौड़, महाविद्यालयक अध्यापक, अपन हाथमे पुरान भूगोल-पुस्तक लऽ पहुँचलाह। ओ कहलनि जे न्यायालयक विचारणमे ककरो साक्षी बनबाक हेतु नहि, कुसुमक आग्रहपर पुरान नालीक सामाजिक इतिहास बुझबाक लेल आएल छथि। रेवती सेहो ओतय छलीह। राठौड़ किताबक एक पृष्ठपर राजस्थानक शुष्क भूभागमे वर्षाक समय बदलैत जलधाराक चित्र देखौलनि। “पानिक वर्तमान बहाव पहिने सँ समान रहल, से नहि कहि सकैत छी,” ओ कहलनि। “एहि माटिमे पगरिया आ नालीक चिह्न एक-दोसराक कात होइत अछि। एकरा

अलग पहिचानबाक लेल स्थिर बिन्दुक जरूरत अछि।” रामदेव कहलनि, “तखन हमर बाबूक देखल बाट झूठ भेल?” राठौड़ नम्रतासँ उत्तर देलनि, “स्मृति झूठ होयब जरूरी नहि; स्मृतिक विषय आ कानूनी अधिकारक प्रमाण अलग बात अछि।”

कुसुम एक पुरान खसरा-पञ्जीक नकल निकालय चाहलक। रेवती रोकेलनि। “जँ एहन कागज अपीलमे पहिने प्रस्तुत नहि, तखन ओहि पन्नाकेँ तुरन्त निर्णायक मानि न्यायालयमे नहि रखब। पहिने स्रोत, उपलब्धताक इतिहास आ जखन प्रथम विचारण चलैत छल तखन एहन कागज प्रस्तुत किएक नहि भेल—एहि प्रश्नक उत्तर चाही।” कुसुम बेचैन भेलि। “एतय बड़ दिनसँ एक थैला छल; आजुक भोरि साफ करिते भेटल।” रेवती कहलनि, “एही बातक सत्यापित विवरण लिखू। अदालत अतिरिक्त प्रमाण अपने सुविधा लेल नहि लैत। न्यायालयक आवश्यकता आ विधिक शर्त पूरा होयबाक चाही।” जीवनी आगाँ बढ़िकय थैला रखलीह, “कागजक थैला हमरे कक्षमे छल। ओकरा लुकाएब हमर उद्देश्य नहि। मुदा हम खुद एकर भीतरक प्रत्येक नकलक अर्थ नहि बुझैत रही।”

कुसुमक हाथमे पकड़ल कागज १९८२ क मूल सर्वेक्षण-पञ्जी नहि, ओकरा सँ पुरान एक बहीक अंशक फोटोकॉपी छल। तकर अक्षर किछु धुँधला छल। राठौड़ कहला, “एहि में पश्चिम दिशाक छोट नालीक उल्लेख अछि, मुदा कोन खेतक, से स्पष्ट नहि।” रेवती देखलीह जे पन्नाक ऊपर एक राजस्व कार्यालयक नकल-स्वीकृतिक चिह्न अछि, मुदा प्रमाणित करनिहारक हस्ताक्षर आधा कटि गेल अछि। ओ कहलीह, “अभिलेखकेँ ततेक मात्र महत्त्व दिअ जतेक ओ स्वयं सहि सकैत अछि। एहि पन्नामे जे नहि अछि, तकरा हम भाषणसँ जोड़ि नहि देब।” रामदेवक मनमे एक क्षण क्रोध उठल—ओ अपन खेतक इतिहास जनैत छलाह, मुदा कागज ओकर विश्वासकेँ पूरा नहि राखैत छल। फेर ओ सिर झुका लेलनि।

दोसरो दिन नसीमा आ राकेश छात्रावासक कक्षसभ देखय गेलाह। पुरान भवनक छतसँ एक पातली दरारि मेघक पानि भीतर अनैत छल। एक कक्षमे चारि छात्रा रहैत छलि, जखन कि नियमानुसार संख्या कम होयबाक चाही। एक नव छात्रा कहलक, “हमर गामसँ बस साँझमे नहि भेटैत। एतय रहबाक अनुमति नहि भेटत तँ पढ़ाइ छोड़ब पड़त।” नसीमा ओकरा नाम लिखबाक कहलनि, मुदा ओकर निजी विवरण सार्वजनिक घोषणा-पत्रमे राखबाक नहि। राकेश

प्रह्लादकेँ पत्र देलनि—अल्पकालीन सुरक्षित निवास आ शौचालयक मरम्मतिक माँग, विवादित जमीनपर निर्माणक आग्रह नहि। एहि छोट निर्णयमे विद्यार्थीसभक परिपक्वता छल। ओ जनैत छलाह जे किसानक अधिकार कम कएल बिना शिक्षाक सुविधा माँगल जा सकैत अछि।

प्रह्लाद एहि पत्रक उत्तर लिखब शुरू कएलक। पहिने ओ एक वाक्य लिखने छल—“मुकदमा समाप्त भेलापर सभ सुविधा उपलब्ध होयत।” फेर शरद कोठारीक पुरान उपदेश स्मरण अएल। ओ वाक्य काटलक। नव उत्तरमे लिखलक जे निर्विवाद भवनक छत आ पानि-सुविधा सुधारबाक काज तुरन्त शुरू कएल जाएत, छात्रावासक विस्तारक योजना भूमि-विवादसँ भिन्न उपलब्ध स्थलपर विचाराधीन अछि। कागज विद्यालयक पट्टपर लगल। छात्रसभक किछु क्रोध कम भेल, मुदा विश्वसनीयता खाली पत्र लिखलासँ नहि, काम पूरा भेलाक बादे लौटत। नसीमा एहि बातक उल्लेख अपन छोट टिप्पणीमे कएलनि।

उच्च न्यायालयक दोसर सुनबाईमे अतिरिक्त प्रमाण सम्बन्धी आवेदन पहिने उठल। रेवती निवेदन कएलनि जे १९८२ क नकल अभिलेखागारसँ प्रमाणित रूपमे उपलब्ध भेलाक समय आ ओकर पुनः खोजक प्रयत्नक विवरण प्रस्तुत अछि। भण्डारी विरोध करैत कहला जे पक्षकारकेँ अनेक वर्ष अवसर छल; अपीलक चरणमे खाली छूटल प्रमाण भरबाक लेल सामग्री स्वीकार नहि कएल जा सकैत। न्यायमूर्ति आदेशक पहिने पूछलनि, “ई पन्ना नहियो देखी तँ उपलब्ध अभिलेखक आधारपर अपीलक विधिक प्रश्न तय करि सकैत छी कि नहि?” रेवती उत्तर देलीह, “एहि प्रश्नक उत्तर न्यायालयकेँ देबाक अछि। हमर आग्रह ई जे आवेदनक पक्षमे जे कारण अछि, तकरा लिखित रूपमे परखल जाए; सामग्रीकेँ स्वतः स्वीकार नहि कएल जाए।”

न्यायमूर्ति किछु समय दस्तावेज देखलनि। “अभिलेखक नकल प्राप्त करबाक प्रयत्नक पुरान पत्र उपलब्ध अछि, मुदा नव प्रस्तुत फोटोकॉपीक मूल स्रोत एखन पूर्ण स्पष्ट नहि। हम एहि पृष्ठकेँ तुरन्त अतिरिक्त साक्ष्यक रूपमे ग्रहण नहि करब। आवेदनक निस्तारण उपलब्ध अभिलेखक मूल्यांकन संग कएल जाएत।” रेवतीक मनमे आशा आ निराशा दूनू उठल। जँ न्यायालय तुरन्त नकल स्वीकार कएने रहितय तँ एक बाट खुलितय, मुदा तकरा सँ पुनः

प्रतिपरीक्षण आ विलम्बक नब विवाद सेहो उठितय। अदालतक संयम दुनू पक्षक लेल एक शर्त बनल—ककरो अधूरा कागज कें पूर्ण सत्यक पोशाक नहि पहिराओल जाए।

तकर बाद न्यायमूर्ति प्रथम विचारणक सूची पढ़लनि। स्वामित्वक प्रश्न, क्रय-पत्रक वैधता, स्थायी रोकक औचित्य—तीनटा स्पष्ट शीर्षक छल। मुदा पगरियाक नियमित उपयोग आ पानि-निकासक विशिष्ट अधिकार अलग मुद्दाक रूपमे सूचीबद्ध नहि छल। भण्डारी कहला, “एहि विषयपर साक्षीसभ प्रश्नक उत्तर देने छथि।” रेवती उत्तर देलीह, “उत्तर देनाइ आ ओहि विशेष प्रश्नक विरुद्ध पक्षकेँ तैयारीक पूरा अवसर देब अलग बात अछि। न्यायालयकेँ देखबाक अछि जे जिरहक विस्तार पर्याप्त छल कि नहि।” न्यायमूर्ति पुछलनि, “पगरिया सार्वजनिक बाट छल कि निजी उपभोगक अधिकार? एतय एहि दू शब्दक कानूनी अर्थ भिन्न अछि।” रेवती कहलीह, “हमरा सभ निजी परिवारक पुरान आवागमनक आधार प्रस्तुत अछि; सार्वजनिक मार्गक घोषणा एतय नहि माँगल गेल अछि।”

न्यायमूर्ति ई उत्तर सुनि एक चिन्ह लगौलनि। “यही स्पष्टता पहिल वादपत्रमे होयब आवश्यक छल।” रेवती प्रतिवाद नहि कएलनि। रामदेवक मुकदमा पहिल दिनसँ परिपूर्ण कागजक रूपमे प्रस्तुत नहि भेल छल; गामक अनुभव लिखित कानूनमे उतरैत समय अनेक शब्द छूटि गेल छल। मुदा जँ प्रारम्भिक त्रुटिक कारण वास्तविक अधिकारक प्रश्न अचर्चित रहि गेल, तखन न्यायालयक दायित्वक सीमा की होयत—एहिमे बहस आवश्यक छल। भण्डारीक तर्क सेहो दुर्बल नहि छल। ओ कहला, “एखन एक नब प्रकारक दावा बनाओल जाए तँ हमर मुवक्किलकेँ उचित प्रतिरक्षाक अवसर चाही। हम जे खरीदल, तकरा पर सालो धरि अनिश्चितता चलि रहल अछि।”

सुनबाई स्थगित भेलापर रेवती कुसुमकेँ बुझौलीह, “उच्च न्यायालयक प्रश्न आब केवल नापी नहि। मूल वादमे जे माँग छल, ओकर भीतर ई विशेष अधिकारक दावा सचमुच छल कि हम आब नव दावा बनबैत छी? न्यायालय एहि सीमा कें जाँचत।” कुसुम कहलक, “हम पहिने कहने रही जे कूप धरि बाट चाही।” “हम जनैत छी,” रेवती उत्तर देलीह, “मुदा न्यायालयक कागजमे ओ कोना लिखल, विरोधी पक्ष ओकरा केना समझलक, आ साक्षीसभ कोन बातपर

बोललाह—ई सभ सेहो देखल जायत।” कुसुम एखन निश्चय नहि कऽ सकलि जे ई बारीकी ओकर अधिकार बचाओत कि आगाँ टारि देत।

रामदेव अपन पुरान साथी रतनाराम भाटीक घर गेलाह। ओ आदमी एखन वृद्ध भऽ गेल छल, आँखिक प्रकाश कमजोर, मुदा गामक पानिक बाटक स्मृति ओकरा संग छल। रामदेव पुछलनि, “अहाँ साक्षीमे जे कहने छलहुँ से बदलत नहि ने?” रतनाराम अपन पाँजरक साँस सँभालि उत्तर देलक, “हम जे देखलहुँ से बदलत केना? मुदा हम जखन छोट रही तखन बरखाक पानी कतय बहैत छल, तकर सब वर्षक नाप नहि दे सकैत छी। वकील बाबूकेँ सेहो ई बात कहने रही।” रामदेव सिर हिलौलनि। ई उत्तर हुनका पूर्ण सहारा नहि दैत छल, मुदा ओ एहन साक्षी चाहैत नहि छलाह जे अपन स्मृतिसँ बेसी जानबाक दावा करय।

ओम्हर भण्डारी प्रह्लादक संग बैठक कएलनि। ओ कहलनि, “किसानक दावा यदि निजी बाटक अछि तँ न्यासक निर्माणक नक्शामे एक निर्दिष्ट गलियारा राखबाक सम्भावना देखल जा सकैत अछि। मुदा ओहि प्रस्तावसँ पूर्व स्वामित्व अथवा किसी अधिकारक स्वीकारोक्ति स्वतः नहि हो।” प्रह्लाद उग्र स्वरमे कहलक, “तेँ अदालतक बाहर एकरा तय कऽ लिअ।” भण्डारी उत्तर देलनि, “समझौता स्वैच्छिक होयबाक चाही। किसानक कठिनाइ आ विद्यार्थीक हित दूनूकेँ स्थायी रूपमे समाधान चाही। कागजमे एक शब्द लिखिते दस वर्षक नब विवाद उठि सकैत अछि।” प्रह्लादक धैर्य घटल, मुदा ओ पहिल बेर निर्माणक नक्शा फेर बनबयपर विचार कएलक।

शरद कोठारीकेँ समाचार भेटल तँ ओ अपन पुरान दान-पञ्जी देखलनि। अनेक वर्ष पहिने ओहि पञ्जीमे लिखने छलाह—“पुस्तकालय, छात्रवृत्ति, छात्राक सुरक्षित निवास।” कोनो पाँतिमे विवादित कूपपर अधिकारक शब्द नहि छल। ओ सचिवकेँ लिखलनि, “न्यास जँ बहुत भवन बनाओत मुदा छात्राक पढ़ाइ सुरक्षित नहि करि सकत तँ ओकर उद्देश्य सिद्ध नहि होयत। आ जँ किसानकेँ हटा कऽ भवन बनाओत, तँ शिक्षा देबाक योग्य नैतिकता सेहो नहि बचत।” पत्रक भाषा विधिक प्रतिरक्षा नहि, संस्थाक आत्मसमीक्षा छल। प्रह्लाद ओकरा अपन व्यक्तिगत फाइलमे रखलक, यद्यपि सार्वजनिक बैठकमे पढ़बाक साहस नहि भेल।

तीसर सुनबाईक पूर्वसन्ध्यामे रेवतीक लग दरभंगासँ शिवनारायणक फोन आएल। हुनकर स्वर थाकल छल। “अहाँक बहस कहिया अछि?” “काल्हि। न्यायालय मूल वादपत्रक शब्द आ प्रथम न्यायालयक प्रश्न देखत।” शिवनारायण कहला, “हम अहाँकेँ एकटा मात्र सावधानी कहब। जखन अपन मुवक्किलक पीड़ा बहुत स्पष्ट देखाइत अछि, तखन ओकरा प्रमाण मानि लेबाक लोभ होइत अछि। अदालत ओ लोभकेँ नहि मानत।” रेवती उत्तर देलीह, “आ जखन अभिलेखमे त्रुटि भेटैत अछि, तखन विपरीत पक्षक सभ बात गलत बुझबाक लोभ सेहो होइत अछि।” पिता हँसि देलनि। “एखन अहाँ हमरा सँ अधिक सावधान छी।” रेवतीक मनमे अपन पहिल दिल्लीक मुकदमाक दिन उभरल—माधवीक गवाही, पूनमक सम्भावित कथन, अविनाश बत्राक संयत आपत्ति। न्यायिक पीड़ा शहर बदलैत छल, परीक्षा एक समान रहैत छल।

ओहि राति कुसुम घरमे देर धरि जागलि। कूपक जलमे चन्द्रमाक छोट काँपैत प्रतिविम्ब छल। जीवनी बाहर आबि पुछलीह, “अहाँ फेर नक्शा पढ़ैत छी?” कुसुम उत्तर देलक, “नहि, बाबूक पुरान पत्र पढ़ैत छी।” पत्रमे रामदेव अपन गामक पिता केँ लिखने छलाह जे राजस्थानमे मजदूरी करैत-करैत थोड़ा खेत किनलनि, मुदा बरखाक वर्षमे कूपक पानि बचाएब कठिन अछि। ई पत्र अदालतमे स्वामित्वक प्रमाण नहि छल; एहि मे मनुष्यक एकान्त, अपन माटि बनयबाक प्रयत्न आ दूर देशमे नव घरक सपना छल। कुसुम ओकरा प्रमाणक फाइलमे नहि, परिवारक संदूकमे वापस रखलक। ओ बुझैत छलीह जे प्रत्येक महत्त्वपूर्ण कागज न्यायालयमे पेश करबाक नहि होइत। किछु जीवनक स्मृति लेल सुरक्षित रहैत अछि।

रामदेव अपन बिछौनासँ उठि बैसलाह। “कुसुम, हम थाकि गेल छी,” ओ कहलनि। बेटी तुरन्त हुनकर कात गेलि। “बाबूजी, अहाँ आराम करू।” “आराम तँ करबे करब। मुदा सुन, जँ हमरा बाद अहाँ सभ मुकदमा चलाउ, तँ कूपक बाट बचाउ; न्यासक जे वैध भूमि अछि, तकरा लेल वैर नहि पालू। हमरा ओहि गाछक नीचे बैसल छात्र याद अछि, जकरा वर्षा सँ बचबाक लेल छत नहि छल।” कुसुमक आँखि भरि अएल। “बाबूजी, अहाँ हमरा ई सभ पहिनेसँ सिखौने छी।” रामदेव कहला, “सुनल बात निभाएब कठिन होइत अछि।” राति बहुत गहिर भऽ गेल, मुदा कुसुम अपन पिताक देहक घटैत शक्ति पहिल बेर एतेक स्पष्ट देखलक।

न्यायालयक तेसर सुनबाईमे न्यायमूर्ति राठौड़ अपीलक अभिलेखसँ एक पुरान निवेदनक पाँति पढ़लनि। ओहि मे ‘कूप धरि प्रचलित पगरियाक निर्बाध उपयोग’ लिखल छल। भण्डारी स्वीकार कएलनि जे एहन शब्द मूल वादमे छल, मुदा ओ कहला जे तकर निश्चित सीमा आ कानूनी आधारपर पूर्ण विवरण नहि देल गेल। न्यायमूर्ति पुछलनि, “तखन ई कहब जे दावा पहिने कखनहुँ नहि छल, ठीक नहि?” भण्डारीक उत्तर स्पष्ट छल—“दावा छल, परन्तु ओकर स्वीकृतियोग्य आकार विवादित अछि।” न्यायालय ई अन्तर अभिलेखमे राखलक। रेवतीकेँ बुझायल जे वकीलक वास्तविक सफलता प्रतिपक्षकेँ पराजित कहलासँ नहि, अस्पष्ट प्रश्नकेँ स्पष्ट बनाओलासँ होइत अछि।

अगिला पृष्ठपर २००७ क स्वतंत्र मापनक आदेश छल। न्यायमूर्ति पुछलनि, “नव सर्वेक्षणक साक्षीकेँ मूल न्यायालय की पूछलक?” पारीक उत्तर देलनि, “दूरीक हिसाब, स्थिर बिन्दु आ कूपक वर्तमान स्थितिपर प्रश्न भेल। मुदा कूपधरि पगरियाक निरन्तर उपयोग आ निकासक पुरान अधिकारपर पृथक प्रश्नकेँ निर्णय नहि देल गेल।” भण्डारी कहलनि, “पगरियाक उपयोगक विरोधमे सेहो प्रत्यक्ष गवाही अछि। किछु साक्षी कहैत छथि जे पानिक मुख्य बाट समयसँ बदलल अछि।” न्यायमूर्ति कहलीह, “ओ गवाहीक वजन आरम्भिक अदालतकेँ प्रश्न स्पष्ट कऽ परखबाक छल। आब एतय हम देखब जे अपीलक निस्तारण लेल सीमित तथ्यगत निष्कर्ष आवश्यक अछि कि नहि।”

रेवती अपन अन्तिम मुख्य तर्ककेँ छोट रखलीह। “माननीय न्यायालय, किसान परिवारकेँ जे अधिकार पूर्वसँ विधिसम्मत छल, ओकर परीक्षण होय; न्यासकेँ जे भूमि वैध रूपसँ प्राप्त अछि, ओकरा पर अस्पष्टता अनावश्यक नहि बढ़ायब। उपलब्ध अभिलेखक किछु हिस्सा पक्षकारकेँ अपन सीमा स्पष्ट करैत अछि। मुदा प्रथम न्यायालय जे मुद्दा स्पष्ट रूपसँ नहि परखलक, ओकरा बिना उत्तर छोड़ि निर्णय पूर्ण मानल कठिन अछि। हम एतय नब अपराधक आरोप नहि लबैत छी; नकलक त्रुटिक अर्थ जालसाजी नहि ठहरबैत छी। हमर आग्रह केवल ई जे न्यायालयक निर्णय सभ पक्षक सुनल प्रमाणपर टिकय।”

भण्डारी अपन प्रत्युत्तरमे कहलनि, “हमर मुवक्किल संस्थागत शिक्षाक काज करैत अछि, मुदा ओ संस्थान होयबाक कारण कानूनी विशेषाधिकारक दावा नहि करैत। अपीलार्थी सेहो

किसान होयबाक कारण स्वतः अधिकार नहि पबैत। वास्तविक प्रश्न पुरान उपयोगक अवधि, प्रकार, सीमा आ विधिक प्रभाव अछि। यदि न्यायालय एक प्रश्न फेर परीक्षण लेल पठबैत अछि तँ दुनू पक्षकेँ समान अवसर, स्पष्ट सीमा आ निश्चित अवधि देल जाए। बिना कारण पूरा मामला फेर पहिल दिनसँ आरम्भ भेल तखन न्यायिक संसाधन आ दूनू परिवारक जीवनक क्षति बढ़त।” न्यायमूर्ति भण्डारीक एहि अन्तिम आग्रहपर विशेष ध्यान देलनि।

सुनबाईक समाप्तिपर न्यायमूर्ति पुछलनि, “किसानक वयस?” पारीक कहला, “बहुत वृद्ध छथि, स्वास्थ्य कमजोर अछि।” “न्यासक निर्माणक वर्तमान दशा?” भण्डारी बतौलनि जे निर्विवाद क्षेत्रक किछु भागमे काज पूरा भेल, विवादित किनारपर अन्तरिम रोकक मर्यादा पालल जा रहल अछि। न्यायमूर्ति कहलनि, “अदालतक काज लोकक उमर रोकि राखब नहि। मुदा जल्दीक नामपर अधूरा निर्णय सेहो नहि। आदेश लिखल जाएत।” पक्षकारसभ बाहर निकललाह। कोनो तुरन्त विजय-घोष नहि भेल। रामदेव बेंचपर बैसिकय पानि पीबय लगलाह। कुसुम हुनकर हाथ सम्हारलक। दूर न्यासक ओरसँ प्रह्लाद सेहो बेंचपर बैठल छल। दुनू एक-दोसराकेँ देखलनि, मुदा बात नहि कएलनि।

ओहि दिनक साँझ रेवती जोधपुरक पुरान पुस्तक-दूकानमे गेलीह। चारूकात विधिक पुस्तक, पुरान राजस्व शब्दकोश आ नक्शाक संकलन छल। एक वृद्ध दुकानदार पुछलक, “कोन विषयक पुस्तक चाही?” रेवती कहलीह, “दीवानी अपीलक प्रक्रिया।” दुकानदार एक जड़िल पुस्तक निकाललक। ओकर भीतर अनेक पूर्व निर्णयक टीका छल। रेवती किताब पलटिते सोचलीह जे विधिक व्यवस्था प्रत्येक नब विवादक पहिने सैकड़ो विवादक अनुभव सहेजि रखैत अछि, मुदा कोनो पूर्व निर्णय जीवित मनुष्यक सम्पूर्ण कथा नहि जनैत। कानून सिद्धान्त देत, न्यायाधीश अभिलेख परखत, अधिवक्ता प्रश्न रखत, तखनहु जीबैत परिणाम पक्षकारकेँ स्वयं झेलय पड़त।

दरभंगामे शिवनारायण साँझक दीपक लग बैसल छलाह। निर्मला देवी, जे नीलकान्त साहक घरसँ एक छोट सन्देश लऽ आएल छलीह, हुनका कहलीह जे अमरेश आब महाविद्यालयमे पढैत अछि। नीलकान्त अपन पुरान सजाक बाद कारोबार बदलि लेने छल, मुदा पहिल मुकदमाक बदनामी समय-समयपर लौटि अबैत अछि। शिवनारायण सुनिते कहला,

“लोकक स्मृति कानूनक आदेशसँ जल्दी नहि बदलैत।” ओ रेवतीकेँ फोन लगौलनि। “जोधपुरक निर्णय एखन नहि अएल?” “नहि।” “ठीक अछि। आदेश अएत, तखन ओकर शब्द पढ़ब। समाचारक शीर्षक पर भरोसा नहि करब।” रेवती एहि वाक्यपर हँसि देलीह। बचपनसँ एही प्रशिक्षणक भीतर ओ पललि छलि।

अगिला सप्ताहक भोरिमे पारीकक कार्यालयमे न्यायालयक आदेश उपलब्ध भेल। चालीस पृष्ठक दीर्घ अन्तिम फैसला नहि, कारणसहित एक सीमित अपीलीय आदेश छल। न्यायमूर्ति प्रथम न्यायालयक अभिलेख देखिकय कहने छलीह जे कूपक वर्तमान स्थिति आ मुख्य क्रय-पत्रक अधिकारक अनेक पक्ष पहिनेसँ विचारित अछि। मुदा पगरियाक प्रचलित उपयोग आ पानि-निकास सम्बन्धी विशेष प्रश्न पर पर्याप्त स्पष्ट मुद्दा आ निर्णीत तथ्य उपलब्ध नहि। अपीलक शेष विचारण अपन समक्ष सुरक्षित राखैत, न्यायालय दीवानी प्रक्रिया संहिताक आदेश एकचालीस, नियम पच्चीसक उपयुक्त विधिक अधिकारमे सीमित मुद्दासभ प्रथम न्यायालयक समक्ष तथ्यगत निष्कर्ष लेल पठबैत अछि। एहि अर्थमे पूरा मुकदमा शून्य कऽ फेर पहिने सँ चलाओल नहि जाइत।

आदेशमे दू सीमित प्रश्न तैयार छल। पहिल—निर्धारित भूखण्डक किनारसँ रामदेवक कूपधरि जे पगरियाक दावा अछि, ओकर पूर्ववर्ती उपयोगक स्वभाव, अवधि, स्थान आ वैधानिक आधार उपलब्ध साक्ष्यपर की सिद्ध होइत अछि? दोसर—न्यासक प्रस्तावित सीम-बन्दी अथवा निर्माणसँ, जँ कोनो विधिसम्मत जल-निकासक अधिकार सिद्ध होइत अछि, तँ तकरा बाधा पहुँचबाक तथ्य अछि कि नहि? प्रथम न्यायालयकेँ पक्षकारसभकेँ एही निश्चित प्रश्नधरि सीमित, उचित प्रमाण प्रस्तुत करबाक अवसर देबाक आ कारणसहित निष्कर्ष निर्धारित समयमे उच्च न्यायालयकेँ पठेबाक निर्देश छल। अपील स्वयं उच्च न्यायालयमे शेष रहत।

अन्तरिम व्यवस्थापर सेहो न्यायालय स्पष्ट कएने छल। विवादित कूपधरि पूर्वसँ उपयोगमे रहल सशर्त आवागमनकेँ पक्षकारसभ बलपूर्वक परिवर्तित नहि करत; विवादित किनारपर नब स्थायी निर्माण अतिरिक्त आदेश बिना नहि होयत; न्यासक निर्विवाद भूमिपर विधिसम्मत काज एहि आदेशक कारण बन्द नहि होयत। न्यायालय एहन व्यवस्था केवल विवादक अन्तिम

निर्धारण धरि शान्ति बनौने राखबाक लेल कएने छल, स्वामित्व अथवा अधिकारक अन्तिम घोषणा कएल नहि छल। एही पाँति पढ़ि प्रह्लाद वैद्य गहिर साँस लेलक। ओकरा अन्ततः समझाएल जे आदेशमे केवल रोक नहि, निर्विवाद शिक्षण-काजकेँ आगाँ बढ़ेबाक बाट सेहो अछि।

कुसुमकेँ आदेशक प्रति पहुँचला पर ओ पहिने ‘अपील शेष’ शब्द पर नजरि देलक। “तखन एतेक सुनबाईक बादो अन्तिम निर्णय नहि?” पारीक कहलनि, “नहि। उच्च न्यायालय एक महत्त्वपूर्ण अपूर्ण प्रश्न पहिचानलक अछि। प्रथम न्यायालय ओकर तथ्यगत उत्तर देत, फेर अपीलक अन्तिम निर्णय उच्च न्यायालय करत। ई सीमित न्यायिक प्रगति अछि, सम्पूर्ण विजय नहि।” कुसुम पन्ना फेर पढ़लक। ओकरा तुरन्त अपन पुरान कापी याद अएल जाहिमे २००७ मे लिखने छलीह—“नव नापीक प्रतीक्षा।” आब ओकर ऊपर लिखबाक मन भेल—“प्रश्नक उत्तरक प्रतीक्षा।” ओ बुझैत छलीह जे एक दशकमे देशक कानून बहुत बदलबो नहि कएलक, मुदा ओकर परिवारक जीवन एक-एक तिथिसँ बदलि गेल।

रामदेव आदेश सुनिते बहुत देर चुप रहलाह। ओकर बाद पुछलनि, “एहि बीच हमर कूपक बाट बन्द नहि कएल जायत ने?” पारीक कहला, “अन्तरिम व्यवस्था एही विषयमे अछि; बिना न्यायालयक अनुमति पक्षकार बलपूर्वक स्थिति नहि बदलत। मुदा एही आदेशसँ अहाँक दावाक स्थायी मान्यता नहि भेल।” रामदेव अपन अँगुरीसँ धरतीक एक पाथर छुअलनि। “हम न्यायालयसँ जेतबा कहलहुँ से एक बेर फेर सुनल गेल। एहि वयसपर ईहो बहुत अछि।” जीवनी सहसा प्रतिवाद कएलीह—“बहुत नहि। जीवित रहबाक लेल रास्ता चाही, अन्तिम कागज सेहो चाही।” रामदेव हुनका देखलनि। “हँ, तोहर बातो सही अछि। हमरा सभ दुनू चीज चाही।”

अगिला दिन मरुधर महाविद्यालयमे छात्रसभक बैठक भेल। राकेश आदेशक एक पाँति पढ़लनि जाहिमे निर्विवाद भूमिपर काज जारी राखबाक बाधा नहि छल। प्रह्लाद सेहो उपस्थित छलाह। कुसुम कहलीह, “अहाँ सभक शिक्षा हमर घरक शत्रु नहि। आ हमर कूपक बाट छात्रावासक विरोधी नहि। हम चाहैत छी जे भवन बने, मुदा लोकक अधिकार मेटाकय नहि।” नसीमा कहलीह, “छात्रासभक सुरक्षित रहबाक अधिकारक काज न्यायालयक अन्तिम

निर्णयक प्रतीक्षा किए करत? न्यास अपना निश्चित भूमिपर एखन मरम्मत आ सुधार करि सकैत अछि।” सभामे पहिल बेर किसानक बेटी आ न्यासक सचिवक बीच एक प्रस्तावपर सहमति बनल—निर्विवाद पूर्वी खण्डमे छोट छात्रावासक सुधार तुरन्त आरम्भ कएल जाए।

शरद कोठारी ओहि प्रस्तावक समाचार सुनि एकटा छोट सहायता-राशि न्यासक माध्यमसँ देबाक निर्णय लेलनि, स्पष्ट शर्त सहित—धन केवल सुरक्षित छात्र-निवास आ पुस्तकालयक आवश्यक सुधार लेल। एहि दानक लेखा सार्वजनिक राखल जायत। प्रह्लाद पहिल बेर बजला, “हम एहि कार्यक तिथि पट्टपर लिखब आ काज समाप्त भेला पर व्यय देखाएब।” राकेश उत्तर देलनि, “विद्यार्थी सभ सेहो जाँचमे सहयोग करत। एकरा न्यासक अविश्वास नहि मानू। खुला अभिलेख भरोसाक आधार होइत अछि।” प्रह्लाद माथ हिलौलनि। हुनकर स्वरमे पहिल बेर पुरान प्रतिरोधक कठोरता कम छल।

एहि बैठकसँ निसरि रेवती पारीककेँ कहलीह, “न्यासक काज चलब आ किसानक अधिकारक सुनबाई चलब—ई दुनू सम्भव बुझाइत अछि।” पारीक उत्तर देलनि, “हाँ, मुदा सामाजिक समझबूझक कागज आ न्यायिक अधिकारक आदेश अलग-अलग रहत। समझौता जँ होए तँ विधिसम्मत, पक्षकारक स्पष्ट सहमति सहित अभिलेखमे राखल जाए; नहि तँ कल फेर विवाद उठत।” रेवती एहि बारीकीकेँ मनमे राखलीह। हुनका २००४ क सुनामीसँ उजड़ल अण्डमानक परिवार याद अएल, जकर घरक पुनर्वासक कागज आ वास्तविक छत बड़ दिन धरि अलग-अलग छल। भारतक दूर-दूरक अदालतसभ एक-दोसराकेँ नहि जनैत छल, मुदा अभिलेख आ जीवनक बीचक दूरी अनेक जगह समान छल।

पारीकक कार्यालयमे रेवतीक बहसक बाद एकटा नव युवा विधि-प्रशिक्षु आएल छल। नाम मेघराज। ओ किसान परिवारक तरफसँ भाग लैत छल, मुदा कहलक जे ओकर पिता न्यासक कारीगर छलाह। “हमर घरक रोजी तखन चलत जखन छात्रावास बनत,” ओ कहलनि, “मुदा हमर काकाक खेतक पानि सेहो एही नालीसँ जाइत अछि। वकील होयबाक अर्थ एक पक्षक दुख मात्र देखब अछि?” रेवती उत्तर देलीह, “मुवक्किलक पक्षक विधिसम्मत रक्षा अधिवक्ताक कर्तव्य अछि। मुदा प्रतिपक्षक मनुष्यत्व नकारबाक अधिकार ककरो नहि। अहाँ

अपन पक्षक सर्वोत्तम प्रमाण राखू, आनक प्रमाणक सीमा सेहो समझू।” मेघराज ओहि उत्तरकेँ अपने प्रशिक्षणक कापीमे लिखलक।

जनवरीक अन्तिम शनिदिन रामदेवक घरक आँगनमे छोट श्रमदान भेल। मेड़पर बिखरल पाथर हटाओल गेल, कूपक ढील घेरा मरम्मत भेल, मुदा विवादित सीमकेँ कोनो व्यक्ति छुअलक नहि। नसीमा अपन दू छात्राकेँ संग लऽ आएलीह। राकेश मापनक काम करबाक बदला पानि भरबाक घैल उठौलक। प्रह्लादक ओरसँ एक कारीगर आएल, जे कूपक आसपासक सुरक्षित पाथर जाँचि दैत छल, मुदा नब सीमखूँटा नहि गाड़लक। ई आयोजन अदालतक आदेशक विकल्प नहि, लोकक बीचक सामान्य परस्पर सहायताक दृश्य छल। जीवनी सभकेँ बाजराक रोटी आ छाछ देलीह। कुसुम हुनका देखैत छलीह; वर्षोंक संघर्षक बाद घरक आँगनमे पहिल बेर अनेक मतक लोक एक संग बैसल छलाह।

रामदेव नसीमासँ पुछलनि, “अहाँक सायराक पढ़ाइ आब केहन चलैत अछि?” नसीमा उत्तर देलीह जे हिंसाक बाद जे परिवार मरुधर पहुँचल छल, ओकर बेटीक हराएल प्रमाणपत्रक कठिनाइ बहुत संघर्षक बाद दूर भेल। सायरा अपन अध्ययन आगाँ बढ़ौने छलीह आ नव छात्रासभकेँ आवेदन भरबामे सहायता करैत छलीह। रामदेव सिर हिलौलनि। “एक समय ओकर कागज जरि गेल छल, आब ओ आन लोकक कागज बनबैत अछि। देखू, मनुष्यक जीवन कागजक भीतर नहि समाइत।” नसीमा कहलीह, “तथापि बिना ओहि कागजक ओ विद्यालयमे प्रवेश नहि पाबि सकैत छलीह।” एहि दू वाक्यमे कुसुमकेँ एक पुरान प्रश्नक नव अर्थ बुझायल—जीवन अभिलेखसँ पैघ अछि, मुदा अभिलेखक त्रुटि जीवनकेँ गहिर चोट पहुँचा सकैत अछि।

दरभंगा लौटबाक रेलमे रेवती अपन बहसक नोट फेर खोललीह। पहिल पन्नापर लिखल छल—“मुवक्किलक दाबीकेँ स्पष्ट करू; जे नहि सिद्ध भेल तकरा सिद्ध नहि कहू।” दोसर पन्नापर न्यायमूर्तिक प्रश्न—“दावाक तीन भिन्न अधिकार।” तेसरपर भण्डारीक स्वीकार—“दावा छल, ओकर सीमा विवादित।” रेवती पहिने सोचैत छलीह जे सफल बहसक अन्त विरोधी पक्षक पराजयक घोषणा होएत। आब बुझाइत छल जे एक सफल बहस प्रतिपक्षक सर्वनाश नहि, प्रश्नक सही सीमांकन सेहो होइत अछि। ओ एहि विचारक संग अपन पितासँ

पत्र लिखलीह। पत्रमे उच्च न्यायालयक आदेशक कानूनी अर्थ स्पष्ट लिखलनि, आ अन्तमे जोड़लनि—“हम एखन फैसला जीतल नहि, मुदा वादक छूटल प्रश्न न्यायालयक समक्ष स्पष्ट रखि पेलहुँ।”

शिवनारायण पत्र पढ़िकय उत्तर लिखलनि—“एही कारण अहाँक बहस महत्त्वपूर्ण भेल। याद राखू, अदालतक आदेश कखनो मनुष्यक सम्पूर्ण दुःख नापि नहि सकैत। तकर अर्थ ई नहि जे आदेश तुच्छ अछि। जखन न्यायालय गलती सुधारबाक उचित बाट खोलैत अछि, तखन ओकर भीतर शान्ति आ उत्तरदायित्व दुनू रहैत अछि।” ओ चिट्ठीक संग नीलकान्त साहक पुरान निर्णयक एक नकल पठौलनि। रेवती पन्ना खोलिते देखलीह—२००४ क ओहि निर्णयमे सेहो न्यायाधीश किछु आरोप सिद्ध आ किछु असिद्ध मानने छलाह। काल, स्थान आ अपराध भिन्न, मुदा प्रमाणक सीमासँ बाहर नहि जाएबाक आग्रह समान छल।

जोधपुरमे नव महिनाक पहिल हलुक वर्षा भेल। कूपक लगक माटि भीजि गेल। जीवनी देखलीह जे पानि पुरान नालीक एक भागसँ बहैत अछि, फेर एक ढील पाथरक लग रुकि जाइत अछि। ओ कुसुमकेँ बजौलीह। “देख, पानि अपना बाट खोजैत अछि।” कुसुम कहलक, “हँ, मुदा आजुक बहावसँ एतय सदा एहि बाटेँ पानि गेल, ई नहि सिद्ध होएत।” जीवनी बेटीकेँ देखिकय हँसि देलीह। “तोँ एखन हर बातमे न्यायालयक भाषा देखैछेँ।” कुसुम उत्तर देलक, “नहि माए, हम एखन पानिक बाट आ न्यायालयक बाटकेँ अलग देखब सीखि रहल छी।” रामदेव कूपक चौकीपर बैसल एहि वार्तिकेँ सुनैत छलाह। हुनकर मुँहपर बहुत दिन पछाति हलुक सन्तोष छल।

एहि बीच विशेष नापीक सीमित तथ्यक परीक्षण लेल पहिल न्यायालयमे सुनबाई-सूची निकलल। कुसुम तिथि अपन कापीमे लिखलक। एहि बेर ओ ‘अन्तिम फैसला’ शब्द नहि लिखलक; केवल ‘दू प्रश्नक उत्तर’ लिखलक। न्यास अपन दस्तावेज तैयार करैत छल, किसान परिवार अपन गवाहीक सीमा सोचैत छल, छात्रसभ छात्रावासक मरम्मत देखैत छल। किसी पक्षक हाथमे देशक सम्पूर्ण सत्य नहि छल। सभ अपन-अपन काजक प्रति जवाबदेह बनबाक कठिन अभ्यास करि रहल छलाह।

रेवती रेलक खिड़कीसँ दूर होइत शहर देखलीह। हुनका सन् २००० क दरभंगाक दण्डाधिकारीक छोट कोठरी याद अएल, जतय एक बहीखाता बहुतो लोकक भाग्य बदलने छल। सन् २०१३ क उच्च न्यायालयमे ओ सीखनिहार लड़की नहि, स्वयं बहस करनिहार अधिवक्ता छलीह। मुदा पहिल दिनक एक प्रश्न एखनहुँ संग छल—जकर नाम लिखल अछि, ओकर जीवनक वास्तविक हिसाब केना बुझल जाए? मरुधरक कूप, नीलकान्तक बही, माधवीक गवाही, सुनीताक मजदूरी-पञ्जी—सभ अलग घटना छल, मुदा सभमे कागजक शब्द आ मानवीय सत्यक दूरी मापबाक श्रम एक समान छल।

रेल आगाँ बढ़ल। एक कोठरीमे वृद्ध किसान अपन घुटना सम्हारि अगिला सुनबाईक प्रतीक्षा करैत छलाह; दोसर भवनमे छात्रा अपन अध्ययनक लेल नब निवास देखैत छलीह; न्यायालयक अभिलेख-कक्षमे सीमित दू प्रश्नक फाइल अलग रखल जा रहल छल। रेवती अपन कापी बन्द कएलीह। ओ जानैत छलीह जे एक दिन एहि न्यायिक पद्धतिक परीक्षा एतेक पैघ आर्थिक सञ्जालक सामने होएत जतय हजारो नाम एक साथ अभिलेखमे चढ़ल रहत। मुदा ओ भविष्य एखन अदृश्य छल। एहि भोरिक सत्य एतबे छल जे अदालत एक छूटल प्रश्न सुनबाक मार्ग खोलने छल—आ रामदेवक कूपधरि जाइत पगरिया पर एखनहुँ पएरक पुरान चिन्ह बाँचल छल।

तृतीय खण्ड — डिजिटल धन आ बदलैत देश

अध्याय १७ — खेलक भीतरक सौदा

दिल्ली, दरभंगा आ लुधियाना; मई सँ नवम्बर २०१३

मईक गरमीमे दरभंगाक शिवनारायण झाक घरक बरामदापर एकटा पुरान रेडियो बजि रहल छल। समाचार पढ़निहारक आवाजमे क्रिकेटक एक पैघ प्रतियोगिताक बीच कथित स्पॉट-फिक्सिंग सम्बन्धी गिरफ्तारीक उल्लेख आएल। शिवनारायण अखबार हाथमे लेने चुपचाप सुनैत रहलाह। हुनकर सामने रखल कपमे चाय शीतल भऽ गेल। घरक भीतरसँ रेवती निकललीह। ओ जोधपुरक अपीलक कागज क्रमबद्ध कऽ रहल छलीह। रेडियोक समाचार सुनिकय पुछलनि, “बाबूजी, अखबारमे जे आरोप अछि, ओकर सम्बन्ध क्रिकेटक नियमसँ अछि कि दण्ड-विधिसँ?” शिवनारायण चश्मा उतारलनि। “पहिने ई देखब पड़त जे कोन व्यक्ति की कएलक, ककरा कोन आश्वासन देलक आ कोन विधिक अपराधक सभ आवश्यक तत्व उपस्थित अछि। खेलक अनुशासन भङ्ग होयब आ अदालतमे अपराध सिद्ध होयब अलग बात।” रेवतीकेँ सन् २००० क नीलकान्त साहक मुकदमाक पहिल दिन याद अएल, जखन एक बहीखाता देखिते सभ लोक निर्णय सुना देबाक लेल व्यग्र छल।

अमरेश साह ओहि दिन अपन पिताक पुरान दूकानक सामने ठाढ़ छल। नीलकान्त साह अदालतक निर्णय आ दण्ड भोगलाक बाद कारोबार बहुत छोट कऽ देने छलाह। आब ओ अनाजक दलाली आ घरेलू समानक हिसाब रखैत छलाह। अमरेश क्रिकेट खेलैत छल, मुदा अपन दलक कप्तान बनबाक सपना छोड़ि गामक बालकसभकेँ साँझमे गेंद फेकब सिखबैत छल। रेडियोक समाचार सुनिकय ओकर एक मित्र हँसिकय कहलनि, “खेलाड़ी जँ पैसा लेल खेलक गति बदलय तँ सभटा खेल बेचायल।” अमरेश उत्तर देलक, “एक खेलाड़ी पर आरोप लगलासँ सभ खेलाड़ी बिकि जाइत छथि ने? एक खेलाड़ी गलत कएलक तँ ओकरा पर प्रमाण

राखू। खेलकेँ बचाएबाक नामपर निरपराधक नाम जँ तोड़ब, तँ खेलो नहि बचत।” ओ अपना पिताक जीवनसँ ई अन्तर सीखने छल, मुदा एखनहुँ मित्रसभकेँ बुझबेनाइ कठिन लगैत छलैक।

रेवतीक लग दिल्लीसँ अधिवक्ता अरुणिमा दत्तक फोन आएल। अरुणिमा किछु वर्ष पहिने एक महिला-सुरक्षा सम्बन्धी मुकदमामे रेवतीक संग काज कएने छलीह। “एक अलग स्थानीय क्रिकेट प्रतियोगिताक प्रकरण अछि,” ओ कहलीह। “राष्ट्रीय समाचारसँ एकर कोनो प्रमाणित सम्बन्ध नहि। मुदा पुलिस एक प्रायोजक, एक पूर्व खेलाड़ी आ दू खाताधारककेँ आपराधिक षड्यन्त्रमे संलिप्त मानि रहल अछि। एक युवकक परिवार हमरा लग आएल अछि। अहाँ दिल्ली आबि सकैत छी?” रेवती पुछलनि, “मुकदमाक कागज ककरा नामपर अछि?” “मजिस्ट्रेटक न्यायालयमे पहिल पेशी भेल अछि। प्राथमिकीमे छलकपट, विश्वासभङ्ग आ कथित अवैध सट्टाक उल्लेख अछि। हम अहाँकेँ मूल नकल पठबैत छी।” रेवती कहलनि, “कागज देखब, तखन राय देब।”

दिल्लीक दक्षिणी भागमे ‘सारथी युवा क्रिकेट मण्डल’ नामक एक स्थानीय संस्था प्रत्येक वर्ष नव खेलाड़ीसभक लेल प्रतियोगिता करबैत छल। बड़ मैदान नहि छल, मुदा ओतय अभ्यास करनिहारक नयनमे राष्ट्रीय मैदानक सपना रहैत छल। किछु स्थानीय व्यापारी खेलक सामग्री दैत छलाह; एक सहकारी बैंकक शाखा सेहो पुरस्कारक छोट राशि प्रदान करैत छल। एहि वर्षक आयोजनमे बाहरी प्रचार-कम्पनी ‘सहगल खेल-परामर्श’क नाम जोड़ल गेल छल। कम्पनीक नाम सुनिते रेवतीक स्मृतिमे मुम्बईक पुरान व्यावसायिक अभिलेख उभरल—किछु वर्ष पहिने गोपी देवीक वैध विदेश-प्रेषण सम्बन्धी कागज जाँचैत समय सहगल नामक एक व्यापारिक समूहक उल्लेख भेटल छल। मुदा एहन समान नामक आधारपर कोनो आपराधिक सम्बन्ध मानि लेब असम्भव छल। ओ पहिने कम्पनीक विधिक पञ्जीकरण आ वास्तविक पक्षकारक पहचान देखबाक निश्चय कएलीह।

दिल्लीमे अरुणिमाक कार्यालय छोट छल। दुआरिपर दायाँ दिस पुस्तकक आलमारी, बाम दिस दू कुर्सी, बीचमे लोहेक मेज। मेजपर तीन फाइल छल। पहिलमे स्थानीय प्रतियोगिताक नियम, दोसरमे पुलिसक प्राथमिक सूचना, तेसरमे युवक राघव मिश्रक परिवारक पत्र। राघव दरभंगासँ दिल्ली पढ़बाक लेल आएल छल। पढ़ाइ खर्च जुटेबाक लेल ओ प्रतियोगितामे

अङ्क-लेखन करैत छल। पुलिसक आरोप छल जे ओकरा एक खेलक पूर्वनिर्धारित घटनाक जानकारी छल आ ओ जानकारी धन लगौनिहार एक व्यक्ति धरि पहुँचौने छल। परिवारक कथन छल जे ओ केवल खेलक वास्तविक अङ्क दर्ज करैत छल। अरुणिमा स्पष्ट कएलीह, “हमरा युवकक बात सत्य लागैत अछि, मुदा एखन हमर विश्वास प्रमाण नहि। ओही कारण अहाँकेँ बजौलहुँ। अहाँ पुरान बहीखाताक मुकदमामे एहि अन्तरक अनुभव कएने छी।”

रेवती पहिल फाइल खोललीह। प्रायोजकक अनुबन्धमे लिखल छल जे खेलक स्वच्छता, अंकक शुद्धता आ विजेताकेँ नियत पुरस्कार देबाक दायित्व आयोजकपर रहत। दोसर फाइलमे पुलिसक दावा छल जे एक निश्चित खेल-क्षणक पूर्वसूचना बाहरी सट्टा-मण्डलीकेँ देल गेल। तेसर फाइलमे राघवक अपन लेखन—“हम जे देखलहुँ से अंक-पञ्जीमे लिखलहुँ; पहिनेसँ किछु नहि जनैत छलहुँ।” रेवती पुछलनि, “अंक-पञ्जीक मूल प्रति कतय अछि?” अरुणिमा कहलीह, “पुलिस कहैत अछि जप्त कएल गेल। मुदा जप्ती-सूचीमे जे पुस्तिका लिखल अछि, ओकर पृष्ठक संख्या खेल-मण्डलक कापीसँ नहि मिलैत।” रेवती मनहि मन ठमकलि। सन् २००० क जप्तीक तैंतीस आ पैंतीस पन्नाक अन्तर बिना कोनो निमन्त्रणक फेर स्मृतिमे घुमि गेल।

राघवक माता पद्मा मिश्र दिल्लीमे अपन देवरक घर ठहरल छलीह। ओ अरुणिमाक कार्यालयमे आएलीह तँ हाथमे घरसँ अनल मखानक छोट पोटरी छल। रेवतीकेँ देखिकय कहलीह, “हम न्यायालयमे ई नहि कहब जे हमर बेटा कहियो गलती नहि करि सकैत अछि। मुदा ओ जँ गलती कएलक तँ ओ गलती की छल, ई हमरा बुझाओल जाए। हमरा गाममे सभ कहैत छथि जे राघव खेल बेचि देलक। एखन विद्यालयक शिक्षक सेहो हमरासँ आँखिमे आँखि नहि मिलबैत छथि।” रेवती धीरे कहलीह, “हम पहिने अभिलेख पढ़ब। जे प्रश्नक उत्तर अछि, से बतायब; जे नहि अछि, तकरा नहि गढ़ब।” पद्मा पोटरी मेजपर रखि देलीह। “खाइ लेब,” ओ कहलीह, “एतय एतेक लोक हमरा बेटाक नाम पढ़ैत अछि, मुदा ओकर भूखक दिन ककरो स्मरण नहि।”

अगिला दिन न्यायिक दण्डाधिकारीक समक्ष राघवक हिरासत सम्बन्धी आवेदन सुनल गेल। न्यायालयक कोठरीमे घुसिते पद्मा किएक तँ राघवकेँ पहिने देखबाक प्रयत्न करैत छलीह,

मुदा अरुणिमा हुनका बुझौलीह जे अदालती कार्यवाहीक अपना क्रम अछि। सरकारी अधिवक्ता कहलनि जे खेलक एक आयोजनक पाछाँ धन कमेबाक गुप्त व्यवस्था छल; राघव अङ्क-लेखनक उत्तरदायित्वमे रहिकय जानकारीक आदान-प्रदान करैत छल। रेवती, अरुणिमाक सहायतामे, अभियोजनक लिखित आधार देखलीह। राघवक फोनमे एक सन्देश भेटबाक दावा छल—“आज अंतिम ओवर याद राखब।” रेवतीक मनमे पहिल प्रश्न उठल: ई पाँति ककरा सँ ककरा धरि गेल? खेलक एक साधारण स्मरण छल कि पूर्वनिर्धारित छलक संकेत? पाँतिक दू अर्थ सम्भव छल, मुदा न्यायालयमे दू अर्थक बीच निर्णय अनुमानसँ नहि होएत।

न्यायाधीश सरकारी पक्षसँ पुछलनि, “अभियुक्तक फोनक जाँचक अवस्था की अछि? एखन हिरासतमे राखबाक ठोस आवश्यकता कोन काज लेल अछि?” पुलिस अधिकारी बतौलनि जे अन्य दू व्यक्तिक बयान शेष अछि आ जप्त इलेक्ट्रॉनिक साधनक विश्लेषण चलि रहल अछि। अरुणिमा कहलनि, “हम जाँचमे बाधा नहि देबय चाहैत छी। मुदा हमरा मुवक्किलक निवास निश्चित अछि, महाविद्यालयक प्रवेश-अभिलेख अछि, आ ओ जाँचमे उपस्थित होयबाक आश्वासन दैत अछि। न्यायालय प्रत्येक अभियुक्तक भूमिका अलग देखय।” न्यायाधीश तत्काल दोषक निर्णय नहि कएलनि; उपलब्ध सामग्री आ हिरासतक आवश्यकता सुनिकय सीमित अवधिक आदेश देलनि। रेवती बाहर निकलिकय पद्माकेँ बुझौलीह जे ई विचारणक फैसला नहि अछि, न तऽ सन्देहक अन्त। पद्मा पुछलनि, “तखन न्याय कहिया होयत?” “ई प्रश्नक उत्तर हमरा एखन निश्चित नहि,” रेवती कहलीह, “मुदा प्रत्येक अगिला सुनबाईमे उचित बात राखबाक काम हमर अछि।”

दिल्लीक दोसर छोरपर खेल-मण्डलक पुरान मैदानमे नव अभ्यास चलि रहल छल। अनिरुद्ध ठाकुर, जे पन्द्रह वर्षक उम्रसँ ओतय तेज गेंदबाजी सीखने छल, बालकसभकेँ दौड़ब सिखा रहल छल। ओहि मण्डलक एक पूर्व खिलाड़ी नवीन राणा परो आरोपक छाया पड़ल छल। पुलिसक प्रारम्भिक बयानमे ओकर नाम छल, जद्यपि ओकरा एखन गिरफ्तार नहि कएल गेल छल। नवीनक बहिन शालिनी विद्यालयमे शिक्षिका छलीह। खेल-मैदानक लग ओकरा अनेक अभिभावक पुछैत छलाह जे नवीन सचमुच खेल बेचने छल कि नहि। शालिनी उत्तर देब

बन्द कऽ देने छलीह। ओ अपन भाइक निर्दोषता सिद्ध करबाक लेल किछु प्रमाण नहि रखैत छलीह, मुदा दोष सिद्ध भेल नहि, ई बात बुझबैत-बुझबैत थाकि गेल छलीह। खेलक मैदान आब ओकर घरक बरामदामे अदालत बनि गेल छल।

नवीन राणा स्वयं रेवतीसँ भेटय आएल। ओकर जामा साफ छल, मुदा चेहरापर अनेक रातिक जागरणक चिन्ह। ओ कहलक, “हम प्रतियोगिताक दिन एकटा आसान गेंद खराब खेललहुँ। क्रिकेटमे एहन होइत अछि। मुदा एखन लोक कहैत अछि जे ओ जानबूझिकय छल।” रेवती पुछलनि, “ककरो सँ खेलक पूर्व परिणाम बदलबाक बात भेल छल?” “नहि।” “कोनो भुगतान?” “पुरस्कार आ नियमित प्रशिक्षणक पारिश्रमिक छोड़ि नहि।” “एहि उत्तरक समर्थनमे की अछि?” नवीन चुप भेल। “जे नहि कएलहुँ, ओकर प्रमाण हम कोना देखाबी?” रेवती कहलीह, “प्रमाण जुटेबाक मुख्य दायित्व अभियोजनपर अछि। मुदा अहाँ जे कागज रखैत छी, जकरा सँ अहाँक दाबी स्पष्ट हो, से सुरक्षित राखू। हमरा सन्तोष देबाक लेल अनुमान नहि जोड़ू।” नवीन पहिल बेर अपन खेलक चर्चा करैत-करैत रोएबाक कगारपर पहुँचल, मुदा ओ मौन रहल।

अरुणिमा प्रतियोगिताक आयोजन-समितिकेँ लिखित रूपमे मूल अङ्क-पञ्जी, नियमावली, पुरस्कार-वितरणक अभिलेख आ मैचक उपलब्ध दृश्यांकन सुरक्षित राखबाक निवेदन पठौलीह। एकटा अलग पत्र पुलिस जाँचक स्थिति सम्बन्धी विधिसम्मत माध्यमसँ देल गेल। न्यायालयक आदेश बिना गोपनीय जप्त सामग्री पाबि जाएब सम्भव नहि छल। रेवती स्पष्ट कएलीह जे प्रतिरक्षा पक्ष स्वयं गवाहसँ बयान बदलयबाक प्रयत्न नहि करत। ओ पद्माकेँ कहलीह, “राघवक सहपाठीसभसँ सामान्य हालचाल पुछि सकैत छी, मुदा गवाहक कथनक विषयमे दबाव नहि। जँ कोनो साक्षीक बात महत्त्वपूर्ण अछि तँ ओकरा विधिसम्मत रूपमे सामने आनय देब।” पद्मा सिर हिलौलीह। हुनका दिल्लीक भीड़मे ई सभ नियम दूर लगैत छल, मुदा बेटाक हितमे ओ पालन करबाक निश्चय कएलीह।

शिवनारायण दरभंगामे अपन पुरान फाइल खोललनि। नीलकान्तक विचारणक समय एक अधूरा पन्ना सभसँ पैघ शंका बनि गेल छल। आब समाचारपत्रक प्रत्येक पन्नापर क्रिकेटक अलग आरोप छपि रहल छल। ओ एक छात्रकेँ, जे विधि पढ़बाक लेल सल्लाह माँगय आएल

छल, कहलनि, “नियमक इतिहास बिना नब घटनाक अर्थ नहि बुझल जाए। कौशल आ संयोगक विषयमे न्यायालयक पुरान निर्णय छल। मुदा एहि निर्णयकेँ सुनि ई नहि कहि सकैत छी जे छल, सट्टा अथवा मिलिभगतक कोनो आरोप स्वतः समाप्त भऽ गेल। आ आरोप लगल अछि एतेक कहिकय ककरो अपराधी घोषित करब सेहो न्याय नहि।” छात्र पुछलक, “तखन अखबार पढ़ब कि कानून?” शिवनारायण मुस्की देलनि। “दूनू पढ़ू; मुदा अदालतमे जे कागज प्रस्तुत अछि, ओकरा पहिने पढ़ू।”

एहि बीच अमरेश साह अपन गामक खेल-दलक लेल एकटा छोट प्रतियोगिता आयोजित करैत छल। मैदानक पाछाँ पोखरि छल, जकर जलमे गाछक छाँह काँपैत छल। अमरेशक पिता नीलकान्त कहला, “हम क्रिकेटक नियम नहि बुझैत छी। मुदा खेलक नामपर पाइ लगबयवला लोकक चेहरा चिनैत छी। ओ सभ खेलाड़ीकेँ अपन हिसाबक मोहरा बुझैत अछि।” अमरेश उत्तर देलक, “तखन बालकसभकेँ खेलसँ दूर राखी?” नीलकान्त माथ हिलौलनि। “नहि। ओ सभकेँ ई बताउ जे मैदानमे खेलनिहार अपन श्रमसँ हारैत-जितैत अछि, आ बाहर बैसल लोभी ओकर श्रमकेँ सामान बना देबय चाहैत अछि।” अमरेश एहि उत्तरसँ चकित भेल। अपना पिताक पुरान अपराधक छाया सदिखन ओकरा लजाबैत छल, मुदा ओहि दिन नीलकान्त एकटा कठिन शिक्षा देलनि—अपराधक अनुभव लोककेँ सुधार सेहो सिखा सकैत अछि।

साँझमे रेवतीक लग सरबजीत कौरक फोन आएल। सरबजीत चण्डीगढ़क एक बैंकमे कार्यरत छलीह आ शिवनारायणक एक पुरान मुवक्किलक परिवारसँ परिचित। ओ कहलीह, “दिल्लीक प्रतियोगिताक प्रायोजक सम्बन्धी खाता-कागजपर अहाँ काज करैत छी, से समाचारमे पढ़लहुँ। हमरा एकटा सामान्य प्रश्न अछि—कोनो खातामे पुरस्कारक भुगतान देखल गेल तँ की ओ मात्रसँ सट्टाक कमाइ सिद्ध होइत अछि?” रेवती उत्तर देलीह, “नहि। भुगतानक उद्देश्य, अनुबन्ध, वास्तविक लाभार्थी, समय आ अन्य प्रमाण देखबाक होइत अछि।” सरबजीत कहलीह, “बैंकक काज रकमक लेखा रखब अछि, प्रत्येक ग्राहकक मनक उद्देश्यक अनुमान करब नहि। मुदा जे लेनदेन असामान्य अछि ओकरा नियमानुसार जाँचक सूचना दियब आवश्यक होइत अछि।” रेवती हुनकर वाक्य अपन कापीमे लिखलीह। वर्षों बाद एही विचारक परीक्षासँ हजारो खाताधारक गुजरताह—एखन ओ भविष्य अनदेखल छल।

जूनक पहिल सप्ताहमे पुलिसक अतिरिक्त प्रतिवेदन पहुँचल। ओहिमे राघवक फोनसँ भेटल कथित सन्देश, तीन व्यक्तिक बीच फोन-सम्पर्कक समय आ प्रतियोगिताक एक ओवरक परिणामक उल्लेख छल। अभियोजनक तर्क बनि रहल छल जे बाहरी लाभ लेल खेलक एक अंश पूर्वनिर्धारित कएल गेल। अरुणिमा अभिलेखक प्रति पढ़ि कहलीह, “सम्पर्कक समय भेटब आ बातक आशय प्रमाणित होयब अलग अछि।” रेवती उत्तर देलीह, “मुदा केवल ई कहिकय ओहि सम्पर्ककेँ निरर्थक सेहो नहि कहि सकैत छी। राघव स्वयं बताउ जे ओ समय ओ ककरा सँ काजक विषयमे बात करैत छल।” राघव उपस्थित नहि छल; ओकरा सँ विधिसम्मत भेटक व्यवस्था करबाक छल। एहि बीच पुलिसक कागजमे एकटा संख्या बारम्बार देखाइत छल, मुदा ओ संख्या ककर छल, एकर अधिकृत अभिलेख एखन जोड़िल नहि छल।

दिल्लीक बरखा देरीसँ आएल। मैदानक सूखल धरतीपर बालकसभ दौड़ैत छल, जखन कि सारथी युवा क्रिकेट मण्डलक कार्यालयक ताला तीन दिनसँ बन्द छल। आयोजन-समितिक अध्यक्ष बृजमोहन गुप्ता कहैत छलाह जे मण्डलपर झूठ आरोप लगल अछि। सचिव इरफान अली कहलनि जे जाँचक कारण आय-व्ययक मूल पञ्जी पुलिस लऽ गेल अछि, तैँ ककरो प्रश्नक उत्तर देब कठिन भेल। एक समाचारपत्र एहि विवादकेँ ‘पूरा प्रतियोगिता बेचाएल’ नाम देलक। नवीनक बहिन शालिनी ओ शीर्षक काटिकय अपन कापीमे साटलनि। नीचाँ लिखलनि, “कतेक खेल? कोन खिलाड़ी? कोन प्रमाण?” ओ ककरो बचाबय लेल नहि, अपन स्मृतिक लेल ई प्रश्न रखैत छलीह; भेल घटना आ छपल शीर्षकक बीच दूरी ओकरा प्रत्येक दिन पीड़ा दैत छल।

जुलाईक एक भोर रेवती खेलक अङ्क-पञ्जीक आधिकारिक नकल देखलीह। एक ओवरमे असामान्य रूपसँ बेसी रन गेल छल। अभियोजनक दृष्टिमे ई पूर्वनिर्धारित घटनाक समर्थन छल। रेवती ओहि दिनक उपलब्ध दृश्यांकन देखबाक विधिसम्मत अनुमति पाबि चुकल छलीह। गेंद फेकनिहारक पहिल दू गेंद खराब छल, तेसर गेंदपर क्षेत्ररक्षक सँ चूक भेल, फेर बल्लेबाज एक कठिन प्रहार कएलक। ओ दृश्य पबैतही घटना स्वतः निर्दोष नहि बनैत छल; खेलक कौशलमे त्रुटि आ अपराधजन्य मिलिभगत दुनू सम्भव छल। मुदा दृश्यांकन एकटा प्रश्न

स्पष्ट करैत छल: अभियोजनक लिखित विवरणमे जकरा ‘एकहि खेलाड़ीक पाँच चूक’ कहल गेल छल, ताहिमे दू घटना दोसर खिलाड़ीक सहभागितासँ बनल छल। रेवती एहि अन्तरकेँ चिह्नित कएलीह, बिना तुरन्त निर्दोषताक घोषणा कएने।

अरुणिमा पुछलनि, “एकर उपयोग हम कोन चरणमे करब?” रेवती उत्तर देलीह, “जहिया न्यायालय एहि तथ्यपर विचार करबाक उचित अवस्था मे रहत। एखन जमानतक सुनबाईमे आवश्यक सीमाधरि उल्लेख कएल जा सकैत अछि; सम्पूर्ण प्रमाणक मूल्याङ्कन विचारणमे होएत।” अरुणिमा एहि उत्तरपर प्रसन्न नहि, आश्वस्त भेलीह। रेवतीक विधिक पद्धति कखनो तीव्र विजयक प्रदर्शन नहि करैत छल, मुदा ओ अभिलेखक एक-एक सीमाकेँ समझैत छल। एही कारण पीड़ितक परिवारकेँ हुनका सँ जल्दी उत्तर नहि भेटैत छल, किन्तु बादमे अपन बात बदलय पड़बाक अवसर कम रहैत छल।

राघवक नियमित जमानत-प्रार्थनापर अगिला सुनबाईमे पुलिस कहलक जे किछु इलेक्ट्रॉनिक परीक्षणक सामग्री प्राप्त भऽ रहल अछि आ आरोपीक सम्पर्क बाहरी व्यक्तिसभसँ स्थापित अछि। अरुणिमा ओकर छात्र जीवन, स्थिर निवास, परिवारक दायित्व, जाँचमे उपस्थित होयबाक तैयारी आ उपलब्ध प्रमाणक अवस्थाक उल्लेख कएलीह। न्यायालय किछु शर्तसहित जमानत देलनि, जकर पालन आवश्यक छल। पद्मा बाहर राघवक हाथ धरलीह, मुदा रेवती हुनका तुरन्त कहलीह, “ई दोषमुक्ति नहि। पहिने जतेक सावधान रहब आवश्यक छल, एखनो ओतेक रहत।” राघव कहलक, “हम एखन कॉलेज जा सकब?” “न्यायालयक शर्त, महाविद्यालयक अलग नियम आ अहाँक वास्तविक अवस्था देखब पड़त,” रेवती उत्तर देलीह। जमानतक कागज हाथमे होयब जीवनक सभ बन्द दुआरि खोलि नहि दैत।

राघव घर पहुँचल तँ ओकर देवरूप भाय अर्पित क्रिकेटक बल्ला अलमारीक पाछाँ छिपा देने छल। पद्मा पुछलनि, “बल्ला कतय गेल?” अर्पित उत्तर देलक, “गाममे लोक कहैत अछि जे क्रिकेट बदनाम खेल अछि।” राघव किछु देर खिड़कीक पास ठाढ़ रहल। फेर ओ बल्ला निकालिकय पोंछलक। “खेल बदनाम नहि,” ओ कहलक, “जकरा धन कमेबाक लोभ अछि, ओ कतहु गलती कऽ सकैत अछि। हमरा लेल एकरा छोड़ि देब उत्तर नहि।” पद्मा आँखि उठौलीह। “अहाँ पहिने पढ़ाइ पूरा करू।” राघव चुपचाप बैसि गेल। ओकरा अपन परिवारक

भीतर भरोसा फेर कमेबाक छल। अदालतमे जमानत भेटबाक आनन्द बहुत छोट छल; गामक लोकक दृष्टि बदलयमे कतबा मास लगत, से ककरो नहि ज्ञात छल।

रेवती दरभंगा लौटलीह तँ शिवनारायण अपन कार्यालयमे एक नव विधि-विद्यार्थीकेँ पुरान निर्णय पढ़बैत छलाह। ओ रेवतीसँ पुछलनि, “जमानत भेल?” “हँ, शर्तसहित। कागजमे बहुत अस्पष्टता अछि, मुदा सबटा अभियोग असत्य कहल जाए, एखन एहन स्थिति नहि।” शिवनारायण कहलनि, “एहि बेर अहाँनेँ पहिल मुकदमासँ की अन्तर देखलहुँ?” रेवती कहलीह, “नीलकान्तक बहीमे स्याहीक एक हस्ताक्षर छल। एतय फोनक समय, चित्रक टुकड़ा, बैंकक प्रविष्टि आ खेलक चलैत क्षण अछि। सबटा देखबामे स्पष्ट, मुदा अर्थ परस्पर निर्भर। जतबा अधिक नापल जाइत अछि, ततबा अधिक प्रश्न उठैत अछि जे की वस्तु नापल गेल।” शिवनारायण सुनिकय अपन पुरान कापी बन्द कएलनि। “तखन अगिला पीढ़ीक वकालत कागजक संग मशीनकेँ सेहो बुझत।”

ओहि साँझ दरभंगाक छोट मैदानमे अमरेश बालकसभक संग खेल समाप्त करैत छल। रेवती ओतय पहुँचलि तँ ओ कहलक, “अहाँ सभ अदालतमे खेलक एक-एक गेंदक अर्थ परखैत छी। बच्चासभकेँ हम की सिखाबी?” रेवती उत्तर देलीह, “ई सिखाउ जे हारब सेहो खेलक भाग अछि, मुदा हारक मूल्य आगूमे तय करब खेलक विरुद्ध अछि। संगहि, केओ चूक कएलक तँ ओकरा तुरन्त बिकाएल नहि कहब।” अमरेश हँसल। “ई पाठ अभिभावककेँ सेहो पढ़ाएब पड़त।” दूटा बालक गेंद लऽ कऽ घर दिस दौड़ल। पोखरिक पानिमे सूर्यक अन्तिम लाली उतरि रहल छल। अमरेशक लेल ई खेल अपन पिताक पुरान व्यवसायसँ बाहर निकलबाक बाट छल; राघवक लेल एखन खेलक नामे लगल आरोपसँ बाहर निकलबाक बाट खोजब आवश्यक छल।

एक सप्ताह बाद अरुणिमाकेँ खेल-मण्डलक सहायक सचिव इरफान अलीक पत्र भेटल। पत्रमे आयोजकक आय-व्ययमे एकटा असामान्य प्रविष्टिक उल्लेख छल—‘बाहरी परामर्शक मानधन’। राशि प्रतियोगिताक कुल पुरस्कारसँ बहुत पैघ छल। इरफान लिखने छल जे ओकरा एहि भुगतानक उद्देश्यक जानकारी नहि; लेखा-पञ्जीमे अध्यक्षक अनुमोदनक संकेत अछि, मुदा वास्तविक सेवाक विवरण उपलब्ध नहि। रेवती पत्र पढ़ि कहलीह, “बिना मूल खाता-

पुस्तक आ सम्बन्धित पक्षक उत्तरक ई आरोपक प्रमाण नहि। मुदा ई स्वतंत्र प्रश्न अछि। राघवक कथित फोनसन्देशसँ एकर सम्बन्ध स्वत: नहि जोड़ब।” अरुणिमा इरफानकेँ विधिसम्मत माध्यमे अभिलेख प्रस्तुत करबाक आग्रह कएलीह। रेवती नव खाता सम्बन्धी तथ्यकेँ जांचक योग्य संकेतक रूपमे अलग फाइलमे रखलीह।

अगस्तक पहिल सप्ताहमे पुलिस अपन विस्तृत प्रतिवेदनक संग किछु अतिरिक्त कागज न्यायालयमे प्रस्तुत केलक। घटनाक विधिसम्मत वर्णनमे अभियोजनक मुख्य ध्यान दू व्यक्तिपर केन्द्रित छल—स्थानीय आयोजनक आर्थिक व्यवस्थापक शैलेश महाजन आ बाहरी प्रायोजकक प्रतिनिधि अभिनव सेठ। राघवक भूमिकाक सम्बन्धमे पुलिस कहैत छल जे ओ खेलक जानकारीक वाहक छल। नवीन राणाक विरुद्ध खेलक परिणाम प्रभावित करबाक आरोपक सामग्री एखन अलग जाँचमे छल। अरुणिमा फाइलक सूची देखलीह। शैलेशक नामसँ जुड़ल कएक प्रविष्टि स्पष्ट छल, मुदा अभिनवक परिचयमात्र एक हस्ताक्षरित पत्रमे छल। “कागजक संग नाम जोड़ल गेल,” रेवती कहलीह, “मुदा ओकर हस्ताक्षर वास्तवमे केकर? ई पूछब पड़त।” ओ एक बेर फेर पुरान हस्तलेख विशेषज्ञक सीमित अभिमतक बात स्मरण कएलीह, जाहिमे नीलकान्तक बहीक विवादित पृष्ठ निर्णायक नहि बनि सकल छल।

आयोजन-समितिक अध्यक्ष बृजमोहन गुप्ता अचानक रेवतीक लग आएलाह। ओ स्वच्छ धोती, इस्त्री कएल कुरता आ कपारपर घामक चिन्हक संग कार्यालयमे प्रवेश कएलनि। “हमर संस्थाकेँ बचाउ,” ओ कहलनि। “पच्चीस वर्षसँ बालकसभ खेलैत अछि। एखन सब दाता हाथ खींचि रहल छथि। हम चाहैत छी न्यायालयमे कहल जाए जे सम्पूर्ण आयोजन निर्दोष छल।” रेवती उत्तर देलीह, “हम अहाँक संस्थाक अधिवक्ता नहि छी, आ कोनो व्यक्ति जाँच बिना सम्पूर्ण आयोजनक नैतिक प्रमाणपत्र नहि दे सकैत। अहाँ जे मूल अभिलेख रखैत छी, ओ उपलब्ध कराउ। निष्कर्ष प्रमाणसँ आबि सकैत अछि।” बृजमोहन थोड़े नाराज भेलाह। “अहाँ सभ वकील सबटा बात कठिन बनबैत छी।” रेवती कहलनि, “जे जीवन सरल अछि, ओकरा अनावश्यक कठिन नहि बनबैत छी; जे वास्तवमे कठिन अछि, ओकरा सरल कहिकय झूठो नहि बनबैत छी।”

बृजमोहन गेलाक बाद अरुणिमा पुछलनि, “ओ हमरा पर दबाव देबय चाहैत छलाह?” रेवती कहलीह, “ओ अपन संस्था बचाबय चाहैत छथि, से समझल जा सकैत अछि। मुदा संस्थाक प्रतिष्ठा बचेबाक इच्छा साक्ष्यक स्थान नहि लेत।” ओहि समय पद्माक पत्र आएल। राघव गाम लौटिकय पढ़ाइ फेर आरम्भ कएने छल, मुदा कॉलेजमे ओकर सहपाठीसभक एक समूह ओकरा बदनाम करैत छल। पत्रमे पद्मा लिखने छलीह—“हमरा बुझाइत अछि जे गवाह अदालतमे मात्र नहि, घरक दुआरिपर सेहो होइत अछि। हमरा सभ अपन जीवनक प्रत्येक दिन केकरो सामने सफाइ दैत छी।” रेवती पत्र बारम्बार पढ़लीह। अदालतक विधिक प्रक्रिया आ समाजक अनौपचारिक निर्णयक बीच ओहि वाक्यसँ गहिर दरार देखाइत छल।

एही सप्ताह दिल्लीक क्रिकेट मैदानक बाहर एकटा छोट सार्वजनिक सभा भेल। नवीनक बहिन शालिनी, कोच अनिरुद्ध, खेल-मण्डलक किछु अभिभावक आ नव खिलाड़ी उपस्थित छलाह। सभा खेलक संस्थागत स्वच्छता लेल छल; कोनो आरोपीक समर्थन-विरोधक जनसमूह नहि। शालिनी कहलीह, “हमर आग्रह अछि जे बालकसभकेँ सिखाओल जाए जे पुरस्कार आ पारिश्रमिकक लेखा खुला रहय, आ खेलक बारेमे बाहरी आर्थिक लोभक दबाव नहि स्वीकार कएल जाए। मुदा एहि सभामे हम ककरो दोषी घोषित नहि करब।” एक अभिभावक विरोध कएलनि, “आरोपीसभकेँ मैदानसँ सदा लेल बाहर राखबाक चाही।” अनिरुद्ध उत्तर देलनि, “अपराध सिद्ध होयबापर व्यवस्था कड़ा होय; मुदा आरोप मात्रपर बच्चाक सपना काटि देल जाय, से केहन शिक्षा?” सभा बिना एकमत भेल समाप्त भेल, तथापि बहुतो अभिभावक पहिल बेर विचार कएलनि जे खेलक रक्षा हेतु प्रमाण आ उचित प्रक्रिया सेहो चाही।

सम्पूर्ण राष्ट्रीय क्रिकेट-जगतमे समाचारक शोर चलैत छल। एक ओर दिल्ली पुलिसक मईक गिरफ्तारी आ खेल-प्रशासनक अपन छानबीनक चर्चा, दोसर ओर खेलक अन्तरराष्ट्रीय लोकप्रियता। विभिन्न समाचारमे नाम, संख्या आ आरोपक व्याख्या अलग छल। शिवनारायण पुरान अखबारसँ वास्तविक घटनाक तारीख काटिकय रखैत छलाह, मुदा तकरा रेवतीक पृथक स्थानीय प्रकरणक साक्ष्यक रूपमे नहि जोड़ैत छलाह। ओ रेवतीकेँ फोनपर स्पष्ट कहलनि, “राष्ट्रीय स्तरपर जे जाँच चलि रहल अछि, ओकर एकटा फोटोकॉपी देखिकय अहाँक छोट

मुकदमाक दोष नहि ठहरत। नामक समानता, विधिक प्रश्नक समानता, आ वास्तविक आर्थिक सम्बन्ध—तीनू अलग।” रेवती उत्तर देलीह, “हम सेहो ई बात बुझैत छी। मुदा समाचारक शोर जमानतक अदालतक बाहर खड़ा लोकक मनमे पहिनेसँ निर्णय लिखि दैत अछि।”

एक दिन रेवतीक कार्यालयमे नूर जतय नामक युवा पत्रकार आएलीह। ओ दिल्लीक एक छोट साप्ताहिक पत्रमे खेलक खबर लिखैत छलीह। नूर कहलीह, “हम प्रतियोगिताक ओहि दिन मैदानमे रही। बाहरक दूटा समाचारमे हमर प्रकाशित तस्वीरक उलटा सन्दर्भ देल गेल। एक समाचारमे हम जकरा आयोजकक खजाञ्ची बताओने छी, दोसरमे ओकरा खेलाड़ी कहि देलक। हम सुधार पठेने छी, मुदा छपल नहि।” रेवती पुछलनि, “अहाँक मूल टिप्पणी, चित्रक समय आ प्रकाशित अङ्क सुरक्षित अछि?” नूर अपन झोला खोलि कागज बाहर कएलीह। “अछि। मुदा हम एतय राघवकेँ बचबय नहि आएल छी। हम चाहैत छी जे हमर लिखल वाक्यकेँ हमर अनुमति बिना बदलल नहि जाए।” रेवती कहलीह, “एहि विषयमे सम्पादकीय सुधार माँगबाक अहाँक अधिकार अलग अछि। मुकदमामे जे तथ्य प्रासंगिक होयत, ओ विधिसम्मत माध्यमसँ पहुँचेबाक पड़त।”

नूरक चित्रमे मैदानक कोनमे एक वृद्ध अङ्क-लेखक बैसल देखाइत छलाह। हुनकर नाम दयानन्द प्रसाद छल। राघव हुनकर अधीन अभ्यास करैत छल। पुलिसक अभिलेखमे दयानन्दक पहिल बयान छोट छल—“हम अंक लिखने रही, राघव पासमे छल।” नूर कहलीह, “ओहि दिन अंतिम ओवरक समय दयानन्द बीमार भऽ गेल छलाह। राघव थोड़े काल लेखन सम्हारने छल।” रेवती एखन ओकरा नव तथ्य मानि कागजमे नहि जोड़लीह। ओ पुछलनि, “अहाँ ई स्वयं देखने रही कि बादमे सुनलहुँ?” नूर क्षणभर सोचलीह। “हम दयानन्दकेँ उठैत देखने रही। राघव ओकर बाद बैसल, सेहो देखल। हुनकर बीमार होयबाक कारण बादमे सुनलहुँ।” रेवती लिखलीह—“प्रत्यक्ष दृश्य: स्थान परिवर्तन। कथित कारण: दोसर स्रोत।” एतबे लिखबामे हुनका सन्तोष भेटल।

दयानन्द प्रसादक घर मैदानसँ तीन गली दूर छल। ओ वृद्ध, श्रवण कमजोर, मुदा स्मृति साफ। रेवती आ अरुणिमा हुनका विधिसम्मत भेटक पूर्व सूचना पठौने छलाह; भेटमे हुनक पुत्र सेहो उपस्थित छल। दयानन्द कहला, “हम ओहि दिन चक्कर महसूस कएने रही। राघवकेँ

अंक-पञ्जी देलहुँ। मुदा राघव पहिने सँ अंतिम ओवरक बात जनैत छल कि नहि, से हम कोना कहि सकैत छी? हम ओकर मनमे नहि रही।” अरुणिमा पुछलनि, “अहाँ मूल अंक-पञ्जीक कार्बन प्रति राखने छी?” दयानन्द अपन पुत्रक दिस देखलनि। पुत्र पुरान संदूकसँ एक फाटल कापी निकाललक, जाहिमे खेलक दिनक हस्तलिखित अंकक विवरण छल। रेवती कापी तत्काल अपने हाथमे नहि लेलीह। “ई मूल निजी अभिलेख अछि,” ओ कहलीह, “जाँचक विषयमे एकर विधिसम्मत प्रस्तुतिक मार्ग तय करबाक चाही। एकर वर्तमान दशा, स्रोत आ सुरक्षित रखबाक क्रम दर्ज होय।” दयानन्द चकित भेलाह। “आब अंकक कापीओ अदालतक चीज भऽ गेल?” “जँ न्यायालय ओकरा प्रासंगिक मानत,” रेवती उत्तर देलीह, “तँ हँ, मुदा पहिने ओ अहाँक लिखल जीवनक दिनक कापी अछि।”

सितम्बरक अन्तिम सुनबाईमे अभियोजन किछु व्यक्तिविरुद्ध आरोप निर्धारणक आधार प्रस्तुत केलक। अदालतक समक्ष एक मुख्य प्रश्न ई छल जे प्रायोजकसँ प्राप्त रकम, खेलक परिणाममे कथित छल आ बाहरी सट्टा-मण्डलीक लेनदेनक बीच एहन प्राथमिक सामग्री अछि कि नहि जे विचारणक अगिला चरण उचित बनबैत अछि। सरकारी अधिवक्ता कहला, “एहि अवस्था मे प्रत्येक तथ्यक अन्तिम दोष-सिद्धि नहि, उपलब्ध सामग्रीक आधारपर आवश्यक प्रथमदृष्ट्या परीक्षण अछि।” अरुणिमा प्रतिवाद कएलीह, “प्रथमदृष्ट्या परीक्षण सेहो आरोपक तत्व देखलासँ मुक्त नहि। राघव अंक-लेखन कएलक; ओकरा खेलक धोखाधड़ीक सहभाजी कहबाक लेल ओकर विशिष्ट क्रिया आ ज्ञानक आधार स्पष्ट होय।” न्यायाधीश सुनबाईक सूचीमे प्रत्येक आरोपीक नामक सामने अलग प्रश्न लिखैत रहलाह। रेवती देखलीह जे सामूहिक कहानी कहब अदालतमे सहज, मुदा प्रत्येक मनुष्यक व्यक्तिगत भूमिका सिद्ध करब कठिन अछि।

आरोप निर्धारणक आदेशमे अदालत अभियोजनक समस्त दावी एक समान नहि स्वीकार केलक। शैलेश महाजन आ अभिनव सेठक विषयमे किछु कथित वित्तीय छलक आरोपपर विचारणक प्रथम आधार देखल गेल; अन्य विस्तृत आरोपक सम्बन्धमे अधिक स्पष्ट सामग्रीक अभाव दर्ज भेल। राघवक विरुद्ध उपलब्ध फोन-सन्देश आ आयोजनक कार्यपर न्यायालय एक सीमित आरोपक विचारण आगाँ बढ़ायबाक आधार मानलक, मुदा आदेशमे साफ लिखल गेल

जे एतयसँ दोषी ठहराएल गेल, से अर्थ नहि निकलैत अछि। रेवती निराश भेलीह; हुनकर आशा छल जे युवकक विषयमे आरोप आगाँ नहि बढ़त। अरुणिमा कहलीह, “अदालतक तर्क पढ़ू। जे सीमा तय भेल अछि, ओहि सीमामे प्रतिरक्षा करब।” न्यायालयक बाहर पद्मा बुझि नहि पाबि रहलीह जे बेटाक जमानत रहलाक बादो ओकरा आरोपक सुनबाईमे पुनः किएक उपस्थित होयब पड़त।

ओहि दिन न्यायालयक सीढ़ीपर खेल-मण्डलक एक युवा खिलाड़ी अर्जुन कुमार राघवक कात आबि कहलनि, “हम तोरा नाम देखिकय डरा गेल रही। मुदा तोँ एतेक दिन खेलक अंक लिखने छलें, एक बेरो अपन लाभक लेल किछु बदलैत नहि देखने छी। हम अदालतमे कहल चाहैत छी।” राघव तुरन्त उत्तर देलक, “तोँ जे देखलहँ, से कहिहें। हमर बचाव लेल अपन स्मृति बढ़ाकय नहि कहिहें।” अर्जुन चकित भेल। “हम बचबय चाहैत छी आ तोँ रोकैत छें?” राघव कहलक, “एतय गलत कहने लोक हमरा विरुद्ध फेर उपयोग करत। अहाँ सच कहू। जतेक देखलहुँ बस ओतेक।” रेवती दूरसँ एहि वार्ता सुनलीह। हुनका अनुभूति भेल जे जमानतक महीनासभमे राघव भीतरसँ बदलल अछि। ओ एखन केवल अपना पर लगल लाञ्छन नहि, सत्यक कमजोर आधार सेहो बुझब सीखि रहल अछि।

अक्टूबरमे पहिल अभियोजन-साक्षी दयानन्द प्रसाद न्यायालयमे उपस्थित भेलाह। हुनकर वयसक कारण न्यायाधीश सुनबाईक आवश्यक सुविधा आ विश्रामक व्यवस्था देखलनि। दयानन्द अपन नाम, काम आ घटनाक दिनक परिचय देलनि। ओ कहलनि जे अङ्क-लेखनक मूल दायित्व हुनकर छल, अन्तिम ओवरक एक भाग राघव सम्हारने छल। सरकारी अधिवक्ता पुछलनि, “की अहाँ राघवकेँ घटनाक पूर्व केकरो सँ असामान्य बातचीत करैत देखने छलहुँ?” दयानन्द उत्तर देलनि, “हम एक आदमीसँ ओकर बात सुनने रही, मुदा शब्द पूरा नहि बुझलहुँ। मैदानमे बहुत आवाज छल।” “ओ आदमी के छल?” “चेहरा साफ नहि देखलहुँ।” अदालत एहि अनिश्चित उत्तरकेँ अपन अभिलेखमे ठीक ओहि स्वरूपमे रखलक। सरकारी पक्ष अनेक प्रश्नसँ ओकरा अधिक निश्चित बनाबय चाहैत छल, मुदा साक्षी अपन सीमा नहि बदललनि।

अरुणिमा प्रति-परीक्षणक समय दयानन्दसँ पुछलनि, “अहाँ अपन पहिल बयानमे अन्तिम ओवरक शुरूआत धरि स्वयं अंक लिखबाक उल्लेख कएने छी?” दयानन्द कहला, “हँ।”

“आब कहैत छी जे राघव अन्तिम ओवरक एक भाग सम्हारलक?” “हँ, जखन हमरा चक्कर आएल।” “अहाँक कापीमे ओ समयक लेखन अलग हाथक अछि कि नहि?” दयानन्द किछु देर सोचलनि। “हमर आँखि एखन कमजोर अछि। जे पन्ना अछि, ओकरा विशेषज्ञ देखत; हम अनुमान नहि देब।” अरुणिमा अगिला प्रश्न करबाक पहिने ठमकि गेलीह। ओ कापीक फोटो देखिकय स्वयं नहि कहि सकैत छलीह जे अक्षर स्पष्ट रूपसँ भिन्न अछि। न्यायाधीश प्रश्नक स्वरूप चिह्नित कएलनि आ कहला जे साक्षीकेँ अपन प्रत्यक्ष ज्ञानक सीमा भीतर उत्तर देबाक अवसर देल जाए। दयानन्द निःश्वास छोड़लनि। बाहर अहाँ-हमर समाचारमे जतेक निश्चितता छल, एहि एक वृद्ध साक्षीक मुँहसँ ओतेक नहि निसरल।

अभियोजनक दोसर साक्षी आयोजनक हिसाब रखनिहार लक्ष्मीकान्त बंसल छल। ओकर गवाहीमे पुरस्कार, मैदानक भाड़ा आ बाहरी परामर्शक शुल्क सम्बन्धी प्रविष्टि आएल। सरकारी अधिवक्ता विशेष भुगतानक एक पृष्ठ देखौलनि। लक्ष्मीकान्त कहलक जे प्रविष्टि ओकर हाथक अछि, मुदा भुगतानक वास्तविक निर्णय अध्यक्ष आ आर्थिक व्यवस्थापक लेने छलाह। अरुणिमा प्रति-परीक्षणमे पुछलनि, “अहाँ रकम स्वयं पाबि खर्च कएने छी?” “नहि।” “जे सेवा देखाओल गेल, ओकर प्रत्यक्ष उपलब्धि देखलहुँ?” “हम बिल प्राप्त कएने रही, सेवा केना देल गेल, से नहि देखने रही।” “राघव एहि भुगतानक अनुमोदनमे छल?” “ओ विद्यार्थी अंक-लेखक छल; हमर देखल कोनो अनुमोदनमे ओकर नाम नहि।” ओहि उत्तरसँ राघवक विरुद्ध सम्पूर्ण आरोप नहि हटैत छल, मुदा अभियोजनक एक व्यापक अनुमानक सीमा स्पष्ट भऽ गेल।

सुनबाई उठलापर शैलेश महाजनक अधिवक्ता रेवतीसँ बरामदामे भेटलाह। ओ कहला, “अहाँक मुवक्किलकेँ बचबय लेल हमर मुवक्किलक ऊपर सभ दोष राखब उचित नहि।” रेवती उत्तर देलीह, “हम एखन ककरो दोष राखल नहि। प्रत्येक खाताक भुगतानक वास्तविक स्वीकृतिक प्रश्न उठौने छी।” अधिवक्ता कहलनि, “अभियोजन सेहो हमरा पर केवल बिलक आधारपर संदेह करैत अछि। सेवा देल गेल छल, तकर साक्ष्य हम उचित अवसरपर राखब।” रेवती मुस्की देलीह। “तखन एक बातपर सहमति अछि—बिलक लेखन आ सेवाक वास्तविकता अलग परीक्षण चाहैत अछि।” दुनू अलग दिशि चलि गेलाह। कानूनक बरामदामे

विरोधी पक्षक बीच एहन छोट सहमति कखनो महत्त्वपूर्ण होइत अछि, यद्यपि न्यायालयक भीतर ओकर स्वतः कोनो प्रमाणिक मूल्य नहि होइत।

ओहि दिन राति अरुणिमाकेँ एक अनुपस्थित साक्षीक विषयमे पुलिसक नव सूचना भेटल। आर्थिक व्यवस्थापकक कार्यालयमे कार्यरत दीपेन्द्र भाटिया नामक युवक विदेश जा चुकल छल। पुलिसक कागजमे ओकर नाम खाताक सहायक रूपमे छल, मुदा ओकर विदेश-प्रवासक तिथि एक साक्षीक कथनसँ मेल नहि खाइत छल। एक साक्षी कहने छल जे दीपेन्द्र खेलक दू दिन बाद दिल्लीमे बैसल एक बैठकमे उपस्थित छल। यात्रा-अभिलेखक प्रारम्भिक विवरण कहैत छल जे ओ तिथि धरि ओ देशसँ बाहर जा चुकल छल। रेवती कहलीह, “जँ दूनू अभिलेख सही अछि तँ साक्षीक स्मृतिमे त्रुटि होयत, अथवा बैठकक तिथि अलग होयत। विदेश गेलासँ अपराध सिद्ध नहि; ओकर उपस्थितिक असम्भवता सेहो स्वयं सिद्ध नहि, जखन धरि मूल यात्रा-विवरणक पुष्टि नहि हो।” एहन सावधानी अरुणिमाकेँ धीरज देलक, मुदा कथा अधिक उलझि गेल।

नवम्बरमे मन्द ठण्ढ पड़य लगल। लुधियानाक कारखानामे सुनीता पासवान वेतन-पञ्जीक पुरान नकल व्यवस्थित करैत छलीह। हरजीत कौर अपन सेवा समाप्त करबाक पहिने सुनीताकेँ ईमानदार लेखा राखबाक शिक्षा देने छलीह। ओहि पञ्जीमे ‘हरदेव चौहान’ नामक अनुत्तरित प्रविष्टि सुनीताक ध्यान पुनः खींचलक। ओकरा ज्ञात छल जे समान नामक हजारो व्यक्ति होइत छथि, तेँ दिल्लीक क्रिकेट समाचारमे ‘एच. चौहान एजेन्सी’ देखलाक बादो ओ तुरन्त कोनो सम्बन्ध स्थापित नहि कएलनि। मुदा अखबारक कतरन सुरक्षित रखलक। कारखानाक चिमनीसँ धुँआ उठैत छल, आ मजदूरसभक अपन संघर्ष एखन वेतन, स्वास्थ्य आ आवासक छल। ओकर दिनक मुख्य सत्य ओही छल; दिल्लीक खेल-जगतक आर्थिक रहस्य ओकर जीवनपर एखन कोनो प्रत्यक्ष अधिकार नहि राखैत छल।

सुनीताक छोट बहिन दीपिका गामक विद्यालयमे क्रिकेट खेलब सीखि रहल छलि। ओ बहिनकेँ पत्र लिखलक, “हम गेंद फेकैत छी तँ मास्टर साहेब कहैत छथि जे हमरा हाथमे गति अछि। मुदा मैदान छोट अछि आ लड़कासभ कहैत अछि क्रिकेट लड़कीक खेल नहि।” सुनीता उत्तरमे लिखलक, “गतिक अर्थ केवल दूर फेकब नहि। अपना अधिकारक लेल ठाढ़ रहबाक

गति सेहो होइत अछि। खेलक मैदानमे तोहर अधिकार अछि; पढ़ाइ छोड़े बिना खेलैत रह।” दिल्लीक मुकदमाक विषयमे ओ पत्रमे किछु नहि लिखलक। एहन हजारो बालिका क्रिकेटक राष्ट्रीय विवादसँ अलग अपन पहिल गेंद फेकबाक शिक्षा लैत छलीह। समाचारक शोरसँ दूर एहने घरसभमे खेलक पहिल पग आ पढ़ाइक छोट विजय अपन गतिसँ बढ़ि रहल छल।

दिल्लीमे आयोजनक हिसाबक एक नव प्रति प्राप्त भेल। लक्ष्मीकान्त बंसलक पञ्जीमे ‘सहगल खेल-परामर्श’ द्वारा देल सेवा लेल दोसर बिलक उल्लेख छल। पहिल बिलक रकम आ दोसर बिलक रकममे असामान्य अन्तर छल। रेवती दूनू प्रतिक तिथि, भुगतानक स्वीकृति आ प्राप्तकर्ता संस्थाक नाम अलग पन्नापर लिखलीह। “की ई ओही सहगल व्यापार गृह अछि जकर नाम मुम्बईक वैध आयात-निर्यात अभिलेखमे छल?” अरुणिमा पुछलनि। रेवती कहलीह, “एखन हम एतेक नहि जनैत छी। शब्दक समानता पर्याप्त नहि। पञ्जीकरण, निदेशक, वास्तविक कारोबार आ हस्ताक्षरक पुष्टि बिना दू कम्पनीकेँ एक कहब गलती होयत।” ओहि सावधानीसँ कथाक एक सम्भावित पैघ मोड़ स्थगित भेल, मुदा अधिक मजबूत बनल।

पुलिसक इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य सम्बन्धी प्रतिवेदनमे फोन-सन्देशक मुद्रित प्रति जोड़ल गेल छल। रेवती देखलीह जे एक पृष्ठमे समय सुबहक छल, दोसर प्रतिमे ओही सन्देशक समय साँझक। सरकारी पक्ष कहलक जे उपकरणक समय-प्रदर्शनक भिन्न सेटिंगसँ ई अन्तर उत्पन्न होयबाक सम्भावना अछि। प्रतिरक्षा पक्ष कहलक जे मूल यन्त्र, निकालल डेटा आ लागू प्रमाणिकता-नियमक परीक्षण बिना मुद्रित प्रति निर्णायक नहि होएत। न्यायालय दू पक्षक अनुरोध सुनिकय प्रमाण प्रस्तुतिक उपयुक्त चरणक व्यवस्था स्पष्ट केलक। ई विवादक कारण तुरन्त सन्देश असत्य घोषित नहि भेल, न तऽ बिना परीक्षण प्रमाणिक मानल गेल। अदालतक बाहर केओ समाचार लिखलक—‘अभियोजनक मूल साक्ष्य ध्वस्त’; दोसर लिखलक —“अपराधी सन्देशक रहस्य खुलल।” दूनू शीर्षक सच्चाइ सँ बेसी निश्चित छल।

नूर जतय एक लेख लिखलीह—‘खेलक एक ओवर, अनेक अनुत्तरित प्रश्न’। ओहिमे मैदानक युवा खेलाड़ी, आयोजनक पारिश्रमिक, जप्त पञ्जीक विवाद आ न्यायालयक प्रक्रियाक सीमा स्पष्ट राखल गेल। सम्पादक पहिने शीर्षक बदलि ‘बिकाएल खेलक खुलासा’

करबाक चाहने छलाह। नूर मना कएलीह। “हमर लेखमे खुलासा नहि, प्रश्न अछि।” सम्पादक कहलनि, “प्रश्न पाठककेँ नहि खींचत।” नूर उत्तर देलीह, “झूठ निष्कर्ष अधिक पाठक खींचि सकैत अछि, मुदा ओ पाठकक भरोसा नष्ट करैत अछि।” अन्ततः लेख ओकर मूल शीर्षकसँ छपल। बिक्री बहुत नहि बढ़ल, मुदा नवीनक बहिन शालिनी ओहि पत्रक प्रति अपन विद्यालयक पुस्तकालयमे रखलीह। ओ नूरकेँ कखनो नहि भेटने छलीह, तथापि एक सावधान वाक्य हुनक परिवारक लेल सहारा बनल।

रेवती अपन पिताकेँ दिल्लीक प्रकरणक संक्षिप्त विवरण पठौलीह। शिवनारायण उत्तरमे लिखलनि, “आर्थिक अपराधक इतिहासमे हम सभ एक गलती बेर-बेर करैत छी—जे अंक लिखैत अछि तकरा मालिक बुझि लैत छी, आ जे लाभ लैत अछि तकर नाम कागजसँ बाहर रहि जाइत अछि। मुदा एही वाक्यक उलटा गलती नहि करू। किछु अंक-लेखक सचमुच अपराधमे सहभागी होइत अछि। प्रत्येकक भूमिका अलग प्रमाणसँ तय करू।” रेवती एहि पत्रकेँ अपना कार्यक मेजपर रखलीह। नीलकान्तक बहीक पहिल पन्नासँ शुरू भेल विधिक विचार आब क्रिकेटक डिजिटल युगमे नव आकार पाबि रहल छल। ओहि पत्रमे पिताक अनुभव छल, मुदा ओकरा न्यायालयक उद्धरण बनयबाक आवश्यकता नहि; एहि बेर ओ बेटी लेल निजी नैतिक निर्देश छल।

सुनबाईक अन्तिम दिन नवीन राणा अपन बहिनक संग अदालतक बरामदामे ठाढ़ छल। ओकर विरुद्ध आपराधिक अनुसन्धानक स्थिति एखन अनिश्चित छल आ खेल-मण्डलक अनुशासनात्मक प्रश्न अलग लंबित छल। एक पत्रकार पुछलक, “अहाँ निर्दोष छी तँ चुप किएक?” नवीन उत्तर देलक, “हम जे जनैत छी, जाँचक उचित मंचपर कहब। अखबारक प्रश्नक उत्तर नहि देलासँ अपराध सिद्ध नहि होइत।” शालिनी ओकर हाथ पकड़ि बाहर चलि गेलि। ओहि दिन ओ पहिल बेर बुझलीह जे सार्वजनिक निन्दाक सामने प्रत्येक मौन अपराधक स्वीकार नहि होइत; कखनो-कखनो मौन अपन अपन सत्यकेँ उचित स्थानपर कहबाक प्रतीक्षा होइत अछि।

दयानन्द प्रसादक गवाहीक बाद राघव धीरे-धीरे अपन साधारण जीवनमे थोड़ेक लौटि सकल। ओ अपन कॉलेजक एक परीक्षा देलक, मुदा परीक्षा-कक्षमे बैसल रहिते फोनक ओ

एक वाक्य मनमे घूमैत रहल—“आज अंतिम ओवर याद राखब।” ओ स्मरण करबाक प्रयास करैत छल जे ओ सन्देश वास्तवमे कखन आ ककरा लेल लिखने छल। ओकरा स्मरण छल जे ओ खेलक अङ्क लिखबाक तैयारीमे एक मित्रकेँ अन्तिम ओवरक समयपर उपस्थित रहबाक कहने छल, मुदा संदेशक उपलब्ध प्रति ओहि स्मृतिसँ पूर्ण मेल नहि खाइत छल। ओ रेवतीकेँ कहलनि, “हमरा लगत अछि जे हम ई बात कहने रही। मुदा हमरा निश्चित नहि।” रेवती उत्तर देलीह, “अनिश्चितता स्वीकार करब सेहो उचित बयानक भाग अछि। अपना स्मृतिसँ बेसी मत कहू।” राघव एहि उत्तरकेँ अपन जीवनक कठिन शिक्षा मानलक।

आब वर्षक अन्तिम महीना निकट आबि रहल छल। अरुणिमा आ रेवती अभियोजनक अगिला साक्षी, उपलब्ध इलेक्ट्रॉनिक अभिलेख आ आयोजनक वित्तीय विवरणक अलग-अलग सूची बनौलीह। शैलेश महाजन अपन बचावक कागज देबाक तैयारी करैत छल; अभिनव सेठक कम्पनीक पञ्जीकरण-संबंधी प्रश्न एखन अनुत्तरित छल। न्यायालय अगिला तिथि निर्धारित केलक। कोनो अन्तिम दोष-सिद्धि नहि भेल, कोनो जादुई दस्तावेज सम्पूर्ण रहस्य खोलि नहि देलक। मुदा खेलक अङ्क-पञ्जी सँ बाहरी भुगतानक दिशा धरि एक प्रश्न आब स्पष्ट भेल—यदि कोनो धन वास्तवमे अपराधसँ आएल, तँ ओकर अन्तिम लाभार्थी के छल, आ ओकरा प्रमाणित करबाक विधिसम्मत बाट की अछि?

दिल्लीसँ दरभंगा लौटैत रेलमे रेवती राति देर धरि जागल छलीह। सामनेक शय्यापर एक पिता अपन बेटाकेँ क्रिकेटक गेंद देखबैत छल। बालक धीमे स्वरमे पुछलक, “बाबू, जे हारैत अछि, ओ खराब खिलाड़ी होइत अछि?” पिता हँसि देलक। “नहि, हारि कऽ फेर खेलब सिखैत अछि।” रेवती खिड़की दिस देखलीह। बाहर अन्हार खेत, दूर-दूर उजासक घर, आ बीचमे रेलक एक समान गति। हुनका रामदेव मण्डलक कूप, सुनीताक वेतन-पञ्जी, माधवीक गवाही आ नीलकान्तक पुरान बही एक संग स्मरण अएल। सभ घटनाक कारण अलग छल, मुदा सभमे मनुष्यक नामक ऊपर दोसरक व्याख्या लदैत छल। न्यायालयक काम ओ व्याख्याकेँ प्रश्न करब छल।

दरभंगाक घर पहुँचला पर शिवनारायण पुछलनि, “खेलक निर्णय भेल?” रेवती मुस्की देलीह। “मैदानपर ओ खेल बहुत पहिने समाप्त भऽ गेल। अदालतमे एखन ओकर अर्थक

विचारण चलैत अछि।” शिवनारायण मन्द स्वरमे कहला, “तखन खेलक नाम बदलि गेल। आब ई मनुष्यक प्रतिष्ठा, धनक स्वामित्व आ प्रमाणक खेल अछि।” रेवती उत्तर देलीह, “प्रमाणक खेल नहि, बाबूजी। प्रमाणक जाँच।” शिवनारायण बेटीकेँ देखिकय हँसि देलनि। “ठीक कहैछी। न्यायालयकेँ खेलक रूपकमे बहुत दिन राखलहुँ।” बरामदाक कोनमे अमरेश साहक पठाओल एक छोट गेंद पड़ल छल। ओ गामक बालकसभक प्रतियोगिताक निमन्त्रण संग देने छल। रेवती गेंद हाथमे लऽ कऽ देखलीह—एहि साधारण गोल वस्तुकेँ पकड़बाक लेल कतेको लोक दौड़ैत अछि, आ एकर बाहर बैसल कतेको लोक एहि दौड़पर अपना लाभक हिसाब लिखैत अछि।

दोसर दिन रेवती कार्यालय खोललीह तँ डाकमे दू लिफाफा छल। पहिल जोधपुरसँ—मरुधरक कूपधरि पगरिया सम्बन्धी सीमित तथ्य-परीक्षणक नव तिथि। दोसर मुम्बईसँ—सहगल खेल-परामर्शक नाम जकर एक पुरान व्यापारिक अभिलेखमे आएल छल, ओहि सम्बन्धमे सार्वजनिक पञ्जीकरणक प्रमाणित नकल मँगबयक उत्तर। लिफाफाक भीतर लिखल छल जे समान नामक दू संस्थाक पञ्जीकरण अलग-अलग समयमे भेल, आ एक संस्थाक वर्तमान पता जाँचसँ पूर्ववर्ती पतासँ भिन्न अछि। एतयसँ अपराध सिद्ध नहि होइत छल। रेवती दू कागज दू अलग फाइलमे रखलीह। एक फाइलपर लिखल छल—“मरुधर: भूमि।” दोसरपर—“खेल: आर्थिक स्रोत।” ओ दुनूकेँ एकमे नहि मिलौलीह।

साँझमे शिवनारायणक लग एक अपरिचित युवक आएल। ओ अपन नाम धीरे कहलक—“दीपेन्द्र भाटिया।” शिवनारायण चकित भेला। दिल्लीक मामलामे विदेश गेल आर्थिक सहायकक नाम हुनका रेवतीक पत्रसँ ज्ञात छल। युवक कहलक, “हम किछु कहबाक चाहैत छी, मुदा पहिने ई जानय चाहैत छी जे जे बात कहब, ओकरा अदालतमे कोना परखल जाएत।” शिवनारायण तुरन्त ओकरा निर्दोष वा दोषी मानबाक बदला बैसबाक आसन देखौलनि। “पहिने ई बताउ जे अहाँकेँ कोन विधिक सहायता चाही। जे अहाँ स्वयं देखलहुँ, से आ जे दोसरसँ सुनलहुँ, से अलग रखू। आ कोनो अभिलेख नुकाएब अथवा बदलयबाक आग्रह हमरा लग नहि करू।” युवक अपन झोला खोललक। भीतर एकटा पुरान नियुक्ति-पत्र आ

वेतनक छोट बही छल। पहिल पन्नापर देल पताक एक हिस्सा मेटल छल। शिवनारायण ओहि पन्नाकेँ देखलनि, मुदा पढ़बाक पहिने पुछलनि—“ई कागज अहाँक लग कखनसँ अछि?”

बाहर दरभंगाक गलीमे बालकसभ खेलक गेंद खोजैत दौड़ैत छल। भीतर कागजक पन्ना धीरे-धीरे खुलि रहल छल। न्यायालयक अगिला तिथि एखन दूर छल, मुदा रेवतीक जीवनमे एक नव साक्षीक दुआरि ठकठकौने छल। एतय अपराधक सम्पूर्ण उत्तर नहि छल; केवल एकटा सम्भावित साक्षीक उपस्थितिक तथ्य छल, जकर बातक परीक्षण समय, प्रतिपक्ष आ अदालतक कठोर प्रश्नसँ होयबाक छल। तइयो शिवनारायणकेँ बुझाइल जे बीसवीं शताब्दीक अन्तिम सट्टाबहीसँ इक्कीसम शताब्दीक डिजिटल संसार धरि कथा बहुत दूर चलि आएल अछि। आ एहि दूरीमे एक वस्तु एखनहुँ अपरिवर्तित अछि—ककरो नाम लिखल जाए, तँ ओकर जीवनक हिसाब ओहि नामसँ पैघ होइत अछि।

अध्याय १८ — मंगलक बाट आ पहचानक अधिकार

सन् २०१४ · जोधपुर, बेंगलुरु, दिल्ली आ दरभंगा

दरभंगामे माघक बिहान छल। पुरान घरक बरामदामे सूर्यक पहिल किरण पहुँचबाक पहिने शिवनारायण झा अपन कचहरीक झोला खोलि बैसल छलाह। सामने दीपेन्द्र भाटिया नामक युवक छल। पिछला राति ओ बिना पहिने समय लेने आएल छल आ अपन परिचय देलाक बाद बहुत देर धरि चुप रहल छल। शिवनारायण ओकरा किछु कहलाक लेल बाध्य नहि कएलनि। भोरमे ओ फेर आयल, एहि बेर संग एकटा छोट कपड़ाक थैला छल। थैलासँ निकलल पन्नासभक कोना समुद्रक नमीसँ मुड़ल सन देखाइत छल। युवक पुछलक, “एकटा आदमी जे कागजमे गलत नाम लिखल देखलक, मुदा तत्काल किछु नहि बजलक, ओकर अपन दोष कतेक होइत अछि?” शिवनारायण उत्तर देलनि, “पहिने देखल आ जनल बात अलग करू। ओकर बाद ओहि समय अहाँक काज, अधिकार आ मनसूबा बुझल जा सकत। बिना ओकरा हम दोषक माप नहि तय करब।”

दीपेन्द्र दिल्लीक क्रिकेट आयोजनमे खाताक सहायक छल। ओकर नाम रेवतीक पहिनुक पत्रमे आएल छल, जाहिसँ शिवनारायण पहिनेहि सावधान छलाह। युवक कहलक जे किछु बिल पर ओकर लिखावट अछि, मुदा निर्णयक हस्ताक्षर दोसर व्यक्तिक। विदेश गेलाक तिथि आ दिल्लीक एक बैठकमे उपस्थित रहलाक साक्षीक बयानक बीच जे विरोध छल, तकरा लऽ ओ परेशान छल। “हम ओहि दिन भारतमे रही नहि,” ओ कहलक, “मुदा हम जँ केवल अपना नाम बचायब, तँ जे अनुचित भुगतान भेल, तकर उत्तर के देत?” शिवनारायण दूनू कागज अपने हाथमे नहि लेलनि। “अहाँक विषयमे रेवती पहिनेसँ एक अभियुक्तक प्रतिरक्षामे जुड़ल छथि। अहाँक हित आ हुनकर मुवक्किलक हित टकरा सकैत अछि। अहाँकेँ अपन स्वतन्त्र अधिवक्तासँ सलाह लेब जरूरी अछि। कोनो कागज हमरा हाथमे छोड़ि नहि जाउ। प्रमाणक

उचित संरक्षण आ विधिसम्मत प्रस्तुति आवश्यक अछि।” दीपेन्द्रकेँ तुरन्त भरोसा नहि भेल; मुदा ओ पहिल बेर बुझलक जे न्यायिक सहायता माने सभ बात गुप्त रखि देबाक आश्वासन नहि।

ओहि दिन दुपहरिया रेवतीक फोन अएलनि। शिवनारायण घटनाक एतेकहि उल्लेख कएलनि जे एक सम्भावित साक्षी स्वतंत्र कानूनी सहायता खोजैत अछि। ओ युवकक द्वारा कहल विवरण वा कागजक विषय नहि बतौलनि। रेवती पूछलीह, “बाबूजी, ओ कतेक डेराएल छल?” “डेराएल आदमी कखनो सच कहैत अछि, कखनो अपना डरक भाषा। ओकरा सुनबाक धैर्य रहबाक चाही, मुदा ओकर बातकेँ प्रमाण कहि देबाक जल्दी नहि।” रेवतीक सामने दिल्लीक क्रिकेट-मुकदमाक अगिला तारीख छल। एक सन्देशक समय, एक अङ्क-पञ्जीक लिखावट आ बाहरी परामर्शक बिलक द्वितीय प्रति—एहि तीनूकेँ ओ अलग फाइलमे रखने छलीह। एकटा फोनसँ ओहि प्रश्नसभक अन्त नहि भऽ सकैत छल।

दिल्लीक जनवरीक ठण्ढमे रेवती अपन कार्यालयक देवालपर लगल पुरान नक्शा देखैत छलीह। नक्सामे देशक राज्यसभ छल; एकटा छोट कागजपर दरभंगा, जोधपुर, लुधियाना आ मुम्बई लिखल छल। ई चारि ठामक मुकदमा एकहि अपराधक हिस्सा नहि छल। तथापि चारू ठाम अभिलेखक एक वाक्य मनुष्यक जीवन बदलने छल—ककरो भूमि-सिमा, ककरो मजदूरी, ककरो जप्ती-पञ्जी, ककरो खेलक हिसाब। आजुक पीढ़ी कंप्यूटरक पर्दापर लिखल बातकेँ अधिक निश्चित मानैत छल, मुदा रेवती अपन अनुभवसँ जनैत छलीह जे पर्दापर चमकैत अक्षरक पाछाँ सेहो मनुष्यक हाथ, त्रुटि आ हित रहैत अछि।

ओहि समय जोधपुरक मरुधर महाविद्यालयमे कुसुम मण्डल अपन पिता रामदेवक कूप दिस जाइत छलीह। पौषक पाछाँ हलुक जाड़ छल, मुदा मरुभूमिक माटि सूखल। पुरान पगरियाक एक छोरपर लकड़ीक खूंटा गाड़ल छल, जाहिसँ छात्रावासक निर्माणक गाड़ी विवादित भागमे नहि घुसय। उच्च न्यायालयक आदेशक बाद सीमित तथ्य-परीक्षण लेल अधीनस्थ दीवानी न्यायालय तिथि देने छल। कुसुमक मनमे आशा छल; संगहि भय जे एक बेर फेर नक्शाक रेखा ओकर परिवारक वर्षो चलल पगरियाकेँ कागजसँ गायब कऽ देत। ओकर पिता कहला, “कुसुम, कूपक पानि हमरा लेल आवश्यक अछि, मुदा महाविद्यालयक बच्चासभक पढ़ाइ सेहो

आवश्यक अछि। अदालत जँ दू अधिकारक बाट निकालत, तँ हमर जीत ओहिमे होएत।” कुसुम हँसि नहि सकलीह। ओ सोचलीह जे कतेक परिवारक जीवन ‘दू अधिकार’क मध्य ठाढ़ अछि।

नसीमा पुस्तकालयमे छात्रासभक बैठक लेल सूचना लिखैत छलीह। २००२ क हिंसासँ विस्थापित सायरा आब स्नातकक अन्तिम बरखमे छलि आ विद्यालयक प्रमाणपत्र प्राप्त करबाक पुरान संघर्ष ओहि सभकेँ स्मरण छल। छात्रावासमे ओहि दिन एक नव आवेदन पहुँचल। आवेदनक ऊपर नाम लिखल छल—‘मनस्वी’। मुदा संग लगल पुरान नामांकन-पञ्जीमे अलग नाम छल। नसीमा पुछलीह, “ई अभिलेख ककरा लेल अछि?” सामने ठाढ़ छात्रा कहलक, “हमरा लेल। पहिनुक पञ्जीमे जे नाम लिखल गेल, ओकरा सँ हम अपन परिचय नहि मानैत छी। हमरा अपन नामसँ पढ़बाक अधिकार चाही।” ओकर आवाज शान्त छल, मुदा कागज धरने हाथक अँगुरी काँपि रहल छल।

मनस्वी मरुधर महाविद्यालयमे पूर्वमे प्रवेश लेने छलीह। पढ़ाइमे कुशल, लोक-साहित्य आ गणित दूनूक प्रति जिज्ञासु। मुदा शिक्षण-संस्थाक किछु अभिलेख हुनकर पहिल दर्ता परिचयसँ बनल छल। ओ अपन लिङ्ग-परिचय आ नामक अनुरूप अभिलेख सुधरबय चाहैत छलीह। कतहु कर्मचारी कहैत छल जे नियम नहि अछि; कतहु कोनो अधिकारी अतिरिक्त प्रमाणपत्र मँगैत छल; कतहु शिक्षक अपन कक्षामे हुनका इच्छित नामसँ बजबैत छलाह। मनस्वी कैँ सर्वाधिक पीड़ा एहि विरोधसँ छल—एकहि संस्थामे ककरो लेल ओ मनुष्य छलीह, ककरो लेल केवल पुरान प्रविष्टि। “हम प्रवेश फेर नहि माँगैत छी,” ओ कहलीह, “हम जे छी, तकर अभिलेख चाहैत छी।”

नसीमा मनस्वीकेँ शीघ्र न्याय मिलबाक वचन नहि देलीह। ओ पहिने प्रवेश-पुस्तिका, विश्वविद्यालयसँ सम्बन्धित नियम आ छात्रवृत्तिक प्रपत्र देखबाक आग्रह कएलीह। कुसुम सेहो आबि गेलि। ओकरा अपन पिताक भूमि-विवाद स्मरण अएल—कागजक रेखा ककरो वास्तविक बाट बन्द करि सकैत अछि। कुसुम कहलीह, “हम सभ अहाँक संग निवेदन लिखब। मुदा अहाँ जे नाम चाहैत छी, ओ स्पष्ट लिखू; आन लोक अहाँक स्थानपर निर्णय नहि करत।” मनस्वी पहिल बेर सहज हँसलीह। “एतेकहि तऽ चाहैत रही,” ओ कहलीह। सायरा लिखबाक

कापी खोलि बैसि गेलि। जकर अपन पुरान प्रमाणपत्र आगिमे जरि गेल छल, ओ दोसरक शैक्षणिक परिचयक अधिकार बुझैत छलीह।

फरवरीमे मरुधरक शिक्षण न्यासक कार्यालयमे आवेदन पहुँचल। व्यवस्थापक प्रह्लाद कहला, “महाविद्यालय अपन स्तरपर प्रवेशक मूल दर्ता बदलि देत तँ परीक्षा-नियन्त्रकक अभिलेखसँ मेल नहि खाएत। एकर विधिसम्मत बाट चाही।” वाक्य सुनबाक बाद मनस्वीकेँ क्षणभर निराशा भेल, मुदा कुसुम पुछलीह, “तखन अहाँ सम्बद्ध विश्वविद्यालयसँ लिखित मार्गदर्शन मँगैत छी कि छात्राकेँ केवल दुआरिसँ लौटा देबैत छी?” प्रह्लाद कहला, “हम मार्गदर्शन मँगब।” ओहि दिन नसीमा आवेदनक प्राप्ति-रसीद सुरक्षित रखलीह। छूटल अधिकारक इतिहासमे प्राप्ति-रसीद सेहो एकटा आवश्यक स्मृति होइत अछि।

देशमे निर्वाचनक तैयारी तेज भऽ रहल छल। महाविद्यालयक बाहर चाय-दोकानपर प्रतिदिन नव चर्चा उठैत छल—रोजगार, महँगाइ, भ्रष्टाचार, विकास, स्थानीय किसानक पानि, महिलाक शिक्षा, भ्रष्टाचार-विरोधी आन्दोलनक बादक निराशा। राकेश कहैत छल जे सत्ता-परिवर्तनसँ नव अवसर भेटत। नसीमा पुछैत छलीह जे नीतिक घोषणासँ विद्यालयक वंचित बालक धरि लाभ कोना पहुँचत। कुसुमक पिता कहैत छलाह जे ओकरा लेल राजनैतिक घोषणापत्रमे सभसँ महत्त्वपूर्ण प्रश्न खेतीक पानि आ अधिकारक स्पष्ट अभिलेख अछि। तर्कक एहि भीड़मे मनस्वी चुपचाप पुस्तकालयक पाछूक आसनपर पढ़ैत छलीह। हुनकर प्रश्न चुनावी नारा नहि, अगिला परीक्षाक प्रवेशपत्र छल।

मार्चक एक दिन फिरदौस कौल मरुधर महाविद्यालयक अतिथि व्याख्यान लेल आएलीह। ओ कम्प्यूटर-विज्ञान पढ़बैत छलीह आ विद्यार्थीसभकेँ समझबैत छलीह जे ककरो नामक वर्तनी आ अभिलेखक अद्वितीय परिचय-संख्या अलग बात अछि। “जँ दू व्यक्तिक नाम समान हो,” ओ कहलीह, “तँ दूनू एक व्यक्ति नहि भऽ जाइत छथि। आ जँ एक व्यक्ति अपन नाम विधिसम्मत बदलैत छथि, तँ ओ दोसर मनुष्य नहि बनि जाइत छथि।” नसीमा हुनकर लग मनस्वीक समस्या लऽ गेलीह। फिरदौस सीधा उपाय बतयबाक बदला पुछलीह जे महाविद्यालयक नियम आ सम्बद्ध विश्वविद्यालयक अधिसूचना कोन अछि। हुनकर तकनीकी

समझ कहैत छल जे पुरान अभिलेख मेटि देब कखनो उचित नहि; इतिहास सुरक्षित राखैत वर्तमान सही करबाक प्रक्रियाक आवश्यकता अछि। एहि भेदमे मनस्वीकेँ आशा देखायल।

मनस्वीक घरक कथा महाविद्यालयक कागजसँ बहुत पैघ छल। जोधपुरक एक सँकरी गलीमे ओकर माता बिनेसरी देवी सिलाइ करैत छलीह। पिता घरसँ बहुत दूर यातायातक काजमे रहैत छलाह। घरमे मनस्वीक नामक विषयपर बहुत काल मौन छल। जखन ओ अपन परिचय स्पष्ट कएने छलीह, माता पहिने ओहि बातकेँ बुझि नहि सकलीह। एक साँझ बिनेसरी पुछलीह, “तोरा हम जे नामसँ बजबैत छलहुँ, ओकरा सुनिते तोहर मन किएक दुखैत अछि?” मनस्वी उत्तर देलीह, “माय, हमर बचपनक स्मृति मेटाउ नहि। मुदा हम जे छी, तकरा तोहर आवाजमे सुनय चाहैत छी।” बिनेसरी चुप रहलि। अगिला बिहान ओ कहलीह, “मनस्वी, भात खा ले।” एहि दू शब्दमे कोनो न्यायिक आदेश नहि छल, मुदा घरक भीतर एकटा द्वार खुलि गेल।

एहि बीच रेवतीकेँ जोधपुरसँ कुसुमक पत्र भेटल। पत्रमे भूमि-विवादक नब तिथि आ मनस्वीक प्रकरणक छोट उल्लेख छल। रेवती पहिने सोचलीह जे एक छात्राक प्रवेश-अभिलेखक बात महाविद्यालय प्रशासन सुधरबय सकैत अछि। फेर कुसुमक संग पठाओल नियम-पत्र देखलीह। छात्रवृत्तिक एक प्रपत्रमे अनिवार्य रूपसँ पुरान अभिलेखानुसार नाम भरबाक निर्देश छल, नहि तँ प्रपत्र अस्वीकृत होइत। रेवती सचिवालयक एक वरिष्ठ अधिकारीसँ विधिक स्थिति बुझलीह। ओ कहला, “सामाजिक प्रश्न अछि, न्यायालय की करय?” रेवती उत्तर देलीह, “जखन प्रशासकीय निर्णयसँ किसी विद्यार्थीक परीक्षा, छात्रवृत्ति अथवा मूल अवसर रुकैत अछि, तखन ई न्यायिक परीक्षणक योग्य सेहो भऽ सकैत अछि। मुदा पहिने नियम आ प्रत्यक्ष अस्वीकृतिक कागज चाही।”

१५ अप्रैल २०१४ क बिहान समाचार आयल जे सर्वोच्च न्यायालय तृतीय लिङ्गक व्यक्तिसभक पहिचान, गरिमा आ समान अधिकार सम्बन्धी ऐतिहासिक निर्णय देने अछि। मनस्वी ओहि दिन महाविद्यालयक बरामदामे छात्रा-सभा लेल नहि, अपन अगिला पत्र तैयार करबाक लेल आएलीह। नसीमा समाचारक मूल निर्णयक भरोसेमन्द प्रति खोजबाक कहलीह। किछु विद्यार्थी तुरन्त कहय लगल जे आब प्रत्येक कार्यालय तुरन्त सभ कागज बदलि देत।

फिरदौस शान्त स्वरमे रोकलीह, “निर्णयक सिद्धान्त महत्त्वपूर्ण अछि; ओकर प्रशासनिक अनुपालन लेल लिखित निवेदन, नियमक संगति आ आवश्यक कार्यवाही सेहो होएत। हमर खुशी सही अछि, मुदा अधूरा आश्वासनसँ मनस्वीकेँ फेर निराश नहि करू।”

सायरा समाचारक पृष्ठ काटिकय अपन कापीमे साटलीह। बारह बरख पहिने ओकर विद्यालयक कागज आगिमे नष्ट भेल छल। ओहि दिन ओ देखैत छलीह जे ककरो कागज सुरक्षित होइतहुँ ओहि कागजमे लिखल परिचय ओकर जीवनक सत्य नहि। ओ मनस्वीसँ पुछलीह, “तँ अहाँ चाहैत छी जे पुरान प्रमाणपत्रक चिन्ह हराइ जाय?” मनस्वी उत्तर देलीह, “नहि। परीक्षा-संस्था अपन इतिहास रखय। मुदा वर्तमान प्रमाणपत्रमे हमर सही पहिचान होय। जँ पुरान नकलक संग नव प्रमाणक सम्बन्ध उचित रूपेँ दर्ज कएल जाए, तँ हमरा कोनो आपत्ति नहि।” सायरा माथ हिलौलीह। “हमरो पुरान विद्यालयक नष्ट अभिलेख फेर बनेबाक समय ई प्रश्न छल—नकल मूल नहि, मुदा मूलक आधारपर जाँचल नकल होयबाक चाही।”

प्रह्लाद न्यासक सचिव शरद कोठारीकेँ लिखलनि जे शिक्षण-संस्थाक स्तरपर एकटा स्पष्ट निर्णय चाही। शरद कहला, “हम छात्राकेँ प्रवेशसँ नहि रोकने छी।” प्रह्लाद उत्तर देलनि, “प्रवेश मात्र नहि, परीक्षाक नामावली आ छात्रवृत्ति सेहो अछि।” शरद पुरान कार्यालयीन पद्धतिक उल्लेख कएलनि। ओ नियमक भयमे छलाह, संगहि प्रतिष्ठाक चिन्तामे। कुसुम, जे किसानक बेटी रहि आब महिला विद्यार्थीक प्रतिनिधि बनि गेल छलीह, कहलीह, “जँ नियम स्पष्ट नहि, तखन सरकारी निकायसँ लिखित उत्तर मँगू। किन्तु अस्पष्टताक पूरा बोझ छात्रापर छोड़ि देब न्याय नहि।” शरद हँसलाह नहि। ओ पहिल बेर बैठकक विवरण स्वयं लिखि रहल छलाह।

अप्रैलक अन्तिम सप्ताहमे मनस्वीक छात्रवृत्तिक आवेदन तकनीकी कारणसँ रोकल गेल। पञ्जीकरण-सङ्ख्या मान्य छल, मुदा नामक एक प्रविष्टि मेल नहि खाइत छल। कर्मचारी एक संदेश पठौलक—‘आवेदनमे विसंगति’। मनस्वी देर धरि ओहि दू शब्दकेँ देखैत रहलि। ओहि राति घरमे बिनेसरी एक नव सिलाइक काम लेने छलीह, जाहिसँ पुस्तकक खर्च जुटत। मनस्वी कहलीह, “माय, एतेक छोट विसंगति लेल पढ़ाइ किएक अटकत?” बिनेसरी उत्तर देलीह, “हम कानून नहि जनैत छी। मुदा तोहर नाम सही लिखब एतेक कठिन होयत, से नहि बुझलहुँ।” मनस्वी ओकरा सम्हारबय लेल नहि, संगहि प्रश्न करबाक लेल हाथ धरलीह।

रेवती मनस्वीक अभ्यावेदनक मसौदा तैयार कएलीह। ओ छात्राक अपन कथन, पुरान प्रवेश-प्रमाण, छात्रवृत्तिक अस्वीकृति-सन्देश आ उच्च न्यायालयक समक्ष आवश्यक प्रतिवादी संस्थासभक सही विवरण अलग राखलीह। “एहि पन्नामे भावनाक भाषा कम किएक?” नसीमा पुछलीह। रेवती उत्तर देलीह, “भावना हटाओल नहि अछि। न्यायालयकेँ देखेबाक अछि जे अधिकारपर कोन ठोस प्रशासनिक अवरोध पड़ल। आत्मसम्मानक आघात अनुभूति अछि, छात्रवृत्तिक रोक ओकर दस्तावेजी परिणाम। दूनूकेँ मिलाकय स्पष्ट करबाक चाही।” रेवती एकटा वाक्य फेर बदललीह—ओ छात्राकेँ ‘विसंगत पहिचान’ नहि कहलीह, बल्कि ‘अभिलेखक विसंगति’ लिखलीह। भाषा स्वयं निर्णयक पूर्वाग्रह बनि सकैत अछि।

मईमे लोकसभाक परिणामक दिन मरुधरक चाय-दोकान भरल छल। १६ मईक मतगणनाक समाचारमे भारतीय जनता पार्टीकेँ लोकसभामे स्पष्ट बहुमत भेटबाक बात सामने आयल। राकेश नव आर्थिक अवसरक आशामे छल, नसीमा जनसेवाक उत्तरदायित्वपर प्रश्न करैत छलीह, कुसुम खेतीक पानि आ महाविद्यालयक छात्रावासक काजक चिन्तामे छलि। फिरदौस कहलीह, “निर्वाचन लोकतन्त्रक मूल घटना अछि। मुदा एक राजनैतिक परिवर्तनसँ अदालती मुकदमाक तथ्य नहि बदलत।” मनस्वी चुनावी परिणाम सुनैत छलीह, मुदा ओकरा अगिला परीक्षाक प्रवेशपत्रक चिन्ता छल। देशक पैघ घटनाक बीच व्यक्तिगत संकट छोट नहि भऽ जाइत अछि।

दरभंगामे शिवनारायण समाचार सुनि रेवतीकेँ फोन कएलनि। “नव सरकार अएल, आब लोक नव आशासँ भरल छथि।” रेवती कहलीह, “हँ, मुदा हमरा एखन दू अदालतक पन्ना पढ़बाक अछि। एकमे विद्यार्थीक अधिकार, दोसरमे क्रिकेटक आरोपीक जमानत पछाति साक्षी।” शिवनारायण कहलनि, “युग बदलैत अछि तँ कानूनक प्रश्न बदलैत अछि, मुदा जकर अदालतमे नाम पुकारल जाएत, ओकर प्रतीक्षा समान रहैत अछि।” घरक आँगनमे अमरेशक बेटा क्रिकेट खेलैत छल। नीलकान्तक पहिल मुकदमाक समय जकरा खेलक नामसँ भय रहैत छल, ओ आब बेटाकेँ कहैत छल—खेलक हारसँ डेराउ नहि, पैसाक छलसँ सावधान रहू।

जूनक एक गरम दिआरीमे रेवती आ मनस्वीक प्रकरणसँ जुड़ल जोधपुरक स्थानीय अधिवक्ता अनुरिमा पाठक राजस्थान उच्च न्यायालयक जयपुर पीठ नहि, क्षेत्राधिकारक

अनुकूल जोधपुर मुख्य आसनपर याचिका प्रस्तुत करबाक तैयारी कएलीह। रेवती दिल्लीमे रहि आवश्यक विधिक परामर्श दैत छलीह; स्थानीय विचारण आ बहसक दायित्व अनुरिमा सम्हारैत छलीह। प्रतिवादीमे राज्यक सक्षम प्राधिकारी, सम्बद्ध विश्वविद्यालयक परीक्षा-नियन्त्रक आ शिक्षण न्यासक सम्बन्धित पदाधिकारीक उल्लेख छल। प्रत्येकसँ एक समान आदेश नहि माँगल गेल। विश्वविद्यालयसँ प्रमाणपत्र-संशोधनक नियमानुसार विचार, छात्रवृत्ति प्रकोष्ठसँ आवेदनपर निर्णय, आ महाविद्यालयसँ छात्राक कक्षागत सुविधा सुनिश्चित करबाक आग्रह छल।

पहिल सुनबाईमे न्यायाधीश पुछलनि, “विद्यार्थीकेँ परीक्षासँ रोकल गेल अछि कि आवेदनक नाम-अन्तरक कारण छात्रवृत्ति अटकल अछि?” अनुरिमा उत्तर देलीह जे परीक्षा-प्रवेशपत्रक अवधि निकट अछि, आ विश्वविद्यालय अभिलेख-संशोधनक निवेदनपर एखन निर्णय नहि देने अछि। सरकारी अधिवक्ता कहला जे कार्यालयमे नब दिशा-निर्देश जारी होयबाक प्रक्रिया चलि रहल अछि। न्यायाधीश फेर पुछलनि, “जँ नीति तयार होमयमे समय लागय, तँ छात्राक चालू शैक्षणिक बरखक हानि कतेक उचित अछि?” ई प्रश्न सुनि मनस्वीक आँखिमे आशा चमकल, मुदा ओ न्यायालयक अन्तिम रुख अनुमान नहि लगौलीह। न्यायाधीश दुनू पक्षसँ आवश्यक लिखित स्थिति मँगलनि।

न्यायालयक बरामदामे बाहर एक पत्रकार मनस्वीकेँ रोकेलक। “अहाँ अपना बारेमे विस्तृत कहू, हम अहाँकेँ समाचारक मुख्य पात्र बना देब।” मनस्वी ठमकि गेलि। “हम अपन मुकदमाक सार्वजनिक पक्षपर बात करब,” ओ कहलीह, “मुदा हमर बचपनक सब निजी बात अहाँक शीर्षक लेल नहि अछि।” पत्रकार किछु असन्तुष्ट भेल। नसीमा एकर बीच नहि बजलीह; निर्णय मनस्वी स्वयं देने छलीह। सायरा एकटा छोट समाचार बनबैत छलीह, जाहिमे मूल प्रश्न छात्रवृत्ति, शैक्षणिक अभिलेख आ विधिक प्रक्रिया छल। समाचारक शीर्षक छल—‘एक छात्राक नाम, एक संस्थाक उत्तरदायित्व’।

अगिला सुनबाईमे विश्वविद्यालयक अधिवक्ता लिखित उत्तर देलनि जे पहिल पञ्जीकरणक अभिलेख सुरक्षित राखब संस्थाक प्रशासनिक आवश्यकता अछि, मुदा छात्राक वर्तमान नाम आ पहिचान सही करबाक लेल विधिसम्मत प्रक्रिया अपनाओल जा सकैत अछि। न्यायाधीश

कहला जे एहि उत्तरक आधारपर छात्राकेँ समयबद्ध निर्णय भेटबाक चाही, आ चालू परीक्षामे भाग लेबाक अवसर अनावश्यक रूपसँ बाधित नहि हो। ओहि चरणमे व्यापक नीतिगत निर्णय सुरक्षित राखल गेल; सम्बन्धित प्राधिकारीकेँ निवेदनपर निश्चित समयमे विचार करबाक दिशा देल गेल। मनस्वी बाहर आबि कहलीह, “अहाँ सभ कहब निर्णय भऽ गेल?” अनुरिमा उत्तर देलीह, “एखन एक आवश्यक बाट खुलल अछि। सम्पूर्ण कार्यवाही पूरा भेला परेँ फल बुझायब।” एहि सावधानीमे मनस्वीकेँ निराशा नहि, भरोसा भेटल।

जोधपुरमे बरखाक पहिल छोट बूँद गिरल तँ रामदेव मण्डल अपन कूपक लग बैसल छलाह। अधीनस्थ न्यायालयक आदेशपर नियुक्त नापीक विशेषज्ञ दू पुरान नक्सा, स्थानीय अभिलेख आ वास्तविक मेड़ देखबाक दिन निश्चित कएने छल। कुसुम अपन कापीमे पगरियाक उपयोगक तिथि लिखि राखने छलीह। शिक्षण न्यासक कर्मचारी सेहो उपस्थित रहताह। रामदेव कहला, “हमर बेटी अदालतक भाषा सीखि गेल, मुदा हम एखन धरि जमीनक भाषा बुझैत छी। ई पाथर कखन राखल गेल, ई कूपक पानि कखन घटल, पगरियापर कोन गाय रोज चलैत छल—ई सभ कागजपर कोना आएत?” कुसुम उत्तर देलीह, “कागजमे सभ नहि आएत, मुदा जे साक्षी देखलनि, ओ कहताह। जमीनक मापन जमीनपर होएत।”

नसीमा आ मनस्वी नापीक ठामसँ किछु दूर छात्रावासक आँगनमे ठाढ़ छलीह। मनस्वी पुछलीह, “अहाँ सभ एतेक दिन भूमि लेल लड़ि रहल छी, थाकल नहि?” कुसुम कहलीह, “थाकब एक बात अछि, अधिकार छोड़ब दोसर। मुदा हम दुनू पक्षक आवश्यकता देखैत छी। महाविद्यालयक नव कोठरी हमरा सभक लेल सेहो चाही। पगरिया बन्द भऽ जाए, तखन हमर घरक लोक कूप धरि किएक नहि जा सकत?” मनस्वी सहमति देलीह। हुनकर नामवला मामला सेहो एकहि प्रकारक छल—पुरान अभिलेख रखबाक संस्थागत आवश्यकता आ वर्तमान परिचय मानबाक छात्राक अधिकारकेँ विरोधी बनौनाइ आवश्यक नहि। जखन मनुष्य मनसँ विचार करैत अछि, किछु समस्या समाधानक नजदीक पहुँचि जाइत अछि; मुदा किछुमे विधिक कठोरता आवश्यक रहैत अछि।

बेंगलुरुमे निरंजन झा एखन नव कार्यक दबावमे छलाह। ओ भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठनक सहयोगी अभियान्त्रिक समूहसँ जुड़ल छलाह। मंगलयान ५ नवम्बर २०१३ केँ पृथ्वीसँ

उठि चुकल छल; २०१४ क सितम्बरमे ओकर मंगलक कक्षामे प्रवेशक लक्ष्य छल। निरंजन अपन बेटी अवनिक लेल तारासभक चित्र बनबैत छलाह, मुदा गोपनीय तकनीकी अभिलेख घर नहि अनैत छलाह। मैत्रेयी हर राति पुछैत छलीह, “अहाँक समूहक लोक एतेक तनावमे किएक छथि?” निरंजन कहैत छलाह, “अन्तरिक्षमे एक छोट गणनाक त्रुटि बहुत दूर धरि परिणाम बदलि सकैत अछि। एतय उत्साह अछि, मुदा उत्साह मापनक स्थान नहि लैत।”

अवनि एखन चौदह वर्षक भऽ चुकल छलीह। २००८ मे ओ कागजक चन्द्रमा बनौने छलीह; एखन विद्यालयक विज्ञान-संघमे मंगलक वातावरण, पृथ्वीसँ दूरी आ उपग्रहक कक्षाक विषयमे प्रश्न करैत छलीह। विद्यालयक एक लड़का कहलक जे विज्ञान एतेक पैघ बात अछि, लड़कीसभकेँ ओकरा छोड़ि आन विषय पढ़बाक चाही। अवनि घर आबि बहुत खिन्न छलीह। मैत्रेयी ओकरा पुछलीह, “तोहर प्रश्न ओहि लड़कासँ छोट छल?” अवनि कहलीह, “नहि।” “तखन पढ़ाइ किएक छोड़ब?” निरंजन सुनैत छलाह। ओ कहला, “विज्ञानमे प्रश्न ककरो लिङ्ग नहि पूछैत। गणना सही छैक कि नहि, से पूछैत अछि।” अवनिक मनमे ई वाक्य घर कऽ गेल।

एक साँझ निरंजनकेँ दरभंगासँ शिवनारायणक पत्र भेटल। पितृवत् मामा लिखने छलाह जे मरुधरक एक छात्राक नामक अधिकार सम्बन्धी मुकदमा चलैत अछि। ओ पुछने छलाह —“तकनीकी व्यवस्था बदलैत समय पुरान अभिलेख सुरक्षित राखि नव पहिचान जोड़बाक उपयुक्त पद्धति की होइत अछि?” निरंजन उत्तरमे लिखलनि जे वैज्ञानिक डेटा-सङ्ग्रहमे मूल मापनकेँ प्रायः अपरिवर्तित रखल जाइत अछि, किन्तु त्रुटि-सुधारक स्पष्ट इतिहास जोड़ल जाइत अछि। ‘ई विधिक मत नहि,’ ओ सावधानीसँ जोड़लनि, “मुदा अभिलेखक अखण्डता आ वर्तमान सत्यक बीच मेल संभव होइत अछि।” शिवनारायण पत्र पढ़ि रेवतीकेँ नकल पठौने छलाह। रेवती कहलीह, “विज्ञानक उपमा उपयोगी अछि, मुदा मानवीय अधिकारक अर्थ न्यायालय विधिसँ तय करत।”

जुलाईमे मनस्वीक परीक्षाक प्रवेशपत्र अन्ततः उचित शैक्षणिक व्यवस्था अन्तर्गत उपलब्ध भेल। ओ परीक्षा देलनि, मुदा प्रमाणपत्रक नामक विषयमे विश्वविद्यालयक अन्तिम प्रशासकीय निर्णय एखन शेष छल। बिनेसरी घरमे खीर बनौलीह। मनस्वी कहलीह, “माय, एकर अर्थ ई

नहि जे सभ समाप्त।” बिनेसरी मुस्की देलीह, “हम जनैत छी। मुदा जे परीक्षा देबा लेल एतेक लड़ब पड़ल, तकर पहिल दिनक खुशी तँ मनाएब।” बिनेसरी अखबारमे छपल बेटीकेँ देखबाक आग्रह नहि कएलनि; बेटीकेँ परीक्षा दऽ घर लौटल देखिकय हुनका अधिक आनन्द भेल।

रेवती दिल्लीक क्रिकेट-विचारणमे लौटलीह। दीपेन्द्र भाटियाक विषयमे स्वतंत्र अधिवक्ताक मार्फत एक औपचारिक सूचना प्राप्त भेल छल। युवक अपन देखल वित्तीय घटनाक विवरण नियमानुसार उपयुक्त अनुसन्धान-निकायकेँ देबाक इच्छा व्यक्त करैत छल। रेवती अपन मुवक्किल राघवक हितक कारण दीपेन्द्रक निजी सलाहकार नहि बनलीह। मुदा एक साक्षीक कथनक मूल्यांकन करबाक लेल तिथिसभक जाँच आवश्यक छल। शैलेश महाजनक कार्यालयक बैठकक तिथि, विदेश-यात्राक आधिकारिक विवरण आ आयोजनक बिलक तारीख—तीनू कागजमे विरोधाभास छल। रेवती सोचलीह, “जँ युवक देशसँ बाहर छल, तँ बैठकमे ओकर उपस्थितिक गवाही गलत अछि। मुदा जे बिलपर ओकर लिखावट अछि, ओ लिखावट विदेश जाएबासँ पहिने सेहो भऽ सकैत छल। एक तथ्य दू दोसरा प्रश्नक पूरा उत्तर नहि।”

अभियोजनक एक साक्षी कहैत छल जे दीपेन्द्र दिल्लीक एक बैठकमे ओकरा एक वित्तीय तालिका देखौने छल। रेवती प्रति-परीक्षणक अवसरपर पुछलीह, “अहाँ ओ युवककेँ पहिने सँ चिन्हैत छलहुँ?” साक्षी कहलक, “दू-तीन बेर देखने रही।” “बैठकक तिथि कोन आधारपर स्मरण अछि?” “हमर कापीमे लिखल अछि।” “कापी ओहि दिन लिखल गेल कि बादमे?” साक्षी असमंजसमे पड़ि गेल। अभियोजनक अधिवक्ता हस्तक्षेप कएलनि जे साक्षीक मूल लेखन उपलब्ध अछि आ ओकर परीक्षण करायल जा सकत। न्यायाधीश प्रतिरक्षाक प्रश्नकेँ उचित सीमा धरि चलबैत, कापीक प्रामाणिकता अगिला साक्ष्यक विषय राखलनि। रेवती साक्षीकेँ झूठा कहि तत्काल विजयक घोषणा नहि कएलीह।

अदालतक बाहर राघवक माता पद्मा पुछलीह, “एहि युवकक विदेश-जाएबासँ हमर बेटा बचि जायत?” रेवती उत्तर देलीह, “राघवक विरुद्ध जे साक्ष्य अछि, ओकरा अपन आधारपर जाँचबाक पड़त। दोसरक बयान गलती साबित होयबाक मतलब प्रत्येक आरोपक अन्त नहि। मुदा जखन एक महत्त्वपूर्ण गवाहीक तिथि मेल नहि खाइत अछि, न्यायालयक सामने ओ स्पष्ट

करब आवश्यक अछि।” पद्माक चेहरापर तत्काल राहत नहि आएल। ओ कहलीह, “अहाँ सभ बड़ धीरे चलैत छी।” रेवती मन्द स्वरमे उत्तर देलीह, “धीरे चलब अन्याय होयत जँ अनावश्यक विलम्ब करी। मुदा बिना जाँचक दौड़ल सेहो अन्याय करि सकैत अछि।”

अगिला सप्ताह नूर जतय एक लेख प्रकाशित कएलीह। ओहिमे क्रिकेट-विचारणक न्यायालयीन अवस्था, जमानत आ आरोपक अन्तर तथा साक्षीक स्मृतिक परीक्षणक विषय छल। सम्पादक फेर अधिक तीख शीर्षक चाहैत छलाह। नूर एकटा ठाम स्पष्ट लिखलीह जे ‘अभियुक्त’ आ ‘दोषसिद्ध व्यक्ति’ एक शब्द नहि। ओहि लेखकेँ बहुत कम लोक पढ़लक, मुदा राघवक कॉलेजक एक शिक्षक प्रति निकालिकय सूचना-पट्टपर लगौलनि। एक विद्यार्थी कहलक, “समाचारमे एतेक सावधानी रखब तँ पाठक बोर भऽ जाएत।” शिक्षक उत्तर देलनि, “जँ न्यायिक सावधानी नीरस लगैत अछि, तँ सनसनीक मूल्य पीड़ित आ निर्दोष दुनू चुकबैत छथि।”

अगस्तमे कुसुमकेँ मरुधरक कूपक मापनक प्रारम्भिक प्रतिवेदन भेटल। ओहिमे दू पुरान नक्साक रेखाक मेल पूर्ण नहि छल; एक सानो पगरियाक दशा अनेक बरखक उपयोगसँ बदलि गेल छल। विशेषज्ञ अपन प्रतिवेदनमे साफ लिखने छल जे उपलब्ध अभिलेख मात्रसँ स्वामित्वक अन्तिम निष्कर्ष नहि देल जा सकैत। रामदेव एहि सावधानीपर नाराज नहि भेलाह। ओ कहला, “कमसँ कम आब कागज स्पष्ट कहैत अछि जे ओकरा सभ नहि बुझाइत।” शिक्षण न्यासक शरद कोठारी चाहैत छलाह जे निर्विवाद भागमे छात्रावासक मरम्मत शीघ्र हो। कुसुम अनुमति देबाक अधिकार अपन पास नहि मानलीह, मुदा अपन पितासँ पुछलीह। रामदेव कहला, “जतय विवाद नहि, ओतय बच्चासभक घर बनय देबामे हमरा की बाधा?”

नसीमा ओहि निर्णयकेँ छात्रासभक सभामे पढ़लीह। एक समूह रामदेवक उदारताक प्रशंसा कएलक। कुसुम रोकलीह—“ओ अधिकारक सीमा स्वीकार कएने छथि, दया कएने नहि। हमरा सभकेँ ओहि अन्तरकेँ बुझबाक चाही।” मनस्वी पाछूक आसनपर बैसल सुनैत छलीह। हुनका अपन न्यायालयक अन्तरिम दिशा स्मरण अएल। अधिकार प्राप्त करबाक अर्थ ककरो कृपा नहि; संगहि अधिकारक प्रयोग दोसरक वैध आवश्यकता मेटा देबाक स्वीकृति सेहो नहि। परिसरक छोट-छोट विवादमे एहि जटिलता सँ नब समाजक अभ्यास चलि रहल छल।

सितम्बरक आरम्भमे अवनिक विद्यालयमे मंगलयान सम्बन्धी सार्वजनिक विज्ञान-चर्चा राखल गेल। निरंजन निजी नियन्त्रण-कक्षक कोनो चित्र नहि देखौलनि। ओ केवल प्रकाशित सामग्रीसँ समझौलनि जे ५ नवम्बर २०१३ क प्रक्षेपणक बाद अन्तरग्रहीय यात्राक चरण पूरा करि यान मंगलक नजदीक पहुँचि रहल अछि। एक बच्चा पुछलक, “जे आकाशमे एकटा बिन्दु अछि, ओ पृथ्वीसँ पहुँचि सकैत अछि, तखन हमर गाममे विद्यालयधरि सड़क किएक नहि बनि सकैत?” सभ हँसल, मुदा निरंजन गम्भीर भेला। “ई दू भिन्न काम अछि,” ओ कहला, “एकर समाधानक संस्थान अलग अछि। मुदा दुनूमे परिश्रम, योजना आ उत्तरदायित्वक आवश्यकता अछि।” मैत्रेयी बच्चाक प्रश्न घर लौटैत समय फेर दोहरौलीह। “विज्ञानक गौरव जँ समाजक प्रश्नकेँ सुनय सकय, तखने ओ लोकक होइत अछि।”

२४ सितम्बरक भोरि बेंगलुरुमे वातावरण अलग छल। मंगलयानक मंगलक कक्षामे प्रवेशक निर्णायक घड़ी। निरंजन अपन सहकर्मीसँ सार्वजनिक रूपसँ उपलब्ध सूचना पाबैत छलाह; हुनका कार्यदल विशिष्ट तकनीकी दायित्वमे व्यस्त छल। देशभरि समाचार-प्रसारणपर लोक प्रतीक्षा करैत छलाह। अवनि विद्यालय जाएबाक पहिने उठि गेलि। मैत्रेयी चाय बनौलीह, मुदा कप ठण्ढ भऽ गेल। किछु क्षणक तकनीकी अनिश्चितताक बाद सफलता पुष्ट भेल—भारतीय यान मंगलक कक्षामे पहुँचि गेल। निरंजन साँस छोड़लनि। हुनकर आँखि भरि आएल, मुदा ओ पहिल बात कहला, “सफलता दर्ज भेल। आब तथ्यक विश्लेषण आ वैज्ञानिक कार्य जारी रहत।”

दरभंगामे शिवनारायण दूरदर्शनक सामने बैसल छलाह। रेवती फोन कएलीह, “बाबूजी, निरंजनक फोन लागल?” “एखन नहि,” ओ कहला। “आज ओकरा काज करय देब। बादमे बधाई देब।” बरामदाक कोनमे अमरेशक बेटा कहलक, “मंगल बहुत दूर अछि, ने?” शिवनारायण उत्तर देलनि, “बहुत दूर। मुदा दूर पहुँचेबाक मार्गमे धरतीपर हजारो लोकक काज रहैत अछि।” बालक फेर पुछलक, “अदालत सेहो एतेक दूर जाइत अछि?” शिवनारायण मुस्की दैत कहला, “अदालतक बाट मीलमे नहि नापल जाइत अछि, बेटा। कखनो एक मनुष्यक ठीक नाम धरि पहुँचबो बहुत लम्बा यात्रा होइत अछि।”

मंगलयानक सफलता पछाति मरुधर महाविद्यालयमे विज्ञानक छोट प्रदर्शनी भेल। सायरा अपन बनाओल आकाशक चित्रक संग २००२ सँ २०१४ धरि अपन जीवनक तीन कागज रखलीह—जरि गेल प्रमाणपत्रक स्थानपर संस्थासँ प्राप्त नकल, स्नातक-प्रवेशक प्रमाण आ पुस्तकालयक सदस्यता-पत्र। एक छात्र पुछलक, “ई सभ विज्ञानक प्रदर्शनमे किएक?” सायरा उत्तर देलीह, “विज्ञानमे जे अभिलेख राखल जाइत अछि, ओकर परीक्षण होइत अछि। हमरा सभक शिक्षामे सेहो प्रमाणक इतिहास अछि। कागज सही नहि रहय तँ प्रतिभा सेहो बाधित होइत अछि।” प्रदर्शनी देखय आएल एक वृद्ध शिक्षक कहला जे हुनकर समयमे बच्चाक नाम अक्सर भिन्न-भिन्न ढङ्गसँ लिखल जाइत छल। मनस्वी सुनैत छलीह; ओ बुझैत छलीह जे लेखनक त्रुटि आ पहिचानक अस्वीकार एक समान नहि, मुदा दूनू परिस्थितिमे विद्यार्थीकेँ दुष्परिणाम भोगय पड़ि सकैत अछि।

बेंगलुरु सँ निरंजन एक छोट पत्र पठौलनि। पत्रमे सफल अभियानक वैज्ञानिक वर्णनक बदला हुनकर समूहक सामान्य अनुभूति छल—“हम सभ जहिया संख्याक जाँच करैत छी, ओहि समय स्वयंकेँ सही सिद्ध करबाक इच्छा सँ बेसी तथ्यकेँ सही राखबाक दायित्व रहैत अछि। एक गणना गलती भेल तँ ओकर सुधारक प्रमाण चाही, लाज नहि।” शिवनारायण ओ पत्र फेर रेवतीकेँ पठौलनि। रेवती ओहि समय सहगल खेल-परामर्शक पञ्जीकरणक दू प्रमाणित नकल देखैत छलीह। हुनका निरंजनक वाक्य बहुत परिचित लागल। एक कम्पनीक नाम दोसर सँ मिलल छल, मुदा पञ्जीकरण-संख्या, स्थापना-तिथि आ पता भिन्न छल। जँ ओ सभकेँ एक संस्था मानि अभियोग बनाओल जाए, तखन एक वास्तविक अपराधक सम्भावित जाँच सेहो गलत बाट चलि सकैत अछि।

दीपेन्द्रक स्वतंत्र अधिवक्ता, विद्याधर पाटिल, रेवतीकेँ विधिसम्मत पत्र लिखलनि। ओ आग्रह कएलनि जे दीपेन्द्रक नामक विषयमे प्रतिरक्षा पक्ष समाचारमे पूर्वनिर्णयात्मक कथन नहि दे। रेवती उत्तरमे लिखलीह जे हुनकर पक्ष सार्वजनिक आरोप नहि लगा रहल अछि; ओ न्यायालयमे उपलब्ध तिथि आ दस्तावेजक परीक्षण चाहैत अछि। दू वकीलक बीच ई पत्राचार सामान्य, मुदा महत्त्वपूर्ण छल। एक संभावित साक्षीक हित आ अभियुक्तक प्रतिरक्षाक अधिकारक बीच सीमा बनल रहनाइ जरूरी छल। शिवनारायण पुछलनि, “अहाँ युवकक

बातपर विश्वास करैत छी?” रेवती उत्तर देलीह, “हम ओकर बात सुनने नहि छी; जे अभिलेख अदालतमे उपलब्ध अछि, ओ देखैत छी। विश्वासक स्थानपर परीक्षणक व्यवस्था रखैत छी।”

अक्टूबरक पहिल सप्ताहमे मरुधर महाविद्यालयक कार्यालयसँ मनस्वीकेँ एक अधूरा उत्तर भेटल। छात्रवृत्तिक आवेदनक अस्थायी रोक हटेबाक उल्लेख छल, मुदा संशोधित नामक अन्तिम प्रमाणपत्र लेल विश्वविद्यालयक पृथक प्रक्रिया शेष छल। मनस्वी एहि उत्तरक प्रति अनुरिमाकेँ देलीह। स्थानीय अधिवक्ता कहलीह, “आब जे राहत भेटल, तकर पूरा विवरण न्यायालयकेँ बतायब। जे अधूरा अछि, से सेहो स्पष्ट करब। अदालतकेँ केवल विजयक घोषणा सुनौनाइ उचित नहि।” छात्रा कहलीह, “एहि बीच हमर अंतिम परीक्षाक परिणाम आबि सकैत अछि। जँ ओ पुरान नामसँ आएल तँ?” अनुरिमा उत्तर देलीह, “तकर परिणाम बताकय समुचित दिशा माँगब। मुदा जे एखन नहि घटल अछि, ओकरा घटित घटना कहि कागज नहि बनायब।”

उच्च न्यायालयक अगिला सुनबाईमे सरकारी अधिवक्ता मानलनि जे छात्रवृत्ति प्रकोष्ठ अस्थायी रोक हटेने अछि। विश्वविद्यालयक अधिवक्ता कहला जे नाम आ लिङ्ग-परिचयक सुधार सम्बन्धी लिखित मार्गदर्शी व्यवस्था तैयार होइत अछि। अनुरिमा पुछलीह जे तैयार होयबाक प्रक्रिया कब पूरा होयत आ छात्राक परिणामक कागज कखन जारी होएत। न्यायाधीश सरकारी पक्षसँ कहला, “याचिकाकर्ता समक्ष समस्या एकटा वर्तमान शैक्षणिक अवधि सँ जुड़ल अछि। सामान्य नीति बनय, से स्वागतयोग्य; मुदा एक छात्राक प्रपत्र अनिश्चित काल धरि रोकल नहि रहय।” अदालत आवश्यक अभिलेखक आधारपर समयबद्ध प्रशासनिक निर्णयक निर्देश देलक, संगहि मूल प्रवेश-अभिलेखक संरक्षणक प्रश्न सम्बन्धित संस्थाक नियमपर छोड़लक।

सुनबाईक बाद बिनेसरी देवी अपन बेटीकेँ पुछलीह, “हमर बयान कखन देबाक पड़त?” मनस्वी हँसि देलीह। “माय, ई आपराधिक मुकदमा नहि, प्रशासनिक आदेशक परीक्षण अछि। सभ गवाहकेँ कठघरामे ठाढ़ नहि होयबाक पड़ैत।” बिनेसरी कहलीह, “हमरा तँ न्यायालय नाम सुनिते गवाही याद अबैत अछि।” मनस्वी उत्तर देलीह, “अहाँक आवाज हमरा लेल महत्वपूर्ण अछि, मुदा हमर अधिकारक आधार अहाँक स्वीकृति मात्र नहि। अपन पहचान हम

स्वयं कहैत छी।” बिनेसरी किछु देर चुप रहलीह। फेर कहलीह, “हम तोहर माय छी; तोहर बात सुनबाक काज हमरा सीखय पड़ल। एतयसँ हमरा अपन भूल नहि नुकाएब।”

महाविद्यालयक एक शिक्षक एहि मुकदमाक विरोध करैत छलाह। ओ कहला जे नामक अभिलेख बदललासँ परीक्षा-संस्थाक भरोसा घटत। फिरदौस कौल हुनकासँ बहस करबाक बदला एक प्रश्न पुछलीह—“जँ कोनो विद्यार्थीक जन्म-तिथिक सरकारी प्रमाणमे सुधार होइ, तखन संस्था मूल प्रविष्टिक इतिहास सुरक्षित राखैत नव प्रमाण देबाक नियम बना सकैत अछि कि नहि?” शिक्षक कहला, “हँ, नियम रहय तऽ।” फिरदौस कहलीह, “तखन एतहु नियमक आवश्यकता अछि। मुदा ध्यान राखू, जन्म-तिथिक साधारण त्रुटि आ व्यक्तिक लिङ्ग-पहिचान एकै प्रकारक प्रश्न नहि। केवल लेखा-संगति लेल मानवीय गरिमा त्यागल नहि जा सकैत।” शिक्षक उत्तर नहि देलनि। विमर्श समाप्त नहि भेल, मुदा प्रश्नक भाषा बदैल गेल।

ओहि दिन सायरा आ नसीमा महाविद्यालयक दीवालपर छात्रसभक लेल एक सार्वजनिक सूचना लगौलीह। ओहि सूचनामे नाम-संशोधनक प्रक्रिया, परीक्षा-प्रपत्रक सहायता आ शिकायत दर्ता करबाक आधिकारिक स्थानक विवरण छल। ककरो निजी विवरण सार्वजनिक नहि कएल गेल। मनस्वी आग्रह कएलीह जे सूचना केवल हुनकर नामक उदाहरण नहि बने। “हम चाहैत छी,” ओ कहलीह, “जे बादमे केओ छात्रा वा छात्र आबय, तँ ओकरा अदालत धरि जाइ बिना अपन आवश्यक कागज ठीक करबाक बाट देखाय।” नसीमा कहलीह, “यही कारण संस्थाक लिखित नियम चाही।” छात्रसभ ओहि सूचनाक नकल अपन-अपन कापीमे रखलक।

रामदेव मण्डलक कूपक सीमित सर्वेक्षणक प्रतिवेदन सेहो अधीनस्थ न्यायालयमे पहुँचल। नापी करनिहार व्यक्ति स्वीकार कएलनि जे पुरान नक्साक किछु रेखा समयक संग मेटा गेल अछि, मुदा वर्तमान मापन आ पुरान गवाहीक आधारपर दू सम्भावित व्याख्या अछि। न्यासक अधिवक्ता अपन पक्ष रखलनि, किसान परिवारक अधिवक्ता अपन। न्यायाधीश तत्काल सीमाक अन्तिम निर्धारण नहि कएलनि; ओ आवश्यक नापीक पूरक प्रश्न आ पुरान पगरियाक उपयोगक साक्ष्यपर विचारक तिथि देलनि। रामदेवक छोट नाति अदालतसँ बाहर पुछलक, “बाबा, अहाँ जीतलहुँ?” रामदेव कहला, “अदालत एखन सुनि रहल अछि। जखन सुनबाई बाकी हो, तखन जीतक शोर नहिये करब उचित।”

दरभंगामे शिवनारायणक स्वास्थ्य किछु दिन कमजोर रहल। रेवती हुनका आराम करबाक कहलीह। ओ अपन पुरान नीलकान्तक फाइलक पन्नासभ फेर क्रममे रखैत छलाह। “एहि पन्नाक चिन्ह देखू,” ओ बेटीकेँ कहला, “२००० मे एक नाम मरल व्यक्तिक छल। हम सभ पुछैत रही जे ओकरा के लिखलक। आब मनस्वीक नामक बात सुनैत छी। पहिल मामलामे लिखल नामक दुरुपयोग जाँचबाक छल; दोसरमे लिखल नाम सुधारबाक अधिकार। एकहि शब्द—नाम—क भीतर कतबा अलग न्यायिक प्रश्न अछि!” रेवती उत्तर देलीह, “बाबूजी, एकर कारणहि हमर न्यायालयक काज एक अपराधक पाछाँ नहि दौड़ैत। कागज आ मनुष्यक सम्बन्ध प्रत्येक युगमे नव रूप लैत अछि।” शिवनारायण हँसि कहलनि, “कथा अहाँ लिखू, हम तँ एखन कचहरीक बही राखब।”

एक साँझ नूर जतय अपन सम्पादकसँ बहस करैत छलीह। एक विदेशी समाचारपत्र मंगलयानक सफलतापर लिखल लेखमे भारतक वैज्ञानिक उपलब्धिक प्रशंसा करैत देशक गरीबीक उल्लेख कएने छल। एक स्थानीय पत्र ओहि लेखकेँ भारत-विरोधी कहि सरलीकृत निष्कर्ष देलक, दोसर पत्र वैज्ञानिक उपलब्धिक चर्चा मात्र छापलक। नूर कहलीह, “दूनू तथ्य एक संग रहि सकैत अछि—अन्तरिक्षमे पैघ उपलब्धि आ धरतीपर असमानता। मुदा जे रिपोर्ट उद्धृत करब, ओकर वास्तविक शब्द पढ़ि उद्धरण देबाक चाही।” सम्पादक पुछलनि, “तोँ मंगलयानक लेख लिखब कि अदालतक?” नूर उत्तर देलीह, “दूनू पर लिखब, मुदा बिना प्रमाणक एकर बीच छुपल धनक सम्बन्ध कल्पना नहि करब।”

नूरक लिखल लेखमे अवनिक विद्यालयक छोट विज्ञान-प्रदर्शनीक उल्लेख छल। अवनि अपन बाबूसँ पुछलक जे ओकर नाम अखबारमे छपब उचित छल कि नहि। निरंजन कहला, “जँ अहाँ सार्वजनिक कार्यक्रममे प्रश्न कएने छी आ पत्रकार सही सन्दर्भ देलनि, तँ ठीक अछि। मुदा अहाँक सहमति आ निजताक विषय ध्यानमे राखल जाए।” मैत्रेयी जोड़लीह, “स्तुति आ उपहास दुनूसे परे अपन प्रश्न बचाकय रखू।” अवनि अपन कापीमे लिखलक —“मंगल पर पहुँचल वैज्ञानिक हुनका प्रश्न बदलैत रहैत छथि; परीक्षा मे एक उत्तर लिखलाक बादो हम प्रश्नक कारण बुझब।” एहि लिखावटमे ओहि पीढ़ीक नव वैज्ञानिक आत्मविश्वास छल।

नवम्बरक पहिल सप्ताहमे मनस्वीक विश्वविद्यालयसँ सुधरल परिणाम-पत्र उपलब्ध भेल। पत्रमे वर्तमान नाम छल, संगहि गोपनीय प्रशासनिक अभिलेखमे पुरान प्रवेश-सङ्ख्याक सम्बन्ध सुरक्षित राखल गेल छल। छात्रवृत्ति कार्यालयक निर्णय सेहो आबि गेल—अघोषित रोकक कारण खत्म कएल गेल, मुदा रकम वितरित होयबाक वास्तविक समय अलग प्रशासनिक प्रक्रियापर निर्भर छल। मनस्वी घर लौटि परिणामपत्र मायकेँ देखौलनि। बिनेसरी बहुत देर धरि कागज छातीसँ सटौने रहलीह। “आब तोरा पढ़बामे कोनो बाधा नहि?” ओ पुछलीह। मनस्वी कहलीह, “आओर बहुत बाधा आबि सकैत अछि, माय। मुदा एहि कागजमे हम छी। ई एकटा पैघ बात अछि।”

रेवती छात्राक प्रकरणक अन्तिम अवस्थाक प्रतिवेदन पढ़लीह। अदालतमे उपलब्ध जानकारीक आधारपर याचिकाक मुख्य व्यक्तिगत राहत प्राप्त भेल छल, मुदा व्यापक संस्थागत नियमक प्रश्न प्रशासन आ वैधानिक विचार लेल शेष छल। अनुरिमा कहलीह जे न्यायालय समक्ष वास्तविक अनुपालनक विवरण रखल जाएत, ताकि अनावश्यक विवाद जारी नहि रहय। मनस्वी पुछलीह, “हम अन्य विद्यार्थीक लेल किछु कऽ सकैत छी?” अनुरिमा उत्तर देलीह, “अहाँ अपन अनुभव लिखि सकैत छी, छात्रसंग सहायता कऽ सकैत छी, आवश्यक नीति लेल वैध आग्रह कऽ सकैत छी। मुदा ककरो ओरसँ बिना हुनकर सहमति बजबाक अधिकार नहि लेब।” मनस्वी एहि बातकेँ अपन नव दायित्व मानलीह।

एहि बीच क्रिकेटक विचारणमे एकटा पुरान वित्तीय पत्रक स्रोत स्पष्ट भेल। दीपेन्द्रक विदेश-यात्राक आधिकारिक अभिलेखसँ एक विशेष दिन ओकर भारतसँ बाहर होयब समर्थित भेल। मुदा आयोजनक देयकपर ओकर हस्तलेख विदेश-प्रस्थानसँ पहिने कएल गेल हेबाक सम्भावना एखन शेष छल। अभियोजन अपन एक साक्षीक बैठकक तिथिमे त्रुटि स्वीकार करैत अतिरिक्त प्रमाण प्रस्तुत करबाक अवसर मँगलक। न्यायालय प्रतिरक्षा पक्षकेँ ओहि नव सामग्रीक नकल उपलब्ध कराएबाक निर्देश देलक। रेवती कहलीह, “त्रुटि पकड़ल गेल, मुदा ओकरा लुकाएब आवश्यक नहि। अभियोजन अपन कथन स्पष्ट करत, हम ओकर परीक्षण करब।” ओ एहि घटनाकेँ विजयक प्रचारमे नहि बदललीह।

अदालतक दुआरिपर दीपेन्द्र आ राघव अकस्मात आमने-सामने आबि गेलाह। दीपेन्द्र क्षणभर ठमकि गेल। राघव सेहो ओकरा चिन्हबाक प्रयास कएलक। दूनू किछु नहि कहलनि। विद्यानाथ पाटिल, जे दीपेन्द्रक स्वतन्त्र अधिवक्ता छलाह, ओकरा अलग दिस लऽ गेलाह। अरुणिमा राघवकेँ स्मरण करौलीह जे विचाराधीन प्रकरणमे सम्भावित साक्षीसँ अनौपचारिक चर्चा उचित नहि। राघव माथ झुका देलक। ओकरा अपन महाविद्यालयक मैदानक दिन स्मरण अएल। ओ अपराधमे सहभागी छल कि नहि, तकर परीक्षण एखन चलि रहल छल; मुदा अदालतक बाहर मौन राखब ओकरा लेल प्रत्येक दिन एकटा अलग कठिन परीक्षा बनि गेल छल।

शिवनारायणक घरमे पुरान दीवाल-घड़ीक काँटा शान्त गति सँ चलैत छल। रेवती दीपेन्द्रक प्रकरणक बात संक्षेपमे बतौलीह, मुदा सम्भावित गुप्त परामर्शक विवरण नहि। शिवनारायण कहला, “तारीखमे गलती भेटल तँ एकटा गवाही कमजोर होएत। मुदा ओकरा कारण सभ व्यक्ति निर्दोष अथवा दोषी नहि भऽ जाइत। नाम मिलल तँ कम्पनी एक नहि भऽ जाइत। अभिलेख सही देखायल तँ ओकर अर्थ सही होय, से जरूरी नहि। एहि तीनटा बातकेँ याद राखू।” रेवती उत्तर देलीह, “आब चौथ बात सेहो जोड़ू—मनुष्य अपन परिचय स्वयं बतैत अछि, तकरा गलत प्रविष्टिमे बन्द नहि कएल जा सकैत।” शिवनारायण नम्रतासँ माथ हिलौलनि।

दिसम्बरक आरम्भमे मरुधर महाविद्यालयक पुस्तकालयमे छोट सभा भेल। छात्रसभ मंगलयानक सार्वजनिक चित्र, विज्ञानक पुस्तक आ विभिन्न भारतीय भाषाक साहित्यिक पत्रिका सजौने छल। सायरा गुजरातीसँ मैथिलीमे अनूदित एक कविता पढ़लीह, जकर विषय घर गमौने परिवारक स्मृति छल। कुसुम खेतक पानिपर अपन छोट आलेख पढ़लीह। मनस्वी पहचान आ शिक्षा सम्बन्धी अनुभव सुनौलीह। नसीमा पहिनेहि कहि देलीह जे ई सभा न्यायालयक निर्णयक उत्सव मात्र नहि, शिक्षा-संस्थानमे सभक गरिमाक विषयक सामूहिक विचार अछि। ककरो निजी कथा बिना अनुमति नहि छापल जाएत।

सभाक अन्तमे फिरदौस कौल एकटा पुरान कम्प्यूटरक देखरेख करैत छात्रसभकेँ डिजिटल अभिलेखक विषयमे बुझौलीह। “नाम बदललापर इतिहास सुरक्षित रखब चाही,” ओ कहलीह,

“मुदा इतिहास सुरक्षित रखबाक नामपर व्यक्तिगत सूचना सभक हाथमे देब उचित नहि। जँ बादमे संस्थान बाहरी कम्पनीसँ अभिलेखक काम कराओत, तँ लिखित उत्तरदायित्व आ सीमित पहुँचक व्यवस्था चाही।” कुसुम एहि बातकेँ छात्रसभा-पुस्तिकामे लिखलीह। हुनका एखन अनुमान नहि छल जे अगिला दशकमे मरुधरक डिजिटल व्यवस्था कतेक पैघ भऽ जाएत आ एही प्रश्नक नव रूप फेर उठत।

रामदेवक परिवारक भूमि-विवादक अगिला तारीख निर्धारित भेल छल। कुसुम घर लौटैत पिता सँ कहलीह, “मनस्वीक परिणाम-पत्र सही भऽ गेल। आब ओकरा फेर पढ़ाइमे बाधा नहि पड़त, एहन आशा अछि।” रामदेव उत्तर देलनि, “तखन बहुत नीक। मुदा हमर पगरियाक निर्णय?” कुसुम कहलीह, “एखन शेष अछि। नापीक दू उत्तरक बीच न्यायालय फेर पुछत।” रामदेव मन्द हँसी हँसला। “एकटा छात्राक नाम ठीक होयब सेहो देशक काज अछि; एक किसानक पगरिया ठीक होयब सेहो। सब काज एक दिनमे नहि होइत।” ओहि साँझ पगरियापर चलैत गोरू परछाइँसँ लम्बा देखाइत छल। कूपक पानि शान्त छल, मुदा विवादक समय चलि रहल छल।

बेंगलुरुमे अवनि मंगलयानक सफलतापर विद्यालयक वार्षिक लेख लिखि समाप्त कएने छलीह। मैत्रेयी ओकरा पुछलीह, “तोहर लेखमे किएक लिखल अछि जे सफलताक पाछाँ विफलक सम्भावनाक अध्ययन अछि?” अवनि कहलीह, “बाबू कहैत छथि जे प्रत्येक चरणक गणना दोहराओल गेल। जँ गलती नहि खोजब, तँ सही होयबाक भरोसा कोना होएत?” मैत्रेयी मुस्कुरौलीह। “ई बात मनुष्यक व्यवहारमे सेहो काम आओत। अपन मानल सत्यकेँ प्रश्नक सामना करय देबाक साहस चाही।” निरंजन पत्र पढ़ि अवनिक माथपर हाथ रखलनि। मंगल बहुत दूर छल, मुदा वैज्ञानिक सोचक पहिल शिक्षा घरक मेजपर भेटि रहल छल।

दिसम्बरक अन्तिम दिन रेवती दिल्लीसँ दरभंगा लौटलीह। रेलक खिड़कीक बाहर सूखल खेत आ नहरक रेखा देखैत हुनका विगत बरखक पात्रसभ स्मरण अएल—मनस्वी, कुसुम, नसीमा, राघव, नूर, दीपेन्द्र, अवनि। ककरो जीवनमे एक आदेशसँ राहत अएल, ककरो मुकदमा अधूरा छल, ककरो कौशलक सम्मान बढ़ल। रेवती अपन छोट कापीमे लिखलीह, “विधि सत्यक खोजक एक अनुशासित बाट अछि, मुदा सत्यक सम्पूर्ण जीवन विधिक

आदेशमे समा नहि सकैत।” ओ वाक्य लिखिकय कापी बन्द कएलनि। ओहि राति हुनकर पिताक घरमे किछु पुरान फाइल आ नब पाण्डुलिपि एकहि मेजपर रखल छल।

शिवनारायण फेर ओहि पुरान बहीखाताक पैंतालीसम पन्ना देखैत छलाह, जकर लेखनक विवाद दरभंगाक पहिल मुकदमामे पूर्णतः नहि सुलझल छल। ओ पन्ना अदालतक ऐतिहासिक प्रतिक नकल छल, कोनो नव जाँचक गोपनीय सामग्री नहि। रेवती पुछलीह, “बाबूजी, ई पन्ना एखन धरि राखने छी?” ओ कहला, “एहि लेल नहि जे सभ मुकदमा एकहि षड्यन्त्रक अछि। एहि लेल जे एक पन्नासँ हम एकटा पाठ सीखलहुँ—जे आरोप करैत अछि, ओकरा प्रमाण देबाक पड़ैत अछि; जे प्रतिरक्षा करैत अछि, ओकरा तथ्यक सीमाकेँ आदर देबाक पड़ैत अछि। आ जे न्याय माँगैत अछि, ओकरा न्यायालय धरि पहुँचेबाक बाट खुलल रहबाक चाही।”

बाहर अमरेशक बेटा क्रिकेटक गेंद लऽ दरवज्जापर आएल। “बाबूजी, मंगलयान अब कहाँ अछि?” ओ शिवनारायणसँ पुछलक। शिवनारायण कहला, “मंगलक कक्षामे घूमि रहल अछि। ओकर विषयमे निरंजन बेटा बेसी सही बतौत।” बालक फेर पुछलक, “आ अदालतक फाइल?” रेवती हँसलीह, “ओ सभ अपन-अपन ठाम पर अछि। किछुक निर्णय भेल, किछुक सुनबाई चलत।” बालक गेंद उठौलक आ बाहर दौड़ि गेल। घाम उतरि रहल छल। दीवालक भीतर कानूनक पुस्तकसभ शान्त ठाढ़ छल; दीवालक बाहर बच्चासभ नव खेलक नियम अपने बनाएब चाहैत छल। रेवती खिड़कीसँ देखैत रहलीह। हुनका बुझायल—ग्रहक दूरिक गणना सम्भव अछि, मुदा एक मनुष्यसँ दोसर मनुष्य धरि सम्मानक दूरी घटेबाक काज प्रत्येक पीढ़ीकेँ फेर करय पड़ैत अछि।

अध्याय १९ — स्क्रीनपर लिखल वाक्य

सन् २०१५ : जोधपुर, जयपुर, दिल्ली आ दरभंगा

जनवरीक दोसर सप्ताहमे मरुधर महाविद्यालयक पुस्तकालयक दरवज्जापर एकटा कागज सटल छल। ओहिमे लिखल छल जे पुरान पाण्डुलिपिक कोठरी छतसँ पानि चुबबाक कारण बन्द रहत। विद्यार्थी सभ एहि सूचनाकेँ आरम्भमे सामान्य मरम्मतिक समाचार मानलनि। मुदा कोठरी बन्द भेल तीन सप्ताह बीति गेल, न तऽ छत सुधरल, न पुस्तक भीतरसँ निकालबाक व्यवस्था भेल। अन्तिम वर्षक विद्यार्थी विवेक मेघवालकेँ अपन शोधक लेल ओहि कोठरीक दू पुस्तक चाही छल। पुस्तकाध्यक्ष चाभी नहि देलनि। विवेक शिकायत-पञ्जीमे अपन नाम लिखि देलक। ओकरा नहि बुझायल जे एही छोट प्रविष्टिसँ एक दिन उच्च न्यायालयमे डिजिटल अभिलेखक उत्पत्ति, नागरिकक वाणी आ शिक्षण संस्थाक अधिकारपर बहस शुरू होएत।

विवेक जोधपुरसँ पूब एकटा छोट गामक छल। ओकर बाबू पत्थर तराशबाक काज करैत छलाह, माय खेतिहर मजदूरी आ घरक बीच दिन बितबैत छलीह। छात्रवृत्तिक एक किस्त समयपर नहि भेटलासँ विवेक किरायाक कोठरी छोड़ि छात्रावासक साझा शय्यापर आबि गेल छल। ओ पाठ्यपुस्तक लेल पुरान पुस्तकक बाजार घुमैत छल, आ संध्यामे छोट छात्रसभकेँ गणित बुझाकय भोजनक किछु खर्च जुटबैत छल। ओकरा राजनीति प्रसिद्ध करबाक आग्रह नहि छल; विद्यार्थी-संघक मंचसँ बेसी ओकर परिचय पुस्तकालयक मेज छल। मुदा जनवरीमे छात्रावासक जलापूर्ति रुकल, भोजनालयक हिसाब समयपर नहि लगल आ पुस्तकालयक मरम्मति-व्ययक विवरण अस्पष्ट रहल। तखन ओ तीनू प्रश्न एकहि लिखित निवेदनमे जोड़ि छात्र-कल्याण कार्यालयमे देलक।

कार्यालयमे लिपिक जगमोहन पुरान फाइल उठा कहलक, “निवेदन प्राप्त भऽ गेल। उत्तरक प्रतीक्षा करू।” विवेक पुछलक, “कतेक दिन?” जगमोहन किछु उत्तर नहि देलक। बाहर बरामदामे मनस्वी, नसीमा आ कुसुम छात्रसभक संग बैसल छलीह। मनस्वीक शैक्षणिक अभिलेखमे गत वर्ष भेल सुधारक कारण विद्यार्थी ओकरा लिखित निवेदन तैयार करबाक अनुभववाली मानैत छलाह। ओ विवेककेँ कहलीह, “जे माँग छी, ओकर संख्या आ आधार स्पष्ट राखू। अपन बातकेँ एना लिखू जे ककरो नामक उपहास नहि हो।” कुसुम छात्रावासक पानिक प्रश्न अलग लिखबाक सलाह देलीह। नसीमा कहलनि, “उत्तर नहि भेटल तँ अगिला प्रक्रिया पूछब। पहिने अभिलेख रखब।” विवेक निवेदनक दू प्रति बनौलक आ प्राप्तिक मोहर अलग कागजपर लेलाक बाद घर गेल।

ओहि राति विवेक अपन पुरान कम्प्यूटरपर मैथिली आ राजस्थानी शब्द मिलाकय छोट टिप्पणी लिखलक। ओकरा अपना मातृभाषामे लिखबाक अभ्यस्तता कम छल, मुदा कुसुमक आग्रहपर ओ लिखित भाषाकेँ अधिक सरल केलक। अन्तिम वाक्य ओ स्वयं जोड़लक —“पुस्तकालयक दुआरि बन्द रखलासँ प्रश्नक आगि नहि मिझाएत; ओ आगि किताब खोलबाक चाहनाक अछि, कोनो घर जराएबाक नहि।” ओहिसँ पहिने ओ छात्रवृत्ति, नलसँ अबैत गन्द पानि आ मरम्मतिक स्वीकृत व्ययक विवरण सार्वजनिक करबाक आग्रह लिखने छल। टिप्पणी अपन परिचित विद्यार्थीसभक छोट सामाजिक-माध्यम समूहमे राखि ओ पढ़ाइ करय बैसि गेल। ओकरा अनुमान नहि छल जे भोर होइते ओकर वाक्यक अर्थ बदलबाक प्रयास आरम्भ भऽ जाएत।

अगिला दिन छात्रावासक बाहर किछु मोबाइलमे एक चित्र घूमि रहल छल। ओकर ऊपर विवेकक नाम आ परिचय-चित्र छल; नीचाँ लाल अक्षरमे लिखल छल—“दुआरि बन्द रहत तँ आगि लगत।” मूल टिप्पणीक शेष भाग गायब छल। दू विद्यार्थी ओकरा घेरि पुछलक, “तूँ धमकी देने छह?” विवेक अपन मोबाइल खोलि पूरा लिखल बात देखौलक। किछु लोक मानि गेल; किछु कहलक जे चित्र तऽ सभक फोनमे अछि, एतेक जल्दी असत्य नहि भऽ सकैत। संध्याधरि एक अनाम खातासँ कार्यालय जराएब सम्बन्धी कठोर सन्देश सेहो चलि गेल।

विद्यार्थी सभ एहि अनाम सन्देशकेँ विवेकक टिप्पणीसँ जोड़ि देलक, मुदा ककरो लग ई प्रमाण नहि छल जे दुनू एकहि व्यक्तिक लिखल अछि।

महाविद्यालयक अनुशासन समितिक सचिव महेन्द्र लोधा विवेककेँ कारण बताउ सूचना देलनि। सूचनामे छात्र-शान्ति भंग करबाक, सम्पत्तिक सुरक्षापर भय उत्पन्न करबाक आ शिक्षण संस्थाक प्रतिष्ठा घटेबाक आरोप छल। ओहिमे एक पृष्ठक चित्र जोड़ल छल, मूल टिप्पणीक पूरा प्रति नहि। विवेक पत्र पढ़िकय ठमकि गेल। ओकर परीक्षा तीन मासपर छल; छात्रावास छोड़य पड़ल तँ पढ़ाइ कठिन भऽ जाएत। ओ फिरदौस कौलसँ भेटल, जे कम्प्यूटर-विज्ञान पढ़बैत छलीह। फिरदौस कहलीह, “आरोपित चित्र देखिकय तुरन्त उत्तर नहि लिखू। जे मूल सामग्री अहाँक अछि, ओकर सुरक्षित प्रति रखू। जे चित्र बान्हल गेल अछि, ओकर स्रोत पुछू। आ जे नाम अहाँक नहि, ओकरा अपन नहि मानू।”

फिरदौस अपन कार्यालयमे विवेकक उपस्थिति पञ्जीक समय लिखलनि, मुदा ओकर मोबाइल अपन नियन्त्रणमे नहि लेलनि। ओ बुझबैत छलीह जे शिक्षकक जिज्ञासा आ विधिसम्मत फॉरेन्सिक परीक्षण अलग बात अछि। विवेक अपन मूल टिप्पणीक पाठ, प्रकाशनक समय आ मित्रसभकेँ उपलब्ध रहल संदेशक विवरण लिखित रूपमे संकलित केलक। कुसुम, मनस्वी आ नसीमा अलग-अलग बतौलीह जे हुनका सभकेँ मूल वाक्य पढ़बाक अवसर भेटल छल; मुदा ककरो हर अनाम सन्देश देखबाक प्रत्यक्ष जानकारी नहि छल। नसीमा कहलीह, “हम जे देखलहुँ से लिखब; जे नहि देखलहुँ से नहि।” कुसुम ओकर बातकेँ दोहरौलीह। बाहर छात्रसभक बीच छोट विवाद आब आन्दोलनक प्रश्न बनि चुकल छल।

महेन्द्र लोधाक समक्ष पहिल स्पष्टिकरणमे विवेक मूल टिप्पणी देखौलक। ओ पुछलक, “अहाँक सूचनामे जे शब्द अछि, ओ हमर लिखल शब्दक पूरा रूप नहि।” लोधा कहला, “संस्थाक सुरक्षा हमर दायित्व अछि।” विवेक उत्तर देलक, “सुरक्षाक प्रश्न उचित अछि, मुदा आरोप देनिहारकेँ प्रमाण देखबक चाही।” समिति विवेकक उत्तर प्राप्त कएलक, मुदा अगिला दिन ओकर छात्रावास-प्रवेश अस्थायी रूपसँ रोकबाक आदेश जारी भेल। पत्रमे आरोपक परीक्षण एखन जारी रहबाक उल्लेख छल, तथापि परीक्षाक समय निकट छल। विवेक अपन

पुस्तक, कपड़ा आ छोट ताला लऽ छात्रावाससँ निकलल। छात्रावासक कोठरीमे ओकर सहवासी अमन एकटा रिक्त खाट देखैत रहल।

कुसुम विवेककेँ अपन परिवारक परिचितक किरायाक कोठरीमे अस्थायी ठाम दिलौलीह। ओहि राति विवेकक बाबू फोनपर कहलनि, “हमर गाममे सभ पूछैत अछि जे तोरा किएक निकालय देलक?” विवेकक स्वर भिजि गेल। “बाबू, हम कोनो घर जराएबाक बात नहि लिखलहुँ।” बाबू उत्तर देलनि, “हम तोरा मानैत छी। मुदा जे कागज कॉलेज पठौलक, ओकरा केना हटाएब?” विवेक कहलक, “पहिने साँच बात लिखिकय देब। बादमे जे प्रक्रिया अछि ओहि बाटेँ जाएब।” फोन कटला पर ओ पहिल बेर अपन टिप्पणीक मूल वाक्य फेर पढ़लक। आगिक उपमा ओकरा अपन क्रोधक सही रूप लगने छल; आब ओ बुझलक जे उपमाक शक्ति ओकरा विरुद्ध सेहो प्रयोग कएल जा सकैत अछि।

जयपुरमे रेवती एक पुरान भूमि-सम्बन्धी मामलाक सुनबाई लेल आयल छलीह। कुसुम हुनका फोन कएलनि। पहिने ओ कहलीह जे रामदेव मण्डलक पगरियाक सीमित मापनक प्रतिवेदन आगू बढ़ि रहल अछि; तकर बाद विवेकक पूरा प्रसंग सुनौलीह। रेवती पूछलनि, “संस्थानक नियम, कारण बताउ पत्र आ लिखित उत्तर सभ उपलब्ध अछि?” कुसुम कहलीह, “अछि, मुदा चित्रक मूल स्रोत नहि।” रेवती उत्तर देलीह, ‘तखन अदालत दौड़बाक पहिने संस्थाक सक्षम अपीलीय अधिकारीक समक्ष तात्कालिक राहत माँगू। आ एखन धरि शब्द ‘जालसाजी’ घोषित नहि करू। चित्र काटल अछि कि बदलल, से जाँचक विषय अछि।’ ओ समानान्तर लिखित प्रतिवेदन तैयार करबाक सलाह देलीह।

फरवरीक आरम्भमे मरुधरक छात्रसभक बीच विभाजन बढ़ल। एक पक्ष कहैत छल जे विद्यार्थीकेँ अनुशासनहीनता करबाक खुल्ला छूट नहि देल जा सकैत। दोसर कहैत छल जे प्रश्न पुछबाक कारण छात्रावाससँ निकासल गेल। कुसुम दुनू घोषणासँ दूरी रखलीह। “पुस्तकालयक छत सचमुच टपकैत अछि; ई प्रशासनिक समस्या अछि,” ओ कहलीह। “विवेकक शब्दक अर्थक प्रश्न अलग अछि; चित्रक सत्यता तेसर प्रश्न अछि।” एकटा विद्यार्थी-सभा एहि तीनू प्रश्नकेँ अलग प्रस्तावमे लिखलक। ओहि सभामे ककरो कार्यालय

घेरबाक प्रस्ताव छल, मुदा नसीमा कहलीह जे धमकी आ धक्का-मुक्की सँ विवेकक पक्ष कमजोर होएत। सभा शांतिपूर्ण निवेदन आ सूचना-माँगपर सहमत भेल।

ओहि समय दिल्लीमे सर्वोच्च न्यायालयक एक महत्त्वपूर्ण प्रकरणक अन्तिम विचार चलि रहल छल। सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियमक धारा ६६ए क व्यापक, अस्पष्ट शब्दसभ नागरिकक ऑनलाइन अभिव्यक्तिपर अत्यधिक नियन्त्रणक सम्भावना रखैत अछि कि नहि, एहि पर देशभरि बहस छल। रेवती सार्वजनिक न्यायिक विवरण पढ़ैत छलीह, मुदा विवेकक प्रकरणमे एखन एहि धारामे पुलिसक कोनो आरोप नहि छल। मरुधरक विवाद एक शिक्षण संस्थाक अनुशासनात्मक आदेशसँ उठल छल। रेवती अपन सहायककेँ कहलीह, “नियमक नाम सुनेला मात्रसँ ओकर प्रयोग नहि भऽ जाइत। आब जे विवाद अछि, ओ प्राकृतिक न्याय आ लिखित निर्णयक आधारपर जाँचल जाएत; संवैधानिक सिद्धान्त बादमे संदर्भ देत।”

मार्चक पहिल सप्ताहमे मनस्वी पुनः विश्वविद्यालय कार्यालय पहुँचलि। गत वर्ष अपन शैक्षणिक परिचयक सुधारक अनुभव हुनका धैर्य देलने छल। ओ लोधासँ कहलीह, “कारण बताउ पत्रमे जे चित्र जोड़ल अछि, ओहि चित्रक स्रोत विद्यार्थीकेँ बताबय देबाक कृपा करू।” लोधा उत्तर देलनि, “समिति अपन विवेकसँ सामग्री देखैत अछि।” मनस्वी कहलीह, “समिति देखू; मुदा जेकर उत्तर माँगल जाइत अछि, ओकरा सामग्रीक पूरा अर्थ बुझबाक अवसर सेहो चाही।” लोधा किछु क्षण मौन रहलाह। ओहि दिवस हुनका एक गोपनीय सूचना प्राप्त भेल छल जे अनाम धमकीवाला संदेश बाहरी समूहसँ सेहो अबि सकैत अछि। मुदा एखन स्रोत निश्चित नहि छल; ओ विद्यार्थीक समक्ष ताहि अस्पष्ट सूचनाकेँ प्रमाणक रूपमे रखब उचित नहि बुझलनि।

फिरदौस एक छोट अध्ययन-सत्रमे विद्यार्थीक सामने तीन कागज रखलीह। पहिल पूरा मूल पाठक मुद्रित प्रति, दोसर चलैत काटल चित्र, तेसर एक अनाम धमकीक पाठ। ओ पुछलीह, “एहि तीनूकेँ एक लेखकक काज सिद्ध करबाक लेल की चाही?” विद्यार्थी सभ अनेक उत्तर देलक—नाम, चित्र, फोन, समय। फिरदौस कहलीह, “प्रत्येक संकेतक भरोसेक सीमा अछि। नाम लिखल रहब पहचानक अन्तिम प्रमाण नहि। चित्रक रूप मिलब स्रोतक अन्तिम प्रमाण नहि। आ किछु गलत कथन भेटलासँ ककरो सामान्य आलोचनाकेँ हिंसा घोषित नहि कएल जा

सकैत।” ओ सावधान कएलनि जे ई कक्षा विधिक फॉरेन्सिक प्रतिवेदन नहि, डिजिटल साक्षरता लेल अभ्यास अछि।

२४ मार्च २०१५ क भोरि सर्वोच्च न्यायालयक निर्णयक समाचार पहुँचल। *श्रेया सिंघल बनाम भारत संघ* प्रकरणमे धारा ६६ए असंवैधानिक घोषित भेल। रेवती निर्णयक मूल पाठ मँगाकय पढ़लीह; ओ देखलीह जे न्यायालय अभिव्यक्तिपर वैध सीमाक विषय सेहो अलग ढंगसँ विचार कएलक। धारा ६९ए आ मध्यस्थ संस्थाक उत्तरदायित्वक प्रश्नपर निर्णय समान नहि छल। ओ छात्रसभकेँ उत्साहमे ई नहि कहलनि जे ऑनलाइन लिखल प्रत्येक बातक लेल आब ककरो जवाबदेही नहि। ओकरा बदला ओ लिखलनि, “सिद्धान्त नागरिकक वाणीकेँ अनावश्यक भय सँ मुक्त करैत अछि; वास्तविक धमकी, मानहानि अथवा अनुशासनक विधिसम्मत प्रश्नक पृथक परीक्षण शेष रहैत अछि।”

निर्णयक समाचार विद्यार्थीक समूहमे पहुँचल तखन शशांक त्रिपाठी, जे अनुशासनक पक्षमे सार्वजनिक वक्तव्य देने छल, अपन फोनपर ओही काटल चित्र फेर देखलक। ओकरा अपन पहिल कठोर शब्द स्मरण अएल। ओ विवेकक कोठरी धरि गेल। दरवज्जा खोलेलापर कहलक, “हम तोरा बिना पूरा बात सुनने दोषी कहि देलहुँ। मुदा हमरा एखनहुँ बुझय चाही जे पहिल संदेश कोना फैलल।” विवेक ओकरा भीतर बैसौलक। ‘हमरो लिखलमे आगिक उपमा अछि,’ ओ मानलक। “मुदा ओ आगि घर जरबय लेल नहि। तूँ जँ हमरा प्रश्न पुछब, हम उत्तर देब। मुदा जे शब्द हम नहि लिखलहुँ, ओकर दायित्व हम कोना लेब?” शशांक पहिल बेर मूल लेखन अपना आँखिसँ पढ़लक। ओ सार्वजनिक रूपसँ अपन पहिल आरोप वापस लेबाक निश्चय कएलक, मुदा कतहु अंतिम दोषी पहिचानबाक दावा नहि कएलक।

महाविद्यालयक एक प्रबन्धक, विभूति भटनागर, एहि विवादसँ असहज छलाह। संस्थाक प्रतिष्ठा बचबयक चिन्ता हुनका वास्तविक छल; संगहि नव पुस्तकालय-भवनक दानदाताक सम्भावित निर्णय सेहो हुनकर मनमे छल। ओ एक बैठकमे कहला, “बाहर समाचार एना गेल अछि जे परिसरमे हिंसाक वातावरण अछि। पहिने व्यवस्था शान्त हो।” फिरदौस प्रश्न कएलनि, “व्यवस्थाक शान्ति सत्यक जाँच बिना टिकत?” विभूति उत्तर देलनि, “हम विवेकक दोष पहिनेसँ निश्चित नहि मानैत छी, मुदा छात्रकेँ पढ़ाइमे लौटेबाक समय संस्था अपमानित

नहि होय।” कुसुम कहलीह, “भवनक मान राखबाक लेल जीवित छात्रक भविष्य रोकब उचित नहि।” बैठकी बिना निर्णय समाप्त भेल, मुदा भटनागर पहिल बेर अनुशासन आदेशक आधारिक सामग्री मँगौलनि।

नूर जतय जोधपुर पहुँचलि। ओ सन् २०१३ क क्रिकेट सम्बन्धी मुकदमापर समाचार लिखैत-लिखैत अभिलेखक आधा रूप देखेनिहार लोकसँ सावधान भऽ गेल छलीह। विवेकक प्रकरणमे ओ पहिने महाविद्यालयक लिखित आदेश, तकर बाद विवेकक मूल कथन आ काटल चित्र देखलीह। एक स्थानीय संवाददाता हुनका कहलक, “एहि तरहेँ लिखू जे कॉलेज सभ वाणी दबा रहल अछि।” नूर उत्तर देलीह, “ओहो निष्कर्ष जाँच बिना नहि। कॉलेज छत ठीक नहि केलक, ई सत्यापन योग्य अछि। विवेककेँ निष्कासन भेल, तकर आदेश अछि। ककरो धमकी देल गेल कि नहि, तकर अलग प्रमाण चाही।” ओ विवेकक परिवारक अनुमति लऽ ओकर शिक्षा-संकटक चर्चा कएलनि, मुदा निजी ठेगाना नहि छापलनि।

छात्रावासक भोजनालयमे ओहि संध्यामे दू टेबल बीच तिक्त संवाद भेल। अमन कहलक जे विवेकक बिछौना खाली रहलासँ कोठरीक किराया बढ़ि गेल। शशांकक मित्र राघवेन कहलक जे भड़काउ शब्दक विरोध आवश्यक अछि। मनस्वी ओकरा प्रश्न कएलनि, “जँ असल धमकी कियो दोसर देने हो तँ?” राघवेन चुप रहल। हुनकर बीच पुरान जातिगत आ आर्थिक तनाव सेहो छल। किछु छात्र विवेकक गरीब परिवारक कारण ओकरा कमजोरी मानैत छल, आ किछु ओकरा छात्रनेता बनायब चाहैत छल। विवेक भोजनालयमे उपस्थित नहि छल, मुदा ओकर नामपर निर्णय होइत रहल। नसीमा दीवालपर एक पाँति लिखलीह—“जकर विषयमे बोलैत छी, ओकरा बाजबाक अवसर दिअ।”

एप्रिलक प्रारम्भमे विश्वविद्यालयक अपीलीय अधिकारीक समक्ष विवेकक आवेदन पहुँचल। आवेदनमे ओकर मुख्य आग्रह छल जे छात्रावासक अस्थायी रोक हटे, परीक्षा-प्रवेश सुनिश्चित हो, आ आरोपक पूरा आधारिक अभिलेख उपलब्ध कराओल जाए। प्राधिकारी संस्थाक प्रतिवेदन मँगौलनि। ओ तात्कालिक रूपसँ विवेककेँ परीक्षाक तैयारी लेल पुस्तकालयक सामान्य भागमे प्रवेशक अनुमति देबाक निर्देश देलनि, मुदा छात्रावासक प्रश्न निर्णयाधीन रहल। एहि सीमित राहतसँ विवेककेँ किछु सास भेटल। तथापि किरायाक कोठरीक खर्च

ओकर बाबूक लेल पैघ छल। ओ संध्यामे फेर गणित पढ़ौनाइ शुरू कएलक, जखन कि ओकर मित्रसभका लागल जे न्यायिक आदेश अबिते सभ समस्या मेटि गेल।

सन् २०१४ मे सर्वोच्च न्यायालयक *अनवर पी. वी. बनाम पी. के. बशीर* निर्णयक प्रतिलिपि रेवतीक कार्यालयमे पहिनेसँ छल। रेवती एकर प्रमुख बात पढ़ि कर्मचारी मंजूकेँ बुझौलीह—इलेक्ट्रॉनिक अभिलेखक मुद्रित प्रति प्रस्तुत करबा लेल स्रोत आ निर्माण-पद्धतिक विधिसम्मत प्रमाण सम्बन्धी विशिष्ट नियम अछि। मुदा महाविद्यालयक अनुशासन समिति अदालत नहि, आ उच्च न्यायालय रिटमे हर नव विवादक पूर्ण विचारण नहि करैत। ताहि लेल विवेकक पक्ष पहिने ई दिखाओत जे संस्था निर्णयक आधारिक सामग्रीकेँ जांचे बिना अथवा छात्रकेँ उचित उत्तरक अवसर दिए बिना कार्रवाई केलक। जँ विस्तृत फॉरेन्सिक परीक्षण आवश्यक होयत तँ सक्षम प्रक्रिया अलग चालू होयत। ई भेद बुझबाक बाद मनस्वी अपन आवेदनक भाषा संशोधित कएलनि।

फिरदौसकेँ महाविद्यालयक कार्यालयसँ एक अधिकृत सूचनाक प्रति भेटल, जाहिमे अनुशासन सचिवकेँ चित्र उपलब्ध करेनिहार व्यक्तिक नाम मात्र ‘विद्यार्थी प्रतिनिधि’ लिखल छल। ओहि व्यक्तिक लिखित बयान संलग्न नहि छल। फिरदौस भटनागरकेँ पत्र लिखलीह जे जे चित्रक आधारपर विद्यार्थीकेँ हानि पहुँचल अछि, तकर प्रस्तुतकर्ता, प्राप्तिक समय आ संस्थाक अभिलेखमे ओकर रखबाक प्रक्रिया स्पष्ट होय। भटनागर उत्तर देलनि जे विश्वविद्यालय अपन विभागीय सामग्रीक परीक्षण करैत अछि। फिरदौस पत्रक प्रतिलिपि छात्रकेँ देलीह। ओ एकर निष्कर्ष नहि निकाललीह जे सचिव जानबूझि चित्र बदलने छलाह; अखन प्रशासकीय असावधानी सेहो सम्भव छल।

एहि बीच मरुधरक पुरान पगरिया-विवाद फेर न्यायालयक सूचीमे आयल। रामदेवक परिवारक प्रतिनिधि कुसुम एक तिथि पर उपस्थित होइते विवेकक सुनबाईक चिट्ठी सेहो लऽ आयलि। रेवती हँसि कहलीह, “एक दिनमे दू अलग न्यायिक प्रश्न। कूपक पानि धरि पहुँचबाक बाट आ छात्रक पुस्तक धरि पहुँचबाक बाट।” कुसुम उत्तर देलीह, “दुनूकेँ केओ कागज देखाकय रोकि सकैत अछि।” रेवती स्पष्ट कएलनि जे दूनूक कानून, न्यायालय आ परिणाम अलग अछि। कुसुम कहलीह, “तथापि कागजक छाया मे मनुष्य छूटि जाइत अछि।” रेवती

ओहि वाक्यकेँ अपन नोटबुकमे लिखलीह। पगरियाक सीमित तकनीकी परीक्षणकेँ विवेकक प्रकरणसँ जोड़ल नहि गेल, मुदा कुसुमक जीवनमे दुनू जिम्मेदारी संगहि चलैत रहल।

छात्रावासक बरसाती नालीक स्थिति बिगड़ि रहल छल। एक राति आन्हरिमे दू कमरा भिजि गेल। विवेक आब ओतय नहि रहैत छल, मुदा ओकर मित्र अमन ओकरा फोनपर कहलक, “जे बात तूँ पूछने छलहुँ, ओ एखनहुँ उत्तरविहीन अछि।” विवेक कहलक, “नालीक फोटो खींचबाक पहिने अधिकारीकेँ लिखित सूचना दिअ; कोठरीमे जे पुस्तक भीजल, ओकर सूची बनाउ।” अमन आश्चर्य करैत पुछलक, “तूँ आब सेहो कार्यालयक बाट सोचैत छह?” विवेक उत्तर देलक, “बात जँ साँच अछि, ओकरा साबित करबाक बाटेँ जाउ। झूठक चित्रक शिकार भेला पछाति हम सत्यक चित्र बनय नहि छोड़ब।” एहि निर्णयसँ ओकर क्रोध समाप्त नहि भेल; ओ क्रोधकेँ कार्यमे बदलबाक अभ्यास करैत छल।

मईक अन्तमे विवेकक परीक्षाक पहिल दिन छल। द्वारपर पहरेदार ओकर प्रवेश-पत्र देखिकय ठमकि गेल; छात्रावास-सम्बन्धी पुरान सूचीमे ओकर नाम लाल स्याहीसँ चिन्हित छल। विवेक घबरा गेल। नसीमा तुरन्त शैक्षणिक प्रकोष्ठसँ लिखित आदेश लऽ अयलीह, जाहिमे परीक्षा-प्रवेशपर रोक नहि होयबाक स्पष्टता छल। पहरेदार पत्र पढ़िकय बाट छोड़ि देलक। विवेक परीक्षा-कक्षमे बैसल तँ पहिल प्रश्न ओकरा परिचित छल, मुदा पन्द्रह मिनट धरि हाथ काँपैत रहल। ओ अपन दाहिना हाथ बाम हथेलीसँ दबौलाक बाद लिखब शुरू कएलक। बाहर नसीमा सोचैत छलीह—कागजक एक अस्पष्ट निशानक कारण छात्रक महिनाक परिश्रम कोना संकटमे पड़ि सकैत अछि।

परीक्षाक बाद विवेक अपन मायकेँ फोन कएलक। माय खेतसँ लौटि अयल छलीह। ओ पुछलनि, “पढ़ाइ भेल ने?” विवेक उत्तर देलक, “हाँ माय, किछु कठिन छल, मुदा लिखलहुँ।” माय पुछलनि, “कॉलेज फेर कोठरी देत?” विवेक कहलक, “आब सुनबाई बाकी अछि।” माय मन्द स्वरमे कहलीह, “हमरा शहरक कायदा नहि बुझाइत। मुदा जे कागज तोहर पढ़ाइ रोकैत अछि, ओ कागज लिखनिहारकेँ एक बेर तोहर घर देखबाक चाही।” विवेक मौन रहल। ओकरा एहि वाक्यमे क्रोधसँ बेसी थकान सुनाइत छल। ओ सोचलक—आगिक उपमा लिखबाक बदला जँ मायकेँ खेतक श्रम लिखि दितहुँ तँ लोक अर्थ काटि बदलि सकैत छल कि नहि?

एक दिन नूर जतय अपन समाचारक मसविदा रेवतीकेँ नहि, अपन सम्पादक फ़हीमकेँ देखौलीह। फ़हीम पुछलनि, “अहाँ लिखल अछि जे चित्रक स्रोत विवादित। जँ मूल प्रकाशन उपलब्ध अछि तँ विवाद की?” नूर उत्तर देलीह, “मूल पाठ सभ देख सकैत अछि; मुदा जे काटल चित्र कार्यालयमे पहुँचल, तकरा के बनौलक, से एखन हम नहि जनैत छी।” फ़हीम कहलनि, “तखन फोटो बनौनिहार अपराधी अछि, ई नहि लिखू।” नूर कहलीह, “हम ओ नहि लिखने छी। केवल निर्णय देबासँ पहिने मूल स्रोत देखबाक आवश्यकता लिखने छी।” समाचार छपल तँ किछु पाठक नूरकेँ साहसी कहलक, किछु पक्षपाती। ओ दिन भरि प्रतिक्रियाक उत्तर देबाक बदला हुनकर मूल सामग्रीक नकल सुरक्षित रखलीह।

जूनक अन्तिम सप्ताहमे प्रशासनिक अपीलक निर्णय अएल। प्राधिकारी मानलनि जे कारण बताउ पत्रमे पूरा मूल कथन जोड़ल नहि छल आ रोकक अवधिक स्पष्ट सीमा सेहो नहि देल गेल। विवेककेँ छात्रावासमे फेर प्रवेशक अवसर देबाक निर्देश भेल; संगहि अनुशासनात्मक आरोपपर नब, समुचित विचार करबाक छूट संस्था केँ देल गेल। पत्रमे विवेक निर्दोष घोषित नहि छल; केवल प्रक्रिया-संबंधी त्रुटिक कारण पूर्व आदेश बदलल गेल। विवेककेँ राहत भेटल, मुदा ओकरा आब परीक्षा पछाति छात्रावासमे एक मासमात्र रहबाक छल। ओ सोचे लगल जे जकर घरसँ ओ निकलल, ओकरा फेर प्रवेशपत्र देबाक अर्थ कतेक पैघ, जखन कि खोयल समय वापस नहि अबैत।

महेन्द्र लोधा अपीलक पत्र पढ़ि मनमे संकोच अनुभव कएलनि। ओ स्वयं युवावस्थामे विश्वविद्यालयक कर्मचारी बनल छलाह आ छात्रसभक शिकायत सुनब हुनका कतेको बेर समयक नाश लगैत छल। आब ओ पत्रक प्रत्येक वाक्य पढ़ैत छलाह। एक सहयोगी कहलक, “हम सभ अपीलमे हारि गेलहुँ।” लोधा उत्तर देलनि, “निर्णयक अर्थ ई अछि जे हम जे प्रक्रिया अपनौने छलहुँ, से पर्याप्त नहि छल। छात्र दोषी अछि कि नहि, ओ फेर देखल जाएत। मुदा पहिल कार्यवाहीक त्रुटि हम अपन मानब।” सहयोगी चकित रहल। लोधाक एहि स्वीकारसँ विवेकक विश्वास तुरन्त नहि लौटि अएल, मुदा अधिकारीक भीतर आत्म-परीक्षणक एक छोट बाट खुलल।

जुलाईक आरम्भमे मरुधरक कार्यकारिणी समिति तय केलक जे छात्र-विषयक नव सुनबाई योग्य व्यक्तिसभक समक्ष होय। फिरदौस, जे पहिल जाँचमे छात्रकेँ सहायता देने छलीह, निर्णय देनिहार समितिमे सम्मिलित नहि भेलीह। ओ अपन सहायताक भूमिका स्पष्ट राखलीह। समितिमे एक विधि-विभागक अध्यापक, एक महिला प्राध्यापिका आ छात्र-कल्याण अधिकारीकेँ रखल गेल। विवेककेँ आरोपक संशोधित विवरण देल गेल, मुदा ओकरा एक पुरान गोपनीय टिप्पणी सेहो देखायल जाहिमे ‘आगि’ शब्द लिखल छल आ लेखकक परिचय नहि छल। विवेक कहलक, “एकर विरुद्ध हम की उत्तर देब, जँ अहाँ सभ नहि बता सकैत छी जे एकरा लिखनिहार के?” समितिक अध्यक्ष कहला, “तकर प्रमाणक वजन पर हम विचार करब। अहाँ अपन लिखल वाक्यक अर्थ बताउ।”

विवेक अपन पहिल पत्र फेर पढ़लक। ओ स्वीकार केलक जे संस्थाक व्यय-प्रकाशनक माँगक संग ओकर भाषा तीक्ष्ण छल। “हम लिखने छलहुँ जे किताबक दुआरि बन्द रखलासँ प्रश्नक आगि नहि मिझाएत,” ओ कहलक। “आगिक उपमा सँ किनको डर लगि सकैत अछि; एतेक हमर भाषा-विवेकक कमी मानैत छी। मुदा हम भवन जराएबाक धमकी नहि देने छी, आ नहि ककरो एहि लेल उकसौने छी।” अध्यक्ष पुछलनि, “अहाँक पाठकेँ केयो आगिक धमकी बुझलक तँ?” विवेक कहलक, “ओकरा पूरा वाक्य पढ़ायब। बुझबाक अधिकार ओकरा अछि, मुदा हमर विरुद्ध कएल दावा प्रमाण बिना मानल नहि जाए।” सभामे उपस्थित छात्र प्रतिनिधिसभक बीच मौन छा गेल।

प्राध्यापिका देवयानी राठौड़ पुछलीह, “जे छात्रावासक पानि, पुस्तकालयक व्यय आ छात्रवृत्तिक प्रश्न अहाँ उठौने छी, तकर कागज की अछि?” विवेक प्राप्तिक मोहरवला तीन निवेदन रखलक। “ई हमर शिकायतक आधार अछि। एहि मे ककरो व्यक्तिगत अपमान नहि अछि,” ओ कहलक। देवयानी प्रत्येक कागज देखलीह। लोधा बतौलनि जे भवनक मरम्मतिक अनुमति छल, मुदा सामग्री पहुँचबामे देरी भेल। समितिक अध्यक्ष टिप्पणी कएलनि जे मरम्मतिक काम समयपर नहि होयब स्वयं विद्यार्थीकेँ हिंसक शब्द लिखबाक अनुमति नहि दैत; संगहि छात्रक व्ययक प्रश्नक उत्तर टारबाक कारण सेहो नहि बनैत। अन्हरिया दुपहरमे खुलल

खिड़कीसँ मैदानक गर्म हवा भीतर आबि रहल छल। छात्रक साधारण शिकायत आब विधिक संवादक केन्द्रमे छल।

साक्षीक रूपमे शशांककेँ बजाओल गेल। ओ स्वीकार केलक जे पहिल बेर काटल चित्र अपना मित्रक फोनमे देखल छल। ओहि मित्रकेँ के पठौने छल, से ओकरा पक्का स्मरण नहि। अध्यक्ष पुछलनि, “तखन जे अहाँ सार्वजनिक रूपसँ कहने छलहुँ जे विवेक आगि लगेबाक धमकी देलक, से कोन आधारपर?” शशांक उत्तर देलक, “हम चित्रकेँ पूरा वाक्य मानि लेने छलहुँ।” विवेक ओकर दिशि नहि तकलक। शशांक आगाँ कहलक, “बादमे पूरा वाक्य देखलहुँ। हमर पहिल निष्कर्ष गलत छल।” अध्यक्ष कहलनि, “गलत निष्कर्ष मानब महत्त्वपूर्ण अछि। मुदा हम एखनहुँ स्रोतक जाँच करब।” शशांक सुनबाईक बाद विवेकसँ माफी मँगलक; विवेक ओकरा क्षमा करबाक वचन नहि देलक, मुदा बात सुनि लेलक।

तखन एकटा अनपेक्षित पत्र आयल। ‘छात्रसूचना दर्पण’ नामक अनौपचारिक पृष्ठ चलौनिहार कनक सेठी लिखने छल जे विवेकक पूरा लेखन बहुत पैघ होयबाक कारण ओ पहिल समाचारमे छोट चित्र बनौने छल। ओकर कथन छल जे जानबूझि अर्थ बदलबाक इच्छा नहि छल। तथापि ओ मानलक जे ‘कोनो घर जराएबाक नहि’ वाक्य हटेलासँ अर्थक भ्रम पैदा भेल। पत्रमे अनाम धमकीवला सन्देशक निर्माणक कोनो स्वीकार नहि छल। समिति कनककेँ व्यक्तिगत रूपसँ बजौलक। ओ कहलक, “हम लोकप्रिय शीर्षक चाहैत छलहुँ।” प्राध्यापिका देवयानी प्रश्न कएलनि, “लोकप्रियताक लेल अर्थ बदलल तँ तकर हानि ककरा भेल?” कनक उत्तर नहि दऽ सकल।

कनकक गलती वास्तविक छल, मुदा ओकरा सम्पूर्ण अनाम धमकीक लेखक मानबाक आधार एखन सेहो नहि छल। फिरदौस एहि अन्तरपर विशेष बल देलीह। एक नब विद्यार्थी कहैत छल जे धमकीवला खाता परिसरक बाहरसँ बनल छल; दोसर छात्रक अनुमान छल जे विरोधी छात्रगुटक हाथ अछि। फिरदौस सभकेँ कहलीह, “अनुमानक पाछाँ प्रमाण खोजल जाउ। जे अपराधक रूप लैत अछि ओकर जाँच सक्षम प्राधिकारी करत; छात्रसभा ककरो नामपर फैसला नहि सुनाए।” ओहि साँझ कुसुम अपन कोठरीमे लिखलीह—“दू चित्रक

बीचक अन्तर सँ एक मनुष्यक जीवन बदलि गेल; मुदा एकर कारण मोलबाक लोभमे हम आन निर्दोषक जीवन खराब नहि करब।”

अगिला सप्ताह रेवतीकेँ क्रिकेटक पुरान प्रकरणक सम्बन्धमे दिल्ली जाए पड़ल। राघव मिश्रक बचाव पक्ष दीपेन्द्र भाटियाक विदेश-यात्रा सम्बन्धी अभिलेखक स्पष्ट प्रति मँगने छल। अभियोजनक एक गवाह अपन पूर्व तिथिक सुधार देलनि। विचारणक न्यायाधीश सामग्रीक नकल दूनू पक्षकेँ देबाक निर्देश देलनि। रेवती अपन सहकर्मी अरुणिमासँ कहलीह, “अदालतमे कटि गेल वाक्य आ गलत तिथि दुनू खतरा अछि; मुदा एकर परिणाम ओही प्रकरणक प्रमाणपर निर्भर करैत अछि।” अरुणिमा कहलीह, “अहाँक विद्यार्थी-विवाद सेहो ओहि बाट जा रहल अछि?” रेवती उत्तर देलीह, “ओहिमे प्रश्न दोष-सिद्धिक नहि, अनुशासनात्मक निर्णयक निष्पक्षता आ अभिलेखक सत्यापनक अछि। समान शिक्षा अलग कानूनमे अलग रूप धारण करैत अछि।”

नूर जतय क्रिकेटक सुनबाईसँ बाहर निकलैत रेवतीकेँ भेटलीह। ओ पुछलीह जे विवेकक चित्रक मूल स्रोत भेटल कि नहि। रेवती कहलीह जे कनकक आंशिक स्वीकारसँ काटल चित्रक एक चरण स्पष्ट भेल, मुदा धमकीवला सन्देश अबहुँ अपरिचित अछि। नूर पुछलीह, “एहि पर समाचारमे संशोधन छापू?” रेवती कहलीह, “अहाँ अपन तथ्यक आधारपर स्वयं निर्णय करू। हमरा सँ कानूनी सलाह चाही तँ देब, मुदा हम सम्पादक नहि।” नूर अपना अगिला समाचारमे कनकक स्वीकार, विवेकक भाषा-संबंधी आत्मपरीक्षण आ प्रशासनक अधूरी जाँच तीनू समाहित केलनि। ‘विवेक एकदम निर्दोष, प्रशासन एकदम दोषी’ सन सरल शीर्षक ओकरा उचित नहि लगल।

ओम्हर विश्वविद्यालयक मुख्य पुस्तकालयक मरम्मतिक काज अन्ततः शुरू भेल। छतक पुरान चूना उतारल जाइत छल। कुसुम निर्माणस्थलपर जाकय देखलीह जे पानिक निकासक ढलान गलत दिशि बनल अछि। ओ रामदेवक कूपक भूमि-विवादसँ जलनिकासक महत्त्व पहिनेसँ बुझैत छलीह। कुसुम एक छोट तकनीकी प्रतिवेदन तैयार कएलनि, जेकरा एक अभियान्त्रिक शिक्षक जाँचिकय हस्ताक्षर कएलनि। एहि नव प्रतिवेदनसँ पुस्तकालयक काम रोकबाक बदला कार्यविधि सुधारल गेल। विवेक मुस्कुराकय कहलक, “हम आगिक बात

लिखलहुँ; तूँ पानीक बाट ठीक करेलहुँ।” कुसुम उत्तर देलीह, “आगि लिखला सँ डर लगैत अछि, पानीक दिशा बदललासँ किताब बचैत अछि। दुनू बातक बाट अलग अछि।”

अगस्तमे आन्तरिक समितिक लिखित निष्कर्ष आयल। ओहि मे विवेकक मूल टिप्पणीक तीक्ष्णता उल्लेखित छल, मुदा कथित हिंसक धमकी ओकरे लिखल अछि, से पर्याप्त रूपसँ स्थापित नहि मानल गेल। समितिने ई स्वीकार कएल जे पहिल चित्र अपूर्ण छल आ ओकर आधारपर कठोर छात्रावास-रोक उचित प्रक्रिया बिना जारी भेल। तथापि विवेककेँ सार्वजनिक संवादमे सावधानी रखबाक सामान्य परामर्श देल गेल। विवेक पत्र पढ़ि चैन अनुभव कएलक। मुदा ओकर छात्रवृत्तिक नव किस्त एखन रोकीने छल; विभागक संगणकीय पञ्जीमे ‘अनुशासनिक विचाराधीन’ चिन्ह नहिं हटायल गेल छल। फैसला आ ओकर कार्यान्वयनक बीच नव संकट खुलि गेल।

विवेक कार्यालय पहुँचि कहलक, “जखन समिति हमरा विरुद्ध धमकीक आरोप स्थापित नहि कएलक, तखन ई चिन्ह किएक अछि?” लिपिक जगमोहन पुरान फाइल देखिकय कहलक, “नव आदेशक प्रति छात्रवृत्ति विभाग धरि नहि पहुँचल।” विवेक पूछलक, “तखन कागज लऽ हम कोन-कोन दुआरि जाउ?” जगमोहन एक फार्म दऽ देलक। विवेकक मनमे पहिल बेर सचमुच क्रोध उमड़ल। ओ चिट्ठी फाड़ि देबाक इच्छा रोकलक। ओ नसीमाकेँ फोन कएलक। नसीमा कहलीह, “प्राप्तिक मोहर लेलहुँ? अगिला डाक विभाग स्वयं भेजय, एहन लिखित आवेदन दिअ। जँ नहि सुनत तँ अपीलक बाट खुलल अछि।” विवेक फाइलमे नव पृष्ठ जोड़लक।

एहि बेर रेवती उच्च न्यायालयमे सीमित रिट याचिका तैयार कएलनि। याचिकाक मुख्य आग्रह छात्रवृत्ति-रोकक निराकरण आ न्यायालयक निर्देशानुसार उचित प्रक्रिया सुनिश्चित करब छल। मूल अनुशासनात्मक आरोपक सम्पूर्ण तथ्य न्यायालयसँ नव सुनबाईमे निर्णय करबेबाक आग्रह नहि छल। याचिकाक संग मूल टिप्पणी, प्रथम काटल चित्र, पहिल आदेश, अपीलीय राहत आ पछिला समितिक निष्कर्षक प्रति संलग्न छल। जे अनाम धमकीक लेखकक पहचान सम्बन्धी बात अनिर्णीत छल, ओकरा ताहि रूपमे लिखल गेल। रेवती अपन सहायककेँ सावधान कएलनि—“अनजानकेँ जानल लिखि देब, ई वकालतक सबसे बड़ कमजोरी अछि।”

जयपुरक न्यायालयक प्राङ्गणमे याचिका दर्ता करैत विवेक पहिल बेर अपना मामलाक पैघपनसँ डेरायल। साधारण छात्रावास-विवाद उच्च न्यायालय धरि पहुँचल अछि। शिवनारायण फोनपर रेवतीकेँ कहला, “जँ संस्थाक भीतर राहतक बाट शेष होय तँ अदालतमे ओकरा स्पष्ट लिखू। उच्च न्यायालय प्रमाणक पहिल न्यायालय नहि।” रेवती उत्तर देलीह, “हम सभ अपीलक राहत आ ओहि पर आधारित छात्रवृत्ति निर्णयक कार्यान्वयन चाहैत छी। संस्था अपन जिम्मेदारी स्वीकार कएने अछि, मुदा अभिलेख सुधरल नहि।” शिवनारायण कहला, “ठीक। प्रश्नकेँ ओतबे सीमित राखू जतेक न्यायालयकेँ निपटेबाक चाही।” रेवती अपन आवेदनक अन्तिम अनुच्छेद संशोधित कएलनि।

सितम्बरक सुनबाईमे न्यायालयक समक्ष महाविद्यालयक अधिवक्ता प्रारम्भमे कहला जे विद्यार्थी-सम्बन्धी प्रशासनिक त्रुटि संस्थाक भीतर सुधरल जा सकैत अछि। न्यायाधीश पुछलनि, “तखन याचिकाकर्ताक छात्रवृत्ति एखन धरि रोकल किएक अछि?” अधिवक्ता उत्तर देलनि जे विभागीय सूचना पहुँचबामे विलम्ब भेल। रेवती अपीलीय आदेशक तिथि आ छात्रवृत्ति विभागमे दर्ता नव आवेदनक प्राप्ति-पत्र रखलीह। न्यायाधीश देखलनि जे संस्थाक दूनू बयान आपसमे विरोधी नहि, मुदा निर्णयक कार्यान्वयन अनावश्यक विलम्बित अछि। सरकारी सहायता प्राप्त शिक्षण संस्थाक सार्वजनिक दायित्वक प्रश्नपर सीमित बहस भेल। न्यायालय प्रतिवादीसँ शपथपत्र मँगलक—ठोस तिथि, कारण आ अपेक्षित निर्णयक संग। ई सम्पूर्ण विवादक अन्तिम निर्णय नहि छल।

अदालतक बाहर विवेक कहलक, “आइ हम जीतलहुँ?” रेवती उत्तर देलीह, “आइ न्यायालय संस्थासँ जवाब मँगलक। जीत अथवा हारक अंतिम निष्कर्ष नहि अछि।” विवेक पुछलक, “जे चित्र बदलल, ओकर की होएत?” रेवती कहलीह, “पहिल चित्रक अपूर्णता समितिक समक्ष आयल। अनाम धमकीक लेखकक प्रश्न अलग अछि। जँ कियो विशिष्ट आपराधिक शिकायत करैत अछि, ओकर जाँच अलग प्रक्रिया सँ होएत। एहि रिटमे हम छात्रवृत्ति आ उचित अभिलेखक प्रश्नपर छी।” विवेक माथ हिलौलक, मुदा ओकर मनकेँ एहन सीमा सहज नहि लगैत छल। ओकरा लगैत छल जे एकहि घटनाक सभ पीड़ा एकहि आदेशमे लिखल जाए; अदालतक व्यवस्था ओहि इच्छा सँ अलग छल।

कुसुम मरुधर लौटि अपन पिताकेँ ई सुनबाई सुनौलीह। रामदेव कहला, “हमर पगरियाक मुकदमामे सेहो बहुत दिन ई भेल जे न्यायालय एक प्रश्नक उत्तर मँगैत छल, हम जीवनभरक पीड़ा सुनाबय चाहैत छलहुँ।” कुसुम पुछलीह, “तखन न्यायालय छोट अछि?” रामदेव उत्तर देलनि, “न्यायालय छोट नहि। कागजमे जे प्रश्न आएल अछि, ओहि पर ओकर शक्ति ठाढ़ अछि। हम सभकेँ समाजमे सेहो अपन बात रखबाक होइत अछि।” कुसुमकेँ पिता सँ पहिल बेर एहि बातक एक सरल रूप सुनबाक भेटल। हुनकर घरक कूपक पानि एखन सेहो सीमित बाटेँ खेतधरि जाइत छल; ओहि समस्याक निपटान अलग सुनबाईमे निर्धारित छल।

महाविद्यालयक प्रतिवेदनमे छात्रवृत्ति-विलम्बक प्रशासनिक कारण स्वीकार कएल गेल। विभाग अपन संगणकीय पञ्जीक चिन्ह सचमुच हटा देने छल, मुदा पूर्व रुकीने भुगतानक विषयमे नव स्वीकृति आवश्यक बतबैत छल। न्यायालयक अगिला तिथिपर अधिवक्ता भुगतानक निश्चित समय-सारणी प्रस्तुत कएलनि। रेवती सुनिश्चित कएलनि जे विवेककेँ लिखित सूचनाक प्रति भेटय। न्यायाधीश आदेशमे कहला जे संस्थाक प्रतिवेदन आ आश्वासन अभिलेखपर लेल जाइत अछि; देरी भेल तँ याचिकाकर्ता नियमानुसार उचित उपचार माँगि सकैत अछि। मूल अनुशासनात्मक आरोपपर न्यायालय नव दण्ड अथवा दोष-मुक्तिक घोषणा नहि केलक। विवेकक आवेदनक मुख्य व्यक्तिगत राहत एहि प्रक्रियासँ प्राप्त होमय लगल।

विवेकक सहवासी अमन एहि निर्णयपर खुश छल, मुदा ओकर प्रश्न अलग छल। “हम सभ पुस्तकालयक मरम्मतिक जानकारी तऽ पाबि गेलहुँ?” विवेक कहलक, “छत सुधारल गेल अछि। मुदा व्ययक पूरा विवरण एखन कार्यालयक सूचनापटलपर नहि लागल।” अमन कहलक, “तखन फेर पोस्ट लिखब?” विवेक क्षणभर हँसल। “लिखब, मुदा पहिने हम सब बैठकमे मूल प्रश्न रखब। लिखल बात पूर्ण रहबाक प्रयास करब। केओ काटि देत तँ ओ अलग समस्या अछि; डरक कारण प्रश्न रोकब उचित नहि।” शशांक सेहो बैठकमे अयल। ओ अपन पहिल गलत आरोप स्वीकार कएलक आ छात्रसभक समक्ष पूरा मूल कथन पढ़लक। सार्वजनिक रूपमे गलती सुधारेबाक एहि दृश्यकेँ नूर जतय समाचारक छोट अंश बनौलीह।

कनक सेठी विश्वविद्यालयक एकटा अलग अनुशासनात्मक सूचनाक उत्तर देबाक लेल कार्यालयमे उपस्थित भेल। समिति ओकर स्वीकारक सीमा देखैत छल—ओ चित्र छोट बनौने

छल, किन्तु धमकीवला अनाम सन्देश ओ बनौने अछि, से प्रमाण नहि। कनक कहलक, “हम एहि कतरनसँ प्रसिद्धि चाहैत छलहुँ। बादमे जखन हिंसाक आरोप उठल, तखन सच बताबय डर लगल।” देवयानी पुछलीह, “तोहर डर कारण दोसर व्यक्तिक छात्रावास छूटल, एकर बोध अछि?” कनक मौन रहल। अनुशासनात्मक निर्णयमे ओकरा सार्वजनिक सुधार आ संस्थागत अभिलेखमे स्पष्टीकरण देबाक निर्देश भेल। आरोपक प्रकृति आ लागू नियमक अनुरूप तकरा दण्डनीय अन्य व्यवहारक प्रश्न अलग परीक्षण लेल राखल गेल। विवेक एहि सुनबाईमे प्रतिशोध नहि माँगलक।

एक अनाम खाता, जकर माध्यमसँ कार्यालय जराएबक स्पष्ट धमकी देल गेल छल, ओहिमे आब सेहो कोई पुष्ट परिचय नहि भेटल। सक्षम अधिकारीकेँ शिकायत पठाओल गेल, मुदा विश्वविद्यालय अपन निर्णयमे ई नहि लिखलक जे कनक अथवा विवेक ओहि सन्देशक लेखक अछि। फिरदौस छात्रसभकेँ कहलीह, “किछु प्रश्न अनुत्तरित राखब कायरता नहि, जँ सत्यापनक साधन एखन उपलब्ध नहि हो।” एक विद्यार्थी उत्तर देलक, “मुदा लोक उत्तर चाहैत अछि।” फिरदौस कहलीह, “लोकक चाहना सँ प्रमाण बनि नहि जाइत।” एहि वाक्यक कठोरता हुनकर स्वयं मनमे सेहो गूंजि रहल छल, कारण परिसरमे अनेक गुप्त समाचार हर सप्ताह नव लोकपर संदेह डालैत छल।

अक्टूबरमे मरुधर विश्वविद्यालयक पुस्तकालय फेर पूर्ण रूपेँ खुलल। पहिल दिन पुरान पाण्डुलिपिक कोठरीमे विद्यार्थी धीरे-धीरे प्रवेश कएलनि। छतक नव मरम्मतिक गन्ध, आलमारीक लकड़ी आ किताबक धूलि मिलिकय एक विचित्र परिचित वातावरण बनबैत छल। विवेक अपन अधूरा शोधक दू पुस्तक मँगौलक। पुस्तकाध्यक्ष ओकर नाम पञ्जीमे लिखलनि आ मुस्कुराकय कहलीह, “आब दुआरि खुलल अछि।” विवेक उत्तर देलक, “दुआरि खुलल रहय, बस।” ओ पठनमेजपर बैसल तँ तकरा जनवरीक पहिल शिकायत-पत्र स्मरण अएल। ओ पृष्ठ पलटल आ देखलक जे किताबक किनारपर पुरान विद्यार्थीक टिप्पणी अछि—“प्रश्न करबाक साहस राखू।” ओहि अज्ञात विद्यार्थीक नाम नहि छल, मुदा शब्द बचल छल।

शिवनारायण दरभंगामे अपन पुरान मुकदमाक फाइलसभ क्रममे राखैत छलाह। रेवती फोनपर अध्यायवत् पूरा घटनाक्रम सुनौलीह। ओ पुछलनि, “अदालत ककरा गलत

ठहरौलक?” रेवती उत्तर देलीह, “समुचित प्रक्रियाक अभाव आ भुगतान-विलम्ब सुधरल। मूल कथनक अर्थ आ अनाम संदेशक लेखकक प्रश्न अलग परीक्षणमे रहल।” शिवनारायण कहला, “एहि मे तों अपन पितासँ बेसी धैर्य रखलहूँ। हम युवावस्थामे चाहैत छलहुँ जे एक निर्णयमे सभ बातक अन्त भऽ जाय।” रेवती हँसलीह। “अहाँक पहिल बहीखाताक पैंतालीसम पन्ना एखन धरि अनुत्तरित अछि।” शिवनारायण कहला, “ताहि पन्नाक कारण हम प्रश्न पुछब नहि छोड़लहुँ, मुदा ककरो विरुद्ध कल्पना सँ प्रमाण नहि बनौलहुँ।”

रेवतीकेँ एहि वर्ष एक नव प्रकारक जिम्मेदारी अनुभव भेल छल। २००० मे ओ अदालतक बरामदा देखैत छलीह; २०१५ मे ओ संस्थाक भीतरक असमर्थ प्रशासन आ युवा व्यक्तिक चोटक बीच बाट खोजैत छलीह। एक ओर महाविद्यालयक स्वतन्त्रता छल, दोसर ओर अभिव्यक्तिक अधिकार; एक ओर चित्रक विश्वसनीयता, दोसर ओर सार्वजनिक सुरक्षा; एक ओर छात्रक शब्दक जवाबदेही, दोसर ओर प्रशासनक अनुपातिक निर्णय। एहिमे एक पक्षक सम्पूर्ण विजय कथा सरल बनि सकैत छल, मुदा रेवतीकेँ न्याय सरल नहि चाही छल। हुनका प्रत्येक व्यक्तिक उत्तरदायित्व ओकर वास्तविक क्रिया धरि सीमित रखबाक अभ्यास प्रिय भऽ रहल छल।

नूर जतय पुनः क्रिकेटक विचारणक समाचार लिखय मुम्बई गेलि। ओतय राघवक एक मित्र ओकरा कहलक जे दीपेन्द्र भाटियाक यात्राक समयक विवादसँ ओकर विरुद्ध सभ आरोप निरस्त होयबाक चाही। नूर उत्तर देलीह, “एक गवाहीक तिथि गलत भेलासँ संपूर्ण आरोप आपेँ असिद्ध नहि होइत। तहिना एक चित्र गलत रूपेँ फैललासँ कियो अन्य संदर्भमे किछु गलत कहेने नहि, से स्वतः सिद्ध नहि होइत।” ओकर लेखमे सट्टेबाजी, खेलक शुचिता आ अभियुक्तक निष्पक्ष विचारणक प्रश्न अलग राखल गेल। ओ समाचार सम्पादककेँ पठेलनि तँ ओकरा मरुधरक पुस्तकालयक चित्र स्मरण अएल। ओहि चित्रमे विद्यार्थीक हाथमे पुस्तक छल, कोनो झण्डा नहि। ओ सहज मुस्कुराइत रहलीह।

एहि बीच बेंगलुरुमे अवनि अपन विद्यालयक विज्ञान-प्रदर्शनी लेल एकटा छोट लेख तैयार करैत छलीह। ओकर बाबू निरंजन, जे मंगलयानक काजसँ जुड़ल रहल छलाह, पुछलनि, “अहाँ चित्रक स्रोत लिखने छी?” अवनि उत्तर देलीह, “किछु चित्र पुस्तकसँ, किछु सार्वजनिक

विज्ञान-संस्थानक पृष्ठसँ लेलहुँ।” निरंजन कहला, “तखन जे किछु अहाँ स्वयं देखलहुँ आ जे पुस्तकसँ पढ़लहुँ, ओकर भेद लिखू।” अवनि मुस्कुरा देलीह। “पापा, विज्ञानक चित्र सेहो गलत अर्थ दे सकैत अछि?” निरंजन उत्तर देलनि, “जँ मापनक अंश काटि देब, तँ साँच आकृतिसँ सेहो गलत निष्कर्ष निकलि सकैत अछि।” ओहिसँ दूर मरुधरमे विवेकक विवादक खबर अवनि नहि पढ़ने छलि, मुदा दूनू परिवारमे प्रमाणक एकहि पाठ अलग रूपेँ पहुँचल।

नसीमा मरुधरक पुरान पुस्तकालयमे मैथिली, उर्दू, राजस्थानी आ गुजराती पत्रिकाक सूची तैयार करैत छलीह। ओकरा देखाइत छल जे अनेक विद्यार्थी अपन मातृभाषामे लिखल विचारक अंग्रेजी अनुवाद पढ़लाक बाद मूल अर्थसँ दूर चलि जाइत छथि। विवेकक ‘आगि’ शब्दक प्रसंग ओकरा भाषा आ सन्दर्भक प्रश्न याद करबैत छल। ओ पुस्तकाध्यक्षसँ कहलीह जे सार्वजनिक सूचनामे केवल आदेश नहि, पूरा कारण आ उचित भाषा रहबाक चाही। पुस्तकाध्यक्ष उत्तर देलनि, “सभ भाषा देब कठिन अछि।” नसीमा कहलीह, “तखन कमसँ कम जे भाषा देब, ओ बुझबा योग्य आ पूर्ण रहय।” एहि छोट संवादसँ पाठकक अधिकारक प्रश्न साहित्यक भाषिक अधिकारसँ जुड़ि गेल।

सरबजीत कौर चण्डीगढ़क बैंक-प्रशिक्षणमे छात्रवृत्तिक नव डिजिटल भुगतान-व्यवस्थाक चर्चा सुनैत छलीह। अधिकारी सुविधा, तेज गति आ त्रुटि-निवारणक दावा करैत छलाह। सरबजीत प्रश्न कएलनि, “जँ पञ्जीमे पुरान प्रतिकूल चिन्ह रहि जाए आ भुगतान अटकय, तँ विद्यार्थीकेँ सुधारक प्रमाण कोन शाखा देत?” प्रशिक्षक कहला जे आवेदनक व्यवस्था अछि। सरबजीत आग्रह कएलनि जे ग्राहककेँ मात्र एक कार्यालयसँ दोसर कार्यालय दौड़बेबाक बदला विभागसभक जिम्मेदारी लिखित हो। एहि प्रसंगक कोनो आपराधिक सञ्जालसँ सम्बन्ध नहि छल; ई साधारण प्रशासनक प्रश्न छल। मुदा आगामी डिजिटल बैंक-युगमे ई प्रश्न धेरै लोकक जीवनमे फेर उठबाक छल।

अक्टूबरक दोसर सप्ताहमे रेवती एक विधि-महाविद्यालयमे व्याख्यान देबय गेलीह। एक विद्यार्थी पुछलक जे धारा ६६ए निरस्त भेला पछाति कियो सामाजिक-माध्यमपर किछु सेहो लिखि सकैत अछि कि नहि। रेवती उत्तर देलीह, “संविधान अभिव्यक्तिक रक्षा करैत अछि; मुदा वैध सीमासभक अस्तित्व समाप्त नहि भेल। धमकी, हिंसाक उकसावा, मानहानि आ

अन्य विशिष्ट आचरणक प्रश्न अपन लागू कानूनक अनुसार जाँचल जाएत। धारा ६६ए क अस्पष्टता निरस्त भेल, ई महत्त्वपूर्ण अछि; मुदा न्यायालयक निर्णयक अर्थ पढ़बाक दायित्व सेहो अछि।” दोसर विद्यार्थी पुछलक, “तखन कॉलेजक नियम?” रेवती कहलीह, “संस्थाक उचित अनुशासन सम्भव अछि, मुदा आरोपित विद्यार्थीकेँ सुने बिना दण्ड देब उचित नहि।”

व्याख्यानक अन्तमे एक छात्रा रेवतीकेँ अलग भेटलीह। ओकर विषय ककरो अपराध नहि, अपन नामक वर्तनी छल। विश्वविद्यालयक प्रवेशपत्रमे एक अक्षर गलत रहि गेल छल, आ सुधार लेल तीन माससँ ओ कार्यालय घुमि रहल छलि। रेवती ओकरा विधिसम्मत आवेदन आ उपलब्ध आन्तरिक उपचारक विषयमे बुझौलीह। ओहि क्षण हुनका मनस्वीक पुरान अभिलेख-सुधार आ विवेकक छात्रवृत्ति-पञ्जी एक संग स्मरण अएल। राष्ट्रीय स्तरक संवैधानिक फैसला आ एक विद्यार्थीकेँ अपन सही नाम लिखेबाक अधिकारक बीच दूरी एतेक बेसी किएक रहैत अछि? रेवती एहि प्रश्नक तैयार उत्तर नहि देने छलीह। ओ छात्राकेँ कहलीह, “पहिने लिखित त्रुटि ठीक करबाक अनुरोध करू, ओकर प्रति सुरक्षित राखू। न्यायिक बाट तखने सोचब जखन आवश्यक होय।”

नवम्बरमे विद्यार्थीसभा तय केलक जे सामाजिक-माध्यमक प्रयोगपर खुलल विमर्श होय। विवेक, शशांक, कनक, मनस्वी, नसीमा आ फिरदौस सभ उपस्थित छलाह। कनक सार्वजनिक रूपसँ कहलक जे छोट चित्र बनबैत समय वाक्यक अर्थ सुरक्षित रखबाक दायित्व ओ पूरा नहि कएलक। शशांक कहलक जे बिना मूल पाठ देखने ओकरा कठोर आरोप नहि लगबय चाही छल। विवेक कहलक जे आगिक उपमा ओकर क्रोधक भाषा छल आ ओ आब अपन उपमा चुनबामे अधिक सावधान रहत; मुदा विद्यालयक व्ययपर प्रश्न पुछबाक अधिकार ओ नहि छोड़त। बैठकमे कोनो सामूहिक शपथ नहि लेल गेल, केवल लिखित नियम बनल—मूल सन्दर्भ, स्रोतक स्पष्टता, व्यक्तिगत गरिमा आ असहमतिक अधिकार।

बैठकक बाद भटनागर फिरदौससँ अलग भेटला। “अहाँ बुझैत छी जे आब समस्या समाप्त?” ओ पुछलनि। फिरदौस उत्तर देलीह, “समस्या बदलल अछि। आब हमसभकेँ कागज राखबाक नियम, डिजिटल अभिलेखक पहुँच आ छात्रक जानकारीक सीमा तय करबाक अछि।” भटनागर कहलनि जे विश्वविद्यालय नव विद्यार्थी-प्रबन्धन प्रणाली लेल बाहरी

कम्पनीसँ प्रस्ताव मँगौने अछि। फिरदौस पुछलीह, “कम्पनीकेँ छात्रक कोन जानकारी देल जाएत? कोन अधिकारी जिम्मेवार होयत? पुरान अभिलेखक सुधारक तरीका की होयत?” भटनागर कहला, “एहि प्रश्नपर लिखित प्रतिवेदन दिअ।” फिरदौस स्वीकार कएलनि, मुदा जोड़लनि, “केवल नब यन्त्र आयलासँ व्यवस्थाक सत्यनिष्ठा नहि बढ़ैत।” ई बात आवयवला दशकक एक महत्त्वपूर्ण सूत्र बनि रहल छल।

दरभंगामे शिवनारायणक घरक आँगनमे एकटा पुरान नीम छल। रेवती दिसम्बरक छुट्टीमे अयलीह तँ पिता ओकरा कापीक दू पृष्ठ देखौलनि। एक पृष्ठ नीलकान्त साहक पुरान विचारणक अभिलेखसँ सम्बन्धित छल, जकर लिखावटक प्रश्न सम्पूर्ण रूपसँ स्पष्ट नहि भेल छल। दोसर पृष्ठ रेवतीक बाल्यकालक लिखल पत्र छल—“जे नहि केलक, ओकरा दण्ड किएक?” रेवती पन्ना देखैत रहलीह। ओ पुछलनि, “बाबूजी, अहाँ ई पत्र एतेक दिन राखने छी?” शिवनारायण कहलनि, “जे प्रश्न जीवनभर पीछा करैत अछि, ओकर पहिल लिखावट फेकबाक मन नहि होइत।” रेवती पिता लग बैसि गेलीह। हुनका बूझायल जे कानूनक संहिता बदलैत अछि, मुदा न्याय सम्बन्धी पहिल जिज्ञासा पीढ़ीसँ पीढ़ी चलैत रहैत अछि।

ओहि वर्षक अन्तिम सप्ताहमे विवेक छात्रवृत्तिक बकाया किस्त प्राप्त कएलक। पैसाक एक हिस्सा ओ घर पठौलक, एक हिस्सा किरायाक उधार चुकौलक, आ शेष सँ दोसर हाथक पुस्तक किनलक। माय फोनपर पुछलनि, “आब सभ ठीक?” विवेक कहलक, “किछु ठीक। मुदा जे दिन गेल, से वापस नहि अएल।” माय उत्तर देलनि, “गेल दिन नहि लौटत, मुदा तोहर पढ़ाइ चलि रहल अछि, ई पैघ बात।” विवेक अपन खिड़कीक बाहर जोधपुरक साँझ देखलक। शहरक पत्थर घरपर उतरैत उजास धीरे-धीरे हलुक पड़ि रहल छल। ओ बुझलक जे एकटा छात्रकेँ जीवित रखनिहार सभसँ पैघ शक्ति केवल अदालतक आदेश नहि, घरक विश्वास सेहो अछि।

मरुधरक पुस्तकालयक पुरान कोठरीमे वर्षक अन्तिम दिन फिरदौस छात्र-परिचय अभिलेखक सुरक्षित रखबाक विषयमे नव नोट रखलीह। ओहि नोटमे ओ लिखलीह जे संस्थागत सुविधा लेल बाहरी संगणकीय सेवा लेबासँ पहिने डेटा-प्रवेशक सीमा, सुधारक प्रक्रिया आ उत्तरदायित्व स्पष्ट होयबाक चाही। भटनागर नोट प्राप्त कएलनि, मुदा वर्ष समाप्त

होइते ओकर अधिकांश काम अधूरा रहल। मेजपर नव सेवा-दाताक मुद्रित प्रस्ताव, पुरान प्रवेश-पञ्जी आ छात्रवृत्तिक फाइलसभ एकसंग पड़ल छल। एही बीच विवेकक छोट सामाजिक-माध्यम विवादक कागज अलग बान्हल गेल—न तऽ अपराधक अन्तिम इतिहास, न तऽ निर्दोषताक सार्वभौम प्रमाण; एक छात्र आ एक संस्थाक सीखल कष्टकर पाठ।

रेवती दिल्ली जाएवला रेलक समय देखैत अपनो नोटबुकमे वर्षक हिसाब लिखलीह। ओ लिखलीह जे एक छात्रक आलोचना सही होय कि कठोर, तकरा सुनबाक चाही; डिजिटल चित्र साँच होय कि काटल, तकरा जाँचबाक चाही; अनाम धमकीक लेखक के, तकरा कल्पनासँ नहि चिन्हबाक चाही; आ न्यायालयक सीमित आदेशकेँ सम्पूर्ण इतिहासक फैसला नहि बनायबाक चाही। हुनकर कापीक नीचाँ एकटा पाँति रहि गेल—“नामक संग आरोप लगैत अछि, मुदा नामक भीतर मनुष्यकेँ देखब न्यायिक विवेक अछि।” ओ पाँति लिखिकय झोरा बन्द कएलनि। स्टेशनक भीड़मे किछु विद्यार्थी मोबाइलपर बहस करैत छलाह, किछु मजदूर अपन घर जा रहल छलाह, आ एक बालक पितासँ पूछैत छल जे रेलक भीतर लिखल नम्बर किएक बदलैत अछि।

रेलक खिड़कीसँ रेवतीकेँ शहरक अन्तिम उजास देखायल। हुनका मनस्वीक सुधरल परिणाम-पत्र, विवेकक खुलल पुस्तकालय, रामदेवक अपूर्ण पगरिया आ राघवक चलैत विचारण याद अएल। प्रत्येक प्रसंगमे एकटा लिखल अभिलेख छल, मुदा ओ अभिलेख पूर्ण मनुष्य नहि छल। दूर दरभंगामे शिवनारायण दीवालक घड़ी सुनैत छला; जोधपुरमे विवेक नव पुस्तकक पहिल पृष्ठ खोलि रहल छल; दिल्लीमे नूर अगिला समाचारक स्रोत-जाँचमे व्यस्त छलीह। मरुधरक संगणकीय कक्षमे एक कर्मचारी नव विद्यार्थी-प्रबन्धन प्रणालीक प्रस्तावपर मोहर लगाकय रखि देलक। ओकरा नहि बुझायल जे विद्यार्थीसभक नाम आ व्यक्तिगत अभिलेखक एहि संसारक विस्तार आगामी वर्षसभमे नव प्रकारक सुविधा आ नव प्रकारक जोखिम दुनू लऽ आओत। मुदा एखन वर्ष २०१५ छल, आ एक छात्रक काटल वाक्यसँ आरम्भ भेल विवाद ओकरा एकटा पूर्ण वाक्य वापस दऽ चुकल छल।

अध्याय २० — नगदीक अन्तिम रात्रि

सन् २०१६ : लुधियाना, चण्डीगढ़, दरभंगा आ जोधपुर

नवम्बरक पहिल सप्ताहमे लुधियानाक पुरान वस्त्र-कारखानाक छतपर कुहेस एखन पसरल नहि छल, मुदा भोरक हवा पहिनेसँ ठण्ढ भऽ गेल छल। सुनीता पासवान पहिल पालीक सीटी बजलासँ पहिने कारखानाक फाटक पहुँचलि। भीतर कपासक धूलि, रङ्गाइ कक्षक गन्ध आ करघाक एक समान ध्वनि छल। दू वर्ष पहिनेसँ एहि कारखानाक एक भागमे नव मशीन लगल छल; मालक धर्मपाल खुराना एकरा प्रगतिक चिन्ह मानैत छलाह। सुनीता जानैत छलि जे नव मशीनसँ काजक गति बढ़ल अछि, मुदा प्रत्येक मजदूरक जीवनमे ओहि अनुपातमे राहत नहि पहुँचल अछि। ओकर हाथमे छोट कापी छल, जाहिमे ओ मजदूरीक हिसाब राखैत छलि, आ जे कापी ओकर पिताक पुरान विवादक समयसँ धीरे-धीरे अभिलेखक रूप लऽ लेने छल।

ओहि भोरि रामलखन नीकसँ चलि नहि पाबि रहल छलाह। घुटनाक पुरान पीड़ा जाड़मे बढ़ि जाइत छल, तथापि ओ अपन बिछौनासँ उठि कारखानाक दिस चलबाक हठ करैत छलाह। सुनीता कहलक, “बाबू, अहाँक दवाईक दिन अछि। हम उपस्थिति लिखबा देब।” रामलखन हँसला, “उपस्थिति दोसरा लऽ लिखौने सँ मजदूरी भेटैत तऽ हम एखन घरहि बैसल रही।” सुनीता हुनकर कटु हँसीक भीतर एक पूरा इतिहास सुनैत छलि—सन् २०१० क कटौती, प्राधिकारीक समक्ष देल गवाही, भुला देल गेल दू दिनक बकाया आ हरजीतक हाथसँ निकलल दू भिन्न पञ्जी। एखनो परिवारक रसोइए ठाढ़ राखबाक लेल प्रत्येक दिनक मजदूरी महत्त्वपूर्ण छल।

कारखानाक लेखा-कक्षमे हरजीत कौरक पुरान मेजपर आब मनप्रीत संधू बैसैत छलीह। हरजीत सेवा छोड़बाक पहिने पञ्जी-संशोधनक किछु नियम लिखि देने छलीह, मुदा संस्थाक नव संगणकीय व्यवस्थामे ओहि नियमक पूरा पालन होइत छल कि नहि, तकरा केओ निश्चित

रूपसँ नहि कहि सकैत छल। मनप्रीतकेँ कपड़ाक माप, उत्पादनक समय आ श्रमिकक कार्यदिवस मिलेनाइ पड़ैत छल। ओ हरदेव चौहान नामक पुरान अनुत्तरित प्रविष्टिक उल्लेख सुनने छलीह। मुदा ओहि नामकेँ जालसाजीक निश्चित प्रमाण मानबाक बदला ओकरा ‘जाँच शेष’ कहि अलग रखलनि। एहि छोट सावधानीक कारण सुनीता हुनका विश्वास करैत छलि।

चण्डीगढ़मे सरबजीत कौरक बैंक-शाखामे ओहि दिन नव खाता खोलबाक लेल तीनटा परिवार आएल छल। पहिल परिवारक बेटी विश्वविद्यालयमे पढ़ैत छलि; ओकर छात्रवृत्ति आब सीधे खातामे पहुँचयवाली छल। दोसर परिवारक वृद्ध सदस्य पेंशनक समयक विषयमे प्रश्न पुछैत छलाह। तेसर परिवारक छोट व्यापारी डिजिटल भुगतान स्वीकार करबाक व्यवस्था चाहैत छल। शाखाक प्रबन्धक जसमीत सिंह कहला, “लोकक सुविधा बढ़ल अछि। पहिले जे व्यक्ति दस बेर बैंक घूमैत छल, आब ओ घर बैसल बहुत काज कऽ सकैत अछि।” सरबजीत उत्तर देलनि, “हाँ, मुदा जेकर नाम गलत लिखल रहि जाए, ओकर दस चक्कर बीस नहि भऽ जाए, एहि लेल सेहो काज करय पड़त।” मनस्वीक छात्र-अभिलेख सम्बन्धी पुरान अनुभव हुनका स्मरण छल।

बैंकक भीतर नव कर्मचारी नरेन्द्र पाल अपन कार्यक सफलताक संख्या देखबैत छल। ओ कहलक, “एहि मास पचास नव खाताक लक्ष्य अछि। कतेको कारखानासँ सम्पर्क अछि। एक बेर सभक नाम आ प्रमाणपत्र आनि देल जाए, तऽ सभ सुविधाजनक रहत।” सरबजीत तत्काल पुछलनि, “नाम आ प्रमाणपत्र के अनत? खाता खोलेनिहार व्यक्ति स्वयं उपस्थित रहताह ने?” नरेन्द्र कहलक जे एक कार्यालयक प्रतिनिधि सभ कागज एकत्र कऽ सकैत अछि। सरबजीत साफ कएलनि जे सुविधा आ पहचानक परीक्षण दू भिन्न बात छथि; प्रत्येक ग्राहकक अधिकार आ सहमति सुरक्षित रहबाक चाही। हुनकर स्वर कठोर नहि छल, मुदा ओहि वार्ताक बाद नरेन्द्र अपन कागज फेर क्रममे रखलक।

दरभंगामे शिवनारायण झा नवम्बरक आरम्भमे अपन पुरान कार्यालय साफ करैत छलाह। रेवती दिल्लीसँ दू दिन लेल आयल छलीह। पुरान बहीखाताक पैंतालीसम पन्ना, नीलकान्त साहक विचारणक निर्णय, छात्र विवेकक सामाजिक-माध्यम सम्बन्धी आदेश आ मरुधरक नापीक पत्र—सभ अलग-अलग बन्धनमे राखल छल। रेवती कहलीह, “एतेक कागजमे अहाँकेँ

कोन बात सभसँ अधिक याद रहैत अछि?” शिवनारायण कहला, “कागजक नाँव नहि; जकर जीवन ओकरा पाछाँ छल। ककरो भरल भातक थारी, ककरो किताब, ककरो जमीनक पगरिया।” रेवती बजलीह, “आ न्यायालय?” “न्यायालय ओहि जीवनकेँ नियमक भीतर सुनबाक प्रयत्न करैत अछि। ओकरा सफल करब हमरा सभक कर्तव्य अछि।”

आठ नवम्बरक साँझ लुधियानाक कारखानामे दोसर पाली समाप्त होएवाली छल। लोक थाकल छल, मुदा समाचारक प्रतीक्षा कोनो नहि करैत छल। सुनीता घर पहुँचि चूल्हिपर दाल चढ़ौलक, तखने पड़ोसक रेडियोवला बूढ़ चन्नन सिंह आवाज बढ़ा देलनि। राष्ट्रक नामे प्रसारित सम्बोधनमे कहल गेल जे पाँच सय आ हजारक पुरान नोट मध्यरात्रिसँ सामान्य लेनदेनक वैध मुद्रा नहि रहत। केओ एक बेर नहि बुझलक। फूलकुमारी कटोराक पानी रखि कहलीह, “तखन हमर संदूकमे जे दू हजार राखल अछि, ओ कागज भऽ गेल?” सुनीता रेडियो ध्यानसँ सुनलक। जमा करबाक व्यवस्था आ ओकर निश्चित अवधि सेहो बताओल जा रहल छल। ओ मायकेँ कहलसँ पहिने पूरा बात बुझय चाहैत छलि।

रामलखन अपन पुरान धोतियाक गाँठ खोललनि। दूटा पाँच सयक नोट आ एकटा हजारक नोट। ओ एक-एकटा नोट हाथमे उठाकय देखलनि, मानू तकर लिखल अङ्क ओहि राति बदलि गेल हो। “ई हमरा कारखानासँ भेटल मजदूरी अछि,” ओ धीरे कहला, “एहि मे की दोष?” सुनीता बाबूजीक हाथसँ नोट नहि लेलि। ओ कहलक, “दोष अहाँक मजदूरीमे नहि। सरकार कहि रहल अछि जे बैंकमे जमा करि सकैत छी। नियम बुझि जायब।” छोट भाइ पुछलक, “तऽ काल्हि चाउर किन्ना जाएब?” रामलखन उत्तर नहि देलनि। एहि प्रश्नक कोनो न्यायालयीन पुस्तकमे तत्काल उत्तर नहि लिखल छल।

लुधियानाक एक दोकानमे मालिक नगद स्वीकार करबाक पुरान बही समेटैत छल। एक ग्राहक पाँच सयक नोट लऽ दूध माँगलक। दुकानदार कहलक जे ओकरा खुल्ला पैसा नहि अछि। ग्राहक झुँझला गेल, “ई नोट हमर मेहनतक अछि।” दुकानदारक अपन चिन्ता छल—ओहिकेँ भोरि थोक व्यापारीक भुगतान करबाक छल। सुनीता किछु दूर ठाढ़ ई वार्ता सुनलक। ओकरा दुनू व्यक्ति अपराधी नहि लगल। एकक लग खर्च करबाक माध्यम नहि, दोसरक लग

वापस देबाक छुट्टा नहि। तेसर व्यक्ति मोबाइलसँ भुगतान करि सामान लऽ चलि गेल। सुनीता देखलक जे सुविधा सभ घर धरि एक संग नहि पहुँचल अछि।

ओहि राति चण्डीगढ़मे सरबजीतक शाखा-समूहमे समाचारक बाद लगातार सन्देश आबय लगल। जसमीत सिंह कर्मचारीसभकेँ स्पष्ट कएलनि जे आधिकारिक भारतीय रिजर्व बैंकक निर्देश बिना कोनो लोक अपना अनुमानसँ ग्राहककेँ नियम नहि बताओत। नौ नवम्बरमे बैंकक सामान्य सार्वजनिक कारोबार बन्द रहबाक व्यवस्था, दसमे जमा आ सीमित विनिमयक आरम्भ, पहचान-संबंधी औपचारिकता, पुरान नोटक जाँच—सभ विषय एक रात्रिमे कर्मचारिक जिम्मेदारी बनि गेल। सरबजीत अपन घर फोन कऽ कहलीह जे दू दिन देर सँ लौटतीह। हुनकर माय पुछलनि, “तोरा भोजन भेटत?” सरबजीत हँसलीह, “ग्राहकक खाताक संख्या एखन हमरा भूखसँ बेसी तेज दौड़ि रहल अछि।”

प्रबन्धकक कार्यालयमे नरेन्द्र पाल राति देर धरि बैसल छल। ओकरा फोनपर एक व्यापारी पुछलक जे अनेक मजदूरक नगद एक संग ओकरा माध्यमे बैंकमे जमा करबाक प्रबन्ध होयत कि नहि। नरेन्द्र सहजहिं कहय चाहैत छल जे ओ सुविधा दऽ देत, मुदा सरबजीतक आँखि ओकरा देखैत छल। सरबजीत कहलनि, “जकर धन अछि, ओकर खाताक सही अभिलेख चाही। हम सभ कोनो अनाम गाँठक हिसाब नहि लिखब।” व्यापारी फेर फोनपर कहल जे “सभ छोट-मोट लोक अछि, अपन अपन समय कहाँ?” सरबजीत उत्तर देलनि जे सही पहिचानक व्यवस्था ग्राहकक रक्षाक लेल सेहो अछि। फोन बन्द भेला पर नरेन्द्र पुछलक, “एतेक कठिनाइ?” सरबजीत कहलीह, “सरल रास्ता गलत नाम लिखब होयत तँ ओकर मूल्य पछाति ककरो पूरा जीवन चुकबय पड़त।”

नवम्बरक नौम दिन कारखानामे धर्मपाल खुरानाक संग लेखा-विभागक बैठक भेल। दोसर सप्ताहमे वेतनक देनदारी छल; किछु श्रमिक नकद लैत छलाह, किछु खातामे भुगतान चाहैत छलाह। धर्मपालक चेहरा चिन्तित छल। ओ कहला, “भण्डारमे जे नगद राखल अछि, ओकर उपयोग एखन पूर्ववत् नहि होयत। हमर ग्राहक सेहो भुगतान रोकने छथि। हम सभकेँ नब व्यवस्था चाही।” मनप्रीत कहलीह जे जकर लिखित स्वीकृति अछि ओकरा खातामे भुगतान

सम्भव अछि; अन्य श्रमिकक सहमति आ लागू नियमक पालन आवश्यक रहत। धर्मपाल निसास छोड़लनि, “व्यवस्था बदलब, मुदा समयपर वेतन देबाक दायित्व तऽ रहत।”

बलदेव सिंह, पुरान ठेका-मध्यस्थ, बैठकमे देर सँ पहुँचल। ओकरा एकटा प्रस्ताव छल—सभ मजदूरक नगद पुरान नोटक गट्ठर कारखानाक एक साझा खाता मार्फत जमा करा देल जाए, तकर बाद मजदूरीक हिसाब देखल जाएत। मनप्रीत कहलीह जे एना मजदूरक व्यक्तिगत स्वामित्व अस्पष्ट भऽ सकैत अछि। सुनीता, जे प्रतिनिधिक रूपमे बजाओल गेल छलीह, पुछलक, “हमरा सभक मजदूरी कंपनीक गोदामक माल नहि अछि। जकर जे कटल अछि, ओकर हिसाब पहिने सही करू।” धर्मपाल बलदेवकेँ रोकलनि। ओ स्पष्ट कएलनि जे उत्पादन-बही आ वेतन-पञ्जी पहिले मेलाओल जाएत; बचल प्रश्नपर श्रमिक प्रतिनिधिसँ फेर भेट होयत।

दस नवम्बरक भोरि बैंकक बाहरक पाँति फाटकसँ सड़क धरि पसरल छल। कियो थैलामे पुरान नोट लेने छल, कियो खाताक कापी, कियो पेंशनक पत्र, कियो विवाह लेल राखल जमा। एक गर्भवती महिला दीवालसँ टेक देने ठाढ़ छलीह। सरबजीत पहरेदारसँ कहलीह जे वृद्ध आ अस्वस्थ ग्राहक लेल बैठबाक व्यवस्था कराओल जाए। शाखाक कर्मचारी सबहक लेल पानीक मटका राखलनि। ई छोट व्यवस्था प्रशासनक पैघ कठिनाइ दूर नहि कएलक, मुदा किछु लोकक प्रतीक्षा सहनयोग्य बनि गेल। एक वृद्ध कहलनि, “बैंकक दुआरि आइ न्यायालय जकाँ लगैत अछि—सभ अपन कागज लऽ अपना बारीक प्रतीक्षा कऽ रहल अछि।”

फूलकुमारी रामलखनकेँ बैंक लऽ जाए देबय चाहैत नहि छलीह, कारण हुनकर घुटनासँ पाँति नहि सहल जाएत। सुनीता पिताक खाताक कापी, पहचानक पत्र आ नोट व्यवस्थित कएलक। बैंकमे जमा करबाक लेल खाता-धारकक वैधानिक सुविधा आ प्रतिनिधिक आवश्यकता सम्बन्धी निर्देश बुझबाक बाद ओ बाबूजीक संग निकललि, ताकि कोनो गलती नहि हो। मार्गमे पड़ोसी सूरज पुछलक, “जतेक नोट अछि सभ पूछत की?” सुनीता कहलक, “पैसाक स्रोत पुछल जाए तऽ हम मजदूरीक कागज देखाएब। प्रश्न पुछब अपराध नहि, उत्तर देबाक अवसर नहि देब अन्याय भऽ सकैत अछि।” रामलखन अपन बेटीकेँ देखलनि। एक समय ओ ओकरा नाम लिखब सिखबैत छलाह, आब ओ हुनकर मजदूरीक रक्षा करैत छलि।

पाँतिमे ठाढ़ एक अधेड़ स्त्री कहलीह जे हुनकर पति अस्पतालमे भर्ती छथि; ओ परिवारक जमा धन बदलि औषधि किनय चाहैत छथि। दोसर वृद्धक प्रश्न छल जे टाढ गामसँ बैंक आवब कठिन अछि। एक नव युवक फोनपर चलैत भुगतानक सुविधा समझबैत छल, मुदा वृद्धक आँखि ओहि छोट अक्षर पढ़ि नहि पाबैत छल। सरबजीत कार्यालयसँ बाहर आबि कहलीह, “जे काजक निश्चित नियम अछि ओहि अनुसार होयत। जकरा कठिनाइ अछि, ओकर समस्या लिखित रूपमे दर्ज करू। बिना जाँचक कोनो आश्वासन नहि देब।” एक ग्राहक झुँझला कऽ कहलक, “नियम सँ भात बनत?” सरबजीत शांत स्वरमे कहलीह, “नियम सँ नहि, मुदा गलत नामपर जमा भेल पैसा सँ अहाँक भात सेहो हेरा सकैत अछि।”

दुपहरमे रामलखनक पुरान नोट खातामे जमा भऽ गेल। सुनीता जमा-पर्चीक प्राप्ति देखलक आ बुझलक जे धन बैंक खातामे अछि; मुदा तत्काल ओकर पूरा नगद निकालि लेब नब सीमाक भीतर सम्भव नहि। घर लौटैत रामलखन कहला, “हमर पैसाक अंक एखन कागजमे सुरक्षित अछि, मुदा चाउरक बोरा कागज नहि खाइत।” सुनीता उत्तर देलक, “हमरा सभकेँ जतेक रकम चाही तकर प्राथमिकता तय करय पड़त। दवाई आ भोजन पहिने।” घरमे फूलकुमारी पुरान घरौंदाक डिब्बामे राखल सिक्का गनि रहल छलीह। कतेक पीढ़ीसँ बचत स्त्रीक छोट डिब्बामे रहैत छल; नव व्यवस्थामे ओहो बैंकक कागजक विषय बनि गेल छल।

बैंकक दोसर दिन सरबजीतक समक्ष एकटा वृद्ध विधवा मीनाक्षी देवी आयलीह। हुनकर पतिक मृत्यु पछाति बैंकमे राखल खाता हुनकर नामपर उत्तराधिकारक औपचारिकता पूर्ण नहि कएने छल। महिला अपन पतिसँ बचल नगद जमा करय चाहैत छलीह, मुदा खाताक कागज असंगत छल। एक कनिष्ठ कर्मचारी कहलक जे आइ भीड़ बेसी अछि, काल्हि अइह। मीनाक्षी धीरे उत्तर देलनि, “काल्हि आवबाक भाड़ा कोना जोड़ब, से जँ अहाँकेँ मालूम रहैत तँ एना नहि कहितहुँ।” सरबजीत हुनकर आवेदन स्वीकार कएलनि, आवश्यक कागजक सूची स्पष्ट लिखि देलनि आ उपलब्ध वैकल्पिक विधिसम्मत रास्ताक जानकारी देलनि। महिला तत्काल समाधान नहि पबि सकलीह, मुदा पहिल बेर हुनका कियो समस्या सुनने छल।

ओहि सप्ताह दिल्लीमे रेवतीक कार्यालयक फोन लगातार बजैत रहल। एक व्यापारी जानय चाहैत छल जे पुरान नगद राखलासँ तत्काल अपराध सिद्ध भऽ जाइत अछि कि नहि।

दोसर पुछैत छल जे पुरान नोटक जमा पर लगाओल नियमक अर्थ की अछि। रेवती सबकेँ एकहि उत्तर नहि दैत छलीह। “तारीख, धनक स्रोत, खाताक स्वामित्व आ लागू अधिसूचना बुझय पड़त,” ओ कहलीह। “सरकारक घोषणाक कारण घरमे पड़ल प्रत्येक नोट अपराधक कमाई नहि बनि जाइत।” शिवनारायण फोनपर सुनैत कहला, “देखू, सन् २००० क नीलकान्तक बहीखातामे सेहो सभ अंक समान अपराधक नहि छल। नाम आ अंककेँ अलग-अलग पढ़ब सीखू।” रेवतीक मस्तिष्कमे ई बात फेर बसि गेल।

लुधियानाक कारखानामे मध्य नवम्बरक वेतन-दिन आबि गेल, मुदा श्रमिकसभकेँ पूरा रकम नहि भेटल। धर्मपाल खुराना बतौलनि जे किछु ग्राहकक भुगतान विलम्बित अछि आ नगदीक नब परिस्थिति सँ नगद वितरण कठिन। नियमित कर्मचारीक एक भाग खातामे पहुँचल, मुदा कतेको ठेका श्रमिकक नामक समक्ष ‘बाकी’ लिखल रहि गेल। बलदेव कहलक जे मजदूर चाहथि तँ सबकेँ नव खाता तुरन्त खुलबा देत। सुनीता पुछलक, “खाता खोलब उपयोगी अछि, मुदा पिछला मासक देय मजदूरी तँ आजु देबाक अछि। खाता खुलेनाइ आ बकाया मेटेनाइ दू अलग काज अछि।” चम्पा देवी अपन बच्चाक दूधक मूल्य कहलीह। धर्मपालक लग ओकरा तत्काल उत्तर नहि छल।

एक श्रमिक मनोहर कहलक जे ओ पैघ नोटमे मजदूरी लेबाक लेल तैयार अछि, कारण ओकरा बैंकमे जमा कऽ देबाक रास्ता भेटि जाएत। चम्पा विरोध कएलक, “जकर उपयोग सामान्य लेनदेनमे बन्द भेल, तकरा आजु मजदूरी कहि थमा देल जाय तऽ ई भुगतानक समाधान कोना भेल?” मनप्रीत स्पष्ट कएलनि जे लागू कानूनी व्यवस्था आ भुगतानक वैध माध्यमक पालन आवश्यक अछि। धर्मपाल बलदेवक प्रस्ताव अलग रखलनि। ओ कहला, “हमर इच्छा ककरो मेहनत दबेबाक नहि, मुदा नगदीक वास्तविक कठिनाइ अछि।” सुनीता उत्तर देलक, “कठिनाइ अहाँक अछि, पीड़ा हमर अछि। ई दुनू तथ्य न्यायालयमे अलग सुनल जाएत।” एहि वाक्यक बाद कमरेमे किछु देर मौन पसरि गेल।

कारखानाक बाहर सबहक मत एक नहि छल। कियो कहैत छल जे देशक भलाइक लेल किछु कष्ट सहब पड़ैत अछि। कियो कहैत छल जे छोट श्रमिकक कष्टक हिसाब कोन कार्यालय राखत। एक वृद्ध सिख मजदूर गुरमीत कहलक, “हमर बेटा विदेशसँ फोन कऽ कहैत छल जे

नकली नोट आ करचोरी रोकबाक प्रयास आवश्यक अछि। हम सेहो मानैत छी। मुदा हमर पेट मे जे भुख अछि ओकरो गिनती करबाक चाही।” कोनो नारा एहन नहि छल जे हुनकर दू भिन्न सत्यकेँ एक संग कहि पबैत। सुनीता निर्णय कएलक जे आगाँक प्रतिनिधि-सभामे विरोधक पहिले वास्तविक बकायाक नाम, रकम आ दिन गनल जाएत।

ओ राति घरमे सुनीता अपन पिताक पुरान मजदूरी-आदेशक प्रति खोललक। किछु वर्ष पहिने प्राधिकारी दू दिनक कटौतीपर राहत देने छल, आ शेष विवादक अलग परीक्षणक निर्देश छल। ओहि आदेशमे एक बात स्पष्ट छल—मजदूरीक दावाक लेल प्रमाणित हिसाब चाही। सुनीता अपन समक्ष नव कापी फैलौलक। ‘रामलखन पासवान—अक्टूबरक शेष मजदूरी’, ‘चम्पा देवी—अनुमोदित दिन’, ‘मनोहर—ठेका-विवरण’, ‘गुरमीत—अवकाशक स्वीकृति’। ओ प्रत्येक व्यक्तिक बात लिखैत, फेर उपस्थितिक पञ्जीसँ मिलबैत छलि। फूलकुमारी पुछलनि, “एतेक लिखलासँ पैसा भेटत?” सुनीता उत्तर देलक, “कहियो केवल लिखलासँ नहि। मुदा बिना लिखने जखन कियो कहत जे किछु बाकी नहि, तखन हम की देखाएब?”

दू दिन बाद सुनीता कारखानाक भीतरक छोट सभामे पाँच प्रतिनिधि चुनेबाक प्रस्ताव रखलक। ओ कहलक जे प्रत्येक पालीसँ एक व्यक्ति रहय, महिला श्रमिकक प्रतिनिधित्व अलग होय, आ ककरो नाम बिना सहमतिक सूचीमे नहि जोड़ल जाए। बलदेव तकरा आन्दोलन भड़कौनाइ कहलक। गुरमीत कहलक, “नाम लिखब आन्दोलन नहि, अपन मजदूरी बुझब अछि।” धर्मपाल दूरसँ ई वार्ता सुनैत छलाह। हुनका चिन्ता छल जे उत्पादन रुकि जाएत, मुदा मनप्रीत कहलीह जे जे हिसाब लिखि जमा होयत, तकर परीक्षण करब उलटे सरल रहत। विवादक विषय केवल रकमे नहि, सुनबाक अधिकार बनि रहल छल।

एक दिन सरबजीत अपन शाखाक दिनभरक मिलान समाप्त कऽ रहल छलीह, तखन नरेन्द्र पाल तीन ग्राहकक प्रपत्र लऽ पहुँचल। तीनू नाम एकहि औद्योगिक समूहसँ जुड़ल छल। प्रपत्रपर ग्राहकक हस्ताक्षरक छायाप्रति छल, मुदा मूल जानकारीक एक भाग अस्पष्ट। नरेन्द्र कहलक, “कम्पनीक अधिकृत प्रतिनिधि कहने छथि जे सभ श्रमिक सहमत छथि।” सरबजीत पुछलनि, “व्यक्तिगत सहमतिक अभिलेख कतय अछि? पहचानक सत्यापन के कएने अछि?” नरेन्द्र असहज भऽ गेल। “साहेब, काजक दबाव बहुत अछि।” सरबजीत उत्तर देलनि,

“दबाव रजिस्टरमे लिखू, गलत सत्यापन नहि।” ओ आवेदनसभकेँ अपूर्ण कहि विधिसम्मत प्रक्रिया पूर्ण करबाक लेल लौटौलनि। नरेन्द्रक चेहरा उतरि गेल, मुदा ओकर चुप्पी सरबजीतकेँ तत्काल अपराधक प्रमाण नहि लगल।

ओहि दिनक साँझ नरेन्द्र अपन एक सहकर्मीक संग चाय पीबैत कहलक जे सरबजीत प्रत्येक पत्रमे प्रश्न उठा दैत छथि। सहकर्मी कहलक, “जे खातामे एक बेर गलत नाम गेल, ओकरा सुधारेबामे मास लगैत अछि। सावधानी खराब नहि।” नरेन्द्र उत्तर नहि देलक। ओकरा अपन परिवारक कर्ज याद आबि रहल छल। पिताक इलाजमे बहुत धन गेल छल, आ घरक छत मरम्मति लेल बहिन प्रतीक्षा करैत छलि। आर्थिक विवशता ओहि पात्रकेँ मानवीय बनबैत छल; ओकर कारण गलत काजक अनुमति स्वतः नहि बनैत छल। नरेन्द्रकेँ एक बाहरी दलाल फोन कएलक। ओ फोनक घंटी देखलक, उठौलक नहि।

दिसम्बरक पहिल सप्ताहक एक प्रातः कारखानामे मनप्रीतकेँ लेखा-यन्त्रसँ दू भिन्न विवरण भेटल। एकमे रामलखनक समक्ष पूराक-पूरा भुगतान दर्ज छल, दोसरमे बकाया। मनप्रीत पहिले जाँचलक जे दोसर प्रविष्टि सुधारक प्रतिवेदन तऽ नहि। स्रोत अलग निकलल—एक दैनिक उपस्थिति-सूची, दोसर स्वीकृत भुगतान-पञ्जी। एहि भिन्नताक कारण अस्पष्ट छल। सुनीता कहलक, “जखन रकम चुकत नहि, तखन पञ्जीमे चुकल लिखब कोन गलती अछि?” मनप्रीत उत्तर देलनि, “गलती होएब सम्भव अछि, मुदा हम स्रोत जाँचने बिना केकरो नाम नहि लिखब।” ओ लेखा-विभागकेँ लिखित स्पष्टीकरण मँगलनि।

हरदेव चौहानक नाम फेर सामने आयल। ओकर नामक समक्ष पुरान सत्रह दिनक भुगतानक विवाद पहिनेसँ अधूरा छल; आब नव संगणकीय नकलमे ओकरा स्थायी श्रमिकक रूपमे देखाओल गेल छल। मनप्रीत पुरान कर्मचारी हरजीत कौरकेँ फोन कएलनि। हरजीत कहलीह, “हम जतेक जानैत छी, हरदेव पुर्जा पहुँचबय आवैत छल। ई हमर ज्ञान अछि, अंतिम प्रमाण नहि। पुरान प्रवेश-पञ्जी, भुगतानक मूल स्रोत आ ओहि व्यक्तिक बयान मिलाउ।” सेवानिवृत्तिक बादो ओ बिना आधार ककरो दोषी नहि कहलनि। सुनीताकेँ ई विवेक भरोसा देलक। कारखानाक भीतर अनियमितता छल, मुदा ई जरूर नहि जे ओकर सभ स्रोत एकहि व्यक्ति छल।

रेवती लुधियाना आएलि तँ सुनीता हुनका अपन बकायाक सूची देखौलक। २०१० क प्रकरणसँ रेवती सुनीताक नाम जनैत छलीह। एहि बेर हुनका लग कम्प्यूटरसँ निकालल वेतन-विवरण, कारखानाक हस्तलिखित पञ्जी, भुगतानक बैंक-पर्ची आ श्रमिकक व्यक्तिगत कथन छल। रेवती कहलीह, “तीनटा प्रश्न अलग करब। पहिल, मजदूरी देय अछि कि नहि। दोसर, भुगतानक वैध माध्यम आ समय की छल। तेसर, अभिलेखमे गलत प्रविष्टि किएक अछि। पहिल दुइ प्रश्नक उत्तर पाबि गेलासँ तेसर प्रश्नक उत्तर स्वतः नहि भेटत।” सुनीता मुस्कराइ देलक। ओकर कापीमे ओहि तीनू प्रश्न लेल तीन अलग चिन्ह बनल।

धर्मपाल खुराना रेवतीकेँ अपन कार्यालयमे भेटबैत कहला, “हमर उद्योग बन्द भेल तँ एतय कतेक परिवारक रोजी छूटत, से अहाँ बुझैत छी ने?” रेवती उत्तर देलीह, “बुझैत छी। मुदा मजदूरक पिछला श्रमक मूल्य रोकिकय उद्योगक स्थायित्व नहि बचाओल जा सकैत।” धर्मपाल सभ देय रकमक समीक्षा करबाक आश्वासन देलनि। बलदेव एहिमे हस्तक्षेप करैत कहलक जे मजदूर पुरान नोट बैंकमे जमा करि सकैत छलाह, तेँ विवादक आवश्यकता नहि छल। रेवती स्पष्ट कएलनि जे जमा करबाक सुविधा वेतनसम्बन्धी समस्त कानूनी दायित्वक स्थानापन्न नहि। भुगतानक तिथि, विधि आ वास्तविक प्राप्ति सभ महत्त्वपूर्ण अछि।

एहि वार्ताक बाद धर्मपाल मनप्रीतकेँ कहलनि जे स्वीकृत बकायाक सूची तैयार कएल जाए। मनप्रीत पन्द्रह श्रमिकक किछु दिनक रकम स्पष्ट रूपसँ बाकी देखौलनि। अन्यक मामलामे उपस्थितिक गणनामे विवाद छल। धर्मपाल लिखित रूपमे स्वीकार कएलनि जे स्वीकृत बकाया चुकत, मुदा ओकरा एक सप्ताहक समय चाही। सुनीता श्रमिकसभक संग विचार केलक। “स्वीकृत रकमक भुगतान लेल लिखित समय ठीक अछि,” गुरमीत कहलक, “मुदा समय फेर टरकल तँ?” चम्पा उत्तर देलक, “तखन हम फेर न्यायिक बाट पकड़ब। एखन जे स्वीकार भेल, ओकर नकल लऽ लिअ।” प्रतिनिधिसभ अहि निर्णयपर सहमत भेल। विश्वास नहि, लिखित प्रतिज्ञा आधार बनल।

एक सप्ताह बादो सभ स्वीकृत भुगतान नहि पहुँचल। किछु श्रमिकक खातामे रकम आयल, मुदा जकर खाताक सत्यापन अधूरा छल ओकर भुगतान रोकल रहल। मनोहरक बैंक-कापीमे नामक एक अक्षर गलत छल। ओकरा पुनः शाखा जाए पड़ल। एही बीच घरमे बच्चाक

विद्यालय-शुल्कक दिन नजदीक आबि गेल। मनोहर किछु गहना गिरवी रखबाक सोचैत छल। सुनीता ओकरा कहलक जे पहिले बैंकक लिखित कारण लिअ, फेर कारखानासँ भुगतानक वैध वैकल्पिक व्यवस्था माँगू। मनोहर कहलक, “हम पढ़ि नहि सकैत छी, मुदा मुदा अहाँ जतेक पन्ना देब, हम ओकर कदर बुझैत छी।”

दिसम्बरक दोसर सप्ताहमे सुनीता आ रेवती मजदूरी भुगतान अधिनियम अन्तर्गत नियुक्त सक्षम प्राधिकारीक समक्ष देरीसँ देल मजदूरी आ विवादित कटौती सम्बन्धी आवेदनक व्यवस्था कएलनि। चम्पा, मनोहर आ रामलखन अपन-अपन विशिष्ट दावा रखलनि। जगदीशक पुरान सेवा-समाप्ति सम्बन्धी विवाद ताहिसँ अलग उपयुक्त श्रम-न्यायिक मंचमे रहबाक कारण एहि आवेदनमे नहि जोड़ल गेल। रेवती आवेदनसँ पहिने सुनीताकेँ कहलनि, “अदालतकेँ पूरा देशक आर्थिक नीति पर निर्णय देबाक प्रार्थना नहि करब। एहि श्रमिकसभक वास्तविक देय मजदूरी आ ओकर भुगतानक प्रश्न प्रस्तुत करब। परिमाण बुझिकय माँग करब जीतक पहिल शर्त अछि।”

प्राधिकारीक छोट सुनबाई-कक्षमे राज्यक नक्सा, एक मेज आ दूटा पुरान पंखा छल। बाहर ठण्ढ, भीतर कागजक गन्ध। कारखानाक पक्षसँ अधिवक्ता हरपाल अरोड़ा उपस्थित छलाह। ओ आवेदन प्राप्त करैत कहला जे कम्पनीक मंशा वेतन रोकबाक नहि, असाधारण नगदी-परिवर्तनक कारण भुगतानक मार्ग बाधित भेल। रेवती प्रस्तुत कएलनि जे कम्पनीक लिखित स्वीकारक बादो विशिष्ट मजदूरी देय अछि। प्राधिकारी पुछलनि, “जकर रकम विवादविहीन अछि ओकर भुगतानक अद्यतन विवरण?” अरोड़ा कहला जे विवरण तैयार होइत अछि। “तखन लिखित तिथिक हिसाबसँ प्रस्तुत करू,” प्राधिकारी कहला, “आ प्रत्येक दावेदारक प्राप्त रकम अलग स्पष्ट करू।”

सुनीता कागज देखैत देहक भीतर धड़कन सुनैत छलि। जे रकम घरमे अन्नक मूल्य छल, न्यायिक कक्षमे ओकरा ‘स्वीकृत देय’, ‘विवादित दिन’ आ ‘भुगतानक प्रामाणिकता’ कहल जा रहल छल। ओहि रूपान्तरणसँ ओकरा कष्टो भेल आ आश्वासनो। प्राधिकारी कहला, “नगदीक नियम बदलल अछि, से हम जानैत छी। मुदा एहि मंचपर निर्णय होयत जे नियुक्त व्यक्ति लेल कानूनन देय मजदूरी कतेक छल आ चुकल कतेक।” सुनीताकेँ बुझायल जे एतय

चुप्पी नहि, गनती बोलैत अछि। मुदा गनतीकेँ सत्य बनबय लेल प्रत्येक पन्नाक स्रोत देखय पड़ैत अछि।

कारखानाक अधिवक्ता हरपाल अरोड़ा पहिल सूची प्रस्तुत कएलनि। ओहिमे लिखल छल जे कुल तैंतीस श्रमिकक भुगतान बैंकक माध्यमसँ पूर्ण भऽ चुकल अछि। रेवती पुछलनि, “एहि सूचीमे दावेदार मनोहरक नामक जे वर्तनी अछि, ओ ओकर खाता-पञ्जीसँ अलग अछि। भुगतान वास्तवमे ओकर खाते पहुँचल?” अरोड़ा कहला, “स्थानान्तरणक आदेश देल गेल।” रेवती उत्तर देलीह, “आदेश देब आ रकम प्राप्त होयब दू घटना अछि।” प्राधिकारी बैंकक प्रत्यावर्तन अथवा प्राप्तिक प्रमाण प्रस्तुत करबाक कहला। ओहि क्षण मनोहर पहिल बेर अपन नामक एक अक्षरक महत्त्व देखलक। जे अक्षर घरमे केओ ध्यान नहि देत, ओ मजदूरीक मार्गमे दीवाल बनि ठाढ़ छल।

चम्पा देवीक दावा सुनैत प्राधिकारी पुछलनि जे कम्पनी ओहि तीन दिनक उपस्थितिक विषयमे की कहैत अछि। मनप्रीतक तैयार कएल विवरणमे चम्पाक कामक समय पुष्टि भेल छल, मुदा पुरान गणना-पत्रमे रकम घटल रहि गेल छल। अरोड़ा एतय स्पष्ट कएलनि जे कम्पनी त्रुटि मानैत अछि। प्राधिकारी कहला, “जकरा स्वीकार कएल गेल, ओकरा विवादक नामपर लम्बित नहि रखू।” चम्पा सुनलक आ निसास छोड़लक। ओकरा कोर्ट-कचहरीक भाषा नहि चाही; ओकरा जानय छल जे दूध आ दवाईक बाँकी रकम कतय सँ आएत। रेवती ओकरा धीमे कहलीह, “एखन आदेश लिखल जायत। ओकर पालनक प्रमाण सेहो देखब।”

रामलखनक मामलामे कठिनाइ बेसी छल। कम्पनीक नब पञ्जीमे किछु दिनक भुगतान पूर्ण देखाओल गेल छल; पुरान प्राप्ति-पर्चीमेसँ दू पृष्ठ अनुपलब्ध छल। अरोड़ा कहला जे मजदूरी देल गेल होयबाक सम्भावना अछि, कारण पञ्जीमे ‘चुकता’ लिखल अछि। रेवती प्रश्न कएलनि, “ककरा हाथे, कहिया, कोन माध्यमे?” प्राधिकारी कम्पनीसँ समर्थनमूलक अभिलेख मँगलनि। रामलखनक आँखि भरि आयल। ओ कहला, “हमर पसीनाक दिनक हिसाबमे जखन केवल चुकता लिखि देल जाए, आ हमर हाथ खाली रहि जाए, तखन हम कोना बुझी?” प्राधिकारी हुनका शान्तिपूर्वक पूरा तथ्य कहबाक अवसर देलनि। एतय हुनकर भावनाकेँ सुनल गेल, मुदा प्रमाणक प्रश्न सेहो खुलल रहल।

सुनबाईक बाहर बलदेव सुनीताकेँ एकान्तमे कहलक, “कारखाना बाँचत तँ मजदूरी आबि जायत। एना प्रत्येक छोट अन्तर न्यायालयमे लऽ जायब तँ मालक काज समेटि लेत।” सुनीता उत्तर देलक, “छोट अन्तर कहैत छी, मुदा एतए जे रकमे हमरा सभक चूल्हि चलैत अछि।” बलदेव कहलक जे ओकरा सेहो श्रमिकक हित चाही। सुनीता पुछलक, “तखन समयपर वेतनक साफ सूची बना दियौक।” बलदेवक चेहरापर असहज हँसी अएल। ओकरा एहन सार्वजनिक हिसाबक अभ्यस्तता नहि छल। एक तरफ भण्डार आ बाजारक वास्तविक संकट छल, दोसर तरफ मध्यस्थक निजी प्रतिष्ठा। एहि दू बातमे कोन कतेक साँच, तकरा आब अभिलेख देखाएत।

ओहि दिन सरबजीतक शाखामे एक बुजुर्ग गृहिणी केसर कौरक जमा-प्राप्ति गायब भेल छल। मूल धन खातामे दर्ज छल, मुदा महिला चाहैत छलीह जे कागजक नकल भेटय। कर्मचारी कहलक, “पइसा तँ पहुँचल अछि, कागजक की आवश्यकता?” केसर उत्तर देलनि, “आइ अहाँ कहैत छी पहुँचल अछि, काल्हि हमरा पोता पूछत तँ हम की देखाएब?” सरबजीत नकल निकलवा देलनि। ओहि समय हुनकर मेजपर एक आन्तरिक चेतावनी आयल—किछु खातामे असामान्य जमा-विवरणक समीक्षा आवश्यक अछि। ई सूचना कोनो खाताधारकक अपराधक घोषणा नहि छल। सरबजीत सूचीकेँ सामान्य ग्राहकसँ पृथक गोपनीय रखैत जाँच-अनुपालन विभागक मार्ग अपनौलनि।

चेतावनीमे एक नाम ‘हरदेव चौहान’ छल। सरबजीत एखन ओकरा नहि जनैत छलीह। कागजमे केवल नाम, खाताक क्रमांकक सीमित भाग आ लेनदेनक सार छल। ओ नामक समानता देखिकय लुधियानाक पुरान कारखानासँ स्वतः सम्बन्ध नहि जोड़लनि। भारतमे हजारो व्यक्ति समान नाम रखैत छथि। सरबजीत प्रणालीगत परीक्षण माँगैत कहलीह, “व्यक्तिक पहिचान केवल नामसँ नहि होइत। कोन शाखाक खाता, केकर वास्तविक कागज, भुगतानक स्रोत आ केहन अधिकृत अनुमति—ई सभ देखू।” जसमीत सिंह हुनकर टिप्पणी पढ़ि सहमति देलनि। बैंकमे श्रमक अर्थ रकमक गिनती मात्र नहि, गलत निष्कर्षसँ मानवीय क्षति रोकब सेहो छल।

नरेन्द्र पाल एखन अपन परिवारक ऋणक कारण बेचैन छल। ओकरा एक बिचौलिया फेर भेटय चाहलक। ओ कहलक जे अनेक श्रमिक बैंक धरि नहि पहुँचि पबैत छथि, हुनकर ‘सुविधा’ लेल एक संग काज कराओल आवश्यक अछि। नरेन्द्र उत्तर देलक जे प्रत्येक खाता नियमक अनुसार मात्र खुलत। बिचौलिया हँसल, “अहाँ बहुत नियम पढ़ैत छी। दुनिया जे तेजी सँ चलैत अछि, ओतए एतेक पन्ना के पढ़त?” नरेन्द्रक भीतर दू आवाज छल। एक कहैत छल जे अतिरिक्त आयसँ पिताक इलाज होयत; दोसर कहैत छल जे खाता खोलब केकरो जीवनक आर्थिक दुआरि अछि, ओकर चाबी बिकाउ वस्तु नहि। ओहि दिन नरेन्द्र कोनो अनधिकृत काम नहि केलक, मुदा बिचौलियाक दबाव ओकर जीवनमे रहि गेल।

रेवती बैंकक नियमक विषयमे सरबजीतसँ फोनपर बात कएलनि। सरबजीत कहलीह जे नवम्बरमे जमाक वैधानिक व्यवस्था, नगद निकासीक सीमा आ डिजिटल स्थानान्तरणक सुविधा समय-समयपर बदलि रहल अछि; प्रत्येक विवाद लेल ओहि तिथिक लागू निर्देश देखब आवश्यक अछि। रेवती पुछलनि, “जँ कम्पनी स्थानान्तरणक आदेश देलक, मुदा गलत नामक कारण पैसा वापस अएल, तखन देय मजदूरीक की?” सरबजीत उत्तर देलीह, “बैंक वास्तविक प्राप्तिक विवरण देत। देय मजदूरीक प्रश्न सक्षम श्रम प्राधिकारी देखत। हम हुनकर बदला फैसला नहि देब।” दू पेशाक ई सीमा रेवतीकेँ प्रिय लागल। सभ संस्थाक अपन कार्य अछि, आ न्याय तखनहिं बलवान होइत अछि जखन कियो अपन सीमा जानैत अछि।

दिसम्बरक मध्य धरि कारखानामे किछु बकाया चुकल। धर्मपालक उद्योग पूर्ण रूपेँ बन्द नहि भेल, मुदा उत्पादन घटल। एक ग्राहक आदेश छोट कऽ देलक; दोसर नव वर्ष लेल किछु थानक माँग पठौलक। मशीनक आवाज कतहु मन्द, कतहु पुनः तेज होइत छल। चम्पा किछु रकम मिलने पर बच्चाक औषधि किनि सकलीह। मनोहरक गलत नाम सुधारक काज एखन चलैत छल। रामलखनक विवादित दिनक भुगतानक स्रोतक उत्तर नहि भेटल। सुनीताक सूचीमे लाल आ कारी स्याहीक दू निशान छल—जे चुकल, जे बाकी। ओ दिनक अन्तमे चूल्हि जलौलक, मुदा कापी बन्द नहि कएलक।

मजदूरी-प्राधिकारीक दोसर सुनबाईमे कम्पनी बैंकक प्रत्यावर्तित भुगतानक विवरण प्रस्तुत केलक। मनोहरक खातामे रकम नहि पहुँचने छल; कम्पनी एहि विषयमे लिखित स्वीकार

देलक आ सही नामक आधारपर फेर वैध भुगतानक व्यवस्था करबाक कहलक। प्राधिकारी एहि विशिष्ट स्वीकृत रकमक समयबद्ध भुगतानक आदेश देलनि। चम्पाक स्वीकारल बकाया सेहो चुकाओल जायत, से लिखल गेल। रामलखनक किछु दिवसक प्रश्नक बारेमे उपलब्ध प्रमाण अपर्याप्त रहबाक कारण अगिला सुनबाई लेल मूल लेखा-पृष्ठ प्रस्तुत करबाक निर्देश भेल। ई कोनो सम्पूर्ण विजय नहि, मुदा देरीमे अटकल दुनू महिलाक आ एक श्रमिकक जीवनमे स्पष्ट परिवर्तन छल।

हरपाल अरोड़ा न्यायालयक बाहर रेवतीसँ कहला, “अहाँ सभक तर्कसँ मजदूरकेँ राहत भेटल, मुदा कम्पनीक आर्थिक संकट सत्य अछि।” रेवती उत्तर देलीह, “हम ओकरा असत्य कहने नहि छी। देय मजदूरीक मुद्दा अलग अछि। उद्योगक वित्तीय कष्ट पर नीति बनाबयवला संस्था विचार कऽ सकैत अछि, मुदा एहि प्राधिकारीक समक्ष जे प्रमाण अछि, तकर उत्तर चाही।” हरपाल पुछलनि, “तखन एहि प्रकरणक पाछाँक सम्भावित जालसाजीक प्रश्न?” रेवती कहलीह, “जँ विशिष्ट अभिलेखमे जानबूझि कपट देखाइत अछि, तकरा अलग विधिसम्मत अनुसन्धान चाही। हरेक लेखा-त्रुटि आपराधिक षड्यन्त्र नहि।” हरपाल हुनकर स्पष्टतापर सहमत भेला।

दिसम्बरक एक साँझ रामलखन अपना घरक आगाँ धूपमे बैसल छलाह। हुनकर हाथमे दवाईक पर्ची छल। सुनीता न्यायिक आदेशक प्रति पढ़ि सुनौलक। रामलखन पुछलनि, “एहि बेर हमर सबटा मजदूरी भेटत?” सुनीता कहलक, “जतेक कम्पनी स्वीकारने अछि तकर समय तय भेल। शेष दू दिनक प्रश्न फेर सुनल जाएत।” रामलखन माथ हिलौलनि। “पहिने हम सोचैत छलहुँ जे अदालतमे गेलासँ सबटा काज एकहि दिन समाप्त होएत। आब बुझैत छी जे ओ एक-एकटा बात अलग पूछैत अछि।” फूलकुमारी कहलीह, “एतेक दिनमे बूझलहुँ जे न्यायालयसँ पहिने अपन घरमे कागज रखनाइ पड़ैत अछि।” सभ हँसि पड़ल, मुदा हँसीक भीतर थकान छल।

चण्डीगढ़मे नरेन्द्रकेँ बिचौलियाक नव फोन अएल। ओहि बेर ओकर आवाजमे अधिक आग्रह छल। “पुरान बात छोड़ू, हम केवल ग्राहकक कागज छोड़ि देब,” ओ कहलक। नरेन्द्र उत्तर देलक जे ग्राहकक सहमति आ सत्यापन बिना काज नहि होयत। फोनक बाद ओ

सरबजीतकेँ सम्पर्कक सूचना देलक। सरबजीत ओकरा लिखित विवरण तैयार करबाक सलाह देलनि आ कहलनि जे ओहि व्यक्तिक विरुद्ध कोनो अनुमान नहि, मात्र जे-जे सम्पर्क आ प्रस्ताव भेल, से लिखल जाए। नरेन्द्र जतेक सत्य छल, ओतेक लिखलक। पिताक दवाईक कर्ज एखन नहि घटल छल, मुदा ओ अपन कामक भीतर एक सीमा तय कऽ सकल। एहि सीमाक पालन आगाँ कोना करत, से ओकर भविष्यक प्रश्न छल।

नूर जतय, जे क्रिकेटक पुरान मुकदमाक समाचार लिखैत छलीह, नोटबन्दीक समय लुधियानामे एक छोट प्रतिवेदन तैयार करय अयलीह। ओ पहिने कारखानाक मालिकसँ भेटलीह, फेर मजदूरसभसँ, अन्तमे बैंक-अधिकारीसँ सामान्य नियमक जानकारी लेलनि। हुनका देखायल जे प्रत्येक पक्ष अपना अनुभवक सत्य कहैत अछि, मुदा कोनो एक अनुभव समस्त अर्थव्यवस्थाक अन्तिम चित्र नहि। धर्मपाल उत्पादनक संकट गनबैत छलाह; सुनीता बकायाक दिन; सरबजीत जमा आ निकासीक प्रक्रियाक भार। नूर अपन समाचारक शीर्षकमे ‘सभक पैसा गुमल’ नहि लिखलीह। ओ लिखलीह—‘नगदी बदलल, मजदूरीक प्रश्न शेष’। हुनकर सम्पादक कहला जे ई शीर्षक कम उत्तेजक अछि। नूर उत्तर देलीह, “कम उत्तेजक होयब असत्य होयब नहि अछि।”

रेवती नूरक प्रतिवेदन पढ़ि फोन कएलनि। “अहाँ कारखानाक देय रकमक तिथि स्रोतसँ मिलौने छी?” नूर कहलीह, “कम्पनीक उत्तर आ श्रमिकक आवेदन दुनू देखलहुँ। जे विवादित छल ओकरा विवादित लिखलहुँ।” रेवती कहलीह जे सामान्य पाठक लेल ई सावधानी महत्त्वपूर्ण अछि। नूर पुछलनि, “आ अहाँक न्यायालयीन प्रश्नक अन्तिम उत्तर?” रेवती कहलीह, ‘किछु भेटल, किछु शेष। न्यायालयकेँ जे नहि मालूम तकरा ‘नहि मालूम’ कहब सेहो सत्यक भाग अछि।’ ओहि वार्ताक बाद नूर अपन मसविदामे एक वाक्य जोड़लीह—बैंकक पाँतिमे ठाढ़ सभ व्यक्ति अवैध धनक मालिक नहि, आ सभ प्रशासनिक त्रुटि केवल दुर्भाग्य नहि।

एहि बीच लुधियानाक निकट एक गाममे धान बेचने किसान तेजिन्दर सिंह अपन पुरान उधार चुकता करबाक विषयमे आढ़तिया हरबंस सिंहसँ भेटल। तेजिन्दरक हाथमे जमा करबाक धन छल, मुदा छोट-छोट देनदारक भुगतानक समयक प्रश्न उठि रहल छल। हरबंस कहलनि,

“हम सभक लेखा पुरान नियमक समयसँ चलैत अछि, मुदा आब एकटा नब माध्यम सीखय पड़त। किसानक पूरा मूल्य मिलबाक चाही।” ओ अपन प्रत्येक ग्राहकक नामक सामने वास्तविक देय आ चुकल रकम अलग लिखबैत छलाह। तेजिन्दर पुछलक, “बाजारमे सभ कहैत अछि जे आढ़तिया सब चोरी करैत अछि; अहाँ एतेक कागज किएक बनबैत छी?” हरबंस उत्तर देलनि, “चोरी केलक तँ नाम लऽ प्रमाण देखाउ। पेशाक नाम अपराधक प्रमाण नहि।”

हरबंसक दोकानमे ओहि दिन एक महिलाक उपस्थिति विशेष छल। परवीन कौर अपन खेतक उत्पादनक एक भागक वास्तविक बिक्रीक हिसाब माँगय अयलीह। घरक पुरुषसभ निर्णय लैत छलाह, मुदा खेतक देखभालमे परवीनक श्रम अधिक छल। ओ पुछलीह जे खाता ककर नामे चलैत अछि आ रकम केकरा हाथे चुकत। हरबंस पुरान बही देखाकय कहला जे खातामे परिवारक मुखियाक नाम अछि। परवीन कहलीह, “खेतमे हमर नाम लिखल नहि अछि, ताहिसँ हमर श्रम घटि नहि जाइत।” हरबंस एहि प्रश्नक उत्तर तुरन्त नहि दऽ सकला। ओ अपन मुनीमकेँ कहलनि जे भविष्यक प्राप्तिपत्र देबाक समय धन पौनिहारक वास्तविक नाम स्पष्ट लिखल जाए। आर्थिक सुधार केवल बैंकक पञ्जीमे नहि, घरक भीतर सेहो आवश्यक छल।

दरभंगाक एक सरकारी अस्पतालमे औषधि किनबाक लेल आयल नरेश महतो अपन पुरान नोटक बारेमे पुछैत छल। अस्पतालक एक परिचारिका ओकरा सरकारी निर्देशमे उपलब्ध विशेष व्यवस्थाक सही समयसीमा बुझबय चाहैत छलीह, मुदा स्वयं पूरा जानकारी नहि रखने छलीह। ओ अनुमान लगाकय उत्तर नहि देलीह; सूचनापटलपर सटल अद्यतन आदेश मँगौलनि। नरेशक पिता सुईक प्रतीक्षामे बैसल छलाह। चिकित्सा-प्रक्रिया, दवाईक मूल्य आ नगदीक कठिनाइ एकहि परिवारपर एक संग भार बनि पड़ल छल। परिचारिका एहि घटना बाद अस्पतालक मुख्य प्रवेश-दुआरिपर सार्वजनिक निर्देश स्पष्ट राखबाक प्रस्ताव देलनि। ककरो पीड़ा घटेबाक लेल सभ बेर पैघ फैसला नहि, कखनो सही सूचना आवश्यक होइत अछि।

सरबजीत सप्ताहान्तमे शाखाक नव कर्मचारीसभ लेल एक छोट चर्चा आयोजित कएलनि। ओ प्रत्येककेँ एक समान काल्पनिक नामवला दू अभिलेख देखौलनि—एकमे ग्राहकक सही

पता, दोसरमे गलत खाता-शाखा; एकमे लेनदेन पूरा, दोसरमे रकम प्रत्यावर्तित। “केकरा अपराधी कहब?” ओ पुछलनि। एक युवक उत्तर देलक, “जेकर नाम बारम्बार अबैत अछि।” सरबजीत कहलीह, “नामक आवृत्ति प्रश्न उठबैत अछि, अपराध सिद्ध नहि करैत। नियमक भीतर असामान्यता जाँचू, जकरा प्रश्न अछि ओकर अभिलेख दियौक, आ जकरा पर आरोप अछि ओकरा उत्तर देबाक उचित अवसरक महत्त्व बुझू।” नरेन्द्र एहि चर्चामे चुपचाप बैसल छल। ओ पहिल बेर अपन रोजक खाता-खोलबाक काजकेँ नागरिकक जीवनसँ जोड़िकय देखलक।

अन्तिम दिसम्बरक समय मरुधर विश्वविद्यालयमे फिरदौस कौल छात्रसभक संग डिजिटल भुगतानपर चर्चा करैत छलीह। विवेक मेघवाल, जकर सामाजिक-माध्यम विवाद पछाति छात्रवृत्ति बहाल भेल छल, पुछलक, “सुविधा बढ़त तँ गलत अभिलेख अपने सुधरि जाएत?” फिरदौस कहलीह, “नहि। संगणक गलतीकेँ तेजीसँ दोहराबि सकैत अछि। सुधार लेल व्यक्ति, उत्तरदायित्व आ प्रक्रिया चाही।” मनस्वी अपन पुरान परिचय-संशोधनक अनुभव सुनौलीह। कुसुम कहलीह जे रामदेव मण्डलक पगरियाक मूल नक्शाक एक रेखा दशको धरि विवादित रहल। एक छात्र चकित भऽ पुछलक, “जमीनक रेखा आ बैंकक नाममे समानता की?” कुसुम कहलीह, “दुनू कागजमे मनुष्यक बाट बन्द होयबाक सामर्थ्य अछि।”

दिसम्बरक अन्तिम सप्ताहमे बैंकक शाखामे जमा सम्बन्धी निर्धारित अवधिक अन्त नजदीक आबि रहल छल। ग्राहकक भीड़ फेर बढ़ल। केसर कौर अपन पुरान रसीदक नकल सुरक्षित लऽ गेलीह। मीनाक्षी देवीक उत्तराधिकार सम्बन्धी औपचारिकता एखन पूर्ण नहि छल, मुदा हुनकर आवेदन आवश्यक विभागमे पहुँचल छल आ आगाँक सुनबाईक तिथि स्पष्ट देल गेल। सरबजीत आ जसमीत बहुत दिनसँ अवकाश नहि लेने छलाह। संध्यामे शाखा बन्द करैत सरबजीत कम्प्यूटरक निरन्तर चमकैत अङ्क देखलीह। ओ अंकक पाछाँ कहियो देनदार किसान, कहियो अस्पतालक रोगी, कहियो विधवा, कहियो मजदूर रहैत छल। त्रुटिक अर्थ एखन हुनका केवल ‘खाता नहि मिलल’ नहि लगैत छल; ओ ककरो एक दिनक भोजनक विलम्ब होइत छल।

शिवनारायण दरभंगामे रेडियोपर वर्षक आर्थिक चर्चासभ सुनैत छलाह। केओ कहैत छल जे नकली मुद्रा आ अवैध नगदीक विरुद्ध ई अनिवार्य उपाय अछि; केओ कहैत छल जे सामान्य गरीबक दैनन्दिन जीवनमे अत्यधिक पीड़ा पहुँचल। ओ रेवतीसँ पुछलनि, “तोहर अनुभव की कहैत अछि?” रेवती उत्तर देलीह, “दू बात एक संग कहैत अछि। शासनक घोषित उद्देश्यक परीक्षण आँकड़ा आ समयसँ करबाक चाही। मुदा रामलखनक बकाया मजदूरीक प्रश्न अदालत आइयो देख सकैत अछि। नीति सम्बन्धी बहस सँ ओहि ठोस अधिकारक निर्णय रोकल नहि जाय।” शिवनारायण सन्तोषसँ कहला, “एही लेल अदालतक दुआरि आवश्यक अछि—ओतय नारा सँ अधिक प्रश्नक महत्त्व होयबाक चाही।”

नव वर्षक पूर्वसन्ध्यापर सुनीता हरजीत कौरकेँ पत्र लिखलक। ओ लिखलक जे मजदूरीक किछु बकाया भेटि रहल अछि, मुदा पुरान ‘हरदेव चौहान’ नामक सन्दर्भ फेर नव पञ्जीमे देखायल। ओ पत्रमे कोनो अपराधक आरोप नहि लिखलक; केवल पुछलक जे कागजक सही जाँच लेल कोन पुरान दिनक प्राप्ति-पञ्जी उपलब्ध होयत। हरजीत उत्तर देलनि—“पुरान उपस्थिति-पञ्जी, बाहरी आपूर्तिक अभिलेख आ भुगतानक स्रोत अलग-अलग राखू। एकहि नाम कतेको अभिलेखमे भेटलासँ सम्बन्ध सिद्ध नहि होइत। जे उपलब्ध नहि, ओकरा खाली ठामे ‘अज्ञात” लिखू।’ सुनीता ई उत्तर अपन कापीक पहिल पन्नापर टाँकि देलक।

ओहि राति चण्डीगढ़सँ दरभंगा जाएवाली रेलमे रेवतीक कात एक वृद्ध व्यापारी बैसल छलाह। हुनकर हाथमे बैंकक जमा-पर्ची आ घरक विवाहक निमन्त्रण छल। ओ कहला जे पुरान बचत खातामे जमा भेल अछि, मुदा नगदी निकासीक सीमाक कारण विवाहक खर्चक व्यवस्था कठिन भेल। रेवती हुनकर बात धैर्यसँ सुनलीह। व्यापारी पुछलनि, “अहाँ वकील छी? एहन बातपर मुकदमा होइत अछि?” रेवती कहलीह, “जँ कोनो विशिष्ट अधिकारक उल्लंघन भेल होय, तकर अलग उपचार सम्भव अछि। मुदा प्रत्येक कठिनाइक समाधान न्यायालय एकहि आदेशसँ नहि दऽ सकैत।” व्यापारी थोड़ देर चुप रहला, फेर कहला, “तखन हमरा पहिने अपन कागज आ तिथि सही राखय पड़त।”

रेल आधा राति बाद एक छोट स्टेशनपर ठमकल। रेवती खिड़कीसँ बाहर देखलीह। चायक दोकानदार एक पितरक गिलासमे चाय दैत छल, ग्राहक ओकरा छोट सिक्का सँ मूल्य चुकबैत

छल। पासमे एक युवक अपन मोबाइल देखैत छल, दोसरक हाथमे पुरान बहीखाता। सन् २००० मे शिवनारायण जकर पैंतालीसम पन्नाक विवाद पढ़ने छलाह, सन् २०१६ मे ओकर नव स्वरूप अङ्कीय पञ्जी आ इलेक्ट्रॉनिक स्थानान्तरणमे आबि रहल छल। साधन बदलि गेल, मुदा मनुष्यक भरोसा, ओकर नाम, ओकर परिश्रम आ ओकरा परखबाक आवश्यकता शेष रहल। रेवतीक बगलमे राखल फाइलमे रामलखनक देय मजदूरीक एक पन्ना झाँकि रहल छल।

दरभंगा पहुँचिकय रेवती पिता संग भोरक चाय पीबैत रहलीह। शिवनारायण पुछलनि, “नव वर्षमे कोन काज पहिने?” रेवती कहलीह, “रामलखनक शेष दिनक प्रमाण, मरुधरक भूमि-विवादक नापी, आ क्रिकेटक प्रकरणमे दीपेन्द्रक यात्राक तिथि।” शिवनारायण कहला, “तीन अलग प्रश्न, तीन अलग उत्तर।” रेवती हँसलीह। ओहिमे एकटा चौथ प्रश्न सेहो छल—बैंकक शाखामे चिन्हित असामान्य खाताक वास्तविक मालिक के, मुदा सरबजीतक गोपनीय आन्तरिक जानकारी रेवतीक समक्ष नहि छल। पात्र सभ एखन अपन-अपन संस्थाक सीमा भीतर छलाह। भविष्य एखन एकहि अपराधक नक्शामे सभकेँ नहि जोड़ने छल।

वर्षक अन्तिम दिन सुनीता कारखानासँ घर लौटैत फाटकक बाहर ठमकि गेलि। मशीनक सीटी बजल, मजदूरक भीड़ अपन-अपन बाट धरलक। कियो बैंकमे जमा करबाक अन्तिम व्यवस्था बुझबाक प्रयत्नमे छल, कियो बच्चाक विद्यालय-शुल्कक चिन्तामे, कियो नव कामक आशामे। मनप्रीत दूरसँ हाथ हिलौलनि; हुनका लग रामलखनक शेष प्राप्ति-पञ्जीक खोज जारी छल। सुनीता जवाबमे हाथ उठौलक। ओकर कापीमे आब दू पन्ना रहि गेल छल—एक पुरान मजदूरीक विवाद, दोसर हरदेव चौहानक अनिश्चित प्रविष्टि। ओ दुनूकेँ एकटा अपराधक सिद्ध कहानी बना देबाक लोभ सँ बचलि। घर पहुँचलाक बाद ओ पहिल पन्नापर लिखलक —“जकर देय अछि, तकर हिसाब; जकर दोष अछि, तकर प्रमाण।” तखन दीप जराकय बाबूजीक दवाई लेल समय देखलक।

ओहि राति सरबजीत बैंकसँ निकलि अपन घरक दुआरि बन्द कएलनि। दूरसँ नव वर्षक बाजाक आवाज आबि रहल छल। ओ अपन दिनक अन्तिम निजी कापीमे लिखलनि जे शाखाक अधिकांश ग्राहक अपना जीवनक वैध बचत लऽ आएल छलाह, आ असामान्य लेनदेनक किछु विवरण विधिसम्मत जाँचक लेल अलग सुरक्षित रखल गेल अछि। ओहि नोटमे

ककरो समुदाय, प्रदेश वा पेशाकेँ दोषी नहि कहल गेल छल। अन्तिम पाँति लिखलनि —“रुपैयाक मूल्य ओकर अङ्कमे अछि; मुदा जकरा ओ चाही, ओकर जीवनमे ओकर दोसर मूल्य अछि।” ओ कापी बन्द कएलनि, आ सिरहानी लग राखल पुस्तकक भीतर एक पुरान बैंक-रसीदक नकल सम्भारि देलनि। कतेको वर्ष बाद ओहि कापीक एक सही तारीख न्यायालयमे अनपेक्षित महत्त्व पाओत।

अध्याय २१ — निजताक नाम

सन् २०१७ : जोधपुर, लुधियाना, चण्डीगढ़, दिल्ली आ दरभंगा

जुलाई २०१७ क पहिल भोरमे जोधपुरक मरुधर विश्वविद्यालयक मुख्य दुआरिपर दू अलग कागज सटल छल। एक कागज व्यापारीसभक लेल वस्तु आ सेवा करक नव व्यवस्थाक सूचना छल। दोसर विद्यार्थीक लेल नव संगणकीय परिचय-पञ्जीमे अपन विवरण जाँचि लेबाक आग्रह। विवेक मेघवाल पहिल कागजक आगाँ ठमकल नहि; ओकरा पहिने अपन छात्रवृत्तिक हिसाब बुझबाक छल। मुदा दोसर कागजक नीचाँ एकटा वाक्य पढ़िते ओकर पयर रुकि गेल —“जकर सूचना अद्यतन नहि होयत, तकर छात्रावास आ छात्रवृत्तिसँ सम्बन्धित सेवा बाधित भऽ सकैत अछि।” शब्द साधारण प्रशासनिक चेतावनी सन छल, मुदा विवेक अपन पाछिला दू वर्षक कष्ट स्मरण करैत सोचलक जे ओकर नामक पाछाँ फेर कोन नब चिन्ह राखल जायत।

ओहि समय मनस्वी पुस्तकालयक सीढ़ी चढ़ि रहल छलीह। हुनकर शैक्षणिक परिचयक सुधारक कथा एखन परिसरमे किछु लोक स्मरण करैत छलाह। ओ देखलनि जे विद्यार्थी अपन विवरणक छपल प्रति लऽ एकटा पाँतिमे ठाढ़ छथि। एक लिपिक कोठरीक भीतर बैसल छल, दोसर बाहर विद्यार्थीक कागज मिलबैत छल। मनस्वी पुछलनि, “एहि पञ्जीमे हमर पहिनुक प्रविष्टि सेहो रहत?” लिपिक कहलक, “सभ पुरान विवरण नब व्यवस्थामे जोड़ल गेल अछि।” “ककरा देखबाक अनुमति अछि?”—मनस्वीक दोसर प्रश्नपर लिपिक चुप भऽ गेल। ओहि मौनमे एकटा कार्यालयक कमी नहि, व्यक्ति आ संस्थाक बीचक पैघ दूरी समायल छल।

फिरदौस कौलकेँ सूचना भेटल जे विश्वविद्यालय प्रशासन बाहरी सेवा-दाताक माध्यमसँ विद्यार्थी-प्रबन्धन प्रणाली चालू करबाक अन्तिम तैयारीमे अछि। ओ २०१५ मे लिखल अपन प्रतिवेदनक प्रति निकाललनि। ताहिमे ओ सुझाव देने छलीह जे केवल आवश्यक अभिलेख स्थानान्तरित हो, अतिरिक्त जानकारीक प्रयोजन स्पष्ट रहय, सुधारक बाट लिखित हो, आ ककरा कोन हिस्सा देखबाक अधिकार अछि से सुनिश्चित कएल जाए। दू वर्षमे संस्थाक

भवनपर नव रङ्ग चढ़ि गेल छल, कम्प्यूटर बढ़ि गेल छल, मुदा ओहि प्रतिवेदनक अधिकांश प्रश्नपर कोनो निश्चित उत्तर नहि लिखल गेल छल। ओ अपन सहकर्मी कुसुमकेँ कहलीह, “यन्त्र दू वर्षमे नब भऽ सकैत अछि, मुदा गलती पुरान रहि गेल तँ ओहो यन्त्रक संग नब जीवन पाबि लेत।”

कुसुम मरुधरक भूमि-विवादमे रामदेव मण्डलक परिवारक सहायतामे लागल छलीह। ओ कार्यालयक पञ्जीक विषय सुनिकय पुछलनि, “कोनो खाता ककरा देखबाक अछि, ई तऽ विद्यार्थी-कल्याण शाखा तय करत ने?” फिरदौस उत्तर देलीह, “तय करबाक अधिकार संस्थाक अछि, मुदा ओहि निर्णयक कारण आ सीमा होयबाक चाही। छात्रक चिकित्सकीय विवरण, पुरान अनुशासनक आरोप, छात्रवृत्तिक अभाव, परिवारक निजी परिस्थिति—ई सभ एकहि कोठरीमे राखल जा सकैत अछि; तकर अर्थ ई नहि जे सभ कर्मचारी अथवा बाहरी ठेकेदार ओकरा पढ़ि सकय।” कुसुमकेँ अपन पिताक जमीनक पुरान नक्सा स्मरण अएल। पगरियाक एकटा रेखा जे अदालतमे दशको विवादक कारण बनल, ओ कम्प्यूटरक भीतर नब रंगक रेखा भऽ सकैत छल।

दिल्लीमे रेवती झाक कार्यालयमे एहि वर्ष दू प्रकारक फाइल बढ़ि रहल छल। एक दल व्यापारिक करक नव व्यवस्थासँ सम्बन्धित विधिक प्रश्न लऽ अबैत छल; दोसर विद्यार्थी आ छोट संस्थाक अभिलेख-सम्बन्धी विवाद। रेवती अपन सहायक अनिमेषकेँ कहलीह जे प्रत्येक प्रश्नकेँ सर्वोच्च न्यायालयक नाम लऽ तुरन्त पैघ संवैधानिक विवाद बनबय आवश्यक नहि। “पहिने देखू, कोन अधिकारी कोन आदेश देने छथि, कोन नियम लागू अछि, आ जे व्यक्ति प्रभावित भेल छथि हुनकर वास्तविक क्षति की अछि,” ओ कहलीह। अनिमेष एहि निर्देशकेँ अपन कापीमे लिखलक। ओकरा लग न्यायशास्त्रक व्याख्यानसँ बेसी उपयोगी अदालतक एहि साधारण शृंखला बुझायल।

पहिल जुलाईक राति लुधियानामे धर्मपाल खुरानाक वस्त्र-कारखानाक हिसाब विभाग देर धरि खुलल रहल। वस्तु आ सेवा कर लागू भेल छल। धर्मपालक लेखापाल हरपाल अरोड़ा नब बिलक रूप, मालक आवाजाहीक अभिलेख आ ग्राहकक कर-सम्बन्धी प्रश्न मिलाबयमे व्यस्त छलाह। मशीनपर काज करनिहार सुनीता पासवानक लेल एहि परिवर्तनक पहिल अर्थ सरल

छल—नव हिसाबक झंझटसँ मजदूरी फेर नहि अटकि जाए। ओ हरपालसँ पुछलक, “हमर बाबूजीक शेष बकाया तऽ एहि नब करक कारण नहि रोकल जाएत?” हरपाल स्पष्ट कहला, “जे मजदूरी पहिले देय अछि ओकर उत्तरदायित्व अलग अछि। करक नियम बदललासँ देय परिश्रमक हिसाब मेटि नहि जाइत।” सुनीताकेँ उत्तरक ई स्पष्टता नीक लागल, मुदा ओ अपन कापी बन्द नहि केलक।

कारखानाक बगलमे कपड़ा रँगनिहार छोट उद्यम चलौनिहार नसरीन बेगमकेँ नव व्यवस्था बुझबाक लेल समय चाही छल। ओ अपन उत्पाद राज्यक बाहर बेचैत छलीह, मुदा हुनकर कतेको ग्राहकक कागज एखन पुरान रीतिसँ बनैत छल। एक बड़ खरीदार छोट आपूर्तिकर्तासँ देरीक दण्डक बात कएलक। नसरीन अपन बेटी हिना संग रातिभर पुरान बही देखैत छलीह। हिना महाविद्यालयमे वाणिज्य पढ़ैत छलि। ओ कहलक, “अम्मी, लेखापालसँ लिखित प्रश्न पुछू। जे बुझाइत नहि, तकरा खाली अनुमानसँ नहि भरो।” नसरीन हँसलीह, “तोहर पढ़ाइ हमर दोकानमे एतेक जल्दी काज आओत से नहि बुझने छलहुँ।” ओकरा लग राष्ट्रीय कर-सुधारक अर्थ एही रातिक घरक उजास छल।

दू सप्ताह बाद विवेकक छात्रवृत्तिक भुगतान फेर अटकल। वित्त कार्यालयक कर्मचारी कहलनि जे नब परिचय-पञ्जीमे ओकरा समक्ष ‘अनुशासन सम्बन्धी पूर्व परीक्षण’ लिखल देखाइत अछि। विवेकक २०१५ क विवादमे उच्च न्यायालयक सीमित निर्देश पछाति छात्रवृत्ति बहाल भेल छल; नव प्रणालीमे पुरान टिप्पणी बिना प्रसंगक लौटि आयल छल। विवेक लिखित विवरण माँगलक। कर्मचारी कहलक, “ई संगणकसँ आएल अछि।” विवेक पुछलक, “संगणक ककरा कहल? जे लिखलक ओकर नाम अछि कि नहि?” कर्मचारी चुप रहि गेल। विवेक अपन २०१५ क निर्णयक प्रति फिरदौसक कार्यालयमे लऽ गेल।

फिरदौस तीन कागज मेजपर पसारलनि—पुरान छात्र-अनुशासन समितिक आदेश, बादमे भेल सुधारक अभिलेख, आ नब प्रणालीक छपल प्रविष्टि। ओ सावधानीसँ देखलनि जे नव टिप्पणी पुरान असत्य चित्रक सन्दर्भमे छल कि केवल पुराने प्रक्रियाक संकेत। ओ कहलीह, “हम एखन ई नहि कहब जे कोनो व्यक्ति जानबूझिकय तोहर छात्रवृत्ति रोकलक। पहिने ई जानब जे नब प्रविष्टि कोन स्रोतसँ आयल। तखन उत्तरदायित्वक विषय उठत।” विवेक

झुँझलाकय कहलक, “दू वर्ष पहिने जे भूल मानि लेल गेल, ओ फेर हमर माथपर किएक?” फिरदौस उत्तर देलीह, “कारण ई अछि जे सुधार कागजपर भेल, मुदा पुरान अभिलेखसँ ओकर सम्बन्ध ठीकसँ नहि बाँधल गेल। एहि बेर केवल अपन किस्त नहि, सुधारक स्थायी बाट माँगू।”

मनस्वीक स्थितिमे समस्या अलग छल। नब परिचय-पञ्जीमे एकटा पुरान नाम ओहि वर्गमे राखल छल जाहिसँ सामान्य कार्यालयक अनेक कर्मचारी सहज पहुँच बना सकैत छलाह। मनस्वी नहि चाहैत छलीह जे अपन पूर्व शैक्षणिक अभिलेखक विस्तार अनावश्यक रूपसँ ककरो सामने खुलय। ओ विद्यार्थी-कल्याण प्रमुख भटनागरकेँ भेटलीह। “हम अपन वर्तमान नाम सही रखने छी,” ओ कहलीह, “आवश्यक कानूनी अभिलेख संस्था सुरक्षित राखय, मुदा ककरा कोन जानकारी देखय देल जायत तकर सीमा चाही।” भटनागर कहला, “कोनो अनिष्ट तऽ एखन भेल नहि अछि।” मनस्वी उत्तर देलीह, “अनिष्टक प्रतीक्षा कएल जाए, तखन संरक्षण देब कतेक देर भऽ जाएत?” ओहि प्रश्नपर भटनागर सहज उत्तर नहि दऽ सकला।

भटनागर मूलतः शिक्षण संस्थाक व्यवस्था चलबय चाहैत छलाह। हुनकर मेजपर फीस, भवन, कर्मचारीक सेवा आ विद्यार्थीक शिकायतक फाइलक ढेर रहैत छल। संगणकीय व्यवस्था लेल ठेका देबाक निर्णयमे ओ सुविधा देखैत छलाह। मुदा फिरदौसक प्रतिवेदन पढ़लाक बाद हुनका प्रथम बेर ई प्रश्न गम्भीर लागल जे संस्था जे जानकारी राखैत अछि, तकरा ककरो सामने रखबाक अधिकार अनन्त नहि। ओ सेवा-दाताक प्रतिनिधि प्रद्युम्न सूदकेँ बैठक लेल बजौलनि। सूद प्रस्तुत भेल आ बतौलक जे व्यवस्था सँ कतार घटत, छात्र जल्दी प्रमाणपत्र पाओत, आ प्रत्येक कार्यालयकेँ एक-दोसरक पास दौड़नाइ नहि पड़त। भटनागर पुछलनि, “त्रुटि सुधारक उत्तरदायित्व केकर?” सूद सामान्य आश्वासन देलक। फिरदौस ठोस लिखित उत्तर माँगलनि।

सूदक कम्पनीक नाम ‘नवद्वार अभिलेख सेवा’ छल। ओकर कार्यालय जयपुरमे छल, आ ओ अनेक शिक्षण संस्थाक संग काज करैत छल। उपलब्ध अभिलेखमे कम्पनीक कोनो आपराधिक सम्बन्ध एखन प्रमाणित नहि छल। मुदा प्रशासनक मसविदा अनुबन्धमे ‘विद्यार्थीक सेवाक गुणवत्ता सुधार’ जकाँ विस्तृत वाक्य छल, जकर सीमा अस्पष्ट छल। फिरदौस

कहलीह, “गुणवत्ता सुधारब नीक उद्देश्य अछि, मुदा उद्देश्यक नामपर अनावश्यक जानकारी नहि लियौक। विद्यार्थीक फोटो, सम्पर्क, परीक्षाक परिणाम, परिवारक आर्थिक कागज आ संवेदनशील व्यक्तिगत प्रसंगक प्रयोजन अलग-अलग अछि।” सूद कहलक जे एहन विस्तारसँ लागत बढ़त। मनस्वी उत्तर देलीह, “लागत बचएबाक अर्थ ककरो जीवनक गोपनीयता सस्ता करब नहि अछि।”

नसीमा एहि बहसकेँ अलग दृष्टिसँ देखैत छलीह। २००२ मे सायराक जरल शैक्षणिक अभिलेखक सहायता करनिहार नसीमा जानैत छलीह जे कागज नहि रहब कतेक पैघ संकट होइत अछि। ओ कहलीह, “पहिने हम सभ कहैत छलहुँ जे अभिलेख सुरक्षित रहय। आब कहि रहल छी जे सुरक्षित अभिलेखक दुआरि सभ लेल खुलल नहि रहय। दुनू बात आवश्यक अछि।” सायरा, जे आब शिक्षिका बनि चुकल छलीह, फोनपर कहलीह, “जकर प्रमाणपत्र जरि गेल ओकरा दुबारा प्रमाण चाही; मुदा जकर प्रमाणपत्र बचि गेल, ओकरा बिना कारण सभक हाथमे देब सेहो अन्याय अछि।” एहि कथासँ फिरदौसक प्रतिवेदनमे एक नव खण्ड जुड़ल—सुरक्षा आ उपलब्धताक समुचित सन्तुलन।

अगिला दिन विद्यार्थी-परिषदक कक्षमे सभापति विवेक सभ सदस्यक समक्ष प्रस्ताव पढ़लक। ओ प्रस्तावमे विश्वविद्यालयसँ ककरो व्यक्तिगत विवरण सार्वजनिक करबाक माँग नहि केलक। ओ केवल एतेक चाहैत छल जे संगणकीय पञ्जीक प्रयोजन, सुधारक समय, जिम्मेवार अधिकारी आ बाहरी सेवाक शर्त विद्यार्थीसभक जानकारीमे आय। एक युवक पुछलक, “जँ हम सभ दोषी कर्मचारीक नाम सार्वजनिक नहि करब तँ कोन भय रहत?” मनस्वी उत्तर देलीह, “आरोपक बिना प्रमाण नाम फैलाएब अपनहि माँगक विरुद्ध होयत। हम गलत जानकारीक नियन्त्रण चाहैत छी; अनिश्चित नामक सूची नहि।” विद्यार्थीसभा एहि बातपर विभाजित भेल, मुदा अन्ततः लिखित नियम माँगबाक प्रस्ताव पारित भेल।

विश्वविद्यालयक गणित-विभागमे अध्यापक रमाकान्त जोशीक अनुभव अलग छल। हुनका प्रतिदिन परीक्षा-परिणामक अनेक कागज हाथे मिलैत छल। ओ कहला जे नामांकित विद्यार्थीकेँ समयपर सहायता देबाक लेल विभागक जानकारी उपलब्ध होयबाक चाही। फिरदौस सहमत भेलीह, मुदा एकटा उदाहरण देलीह। “जँ ककरो परीक्षा-प्रवेशक लेल जन्मतिथि चाही, तँ

ओकरा सम्पूर्ण पारिवारिक चिकित्सा-विवरणक पहुँच किएक?” रमाकान्त क्षणभरि सोचला। “काज जे अछि तकरा लेल जतेक चाही, ओतेक?” “हँ,” फिरदौस कहलीह, “आ गलत प्रवेश भेल तँ के सुधारत, ई सेहो।” साधारण विद्यालयी चर्चा प्रशासनक नीति-प्रश्न बनि रहल छल।

कुसुमक पिताक पुरान पगरिया सम्बन्धी नक्शाक छायाप्रति सेहो नव भू-अभिलेख प्रणालीमे राखल गेल छल। भूमि-विवादक सम्बन्धित न्यायालयमे अभिलेख प्रस्तुत करब आवश्यक छल, मुदा परिसरक प्रचार-पत्रमे ओहि विवादक चित्रक उपयोग करबाक प्रस्ताव आयल। कुसुम विरोध कएलनि। “ई हमर बाबूजीक मामलाक कागज अछि,” ओ कहलीह, “कियो एकरा छात्रावासक आकर्षक चित्रक भाग बनाबय चाहैत अछि, तखन न्यायालयक अपूर्ण विवादक अर्थ बदलि जाएत।” भटनागर प्रस्ताव रोकि देलनि। एहि छोट निर्णयसँ कुसुम बुझलीह जे निजताक प्रश्न केवल फोटो वा परिचयक नहि; सन्दर्भकेँ बचा कऽ रखबाक प्रश्न सेहो अछि।

लुधियानामे सुनीता नव करक हिसाबसँ उत्पन्न झंझट सँ बेसी कारखानाक भीतरक थकान देखैत छलीह। उत्पादनक मात्रा बदलि रहल छल, किछु ग्राहक अपन नब बिलिंग प्रणाली मिलाबय लेल मालक आपूर्ति टारि रहल छल। धर्मपाल खुराना मजदूरसभकेँ कहला जे ई व्यवधान अस्थायी अछि। सुनीता उत्तर देलक, “अस्थायी व्यवधानक कारण हम सभक भोजन दैनिक नहि होएत, से नहि अछि।” धर्मपाल एखन मजदूरी देबाक निश्चित तिथि नहि बतबैत छलाह। मुदा ओ स्वीकार केलनि जे समयपर भुगतान करब नियोक्ताक दायित्व अछि आ वेतनक शेष विवादक अलग निस्तार होयबाक चाही।

नसरीनक बेटी हिना एक पन्नाक सूची तैयार केलक—कुन ग्राहकक बिल फेर जाँचबाक, कोन पुरान आपूर्तिक भुगतान शेष, आ ककरा नव करक विषयमे विशेषज्ञसँ प्रश्न पूछबाक। ओ अपन मायक दोकानमे ठोस काम करैत छलीह, तकर बाद राति पढ़ैत छलीह। एक दिन ग्राहक कहलक जे “सरकारक नब करक कारण अहाँक सभ माल अबैध भऽ गेल”। हिना उत्तर देलक, “एहि निष्कर्ष लेल नियम आ तिथि चाही। बदलबाक कागज जरूरी अछि तँ ओ ठीक कएल जाएत, मुदा अफवाहक आधारपर हमर मायक सत्रह दिनक परिश्रम शून्य नहि होएत।”

वृद्ध रँगरेज अब्दुल लतीफ हिनाक बात सुनि हँसला। “आब ई दोकानमे कागजक भी रंग चढ़ैत अछि,” ओ कहला।

चण्डीगढ़मे सरबजीत कौरक बैंक शाखाक सामने डिजिटल भुगतानक प्रशिक्षण-शिविर लगल। नरेन्द्र पाल, जे गत वर्ष एक बिचौलियाक असामान्य प्रस्तावक जानकारी अधिकारीकेँ देने छल, आब ग्राहकसभकेँ खाता-सुरक्षाक सामान्य नियम बुझबैत छल। सरबजीत ओकरा कहलीह, “पहिचानक विवरण जतेक चाही, ओतेक लेल जाउ। जकरा किछु नहि बुझाइत अछि, ओकरा साधारण भाषामे लिखित अर्थ बुझबाउ।” नरेन्द्र पुछलक, “जँ ग्राहक बड़ हड़बड़ीमे हो?” सरबजीत कहलीह, “हड़बड़ी सत्यापनक बदला नहि।” ओहि दिन शाखामे एक वृद्धा अपन बेटाक मोबाइल नम्बर पर सभ सूचना जाएबाक कारण चिन्तित भेलीह। सरबजीत अधिकृत ग्राहकक प्राथमिकता अनुसार सम्पर्क-व्यवस्थाक वैध प्रक्रिया बुझौलीह।

एहि वृद्धाक नाम परमजीत कौर छल। हुनकर पति बीमारीमे छलाह, आ बेटा परदेशमे रोजगार करैत छल। घरक छोटी-छोटी आर्थिक आवश्यकता लेल ओ स्वयं बैंक आवैत छलीह। पत्रक भाषा हुनका कम बुझाइत छल, मुदा अपन बचतक मूल्य नीकसँ बुझैत छलीह। ओ नरेन्द्रकेँ कहलीह, “हमर पासबुक हमरा दिखाउ; बेटाकेँ कहि देब कि नहि, से हम ठहराएब।” नरेन्द्र पहिने अपन कार्यालयक परम्पराक आधारपर उत्तर देबय चाहलक, फेर सरबजीतक निर्देश स्मरण कऽ वृद्धाकेँ वैधानिक विकल्प बुझौलक। परमजीतक चेहरेपर सन्तोषक एक छोट रेखा आयल। निजता कोनो दूरक सिद्धान्त नहि, अपन घरक निर्णयपर अपनहि अधिकार छल।

सरबजीत राति अपन पुरान शाखा-पञ्जी देखैत छलीह। सन् २०१६ मे जे ‘हरदेव चौहान’ नामक समानता भेटल छल, ओकर विषयमे अनुपालन विभागक उत्तर आयल छल। दू भिन्न खाता, दू भिन्न पहचान आ अलग शाखाक विवरण। एखन जतेक उपलब्ध छल तकरा आधारपर लुधियानाक मजदूरी-पञ्जीसँ कोनो निश्चित सम्बन्ध नहि बनैत छल। सरबजीत टिप्पणी लिखलीह—“नाम-मात्रक समानता पर्याप्त नहि।” ओहि छोट वाक्यसँ एक सम्भावित गलत आरोप टलल। मुदा विभागक दोसर प्रश्न शेष छल: एक बाहरी कम्पनीक द्वारा माँगल ग्राहक-सम्बन्धी जानकारीक प्रयोजन स्पष्ट नहि छल। ओ अलग अभिलेख सुरक्षित रखलीह।

दिल्लीमे नूर जतय एक समाचार लिखि रहल छलीह—‘नव कर, पुरान उधार’। ओ तीन व्यापारी, दू श्रमिक आ एक कर-विशेषज्ञसँ बात कएने छलीह। सम्पादक जोर देलनि जे व्यापारक कष्टक तीव्र चित्र चाही। नूर उत्तर देलीह, “तीव्र चित्र अछि—नसरीन राति भरि बिल बनबैत छथि, सुनीता मजदूरीक तिथि पूछैत छथि। मुदा हम एना नहि लिखब जे सम्पूर्ण व्यापार ध्वस्त भऽ गेल, वा सभ किछु सहज भऽ गेल।” समाचारमे ओ जकरा कहने छलाह तकर स्पष्ट उल्लेख, आ जे सरकारी निर्णयसँ सम्बन्धित छल तकर स्वतंत्र सन्दर्भ राखलीह। मूल वाक्य काटि अर्थ बदलल जाएब हुनका २०१५ क विवेक-विवादसँ सीखल अनुभव छल।

मरुधरमे विद्यार्थीसभक आवेदनक पैंतीसम दिन बीतल। भटनागरक कार्यालयसँ अधूरा उत्तर भेटल—“प्रणाली सुधाराधीन अछि, विद्यार्थीक हित सर्वोपरि अछि।” मनस्वी पत्र पढ़िकय कहलीह, “हित सर्वोपरि कहनाइ आसान अछि; हितक रक्षा लेल किछु निर्धारित कदम चाही।” रिद्धिक पिता, जे विभागमे अध्यापक छलाह, कहला जे विश्वविद्यालयक सभ कर्मचारी उदासीन नहि छथि। किछु कार्यालयक वास्तविक कठिनाइ अछि। फिरदौस उत्तर देलीह, “एहि लेल हम सभ आरोप नहि, कार्यविधि चाहैत छी। सगरे संस्था एक मुँह नहि अछि।” बैठकमे निर्णय भेल जे अधिकारयुक्त कुलसचिवकेँ विस्तृत निवेदन देल जाए।

निवेदनमे पाँच स्पष्ट प्रश्न लिखल गेल: विद्यार्थीक कुन-कुन विवरण नव प्रणालीमे राखल गेल, ककरा पहुँचक अनुमति अछि, पुरान त्रुटिक सुधारक उत्तरदायी अधिकारी के छथि, बाहरी सेवा-दातासँ निर्धारित शर्त की अछि, आ छात्रवृत्ति रोकबाक कारण व्यक्तिगत रूपसँ कतेक स्पष्ट कएल जाइत अछि। मनस्वी अपन निज विवरण सभामे सुनयबाक विरोध कएलनि। विद्यार्थीसभ हुनकर निर्णय स्वीकार कएल। विवेक कहलनि, “हमर मामला सार्वजनिक अछि; मुदा हमर साथीकेँ अपन जीवन सार्वजनिक करबाक लेल बाध्य नहि कएल जा सकैत।” एहि दिनक सभा बिना नाराबाजी समाप्त भेल, मुदा ओकर लिखित प्रभाव बादमे न्यायालयधरि जाएत।

अगस्तक आरम्भमे रेवतीकेँ मरुधरसँ कागजक एक मोट गट्ठर भेटल। कुसुम एक पत्र जोड़ने छलीह—“भूमि-विवादक नापीक कागज अलग अछि; विद्यार्थी-पञ्जी सम्बन्धी प्रश्न अलग। दुनू गड्डमड्ड नहि करब।” रेवतीक चेहरापर हलुक हँसी आयल। कुसुम कानूनक

विद्यालय नहि गेल छलीह, मुदा सत्ताइस वर्षक न्याय-संघर्षक पहिल पीढ़ीसँ ओ प्रमाणक पृथक्करण सीखि गेल छलीह। रेवती फाइलक तीन भाग बनौलीह—आदेश, उत्तर, आ वास्तविक प्रभावित विद्यार्थीक विवरण। ओ मनस्वीक निजी कागजकेँ बन्द आवरणमे राखलीह; कार्यालयक अनावश्यक कर्मचारीकेँ देखय नहि देलीह।

रेवती फोनपर भटनागरकेँ कहलीह जे विश्वविद्यालयक प्रशासनिक निर्णयक वैधानिक आधार देखबाक चाही। “अहाँ विद्यार्थीसेवा लेल प्रणाली बदलि सकैत छी,” ओ कहलीह, “मुदा कर्मचारीक मौखिक सूचना मात्रसँ छात्रवृत्ति रोकबाक परिणाम उचित नहि होइत।” भटनागर अपन पक्ष रखलनि। विश्वविद्यालयक अनेक सेवा तेज भेल छल, प्रमाणपत्रक प्रतीक्षा घटल छल, आ किछु विद्यार्थीक पुरान नामक त्रुटि सेहो सुधरल छल। रेवती एहि उपलब्धिकेँ अस्वीकार नहि कएलनि। ओ केवल पुछलनि जे जकरा क्षति पहुँचल, ओकर सुधारक निश्चित बाट लिखल अछि कि नहि। भटनागर समय माँगलनि।

ओहि सप्ताह मनस्वी कक्षा पढ़बाक बाद विश्वविद्यालयक पुरान कुँआ लग गेलीह। ओतय कुसुम ठाढ़ छलीह। भूमि-विवादक कारण कूप धरि पहुँचबाक पुरान बाट एखन नापीक प्रतीक्षामे छल। मनस्वी कहलीह, “हमर नाम पञ्जीमे सही अछि, मुदा ओकर पाछाँ जे पुरान इतिहास अछि, ओहि पर हमर नियन्त्रण नहि।” कुसुम उत्तर देलीह, “हमर खेतक सीमापर एकटा पुरान रेखा अछि, ओहि रेखाकेँ हम सभ अपन आँखिसँ देखितहुँ बदलि नहि सकैत छी। मुदा हम सभ अदालतसँ सत्यापित नापी माँगि सकैत छी।” मनस्वी पुछलीह, “हमरो जीवनक सीमा के नापत?” कुसुम कहलीह, “कानून रेखा खींचि सकैत अछि, मुदा सम्मान रखबाक काज लोककेँ करय पड़त।”

चौबीस अगस्तक अपराह्न रेवती दिल्लीमे एक वरिष्ठ अधिवक्ताक कार्यालय गेलीह। टेबुलपर सर्वोच्च न्यायालयक नव निर्णयक चर्चा चलि रहल छल। नौ न्यायाधीशक पीठ ‘के. एस. पुट्टस्वामी बनाम भारत संघ’ प्रकरणमे निजताकेँ मौलिक अधिकारक रूपमे स्वीकार केलक। विधिक सभामे ककरो उत्साह छल, ककरो ई चिन्ता जे नब सिद्धान्तक व्यवहारिक सीमा केना निर्धारित होयत। रेवती पूरा निर्णय पढ़बाक आग्रह कएलनि। एक युवक कहलक, “आब सभ डेटा-सङ्ग्रह गैरकानूनी?” रेवती उत्तर देलीह, “एना सरल निष्कर्ष मत निकालू।

अधिकारक पहिचान भेल अछि; कोन प्रतिबन्ध उचित अछि, कोन कानून लागू अछि, कोन प्रयोजन वैध अछि—ई सभ प्रश्न शेष अछि।”

शिवनारायणकेँ दिल्लीसँ फोन गेल। रेवती कहलनि, “बाबूजी, आजुक निर्णयमे मनुष्यक निजताकेँ संविधानक भीतर स्पष्ट स्थान भेटल।” शिवनारायण धीमे स्वरमे पुछलनि, “तँ जे पुरान कागजमे गलत नाम अछि, ओकरा सुधारबाक बाटो स्पष्ट भेल?” रेवती कहलीह, “सीधा उत्तर नहि। निर्णय मौलिक सिद्धान्त दैत अछि। हर विवादकेँ ओहि सिद्धान्तक भीतर अपन विधिक बाट खोजय पड़त।” शिवनारायण कहला, “नीलकान्तक बहीखातामे मृत व्यक्तिक नाम सँ हमर पहिल प्रश्न छल—नाम ककर? आब तोहर प्रश्न अछि—नामक कागज देखबाक अधिकार ककर? वर्ष बदलल, मुदा मनुष्यक प्रश्न आगाँ बढ़ल।”

ओहि दिन मरुधरक सभाकक्षमे फिरदौस विद्यार्थीक लेल नव निर्णयक अर्थ बुझा रहल छलीह। ओ कहलीह जे निजता केवल एकान्तमे रहबाक सुविधा नहि, व्यक्तिक निर्णयक सम्मान आ ओकर निजी जानकारीक उचित संरक्षणक प्रश्न सेहो अछि। मुदा ओ स्पष्ट कएलनि जे संस्थाक वैध अभिलेख राखबाक दायित्व समाप्त नहि भेल अछि। एक छात्र पुछलक, “हमर परीक्षा-परिणाम तऽ सभ देखैत अछि।” फिरदौस कहलीह, “जे जानकारी नियमक अनुसार सार्वजनिक होयबाक अछि, ओकर प्रश्न अलग। जे व्यक्तिगत अभिलेख आवश्यक कारणसँ राखल गेल, ओकर अनियन्त्रित प्रसार अलग। कोनो एक शब्द सभ समस्याक उत्तर नहि।”

फिरदौस सभा समाप्त करैत अपन छात्रसभकेँ एक छोट उदाहरण देलीह। “मानू, कोनो व्यक्ति अपन परिवारक चिकित्सकीय अवस्था संस्थाकेँ छात्रवृत्तिक वैध आवेदनमे बतबैत अछि। तकर अर्थ ई नहि जे ओहि विवरणकेँ कक्षा-पञ्जीमे सभक समक्ष रखल जाए। आ जँ सरकारी सहायता लेल उचित जाँच आवश्यक अछि, तँ संस्था प्रक्रिया अपनाबय। अधिकार आ उत्तरदायित्व दुनू एक-दोसराकेँ रोकैत नहि, व्यवस्थित करैत अछि।” मनस्वी अपन कापीमे लिखलीह—“हम अपन इतिहाससँ लजाइत नहि छी; मुदा ओकरा ककरा कहब, से निर्धारणमे हमर स्थान चाही।”

अगिला सप्ताह रेवती जोधपुर पहुँचलि। स्टेशनपर कुसुम उपस्थित छलि। ओ रेवतीक झोरा लयबाक आग्रह नहि कएलक, केवल पूछलक जे अदालतक पहिल सुनबाई तुरन्त होयत कि पहिने विश्वविद्यालयकेँ सुनल जाएत। रेवती कहलीह, “हम सभ पहिने अभिलेख पूरा देखब। जहाँ आन्तरिक सुधार सम्भव अछि, ओ बाट छोड़ेबाक कारण नहि।” कुसुम कहलनि, “विद्यार्थीसभमे किछु लोक चाहैत अछि जे संगणकीय कार्यालय बन्द कऽ देल जाए।” रेवती हँसलीह, “बन्द करब सरल नारा अछि। जकरा समयपर परीक्षा-प्रमाणपत्र भेटैत अछि, ओकर सुविधा किएक छीनी? आवश्यक प्रश्न ई अछि जे गलतीक उत्तरदायित्व के लैत अछि।” जोधपुरक गरम हवा स्टेशनक भीड़सँ बाहर अबिते दुनूकेँ घेरि लेलक।

विश्वविद्यालयक अभिलेखागारमे एकटा विचित्र शान्ति छल। मेजपर दखल-पञ्जी, छात्रवृत्ति भुगतानक पत्र, पुरान अनुशासन आदेश, सुधारक प्रति आ नव प्रणालीक छपल स्क्रीन-विवरण राखल छल। भटनागर, फिरदौस, कुलसचिवक सहायक आ सेवा-दाताक प्रतिनिधि उपस्थित छलाह। रेवती प्रत्येक व्यक्तिसँ एकटा प्रश्न पुछलीह—“ई प्रविष्टि लिखबाक मूल स्रोत कोन?” विवेकक विरुद्ध पुरान टिप्पणीक मूल २०१५ क अनुशासन फाइल छल, मुदा ओहिमे पछाति सुधार-आदेश जोड़ल गेल छल। नव प्रणालीमे टिप्पणी पहुँचि गेल, सुधारक उल्लेख नहि पहुँचल। रेवती लिखलीह—“अपूर्ण स्थानान्तरणक सम्भावना।” ओ ‘जानबूझि उत्पीड़न’ नहि लिखलीह।

मनस्वीक अभिलेखक प्रश्न जटिल छल। पुरान नामक सीमित कानूनी संरक्षण लेल संस्थाकेँ अभिलेख सुरक्षित राखब पड़ि सकैत छल, मुदा सामान्य छात्र-सहायता कार्यालयक कर्मचारीकेँ ओहि पुरान विवरणक आवश्यकता नहि छल। भटनागर एखन ई अन्तर बुझि रहल छलाह। ओ कहला, “अहाँ कहैत छी जे एकर उपयोग सीमित कएल जाए, मुदा मूल कागज मेटल नहि जाए?” रेवती कहलीह, “ई प्रश्नक उत्तर लागू नियम, प्रयोजन आ व्यक्तिक अधिकार देखकर तय होयत। सबटा इतिहास मेटि देब आ सबटा इतिहास सभक आगाँ खोलि देब—दुनू अतिशय अछि।” मनस्वी अपन आँखि उठाकय देखलीह; पहिल बेर हुनका लगल जे हुनकर प्रश्न प्रशासनिक सूचीमे एकटा स्थान पबि रहल अछि।

सेवा-दाताक प्रतिनिधि प्रद्युम्न सूदक माथपर चिन्ताक रेखा छल। ओ कहलक जे अनुबन्धमे सेवा-गुणवत्ताक शर्त अछि, आ छात्रसभक किछु जानकारीक एकत्र रूपसँ परीक्षण बिना प्रणाली चलब कठिन होयत। फिरदौस कहलीह, “सामान्य सांख्यिकीय समीक्षा आ व्यक्तिक पहिचान सहित निजी अभिलेखक व्यापक पहुँचक एक अर्थ नहि। अहाँक तकनीकी व्यवस्था कोन सीमा स्वीकार करैत अछि, स्पष्ट कहू।” सूद कहलक, “किछु अतिरिक्त सुधार सम्भव अछि।” रेवती उत्तर देलीह, “सम्भव कतेक दिनमे, आ जँ नहि भेल तँ ककर दायित्व, ई लिखि देबाक चाही।” सूद पहिल बेर मौखिक आश्वासनक बदला समयबद्ध प्रस्ताव बनाबय राजी भेल।

बैठक पछाति विवेक विश्वविद्यालयक पुरान नीम लग ठाढ़ छल। ओकर सहवासी अमन पुछलक, “आब मुद्दा जीतलहुँ कि नहि?” विवेक कहलक, “हमर छात्रवृत्तिक किस्त एखन नहि भेटल। जीतक नाम देब जल्दी होयत।” अमन पुछलक, “तखन अदालत?” विवेक हँसल, “जे अधिकारी गलती मानि सुधार करत, ओकरा कागजपर लिखब। जँ फेर रोकत तँ अदालत जायब।” ओकर ई सावधानी पुरान विवेकसँ अलग छल। २०१५ मे कटिकय फैलल एक वाक्य ओकर जीवन बदलने छल। आब ओ नहि चाहैत छल जे अपन क्रोधसँ असत्य आरोपक नव धुँआ उठय।

रेवती मनस्वीसँ अलग भेटलीह। ओ पुछलीह जे हुनकर प्राथमिक माँग की अछि—पुरान कागजक विनाश, वर्तमान नामक सुधार, कि विवरणक अनुचित पहुँच रोकब। मनस्वी कहलीह, “हम चाहैत छी जे हमर सही नामक प्रमाणपत्र समयपर भेटय, आ जे व्यक्तिगत इतिहास संस्था नियमक कारण राखैत अछि तकरा अनावश्यक कार्यालय नहि देखय। हम ककरो दोसरक शिक्षा रोकय नहि चाहैत छी।” रेवती कहलीह, “तँ ई माँगकेँ एही रूपमे लिखब। जकर अधिकार प्रभावित भेल, ओकर अपनी आवाज सभसँ महत्त्वपूर्ण। वकीलक भाषा तकरा ढाँपय नहि, स्पष्ट करय।” मनस्वी अपन कागजपर सहमतिक हस्ताक्षर कएलनि, मुदा ओहि दिन पूरा निजी विवरण साझा नहि कएलनि।

कुसुमक भूमि-प्रकरणमे उच्च न्यायालयसँ आयल सीमित नापी सम्बन्धी निर्देशक अनुपालन चलि रहल छल। रेवती अगिला भोरि ओतय गेलीह। रामदेव मण्डल कूप लग बैसल

छलाह। हुनका एखन भारी काज करब कठिन होइत छल। ओ पुछलनि, “नव संगणकमे हमर पगरिया देखल जाएत?” कुसुम कहलीह, “नक्सा ओतय राखल जा सकैत अछि, मुदा न्यायालयक आदेश एखन जतेक अछि ओतेकहि।” रामदेव धीरे कहला, “पहिने कागजकेँ मालिक कहैत छलाह, आब मशीनकेँ मालिक कहताह?” रेवती उत्तर देलीह, “नहि। जमीनक अधिकार प्रमाण आ कानूनसँ तय होयत। मशीन प्रमाणकेँ रखबाक साधन होयत, मालिक नहि।” वृद्धक मुखपर हलुक सन्तोष आयल।

दरभंगामे शिवनारायण आब कम मुकदमा लैत छलाह। दिनक बहुत हिस्सा पुस्तकक बीच बितबैत छल। ओ रेवतीकेँ फोनपर कहलनि जे २००४ क नीलकान्त निर्णयक छपल प्रति फेर देखलनि। एक पन्नामे विवादित हस्ताक्षरक ठोस प्रमाण नहि भेटल छल, तेँ ओहि आरोपक निष्कर्ष सीमित रहि गेल। “निजताक निर्णय पढ़ैत तोरा कोन पुरान पाठ याद अएल?” शिवनारायण पुछलनि। रेवती कहलीह, “जखन संस्था कोनो कागज बनबैत अछि तखन ओकर जिम्मेदारी केवल लिखब नहि, सही प्रसंगमे उपयोग करब सेहो अछि।” शिवनारायण कहला, “अदालतक पहिल पाठ प्रश्न पूछब, अन्तिम पाठ सीमा बुझब। तूँ दुनू सीखि रहल छह।”

सितम्बरक पहिल सप्ताहमे विश्वविद्यालय प्रशासन लिखित उत्तर देलक। विवेकक छात्रवृत्ति-रोध सम्बन्धी प्रतिकूल चिन्हक निरीक्षणक व्यवस्था भेल; मनस्वीक पुरान परिचय-प्रवेशक पहुँच सीमित करबाक प्रस्ताव स्वीकृत भेल; सामान्य विद्यार्थीक सेवा सुधारेबाक हेतु नव निर्देश जारी भेल। मुदा विवेकक रोकेल किस्तक तिथि निश्चित नहि कएल गेल। आ बाहरी सेवा-दाताक पुरान प्रविष्टिक प्रतिलिपिक विषयमे अस्पष्ट उत्तर रहि गेल। फिरदौस कहलीह, “जतेक सुधार भेल, ओकरा स्वीकार करू; जतेक नहि भेल, ओ स्पष्ट लिखू।” एहि रीति भविष्यक विवादक सीमा घटि गेल, मुदा शेष प्रश्न अधिक धारदार भऽ गेल।

विवेकक घरसँ मायक फोन अएल। माय पुछलीह, “फेर अदालत घुमब?” विवेक उत्तर देलक, “एखन विश्वविद्यालयकेँ समय देल गेल अछि। मुदा छात्रवृत्ति बिना मासक किराया देब कठिन अछि।” माय कहलीह, “बाबूजी पत्थरक कामसँ जे बचत कएलनि, ओ पठाय देताह।” विवेकक स्वर बदलि गेल। “नहि माय, हम पहिने बकाया लेल लिखित आदेशक प्रतीक्षा करब। घरक ऋण फेर बढ़ेबाक मन नहि।” माय धीमे कहलीह, “अधिकारक लड़ाइ कर, मुदा भोजन

छोड़ि कागज नहि लिख।” विवेक फोन राखि भोजनालयक दिस गेल। पेटक आवश्यकता संवैधानिक सिद्धान्तक विरोधी नहि छल, ओकर प्रत्यक्ष कारण छल।

एहि बीच दिल्लीक एक अन्य शैक्षणिक संस्थामे नाम-सुधार सम्बन्धी घटना समाचार बनल। नूर जतय एहि प्रसंगपर लेख लिखैत छलीह। ओ मनस्वीक नाम समाचारमे जोड़य नहि चाहलीह, कारण हुनकर निजी इतिहास सार्वजनिक करबाक अनुमति नहि छल। नूर विवेकक सार्वजनिक अनुशासन-विवादक उल्लेख कएलनि, मुदा जकरा सम्बन्धमे नव व्यवस्था चलैत छल तकर व्यक्तिगत विवरण न्यूनतम रखलनि। सम्पादक पुछलनि, “एहि विषयक प्रभावशाली चेहरा नहि देखाओल तँ पाठक किएक पढ़त?” नूर उत्तर देलीह, “पाठक पढ़त छथि जखन प्रश्न सही होइत अछि। मनुष्यक अनिच्छित निजी कथा बिक्रीक वस्तु नहि।” ओहि राति हुनकर लेखक शीर्षक छल—‘नव पञ्जी, पुरान नाम’।

उच्च न्यायालयमे याचिका प्रस्तुत करबाक निर्णय शीघ्रता सँ नहि भेल। रेवती पहिने विश्वविद्यालयक लागू अधिनियम, छात्रवृत्ति-सम्बन्धी सरकारी दायित्व, आ संस्थाक सार्वजनिक शिक्षण-कार्यक विधिक स्वरूपक परीक्षण कएलनि। मनस्वीक निजी सूचनाक सीमा सम्बन्धी प्रश्न आ विवेकक छात्रवृत्तिक भुगतान एकहि संस्थासँ जुड़ल छल, मुदा समान विधिक उपचार सभ प्रसंगपर स्वतः लागू होयत, से नहि। ओ दू अलग माँगक संग एक संयुक्त निवेदनक उपयुक्तता पर विचार कएलनि, आ अन्ततः सीमित रूपमे सरकारी सहायता-सम्बन्धी प्रशासनिक निष्क्रियता तथा मूलभूत प्रक्रियागत त्रुटिपर याचिका तयार कएलनि। सेवा-दाताक विरुद्ध सम्भावित अलग वैधानिक वा दीवानी उपचार भविष्य लेल खुलल राखल गेल।

राजस्थान उच्च न्यायालयक जोधपुर पीठमे पहिल दिन प्रतिवादी पक्षक अधिवक्ता कहलनि जे विश्वविद्यालय अपन नियमक अनुसार सेवा चलबैत अछि, आ हरेक तकनीकी असुविधा लेल संवैधानिक याचिका स्वीकार्य नहि होयबाक चाही। रेवती उत्तर देलीह, “हम सभ कोनो सामान्य उपभोक्ता-शिकायतकेँ संविधानक बहाना बनाबय नहि आयल छी। सरकारी छात्रवृत्ति-योजनासँ सम्बन्धित अधिकृत निर्णय, कारण बतौल बिना रोकेल रकम, आ सार्वजनिक शिक्षण-दायित्व निर्वाह करनिहार संस्थाक न्यायसंगत प्रक्रिया प्रश्नमे अछि।

न्यायालय पहिने अधिकारक्षेत्र आ स्वीकार्यताक परीक्षण करय, से हमरो आग्रह अछि।” न्यायाधीश प्रतिवादीक लिखित उत्तर माँगलनि आ सीमित सुनबाईक तिथि निर्धारित कएलनि।

अदालतक बाहर विवेक पुछलक, “आज हमर पक्षमे कोन निर्णय भेल?” रेवती कहलीह, “एखन न्यायालय केवल उत्तर माँगने अछि। उत्तर मँगब आ अधिकार सिद्ध मानि लेब अलग बात।” विवेककेँ ई उत्तर आरम्भमे निराशाजनक लागल। मुदा ओकरा याद अएल जे २०१५ क विवादमे सामाजिक-माध्यमक लोक पहिल दिनहि ओकर दोष निश्चित करि लेने छल। ओ कहलक, “तखन हम लोक न्यायालयकेँ अपना उत्तर देबाक समय देब।” मनस्वी हँसलीह, “समय देब, मुदा समय अनन्त नहि।” रेवती दुनूक बात सुनि प्रसन्न भेलीह। न्यायिक धैर्य आ देरीक विरोध एक संग सम्भव छल।

प्रतिवादी विश्वविद्यालय अपन शपथपत्रमे स्वीकार केलक जे २०१५ क पुरान अनुशासन प्रविष्टिक सन्दर्भ नव प्रणालीमे अपूर्ण रहि गेल छल। मुदा ओ दावा केलक जे जानबूझि ककरो रोकबाक प्रयास नहि भेल; छात्रवृत्ति-भुगतानक विलम्ब अलग आर्थिक समायोजनक कारण छल। विवेकक पक्ष पूछलक—“जँ ई दू अलग कारण अछि, तखन रोकक सूचना मे पुरान टिप्पणी किएक देखाओल गेल?” विश्वविद्यालयक उत्तरमे कहाल गेल जे एक कर्मचारी गलत छपल विवरण उपयोग कएने छल। न्यायाधीश मूल अभिलेख, भुगतान-स्थितिक प्रमाण आ सुधारक लिखित प्रक्रिया प्रस्तुत करबाक निर्देश देलनि। एहि निर्देशमे कोनो कर्मचारीकेँ दोषी घोषित नहि कएल गेल।

मनस्वीक विषयमे विश्वविद्यालय गोपनीय अभिलेखक सामान्य पहुँच घटेबाक प्रारम्भिक व्यवस्था प्रस्तुत केलक। अदालत पुछलक जे प्रभावित व्यक्तिक आवेदन प्राप्त भेलापर सुधारक निर्णयक कतेक स्पष्ट अवधि अछि। विश्वविद्यालयक अधिवक्ता कहला जे नब निर्देशमे समयसीमा जोड़ल जायत। रेवती आ मनस्वी दुनूकेँ न्यायालयक प्रश्न महत्त्वपूर्ण लागल। इजाजतक एक पत्रसँ मात्र सुरक्षा पूरा नहि होइत; कार्यालयक कर्मचारी जखन दस्तावेज खोलत, तखन हुनका व्यवहारिक सीमा सेहो बुझल होयबाक चाही। न्यायालय सबटा तकनीकी व्यवस्था स्वयं डिजाइन नहि करत, मुदा वैधानिक दायित्वक पालनक प्रमाण देखबाक आग्रह कऽ सकैत अछि।

अगिला सुनबाईमे प्रतिवादीक अधिवक्ता किछु मुद्रित पन्ना प्रस्तुत कएलनि। रेवती एक पन्नापर पुरान तिथि देखलीह, दोसरपर नब सुधारक। ओ कहलीह, “हम एहि फाइलमे एक महत्वपूर्ण अन्तर देखबैत छी। गलती चिह्नित कएल गेल अछि, मुदा छात्रवृत्तिक रोकेल किस्तक भुगतानक स्वतंत्र स्थिति एखन स्पष्ट नहि।” न्यायाधीश पुछलनि जे सरकारक छात्रवृत्ति विभागसँ सम्बन्धित उत्तर प्राप्त भेल कि नहि। विश्वविद्यालयक अधिवक्ता समय माँगलनि। न्यायालय छोट अवधि दैत कहलक जे अनिश्चित उत्तरक कारण विद्यार्थीक शैक्षणिक हानि बढ़ि रहल अछि; उचित प्रशासनिक निर्णय शीघ्र देल जाउ।

सुनबाईक बाद भटनागर फिरदौसकेँ फोन कएलनि। “एकटा अदालतक बातक कारण हमरा अपन सभ काज रोकि देबाक स्थिति अछि,” ओ थाकल स्वरमे कहला। फिरदौस उत्तर देलीह, “सभ काज रोकू नहि। जतय व्यवस्था नीक चलैत अछि, ओ चलू। केवल दोषपूर्ण प्रक्रियाकेँ सुधारू।” भटनागर स्वीकार कएलनि जे किछु कर्मचारी नब यन्त्र सीखबाक समय दबावमे गलत चिन्ह चुनि लेने छलाह। फिरदौस कहलीह, “प्रशिक्षणक अभाव आ व्यक्तिक गलतीक पार्थक्य सेहो जाँचू। दोष लगबेबामे उतावलापन संस्थाकेँ सुधारसँ दूर लऽ जाएत।” भटनागर अपन कार्यालयमे कर्मचारी-प्रशिक्षणक छोट गोष्ठी आयोजित करबाक निश्चय कएलनि।

ओहि गोष्ठीमे एक कनिष्ठ लिपिक लाजक संग कहलक जे पुरान पञ्जीमे जतेक टिप्पणी छल, ओ सभकेँ नब सेवा-प्रणालीमे सारांशक रूपमे जोड़ि देने छल। ओकरा नहि बुझायल छल जे २०१५ क सुधार-आदेशक प्रभाव पुरान आरोपक स्थिति बदलि देने अछि। वरिष्ठ कर्मचारी अपन अधिकारक सीमा लिखित रूपमे स्पष्ट नहि कएने छलाह। भटनागर ओकर कथन दर्ज कएलनि। ओ कहला, “व्यक्तिक गलतीक उत्तरदायित्व होयत, मुदा जे प्रक्रिया अस्पष्ट छल तकर उत्तरदायित्व संस्थाक सेहो अछि।” लिपिकक आँखि नम भेल। ओ कोनो दोषमुक्ति नहि पओलक, मुदा ओकर गलतीक वास्तविक सन्दर्भ सुनल गेल।

विवेक एहि खबरसँ आनन्दित भेल, मुदा ओकरा लग ई बात बेसी महत्त्वपूर्ण छल जे भविष्यक विद्यार्थीक छात्रवृत्ति पुरान असत्य टिप्पणीक कारण नहि रुकय। ओ अपन मित्र अमनकेँ कहलक, “हमर मामला समाप्त भेलाक बादो ई नियम रहबाक चाही।” अमन उत्तर

देलक, “पहिने तोहर बकाया भेटय, तखन संस्थाक सुधारक उत्सव मनाएब।” दुनू हँसल। अमनक पिता खेतिमे नुकसान भोगने छलाह; ओ अपन मित्रक पैघ प्रश्नक महत्त्व बुझैतहुँ दैनिक रोटीक कठिनाइ नहि भुलबैत छल। एहि भिन्नतासँ हुनकर मित्रता बलवान भेल।

अक्टूबरक आरम्भमे लुधियानाक कर-कार्यालयक निकट नसरीन बेगम अपन लेखापाल संग बैसलीह। नव करक विषयमे गलत बिल बनल एक लेनदेनक सुधार प्रक्रिया अपनाओल जा रहल छल। हिना कागज मिलबैत कहलीह, “जतय हमरा गलती भेल, तकरा स्वीकार करब। जे ग्राहक बिना प्रमाणक धन काटि लेने अछि, तकर हिसाब अलग माँगब।” नसरीन अपन बेटीकेँ देखैत रहलीह। ओ कहलीह, “पहिने हमरा लागैत छल जे बड़ नियम केवल बड़ लोक लेल बनैत अछि। आब बुझैत छी जे सही कागज बनब छोट लोकक रक्षा सेहो करैत अछि।” घर पहुँचलाक बाद ओ मजदूरक भुगतानक तारीख पहिल पन्नापर लिखि देलीह।

सुनीताक कारखानामे रामलखनक शेष मजदूरीक प्रश्न धीरे-धीरे स्पष्ट भऽ रहल छल। पुरान उपस्थितिक पञ्जी आ नव बैंक विवरण मिलाकय किछु दिनक भुगतान सिद्ध भेल, अन्यपर कम्पनीक स्पष्टीकरण शेष छल। न्यायिक प्राधिकारी आनुपातिक राहतक विचार करैत छल। सुनीता एहि बीच सरबजीतक शाखासँ एक सामान्य सूचना प्राप्त केलक—हरदेव चौहान नामक मिलानसँ कोनो सुनिश्चित आपराधिक सम्बन्ध प्रमाणित नहि अछि। सुनीता अपन कापीमे लिखलक, “नाम समान अछि, संबंध अज्ञात।” ओ एहि एक वाक्यपर विशेष बल देलक। समाजमे अफवाह एक नामसँ अनेक लोकक जीवन बदलि दैत अछि। ओहि अन्यायकेँ फेर नहि दोहराएब ओकर अपन निर्णय छल।

नरेन्द्र पालक काममे डिजिटल खाता-सेवाक दबाव बढ़ि रहल छल। एक वरिष्ठ अधिकारी कहलक जे कागजक जमघट घटबाक चाही। नरेन्द्र सहमत भेल, मुदा ग्राहकक स्वीकृतिक स्पष्टता चाहैत छल। ओ पुछलक, “यन्त्रक पर्दापर पाँचटा सहमति एक संग चिन्हित देखायल तँ ग्राहककेँ सभ शर्त पढ़बाक अवसर भेटैत अछि कि नहि?” वरिष्ठ अधिकारी कहला जे प्रणालीक सुधारक विषयमे अधिकृत शाखाकेँ लिखित सूचना देल जाए। नरेन्द्र नोट कएलक। गत वर्ष ओकरा बिचौलियाक प्रस्ताव आकर्षक लागने छल; एखन ओ समझि रहल छल जे तीव्र सेवाक संग स्पष्ट अनुमति आ सही अभिलेखक महत्त्व कम नहि होइत अछि।

दिसम्बर नजदीक आबिते मरुधरक पुस्तकालयमे एक नव सूचना सटल—“अभिलेख-सुधार आ विद्यार्थी-सहायता हेतु पृथक कार्यालय।” विवेक सूचना पढ़िकय ठमकल। ओकर छात्रवृत्तिक रोकेल किस्तक किछु भाग प्राप्त भेल छल, शेष भुगतानक कारण लिखित रूपमे स्पष्ट कएल गेल छल। विश्वविद्यालय मूल गलती स्वीकारने छल, मुदा भुगतान सम्बन्धी रहल प्रशासनिक प्रश्नक अंतिम निर्णय शेष छल। विवेक ई भेद अपन लिखित विवरणमे सुरक्षित राखलक। ओ एहि कथाकेँ जीत वा हारक एक शब्दमे बदलय नहि चाहैत छल।

मनस्वीक लेल विशेष रूपसँ अधिकृत अधिकारीक माध्यमसँ अपन पुरान अभिलेख देखबाक व्यवस्था भेल। सामान्य कार्यालयक पहुँच घटाओल गेल, मुदा आवश्यक मूल अभिलेख संस्थामे सुरक्षित रहल। मनस्वीकेँ एक लिखित विवरण देल गेल जे सुधारक आवेदनपर के निर्णय देत आ असहमतिपर उपलब्ध आन्तरिक उपचार की अछि। ओ एहि व्यवस्थाकेँ सम्पूर्ण समाधान नहि मानलीह, मुदा हुनकर प्रत्यक्ष क्षति घटल। ओ कुसुमसँ कहलीह, “आज पहिल बेर हमरा बुझायल जे अधिकारक रक्षा केवल घोषणासँ नहि, काजक छोट सीमा तय करबाक कारण होइत अछि।” कुसुम उत्तर देलीह, “जे रेखा ठीक ठामपर खिंचल, से पगरिया बचबैत अछि।”

उच्च न्यायालयक अन्तिम अन्तरिम सुनबाई दिसम्बरक पहिल सप्ताहमे भेल। विश्वविद्यालय अपन सुधारक विवरण आ छात्रवृत्ति-सम्बन्धी नवीन स्थिति प्रस्तुत केलक। रेवती कहलीह जे सुधार स्वीकार करब आवश्यक अछि, मुदा जकर भुगतान शेष अछि ओकरा बिना लिखित निर्णयक अनिश्चित काल नहि रोकल जाए। प्रतिवादी पक्ष सहमति देलक जे सक्षम अधिकारी निश्चित समयमे कारण सहित आदेश देत। न्यायालय एहि आश्वासनकेँ अभिलेखमे दर्ज कऽ निर्देश देलक जे वास्तविक प्रभावित विद्यार्थीक आवेदनपर विधिसम्मत निर्णय हो। मनस्वीक निजी विवरणक अनावश्यक सार्वजनिक उल्लेख नहि भेल; न्यायालयक विचार योग्य सीमित तथ्य मात्र सामने आयल। एहि सुनबाईसँ समस्त सूचना-सुरक्षाक संविधानिक समाधान नहि निकलल, मुदा दू व्यक्तिक प्रत्यक्ष प्रशासनिक संकट लेल बाट खुलल।

न्यायालयसँ बाहर एक पत्रकार रेवतीकेँ घेरि पुछलक, “की आज उच्च न्यायालय विश्वविद्यालयक सभ डिजिटल व्यवस्था गैरकानूनी घोषित केलक?” रेवती स्पष्ट उत्तर देलीह, “नहि। न्यायालय निर्दिष्ट आवेदकसभक शिकायत, उपलब्ध अभिलेख आ लागू प्रशासनिक दायित्वक विषयमे सीमित निर्देश देने अछि।” दोसर पत्रकार पुछलक, “की सेवा-दाताक अपराध सिद्ध भेल?” रेवती कहलीह, “कोनो आपराधिक दोष-सिद्धिक प्रश्न एहि कार्यवाहीमे विचारल नहि गेल।” नूर जतय ओहि उत्तरक सही शब्द अपन कापीमे लिखलीह। हुनका नीक लगल जे सनसनीक लोभक बीच एक अधिवक्ता आदेशक वास्तविक सीमा कहबाक साहस रखैत छथि।

मनस्वी अपन छात्रावास पहुँचलाक बाद आरिसमे स्वयंकेँ देखलीह। वर्षसभसँ कागजक भीतर नामक रूप बदलैत रहल छल, मुदा ओ अपनहि निरन्तर अनुभवकेँ ओहि परिवर्तनसँ अधिक सुदृढ़ बुझैत छलीह। हुनकर मित्र नसीमा प्रश्न कएलनि जे आब ओ सुरक्षित अनुभव करैत छथि कि नहि। मनस्वी उत्तर देलीह, “सुरक्षा एकटा पत्रसँ सदा लेल नहि भेटैत। मुदा जे कार्यालय हमरा सुनलनि, जे न्यायालय अनावश्यक विस्तार रोकबाक प्रश्न उठौलक, ओहिसँ हम अपन बात कहबाक साहस पाबि रहल छी।” नसीमा हुनकर कात बैसि गेलीह। दूनू किछु देर बिना बाजने रहलीह; ओ मौन अपमानक नहि, भरोसाक छल।

विवेक स्नातकक पछाति अपन उच्च अध्ययन लेल मरुधरमे रहि गेल छल, आ पुस्तकालयक पुरान कोठरी आब ओकर शोधक महत्त्वपूर्ण स्थान छल। ओ ओतय बैठि एक निबन्ध लिखलक—अभिलेख मे व्यक्ति। पहिल पन्नापर ओ लिखलक जे शैक्षणिक संस्थाकेँ विद्यार्थीसेवा लेल विवरण आवश्यक अछि, मुदा विवरणक भीतर भावनाक सभ रङ्ग नहि समा सकैत अछि। ओकर निबन्धमे स्वयंकेँ महान पीड़ित बनाओबाक प्रयत्न नहि छल। ओ अपन गलती सेहो लिखलक—२०१५ मे कठोर उपमाक उपयोग, प्रशासनक त्रुटिक विरुद्ध क्रोध, आ सामाजिक-माध्यमक अपूर्ण विश्वास। ओ देखलक जे आत्मसमीक्षा करितहुँ अधिकारक माँग कम नहि होइत।

फिरदौस अपन अध्यापनक अन्तिम कक्षामे छात्रसभसँ पुछलीह, “कोनो आँकड़ा साँच अछि, ई केना जानब?” एक विद्यार्थी कहलक, “जँ सरकारी पञ्जीमे अछि।” दोसर कहलक,

“जँ संगणकमे समय लिखल अछि।” फिरदौस माथ हिलौलीह। “दुनू महत्त्वपूर्ण संकेत छथि, मुदा स्रोत, सन्दर्भ, सुधारक इतिहास आ विरोधी प्रमाण देखबाक चाही।” ओ पुरान पन्ना खोलि २०१५ क कटि गेल विवेकक वाक्यक सामान्य उदाहरण देलीह, नाम बिना। फेर छात्रवृत्तिक सुधारल अभिलेखक भिन्न रूप देखौलीह। “गलतीक गति बढ़ब सुविधा नहि,” ओ कहलीह, “सत्यक सुधारक गति बढ़ब सुविधा अछि।” कक्षामे कतेको छात्र ई वाक्य अपन कापीमे लिखलक।

भटनागर कार्यालय बन्द करबाक समय प्रद्युम्न सूदसँ भेटला। सेवा-दाताक कम्पनी नव अनुबन्धक शर्त संशोधित कएने छल। भटनागर अतिरिक्त जानकारीक उपयोगक विषयमे स्पष्ट सीमा, आवश्यकता अनुसार अधिकृत पहुँच, सुधारक प्रक्रिया आ अभिलेखक उत्तरदायित्व लिखित रूपमे रखबाक आग्रह कएलनि। सूद पुछलक, “एतेक शर्तसँ काम धीमा होयत।” भटनागर उत्तर देलनि, “जे काम गलत आरोपक कारण दू वर्ष अदालतमे घूमि सकैत अछि, ओकरा शुरू मे स्पष्ट रखब कतहु कम खर्च होयत।” सूदक दृष्टिमे ई केवल व्यवसायिक निर्णय छल; भटनागरक दृष्टिमे आब ई शिक्षण संस्थाक गरिमाक प्रश्न भऽ गेल छल।

एक साँझ कुसुम अपन पिताक कूप लग गेलीह। पानी कम छल, मुदा कूप बन्द नहि भेल छल। न्यायालयक निर्देशानुसार सीमित नापी प्रक्रिया चलि रहल छल। रामदेव मण्डल कहला, “हमर पगरिया एखन पूरा खुलल नहि, मुदा हमर बात एखन कागजमे सही रूपसँ लिखल गेल अछि।” कुसुम कहलीह, “हमर विश्वविद्यालयो अपन विद्यार्थीक नामक कागज सुधारि रहल अछि।” वृद्ध पुछलनि, “दूनू प्रकरण मिलि गेल?” कुसुम हँसलीह, “नहि बाबूजी, मुद्दा अलग अछि। मुदा जे सही ठाम चिन्हित नहि होइत, ओकरा लोक मनमाना रूप देबय लगैत अछि।” रामदेव आकाश दिस देखलनि। शहरक प्रकाश दूर छल, कूपक पानीमे तारा साफ चमकि रहल छल।

लुधियानामे वर्षक अन्तिम मजदूरीक दिन सुनीता अपन सहकर्मीसभसँ कहलक जे जे भुगतान भेटल, तकर प्राप्ति अलग राखू; जे नहि भेटल, तकर लिखित दावा अलग। रामलखनक शेष विवादक सुनबाई एखन तय छल। धर्मपालक कारखाना नव कर-व्यवस्थाक जटिलता बुझैत धीरे-धीरे नियमित होइत छल। नसरीनक दोकानमे हिना आब अधिक विश्वाससँ

हिसाब लिखैत छलीह। सुनीता अपन कापीमे एक नब प्रश्न जोड़लक—“कारखानाक मजदूरक व्यक्तिगत बैंक विवरण के देखैत अछि?” ओकरा नहि बुझायल जे ई प्रश्न आने वर्षसभमे ओकरा फेर अदालतक दुआरि धरि लऽ जाएत। मुदा एखन ओ केवल श्रमिकक स्वीकृति आ गोपनीयताक सम्मान चाहैत छलि।

चण्डीगढ़मे सरबजीत शाखाक वार्षिक लेखा-परीक्षणक पहिले कार्यालयक भीतर एक लिखित स्मरण-पत्र पठौलनि। ओकर विषय छल—ग्राहकक जानकारीक वैध प्रयोजन, गलत नामक सुधार आ असामान्य लेनदेनक निष्पक्ष परीक्षण। ओ २४ अगस्तक निजता सम्बन्धी निर्णयक सामान्य सिद्धान्तक उल्लेख कएलनि, मुदा बैंकपर लागू नियामक दायित्वक विकल्पक रूपमे नहि। नरेन्द्र ओकर प्रति पढ़लक। ओकरा याद अएल जे वर्ष पहिने एक अज्ञात बिचौलिया अधिक धनक प्रस्ताव देने छल। ओ सोचलक—अपन उपार्जनक अभाव कोनो दिन फेर ओकरा गलत निर्णयक दिस खींचि सकैत अछि। ओहि भयसँ बचबाक लेल नियम मात्र नहि, अपन मनक दृढ़ता आवश्यक अछि।

दिसम्बरक अन्तिम भोर दिल्लीमे रेवती पिता लग पठेबाक पत्र लिखैत छलीह। ओ पत्रमे अदालतक आदेशक लम्बा विवरण नहि देलीह। केवल लिखलीह—“आब हम बुझि रहल छी जे लोक अपन नामक संग केवल परिचय नहि, स्मृति आ सम्मान सेहो राखैत छथि। संस्था जे कागज लिखैत अछि, ओकरा सुधारबाक दुआरि बन्द भेल तँ ओ कागज दण्ड बनि जाइत अछि।” शिवनारायण उत्तरमे एक पाँति पठौलनि—“सत्य प्रमाणसँ, मर्यादा विवेकसँ; दुनू बिना न्याय आधा रहैत अछि।” रेवती ओहि पाँतिकेँ अपन विधिक कापीक आरम्भमे राखि देलीह।

एहि दिनसभमे नूर जतय अपन वर्षक अन्तिम लेख तैयार करैत छलीह। ओ एकटा बड़ शीर्षक लिखलनि—‘भारतक नव पञ्जी’। तकर नीचाँ तीन अलग परिवारक कथा छल: नसरीनक बदलैत कर-हिसाब, परमजीतक बैंकमे अपन सूचना चुनबाक इच्छा, आ नाम-सुधारक अधिकार माँगनिहार एक विद्यार्थी। ओ मनस्वीक निजी इतिहास नहि लिखलीह। लेख समाप्त करैत हुनका लगल जे देशक परिवर्तन केवल संसदक अधिनियम आ सर्वोच्च

न्यायालयक निर्णयमे नहि, सामान्य लोक ओहि निर्णयकेँ अपन दैनिक काममे कोना बुझैत छथि ताहिमे सेहो रहैत अछि। सम्पादक एहि बेर शीर्षक नहि बदललनि।

जोधपुरक मरुधर विश्वविद्यालयमे वर्षक अन्तिम साँझ पुस्तकालयक पुरान कोठरी खोलल गेल। भीतर धूल लागल कतेको पुस्तक पुनः सजाओल गेल छल। विवेक एक किताब अपन मेजपर खोललक; मनस्वी छात्र-सहायता कार्यालयमे नव नियमक प्रति देखलीह; फिरदौस संगणकीय कक्षक दरवज्जा बन्द करैत छलीह। ओहि समय कार्यालयक एक सहायक बाहरी सेवा-दाताक पुरान अनुबन्धक परिशिष्टक प्रति नव फाइलमे रखलक। ओहिमे एक विस्तृत, अस्पष्ट वाक्य एखनहुँ छल—‘भविष्यक सेवा-विस्तार लेल संयुक्त विश्लेषण’। फिरदौस ई वाक्य देखिकय कारी स्याहीसँ प्रश्नचिह्न लगौलनि। ओ ककरो अपराध नहि कहलनि। मुदा तय कएलनि जे एहि प्रश्नक लिखित उत्तर लेल बिना फाइल बन्द नहि होयत।

एहि छोट प्रश्नचिह्नक भीतर आगामी दशकक एक पैघ प्रश्न सुतल छल। छात्रक नाम, मजदूरक बैंक, व्यापारीक कर-अभिलेख, रोगीक निजी सूचना—सभ धीरे-धीरे नव यन्त्रसभमे स्थान पाबि रहल छल। सुविधा बढ़ैत छल, दुरुपयोगक आशंका सेहो। सन् २००० मे शिवनारायण जप्त बहीखातामे मृत रामकिशुनक नाम देखिकय ठमकल छलाह; सन् २०१७ मे रेवती जीवित मनस्वीक पुरान विवरणक अनावश्यक पहुँच देखिकय प्रश्न उठौने छलीह। तखन जँ कखनो हजारो व्यक्तिक नामपर बैंकक असामान्य धन-प्रवाह देखाओल जाएत, तखन सबसँ पहिल प्रश्न की होयत—कागजपर नाम, कि वास्तविक मनुष्यक ज्ञान आ भूमिका? एखन एहि प्रश्नक दिन नहि आयल छल। वर्ष २०१७ अपन दुआरि बन्द करि रहल छल, आ मरुधरक पुस्तकालयमे एकटा दीप एखनहुँ जरि रहल छल।

अध्याय २२ — गरिमाक अनेक अर्थ

सन् २०१८ : जोधपुर, दरभंगा, दिल्ली, लुधियाना आ चण्डीगढ़

माघक एकटा भोर मरुधर विश्वविद्यालयक पुस्तकालयमे किताबक पुरान गन्ध उठि रहल छल। शीतक कारण दुआरि देर सँ खुलल, मुदा पाण्डुलिपि-कक्षमे सौरभ झा पहिने पहुँचि गेल छल। ओकर काज छल पुरान पुस्तकक नाम, लेखक, प्रकाशित वर्ष आ उपलब्ध प्रतिक संख्या नव अभिलेख-पञ्जीमे जोड़ब। ओ ई काजकेँ छोट नहि मानैत छल। एकटा अक्षर उलटि जाए तँ पाठक पुस्तक नहि पाबि सकैत अछि; एकटा लेखकक नाम गलत चढ़ि जाए तँ अगिला पीढ़ी ओहि त्रुटिकेँ सत्य मानि लैत अछि। पचास वर्ष पुरान मैथिली पुस्तकक शीर्षक पढ़ैत ओकरा अपन माय दरभंगामे गाबैत रहनिहार गीत स्मरण आबि गेल।

पुस्तकालयक मुख्य लिपिक सकालमे सूचना देलनि जे सौरभक एक वर्षक नियुक्ति समाप्त होमयवाली अछि। नवीकरणक आवेदन देबाक लेल तीन सप्ताहक समय देल गेल छल। कागज सामान्य छल, मुदा लिपिकक मुखपर एक विचित्र संकोच छल। ओ कहला, “आवेदन तँ दिअ, मुदा चयन-समितिमे एहि बेर व्यवहारो देखल जाएत।” सौरभ पुछलक, “काजक व्यवहार कि निजी जीवनक?” लिपिक आँखि हटौने उत्तर देलनि, “हम की जानू! हम तँ सूचना पहुँचा रहल छी।” पुस्तकालयक भीतर एकटा फाइल बन्द भेल, मुदा सौरभक मनमे प्रश्न खुलि गेल।

किछु दिन पहिने छात्रावासक भोजनालयमे ओकर मित्र अक्षय राठौड़क संग ठाढ़ रहल एकटा चित्र सहपाठीसभक साझा सन्देशमे घूमल छल। चित्रमे दू युवक पुस्तकक थैला पकड़ने मुसकि रहल छलाह। ओकर नीचाँ किनको अपमानजनक टिप्पणी लिखल छल। ककरो चित्र उतारबाक अनुमति नहि छल, ककरो चित्र सार्वजनिक करबाक अधिकार नहि देल गेल छल। किछु लोक हँसल, किछु चुप रहल, आ किछु विद्यार्थी सौरभकेँ प्रश्न पुछबाक बहाने ओकर

निजी जीवनक भीतर घुसय चाहलक। अक्षय कहलक, “हम सभ चोर सन किएक फेरैत छी?” सौरभ उत्तर नहि देलक। ओकरा चिन्ता मात्र अपमानक नहि, रोजगारक सेहो छल।

ओहि भोर विवेक मेघवाल पुस्तकालय पहुँचल। सन् २०१५ क एक काटल सामाजिक-माध्यम टिप्पणीक कारण ओकर छात्रवृत्ति रोकल गेल छल; पछिला वर्ष लम्बा प्रयत्नक बाद अभिलेखक सुधार आरम्भ भेल। विवेक पुछलक, “आब की भेल?” सौरभ सूचना देखौलक। विवेक पहिने कागज पढ़लक, फेर ओकरा देखैत कहलक, “एहि कागजमे निजी जीवनक एको शब्द नहि। तकर अर्थ ई नहि जे बात उठबे नहि।” सौरभ कहलक, “हम कोनो आरोप पहिने सँ नहि लिखब। पहिने आवेदन देब, अपन कामक हिसाब राखब।” विवेक एहि निर्णयसँ सहमत भेल। ओ जानैत छल जे अन्यायक आशंका आ अन्यायक प्रमाणक बीच बाट कतेक कठिन होइत अछि।

मनस्वी ओहि समय विद्यार्थी-सहायता कक्षसँ बाहर आबि रहल छलीह। हुनकर शैक्षणिक परिचयक सुधारक प्रश्न पछिला वर्ष उच्च न्यायालय धरि गेल छल। सामान्य कार्यालयमे निजी जानकारीक पहुँच घटाओल गेल छल, मुदा पुरान अभिलेख संस्थामे सुरक्षित राखल छल। सौरभ हुनका देखिकय पुछलक, “जँ विश्वविद्यालय केकरो निजी जिनगीक आधारपर हुनकर काजक मूल्यांकन करय तँ ओ केना जानत जे असली कारण ओही अछि?” मनस्वी कहलीह, “अक्सर पहिने कागज कारण नहि कहैत अछि। तें तारीख, आवेदन, उत्तर, अंक, समिति—सभ बचाकय राखू। आ अपन मान-सम्मान बचयबाक लेल स्वयंकेँ झूठ नहि बनाउ।” सौरभ चुपचाप आवेदनक प्रारूप निकाललक।

दरभंगामे ओही सप्ताह अनुपमा झा अपन नव पुस्तकक हस्तलिखित पन्ना क्रममे राखि रहल छलीह। हुनकर पति कतेको वर्ष पूर्व गुजरि चुकल छलाह। घरक एक कोठरीमे टीनक सन्दूक, उधारपर छपल पुरान पुस्तक आ पठेबाक प्रतीक्षामे पत्रिका रखल छल। नव पाण्डुलिपिक नाम छल—‘देहक नाम, नामक देह’। ओहि पुस्तकमे कोनो न्यायालयक विस्तृत कानून नहि, बल्कि ओहि मनुष्यसभक कथा छल जेकरा अपनहि घर, विद्यालय वा कार्यालयमे अपन परिचयक अर्थ समझेबाक पड़ैत अछि।

अनुपमाक प्रकाशक लिखने छलाह जे किताब छपेबा लेल लेखककेँ खर्चक एक भाग देब पड़त, आ आवरणक अन्तिम निर्णय प्रकाशक करत। अनुपमा उत्तर देलीह जे पुस्तकक मूल पाठ बदलब नहि; पारिश्रमिक आ प्रतिक वितरण स्पष्ट कएल जाए। माय हुनका लेखिका बनबाक लेल कहने नहि छलीह, मुदा बाल्यकालमे सुनौने कथासभ हुनकर भीतर रहि गेल छल। ओ सोचैत छलीह—भाषाक सम्मानक प्रश्न कोनो पुरस्कारक प्रतीक्षा नहि करैत; जे लोक अपन भाषामे दुखक नाम नहि राखि सकैत अछि, ओकर न्यायालयीन बयान सेहो अधूरा भऽ सकैत अछि।

दिल्लीमे रेवती झा अपन कार्यालयमे दूटा अलग पत्र पढ़ि रहल छलीह। एक मरुधरक विद्यार्थी-अभिलेख सम्बन्धी अनुपालनक सूचना छल, दोसर लुधियानाक रामलखनक शेष मजदूरी-विवादक। पहिल पत्रमे संस्थाक नब सेवा-दाताक नियम छल; दोसरमे पुरान उपस्थितिक पञ्जीक छायाप्रति। रेवती अपन कनिष्ठ सहयोगीकेँ कहलीह, “एहि सभमे समान बात ई नहि जे दुनू अन्याय सिद्ध अछि। समान बात ई जे कागजक एकटा वाक्य मनुष्यक जीवनपर पैघ असर करैत अछि। कानूनकेँ कागज आ जीवन दुनू पढ़य पड़ैत अछि।”

फरवरीक दोसर सप्ताह सौरभ अपन नियुक्ति नवीकरणक आवेदन देलक। ओ एक वर्षमे सूचीबद्ध कएल पुस्तकक संख्या, दुर्लभ ग्रन्थक अवस्था, पाठकक प्राप्ति-सूची आ त्रुटि-संशोधनक विवरण जोड़लक। विभागाध्यक्ष शान्तिपूर्वक आवेदन स्वीकार कएलनि। मुदा दुआरि लग एक सदस्य फुसफुसा कऽ कहलक, “योग्यता ठीक अछि, विश्वविद्यालयक प्रतिष्ठाक बातो देखू।” सौरभ जखन ई सुनलक, तखन ओ तुरन्त भिड़ल नहि। ओ आवेदन जमा भेलाक प्राप्ति राखलक। अपन मित्रकेँ केवल कहल—“हम अपन काजक प्रश्नक उत्तर देब; ककरो लुकेल प्रश्नक नहि।”

मार्चमे मरुधरक सभाकक्षमे ‘वैयक्तिक गरिमा आ शैक्षणिक समुदाय’ विषयक छोट विचार-गोष्ठी भेल। फिरदौस कौल कहलीह जे संस्थाक अनुशासनक आवश्यकता अछि, मुदा अनुशासनक नामपर व्यक्तिक निजी जीवनक निरीक्षणक असीम अधिकार नहि होइत। कुलसचिव भटनागर उत्तर देलनि जे विश्वविद्यालयमे नियुक्तिक लेल व्यवहार, उत्तरदायित्व आ सहकर्मीक संग काज करबाक क्षमता देखल जाएत। मनस्वी पुछलीह, “ई सभ गुणक जाँच

कोन अभिलेखसँ होइत अछि? ककरो अफवाहक आधारपर नहि तँ?” भटनागर कहला, “अफवाहक आधारपर निर्णय नहि होयबाक चाही।” एहि उत्तरकेँ सभे सुनलक; सौरभ विशेष रूपसँ।

गोष्ठीक अन्तमे एक वृद्ध अध्यापक कहला जे समाजक मान्यता संस्थाक नियमसँ अलग नहि रखल जा सकैत। विवेक विनम्रतासँ पुछलक, “समाजमे अनेक मान्यता अछि। जँ दूटा एक-दोसरसँ टकराय तँ सरकारी विश्वविद्यालय कोन आधार पर चलत?” वृद्ध अध्यापक तत्काल उत्तर नहि देलनि। फिरदौस जोड़लनि, “आचार-संहिता बनब आवश्यक अछि, मुदा ओ सभ कर्मचारीपर समान रूपसँ लागू हो। जे नियम लिखल नहि, ओकरा केवल एक व्यक्तिक विरुद्ध अचानक लागू कएल जाए, से प्रश्न अवश्य उठत।” एहि वाक्यसँ गोष्ठी समाप्त नहि भेल; उलटे अनेक विद्यार्थी अपन जीवनक अनुभव बतबय लगलाह।

बैसाखक गरमी चढ़ल तखन सौरभकेँ चयन-समितिक लिखित सूचना भेटल। ओकर कामक प्रतिवेदनक अङ्क पर्याप्त छल, समयपर उपस्थितिक अभिलेखो ठीक छल। तैयो नवीकरण रोकि देबाक अनुशंसा कएल गेल छल। कारणक स्तम्भमे लिखल छल—“परिसरक सामूहिक वातावरण आ नियुक्तिक समग्र उपयुक्तता।” सौरभ पहिने हँसल। एहन वाक्य सुनयमे गंभीर छल, मुदा ओकर भीतर कोनो विशिष्ट तथ्य नहि छल। मुस्कान शीघ्र मेटा गेल, कारण अगिला मासँ ओकरा घरमे पैसा पठेबाक उपाय नहि देखाइत छल। माय कमला देवीक आँखिक उपचारक खर्च, छोट बहिनक पढ़ाइ आ अपन किराया—सभ ओहि एक नियुक्तिपर निर्भर छल।

सौरभ विभागाध्यक्ष लग गेल। ओ प्रश्न कएलक जे प्रतिवेदनमे काजक गुणक विरोधमे कोन तथ्य अछि। विभागाध्यक्ष कहला, “ई चयन-समितिक सामूहिक मत अछि। प्रत्येक विचारक अलग उत्तर देब कठिन अछि।” सौरभ पुछलक, “तँ जे अंक लिखल अछि, ओकर अर्थ की रहल? जँ उपयुक्तता घटल अछि तँ कारण बताउ।” विभागाध्यक्ष ओकर आवेदनक प्रति लेलनि, मुदा मौखिक आश्वासनसँ आगाँ नहि बढ़लाह। सौरभ बाहर निकलि देखलक जे गर्म हावामे विश्वविद्यालयक नीमक पात उलटि रहल छल। ताहि दिन ओकरा पहिल बेर डर

लागल जे अपना विषयमे सही कहब सँ बेसी कठिन लोककेँ सुनय लेल तैयार करब होइत अछि।

अक्षय राठौड़ एहि प्रसंगमे अपन उत्तरदायित्वबोधसँ व्याकुल छल। ओकर मनमे एक ओर क्रोध, दोसर ओर सौरभक निजताक चिन्ता छल। ओ कहलक, “चित्र हमरा संग खिंचायल। ई हमर जीवनो अछि। अहाँ अकेले किएक लड़ैत छी?” सौरभ उत्तर देलक, “अहाँक संग रहब अपन इच्छासँ अछि; ककरो हँसीक उत्तर देबाक लेल अपन सम्बन्धक परिचय पत्र बनौने नहि फिरब। हमर नियुक्ति सम्बन्धी निर्णय जँ गलत अछि, तँ नियमक आधारपर ओकर परीक्षण हो।” अक्षय धीमे स्वरमे कहलक, “हम गवाह बनब, मुदा अहाँ जतेक बात सार्वजनिक करय चाहब, ततेक।” दुनू पहिल बेर निर्णय कएलनि जे स्नेहक अर्थ एक-दोसराक बदला बोलब नहि, सुनबाक अधिकार देब अछि।

मनस्वी आवेदनक कागज देखलीह। ओ किछु बोलबासँ पहिने अंकर स्तम्भ गिनलीह। सौरभक सूचीबद्ध पुस्तकक त्रुटि-सुधार सम्बन्धी प्रगति चारि मास पहिल समीक्षा सँ नीक छल। ओ पुछलीह, “समितिक सभ सदस्य उपस्थित छलाह?” सौरभक लग उपस्थिति-पञ्जी नहि छल। मनस्वी कहलीह, “जे अभिलेख अहाँ देखबाक अधिकारपूर्वक माँगि सकैत छी, पहिने ओहि अभिलेख माँगू। आ जकरा निजी राखय चाहैत छी, ओकरा बिना आवश्यकता प्रार्थना-पत्रमे नहि लिखू।” सौरभ हुनका धन्यवाद देलक। ओ जानैत छल जे मनस्वीक अपन अनुभव एहिमे बोलि रहल अछि, कोनो बाहरी दया नहि।

जोधपुरक अधिवक्ता मीना सारस्वत पहिल आवेदन तैयार करैत समय स्पष्ट कएलनि जे निश्चित अवधिक नियुक्ति स्वतः स्थायी नहि होइत अछि। रेवतीकेँ फोनपर जोड़ल गेल। ओ कहलनि, “समय पूरा भेलापर नवीकरणक अधिकार स्वतः नहि मानल जाए। मुदा जे सार्वजनिक शिक्षण संस्था अपन घोषित मानदण्डक आधारपर चयन करैत अछि, तकरा असंगत आ भेदकारी व्यवहारक प्रश्नक उत्तर देब पड़ि सकैत अछि। पहिने संस्थाक स्वरूप, नियुक्तिपत्र, चयन-नियम आ कारण देखू।” सौरभक चेहरापर क्षणिक निराशा आयल। ओकरा सान्त्वना देबाक लेल कोनो आसान वाक्य नहि कहल गेल; एहि ईमानदारीमे ओकरा भरोसा भेटल।

एहि बीच लुधियानामे सुनीता पासवान कारखानाक दोसर प्रकारक अन्याय देखैत छलीह। बरखा पहिले रंगाई विभागमे काज करनिहार चम्पा देवीक वेतनमेसँ ‘अनुपस्थित’ दिनक कटौती भेल छल, जखन कि ओहि दिन ओ कारखानाक ओहिना भागमे राखल माल अलग करैत छलीह जतय नियमित प्रवेश-पञ्जी नहि छल। कम्पनीक प्रतिनिधि कहलक जे उपस्थिति-साक्ष्य बिना भुगतान कठिन। सुनीता कहलीह, “अहाँ सभ ओकर श्रम लैत छलहुँ, मुदा जखन वेतन देबाक समय आयल तँ ओहि स्थानक पञ्जी नहि रखबाक हानि ओकरा देल जा रहल अछि।” काजक स्वरूप आ नियोजनक अभिलेखक प्रश्न सक्षम प्राधिकारीक समक्ष उठल।

चम्पा अपन अँगूठाक निशानक विवाद सँ परिचित छलीह। पुरान सुनबाईमे हुनकर निशान जे कागजपर देखाओल गेल छल, तकर प्रसंग स्पष्ट नहि भेल छल। एहि बेर सुनीता कहलक, “हम सभ बिना देखल कागजपर ककरो अँगूठा नहि लगबेबाक। अहाँ जे बुझैत छी, अपन भाषामे कहू।” चम्पा हँसलीह—“हमर भाषा तँ एतय बहुत कम लोक बुझैत अछि।” सुनीता उत्तर देलक, “तैँ हम अनुवाद करब, मुदा अहाँक बात नब बनाकय नहि।” सुनबाईमे अनुवादक सहायता आ सही अभिलेखक महत्त्व पहिल बेर ओकरा एतेक गहिर बुझायल।

कारखानाक लेखापाल हरजीत कौर पुरान पञ्जी खोललनि। सन् २०१० क वेतन-विवाद सँ संबंधित हरदेव चौहानक नाम फेर आँखिक सामने आयल। पछिला वर्ष बैंकक जानकारी बतौने छल जे समान नामक दू व्यक्ति छथि, मुदा औद्योगिक पञ्जीमे दर्ज एकटा पता एखनहुँ अपूर्ण छल। सुनीता पुछलीह, “ई नाम फेर किएक लिखल?” हरजीत कहलीह, “पुरान देनदारीक समायोजनक कागजमे आएल अछि। एकर अर्थ बिना मूल पर्चीक नहि बताओल जाए।” दुनू सहमत भेलीह जे नामक समानतासँ अनुमान करब उचित नहि। तथापि कागजक अधूरापन अगिला प्रश्न बनल।

चण्डीगढ़मे सरबजीत कौर बैंकक शाखामे नव ग्राहक-पहिचान सम्बन्धी निर्देशन पढ़ैत छलीह। डिजिटल सेवा बढ़ि रहल छल; कागजक प्रतिक स्थानपर स्क्रीनपर छपल जानकारी बेसी उपयोग होइत छल। एक वरिष्ठ प्रबन्धक कहलनि जे ग्राहकक सुविधा लेल जतेक सम्भव हो, अधिक सूचना एकहि बेर लय लेल जाए। सरबजीत प्रतिप्रश्न कएलनि, “सुविधाक नामपर

जे सूचना आवश्यक नहि, तकर संग्रह किएक? आ जँ ग्राहक अपन विवरण बदलय चाहय तँ कोन विधि अछि?” वरिष्ठ कहला जे नियम विभागसँ पूछल जाए। ओ बुझे लगलाह जे सुविधा आ अत्यधिक संग्रहक अन्तर केवल तकनीकी नहि, विश्वासक प्रश्न अछि।

एक दिन शाखामे एक वृद्ध किसान आयलाह। हुनकर नाम सुखदेव सिंह छल। हुनकर कहब छल जे मण्डीक भुगतान लेल सहायताकर्मी एक निजी कम्पनीक प्रणालीमे पहचान दर्ज करबाक अनुरोध कएने छथि, मुदा हुनका नहि बुझाइत जे कोन सूचना किसकेँ भेटत। सरबजीत कहलनि, “बैंकक अपने नियम अछि; बाहरी कम्पनीक अधिकार अलग देखू। अहाँ एक बेर कागज पढ़िकय सहमति दिअ।” वृद्ध हँसलाह, “पढ़ब तँ एहि उम्रमे बेटासँ सीखब।” सरबजीत उत्तर देलनि, “अहाँक निर्णय अहाँक अछि; बेटा सहायता करि सकैत अछि, बदला नहि।” एहि छोट बातचीतक भीतर भविष्यक डिजिटल अर्थव्यवस्थाक पैघ प्रश्न छल।

दरभंगामे अनुपमा झा अपन पुस्तकक प्रूफ देखैत छलीह। मुद्रकक पन्नामे अनेक मैथिली शब्दकेँ हिन्दी-सदृश रूपमे बदलि देल गेल छल। अनुपमा लाल कलमसँ एक-एक शब्द सुधारलीह। प्रकाशक फोनपर कहला, “पाठककेँ सरल बुझाएत।” अनुपमा उत्तर देलीह, “सरलता लेल मातृभाषाक रूप छीनि लेब किएक? वाक्य बुझयमे कठिन अछि तँ वाक्य सुधारू; भाषा बदलि देब से उपाय नहि।” ओ एहि वाक्यक बाद किछु क्षण चुप भेलीह। हुनका लागल जे साहित्यक छोट मुद्रणालयमे सेहो मान आ रूपक वही संघर्ष अछि जे मनुष्यक परिचयक अभिलेखमे होइत अछि।

पुस्तकक एक कथामे एक विधवा अपन गामक पंचायतमे खाता-पञ्जी सुधारेबाक लेल बारम्बार जाएत अछि। अनुपमा ओकर नाम ‘रसधारा’ राखने छलीह। एक पाठक कहने छल जे कहानीमे विधिक लड़ाइक विस्तृत वर्णन नहि अछि, तें न्यायिक प्रसंग अधूरा बुझाइत अछि। अनुपमा उत्तर देलीह, “न्यायालयमे जे बात पाँच मिनट कहल जाइत अछि, ओकर प्रतीक्षामे घरक पाँच वर्ष बीतैत अछि। हमरा ओ पाँच वर्ष लिखबाक अछि।” हुनकर एहि वाक्यकेँ नूर जतय बादमे एक साक्षात्कारमे उपयोग करबाक चाहलीह, मुदा अनुपमाक स्वीकृति लैत ओ पूरा सन्दर्भ पूछलीह।

जूनक घाममे मरुधरक कर्मचारी चयन-समितिक कार्यवृत्तक प्रमाणित प्रति देबाक आवेदनपर उत्तर देलक। किछु भाग सेवा-सम्बन्धी आन्तरिक विचार कहि रोकेल गेल; किछु भाग उपलब्ध भेल। उपस्थित सदस्यक नाम, अंकनक सामान्य श्रेणी आ अंतिम अनुशंसा सामने आयल। काजक गुणसम्बन्धी अंकमे सौरभ नीक छल; व्यवहारक स्तम्भमे केवल एकटा अस्पष्ट टिप्पणी छल। ओ टिप्पणी लिखनिहार सदस्यक हस्ताक्षर स्पष्ट छल, मुदा तकर आधारक कोनो अलग विवरण नहि छल। मीना सारस्वत पत्र लिखलीह जे गैर-गोपनीय प्रासंगिक अभिलेखक निरीक्षणक अवसर देल जाए, जेणे आवेदनक न्यायसंगत परीक्षण हो।

ओही मास विश्वविद्यालय प्रशासन एकटा पत्र देलक: “निश्चित अवधिक अनुबन्ध समाप्त भेलापर नवीकरण अनिवार्य नहि।” पत्रक विधिक आशयक एक भाग सही छल। मुदा सौरभक आवेदनक विशिष्ट गुण-अङ्क आ व्यवहारक टिप्पणीपर एको शब्द नहि छल। सौरभ आ अक्षय दिल्ली गेलाह। रेवती अपन कार्यालयमे हुनका सभकेँ बैठौलनि। सौरभ पहिने कागज पसारलक, निजी चित्र नहि। रेवती धीरे-धीरे सभ पढ़लीह। ओ कहलीह, “हम एहिमे दू प्रश्न देखैत छी। एक—अहाँक नवीकरणक आवेदनक नियम। दोसर—आरोपित भेदभावक वास्तविक आधार। हम दोसरकेँ केवल अनुमानसँ सिद्ध नहि करब।”

रेवतीक कनिष्ठ सहयोगी कहलक जे सामाजिक माध्यमक चित्र एखनहुँ अनेक खातामे उपलब्ध अछि। रेवती उत्तर देलीह, “चित्र सार्वजनिक भऽ गेल अछि, तेँ ओकरा फेर अपन आवेदनमे प्रसारित करब अनिवार्य नहि। जहाँ आवश्यक हो, सीमित रूपमे, सीलबन्द अथवा गोपनीय अभिलेखक उचित मार्ग अपनाएब।” सौरभ किछु सहज भेल। ओकरा चाही छल जे न्यायालय ओकर कामक प्रश्न देखय, नहिं ओकर सम्बन्धक विवरण सभ पाठक लेल प्रदर्शन बनय। अक्षय कहलक, “ककरो निजी जीवनक चर्चा बिना अनुमति बढ़बो अन्याय अछि।” रेवती हुनकर बात गम्भीरतासँ सुनलीह।

जुलाईक पहिल सप्ताहमे याचिका दाखिल भेल। रेवती विस्तृत रूपसँ लिखौलनि जे सार्वजनिक विश्वविद्यालयक नियुक्ति-सम्बन्धी विवेकाधिकारक कानूनी सीमा अछि। सौरभक नियुक्ति निश्चित अवधिक छल, एहि तथ्यकेँ नहि नुकाओल गेल। ओकर सन्तोषजनक कार्यक प्रामाणिक अभिलेख आ नवीकरण रोकबाक अस्पष्ट टिप्पणी एक संग प्रस्तुत कएल गेल।

निजी चित्रक घटना तथ्यक पृष्ठभूमिक रूपमे, केवल ततेक धरि रखल गेल जतेक कारणक सम्भावित भेदभाव बुझाबय लेल आवश्यक छल। आवेदनमे स्थायी पदक स्वचालित अधिकार नहि, निर्णयक निष्पक्ष पुनर्विचार आ प्रासंगिक अभिलेखक संरक्षण माँगल गेल।

राजस्थान उच्च न्यायालयक जोधपुर पीठमे पहिल सुनबाई दिन सभाकक्ष छोट छल। बाहर गरमी आ धूलि, भीतर पंखाक धीम आवाज। विश्वविद्यालयक अधिवक्ता कहलनि, “निश्चित अवधि पूरा भेला पछाति नियुक्ति समाप्त होइत अछि। कर्मचारीकेँ नवीकरणक अधिकार नहि।” रेवती तुरन्त बीचमे नहि टोकलीह। हुनकर अवसर भेटलापर ओ कहलीह, ‘हम तकर विरोध नहि करैत छी। प्रश्न ई अछि जे प्रतिवादी संस्थाक घोषित चयन-पद्धतिमे आवेदकक कामक मूल्यांकन भेल, मुदा अन्तिम अनुशंसामे अस्पष्ट ‘सामाजिक उपयुक्तता’ लिखल गेल। एहन शब्दक यथार्थ आधार देखबाक आवश्यकता अछि।’

एकलपीठक न्यायाधीश पुछलनि, “की अहाँ प्रतिवादीक निर्णयकेँ निजी पूर्वाग्रहक फल कहैत छी?” रेवती उत्तर देलीह, “हम सन्देहक तथ्य प्रस्तुत करैत छी, दोषक अन्तिम निष्कर्ष नहि। समिति-कार्यवृत्तक पूर्ण प्रासंगिक भाग, चयनक नियम आ आवेदकक सेवा-अभिलेखक संग तुलना होइए। तब निर्णयक वैधानिकता पर विचार हो सकत।” विश्वविद्यालयक अधिवक्ता कहला जे कर्मचारीक काजक आचार-संहिता लागू अछि। न्यायाधीश पुछलनि, “तकर निर्दिष्ट उल्लङ्घनक अभिलेख कोन अछि?” उत्तरमे समय माँगल गेल। न्यायालय लिखित प्रति प्रस्तुत करबाक निर्देश दैत अगिला तिथि निश्चित केलक।

सुनबाईक बाद एक समाचारवाहक अदालतक बरामदामे सौरभ लग आयल। ओ पुछलक, “की अहाँ न्यायालयमे अपना प्रेम-सम्बन्धक अधिकार घोषित करय आएल छी?” सौरभ थाकल स्वरमे कहलक, “हम नियुक्तिक निर्णयक कारण पूछय आएल छी। हमरा जे निजी अछि, तकरा सार्वजनिक करबाक अनुमति हम नहि देलहुँ।” समाचारवाहक फेर पुछलक जे विषय ‘राष्ट्रीय चर्चा’ बनि सकैत अछि। सौरभ कहलक, “राष्ट्रीय चर्चा लेल एक कर्मचारीक जीवन लुटि लेब आवश्यक नहि।” रेवती पत्रकारकेँ न्यायालयक सार्वजनिक आदेशक प्रति पढ़बाक सलाह देलीह, आ सौरभक निजी कथाकेँ अनुमानक आधारपर नहि लिखबाक आग्रह कएलनि।

ओहि साँझ सौरभक माय कमला देवीक फोन आयल। ओ दरभंगाक ओहि मोहल्लामे रहैत छलीह जतय अनुपमा झाक घर छल। कमला पुछलीह, “बौआ, विश्वविद्यालयक काम छूटल तँ तू एतय आबि जा। हम सभ मिलिकय किछु उपाय करब।” सौरभ कहलक, “माय, काजक कारणेँ न्यायालय गेल छी। अहाँ हमरे कहब, घरमे सभकेँ हमरा विषयमे किछु नहि पूछू।” कमला चुप भेलीह, फेर धीरे सँ कहलनि, “हम तोहर माए छी। तोरा केहन लगैत अछि, से सुनब हमर काज अछि; सभक प्रश्नक उत्तर देब हमर काज नहि।” सौरभक आँखि भरि आयल। परिवारक भीतरक एकटा छोट स्वीकृतिसँ ओकरा ओहि दिन न्यायालयक अन्तिम आदेशसँ बेसी आश्वासन भेटल।

अगस्तमे लुधियानाक मजदूरीक दावा-पत्रपर सुनबाई भेल। रामलखन कहलक जे कारखानाक पुरान वचन अनुसार किछु दिनक भुगतान शेष अछि। कम्पनी अपन बैंक विवरणमे किछु रकम हस्तान्तरित देखौलक। सुनीता पुछलीह जे भुगतानक मद स्पष्ट अछि कि नहि—पूर्व बकाया, वर्तमान मजदूरी अथवा अन्य समायोजन? नियुक्त प्राधिकारीक समक्ष दुनू पक्षक हिसाब राखल गेल। चम्पा अपन बयान अपन मातृभाषाक सहज रूपमे देलीह। अनुवादक सहायता उपलब्ध कराओल गेल, मुदा ओ शब्दशः रटने बयान नहि, अपन काजक दिन आ स्थान स्पष्ट करैत छलीह।

कारखानाक अधिवक्ता कहला जे किछु मजदूर पुरान रजिस्टरक आधारपर वास्तविक भुगतानकेँ अस्वीकार करैत छथि। सुनीता उत्तर देलक जे जे पैसा मिलल ओकर प्राप्ति मानल गेल अछि; प्रश्न केवल शेष दिनक अछि। प्राधिकारी पुछलनि, “कुन दिनक भुगतान विवादित अछि, अलग सूची दिअ। एकहि रकम दोहरायल नहि जाए।” सुनीता पहिने तैयार सूची प्रस्तुत केलक। रामलखनक दाबीमे एक दिनक गणना गलत निकलल। ओ तुरन्त सुधार स्वीकार केलक। प्रतिपक्षक प्रतिनिधि क्षण भरि अवाक् रहि गेल। सुनीता बादमे कहलक, “न्याय माँगैत समय अपन गणना गलत हो तँ सुधारू। एहीसँ हमर बाकी साँच छोट नहि होइत।”

सुनीताक एहि दृढ़तासँ हरजीत कौर प्रभावित भेलीह। ओ कारखानाक एक बैठकमे स्पष्ट कहलीह जे वेतनक समय अपनहि कर्मचारीक हस्ताक्षरवला कागजक जाँच कम्पनीक सेहो दायित्व अछि। धर्मपाल खुराना तिक्त भऽ कहलनि, “हम सभ अपराधी नहि छी।” हरजीत

शान्त स्वरमे उत्तर देलीह, “ककरो अपराधी कहबाक लेल नहि, भविष्यक विवाद घटेबाक लेल कहैत छी। जे मजदूर भुगतान पाबैत अछि ओकरा स्पष्ट विवरण भेटय, आ जे कम्पनी भुगतान करैत अछि, तकर प्रमाण रहय।” धर्मपाल किछु क्षण सोचि सहमत भेलाह। एतय संघर्षक विजय कोनो एक पक्षक विनाश नहि, उत्तरदायित्वक स्वीकृति छल।

सन् २०१८ क बरखाक समय दरभंगामे अनुपमाक पुस्तक छपि गेल। पाँच सय प्रतिक सानो संस्करण। आवरणपर मटमैला नीला रङ्ग, बीचमे कागजक पातर रेखा आ शीर्षक—‘देहक नाम, नामक देह’। विमोचन शहरक एक छोट पुस्तकालयमे भेल। नूर जतय उपस्थित छलीह। हुनका ई समारोहक फोटोसँ अधिक महत्त्वपूर्ण लागल जे पाठकसभ मैथिलीमे लिखल जटिल अनुभव सुनबाक लेल बैसल छथि। एक विद्यार्थी पुछलक, “एहन विषय पर अपन भाषा पर्याप्त अछि?” अनुपमा उत्तर देलीह, “भाषाक अभाव नहि, ओकरा प्रयोग करबाक साहसक अभाव रहैत अछि।”

गोष्ठीमे एक वृद्ध कवि कहला जे साहित्यकेँ सामाजिक विवादमे फँसबाक आवश्यकता नहि। अनुपमा मुसकि उत्तर देलीह, “साहित्य जँ मनुष्यक जीवन लिखैत अछि तँ विवादक दुआरि स्वयं खुलि जाइत अछि। किसानक ऋण, मजदूरक मजदूरी, स्त्रीक आवाज आ व्यक्तिक गरिमा कोनो बाहरी विषय नहि।” नूर प्रश्न कएलनि, “अहाँ न्यायालयक भाषा पढ़ैत छी?” अनुपमा कहलीह, “जे जतेक पढ़ि सकैत छी, पढ़ैत छी। मुदा न्यायालयक आदेशसँ बाहर रहि गेल लोकक बोली सुनब ताहिसँ कम आवश्यक नहि।” एहि उत्तरपर सभा बहुत देर धरि चुप रहल।

अनुपमाक पुस्तकक एक वाक्य एक सामाजिक-माध्यम खातापर लेखकक नाम बिना प्रसारित भेल। किछु दिन पछाति दोसर खातामे ओकर उलट अर्थक संग लेखकक नाम जोड़ि देल गेल। प्रकाशक कहला जे ई प्रचारक लाभ अछि। अनुपमा कहलीह, “जे वाक्यक अर्थ बदलि देलक, ओ प्रचार नहि। लिखित प्रश्न पठाउ, मूल पन्ना दिखाउ, आ सुधार माँगू।” ओ तत्काल आपराधिक परिवाद नहि कएलनि। नूर जतय मूल पाठक प्रति देखिकय एक छोट सुधार-लेख लिखलीह। ई घटना सौरभक चित्रक बातसँ भिन्न छल, मुदा दुनूमे सार्वजनिक प्रसार आ मूल प्रसंगक अन्तर महत्त्वपूर्ण छल।

छह सितम्बरक भोर दिल्लीमे रेवतीक कार्यालयक अनेक लोक सर्वोच्च न्यायालयक समाचारक प्रतीक्षा करैत छलाह। *नवतेज सिंह जौहर बनाम भारत संघ* प्रकरणमे संवैधानिक पीठ सहमतिक आधारपर वयस्क समलिंगी व्यक्तिसभक निजी यौन सम्बन्धकेँ अपराध माननिहार धारा ३७७ क ततेक अंश असंवैधानिक ठहरौलक। निर्णयक केन्द्र गरिमा, समानता, निजता आ व्यक्तिक स्वतन्त्रता छल। रेवती समाचार पढ़ि पहिने आधिकारिक निर्णयक पाठ मँगौलनि। ओ चाहैत छलीह जे प्रचारक तीव्र वाक्य आ न्यायालयक वास्तविक निष्कर्षक बीच अन्तर नहि मेटि जाए।

सौरभ मरुधर पुस्तकालयक बाहर बैसल छल जखन अक्षय फोन कएलक। अक्षयक स्वर थरथरा रहल छल। “समाचार सुनलहुँ?” सौरभ कहलक, “हँ। मुदा हमरा एखन नौकरीक निर्णय नहि भेटल।” अक्षय उत्तर देलक, “ओ दोसर बात अछि। आजुक फैसला अहाँक नौकरी नहि लौटौत; मुदा जकरा दुनियाँ अपराध कहि डेरबैत छल, तकरा संविधानक भीतर जगह भेटल।” सौरभ दूर पसरल मरुभूमिक रङ्ग देखैत रहल। ओहि दिन ओकरा उल्लासक संग बहुत पुरान डरक भारो अनुभव भेल—मानू केओ घरक भीतरक बन्द खिड़की खोलि देलक, मुदा दुआरि एखनहुँ ओकरा स्वयं खोलबाक छल।

मनस्वी फिरदौसक कक्षमे पहुँचलि। हुनका अपन अभिलेखक पूर्व अनुभव स्मरण आयल। ओ कहलीह, “व्यक्तिक निजी जीवनक अधिकारक निर्णय भेल, मुदा कतहु आवेदनमे गलत नाम, कतहु नियुक्तिमे अस्पष्ट टिप्पणी, कतहु घरमे अपमान—एहि सभक उपाय अलग-अलग चाही।” फिरदौस सहमत भेलीह। ओ कहलीह, “एकटा संवैधानिक निर्णय सभ सामाजिक द्वार एक दिनमे नहि खोलैत। मुदा ओ स्पष्ट कऽ दैत अछि जे राज्य कोन सीमा पार नहि कऽ सकैत। संस्था अपना नियमक परीक्षण करय लागय, ई अगिला जिम्मेदारी अछि।” विवेक एहि संवादकेँ अपन शोधक कापीमे लिखलक, मुदा हुनका सभक नाम सार्वजनिक नहि केलक।

रेवती सौरभकेँ फोनपर स्पष्ट कहलीह जे निर्णयक अर्थ सम्बन्धित वयस्क व्यक्तिसभक सहमतिक निजी यौन व्यवहारक अपराधमुक्ति अछि; एहि सँ स्वतः विवाहक मान्यता, स्थायी नियुक्ति अथवा सभ सेवाविवादक विजय नहि होइत। सौरभ कहलक, “हमरा ओ विजयक भ्रम नहि अछि। मुदा समग्र उपयुक्तता कहनिहार समितिकेँ आब व्यक्ति-गरिमाक संवैधानिक

अर्थ सुनय पड़त।” रेवती उत्तर देलीह, “हँ। आ अपन याचिकामे जे वास्तविक अभिलेख अछि, ओहीक आधारपर अगिला बहस होएत।” सौरभक लेल ई संयमहि आशाक आधार छल।

सितम्बरक दोसर सप्ताहमे उच्च न्यायालयमे विश्वविद्यालयक शपथपत्र प्रस्तुत भेल। प्रतिवादी पक्ष कहलक जे नवीकरणक निर्णय केवल पदक अस्थायी आवश्यकता, आर्थिक व्यवस्था आ चयन-समितिक समग्र मूल्यांकनपर आधारित छल। निजी जीवनक चर्चा अस्वीकार कएल गेल। मुदा शपथपत्रक संग राखल कार्यवृत्तमे एक सदस्यक हस्तलिखित टिप्पणी छल—‘परिसरक वातावरणक दृष्टिसँ उपयुक्त नहि’। ओहि सदस्यक नाम शोभनाथ पुरोहित छल, जे शिक्षण न्यासक प्रतिनिधिक रूपमे समितिमे बैसल छलाह। दस्तावेजमे न तऽ कोनो अनुशासनात्मक जाँचक उल्लेख छल, न आरोपक लिखित सूचना।

रेवती टिप्पणीक मूल प्रति देखबाक आग्रह करैत कहलीह, “एहि वाक्यक अर्थ प्रतिवादी स्पष्ट करथि। जँ ई कार्य-अनुशासन सम्बन्धी अछि तँ घटना, तिथि आ अभिलेख बताओल जाए; जँ ई केवल व्यक्तिगत पूर्वधारणा अछि तँ सार्वजनिक विश्वविद्यालयक निर्णयमे ओकर स्थानपर प्रश्न उठत।” विश्वविद्यालयक अधिवक्ता कहला जे समिति अपन विवेक सँ निर्णय करैत अछि। न्यायाधीश पुछलनि, “विवेकक अर्थ कारणहीनता नहि होइत। मुदा उच्च न्यायालयो चयन-समितिक स्थान नहि लैत। मूल प्रश्न ई अछि जे निर्णय वैधानिक मानदण्डक भीतर रहि कएल गेल कि नहि।” आदेशमे सम्बन्धित मूल अभिलेख सुरक्षित राखबाक आ स्पष्ट प्रत्युत्तर देबाक निर्देश दर्ज भेल।

दुआरि बाहर भटनागर रेवतीसँ भेटला। हुनकर चेहरा थाकल छल। ओ कहला, “विश्वविद्यालयमे हजारो विद्यार्थी छथि। प्रत्येक विवाद न्यायालय धरि जाए तँ काम केना चलत?” रेवती शान्त स्वरमे उत्तर देलीह, “प्रत्येक विवाद नहि जाएत। जखन प्रशासन अपन लिखल नियम अनुसार स्पष्ट कारण देत, अनेक विवाद कार्यालयेमे समाप्त भऽ सकैत अछि। एतय एक कर्मचारी अपन कामक मूल्यांकनक प्रश्न पुछैत अछि।” भटनागर कहला, “हम ओकर काज खराब कहने नहि छी।” रेवती एहि वाक्यपर ठमकि गेलीह। “तखन एकर लिखित कारण स्पष्ट करू। अदालतक खर्च आ मनुष्यक पीड़ा दुनू बाँचत।”

ओही दिन सौरभक दुआरि लग एकटा नामहीन पत्र भेटल। कागजमे धमकी नहि, अपमान छल: “विश्वविद्यालयक बदनामी बन्द करू।” अक्षय पत्र देखि क्रोधित भऽ गेल। सौरभ ओकरा रोकलक। “हम एहि कागजक प्रतिलिपि सुरक्षित राखब, मुदा बिना आधारक ककरो नाम नहि लेब।” ओ विश्वविद्यालयक सुरक्षा-अधिकारीक समक्ष घटना दर्ज करौलक। एक पहरेदार कहलक जे ककरो होएत; सौरभ उत्तर देलक, “तकर कारणेँ हमर शिकायतमे ककरो आरोपित नहि लिखल अछि।” ओहि राति अक्षय कहलक, “अहाँ एतेक सावधानी राखैत छी, कखनहुँ थाकैत नहि?” सौरभ हँसल—“थाकैत छी। मुदा जँ हम खुदे बिना प्रमाणक नाम लिखि देब, तँ हमर लड़ाइक अर्थ की?”

छब्बीस सितम्बरक दिन आधार सम्बन्धी सर्वोच्च न्यायालयक निर्णय आएल। सरबजीत कौर शाखाक प्रशिक्षण-बैठकमे आधिकारिक सारांश पढ़लीह। सार्वजनिक कल्याण-सम्बन्धी वैध पहचानक उपयोग, निजी संस्थाद्वारा प्रमाणीकरणक सीमा आ कानूनक विशिष्ट प्रावधानक परिणाम अलग-अलग बुझल जाएब आवश्यक छल। शाखाक एक कर्मचारी पुछलक, “तखन की आब सभ जगह आधार लेब मना भऽ गेल?” सरबजीत स्पष्ट कएलनि, “नहि। एहन सरल निष्कर्ष गलत होएत। अपन कामपर कोन नियामक निर्देश लागू अछि, से देखबाक चाही। जे अनुमति नहि, ओकरा बिनु कारण सामान्य नियम बनाओल उचित नहि।”

मरुधरमे मनस्वी एहि निर्णयक समाचार पढ़लीह। हुनकर अपनहि पुरान नामक अनावश्यक प्रकटीकरणक अनुभव फेर स्मरण आयल। ओ फिरदौसकेँ कहलीह, “कतेको लोक पहिचानक व्यवस्था चाहैत छथि, कारण बिना कागजक सहायता नहि भेटैत। दोसर दिस बहुतो निजी संस्था अधिक जानकारी माँगैत अछि। दूनूक बीच मनुष्य कहाँ रहत?” फिरदौस उत्तर देलीह, “मनुष्यकेँ बीचमे नहि, केन्द्रमे रखबाक चाही। पहचानक साधन जीवनकेँ सुगम करय, जीवनक मालिक नहि बनय।” ई वाक्य मनस्वी अपन शोध-पुस्तिकाक पहिल पन्नामे लिखलीह।

सत्ताइस सितम्बरक दिन महिलाक समानता सम्बन्धी एक आओर महत्त्वपूर्ण सर्वोच्च न्यायालयीन निर्णयक समाचार आयल। *जोसेफ शाइन* प्रकरणमे भारतीय दण्ड संहिताक व्यभिचार सम्बन्धी धारा ४९७ असंवैधानिक ठहरायल। रेवती अपन कार्यालयमे कनिष्ठ अधिवक्ताकेँ कहलीह जे वैवाहिक निष्ठाक नैतिक अथवा दीवानी प्रश्न आ दण्ड-विधिक

अपराध एकहि बात नहि। स्त्रीकेँ पतिक सम्पत्तिक समान देखनिहार पुरान मान्यता संविधानक समानतासँ मेल नहि खाइत। मुदा एहि निर्णयक अर्थ वैवाहिक विवादक सभ समस्या स्वतः समाप्त होयब नहि अछि।

लुधियानाक नसरीन बेगम एहि समाचारकेँ सुनिकय सोचमे पड़ि गेलीह। हुनकर रंगाईक छोट उद्यममे काम करनिहार एक महिला, हरप्रीत, पारिवारिक विवादक कारण काजपर बारम्बार देर सँ पहुँचैत छलीह। हरप्रीतक पति ओकर मोबाइल देखबाक जिद करैत छल आ दोकानमे ग्राहकलग बात करबाक कारण सन्देह करैत छल। नसरीन कहलनि, “कानूनक फैसला पढ़ि लेने मात्रसँ घरक डर नहि घटत। मुदा तोरा जे अन्याय बुझाइत अछि, से कहबाक अधिकार अछि।” ओ अपन सीमा सेहो जानैत छलीह—सहकर्मीकेँ सहायता देब आ ओकर निजी निर्णय अपन हाथमे लऽ लेब अलग बात अछि।

हरप्रीत पुछलीह, “अदालत आब कहलक तँ हमर पति सुनत?” नसरीन उत्तर देलीह, “हम नहि कहि सकैत छी। मुदा तोरा संग जे व्यवहार होइत अछि तकरा नाम देबाक अधिकार तँ तोहर अछि।” हरप्रीत अपन घरक वास्तविक स्थिति बतएबाक लेल एक विश्वस्त परामर्श-सेवासँ भेटबाक निर्णय लेलक। ओ एखन कोनो आपराधिक आरोप नहि लगौलक। सुनीता एहि विषयमे कहलीह जे कार्यस्थलपर हरप्रीतक निजताक सम्मान होएबाक चाही; ओकर जीवनक समाचार कारखानाक उपहासक सामग्री नहि बनय।

नूर जतय एहि दू दिनक फैसलापर अलग-अलग समाचार लिखलीह। एक लेखमे व्यक्तिक यौन अभिरुचि आ सहमतिक निजी सम्बन्धकेँ अपराधमुक्त करबाक संवैधानिक अर्थ छल; दोसरमे स्त्रीकेँ वैवाहिक सम्पत्तिक रूपमे देखबाक दण्ड-विधिक सोचक अन्त। सम्पादक दुन्नूकेँ एक आकर्षक शीर्षकमे जोड़य चाहलनि। नूर कहलीह, “दुनूक केन्द्र गरिमा अछि, मुदा कानूनी प्रश्न अलग अछि। जँ हम सभ एकहि समाचार बना देब तँ पाठककेँ गलत निष्कर्ष भेटत।” सम्पादक अलग लेख प्रकाशित करबाक अनुमति देलनि।

अनुपमा अपन पुस्तकक अगिला पाठक-संवाद लेल एहि समाचारक दू कतरन अलग राखलीह। ओ बुझैत छलीह जे न्यायालयक निर्णय साहित्यक अन्तिम निष्कर्ष नहि, मुदा मनुष्यक गरिमापर पुरान सामाजिक कथनकेँ नब प्रकाशमे देखबाक अवसर अछि। हुनका

अपन मायक एक उक्ति स्मरण आयल—“घरमे जे बोलैत अछि, ओकरा सुनू; जे चुप अछि, ओकरो चुप्पीक कारण पूछू।” ओहि उक्ति आ विधिक निर्णयक भाषा अलग छल, मुदा मानवीय अर्थ परस्पर बात करैत छल।

शरद ऋतुमे अनुपमा झा दिल्ली गेलीह। एक साहित्यिक सभामे हुनकर पुस्तकपर संवाद छल। ओतय एक युवा पाठिका पुछलीह जे ‘देहक नाम, नामक देह’क नायिका अपन घर छोड़ि स्वतन्त्र रूपेँ जीबैत अछि, मुदा कथाक अन्तमे ओकरा विवाह, नौकरी वा अदालती जीतक कोनो निश्चित पुरस्कार किएक नहि भेटैत। अनुपमा कहलीह, “स्वतन्त्रताकेँ हर बेर विवाह अथवा नियुक्तिक पुरस्कारसँ नापब उचित नहि। ककरो अपन निर्णयक अधिकार भेटबो कथाक बड़ा परिवर्तन भऽ सकैत अछि। मुदा एहि अधिकारक संग भोजन, घर, श्रम आ सम्बन्धक आवश्यकताओ रहैत अछि।” युवा पाठिका फेर पुछलीह, “तखन कथा समाप्त कहाँ होइत अछि?” अनुपमा मुसकि देलीह—“जतय हम लेखक रुकि जाइत छी, ओतहि पात्रक जीवन थोड़े रुकैत अछि।”

नूर जतय एहि सभाक समाचार बनबैत समय अनुपमाकेँ पुछलीह जे सन् २०१८ क संविधान-सम्बन्धी फैसलेसँ हुनकर नव पुस्तकक पाठ बदलत कि नहि। अनुपमा कहलीह, “कानूनक निर्णय मनुष्यक मानक नब भाषा दैत अछि। मुदा जे कथा पहिने सँ लिखल अछि, ओकरा झूठ कहि फेकि देब उचित नहि। बरु नव पाठक ओहि दुखक कारण आ परिवर्तनक सम्भावना अधिक स्पष्ट बुझि सकैत अछि।” नूर सम्पादक लग पठेबाक लेखमे एको काल्पनिक पात्रकेँ वास्तविक विवादक पक्षकार नहि बनौलीह। हुनकर लेख साहित्य आ जीवनक संवादपर केन्द्रित रहल।

नवम्बरक मध्यमे मरुधर विश्वविद्यालयक कुलसचिव कार्यालयमे आन्तरिक समीक्षा-बैठक भेल। भटनागर, पुस्तकालयाध्यक्ष, चयन-समितिक प्रतिनिधि आ वित्ताधिकारी उपस्थित छलाह। सौरभकेँ लिखित प्रतिवेदन जमा करबाक आ सुनल जाएबाक अवसर देल गेल। एहि समीक्षा न्यायालयक अन्तिम विचारण नहि, संस्थाक अपन निर्णयक पुनर्परीक्षण छल। सौरभ अपन काजक अङ्क, त्रुटि-संशोधनक प्रतिवेदन आ पुस्तकालयक पाठकसभक प्राप्ति-सूची रखलक। ओकरा निजी जीवनक सम्बन्धमे प्रश्न कएल गेलापर ओ कहलक, “जँ काजसँ

सम्बन्धित नियम बताओल जाए तँ उत्तर देब। अन्यथा हमर निजी जीवनक लेखा नियुक्ति-समितिक विषय नहि।”

शोभनाथ पुरोहित, जे पहिनुक समितिक सदस्य छलाह, कहला जे संस्थाक प्रतिष्ठापर चर्चा कएल गेल छल। सौरभ विनम्रतासँ पुछलक, “संस्थाक कोन लिखित आचार-नियम हम भङ्ग कएलहुँ? ककरो शिकायत छल तँ हमरा जानकारी देल गेल?” शोभनाथक लग कोनो विशिष्ट दस्तावेज नहि छल। ओ कहला जे परिसरमे चर्चा होइत छल। भटनागर एहि बेर हस्तक्षेप कएलनि—“ककरो चर्चा मात्र निर्णयक लिखित आधार नहि होयबाक चाही। जँ अनुशासनक प्रश्न छल तँ नियमक अनुसार चलब आवश्यक छल।” एहि वाक्यसँ बैठकक स्वर बदलि गेल।

बैठकमे पुस्तकालयाध्यक्ष स्वीकार कएलनि जे सौरभक पुस्तक-सूचीकरणक काज प्रशंसनीय छल। वित्ताधिकारी कहला जे विभागमे आगाँक सत्र लेल पदक अर्थसंकल्पीय उपलब्धता अलग प्रश्न अछि। रेवतीक परामर्श अनुसार सौरभ ई अन्तर स्पष्ट करौलक—“जँ पद वास्तवमे उपलब्ध नहि, से लिखू। जँ उपलब्ध अछि, तखन घोषित मानदण्डक अनुसार उचित पुनर्विचार करू। हमरा जे नहि अछि से चाही नहि; जे न्यायसंगत अछि, ओकरा अस्पष्ट शब्दमे नहि नुकाउ।” समीक्षा-समिति एक नव कारणयुक्त निर्णयक प्रारूप तैयार करबाक निश्चय केलक।

ओहि रात्रि भटनागर विश्वविद्यालयक पुरान भवन लग ठाढ़ छलाह। सन् २००१ क भूमि-विवाद, छात्रावासक निर्माण, छात्रवृत्तिक सुधार, मनस्वीक नाम आ विवेकक काटल टिप्पणीक स्मृति हुनकर मनमे उठि रहल छल। ओ एक दिनमे बदलि गेल व्यक्ति नहि छलाह। हुनका एखनहुँ प्रशासनिक कठिनाइक चिन्ता छल। मुदा धीरे-धीरे बुझि रहल छलाह जे एक कर्मचारीक गलत टिप्पणीकेँ सुधारि देबाक काज संस्थाक अधिकार घटबैत नहि, ओकर विश्वास बढ़बैत अछि। ओ अपने सहायककेँ कहला, “भविष्यमे समग्र उपयुक्तता लिखबाक पहिले विशेष मानदण्ड लिखल रहय।”

दिसम्बरक पहिल सप्ताहमे उच्च न्यायालयमे प्रतिवादीक नव शपथपत्र आएल। विश्वविद्यालय कहलक जे पहिनुक निर्णयक अस्पष्ट टिप्पणीक उपयोग अनुपयुक्त छल आ नवीकरणक प्रश्न फेर निर्धारित प्रक्रिया अनुसार विचाराधीन अछि। सौरभक नियुक्ति अवधि

समाप्त भऽ चुकल छल; विश्वविद्यालय तत्काल स्थायी नियुक्ति देबाक वचन नहि देलक। नव निर्णय लेल समय माँगल गेल। रेवती पुछलीह जे एहि बीच कर्मचारीक श्रमक देय भुगतान शेष अछि कि नहि। सौरभ अपन कागजसँ बतौलक जे दू सप्ताहक पारिश्रमिक रोकल गेल छल। प्रतिवादी पक्ष एहि रकमक लेखा प्रस्तुत करबाक सहमति देलक।

न्यायाधीश कहलनि, “ई न्यायालय विश्वविद्यालयक प्रत्येक चयनक स्थान नहि लैत। मुदा सार्वजनिक संस्थाक निर्णय कारणयुक्त, नियमसम्मत आ विधिसंगत रहबाक चाही। आवेदकक निज जीवनक विषयमे अप्रमाणित धारणा काजक मूल्यांकनक विकल्प नहि बनि सकैत। प्रतिवादी पुनर्विचारक निश्चित प्रक्रिया बताउ।” विश्वविद्यालयक अधिवक्ता लिखित समय-सारिणी प्रस्तुत कएलनि। अदालत ओकरा अभिलेखमे लेलनि आ पूर्व निर्णयक विधिक परिणाम सम्बन्धी विवादकेँ पूर्ण अन्तिम निराकरण मानबाक बदला अनुवर्ती अनुपालनक अवसर सुरक्षित रखलक। कोनो सर्वव्यापी सेवा-अधिकारक नब घोषणा नहि भेल।

बाहर निकलैत सौरभ पुछलक, “तखन हम जितलहुँ कि नहि?” रेवती कहलनि, “अहाँक विरुद्ध अस्पष्ट टिप्पणीक आधार कमजोर पड़ल अछि, आ पुनर्विचारक दायित्व निश्चित भेल अछि। मुदा नियुक्तिक अन्तिम परिणाम एखन बाँकी अछि। जीतक नाम देब अहाँक इच्छा, मुदा कागजक स्थिति एतबे अछि।” सौरभ फेर पुछलक, “हमर निजी जिनगी फेर प्रश्न बनत?” रेवती उत्तर देलीह, “जँ बनत तँ ओकरा नियम आ प्रमाणक प्रकाशमे देखब। एखन अहाँक आवेदनक उचित उत्तर भेटबाक बाट खुलल अछि।” सौरभ अपन झोरा उठौलक। ओकर झोरामे ओही दिन दरभंगासँ आयल मायक छोट चिट्ठी छल।

कमलाक चिट्ठीमे न्यायालयक उल्लेख मात्र दू पाँतिमे छल। ओ लिखने छलीह जे घरक पुरान छत मरम्मत होइत अछि, बहिनक परीक्षा सम्पन्न भेल, आ अनुपमा झा नव पुस्तकक एक प्रति पठौने छथि। अन्तमे लिखने छलीह, “तोहर काज जँ ओतय बन्द भऽ जाए तँ गाममे किताबक कोठरी खोलब। मुदा अपन मनक दुआरि बन्द नहि करिह।” सौरभ एहि वाक्यकेँ बेर-बेर पढ़लक। ओकरा बुझायल जे परिवारक स्वीकृति अदालतक आदेश नहि, मुदा जीवनक कठिन परीक्षा लेल एक आवश्यक आधार अछि।

ओहि मास लुधियानाक रामलखनक बकाया सम्बन्धी एक भागक निर्णय अएल। सक्षम प्राधिकारी उपलब्ध अभिलेखक आधारपर किछु दिनक भुगतान देबाक निर्देश देलक, जखन कि दोसर दावापर प्रमाणक अभावक उल्लेख कएल गेल। सुनीता एहि परिणामकेँ सच्चा स्वरूपमे मजदूरसभक समक्ष रखलक। चम्पा कहलीह, “हम सभ आधा पाबि कऽ प्रसन्न होइ कि बाकी पर लड़ाइ करि?” सुनीता उत्तर देलक, “जे सही भेटल ओकर स्वीकार करू; जे शेष अछि तकर उचित उपाय देखू। न्यायकेँ अपन इच्छाक रंग देलासँ न्याय बढ़ैत नहि।” मजदूरसभक एक बैठकमे पहिल बेर वेतनपञ्जी देखबाक लिखित व्यवस्था पर सहमति भेल।

हरजीत कौर सरबजीत कौरकेँ पुरान ‘हरदेव चौहान’ नामक विषयमे पत्र लिखलीह। कतेको वर्षसँ समान नामक कागज एक-दोसरक कात पहुँचैत रहल छल। बैंकक उत्तर पहिनेसँ स्पष्ट कऽ देने छल जे अलग ग्राहकक पहिचान अछि; कारखानाक खातामे बचल अस्पष्टता अलग विषय छल। सरबजीत कहलीह, “हम बैंकक गोपनीय अभिलेख अनधिकृत व्यक्तिकेँ नहि दऽ सकैत छी। जतेक वैधानिक रूपेँ सत्यापनीय सूचना अछि, ओहीक आधारपर नियत अधिकारीसँ सम्पर्क करू।” हरजीत ई सीमा स्वीकार कएलनि। रहस्यक नामेँ व्यक्तिक निजी जानकारीक दुआरि नहि खोलल गेल।

अनुपमा झा ओहि वर्षक अगस्तमे केरलक बाढ़िक समयक एक अनुभव पर लेख लिखने छलीह। हुनकर परिचित एक विद्यालय-शिक्षक राहतकार्य सँ लौटि बतौने छलाह जे पानी सभ घरक सीमा मेटा देलक, मुदा राहतक पञ्जीमे फेर नाम, पता, परिवारक संख्या आ क्षतिक विवरण अलग-अलग भरबाक पड़ल। अनुपमा लेखमे लिखलनि जे सहायता करबाक मनोभाव जरूरी अछि, मुदा वितरणक सत्यापन सेहो जरूरी अछि, कारण गलत अभिलेखक कारण वास्तविक पीड़ित वञ्चित भऽ सकैत छथि। हुनकर लेख पढ़िकय मीरा लकड़ा, जे ग्रामीण महिलाक आजीविका-संगठनमे काम करैत छलीह, पत्र पठौलनि।

मीरा अपन पत्रमे लिखलीह जे २००४ क सुनामीक राहतकार्यक अनुभव हुनकर परिवारकेँ बहुत किछु सिखौने अछि। दानक हिसाब सार्वजनिक करब, सहायता पाबनिहारक मान सुरक्षित रखब, आ संस्था अपन खर्च स्पष्ट करब—ई सभ केवल आरोपसँ बचेबाक उपाय नहि, कामक नैतिक आधार अछि। अनुपमा हुनका उत्तर देलीह जे सेवा करनिहारसभक भीतर सेहो

आलोचनाक स्थान चाही। जँ कोनो संस्था गलत काज करय तँ ओकर जाँच हो, मुदा एहन एक घटनासँ सभ सेवा-संस्थाकेँ अविश्वसनीय नहि मानल जाए। ई विचार आगाँक वर्षसभमे हुनकर मित्रताक मूल बनेबाक छल।

जोधपुरमे रिद्धि विश्नोई एखन विश्वविद्यालयक नियमित छात्रा नहि बनल छलीह; ओ अपन विद्यालयक अन्तिम वर्गमे अध्ययन करैत छलीह। पिताक पुरान परिचयक कारण मरुधरक पुस्तकालयमे कखनो-कखनो आबैत छलीह। एक दिन ओ सौरभकेँ पुरान पञ्जीक पन्ना सँ धूल हटबैत देखलक। ओ पुछलक, “किताबक नाम गलत लिखल गेल तँ की करैत छी?” सौरभ कहलक, “पहिने देखैत छी जे मूल पुस्तकमे की अछि। फेर ककरो सुधारक तिथि लिखैत छी। पुरान गलतीकेँ चुपचाप मेटा देलासँ फेर बुझब कठिन होइत अछि जे गलती केना भेल।” रिद्धि ई उत्तर याद रखलक। आठ वर्ष बाद ओकरा पाँच सय बैंक खाताक एक सूची देखबाक समय ई बात स्मरण आएत, मुदा ओ दिन एहन भविष्यक आभास नहि छल।

पुस्तकालयक अधीक्षक सौरभसँ कहला जे नब अवधि लेल पदक बजट स्वीकृत भऽ गेल अछि, मुदा खुलल चयन प्रक्रिया अपनाओल जाएत। सौरभ पुनः आवेदन करबाक निर्णय लेलक। ओ जानैत छल जे न्यायालयक आदेश ओकरा अग्रिम विजयपत्र नहि देलक; तथापि पूर्वमे प्रचलित अस्पष्ट टिप्पणी नव चयनक मानदण्ड नहि बनि सकत, एहि अपेक्षाक ठोस आधार बनल। अक्षय ओकरा पुछलक, “जँ दोसर व्यक्ति चयनित भेल तँ?” सौरभ उत्तर देलक, “जँ उचित मापदण्डसँ चयन हो तँ हमरा दुख होयत, मुदा अन्यायक दावा नहि करब।” अक्षय अपन मित्रकेँ पहिल बेर ईतेक दृढ़ देखलक।

सन् २०१८ क अन्तिम भोर दिल्लीमे शिवनारायण झा रेवतीक कार्यालय पहुँचलाह। हुनकर चाल धीमी भऽ गेल छल, मुदा नजरक तीक्ष्णता पूर्ववत् छल। मेजपर सौरभक प्रकरणक आदेश, मरुधरक भूमि-नापीक प्रतिवेदन आ सुनीताक मजदूरीक हिसाब अलग-अलग राखल छल। ओ तीनू कागज देखि कहला, “तीन लोक, तीन मुद्दा, मुदा सभ केओ अपन नामक सही अर्थ चाहैत अछि।” रेवती कहलीह, “एहि वर्ष गरिमाक अर्थ पर सर्वोच्च न्यायालय अनेक महत्त्वपूर्ण बात कहलक। मुदा हमर कार्यालयमे गरिमाक अर्थ कखनो वेतनक एक दिन, कखनो नामक सही प्रविष्टि, कखनो निजी जीवनक दुआरि बन्द रखबाक अधिकार अछि।”

शिवनारायण पुछलनि, “न्यायालयक निर्णयसँ मनुष्य बदलैत अछि?” रेवती उत्तर देलीह, “कखनो कानूनक डर घटैत अछि, कखनो संस्था नियम सुधारैत अछि, कखनो परिवार पहिल बेर सुनैत अछि। मुदा सभ परिवर्तन न्यायालय नहि करैत। लोक अपने सेहो बदलैत छथि।” शिवनारायण हँसला। “सन् २००० मे नीलकान्तक बहीखाताक एक पन्ना हमरा चारि वर्ष लग धरि बेचैन रखने छल। आब तोहर कागजमे पूरा देशक नाम अछि।” रेवती कहलीह, “आ प्रत्येक नामक पाछाँ अलग व्यक्ति।”

सन्ध्याक समय अनुपमाक पुस्तकक एक प्रति रेवतीकेँ भेटल। पहिल पन्नापर लेखिका लिखने छलीह—“जकरा नामसँ पुकारल जाइत अछि, ओकरा सुनलो जाय।” रेवती पन्ना बन्द कएलनि। बगलमे न्यायालयक अनेक फाइल छल, बाहर शहरक आवाज छल, आ ओहि देशमे कतेको लोक एखनहुँ अपन बात कहबाक अवसर खोजि रहल छल। हुनका बुझायल जे संविधानक शब्द पत्थरमे उकेरल प्रतिमा नहि; ओकर अर्थ विद्यालयक पञ्जी, कारखानाक उपस्थिति, पुस्तकक पन्ना आ अदालतक प्रश्नमे प्रतिदिन नब होइत रहैत अछि।

राति गहराइते मरुधरक पुस्तकालय बन्द भेल। सौरभ अन्तिम पाठकक पुस्तक सही स्थानपर राखलक। ओ देखलक जे एक पुरान मैथिली पुस्तकक लेखकक नाम नव अभिलेखमे गलत चढ़ल अछि। ककरो ध्यान नहि गेल छल। ओ मूल पुस्तक खोलि नाम फेर पढ़लक, सुधारक आग्रहक पर्ची लिखलक आ पुरान प्रविष्टिक उल्लेख सुरक्षित रखलक। एक दिन ओकर अपन नामक संग न्यायिक विवाद जुड़ल छल; आब ओ आन एक लेखकक नाम सही करबाक साधारण काममे लागल छल। दुआरि बन्द करैत ओ अक्षयकेँ कहलक, “चलू, घर चली।” ई दू शब्दक भीतर ओकरा सन् २०१८ क समस्त थकान आ नब साहस सुनाइत छल।

अध्याय २३ — चन्द्रमाक अन्हार, घाटीक सवाल

सन् २०१९ : श्रीहरिकोटा, जोधपुर, श्रीनगर, दिल्ली आ दरभंगा

नव वर्षक पहिल सोमदिन मरुधर विश्वविद्यालयक पुरान पुस्तकालयमे सौरभ झा एतेक भोरे पहुँचि गेल जे चौकीदारकेँ ताला खोलयमे हड़बड़ी भेल। बाहिर धूप एखन दीवालक ऊपरी भाग धरि पहुँचने छल। ओ एकहि अलमारीक तीन पाँतिमे रखल पुस्तक सभ देखैत रहल। पछिला वर्ष ओकर नियुक्तिक नवीकरणपर उठल विवादक कारण ओ बहुत दिन एतय ओहि सहजतासँ प्रवेश नहि कऽ सकने छल जे काज करनिहार मनुष्यकेँ अपन काजक ठामसँ होइत छैक। संस्थाक पुनर्विचारक बाद नब चयन-प्रक्रियामे भाग लेबाक अवसर भेटल छल, मुदा पद एखन स्थायी नहि छल। ओकरा भीतर एकटा अजीब शान्ति छल—ओ जकरा अपना विरुद्ध लागल गलत टिप्पणी कहैत छल, तकरा संस्थाक मूल अभिलेखमे चिह्नित कएल गेल छल। ई ओकर सम्पूर्ण समस्या नहि सुलझौने छल; तथापि आब ओकर श्रमक विवरण फेर पढ़ल जा सकैत छल।

सौरभक मेजपर फिरदौस कौल एकटा पातर लिफाफा छोड़ि गेल छलीह। लिफाफामे तीन पुरान फोटो, श्रीनगरक एक विद्यालयक परिचयपत्रक प्रतिलिपि आ प्रवेश-सम्बन्धी प्रश्न छल। भीतर छोट पत्र छल—“हमर भगिनी रूहानी विज्ञान आ गणित पढ़य चाहैत अछि। ओ एहि वर्ष उच्च शिक्षाक आवेदन देत। अहाँक पुस्तकालयमे नब विद्यार्थीक लेल जे अध्ययन-सहायता अछि, ओकर विवरण पठा सकैत छी?” सौरभ पहिने पत्र पढ़लक, फेर भगिनीक चित्र देखलक। पहाड़क पाछाँ उज्जर आकाश छल; लड़कीक हाथमे कापी आ पेंसिल। कोनो राजनीतिक घोषणाक स्थान ओतय नहि छल। ओ पुस्तकालयक उपलब्ध समय, छात्रवृत्ति-सहायता आ प्रवेश कार्यालयक अलग पता लिखिकय जवाब तैयार केलक।

फिरदौसक कक्षमे ओहि दिन मनस्वी आ विवेक मेघवालक संग विद्युत-अभिलेखक जाँच सम्बन्धी छोट पाठ चलि रहल छल। कम्प्यूटरक पर्दापर एक नामक दू रूप लिखल छल। एकटा हिन्दी अनुवादक, दोसर मूल प्रमाणपत्रक। फिरदौस कहलीह, “जँ अभिलेखमे दू रूप भेटय तँ पहिने स्रोत देखू। अनुमानसँ ककरो पहचान ठीक नहि कएल जा सकैत अछि।” विवेक हँसिकय कहलक, “एहि विश्वविद्यालयक बहुतो झगड़ाक जड़ एकटा गलत नाम अछि।” मनस्वी उत्तर देलीह, “नाम मात्र नहि, ओ नाम कोना संग्रहित, प्रसारित आ व्याख्यायित होइत अछि, सेहो।” फिरदौस खिड़की दिशि देखलीह। दूर खेलक मैदानमे विद्यार्थी दौड़ि रहल छलाह। हुनका भगिनी रूहानीक आवयवला वर्षक चिन्ता छल, मुदा एखन ओ चिन्ता सामान्य छल—पढ़ाइक व्यय, छात्रावास, भोजन, घरसँ दूरी।

दिल्लीमे रेवती झा अपन पिताक पुरान लकड़ीक पेटीमे किछु पत्र व्यवस्थित करैत छलीह। शिवनारायण झा सन् २००० क नीलकान्त साह प्रकरणक जप्ती-सूची निकालि देखौने छलाह। रेवती पुछलीह, “एतेक पुरान कागज आब किएक?” शिवनारायण कहला, “कागज बूढ़ होइत अछि, मुदा ओकरा पढ़बाक विधि बदलैत रहैत अछि। एखन फोनक छवि, बैंकक अभिलेख, विद्यालयक सूची सभ न्यायालयमे अबैत अछि। हम तखन पहिल बेर बुझने रही जे जप्ती-सूचीक एक पन्ना पूरा कथा बदलि सकैत अछि।” रेवती सौरभक अद्यतन सेवा-अभिलेखक पत्र रखलीह आ कहलीह, “नब कानूनक प्रश्न रहत; पुरान समस्या फेरो देखाइत अछि। संस्था जकरा नामसँ चिन्हैत अछि, मनुष्य ओहिसँ बेसी होइत अछि।”

शिवनारायणक स्वास्थ्य पहिनेक अपेक्षा कमजोर भऽ गेल छल, तथापि न्यायिक निर्णयक चर्चा करैत हुनकर आँखि चमकि उठैत छल। ओ रेवतीकेँ कहला जे वकीलक सबसँ कठिन काज अपन मुवक्किलक प्रत्येक कथनपर विश्वास करब नहि, बल्कि जकर प्रमाण भेटैत अछि ओतबे बात न्यायालयमे कहब। रेवती हुनका मनस्वीक पुरान नामक विवाद, सौरभक नियुक्तिक प्रश्न आ सुनीताक मजदूरीक अलग-अलग आदेशक स्थिति बतौलक। शिवनारायण ध्यानसँ सुनलनि। “तोँ मुकदमा सभकेँ एकटा शब्दमे जोड़ि दैत छह—गरिमा,” ओ कहला, “मुदा न्यायाधीशकेँ प्रत्येकक अपना अलग नियम चाही।” रेवती एहि वाक्यकेँ अपन कापीमे लिखि रखलीह।

जोधपुरमे बरखाक पूर्वक गरमी चढ़य लागल तँ रूहानीक विद्यालयक परिणाम अएल। हुनकर अङ्क नीक छल, विशेषत: गणित आ भौतिकीमे। फिरदौस फोनपर भगिनीकेँ अभिनन्दन देलीह। रूहानी उत्साहमे कहलनि, “मौसी, हम चन्द्रमाक पाछाँक तस्वीर देखय चाहैत छी। किताबमे जे गोल पृष्ठ देखाइत अछि, ओ खाली पाथर नहि होयत।” फिरदौस पूछलीह जे एहि जिज्ञासाक कारण की। रूहानी उत्तर देलीह, “किछु लोक कहैत छथि चन्द्रमापर पहुँचलामात्रसँ सभ बुझि जाइत अछि। मुदा वैज्ञानिक फेर किएक जाएत छथि?” फिरदौस कहलीह, “जाहि प्रश्नक उत्तर भेटैत अछि, ओकर पाछाँ दोसर प्रश्न उघड़ैत अछि। तँ पढ़ाइ केलहुँ तँ प्रश्न करबाक अधिकार बचाकय राखू।”

ओहि समय निरंजन आ मैत्रेयीक घरमे चन्द्रयान-दोसर अभियानक चर्चा बढ़ि रहल छल। हुनकर बेटी अवनि विद्यालयक दीवालपत्रक लेल अन्तरिक्ष-अन्वेषणपर लेख लिखैत छलीह। निरंजन कहला जे वैज्ञानिक अभियानक तिथि, साधन, लक्ष्य आ जोखिम अलग-अलग होइत अछि; समाचारक आकर्षक शीर्षकमे ई सभ बात एकत्र नहि समा पबैत अछि। अवनि अपन लेखमे भारतक पहिल चन्द्र-अभियानक सफलता लिखलनि आ दोसर अभियानक अवतरण-योजना लेल रिक्त स्थान छोड़ि देलनि। मैत्रेयी पुछलीह, “रिक्त किएक?” अवनि हँसलीह, “घटित होयबाक पहिने सफलता लिखि देब विज्ञान नहि होयत।” हुनकर पिता एहि बातपर हँसलाह। हुनका एखन नहि जनैत छल जे वर्षक अन्त धरि ओ रिक्त स्थान परिवारक एक गम्भीर शिक्षामे बदलि जाएत।

मरुधर विश्वविद्यालयक वित्त-कार्यालय एहि बीच छात्रवृत्तिक नब सूची निकाललक। पहिने जिनकर अभिलेखमे नामक भिन्न रूप छल हुनकर कागजक पुन:परीक्षणक व्यवस्था कएल गेल। मनस्वी एहि प्रक्रियाक स्वागत कएलनि, मुदा एकटा शर्तक माँग सेहो राखलनि—जरूरी अधिकारी मात्र निजी संवेदनशील कागज देखथि, सभ विभागमे ओकर प्रतिलिपि नहि बँटय। भटनागर आब कतेको बातमे पूर्ववत् कठोर नहि रहलाह। ओ कहला, “अधिकारीकेँ प्रमाण चाही, विद्यार्थीकेँ गोपनीयता। दूनूकेँ संग राखब सरल नहि।” मनस्वी उत्तर देलीह, “सरल नहि, मुदा सम्भव अछि। कठिन कहि छोड़ि देल तँ हमरा सभक पुरान गलती फेर लौटत।”

फिरदौस विश्वविद्यालयक कुलसचिवकेँ भगिनी रूहानीक सम्भावित प्रवेशपर साधारण जानकारी माँगिकय लिखलनि। कार्यालय उत्तर देलक जे नियमसभक अधीन आवेदन करय पड़त, कोनो शिक्षकक निजी परिचय प्रवेशक गारण्टी नहि अछि। फिरदौस प्रसन्न भेलीह। हुनका कोनो विशेष सुविधा नहि चाही छल; बस एतेक चाही जे विद्यार्थीकेँ नियम बुझायल जाए। कुलसचिवक पत्रमे बाहरी विद्यालयक अभिलेखक मूल प्रति प्रवेशक समय प्रस्तुत करबाक व्यवस्था छल, आ सत्यापन अपूर्ण भेला पर अस्थायी प्रवेशक सम्भावना संस्थाक घोषित नियममे निर्दिष्ट छल। ओ ओहि अनुच्छेदपर चिन्ह लगा रखलीह। छोट पंक्ति छल, मुदा वर्षक अन्तमे ई पंक्ति एक पैघ विवादक केन्द्र बनबाक छल।

मई मासमे लोकसभाक निर्वाचनक परिणाम सार्वजनिक भेल। मरुधरक भोजनालयमे एक मेजपर विजयक चर्चा छल, दोसरपर विपक्षक हारक कारण। सौरभक सहकर्मी जगदीश कहला जे आब सभ किछु निश्चित दिशा मे चलत। विवेक चाय रखैत कहलक, “सरकारक दिशा एक विषय अछि, शिक्षण संस्थाक नियुक्ति, शोध आ विद्यार्थीक भोजन दोसर।” जगदीश एहि उत्तरकेँ राजनीतिक विरोध बुझलनि। फिरदौस बीचमे कहलीह, “ककरो मतक आलोचना कएलासँ ओकर राष्ट्रप्रेम मापल नहि जाइत। देशक चुनाव लोकक अधिकार अछि; विश्वविद्यालयमे प्रश्न पूछब सेहो।” भोजनालयक बहस बिना झगड़ाक समाप्त भेल, मुदा ओहिमे जनताक आशा आ असहमतिक अनेक स्वर स्पष्ट छल।

रेवतीक कार्यालयमे एक युवा अधिवक्ता तैयब अंसारी आएलाह। हुनका राजस्थानक एक स्नातक छात्रक प्रवेश-निरस्तीकरणक शिकायत छल। ओ कहला जे विद्यालयक मूल प्रमाणपत्र आगलागीसँ नष्ट भऽ गेल; विश्वविद्यालयक नब नियममे मूल प्रति माँगल गेल अछि। रेवती पुछलीह जे संस्थाक प्रतिस्थापन-पत्र स्वीकार करबाक प्रावधान की अछि। तैयब कागज खोललनि। मूल प्रमाणपत्र भेटबाक आग्रह छल, मुदा समकक्ष अभिलेखक जाँचक व्यवस्था सेहो छल। रेवती कहलीह, “पहिने कार्यालयमे लिखित आवेदन आ नियमक अनुरूप प्रमाण जमा करू। अधिवक्ता प्रत्येक अपूर्ण कागज लऽ उच्च न्यायालय दौड़ल जाय, ई उचित नहि।” तैयब एहि सलाहकेँ साधारण बुझि रहल छलाह, मुदा रेवती लेल ई सत्ताइस वर्षक न्यायालयीन अनुभवक निचोड़ छल।

एक रविवार फिरदौस अपन पुस्तक अलमारीसँ कश्मीरक इतिहासक पुरान ग्रन्थ निकालि रूहानी लेल पन्ना चिन्हित करैत छलीह। भगिनी कहने छलि जे ओ विश्वविद्यालयमे विज्ञान पढ़ितो साहित्य पढ़ब नहि छोड़तीह। फिरदौसक पिता विद्यालयमे गणित पढ़बैत छलाह; माय कश्मीरी लोकगीत गबैत छलीह। घरमे अनेक भाखाक पुस्तक छल। फिरदौस एक दिन मनस्वीकेँ कहने छलीह, “लोक हमरा कश्मीरी बुझैत अछि, ठीक अछि; मुदा ओहि एक शब्दमे हमर माता-पिताक कथा, अपन श्रम, अपन जिज्ञासा सभ समा नहि सकैत।” मनस्वी उत्तर देने छलि जे एहि बातक अर्थ ओ स्वयं अपन अभिलेखक त्रुटिसँ बुझैत छथि। दुनू स्त्रीक जीवन अलग छल, मुदा पहिचानकेँ केवल एक खानेमे कैद करबाक विरोध समान छल।

जूनक पहिल सप्ताह निरंजनक घरमे टेलिभिजनक समीप पूरा परिवारक आसन निश्चित भऽ गेल। चन्द्रयान-दोसर अभियानक तिथि निकट छल। अवनि एकटा छोट कागजपर लिखलक—“प्रक्षेपण, पृथ्वीक कक्षा, चन्द्रक दिशा, चन्द्रक कक्षा, अवतरण।” ओ प्रत्येक चरणक बगलमे खाली जगह छोड़लक। मैत्रेयी ओकरा पुछलीह जे किएक ओ उत्सवक पोस्टर नहि बनबैत अछि। अवनि कहलीह, “ई काजमे उत्सव तखन धरि अधूरा अछि जखन धरि जाँच चलैत अछि।” निरंजन ओकरा सँ इमानदारीक एहि भाषा सुनिकय प्रसन्न भेलाह। मुदा हुनकर कार्यालयमे कतेको लोक विफलताक भय सँ उत्सवमे सेहो निश्चिन्त नहि रहैत छलाह। विज्ञानीक साहस निश्चिन्तता नहि, अनिश्चितताक संग काज करबाक सामर्थ्य होइत छैक।

पन्द्रह जुलाईक निर्धारित प्रक्षेपण तकनीकी कारणसँ स्थगित होयबाक समाचार आएल। समाचार-माध्यमक किछु शीर्षकमे ‘असफलता’ शब्द तुरन्त चमकि उठल। निरंजन अवनिकेँ फोन कएलनि, “गणना फेर जाँचल गेल अछि। यान उड़ल नहि अछि; एखन विफल अवतरणक प्रश्न नहि। समयपर जोखिम देखिकय प्रक्षेपण रोकनाइ सेहो काजक एक आवश्यक हिस्सा अछि।” अवनि अपन दीवालपत्रक रिक्त स्थानमे लिखलक—“नियोजित उड़ान स्थगित, सुधारक बाद पुनः प्रयत्न।” विद्यालयक एक साथी कहलक जे वैज्ञानिक डरा गेलाह। अवनि उत्तर देलक, “जँ ओ नहि डरितथि तँ खतरा किएक जाँचितथि?” ओकर शिक्षक दुनू बात सुनि कहला जे डर आ सावधानीक अन्तर विज्ञानक आरम्भिक पाठ अछि।

बाइस जुलाई, दू बजिकय तिरालीस मिनटपर, श्रीहरिकोटासँ चन्द्रयान-दोसर अभियान उड़ल। रेवती न्यायालयक बरामदामे छलीह, मुदा फोनपर समाचार देखिते पिता कैं सन्देश पठेलनि। शिवनारायण उत्तर देलनि, “एहि पीढ़ीक बालक सभ हमरा सँ बेसी दूरक आकाश पढ़त।” जोधपुरमे फिरदौसक कक्षमे छात्रसभ ताली बजौलनि। रूहानी श्रीनगरक घरसँ फोनपर कहलीह जे ओहो प्रसारण देखलीह। दुनू बहिनक गपमे कोनो राजनीति नहि छल। चन्द्रयान धरतीक कक्षामे पहुँचल, आ ओकर संगे कतेको बालकक प्रश्नो आकाश दिशि उठल।

ओही दिन मरुधरक प्रवेश कार्यालयमे रूहानीक आवेदनक प्रारम्भिक स्वीकृति-पत्र जारी भेल। ओकर विषय भौतिकी रहत, बशर्ते विद्यालयक मूल प्रमाणपत्रक सत्यापन पूरा हो। पत्रमे निर्धारित समय, मूल कागज प्रस्तुत करबाक नियम आ अपूर्णता भेला पर उपलब्ध वैकल्पिक जाँचक प्रक्रिया लिखल छल। फिरदौस रूहानीकेँ कहलीह, “हमर परिचयक आधारपर किछु नहि माँगिह। जे सभ विद्यार्थीक अधिकार अछि, ओहि आधारपर आवेदन करिह।” रूहानी उत्तर देलीह, “हम नियम मानब, मुदा विद्यालयमे एक प्रमाणपत्रक नाममे पिताक उच्चारण गलत लिखल अछि। सुधारक आवेदन देल अछि।” फिरदौस हँसलीह, “देखू, फेर एकटा नामक प्रश्न आयल।”

दिल्लीमे नूर जतय २०१९ क शिक्षण-संस्थानक समाचारक लेल किछु विश्वविद्यालयक अभिलेख पढ़ैत छलीह। हुनका पता छल जे फिरदौसक परिवार श्रीनगरमे अछि। ओ पुछलीह जे ओहि परिवारसँ महिला-शिक्षाक विस्तृत बातचीत भऽ सकैत अछि कि नहि। फिरदौस अनुमति लऽ भगिनीकेँ कहलनि जे पत्रकार प्रश्न पूछय चाहैत छथि; उत्तर देब वा नहि देब ओकर स्वतंत्र निर्णय अछि। रूहानी फोनपर नूरकेँ कहलीह, “आहाँ हमर पढ़ाइपर लिखू, मुदा हम जे कोनो चुनावमे की सोचैत छी से हमर गणितक अंकर स्थान नहि लेत।” नूर हँसलीह। किछु पत्रकारक लेल ई सामान्य वाक्य छल; नूरक लेल ई अपन पेशाक सीमा याद रखबाक चेतावनी बनल।

जुलाईक अन्तिम सप्ताह मरुधरमे छात्रावासक कोठरी बाँटबाक प्रक्रिया आरम्भ भेल। मनस्वी विद्यार्थीक सहायता-मेजपर बैसलीह। ओ एक-एक विद्यार्थीकेँ लिखित नियम दैत छलीह। छात्रावासमे रहनिहार एक निर्धन छात्रक नामक वर्तनी गलत छल; मनस्वी आवेदन सुधारि देलीह। सौरभ पुस्तकालयक ओरसँ नब विद्यार्थीक सूची बनबैत छल। फिरदौस रूहानी

लेल एक खाली कोठरीक सूचना देखलीह, मुदा ओकरा सुरक्षित राखय लेल व्यक्तिगत अनुरोध नहि कएलनि। हुनका पता छल जे संस्थागत पक्षपात छोट स्वार्थसँ शुरू भऽ सकैत अछि, भले अपन मनमे ओकर नाम सहायता रखल हो।

ओहि साँझ शिवनारायण रेवतीसँ टेलिफोनपर कहलनि जे २००० क पहिल मुकदमाक समय कियो कल्पना नहि करैत छल जे दू दशक पछाति हर विद्यार्थी अपन फोनमे कतेको अभिलेख राखत। रेवती कहलीह, “फोनमे कागज राखल आसान अछि, ओकर मूल स्रोत आ समय सिद्ध करब कठिन।” पिता पुछलनि, “जँ ककरो फोन बन्द भऽ जाए तँ?” रेवती उत्तर देलीह, “तखन अन्य विधि खोजब पड़त—डाक, कार्यालयक प्राप्ति, साक्षीक पत्र, आधिकारिक अभिलेख। तकनीक सुविधा होइत अछि, अधिकारक एकमात्र दुआरि नहि।” हुनका एहि उत्तरक आगामी वर्षमे बहुत पैघ परीक्षा देबय पड़त, एखन ओ बात नहि जनैत छलीह।

अगस्तक पहिल सप्ताहमे फिरदौसकेँ श्रीनगरक घरसँ एक छोट फोन आयल। शिरीन कहलीह जे घरक आसपास असामान्य चहलपहल अछि, यात्री सभ लौटि रहल छथि, विद्यालयक कार्यक्रम स्थगित कएल जा रहल अछि। ओ बेसी समय गप नहि कऽ सकलीह। फिरदौस सामान्य ढंगसँ कहलीह, “रूहानीकेँ कहू, प्रवेशक कागज सुरक्षित रखथि।” फोन कटि गेल। अगिला दिन अनेक बेर प्रयास कएलनि, मुदा बात नहि भऽ सकल। कोनो खबरक अभावमे मन अपनहि भीतर अनेक कथा रचैत अछि। फिरदौस अपन कक्षमे बैसि पाठ्यक्रमक एको पंक्ति पढ़ि नहि पाबि रहल छलीह। एखन धरि हुनका लेल घाटीक हाल सरकारी निर्णयक समाचारसँ बेसी, अपन परिवारक कुशलक अनुत्तरित प्रश्न छल।

पाँच अगस्तक संसदक घटनाक समाचार विश्वविद्यालयमे बहुत तेजीसँ फैलल। जम्मू-कश्मीरक विशेष संवैधानिक व्यवस्थामे परिवर्तन आ राज्यक पुनर्गठन सम्बन्धी प्रस्तावपर देशभरि समर्थन, असहमति, अपेक्षा आ चिन्ता छल। भोजनालयक एक समूह कहैत छल जे एकरासँ समान कानूनी व्यवस्था आ विकासक नव अवसर खुलत। दोसर समूह पूछैत छल जे प्रतिनिधित्व आ स्थानीय सहमतिक प्रश्नकेँ केना सुना जाएत। विवेक पुछलक जे संचार बाधित भेला पर साधारण विद्यार्थी अपन परीक्षा-सूचना केना प्राप्त करत। एक युवक ओकर प्रश्नकेँ

राष्ट्रीय निर्णयक विरोध कहि दैत अछि। फिरदौस पहिल बेर गम्भीर स्वरमे कहलीह, “विद्यार्थीक परीक्षा पूछब राष्ट्रक विरोध नहि। नीति पर असहमति राखब आ हिंसाक समर्थन करब एक समान नहि। पहिले प्रश्न सुनू।” भोजनालय शान्त भऽ गेल, मुदा सहमति नहि भेल।

ओहि दिन फिरदौसक अध्यापन-समयमे विद्युत-चुम्बकीय तरंगक विषय छल। ओ श्यामपटपर लहरक चित्र बनौने छलीह, मुदा एक छात्र पुछलक, “महोदया, सन्देश नहि पहुँचैत अछि तँ तरंग कतय जाइत अछि?” कक्षामे किछु लोक हँसलाह, किछु बुझलाह जे प्रश्न वैज्ञानिक उदाहरणसँ बाहर सेहो अछि। फिरदौस कहलीह, “यन्त्रक सेवा, भौतिक तरंग आ मनुष्यक पहुँच अलग बात। विज्ञान जे साधन देलक, ओकर उपयोग समाज अपन व्यवस्था अनुसार करैत अछि। हम कक्षा मे भौतिकी पढ़ाउ, मुदा मनुष्यक दुख केलक विधा नहि पुछैत।” ओ पाठ पर लौटि गेलीह; हाथमे खड़िया छल, मन श्रीनगरक बन्द फोनक कात।

मरुधरक कुलसचिव कार्यालयमे नव शैक्षणिक सत्रक प्रवेशक अन्तिम तिथि निकट छल। रूहानीक नाम प्रारम्भिक चयन सूचीमे छल, मुदा मूल प्रमाणपत्रक मिलान, विद्यार्थीकेँ उपस्थित होयब आ शुल्कक शेष प्रक्रिया करब बाकी छल। कार्यालयक सहायक महेश गुप्ता नियमक अनुसार स्मरण-पत्र भेजबाक सूची बना रहल छलाह। फिरदौस पहुँचिकय पूछलीह जे असाधारण परिस्थितिमे कागज नहि पहुँचि सकला पर की प्रावधान अछि। गुप्ता कहला, “हम नियम बदलि नहि सकैत छी। अधिकारी लिखित प्रार्थनापर विचार करि सकैत छथि। मुदा विद्यार्थीकेँ प्रार्थना तऽ पठेबाक पड़त।” फिरदौस कहलीह, “हम भगिनीक बिनती लिखि देब उचित नहि। मुदा जे सूचना हमरा लग अछि, ओकरा संस्थाकेँ औपचारिक रूपसँ देब चाहैत छी।” ओ अपन नामसहित, बिना व्यक्तिगत विशेषाधिकार माँगने, लिखित सूचना जमा कएलनि।

सौरभकेँ ई सभ देखिकय पछिला वर्ष अपन नियुक्तिक पत्रक प्रतीक्षा स्मरण आयल। ओ फिरदौसकेँ कहलक, “जँ ककरो अर्जीक दुआरि बन्द हो, ओकर अधिकारक माप डाकक गतिसँ नहि होयबाक चाही।” फिरदौस उत्तर देलीह, “मुदा नियमक समय सेहो आवश्यक अछि। दोसर विद्यार्थी प्रतीक्षा करैत छथि। हमर भगिनी लेल न्याय माँगैत छी तँ हुनक अधिकार सेहो देखय पड़त।” एहि संवादमे मनस्वी सामिल भेलीह। ओ प्रस्ताव देलीह जे कुलसचिव

विश्वविद्यालयक सभ बाहरी विद्यार्थी लेल समान रूपसँ विलम्ब-सम्बन्धी निर्देश जारी करथि, न कि कोनो एक शिक्षकक परिवारक नामपर सुविधा। फिरदौस एहि सुझावकेँ तुरन्त स्वीकार कएलनि।

श्रीनगरक घरमे रूहानीक दिन अलग प्रकारसँ बीति रहल छल। शिरीनक घुटनाक उपचार चलि रहल छल, घरे छोट भायजि सेहो छल। विद्यालयसँ भेटल अंकपत्र आ जन्मतिथिक दस्तावेज ओ एक लिफाफामे राखने छलीह। कतहु सम्पर्कक अवसर भेटय तँ सूचना पहुँचायब, ई आशा छल। बाबूजी यूसुफ कहला, “जँ पढ़ाइ एहि वर्ष नहि भेल तँ जीवन खत्म नहि होएत।” रूहानी चुप रहलि। ओकर चिन्ता केवल वर्षक नष्ट होयब नहि छल; जकरा ओ स्वतन्त्र मेहनतसँ अर्जित अवसर बुझने छल, तकर निर्णय कोनो अनिश्चित अनुपस्थितिक आधारपर भऽ जाएत, से ओकरा अन्याय बुझाइत छल। ओ कापीमे प्रवेशपत्रक तिथि, विद्यालयक पावती आ सम्पर्कक प्रयास लिखैत रहलि, जतेक ओकर स्मृतिमे रहि सकल।

दस अगस्तक बाद विश्वविद्यालयमे एक व्याख्यान आयोजित होयबाक छल—“संवैधानिक परिवर्तन आ संघीय व्यवस्था”। कुलसचिव कहला जे विषय संवेदनशील अछि, अतः आमन्त्रित विशेषज्ञ सभकेँ लिखित रूपसँ संतुलित चर्चा करबाक अनुरोध पठाओल जाए। रेवती दिल्लीसँ जुड़बाक निमन्त्रण स्वीकार कएलनि। व्याख्यानमे एक प्राध्यापक परिवर्तनक संवैधानिक आधारक समर्थन करैत छथि; दोसर स्थानीय प्रतिनिधित्वक प्रश्न उठबैत छथि। रेवती स्पष्ट कहलीह जे संसदक विधायी काज, कार्यपालिकाक सुरक्षा-व्यवस्था आ व्यक्तिक शिक्षा-अधिकारक न्यायिक उपचार अलग-अलग विधिक समस्या छथि। सभक उत्तर एकहि नारा सँ नहि भेटत। विद्यार्थीक बीच बहस तीव्र भेल, मुदा अध्यक्ष प्रत्येक वक्ताकेँ बोलबाक अवसर देलनि।

व्याख्यानक बाद एक युवक फिरदौस लग आयल। ओ कठोर स्वरमे पुछलक, “अहाँ सरकारक निर्णयक पक्षमे छी कि विरोधमे?” फिरदौस पुछलीह, “अहाँ हमर पढ़ाओल कक्षामे उपस्थित रहैत छी?” युवक कहलनि, “हँ।” फिरदौस कहलीह, “तखन अहाँ जानैत छी जे हम प्रश्नक उत्तर प्रमाणसँ माँगैत छी। अपन परिवारक कुशल जानबाक इच्छा कोनो राजनीतिक मतदानपत्र नहि अछि।” युवक किछु देर चुप रहल। फेर कहलक, “हमर चाचा सुरक्षा-सेवामे

छथि। हुनका सेहो जोखिम अछि।” फिरदौस उत्तर देलीह, “अहाँक चाचाक कुशलता लेल हमर चिन्ता कम नहि। मुदा एतय अपन भगिनीक पढ़ाइ लेल चिन्ता करबाक अधिकार सेहो अछि।” दुनूकेँ एक-दोसरक पूर्ण सहमति नहि भेटल, मुदा संवाद समाप्त होइत समय अपमान नहि छल।

रूहानीक नामक प्रतीक्षा-सूची पन्द्रह अगस्तक साँझ बदलल गेल। कम्प्यूटर-पटपर ओकर पाँतिमे ‘अपूर्ण सत्यापन’ देखाओल गेल। मनस्वी प्रतिलिपि सुरक्षित कएलनि, मुदा ओहि दिनक विवरणकेँ समाचारक रूपमे सार्वजनिक नहि कएलनि; विद्यार्थीकेँ अपन जानकारीक गोपनीयताक अधिकार छल। कुलसचिवक कार्यालय कहलक जे सूची अन्तिम निरस्तीकरणक आदेश नहि, केवल प्रक्रियाक अवस्था अछि। फिरदौस एहि पंक्तिक अर्थ बारम्बार पढ़लीह। किछु विद्यार्थी कहैत छलाह—“नियम सभ लेल एक।” मनस्वी उत्तर देलीह, “नियमक समानता आ नियम लागू होयबाक वास्तविक अवसरक समानता अलग होयत। विश्वविद्यालयक उत्तरमे ई दूनू बात देखल जाए।”

अगस्तक दोसर पखवाड़ामे नूर जतय समाचार-लेखन लेल जोधपुर अएलीह। ओ फिरदौससँ मिलि कहलीह जे देशभरि प्रचारित राजनीतिक बहसक बीच विद्यार्थी आ शिक्षकक व्यक्तिगत जीवनक कथा अक्सर लुप्त भऽ जाइत अछि। फिरदौस कहलीह, “हमर परिवारक चिंता लिखू तँ ओहि एक मामलाकेँ सम्पूर्ण कश्मीरक प्रतीक नहि बनाउ। अलग घरमे अलग परिस्थिति अछि। कोनो परिवार आर्थिक अवसरक आशामे परिवर्तन देखैत अछि, कोनो संचार-बाधासँ चिन्तित अछि, कोनो हिंसासँ पीड़ित अछि। सभक भाषा अलग।” नूर उत्तर देलीह, “हम अपन लेखमे एहि भेदकेँ सुरक्षित राखब।” ओ रूहानीक चित्र छपेबाक अनुमति माँगलीह; फिरदौस कहलनि जे भगिनीक स्वीकृति बिना नहि। नूर चित्र छोड़ि देलीह।

रेवती एक दिन भटनागरकेँ फोनपर कहलीह जे संस्थाक २०१८ क सौरभ-प्रकरणक अनुभव उपयोगी होएत। “आवश्यकता ई नहि जे अदालत तुरन्त प्रवेश दऽ दे,” ओ कहलीह, “प्रश्न ई अछि जे प्रशासन अपन घोषित नियमक भीतर असाधारण परिस्थिति देखबाक अधिकारकेँ उपयोग कएलक कि नहि।” भटनागर उत्तर देलनि, “हम सभ एकटा विद्यार्थीक नामपर नियम तोड़ि नहि सकैत।” रेवती कहलीह, “ठीक। तखन निर्णय लिखू जे नियममे

उपलब्ध विकल्पकेँ किएक अस्वीकार करैत छी। कारण लिखबासँ निर्णय पारदर्शी बनैत अछि।” भटनागर फोन राखिकय पुरान समिति-अभिलेख खोललनि। हुनका स्मरण भेल जे सौरभक मामलामे अस्पष्ट टिप्पणी संस्थाकेँ एतेक दिन तकलीफ देने छल।

सितम्बरक पहिल दिन जोधपुरमे एक परिचित डाकिया फिरदौसक घरक दुआरि पर पत्र दऽ गेल। लिफाफाक किनार मटमैला छल, मुदा मोहर स्पष्ट छल। रूहानी अपन हाथसँ लिखने छलीह—“हमर प्रमाणपत्र सभ सुरक्षित अछि। विद्यालयक सुधार-पत्र प्राप्त होमयमे विलम्ब अछि। अनेक दिन सम्पर्क सम्भव नहि भेल। हम यात्रा करबाक उपाय देखैत छी; कृपया प्रवेश कार्यालयकेँ खबर देब।” पत्रक तिथि अगस्तक अन्तिम सप्ताहक छल। फिरदौस कागज हाथमे लऽ देर धरि बैसलीह। हुनका पहिल बेर भगिनीक अक्षरक माध्यमसँ ओकर कुशलता बुझायल। ओ पत्रक प्रतिलिपि बनौने छलीह, मुदा ककरो समक्ष एकरा भावनात्मक तमाशा नहि बनौलनि। तुरन्त कुलसचिवक कार्यालयमे प्रार्थना देलीह जे आवेदिकाक लिखित इच्छा आ विलम्बक परिस्थिति अभिलेखमे रखल जाए।

गुप्ता कार्यालयमे पत्र देखिकय कहला, “ई मूल आवेदिकाक लिखावट अछि, मुदा हम एहि सँ टेलीफोन बन्द होयबाक सम्पूर्ण प्रमाण नहि मानि सकैत छी।” फिरदौस उत्तर देलीह, “अहाँ जे मानैत छी तकरा अभिलेखमे लिखू; हमर माँग ई नहि जे पत्रमे लिखल प्रत्येक बात प्रमाणित मानल जाए। हमर माँग ई अछि जे निर्णयक पहिने एहि पत्रपर विचार हो।” गुप्ता पत्रक प्राप्ति-मोहर लगा देलनि। ओ कहलनि जे अवशिष्ट सीट लेल अगिला सूची निकालयब आवश्यक अछि। फिरदौस हुनकर प्रशासनिक कठिनाइ स्वीकार कएलनि; मुदा कहलीह जे विवादित सीटपर अंतिम निर्णयक कारण लिखित भेटबाक चाही। गुप्ता पहिल बेर एहि अनुरोधकेँ व्यक्तिगत कृपा नहि, अभिलेखक विषय बुझलनि।

पाँच सितम्बरक दिन विश्वविद्यालयक उपसमिति रूहानीक आवेदनपर विचार कएलक। किछु सदस्य कहला जे निश्चित तिथिपर उपस्थित नहि होयब पर्याप्त कारण अछि। मनस्वी, जे निर्णयकर्ता नहि छलीह, विद्यार्थी-सहायता पक्षसँ ज्ञापन देलीह—विदेश वा दूर प्रदेशसँ आवयवला विद्यार्थीक विलम्बपर समान नीति बनाओल जाय, प्रत्येक मामलाक स्वतंत्र कारण देखल जाए, आ खाली आसनकेँ अनिश्चित काल धरि नहि रोकल जाए। समितिक उत्तरमे

लिखल गेल जे प्रमाण-पत्र उपलब्ध नहि होयबाक कारण सूचीमे नाम अगिला चरणमे नहि राखल जा सकल। पत्रमे असाधारण परिस्थितिक परीक्षणक उल्लेख नहि छल। फिरदौस एहि उत्तरकेँ पढ़ि किछु समय चुप रहलि। रूहानीक घरे पत्र पहुँचबामे आरो विलम्ब होयत, से हुनका बुझाइत छल।

रेवतीकेँ दिल्लीमे सभ कागज पठाओल गेल। ओ पहिने एक बात साफ कएलनि—“फिरदौस, अहाँ स्वयं न्यायालयमे आवेदिका बनि नहि सकैत छी, जँ वैधानिक कारण नहि अछि। रूहानीक पक्षसँ अधिकारपूर्वक प्रतिनिधित्वक प्रश्न स्पष्ट चाही।” फिरदौस कहलीह जे भगिनीक एक हस्तलिखित अनुमति पुरान आवेदनक संग उपलब्ध अछि, मुदा ओ प्रवेश-प्रक्रियाक सामान्य सहायता लेल देल गेल छल। रेवती उत्तर देलीह, “ओहि अनुमति पर पूर्ण न्यायिक याचिका लिखब उचित नहि। हम प्रथम विश्वविद्यालयकेँ विस्तृत प्रतिनिधित्व पठाबैत छी। जँ रूहानीक हस्ताक्षरवला स्वीकृति नव रूपमे नहि भेटल तँ उपाय सोचबाक पड़त।” एहि सावधानीसँ फिरदौसक अधीरता बढ़ल, मुदा ओ रेवतीक दायित्व बुझलीह।

सात सितम्बरक भोर बहुतो घरमे चन्द्रयान-दोसरक ‘विक्रम’ अवतरणक प्रसारण देखल जा रहल छल। निरंजनक परिवार राति भरि जागल छल। अवनि अपन विज्ञान-कापी लऽ टेलिभिजनक सामने बैसल छलीह। उतरबाक प्रक्रिया अपेक्षित गति धरि पहुँचल, मुदा अन्तिम चरणमे यानसँ सम्पर्क टूटि गेल। कक्षामे पढ़ाओल गणना आ आकाशमे घटित वास्तविक घटना एक समान नहि ठहरल। मैत्रेयीक आँखि भीजि गेल, निरंजनक चेहरापर दुख छल, मुदा ओ अवनिकेँ तुरन्त बुझौलनि जे चन्द्रयानक परिक्रमा-यान काज करि रहल अछि; अवतरण-प्रयासक असफलता आ सम्पूर्ण वैज्ञानिक अभियानक निरर्थकता एक नहि। अवनि कापीक खाली स्थानमे लिखलक—“सम्पर्क टूटल; जाँच जारी।”

जोधपुरमे फिरदौस राति भरि लगभग नहि सूतल छलीह। एक दिशि वैज्ञानिक अभियानक दुःख, दोसर दिशि परिवारक समाचारक चिन्ता। ओ मनस्वीकेँ कहलीह, “देखू, वैज्ञानिक सम्पर्क टूटलाक बाद यानकेँ दण्डित नहि करैत छथि; डेटा देखैत छथि। हमर विश्वविद्यालय मात्र सम्पर्क नहि होयबाक कारण विद्यार्थीक भविष्यक निर्णय कऽ देलक।” मनस्वी उत्तर देलीह, “तुलना सुंदर अछि, मुदा अदालतमे हमरा नियम आ अभिलेख चाही। विज्ञानक रूपकसँ प्रार्थना

स्वीकार नहि होएत।” फिरदौस मुस्केलीह। ई मित्रताक विशेषता छल—दुनू एक-दोसराक पीड़ा सुनैत छलीह, मुदा स्नेहकेँ प्रमाणक स्थान नहि दैत छलीह।

दस सितम्बरक दिन रूहानीक एक सम्बन्धी, जे जम्मू धरि पहुँचने छलाह, सार्वजनिक दूरभाष-सेवाक उपलब्ध अवसरसँ फिरदौसकेँ संक्षिप्त सन्देश देलनि। शिरीनक स्वास्थ्य सामान्य अछि, रूहानी आगामी सप्ताहमे राजस्थान पहुँचबाक प्रयास करैत छथि, मुदा यात्राक निश्चित तिथि नहि। फिरदौस सन्देश लिखित रूपमे दर्ज कएलनि—के कहल, कहिया कहल, की निश्चित अछि, की नहि। एहि बीच विश्वविद्यालय खाली सीटपर दोसर प्रतीक्षारत छात्रकेँ प्रवेश देबाक सूचना जारी केलक। ओ छात्र, ओमप्रकाश बैरवा, एक निर्धन परिवारसँ छल। ओकर पिता मजदूरी करैत छलाह; ओहो त्वरित निर्णयक पात्र छल। विवाद आब दू व्यक्तिक वास्तविक अवसरक बीच उठल; एकर सरल पक्ष-विपक्ष नहि रहल।

रेवती ओमप्रकाशक नाम सुनिते अपना सहायककेँ कहलीह जे ओकर हित बिना सुनने रूहानीक पक्षमे कोई अन्तरिम आदेश माँगब उचित नहि। ओ लिखित आवेदन तैयार कएलनि—विश्वविद्यालय अपन नियमक अनुरूप रूहानीक परिस्थिति आ ओमप्रकाशक अर्जित अधिकार दुनूक विचार करय; उपलब्ध आन सीट, अगिला चरणक स्थानान्तरण अथवा समान शिक्षण अवसरक सम्भावना देखय। ओ विशेष रूपसँ ककरो प्रवेश तत्काल रद्द करबाक माँग नहि कएलनि। फिरदौस एहि बातसँ सहमत भेलीह। हुनका याद छल जे कखनो अपन प्रिय व्यक्तिक न्यायक माँगमे दोसरक जीवन अदृश्य भऽ जाइत अछि।

अगिला सप्ताह रूहानी अन्ततः अपन पिता यूसुफक संग जयपुर पहुँचलि, तकर बाद जोधपुर अएलीह। फिरदौस रेलवे स्थानकपर ठाढ़ छलीह। भगिनीकेँ देखिते ओ दौड़ि गेलीह, मुदा दुनू पहिने किछु कहि नहि सकलीह। यूसुफक आँखिमे थकान छल। ओ कहला जे घरक अवस्था सम्बन्धी बहुत बात कहबाक अछि, मुदा पहिने लड़कीक प्रवेशक स्थिति बुझा लिअ। रूहानी अपन झोलामे मूल अंकपत्र आ सुधार-अनुरोधक पावती रखले छलीह। ओ नहि चाहैत छलि जे ओकरा केवल पीड़ित मानल जाए; ओ मेहनत करि पढ़यवाली छात्रा छल। फिरदौस ओकरा आब प्रवेश-कार्यालय पहुँचबाक निर्णय स्वयं लेबय देलीह।

कुलसचिवक कोठरीमे रूहानी पहिल बेर स्वयं उपस्थित भेलीह। गुप्ता हुनका बैठबाक कुर्सी देलनि। रूहानी प्रश्न कएलनि, “हमर आवेदन मूल सूचीमे स्वीकार भेल छल। देर भेल, हम मानैत छी। मुदा ई विलम्बक कारणक सुनबाई कतय भेल?” कुलसचिव कहला, “समितिक नियमक अनुसार निर्धारित तिथि रहैत अछि। ओकर उल्लङ्घनक बाद दोसर विद्यार्थीकेँ अवसर देब पड़ैत अछि।” रूहानी कहलीह, “ओ विद्यार्थीकेँ हटेबाक हम नहि कहैत छी। हम ई पूछैत छी जे नियममे असाधारण परिस्थिति लेल जे व्यवस्था लिखल अछि, ओ किएक नहि देखल गेल?” कुलसचिव गुप्ताक दिशि देखलनि। ई प्रश्न फिरदौस पहिनेसँ पुछैत छलीह, मुदा स्वयं आवेदिकाक मुखसँ सुनला पर ओकर अर्थ बदलि गेल।

बैठकक बाद यूसुफ कहला, “बेटी, जँ एहि वर्ष नहि भेल तँ कश्मीर लौटि जाइब।” रूहानी धीमा स्वरमे उत्तर देलीह, “लौटब पड़त तँ लौटब। मुदा पहिले लिखित उत्तर चाही। ई केवल हमर स्थानक प्रश्न नहि; जे विद्यार्थी दोसरे वर्ष एना फँसत, ओकरो अधिकारक नियम स्पष्ट हो।” यूसुफ अपन बेटीकेँ देखि चुप भऽ गेलाह। हुनका गर्वो छल, चिन्तो। ओ ने राजनीति करय आएल छलाह, ने न्यायालयमे बड़ तर्क देबय; ओ केवल लड़कीक पढ़ाइ सुरक्षित देखब चाहैत छलाह। मुदा ओहि छोट उद्देश्य लेल हुनका सार्वजनिक संस्थाक पूरा प्रक्रियासँ गुजरय पड़ि रहल छल।

अन्ततः विस्तृत अभ्यावेदनमे रूहानी अपन हस्ताक्षर कएलनि। फिरदौस केवल सहायकक रूपमे उपस्थित छलीह; रेवतीक कार्यालयक प्रतिलिपि दिल्ली पठाओल गेल। रेवती जाँचलनि जे स्वीकृति-पत्रक भाषा स्पष्ट अछि, कागजसभक सूची पूरा अछि आ व्यक्तिगत चिकित्सा-संबंधी सूचना अनावश्यक रूपसँ संलग्न नहि। ओ सहायककेँ कहलीह, “हम अदालतकेँ विद्यार्थी बनयवाली लड़कीक जीवनक सम्पूर्ण इतिहास नहि देब। जे निर्णयक उचित परीक्षण लेल चाही, केवल ओतबे।” एहि एक पंक्तिमे पुट्टस्वामीक निजता-सिद्धान्तक व्यावहारिक अर्थ छल।

अक्टूबरक पहिल सप्ताहमे विश्वविद्यालयक पुनर्विचार-समितिक उत्तर आएल। ओहि पत्रमे लिखल छल जे रूहानीक विलम्बक परिस्थितिपर विचार कएल गेल, मुदा रिक्त स्थान भरि चुकल अछि; अगिला वर्ष आवेदन करबाक अनुमति रहत। कोनो अन्य विकल्पक विवेचना नहि

छल, न ई स्पष्ट छल जे असाधारण परिस्थिति सम्बन्धी नियमक कोन मापदण्ड लागू भेल। रूहानी पत्र पढ़िकय कहलीह, “हमरा जे उत्तर देल गेल, ओ निर्णयक पुनरावृत्ति अछि; कारण नहि।” फिरदौस ओकरा छातीसँ लगा लेलीह। ओ कखनो अदालत धरि बात लऽ जायब नहि चाहने छलीह। मुदा पत्रक अपूर्ण कारण हुनका स्वयं निर्णयक वैधानिकतापर प्रश्न करय बाध्य केलक।

रेवती दिल्लीसँ जोधपुर पहुँचलि तँ शिवनारायण सेहो साथ छलाह। ओ उच्च न्यायालयक सुनबाईमे बहस करबाक स्थिति मे नहि छलाह; बेटी संग पुरान मित्रसभसँ भेटबाक उद्देश्य छल। रेवती पहिल भेंटमे रूहानीकेँ पुछलीह, “अहाँ चाहैत छी जे न्यायालय रद्द कएल प्रवेशकेँ तत्काल बहाल कऽ दे?” रूहानी उत्तर देलीह, “हम चाहैत छी जे हमर कागज न्यायसँ पढ़ल जाए। जँ सीट नहि बचल अछि तँ वैध विकल्प बताओल जाए। हम ओमप्रकाशक सीट छीनय नहि आएल छी।” रेवती मुस्केलीह। शिवनारायण सुनि कहला, “वकील जँ ग्राहकक वास्तविक इच्छा नहि सुनय, तँ मुकदमा ग्राहकक नामपर वकीलक अपन कल्पना बनि जाएत।”

याचिकामे मरुधर विश्वविद्यालयक उपयुक्त प्राधिकारीक आदेशकेँ चुनौती देल गेल। रेवती मूल चयन-सूची, सत्यापनक नियम, रूहानीक विद्यालयक कागज, समयपर सम्पर्क नहि भऽ सकबाक प्रमाणक सीमा, डाकक उपलब्धि-तिथि आ समितिक दू उत्तर क्रमबद्ध कएलनि। ओ कहलीह जे जम्मू-कश्मीरक अगस्तक संवैधानिक निर्णयपर न्यायालयसँ कोनो निष्कर्ष नहि माँगल जा रहल अछि। विवाद राजस्थानक सार्वजनिक विश्वविद्यालय द्वारा अपन प्रवेश-नियम लागू करबाक विधिकता सँ संबंधित अछि। एहि सीमाक निर्धारण अत्यन्त आवश्यक छल, कारण देशव्यापी राजनीतिक विषयक आकर्षणमे छोट शिक्षा-विवादक सटीक उपचार छूटि सकैत छल।

पहिल सुनबाईमे विश्वविद्यालयक अधिवक्ता श्रीधर पुरोहित कहला, “माननीय न्यायालय, एक छात्राक विलम्बक आधारपर सम्पूर्ण प्रवेश-क्रम बाधित नहि भऽ सकैत। छात्राक स्थिति दुखद हो, मुदा नियम सभपर समान लागू होइत अछि।” रेवती कहलनि, “हम समानता नहि नकारैत छी। विश्वविद्यालयक अपन नियममे असाधारण बाधा भेला पर विवेचनाक सम्भावना

अछि। ओहि अधिकारक वास्तविक उपयोग भेल कि नहि, हमर प्रश्न ई अछि।” न्यायाधीश पुछलनि, “आसनी खाली अछि?” पुरोहित उत्तर देलनि, “प्रारम्भिक विवरणमे नहि।” रेवती कहलीह, “तखन जे विद्यार्थी वैध प्रवेश पाबि चुकल, ओकरा हटेबाक अन्तरिम प्रार्थना हम नहि करैत छी।”

न्यायाधीश फेर पुछलनि, “रूहानी कौलकेँ लिखित सूचना समयपर पहुँचबाक सम्भावना कहाँ बाधित भेल, ई कतेक प्रमाणित अछि?” रेवती डाकक पत्र, विद्यालयक प्राप्ति-रसीद आ विश्वविद्यालयक अभिलेखक प्रतिलिपि देखौलनि। ‘ई सबटा परिस्थिति सिद्ध करैत अछि, एना हम नहि कहैत छी,’ ओ स्पष्ट कएलनि, “मुदा ई निश्चित देखबैत अछि जे आवेदिका बिना कारण निष्क्रिय नहि बैसल छलीह। समितिक निर्णयमे उपलब्ध कागजक परीक्षण देखाइत नहि अछि।” न्यायाधीश कहला, “एकीकृत देशक सामयिक राजनीतिक बहस एहि याचिकाक विषय नहि। विश्वविद्यालयक उत्तरदायित्व आ नियमक शब्द हमरा देखबाक अछि।” अदालतमे बैसल किछु दर्शक निराश भेलाह; हुनका पैघ राजनीतिक वक्तव्य सुनबाक अपेक्षा छल। रूहानी एहि सीमासँ आश्वस्त भेलीह।

विश्वविद्यालयक अधिवक्ता दोसर बिन्दु उठौलनि—जँ एक विद्यार्थीक विलम्बपर राहत भेटत तँ आन बहुतो विद्यार्थी समान माँग करि सकैत छथि। रेवती उत्तर देलीह, “समान परिस्थितिवला सभ छात्रकेँ समान नियम भेटबाक चाही। न्यायालयक समक्ष ककरो खास परिचयक आधारपर छूट नहि माँगल गेल अछि। मुदा विवेकाधिकार देल गेल हो तँ ओकर उपयोग कारणसहित करबाक दायित्व रहैत अछि। सम्भावित अन्य आवेदकक अधिकार कारणहीन आदेशक समर्थन नहि बनि सकैत।” न्यायाधीश एहि उत्तरकेँ अभिलेखमे दर्ज करबौलनि। फिरदौस पाछाँक कतारमे बैसलीह। हुनका अपन छात्रा मनस्वीक पुरान अभिलेखक प्रश्न स्मरण आयल। एकर भाषा भिन्न छल, मूल समस्या समान—व्यक्ति कागजक भीतर अदृश्य नहि बनय।

न्यायालय तत्काल प्रवेश देबाक आदेश नहि देलक। प्रतिवादीकेँ उपलब्ध शैक्षणिक स्थान, समान वैकल्पिक अध्ययन-व्यवस्था आ प्रार्थनापर विचारक वास्तविक आधार सम्बन्धी विस्तृत शपथपत्र प्रस्तुत करबाक समय देल गेल। रूहानी बाहर अबैत पुछलीह, “ई जीत अछि

कि हार?” रेवती कहलीह, “एखन निर्णयक कारण परीक्षणक मार्ग खुलल अछि। न्यायालय विवेकाधिकार अपन हाथमे लऽ प्रत्येक सीट नहि बाँटैत। अहाँक आवेदनपर उचित विचार हो, एहि लेल आब लिखित जवाब चाही।” ओमप्रकाशक नामपर चर्चा भेल तँ रेवती पुनः कहलीह जे ओकर अर्जित प्रवेश अदालतक आदेश बिना प्रभावित नहि कएल जाए। रूहानी एहि वाक्यक समर्थन कएलनि।

ओमप्रकाश बैरवा एहि समस्त विवादमे पहिने ककरो मुखसँ अपन नाम सुनने नहि छल। ओकर पिता ओमप्रकाशकेँ भोरहि कहने छलाह, “पढ़ाइ छोड़ि खेतमे नहि आबिह।” जे आसन ओकरा भेटल छल, ओकर भविष्य आब समाचारमे ‘विवादित सीट’ कहि प्रचारित होयबाक डर छल। मनस्वी ओकरा स्वयंसँ बात करबाक अवसर देलीह। ओमप्रकाश कहलक, “हम ओ छात्राकेँ चिह्नैत नहि। मुदा जँ ओकर संग अन्याय भेल अछि तँ सुधार हो; हमर प्रवेश किएक जाए?” मनस्वी उत्तर देलीह, “अहाँक प्रश्न उचित अछि। दू जीवनक अधिकार सामने अछि, समाधान दोसरकेँ नष्ट कऽ नहि खोजल जाए।” ओमप्रकाश पहिल बेर रूहानीकेँ पुस्तकालयक दुआरि लग भेटलक। दुनू एक-दोसरक नाम कहलनि, मुदा विवादपर बात नहि कएलनि। एहन मौन कखनो वैर नहि, एक कठिन परिस्थिति स्वीकार करबाक शिष्टता होइत छैक।

नवम्बरमे विश्वविद्यालयक शपथपत्र आएल। ओहिमे प्रवेशक संख्या, आवंटित आसन, प्रतीक्षा-सूची आ एक अपरिचालित वैकल्पिक पाठ्यक्रमक विवरण छल। किछु आसन निर्धारित प्रयोगशाला क्षमताक कारण सीमित छल। तथापि शिक्षकसभक आन्तरिक प्रतिवेदनमे एक अतिरिक्त शिक्षण-दल उपलब्ध रहबाक सम्भावना लिखल छल, जे निर्णयक समय विचारमे नहि लेल गेल। रेवती एकरा तुरन्त प्रवेशक अधिकारक प्रमाण नहि कहलीह। ओ कहलीह, “ई विकल्प विचारणीय अछि; लागू हो सकैत अछि कि नहि, सक्षम शैक्षणिक समिति बताओत।” न्यायाधीश संबंधित समिति सँ कारणयुक्त उत्तर चाहलनि। उच्च न्यायालय कक्षाभार, प्रयोगशाला आ शिक्षणमानकक विषयमे विशेषज्ञ समिति बनबाक स्थान नहि लैत, से हुनकर आदेश स्पष्ट करैत छल।

ओही मास नौ नवम्बरक अयोध्या सम्बन्धी सर्वोच्च न्यायालयक ऐतिहासिक निर्णयक समाचार देशभरि पहुँचल। दरभंगामे शिवनारायण अपन पुरान मित्र हाजी सईद आ पण्डित

गौरीशंकरसँ भेंटलाह। दुनूक धार्मिक स्मृति आ भावनामे अन्तर छल, मुदा बजारमे शान्ति राखबाक चिन्ता समान छल। शिवनारायण कहला, “न्यायालय विशिष्ट भूमि-विवादक विधिक निर्णय दैत अछि; मनुष्यकेँ एक-दोसरसँ रोज भेटि समाज जोगेबाक काज अपने करय पड़ैत अछि।” हाजी सईद उत्तर देलनि, “सामाजिक सहमतिक आदेश कागजपर नहि, व्यवहारमे लिखल जाइत अछि।” नूर जतय एहि छोट भेटक समाचार लिखबाक चाहलीह, मुदा शिवनारायण आग्रह कएलनि जे फोटोसँ बेसी हुनका सभक वास्तविक शब्द महत्त्वपूर्ण अछि।

दरभंगामे अनुपमा झा एहि वर्षक नव पाण्डुलिपिमे एक न्यायालयक प्रतीक्षाक कथा लिखि रहल छलीह। ओ नूर जहाँकेँ कहलीह, “लोक अखबार पढ़ि ऐतिहासिक फैसला जानैत अछि, मुदा फैसला सुनलाक बाद चूल्हिपर दाल रखनिहार स्त्रीक दिन के लिखत?” नूर उत्तर देलीह, “अहाँ लिखू; हम रोजनामचा लिखब।” अनुपमा अपन किताबमे फिरदौसक परिस्थितिसँ प्रेरित एक दृश्य लिखलीह, मुदा वास्तविक रूहानीक नाम नहि उपयोग कएलनि। लेखिकाक ध्यान एहि बातपर छल जे समाचारक प्रसिद्धि आ व्यक्तिक निज जीवनक स्वामित्व अलग अछि। ओ रेवतीसँ अनुमति लऽ किछु न्यायालयीन प्रक्रियाक शब्दक अर्थ पूछलीह; कथा बनबैत समय कानूनक अज्ञानक कारण गलत घटना नहि लिखय चाहैत छलीह।

दिसम्बरक पहिल सप्ताहमे रूहानी विश्वविद्यालयक पुस्तकालयमे अस्थायी पाठक-अनुमति पर पढ़ि रहल छलीह। स्थायी विद्यार्थी नहि होयबाक कारण ओ किछु प्रयोगशालामे प्रवेश नहि पबैत छलीह, मुदा पुस्तकालयक सार्वजनिक अध्ययन-कक्षमे बैसबाक अनुमति छल। सौरभ ओकरा एक पुस्तक देलक—चन्द्रमाक भूगर्भीय संरचनापर लेख-संग्रह। रूहानी पन्ना पलटैत पुछलीह, “जे अवतरण-यानसँ सम्पर्क टूटल, ओकर बादो परिक्रमा-यानक चित्र अबैत अछि?” सौरभ कहलक, “हँ। एक भागक असफलतासँ सभ जानकारी नष्ट नहि होइत।” रूहानी पुस्तक बन्द कएलनि। “तखन कागजक एक भाग नहि भेटलासँ हमर पढ़बाक क्षमता समाप्त नहि होयत,” ओ कहलीह। सौरभ उत्तर देलक, “क्षमता नहि। मुदा संस्थाक प्रवेशक विधि अलग अछि। दुनूकेँ मिलायब जरूरी अछि।”

मरुधरक शैक्षणिक समिति अपन अन्तिम प्रतिवेदनमे कहलक जे नियमित प्रथम वर्षक प्रयोगशाला-आधारित आसन सभ भरि चुकल अछि, मुदा मूल प्रवेश विज्ञापनक परिशिष्टमे देल

सीमित ‘विलम्बित पञ्जीकरण’ व्यवस्थाक उपयोग असाधारण परिस्थितिमे कएल जा सकैत अछि, बशर्ते विद्यार्थी आवश्यक अध्यापन आ प्रायोगिक कार्य पूरा करथि। ई सम्भावना पहिनुक उत्तरमे विचाराधीन नहि छल। कुलसचिव एहि त्रुटिक स्वीकार कएलनि। रेवतीकेँ प्रतिवेदन पढ़िते बुझायल जे याचिकाक केन्द्रपर उत्तर आएल अछि—न केवल सहानुभूति, न स्वतः प्रवेश, बल्कि नियमक भीतर एक विशिष्ट वैकल्पिक बाट। मुदा रेवती एहि विकल्पक प्रयोगशाला-सुरक्षा, पाठ्यक्रमक पूर्ति आ आन विद्यार्थीक समान अधिकारक परीक्षण बिना अन्तिम विजय घोषित नहि कएलनि।

उच्च न्यायालयक अगिला सुनबाईमे विश्वविद्यालयक अधिवक्ता कहला जे समिति रूहानी लेल विलम्बित पञ्जीकरणक सिफारिस करैत अछि, जँ ओ शेष प्रायोगिक पाठ पूरा करबाक सन्दर्भमे लिखित सहमति दथि। न्यायाधीश पुछलनि, “ई व्यवस्था एहि विद्यार्थीक व्यक्तिगत परिचयक आधारपर अछि कि घोषित नियमक?” अधिवक्ता उत्तर देलनि, “घोषित नियमक परिशिष्टक आधारपर, आ समान परिस्थितिक अन्य आवेदक लेल सेहो उपलब्ध।” रेवती कहलीह, “तखन निर्णयक मुख्य त्रुटि दूर भेल। हमर पक्ष चाहैत अछि जे अनावश्यक निजी स्वास्थ्य-अभिलेख संस्थाक सार्वजनिक पञ्जीमे नहि राखल जाए।” न्यायाधीश ई प्रश्नो समुचित मानलनि। लिखित आदेशमे योग्य प्राधिकारीक संशोधित, कारणयुक्त निर्णय आ समान नियम लागू करबाक दायित्व दर्ज भेल।

न्यायालय रूहानीक प्रवेश-पत्र स्वयं नहि लिखलक। समिति अपन अगिला बैठकमे वास्तविक शिक्षण-व्यवस्था जाँचिकय विलम्बित पञ्जीकरणक स्वीकृति देलक। रूहानीकेँ छूटल प्रयोगक समय पूरा करबाक तिथि भेटल। ओ ओमप्रकाशक कक्षा मे पहुँचलीह तँ केओ ओकरा मंचपर स्वागत नहि कएलक; ई साधारण प्रवेश छल, जकरा ओ अधिक मूल्य दैत छलीह। ओमप्रकाश अपन कापी एक दिशि खिसका देलक आ कहलक, “एतय बैसू, प्रकाश नीक पड़ैत अछि।” रूहानी मुस्केलीह। कखनो कतेको आवेदन, प्रतिवेदन आ न्यायिक सुनबाईक बाद मनुष्यकेँ बस एकटा साधारण आसन भेटैत छैक।

दिसम्बरक दोसर सप्ताहमे नागरिकता संशोधन अधिनियमकेँ राष्ट्रपतिक स्वीकृति भेटल। देशक अनेक भागमे समर्थन आ विरोधक सभा आरम्भ भेल। विश्वविद्यालयक किछु विद्यार्थी

संविधानक पुस्तक लऽ बहस करैत छलाह। एक समूह कहैत छल जे पड़ोसी देशसँ आएल विशिष्ट उत्पीड़ित समुदाय लेल संरक्षणक उद्देश्य महत्त्वपूर्ण अछि; दोसर समूह कानूनक वर्गीकरण आ समानताक प्रश्न उठबैत छल। फिरदौस सभकेँ मूल विधिक पाठ पढ़बाक परामर्श देलीह। रेवती स्पष्ट कएलनि जे अधिनियममे स्वीकृति भेटबाक तिथि, ओकर विभिन्न प्रावधान लागू होयबाक तिथि आ न्यायालयमे वैधानिकताक चुनौती तीन अलग बात छथि। विश्वविद्यालयक बहस तीव्र छल, मुदा एक-दोसरक परिचयक आधारपर अपराधक आरोप लगाबयवला स्वरकेँ मनस्वी रोकलीह।

एक साँझ नूर जहाँक समाचारक एक प्रारूपमे लिखल छल—“काश्मीरी छात्राकेँ अदालत सँ प्रवेश भेटल।” रूहानी पढ़िते कहलीह, “एहि सँ पाठक बुझत जे न्यायालय सीधा सीट बाँटि देलक। सही लिखू—विश्वविद्यालय अपन नियमक फेर विचार कएलक, न्यायालय प्रक्रियाक जाँच कएलक।” नूर शब्द बदललीह। ओ प्रश्न कएलनि, “अहाँ अपन नाम छपेबाक अनुमति देब?” रूहानी कहलीह, “हँ, मुदा हमर परिवारक स्वास्थ्यक विवरण नहि। ओ न्यायिक अभिलेखमे आवश्यकता अनुसार सुरक्षित रहल, समाचारक विषय नहि।” नूर पन्नाक एक भाग काटि देलीह। एक युवा छात्राक एहि आग्रहसँ ओकर अपन पत्रकारिताक शिक्षा बढ़ल।

कश्मीरक घरमे शिरीन रूहानीक प्रवेशक सूचना सुनिकय प्रसन्न भेलीह। पिता यूसुफ कहला जे बेटी वर्षक कठोर अनुभवसँ एकदम बदलि गेलि अछि। शिरीन उत्तर देलीह, “बदलल नहि, ओकरा अपन प्रश्न स्पष्ट कहबाक अवसर भेटल।” घरक खिड़कीसँ पहाड़क धुन्ध देखाइत छल। ओ सभ राजनीतिक निर्णयक सभ पक्षमे सहमत नहि छलाह। परिवारक भीतर सेहो अलग मत छल। मुदा एहि मतभेदक बावजूद रूहानीक पढ़ाइ जारी रहबाक खबर सबकेँ निक लागल। फिरदौस फोनपर कहलीह, “तोहर अंकपत्र तोहर श्रमक प्रमाण अछि; मुदा ओकरा पढ़बाक बाटमे समाजक व्यवस्था सेहो रहैत अछि।” रूहानी उत्तर देलीह, “हम ओकरा सेहो पढ़ब।”

निरंजन आ मैत्रेयी वर्षक अन्तिम दिन अपन वैज्ञानिक परिचितक संग चन्द्रयान-दोसरक उपलब्ध आँकड़ापर चर्चा करैत छलाह। अवनि पूछलीह जे यानक एक भागक अवतरण असफल भेल, तँ वैज्ञानिक समुदाय एकरा केना लिखत। निरंजन कहला, “जे सफल भेल,

ओकरा सफल लिखत; जे असफल भेल, ओकरा असफल। यानक परिक्रमा-कार्य आ अवतरणक प्रयासकेँ एकहि शब्दसँ नापब गलत अछि।” मैत्रेयी जोड़लीह, “अगिला अभियानक आधार असफल प्रयोगक सही विवरण सेहो बनैत अछि।” अवनि अपन विद्यालयक दीवालपत्र फेर खोललक। ओ आरम्भमे लिखल उत्साह हटौलक नहि, आ बादमे जोड़ल ‘सम्पर्क टूटल’ सेहो नहि काटलक। सम्पूर्ण कथा दू सत्यक संग जीबय सीखि रहल छल।

दिल्लीमे शिवनारायण झा सन् २०१९ क आखिरी साँझ रेवतीकेँ कहलनि जे हुनकर वयसमे इतिहास बहुतो बेर अदालती निर्णयक सूची जकाँ देखाइत अछि—ककरो अधिकार मान्य, ककरो दावा असिद्ध, ककरो अपील लंबित। रेवती कहलीह, “मुदा एहिसँ बाहर लोकक रसोई, अध्ययन, खेती, काज आ स्वप्न चलैत रहैत अछि।” पिता पुरान जप्ती-सूचीक एक प्रति उठौलनि। “एहि पन्नामे मृत रामकिशुनक नाम रहबाक कारण हम वर्षो धरि विचलित रही,” ओ कहला, “कागजमे जकर नाम अछि, ओकरा बुझबाक जिम्मेवारी कानूनक संग मनुष्यक सेहो अछि।” रेवती सौरभ, मनस्वी, फिरदौस, सुनीता आ रूहानी सभक अनुभव स्मरण कएलनि। सत्ताइस वर्षक कथा एखन आधा बाटे पहुँचल छल।

ओहि राति मरुधरक छात्रावासमे रूहानी अपन पहिल प्रयोगक टिप्पणी लिखि रहल छलीह। ओमप्रकाश समीक कक्षामे पढ़ैत छल। बाहर कड़गर हवा चलैत छल। पुस्तकालयमे सौरभ पन्नासभ सही स्थानपर राखि घर जाएबाक तैयारी करैत छल। ओकरा पुरान अभिलेखक बगलमे एकटा नब सेवा-दाताक प्रपत्र भेटल—विद्यार्थीक डिजिटल पहिचान आ दूरस्थ शिक्षण लेल। कुलसचिव आगाँक वर्ष एकर प्रयोग चाहैत छलाह। सौरभ फिरदौसकेँ प्रपत्र देखौलनि। ओ कहलीह, “दूरस्थ शिक्षण उपयोगी होयत, मुदा विद्यार्थीक निजी जानकारीक सीमा पहिनेसँ निर्धारित करू।” सौरभ प्रपत्रमे एहि प्रश्नक चिन्ह लगा देलक। एखन ककरो ज्ञात नहि छल जे अगिला वर्ष सभकेँ दूरसँ पढ़बाक बाध्यता केतेक गम्भीर भऽ सकैत अछि।

रूहानी अन्तिम पंक्ति लिखलीह—“अवलोकनमे जे नहि देखल गेल, ओकरा अनुपस्थित कहि देबासँ पहिने फेर देखबाक चाही।” ओ कलम राखि चन्द्रमाक उजासमे छात्रावासक आँगन देखलीह। श्रीनगरक घरक फोन एहि राति चलि रहल छल, मुदा ओकर मन एखन किछु

प्रश्नक उत्तर नहि भेटलाक पीड़ासँ मुक्त नहि छल। चन्द्रमाक ओहि एकहि प्रकाशमे दूर-दूरक घर, वैज्ञानिकक प्रयोगशाला आ अदालतक बन्द कोठरी सभ अपन-अपन अन्हारक संग उपस्थित छल। प्रश्न बन्द नहि भेल छल; ओकरा प्रमाण आ धैर्यक नब बाट भेटल छल।

अध्याय २४ — बन्द न्यायालय, खुलल पीड़ा

सन् २०२० : लुधियाना, जोधपुर, दिल्ली, दरभंगा, चण्डीगढ़ आ अण्डमान

फागुनक अन्तिम भोरमे लुधियानाक कारखानाक फाटक खोलैत पहरेदारकेँ पहिल बेर अपन चाभीक आवाज बेसी तेज लगल। अन्दर मशीनसभ पूर्ववत् चलैत छल, मुदा ओहि आवाजक बीच देश-विदेशक एकटा अनदेखल रोगक चर्चा घुसि गेल छल। सुनीता पासवान अपन पिताक लेल दवाइक पुड़िया आ अपना लेल रोटीक छोट डिब्बा लऽ पहुँचलि। करघा लग ठाढ़ चम्पा देवी पुछलनि, “बहिन, ई रोग एतय आबि गेल तँ हमरा लोकनिक की होयत?” सुनीता उत्तर नहि देलक। तखन धरि कारखानामे सुरक्षा सम्बन्धी कोनो स्पष्ट निर्देश नहि पहुँचल छल; केवल बाहरसँ आबयवला मालक गाड़ी आ मजदूरक झोरा बीच पुरान असमानता छल।

रामलखन पासवान पछिला जाड़सँ घुटनाक पीड़ाक कारण पूरा पाली नहि कऽ पबैत छलाह। हुनका एकटा कम वेतनक हलुक काज देबाक आश्वासन भेटल छल, मुदा हिसाब विभागक नव पञ्जीमे दिनक संख्या फेर कम देखाइत छल। ओ सुनीताकेँ कहला, “बेटी, बकाया कापीमे लिखने रहिह, मुदा कखनहुँ सोचिह जे इहाँ सभक चिन्ता हमरा रुपैयासँ बेसी पैघ अछि।” सुनीता कहलक, “चिन्ता पैघ भेलासँ छोट हिसाब मेटाइत नहि, बाबू।” ओहि वाक्यमे कठोरता नहि छल; पितासँ सीखल न्याय-बोधक कोमल जिद्द छल।

मार्चक दोसर सप्ताह धरि कारखानाक आदेश बदलय लगल। कखनहुँ प्रवेशद्वारपर पानीक बाल्टी रखल जाइत, कखनहुँ कामगारसभकेँ दूर-दूर ठाढ़ रहबाक कहल जाइत, मुदा उत्पादनक एकहि मेज लग चारि जनकेँ बैसि पैकिंग करय पड़ैत। धर्मपाल खुराना प्रबन्धकीय कोठरीमे व्यापारिक ग्राहकक रद्द होइत ऑर्डर गनि रहल छलाह। ओ एहि कठिनाइकेँ वास्तविक

मानैत छलाह, आ सुनीता सेहो। मुदा ओ जेव्हा कहला जे ‘मासक शेष भुगतान परिस्थिति सामान्य भेलापर’, तखन सुनीता लिखित विवरण माँगलक। धर्मपाल खिन्न भेलाह—“एहि घड़ी कागज?” सुनीता कहलक, “एहि घड़ीए कागज। बादमे ककरा याद रहत?”

जोधपुरक मरुधर विश्वविद्यालयमे रूहानी कौल अपन पहिल वर्षक प्रयोगशालाक काँच साफ कऽ रहल छलीह। फिरदौस कौल हुनका कहलनि जे किछु दिन कक्षा स्थगित भऽ सकैत अछि। ओहि समाचारपर छात्रसभक प्रतिक्रिया एक नहि छल। विवेक मेघवालक घरमे मोबाइल साझा छल, मनस्वीक लग पुरान संगणक छल, ओमप्रकाश बैरवाक गाममे नेटवर्क साँझक एकटा निश्चित ठामपर मात्र पकड़ैत छल। रूहानीकेँ कश्मीरक घरक २०१९ क सञ्चार-बाधा स्मरण अएल। ओ कहलीह, “जकरा घरमे पर्दा आ मेज अछि, ओ दूरसँ पढ़त; जकरा छत नहि, ओ केना?” सौरभ एहि प्रश्नकेँ पुस्तकालयक नव दूरस्थ-शिक्षण प्रपत्रक मार्जिनमे लिखि लेलक।

दरभंगामे शिवनारायण झाक कार्यालयमे वर्षो पुरान बहीखाताक धूर झाड़ल जा रहल छल। रेवती दिल्लीमे रहि काज करैत छलीह; हुनकर पिता फोनपर कहला, “अदालत बन्द भऽ गेल तँ फाइलसभ कहाँ जायत?” रेवती उत्तर देलीह, “न्यायक आवश्यकता बन्द नहि होयत। प्रक्रियाक रूप बदलत, मुदा जेकर फोन नहि अछि, ओकर आवाज कोना पहुँचे—एहि प्रश्नक उत्तर खोजय पड़त।” पिता खिड़कीसँ गलीक रिक्शावालाकेँ देखलनि। रिक्शावाला दिनमे तीन बेर अदालतक दुआरि धरि यात्री लऽ जाइत छल। न्यायिक भवन बन्द होमयक अर्थ ओकर घरमे सेहो चूल्हिक प्रश्न छल।

२४ मार्चक राति घोषणाक बाद शहरक हवा बदलि गेल। २५ मार्चसँ राष्ट्रव्यापी बन्दी लागू भेल। कारखानाक फाटकपर नव ताला पड़ल आ बगलमे चाय बनबयवाला सुखविन्दर अपन चूल्हि बुझा देलक। ताला लगबैत पहरेदार गुरबचनक आँखि भीजल छल; ओकर पत्नी अस्पतालक सफाइकर्मी छलीह आ ओहि घड़ी घरे नहि लौटि सकैत छलीह। सड़कक दोसर पार पक्की दीवालक पाछाँ जे घरसभ छल, ओतय लोक भीतर रहबाक व्यवस्था करि रहल छल। कारखाना लगक किरायाक कोठरीमे छः परिवारक लेल एकटा नल छल; दूरी बनाएब कागजपर सरल, जीवनमे कठिन छल।

सुनीताक घरमे पहिल राति भोजन आधा बनल। माँ फूलकुमारी चाउर नापि कहलीह जे बाजारमे की भेटत, से नहि बुझाइत अछि। दीपक मोबाइलपर विद्यालयक सन्देश पढ़बाक प्रयत्न करैत छल, मुदा डेटा समाप्त भेल छल। रामलखन अपन पुरान रजिस्टर देखैत कहला, “हम जीवन भरि दिन जोड़लहुँ, आब घरमे दिन घटब शुरू भेल।” सुनीता हुनकर हाथसँ कापी लऽ एक नब पन्ना खोललक—“बन्दीक दिन, राशन, दवा, देय मजदूरी, सहायता लेल सम्पर्क।” ओ ई सूची परचूनक हिसाबक लेल नहि, अपन परिवार आ पड़ोसीक दुआरि-दुआरि जायबाक लेल बना रहल छलीह।

चम्पा देवीक घरमे ओकर पोती परी विद्यालयक कापीमे पृथ्वीक नक्सा बनबैत छलीह। मास्टर फोनपर पाठ पठौने छलाह, मुदा पड़ोसक किशोरक फोन एक घण्टा लेल माँगि लऽ देखबाक पड़ैत। चम्पा कहलनि, “एखन बीमारीसँ बचू, पाठ बादमे।” परी प्रतिवाद केलक, “दादी, मास्टर परीक्षा लेल लिखने छथि।” चम्पा उत्तर नहि देलीह। कापीक बीचका पन्नापर बच्ची अपन हस्ताक्षर लिखने छलीह; जे बच्ची नियमित विद्यालयमे ऊँच आवाजे उत्तर दैत छलि, से घरमे मोबाइलक प्रतीक्षामे चुप भऽ रहल छलीह। सुनीता एहि चुप्पीकेँ कौनो पञ्जीमे दर्ज नहि कऽ सकैत छलीह।

प्रबन्धक धर्मपाल अपन दफ्तरसँ कर्मचाऱीक नामक सूची बनबौलनि। ककरो अंशतः अग्रिम भुगतान भेल छल, ककरो मार्चक दिनसभक हिसाब बाँकी छल, आ किछु अस्थायी कामगारक नियुक्तिक अभिलेख ठेकेदारक लग छल। लेखापाल मनप्रीत संधू फोनपर कहलीह, “कंपनीक बैंकमे उपलब्ध रकम आ देय रकम अलग अछि। जकर दावा स्वीकृत अछि, ओकरा अलग लिखू; जकर उपस्थितिपर विवाद अछि, ओकरा कारण सहित।” धर्मपाल कहलनि, “लोक सड़कपर उतरि गेल तँ हमर हालत देखू।” मनप्रीत उत्तर देलीह, “लोकक सड़कपर उतरब ककरो योजना नहि; सम्भव हो तँ पहिने ओहि सूचीपर भरोसा राखू जे अहाँ स्वयं बनौने छी।”

बलदेव सिंह अपन पुरान श्रमिक-संघक कागज खोललनि। किछु सदस्य कहैत छल जे तुरन्त थानामे जाउ; दोसर कहैत छल जे खाली पेट ठाढ़ लोकसँ मजदूरीक लड़ाइ कराएब निर्दयता होयत। बलदेव सभकेँ कहला, “दुनू काज एक-दोसरक विरोधी नहि। आजुक भोजन आज चाही, आ कमाओल रुपैया हिसाबसँ चाही।” ओ स्थानीय राहत-दलक संग सम्पर्क

कएलनि। पहिल दानमे आटा, दालि आ साबुन छल; दोसर दानमे दसटा मोबाइल डेटा-पैकक वचन। बलदेव पुछलनि, “दस पैक ककरा देब?” सभा चुप भेल। कठिन कालमे वस्तु बाँटबासँ बेसी कठिन कखनो न्यायपूर्ण क्रम बनबैत अछि।

रेवतीक दिल्लीक घरमे एखन अदालतक पुरान सन्दूक नहि, लैपटॉप आ हेडफोन मुख्य साधन भऽ गेल छल। अप्रैलक पहिल सप्ताहमे सर्वोच्च न्यायालय दूरस्थ सुनबाईक लेल निर्देश देलक। तखन रेवती अपन सहायक अनिमेषकेँ कहलीह, “एहि व्यवस्था सँ काम चलि सकैत अछि, मुदा स्क्रीनक भीतर उपस्थित रहब आ न्यायालयमे सुना पड़ब समान नहि। संचार टूटलासँ पक्षकारक बात छूटल तँ ओ अभिलेखमे देखाइत नहि।” अनिमेष पुछलक, “हम फाइल पहिने सँ छोट करि दी?” रेवती कहलीह, “फाइलक सार देब, मुदा मूल दस्तावेज छुटि नहि जाए। स्क्रीनक सुविधा प्रमाणक स्थान नहि लऽ सकैत।”

लुधियानाक एक किरायादार, जुगल महतो, अपन कोठरीक भाड़ा नहि देबाक कारण मकान-मालिकसँ विवादमे पड़ल। मालिक बृजमोहन सेठ स्वयं ऋणक मासिक किश्त देबाक चिन्तामे छलाह। ओ कहलनि, “हमर दोसर आय नहि अछि।” जुगल हाथ जोड़ि कहलक, “हमहुँ भाड़ा दऽ कऽ एहि ठामक निवासी छी; मुदा फाटक बन्द अछि।” सुनीता दुनूकेँ अलग-अलग सुनलक। ओ मालिककेँ राक्षस नहि बनौलक, न किरायादारसँ तत्काल भाड़ा देबाक असम्भव वचन लेलक। ओ लिखित समय-विस्तार, पहिले देल जमानत-रकमक हिसाब आ बिनु धमकीक सहमतिक प्रस्ताव रखलक। दुपहर धरि विवाद टलल, समाप्त नहि भेल।

मुदा दोसर बस्तीमे अपन अधिकार बतबयवाला एक किराया-वसूलकर्ता राजू बंसल खाली करबाक धमकी दऽ रहल छल। ओ दू महिलाक बिछौन दुआरिपर फेकि देबाक कोशिश कएलक। चम्पा आ सुनीता पहुँचलि तँ ओकरा रोकलनि; पड़ोसीसभ दूरी राखि गवाह बनला। सुनीता मोबाइलसँ दृश्यक छोट अंश रेकॉर्ड केलक, मुदा पहिने महिलासभकेँ सुरक्षित जगह पहुँचेबाक काज केलक। एक महिला, शांति, कहलीह, “हमर चेहरा सभ ठाम नहि भेजिह।” सुनीता वचन देलक। दस्तावेज बनबैत समय सहमतिक ई मर्यादा, ओ पहिने मनस्वी आ रूहानीक अनुभवसँ बुझने छलीह।

ओही साँझ स्थानीय परोपकारी संस्था राहतक सूची बनबैत जुगलक पहिचान-पत्र माँगलक। ओकर कार्डमे गामक पता छल; बस्तीमे किरायाक लिखित करार नहि छल। सूची बनौनिहार युवक कहलक जे प्रमाण बिना नाम जोड़ब कठिन। सुनीता अपन छोट कापी देखौलक, जाहिमे जुगलक कारखाना-पाली आ कोठरीक भुगतानक तिथि लिखल छल। युवक अचकचा गेल—“ई सरकारी प्रमाण नहि।” “हमहुँ एना नहि कहैत छी,” सुनीता उत्तर देलक, “मुदा एतय एक व्यक्ति छथि, एहि बातकेँ जाँचबाक लेल ई सूत्र अछि। ओहि आधारपर जाकर देखू।” युवक पड़ोसीक बयान लऽ नाम सत्यापनक अलग प्रक्रिया बनौलक। सभ समस्या समाधान नहि भेल, मुदा जुगल अदृश्य नहि रहल।

अप्रैलक दोसर पखवाड़ामे बलदेवक फोनपर एक छोट चलचित्र फैलल—किछु श्रमिक रातिक अन्हारमे सामान बाँधि रेलपटरिक बगलसँ निकलबाक तैयारी कऽ रहल छथि। नीचाँ लिखल छल, “सभकेँ जबरन भगाओल जा रहल अछि।” वास्तवमे ओ दृश्यमे किछु लोक अपन गाम पहुँचबाक बाट पूछैत छलाह; ककरो हाथमे लिखित निष्कासन आदेश नहि छल। सुनीता वीडियो देखिकय कहलक, “जँ जबरन भगाएल गेल अछि तँ स्पष्ट गवाही चाही, जँ भूखसँ विवश भऽ निकलबाक चाहैत छथि तँ ओहो सत्य अछि। दुनूकेँ एक बना देब न्याय नहि।” बलदेव एहि सावधानीपर झुँझलाहट नहि देखौलनि; ओ पूछलनि जे पहिल रेकॉर्ड कोन फोनमे अछि।

रेवती लग दिल्लीमे सुनीताक पहिल फोन पहुँचल तखन आकाशमे संझबाती बेरा छल। “दीदी, हमरा लोकनिक बीच भाड़ा आ मजदूरीक प्रश्न अछि। एक आदमीक मोबाइल पर लिखल अछि जे कंपनी मजदूरी माफ करौलक; दोसर कहैत अछि फोटो बनाओल गेल।” रेवती पहिने नाम, समय आ अभिलेखक बारेमे पूछलीह। ओ कहलीह जे श्रम-कार्यालयक समक्ष मजदूरीक दावा आ प्रशासनक समक्ष आवास-सुरक्षाक आवश्यकता अलग बाटसँ उठत। “फोनक चित्र बुझय लेल असल संदेश, पठौनिहारक पहचान आ जकर फोन छल ओकर जानकारी चाही। केवल स्क्रीन देखिकय दोष नहि ठहराएब।” सुनीता अपन कापीपर ई बात लिखि लेलक।

अप्रैलक अन्तिम सप्ताहमे स्थानीय प्रशासन राहत-शिविरक जानकारी बदलैत रहल। पहिने एक विद्यालयमे भोजन बाँटल जाइत छल, फेर भीड़ घटेबाक लेल स्थान बदलल गेल। ओहि बदलाबक सूचना सभक फोनपर नहि पहुँचल। चम्पा दू किलोमीटर चलि पुरान जगह पहुँचलि तँ फाटक बन्द भेटल। पाछाँ लौटैत हुनकर साँस फूलि गेल। रास्तामे एक सब्जी-विक्रेता पानि देलक; ओकर अपन ठेला लेल पुलिसक अनुमति संबंधी असमंजस छल। चम्पा घर पहुँचि रोषमे कहलीह, “जकरा भूख लगल, ओकरा सूचना मोबाइलमे किएक चाही?” सुनीता एहि प्रश्नकेँ स्थानीय सहायता-केन्द्रक पञ्जीमे दर्ज करबौलक—भोजनक स्थानक सूचना दीवाल, माइक आ श्रमिक-सम्पर्कक माध्यमसँ सेहो पहुँचे।

मईक पहिल दिन श्रमिक-विशेष रेल चलबाक समाचार आयल। बस्तीमे लोकक आँखि चमकल, मुदा साथहि प्रश्नक गड्डी खुलल—पञ्जीकरण कतय? ककर नाम पहिने? कोन राज्यक सहमति? स्वास्थ्य-जाँच? जुगल अपन गाम दरभंगाक लग पहुँचबाक लेल व्याकुल छल; ओकर पत्नी गर्भवती छलीह आ गाममे पहिनेसँ दू छोट बच्चा छल। रामलखन कहलनि जे ओ तत्काल नहि चलताह; घुटनाक पीड़ा आ घरक सदस्यक व्यवस्था कारण छल। सुनीता ठहरि गेलि। ओकर मन मिथिलाक आँगन देखबाक लेल आतुर छल, मुदा जे लोक पाछाँ रहताह, हुनकर सूची पूरा करब जरूरी छल।

एक दिन राहत-केन्द्रक बाहर नव नियुक्त स्वयंसेवक रोहित श्रमिकसभक फोटो एकठाम लऽ सामाजिक माध्यमपर चढ़ेबाक चाहलक, जाहिसँ दान बढ़य। शांति कहलनि, “भोजन चाही, मुदा हमरा चेहरा आनक परोपकारक प्रमाण नहि।” रोहित पहिने आहत भेल, बादमे सुनीतासँ कहलक, “फोटो बिना सहायता ककरा बुझायब?” सुनीता कहलनि, “अनुमति लऽ सामान्य दृश्य दिखाउ; इच्छुक व्यक्ति अपन कथा कहताह। सभक भूखकेँ सार्वजनिक करबाक अधिकार ककरो नहि।” रोहित अपन कैमरा नीचाँ कएलक। ओहि साँझ भोजनक पञ्जीमे पहिल बेर ‘चित्रणक सहमति’ लेल अलग कोष्ठ बनल।

लुधियानासँ बाहर निकलबाक तैयारीमे एक परिवार दू झोरा बनौलक—एकमे कपड़ा, दोसरमे विद्यालयक पुस्तक। छोट बच्चा धीरज पुछलक, “एहि झोरामे हमरो प्रमाणपत्र अछि ने?” ओकर माँ उत्तर देलीह, “कागज नहिं रहत तँ गाममे विद्यालयवाला फेर पुछत।” ओहि

भयक कारण ओ रोटीसँ बेसी सावधानीसँ प्लास्टिकक थैलीमे कागज रखैत छलीह। सुनीता एहि दृश्यकेँ अपना भीतर नीलकान्तक पुरान बही, मनस्वीक अभिलेख आ रूहानीक प्रवेशसँ जोड़ि देखलक। देशक बदलैत इतिहासमे मनुष्य बारम्बार अपन अस्तित्वक लिखित साक्षी लऽ चलैत अछि; मुदा ओकर जिनगी कागजसँ बेसी भारी रहैत अछि।

मईक पहिल पखवाड़ामे धर्मपाल खुराना कारखानाक बन्द दफ्तरमे सीमित कर्मचारीसँ कागज मिलाबय लेल आएलाह। भीतरक मशीनपर धूलि बैसि गेल छल, आ उत्पादनक पुरान पट्टिकापर मार्चक तारीख ठमकल छल। मनप्रीत फोनक सहायतासँ अलग-अलग देय वेतनक सूची बनौने छलीह। ओ धर्मपालकेँ देखौलनि जे नियमित मजदूरक मार्चमे कएल गेल कार्यक हिसाब आ बन्दीक अवधिक मजदूरी-संबंधी विवाद एक नहि अछि। “जतय वास्तविक उपस्थिति निश्चित अछि, ओतय भुगतानक प्रयत्नक विवरण दीअ,” ओ कहलीह, “आ बाकी प्रश्नक सम्बन्धित सरकारी निर्देश आ कानून अनुसार जाँच कराबी।” धर्मपाल गम्भीर भेलाह; हुनकर कम्पनीक तरल रकम कम छल, मुदा मजदूरक नाम खोइ गेलासँ रकम स्वतः समाप्त नहि होइत।

सुनीता कारखानाक फाटकपर बाहरी सूचना पढ़ि रहल छलीह तखन एक युवक ओकरा आवाज देलक। ओ नवीन साह छल, जे बहुत वर्ष पहिने बिनु लिखित कागजक नौकरीक प्रलोभनक विषय कहने छल। आब ओ छोट ढुलाई-व्यवसायमे अस्थायी काज करैत छल। नवीन कहलक, “हमरा पास दू अलग संदेश अछि। एकमे कंपनीक नामसँ बकाया देबाक वचन, दोसरमे लिखल जे मार्चक पालीकेँ छुट्टी मानू। दुनू एकहि नम्बरसँ आएल, मुदा किछु घंटामे पहिल संदेश हटि गेल।” सुनीता ओकर फोन देखलक, मुदा कॉपी बनबासँ पहिने पूछलक, “ई फोन तोहर अछि? संदेशक सम्पूर्ण बातचीत राखल छै?” नवीन सिर हिलौलक। सुनीता तुरन्त निष्कर्ष नहि निकाललक।

नवीनक फोनमे देखाइत संदेशक नीचाँ एकटा छोट चित्र छल—कारखानाक मुहर सन गोल आकृति। मनप्रीतकेँ फोटो भेजल गेल तँ ओ कहलीह जे मुहर पुरान कार्यालयक हो सकैत अछि, मुदा डिजिटल चित्रक किनारी कटि गेल अछि। ओ स्पष्ट कएलनि जे ओकर लग मूल निर्गमित पत्रक सूची अछि; एहि संदेशक प्रविष्टि एखन नहि भेटल। नवीनक मित्र कहलक,

“देखलहुँ, झूठ पकड़ल गेल।” सुनीता रोकलक—“नहि। ककर फोनसँ गेल, कखन गेल, जे देखाइत अछि से असल रूप अछि कि फेर बनल, एखन जानल नहि। शंका गम्भीर अछि, मुदा दोष सिद्ध नहि।” नवीन अपन फोनकेँ पहिल बेर एकटा वस्तु नहि, सम्भावित साक्षी बुझलक।

बैंकक चण्डीगढ़ शाखामे सरबजीत कौर जटिल परिस्थिति देखैत छलीह। कामगारसभक किछु भुगतान खातामे पहुँचल, किछु खाता महीनासँ निष्क्रिय छल, किछु लाभार्थीक नाम संस्थाक सूचीसँ नहि मिलैत छल। जसमीत सिंह कहला, “दूरस्थ कागज पर भरोसा करय पड़त; हर व्यक्ति शाखामे नहि आबि सकैत।” सरबजीत उत्तर देलीह, “यही कारण भरोसाक प्रक्रिया बेसी सावधानीसँ चाही। कोनो मालिकक सूची देखिकय मात्र खाताधारकक सहमति नहि मानब।” हुनका पुरान हरदेव चौहानक नाम स्मरण अएल, मुदा ओहि वर्षक नब अव्यवस्था आ पुरान नामक समानताकेँ एकहि अपराधक सञ्जाल नहि घोषित कएलनि।

सुनीताक छोट भाई दीपक पड़ोसीक घरक छतपर ठाढ़ भऽ ऑनलाइन गणितक पाठ सुनैत छल। शिक्षकक आवाज बारम्बार टूटैत, अनि पन्नापर लिखल प्रश्न अधबीचमे रहि जाइत। शिक्षक कहला, “जे नहि बुझल, बादमे रेकॉर्ड देखू।” दीपकक लग रेकॉर्ड देखबाक डेटा नहि छल। साँझमे ओ माँसँ कहलक जे अगले वर्ष पढ़ाइ छोड़ि कारखानामे काम देखत। फूलकुमारी भात परोसैत कहलीह, “तोहर बाबूजी कारखानामे उमेर बितौलनि जतेक तँ तू किताबमे आगाँ बढ़िह।” दीपक उत्तर देलक, “मुदा किताब फोनक भीतर बन्द अछि।” एहि एक वाक्यकेँ सुनीता कतेको बेर मनमे दोहरबैत रहलि।

जोधपुरमे रूहानीक अध्ययन-कक्ष छात्रावास नहि, किरायाक घरक छोट कोना भऽ गेल छल। विज्ञानक प्रायोगिक पाठ स्क्रीनपर देखाओल जाइत, मुदा उपकरण छूअबाक अवसर नहि छल। फिरदौस प्राध्यापकसभक बैठकमे कहलीह जे ‘देखाओल प्रयोग’ आ ‘विद्यार्थीक हाथसँ कएल प्रयोग’ समान नहि होइत। कुलसचिव भटनागर कहला जे परीक्षाक समयसम्बन्धी व्यवस्था बदलि सकैत अछि, मुदा शिक्षा बन्द नहि कएल जा सकैत। मनस्वी प्रश्न कएलनि, “नियम बदलबासँ पहिने जे विद्यार्थी नेटवर्कसँ वञ्चित छथि हुनकर नाम जानल गेल अछि?” उत्तरमे एक अस्पष्ट प्रतिशत देल गेल। ओ कहलीह, “प्रतिशतक पाछाँ वास्तविक व्यक्तिसभ छथि। नामक पहुँच नहि चाही, आवश्यकता बुझबाक व्यवस्था चाही।”

विश्वविद्यालयक बाहरी दूरस्थ-शिक्षण सेवा-दाता विडियो-कक्षाक लेल नब पञ्जीकरण चाहैत छल। पञ्जीमे विद्यार्थी कैं आधारक विवरण, परिवारक आय, चिकित्सकीय जानकारी आ छाया-चित्र एकहि फॉर्ममे भरबाक कहल गेल। सौरभ पुरान डेटा-सुरक्षा प्रतिवेदन निकाललक। फिरदौस कहलीह, “कक्षा चलाबय लेल ई सभ प्रश्नक कोन आवश्यकता?” सेवा-दाताक कर्मचारी उत्तर देलक जे “सिस्टम सभक लेल एक अछि।” भटनागर नब पञ्जीकरण रोकबाक निर्णय नहि कएलनि, मुदा अनावश्यक कोष्ठ हटबाक लिखित प्रस्ताव माँगलनि। ओ एहि बेर २०१७ क अनुभवसँ किछु सीखने छलाह। सौरभ छात्रसभकैं सावधान कएलक जे निजी जानकारी सार्वजनिक समूहमे भेजबाक कोनो बाध्यता नहि अछि।

दूरस्थ कक्षाक पहिल दिन शिक्षक आवाज सुनबय लेल छात्रसभसँ कैमरा खोलबाक आग्रह कएलनि। ओमप्रकाशक गामक घरमे पाछाँ बछड़ाक आवाज आबि रहल छल। किछु साथी हँसल। शिक्षक गंभीर भऽ कहला, “कैमरा बन्द राखू, उत्तर ध्वनिसँ दीअ।” मनस्वीक खिड़कीक पाछाँ हुनकर परिवारक परिचित आवाज सुनाइत छल, मुदा ओ अपना निजी घर देखेबाक लेल बाध्य नहि होय चाहैत छलीह। रूहानीक कश्मीरक घर सँ समयसमयपर फोन अबैत, तखन ओकरा कक्षा छोड़ि वृद्ध नानीक हाल पूछय पड़ैत। पढ़ाइ सभक लेल समान घण्टामे लिखल छल, मुदा सबक घड़ी अलग-अलग चलैत छल।

मईक मध्यमे जुगल महतो पञ्जीकृत यात्रा लेल एक शासकीय केन्द्र धरि पहुँचल। ओकरा दऽ गेल टोकनपर नामक अन्तिम अक्षर गलत छल। कर्मचारी कहलक जे परसूक सूचीमे सुधार भऽ सकैत अछि। ओ तखन धरि मजदूरीक किछु रुपैया बचौने छल, मुदा किराया आ भोजनमे ओ घटि रहल छल। सुनीता फोनपर अधिकारीसँ विनम्र आग्रह कएलक जे गलतीक सुधारक पावती देल जाए। अधिकारी थाकल आवाजमे कहला, “सैकड़ों आवेदन अछि।” सुनीता उत्तर देलक, “बुझैत छी। मुदा एको नाम गलत रहि गेल तँ ओ परिवार कतय जायत?” अधिकारी कम्प्यूटरमे नोट जोड़लनि। जुगल ओकरा धन्यवाद नहि, एक गहिर साँस देलक।

एक स्वयंसेवी दल रात्रिमे राजमार्गक किनार चलैत प्रवासीसभकैं भोजन पहुँचा रहल छल। बलदेव सेहो संग गेलाह। एक गर्भवती महिलाकैं चिकित्सा चाही छल; भोजनक पैकेट हुनकर तत्काल आवश्यकता नहि छल। दलक एक युवक पहिने सभक चित्र उतरलक, तखन पानि

बाँटलक। बलदेव ओकरा स्पष्ट कहला, “देख, सहायता ककरो तमाशा नहि अछि। पहिने परिचारिकाकेँ फोन करू।” जिला-स्वास्थ्य-व्यवस्थासँ सम्पर्कमे समय लगल, मुदा अन्ततः महिलाकेँ सुरक्षित वाहन भेटल। बलदेव राति लौटि कहला, “राहतक सही क्रम बुझबाक लेल कानूनक किताब मात्र नहि, कखनो आँखि चाही।” सुनीता अपन कापीमे चिकित्सा-सम्पर्कक नाम आ समय दर्ज केलक।

दरभंगामे शिवनारायणक कार्यालय बन्द छल, मुदा ओ बिछौनासँ उठि रोज साजकागज खोलैत छलाह। एक परिचित अधिवक्ता हुनका फोनपर कहला जे जिलाक अधिकतर कार्यवाहियाँ सीमित अछि। शिवनारायण कहला, “ठीक, महामारी सँ बचबाक दायित्व अछि। मुदा जकर तुरन्त राहत आवश्यक, ओकर आवेदन पहुँचेबाक विधि हेराए नहि।” ओ रेवतीकेँ एक पुरान पत्र पढ़ि सुनौलनि, जाहिमे नीलकान्त साहक मुकदमामे जप्ती-सूचीक एक अक्षरक कारण माहो विवाद भेल छल। “एखन तँ मोबाइलक एक चित्रपर जीवनक निर्णय माँगल जा रहल अछि,” पिता कहला। रेवती उत्तर देलीह, “तें ई वर्ष प्रमाणक शिक्षा और कठिन होएत।”

स्थानीय भाड़ा-विवाद तखन तीव्र भेल जखन राजू बंसल बस्तीमे फेर आबि कहलक जे किराया नहि देनिहारक पानी बन्द करब। शांति डरक मारे अपन परिवारक नाम सार्वजनिक करबासँ मना कएलनि। सुनीता अपन वरिष्ठ परिचितक संग स्थानीय प्रशासनक सहायता-केन्द्रमे लिखित प्रार्थना देलक—पानीक पहुँच, धमकीक जाँच आ परिवारसभक तात्कालिक सुरक्षा। ओ सभ किरायेदारीक अन्तिम स्वामित्व-विवाद प्रशासनसँ तय करबाक आग्रह नहि कएलनि। प्राप्ति-पत्रमे छाप पड़ल। थकानक बाद शांति कहलीह, “एहि कागजमे हमर नाम अछि, मुदा गलीक लोक पढ़ि हमरा पहचानि लेत।” सुनीता हुनकर प्रति सुरक्षित लिफाफामे राखलक आ सार्वजनिक सूचीमे निजी विवरण नहि लिखलक।

एहिबीच राजू स्वयं स्थानीय कार्यालय पहुँचल आ कहलनि जे ओ केवल मालिकक किराया-वसूली करैत अछि। ओकर अधिवक्ता फोनपर कहला जे कोठरीक अधिकारक प्रश्न दीवानी विवाद अछि। सुनीता ओकर बात सुनि कहलक, “भाड़ाक देयता जाँचू; मुदा पानी काटबाक धमकी अलग अछि।” सरकारी अधिकारी दूनूकेँ समझौलनि जे निजी बकाया-प्राप्तिक उपाय अलग अछि, धमकी आ मूल सुविधाक प्रश्न अलग। प्रारम्भिक निर्देशमे पानीक

वर्तमान आपूर्ति बाधित नहि करबाक बात लिखल गेल; किराया-सम्बन्धी अन्तिम निर्णय नहि देल गेल। राजू बाहर निकलैत सुनीतासँ कहलक, “तू सभकेँ वकील बना देबह?” सुनीता उत्तर देलक, “नहि। बस लिखित बात माँगब सिखा रहल छी।”

नवीनक फोनमे आएल दू संदेशक चर्चा बस्तीमे बढ़ि गेल छल। किछु लोकक दावा छल जे कर्मचारीसभक मार्चक मजदूरी रोकबाक आदेश गुपचुप देल गेल; किछु कहैत छल जे स्क्रीन पर देखल गोल मुहर पुरान होएबाक कारण फोटो बनल अछि। मनप्रीत अपन उपलब्ध कार्यालयीय अभिलेख देखिकय लिखित उत्तर देलीह—उक्त तिथिक कोनो स्वीकृत परिपत्र हुनका पञ्जीमे दर्ज नहि। धर्मपाल एहि उत्तरकेँ अपन निर्दोषताक अंतिम प्रमाण बताबय चाहलनि। सुनीता असहमति जतौलक: “एहि सँ मात्र ई स्पष्ट भेल जे पञ्जीमे पत्र नहि अछि। जँ सन्देश दोसर माध्यमसँ गेल हो तँ ओ प्रश्न शेष रहत।” विवादक सीमा स्पष्ट भेलासँ दुनू पक्षक दाबी थोड़े संकुचित भेल।

रेवती स्थानीय पंजाबक एक अधिवक्ता, हरमीत सोढ़ी, सँ सम्पर्क कएलनि। हरमीत पहिने श्रमिक-विवादमे काम कऽ चुकल छल। ओ कहलक, “अदालतमे सीधे सभ मजदूरीक आदेश माँगब आसान नहि। सक्षम श्रम-प्राधिकारीक समक्ष देय मजदूरी, भुगतान आ कटौतीक अलग तथ्य चाही; औद्योगिक विवाद लेल अलग प्रक्रिया। मुदा जनसुरक्षाक तात्कालिक आदेशक आवेदन स्थानीय प्रशासनक समक्ष करब उचित अछि।” रेवती सहमति देलीह। ओ निर्णय कएलनि जे याचिकामे अतिरञ्जित आँकड़ा नहि राखल जाए; प्रत्येक कामगारक हिसाब हुनकर अनुमति सहित सँलग्न हो। सुनीता चालीस टा नाम नहि, पहिल सत्यापित तेइस टा नाम एकत्र कएलक।

मईक आखिरी सप्ताहमे सर्वोच्च न्यायालय प्रवासी श्रमिकक कठिनाइपर स्वतः संज्ञान लऽ निर्देश दैत रहल। २८ मईक अन्तरिम आदेशक समाचार बलदेवक कान धरि पहुँचल—यात्राक भाड़ाक बोझ श्रमिकपर नहि, भोजन-पानी आ पञ्जीकरणक व्यवस्था राज्यक उत्तरदायित्वमे। बलदेव सभक बीच जोर देलनि जे समाचारमे सुनल आदेशक वास्तविक पाठ आ स्थानीय लागू प्रक्रिया बूझब जरूरी। जुगल पुछलक, “तखन हमर टोकन आजु यात्रा-पत्र बनि जायत?”

बलदेव कहला, “नहि। मुदा अधिकारीक समक्ष अहाँक आवेदनक अपेक्षित व्यवस्था स्पष्ट कहि सकैत छी।” जुगलक मुखपर एक बेर आशा, एक बेर सावधानीक छाया आयल।

जूनक आरम्भमे जुगलकेँ अन्ततः यात्रा-सूचीमे स्थान भेटल। स्टेशन पहुँचेबाक लेल प्रशासनक व्यवस्था बस्तीसभसँ दूरीपर छल। यात्रा-पूर्व स्वास्थ्य परीक्षण भेल; लोक अपन झोरा लऽ पाँतिमे ठाढ़ भेल। जुगल सुनीताकेँ अपन कोठरीक चाभी देब चाहलक, मुदा ओ अस्वीकार कएलक—“जमानत आ सामानक हिसाब मालिकसँ लिखित मिलाउ।” जुगल कहलक, “हम लौटि सकब कि नहि, नहि जानि।” सुनीता मुस्काइत कहलक, “एहि बातक निर्णय एक दिनक संकट नहि करत। अहाँक घर जाउ, फेर जखन सम्भव होय।” गाड़ी चलबासँ पहिने जुगल अपन बच्चाक पाठ्यपुस्तकक झोरा ऊपर चढ़ौलक।

रामलखनक घुटना ओहि समय सुजि गेल छल। चिकित्सालयमे सामान्य सेवा सीमित, तथापि आवश्यक परामर्शक व्यवस्था छल। फूलकुमारी राति भरि हुनका गर्म कपड़ा बाँधैत रहलीह। सुनीता डॉक्टरसँ फोनपर समय लऽ आवश्यक दवाईक सूची लिखलक, जानि-बुझि अनावश्यक अस्पताल-भीड़सँ बचलक। डाक्टर कहला जे पुरान रोगक देखरेख आ संक्रमण-सुरक्षा दुनू जरूरी अछि। घर लौटि सुनीता पिताकेँ दवाई दैत कहलक, “अहाँ एखन चलबाक जिद्द नहि करू।” रामलखन उत्तर देलनि, “हम बाट चलय नहि चाहैत; हम बस चाहता छी जे तोहर जखम सब हमरे उमेर धरि नहि रहय।” बेटी एतेक सुनिकय दोसर दिशि ताकय लगलि।

जूनक एक दुपहरि चम्पा देवीकेँ फोनपर गामसँ समाचार भेटल जे हुनकर बहिनक परिवारक एक बालक पढ़ाइ छोड़ि खेतक काजमे लागय चाहैत अछि। “मोबाइल नहि तँ स्कूल नहि,” बालक कहने छल। चम्पा पुछलनि, “गाममे शिक्षकक आवाज ककरा लग नहि पहुँचल?” उत्तर छल—बहुतो घरमे। सुनीता स्थानीय विद्यालयक शिक्षिका रचना कौरसँ सम्पर्क कएलक। ओ कहलीह जे छपल पाठ सामग्री सीमित छात्र धरि पहुँचेबाक प्रयत्न भऽ रहल अछि। सुनीता बस्तीमे नाम लिखलक, मुदा बच्चोंक निजी परिस्थिति सार्वजनिक समूहमे नहि पठौलक। तीन दिन बाद किछु पुस्तक आ अभ्यास-पन्ना पहुँचल। परी पहिल बेर महीनाभरि बाद अपन कापीमे लाल कलमक टिप्पणी देखलि।

जोधपुरक एक विद्यार्थी, ओमप्रकाश, अपन गामक बालकसभकेँ एक छततर दिनमे दू बेर पढ़बय लगल। ओ स्वास्थ्य-सुरक्षाक कारण छोट समूह आ खुला जगहक सहारा लेलक, जतय स्थानीय परिस्थिति अनुमति दैत छल। शिक्षकसभसँ ओ प्रश्न-उत्तरक पत्र माँगल। सौरभ कहलक, “अहाँक ई काज विश्वविद्यालयक औपचारिक विकल्प नहि अछि; मुदा विद्यार्थीक सीखबाक इच्छा बुझबैत अछि।” ओमप्रकाश उत्तर देलक, “हम मास्टर नहि, स्वयं छात्र छी। मुदा जे प्रश्न हम बुझि सकैत छी, ओकर उत्तर पाड़ोसक बच्चाकेँ किएक नहि बताबी?” दूरी, किताब आ पानिक अभावक बीच किछु दिन एहि छोट पाठमे असाधारण अपनापन पैदा भेल।

जुलाईक पहिल सप्ताहमे हरमीत सोढ़ी श्रम-विभागक समक्ष सुनीताक सत्यापित श्रमिकसभक तिथिवार हिसाब प्रस्तुत कएलनि। प्रार्थनामे पूरा महामारीक हानि एकत्र करि एकटा काल्पनिक रकम नहि लिखल गेल छल। ओहिमे मार्चक पहिल पखवाड़ामे कएल कार्य, भुगतान-रसीद, बैंकमे पहुँचल वास्तविक रकम, पूर्व बकाया आ विवादित अवधिक दाबी अलग देखाओल छल। विभागीय कर्मचारी पुछलनि, “सभक दस्तखत अछि?” सुनीता उत्तर देलक जे किछु कामगार गाम पहुँचि चुकल छथि; हुनकर स्पष्ट अनुमति आ लिखित बयान अलग संग्रहित अछि। अधिकारी तखन किछु अपूर्ण प्रपत्र फेर लौटा देलनि। सुनीताकेँ चोट लगल, मुदा ओ बुझलक जे अधूरा प्रमाण जमा करबासँ दावा बेसी मजबूत नहि होइत।

धर्मपालक पक्षसँ अधिवक्ता उपस्थित भेलाह। ओ कहला जे कारखाना बन्द रहबाक कारण आय घटल, किछु श्रमिकक वेतनक अग्रिम भुगतान भेल, आ राहत राशिक किछु हस्तान्तरणकेँ मजदूरी मानबाक विवाद अछि। हरमीत तत्काल प्रतिवाद करैत कहला, “जे रकम दानक रूपमे देल गेल, ओकरा मजदूरी मानबाक लेल सहमति आ हिसाब चाही। जे अग्रिम वास्तविक अछि ओकर प्रमाण सेहो राखू।” अधिकारी दुनू पक्षसँ अवधि-विशेषक अभिलेख माँगलनि; कोनो सामान्य घोषणाकेँ अन्तिम समाधान नहि मानल गेल। सुनीताकेँ याद अएल जे दस वर्ष पहिने ओकर पिता एहि प्रकारक सूचीपर हस्ताक्षर करैत थरथर काँपने छलाह। आब बेटी स्वयं प्रतिप्रश्नक समय संयम राखि ठाढ़ छलीह।

प्रारम्भिक कागज-परीक्षणमे एक आश्चर्य भेटल। कम्पनीक एक छपल पञ्जीमे तेइस कामगारमे सँ उन्नैसक मार्चक कार्यदिवसक हिसाब स्पष्ट छल; चारिक आगाँ ‘जाँच’ लिखल छल। एहि चारिमे चम्पा देवीक दू दिनक उपस्थिति नहि छल, जखन कि ओ दिन हुनका हाथमे चोट लगलाक कारण कार्यस्थल पर प्राथमिक उपचार भेल छल। उपचार-पुस्तिकाक प्रति भेटल, मुदा ओकरा के कार्यालयमे कागज देने छल, से स्पष्ट नहि। सुनीता कहलक, “प्राथमिक उपचार हुनकर ओतय रहबाक संकेत अछि; सम्पूर्ण पाली काज कएलनि कि नहि, ई अलग जाँच चाही।” चम्पा बेटी सन देखैत रहलीह। ओ उम्मीद कएने छलीह जे सुनीता तुरन्त कहतीह, “हँ, ई प्रमाण अछि।” मुदा ई सावधानी हुनका दुखाओलो आ आश्वस्त सेहो कएलक।

ओहि दिन सरबजीतक बैंकमे एक दूहरी प्रविष्टिक भ्रम उत्पन्न भेल। सुनीताक परिवारक एक खातामे मामूली सहायता-रकम आयल छल, मुदा भुगतानक सन्देश दू बेर देखाइत छल। रामलखन मानि लेलनि जे द्विगुण रकम आयल; दीपक नये फोनक स्क्रीन देखिकय खुश भेल। सरबजीत खाताक वास्तविक लेजर जाँचिकय स्पष्ट कएलनि जे एकहि लेनदेनक सूचना पुनः प्रदर्शित भेल अछि, जमा दू बेर नहि भेल। सुनीता एहि उदाहरणकेँ श्रम-विवादक कापीमे लिखलक: “स्क्रीनपर दू पंक्ति, बैंकमे एक प्रविष्टि।” तखन ओकर मनमे नवीनक दू संदेशक प्रश्न फेर उठल। देखाइत आकृति आ सिद्ध आर्थिक घटना एक नहि होइत।

१४ जुलाईक आसपास कानूनी समाचारमे इलेक्ट्रॉनिक प्रमाण सम्बन्धी सर्वोच्च न्यायालयक निर्णयक चर्चा आयल। रेवती अपन सहायक अनिमेषसँ भारतीय साक्ष्य अधिनियमक धारा ६५बीक व्यवस्था फेर पढ़बौलनि। ओ बुझौलीह जे मोबाइलक मूल अभिलेख, ओकरा सँ निकालल छपल प्रति, उपकरणक विवरण आ प्रमाण-पत्रक भूमिका एकहि रूपेँ नहि देखल जाए। “तकनीक बदलैत अछि, मुदा न्यायालयकेँ जानबाक चाही जे ई पाठ केना प्राप्त भेल,” ओ कहलीह। अनिमेष पुछलक, “जँ प्रमाण-पत्र देनेवाला अधिकारी इंकार करय?” रेवती उत्तर देलीह, “तखन उचित न्यायिक प्रक्रिया सँ ओकर उत्पादन माँगबाक प्रश्न उठत; अभावक जादुई समाधान नहि अछि।” ओ कानूनी सिद्धान्तकेँ सुनीताक मामलापर यान्त्रिक रूपेँ लागू नहि कएलनि; पहिने मंच आ साक्ष्यक प्रयोजन देखब जरूरी छल।

नवीन अपन फोन हरमीतक कार्यालयमे देखेबाक समय माँगलक। सीमित आवागमनक बीच एक सुरक्षित भेट सम्भव भेल। फोनक स्क्रीनपर पुरान संदेशक अंश सुरक्षित छल, मुदा जकर नम्बर सँ ओ आएल छल ओकरा वर्तमानमे फोन लगाओल गेल तँ उत्तर नहि भेटल। नवीन कहलक, “एहि नम्बरपर पहिने कार्यालयसँ बात होइत छल।” मनप्रीत एतबे स्वीकार कएलनि जे नम्बर एक अस्थायी सेवा-दाताक संपर्कमे प्रयुक्त भेल छल, कम्पनीक आधिकारिक मुहरवाला आदेशक नम्बर एहि समय सूचीमे नहि छल। हरमीत कहलनि, “संदेशक उत्पत्ति, आशय आ आधिकारिकता तीन प्रश्न अछि। एक उत्तर भेटलासँ तीनू सुलझि नहि जायत।” नवीन अपन फोनमे कुछो हटेबासँ मना कएलक।

जे सन्देश ‘मार्चक पाली छुट्टी मानू’ कहैत छल, ओकर सम्पूर्ण बातचीतमे पहिने एक विनती भेटल—“कृपया कुन दिनक वेतनक प्रश्न अछि, नाम सहित लिखू।” ओहि सँ स्पष्ट भेल जे बादक छोट वाक्य कोनो विशिष्ट प्रश्नक उत्तर हो सकैत अछि, सामान्य आदेश नहि। मुदा ओहि छोट वाक्यमे ‘सभक दिन’ जेकाँ एक पद सेहो छल, जाहिसँ अर्थ फेर अस्पष्ट भऽ गेल। हरमीत शब्दक व्याकरण पर बहस करबाक बदला कम्पनी सँ मूल पत्रव्यवहार-संग्रह आ सेवा-दाताक सम्भावित लेखा माँगलनि। सुनीताकेँ मनमे एकटा पुरान वाक्य बजल—काटल स्क्रीनक बाहर सेहो कखनो पूरा जीवन रहैत अछि।

जुलाईक बरखा लुधियानाक बस्तीमे पानिक नब समस्या लऽ आएल। कोठरीक दुआरि लगक नाली बन्द भेल छल; बालकसभ काठक फट्टापर पयर राखि चलैत छल। शांतिक परिवार एखन धरि राजूक धमकीसँ भयभीत छल, मुदा पानीक आपूर्ति बन्द नहि कएल गेल छल। प्रशासनक मध्यस्थतामे मकान-मालिक आ किरायादारसभक लिखित समय-सारणी बनल, जाहिमे देय राशिक विवाद अलग राखल गेल। शांति कहलीह, “हमर घर बचल, मुदा देनदारी बचल अछि।” सुनीता उत्तर देलक, “एहि दुनूकेँ अलग बुझलहुँ तेँ एकर उपाय अलग भेटल।” शांति अपन बेटीकेँ कोठरीक एक कोना साफ करबाक कहलीह, जाहिसँ ओतय स्कूलक किताब रखल जा सकय।

रेवती चण्डीगढ़सँ स्थानीय अधिवक्ता हरमीतक संग पंजाब आ हरियाणा उच्च न्यायालयक सीमित आभासी कार्यवाहीक तैयारीमे लगलीह। एहि प्रकरणक उद्देश्य मजदूरीक पूर्ण राशि

निर्धारित करब नहि, जिला प्रशासन समक्ष दर्ज आपात आवास-सुरक्षाक आवेदनक समयपर विचार आ उपलब्ध राहतक सूचनाक पहुँच सम्बन्धी प्रक्रिया छल। राज्यपक्षक अधिवक्ता कहला जे अनेक कर्मचारी संक्रमण-नियन्त्रण आ राहतक अतिरिक्त जिम्मेवारीमे लागल छथि। रेवती एहि वास्तविक कठिनाइकेँ अस्वीकार नहि कएलनि; ओ विशेष रूपसँ शांतिक पानीक आपूर्ति आ किछु परिवारक पञ्जीकरणक अवशिष्ट अभिलेख देखौलनि। न्यायालय पहिने पक्षकारक अधिकार आ तथ्यक सीमा स्पष्ट करबय कहलक।

सुनबाईक दिन हरमीतक दफ्तरमे एकटा पुरान कम्प्यूटरक कैमरा काम नहि करैत छल। रेवती दिल्लीसँ अलग जुड़लीह; शांति सुरक्षित सहायता-कक्षमे फोनक माध्यमसँ उपस्थित रहबाक व्यवस्था कएलनि। स्क्रीनपर न्यायाधीशक स्वर स्पष्ट छल, मुदा शांतिक ध्वनि तीन बेर टूटल। न्यायालय पुछलक, “पक्षकार जे कहैत छथि, सुनल जा रहल अछि?” हरमीत उत्तर देलनि जे सम्पर्क बाधित अछि। न्यायालय छोट अवकाश दऽ फेर संपर्कक व्यवस्था करबाक अनुमति देलक। सुनीता शांतिक कापीक पन्ना खोलि धरल नहि; ओ कहलक, “अपन शब्द अहाँ स्वयं कहू। जँ नहि सुनाइत अछि, फेर समय माँगब।”

दोसरा प्रयासमे शांति कहलीह, “हम मालिकक रुपैया नकारैत नहि छी। हमरा पानी आ बिना धमकीक रहबाक अवसर चाही, जतेक दिन वैध प्रक्रिया चलय।” न्यायाधीश पुछलनि, “पानीक आपूर्ति वर्तमानमे चालू अछि?” हरमीत उत्तर देलनि जे प्रशासनक प्रारम्भिक हस्तक्षेप पछाति चालू अछि, मुदा नियमित निगरानीक आश्वासन चाही। राज्यपक्षक अधिवक्ता स्थानीय अधिकारीक प्रतिवेदन रखलनि। न्यायालय लिखित निर्देश देलक जे अधिकारी निर्धारित अवधिमे शेष आवेदनक कारणयुक्त निस्तारण करथि आ प्राप्त व्यवस्थाक पालनक सूचना दिअथि। किरायाक स्वामित्व वा अन्तिम भाड़ा-विवादपर अदालत एहि तात्कालिक सुनबाईमे फैसला नहि देलक। शांति स्क्रीन बन्द भेलापर बहुत देर चुप रहलीह।

रेवती एहि सीमित आदेशकेँ जीतक घोषणासँ अधिक प्रक्रियाक एक आवश्यक पड़ाव कहलनि। स्थानीय समाचारक एक पत्रकार फोनपर पूछलक, “उच्च न्यायालय मजदूरसभक बकाया मंजूर कऽ देलक?” हरमीत स्पष्ट उत्तर देलनि, “नहि। ऊ मामला श्रम-प्राधिकारीक समक्ष अलग अछि। एतय पानीक आपूर्ति आ प्रशासनिक आवेदनक प्रश्न छल।” नूर जतय

एहि स्पष्टताक समर्थन कएलनि। ओ दिल्लीसँ महामारीक समाचारे लिखि रहल छलीह; हुनका बुझाइत छल जे कठिन समयमे तेजी सँ छपल एक गलत शीर्षक कतेको परिवारक अपेक्षा बिगाड़ि सकैत अछि। हुनकर नोटबुकमे एही दिन एक वाक्य लिखल गेल—“सुनबाई भेल, सभ निर्णय नहि भेल।”

उच्च न्यायालयक दूरस्थ प्रक्रिया देखलाक बाद शिवनारायण झा फोनपर रेवतीकेँ पुछलनि, “गवाहक आँखि नहि देखलासँ न्याय कतेक कमज़ोर होइत अछि?” रेवती उत्तर देलीह, “किछु प्रश्नमे प्रत्यक्ष उपस्थिति अनिवार्य भऽ सकैत अछि; किछुमे अन्तरिम दस्तावेजी आदेश सम्भव अछि। मुदा स्क्रीनपर उपस्थित नहोय सकनिहार पक्षकेँ ओकर अधिकारसँ वञ्चित नहि कएल जाए।” पिता कहला, “तखन अदालतक दुआरि मात्र भवनक नहि होइत।” रेवती हँसलीह—“आ भवनक दुआरि बन्द भेलाक अर्थ ई नहि जे लोककेँ भीतर पहुँचबाक बाट अपने बनाबय देल जाए। संस्था स्वयं जिम्मेवारी ले।”

श्रम-कार्यालयमे अगिला दस्तावेजी विचारक दौरान धर्मपालक कम्पनी एक आंशिक भुगतानक प्रस्ताव रखलक। उन्नैस श्रमिकक स्वीकृत कार्यदिवसक रकम कम्पनीक उपलब्ध हिसाब अनुसार खातामे जमा करबाक तिथि देल गेल; विवादित चारिक लेल पृथक विवरण माँगल गेल। हरमीत कहला जे प्रस्ताव मानलासँ शेष वैधानिक दावा स्वतः त्याग नहि होयत, ताहि लेल स्पष्ट अभिलेख चाही। बलदेवक एक साथी तत्काल समझौता करबाक पक्षमे छल—“घरमे भोजन पहुँचे।” दोसर कहैत छल—“अधूरा हिसाबपर हस्ताक्षर नहि।” सुनीता दुनूकेँ सुनि प्रस्तावक प्रत्येक शब्द साधारण भाषा मे समझौलनि। निर्णय ओ अपने सभपर नहि थोपलक।

किछु श्रमिक तात्कालिक स्वीकृत भुगतान ग्रहण कएलनि, लिखित रूपसँ शेष विवाद सुरक्षित राखि। रामलखनक खातामे जमा होइत रुपये देखिकय फूलकुमारी बहुधा दिनक बाद आँचर सँ आँखि पोछलीह। ओ कहलीह, “एहि रुपैयामे बेटीकेँ कतेक दौड़य पड़ल।” सुनीता उत्तर देलक, “माँ, ई बाबूजीक काजक रुपैया अछि; हमर दौड़ ओकर नामक बराबरी नहि करैत।” रामलखन बिना बोलने खाता-पुस्तिका देखलनि। ओहि क्षण घरमे विजयक कोनो घोष

नहि भेल—दालि आनबाक सूची बनल, दवाई खरीदल गेल आ दीपकक डेटा-पैक भरौल गेल। जे राहत न्यायिक संघर्षसँ भेटल, ओकर पहिल रूप सामान्य घरेलू जीवन छल।

चम्पाक दू विवादित दिनक प्रश्न फेर शेष रहल। ओ सुनीताकेँ कहलीह, “हम ओ दिन दू घण्टा काम केलहुँ, फेर हाथ कटि गेल।” कारखानाक प्राथमिक चिकित्सा-पुस्तिका एहि बातक समर्थन करैत छल, मुदा उपस्थितिक घंटा अस्पष्ट छल। मनप्रीत पुरान सुरक्षा-नियन्त्रण पञ्जी देखबाक स्वीकृति देलीह, जाहिसँ प्रवेश-निकासक समय ज्ञात भऽ सकय। धर्मपाल एहि सीमित परीक्षणक विरोध नहि कएलनि। सुनीता चम्पाकेँ कहलक, “देखू, पूरा पालीक दावा नहि, जतेक काम आ उपलब्ध नियमसँ बनैत अछि, ओतेक स्पष्ट कहब।” चम्पा हँसलीह —“तोरा सँ झूठ सिखय के आशा ककरो नहि रहय।” ओ हँसीमे स्नेह छल, आ जीवनक कठोर हिसाबक थकान सेहो।

ओहि मास मरुधर विश्वविद्यालय ऑनलाइन परीक्षाक अभ्यास लऽ रहल छल। कुलसचिवक कार्यदल देखलक जे किछु विद्यार्थी प्रश्नपत्र डाउनलोड करैत देर करैत छथि। तकनीकी सेवा-दाता सभ उत्तर एकहि डैशबोर्डमे देखब चाहैत छल। मनस्वी पुछलनि जे छात्रक निजी फोनक अन्य सामग्रीक पहुँच कम्पनीक प्रणालीकेँ की कारण चाही। फिरदौस स्पष्ट कएलनि जे शैक्षणिक मूल्यांकन लेल आवश्यक सूचना सीमित रखल जाए। एक विद्यार्थी कहलक, “नियम कठिन भऽ गेल तँ परीक्षा टलि जायत।” सौरभ उत्तर देलक, “अनावश्यक सूचना नहि देब आ आवश्यक परीक्षा चलाबब विरोधी काज नहि।” प्रशासन सुधारक परिपत्र जारी कएलक, मुदा दूरस्थ प्रयोगक वास्तविक अभाव एखन पूरा नहि भेल।

रूहानीक नानी बीमार पड़लीह तँ श्रीनगरसँ संदेश आयल। ओ तुरन्त घर नहि जा सकलीह। फोनपर शिरीन कौल कहलीह जे उपचारक व्यवस्था भऽ रहल अछि आ बेटी पहिने अपन स्वास्थ्य सुरक्षित राखय। रूहानी नानीक आवाज सुनबाक प्रयास कएलनि, मुदा फोन पाछाँसँ बजैत अन्य आवाजमे भरि गेल। ओ अभ्यासक नोट बन्द करि बैसलि। फिरदौस बुझलीह जे टेलिफोन केवल सन्देशक तार नहि; जीवनक अनिश्चित समयमे कोनो प्रिय व्यक्तिक साँस सुनबाक माध्यम अछि। जे उपकरण परीक्षा लेल अनिवार्य बनैत अछि, ओहि उपकरणमे एक घरक भय, प्यार आ स्मृति सेहो रहैत अछि।

अगस्तक साँझमे नूर जतय अपन एक लम्बा समाचारक लेल सुनीताक साक्षात्कार चाहलीह। ओ प्रश्न लिखने छलीह—“महामारीमे मजदूरक सभसँ पैघ कष्ट की छल?” सुनीता उत्तर देबासँ पहिने चम्पा, जुगल, शांति आ दीपकक अलग-अलग जीवन स्मरण केलक। “एक उत्तर नहि,” ओ कहलक। “ककरो लेल भोजन, ककरो लेल घर, ककरो लेल दवाई, ककरो लेल नामक सही वर्तनी। आ ककरो लेल एहि बातक प्रमाण जे ओ काज कएने छल।” नूर पुछलीह, “अहाँ फोटो देब?” सुनीता कहलक, “हमर देब। शांतिक नहि। ओकर अनुमति हमरा लग नहि अछि।” नूर एहि वाक्यकेँ अपन लेखनक नियम मानि लेलीह।

अण्डमानमे अनीश हलदर अपना परिवारक छोट व्यवसाय बन्द भेलाक बाद समुद्री बयारमे एकटा टूटा नावक किनार देखैत ठाढ़ छल। सन् २००४ क प्रलयमे गुमल पारिवारिक अभिलेखक कठिनाई ओ नहि बिसरल छल। महामारीमे नब सहायता-पञ्जीमे एक वृद्ध मछुआराक नाम गलत अंकित भेटल। अनीश स्वयंसेवकसँ कहलक, “एकटा अक्षरक कारण नावक जाल खरीदबाक सहायता टलि सकैत अछि।” ओ सरकारी कार्यालयक सुधार-प्रक्रियाक कागज जुटबयमे मदति कएलक। समुद्र एखन शान्त छल, मुदा संकट केवल लहरिसँ नहि, कागजक भीतर सेहो अबैत अछि। अनीश अपन पिताक स्मृतिमे कागजक एक प्रति सुरक्षित डिब्बामे राखलक।

सितम्बरमे नवीनक संदेश-प्रकरणक एक तकनीकी विवरण भेटल। कम्पनीक सेवा-दाताक अभिलेख-सूचीमे ओ नम्बर पुरान सामूहिक सूचना-प्रणालीसँ जोड़ल छल। मुदा कोन विशिष्ट कर्मचारीक आदेशपर कोन संदेश गेल, तकर अभिलेख अधूरा छल। मनप्रीत एहि अधूरताक लिखित स्वीकार करैत छलीह। हरमीत कहला, “अब प्रमाणक अगिला प्रश्न शुरू होइत अछि—जकर नियंत्रणमे प्रणाली छल, ओ व्यक्ति वा संस्था उपयुक्त अभिलेख आ प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करय सकैत अछि कि नहि।” धर्मपाल अपन अधिवक्ताकेँ कहला जे ई सूची सँ एतेक बुझाइत अछि जे सन्देश कम्पनीक आधिकारिक आदेश नहि रहि सकैत। हरमीत उत्तर देलनि, “सम्भव अछि, मुदा तकनीकी जाँच पूरा होयबाक चाही।”

रेवती एहि चरणमे एक महत्त्वपूर्ण सावधानी अपनौलीह। श्रम-प्राधिकारीक समक्ष मूल मजदूरीक हिसाबक लेल उपस्थिति-पञ्जी, भुक्तान-लेजर आ प्रत्यक्ष साक्षी बहुत किछु स्पष्ट

करि सकैत छल; नवीनक मोबाइल-सन्देश सम्भावित पूरक सामग्री छल। ओ संदेशक सम्पूर्ण सामग्रीक सुरक्षित प्रति तैयार करबाक विधि परामर्श देलीह, उपकरणक मूल अवस्था जतन करबाक आग्रह कएलनि, आ नियंत्रक सेवा-दातासँ आवश्यक प्रमाण-पत्रक युक्तिसंगत माँग दर्ज करबौलीह। “प्रमाण-पत्र आबि गेल तँ पाठ स्वत: सत्य नहि भऽ जायत,” ओ अनिमेषकेँ कहलीह। “पहिने कानूनक दृष्टिसँ स्वीकार्यता, तकर बाद अर्थ, विश्वसनीयता आ अन्य अभिलेखसँ मेल। प्रत्येक पायदान अलग।”

नवीन एक साँझ सुनीताकेँ कहलक, “एतेक प्रमाण जुटाबैत हम एहन भयमे रहैत छी जे ककरो लग हम स्वयं दोषी बनि जाउ।” सुनीता ओकरा देखैत कहलक, “तोहर फोनमे संदेश आबि गेल, एहि सँ तू दोषी नहि। मुदा कोनो लोकक नाम पर आरोप लगाबय सँ पहिने हमरा सभकेँ जाँच करबाक जिम्मेवारी अछि।” नवीनक मुखपर जतेक राहत छल, ओतेक अनिश्चितता सेहो। ओ पुरान कापीक एक पन्ना निकाललक, जाहिमे सालों पहिनेक अनिश्चित नौकरीक नम्बर लिखल छल। नव सेवा-दाताक सम्पर्कक अन्तिम चारि अङ्क ओहि नम्बरक समान छल। सुनीता इत्तेफाककेँ पहिचानक प्रमाण नहि मानलक; ओ कागजपर ‘समान अंक —जाँच जरूरी’ लिखलक।

अक्टूबर धरि बस्तीमे फेर किछु दुकान खुलि रहल छल, मुदा जीवन पहिनुक गति पर नहि पहुँचल छल। जुगल महतो अपन गामसँ फोन कएलक। पत्नी सुरक्षित प्रसव पछाति बच्चा संग घरे छलीह। ओ कहलक जे तखन धरि लुधियाना लौटबाक निर्णय नहि कएने अछि; गाममे अवसर सीमित अछि, मुदा परिवार एकठाम अछि। सुनीता बधाई देलक। फोन राखलाक बाद ओकरा कारखानाक बन्द मशीनक ध्वनि स्मरण अएल। जे मशीन निरन्तर चलैत छल, ओकर बन्द होयब एक सामाजिक विराम बनि गेल छल। मुदा श्रमिकक जीवन केवल मशीनक फेर चालू होयबाक प्रतीक्षा नहि छल; ओ अपन बाट स्वयं सोचि रहल छल।

दीपकक विद्यालयमे महीनासभ बाद सीखबाक आकलन भेल। परी अपन कापीमे पहिल बेर लंबा अनुच्छेद लिखलक—‘हमर गामक बाट’। ओकरा ‘बाट’ शब्दक अर्थ पता छल: ओकर बापू कामपर जायवाला गली, सहेली धरि जाएवला सीढ़ी, आ मोबाइलक आवाज पकड़बाक छत। दीपक स्वयं गणितमे पिछड़ल छल, मुदा बहिन-जेकाँ पड़ोसक परीकेँ संख्याक प्रश्न

बुझबैत ओकर आत्मविश्वास लौटि रहल छल। सुनीता देखलक जे विद्यार्थीसभक वार्षिक परिणाम केवल जाँचपत्रक अंकमे नहि समा सकैत अछि। हुनकर पढ़ाइक समय घरक श्रम, भय आ दूसराक दयापर निर्भर भेल छल।

नवम्बरमे शिवनारायण झा सँ रेवतीक लम्बा बात भेल। पिताक स्वर पहिले जकाँ मजबूत नहि छल। ओ कहलनि, “ई महामारी हमर समयक कतैक फैसला देखलाक बाद आयल। न्यायालयमे हम सदिखन सोचैत रही जे प्रमाण उपस्थित करब कठिन अछि। आब तँ उपस्थित होयब स्वयं कठिन भऽ गेल।” रेवती कहलीह, “तखन प्रमाण-नियम घटेबाक नहि, पहुँचक साधन सुधारबाक आवश्यकता अछि।” शिवनारायण सहमति देलनि। हुनका याद पड़ल जे दरभंगाक पहिल दण्डाधिकारीक कोठरीमे एक गरीब आदमी कहने छल—“हमर बात बुझबाक लेल कागज पढ़ू।” आब रेवतीकेँ सुनाइत छल—“हमर बात सुनबाक लेल फोन जोड़ू।”

दिसम्बरक मध्यमे सरबजीत अपन शाखाक वर्षान्त हिसाब देखैत एक असामान्य सूचना पढ़लनि। किछु श्रमिक खाताक भुगतान-निवेदनक संग एकहि बाहरी सम्पर्कक डिजिटल घोषणा जोड़ल गेल छल, मुदा खातासँ वास्तविक लेनदेन सभमे स्पष्ट समानता नहि छल। ओ तत्काल केकरो नामपर अपराधक निष्कर्ष नहि निकाललनि। शाखाक अनुपालन अधिकारीकेँ सूचना दऽ नियमानुसार मूल दस्तावेज, लाभार्थीक सहमति आ प्रणालीक पहुँच-अभिलेख जाँचबाक आग्रह कएलनि। हुनकर ध्यान हरदेव चौहानक अनुत्तरित पुरान प्रविष्टिपर सेहो गेल, मुदा ओ पुरान सूचीक नामकेँ नव व्यवहारक लेखक नहि मानलनि। एक पुरान प्रश्न नब संकटमे अपन छाया फेकि सकैत छल; ओकर उत्तर एखन प्रमाणमे खोजबाक छल।

सुनीता वर्षक अन्तिम राति अपन कापीक चारिटा पन्ना अलग कएलक। पहिल पर लिखल छल—‘काम कएल दिन’; दोसर पर—‘घरमे रहबाक अधिकार’; तेसर पर—‘बच्चाक पढ़ाइ’; चौठ पर—‘संदेशक मूल प्रमाण’। रामलखन नजदीक बैसि देखैत रहला। “एतेक अलग-अलग हिसाब किएक?” ओ पुछलनि। सुनीता उत्तर देलक, “एकटा पन्ना खोइ गेल तँ बाकी सभक सत्य नहि खोइ जाउ।” दूरक चिकित्सालयसँ रात्रि-पालीक एम्बुलेन्सक आवाज आयल। फूलकुमारी खिड़की बन्द करैत कहलीह, “अगिला वर्ष ठीक होयत ने?” सुनीता उत्तर नहि

देलक। ओ अपन पन्नासभक बीच एक रिक्त कागज रखलक—एखन जे गवाही देबाक बाकी छल, तकर लेल।

ओहि राति मरुधरक दूरस्थ कक्षामे फिरदौस आखिरी व्याख्यान देलनि। स्क्रीनपर किछु विद्यार्थी उपस्थित छलाह, किछुक नाम लग खाली चौकोर चिन्ह छल। ओ कहलीह, “आजु हम उत्तर नहि, एक प्रश्न छोड़ि रहल छी—जकर चेहरा नहि देखाइत, ओकर अनुपस्थिति केना सिद्ध करब?” मनस्वी लिखि लेलीह। रूहानी कश्मीरक घरक आवाज सुनैत खिड़कीसँ चन्द्रमा देखलीह। लुधियानामे सुनीताक फोनपर तखन एकटा पुरान संदेशक संग ‘अभिलेख प्राप्त नहि’ लिखल संकेत चमकल। ओ स्क्रीन बन्द कऽ फोन सुरक्षित रखलक। बन्द अदालतक बाहर जे पीड़ा खुलि रहल छल, ओकरा सुनबाक लेल अगिला वर्ष न्यायकेँ फेर बहुत दूर चलय पड़त।

चतुर्थ खण्ड — राज्य, नागरिक आ नव विधि

अध्याय २५ — साँसक मूल्य

लुधियाना, दरभंगा, जोधपुर आ दिल्ली; सन् २०२१

चैतक पहिल गरम हवा जखन लुधियानाक सँकरी गलीमे घुसल, सुनीता पासवान खिड़कीक जंग लागल काँटामे अटकल पुरान कपड़ाक टुकड़ा खोलि रहल छलि। ओही कपड़ासँ पछिला वर्ष दरबज्जाक फाँक बन्द कएने छलि, जाहिसँ जाड़मे बुढ़ायल रामलखनक घुटना नहि दुखय। आब घरमे नब चिन्ता छल। दीपकक परीक्षा मोबाइलपर होयत, कारखानाक पहिल देय रकमसँ आनल फोनक स्क्रीन बीचोबीच दरार पड़ि गेल छल, आ फूलकुमारी पड़ोसक बीमार बच्चाकेँ गरम पानि दऽ लौटलीह तँ कहलनि, “बस्तीमे फेर ज्वर बढ़ि रहल अछि।” सुनीता बाहर देखलक। एक वर्ष पहिने एहि गलीमे लोक घर छोड़बाक बाट पुछैत छल। आब गली पहिल बेर फेर लोकसँ भरल छल, मुदा प्रत्येक लोक दोसराक मुँह देखबा सँ पहिने ओकर खाँसी सुनैत छल।

सतलुजक धूलि लऽ अबैत हवा मशीनक पुरान घरघड़ाहट सँ मेल खाइत छल। कारखानामे काज क्रमशः लौटल, मुदा सभ पाली नहि। रामलखन पूरा दिन नहि जा सकैत छलाह, तें ओ घरमे मशीनक छोट पुर्जाक सफाइ करैत छला। हुनका कहियो-कहियो इएह लगैत जे अपन शरीरक बदला पुरान लोहाकेँ काजक अवसर देबाक कोशिश करैत छथि। कारखानाक रखरखाव विभागमे छोट ठेका लऽ काज करनिहार अशोक मिस्त्री हुनका प्रति सप्ताह भेटैत छल। अशोकक हाथमे तेलक कारी रेखा एहन जमल छल जे साबुनसँ घिसलापर सेहो नहि जाइत। ओ मजाक करैत, “ई हमर काजक हस्ताक्षर थिक। बिना कागजक सेहो पढ़ल जा सकैत अछि।” ओकर पत्नी माया घरमे सिलाइक काज करैत छलीह; बेटी रागिनीक पाठशालाक शुल्क कतेको बेर अशोकक ओही छोट ठेकासँ जुटैत छल।

मार्चक अन्तिम सप्ताहमे अशोक एकटा पुरान पंखा रामलखनक लेल ठीक कएलक। पंखाक लोहेक पातरपर हाथ राखि ओ कहलक, “गर्मी शुरू भेल। एहिबेर बिजली गेल तँ हम बैटरीक छोट पंखा जोड़ि देब।” रामलखन पुछलनि, “कतेक लेबह?” अशोक हँसि देलक, “अहाँक बकाया मजदूरीक मुकदमासँ हमहूँ सीखि गेलहुँ। पहिने कामक सही हिसाब, फेर मूल्य।” सुनीता इएह सुनि हँसलि। ओ दुनूकेँ चाय देबाक लेल भीतर गेल छलि जखन बाहरक गलीमे एम्बुलेन्सक पहिल तेज आवाज उठल। अशोक पंखाक चलैत पाँख देखैत रहि गेल। आवाज थमलापर कहलक, “जकरा लग दिनभरि साँस लेल हवा अछि, ओकरा पंखाक कीमत की बुझाइत होयत?” एहि साधारण वाक्यक स्मरण सुनीताकेँ बादमे कतेको राति निन्नसँ जगबैत रहल।

अप्रैलक पहिल दिनसभमे नूर जतय दिल्लीसँ समाचार भेजैत छलीह। सामाजिक माध्यमपर कखन ऑक्सीजनक अभावक अपुष्ट संख्या, कखन औषधिक चमत्कारक झूठ दावा, कखन ककरो असहाय रुदनक चलचित्र। नूर अपन सहकर्मीकेँ कहलनि जे कोनो रोइतर परिवारक छवि ओकर अनुमति बिना प्रकाशित नहि होयत। एक सम्पादक उलटा पुछलक, “चेहरा नहि देखाएब तँ संकटक गम्भीरता लोक केना बुझत?” नूर उत्तर देलीह, “लोकक गरिमा संकटसँ छोट नहि अछि।” ओ आधिकारिक आकड़ा जाँचैत आ अस्पतालक तिथि मिलबैत रहलि। एकहि समयमे एकटा घरक दुःख सच छल, एकटा फोटो पुरान छल, आ एकटा संदेश दोसर शहरक अस्पतालक नामसँ फैलि गेल छल। सत्यक प्रति सावधानी लोकक पीड़ा नकारब नहि छल; पीड़ाक नामपर झूठ नहि पसराएब छल।

दरभंगामे शिवनारायण झा अपन कमराक बाहर एक छोट मेजपर दवा, थर्मामीटर आ पितरक पुरान घड़ी रखैत छलाह। घड़ी दू मिनट पाछाँ रहैत, मुदा ओ ओकरा ठीक नहि करैत छलाह। “हर दिन जल्दीमे आबि रहल अछि,” ओ रेवतीकेँ फोनपर कहलनि, “घड़ीक दू मिनट बचे दे।” रेवती कहलीह जे दिल्लीमे अदालतक कार्यवाही फेर बहुत अंशमे दूरस्थ होमय लागल अछि; लोकक मुकदमा रुकैत नहि, पर उपस्थितिक ढंग बदलैत अछि। पिता पुछलनि, “किसान, मजदूर आ रोगी परिवारक कागज के जुटाओत?” रेवती उत्तर देलीह, “जतए लोक अछि, ओतए कागज पहुँचबाक बाट सेहो चाही।” हुनका एखन नहि मालूम छल जे किछुए

दिनमे लुधियानासँ एकटा एहन फोन आएत, जाहिमे अदालतमे जाएबाक प्रश्नसँ पहिने चिकित्सालयक दुआरि पार करबाक असमर्थता होयत।

अशोककेँ पहिने हलुक ज्वर भेल। ओ माया सँ कहलक जे दिनभरि गरम कारखानाक भट्ठीक लग रहलासँ देह तपि गेल अछि। मुदा दोसर दिन स्वादक भेद घटि गेल आ तेसर दिन सीढ़ी चढ़ैत ओकर साँस तेज होय लागल। सुनीता ओकर घरक दुआरिपर दूरी रखि ठाढ़ भेलि। माया पुरान जाँच-पर्चीक फोटो देखा रहल छलीह। “अहाँ जाँच कराउ,” सुनीता कहलकेँ, “आ कोनो वैद्यकीय सलाह बिना अपनहि औषधि नहि बदलू।” अशोक बहस नहि कएलक। माया अस्पतालक हेल्पलाइनपर लगातर फोन करैत रहलीह, जखन कि रागिनी कॉपीक कोरमे अपन पिताक लेल एकटा चित्र बनबैत छलि—हरियर खेत, पंखा आ खुलल नील आकाश। अशोक ओकरा देखिकय एक बेर मुस्कुराएल; फेर खोँखी रोकबाक लेल मुँह झाँपि लेलक।

सरकारी जाँच-केन्द्रपर पाँति लम्बा छल। स्वयंसेवक सभकेँ दूरीमे ठाढ़ रखबाक कोशिश करैत छल, मुदा छाँह कम छल। किछु लोक निजी प्रयोगशालामे महँग शुल्क देबाक समर्थ छल, किछु अगिला दिन फेर अबैत। सुनीता कारखानाक साथी बलदेवक सहयोगसँ अशोकक नमूना-जाँचक उचित प्रक्रिया बुझलक। ओकर रिपोर्ट संक्रमित होयबाक संकेत दैत छल; चिकित्सक ऑक्सीजन-संतृप्ति आ श्वासक कठिनाई देखिकय तुरन्त अस्पतालमे मूल्यांकन करय कहलनि। माया पूछलक, “घरमे भाप देलासँ नहि होयत?” डॉक्टर थाकल स्वरमे कहलनि, “एहि हालतमे अस्पतालक परीक्षण जरूरी अछि। भापसँ ऑक्सीजनक कमी पूरा नहि होइत।” एहि एक बातमे रोगक विज्ञान आ घरक असहाय इच्छा आमने-सामने ठाढ़ छल।

सतलुज जीवन चिकित्सालय, शहरक एक छोट निजी अस्पताल, एकटा चौड़ी सड़कक अन्तिम मोड़पर छल। सामने नीमक एकटा गाछ आ दूटा लोहेक बेंच। पहिने ओहि बेंचपर रोगीक सम्बन्धी चाय पीबैत छल; आब ताहिपर रंगल खड़िया सँ दूरीक चिन्ह बना देल गेल छल। द्वारपर तैनात कर्मचारी नाम लिखैत, लक्षण पुछैत आ खाली स्थानक सूचना फोनपर पता करैत छल। माया अशोकक हाथ पकड़ने छलि, मुदा भीतर प्रवेशक समय ओकर हाथ छूटि गेल। गुरप्रीत कौर नामक परिचारिका ओकरा आश्वस्त करैत कहलीह, “नाम, फोन आ परामर्शदाताक विवरण दिअ। जे नब सूचना होयत, नियत सम्पर्कसँ कहब।” माया फोनक

नम्बर दू बेर दोहरौलीह। ओकरा डरे छल जे एक अङ्क गलत भऽ गेल तँ पति ओहि भीतरक दुनिया सँ सदा लेल छुटि जायत।

गुरप्रीतक पहिरल संरक्षण-वस्त्र भीतर गर्म भऽ उठैत छल। नाकक पुलपर मास्कक रेखा खिंचल छल; घर लौटि ओ छोट बच्चाकेँ दूरसँ देखैत छलीह। एक राति ओकर बच्चा कहलकेँ, “मम्मी, अहाँ हमर माथ नहि छूबैत छी।” ओ हँसि उत्तर देलक, “माथ छूबय लेल हम पहिने अपना हाथ सुरक्षित रखैत छी।” मुदा ओकर भीतर एहन कोनो नियम नहि छल जे भयकेँ केना धोएल जाए। अस्पतालमे प्रत्येक पालीक शुरुआतमे ओ रोगीक नाम, श्वासक अवस्था, ऑक्सीजन देबाक साधन आ चिकित्सकक आदेशक मिलान करैत छलीह। बहुत दिनसँ निद्रा अपूर्ण छल; तखनहु ओकरा कागजमे एक अंकक त्रुटि रहि जाएबाक डर एहन लागैत जे लिखैत घड़ी मनमे आवाज करैत—फेर देखू, फेर देखू।

अशोकक पहिल चिकित्सकीय अभिलेखमे ज्वर, खाँसी, श्वास-कठिनाई आ जाँचक विवरण लिखल गेल। वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. आरती अरोड़ा अवस्था देखिकय कहलीह जे संक्रमणक प्रभाव अलग-अलग रोगीमे अलग भऽ सकैत अछि; पूर्वसँ कोनो रोग रहबाक जानकारी, लक्षणक अवधि आ उपलब्ध जाँच सभक महत्व अछि। अशोक अपन पुरान मधुमेहक औषधिक नाम याद करयमे अटकैत छल, तेँ माया फोनपर डिब्बाक छाया-चित्र भेजलीह। डॉ. आरती कहलनि, “चिकित्सा एक क्षणक अनुमान नहि, निरन्तर निगरानी अछि।” ओहि वाक्यसँ माया आश्वस्त होय चाहैत छलीह, मुदा ओकरा एतेक बुझाइत छल जे निरन्तर निगरानीक अर्थ निरन्तर जोखिम सेहो होइत अछि।

ओही दिन चिकित्सालयमे एक वृद्ध सिख रोगी स्वस्थ होयबाक बाद घर गेलाह। हुनकर पौत्र नीमक गाछ लग मिठाइक डिब्बा लऽ ठाढ़ छल। कर्मचारी डिब्बा भीतर नहि लऽ गेल, मुदा दूरसँ हाथ जोड़लक। माया एहि दृश्यकेँ देखिकय मनमे कल्पना केलक जे अशोक सेहो फेर बाहिर आबि रागिनीकेँ अपन पंखाक मरम्मति सिखाओत। घरमे बेटी कागजपर अस्पतालक नक्शा बनौने छलि—एतए फाटक, एतए पापा, एतए घर लौटबाक बाट। माया नक्शा फोनमे देखबैत गुरप्रीत सँ पुछलनि, “एहि बाटसँ ओ जखन बाहर औत तखन हम एतए रहब?”

गुरप्रीत अपन आँखि नीचाँ कएलनि। ओ झूठ आश्वासन देब नहि चाहैत छलीह; ओकरा केवल ई कहबाक साहस भेल, “हम सभ उपचारमे लागल छी। अहाँ फोन चालू राखू।”

रातिक पालीमे अस्पतालक ऑक्सीजन-आपूर्तिक प्रश्न गम्भीर भेल। शहरमे परिवहनक कठिनाइ आ माँगक आकस्मिक वृद्धि छल; चिकित्सालयक कर्मचारी अपन उपलब्ध भण्डारक दैनिक विवरण बनबैत छल। तकनीकी सहायक ओंकार सिंह भण्डारण टाँकीक दबाव आ प्रत्येक विभागक आपूर्ति-निर्देशक यन्त्र देखैत छल। ओकर कापीमे अंकसभक लग लाल पेंसिलक चिह्न छल, मुदा किछु प्रविष्टिक समय चौबीस घण्टाक घड़ीमे लिखल छल आ किछुक समय साधारण बारह घण्टामे। प्रशासनिक अधिकारी प्रभजोत संधू कहला, “समयक एक रूप बनाउ; पछि भ्रम होयत।” ओंकार उत्तर देलक, “एक रूप बनायब, मुदा पुरान अंक मिटाएब नहि। पहिने जेनाक तेनहि प्रतिलिपि सुरक्षित करब।” ओ नहि जानैत छल जे एहि छोट अनुशासनक अर्थ बादमे एक शोकाकुल परिवार लेल कतेक पैघ भऽ जायत।

एक दिन माया अस्पतालक फाटकपर दू घण्टा ठाढ़ रहलीह। फोन नहि लगैत छल, आ रागिनी घरमे बारम्बार पूछैत छलि जे पिता ओकर चित्र देखलनि कि नहि। सुनीता अपन अन्य काज छोड़ि फाटक धरि पहुँचलि। ओ माया कैं पानि देलक आ सूचना केन्द्रमे लिखित सम्पर्क-बिन्दु माँगलक। कर्मचारी कहलक जे सभ रोगीक सूचना एकहि बेर देब कठिन अछि। सुनीता कोनो हंगामा नहि केलक; ओ रोगीक पञ्जीकरण संख्या, अनुमत परिजनक नाम आ चिकित्सकीय सूचना पएबाक समय लिखिकय देबाक अनुरोध कएलक। माया थाकल आवाजमे पुछलनि, “तोरा अदालतक कागज लिखबाक अभ्यास एहि लेल भेल छल?” सुनीता उत्तर देलक, “नहि दीदी। एहि लेल जे अहाँक प्रश्न कागजक अभावमे हराए नहि।”

रेवती दिल्लीसँ समाचार देखैत छलीह। देशभरि अस्पतालक शय्या, औषधि आ चिकित्सकीय ऑक्सीजनक अभावसँ जुड़ल न्यायिक सुनबाईक बात चलि रहल छल। ओ एकटा समाचारमे सर्वोच्च न्यायालयक २२ अप्रैलक स्वत: संज्ञान आ आवश्यक आपूर्तिक प्रश्न पढ़लनि, मुदा अशोकक व्यक्तिगत उपचारक अन्तिम निष्कर्ष ओकरा सँ नहि निकाललनि। “राज्यक स्तरपर आपूर्तिक संकट आ एक रोगीक उपचारमे कोनो विशिष्ट चूक दू अलग जाँचक विषय अछि,” ओ सुनीताकैं समझौलीह। सुनीता कहलक, “दीदी, हम एखन चूकक आरोप

नहि लगबैत छी। माया कैँ रोज एकटा सही समाचार चाही।” रेवती एहि प्राथमिकताकैँ महत्वपूर्ण मानलनि। न्यायालयक पैघ भाषा आगाँ आयब, मुदा पहिल जिम्मेवारी छल—भीतरक व्यक्ति जीवित अछि, ओकर अवस्था की अछि, आ ककरा सँ पूछल जाए।

अप्रैलक अन्तिम सप्ताहक एक राति शहरमे विद्युत्-आपूर्ति थोड़ेक देर लेल बाधित भेल। चिकित्सालयक आरक्षित प्रणाली चलल, मुदा किछु विभागमे चेतावनीक संकेत एकसाथ बजि उठल। ओंकार मुख्य पटपर दबावक संख्या देखलक आ तत्काल पाली-प्रभारीकैँ जानकारी देलक। हर यन्त्रक संकेत एकहि कारणसँ नहि बजैत छल; किछु संवेदनशील यन्त्र विद्युत् परिवर्तनपर आवाज करैत छल, किछु वास्तविक दाबक कमीपर। गुरप्रीत अशोकक शय्यापर देखलक जे उपचारक साधनक जाँच फेर आवश्यक अछि। ओ पालीक चिकित्सक डॉ. राघव सरीनकैँ बुलौलक। चिकित्सक रोगीक अवस्था देखिकय तत्काल आवश्यक देखभालक निर्देश देलनि। ओहि समयक आठ-दस मिनटक भीतर के भेल, ककर हाथमे कोन यन्त्र छल, कोन सूचना पहिने पहुँचल—एहि प्रत्येक प्रश्नक उत्तर बादमे अलग-अलग कागजमे अलग रूपसँ भेटबाक छल।

अशोक लगभग आधा रातिक समय माया कैँ एक छोट संदेश पठौने छल—“रागिनीकैँ कहिह जे पंखा चलैत रहय।” संदेशक शब्द अपूर्ण छल, मुदा अशोकक अपन भाषा छल। मायाक फोन तखन तकिया लग राखल छल; ओ थकानसँ आँखि मूँदने छलि। जखन जागलि तँ संदेश पढ़ि तुरन्त उत्तर लिखलनि—“अहाँ घर आउ, पंखा चलत।” उत्तरक नीचाँ पठाओल चिन्ह बहुत देर धरि एकहि रूपमे रहल। ओ एहि चिन्हक अर्थ खराब नेटवर्क बुझलीह। भोरमे चिकित्सालयसँ आएल फोनमे कहल गेल जे अशोकक अवस्था रातिमे बिगड़ल अछि, आ उपचार करनिहार दल परिवारक एक अधिकृत व्यक्तिसँ गम्भीर स्थितिक बातचीत करय चाहैत अछि। माया बिना चप्पल बदलने दौड़ि उठलीह। रागिनी पूछलक, “माँ, पापा फोन नहि उठबैत छथि?” माया दरबज्जा खोलैत कहलीह, “हम जा रहल छी।”

फाटकपर डॉ. आरती परिवारसँ दूर बनल परामर्श-कक्षमे भेटलीह। हुनकर आँखिक चारू दिस थकानक गहिर रेखा छल। ओ चिकित्सकीय भाषाक कठिन शब्द छोड़ीकय अशोकक श्वासक अवस्था, देल गेल सहायक उपचार, रातिक बिगड़ल स्थिति आ वर्तमान जोखिमक

जानकारी देलनि। माया बीचमे पुछलीह, “आक्सीजन बन्द भेल छल?” डॉक्टर एक क्षण रुकलीह। “आपूर्ति-यन्त्रक चेतावनी आ उपचारक समयक परीक्षण चलि रहल अछि। एखन हमर लग जे विवरण अछि, ताहिसँ एकर निश्चित कारण नहि कहि सकैत छी। रोगक गम्भीरता सेहो बहुत बढ़ल अछि।” माया प्रश्न फेर पुछलीह। डॉ. आरती उत्तर बदललीह नहि। ओ गलत निश्चिततासँ मायाकेँ तात्कालिक शान्ति देबाक कोशिश नहि कएलनि। माया अपन कुर्सीक हत्था एतेक जोर सँ पकड़ने छलीह जे नाखूनक नीचाँक चमड़ी उज्जर भऽ गेल।

गुरप्रीत ओहि दिन अपन सहकर्मी सिम्मीकेँ कहलनि जे रातिक पञ्जीमे दर्ज समय परस्पर मिलैत नहि अछि। सिम्मी कहलीह, “काजक बीच कागज पूरा करैत काल पाँच मिनट एतय-ओतय भऽ जाइत अछि।” गुरप्रीत उत्तर देलक, “मुदा साँसक अवस्था पाँच मिनटमे बदलि सकैत अछि। हम जे देखलहुँ से लिखने छी; मशीन जखन घंटी बजौलक, ओही समयक पक्की जानकारी तकनीकी सूचीसँ आयत।” सिम्मी ओकर काँपैत हाथ देखलक। “तोहर दोष नहि कहि रहल छी,” ओ कहलीह। गुरप्रीत फुसफुसा कऽ उत्तर देलक, “हम अपनेकेँ निर्दोष कहबाक काज नहि करैत छी। हमरा जे देखल आ जे नहि देखल, दुनू ठीक-ठीक याद राखबाक अछि।” ओहि राति ओकर बच्चा फेर माथ छूबबाक आग्रह कएलक, आ गुरप्रीत पहिल बेर बच्चाकेँ गला लगबैत रोए पड़लीह।

अगिला दू दिन अशोकक स्थिति बहुत गम्भीर रहल। मायाक घरमे भोजनक थारी दोपहरसँ राति धरि लगभग ओहने पड़ल रहैत छलि। सुनीता फूलकुमारीकेँ ओतए पठबैत, रागिनीकेँ अपन घरमे ऑनलाइन पाठ सुनबाक व्यवस्था दैत, आ कागजक छोट लिफाफामे अस्पतालसँ भेटल सभ सूचना जतन करैत छलि। रागिनी एक दिन पुछलक, “कागजमे साँस लिखल जाइत अछि?” सुनीता कहलक, “साँस नहि, ओकरा बचाबय लेल जे काज भेल से लिखल जाइत अछि।” रागिनी आँखि नीचाँ कएलक। “तँ कागज सही लिखल गेल होय,” ओ कहलीह। सुनीता एहि उत्तरसँ विचलित भऽ गेलि। बच्चा कानूनक शब्द नहि जानैत छलि, मुदा सत्यक शर्त स्पष्ट बुझैत छलि।

अप्रैलक अन्तिम दिनक पहिने अशोकक मृत्यु भेल। अस्पतालमे फोनक दोसर दिस किछु क्षण मौन रहल; फेर परामर्शक लेल बोलाओल गेल। मायाकेँ मृत्यु-सम्बन्धी चिकित्सकीय

प्रमाण देल गेल, जकर विवरणमे गम्भीर श्वास-विफलता आ संक्रमणक जटिलताक उल्लेख छल। ओकरा लगबामे समय लागल जे ओ कागज एक जीवित आदमीसँ होइत यात्रा समाप्त करैत अछि। ओ पिता नहि छल जे बेटी लेल पंखा ठीक करैत छल; ओ अभिलेखक एक क्रमांक बनि गेल छल। माया अस्पतालक बाहर नीमक गाछ लग ठाढ़ भऽ बहुत देर धरि सड़क देखैत रहलीह। गुरप्रीत दूरसँ हाथ जोड़लक। ओ एहन कोनो वाक्य खोजि नहि सकलीह जे मायाक प्रश्नक जगह लऽ सकय।

अन्तिम संस्कारक व्यवस्था महामारीक नियम आ स्वास्थ्य-सुरक्षाक आवश्यकतासँ सीमित छल। रामलखन दूर ठाढ़ रहि आँखि मूँदने छलाह। अशोक ओकर पंखा ठीक करि गेल छल, मुदा रामलखनकेँ ताहि दिनसँ ओकर हवा गरम लगय लागल। फूलकुमारी मायाकेँ परोसबाक लेल थोड़ दालि अनलीह। माया कहलीह, “रागिनी कहैत अछि पापा कहिया औता। हम ओकरा की कहब?” फूलकुमारी बहुत देर बाद उत्तर देलीह, “एखन ओकर लग बैसू। उत्तर एके बेरमे नहि निकलत।” सुनीता देखलक जे जे लोक कल्हि धरि मजदूरीक पंजीमे विवादित उपस्थितिक चिन्ह छल, आइ ओ सभ एक दोसराकेँ भोजन पहुँचेबाक व्यवस्था करैत अछि। असहायता सभक बराबर नहि, मुदा सहायता कोनो कानूनक धारा देखिकय आरम्भ नहि भेल छल।

मायाक ससुरालसँ एक रिश्तेदार आयल, जे पहिल दिनहि कहलक, “अस्पताल सभ लूटैत अछि। मुकदमा करू, बहुत पैसा भेटत।” माया ओकरा रोकि देलक। “अहाँक लग कोनो कागज अछि?” ओ पुछलीह। रिश्तेदार कहलक, “अखबारमे पढ़लहुँ।” माया उत्तर देलीह, “अखबारमे हमर पति नहि, आन बहुत लोकक कथा अछि। हम अपन पति संग जे भेल, से जानय चाहैत छी।” ई सुनि सुनीता ओकरा अपन पुरान कापी देबाक प्रस्ताव कएलक। माया कापी नहि लेलीह; कहलीह, “एहि बेर अपन कागज हम अपने लिखब। अहाँ हमरा सही ठामसँ माँगबाक बाट बताउ।” सुनीताकेँ अशोकक मजाक स्मरण अएल—कामक सही हिसाब, फेर मूल्य।

पहिल आवेदन चिकित्सालयक प्रशासनकेँ गेल। माया अपना नामसँ, मृत रोगीक पत्नी आ अधिकृत परिजन होयबाक प्रमाणक संग उपचार-सम्बन्धी अभिलेखक सत्यापित प्रतिलिपि

माँगलीह—प्रवेशपत्र, निरीक्षण-पत्र, औषधि-निर्देश, परिचारिका-पञ्जी, आवश्यक जाँच, उपचारक क्रम, ऑक्सीजन देबाक आदेश आ मृत्यु-सम्बन्धी विवरण। ओ तकनीकी यन्त्रक ओहि रातिक मूल लॉग सुरक्षित राखबाक आग्रह सेहो कएलनि। आवेदनक पावतीपर एक मुहर लागल। रिसेप्शनक युवक कहलक, “एतेक पन्ना जल्दी नहि भेटत।” माया उत्तर देलीह, “जे उपलब्ध अछि से दिअ। जकर प्रतिलिपि मे समय लगत, ओकर स्थिति लिखि दिअ।” युवक एक पन्नापर ‘प्राप्त’ लिखलक। सुनीतार्कें बुझाइत छल जे ई शब्द छोट अछि, मुदा एहि छोट शब्दसँ एक दरबज्जा खुलि सकैत अछि।

रेवती चिकित्सकीय अभिलेख देबाक तत्कालीन पेशागत नियम देखलीह। ओ माया कें समझौलीह जे २००२ क चिकित्सा-पेशागत विनियममे रोगी अथवा अधिकृत परिजनक अनुरोधपर अभिलेख देबाक समय-सीमा निर्धारित अछि; आवेदन दऽ पावती राखब आवश्यक अछि। मुदा एहि नियमक उल्लेख मात्रसँ चिकित्सकीय लापरवाही प्रमाणित नहि होइत। “अहाँक पहिल अधिकार उपचारक सही विवरण पएबाक अछि,” ओ कहलीह। “तकर बाद यदि कर्तव्यक पालनमे विशिष्ट त्रुटि देखाइत अछि, तकर चिकित्सकीय आ विधिक परीक्षण अलग होएत।” माया पूछलीह, “यदि कागजमे गलत बात लिखल हो?” रेवती उत्तर देलीह, “तखन मूल स्रोत, लिखबाक समय, संशोधनक जानकारी आ प्रत्यक्ष साक्षीक मिलान करब। कोनो एक पन्ना सम्पूर्ण सत्य नहि होइत।”

तीन दिनक भीतर चिकित्सालयसँ किछु प्रतिलिपि अएल, मुदा सभ नहि। प्रभजोत संधू आवेदनक लिखित उत्तरमे कहला जे भौतिक पंजीक किछु भाग उपलब्ध अछि, डिजिटल उपकरणसँ विवरण निकालबाक लेल सेवा-प्रदाता सँ समन्वय चाही। ओ एक ठाम लिखलनि —“ऑक्सीजन निर्बाध।” माया एहि दू शब्दकेँ तीन बेर पढ़लीह। ओ पूछलीह, “जखन निर्बाध छल तँ चिकित्सक संकट किएक बतौने रहथि?” रेवती कहलीह, “श्वासक बिगड़ल अवस्था अनेक कारणसँ भऽ सकैत अछि। मुदा निर्बाध शब्द लिखनिहार कोन अभिलेखपर निर्भर छथि, से जानबाक अछि।” माया एहि सीमित उत्तरसँ सन्तुष्ट नहि छलीह, मुदा ओ चाहैत छलीह जे न्यायिक आवेदन भावनाक आवेगमे गलत दावा नहि करय।

ओंकार अपन मूल कापीक पन्ना प्रबन्धनकेँ देलक। ओकर नामक लग अस्पतालक तकनीकी पद छल, रोगीकेँ उपचार देबाक अधिकार नहि। ओ कापीमे लिखने छल जे एक निश्चित समयक आसपास आपूर्ति-दाबमे उतार-चढ़ाव सूचित भेल आ आरक्षित साधनक जाँच कएल गेल। मुख्य अभिलेखमे एहि समयक दू प्रविष्टि छल, मुदा एकर घड़ी स्थानीय मानक समयसँ मिलाओल गेल छल कि नहि से स्पष्ट नहि छल। प्रभजोत कहला, “कागजमे गलतफहमी सँ अस्पतालक छवि खराब होयत।” ओंकार सहज स्वरमे उत्तर देलक, “यदि समय गलत अछि तँ सुधारक कारण लिखू; पन्ना फाड़ब नहि।” ओकर वरिष्ठ ओहि बातपर चुप रहलाह। संस्थाक प्रतिष्ठा आ अभिलेखक ईमानदारी एक-दोसराक विरोधी होयबाक आवश्यकता नहि छल, मुदा ओहि क्षण दुनूकेँ विरोधी मानि लेल गेल छल।

गुरप्रीतकेँ अस्पतालक एक चिकित्सक पूछलनि, “तोहर पालीमे रोगीपर निगरानी ठीक छल ने?” ओ उत्तर देलीह, “हम जतेक देखलहुँ ओतेक लिखने छी; चिकित्सककेँ कखन जानकारी देलहुँ, हमर फोनक सूची आ पाली-पुस्तिका सँ मिलि सकैत अछि।” चिकित्सक पुछलनि, “निगरानी ठीक छल कि नहि—एतेक कठिन प्रश्न अछि?” गुरप्रीत कहलीह, “एक शब्दक उत्तरसँ रोगीक पूरा राति गायब भऽ जाएत।” ओ अपन सहयोगीकेँ दोष नहि दऽ रहल छलीह। ओकरा भय एहि बातक छल जे संस्थाक विवादमे काज करनिहार सभसँ कमजोर कर्मचारीकेँ दोषक एकमात्र ठाम बना देल जायत। गुरप्रीतक मजदूरी, बच्चाक देखभाल आ अपन स्वास्थ्यक संघर्ष सेहो छल; मुदा ई सामाजिक कठिनाइ रोगीक प्रति पेशागत कर्तव्यकेँ कम नहि करैत छल।

माया एक दिन रागिनीकेँ लऽ सुनीताक घर पहुँचलि। बच्चा अपन चित्रक नीचाँ लिखने छलि—‘हमर पापाक पंखा’। सुनीता ओकरा कागजक किनारी समतल करयमे मदति कएलक। रागिनी पुछलक, “पापा ऑक्सीजनक हवा नहि पएलनि?” माया हड़बड़ाकय बेटीकेँ चुप करय चाहलीह, मुदा सुनीता हाथक संकेतसँ ओकरा रोकलक। ओ बच्चासँ कहलक, “हमरा सभकेँ एखन पूरा बात मालूम नहि। डॉक्टरसभ उपचार कएलनि, पापाक रोग बहुत गम्भीर छल। बीचमे उपकरणक सूचना सेहो जाँचल जा रहल अछि। हमरा सभकेँ जे नहि बुझाइत, तकरा बुझबाक अधिकार अछि।” रागिनी कहलीह, “तखन जे बुझल नहि, ओहि ठाम

प्रश्नचिह्न लगाउ।” सुनीता ओहि दिन अपन कापीमे पहिल बेर प्रश्नचिह्नक लग कोनो नाम नहि लिखलक।

मईक आरम्भमे देशक पैघ न्यायालयमे चिकित्सकीय ऑक्सीजनक आपूर्ति, औषधि आ प्रशासनिक जिम्मेवारीपर सुनबाईक समाचार फैलल। नूर जतय एहि राष्ट्रीय घटनाक रिपोर्ट बनबैत अशोकक मृत्युकेँ तत्काल सरकारी नीतिक असफलताक एक प्रामाणिक उदाहरण घोषित करबाक प्रस्ताव अस्वीकार कएलनि। “हम जे जानैत छी, केवल ओहिये लिखब,” ओ सम्पादककेँ कहलीह। “अशोकक परिवार उपचार-विवरण माँगने अछि; आपूर्तिक वास्तविक क्रम एखन जाँचल नहि गेल।” सम्पादक उत्तर देलक, “एहि तरह समाचारक धार कम भऽ जाएत।” नूर कहलीह, “धार जे लोकक नाम काटिकय तेज होइत अछि, ओ सत्यकेँ काटैत अछि।” ओ अशोकक नाम प्रकाशित करबाक पहिने माया सँ अनुमति लेलनि; माया कहलनि, “नाम छापू, मुदा रागिनीक फोटो नहि।”

दरभंगाक एक प्राथमिक स्वास्थ्य-केन्द्रमे ग्रामीण स्वास्थ्यकर्मी रीता कुमारी घर-घर जा कऽ बुढ़ायल लोकक ज्वरक हाल पुछैत छलीह। हुनका लग न डॉक्टरक सभ औजार छल, न शहरक चिकित्सालय सन सुविधा। ओ स्वास्थ्य-विभागक निर्देश अनुसार लक्षणवला लोककेँ जाँच आ आवश्यक रेफरलक जानकारी दैत, गामक महिलासभकेँ अलगसँ बुझबैत जे साँसक तकलीफ बढ़लापर सहायता टारल नहि जाए। एक वृद्धा कहलीह, “अहाँ स्वयं राति-दिन चलैत छी; अहाँकेँ के देखत?” रीता हँसलीह, मुदा घर पहुँचि जखन अपन पयरक फफोला देखलनि, तखन हँसी रुकि गेल। हुनका पहिल वर्षक स्कूल-छात्रा आरती स्मरण अएलीह, जकर माँ फोन नहि चला सकैत छलीह। स्वास्थ्य-व्यवस्थाक लिखित सन्देश तखन धरि पूरा नहि होइत जाबत ओकर अर्थ घरक बोलीमे बुझाओल नहि जाए।

रीताक गाममे एक बेर कोनो परिवार ज्वरक रोगीकेँ स्थानीय वाहनसँ दरभंगा लऽ जाए चाहैत छल, मुदा चालक संक्रमणक भय सँ मना कऽ देलक। ओ झगड़ा नहि कएलनि; सहायता केन्द्रकेँ फोन कऽ उपलब्ध परिवहनक सही सूचना जुटौलीह, सामुदायिक स्वयंसेवक सँ सम्पर्क कएलनि, आ परिवारकेँ जाँचक कागज सहेजबाक कहलीह। ओहि राति रोगी सुरक्षित अस्पताल पहुँचि गेल, मुदा उपचारक परिणामबारे ओ कोनो गारंटी नहि देलनि। रेवती

पितासँ रीता सम्बन्धी सुनलनि तँ कहलीह, “कानूनक पन्नामे स्वास्थ्यक अधिकार लिखल अछि, मुदा गामक सड़क, गाड़ी आ फोन सँ ओ घरक भीतर पहुँचैत अछि।” शिवनारायण उत्तर देलनि, “तखन सड़कक टूटल हिस्सा सेहो एक प्रश्न अछि।”

मायक आवेदनपर अस्पतालक प्रबन्धन एक औपचारिक बैठक बोलौलक। ओहि दिन चिकित्सक डॉ. आरती, प्रशासनिक अधिकारी प्रभजोत आ अस्पतालक अभिलेख प्रभारी वीणा चौधरी उपस्थित छलीह। माया संग सुनीता आ स्थानीय अधिवक्ता हरमीत सिंह बैसलाह। प्रभजोत कहला जे महामारीक भीषण समयमे चिकित्सालयक कर्मचारी असाधारण काज कएलनि, तें परिवारक कठोर आरोपसँ संस्थाक मनोबल प्रभावित होइत अछि। माया शान्त स्वरमे कहलीह, “हम कोनो कर्मचारीकेँ अपमानित करय नहि अएल छी। जकरा संग हमर जीवनक बीस वर्ष गेल, ओकर अन्तिम दू दिनक क्रम माँगैत छी।” डॉ. आरती कहलनि, “ई उचित प्रश्न अछि। उपचारक मूल अभिलेखक जाँच होयबाक चाही।” प्रभजोत टेबलपर राखल फाइलकेँ अपन दिस घुसकौलनि। ओहि छोट गतिविधिमे बैठकक असली विवाद देखाइत छल।

वीणा कम्प्यूटरक एक विवरण खोललीह। रोगीक नामक लग प्रवेशक समय, जाँचक समय आ मृत्यु-सम्बन्धी प्रविष्टि छल। मुदा दाब-सङ्केतक डिजिटल सारांशमे एक रेखा ११:४० सँ १२:०५ धरि सपाट देखाइत छल; ओंकारक हस्तलिखित पञ्जीमे ओही अवधि मध्य उतार-चढ़ाव दर्ज छल। वीणा कहलीह जे सारांश प्रणाली किछु अवस्था मे अन्तिम प्रविष्टिक मान दोहरबैत अछि। हरमीत पुछलनि, “ई तकनीकी सम्भावना अछि कि एहि विशिष्ट उपकरणक परीक्षणसँ पुष्ट तथ्य?” वीणा उत्तर देलीह, “अभी सम्भावना।” प्रभजोत बीचमे कहलनि, “तखन एहि पर अनावश्यक बहस किएक?” माया पहिल बेर तीख स्वरमे कहलीह, “अनावश्यक ककरा लेल? जे राति पाछाँ नहि लौटि सकैत, ओकरा लेल एक मिनट सेहो अनावश्यक नहि।” बैठकक अन्तमे मूल लॉग सुरक्षित रखबाक लिखित आश्वासन देल गेल।

रेवतीक सलाहपर हरमीत एक तटस्थ चिकित्सकीय विशेषज्ञक मत लेबाक पूर्वतैयारी कएलनि। ओ कहला जे उपचारक प्रचलित मानक, उपलब्ध साधन, रोगक गम्भीरता, तत्कालीन परिस्थितिक वास्तविक सीमा, अनि कोनो सम्भावित त्रुटि आ हानि बीच कारण-

सम्बन्ध—सभ अलग प्रश्न अछि। ‘दुर्घटना भेल मानि लेलासँ दोष सिद्ध नहि होइत,’ ओ माया कैँ बुझौलनि। “आ रोग गम्भीर छल, एहि एक कारणसँ सभ त्रुटि स्वतः माफ सेहो नहि होइत।” सुनीता सुनैत छलीह। ओकरा मजदूरीक प्रकरण याद पड़ल, जतए वास्तविक कामक दिन आ पञ्जीक अङ्क मिलेनिहार छल। मुदा एतए समयक गणना मात्र धनक नहि, ककरो अन्तिम साँसक हिसाब छल। ओकरा बुझायल जे दू प्रकरणक प्रमाण-पद्धति सीखब सम्भव अछि, पीड़ाक तुलनात्मक मूल्य तय करब नहि।

अस्पतालक वकील एक लिखित उत्तर देलनि। ओकर कथन छल जे अशोकक अवस्था भर्ती होइतहि गम्भीर छल; प्रशिक्षित दल उपचार कएलक; महामारीक साधन-संकटमे उपलब्ध सर्वश्रेष्ठ प्रयास भेल; आ उपकरणक चेतावनी मात्रसँ मृत्युकेँ आपूर्तिक रुकावटसँ जोड़ब वैज्ञानिक रूपसँ उचित नहि। हरमीत एहि उत्तरक कोनो पंक्ति फाड़लनि नहि। ओ माया सँ कहला, “एहि बातसभमे जे सत्य अछि, ओकरा स्वीकार करब हमरा पक्षक कमजोरी नहि। जे जाँच योग्य अछि, ओकर उत्तर माँगब।” माया पहिल बेर देखलीह जे अपन दुःखक पक्ष राखबाक अर्थ दोसराक प्रत्येक वाक्यकेँ झूठ कहब नहि होइत। ओकरा अस्पतालक उत्तर पढ़ब बहुत कष्टदायक छल, मुदा ओ पढ़लीह, कारण ओकर पति उपचारक समय एकेठाम छल आ एहि लोकसभ ओहि ठाम उपस्थित छलाह।

गुरप्रीत एक साँझ रेवतीसँ दूरभाषपर बात करबाक लेल सहमत भेलि, एहि शर्तपर जे ओकरा अप्रमाणित आरोपक सार्वजनिक मुख बनायल नहि जाए। ओ स्पष्ट कएलक जे ओ अभिलेख सुरक्षित रहबाक पक्षमे अछि आ कोनो गोपनीय रोगीक विवरण अनधिकृत लोककेँ नहि देत। रेवती कहलीह, “अहाँ जखन उचित मंच पर गवाही देब, तखन जे प्रत्यक्ष देखलहुँ ओही तक रहू।” गुरप्रीत कहलनि, “हम एक यन्त्रक घंटी सुनलहुँ, चिकित्सककेँ खबर देलहुँ, आ अपने देखल माप लिखलहुँ। दोसर उपकरणक भीतरक कारण हम नहि जानैत छी।” रेवती एहि सीमाक सम्मान कएलनि। नूर जतय पछाति ओकर साक्षात्कार चाहलीह, मुदा गुरप्रीत सार्वजनिक रूपसँ बोलबाक मना कएलनि। नूर ओकर मौनकेँ दोषक स्वीकृति नहि मानलनि।

एक दुपहर सरबजीत कौर सुनीताकेँ भेटलीह। बैंकमे मृत खाताधारकक उत्तराधिकार आ नामिनी सम्बन्धी प्रश्न बढ़ल छल। माया अशोकक खातासँ घरक भाड़ा देबाक लेल उपलब्ध

धनक कानूनी पहुँच बुझय चाहैत छलीह। सरबजीत ओकरा उचित कागज, नामिनी आ कानूनी वारिसक स्थिति अलग-अलग समझौलीह; साथहि कहलनि जे बैंक स्वास्थ्य-क्षतिपूर्तिक निर्णय नहि करैत अछि। “अहाँक हर काजक लेल अलग खिड़की भेटत,” माया थाकल स्वरमे कहलीह। सरबजीत उत्तर देलीह, “खिड़की अलग होयब आवश्यक भऽ सकैत अछि, मुदा हर खिड़की पर आदमीकेँ शून्यसँ अपन दुःख नहि बुझाबय पड़य—एहि लेल संस्थासभ जिम्मेवार छथि।” माया ओहि वाक्यक याद राखलीह, जखन बादमे सरकारी सहायता लेल नव आवेदन भरबाक समय आएल।

जूनमे रागिनीक विद्यालय पुनः ऑनलाइन कक्षा चलौलक। विद्यार्थीसभसँ महामारीपर निबन्ध लिखबाक कहल गेल। रागिनी शीर्षक लिखलक—‘हमर घरक हवा’। पहिल अनुच्छेदमे नीमक गाछ छल, दोसरमे पिताक बनाओल पंखा, तेसरमे अस्पतालक बन्द दुआरि। अन्तिममे ओ लिखलक जे एक दिन सभ घरक खिड़की खुलत, मुदा एक घरक भीतरक रिक्तता नहि भरत। शिक्षक ओकरा उत्तम अङ्क देलनि आ अभिभावक-सहमति बिना पूरा निबन्ध समूहमे पठेबाक नहि चाहलनि। माया निबन्ध पढ़िकय रोए पड़लीह। ओकरा ई नहि छल जे बच्चाक दुख साहित्य बनि गेल; ओकरा ई बुझायल जे जे प्रश्न ओ कानूनक कागजमे लिखैत अछि, ओ बेटी अपन भाषामे पहिनेसँ जीबि रहल अछि।

ओही मास रेवती एक चिकित्सकीय विधि विशेषज्ञ डॉ. नवदीप बेदीसँ स्वतन्त्र राय लेलनि। ओ उपचार दऽ रहल संस्थासँ असम्बद्ध छलाह। उपलब्ध अपूर्ण कागज देखिकय ओ स्पष्ट कएलनि जे रोग गम्भीर छल, किछु उपचार-निर्णय तत्कालीन निर्देशसँ अनुरूप देखाइत अछि, आ उपकरणक चेतावनीक असली अवधि जाँचल बिना कोनो चिकित्सकक लापरवाही घोषित नहि कएल जा सकैत। “प्रश्न क्रमसँ पुछू,” ओ कहला। “एक—दाब वास्तवमे घटल कि नहि? दू—घटल तँ कतेक बेर? तीन—ताहिसँ रोगीकेँ देल ऑक्सीजनपर की प्रभाव पड़ल? चारि—समयपर वैकल्पिक साधन उपलब्ध करायल गेल कि नहि? पाँच—जे निष्कर्ष आबि रहल अछि, तकर समर्थन कोन अभिलेख करैत अछि?” सुनीता कापीमे पाँचू प्रश्न लिखलक। माया पुछलीह, “आ छठम?” डॉ. बेदी कहला, “अहाँ जकरा जानय चाहैत छी—एहि सभक परिणाम बदलल होइत कि नहि। एहि प्रश्नक उत्तर सभसँ कठिन अछि।”

एहि बीच डॉ. आरती एक सहकर्मीक असामयिक मृत्यु-सँ विचलित छलीह। अस्पतालमे काम करैत एक युवा चिकित्सक संक्रमणसँ गम्भीर बीमार पड़ि नहि बचल छल। शोकक सभा सेहो छोट आ सीमित छल। आरती अपन मेजक दराजमे ओकर लिखल एक पर्ची रखैत छलीह —“रोगीक नाम पहिने पढ़ू।” ओहि युवकक स्मृतिमे आरती तय कएलनि जे अस्पतालक अभिलेख-संशोधनक प्रत्येक अनुरोधक जिम्मेदारी स्पष्ट हो। प्रभजोत कहला, “अहाँ आपत्तिक समय प्रशासनिक भार बढ़ा रहल छी।” आरती उत्तर देलीह, “सही अभिलेखक बिना चिकित्सक सेहो अपन उपचारक समीक्षा नहि करि सकैत।” ओ स्वयंकेँ निर्दोष सिद्ध करबाक लेल नहि, आगाँक रोगीकेँ त्रुटिसँ बचेबाक लेल बोलि रहल छलीह। मुदा ओकर प्रस्ताव प्रबन्धनक भीतर सहज स्वीकार नहि भेल।

जुलाईक बरखा पहिल बेर आबि गलीक धूलि धोए देलक। अशोकक बनाओल पंखाक नीचाँ रामलखन एकटा छोट लड़िकाकेँ गणित बुझा रहल छलाह। ओ लड़िकी रागिनी छलि, जकर कापीपर तीनटा संख्या लिखल छल—एक, दोसर आ तेसर। “तीन जोड़ि पाँच कतेक?” रामलखन पुछलनि। ओ कहलीह, “आठ।” “आ यदि तीनमे सँ दू घटाउ?” बच्ची उत्तर देलक, “एक।” ओहि साधारण प्रश्नपर माया दुआरिसँ हँसि देलीह। चारि मासमे पहिल बेर हँसी ओकर मुखपर ठहरल। फेर पंखाक आवाज बदलि गेल तँ रागिनी उठिकय पंखाक पाँख देखलक। “पापा कहने छलाह जखन घरघराए तँ पेंच ढीला अछि।” ओ छोट पेचकस लऽ आयलि। रामलखन ओकरा धातुक भाग छूबय सँ पहिने बिजलीक तार निकालबाक सिखौलनि। मृत व्यक्तिक सिखाओल सावधानी कतेको बेर जीवितक हाथमे चलैत रहैत अछि।

चण्डीगढ़मे हरमीत अपन कार्यालयक एक शांत कमरामे मायक सम्भावित उपभोक्ता-विवादक फाइल तैयार कएलनि। ओ २०१९ क उपभोक्ता-संरक्षण कानूनक अधीन स्थापित उपयुक्त आयोगक समक्ष चिकित्सा-सेवामे कथित कमी आ क्षतिपूर्तिक दावाक बाट परामर्श देलनि। मुदा आवेदनक पहिल पन्नापर ‘चिकित्सालयक प्रत्येक कर्मचारी अपराधी’ सन कोनो कथन नहि लिखल गेल। मायाक आरोप सीमित छल—माँगल अभिलेखक अपूर्ण आपूर्ति, आपूर्ति-दाब आ उपचारक समयक्रमक विरोधाभास, आ यदि विशेषज्ञ जाँचसँ विशिष्ट चूक प्रमाणित हो तँ तकर सम्बन्धमे सेवा-उत्तरदायित्व। हरमीत कहलनि, “अभियोगक सीमा राखब

ओकर बल घटेबाक नहि, न्यायिक विचारक योग्य बनेबाक उपाय अछि।” माया दस्तखत करैत घड़ी अशोकक पुरान नामनी लिखावट देखलीह आ हाथ फेर रुकि गेल।

रेवती एहि विवादमे एकटा कड़ा सीमा खिचलीह। चिकित्सकीय लापरवाहीक नागरिक क्षतिपूर्ति, राज्य सरकारक महामारी सहायता आ अस्पतालक अभिलेख देबाक पेशागत दायित्व एकहि नत्थीमे रहि सकैत अछि, मुदा एकहि विधिक अधिकार नहि। “आर्थिक सहायता भेटलासँ अस्पताल दोषी नहि सिद्ध होइत,” ओ सुनीताकेँ कहलीह। “आ अस्पताल दोषमुक्त सिद्ध भेलो पर महामारीक कारण मृत्यु सम्बन्धी वैधानिक सहायता नियम अनुसार सम्भव भऽ सकैत अछि।” सुनीता एहि बातकेँ माया लेल सरल भाषामे लिखलक। ओकरा एखन ओ वर्ष याद छल जखन श्रमिक किछु बकाया भुगतान लेबाक समय शेष दावाक स्पष्ट आरक्षण लिखने छल। एके जीवनमे अलग-अलग अधिकारक दस्तावेज अलग रहैत अछि; ओ सभकेँ कागज पर गड्डमड्ड नहि करबाक अभ्यास कऽ रहल छलि।

आवेदन दाखिल भेलाक बाद आयोगक प्रारम्भिक प्रक्रियामे चिकित्सालयसँ उत्तर माँगल गेल। मायाक मनमे कल्पना छल जे पहिल दिनहि न्यायाधीश सभ सत्य कहि देताह, मुदा हरमीत स्पष्ट कएलनि जे सुनबाईक क्रममे पक्षकारक उत्तर, अभिलेखक प्रामाणिकता, विशेषज्ञक उपयुक्त मत आ आवश्यकताअनुसार प्रतिवादक अवसर रहत। अस्पतालक तरफसँ ई आपत्ति उठल जे महामारीक असाधारण चिकित्सकीय परिस्थिति नब मानक बना देबाक विषय नहि; उपलब्ध साधनक भीतर उचित व्यावसायिक सावधानीक कसौटी लागू होयबाक चाही। माया एहि तर्ककेँ सुनि कहलीह, “हम एहि बातसँ सहमत छी जे प्रत्येक मृत्यु लापरवाही नहि होइत। मुदा अस्पताल जखन लिखैत अछि जे किछु बिगड़लहि नहि, आ ओकर अपन पुस्तक दोसर सूचना दैत अछि, तखन हमरा प्रश्न करबाक अधिकार अछि।” ओकर स्वरमे क्रोध छल, मुदा क्रोधक भीतर एक आश्चर्यजनक ठहराव।

पहिल सुनबाई आभासी माध्यमसँ तय भेल, किएक तँ महामारीक कारण नियमित भौतिक उपस्थिति सीमित छल। हरमीतक कार्यालयमे मायाक लेल अलग कुर्सी राखल गेल, जाहिसँ ओ स्क्रीनपर अपन चेहरा देखेबाक दबाव बिना अधिवक्ताक संग परामर्श कऽ सकय। आयोगक समक्ष अस्पतालक अधिवक्ता उपस्थित भेलाह। अध्यक्ष प्रारम्भमे स्पष्ट कएलनि जे

अदालत एहि दिन न चिकित्सकीय दोष निर्धारित करत, न क्षतिपूर्तिक राशि। प्रश्न छल—कोन आवश्यक अभिलेख उपलब्ध करायल गेल अछि, कोन शेष अछि, आ मूल डिजिटल विवरण सुरक्षित राखबाक कर्तव्य ककरा पर अछि। अस्पतालक अधिवक्ता कहलनि जे अधिकतर फाइल परिवारकेँ भेजल जा चुकल अछि। हरमीत सूची मिलाकय शेष कागजक तिथि बताएलनि। आयोग पक्षसभकेँ निर्धारित समयमे उत्तर आ सूची प्रस्तुत करबाक निर्देश देलक। माया घर लौटलीह तँ कहलीह, “एहि दिन फैसला नहि भेल, मुदा हमरा सुनल गेल।”

नूर जतय मायाक घर अएलीह तँ रिकॉर्ड करबाक पहिने अनुमति माँगलीह। माया कहलनि, “हम बोलब, मुदा हमर बेटी पढ़ैत छैक, ओकरा बारम्बार प्रश्न नहि करू।” नूर मानि लेलीह। ओ एहि बारे समाचार बनबैत समय अस्पतालक उत्तर सेहो माँगलनि। प्रभजोत कहलनि जे चिकित्सालय अनेक रोगीकेँ उपचार देलक, आ परिवारक भावनाकेँ सम्मान करैत अछि; न्यायिक प्रक्रियाक अन्तिम परिणामक पहिने विशिष्ट दोषारोपण अनुचित अछि। नूर एहि उत्तरकेँ वाक्यांश न काटि प्रकाशित कएलनि। ओकर रिपोर्टमे एक ओर अशोकक मरम्मत कएल पंखा छल, दोसर ओर अभिलेखक दाब-निर्देशक रेखा, आ बीचमे स्पष्ट पंक्ति —“कारणक जाँच चलि रहल अछि।” एहन समाचार बहुत लोककेँ नाटकीय नहि लागल; मुदा मायाकेँ अपन पति ककरो सनसनीक पात्र बनल नहि देखबाक राहत भेल।

तकनीकी सेवा-प्रदाताक ओरसँ एक नब जानकारी भेटल। चिकित्सालयक मुख्य प्रणालीमे समयक संकेत स्वतः समायोजनक सुविधा छल, मुदा दू अलग यन्त्रक घड़ी सालक एक अवधि धरि एकहि स्रोतसँ मिलाओल नहि गेल छल। एहि कारण मूल लॉगक किछु क्षण समायोजित पृष्ठपर दोसर समय देखाइत छल। एहि खोजसँ सभ विरोधाभास दूर नहि भेल। उलटे एक प्रश्न उठल जे ‘निर्बाध’ लिखल शब्द ककर प्रत्यक्ष परीक्षणपर आधारित छल, अथवा खाली स्थान भरबाक पूर्वनिर्धारित संकेत छल। वीणा डिजिटल सेवाक पुरान विन्यास-पत्र निकाललीह। प्रभजोत कहलनि, “यदि प्रणालीक सामान्य त्रुटि छल तँ अस्पताल पर आरोप किएक?” वीणा उत्तर देलीह, “त्रुटि जकरो हो, रोगीक उपचार-विवरण पर ओकर असर देखबाक अछि। जिम्मेदारीक प्रश्न तकर बाद।” ओहि दिन ओ पहिल बेर कार्यालयमे अपन सहकर्मीसभक सम्मुख स्पष्ट रूपसँ बोललीह।

ओंकारकेँ प्रबन्धनक एक सदस्य सलाह देलक जे पुरान हस्तलिखित पञ्जीकेँ ‘साफ’ करि फेर लिखल जाए। ओ कागज फेर समतल कएलक आ कहलक, “साफ प्रति बनायब तँ ठीक। मुदा पुरान पन्ना, काटल अंक आ समयक टेढ़ा अक्षरक संग मूल प्रति रहत।” सदस्य उत्तर देलक, “अहाँक एतेक हठसँ संस्था विवादमे पड़त।” ओंकार कहलक, “जे ठाम मशीनक खराबी होय, ओतए हम मरम्मत करैत छी। जे ठाम कागजक इतिहास होय, ओतए मरम्मत करबाक नामपर इतिहास बदलि नहि सकैत।” ओकरा अपन नौकरीक चिन्ता छल; घरमे वृद्ध माएक दवाई खरीदबाक भार छल। तथापि ओ पन्ना नष्ट नहि कएलक। ओही राति पत्नी पूछलनि, “कल्हि नौकरी रहत?” ओंकार कहलक, “पता नहि। मुदा हमर लग जे लिखल अछि, से रहत।”

सितम्बरमे अशोकक परिवारक लेल कोविड-सम्बन्धी मृत्यु सहायता पर नव सरकारी दिशा-निर्देशक समाचार आयल। माया आवेदनक पात्रता बुझबाक लेल जिला कार्यालय गेलीह। कर्मचारी प्रपत्र देखबैत कहलनि जे कोविडक कारण मृत्यु सम्बन्धी अधिकृत दस्तावेज, पहचान, परिजनक स्थिति आ निर्धारित आवेदनक व्यवस्था चाही। ओहि समय ५०,००० रुपैयाक अनुग्रह-सहायताक नियम स्पष्ट भेल छल। माया पूछलीह, “ई अस्पतालक लापरवाहीक मुआवजा अछि?” कर्मचारी कहलक, “नहि, आपदा-सम्बन्धी सहायता अछि। चिकित्सा-विवादक निर्णय दोसर संस्थाक अछि।” माया अपन पोटलीमे दू अलग लिफाफा कएलनि। एकपर लिखलनि—‘सहायता’; दोसरपर—‘उपचारक सच’। दुनू लिफाफाक भीतर अशोकक नाम छल, मुदा दुनूक अर्थ अलग छल।

आवेदनक पहिल समीक्षा मे अधिकारी मृत्यु-प्रमाणपत्रक शब्दावलीपर स्पष्टता माँगलक। चिकित्सालयक कागजमे ‘गम्भीर श्वास-विफलता’ आ संक्रमण सम्बन्धी विवरण छल, मुदा राज्यक निर्धारित प्रारूपक एक विशेष कोष्ठ अधूरा छल। माया कैं फेर अस्पतालक दुआरि जाए पड़ल। रागिनी ओहि दिन गृहकार्यक कापीमे लिखलक—‘माँ कागज लऽ गेलीह’। सुनीता स्थानीय सहायता-कक्षमे अधिकारीसँ जानकारी लेलनि। ककरो कहि देब जे ‘प्रमाणपत्रमे ई विशेष शब्द नहि, तें कोनो सहायता नहि’ विधिक रूपसँ उचित नहि छल; सम्बन्धित दिशानिर्देश आ शिकायत-निवारणक प्रक्रिया देखबाक छल। माया आवेदनक पावती लऽ घर

लौटीह। ओकरा मददक आवश्यकता छल, मुदा ओ गलत घोषणा कऽ रकम नहि चाहैत छलीह।

चारि अक्टूबरक सर्वोच्च न्यायालयक निर्देश सम्बन्धी समाचार रेवती पढ़लीह। ओ माया कैं कहलनि जे स्थापित नियमक अनुसार मृत्यु-सहायताक आवेदन, प्रमाणपत्रक सुधार आ शिकायत-निवारणक बाट अधिक स्पष्ट भेल अछि; अधिकारी आवश्यक चिकित्सकीय कागज माँगि सकैत छथि, आ परिवार उचित निर्णयक अपेक्षा करि सकैत अछि। माया पुछलीह, “यदि रकम भेटि गेल तँ केस बन्द?” रेवती कहलीह, “नहि। एक सहायता-योजनाक स्वीकृति आ चिकित्सालयक सेवाक विशिष्ट दोषक प्रश्न स्वतंत्र अछि। किछु भुक्तान दोहरा लाभ रोकबाक विधिक नियम सँ प्रभावित भऽ सकैत अछि, मुदा एहि दू प्रक्रियाकैं एक मानब नहि।” माया कहलीह, “हमर लिफाफामे दू नाम नहि, दू प्रश्न अछि।” रेवती एहि वाक्यकैं अपन कापीमे लिखि लेलीह।

अस्पतालक एक बैठकमे डॉ. आरती प्रस्ताव रखलीह जे उपचार-सम्बन्धी असामान्य घटनाक आन्तरिक समीक्षा ओहि कर्मचारिसँ अलग समूह करय जे प्रत्यक्ष पालीमे छलाह, आ परिवारकैं उपलब्ध अभिलेखक प्रमाणित प्रति देल जाए। प्रभजोत कहला, “ई प्रक्रिया दोष स्वीकारबाक समान बुझल जाएत।” आरती उत्तर देलीह, “जाँच करवब दोष स्वीकारब नहि; जाँचसँ बचब निर्दोषताक प्रमाण सेहो नहि।” वीणा एहि प्रस्तावक पक्षमे बोललीह। गुरप्रीत अपन पालीक सत्य कथन देबाक सहमति देलीह, मुदा ओकरा आग्रह छल जे चिकित्सालयक ओहि दिनक सम्पूर्ण कार्यभार, कर्मचारीक संख्या आ रोगीक चिकित्सकीय गम्भीरता सेहो समीक्षा मे दर्ज हो। एकटा घटना बुझबाक लेल ओकरा जखन घटल, ताहि वातावरणक समयक साक्ष्य जरूरी छल।

नवम्बरक आरम्भमे विशेषज्ञक प्रारम्भिक मत आयोगक समक्ष प्रस्तुत भेल। डॉ. बेदीक प्रतिवेदनमे स्पष्ट छल जे उपलब्ध अभिलेखसँ अशोकक मूल रोग अत्यन्त गम्भीर छल; उपचारक किछु भाग चिकित्सकीय दृष्टिसँ उचित देखाइत अछि; पर विशेष रातिक दाब-सङ्केत, हस्तलिखित पञ्जी आ डिजिटल सारांश बीचक अन्तरक स्वतन्त्र तकनीकी मिलान बिना निश्चित कारण-सम्बन्ध पर मत देब सम्भव नहि। माया एहि सावधान मतकैं पढ़ि चुप

रहलीह। अस्पतालक पक्ष कहलक जे कोनो दोष सिद्ध नहि भेल, जे सत्य छल। हरमीत जोड़लनि जे जाँच एखन अपूर्ण अछि, ई सेहो सत्य छल। आयोग आवश्यक मूल अभिलेख आ प्रणालीक विवरण सुरक्षित राखि प्रस्तुत करबाक सीमित निर्देश देलक; अन्तिम जिम्मेवारीक निर्णय स्थगित रहल। “न्याय टलि गेल?” मायाक एक रिश्तेदार पुछलक। माया कहलीह, “नहि। एखन सत्यक एक दरबज्जा खुलल अछि।”

ओहि समय पंजाबक गामसभसँ किसान आन्दोलनक बात शहरक गल्लीमे नियमित अबैत छल। बलदेव सिंह अपन गामक वृद्ध चचासँ फोनपर खेतीक मूल्य, ऋण आ सीमा-पार यात्रा सम्बन्धी चर्चा करैत छलाह। सुनीता सुनैत छलि जे किछु किसान आन्दोलनक मंचपर श्रमिक परिवारक लेल भोजन-पानिक व्यवस्था होइत अछि, मुदा राजनीतिक भाषण आ व्यक्तिगत कठिनाई सभ सदिखन एकहि स्वरमे नहि मिलैत। बलदेव कहला, “कारखानाक मजदूर आ खेतक किसानक समस्या एक नहि, मुदा एक दोसराक भूख बुझि सकैत अछि।” सुनीता उत्तर देलक, “जखन मंच बनत तँ ओकर भीतर पैघ आवाजक संग ओहि लोकक सेहो स्थान होय जे हँसिया, कपास आ भोजनक असली मेहनत करैत अछि।” ओ ई नहि जानैत छलि जे अगिला वर्षक कथा किसानक अपन आवाजसँ शुरू होयबाक छल।

सरबजीतक बैंकमे एक परिवार सरकारी कोविड-मृत्यु सहायता प्राप्त करैत देखल गेल। वृद्ध माता बारम्बार खाता-पुस्तिका देखैत छलीह, मानू रकमक अंकमे अपन बेटाक नाम खोजैत छथि। सरबजीत शान्त स्वरमे जानकारी देलनि, “ई सहायता अहाँक कानूनी अधिकारक प्रक्रिया अनुसार पहुँचल अछि।” वृद्धा कहलनि, “रुपैया सँ बेटा लौटि जायत?” सरबजीत उत्तर नहि देलीह। ओ सिर्फ आवेदनक अगिला आवश्यक प्रति बनौलीह। हुनका बुझाइत छल जे वित्तीय संस्थाक भूमिका राशिक सुरक्षित पहुँच सुनिश्चित करब अछि, शोकक मूल्यांकन नहि। माया सेहो अपन सहायता-आवेदनक अगिला चरणक सूचना प्राप्त कएलनि, मुदा ओ अशोकक फाइलक विषयमे लिखित जवाब माँगब बन्द नहि कएलनि।

दिसम्बरक एक ठण्ढ साँझमे रागिनी घरक बन्द खिड़की खोललक। बाहरक हवा सिहरल, पंखा बन्द छल। माया सूतिक साड़ी समेटैत कहलीह, “जाड़मे पंखा किएक चलाएब?” रागिनी उत्तर देलक, “पापा ई ठीक कएने छलाह, देखू आबो चलैत अछि कि नहि।” माया प्लग

लगाबय सँ पहिने तारक इन्सुलेशन देखलीह। पंखा धीरे-धीरे घूमल। ओकर आवाज पहिनुका सन निर्बाध नहि छल, बीचमे एक सूक्ष्म घरघराहट छल। रागिनी कहलीह, “एहि ठाम पेंच फेर कसब।” माया पेचकस ओकर हाथमे देबाक बदला पंखा बन्द कएलनि आ कहलीह, “हम दुनू संग सीखब।” ओ क्षण क्षतिपूर्तिक कागजसँ बाहरक छल—एक बच्चा पिता सँ सीखल कामकेँ अपन जीवनमे बचौने छलि।

नव वर्षक पहिने मायाकेँ अस्पतालसँ एक औपचारिक पत्र भेटल। पत्रमे कहल गेल छल जे तकनीकी आपूर्तिक मूल अभिलेखक प्रतिलिपि सुरक्षित कएल जा रहल अछि आ आवश्यक विवरण उचित न्यायिक मंचपर प्रस्तुत कएल जाएत। मुदा परिवारक पहिने देल गेल प्रश्न —‘निर्बाध’ शब्द ककर प्रत्यक्ष प्रमाणपर आधारित छल—एहि पर पत्र चुप छल। सुनीता कहलीह, “अहाँ चाही तँ हम अगिला पेशीक तैयारी करब।” माया उत्तर देलीह, “करब। मुदा हमर आवेदनक पहिल पंक्ति ओहने रहत।” ओ अपन कापी खोललीह। पहिल पन्नापर लिखल छल—“अशोक मिस्त्री, जन्मक वर्ष, घरक पता, पत्नीक नाम, बेटी रागिनी।” दोसर पन्नापर अस्पतालमे प्रवेशक तिथि। तेसर पन्नापर प्रश्न। माया कापी सुनीताक दिस घुमा कऽ कहलीह, “मुआवजासँ पहिने हमरा उपचारक सत्य चाही।”

रेवती ओहि पन्नाक छाया-चित्र देखि बहुत देर मौन रहलीह। वर्ष २००० क दरभंगाक अदालतमे पिता कहने छलाह जे बहीखातामे लिखल नामक पाछाँ जीवित व्यक्ति होइत अछि। एक्कीस वर्ष बाद रोगी-पञ्जीमे लिखल समयक पाछाँ एकटा साँस, एकटा परिवार आ एकटा अधूरा पंखा छल। रेवती अपन नोटबुकमे अदालतक अगिला सुनबाईक तिथि लिखलीह, फेर ओकरे नीचाँ मायाक माँग। ओ बुझैत छलीह जे पैसाक आदेश कतेको बेर आर्थिक अभाव घटा सकैत अछि, मुदा जे राति एक बेर बीति गेल ओकर सच केवल उचित जाँचसँ जानल जा सकैत अछि। लुधियानाक बाहर दिस कोनो किसानक सभा लेल लोक जूटि रहल छल। ककरो हाथमे खेतक माटि छल, ककरो हाथमे मजदूरीक पर्ची, आ मायाक हाथमे अशोकक अन्तिम उपचारक कापी—तीनू हाथ आगाँ अपना-अपना प्रश्न लऽ जा रहल छल।

अध्याय २६ — खेतक नामपर आवाज

सन् २०२१ : हरनामपुर, लुधियाना, चण्डीगढ़ आ दिल्लीक सीमापर किसान आन्दोलन

जनवरीक एक भोर लुधियानासँ पश्चिमक गाम हरनामपुरमे धानक खाली खढ़पर ओस जमल छल। जसप्रीत कौर गेहूमक खेतक कात झुकि एकटा कोंढ़ि हाथमे लेलनि। पौधाक भीतर हरी रंगक जे महीन रेखा छल, ताहि पर हुनकर दृष्टि देर धरि अटकल। खेत साढ़े तीन एकड़ छल, मुदा घरक भीतर ओकर नाप एतेक सरल नहि। एहि जमीनक किछु भाग पति गुरनाम सिंहक पिता छोड़ने छलाह; किछु भाग बहिनक विवाहक कर्जा चुकबैत बन्धक पड़ल; शेष भागक उपजसँ तीन पीढ़ीक रोटी जुटैत छल। जसप्रीत कागजपर स्वामी नहि लिखल छलीह, तैयो बीज चुनबसँ भण्डारक ताला लगायब धरि हुनके हाथक काम छल। ओ पातक सिरा छोड़ि कहलीह, “एहि बेर ठण्ढ ठीक रहल तँ दाना नीक भरत।” गुरनाम उत्तर देलनि, “दाना भरलासँ कतेक लाभ, से मण्डीक हिसाब कहत।” दूनू अपन-अपन सच कहि रहल छलाह।

घरमे बूढ़ी हरबंस कौर चूल्हिक लग मसाला कुटैत छलीह। छियासठ वर्षक जीवनमे ओ ओतेक फसल देखलनि जे संख्या गनब छोड़ि देने छलीह, मुदा प्रत्येक वर्षक कर्जा हुनका अलग याद रहैत छल। ओ बेटा सँ कहलनि, “आजु जँ सभा जाएब तँ कागज लऽ जइह। खाली नारा सँ खेतक हिसाब नहि बदलत।” गुरनामक जेबमे किसान संगठनक लाल किनारवला पर्ची छल। पर्चीपर तीन कृषि कानूनक विरोध, न्यूनतम समर्थन मूल्यक भरोसा आ दिल्लीक सीमा पर बैसल किसानक उल्लेख छल। ओहि पर्चीक पाछाँ हरबंस पुरान महाजनक बहीसँ उतारल कर्जाक अङ्क लिखने छलीह। एकहि कागज पर नारा आ देनदारी आमने-सामने ठाढ़ छल।

जसप्रीतक बेटी मनप्रीत कृषि-अर्थशास्त्र पढ़ि रहल छलीह। महामारीक बाद ओकर बहुतेक अध्ययन मोबाइलपर भऽ रहल छल। ओ एक अखबार खोलिकय बारह जनवरीक सर्वोच्च न्यायालयक आदेश पढ़ि सुनौलक—तीन कृषि कानूनक क्रियान्वयनपर अन्तरिम रोक,

पहिनुक न्यूनतम समर्थन मूल्य व्यवस्था यथावत् राखबाक निर्देश, आ विशेषज्ञ समिति। गुरनाम राहतक साँस लेलनि; हरबंस पुछलनि, “तँ आब हमरा सभ घर लौटि खेती करब?” मनप्रीत कहलक, “अम्मा, रोक आ कानून वापस भऽ जाएब एक नहि होइत अछि। आन्दोलनकारी सभक माँग एखन पूरा नहि भेल अछि।” जसप्रीत जोड़लनि, “जतय खेतीक दाम आ खरीदारक भरोसा पर बहस होइत अछि, ओतय जकर हाथमे खेतक कागज नहि अछि, ओकरो आवाज चाही।” मनप्रीत माएक एहि वाक्यकेँ अपन नोटमे उतारि लेलक।

हरनामपुरक चौकपर छोट सभा छल। सभा चलौनिहार शमशेर सिंहक पैघ जोत छल; ओ अनुभवसँ बोलैत छलाह आ लोक हुनका सुनैत छल। पर जखन ओ कहलनि जे ‘सभ किसान एक बात चाहैत छथि’, तखन जसप्रीत हाथ उठौलीह। “कतेक किसान?” ओ पुछलनि। “आ खेतमे रोपनी, निकौनी, कटनी करनिहार स्त्रीसभ? जमीन नहि भेलासँ हुनकर नाम सूचीमे नहि अएत?” शमशेर क्षण भरि असहज भेलाह। उत्तरमे कहला, “हमरा सभमे स्त्रीक सम्मान अछि।” जसप्रीत फेर पुछलनि, “सम्मानक पाँतिसँ सदस्यक स्थान भिन्न होइत अछि ने?” सभा चुप पड़ि गेल। पहिल पाँतिमे बैसल परमजीत कौर अपन छोट बही खोलि कहलीह, “आजुसँ नब सूची बनत। प्रत्येक सदस्यक श्रम आ योगदान लिखल जाए। जे सभ खेती करैत छथि, हुनका सभकेँ बोलबाक अवसर भेटत।”

ओहि सभामे मंजू देवी सेहो छलीह। ओ बिहारक मधुबनी जिलासँ विवाह पछाति पंजाब आएल छलीह। पति मनोज खेतिहर मजदूरी करैत छलाह, स्वयं मंजू गेहूम काटबाक मौसममे खेतपर जाइत छलीह आ बाँकी दिन दू घरमे काम करैत छलीह। कागतपर हुनकर नाम न कर्जदारक सूचीमे छल, न स्वामीक। “मूल्य बढ़त तँ मजदूरी बढ़त कि नहि?” ओ पुछलनि। एक वृद्ध किसान हँसि देलनि, “पहिने किसानकेँ मूल्य तऽ भेटय।” जसप्रीत ओहि हँसीक दिस देखि कहलीह, “हमरा सभकेँ जखन न्याय चाही, तखन हमर संग काम करनिहारक प्रश्न सुनबो पड़त। नहि तँ खेतक भीतर सेहो एक बन्द दुआरि रहि जायत।” शमशेर बात काटलनि नहि। ओ पहिल बेर सभाक विवरणमे मंजूक प्रश्न लिखौने छलाह।

अगिला सप्ताह लुधियानाक कारखानासँ अवकाश लऽ सुनीता पासवान गाम पहुँचलि। बलदेव सिंह ओकरा बजौने छलाह। सन २००९ सँ मजदूरी-पञ्जीक विवादमे बिताओल वर्ष

सुनीताकेँ सिखौने छल जे लोक बकाया राशिक हिसाबसँ पहिने अपन कामक दिन गनैत अछि। ओ किसानसभसँ कहलक, “हम खेतक दाम तोकबाक विशेषज्ञ नहि छी। मुदा जँ संगठनक मदति लेल रुपैया उठैत अछि तँ कतयसँ आयल, कतय खर्च भेल, तकर बही रखबाक अभ्यास करा सकैत छी।” परमजीत ओकरा घरक आँगनमे बैसौलीह। सामने गेहूमक बोरी, पीतरक गिलास आ एक पुरान रजिस्टर छल। “रजिस्टर एतेक साफ नहि,” परमजीत कहलीह, “मुदा पैसा हराइ नहि रहल अछि।” सुनीता मुस्की देलक, “एहि विश्वासकेँ अंकक सहारा देब।”

संगठनक स्थानीय शाखा ‘धरती जनसभा समिति’ नामसँ राहत, खेतिहर संवाद आ शान्तिपूर्ण प्रदर्शनक आयोजन करैत छल। ई राष्ट्रीय आन्दोलनक कोनो आधिकारिक प्रतिनिधि संस्था नहि, हरनामपुर आ आसपासक गामक अलग स्वैच्छिक समूह छल। शमशेर अध्यक्ष, परमजीत कोषाध्यक्ष आ जसप्रीत ग्रामसभासभक सम्पर्कक जिम्मेदार बनलीह। पहिल बैठकमे परमजीत तीन अलग खाता देखौलीह—स्वेच्छा-चन्दा, भोजन-सहायता आ यात्रा-खर्च। सुनीता पुछलक, “जे दान राशनक रूपमे भेटल, ओकर मूल्य कना लिखैत छी?” परमजीत कहलीह, “किछु लोक बिना मूल्य लिखने दैत छथि।” “तँ चावल कतेक किलो, आ देनिहारक इच्छा कोन प्रयोजन लेल, से लिखू। अंक अनुमानसँ नहि बनाउ।” एहि छोट परामर्शपर किछु सदस्य कहला जे आन्दोलनक जोश बहीक बारीकीमे फँसत। परमजीत उत्तर देलीह, “जोशक रक्षा लेल बही चाही।”

गामक आढ़तिया जगजीत अरोड़ा अपन दुकानक बाहर बैसल छथि। हुनकर परिवार तीन पीढ़ीसँ धान-गेहूमक खरीद, तोल आ उधारीक व्यापार करैत छल। किसानसभमे किछु हुनका शोषक कहैत छल, किछु कठिन समयमे उधार देनिहार मित्र। जगजीतक बहीमे जसप्रीतक परिवारक तीन ऋतु पुरान एक ऋण छल, जाहिमे ब्याजक गणनाक दूनू पक्ष अलग अर्थ करैत छलाह। मनप्रीत पन्ना देखिकय कहलि, “मूल धन, ब्याज, बीजक अग्रिम आ उपज बेचबाक बाद काटल रकम अलग-अलग देखाउ।” जगजीत पुछलनि, “तों हमपर अविश्वास करैत छें?” “नहि,” मनप्रीत उत्तर देलक, “हम एतेक वर्षक मौखिक भरोसाकेँ लिखित बनबैत छी, जाहिसँ न अहाँपर झूठ आरोप लगय, न हमरा पर।” जगजीत नब खाता खोलबाक सहमति देलनि, मुदा अपन प्रशासनिक खर्चक औचित्यपर बहस बाँकी रहल।

गामक दोसर कृषक रजनीश ग्रोवर किसान आन्दोलनक सभ माँगसँ सहमत नहि छलाह। ओ छोट भूखण्डमे सब्जी उगबैत, सीधे शहरक रसोईघर आ दुकानदारकेँ बेचैत छलाह। हुनका लागैत छल जे नब व्यापारिक बाटक सम्भावना पूरा तरह खारिज नहि करबाक चाही। सभा मे ओ कहलनि, “गेहूम बेचबाक जे व्यवस्था अहाँ सभकेँ उपयोगी लागैत अछि, से हमर टमाटरक व्यापारसँ भिन्न अछि। जँ हम सीधा ग्राहक पाबि सकब तँ ओकरा किएक रोकब?” गुरनामक स्वर कड़ा भऽ गेल, “हमर डर अछि जे पैघ खरीदार आबि पहिने दाम बढ़ाएत, फेर मनमानी करत।” रजनीश उत्तर देलनि, “ई डरक समाधान नियम आ निगरानी हो सकैत अछि।” जसप्रीत बीचमे कहलीह, “अहाँ दुनू अपन अनुभवसँ कहैत छी। सभाक सूचीमे दुनू मत लिखल जाए। किसानक नामपर किसानकेँ चुप करब उचित नहि।”

मार्चक अन्तमे गेहूमक बाली गदाए लागल। खेतमे रहबाक समय बढ़ल, मुदा संगठनक सभा कम नहि भेल। जसप्रीत भोरमे सिंचाइ, दिउसभर घरक काम आ साँझमे चारि गामक स्त्रीसभक संग बैठक करैत छलीह। मनप्रीत देखलक जे पिता आन्दोलनक यात्रामे गेलापर घरक निर्णय मायक हाथमे आबि जाइत अछि, मुदा सामूहिक पर्चीपर केवल ‘किसान गुरनाम सिंह’ लिखल रहैत अछि। ओ एक दिन पितासँ कहलक, “नामक जागा आधा किएक?” गुरनाम थाकल स्वरमे कहलनि, “हमरा कागजक बानी अछि।” मनप्रीत कहलक, “बानी बदलि सकैत अछि।” गुरनाम साँझ धरि चुप रहलाह; अगिला बैठकमे अपन भाषणक पहिल वाक्यमे पत्नीकेँ किसान कहलनि। जसप्रीत ताली नहि बजौलीह। ओ केवल धरतीपर राखल एकटा खाली कुर्सी उठाकय स्त्रीसभक पाँतिमे राखि देलनि।

ओहि समय लुधियानामे माया अशोक मिस्त्रीक अस्पताल-अभिलेख लेल दौड़ि रहल छलीह। सुनीता जखन खेतक सभा समाप्त कऽ ओकर घर पहुँचलि तँ रागिनी कापीमे पंखाक चित्र बना रहल छलीह। माया पुछलीह, “अहाँ सभ किसानक लेल आब काज करैत छी?” सुनीता उत्तर देलक, “हम बही देखैत छी, खेतीक नीति नहि बनबैत। खेतक आवाज अपना लोकक हो।” माया कहलीह, “हर ठाम नाम लिखबाक लड़ाइ अछि—अशोकक उपचारक नाम, अहाँक मजदूरीक नाम, खेतमे काम करनिहार स्त्रीक नाम।” सुनीता एहि समानताकेँ स्वीकार करैत कहलक, “मुदा ई अलग-अलग मुकदमा अछि। अहाँक अस्पतालक कागज

हमर संगठनक दान-पञ्जीमे नहि मिलत। एक दोसराक दुःख बुझब आ एक दोसरक प्रमाणक सीमा राखब दुनू जरूरी अछि।”

अप्रैलमे हवामे सरसो तेल, कटैत गेहूम आ अस्पतालक दवाइक विचित्र मिश्र गन्ध छल। महामारीक दोसर लहरमे गामक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रक आँगन भरल रहैत छल। किसानसभक एक समूह आन्दोलनक स्थलपर जएबाक तैयारी करैत छल, दोसर अपन घरमे बीमार वृद्धक देखभाल करैत छल। जसप्रीतक चचेरा भाइ हरकीरतकेँ तेज ज्वर भेल तँ ओ यात्रा स्थगित कऽ देलनि। शमशेर कहलनि, “आन्दोलन निरन्तर रहबाक चाही।” जसप्रीत उत्तर देलीह, “आदमी बाँचल रहत तखनहिं आन्दोलन रहत। सुरक्षा-नियमकेँ अपमान कहि नहि टारू।” ओ समूहक वाहनक संख्या घटौलनि, शारीरिक दूरी रखबाक निर्देश लिखौलनि, आ वृद्ध किसानसभकेँ गाममे रहि पत्र लिखबाक प्रस्ताव देलनि। सभ सहमत नहि छल; मुदा एहि असहमतिसँ आन्दोलनक निष्ठा नापल नहि गेल।

वैशाखक कटनीमे मंजू आ मनोज भोरसँ खेतपर पहुँचलाह। जसप्रीतकेँ देखिते मंजू कहलि, “हमर दिहाड़ी पिछिला सालसँ ओतबे अछि, मुदा तेल आ दवाईक दाम बढ़ल। किसानक उपजक दामक संग हमर मजदूरीक चर्चा कहिया होयत?” गुरनामक माथपर पसीना छल। “उपज बेचि पहिने किसानक हाथमे कतेक बाँचत, से देखू।” मंजू उत्तर देलक, “अहाँक कर्जा हम बुझैत छी, मुदा हमरो घरक चूल्हि हिसाबक भीतर अछि।” जसप्रीत दुनूकेँ रोकि कहलीह, “एक-दोसराक कठिनाईक प्रतियोगिता नहि। उपजक कुल आमदनी, ऋण आ मजदूरीक सूची एक साथ देखब।” ओहि साँझ मनप्रीत पन्नापर दू खण्ड बनौलक—भूमिक स्वामीक खर्च आ भूमिहीनक आमदनी। दुनू खण्डमे धनक अभाव छल, मुदा अधिकारक स्वरूप एक नहि छल।

जगजीतक दुकानमे खरीदक मौसम शुरू भेल तँ पञ्जीपर तर्क तेज भऽ गेल। रजनीश अपन सब्जीक दू सौदा देखौलक, जाहिमे एक खरीदार देरीसँ भुगतान केलक, मुदा दोसर उचित दाम देलक। गुरनाम सरकारी खरीदक पावती देखौलक; ओकर विश्वास छल जे घोषित मूल्यक तंत्र कमजोर भेल तँ ओकर जेना छोट कृषक जोखिममे पड़त। मनप्रीत सभसँ पुछलक, “न्यूनतम समर्थन मूल्यक घोषणा आ हरेक फसलक हरेक बिक्रीपर निश्चित कानूनी खरीद-दायित्व एकहि बात अछि कि?” ककरो लग सरल उत्तर नहि छल। ओ कहलक, “पहिने

वर्तमान व्यवस्थाक सीमा पढ़ब, तकर बाद अतिरिक्त सुरक्षा केहन चाही से बहस करब।” शमशेर असन्तुष्ट भेलाह, “एतेक बारीकीसँ सामान्य किसान थाकि जायत।” हरबंस कहलीह, “हम सत्तर बरख सँ बारीकीमे जीवन काटि रहल छी। हमरा थकानक बहाना दऽ चुप नहि कराउ।”

कृषक समूहक स्त्रीसभ रसोई आ सहायता-शिविर चलबैत छलीह। कतेको बेर बाहरी समाचारमे हुनका सभक चित्र केवल रोटी बनबैत देखाओल जाइत छल। परमजीत एक पत्रकारकेँ रोकि कहलीह, “हम रसोई चलबैत छी, कारण भुखल लोक बहस नहि करि सकैत अछि। मुदा हमरा उपजक लागत, भूमि-भाड़ा आ मण्डीक शुल्कपर सेहो प्रश्न करबाक अछि।” पत्रकार नूर जतय छलीह। ओ अपन ध्वनि-यन्त्र बन्द कऽ पहिने सुनलीह; फेर अनुमति लऽ रिकॉर्ड करब आरम्भ कएलनि। मंजू कहलि, “हमर नामसँ लेख छापब तँ काम देनिहार कोनो नाराज होयत?” नूर उत्तर देलीह, “अहाँक सहमति बिना पहचान प्रकाशित नहि करब। मुदा जे कहब, ओकर अर्थ नहि बदलिब।” एहि आश्वासनक पश्चात् मंजू मजदूरीक बदलैत दर आ महिलाक अदृश्य श्रमक विस्तारसँ वर्णन कएलनि।

मईमे एक दिन संगठनक बैठकक स्थल गामक नहरक कात तय छल, मुदा स्थानीय प्रशासनक निर्देश आयल जे महामारीक कारण पैघ सार्वजनिक जमघटपर नियन्त्रण लागू अछि। शमशेर क्रोधित भेलाह। हुनका लग कार्यक्रमक पर्ची छपि चुकल छल। “हमरा सभक आवाज बन्द करबाक उपाय अछि,” ओ कहलनि। जसप्रीत आदेश पढ़बाक माँग कएलनि। ओहिमे क्षेत्र, लागू अवधि आ स्वास्थ्य-सुरक्षा सम्बन्धी शर्त लिखल छल। मनप्रीत बतौलक जे संक्रमणक संकटमे स्वास्थ्यक दृष्टिसँ निश्चित काल लेल सामान्य प्रतिबन्ध सम्भव अछि; एखन ई कहब कठिन जे खास किसानसभकेँ निशाना बनायल गेल। शमशेर चुप भऽ गेलाह। समिति निर्धारित बैसार स्थगित कएलक, छोट प्रतिनिधिमण्डलक ज्ञापनक बाट खोजलक आ जँ अनुमति भेटय तँ खुला स्थानमे सीमित उपस्थिति राखबाक प्रस्ताव देलक।

अस्पतालसँ लौटैत माया ओहि दिन नहरक मोड़पर सुनीताकेँ भेटलीह। मायक हाथमे अशोकक फाइलक नीला लिफाफा छल। सुनीताक हाथमे किसानक ज्ञापन। “सभ कागजक रंग एके रंगक किएक देखाइत अछि?” माया पुछलीह। सुनीता मुस्की देलक, “किएक तँ धूलि

सभ रंगपर एकहि ढंगसँ बैसैत अछि।” माया एक क्षणक लेल हँसि पड़लीह। फेर ओ कहलीह, “हम चाहैत छी जे अहाँ अपन सभामे अस्पतालकेँ साँसक कमी लेल दोषी कहू।” सुनीता धीमे उत्तर देलक, “अहाँक प्रश्नकेँ सुनाएब, मुदा दोष सिद्ध नहि भेल तथ्यकेँ फैसला बनाकय नहि।” माया पहिने खिन्न भेलीह। घर पहुँचि ओ फाइल खोललीह आ देखलीह जे अपनहि आवेदनमे जाँचक माँग लिखने छलीह। अगिला दिन ओ सुनीताकेँ संदेश पठौलीह—“प्रश्न अवश्य उठाउ, निर्णय नहि सुनाउ।”

जूनक पहिल बरखा पछाति खेतक माटि फेर नहिएल। ओहि वर्ष धानक पौध रोपबाक लेल मजदूर कम भेटलाह, किएक तँ किछु प्रवासी परिवार महामारीमे गाम लौटि गेल छल। मंजू अपन देवरक परिवारकेँ फोन कएलनि। ओम्हर मिथिलामे बाढ़क चिन्ता छल। “दूनू दिस मौसमक जोखिम अछि,” ओ जसप्रीतकेँ कहलीह, “पंजाबमे खेतक श्रमिक चाही, ओतय अपन माटि बचायब जरूरी।” जसप्रीत मजदूरीक दरपर दोबारा विचार करबाक बात गुरनामसँ उठौलीह। गुरनाम लागतक सूची देखौने छलाह; मनप्रीत ओहिमे श्रमिकक आवास आ सुरक्षित पानि-सुविधाक पाँति जोड़लक। गुरनाम पुछलनि, “ई सभ हिसाबमे पहिने कहाँ छल?” जसप्रीत कहलीह, “घरक रोजक श्रम सन—काज होइत छल, मुदा अंक लिखल नहि रहैत छल।”

एहि बीच समिति एक साझा प्रश्नावली बनौलक। ओहि मे केवल तीन कृषि कानूनक विरोध नहि, बीजक दाम, सिंचाइक पानि, फसलक बीमा, मण्डीक पहुँच, आढ़तियाक ऋण, महिलाओंक सदस्यता आ मजदूरक दिहाड़ी सम्बन्धी प्रश्न छल। रजनीश अलग पन्नापर लिखलनि जे सीधी खरीदक अवसर केना सुरक्षित होय, मुदा एकल खरीदारक मनमानीसँ बचबाक प्रावधान सेहो रहय। शमशेर पन्ना देखिकय कहलनि, “जँ सभ मत छापि देब तँ संगठन कमजोर बुझाएत।” परमजीत उत्तर देलीह, “हमर सहमतिक मुद्दा स्पष्ट लिखू। मतभिन्नताकेँ छिपा देब तँ ताकत नहि बढ़त, अविश्वास बढ़त।” ओ निर्णय भेल जे आधिकारिक माँगक संग परामर्श-पत्र अलग प्रकाशित होयत।

जुलाईमे कोविड-संक्रमणक प्रकोप घटलासँ किछु सार्वजनिक गतिविधि फेर शुरू भेल, मुदा लोकक भय तुरन्त नहि गेल। धरती जनसभा समिति लुधियानाक पुरान अनाज-मण्डीक लग

एक दिनक शान्तिपूर्ण बैठकक अनुमति माँगलक। आवेदनमे निर्धारित समय, अनुमानित उपस्थिति, पानि, सफाइ, वाहनक ठहराव आ शपथ लिखल छल जे आकस्मिक सेवा चलबाक बाट नहि रोकल जाएत। ओ स्थल शहरक अस्पताल जाएवला मुख्य सड़कसँ लगैत छल। परमजीत अलगसँ एक नक्शा बनौलीह, जाहिमे राहगीरक मार्ग, बचाव-वाहनक प्रवेश आ बैठकक मञ्च अलग चिह्नित छल। “सभा हमारा सभक अधिकार अछि,” ओ कहलीह, “मुदा एम्बुलेंसक भीतर बैसल परिवार सेहो नागरिक अछि।” एहि बातपर समिति सर्वसम्मत भेल।

आवेदनक पावती भेटल, मुदा निर्धारित तिथिसँ तीन दिन पहिने उपमण्डल प्रशासनक कार्यालयसँ एक संक्षिप्त निषेध-पत्र आयल। पत्रमे ‘यातायातक बाधा आ सामान्य विधि-व्यवस्थाक सम्भावित जोखिम’ लिखल छल; संलग्न नापी वा वैकल्पिक स्थलपर कोनो चर्चा नहि। दोसर पाँतिमे स्थानीय महामारी-सावधानीक उल्लेख छल, मुदा कोन विशेष निर्देश लागू अछि, से साफ नहि। मनप्रीत पत्र बारम्बार पढ़लक। “हमरा सभकेँ एतय अथवा कतहु सभा करबाक मनाही अछि?” ओ पुछलक। पावती देनिहार कर्मचारी कहलक जे आदेश एखन प्रस्तुत स्थल आ समय लेल अछि। शमशेर समाचार-प्रतिनिधिक लग तत्काल कहबाक चाहलनि जे ‘सभ किसानक अधिकार समाप्त’। जसप्रीत हुनकर हाथ रोकि कहलनि, “पत्र जतेक कहैत अछि, ततेकहि कही। अधिक कहब तँ अपन तर्क कमजोर करब।”

ओहि दिन सड़कक दूसरी ओर रिक्शा चलौनिहार मोहम्मद अकरम अस्पतालक दुआरि धरि दवाई पहुँचा रहल छलाह। हुनकर पत्नी सप्ताहमे दू बेर उपचार लेल जाइत छलीह। अकरमकेँ किसानसभसँ सहानुभूति छल, मुदा सड़क जामक डर सेहो। समिति हुनका बैठकमे बजौलक। ओ प्रश्न कएलनि, “अहाँ सभ शान्त रहब, मुदा हजार लोक आयल तँ गाड़ी कतय जाएत?” शमशेर कहला, “हम अनुशासन रखब।” अकरम उत्तर देलनि, “अनुशासनक कागज एम्बुलेंसक चक्का नहि घुमाओत।” परमजीत अपन नक्शा देखौलीह। अकरम लाल पेंसिलसँ एक सँकुचित मोड़पर निशान लगौलनि। “एतय जँ दू ट्रैक्टर ठाढ़ भेल तँ बाट बन्द।” समितिक नक्शा बदलिएल। अकरम समिति सदस्य नहि बनलाह, मुदा प्रत्यक्ष स्थल-ज्ञानक कारण हुनकर बात आवेदनक नव प्रतिमे शामिल भेल।

नव नक्शा संग प्रशासनकेँ पुनर्विचारक लिखित अनुरोध देल गेल। शमशेर कहलनि, “एतेक बार अधिकारीक दुआरि किएक खटखटाउ?” जसप्रीत उत्तर देलीह, “एक बेर दरखास्त देलापर मनाही आयल। आब हम ओकर कारण समझि सुधारक अवसर माँगैत छी। हम लड़ाइ कानूनी बनाय चाहैत छी, तकरा गुप्त नहि।” दोसर दिन अधिकारीक प्रतिनिधि स्थल देखय गेलाह; ओ स्पष्ट कएलनि जे अस्पतालक सड़कपर भारी वाहनक कारण पूर्वमे कठिनाई भेल छल, मुदा सभाक प्रस्तावित सीमाक तकनीकी निरीक्षण एखन शेष अछि। लिखित कारणयुक्त नव आदेश नहि अएल। तीन दिन बाद समिति बैठक रद्द कएलक, जखन कि किसानसभ घरमे छोटी-छोटी बैसार जारी रखलनि। एहि रद्दीकरणमे दुःख छल, मुदा चुप्पी नहि।

जसप्रीत चण्डीगढ़ जाएबासँ पहिने बलदेवसँ पुछलनि जे सक्षम अधिवक्ता ककरा भेटब। बलदेव हरमीत सिंहक नाम देलनि, जे श्रमिक आ उपभोक्ता दुनू प्रकारक स्थानीय विवादमे पक्षकारकेँ उचित मंच चुनबाक सलाह दैत छलाह। हरमीत आवेदन पढ़िकय पहिने तीन प्रश्न पुछलनि—“आदेश कोन अधिकारीक अधिकारमे जारी भेल? ओहि दिन लागू महामारी-सूचना की कहैत छल? वैकल्पिक स्थलक अनुरोधपर उत्तर किएक नहि भेटल?” शमशेर तुरन्त कहलनि, “हमरा सभकेँ सभा करबाक मौलिक अधिकार अछि।” हरमीत उत्तर देलनि, “अवश्य। मुदा शान्तिपूर्ण सभा करबाक अधिकार आ विशिष्ट सड़कक विशिष्ट समय असीमित उपयोग करबाक अधिकार एक नहि। अदालतसँ सभ कानून निरस्त करबाक नहि, एहि स्थानीय निर्णयक कारण आ उचित विकल्पक परीक्षण माँगू।” जसप्रीतकेँ ई सीमा उचित लागल।

रेवती ओहि समय दरभंगामे एक सुनबाईक तैयारी करैत छलीह। हरमीत हुनका फोन कऽ कहलनि जे लुधियानाक सुनीता किछु किसानसभक दस्तावेज जुटौने अछि, आ प्रशासनिक आदेशक सीमित रिटक विचार चलि रहल अछि। रेवती पूछलीह, “किसान आन्दोलनक तीन कानूनक वैधताक मुकदमा नहि ने?” “नहि,” हरमीत उत्तर देलनि, “स्थानीय सभा-स्थल आ कारणयुक्त प्रशासनिक निर्णयक अलग प्रश्न अछि। राष्ट्रीय विवाद सर्वोच्च न्यायालयक अपन प्रक्रियामे अछि।” रेवती सहमति देलीह जे संविधानक अनुच्छेद उन्नीसक अधीन अभिव्यक्ति

आ शान्तिपूर्ण सभाक स्वतन्त्रता पर युक्तिसंगत प्रतिबन्ध सम्भव छथि; मुदा आदेशक अनिश्चित शब्द आ अनुपयुक्त व्यापकता जाँचबाक अछि। ओ उचित कागजक सूची भेजलीह, पर मुकदमाक पैरवी स्थानीय अधिवक्ताक हाथेँ रखलीह।

हरमीतक कार्यालयक बाहर प्रतीक्षाकालमे मंजू अपन अँगूठाक निशान लगायब चाहलीह। कर्मचारी कहलनि, “अहाँक हस्ताक्षर नहि अछि?” मंजू कहलीह, “नाम लिखि सकैत छी, पूरा पढ़बाक अभ्यास नहि।” हरमीत दरखास्तक मुख्य बात सरल मैथिली-हिन्दी मिश्र भाषामे पढ़ि सुनौलनि। मंजू पुछलि, “हम खेतक मालिक नहि छी, तखन हम आवेदिका बनि सकैत छी?” हरमीत उत्तर देलनि, “अहाँ कार्यक्रममे भाग लेबाक इच्छुक नागरिक छी; ओहि रूपमे आदेशक असर अहाँपर पड़ैत अछि। जमीनक विक्रयपत्र एहि विवादक आधार नहि।” मंजू अपन नाम धीरे-धीरे लिखलीह। ओकर अक्षर टेढ़ छल, मुदा ओहि कागजपर सभसँ स्पष्ट वाक्य ओकरे प्रश्न छल—सभा करबाक अधिकारक लेल जमीनक स्वामी होयब जरूरी किएक होय?

पंजाब आ हरियाणा उच्च न्यायालयमे याचिका दाखिल भेल। समितिक नामक संग जसप्रीत, मंजू, गुरनाम आ दू अन्य इच्छुक उपस्थितिकर्ता सह-याचिकाकर्ता छलाह। प्रशासनिक उत्तरमे कहल गेल जे सार्वजनिक स्वास्थ्यक शेष चिन्ता, अस्पतालक मुख्य प्रवेश, ट्रैक्टरक अनियन्त्रित आवागमन आ यातायातक संभावित अवरोध कारण आदेश जारी भेल। एक पुरान दिनक भीड़क छायाचित्र संलग्न छल, मुदा ओकर तिथि आ कार्यक्रमक सम्बन्ध स्पष्ट नहि लिखल गेल छल। हरमीत ई तस्वीर देखिकय निश्चयात्मक आरोप नहि कएलनि। ओ पूछलनि, “फोटो कोन दिनक? यदि ई पूर्वक भिन्न कार्यक्रमक अछि तँ वर्तमान प्रस्तावक वास्तविक जोखिम हेतु तकर उपयोगक सीमा की?” सरकारी अधिवक्ता कहलनि जे अधिकारीक उद्देश्य नागरिकक सुरक्षा छल। विवाद सरकारी नियतिसँ पहिने तर्क आ तथ्यमूलक आधारक परीक्षणपर ठहरल।

पहिल सुनबाईमे न्यायमूर्त्ति सन्ध्या मेहता सभ पक्षसँ संक्षिप्त रूपमे पुछलनि, “याचिकाकर्ता की माँगैत छथि—विशिष्ट सड़कपर अधिकार, अथवा शान्तिपूर्ण बैसार लेल उचित प्रशासनिक निर्णय?” हरमीत कहलनि, “दोसर। आवेदक तय समय आ स्थल बदलबाक विचार करैत छथि, मुदा अस्वीकृतिक कारण बुझबाक, अपन व्यावहारिक प्रस्तावक

परीक्षण होयबाक आ भेदभावरहित निर्णय पाबबाक अधिकार माँगैत छथि।” न्यायमूर्त्ति राज्यक अधिवक्तासँ पुछलनि जे वैकल्पिक मैदान चिन्हित करबाक काज भेल अछि कि नहि। उत्तरमे कहल गेल जे ट्रैफिक विभागसँ परामर्शक प्रक्रिया जारी अछि। न्यायालय अन्तरिम दिन परोक्ष रूपेँ अनुमति देबासँ बचल; अधिकारीकेँ सम्बन्धित पक्षक प्रतिनिधि सुनि सीमित समयमे कारणयुक्त नव निर्णय देबाक निर्देश देलक।

सुनबाईक दिन कोर्टक गलियारामे शमशेर उदास लगैत छलाह। “हम सभासँ बञ्चित रहि गेलहुँ, आ न्यायालय केवल फेर पत्र लिखबाक कहलक,” ओ कहलनि। जसप्रीत उत्तर देलीह, “बिना बाट बनौने हजार आदमी सड़कपर बैसाइतहुँ तँ अकरमक पत्नी अस्पताल नहि पहुँचि सकैत छलीह। अदालत हमरा सभकेँ लोकक बात सुनय मजबूर कएलक; अधिकारीकेँ सेहो सुनबाक कहलक। ई अन्तिम विजय नहि, मुदा चुप्पी नहि।” हरमीत जोड़लनि, “आदेशक अनुपालन देखब शेष अछि। अदालत एहि दिन राष्ट्रीय कृषि नीति पर फैसला नहि देलक।” किसानसभक चेहरापर थकान छल, मुदा कागजक लिखल सीमित राहत बुझबाक नव अभ्यास सेहो छल।

पाँच दिन पछाति प्रशासनक कार्यालयमे बैठक भेल। ट्रैफिक अधिकारी एकटा वैकल्पिक खुला मैदान सुझौलनि, जे शहरक दक्षिण भागमे छल। समस्या ई छल जे बससँ उतरल वृद्ध किसानसभकेँ ओतय पहुँचेबाक सार्वजनिक यातायात कम छल। शमशेर कहला, “ई ठाम बहुत दूर अछि; अधिकारी हमरा सभकेँ अदृश्य करय चाहैत छथि।” अधिकारी उत्तर देलनि, “हम अन्य आयोजनकेँ सेहो एतय अनुमति देने छी।” मनप्रीत पिछिला दू मासक स्वीकृत कार्यक्रमक सूची माँगलक, जे सार्वजनिक अभिलेखमे उपलब्ध छल। सूची देखलापर स्पष्ट भेल जे पैघ सांस्कृतिक आयोजनकेँ सेहो मुख्य सड़कक बदला दोसर मैदान देल गेल छल। शमशेरक पहिल शंका किछु कम भेल, मुदा वैकल्पिक मैदानक पहुँचक प्रश्न यथावत् रहल।

जसप्रीत अकरम आ शहरक दिव्यांग अधिकार समूहक प्रतिनिधि वीरेन्द्र कुमारकेँ स्थल देखबाक लेल संग लेलनि। वीरेन्द्र बैसाखी सहारे चलैत छलाह। मैदानक कच्चा दुआरि देखिकय ओ कहलनि, “अहाँ सभ खेतक लोक छी, माटि सँ डरब नहि। मुदा जे बैसाखीपर अबैत छथि, हुनका लेल ई की बाट अछि?” नगर कर्मचारी किछु समयक लेल समतल

चलबाक पट्टी, अस्थायी प्रकाश, पानि आ स्वच्छताक व्यवस्था सम्भव बताएलनि। समिति अपन आयोजनक बजटमे एहि खर्चक नब पाँति जोड़लक। परमजीत कहलनि, “जे अधिकारक सभा करैत अछि, ओकर दुआरि सभक लेल खुलल चाही।” अधिकारी अपन नव आदेशमे उपलब्ध स्थल, समय-सीमा, ध्वनि-नियन्त्रण, स्वास्थ्य-सावधानी आ यातायातक शर्त स्पष्ट लिखलनि। असहमतिक अधिकार बाँचल, मुदा ओकर उपयोगक व्यावहारिक भारो सामने आयल।

कार्यक्रमक दिन भोरमे मैदानमे बिछाओल दरीपर रातिक ओसक हलुक ठण्ढ छल। शमशेर मंचक लकड़ी जाँचैत छलाह। परमजीत दान-पेटीपर मुहर लगौलीह आ दू महिला सदस्यकेँ प्रत्येक राशि दर्ज करबाक जिम्मा देलीह। जसप्रीत पहिल भाषण मंजूकेँ देबाक कहलीह। किछु पुरुष सदस्य अचरजसँ तकलनि—“पहिने अध्यक्ष नहि?” शमशेर एक क्षण रुकलाह, फेर स्वयं माइक मंजूकेँ देलनि। मंजू अपन हाथक पसीना सलवारमे पोंछि कहलीह, “हम खेतक नामपर बोलब, मुदा खेत हमरा नामपर नहि। जँ कृषि नीति बनत तँ दिहाड़ी लेनिहार, बटाइ पर खेती करनिहार आ नारीक श्रमक स्थान ओहिमे कतय अछि?” मैदानमे बजल ताली देर धरि थमल नहि।

मंचक पाछाँ रजनीश सेहो उपस्थित छलाह। हुनका आयोजक बहस लेल समय देने छल। ओ कृषकसभकेँ कहलनि जे अलग फसल आ व्यापारिक परिस्थिति अनुसार नीतिक परिणाम भिन्न होइत अछि; सीधी बिक्रीक अवसर उपयोगी भऽ सकैत अछि, मुदा भुगतान नऽ होयबाक जोखिम आ एकाधिकारक डरपर ठोस सुरक्षा चाही। किछु श्रोता सीटी बजौलक। जसप्रीत उठि कहलीह, “मतक उत्तर तर्कसँ दी, शोरसँ नहि।” गुरनाम रजनीशसँ असहमत रहलाह; मुदा माइकपर आगा बढ़ि पूछलनि, “जँ खरीदार अनुबंध तोड़त तँ छोट किसान ककरा लग जायत?” रजनीश स्वीकार कएलनि जे करारक विवाद-निस्तारण उचित, सुलभ आ सन्तुलित होयब जरूरी अछि। दुनूकेँ पूरा समाधान नहि भेटल; तँ सेहो सभामे असहमतिपूर्ण संवाद सम्भव भेल।

कार्यक्रम समाप्त भेलाक बाद अकरमक रिक्शा अस्पतालक बाटेँ निर्बाध गेल। ओ साँझमे जसप्रीतकेँ कहलनि, “हम अहाँक बात सभ नहि मानैत छी, मुदा आजु हमर पत्नीकेँ पहुँचाबय

मे देर नहि भेल। एहिसँ अहाँक सभा छोट नहि भेल।” जसप्रीत उत्तर देलीह, “आब जँ हम कहि दी जे हमरा सभक आयोजनसँ ककरो कठिनाई नहि भेल, तँ ओहो सत्यापित करबाक चाही। कोनो दुकानदारक नुकसान भेल होयत तँ ओ सुनू।” अकरम ओकरा शहरक फूल बेचयवाली विमला देवीक बात बतौलनि, जकर ग्राहकक संख्या कम छल। परमजीत अगिला बैठकमे छोट व्यवसायीसभक प्रतिक्रिया लेबाक प्रस्ताव रखलीह। सार्वजनिक स्थानक उपयोग एक पक्षक विजय-पत्र नहि, अनेक जीवनक सामञ्जस्यक कठिन अभ्यास छल।

सितम्बरक साँझमे हरनामपुरक खेतपर धानक पात पीयर होइत छल। हरबंस कौरक घुटनामे पीड़ा बढ़ल छल, तें ओ बरामदाक चौकीपर बैसि बीजक पुरान थैली खोलैत छलीह। मनप्रीत हुनका नव फसलक खर्चक लेखा पढ़ि सुनौलक। कुल आयमे बिक्रीक अनुमान छल; कुल खर्चमे बीज, खाद, डीजल, दवाई, मजदूरी, ऋणक किस्त आ आन्दोलनक यात्रामे देल स्वैच्छिक सहयोग। हरबंस एकटा पाँतिपर हाथ रखलनि—“घरमे स्त्रीक काज।” ओहि ठाम रकम खाली छल। “ई खाली किएक?” ओ पुछलनि। मनप्रीत कहलक, “किएक तँ एकर नगदी भुगतान नहि होइत।” हरबंस उत्तर देलीह, “जकर दाम बाजारमे नहि लिखल, तकर मेहनत समाप्त नहि होइत।” मनप्रीत ओहि पाँतिक लग एक शब्द लिखलक—‘अमूल्य’—फेर कापी बन्द कएलक। ओकरा बुझायल जे आँकड़ा सचक माध्यम अछि, सचक पूर्ण आकार नहि।

धरती जनसभा समितिक खुला लेखा-परीक्षण करबाक तय भेल। परमजीत छमाही बही मेजपर रखलीह। ओ अपन देवरक मार्फत भेटल पेट्रोलक बिल सभसँ पहिने देखौलीह, ताकि पक्षपातक शंका नहि रहय। दू बिलपर एके तिथि आ एके राशि छल। शमशेर तत्काल कहला, “कर्मचारी गलतीसँ दू बेर जोड़ने होयत।” परमजीत उत्तर देलीह, “ठीक हो सकैत अछि। मुदा पहिने मूल पावती, गाड़ीक यात्रा-लेखा आ भुगतानक माध्यम मिलब।” जाँचमे बुझायल जे एक प्रति कार्यालयक रजिस्टरमे, दोसर यात्राक फाइलमे लागल छल; वास्तवमे एकहिं भुगतान भेल छल, पर जोड़बैत समय दू बेर गनल गेल। समिति नकली बिलक आरोप नहि लगौलक, बही सुधारलक आ संशोधनक तिथि लिखलक। सुनीता एहि छोट घटनामे दस वर्ष पुरान मजदूरीक पञ्जी याद कएलक—दुहराएल अङ्क सदिखन दुहराएल भुगतान नहि होइत।

ओही बैठकमे दस हजार रुपैयाक एक रकमक विवरण अस्पष्ट भेटल। धन ऑनलाइन आयल छल; बैंक-पञ्जीमे छोट नाम लिखल छल आ भेजनिहारक प्रयोजन निर्धारित नहि छल। परमजीत कहलीह जे ई सहायता सम्भवतः एक प्रवासी पंजाबी परिवार पठौने होयत। शमशेर चाहलनि जे रकम भोजन-व्यवस्थामे लगा देल जाए। सुनीता पुछलक, “अनुमानपर खर्च करब कि सन्देश द्वारा प्रयोजन पुछब?” मनप्रीत बैंकक अधूरा विवरण सुरक्षित राखि सम्भावित दाता सँ पुष्टि करबाक प्रस्ताव देलक। सरबजीत कौर, जकरा बैंकिंग-अनुपालनक अनुभव छल, स्पष्ट सलाह देलीह जे बैंक ग्राहकक गोपनीय सूचना समिति कैं मनमाने ढंगसँ नहि देत; समितिक अपन प्राप्ति-अभिलेख आ दाताक स्वैच्छिक विवरण देखबाक चाही। पैसा तात्कालिक उपयोगक अलग मदमे रोकि राखल गेल, दोषारोपण बिना।

गामक प्राथमिक विद्यालयमे एक अध्यापिका किसानसभक नव बैठक देखि पुछलीह जे छात्रसभकैं खेतीक अर्थशास्त्र पढ़ायब सम्भव अछि कि नहि। मनप्रीत विद्यार्थीक लेल तीनटा थारी लऽ गेल—एकमे गेहूमक दाना, दोसरमे चना, तेसरमे सरसो। ओ पुछलक, “खेतीक हिसाब कोन थारीमे समान रहत?” एक बच्चा कहलक, “सभक रंग अलग अछि।” दोसर कहलक, “पानि अलग चाही।” मनप्रीत हँसि देलक, “सही। फेर सभ फसल लेल एकटा दामक नियम कहिया उपयोगी, कहिया अपूर्ण, से केना बुझब?” बच्चासभ गोटेक बीज हाथमे लऽ प्रश्न करय लागल। जसप्रीत कोठरीक दुआरिपर ठाढ़ छलीह। ओ सोचलीह जे आन्दोलनक नारामे जे शब्द जल्दी-जल्दी बोलल जाइत अछि, ओकर अर्थ बच्चाक एक प्रश्नमे ठमकि जा सकैत अछि।

अक्टूबरक पहिल सप्ताह उत्तर भारतमे किसानसभसँ सम्बन्धित एक दुःखद हिंसक घटनाक समाचार पहुँचल। हरनामपुरक लोक स्तब्ध छल। समिति शोकसभा रखलक, मुदा अपन पर्चीमे वास्तविक जाँचक पहिने कोनो अनिश्चित व्यक्तिक नाम अपराधी लिखबाक विरोध कएलक। शमशेर कहला, “लोक पहिनेसँ क्रोधित छथि, एना लिखब तँ ठण्ढ बुझाएत।” नूर जतय उत्तर देलीह, “दुःखक ताप घटेबाक लेल सचक कसौटी कम नहि करब। जकर मृत्यु भेल हुनकर नाम आ सम्मान राखू; अपराधक उत्तरदायित्व उचित जाँच आ अदालतक विषय बनय।” मंजू एक दीप जरौलि। ओकरा अपना मिथिलाक गाममे बाढ़क समय हराएल एक

भायक याद छल। सामूहिक दुःखकेँ नायक-बनाबय आ विरोधी-बनाबय सँ पहिने लोकक घरक शोक देखबाक चाही, ई बात ओ बुझैत छलीह।

एक दिन रेवती चण्डीगढ़क अदालतक काजक सिलसिलामे हरमीतसँ भेटलीह। किसानसभक स्थानीय आदेशक नव निर्णय दस्तावेज देखिकय ओ कहलीह, “ई मुकदमा उपयोगी छल, मुदा एकर सीमा सेहो याद रहय। न्यायालय किसानक फसलक उचित दाम तय नहि केलक; केवल स्थानीय प्रशासनक निर्णयक न्यायिक कसौटी देखलक।” हरमीत उत्तर देलनि, “हमरो भय छल जे समितिक उत्साही सदस्य आदेशकेँ राष्ट्रीय विजयक घोषणा बना देत। जसप्रीत अपन पत्रमे स्पष्ट लिखने छथि जे उचित स्थल-निर्धारण एक प्रशासनिक प्रश्न छल।” रेवती कहलीह, “अधिकारक भाषा प्रायः सीमा स्वीकारलासँ मजबूत होइत अछि।” ओहि समय हुनका अपन पिता शिवनारायणक पुरान बात स्मरण भेल—अदालतमे जे नहि सिद्ध भेल, ओकरा सिद्ध नहि कहब।

अक्टूबरक अन्तमे राजधानीक सीमापर दीर्घकालीन सड़क-अवरोध आ आवागमनक प्रश्न फेर सर्वोच्च न्यायालयक चर्चामे उठल। स्थानीय समाचारपर्चीमे किछु सदस्य लिखबाक चाहैत छलाह जे शान्तिपूर्ण प्रदर्शनक अधिकार असीमित अछि। हरमीत हुनका सभकेँ सावधान कएलनि जे शान्तिपूर्ण असहमतिक संवैधानिक संरक्षण महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा सार्वजनिक मार्ग स्थायी रूपेँ रोकबाक दावी स्वतः स्वीकार्य नहि; दोसर नागरिकक गमनागमनक अधिकार आ सार्वजनिक हित सेहो देखल जाइत अछि। जसप्रीत पर्ची बदलि लिखौलीह—“हम शान्तिपूर्ण प्रदर्शनक अधिकारक प्रयोग करब, सार्वजनिक सेवाक पहुँच सुरक्षित रखैत।” शमशेर एहि वाक्यकेँ पहिने बहुत साधारण माननलि, मुदा अकरमक पत्नीकेँ अस्पताल पहुँचबैत एक दिन स्वयं देखलापर हुनकर मन बदलिएल।

दीपावलीक पहिने गुरनामक घरमे धानक बिक्रीक हिसाब आयल। अपेक्षित मात्रा सँ उपज किछु कम भेल, मुदा कतेक दाना भीजि गेल छल आ कतेक नमीक कसौटीपर अलग रखल गेल, तकर अभिलेख उपलब्ध छल। जगजीतक बहीमे एक ब्याज-प्रविष्टि फेर विवादित छल। मनप्रीत एक ओर जगजीतक लेखा, दोसर ओर बैंकक जमा-प्रति आ तीसरा ओर घरक उधारीक तारीख राखलक। दू दिनक परीक्षणसँ पता चलल जे एक किस्तक जमा-तिथि बैंकमे

स्पष्ट छल मुदा व्यापारीक बहीमे पछाति दर्ज भेल। जगजीत संशोधन स्वीकार कएलनि; गुरनाम शेष ऋण देबाक दायित्व स्वीकार कएलनि। न कोनो चमत्कार, न सम्पूर्ण मेल। जसप्रीत कहलनि, “जे गलती सुधारल गेल, ओकर श्रेय दुनू पक्षकेँ अछि। बाकी देनदारीकेँ अदृश्य करि देब न्याय नहि।”

एहि बीच मंजूक पति मनोज गामसँ लौटि कहला जे हुनकर बीमार बाबूजीक दवाई लेल घरक खर्च बढ़ि गेल अछि। ओ पंजाबमे फेर काम करय चाहैत छलाह, मुदा यात्रा आ कामक अनुबन्ध स्पष्ट नहि छल। जसप्रीत हुनका उचित मजदूरी, विश्राम आ आवश्यक सुरक्षा सम्बन्धी लिखित सहमति पर बात करबाक सुझाव देलीह। मनोज कहलनि, “हमर मालिक किसान छथि, संघक नेता छथि, तेँ हम कागज माँगब तँ अविश्वास बुझत।” गुरनाम एहि वाक्यकेँ सुनि लजाइलाह। ओ अपन खेतमे मजदूरक कामक दिन आ भुगतान लिखबाक बही बनाबय लगलाह। मजदूर आ किसानक हित अलग रहितो परस्पर निर्भर छल; संघक नारा ई कठिन सम्बन्धकेँ खत्म नहि करैत छल।

नोवम्बरक पहिल सप्ताह समितिक भित्तिपत्रपर किछु पुरान फोटोक संग युवा किसानक साक्षात्कार छपल। एकटा युवती, जकर नाम कुलदीप कौर छल, कहने छलीह जे खेती छोड़ि शहरमे नौकरीक कल्पना अपमानक कारण नहि, शिक्षा आ स्वतन्त्र रोजी-रोटीक इच्छा सँ अछि। हरबंस एहि लेखकेँ धीरे-धीरे सुनलीह। “हमर बाप खेतसँ बाहर जाएब अपमान बुझैत छलाह,” ओ कहलीह, “मुदा जे लड़की अपन बाट चुनय चाहैत अछि, तकरा खेतक नामपर रोकब किएक?” जसप्रीत उत्तर देलीह, “खेती बचेबाक अर्थ हर बेटीकेँ एतय बाँधि राखब नहि। गाँव एहन बनय जे लौटय चाहनिहार लौटि सकय, जाए चाहनिहार निर्भय जाए।” मनप्रीतक मनमे अपन उच्च अध्ययनक अपूर्ण आवेदन फेर जागल। ओ माँकेँ बिना कहने नब छात्रवृत्तिक जानकारी खोजब आरम्भ कएलक।

नवम्बरक उन्नैसम दिन भोरमे गुरनाम रेडियो पर समाचार सुनि दौड़लाह। केन्द्र सरकार तीनू कृषि कानून वापस लेबाक घोषणा कएने छल। ओ दरबज्जा खोलि चिचियौलनि, “जसप्रीत, सुनू!” हरबंस चौकी सँ उठि बैसलीह। जसप्रीत कार्यक्रमक समाचार ध्यानसँ सुनलीह, तखन कहलनि, “घोषणा महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा संसदक विधिक प्रक्रिया सेहो

देखब।” गुरनामक आँखिमे कतेक मासक थकान उतरि रहल छल। ओ दिल्लीक सीमा पर बिताओल ठण्ढ राति, गामक उधार आ सभाक बहस याद कएलनि। शमशेर फोनपर उत्सवक बात कएलनि। जसप्रीत कहलीह, “उत्सव मनाउ; साथहि रसोई, उधारी आ काजक बही बन्द नहि करू। जे परिवार अपन लोक गमौलक, ओकरा लेल ई दिन सरल खुशीक नहि होयत।”

घोषणाक दोसर दिन मैदानमे छोट सभा भेल। शमशेर कहला जे ई किसानक धैर्यक विजय अछि। रजनीश सेहो आयलाह; ओ मानैत छलाह जे कानून वापसीसँ किछु व्यापारिक सम्भावना कम भऽ सकैत अछि, मुदा शान्तिपूर्ण संवाद चलब आवश्यक अछि। हुनकर वाक्य सुनि एक युवक कटु टिप्पणी कएलक। जसप्रीत युवककेँ रोकि कहलीह, “जँ हम महीना भरि बोलबाक अधिकार माँगलहुँ, तँ आब असहमत लोककेँ बोलबाक दुआरि बन्द नहि करब।” मनप्रीत प्रस्ताव रखलक जे समिति आब न्यूनतम समर्थन मूल्यक वास्तविक लागू क्षेत्र, ऋण-मुक्तिक अलग सम्भावना, मण्डीक सुधार आ श्रमिक-मजदूरीक तुलनात्मक अध्ययन करय। हरबंस कहलीह, “लड़ाइमे जतेक शक्ति रहल, तकर आधा यदि खेतक सच बुझबामे लगत, तँ अगिला पीढ़ीकेँ लाभ होयत।”

नवम्बरक उनतीसम दिन संसदमे तीनू कृषि कानून रद्द करबाक विधेयक पारित भेल। अगिला दिन राष्ट्रपति द्वारा स्वीकृत अधिनियमक समाचार आयल। मनप्रीत एक छोट कागज पर तीन तारीख लिखलक—बारह जनवरीक अन्तरिम रोक, उन्नैस नवम्बरक घोषणा, आ उनतीस–तीस नवम्बरक विधायी प्रक्रिया। गुरनाम पुछलनि, “एतेक तारीखक आवश्यकता किएक?” मनप्रीत उत्तर देलक, “किएक तँ इच्छा, घोषणा, विधेयक आ कानून बनबाक क्रम अलग-अलग अछि। जे हम न्यायालयमे सरकारसँ साफ जवाब माँगैत छलहुँ, ओही स्पष्टता अपन बहीमे सेहो राखब।” जसप्रीत कागजकेँ रसोईक देवाल पर टाँगि देलनि। हरबंस ओहि ठाम अपन चश्मा चढ़ा कऽ देखलीह आ कहलीह, “आ खेतक कर्जा एखनहु बाकी अछि। ओहो तारीख लिखू।”

शहरक एक प्रचार-सम्बन्धी संस्था सँ समिति केँ ई-मेल आयल। प्रेषक अपन नाम ‘जनदिशा सम्पर्क सेवाएँ’ लिखने छल, जे कोनो पहिचानल किसान संगठनक आधिकारिक अङ्ग नहि छल। पत्रमे पाँच लाख रुपैयाक ‘सञ्चार सहयोग’ देबाक प्रस्ताव छल, बशर्ते

समिति अपन सभा आ हिसाबक सार्वजनिक सामग्री ओहि संस्थाक माध्यमसँ चलाबय। प्रस्तावक एक पृष्ठ पर कहल गेल छल जे अनेक सामाजिक-माध्यम खाता एक संग उपयोग होएत, पुरान भीड़क चित्रकेँ नव सभाक चिन्ह देल जा सकैत अछि, आ ‘भावनात्मक प्रभाव’ लेल किछु काल्पनिक किसानक कथन नमूना रूपमे बनाओल जाएत। ओहि पृष्ठक कोनमे एक डिजिटल दान-पृष्ठक सङ्केत छल; कोषाध्यक्षक पास एतय रकम पहुँचबाक स्पष्ट शर्त नहि छल।

शमशेर पहिने कहलनि, “एहि पैसासँ घायल किसानक परिवार, भोजन आ पढ़ाइमे मदति सम्भव अछि। पत्रक भाषा प्रचारक हो सकैत अछि; हम शर्त बदलवा लेब।” मनप्रीत प्रेषकक पहिचान, दानक स्रोत आ खाताक नियन्त्रण पूछबाक बात उठौलक। सुनीता पटापट पैसा स्वीकार नहि कएल जाए, एहि पक्षमे छलीह। “एहि पत्रमे जे अनुपस्थित भीड़केँ उपस्थित देखेबाक बात अछि, ओ हमरा सभक अनुभवक विरुद्ध अछि,” ओ कहलक। “राहतक सामग्रीक लेल भेटल रकम आ सार्वजनिक सन्देशक विश्वसनीयताकेँ एक दोसरक बदला बनब नहि चाही।” परमजीत जिद कएलनि जे प्रस्ताव समितिक सभ सदस्यक समक्ष पूर्ण रूपमे पढ़ल जाए, न कि अध्यक्ष आ सचिवक बीच गुप्त सहमतिसँ निर्णय हो। बैठकक तिथि तय भेल।

ओहि राति सुनीता पत्र फेर खोललक। एटैचमेंटक अन्तिम पृष्ठपर ‘सम्पर्क—एच. चौहान’ लिखल छल। सुनीताकेँ अचानक पुरान मजदूरी-पञ्जी याद अएल, जाहिमे हरदेव चौहानक नाम कामक दिन बिना देखल गेल छल; बादमे एक वित्तीय अभिलेखमे सेहो ओ नाम उठल छल। ओ तुरन्त बलदेवकेँ फोन नहि कएलक। पहिने ई-मेलक मूल शीर्षक, पठौनिहारक पता, प्राप्तिक तिथि आ मूल संलग्नक सुरक्षित रखलक। अक्षर ‘एच’ सँ हरदेव सिद्ध नहि होइत, उपनाम समान होयबाक अर्थ व्यक्ति समान नहि। ओ अपन कापीमे लिखलक—“नामक समानता; पहिचान अप्रमाणित।” एतबा सावधानी बरतलापर सेहो ओकर देहमे एक पुरान बेचैनी लौटि आयल—कतेक वर्षसँ कागजक कोनपर भेटैत एहि उपनामक सूत्र कतय जा रहल छल?

दू दिन पछाति समितिक खुला बैसारमे प्रस्ताव पढ़ल गेल। रजनीश स्पष्ट कहलनि जे वैध प्रचार, कार्यक्रमक सूचना आ वेबसाइट चलबामे कोनो बुराई नहि; पर झूठ चित्र आ काल्पनिक गवाही स्वीकार्य नहि। मंजू पुछलि, “हमर दुखक नकली वाक्य बनत तँ ओकरा लोक असली मानि हँसत कि रोएत?” परमजीत कहलीह, “जतय हम अपना-अपना नाम स्पष्ट लिखबैत रहलहुँ, ओतय बनावट नामसँ कथा किएक प्रकाशित करब?” शमशेर फेर एक बेर प्रस्तावक पैसाक उल्लेख कएलनि। जसप्रीत हुनका उत्तर देलीह, “जकरा लेल मदति चाही, ओकरा मदतिक अधिकार अछि। मुदा नहि भेल घटनाकेँ भेल कहि रुपैया उठायब तकरा धोखा देब होयत।” अन्ततः समिति पूर्ण बहुमतसँ प्रस्ताव अस्वीकार कएलक।

प्रेषककेँ पठाओल उत्तरमे केवल ई लिखल गेल जे समिति असत्यापित चित्र, काल्पनिक प्रत्यक्षदर्शी कथन आ अस्पष्ट वित्तीय नियन्त्रणवला प्रचार स्वीकार नहि करत। पत्रमे कोनो व्यक्ति वा संस्थाकेँ अपराधी घोषित नहि कएल गेल। परमजीत प्रस्तावक मूल प्रति, बैठकक कार्यवृत्त आ अस्वीकृतिक पत्र अलग लिफाफामे रखलीह। सुनीता सरबजीतसँ केवल सामान्य सलाह लेलनि—अनपेक्षित राशि पहुँचि गेल तँ ओकर लेखांकन, बैंक-सम्पर्क आ अधिकार-सम्मत निस्तारण केना करब; ग्राहकक गुप्त विवरण मागब नहि। सरबजीत कहलीह, “एखन रकम पहुँचल नहि। दस्तावेज सुरक्षित राखू, अनुमानक आधारपर व्यक्तिक नाम नहि जोड़ू। जे होयत तकर विधिसम्मत अभिलेख बनू।” एहिसँ समिति अधिक आश्वस्त भेल जे ओकरा प्राप्त प्रस्तावक अस्वीकृति स्वयं एक महत्त्वपूर्ण लेखा-निर्णय अछि।

दिसम्बरक आरम्भमे दिल्लीक सीमा पर चलेला दीर्घ आन्दोलनक चरण समाप्त करबाक समाचार आने लागल। गाममे लौटनिहार किसानसभक लेल अलग-अलग भाव छल। ककरो घरमे उत्सव, ककरो घरमे बीमारीक स्मृति, ककरो देहमे ठण्ढक असर, आ किछु परिवारमे जे सदस्य नहि लौटि सकलाह हुनकर खाली खाट। जसप्रीत, गुरनाम आ शमशेर मिलि गामक समुदाय भवनमे धन्यवादक सभा रखलनि। ओतय कोनो व्यक्तिक मृत्युकेँ नाटकीय मंच-सज्जा नहि बनाओल गेल। जे घर अपन नोकसानक विषयमे बोलय चाहैत छल, ओकरा स्थान देल गेल; जे चुप रहय चाहैत छल, ओकर चुप्पीकेँ सम्मान। मञ्च पर किछु क्षण लेल दीपक

जरायल गेल। मनप्रीत ध्यान देलक जे दुःखक नामक बाद तालिक कोनो स्थान नहि रहैत अछि।

जगजीत अरोड़ा धन्यवाद-सभामे आबि कहला, “हम हुनका सभमेसँ छी जे व्यापारक बहसमे अलग सोचैत छलहुँ, मुदा अहाँ सभ अपन लेखा सार्वजनिक कएलहुँ, ई नीक बात।” शमशेर कहलनि, “हम अहाँक बहस पूरा नहि मानैत छी।” जगजीत मुस्की देलनि, “सभ बात एक दिनमे मानल नहि जाएत। हमर ब्याजक एक पाँति गलत निकलल छल, अहाँक हिसाबमे सेहो एक भुगतान दू बेर गनल गेल। ई स्वीकार करब हार नहि।” जसप्रीत दू पुरुषक वाक्य सुनि सोचलीह जे कर्जाक अनिश्चित हिसाब आ राजनीतिक असहमतिमे एक समान खतरा अछि—दोसरक सम्पूर्ण अस्तित्वकेँ गलत घोषित करि देब। एहि गलती सँ बचबाक अभ्यास बड़ धीमे चलैत अछि।

समितिक वर्षान्तक लेखा पूरा होयबाक दिन परमजीत अपन कोठरीक दुआरि खुलल रखलीह। दू गामक वृद्ध किसान, तीन महिला मजदूर आ रजनीश सभ पन्ना देखबाक आएलाह। एक रजिस्टरमे भोजनक सामग्री, दोसरमे वाहनक वास्तविक खर्च, तेसरमे बैंकसँ प्राप्त राशि लिखल छल। ओ अस्पष्ट दस हजारक रकमपर टिप्पणी देखौलीह—दाता-पुष्टिक प्रयास चलैत अछि; अन्तिम प्रयोजन एखन अनिर्णीत। हरबंस कौर पुछलनि, “एतय खाली स्थान किएक छोड़ने छी?” परमजीत कहलीह, “जकरा नहि जनैत छी, तकरा भरि देब सभसँ आसान झूठ होयत।” मंजू अपन अँगूठाक कात एक छोटी टिप्पणी लिखौलक—“देखल, सुनल, शेष पुछल जाए।” ओहि पन्नापर समिति स्वयंकेँ निर्दोष प्रमाणित करबाक शपथ नहि लिखलक; प्रत्येक भुगतानक भविष्यक परीक्षण लेल दुआरि खुलल रखलक। शमशेर पहिल बेर बुझलनि जे सार्वजनिक विश्वासक अर्थ सभ प्रश्न बन्द करब नहि, उत्तर देबाक अभ्यास जारी राखब अछि।

मनप्रीत उच्च अध्ययनक आवेदन मायक हाथमे देलनि। जोधपुरक मरुधर विश्वविद्यालयमे ग्रामीण अर्थशास्त्र आ सामाजिक आँकड़ाक एक अनुसन्धान-कार्यक्रम लेल ओकर आवेदन छल। “अहाँ दूर जएब?” जसप्रीत पुछलनि। “जँ चयन भेल तँ किछु समय लेल,” मनप्रीत उत्तर देलक। हरबंस दरबज्जासँ बजलीह, “हमर खेतक कागज लऽ जइह। पुस्तकमे जे नहि

भेटत, तकरा खेतमे पएर रखि बुझिह।” मनप्रीत आवेदनक अन्तिम पन्नापर अपन अनुसन्धानक प्रस्ताव लिखलक—‘भूमि-अधिकार, कृषक-आय आ स्त्रीक अदृश्य श्रमक परस्पर सम्बन्ध’। ओ नहि जनैत छल जे मरुधरमे रामदेव मण्डलक कूपक नापी आ कुसुमक पुरान कापी ओकर अध्ययनक मार्ग एक दिन बदलि देत। मुदा एहि क्षण ओ केवल ट्रेनक सम्भावित यात्रा आ घरक जाड़क चिन्ता करैत छलीह।

दिसम्बरक अन्तिम सप्ताह लुधियानामे सुनीता मायक घर गेलि। रागिनी अपन बनाओल पंखाक चित्रक पाछाँ गेहूमक बालि सेहो बनौने छलि। “ई अहाँक सभा?” बच्ची पुछलक। सुनीता कहलक, “सभा बहुत लोकक होइत अछि। ई बालि केना बनौलें?” रागिनी उत्तर देलक, “माय कहैत छथि जे पापाक हाथमे मशीन ठीक करबाक हुनर छल, आ किसानक हाथमे बीज बचएबाक। हम दुनू हाथ बनौने छी।” माया बेटीकेँ देखि कहलीह, “हमरा अस्पतालसँ उत्तर एखन नहि भेटल अछि।” सुनीता अपन झोरा खोलि मायक फाइल नहि निकाललक। ओ कहलक, “अहाँक प्रश्न अगिला पेशीमे रहत। आजु रागिनीक चित्र देखू।” पहिल बेर माया बुझलीह जे न्यायिक धैर्यक अर्थ सदिखन कागज देखि रहब नहि, कखनो एक बच्चाक रेखाक संग शान्त बैसब सेहो अछि।

साँझमे हरनामपुरक खेतक मेड़पर जसप्रीत अकेली ठाढ़ छलीह। धान कटि चुकल छल, गेहूमक नब हरियर पात माटिसँ बाहर आबि रहल छल। ओ जे जमीनपर ठाढ़ छलीह, ओकर स्वामित्वक कागज पति आ ससुरक नाममे छल; ओकर मेहनतक वर्ष कोनो पंजीकृत दस्तावेजमे पूरा नहि छल। मुदा आब गामक समिति सदस्य-सूचीमे ओकर नाम छल, न्यायालयक याचिकामे ओकर हस्ताक्षर, आ खुला लेखामे ओकर निर्णयक तिथि। ओ एहि सभकेँ भूमि-अधिकारक बराबर नहि मानैत छलीह। एकटा अधिकार भेटलासँ दोसरक अभाव मिटि नहि जाइत अछि। ओहू क्षण हुनका मंजूक प्रश्न याद अएल—मूल्य बढ़त तँ मजदूरी बढ़त कि नहि? आन्दोलनक नारा थमि रहल छल, प्रश्न एखन चलि रहल छल।

गुरनाम एक मुट्ठी नब माटि उठाकय हुनका लग अएलाह। “ई वर्ष कतेक लम्बा छल,” ओ कहलनि। जसप्रीत उत्तर देलीह, “वर्ष लम्बा नहि छल, हमरा सभक सुनबाक आदत छोट छल। आब किछु बढ़ल अछि।” गुरनाम पुछलनि, “आ ओ पाँच लाखक प्रस्ताव? शमशेर एखनहुँ

ओकरा छूटल मौका कहैत छथि।” जसप्रीत कागजक फाइल दिस तकलीह, जाहिमे प्रस्ताव आ अस्वीकृतिक प्रति सुरक्षित छल। “जे कथा घटल नहि, ओकरा पैसाक बदला घटल कहल जायत तँ साँच बोलनिहार किसानकेँ फेर ककरो विश्वसनीयता उधार लेबय पड़त,” ओ कहलीह। दूर लुधियानाक रौशनी चमकि रहल छल। सुनीताक कापीमे एखनहुँ ‘एच. चौहान’क नामक आधा संकेत पड़ल छल—न अपराधक निष्कर्ष, न निर्दोषताक घोषणा, केवल जाँचबाक शेष प्रश्न। खेतक मेड़पर जसप्रीत हाथसँ माटि झाड़ि घरक दिस चलि देलीह। पछिला रातिक ओस फेर पातपर उतरि रहल छल।

अध्याय २७ — अपराध आ जमानतक कसौटी

दिल्ली, दरभंगा आ चण्डीगढ़, सन् २०२२

दिल्लीक अगस्तक भोरमे वर्षा राति भरि भेल छल। विशेष न्यायालयक भवन लग नालीक पानि एखनहुँ सड़क पर पसरल छल आ पहिल सुनबाईसँ पूर्व बरामदामे वकीलसभक कारी कोट पर सीलनक गन्ध बैसल छल। बरामदाक एक छोरपर पचपन वर्षक यशोदा मल्होत्रा अपन झोरामे लोहेक छोट डिब्बा लेने ठाढ़ छलीह। डिब्बामे चाय नहि, छहटा पावती, दूटा रोजगार-प्रशिक्षणक रंगीन पत्र आ बेटीक नाम लिखल शुल्कक कागज छल। ओ वकील नहि छलीह। अदालतक कार्य-सूचीमे हुनकर नाम सेहो नहि छल। मुदा किछु वर्षसँ हुनका लग एतबे कागज बचल छल, जकरा देखिकय हुनकर विश्वास होइत छल जे बेटी गिन्नीक डूबल बचत केवल खराब भाग्यक घटना नहि छल।

यशोदाक बेटी गिन्नी बारहम वर्गक बाद चण्डीगढ़ लग किरायाक कोठरीमे रहिकय कम्प्यूटरक प्रशिक्षण लेने छलीह। सन् २०१९ मे ‘नवपथ कौशल सेवा’ नामक निजी संस्थाक विज्ञापन पहुँचने छल। विज्ञापनमे काज भेटबाक सम्भावनाक चकमक चित्र छल, प्रशिक्षकक नाम छल, पर नियुक्तिक लिखित गारण्टी नहि छल। गिन्नी अपन फीस भरने छलीह, किछु वर्गमे उपस्थित सेहो भेल छलीह। तीन मास पछाति कार्यालय बन्द भेटल। शहरमे महामारी अबिते विवाद किछु दिन दबि गेल। कियो कहलक संस्था जानि-बूझि धोखा देने अछि, कियो कहलक व्यापार असफल भेल। पुलिसक समक्ष शिकायत गेल, जाँच भेल, आ एक निश्चित आरोपसँ सम्बन्धित प्रतिवेदन सक्षम अदालतमे पहुँचल। मुदा यशोदाक अपेक्षा केवल दण्ड नहि छल; ओ जानय चाहैत छलीह जे ओहि कष्टसँ जोड़ल उधार केना चुकत।

विशेष न्यायालयक बरामदामे हुनकर संग कारी पगड़ी पहिरने हरीशपाल सिंह छलाह। हुनकर छोट भाय परमजीत ओहि संस्थाक विज्ञापन छापबाक काज कएने छल। हरीशपाल पुछलनि, “अहाँक बेटीकेँ कोनो प्रशिक्षण भेटल छल?” यशोदा कहलीह, “किछु दिन कक्षा छल। एहि लेल हम सभटा पैसा धोखाक कहि देब तँ ओकर मेहनत सेहो मेटा जाएत। मुदा फीस लेलाक समय जे बताओल गेल, आ पछाति जे कएल गेल, ताहिमे बड़ अन्तर छल।” हरीशपाल अपन भायकेँ निर्दोष मानैत छलाह; ओ हुनकरा आरोपितक स्थानपर नहि देखय चाहैत छलाह। तथापि यशोदाक बात सुनि कहला, “एहि अन्तरक हिसाब तहिना लिखल जाए, जेना भेल।” न्यायालयक पहिल घंटी बजबाक पहिनहि दुनू किछु बेर चुप ठाढ़ रहलाह।

ओहि दिन विशेष न्यायालयमे जे आवेदन सुनल जाएवला छल, ओ गिन्नीक शुल्क फिर्ताक प्रत्यक्ष दावा नहि छल। प्रवर्तन निदेशालय एक अलग धनशोधन अनुसन्धानमे दू व्यक्तिक आर्थिक भूमिका जाँचि रहल छल। मुख्य आरोपित प्रमोद खन्ना ‘नवपथ कौशल सेवा’ सँ जुड़ल एक वित्तीय-प्रबन्धन कम्पनीक निदेशक छलाह; दोसरा आरोपित फैजान अली ओहि कम्पनीक अस्थायी लेखा-सहायक छल। मूल कथित धोखाधड़ीक शिकायत आ धनशोधनक आरोपक कागज अलग-अलग छल। हुनकर कोनो साझा सूची देखिकय अदालत लग दू प्रकारक आरोप एकहि निष्कर्षमे मिलायब उचित नहि छल। किछु खातामे अभिभावकसभक जमा फीस देखाइत छल; दोसर खातामे विज्ञापन, किराया आ वास्तविक कक्षाक खर्च सेहो छल। प्रश्न ई छल जे केकरा कतबा पता छल, ककर निर्देशनसँ कोन रकम घुमल, आ एहि रकममे अपराधजन्य हिस्सा केना चिन्हल जाए।

रेवती झा अदालत पहुँचेबाक पहिने वकालतखानाक एक छोट कोठरीमे फैजानक पत्नी फरजाना सँ भेटलीह। फरजानाक कोरामे दू वर्षक बेटा अरहान सुतल छल। माथपर ओकर नींदक लट पसीनासँ चिपकल छल। फरजाना अपन पतिक नियुक्तिपत्रक फोटो, माहवारी वेतनक बैंक-प्रविष्टि आ अस्पतालक रसीद खोललीह। “दीदी, ओ लेखा लिखैत छल, ई बात हम अस्वीकार नहि करैत छी,” ओ कहलीह, “मुदा कम्पनीक मालिक जे कएलक, ओकर ज्ञान ओकरा छल कि नहि, से पूछबाक अछि। घरमे जे जे भेटल, हम आनने छी। जँ गलत काज कएने अछि तँ ओकर हिसाब हो, मुदा पहिले ओकर काजक अधिकार कतेक छल से देखू।”

रेवती पूरा बात सुनि एकटाही आश्वासन नहि देलीह। हुनका पति निर्दोष घोषित करबाक अधिकार नहि छल; अदालतमे जमानतक अलग कसौटी सेहो छल।

“अहाँ जे वेतन-पर्ची लएने छी, ओकर मूल स्रोत मिलत?” रेवती पुछलीह। फरजाना कहलीह, “कम्पनीक ई-मेल पर छल। फोन बन्द भेला पछाति हम बहिनक कम्प्यूटरसँ खोलने छी।” रेवतीक दृष्टि तुरन्त तारीखपर गेल। पर्चीमे किछु दिन हाथसँ लिखल सुधार देखाइत छल। “एहि फोटोकेँ हम प्रमाणित मूल नहि कहब,” ओ कहलीह, “कम्पनीक प्रणाली, बैंकक विवरण आ पत्रक प्राप्तिक मार्ग अलग चाही।” फरजाना एक क्षण निराश भेलीह। हुनका आशा छल जे पर्ची देखिते किछु निश्चित भऽ जाएत। रेवती कहलीह, “अपूर्ण कागज लऽ गेलासँ अहाँक पक्षक हानि होएत। जे नहि जनैत छी से साफ लिखब सेहो बचावक तैयारीक हिस्सा अछि।” ओ बच्चाक ओर नहि, फरजानाक ओर देखैत बात समाप्त कएलनि, कारण निर्णयक बोझ स्त्री स्वयं उठा रहल छलीह।

बरामदाक दोसर दिस प्रमोद खन्नाक बेटा निहाल अधिवक्ता कबीर सरीनक संग बैसल छल। निहालक हाथमे पिता द्वारा लिखल चारि पृष्ठक पत्र छल; पत्रमे व्यापारक विस्तार, भवनक किराया आ महामारीमे काजक हानि छल, पर पावतीक विस्तृत उत्तर नहि। कबीर कहला, “आजीक प्रश्न विचारणक अन्तिम निर्णय नहि, जमानत अछि। मुदा एहि विशेष अधिनियममे सामान्य आश्वासन पर्याप्त नहि। अभियोजन जे विशिष्ट धन-स्रोत आ स्थानान्तरण देखबैत अछि, ओकर उत्तर चाही।” निहाल उत्तर देलक, “पिताजी कहैत छथि जे सबटा भुगतान वैध विज्ञापन सेवाक छल।” कबीर पुछलनि, “तकर सेवा-रिपोर्ट कतय अछि?” निहाल चुप भेल। “जँ अछि तँ जुटाउ; नहि अछि तँ अदालतमे अस्तित्व बनाकय नहि कहू।”

दू भिन्न परिवारक दुःख एकहि बरामदामे जमा छल, मुदा ओकरासँ दू आरोपितक भूमिका समान नहि भऽ जाइत। यशोदाक बेटी रोजगारक आसमे कर्जा लेने छलीह; फरजानाक बेटा बाबूक बिना घरमे उठैत छल; निहाल अपन पिताकेँ जमानतपर बाहर देखय चाहैत छल। पुलिसक फरियाद, विशेष अधिनियमक अनुसन्धान, जमानतक आवेदन आ पीड़ितक सम्भावित प्रतिकर चारि अलग मार्ग छल। रेवतीकेँ सन् २००० क दरभंगाक ओहि कोठरीक स्मरण भेल, जतय नीलकान्त साहक विरुद्ध अनेक आरोप छल, मुदा न्यायालय प्रत्येक

आरोपपर अलग साक्ष्य देखैत छल। बाइस वर्ष पछाति कागज मोट आ प्रणाली जटिल भेल छल, पर मनुष्य आ अभिलेखक बीचक दूरी एखनहुँ ओतबे कठिन छल।

जुलाईक सत्ताइसम दिन सर्वोच्च न्यायालय धनशोधन-निवारण अधिनियम सम्बन्धी एक महत्त्वपूर्ण निर्णय देलक। रेवती ओ दिन दिल्लीमे नहि, दरभंगामे पिता शिवनारायण झाक लग छलीह। जखन फैसला उपलब्ध भेल, ओ दूटा पन्ना चिन्हित कएलीह। अधिनियमक धारा पैंतालीसमे जमानतक कठोर दू शर्तक वैधानिकता मान्य ठहराओल गेल छल। लोक अभियोजककेँ विरोधक अवसर, आ न्यायालयकेँ उपलब्ध सामग्रीक आधारपर अपेक्षित सन्तुष्टि—ई सामान्य जमानतक साधारण भाषासँ अलग कठिन कसौटी छल। शिवनारायण समाचारक एक वाक्य पढ़िकय पुछलनि, “तखन एखन सँ सभ अभियुक्त जेलमे रहत?” रेवती उत्तर देलीह, “नहि। कानून कठोर अछि, मुदा प्रत्येक आवेदनपर न्यायालयकेँ तथ्यमे प्रवेश करय पड़त। एकटा फैसला ककरो व्यक्तिगत दोष तय नहि कएलक।”

शिवनारायण अपन चश्मा उतारलनि। हुनकर हाथ पहिने जकाँ स्थिर नहि रहल छल। “हमर पीढ़ी जमानतकेँ व्यक्तिगत स्वतन्त्रताक आरम्भिक रक्षा बुझैत आएल अछि,” ओ कहला, “मुदा आर्थिक अपराधमे जाँचक शक्ति बढ़ल अछि। अहाँ ककरो सरल निर्दोषताक कथा लिखि अदालत नहि जइह।” रेवती कहलीह, “आ अभियोजनक कथनकेँ सुनिते दोषसिद्धि सेहो नहि मानब। कानूनमे जे कसौटी अछि, ओकर भीतर विशिष्ट साक्ष्यक जाँच होयत।” पिता बेटीकेँ पुरान नीला कलम देलनि। “अदालतमे लिखबाक पहिने ई प्रश्न कागजक कोनमे लिखिह—अहाँक पक्षक विरुद्ध सबसँ कठिन तथ्य की अछि?” रेवती एहि प्रश्नकेँ अपन नोटबुकक पहिल पन्नापर लिखि रखलीह।

दिल्लीक विशेष न्यायालयमे प्रमोदक मामला पहिने पुकारल गेल। प्रवर्तन निदेशालयक तरफसँ विशेष लोक अभियोजक माधव कपूर उपस्थित छलाह। अनुसन्धान अधिकारी अनन्या राव अदालतक निर्देशानुसार आवश्यक मूल अभिलेख आ सत्यापित प्रतिलिपिक विवरण लएने छलीह। न्यायाधीश वसुन्धरा सेठ फाइल पलटिते एक प्रश्न कएलनि—“एहि अनुसन्धानक आधारभूत अनुसूचित अपराधक स्थिति की अछि?” माधव उत्तर देलनि जे चण्डीगढ़मे दर्ज ठगी सम्बन्धी मूल प्रकरणमे आरोपपत्र प्रस्तुत भऽ चुकल अछि, पर ओहि अपराधक अन्तिम

दोषसिद्धि एखन नहि भेल अछि। न्यायाधीश लिखलनि जे आरोपपत्रक अस्तित्व आ धनशोधनक दोषसिद्धि दू अलग बात अछि। ओ मूल शिकायतक आरोप, कथित अपराधजन्य सम्पत्ति आ सम्बन्धित बैंक-प्रवाहक कड़ि स्पष्ट सुनय चाहैत छलीह।

माधवक समक्ष तीन रंगक रेखासँ बनाओल लेखा-चित्र छल। पहिल रेखा प्रशिक्षणार्थीक शुल्कवला खातासँ वित्तीय कम्पनीधरि, दोसर रेखा विज्ञापन-सेवा देनिहार एजेंसीसभ धरि, तेसर रेखा निजी निवेशकक खातामे कथित स्थानान्तरण। ओ कहला जे प्रारम्भिक परीक्षणमे कुल जमा आ एकाधिक आवर्ती प्रविष्टिक योगक बीच भिन्नता अछि; दू करोड़ सत्तरि लाखक एक भागक वैध प्रयोजनपर जाँच चलि रहल अछि। ‘हम ओहि पूरे योगकेँ अपराधजन्य कहि नहि रहल छी,’ ओ जोड़लनि, “अभियोजनक आरोप दू निश्चित भुगतान-श्रृंखला आ सम्बन्धित निर्देशपर आधारित अछि।” न्यायाधीश पूछलनि जे एकहि रकम दू बेर गनल गेल कि नहि। अनन्या राव उत्तर देलीह जे संशोधित सारणीमे आवर्ती अन्तःखाता स्थानान्तरण हटाओल गेल अछि; मूल पञ्जी अलग सुरक्षित अछि।

कबीर सरीन अपन प्रतिवेदन खोललनि। “माननीय न्यायालय, धनक घुमनाइ मात्र ओकर अपराधजन्य होयबाक प्रमाण नहि,” ओ कहलनि। “प्रशिक्षण भेल, भवन भाड़ापर छल, कतेक छात्रकेँ प्रमाणपत्र भेटल, कतेक फीस नियमानुसार फिर्त भेल। अभियोजनकेँ वैध व्यय हटाकय विशिष्ट अपराधजन्य राशि सिद्ध करबाक अछि। हमर मुवक्किल निदेशक छलाह, मुदा निदेशक होयब मात्र दोष नहि।” न्यायाधीश बीचमे पुछलनि, “सन्दिग्ध व्यक्तिगत खातामे कम्पनीक कोन स्वीकृत खर्च भेल?” कबीर एक विज्ञापन-अनुबन्धक प्रति देखौलनि। न्यायाधीश कहलनि, “ई अनुबन्ध भुगतानक उद्देश्यक पक्षमे सामग्री अछि। मुदा सेवा देबाक वास्तविक प्रमाण की अछि?” कबीर समय माँगलनि; एक बाहरी एजेंसीक कार्य-प्रतिवेदन एखनहुँ नहि भेटल छल।

यशोदा अदालतक भीतर दर्शक-अनुमतिक स्थानपर बैसलीह। हुनका अधिकांश विधिक शब्द सहज नहि बुझाइत छल। ओ ‘अपराधजन्य सम्पत्ति’क अर्थ अपन बेटीक गहना बेचनाइ बुझि रहल छलीह, जखन कि अदालत कानूनी परिभाषाक अनुकूल विशिष्ट धनक पाछाँ चलि रहल छल। विश्राममे निहाल हुनकरा लग आयल। “अहाँ हमरा पितासँ घृणा करैत छी?” ओ

धीरेसँ पुछलक। यशोदा किछु समय सोचलीह। “हमर बेटीकेँ जे स्वप्न देखाओल गेल, ओकर हिसाब चाही,” ओ कहलीह। “घृणा करैत रही तँ चारि वर्ष घर चलत?” निहाल चुप रहल। यशोदा जोड़लनि, “जँ तोहर पिता सही छथि तँ साँच बाहर आबय। जँ गलत काज भेल तँ ओहो बाहर आबय। हमर बेटीकेँ दुनूमे अपमान नहि चाही।”

ओहि दुपहर फरजाना आ फैजानक मायक लेल अदालतक प्रतीक्षाक समय बहुत लम्बा छल। फैजानक माय शमीमा एक पुरान कपड़ा झोरामे बेटाक विद्यालयक प्रमाणपत्र लएने छलीह। फरजाना कहलीह, “अम्मी, एतय ओकर पढ़ाईक कागजसँ तुरन्त काज नहि होएत।” शमीमा उत्तर देलीह, “हम ओकर जन्मसँ पहिनुक कहियो देखिने नहि, मुदा ओकर लिखल नाम देखिकय हिम्मत आबैत अछि।” फरजाना बिना बहस कएने प्रमाणपत्र फेर झोरामे रखि देलक। अदालतक बाहरक पानि सुखायब शुरू भेल छल। दू मजदूरक बेटी मोबाइलपर कहैत छलीह जे रातिक बस लेबाक अछि; एक पुलिसक सिपाही अपन घण्टाक अतिरिक्त ड्यूटी लिखि रहल छल। न्यायिक प्रतीक्षाक भवनमे सभक समय अलग-अलग मूल्यमे कटैत छल।

पहिल दिनक बहस समाप्त होयबाक बाद कबीर सरीन निहालकेँ अदालतक कक्षसँ बाहर एकान्तमे बजौलनि। “जँ ई दस्तावेज सच अछि तँ पिताजीकेँ सवाल देब आवश्यक अछि,” ओ कहला। एक बैङ्कक भुगतान-अनुमोदनमे प्रमोदक डिजिटल अधिकार प्रयोग भेल छल, आ सम्बन्धित यन्त्र ओकर कार्यालयमे पंजीकृत छल। निहाल कहलक जे यन्त्र अनेक कर्मचारी उपयोग करैत छलाह। कबीर उत्तर देलनि, “तँ प्रवेश-अभिलेख, अधिकृत उपयोगकर्ताक सूची आ वास्तविक समय चाही। केवल ई कहब जे सब उपयोग करैत छल, पर्याप्त नहि।” निहाल पुछलक, “अहाँ हमर पिता पर विश्वास नहि करैत छी?” “विश्वास करब आ अदालतकेँ परीक्षण योग्य उत्तर देब दू अलग काज अछि,” कबीर कहलनि। “हुनकर पक्षमे जे कठिन तथ्य अछि, ओकरा हटा देब हमर काज नहि।”

रेवती ओहि साँझ शिवनारायणकेँ फोन कएलनि। पिताक स्वरमे किछु थकान छल, मुदा प्रश्न स्पष्ट छल। “तोहर मुवक्किल?” “फैजान अली। ओकर मामला अलग दिन सुनल जाएत। आजु मुख्य आरोपितक सुनबाई देखलहुँ। अभिलेख बहुत अछि, पर आब तक प्रत्येक रकमक मूल आ अन्तिम उपयोग साफ नहि भेल।” शिवनारायण पुछलनि, “अहाँ सरकारी

जाँचक सभ कागज देखने छी?” “नहि, केवल जे विधिसम्मत रूपेँ प्रतिरक्षा लग प्रस्तुत अछि। बिन अधिकारक बैंक-सूचना हमरा नहि चाही।” पिता कहला, “ई नीक। अधिवक्ताक उत्सुकता ओकर अनुमतिक सीमा पार नहि करबाक चाही।” रेवती फोन रखि अपन खिड़कीसँ गाछक पातपर बनैत पानिक बूँद देखलनि। कागजक सीमा केहन कठोर, मुदा जीवनक प्रश्न ओतबे विस्तृत।

चण्डीगढ़मे बरसातक ओहि सप्ताह सुनीता पासवान अपन सहायता-कक्ष खोलैत छलीह। कोठरीक दीवालपर महामारीमे गाम लौटनिहार श्रमिकसभक फोन नम्बरक पुरान सूची एखनहुँ लगल छल। ओहिमेसँ कतेक नम्बर बन्द भऽ गेल छल, कतेक नामक आगाँ ‘वेतन भेटल’ लिखल छल, आ किछु नामक स्थानपर प्रश्नचिह्न छल। रामलखन आब प्रतिदिन कारखानाक पहिल पालीमे नहि जाइत छलाह; घुटनाक पीड़ा बढ़ल छल। हुनकर घरमे दीपक मोटर-मरम्मतिक छोट काज शुरू कएने छल। सुनीता पिताक लग बैसिकय एक नव आवेदन पढ़ैत छलीह, जाहिमे प्रशिक्षणक फीस लऽ नौकरी नहि देल जाएबाक शिकायत छल। “ई मुकदमा मजदूरीक नहि,” ओ पिताकेँ कहलीह, “मुदा गरीब घर अपन श्रमक कमाइ जमा कऽ प्रशिक्षणक विश्वास करैत अछि। एतय सेहो हिसाबक प्रश्न अछि।”

रामलखन अपन पुरान हँसिया-चिह्नवला कापी उठौलनि। “तेरह बरस पहिने कारखानामे हमर नामक दिन कम लिखल गेल छल,” ओ कहला। “आब दोसर घरक बेटीकेँ लिखित आशा देखाओल गेल। कागजक रंग बदलैत अछि, देनदारीक दुःख ओतबे अछि।” सुनीता पुछलक जे ओहन प्रत्येक शिकायत अदालतमे लऽ जाएब सम्भव अछि कि नहि। पिता कहला, “जे शिकायतक बाट अलग अछि, ओकरा अलग रखिह। हमरा बकाया मजदूरीक जाँचमे जे गलती भेल, ओकरा दोसरकेँ नहि दोहराय।” ओ बेटीकेँ अनुभवक आदेश नहि दैत छलाह; अपन अपूर्ण लड़ाइक बात कहैत छलाह। सुनीता छाँटल आवेदकसभक लेल कानूनी सहायता केन्द्रक नाम लिखलक, पर ककरो दिल्लीक धनशोधन प्रकरणसँ बिना जाँच नहि जोड़लक।

सरबजीत कौर बैंकक शाखामे अर्धवार्षिक निरीक्षणक तैयारी करैत छलीह। हुनकर कक्षमे एक कनिष्ठ अधिकारी, जसमीत सिंह, असामान्य लेनदेन सम्बन्धी संशोधित दिशा-निर्देश पढ़ि रहल छलाह। एक बाहरी अधिवक्ता टेलिफोनपर पुछलनि जे ‘नवपथ कौशल सेवा’क

भुगतानक विस्तृत ग्राहक-विवरण बैंक देत कि नहि। सरबजीत नाम सुनेलापर कहलीह, “बैंक कानूनक अनुरूप जाँच एजेन्सी वा सक्षम प्राधिकारीकेँ उत्तर देत। कोनो निजी प्रश्नकर्ता लेल खाता खोलब सम्भव नहि।” जसमीत फोन रखिते पुछलनि, “मेडम, जँ खाता संदिग्ध लागय तँ ओकर सभ भुगतान अपराधजन्य बुझब?” सरबजीत कहलीह, “सन्देह जाँच शुरू करैत अछि, निष्कर्ष नहि। ग्राहकक वास्तविक काम, लेनदेनक स्रोत आ आदेशक सीमा अलग राखू।”

जसमीत पुरान २०१६ क एक पत्रक उल्लेख कएलनि, जाहिमे हरदेव चौहानक समान नामक दू खाता अलग-अलग पाओल गेल छल। सरबजीत एक क्षणक लेल अपन कलम रोकलीह। “एहि प्रकरणक संग ओकर सम्बन्ध अहाँ कतयसँ मानि रहल छी?” ओ पुछलीह। जसमीत कहला, “किछु प्रचार-सेवाक बिलमे चौहान लिखल अछि।” सरबजीत तुरन्त सावधान कएलनि। “पूरा नाम, जनमतिथि, कम्पनी, अधिकार आ भुगतानक स्वतन्त्र स्रोत बिना समान उपनाम जोड़ब अनुचित। हमरा सभक प्रणालीमे सहस्र लोकक एकहि उपनाम होइत अछि।” ओ जसमीतकेँ ग्राहक-पहिचानक सामान्य सिद्धान्त समझौलीह; ककरो संरक्षित विवरण बाहर नहि पठौलनि। निजी कागजक गोपनीयता एतय अपराध छिपेबाक साधन नहि, मनुष्यक अधिकारक सीमारेखा बनल छल।

गिन्नी दिल्लीक एक छोट प्रकाशन-संस्थामे प्रमाण-जाँचक अस्थायी काज कऽ रहल छलीह। दफ्तरक खिड़की लग इलेक्ट्रॉनिक पन्ना मिलबैत समय ओकरा अपन प्रशिक्षण संस्थाक याद आबि जाइत छल। कखनो साँच कक्षा भऽ रहल छल; कखनो प्रशिक्षक नियमित नहि अबैत छल; कखनो नौकरीक फोनक आशामे सभ विद्यार्थी दीवालपर लगल सूची देखैत छल। ओकर सहकर्मी रोहन पुछलक, “तखन अहाँ एतय जे कम्प्यूटर सीखने छी, ओकर किछु भाग ओतयसँ सेहो भेटल?” गिन्नी कहलीह, “हँ, शुरुआती किछु पाठ भेल। एहि लेल हम कोर्टमे गलत बात नहि कहब। मुदा शुल्कक दिन कहल गेल जे तीन मासमे रोजगारक व्यवस्था पक्की होएत। लिखित कागजमे वैह बात नहि छल। ई अन्तर हमरा बुझयमे समय लगल।”

रोहन पुछलक, “जँ मुकदमा चलि रहल अछि तँ अहाँ अपन नाम अखबारमे देब चाहैत छी?” गिन्नी कहलीह, ‘माय एखनहुँ डिब्बामे पावती लऽ अदालत जाइत छथि। मुदा हमरा नामक संग ‘ठगल गेल लड़की’ लिखल जाए, से जरूरी नहि। हम काज करैत छी, पढ़ैत छी,

छोट बहिनकेँ पढ़बैत छी। हमर अनुभवकेँ पूरा व्यक्ति सँ छोट नहि कएल जाए।’ ओ साँझ अपन मायकेँ फोन कएलनि। यशोदा कहलनि जे विशेष अदालतमे आजु जमानत सुनल गेल। गिन्नी पुछलि, “हमर फीसक आदेश?” यशोदा कहलीह, “ओ अलग बाट अछि बेटा। आजु जे सुनल गेल, ओ धनशोधनक अभियुक्तक जमानत छल।” बेटी एहि उत्तरमे मायकेँ पहली बेर अनिश्चितताक भाषा ठीकसँ बुझैत सुनलक।

चण्डीगढ़क मूल ठगी-प्रकरणक अनुसन्धानक एक साक्षी, प्रशिक्षक रीमा नागपाल, अपन बयानक प्रति पुनः पढ़ि रहल छलीह। ओ संस्थामे आठ मास कक्षा लेने छलीह आ ताहि अवधिमे वेतन सेहो पओने छलीह। कम्पनीक प्रबन्धन बदलला पछाति प्रशिक्षणक समय घटल, कर्मचारी हटाओल गेल, आ किछु छात्रक मूल प्रमाणपत्र समयपर वापस नहि भेल। रीमा नहि जनैत छलीह जे मालिकक निजी खातामे केहेन भुगतान भेल। हुनकरा जे देखल छल ओ कक्षा, पाठ्यक्रम आ उपस्थितिपञ्जी छल। जाँच अधिकारी जखन पुछने छलाह, “सभ कक्षा नक्कली छल?” तँ ओ उत्तर देने छलीह, “नहि। एहन लिखू तँ हमर पढ़ाओल विद्यार्थी आ हमर मेहनत दुनू असत्य भऽ जाएत।”

रीमाक बयान विशेष न्यायालयक तत्काल सुनबाईमे अन्तिम प्रमाणक रूपमे नहि, बचाव पक्षक प्रस्तुत दस्तावेजक संदर्भमे आयल। कबीर कहला जे संस्था किछु वास्तविक सेवा देलक। माधव उत्तर देलनि जे किछु वैध काजक अस्तित्व बाकी कथित ठगीक जाँच बन्द नहि करैत। न्यायाधीश सहमत भेलीह जे दुनू तर्क अपन-अपन सीमामे प्रासंगिक अछि। “हमरा सभकेँ पहिने ओहि विशिष्ट रकमपर रहबाक अछि,” ओ कहलनि, “जकरा सम्बन्धमे धनशोधनक आरोप लगाओल गेल। समूचा व्यवसाय असली वा नकली कहलासँ काम नहि चलत।” न्यायालयक एहि वाक्यक पाछाँ गिन्नीक अधूरा प्रशिक्षण, रीमाक वास्तविक श्रम आ यशोदाक फीस—तीनू एकहि परिमाणमे शामिल नहि छल।

अगिला सुनबाईमे अभियोजन एक डिजिटल अनुमोदन-पञ्जी देखौलक। कम्पनीक वित्तीय यन्त्रसँ आठ बेर पैघ राशि स्थानान्तरित कएल गेल छल। ओहिमेसँ पाँच प्रविष्टिमे प्रमोदक अधिकृत परिचय प्रयोग भेल, दूटा प्रविष्टिमे सामूहिक कार्यालय-अनुमति, आ एकटा प्रविष्टिमे समयक अभिलेख अस्पष्ट छल। माधव प्रत्येक लेनदेनक कुल रकम बोलबाक बदला

आधिकारिक उपयोग-रजिस्टरक क्रम देखौलनि। कबीर प्रश्न उठौलनि जे परिचय उपयोग भेलासँ वास्तविक व्यक्ति उही छल, से स्वतंत्र प्रमाण चाही। न्यायाधीश पुछलनि, “कम्पनीक ओ दिनक प्रवेश-पञ्जी, सर्वरक मूल अभिलेख आ यन्त्रक देखरेखक विवरण उपलब्ध अछि?” अनन्या राव कहलीह जे किछु डिजिटल सूचना जप्त यन्त्रसँ संग्रहीत अछि, किछु सेवा-प्रदाता लगसँ प्रमाणित प्रति माँगल गेल अछि।

अनन्याक कार्य ककरो अपराधी कहलाक बाद कहानी पुरा करब नहि छल। ओ एकटा सरकारी जाँच अधिकारी छलीह, जकरा प्रत्येक गलत अनुमान अदालतमे टिकय नहि सकैत छल। कार्यालय लौटि ओ अपन सहकर्मीकेँ कहलीह, “ई रेखाचित्रमे कुल रकमक दोहराव नहि हो, फेर देखू। जकरा निष्क्रिय खाता लिखने छी, ओहि खाता पर ब्याजक वैधानिक जमा सेहो भऽ सकैत अछि।” सहकर्मी थाकल स्वरमे कहलक, “एतेक सावधानीमे समय बीति जाइत अछि।” अनन्या कहलीह, “समय बचेबाक लेल जे गलती करब, ओ ककरो स्वतन्त्रता आ ककरो खोएल धन दुनू पर असर करत।” ओकर कार्यालयमे अपन सेवा-नियम आ पदोन्नतिक दबाव छल, मुदा निष्कर्षक जल्दबाजी ओकरा अनुकूल नहि छल।

अनन्याक घरमे ओकर पिता दयाशंकर राव सेवानिवृत्त लेखाकार छलाह। ओ राति भोजनक समय बेटीकेँ पुछलनि, “आजु कोर्टमे वकील लोक की कहलाह?” अनन्या केसक गोपनीय बात खोलबाक बदला सामान्य उत्तर देलीह—“अर्थक पाँति लिखल सरल अछि, ओकर मूल कार्य बुझब कठिन।” पिता अपन युवावस्थाक एक सहकारी संस्थाक उदाहरण देलनि, जतय समान रकम तीन कागजमे लिखल गेल छल—प्राप्ति, अन्तःखाता स्थानान्तरण आ अन्तिम भुगतान। “जे तीनू जोड़ि दैत छल,” ओ कहला, “ओ संस्था तीन गुणा पैघ देखाइत छल।” अनन्या ई कहावत मुस्की देलनि, मुदा ओकरा पता छल जे अदालतमे इहो उदाहरण बिना मूल दस्तावेजक कोनो मूल्य नहि राखैत। जीवनक शिक्षा आ न्यायालयक प्रमाणक सीमा ओकरा अलग राखबाक छल।

एक दिन जमानत प्रकरणक बहसक बीच न्यायाधीश प्रमोदकेँ आरोपपत्रक एक कम्पनीक नाम देखौलीह—‘उजास डिजिटल प्रचार सेवा’। प्रमोद कहलनि जे ई बाहरी सेवा-दाता छल, पंजीकृत कामक बिल आयल छल। माधव कहला जे तीन बिलक रकम समान अछि, मुदा

सेवा-प्रतिवेदन अधूरा। कबीर कहला जे महामारीमे विज्ञापन अभियान रद्द भेल, आगाँक शुल्क समायोजित भेल। अदालत दस्तावेजक वास्तविक क्रमपर प्रश्न करैत रहल। ओहि बिलक एक पन्नाक कात ‘जनदिशा’ शब्दक उल्लेख छल, जे किसान समितिक २०२१ क अस्वीकृत प्रचार प्रस्तावमे सेहो आएल छल। मुदा अदालत लग नहि सुनीताक निजी कापी छल, नहि किसान समितिक अस्वीकृति-पत्र। केवल नामक आंशिक समानता भऽ गेलासँ अलग घटना एकहि सञ्जालक सिद्ध नहि भऽ जाइत।

रेवतीक कार्यालयमे एक साँझ नूर जतय पहुँचलि। ओ २०२२ क कठोर आर्थिक कानूनपर लेख तैयार करैत छलीह। “आम पाठक कहैत अछि, गिरफ्तार भेल तँ दोषी होएत; दोसर पाठक कहैत अछि, धनशोधनक अभियोग अपने अन्याय अछि,” नूर कहलीह। “हम दुनू सरल वाक्य सँ बचय चाहैत छी।” रेवती उत्तर देलीह, “कानूनक शक्ति पर जाँच जरूरी अछि; आर्थिक अपराधक पीड़ितक हानि सेहो वास्तविक अछि। मुदा अहाँ गिन्नीक प्रशिक्षण-फीसकेँ प्रमोदक दोषसिद्ध धन नहि लिखिह, आ फैजानक अस्थायी पदकेँ स्वयमेव निर्दोषता नहि कहिह।” नूर पुछलीह, “अहाँ स्वयं कोन पक्षमे छी?” रेवती मुस्की देलनि—“हम अपन मुवक्किलक वैधानिक अधिकारक पक्षमे छी। मुदा न्यायालयमे साक्ष्य जँ विरुद्ध होएत तँ ओकर उत्तर चाही।”

नूर दिल्लीक एक पुस्तकालयमे आर्थिक अपराधक पुरान कानून पढ़य गेलि। सार्वजनिक वित्तक बहसमे एक पक्ष कठोर जमानत-शर्तक समर्थन करैत छल—बड़ रकमें अनेक खातासँ घुमि सकैत अछि, साक्षीपर दबाव आ सम्पत्ति हटेबाक जोखिम अछि। दोसर पक्ष सावधान करैत छल जे जाँच लम्बा चलला पर विचारणपूर्वक कैद व्यक्तिक जीवनकेँ अपूरणीय क्षति पहुँचा सकैत अछि। नूर दुनू दृष्टिक कोण लिखलनि। ओ न्यायालयक फैसला पत्रकारिता सँ नहि बदलि सकैत छलीह, मुदा समाचारक पहिल पाँतिमे आरोपितक नामक आगाँ ‘सिद्ध अपराधी’ लिखब अथवा पीड़ितकेँ ‘कथित नुकसान’ कहिकय हुनकर अनुभव नगण्य बनायब —दुनू गलती सँ बचि सकैत छलीह। अपन नोटबुकमे ओ लिखलीह, “अदालतक कठोर प्रश्न आ सडकक सहज निर्णयक बीच एक लम्बा मौन अछि।”

फैजानक मामलेक तैयारीक समय रेवती ओकर २०१९ सँ २०२१ धरि काजक क्रम खोललीह। फैजान पहिने निजी विद्यालयमे लेखाक सहायक छल; विद्यालय बन्द भेलापर छह मास बेरोजगार रहल। नवपथक प्रबन्धन कम्पनी ओकरा अस्थायी नियुक्ति देलक। ओकर काजमे सेवा-दाताक बिलक सङ्ख्या अंकित करब, खाताक सामान्य समायोजन लिखब आ वरिष्ठ लेखाधिकारीक निर्देशानुसार भुगतान-पञ्जी तैयार करब शामिल छल। एक मोबाइल-सन्देशमे ओ ‘ठीक अछि’ लिखने छल, जकरा अभियोजन संदिग्ध भुगतानक स्वीकृति मानैत छल। मुदा सन्देशक पहिल भाग, संलग्नक आ फैजानक वास्तविक अधिकार-सीमा स्पष्ट नहि छल। रेवती एहि अस्पष्टताकेँ सीधा निर्दोषताक प्रमाण नहि कहलनि; ओ मूल संवाद, बैंक-अनुमोदनक परत आ रोजगारक जिम्मेवारीक शर्त माँगलीह।

फरजाना अपन पतिक मित्र सलमान लग गेलि, जे ओहि कार्यालयमे सूचना-प्रणालीक छोट कर्मचारी छल। सलमान कहलक, “दीदी, फैजानक प्रयोगकर्ता-सङ्केत सँ राशि चढ़ाओल जा सकैत छल, मुदा अन्तिम भुगतान स्वीकृत करबाक विशेष अधिकार नहि छल।” फरजाना तुरन्त उत्साहित भेलि। सलमान ओकरा रोकि कहलक, “हम एतबा जानैत छी जे हमर समयमे व्यवस्था एहेन छल। प्रशासनिक अधिकार बादमे बदलल कि नहि, से हम नहि जनैत छी। हमर कथनकेँ पूरा तकनीकी प्रमाण नहि मानू।” फरजाना पहिल बेर स्वयमेव पुछलक, “तँ लिखित नियमक प्रति कतय भेटत?” सलमान कम्पनीक पुरान कर्मचारी-नियमक सार्वजनिक भाग देखौलक आ कहलनि जे वास्तविक प्रणाली-अभिलेख सक्षम अधिकारीसँ मँगाबय पड़त।

ओहि दिन शमीमा मस्जिदक बाहरक छोट दोकानसँ किछु खिलौना लएने लौटलि। अरहान लकड़ीक गाड़ी लऽ देवालपर मारि रहल छल। शमीमा कहलीह, “तोहर अब्बा आबि जेताह तँ ओकरा अपने गाड़ी ठीक करबा देब।” फरजाना धीरेसँ कहलीह, “अम्मी, जमानत भेटत कि नहि, एखन नहि जनैत छी। बच्चाकेँ निश्चित दिन कहब नहि।” शमीमा क्रोधसँ देखलीह—“तोहर मुँह सँ आशा सेहो नहि निकलैत?” फरजाना उत्तर देलक, “आशा रखैत छी। मुदा जकर प्रतीक्षा करबाक पड़त, तकरा झूठ तारीख दऽ केना जिअब?” दू स्त्रीक बीच ई प्रश्न कानूनक धारासँ बाहर छल, मुदा कानूनक परिणाम हुनके घरक प्रत्येक दिनक भीतर उतरैत छल।

दरभंगामे शिवनारायण झा आब कम अदालत जाइत छलाह। रेवतीक छोट भाय हुनकर दवा व्यवस्थित करैत छल। साँझक समय शिवनारायण बरामदामे बैसिकय अनुपमा झाक मैथिली कथासंग्रह पढ़ैत छलाह। एक कथा क पात्र कार्यालयक बहीमे अपन मृत पिताक नाम देखिकय विचलित होइत छल। शिवनारायण ओ पन्ना पर अँगुरी रखि रेवतीकेँ फोन कएलनि। “समाजक सब हिसाब एकहि नामक भरोसापर ठाढ़ अछि,” ओ कहला। “अहाँक आर्थिक मुकदमामे स्वीकृति-कूट एक व्यक्तिक अधिकार सिद्ध करैत अछि कि ककरो उपयोगक चिह्न मात्र अछि?” रेवती कहलनि, “एखन ईहे प्रश्न अछि। प्रणालीक अधिकार-सूची, यन्त्रक इतिहास आ साक्षीक विवरण मिलबाक चाही।” पिता कहला, “तेँ अधिवक्ताक कठिन काज नामक पाछाँ सही क्रिया खोजब अछि।”

प्रमोदक जमानत आवेदनक दोसर दिन बहस दोहरायल नहि गेल; नब दस्तावेजमे ओकर हस्ताक्षरित निर्देशन-पत्र देखाओल गेल। पत्रमे एक सेवा-दाताकेँ प्रशिक्षण-फीससँ प्राप्त निर्दिष्ट रकम “पूर्व निर्धारित प्रचार-खर्च” कहल गेल छल। कबीर तर्क देलनि जे पत्र सामान्य व्यापारिक निर्णय छल आ ओकरा अपराधजन्य रकमक ज्ञान नहि छल। माधव कहला जे पत्रक तिथि ओहि समयक अछि जखन संस्थाक आन्तरिक रिपोर्टमे अनेक प्रशिक्षण केन्द्र बन्द होयबाक सूचना पहुँचि चुकल छल। न्यायाधीश पुछलनि, “निदेशककेँ ओ रिपोर्ट वास्तवमे प्राप्त भेल, तकर प्रमाण की अछि?” अभियोजन आधिकारिक ई-मेल प्राप्तिक अभिलेख आ बैठकक उपस्थिति रखलक; बचाव कहलक जे प्राप्ति देखब आ रिपोर्ट पढ़ब एक नहि। न्यायालय एहि विरोधकेँ अभिलेखमे सुरक्षित रखलक।

कबीर अपन मुवक्किलक स्वास्थ्य सम्बन्धी दस्तावेजो प्रस्तुत कएलनि। प्रमोदकेँ मधुमेह छल, दवा नियमित लेबाक आवश्यकता छल। अभियोजन कहलक जे जेलक नियमानुसार चिकित्सकीय सुविधा उपलब्ध कराओल जा सकैत अछि। न्यायाधीश स्वास्थ्यक प्रश्न अलग परीक्षण करैत कहलीह जे उपचारक उपयुक्त व्यवस्था करब राज्यक दायित्व अछि; मुदा स्वास्थ्य सम्बन्धी दावा होयबाक मात्रासँ कठोर वैधानिक जमानत-शर्त स्वतः समाप्त नहि होइत। कबीर प्रार्थना कएलनि जे जेल चिकित्सा-अधिकारीसँ ताजा प्रतिवेदन माँगल जाए।

अदालत ओ आदेश देलक। निहाल बाहर निकलैत पुछलक, “पिताजीकेँ दवा भेटत?” कबीर कहला, “एहि विषयमे अलग निर्देश लेल गेल अछि; एकरा जमानतक निर्णयसँ नहि मिलाउ।”

गिन्नीक विद्यालयक पुरान सहेली कविता दिल्लीमे एक गैरसरकारी अध्ययन केन्द्र चलबैत छलीह। ओ गिन्नीकेँ पुछलक जे ओ मुकदमामे प्रत्यक्ष साक्षी बनब चाहतीह कि नहि। गिन्नी उत्तर देलक, “जे देखल अछि ओ कहब। मुदा हमर प्रशिक्षणक प्रमाणपत्र, पहिल नौकरीक आवेदन आ शुल्कक रसीद सभ अलग कागज अछि। ओही दिन हमर मोबाइलमे आयल विज्ञापन एखनहुँ अछि, पर मूल वेबसाइट बन्द अछि। जँ फोनक फोटो देब तँ ओकर स्रोत आ तारीखसँ सम्बन्धित प्रश्न उठत।” कविता कहलीह, “अहाँ एहि बातमे नीक तैयार छी।” गिन्नी मुस्की देलीह—“काजक पन्ना मिलाबैत-मिलाबैत सीखनाइ भेल अछि। कियो गवाही देबय जाए तँ अपन स्मृति आ मूल कागजक अन्तर स्वीकार करबाक चाही।”

सितम्बरक आरम्भमे दिल्लीक अदालतक बरामदामे वर्षाक बदला धूप छल। यशोदा मल्होत्रा एहि बेर डिब्बामे पावती नहि, बेटीक लिखल एक चिट्ठी लएने छलीह। गिन्नी लिखने छलीह—“माय, न्यायालय जमानतपर जे निर्णय देत से हमर शुल्क फिर्ताक अन्तिम फैसला नहि होएत। अहाँ अपन स्वास्थ्य देखू। हम कागज जुटा रहल छी।” यशोदा चिट्ठी दुटा बेर पढ़लीह। अदालतमे बेचैनीसँ प्रतीक्षा करब हुनकरा अपन कर्तव्य बुझाइत छल; बेटी ओहि कर्तव्यक संग विश्रामक अधिकार जोड़ने छलीह। हरीशपाल सिंह एहि बेर अपन भायक एक पुरान विज्ञापन-बिल लएने छलाह। हुनका आशा छल जे बिलसँ भायकेँ अनावश्यक संदेहसँ मुक्त कराओल जा सकत; मुदा ओ अदालतक अनुमति बिना कोनो कागज न्यायाधीशक मेजपर राखबाक प्रयत्न नहि कएलनि।

प्रमोदक आदेश सुनयबाक दिन विशेष लोक अभियोजक माधव कपूर पहिने अपन सीमित तर्कक सार देलनि। ओ कहला जे कथित अनुसूचित अपराधक जाँचक स्वतन्त्र अभिलेख अछि, आ धनशोधनक आरोप एक निश्चित रकमकेँ विभिन्न खातामे घुमा निजी उपयोगक दिशा देबासँ सम्बन्धित अछि। ओ एहि तथ्यक ओर ध्यान आकृष्ट करौलनि जे प्रमोदक स्वीकृत भूमिका केवल कम्पनीक नाममात्र निदेशक होयब नहि, किछु महत्त्वपूर्ण निर्देश लिखबाक सेहो छल। कबीर सरीन उत्तर देलनि जे निदेशकक निर्देश व्यावसायिक आवश्यकता पर आधारित

छल, आ अभियोजन प्रत्येक रकमक अपराधजन्य स्रोतक पूर्ण नक्शा प्रस्तुत नहि कएने अछि। ओ अभियुक्तक सहयोग, स्थायी पता आ विचारणमे उपस्थित रहबाक तत्परताक उल्लेख कएलनि। न्यायाधीश दुनू पक्षकेँ पुनः सुनि आदेश लेल समय निर्धारित कएलनि।

न्यायाधीश वसुन्धरा सेठ आदेशक आरम्भमे कहलनि जे जमानतक आवेदनपर निर्णय, अभियोगक अन्तिम सत्यता पर फैसला नहि होइत। ‘अभियोजनक दस्तावेज पूर्ण विचारणमे प्रति-परीक्षण आ विधिसम्मत प्रमाणक अधीन रहत,’ ओ लिखलनि। ओ धारा पैंतालीसक विशेष शर्तक उल्लेख कएलनि—लोक अभियोजककेँ विरोधक अवसर देल गेल अछि, आ न्यायालयकेँ उपलब्ध सामग्री पर निर्धारित सन्तुष्टिक जाँच करबाक अछि। ओ निर्णयक तिथि, संशोधित वैधानिक व्यवस्था आ सर्वोच्च न्यायालयक जुलाई २०२२ क निर्णयक सन्दर्भ रखलनि। तकर पछाति अदालत पहिने प्रमाणक व्यक्तिनिष्ठ सम्बन्ध देखलक; केवल आरोपक गंभीरता अथवा व्यापारिक प्रतिष्ठाक हानि पर आदेश नहि बनौलक।

प्रमोदक सम्बन्धमे न्यायाधीश दू दस्तावेजक ओर ध्यान देलनि। पहिल, प्रशिक्षण केन्द्रसभक बन्द होयबाक सूचना सम्बन्धी बैठक-पञ्जी, जाहिमे प्रमोदक उपस्थिति अभिलेखित छल; दोसर, एहि अवस्थाक पछाति जारी भुगतान-निर्देश, जकर लाभार्थी कम्पनीक वास्तविक सेवा-प्रतिवेदन एखन स्पष्ट नहि छल। अदालत ई नहि कहलक जे बैठक-पञ्जी अपने अपराधक सम्पूर्ण ज्ञान सिद्ध करैत अछि। मुदा ओ कहलक जे उपलब्ध सामग्रीमे रकमक कथित अपराधजन्य स्रोत आ प्रमोदक निर्णयकारी भूमिका सम्बन्धी प्रश्न गंभीर अछि; एखन प्रस्तुत उत्तर कठोर जमानत-कसौटीमे आवश्यक सन्तुष्टि लेल पर्याप्त नहि। अदालत ईहो लिखलक जे किछु वैध प्रशिक्षण भेलाक तथ्य बचावक पक्षमे प्रासंगिक अछि, पर विवादित दू भुगतान-श्रृंखलाक विशिष्ट व्याख्या एखन अपूर्ण अछि।

अदालत प्रमोद खन्नाक नियमित जमानत आवेदन अस्वीकार कएलक। आदेशमे कहल गेल जे ई अस्वीकृति दोषसिद्धिक निर्णय नहि; अभियुक्त विधिसम्मत ऊपरी न्यायालयमे चुनौती दऽ सकैत छथि, आ भविष्यक महत्वपूर्ण नब सामग्री पर वैधानिक उपचारक प्रश्न खुलल रहत। ओकर स्वास्थ्यक सम्बन्धमे कारागारक चिकित्सा-अधिकारीसँ नियमित देखरेखक प्रतिवेदन आ आवश्यक उपचारक व्यवस्था सुनिश्चित करबाक निर्देश देल गेल।

निहालक आँखि भरि आयल, मुदा ओ अपन पिता दिशि बढ़ि अदालतक क्रम भङ्ग नहि कएलक। कबीर ओकरा बाहर बजाकय कहला, “आदेश कठिन अछि। हम बिना ओकर कारण पढ़ने अगिला कदम नहि चुनब।” निहाल अपन पिताक लघु पत्र मोड़ि जेबमे रखलक, जकर पहिल पाँतिमे लिखल छल—“हमर घरक चिन्ता करू।”

यशोदाकेँ आदेश सुनि कोनो उत्सवक भावना नहि भेल। ओ हरीशपालकेँ कहलीह, “जमानत नहि भेटल; मुदा गिन्नीक पैसा एखनहुँ नहि आएल।” हरीशपाल उत्तर देलनि, “आ हुनकर दोष सेहो एखन सिद्ध नहि भेल।” दुनू ओहि निष्कर्षपर सहमत भेलाह जे अदालतक वर्तमान आदेश पीड़ितक प्रतिकर वा सम्पूर्ण विचारणक अन्तिम परिणामक विकल्प नहि अछि। यशोदा चाय लेल थमकलीह। ओ एक कप अपन लेल आ दोसर कप ओहि स्त्री लेल किनलीह जे प्रमोदक बेटाक संग बैसल छलीह। स्त्री प्रमोदक पत्नी नम्रता छलीह। यशोदा कप बढ़बैत कहलीह, “अहाँक लेल।” नम्रता अचम्भित भेलीह। “अहाँ हमरा पहचानैत छी?” “अहाँ न्यायालयमे ठाढ़ छी, एतबा देखैत छी,” यशोदा कहलीह। दुनू किछु नहि कहि चाय पीबैत रहलीह।

नम्रता खन्ना पतिक व्यापारक भीतरी हिसाब नहि जनैत छलीह। हुनका परिवारक खर्च, माय-बापक उपचार आ बेटाक पढ़ाईक चिंता छल। प्रमोदक कम्पनी कखनो परिवारक गरबक विषय छल; आब अनेक परिचित फोन बन्द करि देने छलाह। निहाल घरमे कहलक, “माय, अदालत कहलक जे पिताजी दोषी छथि?” नम्रता दृढ़ स्वरमे उत्तर देलीह, “नहि। अदालत जमानतकेँ अस्वीकार कएलक। ई अन्तर तँ तोहर वकील स्पष्ट कहने छथि।” निहाल पुछलक, “तखन हम समाजकेँ की कहब?” नम्रता कहलीह, “जे सच अछि, से कहिह। अदालतक आदेश लिखित अछि; हमरा बचबा लेल न झूठ विजय चाही, न झूठ हार।” घरक ओहि कोठरीमे पहिल बेर माँ-बेटाक बीच भयक बदला प्रक्रियाक स्पष्टता स्थान लेलक।

फैजानक आवेदनक तिथि नजिक अबिते रेवती अपन बहसकेँ नव सिरेँ लिखलीह। ओ कठोर जमानत-शर्तक आलोचनात्मक सम्पादकीय अदालतमे प्रमाणक बदलामे प्रस्तुत नहि करबाक निर्णय कएलीह। हुनकर पहिल प्रश्न छल—फैजान कोन खाताक अधिकृत स्वीकृतकर्ता छल? दोसर—विवादित डिजिटल सन्देश कोन समय, केकर अनुरोधक उत्तरमे

पठाओल गेल? तेसर—धनक कथित अपराधजन्य स्रोतक जानकारी फैजानकेँ भेटबाक कोन प्रमाण अछि? चौठ—ओकर निजी खातामे आयल रकम नियमित वेतन छल कि ओहि स्रोतक विशेष लाभ? पाँचम—अभियोजनक अनुसार ओ साक्षी वा अभिलेखपर प्रभाव डालि सकैत अछि कि नहि? एहि प्रश्नसभक उत्तर दू पन्नाक भावुक निवेदनसँ सम्भव नहि छल।

फरजाना फैजानक कारागार-भेटसँ लौटि रेवतीकेँ एक बात बतौलीह। “ओ कहैत छल जे भुगतान-पञ्जीमे एक नाम देखिकय ओ सावधान भेल छल, मुदा वरिष्ठ कर्मचारी कहलक जे पुरान बिलक समायोजन अछि। ओहि नामक कागज ओ स्वयं नहि देखलक।” रेवती पुछलीह, “नाम की छल?” फरजाना कहलीह, “एच. चौहान सन किछु। मुदा फैजान स्वयं निश्चित नहि।” रेवती अपन कापीमे एतबे लिखलीह—“मौखिक स्मृति; मूल पञ्जी अज्ञात।” हुनका पुरान हरदेव चौहानक प्रसंग स्मरण भेल। तखनहि ओ अपन कलम रोकलीह; अधिवक्ताक मनमे उठल समानता जँ तथ्यक स्थान लऽ लेत तँ फैजानक रक्षा आ पुरान श्रमिकसभक सत्य दुनूकेँ क्षति पहुँचि सकैत अछि। ओ एहि सम्भावना पर नूरकेँ कोनो सार्वजनिक बात नहि कहलनि।

फैजानक पहिल निर्धारित सुनबाईमे अभियोजन समय माँगलक। ओकर एक डिजिटल प्रवेश-अभिलेखक प्रमाणित रूप एखन प्राप्त नहि भेल छल। रेवती विरोध करैत कहलीह जे हिरासतमे रहनिहार अभियुक्तक जमानत आवेदनकेँ अनावश्यक विलम्ब उचित नहि; जे सामग्री उपलब्ध अछि, ओकर आधारपर न्यायालयकेँ सुनबाक चाही। माधव कहलनि जे नब अभिलेख अभियुक्तक भूमिका स्पष्ट करय सकैत अछि, सम्भव अछि बचावक पक्षमे सेहो हो। न्यायाधीश प्रश्न कएलनि—“कतेक समय? आ कोन विशिष्ट प्रमाण?” अनन्या राव लिखित रूपमे सेवा-प्रदाता लगसँ माँगल रजिस्टरक स्थिति रखलीह। अदालत सीमित अवधि निर्धारित कएलक आ निर्देश देलक जे नब सामग्री विधिसम्मत रूपमे दुनू पक्षक उपलब्धताक प्रश्न स्पष्ट कएल जाए।

रेवती अदालतमे कहलीह, “हमर मुवक्किलक आवेदन मुख्य आरोपितक आदेशक छायामे नहि सुनल जाय। प्रमोदक विरुद्ध जे व्यक्तिगत सामग्री अछि, ओकर फैजानक विरुद्ध स्वतः प्रयोग नहि भऽ सकैत।” माधव उत्तर देलनि, “अभियोजन सेहो व्यक्तिगत भूमिका अलग

रखय चाहैत अछि, मुदा फैजानक उपकरण-संबंधी सन्देशक अर्थ जाँचब बाकी अछि।” न्यायाधीश स्पष्ट कएलीह जे प्रमोदक जमानत अस्वीकृति फैजानक आवेदनक परिणाम पूर्वनिर्धारित नहि करैत। ई अलग आवेदन अछि; जँ अभियोजन एकहि साक्ष्य पर निर्भर करय तँ ओहि साक्ष्यक फैजानसँ सम्बन्ध देखेबाक पड़त। ओ फैजानक सुनबाईक अलग तिथि लिखलीह। एहि दिन फैजानकेँ जमानत देल गेल, वा नहि देल गेल—दुनूमे कोनो अन्तिम फैसला नहि भेल।

फरजाना बाहर निकलिते पुछलीह, “दीदी, आजु फेर किछु नहि भेल?” रेवती कहलीह, “दू बात भेल। न्यायालय अलग सुनबाईक आवश्यकता स्वीकार कएलक, आ नब अभिलेखक लेल निश्चित तिथि देलक। मुदा जमानतपर निर्णय एखन नहि भेल।” फरजाना ओकरा देखलक। “हर पेशीमे केवल तिथि भेटत तँ अरहानक बाल्यावस्था कतेक दिन रुकत?” रेवती उत्तर नहि खोजि सकलीह। ओ कहलीह, “अनावश्यक विलम्बक विरोध हम लिखित रूपसँ करब। मुदा जँ नब कागज एहि आदमीक वास्तविक भूमिका स्पष्ट करय, तकरा देखब सेहो आवश्यक अछि।” फरजाना पुत्रक रुईक टोपि ठीक कएलीह। “ठीक। अगिला तिथि हम नोट करैत छी। जँ कागज अएल तँ ओकरा पहिने पढ़ब।”

अदालतक एहि अलग सुनबाईक समाचार फैजानक माय शमीमा लग पहुँचल तँ ओ पहिने जे समझलीह से गलत छल। पड़ोसक एक युवक कहलक, “अम्मी, फैजान छूटि रहल अछि।” शमीमा तुरन्त लड्डू बनबाक सोचलीह। फरजाना हुनका रोकलीह। “नहि अम्मी, अदालत अलग दिन सुनत। एखन छूटल नहि।” शमीमा थाकल स्वरमे कहलीह, “तिथि आ फैसला एकहि लागैत अछि।” फरजाना मायक हाथ अपन हाथमे लेलक। “हमरा सभक लेल तिथि जीवनक दिन अछि; अदालत लेल ओ प्रक्रियाक दिन। दुनूक अर्थ अलग अछि। मुदा जँ ई अन्तर नहि बुझब तँ प्रत्येक दिन टूटब।” शमीमा चूल्हि पर दूध राखलीह आ छोट अरहानकेँ खिलौना देबय बैसलीह।

ओहि सप्ताह नूर जतय विशेष अदालतक आदेशक समाचार लिखलीह। शीर्षक राखलनि—‘एक जमानत अस्वीकृत, दोसर आवेदनपर पृथक सुनबाई’। सम्पादक चाहैत छलाह जे ‘करोड़ो रुपैयाक घोटालेक मास्टरमाइण्ड जेलमे’ सन तीख शीर्षक देल जाय। नूर कहलीह,

‘अदालत एखन अपराध सिद्ध नहि कएलक। ‘मास्टरमाइण्ड’ शब्द आदेशक सीमा लाँघि जाएत।’ सम्पादक पुछलनि, “तखन पाठक की पढ़त?” नूर उत्तर देलीह, “ओ पढ़त जे विशेष कानूनक कठोर कसौटी पर अदालत किन तथ्यकेँ महत्त्व देलक, आ दोसर अभियुक्तक मामला किएक अलग रहल।” लम्बा शीर्षक कम बिकाऊ लगैत छल, मुदा ओहि लेखमे गिन्नीक शिक्षा, फरजानाक प्रतीक्षा आ यशोदाक पावती तीनूकेँ उचित स्थान भेटल।

रिपोर्ट पढ़िकय प्रमोदक पत्नी नम्रता नूरकेँ फोन कएलीह। “अहाँ हमर पतिक विरुद्ध लिखलहुँ,” ओ कहलीह। नूर उत्तर देलीह, “हम अदालतक आदेश लिखलहुँ। अहाँक पक्षक टिप्पणी जे भेजल छलहुँ, तकरो छापल अछि।” नम्रता चुप भेलीह। फेर पुछलीह, “हमर पतिक बीमारीक बात किएक नहि प्रमुख कएलहुँ?” नूर कहलीह, “हम चिकित्सा-व्यवस्थाक निर्देश जोड़ने छी। एतय बीमारी न्यायालयक अलग विचारक विषय रहल, जमानतक अन्तिम कारण नहि। जँ अहाँ चाही तँ आदेशक ओहि अंशक पूर्ण सन्दर्भ हम फेर स्पष्ट करब।” नम्रता फोन रखबाक पहिने कहलीह, “हमर बेटा ई लेख पढ़त। ओ बुझय जे पिता एखन अभियुक्त छथि, सिद्ध अपराधी नहि।” नूर कहलीह, “एहि अन्तरक ध्यान राखल गेल अछि।”

सितम्बरक अन्तिम सप्ताह सुनीता अपना सहायता-कक्षमे नवपथ संस्थाक एक पूर्व प्रशिक्षणार्थी सँ भेटलीह। युवकक नाम परमानन्द पासवान छल, ओ गिन्नीक सहपाठी नहि, दोसर बैचमे पढ़ने छल। ओकरा संस्थासँ किछु उपयोगी प्रशिक्षण भेटल छल आ ओ एक गोदाममे नौकरी करैत छल। “हमरा शिक्षा भेटल, तेँ सभ शिकायत झूठ अछि,” ओ पहिने कहलक। सुनीता उत्तर देलीह, “अहाँक अनुभव सच अछि। मुदा जे विद्यार्थी पूरा शुल्क देलापर कक्षा नहि पओलक वा विज्ञापनमे भ्रमित भेल, ओकर अनुभव सेहो सुनू। एक बैचक परिणाम दोसरक शिकायतक उत्तर नहि।” परमानन्द अपन पावतीक प्रति देखौलक। सुनीता ओकरा परामर्श देलक जे जँ साक्षी बनय तँ केवल अपन देखल काज कहय, अन्य विद्यार्थीक भाग्यक निर्णायक नहि बनय।

परमानन्द ओहि दिन सुनीताकेँ एक पुरान समूह-चित्र देखौलक। चित्रमे प्रशिक्षण केन्द्रक उद्घाटनक फलक छल। ओकर कोनपर एक प्रायोजकक नाम धुँधला देखाइत छल। सुनीता ध्यानसँ देखलक, मुदा फोनक छोट छविसँ अक्षर स्पष्ट नहि छल। “ई ककर कम्पनी?” ओ

पुछलक। परमानन्द कहलक, “शायद सहगल सन नाम। हम पक्का नहि जनैत छी।” सुनीता चित्रकेँ अपराधक कड़ि मानि नहि लेलक। ओ कहलनि, “मूल चित्र जँ अछि तँ ओकर तिथि आ आयोजकसँ जाँचू। नहि तँ एहन धुँधला पटलपर ककरो नाम लिखब गलत।” परमानन्द हँसलक—“अहाँ सभ कागज देखिकय सेहो एकदम विश्वास नहि करैत छी।” सुनीता कहलीह, “कागज हमरेँ विश्वास देलक, आ कागजेँ कतेक बेर धोखा सँ बचौल।”

साँझक समय सरबजीत कौरकेँ एक नियमित बैंक-प्रशिक्षण सत्रमे ‘ग्राहक जाँच आ अधिकार’ विषयपर बोलबाक छल। ओ उदाहरणक रूपमे कोनो वास्तविक ग्राहकक नाम नहि लेलनि। केवल एक काल्पनिक सारणी देखौलीह, जाहिमे एक रकम पहिल खातासँ दोसर खातामे, ताहिसँ तेसर खातामे गेल छल। “जँ अहाँ तीनू प्रविष्टि जोड़ि देब तँ कतेक कारोबार?” ओ पुछलीह। प्रशिक्षु कहलनि, “तीन गुणा।” सरबजीत कहलीह, “मुदा वास्तविक मूल राशि एकहि बेर आयल। प्रवाहक संख्या आ स्रोतक राशि अलग गणना अछि।” फेर ओ कहलनि जे संदिग्ध लेनदेनक सूचना देब बैंकक कर्तव्य हो सकैत अछि, पर ग्राहककेँ सार्वजनिक रूपेँ दोषी कहल बैंकक काज नहि। एक युवा प्रशिक्षु पुछलक, “तखन जाँचक मूल्य की?” ओ उत्तर देलीह, “सही जाँच दुर्बल संकेतकेँ प्रमाण बनबासँ रोकैत अछि, आ मजबूत संकेतकेँ अनदेखा करबासँ सेहो।”

दिल्लीक विशेष न्यायालयक आदेश पछाति कबीर सरीन अपीलक सम्भावना देखैत छलाह। निहाल निराश छल, कहैत छल जे मीडिया परिवारक नाम खराब कऽ देने अछि। कबीर ओकरा पुछलनि, “अहाँक पिता जे बाहरी एजेंसीक प्रतिवेदन देबाक कहने छलाह, से भेटल?” निहाल उत्तर देलक जे सेवा-प्रदाता कहैत अछि पुरान सर्वर बदलल गेल। कबीर कहला, “सर्वर बदललासँ सभ सामग्री नष्ट भेल, ई तत्काल मानब नहि। करक पावती, ई-मेलक प्राप्ति, अनुबन्धक समापन, अन्य प्रत्यक्षदर्शी—जतेक वैध स्रोत अछि खोजू। मुदा जँ नहि भेटय तँ नब रिपोर्ट नहि बनबाउ।” निहाल आँखि उठा देखलक। ओ बुझलक जे पिता लेल प्रेमक अर्थ प्रमाण बनाबयक अधिकार नहि।

रेवती दरभंगामे शिवनारायण लग लौटलीह। पिता औषधि लेलाक पछाति बरामदामे बैसल छलाह। ओ पूछलनि, “दू व्यक्तिक परिणाम?” रेवती कहलीह, “प्रमोद खन्नाक जमानत

अस्वीकृत। फैजानक सुनबाई अलग तिथि पर; अन्तिम आदेश शेष।” शिवनारायण चुप रहला। फेर पुछलनि, “अहाँकेँ कोन दृश्य सभसँ कठिन लागल?” रेवती उत्तर देलीह, “पीड़ित यशोदा एक अभियुक्तक पत्नीकेँ चाय देलीह। अदालतक भीतर दलील विरोधी छल, बाहर दुःख विरोधी नहि रहल।” पिता कहला, “एकर अर्थ ई नहि जे न्यायालय माफ करि देत। मुदा एहन दृश्य मनुष्यकेँ कानूनक जकड़मे बेनाम नहि होमय दैत।”

रेवती पिता लगसँ उठैत अपन नोटबुकक ओ पन्ना खोललीह जतय लिखल छल—“अहाँक पक्षक विरुद्ध सबसँ कठिन तथ्य की अछि?” फैजानक विरुद्ध कठिन तथ्य एक अस्पष्ट ‘ठीक अछि’ सन्देश छल, जे कहियोक महत्त्वपूर्ण भुगतानक सूचित सहमति सिद्ध करि सकैत छल, वा केवल बिलक प्राप्तिक उत्तर भऽ सकैत छल। प्रमोदक विरुद्ध कठिन तथ्य तिथि आ निर्देश-पत्रक मेल छल; हुनकरा ओकर न्यायोचित व्याख्या प्रस्तुत करबाक अवसर छल, मुदा आदेशमे तत्काल राहत नहि भेटल। रेवती दुनूकेँ एकटा पन्नामे लिखिकय रेखासँ अलग कएलनि। ओ जनैत छलीह जे ककरो दोष निश्चित करबाक हड़बड़ीसँ पीड़ितक सत्य सेहो अस्पष्ट भऽ जाएत।

ओहि राति गिन्नी अपन मायकेँ पत्र लिखलनि। ‘अहाँ पावती सम्हारि राखलहुँ, एहि लेल हमरा फीसक दावी करबाक आधार अछि,’ ओ लिखलनि। “मुदा हमरा नामसँ जे फोटो वा कथन दोसर लोक प्रचार करय चाहैत अछि, ओकर सत्यता जाँचू। हम अपन प्रशिक्षणक अधूरापन कहब, मुदा जे पाठ पढ़ने छी तकरा मिटाएब नहि। हमर नब काज छोट अछि, मुदा हम अपन श्रमसँ चलैत छी। अगिला बेर अदालत जइह तँ दवा आ पानी लेने जइह।” यशोदा पत्रकेँ लोहेक डिब्बामे पावतीक ऊपर रखलीह। डिब्बामे पहिने केवल व्ययक लेखा छल; आब बेटीक वर्तमान जीवनक एक पन्ना सेहो छल।

चण्डीगढ़क कोठरीमे शमीमा नातिकेँ सुतबैत एक पुरान लोकगीत गाबि रहल छलीह। फरजाना अगिला सुनबाईक तिथि कापीमे लिखि, अस्पतालक बिल आ वेतनक विवरण अलग लिफाफामे रखलीह। ओहि कापीक एक कोनमे फैजानक अनुमानित वार्षिक आय छल; दोसर कोनमे घरक वास्तविक खर्च। बीचमे एक रिक्त पाँति छल—जमानतपर आदेश। ओ कोनो तिथि अपने हाथसँ भरि नहि देलक। फैजानक दोष वा निर्दोषताक विषयमे ओकर विश्वास

प्रबल छल, मुदा अदालतक निर्णयक स्थान कोनो विश्वास नहि लऽ सकैत छल। ओ दीपक बुझाबय पहिने बच्चाक कपाल चुमलीह, तखन बाहरक अन्हारमे क्षण भरि ठाढ़ रहलीह।

लुधियानाक कारखानासँ सुनीता देर साँझ घर पहुँचलीह तँ रामलखन एक छोट रजिस्टर खोलि बैसल छलाह। कागजमे हरदेव चौहानक सत्रह दिनक पुरान प्रविष्टिक उल्लेख छल। “ई पन्ना फेर किएक निकाललहुँ?” सुनीता पुछलक। पिता कहला, “आब हमर बकाया मजदूरीक बाकी दावा अलग चलैत अछि। मुदा ई नाम जे कतेक वर्षसँ अबैत अछि, ओकर अर्थ बुझबाक मन होइत अछि।” सुनीता हुनकरा चण्डीगढ़क अफवाह आ दिल्लीक आर्थिक सुनबाईक बीच समान नाम देखायबाक सम्भावनाक बात कहलीह, पर जोड़लीह, “हमरा लग एखन कोनो प्रमाण नहि जे एकहि व्यक्ति अछि।” रामलखन कापी बन्द कएने कहला, “तखन नामक पन्ना सुरक्षित राखू, मानिसक जीवनमे आरोपक पन्ना नहि जोड़ू।”

वर्षक अन्तिम भागमे निरंजनक घरमे अवनि चन्द्रयानक आगामी अभियान सम्बन्धी नव अध्ययन जुटा रहल छलीह। ओकरा मंगलयानक पुरान सफलता आ चन्द्रयान-दोसरक अवतरण-प्रयासक असफलता दुनू याद छल। मैत्रेयी पुछलीह, “इतिहासक जे पन्ना अधूरा रहि गेल, ओकरा पुनः पढ़ैत रहब आवश्यक अछि?” अवनि उत्तर देलीह, “अधूरा रहब आ गलत होयब एक नहि। वैज्ञानिक परीक्षणमे जे नब तथ्य भेटत, ओकर अनुसार अगिला प्रयत्न बदलब।” दूर दरभंगामे रेवती अपन पिताक पुरान कलम सँ जमानत सुनबाईक कापी पर अन्तिम टिप्पणी लिखि रहल छलीह—“दोष-सिद्धिक मार्ग, जमानतक कसौटी, पीड़ितक प्रतिकर, आ दोसर अभियुक्तक व्यक्तिगत स्थिति—चारि अलग उत्तर।”

सत्ताइस वर्षक ओहि लम्बा आख्यानमे सन् २०२२ कोनो अन्तिम पटाक्षेप नहि छल। यशोदाक पावती एखन प्रतिकरक प्रतीक्षामे, नम्रताक पति न्यायिक हिरासतमे, फरजानाक पति अगिला सुनबाईक बाट तकैत, सरबजीतक बैंक सावधानीसँ कागज जाँचैत, आ सुनीताक कापीमे एक अप्रमाणित नाम बचल छल। कानूनक कठोरता ककरो पीड़ाकेँ स्वतः समाप्त नहि कएलक; व्यक्तिगत गरिमाक आग्रह ककरो आर्थिक प्रश्नकेँ स्वतः निरस्त नहि कएलक। दरभंगाक रातिमे शिवनारायण रेवतीसँ केवल एतबा कहलनि, “जतय अदालतकेँ दू व्यक्तिक अलग स्थिति देखबाक समय भेटैत अछि, ओतय न्याय एखन सम्भव अछि।” रेवती उत्तर

देलीह, “आ जे प्रश्न एखन शेष अछि, ओकरा फैसला कहि नहि लिखब।” बाहर गाछक पातपर ओस छल। नव वर्षक आकाश अन्हार छल, मुदा दूर एक छोट तारा नियमित चमकि रहल छल।

अध्याय २८ — चन्द्रयानक उजास

बेंगलुरु, जोधपुर आ दरभंगा, सन् २०२३

जुलाईक चौदहम दिन बेंगलुरुक वर्षा जखन छज्जाक धारसँ छोट-छोट धागा बनि खसि रहल छल, अवनि अपन माएक पुरान लाल कापी निकालि खिड़की लग बैसलि। कापीक पहिल पन्नापर बच्चाक गोल अक्षरमे लिखल छल—“चन्द्रमा लग जायब, मुदा पहिने पूछब जे ओतय पहुँचिकय की देखब।” ओहि अक्षरक नीचाँ सन् २००८, तकर बाद २०१९ क दू तारीख, आ सभसँ अन्तमे २०२२ मे ओकर अपन जोड़ल एक पाँति छल—“पिछला प्रयासक दोष लिखब, तखने अगिला प्रयासक अर्थ भेटत।” आब नब अभियानक प्रक्षेपण टेलिविजनपर शुरू होमयवला छल। ओ कापी खोलि तिथि लिखलक, मुदा सफलता शब्दक आगाँ फेर रिक्त स्थान छोड़ि देलक। कमरेमे ओकर पिता निरंजन झा, आ माय मैत्रेयी, दुनू बिना बात कएने ओकर हाथ देखैत छलाह।

निरंजन बहुत वर्षसँ अन्तरिक्ष सञ्चारसँ सम्बन्धित एक अभियान्त्रिक समूहमे कार्यरत छलाह। एहि कारण हुनकर घरमे उड़ानक समाचारक साथे परीक्षणक असफलताक कथा सेहो अबैत छल; मुदा ओ कखनो अपन साधारण तकनीकी सहयोगकेँ सम्पूर्ण अभियानक नेतृत्व कहि नहि प्रस्तुत कएने छलाह। हुनका मालूम छल जे एक यानक सफलतामे हजारो हाथक भाग होइत अछि, जकर कतेको नाम कोनो अखबारमे नहि छपैत। मैत्रेयी विद्यालयमे विज्ञान पढ़ाबैत छलीह आ अवनिक संग मिलिकय मैथिलीमे बाल-विज्ञानक छोट पुस्तिका बनबैत रहलीह। अवनि आब भौतिक-विज्ञानक उच्च अध्ययन करैत छलि; प्रयोगशालामे जतेक प्रश्न ओकरा आकर्षित करैत छल, ओतेकेँ प्रश्न पढ़ाइ छोड़ि देनिहार ग्रामीण छात्रासभक कथा उठबैत छल। घरक तीनू गोटे अलग बाटसँ एकहि परदेपर आँखि टिकौने छलाह।

दोपहरमे श्रीहरिकोटासँ एलवीएम–३ द्वारा चन्द्रयान–३ क प्रक्षेपण भेल। परदेपर आगिक उजास पृथ्वीक धूलि छोड़ि ऊपर उठल तँ अवनिक छोट भाय सन मानल पड़ोसक बालक

अमन छतसँ दौड़ि एल। “दीदी, जीत गेल?” ओ पुछलक। अवनि कहलक, “आजुक उड़ान सफल भेल। चन्द्रमा धरि पहुँचनाइ आ सुरक्षित उतरनाइ एखन शेष अछि।” अमन माथ डोलौलक; ओकरा समाचारक चटपट विजयक स्वर बेसी बुझाइत छल। निरंजन ओकर हाथपर अपन पुरान घड़ी राखि कहलनि, “ई घड़ी चलैत अछि, तखन प्रत्येक क्षण बीतैत अछि। यानक प्रत्येक क्षणक गणना अछि। हम सभ आज जे देखलहुँ, तकरा छोट नहि करब, मुदा काल्हिक काज आज पूरा भेल कहि देब सेहो ठीक नहि।” मैत्रेयी चाय लऽ एलीह। वर्षाक ध्वनि फेर सुनाइत छल, जतबे दूर आकाशमे यानक समाचार फैलि रहल छल।

ओहि दिन जोधपुरक मरुधर विश्वविद्यालयमे छात्रसभ प्रक्षेपण देखबाक लेल पुस्तकालयक पैघ कक्षमे जुटल छल। पुरान छात्रावास-विवादक बाद बनल विज्ञान-प्रचार समितिक अध्यक्ष कुसुम छलि; ओकर सहेली नसीमा शहरक विद्यालयसभसँ बालिका आनबाक व्यवस्था कएने छलीह। कक्षाक अन्तिम पाँतिमे ताराबाई भील नामक एक छात्रा बैसल छलीह। ओकर गाममे विद्यालयक बाद विज्ञानक प्रयोगशाला नहि छल; घरक लोक खेतक वर्षा आ माटिक नमीक आधारपर धानक अनुमान करैत छलाह। परदेपर उड़ानक उजास देखि ताराबाईक मुँह खुलल रहि गेल, मुदा जखन शिक्षक अंग्रेजीमे ‘प्रणोदन’ आ ‘कक्षीय समायोजन’ बुझाबय लगलाह तँ ओकर आँखि झुकि गेल। कुसुम ओकरा लग बैसि फुसफुसौलीह, “पुछू, जे नहि बुझलहुँ।” ताराबाई उत्तर देलक, “सब बुझि गेल छी कहब तँ झूठ होयत; सभक सामने नहि बुझलहुँ कहब तँ हँसी होयत।”

ओहि कक्षमे डॉ. चन्दना रविदास सेहो छलीह। विश्वविद्यालयक अनुप्रयुक्त विज्ञान केन्द्रमे ओ ताप मापबाक कम लागतक उपकरणपर अनुसन्धान करैत छलीह। हुनकर पिता पहिने पत्थर तराशबाक काज करैत छलाह, माय नगरपालिकाक विद्यालयमे सहायक छलीह; घरमे ‘वैज्ञानिक’ शब्द लेल अलग सँ कोनो कमरा नहि छल। चन्दना पहिने ताराबाईसँ राजस्थानी-मिश्रित अपन बोलीमे पुछलनि जे खेतमे कतेक गहराइपर माटि भीजल बुझाइत अछि। ताराबाई उत्साहित भऽ बतबय लागल—“ऊपर सूखल रहैत अछि, तलमे जखन ओसरा रंगक माटि आबैत अछि तँ जड़ धरि पानि पहुँचल बुझू।” चन्दना हँसलीह—“अहाँ पहिने सँ निरीक्षण करैत

छी। विज्ञानक पहिल काज ओही अछि। अब एकरा नापबाक तरीका जोड़ब।” कक्षामे कतहु ताली नहि बाजल, मुदा ताराबाईक पिठि सीधा भऽ गेल।

अगिला सप्ताह मरुधरक प्रशासनिक भवनक भीतर एक दोसर कागज चुपचाप पहुँचल। राज्यक एक विज्ञान-शिक्षा अनुदान कार्यक्रमसँ सहयोग पओनिहार ‘मरुधर प्रयोग एवं अध्ययन केन्द्र’ कैं कारण बताउ पत्र देल गेल छल। केन्द्र निजी शैक्षणिक न्यासक अधीन विश्वविद्यालयसँ सम्बद्ध छल, भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठनक कोनो अभियानक भाग नहि। तीन बरख पहिने केन्द्रकैं शुष्क प्रदेशक विद्यालय लेल कम-मूल्य ताप आ माटि-नमी मापक बनयबाक परियोजना देल गेल छल। प्रारम्भिक यन्त्र व्यवहारे योग्य नहि भेल; निरीक्षण-दल एकरा असफल प्रयोग लिखने छल। मुदा पत्रमे दोसर प्रश्न छल—एकहि उपकरणक खरीद सम्बन्धी दू भुगतान-प्रविष्टि, आ एक आपूर्तिकर्ताक पावतिमे असंगत तिथि। राज्यक अधिकारी नव अनुदान रोकबाक सिफारिश कएलक आ केन्द्रक परियोजना प्रमुख चन्दनाक नाम ‘अनियमित व्यय लेल उत्तरदायी’ लिखि देलक।

चन्दना पत्र पढ़ि दोसर बेर अपन चश्मा साफ कएलीह। अपन प्रयोगक असफलता हुनका असह्य नहि लगैत छल; ओ तँ पहिनहि सार्वजनिक गोष्ठीमे स्वीकार कएने छलीह जे मरुभूमिक दिन-रातिक अतिशय तापान्तरमे सेंसर स्थिर मापन नहि दऽ सकल। मुदा वित्तीय दोषक साथे हुनकर नाम बिना प्रश्न पुछने जोड़ि देल गेल छल। प्रयोगशालाक लेखा-अधिकारी विनोद त्रिवेदी खरीद आ भुगतानक फाइल रखैत छलाह, न्यासक कोषाध्यक्ष माधवकुमार पोद्दार अलग हस्ताक्षरकर्ता छलाह। चन्दनाक हस्ताक्षर परीक्षण-रिपोर्टपर छल, भुगतान अनुमोदनपर नहि। ओ फाइलक प्रतिलिपि माँगलीह तँ कार्यालयक बाबू कहलक, “मूल बिल जाँच-दल लऽ गेल; अहाँकैं जे लिखल अछि ओहीपर उत्तर देबय पड़त।” चन्दना उत्तर देलीह, “जकर कागज हमरा देखबाक अधिकार नहि, ओकर अर्थ हम कोना स्वीकार करब?”

विनोद त्रिवेदीक अपन कथा छल। हुनकर घरमे वृद्ध माय छलीह आ बेटीक विवाह लेल कर्जक किश्त चलैत छल। ओ अनुदानक दोसर भुगतान रुकला सँ अपन नौकरीक भयमे पड़ल छलाह। चन्दनाक प्रश्नपर ओ कहला, “दू बिल देखाइत अछि, मुदा एकटा अग्रिम, दोसर अन्तिम समायोजन भऽ सकैत अछि।” चन्दना पुछलीह, “तखन समायोजनक कागज

कतय?” विनोद कहला, “पुरान कम्प्युटर बदलल; खाताक नकल होयत।” मुदा ओ ‘होयत’ कहैत हाथ मेजक नीचाँ रखि लेलनि। चन्दना ओहि भय कैं देखि सकैत छलीह, तथापि बिना प्रमाण आश्वासन नहि दऽ सकैत छलीह। ओ फाइलक समक्ष लिखलीह—“तकनीकी परिणाम, खरीदक मात्रा, भुगतानक आदेश आ वस्तुक प्राप्ति चारि अलग अभिलेख।” हुनका लागल जे प्रयोगशालाक सबसँ कठिन परीक्षा आब काँचक नलीसँ बाहर शुरू भऽ रहल अछि।

अवनि विश्वविद्यालयक आमन्त्रणपर अगस्तक आरम्भमे जोधपुर पहुँचलि। ओकर प्रस्तावित कार्यशाला छल—‘चन्द्रमाक मापनसँ गामक खेत धरि: यन्त्र, भूल आ जाँच’। चन्दना ओकरा स्वागत करैत पहिने वैज्ञानिक उपकरणक भण्डार देखौलीह, जतय पाँचटा अधूरा तापमापक धूलि खाइत छल। एकमे तार टुटल, दोसरमे मापक-संख्या अटकैत, तेसरक प्लास्टिकक खोल तापमे टेढ़ भऽ गेल छल। अवनि यन्त्र उठाकय पुछलक, “अहाँ सभ कतेक बेर परीक्षण कएलहुँ?” चन्दना कहलीह, “पचासी अलग दौड़; एक नकल करब तँ गिनती एक सय बीस जेकाँ देखायत, मुदा स्वतंत्र परीक्षण पचासी अछि।” अवनि हँसलीह—“हिसाबक ई सावधानी सरकारी फाइल धरि पहुँचल?” चन्दनाक हँसी नहि निकलल। ओ खिड़की बाहर देखैत कहलीह, “एहि भवनमे आँकड़ाक दू भाषा चलैत अछि—एक प्रयोगशालाक, एक लेखा-कक्षक। अखन दुनू पर झगड़ा अछि।”

तखनहि चन्दना पत्र देखौलीह। अवनि सरसरी पढ़ि कहलक, “विफल सेंसरक कारण अनुदानक उपयोग अपने-आप बेईमान नहि भऽ सकैत; मुदा खरीदक दू प्रविष्टि जँ अकारण अछि तँ प्रश्न उठत।” चन्दना ओकरा ध्यानसँ देखलीह। “अहाँ अपन पिता सन कहैत छी—जे ठीक भेल से ठीक, जे नहि भेल से नहि।” अवनि उत्तर देलक, “हमर पिता तखन कहैत छलाह जखन चन्द्रयान-दोसरक अवतरण प्रयास रुकि गेल छल। मुदा ओहि अभियानक कक्षीय भागक उपलब्धि छल। अहाँक यन्त्रमे वैहन सफलता नहि भेटल; तइयो हर असफलता खर्चक अपराध नहि। आ हर खर्चक गलती वैज्ञानिक प्रयत्नक विफलता नहि।” चन्दना पुछलीह, “एहि बातक न्यायालयमे कोनो भाषा अछि?” अवनि अपन फोन उठौलक—“रेवती दीदीक ठाम ई भाषा भेटि सकैत अछि। मुदा पहिने कागजक पूरा अर्थ खोजू।”

दरभंगामे रेवती झा एखनहुँ दिल्लीक विशेष अदालतमे चलैत एक पृथक जमानत प्रकरणक तारीख सम्हारि रहल छलीह। फैजान अलीक आवेदनपर अतिरिक्त अभिलेख मँगाओल गेल छल; प्रमोद खन्नाक जमानत अस्वीकृत रहबाक तथ्य अलग फाइलमे लिखल छल। रेवतीकेँ अवनिक फोन आएल तँ ओ पहिने पुछलीह, “अहाँ चन्द्रयानक विषयमे आब फोन कएलहुँ कि ककरो मुकदमाक?” अवनि उत्तर देलक, “दुनू अलग। विज्ञानक उत्सव अछि; संगहि एक वैज्ञानिककेँ विनाऽ पूरा अभिलेख देखौने वित्तीय दोषक चिट्ठी भेटल अछि।” रेवती सुनलीह, बीचमे नहि टोकलीह। फेर कहलीह, “जँ राज्यक अनुदानक नियम छथि तँ हुनका पढ़ि लेल जाए। जँ व्ययक अनुबन्ध अछि तँ ओहो देखल जाए। अदालतमे अहाँक प्रयोग सफल नहि भेल—एतेक कहला सँ कोनो पक्ष जीतत नहि।”

शिवनारायण झा बरामदामे बैसल रेवतीक फोन समाप्त होयबाक बाट देखैत छलाह। हुनका स्वास्थ्य आब पुरान जेकाँ नहि छल, मुदा कोनो जटिल तथ्य सुनिते आँखिक चकमक लौटा अबैत छल। रेवती हुनका पत्रक सार कहलीह। पिता पुछलनि, “अनुदान दऽनिहार संस्था के? नियुक्ति करनिहार के? आ चन्दनाक विरोध ककर आदेशसँ अछि?” रेवतीक उत्तरमे तीन अलग नाम छल। शिवनारायण कहला, “तखन एके थारीमे तीनूकेँ नहि परोसू। जँ ओकर अधिकारक प्रश्न अछि तँ ओकर उचित उपचार सोचू। मुदा पूरा केन्द्रक हिसाब चन्दनाक व्यक्तिगत मान-हानिसँ एक नहि।” हुनकर काशि उठल तँ रेवती पानी दऽ कऽ बैसौलीह। पिता मुस्कुरौलनि—“एखन हम न्यायालय नहि जाम, मुदा प्रश्नक क्रम नहि छोड़ब।”

अनुदानक नियमक प्रतिलिपि भेटिते विवादक रूप स्पष्ट भेल। राज्यक शिक्षा-विज्ञान विभाग केन्द्रकेँ विद्यालयी प्रयोगक लेल रकम देने छल; न्यास लेखा प्रस्तुत करबाक जिम्मेदार छल; परियोजना प्रमुख वैज्ञानिक प्रतिवेदन दैत छलीह। प्रारम्भिक निरीक्षण किछु भौतिक वस्तुक उपस्थिति स्वीकार कएने छल, मुदा खरीदक एक पावतिमे क्रमांक दोहरायल। कारण बताउ पत्र केन्द्रकेँ भेजल गेल छल, मुदा एक संलग्न सूचीमे चन्दनाक नाम व्यक्तिगत दोषी जेकाँ लिखल छल आ हुनका नव परियोजनामे मार्गदर्शक हेबाक अनुमति अस्थायी रूपसँ रोकल गेल छल। नियममे एहन व्यक्तिगत प्रतिबन्ध लेल अलग सुनबाईक व्यवस्था छल। चन्दनाकेँ ओहि अवसरक सूचना नहि भेटल। रेवती कहलीह, “एहि त्रुटिपर आग्रह कऽ सकैत

छी। मुदा अदालतसँ ई नहि माँगब जे खरीदक सभ कागज स्वच्छ अछि, जखन कि ओ सभ एखन जाँचल नहि गेल।”

मरुधरक शिक्षकावासमे साँझ कुसुम आ नसीमा चन्दनाक संग बैसलीह। ताराबाई आ ओकर सहपाठी रईस कोहिनूरो आएल छलाह। रईसक पिता छोट मोटर-मिस्त्री छलाह; ओ तापमापकक सर्किट सुधारि सकैत छल, मुदा अंग्रेजीमे लिखल प्रयोगशालाक प्रशिक्षण-पत्र पढ़ब कठिन लगैत छल। ओ कहलक, “हमरा सभकेँ शिक्षा दैत लोक कहैत अछि जे विज्ञान सभक अछि, फेर आँगन धरि पहुँचैत किताबक भाषा बदैल जाइत अछि।” चन्दना ओकरा पुरान यन्त्र देखबैत कहलीह, “पुर्जा खराब होएब विज्ञानक अन्त नहि, ओकर चिन्ह बचा कऽ राखब सीखू।” ताराबाई जोड़लक, “आ जँ जँचैत जँचैत पैसा गमि जाए?” चन्दना चुप भेलीह। रेवती दूरभाषपर कहलीह, “तखन ओकर हिसाब देबाक पड़त। एहि लेल छात्राक प्रश्न प्रयोगशालाक प्रश्नसँ छोट नहि।”

कार्यशालाक पहिल दिन अवनि बोर्डपर दू शब्द लिखलक—‘मापन’ आ ‘प्रमाण’। ओ ताराबाईकेँ थर्मामीटर पकड़ौलक, रईसकेँ एक साधारण पानीक पात्र आ कुसुमकेँ घड़ी। एके पानिमे तीन बेर ताप नापल गेल; सूचक-रेखा प्रत्येक बेर अल्प अन्तर दिखबैत छल। विद्यार्थीसभमे खुसुरफुसुर शुरू भेल। अवनि कहलक, “अहाँ सभमे के गलत?” रईस पुछलक, “जँ हम तीनू अंकक औसत लऽ ली तँ गलत नहि?” अवनि उत्तर देलक, “औसत एक उपयोगी तरीका अछि; मुदा उपकरण कतेक भरोसाक अछि, सेहो जानब। गलत नापिकय औसत निकालब सही नाप नहि।” चन्दना अपन असफल तापमापक मेजपर राखि कहलीह, “ई तखन धरि उपयोगी नहि जखन धरि हम एकर दोष बुझि सुधारि नहि लेब।” ताराबाई ओकरा छूएबय हाथ बढ़ौलक; पहिले ओहि यन्त्रकेँ असफलता कहल जा रहल छल, आब ओकरा भीतर प्रश्नक बारी खुलि गेल।

दोपहरक अवकाशमे ताराबाई अवनिक संग विश्वविद्यालयक पिछला आँगनमे गेलीह। ओकर गाममे तीन गोट छोरी आठम कक्षा पछाति पढ़ाइ छोड़ि देने छल, कारण विद्यालय दूर आ गाड़ी भाड़ा बेसी छल। “अहाँ सभ चन्द्रमा धरि पहुँचलहुँ,” ओ कहलक, “हमर बहीखाताक पन्ना एखनहुँ आधे बुझि पबैत छी। ई दुनू प्रगति एके देशमे केना अछि?” अवनि तुरन्त राष्ट्रक

गौरवक पाठ नहि पढ़ौलक। ओ पुछलक, “तोहर गाममे कोन साधन अछि? कतेक छोरी आगाँ पढ़य चाहैत अछि?” ताराबाई गिनौलक—छह गोटक मन अछि; दू गोटक घर अनुमति देत, चारि गोटकेँ बुझाबय पड़त। अवनि कहलक, “कक्षाक सभ प्रश्न हम एतय हल नहि कऽ सकैत छी। मुदा एहि विषयमे विद्यालय आ पंचायतसँ एकहि मेजपर बात भऽ सकैत अछि।” ताराबाई बजलीह, “तखन हमर गाममे विज्ञानक पहिल प्रयोग ओहि बैठकमे होयत।”

एहि बीच राज्यक लेखा-परीक्षण अधिकारी प्राची वर्मा केन्द्र पहुँचलि। ओ नब प्रतिवेदन तैयार करबाक लेल नहि, पहिनुक निरीक्षणक मूल कागजक नकल सुरक्षित करबाक लेल एलीह। केन्द्रक प्रबन्धक कहलनि जे प्रयोगशालाक असफलता प्राची पहिने सँ प्रचारित कएने छथि। प्राची उत्तर देलीह, “हम जे अभिलेख देखलहुँ से लिखल अछि। उपकरणक वैज्ञानिक मूल्यांकन हम नहि कएने छी। हमर प्रश्न भुगतान आ भण्डारक प्राप्तिपर अछि।” ओ एक-एक रसीदक क्रमांक मिलौलीह। एक बिलपर ‘आर. के. उपकरण आपूर्ति’ छल; दोसरपर पूरा नाम ‘राघवकिशोर विज्ञान सेवा’। कम्पनीक पंजीकृत पता मेल खाइत छल, मुदा भुगतानक खाताक अन्तिम अङ्क अलग छल। विनोद त्रिवेदी कहला, “नाम बदलल छैक।” प्राची पूछलीह, “बैंक-खाताक परिवर्तनक लिखित सूचना कतय?” विनोद फेर चुप भऽ गेलाह।

प्राचीकेँ एक पुरान वितरण-पुस्तिकामे चन्दनाक हस्ताक्षर भेटल। ओ दिखौलीह, “एतय लिखल अछि—उपकरण प्राप्त।” चन्दना पन्ना देखिकय कहलीह, “ई चारि यन्त्रक आवरण खोलल दिनक हस्ताक्षर अछि; गुणवत्ता प्रमाणपत्र नहि। हम ओकरा सञ्चालन योग्य कहि नहि लिखलहुँ।” प्राची कहलीह, “पत्रक भाषा जँ एतेक अस्पष्ट अछि तँ ओकरा ठीक करब आवश्यक अछि। मुदा भौतिक वस्तु भेटलासँ भुगतानक रकम उचित प्रमाणित नहि होइत।” दुनू एक-दोसराकेँ देखलीह। निरीक्षणक दिन पहिने चन्दनाकेँ सरकारी अधिकारी शत्रु जेकाँ लगैत छलीह; आब ओ बुझि रहल छलीह जे प्रश्नक सीमा राखब दूनूक काम अछि। एहि सम्मानसँ अभिलेखक अन्तर समाप्त नहि भेल, मुदा बातचीतक बाट खुलल।

चन्दनाक पिता देवकीनन्दन रविदास जोधपुरक बाहरी मुहल्लासँ बेटी लग आएलाह। हाथक अँगुरिमे पत्थरक धूलि एखनहुँ अटकल रहैत छल; ठेकाक काज कम भेलासँ ओ छोट दुकानमे औजार बेचैत छलाह। बेटी हुनका पत्र देखौलीह। ओ पढ़ि किछु देर बैसल रहला।

“तोहर नाम लिखल अछि तँ लोक मानि लेत जे तूँ पैसा खा गेलीह,” ओ कहला। चन्दना उत्तर देलीह, “मुदा हम एखन सभ प्रश्नक उत्तर नहि जनैत छी।” पिता कहला, “जे नहि जनैत छैं से कहि दे। जे जानैत छैं से साफ कह। तोहर माए कहैत छलीह जे गढ़ल बातसँ प्रतिष्ठा नहि बचैत।” चन्दना पिताक काँपैत हाथ छूलीह। हुनकरा लग विज्ञानक प्रयोगशालामे प्रयुक्त सत्यापन शब्द एखन हुनकर मायक घरक सिखाओल सामान्य बातसँ अलग नहि रहल।

अगस्तक पहिल सप्ताह अवनि बेंगलुरु लौटि गेलि। निरंजन अपन कार्यालयसँ देरीसँ आबि रहल छलाह; मैत्रेयी विद्यालयक विज्ञान-मेलाक लागि गीतक रूपमे गुरुत्वाकर्षण बुझाबय लगलीह तँ अवनि हँसि पड़लि। “माय, ई गीत सुन्दर अछि, मुदा जँ चन्द्रमापर गुरुत्व पृथ्वीसँ कम अछि तँ गीतमे चन्द्रमा ऊपर उछलयवला बालककेँ की कहब?” मैत्रेयी कागज उठौलीह—“बदलि देब। लोकधुनक सहारे सत्य गढ़ब नहि, सत्य बुझबाक बाट बनायब।” एहि छोट सुधारमे अवनि एक प्रकारक साहस देखलक। ओकरा स्मरण आयल जे जोधपुरक केन्द्र अपन असफल प्रयोगक परिणाम सार्वजनिक कएने छल, मुदा कार्यालयक अनियमित लेखाक प्रश्नकेँ ‘विज्ञानपर आक्रमण’ कहिकय टारबाक प्रयत्न करैत छल। ओ अपन माएक कागजपर अलग पाँतिमे लिखलक—“गलत सूत्र सुधारब लाज नहि, गलत बिल लुकायब लाज अछि।”

एक राति निरंजन पुरान दूरदर्शन-अभिलेख देखबैत अवनिकेँ २०१९ क भोरक बात स्मरण करौलनि। ओहि दिन स्क्रीनपर सम्पर्क टूटल छल, जखन कि देशक आशा उतरबाक बाट तकैत छल। “तोरा स्मरण अछि, तोँ अपन दीवालपत्रमे खाली स्थान छोड़ने रही?” ओ पुछलनि। अवनि कापी खोलिकय देखौलक। कागजक रङ्ग पीयर भऽ चुकल छल, मुदा लिखावट स्पष्ट छल। निरंजन कहला, “अगिला अभियानक तैयारीमे बहुत लोक पिछला अनुभवसँ सीखल अछि। हम सभ टीवीपर जे देखब, ओकर पाछाँ पुनः-परीक्षणक साधना अछि। मुदा एक बात सदैव याद रखिह—अन्य विज्ञान-कर्मीक वास्तविक योगदान अपन नामसँ जोड़िकय कथा कहब अनुचित अछि।” अवनि कहलक, “हमर कार्यशालामे सेहो कहने छी जे हम प्रशिक्षु छी, अभियानक सदस्या नहि।” पिता सन्तोषसँ मुस्कुरौलनि।

अगस्तक मध्य धरि मरुधरमे तनाव बढ़ल। न्यासक अध्यक्ष अनूप मेहता पत्रकारसभकेँ कहि देलनि जे वैज्ञानिक अनुसन्धानपर ‘राजनीतिक षड्यन्त्र’ चलि रहल अछि। ओहि दिन नूर

जहाँक मोबाइलपर एक चित्र पहुँचल, जाहिमे चन्दना अपन प्रयोगशालाक यन्त्रक बगलमे ठाढ़ छलीह आ नीचाँ लिखल छल—“बिना परिणाम लाखो खर्च।” नूर चित्र प्रकाशित नहि कएलीह। ओ पहिने चन्दनासँ पुछलीह जे परियोजनाक घोषित लक्ष्य आ वास्तविक व्ययक सूचना सार्वजनिक कएल जा सकैत अछि कि नहि। चन्दना कहलीह, “वैज्ञानिक रिपोर्ट प्रकाशित अछि; बिलक मूल प्रति हमरा एखन उपलब्ध नहि।” नूर अगिला प्रश्न अध्यक्षसँ पुछलीह—“आँकड़ाक आधार बिना षड्यन्त्रक दावा किएक?” अध्यक्ष उत्तर देलनि, “किएक तँ ओकरा देखबाक आवश्यकता नहि; सभ बुझैत अछि।” नूर अपन कापीमे लिखलीह—“सभ बुझैत अछि: ई वाक्य समाचारक स्रोत नहि।”

न्यासक प्रबन्धन चन्दनासँ एक घोषणापत्रपर हस्ताक्षर माँगलक—“केंद्रक समस्त खरीद पारदर्शी आ उचित अछि”। चन्दना कहलीह, “एहन प्रमाण हम दऽ नहि सकैत छी; जे भुगतान-अनुमोदन हम नहि देखलहुँ, ओकर सत्यपर हस्ताक्षर कोना करब?” प्रबन्धक आवाज कड़क करैत कहला, “एहि संस्थाकेँ चलाबय लेल निष्ठा चाही।” चन्दना उत्तर देलीह, “निष्ठा प्रश्न छोड़ि देबाक नाम नहि। जँ कागज देखाउ, हम जाँचि उत्तर देब।” ओकर बात सुनि सहायक प्रयोगशाला परिचारिका काजल डरि गेलीह; हुनका मासिक वेतनक भुगतान ओही केन्द्रसँ होइत छल। चन्दना काजलक हाथ दबौलीह—“अहाँक परिवारक चिंता हम बुझैत छी। हमरा कारण अहाँपर अतिरिक्त जोखिम नहि आबय देबय चाहैत छी।” मुदा चन्दना जनैत छलीह जे संस्था भीतर अधिकारक असन्तुलनकेँ केवल आश्वासनसँ दूर नहि कएल जा सकैत अछि।

जखन २३ अगस्तक साँझ आएल तँ बेंगलुरुक छोट बैठकमे सभ गोटे समयसँ पहिने बैसि गेल। चन्द्रयान–३ क विक्रम अवतरण-यन्त्र चन्द्रमाक दक्षिणी उच्च अक्षांशक क्षेत्रमे उतरबाक क्रममे छल। परदेपर ऊँचाइक अङ्क घटैत गेल, सम्पर्कक सूचना अबैत रहल, आ घरमे ककरो कपक चाय स्पर्श नहि कएलक। अवनिक हथेलीमे पुरान कापी खुलल छल। मैत्रेयी आँखि बन्द कएने छलीह, मुदा निरंजन कहला, “आँखि खोलू; जे घटि रहल अछि ओकरा देखब।” सफल कोमल अवतरणक सूचना आएल तँ तीनू बहुत देर धरि कोनो शब्द नहि कहि सकल। ओकर बाद मैत्रेयी नीरसँ भीजल आँखि पोछैत कहलीह, “२०१९ क जख्मकेँ इतिहासमे मेटब नहि,

आब ओकर पाछाँ एहि सफलताक पन्ना जोड़ब।” अवनि रिक्त स्थानमे लिखलक—“२३ अगस्त २०२३: अवतरण सफल।”

परदापर उत्सवक स्वर उठैत छल; बाहर पड़ोसक बालक आतिशबाजीक लेल दौड़ि रहल छल। निरंजन ओकरा रोकि कहलनि, “आकाशमे वैज्ञानिक काजक सफलताक लेल धरतीपर आगि जरा कऽ हवा खराब करब आवश्यक नहि। दीप जराउ, गीत गाउ, विद्यालयमे पढ़ाउ।” अमन पुछलक, “चन्द्रमा पर आब आदमी रहत?” अवनि कहलक, “एहि अभियानमे यन्त्र उतरल अछि; एहन निष्कर्ष एखन नहि। विक्रमक संग प्रज्ञान नामक रोवर अछि, ओ वैज्ञानिक मापन करय लेल तैयार कएल गेल अछि।” मैत्रेयी बगलमे बैसल बच्चासभकेँ चन्द्रमाक नक्शा देखौलीह, जे ओ पहिनहि हाथसँ बनौने छलीह। तकर दक्षिणी भागमे मोट कलमसँ केवल ‘सावधान—अनुमानित रेखा’ लिखल छल। आजु ओ ठाम पृथ्वीसँ आयल प्रयासक एक ठोस साक्ष्य दर्ज भऽ गेल।

ओही साँझ जोधपुर विश्वविद्यालयक पुस्तकालयसँ छात्रसभ बाहर नहि निकलय चाहैत छल। ताराबाई फोनपर अपन मायकेँ बजौलक—“अम्मा, जे चन्द्रमा अहाँ धानक रोपनी पछाति आकाशमे देखैत छी, ओतय हमर देशक यन्त्र उतरि गेल।” माय पुछलखिन, “आब बरखा ठीक सँ पड़त?” ताराबाई कुछु कहबाक पहिने रुकि गेलीह; ओकरा बुझल जे विज्ञानक उत्सवसँ खेतक मौसम नहि बदलैत। “बरखा नहि, अम्मा; मुदा हम सभ आकाश बुझबाक नब उपाय सीखलहुँ। अहाँक खेतक ताप नापबाक नब उपाय सेहो बनत।” माएक उत्तर छल, “पहिने पढ़ाइ पूरा कर, फेर घर आयब।” फोन रखिते ताराबाईक मित्र रईस कहलक, “अहाँ माएक बात सुनलहुँ? हुनका चन्द्रयानसँ पहिने तोहर पढ़ाइ चाही।” ताराबाई मुस्कुरौलीह —“दुनू चाही; एकटा दोसराक दुश्मन नहि।”

चन्दना अपन प्रयोगशालामे ओहि दिनक उत्सवक तैयारी नहि कएने छलीह। कारण बताउ पत्रक उत्तर देबाक अन्तिम तिथि नजिक छल। विश्वविद्यालयक प्रधानाचार्य ओकरा बोलौलनि, “चन्द्रयानक सफलता पर शिक्षण-केंद्रक सभ सदस्यक फोटो चाही।” चन्दना कहलीह, “हाम फोटोमे रहब, मुदा हमर जाँचक फाइलक उत्तर सेहो चाही। हमर नाम केवल असफलता फोटोमे नहि, नियमित सुनबाईमे चाही।” प्रधानाचार्य संकोचसँ कहला, “ई प्रशासनिक मामला अछि।”

चन्दना उत्तर देलीह, “प्रयोगशालाक यन्त्र टूटला तँ प्रशासन कहल जाए, ओकर बिल पर प्रश्न उठला तँ विज्ञानक बात कहल जाए—एहन बाँट मान्य नहि।” ओ कार्यक्रममे गेलीह, छात्रसभक संग चन्द्रयानक समाचार देखलीह, मुदा जयघोषक बीच अपन फाइलक किनारा हाथमे दबौने रहलीह।

अगिला भोर चन्दनाक घरक बाहर एक स्थानीय अखबार पड़ल छल। शीर्षकमे हुनकर चित्र आ शब्द छल—‘असफल अनुसन्धानक केन्द्र विवादमे’। समाचारक भीतर कारण बताउ पत्रक उल्लेख छल, मुदा फोटोमे हुनकरा एकटा दोषी जेकाँ देखाओल गेल। चन्दनाक पिता बजार जाएब टारि देलनि। बेटी हुनका कहलीह, “अहाँकेँ घरसँ बाहर जायब चाही। जँ ओ सभ प्रश्न पूछत तँ कहू जे जाँच चलि रहल अछि।” पिता पुछलनि, “हम तोहर निर्दोषता कहि नहि सकैत?” बेटी कहलीह, “अहाँ कहि सकैत छी जे हम अपन काज सत्यनिष्ठासँ कएने छी। मुदा बिलक प्रश्नक लिखित जाँच हमहूँ माँगि रहल छी।” देवकीनन्दन धीरेसँ सँभलला। ओ कहला, “तखन लोक जँ हँसत तँ हम कहब जे बेटी सत्यपर विश्वास करैत अछि, मुदा आँखि बन्द कऽ नहि।”

अगस्तक अन्तमे रेवती जोधपुर पहुँचलीह। पुरान मरुधर भूमि-विवादमे कुसुमक संग हुनकर परिचय छल; छात्रावासक सहायतासँ आब विज्ञानकेँ जोड़बाक ई नब प्रसंग हुनका विचित्र लगल। चन्दनाक फाइल तीन गो लिफाफामे छल—पहिलमे वैज्ञानिक अध्ययन, दोसरमे वित्तीय लेखा, तेसरमे प्रशासनिक आदेश। रेवती पहिने तेसर लिफाफा खोललीह। “एहि प्रतिबन्धक आदेशपर केकर हस्ताक्षर अछि? जकर संगे समुचित सुनबाई नहि भेल, ओ व्यक्ति कोन नियम अन्तर्गत प्रभावित भेल?” ओ पुछलीह। चन्दना कागज सामने रखलीह। रेवती कहलीह, “हम एहि व्यक्तिगतरूपसँ प्रतिकूल आदेशक प्रक्रियागत वैधतापर पक्ष राखि सकैत छी। मुदा न्यासक प्रत्येक भुगतानक सफाइ हमर मुवक्किलक पीड़ासँ सिद्ध नहि होइत। ओकर लेखाक जाँच चलत।” चन्दना केतेक मासक बाद अपन मामलेक सीमा पहिल बेर स्पष्ट देखलीह।

रेवती राज्यक विज्ञान-शिक्षा विभागकेँ विधिक प्रतिनिधित्व पठौलीह, जाहिमे चन्दनाकेँ दस्तावेज देखबाक अवसर, व्यक्तिगत दोष बताबयवला अभिमतक आधार आ अलग

सुनबाईक माँग छल। ओकर संग न्यासकेँ ओ एक पत्र पठौलीह—“मूल खरीद-पावती, बैंक भुगतान-निर्देश आ भण्डार-प्राप्तिक कागज सुरक्षित राखू; कोनो प्रतिलिपि बदलू नहि।” न्यासक अध्यक्ष रेवतीकेँ फोनपर कहला, “अहाँ हमर वैज्ञानिककेँ हमरा विरुद्ध भड़का रहल छी।” रेवती शान्त स्वरमे उत्तर देलीह, “हम व्यक्ति-विशेषक अधिकारक प्रतिनिधित्व करैत छी। अहाँक लेखा सही अछि तँ उचित जाँचमे ओहिसँ सहायता भेटत। जँ गलत अछि तँ छात्र-छात्राकेँ ओकरा जानबाक अधिकार अछि।” अध्यक्ष फोन राखि देलनि। चन्दना चिन्तित भेलीह जे प्रयोगशालाक चाभी छीनि लेल जाएत। रेवती कहलनि, “एहि आशंकाक प्रमाण राखू; केवल भयक आधारपर आरोप नहि लगाउ।”

किछु दिनमे विभागक पत्र आयल—अनुदानक अन्तिम लेखा-परीक्षण चलि रहल अछि, व्यक्तिगत प्रतिबन्धक आदेश प्रशासनिक सुविधा लेल देल गेल। चन्दनाक सुनबाईक माँगपर कोनो स्पष्ट तिथि नहि। रेवती राजस्थान उच्च न्यायालयक जोधपुर पीठमे संविधानक अनुच्छेद २२६ अन्तर्गत याचिका दाखिल कएलीह। याचिकाक आग्रह छल जे व्यक्तिगत प्रतिकूल निर्णय बिना उपयुक्त अवसरक लागू नहि रहय, सम्बद्ध अभिलेख देखबाक सुविधा भेटय आ कारणयुक्त निर्णय हो। केन्द्रक पूरा अनुदान उचित ठहरायबाक वा वैज्ञानिक उपकरणकेँ सफल घोषित करायबाक प्रार्थना जानि-बुझि नहि कएल गेल। चन्दनाक सोझाँ न्यायालयक पहिल कागज रखैत रेवती पुछलीह, “अहाँक पक्षक सबसँ कठिन तथ्य की?” चन्दना उत्तर देलीह, “हम प्रयोग असफल भेल कहने छी। मुदा ओकर लेखाक हर पाँति हम नहि जनैत छी।” रेवती कहलीह, “तखन ई उत्तर बदलब नहि।”

पहिल सुनबाईक दिन अदालतक बरामदामे चन्दना केबिनक बाहर जकरा देखलीह, ओ प्राची वर्मा छलीह। प्राची सरकारी वकीलसँ कागजक एक गट्ठर साझा करैत छलीह। चन्दना दूरसँ प्रणाम कएलीह। प्राची उत्तरमे सिर झुकौलीह; दूनू जानैत छलीह जे व्यक्तिगत सम्मान आ विभागक अलग भूमिका अदालतमे अलग रहत। राज्यक पक्षसँ अधिवक्ता सुरेखा परिहार उपस्थित छलीह। ओ कहलीह, “सार्वजनिक धनक लेखा-परीक्षण रोकिनाइ उचित नहि; याचिकाक नामपर विभागक निगरानी बाधित भऽ सकैत अछि।” रेवती तुरन्त उत्तर देलीह, “हम निगरानी रुकबाक माँग नहि करैत छी। एक वैज्ञानिकक व्यक्तिगत प्रतिष्ठा आ शोध-

सहभागितापर जे प्रतिबन्ध लगल, ओकर आधार देखब आ उत्तर देबाक अवसर चाहैत छी।” न्यायमूर्ति पुछलनि, “याचिकाक अन्तिम उपचार आर्थिक अनुबन्धक समस्त विवादक निर्णय अछि?” रेवती कहलीह, “नहि, मान्यवर। ओकर दायरा सीमित अछि।”

न्यायालय आदेशक मूल प्रति मँगौलक। ताहिमे केन्द्रकेँ अनुदान निलम्बनक सूचना अलग छल, चन्दनाक नामपर व्यक्तिगत प्रतिबन्धक पाँति अलग। न्यायमूर्ति विभागक अधिकारीसँ पुछलनि जे चन्दनाकेँ ओहि पाँतिक विषयमे कोन तिथि पर सुनल गेल। सुरेखा कागज देखलीह, फेर स्वीकार कएलीह जे अलग सुनबाईक सूचना संलग्न अभिलेखमे स्पष्ट नहि। ओ कहलीह, “विभागकेँ उत्तर दाखिल करबाक समय चाही।” रेवती विरोध नहि कएलीह, मुदा जोड़लीह, “एहि बीच आवेदिकाकेँ नब शोध-कार्यक्रममे सहभागी होयबाक अवसर बिना कारण रुकैत अछि।” न्यायालय किछु दिनक भीतर उत्तरक निर्देश दैत अन्तरिम व्यवस्था सम्बन्धी दलील अगिला तिथिपर राखलक। ओहि दिन न अनुदान मुक्त भेल, न वैज्ञानिक दोष-मुक्त घोषित भेलीह। चन्दना बाहर निकलि कहलीह, “अदालत अपन नाम पढ़लक, ई हमरा लेल एखन पहिल उपलब्धि अछि।”

अन्तरिम अवधि अकारण रिक्त नहि रहल। राज्यक विभाग एक स्वतंत्र तकनीकी विशेषज्ञक रिपोर्ट मँगाबय सहमत भेल, जाहिमे सेंसरक मापन-सीमा आ विकासक प्रयत्नक मूल्यांकन होयत। लेखा-परीक्षणक दल भुगतान-पावती, बैंक प्रविष्टि आ भण्डारक वास्तविक वस्तुक अलग सूची बनबैत रहल। तकनीकी विशेषज्ञक भूमिका भुगतानक अनुमोदन देखबाक नहि छल, आ लेखाकारक भूमिका वैज्ञानिकक परिकल्पना सही अछि कि नहि, से ठहरायबाक नहि। नूर जतय एक समाचारमे ई विभाजन स्पष्ट कएलीह। ओकर संपादक पुछलनि, “तखन कहानीमे अपराधी के?” नूर कहलीह, “एखन कथाक मूल बात ई अछि जे कोन प्रश्नक उत्तर के दऽ सकैत अछि।” संपादक मुँह बिचकौलनि, मुदा समाचार छपल। ताराबाई ओ पढ़िकय पहिल बेर अखबारक शीर्षक नहि, मूल विवरण पूरा पढ़लीह।

तकनीकी समीक्षा भेल तँ विशेषज्ञसभ तीनटा निष्कर्ष देलनि। उपकरण अपन मूल लक्ष्य पूरा नहि कऽ सकल; चन्दनाक दल मापनक कच्चा आँकड़ा सुरक्षित राखने छल; आ प्रयोगक अग्रिम संशोधनक योजना वैज्ञानिक रूपसँ युक्तिसंगत रहितो कार्यान्वित नहि भेल। चन्दना

पहिल निष्कर्षपर हस्ताक्षर कएलीह; दोसरपर आँखि भीजि गेल; तेसरपर ओ कहलीह, “ठीक अछि, हम जतेक सुधार सोचेने छलहुँ, ओतेक कऽ नहि सकलहुँ।” रईस पूछलक, “तखन की ई प्रतिवेदन अहाँकेँ सफल कहत?” चन्दना कहलीह, “हमरा सच कहत। ई एखन पर्याप्त अछि।” ताराबाई पुछलखिन, “जँ उपकरण काज नहि कएलक तँ हमरा सभ ओकरा सँ की सीखब?” ओ उत्तर देलीह, “ककरो बनाओल यन्त्रकेँ पूजा नहि करब। ओकरा प्रश्न करब, खोसब, फेर बनायब।”

इधर विनोद त्रिवेदी अपन घरमे खसि गेल पुरान अलमारी साफ करैत बैंकक एक पावतीक कार्बन-नकल भेटलनि। ओहि नकलपर राशि छल, मुदा भुगतान ग्रहण करनिहारक खाताक अन्तिम अङ्क पहिले जाँचल विवरणसँ भिन्न। पत्नी रंजना पुछलीह, “कागज लुकौने रहब?” विनोद उत्तर देलनि, “हम स्वयं नहि जनैत जे कोन कागज अन्तिम अछि। जँ ई देब तँ अध्यक्ष नाराज हेताह, जँ नहि देब तँ बादमे आरोप हमरेपर आबत।” रंजना पुछलखिन, “अहाँ जकरा सत्य मानैत छी, से लिखू, आ जकरा नहि बुझैत छी, ओकरा नहि बुझैत छी लिखू।” विनोद कागजक फोटो बनबैत अचानक ठमकि गेलाह। ओ मोबाइलमे एकटा पुरान चित्र खोजलनि जाहिमे कोषाध्यक्षक हस्ताक्षर छल, मुदा फोटो पर समयक स्पष्ट प्रमाण नहि छल। ओ नकल सुरक्षित रखि स्वतन्त्र लेखा-परीक्षण दलकेँ सौंपबाक निर्णय कएलनि।

सितम्बरक दोसर सप्ताह सुनबाई पुनः भेल। सुरेखा परिहार राज्यक उत्तर दाखिल कएलीह: व्यक्तिगत प्रतिकूल पाँति लिखबाक पहिने चन्दनाकेँ अलग सुनल नहि गेल; विभाग एखन व्यक्तिगत प्रतिबन्ध पर पुनर्विचार करबाक लेल तैयार अछि। मुदा न्यासक अनुदानक लेखा-परीक्षण अनिर्णीत अछि। रेवती कहलीह, “पुनर्विचारक अवसर वास्तविक होय; समस्त प्रासंगिक अभिलेखक यथोचित प्रतिलिपि आ स्पष्ट आरोपक विवरण देल जाए।” न्यायालय कारणयुक्त आदेशमे चन्दनाक व्यक्तिगत प्रतिबन्ध पर निर्धारित अवधिक भीतर सुनबाई आ निर्णयक निर्देश देलक; जाँचक मूल दस्तावेज सुरक्षित राखबाक उल्लेख कएलक; आ वैज्ञानिक परिणाम वा वित्तीय अनियमितताक अन्तिम मेरिटपर कोनो निष्कर्ष नहि देलक। याचिकाक सीमित उपचार भेटल। चन्दना न्यायालयक सीढ़ी उतरैत कहलीह, “हुनका हमर

प्रयोग सफल नहि लागल, मुदा हमरा सुनबाक हक भेटल।” रेवती उत्तर देलीह, “सुनल जाएब स्वतः सही ठहरायल जाएब नहि, मुदा बिना सुनने गलत ठहराओल जाएब सेहो न्याय नहि।”

न्यासक अध्यक्ष आदेश सुनि खिन्न भेलाह। हुनका आशा छल जे अदालत अनुदान शीघ्र मुक्त करबाक कहत। उलटे मूल पावती सुरक्षित रखबाक निर्देश हुनकरा नब भार सन लगल। ओ विनोदकेँ बोलाकय कहला, “कागज जहाँ-तहाँ नहि पठाउ।” विनोद एहि बेर सीधा उत्तर देलनि, “सरकारी निरीक्षणक लिखित माँगपर हमर कर्तव्य अछि जे जे उपलब्ध अछि देब। हम नब कागज बना कऽ पुरानक स्थान नहि रखब।” अध्यक्ष चुप भऽ गेलाह। कर्मचारीक स्वरमे पहिल बेर एतेक दृढ़ता छल। विनोद अपने भीतर हल्कापन नहि अनुभव कएलनि; हुनका आशंका छल जे नौकरी जाएत। मुदा ओ घर जा कऽ बेटीकेँ कहि सकलाह जे आइ जकरा नहि बुझलहुँ, ओकरा बुझल छी कहि नहि लिखलहुँ।

अक्टूबरमे चन्दनाक व्यक्तिगत सुनबाई विभागीय भवनक तेसर तलपर भेल। कोठरीमे तीन गोट अधिकारी, एक लिपिक, चन्दना आ हुनकर प्रतिनिधि उपस्थित छलाह। चन्दना अपन वैज्ञानिक प्रतिवेदनक प्रत्येक नकारात्मक अंश स्वीकार कएलीह। खरीदक पावतीपर सवाल उठिते ओ भुगतान-अनुमोदनक सीमा बतौलीह। एक अधिकारी पुछलनि, “जँ अहाँ परियोजना प्रमुख छलहुँ तँ वित्तीय त्रुटिक जानकारी किएक नहि?” चन्दना उत्तर देलीह, “प्रमुखक जिम्मेदारीसँ हम भागि नहि रहल छी। हमरा अपेक्षा छल जे लेखाक मासिक सार देखाओल जाए; ओ सर्वदा समयपर नहि भेटल। एहि त्रुटिक संस्थागत जिम्मेदारी पर प्रश्न उठि सकैत अछि। मुदा हमरा द्वारा दोहरा भुगतानक अनुमोदन कएल गेल, से तथ्य अभिलेखमे अछि कि नहि, एकरा अलग देखल जाए।” अधिकारी फेर पुछलनि, “एतय लिखल छैक जे यन्त्र सम्पूर्ण प्राप्त।” चन्दना चारि आवरण आ पाँचटा निष्क्रिय नमूनाक भिन्नता स्पष्ट कएलीह। सुनबाई लम्बा चलल; ककरो तुरन्त निर्दोष कहब कठिन छल।

विभाग अन्ततः व्यक्तिगत प्रतिबन्धक पहिनुक आदेश वापस लैत नव कारणयुक्त निर्णय देलक जे चन्दनाक विरुद्ध उपलब्ध सामग्रीसँ व्यक्तिगत अनुचित भुगतानक अनुमोदन तत्काल सिद्ध नहि होइत; भविष्यक प्रशासनिक उत्तरदायित्वक प्रश्न लेखा-परीक्षणक अंतिम प्रतिवेदनपर निर्भर रहत। न्यासक खाताक जाँच जारी रहत आ अनुदानक शेष रकम स्वतः

मुक्त नहि होयत। चन्दना लिखित आदेश फेर-फेर पढ़लीह। ओ पिता लग पहुँचि कहलीह, “देखू, नामक ऊपर जे बिना सुनने दोष लिखल छल, ओ हटि गेल। मुदा केन्द्रक हिसाबक समस्या बाकी अछि।” देवकीनन्दन कहला, “तोरा सभक प्रयोग तँ फेर शुरू होयत?” चन्दना उत्तर देलीह, “अखन निजी सहयोगसँ विद्यार्थीसभक छोट प्रयोग चलाओल जाए; सरकारी अनुदानक नया रुपैया जाँचक पहिने नहि माँगब।” पिता हुनकर माथपर हाथ रखलनि। एहि क्षणक जीत बिना शोरक छल।

आब मरुधरक ग्रामीण विज्ञान-कार्यशाला केन्द्रक बन्द कोठरीसँ बाहर निकलि विद्यालयसभमे पहुँचब शुरू भेल। कुसुम एक पुरान बसक व्यवस्था कएलीह, नसीमा नामक सूची बनौलीह। अवनि बेंगलुरुसँ छोट-छोट वीडियो पठबैत छलि—माटिक ताप, कुआँक पानि नापबाक सुरक्षित तरीका, छाया आ समयक सम्बन्ध। मैत्रेयी मैथिलीमे शब्द लिखि देत छलीह, कुसुम राजस्थानी बोलिमे उदाहरण चुनैत छलीह, आ ताराबाई अपन गामक लोकक प्रश्न जोड़ैत छलि। किछु दिनमे एक अनहोनी समस्या आयल: कक्षा-पञ्जीमे छोरासभक नाम भरल, मुदा छोरीसभ पहुँचलीह आधा। ताराबाई स्वयं घर-घर गेलीह। एक माय कहलीह, “राति घूमिकय आकाश देखय भेजब तँ गाम की कहत?” ताराबाई उत्तर देलक, “रातिमे नहि, दिनमे छाया नापब; अहाँ सेहो चलू।” ओहि दिन पहिल बेर छोरासँ अधिक मायसभ कार्यशालामे आएलीह।

विद्यालयक ओहि आँगनमे एक डिब्बामे रखल पुरान सेंसरक टुटल पुर्जा देखबैत चन्दना कहलीह, “ई साधन काम नहि कएलक। मुदा एहि कारण हम सभ आब जमीनपर सस्तो यन्त्र बनायबाक नब योजना सोचैत छी।” एक छौड़ी गीता पुछलक, “नहि चलल तँ ओकरा फेकि किएक नहि देलहुँ?” चन्दना कहलीह, “प्रत्येक असफल वस्तु राखब आवश्यक नहि। मुदा जे दोष सीखाबय सकैत अछि, ओकर नमूना राखब उपयोगी। जहिना अहाँ गणितक गलत उत्तरक किनारमे चिन्ह लगा कऽ पुनः हल करैत छी।” गीता अपन कापी खोलिकय देखौलक; ओ गलत उत्तर काटि मिटा देने छलि। ओकर माय पुछलीह, “गलती देखाओलासँ शिक्षक डाँटता?” अवनि मोबाइलक परदासँ उत्तर देलक, “जे शिक्षक प्रश्नकेँ अपराध बुझथि, हुनकासँ सेहो प्रश्न पुछू।” सभ हँसि देल, मुदा ओहि हँसीमे भयक एक दरार पड़ि गेल।

बेंगलुरुमे निरंजनक स्वास्थ्य ओहि वर्ष ठीक छल, मुदा बहुत दिन लगातार यात्रा करबाक सामर्थ्य कम भेल छल। अवनि हुनका चन्द्रयान–३ क उपलब्ध सार्वजनिक चित्र देखौलक, जकरा विज्ञान-संस्थासभ प्रकाशित कएने छल। निरंजन कहला, “चित्रकेँ जतेक बतबय देल गेल, ओतबे कहू। ओहि सँ अधिक अर्थ अपनी इच्छा सँ नहि जोड़ू।” मैत्रेयी पुछलीह, “की एतेक सावधानीसँ बच्चासभक उत्साह कम नहि भऽ जाएत?” अवनि कहलक, “माय, सावधानी उत्साहक विरोधी नहि। ताराबाई एखन पढ़ाइ नहि छोड़य चाहैत अछि, कारण ओकर प्रश्नकेँ पहिल बेर स्थान भेटल।” मैत्रेयी धीमे स्वरमे कहलीह, “बचपनमे अहाँ चन्द्रमाक कागज बनौने रही। आब अहाँ ओकरा तरे गामक छोरीक नाम लिखैत छी।” अवनि उत्तर देलक, “चन्द्रमा दूर रहल, मुदा एतय पहुँचबाक बाट सम्भवतः बेसी लम्बा अछि।”

ओहि समय दिल्लीमे प्रमोद खन्नाक विरुद्ध विशेष अदालतक आर्थिक प्रकरण अपन गति सँ चलैत छल। फैजान अलीक पृथक जमानत आवेदनपर माँगल एक प्रमाणित अभिलेखक उपलब्धता अबैत-जाइत रहैत छल; रेवती अपन सहकर्मीक माध्यमसँ फाइलक स्थिति देखैत छलीह। ओहि मुकदमाक भुगतान-पञ्जीमे उभरल ‘एच. चौहान’ नामकेँ चन्दनाक अनुसन्धान-अनुदानसँ जोड़बाक कोनो प्रमाण नहि छल। नूर जहाँक एक परिचित सम्पादक एहन शीर्षक सुझौलक—‘देशक शोध आ करोड़क ठगीक जाल’। नूर ठामहि मना कएलीह। “नामक एक अक्षर मेल खा गेलासँ जाल सिद्ध नहि होइत,” ओ कहलीह। एतेक वर्षक मुकदमासभ ओकरा सिखौने छल जे रहस्य बेचि सकैत अछि, मुदा सच बेचनिहारक काज ओहि रहस्यक कमजोर कड़ी देखब सेहो अछि।

सुनीता पासवान लुधियानामे श्रमिक सहायता-कक्षमे एक नव दलसँ भेटैत छलीह। कारखानाक काज घुमि-फिरि सुधार रहल छल, मुदा रामलखनक पुरान बकायाक पूरा भुगतान एखनहुँ नहि भेल छल। एक बालिका अपन विद्यालयक विज्ञान-परियोजनाक लेल चन्द्रयानक चित्र बनौने आयलि। सुनीता ओकरा पुछलक, “अहाँ ई चित्र कतय देखलहुँ?” बालिका कहलक, “फोनपर। मुदा हमरा हिसाबक प्रश्न नहि बुझल।” सुनीता ओकरा गणनाक शिक्षकसँ भेट करबेलक आ कापीमे लिखलक—“नब युगक यन्त्र हाथमे अछि, मुदा पढ़यक समय आ भाषा सभक हाथमे नहि।” रामलखन एहि पाँति पढ़िकय कहला, “हमर मजदूरीक

कागजसँ तोहर विज्ञानक कागज कोना जुड़ल?” सुनीता हँसलीह—“दुनूमे हिसाब सच होयबाक चाही, बाबू। आ दुनूमे कमजोर लोक कैँ अपन प्रश्न पूछबाक अधिकार चाही।”

नवम्बरक आरम्भमे मरुधरक विद्यालयसभ बीच एक छोट प्रायोगिक प्रतियोगिता आयोजित भेल। विजेता लेल पैघ धन-राशि नहि छल; पुस्तक आ प्रयोगक साधन भेटबाक छल। गीता अपन समूहसँ छायाक लम्बाइ नापिकय समयक अनुमान बनौलीह। रईस पुर्जाक सहायता सँ पानिक ताप देखबयवला सरल यन्त्र बनौलक। ताराबाई अपन खेतक तीन ठाम माटिक नमीक तुलना कएलीह, मुदा पहिल दिनक मापनमे दूनू आँकड़ाक क्रम उल्टा लिखि गेल। शिक्षक कहला, “अहाँक निष्कर्ष गलत।” ताराबाई डरि गेलीह। चन्दना ओकरा पुछलीह, “गलती कतय भेल?” ओ कापी जाँचि कहलीह, “मापन नहि, पन्नाक शीर्षक उलटा अछि।” चन्दना कहलीह, “तखन शीर्षक सुधारू, पर पहिल पन्ना नष्ट नहि करू।” ताराबाई पहिल गलतीपर लाल रेखा लगा कऽ दोसर पन्नापर सही तालिका बनौलीह; ओकर समूहकैँ पुरस्कार नहि भेटल, मुदा जाँचक कथा सुनि सभ ताली बजौलक।

एहि प्रतियोगिताक बाद राज्यक विज्ञान-शिक्षा विभाग एक सीमित छात्रवृत्ति-परीक्षा आयोजित करबाक प्रस्ताव राखलक। प्रतियोगिता विश्वविद्यालयक शोध-अनुदानसँ अलग छल, मुदा कार्यशालामे भाग लेने छात्रसभ पात्र भऽ सकैत छलाह। विश्वविद्यालयक प्राध्यापकसभ विषयविशेषज्ञक सूची तैयार कएलनि। अवनिकैँ स्नातकोत्तर छात्र-प्रतिनिधिक रूपमे प्रश्न-समीक्षाक सहयोग लेल निमन्त्रण भेटल। ओ स्पष्ट कएलक जे एकर अर्थ अन्तिम प्रश्नपत्र निर्धारित करबाक अधिकार नहि; गोपनीयताक नियम, विषयक पाठ्यक्रम आ हित-संघर्षक घोषणा आवश्यक अछि। एक सदस्य हँसि कहलक, “अहाँ एतेक नियम देखब तँ परीक्षा कखन होयत?” अवनि उत्तर देलक, “जे परीक्षा छात्रक अगिला पाँच वर्षक दिशा बदलबैत अछि, ओकरा लेल नियम पढ़ब समयक बरबादी नहि।”

प्रश्न-समीक्षा बैठकमे अवनि एक ताप-सन्तुलनक उदाहरण देलक। तीन समान पात्र, दू भिन्न ताप, एक साझा मापक—विद्यार्थीकैँ केवल सूत्र नहि, परिणामक संग प्रमाणक अन्तर बुझबाक छल। अवनि अपन प्रारूपमे जानि-बुझिकय एक प्रारम्भिक गलत विकल्प लिखने छलि, जकरा सभाक अन्य सदस्य पहचानि सही करथि। ओ लिखलक, ‘द्वितीय मापकक

एकक: डिग्री, नहि ग्राम’। बैठकक अन्तमे सुधार स्वीकार भेल। अवनि प्रारूपक अपना प्रति पर समय आ संशोधनक तिथि लिखिकय विभागक सुरक्षित सम्पर्कपर पठौलक। सभ सदस्यक नाम प्रश्नपत्रक गोपनीय भागमे दर्ज होयबाक नियम छल। अवनि अपना भूमिका मात्र समीक्षा धरि सीमित रखलक, आ अन्तिम परीक्षामे अपन परिचित छात्रसभकेँ अलगसँ प्रश्न-सामग्री नहि बतबैत छलीह।

दिसम्बरमे छात्रवृत्ति परीक्षाक विज्ञप्ति आयल। ताराबाई प्रवेशक योग्यता देखिकय खुशी भेलि; गामक विद्यालयमे ऊँच कक्षाक छात्रा लेल एहन अवसर कम अबैत छल। गीता कहलक, “हमहूँ देब, मुदा कोचिंग लेल पैसा नहि।” ताराबाई अपन अभ्यास-पुस्तिका आधा बाँटि देलक। एक सन्ध्या चन्दनाक पुरान प्रयोगशालामे तैयारीक खुला सत्र भेल। अवनि दूरभाषपर समझौलक जे परीक्षाक प्रश्नपत्र ककरो लग पहिने नहि होयबाक चाही; अभ्यासमे सार्वजनिक पाठ्यक्रमक उदाहरण लेल जा सकैत अछि। एक युवक सुझाव देलक जे ‘खास प्रश्न’ किछु रुपैयामे उपलब्ध छथि। कुसुम ओकर बात बीचमे रोकलीह—“कोन स्रोत? कखनक प्रश्न?” युवक मूँह फेरि लेलक। चन्दना सभ विद्यार्थीकेँ कहलीह, “प्रचारक असत्यापित दाबीपर भरोसा नहि करू; जँ किछु साक्ष्य हो तँ परीक्षा प्राधिकरणकेँ लिखित सूचना दियौ।”

मुदा अवनिक मनमे ओहि सन्ध्यासँ एक छोट काँटा अटकि गेल। ओहि युवकक फोनपर जाहि अभ्यास-पत्रक फोटो क्षणभर देखल गेल छल, ताहिमे लिखल छल—‘द्वितीय मापकक एकक: ग्राम’। ई वाक्य ठीक ओहि गलत विकल्पसँ मिलैत छल जे अवनि प्रश्न-समीक्षाक पहिल प्रारूपमे लिखने छलि आ बैठकमे बदलि देल गेल छल। गर्मी मापबाक प्रश्न सभ पाठ्यपुस्तकमे भेटैत अछि; केवल विषय मेल खायब विचित्र बात नहि। मुदा गलत एककक ई विशिष्ट संयोजन ओकरा चकित कएलक। युवक कहने छल जे कागज निजी अभ्यास-मण्डलीसँ भेटल; ओकर वास्तविक तिथि, मूल स्रोत आ पठौनिहारक पहिचान अवनिकेँ नहि मालूम छल। ओ तत्काल ‘प्रश्नपत्र बाहर गेल’ कहि सार्वजनिक आरोप नहि लगौलक। ओ अपन पुरान प्रारूप खोलि तिथि मिलौलि, फेर सँझमे निरंजन लग गेलि।

निरंजन ध्यानसँ सुनलनि। “पहिल प्रश्न: ई प्रसारित कागज परीक्षाक वास्तविक प्रश्न अछि कि कोचिंगक अभ्यास? दोसर: ओकरा कहिया बनाओल गेल? तेसर: कोन-कोन लोक प्रारूप

देखलनि?” ओ पुछलनि। अवनि कहलक, “हमर लग एखन प्रश्न नहि, केवल एक फोटो छल। ओ फोटो आ हमर गलती मेल खाइत अछि।” मैत्रेयी कहलीह, “अहाँक मन डेरायल अछि कारण एतय छात्रसभक भरोसाक प्रश्न अछि।” अवनि स्वीकार कएलक, “हम पढ़ल-अधूरा तथ्यकेँ लऽ ककरो दोषी नहि कहय चाहैत छी। मुदा जँ सूचना लुकाएब, तँ परीक्षाक शुचिता बचत कोना?” निरंजन उत्तर देलनि, “जे जानैत छही से तिथिसहित लिखू; जे नहि जनैत छही ओकरा प्रश्नरूपमे लिखू। आरोप नहि, सत्यापनक माँग करू।” मैत्रेयी पुरान लाल कापी ओकरा हाथमे दऽ देलीह।

अवनि एक सीमित, गोपनीय पत्र तैयार कएलक। ओहि पत्रमे लिखलक जे प्रश्न-समीक्षाक प्रारूपमे एक विशिष्ट गलत विकल्प छल, तकर सुधारक आधिकारिक अभिलेख उपलब्ध अछि, आ एक बाहरी अभ्यास-पत्रक क्षणिक छविमे ओहि पुरान विकल्पक समानता देखल गेल। ओ परीक्षा-प्राधिकरणसँ प्रश्नपत्रक अन्तिम संस्करण, प्रवेश-अधिकारक अभिलेख, अभ्यास-पत्रक सम्भावित स्रोत आ प्रारूप-वितरणक श्रृंखलाक सुरक्षित परीक्षण चाहलक। ओ अपन भूमिका स्पष्ट करैत पुछलक जे जाँच पूरा होयबाक धरि ओकरा विषय-सम्बन्धी मूल्यांकनमे कोनो सहभागिता नहि देल जाए। पत्रक प्रति रेवतीकेँ केवल प्रक्रियागत सलाहक लेल देखौलक, प्रश्नक गोपनीय सामग्री नहि पठौलक। रेवती उत्तर देलीह, “जँ छात्रक अधिकारक प्रश्न उठैत अछि, तँ पहिने मूल अभिलेख सुरक्षित होएब आवश्यक अछि। हर समानता रिसाव नहि, मुदा यथार्थ शंका दबाओल जाएब सेहो अनुचित।”

चन्दनाक व्यक्तिगत प्रतिबन्ध हटला पछातिओ सहायक काजलक थाकल चेहरा नहि बदलल। दू मासक मानदेय अनुदान रुकलासँ अटकल छल; न्यास कहैत छल जे अगिला भुगतान सरकारी जाँच समाप्त भेलापर होएत। चन्दना एहि विषयमे अलग लेखा माँगलीह। “हमर नामपर जे आदेश छल, ओकर सुधारसँ अहाँक वेतनक प्रश्न समाप्त नहि,” ओ काजलकेँ कहलीह। रेवती उपयुक्त श्रम आ सेवा-नियमक परीक्षण करबाक सलाह देलीह; अनुदान-सम्बन्धी विवादकेँ कर्मचारीक निश्चित देयताक स्वतः क्षमादान नहि मानल जाए। काजल पहिने डरैत छलीह जे अधिकार माँगला पर नौकरी जाएत। चन्दना हुनका संग न्यासक कार्यालय धरि गेलीह, मुदा ओकरा बदला उत्तर देबाक आग्रह नहि कएलीह। काजल अपन

हाथसँ लिखल आवेदन स्वयं जमा कएलीह। एतेक छोट दृश्य चन्द्रयानक परदापर नहि देखाइत छल, मुदा विज्ञानकेँ सम्भव करनिहार श्रमक ई अपन उजास छल।

नूर जतय जोधपुरक समाचार लिखिकय लौटैत एक स्टेशनपर चाय पीबैत छलीह। संगक पत्रकार एक पुरान सूची देखबैत कहलक जे एक संस्थाक प्रायोजक दोसर ठाम राजनीतिक प्रचार लेल रकम दैत अछि; “दूनू जोड़ि एक पैघ खुलासा लिखू,” ओ कहलक। नूर सूचीक तारीख देखलीह। एहिमे किछु नाम अस्पष्ट, किछु राशि अनुमानित आ किछु भुगतानक प्रकृति अनिर्दिष्ट छल। ओ कहलीह, “अनुसन्धानक धन, वैध राजनीतिक समर्थन आ अनुचित लाभ—तीनूकेँ केवल नामक समानतासँ जोड़ब घातक अछि। जँ कागज उपलब्ध अछि तँ पहिले स्रोत, तिथि आ निर्णयक अधिकार देखब।” पत्रकार कहलक, “अहाँक शीर्षकमे आगि नहि लगैत।” नूर हँसलीह—“आगिसँ कागज जरैत अछि; ओहिमे लिखल सत्य नहि भेटैत।” ओ ओहि सूचीकेँ प्रकाशित करबाक बदला प्रमाण जुटेबाक पन्नामे रखलीह। देशमे चुनावक अगिला मौसम अबयवला छल, मुदा ओकर समाचार एखन अधूरा छल।

मैत्रेयी विद्यालयमे बरखक अन्तिम विज्ञान-सभा रखलीह। अपन भाषामे बनाओल पुस्तिकाक पहिल पन्नापर ओ लिखलीह—“गुरुत्वाकर्षणक अर्थ केवल नीचाँ खसबाक कथा नहि; दूरी, पिण्ड आ मापकक प्रश्न सेहो।” एक शिक्षक हँसैत पुछलनि, “मैथिलीमे विज्ञान पढ़ेबाक लेल पर्याप्त शब्द कतय भेटत?” मैत्रेयी उत्तर देलीह, “जतय शब्द तैयार नहि, ओतय अर्थ स्पष्ट कऽ नव प्रयोग करब; जहाँ अंग्रेजी शब्द काम करैत अछि, ओहि शब्दकेँ चिन्ह सहित राखब। मातृभाषा विज्ञानक दरबाजा खोलय लेल अछि, जटिलता छिपेबाक लेल नहि।” एक छात्रा अपन दादीक बोलीमे चन्द्रमाक लोकगीत सुनौलीह। मैत्रेयी गीत समाप्त भेलापर कहलीह, “गीतक चन्द्रमा कल्पनाक, वैज्ञानिकक चन्द्रमा मापनक; दुनू एकहि आकाश दिसि देखैत अछि, मुदा प्रश्न अलग होइत अछि।” अवनि शान्त भऽ मायकेँ सुनैत रहलीह।

वर्षक अन्तिम साँझ बेंगलुरुक बरामदामे तीनू गोटे फेर बैसल छलाह। परदेपर चन्द्रयान–३ क वर्षभरक सार्वजनिक उपलब्धिक झलक छल; परदाक बगलमे अवनिक लाल कापी खुलल छल। निरंजन कहला, “आब तोहर कापीमे चन्द्रमाक पन्ना पूरा भेल?” अवनि कहलक, “अवतरणक पन्ना पूरा भेल अछि। प्रश्नक पन्ना कखन पूरा होएत, नहि जनैत छी।” मैत्रेयी

बाहर अन्हारमे चमकैत चन्द्रमा देखौलीह। “आकाशक उजास घरक भीतरक प्रश्न नहि मेटबैत,” ओ कहलीह। अवनि परीक्षा-प्राधिकरणक पत्रक प्राप्ति-पावती फेर देखलक। ककरो दोष एखन सिद्ध नहि छल, परीक्षा रद्द करबाक कोनो आदेश नहि छल, मुदा कागजक एक गलत एकक विद्यार्थीसभक भविष्यपर उठल प्रश्नक संकेत बनि गेल छल। ओ कापीक नव पन्नापर लिखलक—“सफल अवतरणक गवाही प्रकाश देलक; निष्पक्ष परीक्षाक गवाही अभिलेख देत।”

अध्याय २९ — चुनावी धनक अभिलेख

सन् २०२४ : जोधपुर, दिल्ली, लुधियाना आ दरभंगा

फरवरीक पहिल सप्ताहमे जोधपुरक सकरी गलीसभ पर भोरक घाम नीचाँ उतरैत छल। नूर जतय अपन घरक आँगनमे पीतरक लोटा राखि समाचारपत्रक छपाई देखि रहल छलीह। हुनकर छोट भाय सुबहसँ कागजक कारोबार करैत छल; छपाईक मशीनक कारी स्याही ओकर नहक भीतर धरि घुसल रहैत छल। नूरक सामने दू पन्ना छल—एकपर मरुधरक ग्रामीण विद्यालयमे अधूरा छात्रवृत्ति-परीक्षाक सूचना, दोसरापर दिल्लीक राजनीतिक चन्दा सम्बन्धी न्यायिक सुनबाई। दुनू पन्ना देखिकय ओ बुझैत छलीह जे राज्यक घोषणा आ वास्तविक खर्चक बीच जे दूरी अछि, ओकरा शब्दमे नापब बहुत कठिन होइत अछि। फोनपर सम्पादक अनिरुद्ध सक्सेना कहलनि, “एहि बेर राष्ट्रीय विषय पर लिखू। पाठककेँ बुझाउ जे चुनावी चन्दाक प्रश्न किएक जनताक प्रश्न अछि।” नूर पुछलीह, “जनताक प्रश्न लिखब, मुदा बिना मूल कागज ककरो अपराधी बना देब?” अनिरुद्ध उत्तर देलनि, “से नहि। मुदा कागज भेटबा धरि कथा शुरू हो सकैत अछि।”

ओहि दिन नूर मरुधर विश्वविद्यालयक पुस्तकालय पहुँचलि। रिद्धि विश्नोई पुरान सरकारी व्ययक सूची सहेजि रहल छलीह। ओ शोधक विषय चुनने छलीह—छोट संस्थासभकेँ भेटल अनुदानक सार्वजनिक प्रतिवेदन आ स्थानीय नागरिकक वास्तविक पहुँच। पासमे विवेक मेघवाल एक समाचारक शीर्षक देखबैत कहलक, “पैसा ककरा देल गेल, ककरा लग पहुँचल—ई प्रश्न पुछब अपराध अछि कि?” रिद्धि ओकरा चुपचाप देखलीह। “प्रश्न अपराध नहि,” ओ कहलीह, “मुदा कोनो नामक आगाँ बिना जाँच “चोर” लिखब दुसर प्रश्न अछि। पहिने एतबे बुझू जे जे सूची हमारे लग अछि, से अनुदानक आवंटन अछि, भुगतानक प्रमाण नहि।” नूर कागज उठौलीह। एहन सावधानी हुनका अपन पहिल पत्रकारिताक प्रशिक्षण स्मरण करा

देलक—अखबारमे छपल एक वाक्य ककरो वर्षसभक श्रमकेँ अचानक संदिग्ध बना सकैत अछि।

दरभंगामे रेवती झा ओहि बेर पिताक पुरान अलमारीसँ एक पीतरक कलम निकालि रहल छलीह। शिवनारायण झा आब बहुत कम न्यायालय जाइत छलाह। नातिन हुनका पत्र पढ़ि सुनबैत रहैत छलि। एक पुरान मुकदमाक निर्देश देखैत ओ कहला, “मुद्दईक प्रश्न केवल ओकर अधिकारक नहि होइत अछि। जकरा विरुद्ध प्रश्न उठल, ओकर सुनबाईक अधिकार सेहो मुकदमाक भाग अछि।” रेवती मुस्कुरौलीह। “एहि बातकेँ अहाँ बीस वर्ष पहिने सेहो कहने रही।” पिता उत्तर देलनि, “तखन सीख कच्ची छल, आब शरीर कमजोर अछि तँ अक्षर बेसी साफ देखाइत अछि।” रेवतीक मेजपर दिल्लीक धनशोधन प्रकरणक पृथक फाइल छल। प्रमोद खन्नाक जमानत अस्वीकृत छल, फैजान अलीक आवेदनक स्थिति दोसर। ओ दुनूकेँ नव चुनावी-वित्तक समाचारसँ जोड़बाक कोनो आधार नहि देखैत छलीह।

पन्द्रह फरवरीक साँझ नूरक फोन लगातार बजैत रहल। सर्वोच्च न्यायालय चुनावी बॉण्ड योजनाकेँ असंवैधानिक ठहरा देने छल। पाँच न्यायाधीशक संविधानपीठ राजनीतिक दलक वित्तीय स्रोत सम्बन्धी गोपनीयता आ नागरिकक जानकारीक अधिकारपर विचार कएने छल। राजधानीक समाचार-कक्षमे प्रतिलिपि ककरा लग पहिने पहुँचत, एहि लेल हड़बड़ी छल। नूर अपन मेजपर चाय ठण्ढा होयब देलीह आ निर्णयक प्रमुख बिन्दु नोट कएलीह—अनाम चन्दाक व्यवस्था, वित्तपोषणक सूचना, कम्पनीक असीमित योगदानक व्यवस्था सम्बन्धी संवैधानिक प्रश्न, आ बैंकसँ निर्वाचन आयोग धरि सूचना देबाक निर्देश। ओ एकहि वाक्यपर लाल रेखा खींचलीह: “सूचना सार्वजनिक होयब आ अपराध सिद्ध होयब एक नहि।” समसामयिक घटनाक भीतर एहि भेदकेँ सुरक्षित रखब हुनका लेखनक पहिल शर्त लगल।

साँझक गोष्ठीमे छात्रसभ चारू दिससँ प्रश्न फेकैत छलाह। राकेश कहलनि जे राजनीतिक दल चुनाव लड़बाक लेल पैसा जुटबैत अछि, एकरा अपने-आप पाप नहि कहल जा सकैत अछि। नसीमा उत्तर देलीह, “मुदा जे मतदाता मंचपर वादा सुनैत अछि, ओ एहि वादाक पाछाँ सहयोगक स्रोत जानय चाहत तँ कोन अन्याय?” विवेक बीचमे जोड़लक, “सभ दाताकेँ अपराधी लिखि देब तखन वैध समर्थन देनिहार सेहो चुप भऽ जायत।” कुसुम अपन बही बन्द

कएलीह। “हमर गामक किसान संगठनमे एक बोरा गेहूम देनिहारक इच्छा आ उपयोग अलग लिखैत छलहुँ। देशक पैघ दलक प्रश्नक गहराइ अधिक अछि, मुदा हिसाब पुछबाक भावना नव नहि।” नूर सभक वाक्य लिखलीह, मुदा ककरो नामक संग पूर्वनिर्धारित दोष नहि जोड़लीह।

ओही विश्वविद्यालयसँ दू कोस दूर ‘लोकसंवाद अध्ययन न्यास’ नामक एक संस्थाक भवन छल। एक दशक पहिने बनल ई न्यास नागरिक शिक्षाक पुस्तिका छापैत, चुनावी साक्षरता, महिला अधिकार आ पंचायतक वित्तीय निर्णय पर गोष्ठी करबैत छल। एकर अध्यक्ष प्रबोध माथुर सेवानिवृत्त अध्यापक छलाह, कोषाध्यक्ष रमा चौबे पूर्व लेखाधिकारी, आ कार्यक्रम-संयोजक सहर बानो बीस वर्षसँ सामुदायिक कक्षा चलबैत छलीह। न्यासकेँ राज्यक एक नागरिक-शिक्षा कार्यक्रम अन्तर्गत वर्ष २०२२ सँ २०२४ धरि अड़तालीस लाख रुपैयाक स्वीकृत अनुदान छल। ई अनुदान चुनावी बॉण्डक रकम नहि छल; एकर स्त्रोत, शर्त आ लेखा-परीक्षणक अलग सरकारी पञ्जी छल। संगहि न्यासकेँ किछु व्यक्तिगत स्वैच्छिक दान भेटैत छल, जे अपन-अपन प्रयोजनक अनुसार उपयोग करबाक छल।

प्रबोध माथुर अपन पिताक बनाओल लकड़ीक मेजपर हाथ फेरैत कहलनि, “आब लोक पत्रकारक प्रश्न सुनिते मानि लेत जे सभ संस्था धाँधली करैत अछि।” हुनकर समक्ष रमा चौबे एक अनुबन्ध रखलीह। “हमरा भय पत्रकारसँ नहि, अपन अपूर्ण रजिस्टरसँ अछि,” ओ कहलीह। “जे कार्यशाला भऽ चुकल, ओकर सूची अछि। मुदा “दीपरेखा संचार सेवा” क बिलक एक अंश कार्यक्रम सम्पन्न हेबाक प्रमाणसँ मेल नहि खाइत अछि।” प्रबोधक माथपर पसीनाक छोट बिन्दु चमकल। “ओ सभ चारि जिलामे प्रचार-सामग्री देबाक बात कहने छल।” रमा उत्तर देलीह, “चारि जिलाक अलग चालान चाही। सभसँ महत्त्वपूर्ण, लोक एहि सामग्रीकेँ देखल कि नहि। बिल केवल देनदारीक कागज अछि; सेवा देल गेल, से प्रमाण नहि।”

सहर बानो असल मे जमीनपर कार्यशाला चलबैत छलीह। ओहि सप्ताह हुनकर दल जोधपुरक बाहरी बस्तीमे महिलासभकेँ मतदान-सूची देखबाक प्रक्रिया बुझा रहल छल। एक महिला कमला देवी पुछलीह, “मतदाता-पत्रमे नाम रहितो यदि मतदानक दिन ओहि केन्द्रपर नहि भेटल तँ की करब?” सहर ओकरा संबंधित सक्षम कार्यालयसँ पहिने जानकारी लेबाक बाट देखौलीह, किन्तु मतदाता-परिचय पत्र आ नामावलीक नियमकेँ एक नहि कहलनि। दोसर

महिला, करुणा, कहलीह जे न्यासक पुस्तिका अहाँसँ लेलहुँ, मुदा ई भाषामे किछु कठिन अछि। सहर तुरन्त नोट लिखलीह—सरल भाषाक संस्करण चाही। एहि वास्तविक काजक बीच अनुदानक पञ्जीक प्रश्न उठल तँ ओहि महिलासभक श्रम सेहो एक झटकेमे ‘दिखावटी’ कहल जा सकैत छल। सहर एकरा स्वीकार नहि करय चाहैत छलीह।

मार्चक पहिल दिन नूर न्यासक कार्यालय गेलीह। पत्रकार होयबाक परिचय देलापर प्रबोध हुनका भीतर बैसौलनि, मुदा देल गेल प्रश्नक सूची देखि असहज भेलाह। “अहाँ हमर निजी दानदाताक नाम किएक पुछैत छी?” नूर कहलीह, “राज्यक अनुदानसँ कएल कार्यक मदवार अभिलेख आ स्वयं प्रकाशित वार्षिक प्रतिवेदन माँगैत छी। निजी दानदाताक कियो देनदारी यदि कोनो सार्वजनिक अनुबन्धसँ सम्बन्धित नहि, ओकरा पहिने किएक छापब?” रमा किछु राहतक साँस लेलीह। मुदा जखन नूर दीपरेखाक भुगतानक तारीख पुछलीह, ओ बोलीह, “समझौता आ भुगतान-प्रक्रिया अलग-अलग अवस्था मे भेल। जखन पूरा फाइल तैयार होयत, उचित प्रतिलिपि देब।” नूर पुछलीह, “पूरा होयबाक तिथि?” एहि प्रश्नपर कोठरीमे टिक-टिक करैत घड़ीक आवाज भरि गेल।

नूर बाहेर निकललि तँ सहर बरामदामे भेटलीह। हुनकर हाथमे बस्तीमे इस्तेमाल कएल गेल चित्र-पत्रक छल, जाहिमे मतदान केन्द्रक रेखांकन आ दरखास्तक सामान्य सूचना छल। “ई देखू,” सहर कहलीह, “ई छपल अछि, बाँटल गेल अछि, स्त्रीसभ एहि पर प्रश्न पुछने छथि। जँ अनुदानक दू बिलक जाँच अछि, अवश्य करू। मुदा रिपोर्टमे हमर बस्तीकेँ काल्पनिक नहि लिखू।” नूर उत्तर देलीह, “हम खुद बस्ती गेलहुँ बिना किछु निष्कर्ष नहि लिखब।” सहर एक क्षण हँसलीह। “हमरा समाचारमे नायक नहि चाही; बस एतबे चाही जे जे घाममे बैसल, ओकरा छायाक कागज कहिकय नहि मेटाबू।” नूर अपन कापीमे ई वाक्य घेरि लेलनि।

एहि बीच सरबजीत कौर पंजाबक बैंक शाखामे नब अनुपालन-पत्र पढ़ि रहल छलीह। चुनावी बॉण्डक राष्ट्रीय समाचारसँ ग्राहकक प्रश्न बढ़ल छल। कियो पुछैत छल जे खाता सँ कटल सभ दान बैंककेँ सार्वजनिक करबाक अछि कि; कियो पुछैत छल जे निजी मजदूरीक भुगतानक विवरण अखबारकेँ देल जा सकैत अछि कि। सरबजीत धैर्यसँ स्पष्ट करैत छलीह जे विशेष योजना अन्तर्गत सर्वोच्च न्यायालयक आदेश आ सामान्य ग्राहक-गोपनीयताक नियम

एक नहि। बैंकक एक प्रशिक्षु कहलक, “एक बेर सूची खुलल तँ सभ खाता खुलि जायत।” सरबजीत उत्तर देलीह, “नियमक सीमा नहि बुझलासँ लोक अनावश्यक भयभीत होइत अछि। बैंक न कानूनसँ ऊपर अछि, न प्रत्येक ग्राहकक कागज सार्वजनिक सम्पत्ति।”

लुधियानामे सुनीता पासवान अपन पिताक बकाया मजदूरीक पुरान हिसाब नब रजिस्टरमे उतारि रहल छलीह। कारखानामे उपस्थिति-पञ्जी सुधारल गेल छल, मुदा अतीतक सभ बकाया एखनहुँ चुकल नहि छल। रामलखन कहला, “एहि वर्षक चुनावमे सभ नेता मजदूरक बात करै छथि।” सुनीता कहलक, “बात करनाइ आ मजदूरी देनाइ दू बात अछि। जे संगठन हमर नामपर सहायता उठाओत, ओकर पञ्जी सेहो हम देखब।” ओ किसान आन्दोलनक समय परमजीत कौरक सिखाओल प्राप्ति-रसीद याद कएलीह। मतदान, चन्दा आ वेतन तीनू अलग विधानक विषय छल; मुदा सुनीताक जीवनमे ओहि तीनू पर एकहि प्रश्न उठैत छल—कागजमे लिखल रकम जीवनमे कतय पहुँचल? दीपक, आब प्रशिक्षित लेखा-सहायक, कहलक जे अङ्क जोड़बा सँ पहिने तिथि आ खाताक अर्थ बुझल जाए। बहिन ओकरा देखि मुस्की देलक।

११ मार्चक दिल्लीक न्यायिक आदेशक समाचार आबिते नूरक समाचार-कक्षमे नब हड़बड़ी उठल। बैंकसँ निर्वाचन आयोगकेँ विवरण देबाक समय-सीमा स्पष्ट कएल गेल छल। अनिरुद्ध कहलनि, “आब नाम सार्वजनिक भऽ जायत। अपन शहरक कोनो दाताक नाम देखिते शीर्षक बनाब।” नूर प्रतिवाद कएलीह, “नाम देखिते शीर्षक बनत, मुदा आरोपक शब्द नहि। खरीदक तिथि, राशि, पार्टी द्वारा नकदीकरण आ सार्वजनिक स्रोतक अभिलेख पहिने अलग करब। सूचीमे नाम भेटलासँ अनुचित लाभक प्रमाण नहि भेटैत।” अनिरुद्ध अधैर्य भेलाह, मुदा हँसिकय कहला, “तों अखबारकेँ वकीलक दफ्तर बना देबें।” नूर शांत स्वरमे उत्तर देलीह, “अखबारकेँ अफवाहक दफ्तर बनय देब, से बेसी महँग पड़त।”

एहि तकरारक राति नूर अपन माएक संग भोजन कएलनि। माए नदीया बानो रोगक बाद धीरे चलैत छलीह, मुदा बेटीकेँ कोनो बात पर चुप रहल देखिते बुझि जाइत छलीह जे भितर संघर्ष चलि रहल अछि। ओ पुछलीह, “किछु नहि लिखब तँ नौकरी रहत?” नूर कहलीह, “लिखब, मुदा जखन हम कोनो शब्द गलत लिखैत छी तँ जे आदमी दूर अछि, ओकरा घरमे

पहिने धक्का पहुँचैत अछि।” माए अपन थारीक कात रोटी मोड़ैत कहलीह, “हम तोहर बाबाकेँ कहने रहियन्हि जे बेटीक नाम अखबारमे छपत। ओ कहने छलाह—नाम छपय, मुदा सच्चाइक कीमत पर नहि।” नूर एतेक सुनि चुप रहलीह। ओकरा अपन व्यवसायक कठिनाइ प्रथम बेर एक पारिवारिक उत्तरदायित्वक रूपमे बुझाइत छल।

१४ मार्चक साँझ निर्वाचन आयोगक वेबसाइटपर उपलब्ध विवरण देखबाक लेल अनेक लोक परदा सामने बैसल छलाह। नूर आ रिद्धि अलग-अलग फाइल डाउनलोड कएलीह। खरीद आ नकदीकरणक विवरण अलग-अलग सूचीमे छल; बिना उपयुक्त कड़ि आ तिथिक जाँचक तात्कालिक जोड़ असुरक्षित छल। रिद्धि कहलीह, “हम कोनो समान राशिक दू पाँति देखिकय एकरा एकहि लेनदेन नहि मानब।” विवेक पुछलक, “तखन जँ नाम नहि मिला पाबैत छी तँ पारदर्शिता व्यर्थ?” रिद्धि उत्तर देलीह, “अधूरा काज व्यर्थ नहि। प्रकाशित तथ्य जे कहैत अछि, से पहिने निश्चित करू। जे नहि कहैत अछि, ताहि पर नब प्रमाणक बाट खोजू।” नूर एहिसँ एक नव रिपोर्टक शीर्षक निकाललीह—‘नामक सूची आ अर्थक दूरी’।

२१ मार्चकेँ निर्वाचन आयोगक दोसर सार्वजनिक सूचना आयल, जाहिमे बैंकसँ प्राप्त अतिरिक्त विवरण सेहो प्रकाशित भेल। रिद्धि अपन पहिनुक सारणी अद्यतन कएलीह, पुराने पंक्तिसभकेँ नष्ट नहि कएलीह। प्रत्येक संस्करणक तारीख लिखि, अज्ञात जोड़केँ चिह्नित कएलीह। नूर हुनकरा पुछलीह, “एतेक संस्करण किएक रखैत छी?” रिद्धि कहलीह, “कारण जे कल्हि जँ हमर गणना गलत निकलय तँ हम बताबि सकी जे गलती कतय भेल। संशोधित सूची पुरान प्रश्नकेँ मेटाबय नहि, बुझाबय चाही।” एहि बातचीतक बीच अनुपमा झाक मैथिली लेखनक एक छोट पङ्क्ति नूरक मोनमे आयल—शब्दक मुँहपर जे उजास होइत अछि, ओकर पाछाँ कतेक अन्हार बचल रहैत अछि। ओ पङ्क्तिक शब्दशः उद्धरण नहि कएलीह; केवल भाव अपने भीतर रखने रहलीह।

ओहि राति न्यासक भवनमे रमा चौबे बैंक-विवरणक प्रतिलिपि मिलाबैत छलीह। दीर्घकालीन अनुबन्धमे ‘दीपरेखा संचार सेवा’ के प्रचार-सामग्री, चारि जिलाक प्रशिक्षण-कार्यक्रम आ प्रकाशित वार्षिक सारक व्यवस्था देल गेल छल। कुल प्रस्तावित मूल्य अठारह लाख चालीस हजार रुपैया; एतय निश्चित चरणबद्ध भुगतानक शर्त छल। रमा देखलीह जे किछु

भुगतान वास्तविक छपाईक पावतीसँ पुष्ट अछि, मुदा दू कार्यक्रमक उपस्थिति-सूचीमे एके क्रमांक दोहराओल गेल अछि। हुनका ई नहि बुझाइत छल जे ई लिपिकीय गलती अछि, सूचीक नकल अछि, वा कार्यक्रमक दावा बढ़ा देखाओल गेल। ओ आधा राति धरि गणना करैत रहलीह, फेर निर्णय लेलीह जे कोषाध्यक्षक पदमे चुप रहब अपन जिम्मेदारीसँ पाछाँ हटब होयत।

प्रबोध माथुरकेँ भोरमे रमा एक पन्नाक नोट दएलीह। नोटमे कोनो अपराधक आरोप नहि छल। चारि प्रश्न छल—प्रत्येक कार्यक्रमक स्थान, तिथि, सहभागी-सूची बनयबाक विधि, आ छपल सामग्रीक वास्तविक प्राप्ति। प्रबोध अपन चश्मा निकालि कहला, “न्यासक मान-प्रतिष्ठा खराब भऽ जायत।” रमा उत्तर देलीह, “मान-प्रतिष्ठाक रक्षा एहि चारि उत्तरसँ होयत, नोट लुकौनासँ नहि। जे भाग ठीक अछि ओकर प्रमाण रखू, जे भाग अस्पष्ट अछि ओकरा अस्पष्ट कहू।” सहर सेहो बैठकमे उपस्थित छलीह। ओ अपन बस्तीमे भेल कार्यशालाक फोटो, उपस्थितिक स्वतंत्र हस्ताक्षर आ सहभागीसभक सहमति एक फाइलमे राखलीह। “मंचपर कहल बातक कापी अछि,” ओ कहलीह, “मुदा मंचक पाछाँ ककर बिल कटैत अछि, तकर हमें जानकारी नहि।”

मार्चक अन्तमे एक गोपनीय पत्र नूर लग पहुँचल। लिफाफामे दीपरेखाक दू भुगतान-पन्नाक धुँधली प्रतिलिपि आ पेंसिलसँ लिखल एक प्रश्न छल—“चारि आयोजनक बिल, दू आयोजनक मंच?” पत्रपर हस्ताक्षर नहि छल। नूर लिफाफा जलएबाक नहि, अपन दफ्तरक सुरक्षित दराजमे रखबाक निर्णय लेलीह। ओ प्रतिलिपिक छाया आ मूल बिलक अन्तर जानैत छलीह। अनिरुद्ध पुछलनि, “सूत्र के?” नूर उत्तर देलीह, “नाम नहि मालूम। एहि लेल ई दस्तावेज सत्यापित नहि अछि।” अनिरुद्ध क्षणभरि निराश भेलाह; फेर एक छोट कागजक पाछाँ लिखलनि—“न्याससँ प्रमाणित लेखा आ कार्यक्रमस्थलक तथ्य माँगू।” नूरकेँ एहि वाक्यसँ बड़ राहत भेटल। समाचारक पीछाँ भगबाक दुपहरियोमे सत्यापनक बाट एखन बन्द नहि भेल छल।

अप्रैलक आरम्भमे जोधपुरक आकाशमे धूलि उठैत छल। नूर सहर बानोक संग ओहि बस्ती पहुँचलि जतय तीन मास पहिने नागरिक शिक्षाक गोष्ठी भेल छल। बस्तीक बीच नीमक एक

पुरान गाछ छल, जकर जड़ फूटल पत्थरक चबूतराकेँ चीरि बाहर निकलल छल। कमला देवी एहि गाछक छाँहमे बीड़ी बनबैत छलीह। नूर अपना पत्रकार हेबाक बात कहिते ओ अपन पड़ोसिनकेँ बजौलीह। “अहाँ सभ गोष्ठीमे बैसल रही?” नूर पुछलीह। कमला कहलीह, “बैसल रही, दू पहर छल। नामावलीक विषयमे पुछलहुँ, एक फॉर्म भरलहुँ, पुस्तक भेटल। जे नहि बुझलहुँ तकरा फेर बुझौलनि।” नूर हुनकर अनुमति लऽ तारीख लिखलीह। “चारि अलग कार्यक्रम भेल?” कमला माथ हिलौलीह। “हमरा देखल केवल दू। बाकी ठामक खबर नहि।” एहि छोट उत्तरमे आरोपक सीमा आ गवाहीक मूल्य दुनू छल।

ओहि बस्तीमे रुखसाना नामक दर्जिन रहैत छलीह। हुनकर सिलाई मशीनक पैडल डोलैत रहैत छल, जखन ओ बोलैत छलीह। “हमरा कार्यक्रमक बाद पाँच दिनक काम भेटल,” ओ कहलीह, “चित्रवला थैला सीबाक। ठेकेदार अलग आदमी छल। भुगतान पूरा भेटल, मुदा बिलपर जे कम्पनीक नाम अछि से नहि जानैत छी।” नूर हुनका तिथि स्मरण करय कहलनि। रुखसाना अपन बेटीक विद्यालयक परीक्षा-तिथिसँ मिलाकय दिन गनलीह। ‘ई अप्रैल नहि, फरवरीक अन्तिम सप्ताह छल,’ ओ सुधार कएलीह। नूर अपन पहिल नोटमे लिखल तारीख काटि, सुधारक कारण दर्ज कएलीह। एक पत्रकार लेल ई छोट कटान महत्त्वपूर्ण छल: साक्षी अपन स्मृतिकेँ सटीक बनौलनि, रिपोर्टर ओकरा इच्छानुसार ढाललक नहि।

दोपहरमे नूर दीपरेखाक दफ्तर गेलीह। कार्यालय शहरक व्यवसायिक भवनक दोसर तलपर छल, सामने कंप्यूटर पर छपल रंगीन नमूनासभ टाँगल छल। संचालक अरुण भारद्वाज मुलायम स्वरमे स्वागत कएलनि। “हमरा कम्पनी पर अचानक प्रश्न किएक?” ओ पुछलनि। नूर अनुबन्धक सामान्य विषय बतौलीह, जाहिमे कोनो गोपनीय दस्तावेजक पन्ना नहि देखौलीह। अरुण कहला, “सभ काज एकहि कार्यालयसँ नहि होइत। स्थानीय उपठेकेदारक मदद लैत छी। फोटो सभ उपलब्ध अछि।” नूर पुछलीह, “कार्यक्रमक तारीखक पुष्टि आ सामग्री देनिहारक नाम देब?” अरुण कहला, “बैंकक आ कम्पनीक किछु अभिलेख व्यावसायिक गोपनीयता अन्तर्गत छथि। मुदा कार्य सम्पन्न भेल, एतबा लिखित उत्तर देब।” नूर अपन कार्ड राखि कहलीह जे प्रकाशनसँ पहिने उचित समय धरि उत्तरक बाट देखतीह।

दीपरेखाक कनिष्ठ कर्मचारी बीरम देवड़ा दू गिलास पानि लऽ आयल। ओ कार्यालयमे केवल एक वर्षसँ काज करैत छलाह। हुनकर नजर कम्प्यूटरक स्क्रीनसँ हटैत नहि छल। अरुण बाहर गेलापर बीरम छोट स्वरमे कहलनि, “फोटो-सूचीमे किछु छवि दुबारा इस्तेमाल भेल अछि।” नूर तुरन्त पुछलीह, “ककर?” बीरम सकुचा गेलाह। “नहि बुझैत छी, हम केवल एल्बम बनबैत छी। दू पोस्टरमे एक फोटो छल, पर कार्यक्रम कोनो एक दिनक भऽ सकैत अछि।” नूर कहलनि, “अहाँ जँ अपन अनुभव लिखित देब चाही तँ हम पढ़ि सकैत छी; मुदा अहाँकेँ दबाव नहि देब।” बीरम उत्तर नहि देलनि। ओ दराज बन्द कएलनि आ अपन काजमे लागि गेलाह। पाछाँ घुरैत नूर स्वयंकेँ रोकलीह—एक असहज कर्मचारीक चुप्पीकेँ स्वीकारोक्ति बनबेनाइ सहज होइत अछि, मुदा अन्यायपूर्ण।

न्यासमे रमा चौबे एहि बीच राज्यक अनुदान विभागकेँ पंजीकृत पत्र लिखलीह। पत्रमे उल्लेख छल जे न्यासक खर्चक किछु मदपर आन्तरिक मिलान शेष अछि; भुगतानक अगिला किस्तक अनुमोदनसँ पहिने स्वतंत्र परीक्षण चाही। प्रबोध माथुर एहन पत्रसँ असहमत छलाह। “सरकारी निरीक्षण आएत तँ काज रुकि जायत,” ओ कहला। रमा कहलीह, “एखन लिखब तखन आयल निरीक्षणक तिथि आ समय दर्ज रहत। पाछाँ जखन राशि लुप्त होयत तखन अहाँ कहब जे हमरा पूर्व सूचना नहि छल।” सहर बानो दूनूकेँ कहलीह, “हम बस्तीमे कक्षा बन्द नहि करब, मुदा कक्षा चलाबय लेल भाड़ाक कुर्सी आ पुस्तकक पैसा चाही। एहि जाँचसँ श्रमजीवी शिक्षिकाक भुगतान नहि अटकाउ।” रमा ओहि अनुरोधपर अलग सूची बनौलीह—उचित पावतीवला बकाया, विवादित बिल, आ भविष्यक प्रस्ताव।

छात्रसभक एक समूह राज्यक नागरिक-शिक्षा विभागमे सूचना-अधिकारक आवेदन देलक। रिद्धि विश्नोई आवेदनक शब्द सँ सावधान छलीह। ‘हम निजी न्यासक प्रत्येक व्यक्तिगत दाता-कागज नहि माँगैत छी,’ ओ स्पष्ट कएलीह, “सरकारी विभागक स्वीकृति-पत्र, निर्गत किस्त, निगरानी प्रतिवेदन आ उपयोगिता-पत्रक उपलब्ध प्रतिलिपि माँगैत छी।” विवेक चाहैत छल जे आवेदनमे ‘धोखाधड़ी’ शब्द लिखल जाए। रिद्धि ओकरा बुझौलीह—“सूचना मँगबाक आवेदन आरोपपत्र नहि होइत अछि। जे रिकॉर्ड वास्तवमे सरकारी विभागमे अछि, ओकरा पहिने देखू।” आवेदनक पावती भेटिते विवेक तसल्लीसँ कहलक, “एखन उत्तर आवत।” रिद्धि उत्तर देलीह,

“उत्तर नहि अएल तँ पहिल अपीलक मार्ग अछि। समय-सीमा चुकला पर लेखा स्वयं सिद्ध नहि भऽ जाइत।”

एक साँझ नूर रेवती झाकेँ फोन कएलीह। ओ अपन कहानी सुनौलीह, मुदा स्रोतक धुँधला पन्ना देखिकय ककरो गिरफ्तार करएबाक प्रश्न नहि उठौलीह। रेवती कहलीह, “न्यासक साथ राज्यक अनुबन्धक विवरण सरकारी अभिलेख अछि कि नहि, पहिने तय करू। उपठेकेदारक निजी व्यवहारक सीमा अलग अछि। जँ कोनो कम्पनी कामक भुगतान माँगि दीवानी मुकदमा करैत अछि, ओतय अनुबन्धक पालनक प्रमाण लागय सकैत अछि। मुदा पत्रकारिताक प्रश्न लेल अदालतकेँ सभ तथ्य खोजबाक औजार मानब ठीक नहि।” नूर पुछलीह, “आ जँ कोनो पक्ष हमरा रिपोर्ट रोकबाक धमकी दे?” रेवती उत्तर देलीह, “तखन प्रकाशित करबाक वस्तु, ओकर प्रमाण, उत्तर देबाक अवसर आ मानहानिक जोखिमक सही मूल्यांकन करू। कानूनक सहारा लेल जा सकैत अछि; डर वा उत्साह दूनूमे निष्कर्ष नहि लिखू।”

नूरकेँ रेवतीक ई संयम अचरजक नहि लगल। वर्षसभ पहिने रेवतीक मुम्बईक मुकदमामे एक गोदामक प्रविष्टि देखिकय सभ अपराध सिद्ध मानबाक गलती किछु लोक कएने छलाह; तखन रेवती कोनो आरोपितकेँ स्वतः निर्दोषो नहि ठहरौने छलीह। नूर अपन नोटबुकक पहिल पन्नापर ‘अलग घटना, अलग प्रमाण’ लिखि देलीह। मुदा हुनकर सम्पादक अनिरुद्ध एतेक धीरे चलनाइ पसन्द नहि करैत छलाह। खबरक बाजारमे घोषणा पहिले, शुद्धि पछाति अबैत छल। एक दिन ओ स्पष्ट कहलनि, “जँ हमरा लेल खबर नहि एने तऽ हम दोसर पत्रकार भेजब।” नूर मुँहपर पल भरि कठोर भाव आनलीह, फेर कागज समेटलीह। “भेजू,” ओ कहलीह, “मुदा हम जे देखल नहि अछि, ओकरा देखल कहि नहि सकैत छी।” अनिरुद्ध ओहि दिन हुनका रोकलनि नहि; दोसर दिन फेर एक कार्य देलनि।

अप्रैलक मध्यमे चुनावी रैलीसभक आवाज शहरसँ गाम धरि पहुँचैत छल। घरक छतपर अलग-अलग दलक झण्डा लागैत, मुदा जे लोक झण्डा लगबैत छलाह, हुनकरा सभक प्रश्न एक नहि छल। हरनामपुरमे जसप्रीत कौर कृषि-खर्चक पञ्जी देखबैत कहलीह, “हमरा गामक किसानक मत अलग रहत। ककरो मूल्यक भरोसा चाही, ककरो सिंचाइ, ककरो खेतिहर मजदूरक मजदूरी।” गुरनाम सिंह एक दलक घोषणापत्र पढ़ैत छलाह, मनप्रीत दोसर दलक।

दूनू पुछैत छलाह जे राजनीतिक दलक धनक स्रोत जाननाइ मतदाताकेँ कतेक सहायक होयत। जसप्रीत जमीनपर खसल गेहूमक दाना उठाकय कहलीह, “जे आदमी दान देत से अपन विचारसँ दऽ सकैत अछि। प्रश्न ई अछि जे जे सरकार बनत, ओ समस्त नागरिकक प्रति जवाबदेह रहत कि केवल निकटवर्तीक प्रति।”

कुसुमक पिता अपन खेतक पानि-निकासक पुरान विवादमे उच्च न्यायालयक सीमित निर्देश पछातिओ राजस्व निरीक्षकक बाट देखैत छलाह। कुसुम हुनकरा चुनावी बॉण्डक निर्णय बुझौलीह तँ ओ कहला, “देशक धनक स्रोत जानबाक अधिकार कतेक पैघ बात अछि। मुदा हमर खेतक नापी-पत्र आज धरि किएक नहि भेटल?” कुसुम उत्तर देलीह, “दूनू काजक अधिकारी अलग छथि। मुदा सार्वजनिक अभिलेखक प्रश्न दूनू ठाम अछि।” पिता अपन झोरामे सुरक्षित पगरियाक पुरान नक्शा देखौलक। “ई पढ़ि सकैत छेँ?” कुसुम कहलि, “पढ़ि सकैत छी। मुदा एहि एक नक्शासँ सम्पूर्ण अधिकार सिद्ध नहि भऽ जाइत।” पिता मुस्कुरौलनि—“आब तों सेहो अपन वकील बहिन जेकाँ कहैत छेँ।” कुसुम जानैत छलि जे सावधानीक भाषा घरमे कतेक कठिन सुनाइत अछि।

दीपरेखाक कम्पनी ओहि समय न्यासकेँ चौथ चरणक भुगतानक माँग भेजलक। माँग मे लिखल छल जे सभ सामग्री समयपर उपलब्ध कराओल गेल अछि, अतिरिक्त कार्यक्रमक प्रचार डिजिटल माध्यमसँ सम्पन्न भेल। रमा चौबे उत्तरमे चारि प्रश्न दोहरौलीह, संगहि जतेक काजक स्वतंत्र प्राप्ति-पत्र भेटल, तकरा आधारपर आंशिक भुगतानक प्रस्ताव देलीह। अरुण भारद्वाज फोनपर क्रुद्ध भेलाह। “हमर कम्पनीक प्रतिष्ठा खराब करबाक षड्यंत्र अछि,” ओ कहला। रमा कहलीह, “अहाँ जे वास्तविक वस्तु देलहुँ ओकरा लेल देनदारी सँ भागैत नहि छी। मुदा जे सूचीमे छाया-मात्र अछि, ओकरा वस्तु मानेबाक दबाव नहि लिअ।” अरुण चेतावनी देलनि जे कम्पनी कानूनी उपाय अपनाओत। रमा उत्तर देलीह, “अनुबन्धक मूल प्रति आ दुनू पक्षक पावती सुरक्षित अछि। प्रक्रिया अपनाउ।” फोन राखिते हुनकर हाथ काँपि रहल छल, मुदा नोटबुकमे प्रत्येक शब्द दर्ज कएलनि।

नूर एक अप्रत्याशित व्यक्ति सँ भेटलीह—अनुपमा झा। मैथिली लेखिका अनुपमा शहरमे साहित्यिक गोष्ठी लेल आएल छलीह। हुनकर सभासँ निकलि छात्रसभ न्यासक नागरिक-

शिक्षाक पुस्तिका देखौलक। अनुपमा एहि पुस्तिकाक भाषामे ‘प्रजाक जानकारीक अधिकार’ सन भारी पद देखिकय कहलीह, “गामक महिलासँ पुछू जे “सूचना” शब्द ओकरा कतेक बुझाइत अछि; लोक कियो हमरो भाषा नहि बुझत तँ अधिकारक पन्ना दूर रहि जायत।” नूर हुनकरा रिपोर्टक उलझन सुनौलीह। अनुपमा कहलीह, “साहित्यकार लेल झूठक मुक्ति अछि, कारण उपन्यास खुल्लमखुल्ला कल्पना कहैत अछि। पत्रकार लेल लोक घटनाक सत्य भरोसे पढ़ैत अछि। मुदा उपन्यासकारो ककरो वास्तविक नामक अपराध कल्पनाक आड़मे नहि जोड़य चाही।” नूर एहन टिप्पणी पर हँसलीह। “तँ एकर समाधान?” “एकहि आदमीमे सहानुभूति आ प्रश्न दुनू राखू,” अनुपमा उत्तर देलीह।

मतदानक पहिल चरणक दिन शहरक पैघ सड़कपर मतदाताक शान्त पाँति लागल छल। रिद्धि बूढ़ी माएक संग मतदान केन्द्र गेलीह। माएक हाथ काँपैत छल; हस्ताक्षरक स्थानपर ओ धीरे-धीरे अपन नाम लिखलीह। बाहेर निकलिते माए कहलीह, “हम जकरा मत देलहुँ, ओकरा नाम अहाँ नहि पुछब?” रिद्धि हँसलीह—“नहि। मत गोपनीय अछि। मुदा दलक वित्तीय स्रोतक सार्वजनिक विवरणपर प्रश्न पुछब अलग बात अछि।” माए अपन झोरा सँ पान निकालि कहलीह, “तैँ गोपनीयता आ जानकारी, दूनू अधिकार एकहि घरमे रहि सकैत अछि।” रिद्धि एहि साधारण वाक्यकेँ अनुसंधानक दीर्घ लेखसँ बेसी साफ बुझलीह। नूर बादमे सुनलीह तँ ओ सोचलीह जे लोकतन्त्रक कतेक सिद्धान्त मतदान केन्द्रक फाटक लग बिना कठिन शब्दक प्रकट होइत अछि।

राज्य विभागसँ सूचना-अधिकारक पहिल उत्तर आएल तँ रिद्धि ओहि कागजकेँ तीन बेर पढ़लीह। स्वीकृति-पत्र आ पहिल किस्तक विवरण मिलल, मुदा उपयोगिता-प्रमाणक किछु संलग्नक ‘जाँच जारी’ कहिकय नहि भेजल गेल छल। विभागक उत्तरमे लागू अपवादक विशिष्ट कारण स्पष्ट नहि छल। विवेक तमतमाकय कहलक, “ई सभ जानि-बूझि लुकबैत अछि।” रिद्धि कहलीह, “होय सकैत अछि कि कागज विभागक पास एखन नहि अछि, कि अधिकारिक कारण पर रोका गेल अछि, कि उत्तर अधूरा अछि। लिखित कारण माँगब।” ओ निर्धारित प्रक्रियाक भीतर प्रथम अपील दाखिल कएलीह। अपीलमे निजी नागरिकक बैंक विवरण नहि,

उपयोगिता-पत्रक सार्वजनिक हिस्साक उपलब्धता पर प्रश्न छल। ओ अपन लेखमे एखन ‘अभिलेख रोकेल गेल’ नहि, ‘उत्तर अधूरा भेटल’ लिखलीह।

न्यासक सभामे प्रबोधक पुरान सहकर्मी रामस्वरूप मेहता कहला जे पत्रकारिता आ सूचना-अधिकारक दबावमे न्यास शिक्षा छोड़ि केवल हिसाब करत। सहर बानो हुनका उत्तर देलीह, “हिसाबक नामपर शिक्षा बन्द करब तँ लाभ उठबैत लोकक हानि होयत। शिक्षा करबाक नामपर हिसाब बन्द करब तँ विश्वासक हानि होयत। दुनूकेँ एक दोसराक शत्रु नहि बनाउ।” ओ सँघर्षक एक उदाहरण देलीह: बस्तीमे करुणाक बेटी कॉलेज प्रवेश लेल ऑनलाइन फार्म भरय नहि पाबि रहल छलि। गोष्ठीक सहायक ओकरा फॉर्म भरबा मदति कएने छल। एहि सहायताक मूल्य नकद बिलमे छोट छल; करुणाक घरमे एकर अर्थ बहुत पैघ। मुदा सहर ई नहि चाहैत छलीह जे एक सही काजक बहाने चारि काल्पनिक कार्यक्रमक बिल चुकाएल जाए। सभा पहिल बेर हुनकर एहि दुइ-कठिन तर्क पर चुप रहल।

अरुण भारद्वाज अन्ततः स्थानीय दीवानी न्यायालयमे कम्पनीक शेष अनुबन्धित भुगतानक वसूली लेल वाद प्रस्तुत कएलनि। दावामे कम्पनी अपन डिलिवरी चालान, ईमेल आ छपाईक पावती जोड़लक; न्यास उत्तरपत्रमे वास्तविक प्राप्त सामग्रीक अंश स्वीकार करैत बाकीक दावापर आपत्ति उठौलक। न्यायालयक दुआरि खुलिते रमा चौबेकेँ नूर फोन कएलीह। “ई मुकदमामे अहाँ गवाह बनब?” रमा कहलीह, “जे मूल कागज हमर जिम्मामे अछि, ओकरा सम्बन्धमे जँ अदालत बजौत तँ जएब। मुदा पत्रकारक प्रश्नक उत्तर न्यायालयक परिणामसँ पहिने भी देबाक अछि।” नूर मुकदमाक ब्योरा लिखलीह, मुदा कार्यवाहीक प्रारम्भिक अवस्थाकेँ न्यायालयक अन्तिम निर्णय नहि कहलनि। अरुणक दावा कागजपर आ न्यासक असहमति कागजपर—एखन दूनू पक्ष सुनेबाक बाँकी।

दीवानी न्यायालयक पहिल तारीखपर अरुण उपस्थित नहि भेलाह, कम्पनीक अधिवक्ता गिरिराज तंवर उपस्थित छलाह। न्यासक ओरसँ ललिता चौहान नामक अधिवक्ता छलीह, रमा संगमे छलीह। न्यायाधीश पहिने देनदारीक विवादित परिमाण स्पष्ट करबाक कहलनि। गिरिराजक अनुसार कुल अठारह लाख चालीस हजारक अनुबन्धमे एगारह लाख पचास हजार प्राप्त भेल, शेष राशि बकाया। ललिता कहलीह जे प्राप्त रकममे किछु अग्रिम छल, किछु

समायोजन; वास्तविक विवाद चारि अलग मदक सेवापूर्तिक अछि। न्यायाधीश पुछलनि, “जतबा सेवा स्वीकार कएल गेल, ओहि हिस्साक भुगतानपर कोनो विवाद अछि?” रमा कागज देखिकय उत्तर देलीह जे दू छोटे बिलक समायोजन पर सहमति बनि सकैत अछि। अदालत एहन स्वीकार्य अंशक मिलानक अवसर देलक, शेष प्रमाणक सूचीक अगिला तारीख राखलक।

सुनबाईक बाद ललिता रमा कैँ सचेत कएलीह, “मुद्दईक वसूली-विवादकेँ लोकसभा चुनावक सन्देहसँ नहि जोड़ू। एहिमे कम्पनीक सेवा-प्रदानक प्रमाण निर्णायक रहत। जँ कियो राजनैतिक चन्दासँ सम्बन्ध उठबैत अछि, ताहि लेल अलग विश्वसनीय तथ्य चाही।” रमा कहलीह, “हमरा तऽ अपन अनुदानक खर्च साफ करब अछि।” ललिता उत्तर देलीह, “तखन ओही पर टिकू। अदालतमे जतेक कागज अछि ओहीपर बोलू; पत्रकारक सम्भावना आ जनताक प्रश्न अपन-अपन मार्गसँ चलत।” ललिताक घरमे छोट बेटा परीक्षा देबाक तैयारी करैत छल, आ ओ एहि मुकदमाक शुल्क सँ ओकर किताबक खर्च चलबैत छलीह। विधिक विवेक हुनका लेल कोनो कोठरीक विलासिता नहि, दैनिक पेशाक शर्त छल।

मईक धूप तेज भेल तँ नूर अपना अखबारमे पहिल विस्तृत रिपोर्ट लिखलीह। शीर्षक छल —‘सार्वजनिक चन्दाक जानकारी आ स्थानीय अनुदानक जवाबदेही: दू अलग प्रश्न’। पहिल भागमे सर्वोच्च न्यायालयक निर्णयक तारीख, निर्वाचन आयोगक अभिलेख प्रकाशनक क्रम आ राजनीतिक समर्थनक वैध पक्ष छल। दोसर भागमे स्थानीय न्यासक सरकारी अनुदान, वास्तविक कार्यशाला, अधूरा मिलान आ कम्पनीक दीवानी दावाक विवरण। नूर जानि-बूझिकय लिखलीह जे दुनू विषयकेँ एकहि अपराधक आरोपमे जोड़बाक कोनो पुष्टि हुनका लग नहि अछि। अनिरुद्ध शीर्षकमे ‘घोटाला’ शब्द जोड़बाक प्रस्ताव कएलनि; नूर प्रतिवाद कएलीह। अन्ततः कर्तव्य-संपादक शीर्षक मूल रूपमे रखलनि। अखबार छपिते नूरक हाथमे स्याही लगल आ ओकरा लगल जे बहुत दिनक सावधानी आब पाठकक कठोर परीक्षणमे गेल।

रिपोर्ट पछाति प्रतिक्रिया दू दिशासँ आयल। किछु पाठक नूरकेँ साहसी कहला; किछु कहला जे नाम छापने बिना रिपोर्ट कमजोर अछि। न्यासक किछु स्वयंसेवक आश्वस्त भेलाह जे ओकर मेहनतकेँ काल्पनिक नहि कहल गेल। मुदा अरुण भारद्वाज पत्र लिखलनि जे कम्पनीक

सेवापूर्ति विषयमे प्रकाशित शंका अनुचित अछि आ हुनका पूरा उत्तर छापयबाक अवसर देल जाए। नूर पत्र ध्यानसँ पढ़लीह। पत्रमे चारि कार्यक्रमक दावा छल, मुदा कार्यक्रमस्थल आ तिथिक पूर्ण अभिलेख नहि। ओ सम्पादक सँ कहलनि जे पत्रक तथ्यात्मक अंश प्रकाशित करब आ अनुपलब्ध अभिलेखक प्रश्न सेहो लिखब। अनिरुद्ध पुछलनि, “विरोधी पत्र छापलासँ रिपोर्ट कमजोर नहि पड़त?” नूर उत्तर देलीह, “जँ रिपोर्ट उत्तर सुनलासँ कमजोर पड़ैत अछि, तँ ओकरा मजबूत कहबाक आधार की?”

दिल्लीमे जूनक चारिम दिनक मतगणना आरम्भ भेल तँ समाचार-कक्ष फेर भीड़सँ भरल। लोकसभाक परिणाम राजनीतिक बहसक नब चरण खोललक; सरकार-गठन आ विपक्षक स्थिति पर विभिन्न मत रहैत छल। नूरक अखबारमे सरकारी नीतिक समर्थक आ आलोचक दुनू लिखैत छलाह। नूर अपन लेखमे कोनो दलक समर्थक बनबाक आदेश नहि मानलीह। ओ कहलीह, “चुनावक परिणाम लोकतान्त्रिक जनादेश अछि। मुदा सरकारी व्ययक अभिलेखक प्रश्न परिणामक संग समाप्त नहि होइत।” अनिरुद्ध अपन कुर्सी सँ उठि खिड़की लग गेलाह। “अहाँ हर समाचारकेँ एकहि वाक्यमे लौटा दैत छी—कागज देखू।” नूर उत्तर देलीह, “कागज नहि रहत तँ हमर मत केवल हमर मत रहि जायत। जनता हमर मत नहि, जाँचल समाचार माँगैत अछि।”

ओहि जूनक साँझ अवनि बेंगलुरुसँ फोन कएलीह। छात्रवृत्ति-परीक्षाक अभ्यास-पत्रमे देखल विशिष्ट गलत विकल्पक प्रश्न एखन स्वतंत्र जाँचमे छल। “नूर दीदी, हमरा कापीक एक अंशक फोटो बाहेर कोना गेल, से हम नहि जानैत छी। किछु लोक कहैत अछि जे सभ परीक्षा बिकैत अछि,” अवनि कहलक। नूर उत्तर देलीह, “अहाँ जाहि फोटोकेँ अपन आँखिसँ देखलहुँ, ताहि पर तिथि, मूल फाइल आ पहुँच-सूचीक प्रश्न पुछू। एक घटनासँ सभ परीक्षा सम्बन्धी निर्णय नहि कएल जा सकैत।” अवनि कहलक, “हमरा डर अछि जे जँ कियो प्रश्नक वास्तविक प्रति देखल अछि तँ मेहनती छात्रक हानि होयत।” नूर ठहरि कहलीह, “डरकेँ छोट नहि कहब। मुदा डरक अगिला काम अभिलेख जुटेनाइ अछि।” एहि फोनक पश्चात् नूरक कापीमे एक नब पन्ना खुलल—परीक्षा-शुचिताक प्रश्न, जे ओकर चुनावी वित्तक रिपोर्टसँ सर्वथा अलग छल।

जुलाईमे वर्षाक पहिल तेज झड़ी जोधपुरक गरम पत्थरकेँ ठण्ढा करि गेल। न्यासक छोट गोदामक छतसँ पानि टपकैत छल। सहर बानो चारि स्वयंसेवक संग पुस्तिकाक पेटी ऊपर उठा रहल छलीह। पेटीक कात लाल स्याहीसँ लिखल छल—‘पहिल चरण: छः सय प्रति’। रमा चौबे पेटी खोलिकय गिनती कएलीह। भीतर तीन सय पचास प्रति बचल छल, बाँटल गेल प्रति लेल अलग वितरण-पञ्जी छल। ओ दोसर पेटी देखलीह। ओकरा पर दोसर चरण लिखल छल, मुदा भीतर पहिल चरणक समान मुद्रण-वर्षक पुस्तक छल। सहर कहलीह, “ई अतिरिक्त प्रति होयत। अहाँ एकरा दोसर छपाईक प्रमाण नहि मानू।” रमा कापीमे लिखलीह —‘समान सामग्री; अलग आपूर्तिक प्रमाण आवश्यक’। गोदामक खसैत पानि सँ दुनूक कपड़ा भीजि गेल; एहन कठिन काजक बीच सम्मान आ शक दूनूकेँ एकसाथ सम्हारबाक छल।

सहरक सहायक कैलाशी भील ओहि दिन अपन छोट बेटीकेँ संग लएने आएल छलीह। विद्यालय बन्द छल, तइयो ओहि बेटीक कापीमे बहुत सुघर अक्षर छल। कैलाशी पुछलीह, “बहीमे नाम ककर लिखू? जे पोस्टर हमरा हाथमे बाँटल गेल, तकर बिल कम्पनीक, मजदूरी हमर?” रमा कहलीह, “दूनू अलग लिखू। अहाँक मेहनताना आ सामग्रीक मूल्य एकहि भुगतान नहि।” कैलाशी कहलीह, “हमरा तीन दिन लेल भुगतान भेटल; चौथ दिन निःशुल्क काज कएलहुँ। पोस्टरक नामपर जे बड़ी राशि देखैत छी, ओहि दिनक कियो अलग हिसाब अछि?” रमा पहिल बेर विचार कएलीह जे वित्तीय प्रतिवेदनमे बड़े मुद्रणक वस्तु देखाइत अछि, मुदा श्रमिकक समय ओहि अनुपातमे अदृश्य रहैत अछि। ओ कैलाशीक भुगतान-पावतीक प्रतिलिपि रखलीह आ स्वयंसेवाक दिनकेँ अलग उल्लेख करबाक आश्वासन देलीह।

राज्य सूचना-अधिकारक प्रथम अपीलक उत्तर सेहो आबि गेल। प्राधिकृत अधिकारी स्वीकृति आ किस्त सम्बन्धी उपलब्ध अभिलेखक अधिक स्पष्ट प्रतिलिपि देबाक निर्देश देलनि; जाँचक अधीन रहल किछु संलग्नक सम्बन्धमे कारणयुक्त उत्तर आ आवश्यक स्थानपर वैधानिक विलोपनक विवेचना अपेक्षित बताओल गेल। रिद्धि एहि उत्तरकेँ अपन विजयक घोषणापत्र नहि बनौलीह। ओ कहलीह, “हमरा जे भेटल अछि, से प्रक्रिया सुधारबाक एक आदेश अछि। शेष सामग्रीक लिये अगिला उचित मंचक मार्ग खुलल अछि।” विवेक पुछलक, “तखन आजुक साँझ सभा किएक?” रिद्धि मुस्की देलक, “सभा एहि लेल जे जे कागज

भेटल, ओकरा लोक कोना पढ़त सीखय। खाली कागज धरि पहुँचब पर्याप्त नहि, ओकर अर्थ बुझबो चाही।”

ओहि सभामे फिरदौस कौल अभिलेखक विश्वसनीयतापर छोट पाठ देलीह। ओकरा समक्ष तीन छवि छल—मूल डिजिटल पावतीक निर्यात, फोनपर पठाओल काटल चित्र आ अखबारक लेल बनेल ग्राफ। “ई तीनू एकहि वस्तु नहि,” ओ कहलीह। “प्रथमक स्रोत-सूचना मिलय सकैत अछि; दोसरामे क्रम आ परिप्रेक्ष्य छूटल अछि; तेसरामे गणनाक नियम जानल जाए।” एक छात्र पुछलक, “ग्राफ झूठ होइत अछि?” फिरदौस उत्तर देलीह, “ग्राफ अपने-आप झूठ नहि। मुदा जे गणनाक पद्धति बतौल नहि गेल, ओकरा जाँचबाक बाट संकीर्ण होइत अछि।” कुसुम दुआरि लग बैसि सुनैत छलीह। मनस्वी अपन निजी अभिलेखक पुरान अनुभव याद करैत कहलीह, “कागज सार्वजनिक होयबाक अधिकार आ व्यक्तिगत जीवनक अकारण अनावरण एकहि बात नहि।” सभाक अन्तमे लोकसभक प्रश्न समाप्त नहि, मुदा अधिक स्पष्ट भेल।

अगिला दीवानी सुनबाईमे दीपरेखाक दावाक किछु मूल बिल प्रस्तुत भेल। एकपर मुद्रणालयक छाप स्पष्ट छल, दोसरापर छपल क्रमांक धुँधला। गिरिराज तंवर कहला जे कम्पनी उपठेकेदारकेँ काम देने छल, एहि कारण सभ डिलिवरी चालान मुख्य कम्पनीक नामपर नहि अछि। ललिता चौहान अदालतकेँ देखौलीह जे न्यासक वितरण-पञ्जी किछु आपूर्ति स्वीकार करैत अछि, मुदा दू निर्दिष्ट आयोजनक आयोजनस्थल, तिथि आ सेवा-प्राप्तिक प्रमाण विवादित अछि। न्यायाधीश दूनूकेँ मूल अभिलेखक समुचित निरीक्षणक अवसर देलनि; प्रमाणिकता अथवा सेवा-अपूर्तिक अन्तिम प्रश्न विचारण लेल छोड़ि देलनि। न्यायालय एहि प्रक्रियामे चुनावी बॉण्डक राजनीतिक प्रश्नपर कोनो निष्कर्ष नहि देलक, किएक तँ ओ मुकदमाक वादविषय नहि छल।

गिरिराज बाहर निकलिते ललिताकेँ कहला, “अहाँक पक्ष किछु सेवा स्वीकार कएने अछि; तखन पूरा बिलक विरोध अनुचित लगैत अछि।” ललिता उत्तर देलीह, “जतबा स्वीकार, ततेक देनदारीक समुचित हिसाब बनत। मुदा अनुबन्धमे जे कार्य परिमाण लिखल अछि, ओकरा प्रमाणक बिना पूरा रकम देबाक प्रश्न नहि उठत।” गिरिराज क्षणभरि चुप रहलाह। “हमर

मुवक्किल कहैत अछि जे कार्यक्रमक ऑनलाइन पहुँच सेहो मापल गेल छल।” ललिता कहलीह, “तखन डिजिटल रिपोर्टक स्रोत, तिथि आ मापन-विधि प्रस्तुत करू। ऑनलाइन दर्शकक संख्या आ वास्तविक प्रशिक्षणार्थीक संख्या समान नहि।” दूनू वकील प्रतिद्वन्द्वी छलाह, मुदा एक-दोसराक तर्क सुनबाक शिष्टता बचल छल। अदालतक सीढ़ीपर ई छोट सभ्यता आसपासक नाराबाजीसँ अलग लगैत छल।

अरुण भारद्वाज राति अपन दफ्तरमे बजट देखैत रहला। हुनकर कम्पनी महामारीमे बहुत अनुबन्ध हरा देने छल, आ ओहि घाटाक भार एखनहुँ बाकी छल। एक कर्मचारीक घरमे बीमार माय छलीह, दोसराक मासिक वेतन देरीसँ पहुँचैत छल। अरुणकेँ लगैत छल जे यदि शेष बिल रोकल गेल तँ पूरा कार्यालय बन्द भऽ सकैत अछि। मुदा ओकरा ई सेहो बुझाइत छल जे घाटाक व्याख्या अपूर्ण डिलिवरीक स्वतः प्रमाण नहि बनैत। ओ बीरम देवड़ाकेँ बजाकय पुरान फोटो-एल्बमक मूल फोल्डर देखबाक कहलनि। बीरम कहला, “ई फोटो कैँ हम दू प्रचार-पोस्टरमे रखलहुँ, कारण अलग चित्र उपलब्ध नहि छल। एहि कारण दू कार्यक्रम भेल नहि, से निष्कर्ष नहि; मुदा फोटो अपन-आप दुनूक प्रमाण सेहो नहि।” अरुण एहि वाक्यपर खिन्न भेलाह। “तोहर काम फोटो बनायब छल, तर्क नहि।” बीरम उत्तर नहि देलनि। ओकरा पहिल बेर बुझल जे एक साधारण कर्मीक सही वाक्य मालिकक चिन्तासँ टकरा सकैत अछि।

अगस्तमे नूर लग एक नव पर्ची पहुँचल। ई पहिल अनाम लिफाफासँ अलग छल। एहि पर बैंकक चारि अङ्क, एक प्रचार-प्रस्तावक तिथि आ ‘एच. चौहान’ नामक हस्ताक्षर-जेकाँ चिन्ह छल। रिद्धि देखिकय कहलीह, “नामक दू अक्षरसँ व्यक्ति निर्धारित नहि होयत। एतय हरदेव चौहान सेहो होय सकैत छथि, होर कियो सेहो। हमर पुरान मजदूरी-पञ्जी आ किसान संगठनक प्रचार-प्रस्तावमे जकर उल्लेख छल, तकर संग नामक समानता मात्र पर्याप्त नहि।” नूर पत्र तुरन्त सुनीताकेँ नहि पठौलीह। ओ सोचलीह जे हरदेवक नाम पहिनहि कतिपय अस्पष्ट लेखामे आयल; हर अस्पष्ट पन्ना ओकर नामपर लादब अनुचित होएत। ओ पर्चीकेँ ‘अप्रमाणित’ लिखि अलग लिफाफामे राखलीह।

सुनीता अपन पुरान रजिस्टरमे सन् २००९ क मजदूरी-पञ्जीक दू पाँति देखैत रहलीह। एक नाम बहु मास कारखानामे नहि काज केनिहार व्यक्तिक जेकाँ छल, मुदा कंपनीक अभिलेखमे

देखाइत छल। ओहि विवादक अन्तिम कानूनी अर्थ एखन निश्चय नहि भेल छल। जखन नूर ओकरा फोनपर केवल संभावित समान नामक बात कहलीह, सुनीता उत्तर देलक, “एहि नामसँ जे कागज हमरा लग अछि, ओकरा संग अहाँक कागज मिला देब तखन झूठ कड़ि बनि सकैत अछि। पहिने पूरा नाम, पहचान आ दस्तावेजक स्रोत जुटाउ।” दीपक बहिनक संग सहमत छल। “एकहि नामक पाँच गोट भऽ सकैत अछि,” ओ कहलक, “आ एकहि व्यक्तिक दू खाता सेहो भऽ सकैत अछि। दूनूमे फरक अछि।” नूरक पत्रकार-मन एहि संयमसँ किछु असन्तुष्ट भेल, मुदा ओकर विवेक राहत पाबि गेल।

अनुपमा झाक नव मैथिली कथा-संग्रहक चर्चा ओहि समय दरभंगाक एक पाठक-मण्डलीमे चलैत छल। एक छात्र कथा पर कहलक जे साहित्य सदिखन ‘सत्य’ लिखबाक दावा करैत अछि, तखन ओकरा प्रमाण कतय? अनुपमा उत्तर देलीह, “कथाक सत्य प्रमाणपत्रक सत्यसँ भिन्न होइत अछि। पात्रक भय, लोभ, प्रेम आ पछतावा अनुभवक माध्यमसँ प्रकट होइत अछि। मुदा जे घटना सार्वजनिक इतिहासक रूपमे लिखी, ओकर तिथि गलत राखब तँ कल्पनाक अधिकारसँ गलती नहि ढकाइत।” रेवती सेहो सभामे उपस्थित छलीह। ओ कहलीह, “अदालत अनुभवकेँ सुनैत अछि, मुदा अभियोगक निर्णय प्रमाणसँ करैत अछि।” एक वृद्ध पाठक हँसि कहलनि, “तखन साहित्य आ अदालत दू गो भिन्न तौल अछि।” अनुपमा उत्तर देलीह, “तौल भिन्न छथि, मुदा आदमी दुनूक बीच एके अछि।”

सहर बानो सितम्बरक आरम्भमे बस्तीक महिलासभ लेल पुनः कक्षा रखलीह। एहि बेर न्यास भाड़ाक कक्ष नहि लेलक; करुणाक घरक अगुआनीमे चटाइ बिछल। नूर एहि सभामे पत्रकार जेकाँ नहि, आम श्रोता जेकाँ बैसलीह; अपन उपस्थितिक उद्देश्य पहिने बता देलीह। एक महिला मतदानक दिन अपन नाम कटबाक शिकायत सुनौलीह, दोसर महिला नगरक जल-आपूर्तिक बिल बुझि नहि पाबि रहल छलि। तीसरी महिला कहलीह, “हमरा रसीद पर नाम छै, मुदा कियो कहैत अछि जे महिला-समूहक दान लऽ गेल।” सहर समझौलक जे निजी दान, शासकीय अनुदान आ बस्तीक स्वैच्छिक सहयोगक तीन अलग रजिस्टर बनत। करुणाक बेटी तीन रंगक कागज लऽ आयलि। ओ अपन अक्षरमे शीर्षक लिखलक—‘हम देलहुँ’, ‘हम

पेलहुँ’, ‘हम पुछलहुँ’। सभ स्त्री ताली नहि बजौलीह; कियो अपन काजक समयक कारण चलि गेल, कियो चुपचाप पन्ना भरय लागल।

राज्यक विभाग अन्ततः अनुदानक निरीक्षणक अन्तरिम टिप्पणी न्यासकेँ भेजलक। टिप्पणीमे दू कार्यक्रमक वास्तविक आयोजनक प्रमाण स्वीकार कएल गेल, एक कार्यक्रमक तिथि पर अतिरिक्त स्पष्टीकरण माँगल गेल, आ छपाई-सामग्रीक एक बिलपर वस्तुगत मिलानक निर्देश देल गेल। ई दोषसिद्धिक आदेश नहि छल, नहि सम्पूर्ण खाता स्वच्छ घोषित करबाक प्रमाण। प्रबोध माथुर टिप्पणी पढ़ि कहला, “कम-सँ-कम सभ कार्यक्रम काल्पनिक नहि कहल गेल।” रमा उत्तर देलीह, “ठीक, मुदा जे एक पाँति बचल अछि से अपने-आप ठीक नहि भेल।” प्रबोध खिड़की बाहर देखलनि। घाम ढलैत छल। “हम शिक्षा देबाक लेल न्यास बनौने छलहुँ,” ओ धीमा स्वरमे कहला, “आब लिखित उत्तर दैत-दैत थाकि गेलहुँ।” रमा कहलीह, “शिक्षा देबाक वचनक मूल्ये ई उत्तर अछि।” प्रबोध प्रतिवाद नहि कएलनि।

रिद्धि अपन शोध-पत्रक पहिल प्रारूप नूरकेँ देखौलीह। ताहिमे एक सारणी छल—स्वीकृत अनुदान, जारी किस्त, लाभान्वित कार्यक्रमक पुष्ट संख्या, अज्ञात भुगतानक मद, आ उपलब्ध कागजक स्रोत। नूर देखलीह जे एक मुद्रित चार्टमे अठारह लाख चालीस हजारकेँ ‘घटिया व्यय’ कहिकय रङ्ग देल गेल छल। “ई शब्द कहाँसँ आयल?” नूर पुछलीह। रिद्धि चौंकि गेलीह। ओ अपन शोध-सहायककेँ फोन कएलीह। सहायक कहलक जे ‘विवादित कुल अनुबन्ध’ क संक्षेप करैत ‘घटिया’ लिखि देने छल। रिद्धि तत्काल सुधार कएलीह—“अनुबन्धित कुल रकम; विवादित भुगतानक भाग अलग”। नूर कहलनि, “एहि एक शब्दसँ पूरा कम्पनीक वास्तविक काज मेटि जाइत।” रिद्धि अपन भूल स्वीकार करैत प्रत्येक वितरित प्रारूपपर संशोधनक सूचना भेजलीह। विश्वविद्यालयक भीतर ई छोट खुल्लमखुल्ला शुद्धि किछु लोककेँ हास्यास्पद लगल; रिद्धिक लेल ओ शोधक नैतिकता छल।

अक्टूबरक न्यायालयीन सुनबाईमे एक मुद्रणालयक कर्मचारी कृष्णगोपाल सुथार गवाह रूपमे उपस्थित भेलाह। हुनकर दायित्व छपाईक प्राप्ति-पत्र बनायब छल, कार्यक्रम आयोजित करब नहि। गिरिराज हुनकरा दू खेपक छपाईक संख्या पुछलनि। कृष्णगोपाल अपन पञ्जीक अनुसार उत्तर देलनि, मुदा कहलनि जे मुद्रित सामग्री अन्ततः चारू कार्यक्रममे बाँटल गेल कि

नहि, से स्वयं नहि देखलनि। ललिता प्रति-परीक्षणमे ओकरा स्वीकार करौलीह जे एक चालानपर माल उठौनिहार वाहनक नम्बर अधूरा छल। कृष्णगोपाल कहला, “ई अधूरापन अछि, मुदा हमर कारखानासँ जे सामग्री निकलल तकर मात्रा दूसरी पावतीमे अछि।” न्यायालय दुनू पावतिसभकेँ संलग्न करबाक अनुमति देलक। नूर बाहर निकलैत लिखलीह—“मुद्रण सिद्ध होयब वितरण सिद्ध होयब नहि; वितरणक प्रश्न शेष।”

ओहि दिनक दोसर साक्षी सहर बानो छलीह। हुनका सीधा पुछल गेल जे बस्तीक प्रशिक्षणमे किनका अनुमति सँ खर्च भेल आ ककर हस्ताक्षर पर सामग्री ग्रहण कएल गेल। ओ स्पष्ट कहलीह जे ओ कार्यक्रम चलबैत छलीह, वित्तीय अनुमोदन नहि करैत। अपन उपस्थिति-पञ्जी दैत ओ अपन नामक पाँतिपर हाथ रखलीह। “हम एहि दिनक गवाही दऽ सकैत छी। जे दिन हम ककरो घरमे बीमार महिलाकेँ देखय गेल रही, ओहि दिनक कार्यक्रमक प्रमाण हमर हस्ताक्षर नहि।” अदालत एहि सीमाकेँ दर्ज कएलक। नूर बरामदामे सहरकेँ पुछलीह, “इतबाक गवाहीसँ अहाँक संस्था नाराज नहि?” सहर कहलीह, “सत्य कहबासँ नाराज होयत तँ संस्था हमरा काज लेल किएक राखने अछि?” मुदा हुनकर आवाजमे साहसक संग वेतन रुकबाक चिन्ता सेहो छल।

कम्पनीक संचालक अरुणकेँ एक राति अपन बेटीक फोन आयल। बेटी विदेशमे पढ़ैत छलि आ समाचारक टुकड़ा देखिकय भयभीत भेलि। “बाबा, अहाँ अपराधी छी?” ओ पुछलक। अरुणक गला भरि गेल। “अदालत देनदारीक कागज देखैत अछि, कोनो अपराधक निर्णय नहि भेल अछि,” ओ कहला। बेटी पुछलक, “तखन सभ लोक एहन शब्द किएक लिखैत अछि?” अरुण उत्तर देलनि, “किछु लोक जल्दी करैत अछि। मुदा हमर कागजमे जे कमी अछि, तकर जिम्मेदारीसँ हम भागि नहि सकैत।” फोन राखिते ओ पहिल बेर कम्पनीक पूरा भुगतान-पञ्जी मँगौलनि आ लेखाधिकारीसँ लिखित पूछताछक आदेश देलनि। केवल अपन नाम बचायब पर्याप्त नहि; कम्पनीक प्रत्येक सहकर्मीक श्रम आ ग्राहकक विश्वास सेहो ओहि प्रश्नमे बँधल छल।

वर्षक अन्तिम मासमे न्यास आ कम्पनीक दीवानी विवाद आंशिक लेखा-मिलानक बादो पूरा समाप्त नहि भेल। जतेक सामग्री आ सेवा दूनू पक्ष स्वीकार कएने छल, ओहि अंशक

भुगतान समायोजनक लिखित सम्भावना बनल; शेष दावाक प्रमाण-परीक्षण चलैत रहल। राज्यक अनुदान विभाग विवादित मदक अन्तिम उपयोगिता-जाँचक बाट देखैत छल। ई धीमा क्रम अनेक लोककेँ निराश करैत छल। प्रबोध चाहैत छल जे एक दिनमे पूरा आरोप हटि जाए; अरुण चाहैत छल जे पूरा बिल मिलि जाए; सहर चाहैत छलीह जे अगिला कक्षाक पैसा समयपर भेटय; रमा चाहैत छलीह जे रजिस्टरक प्रत्येक पाँति अपन सही अर्थ पाबय। एके प्रकरणक भीतर ई चारि इच्छासभ एक-दोसराकेँ काटैत नहि, मुदा आपसमे सहज समाइत सेहो नहि छल।

दिसम्बरक ठण्ढा साँझ नूर अपन अखबारक वार्षिक समीक्षा लिखैत छलीह। ओ पहिल वाक्य काटि देलीह—“चुनावी धनक पूरा रहस्य खुलि गेल।” एकर ठाम लिखलीह—“एक असंवैधानिक गोपनीय व्यवस्था हटला पछाति सार्वजनिक जानकारीक नब प्रश्न खुलल।” ओ स्पष्ट कएलीह जे राजनीतिक चन्दाक प्रकाशित सूची नागरिकक जानकारीक अधिकारक ठोस कदम छल, मुदा सूची अपने-आप प्रत्येक योगदानक बदला अनुचित लाभ, ठेका वा अपराध सिद्ध नहि करैत। स्थानीय लोकसंवाद न्यासक अनुबन्ध-विवाद एखन अलग दीवानी आ विभागीय प्रक्रियामे विचाराधीन छल। ओ रिपोर्टमे गलत शब्दक पहिनुक संशोधन सेहो प्रकाशित कएलीह आ मूल डेटा देखबाक विधि पाठककेँ बतौलीह। अनिरुद्ध अन्तिम प्रति पढ़ि केवल कहला, “ई चमकदार नहि, मुदा टिकबाक योग्य अछि।” नूर हुनकरा देखि किछु नहि बजलीह।

नूरक डेस्कक नीचाँ एखनहुँ दू लिफाफा छल। पहिलमे अस्पष्ट बिलक छाया, दोसरमे एक प्रचार-संस्थाक प्रस्ताव, तीन असंगत भुगतान-तिथि आ ‘एच. चौहान’ लिखल अधूरा सम्पर्क। ओ कागज बाहर निकालि एक तिथि केँ वृत्तमे घेरलीह; ओहि तिथिपर दीपरेखा संचार सेवाक एक डिजिटल प्रचार-प्रस्तावक राशि न्यासक लेखासँ भिन्न देखाइत छल। राशि ककरा गेल, काज कतेक भेल, दूनू प्रस्ताव एके कार्यक छल कि नहि—एकर उत्तर अद्यापि नहि भेटल छल। नामक समानता हरदेव चौहान, हरनामपुरक प्रचार प्रस्ताव अथवा पुरान कारखानाक पञ्जीसँ कोनो निश्चित सम्बन्ध सिद्ध नहि करैत छल। नूर नोटक अन्तमे लिखलीह—“प्रचार-कम्पनीक

अस्पष्ट व्यय; अपराध-सम्बन्ध एखन सिद्ध नहि।” ओ वाक्य पन्नाक अन्तिम पाँति बनि गेल, मुदा ओकरा भीतर अगिला वर्षक नब प्रश्न जागि रहल छल।

ओही साँझ बेंगलुरुमे अवनि अपन पुरान लाल कापीक लग परीक्षा-प्राधिकरणक नव सूचना रखलीह। सूचना पढ़ि ओकरा बुझल जे प्रश्नपत्र सम्बन्धी जाँचक किछु हिस्सा एखन सार्वजनिक नहि अछि। गीता आ ताराबाई परीक्षा देबाक लेल अपन-अपन पुस्तक खोलने छलि; हुनकर परिश्रमक मूल्य कोनो लिफाफाक भीतर बन्द नहि छल। मैत्रेयी चाहैत छलीह जे बेटी एतेक चिन्तामे अपन अनुसन्धान नहि छोड़य। निरंजन कहला, “जे समानता देखलहुँ, तकरा प्रमाणित करबाक बाट छें। मुदा ककरो भयक आधारपर अपन ज्ञानक पन्ना बन्द नहि कर।” अवनि चन्द्रयानक चित्रक पाछाँ एक नब शीर्षक लिखलक—‘प्रश्नक स्रोत’। नूरक डेस्कपर धनक अधूरा स्रोत छल; अवनिक कापीमे प्रश्नक अधूरा स्रोत। दुनू कथा अलग छलीह, मुदा दुनूक समक्ष जीवनक एकहि कठिन पाठ छल—जे नहि जानैत छी, तकरा जानैत छी कहबाक लोभसँ बचब।

अध्याय ३० — परीक्षाक प्रश्न के चोरौलक?

जोधपुर, बेंगलुरु आ दिल्ली, सन् २०२४

मार्चक अन्तिम पहरमे जोधपुरक गाछसभपर धुरछाँही धूलि बैसि गेल छल। मरुधर विश्वविद्यालयक पुरान छात्रावाससँ बाहर निकलिते ताराबाई भील अपन कापी माथपर राखि घाम रोकलक। एक वर्ष पहिने ओ माटिक नमी नापबाक प्रयोगमे गलती कएने छलि, आ आब ओकरा अपना गलती सुधारबाक साहस उतने नहि चकित करैत छल, जतेक हर ठाम सुनाइत एक वाक्य—“ई परीक्षा जीवन बनबैत अछि।” ओकर लग एक पुरान बोरा छल, जाहिमे किताबक अतिरिक्त माय द्वारा देल बाजराक रोटी आ कपड़ामे बान्हल थोड़े गुड़ छल। पड़ोसक गीता ओकर संग चलैत छलीह। दुनू चिकित्सा-पाठ्यक्रममे प्रवेशक लेल मईमे होमयवला राष्ट्रीय परीक्षाक तैयारी करैत छलि। परीक्षा एक छल, मुदा ओकरा धरि पहुँचनिहार दूनूक बाट एकदम अलग छल।

गीता एक मोटर-मरम्मत करनिहार परिवारसँ छलि। ओकर पिता दयाराम दिनभरि तेल लागल हाथसँ गाड़ी खोलैत आ साँझमे बेटीकेँ वही खसयबाक काजमे सहायता करैत। माय रुक्मिणी पाँच घरक लेल भोजन बनाबैत छलीह। गीता डाक्टर किएक बनय चाहैत अछि, एकरा लेल ओ कोनो चमकदार भाषण तैयार नहि कएने छलि। महामारीक दोसर लहरमे पड़ोसक एक बूढ़ी महिला अस्पताल धरि पहुँचबाक पहिने चलि गेल छलीह; गीता ओहि घरक दुआरिपर पानीक पात्र लऽ कतेको समय ठाढ़ रहलि। तकर बाद ओकरा शरीरक अध्ययनमे एक प्रकारक बेचैनी भेटल—रोगीकेँ केवल बीमारीक नाम नहि, समयपर बुझनिहार मनुष्य चाही। एहि इच्छा आ वास्तविक अङ्कक बीचक दूरी ओकरा मालूम छल। रातिमे ओ गलत उत्तरक तिर लाल स्याहीसँ लिखैत—‘फेर समझू’।

ताराबाईक पिता खेत पर दैनिक काज करैत छलाह; बरसाति खराब भेलासँ वर्षक बहुत हिस्सा ईंटक भट्ठा दिस जाय पड़ैत छलन्हि। माय कमला घरक कम्बल सीबैत आ जखन गाँवक विवाह छल, कढ़ाई करैत छलीह। ताराबाईक पढ़ाई लेल एक गोठमे पुरान पंखा लगाओल गेल छल जे गरमीक समयमे आधा घूमैत, आधा करकराइत। “तेरा मेडिकल पढ़णो है?” एक आगन्तुक काका हँसि पुछने छलाह। ताराबाई हौले कहने छलि, “पढ़ब तऽ प्रयास करब। परीक्षा हमरा नाम देखिकय आसान नहि होयत।” ओहि दिन माय हुनका सुतला पछाति टोकरीसँ कढ़ाईक दू ग्राहकक बकाया निकालि गिनलीह। बेटीकेँ ई हिसाब नहि देखेबाक सोचने छलीह, मुदा बेटीक पढ़ाई एतेक पैघ छल जे ओकरा पैसा देबामे एकेक सिक्का सुनाइत छल।

मरुधरक विज्ञान-प्रचार केन्द्रमे डॉ. चन्दना रविदास सप्ताहमे दू दिन निःशुल्क प्रश्न-सत्र रखैत छलीह। हुनकर अपन अनुसन्धान-अनुदानक अभिलेख विवाद अन्तिम रूपसँ समाप्त नहि भेल छल; तइयो ओ छात्रसभक प्रश्न छोट नहि करैत छलीह। एकदिन ताराबाई रासायनिक साम्यक समीकरण उलटा लिखि देने छलि। चन्दना ओकरा पुछलनि, “तूँ कागज देखिकय तुरन्त बुझि गेलहुँ जे गलत अछि?” ताराबाई माथ डोलौलक। “तखन तों अपन गलती देखबाक क्षमता अर्जित कएने छी। आब ओकर कारण जानू।” गीता पाछाँसँ कहलक, “मेडिकल प्रवेशक परीक्षामे गलतीक लेल तऽ अंक कटैत अछि।” चन्दना उत्तर देलनि, “ठीक अछि, एहि कारण गलतीक अभ्यास सस्ता कागजपर करू, जीवनक असली अवसरपर नहि। मुदा गलती देखला पर अपन मोल कम नहि मानू।”

बेंगलुरुमे अवनि अपन लाल कापीक भीतर सन् २०२३ क छात्रवृत्ति-परीक्षाक पत्र राखने छलीह। प्रश्न-समीक्षाक प्रारम्भिक मसौदामे लिखल एक गलत एकक बाहरी अभ्यास-पत्रक क्षणिक चित्रमे देखल गेल छल; एहि समानताक जाँच लेल ओ सम्बन्धित स्थानीय प्राधिकरणकेँ गोपनीय सूचना देने छलि। प्राधिकरण उत्तरमे मूल मसौदा, परिवर्तनक पञ्जी आ बाहरी अभ्यास-पत्रक स्रोत सुरक्षित रखबाक जानकारी पठौने छल। जाँच एखन अधूरी छल। अवनि अपन फोनपर गीता आ ताराबाईक अभ्यासक छवि देखिकय एक बेर सशंकित भेलि, मुदा तुरन्त स्वयंकेँ टोकलक—ई राष्ट्रीय चिकित्सा प्रवेश परीक्षा एकदम दोसर संस्था चलबैत

अछि। स्थानीय छात्रवृत्तिक प्रश्नपर उठल शंका एकरा संग जोड़बाक कोनो प्रमाण नहि अछि। जे बात नहि जनैत छी, से कथा बनाकय नहि कहल जाए।

अप्रैलक पहिल सप्ताहमे कोटासँ एक प्रचार-पत्र ताराबाईक फोनपर आयल। चमकदार अक्षरमे ‘सन्धिपथ अध्ययन-सहायता केन्द्र’ लिखल छल; विज्ञापन कहैत छल जे कम समयमे त्रुटि-सुधारक विशेष अभ्यास, प्रवेश-परामर्श आ दूरभाषपर प्रशिक्षक उपलब्ध कराओल जाएत। शुल्क पैतालीस हजार आ अतिरिक्त कागज-मूल्य तीन हजार छल। “एतेक महँग?” गीता आश्चर्यसँ पुछलक। ताराबाई कहलक, “इहो देखू, लिखल अछि कि जँ लाभ नहि भेल तँ अभ्यास-सत्रक अनुपातमे रकम फिर्ता।” ओ घोसणाक छोट अक्षर पढ़लासँ पहिने मायकेँ फोन कऽ बैसलि। कमलाकेँ रकम सुनिते चुप्पी लागि गेलन्हि। दू दिनक बाद माय एक पुरान बचत खातासँ राशि निकालि कहलीह, “पैसा तोंक पढ़ाईक संग लगबैत छी, कोनो चमत्कार खरीदबाक लेल नहि।” बेटी एहि वाक्यकेँ प्रार्थना जेकाँ सुनलक।

प्रचार-पत्रमे केंद्रक सम्पर्क व्यक्ति देवेन्द्र कश्यप, आ लेखा-सम्पर्क ‘सन्धिपथ सेवा समूह’ लिखल छल। ताराबाई फोन कएलक तँ नरेश नामक युवक कहलक, “दीदी, कोनो गलत प्रश्न नहि। हम मॉक टेस्ट आ परामर्श दैत छी। रसीद तुरन्त मिलत।” ताराबाई प्रश्न पुछलक, “कतेक घंटाक वर्ग? कोन शिक्षक? जँ परीक्षा पहिने आ जाइत अछि तँ शेष शुल्क?” युवक कहलक, “सब ऐपमे देखाएत।” ओकर अंग्रेजी-मिश्रित उत्तरमे किछु बात साफ छल, किछु धुँधला। ताराबाई पुनः लिखित विवरण मँगौलक। दू दिनक बाद ईमेल आयल—अठारह निर्देशित सत्र, चारि अभ्यास-पत्र, व्यक्तिगत समय-सारणी; शुल्क वापसी प्रशासनिक शर्तपर निर्भर। कागजमे स्पष्ट तारीख नहि छल। कमला ‘अठारह’ देखिकय राहत पओलीह। बेटी बैंकक माध्यमसँ अड़तालीस हजार देलक आ रसीद सुरक्षित राखलक।

गीता अपन पिता सँ एहि व्यवस्थाक बात सुनौलक तँ दयाराम कहला, “हमरा ई खर्च कठिन अछि; मुदा तोंक मित्र पैसा देने अछि तँ ओकरा उपहास नहि करू। सेवा नहि भेटत तँ लिखित हिसाब माँग।” रुक्मिणी मोबाइलपर प्राप्त रसीद देखिकय कहलीह, “हमर भोजनक काममे जकरा पैसा देबाक होइत अछि ओकरा दिन आ थारी गिनि देब। एतय सत्रक तारीख किएक नहि?” ताराबाई एहि प्रश्नक उत्तर नहि दऽ सकलि। ओ विचार कएलक जे पैघ शिक्षा-

संस्थानमे ई सभ सामान्य होयत; पहिल बेर ओकर विश्वास कागजक छोट अक्षर पर अधिक निर्भर करैत छल, जतेक सँ ओ आश्वस्त नहि हो सकैत छलि।

पहिल हफ्तामे फोनपर दू रिकार्ड कएल गेल पाठ उपलब्ध भेल। एकमे शिक्षकक चेहरा नहि छल; स्क्रीनपर साधारण बहुविकल्पीय प्रश्न चलैत रहल। दोसरामे प्रारम्भिक जैविकी पढ़ाओल गेल, जकरा गीता नि:शुल्क सार्वजनिक व्याख्यानमे पहिनहि सुनने छलि। ताराबाई सहायता नम्बरपर लिखलक जे तय सत्रक तिथि आ शिक्षकक नाम चाही। उत्तर आयल —“विशेष व्यवस्था बनि रहल अछि।” तेसर दिन नरेश फोनपर कहलक, “कम्पनीक वरिष्ठ व्यक्ति लग एकदम परीक्षा-जेकाँ नजिकक प्रश्नक संग्रह अछि; एकरा लेल अलग पहुँच लागल अछि।” ताराबाईक पीठमे सनसनी दौड़ि गेल। “अहाँ के कहैत छी? वास्तविक प्रश्नपत्र?” ओ पुछलक। नरेश कहलक, “हम एतेक नहि कहलहुँ। बाजारमे जे कहल जाए, ताहि सँ बेहतर तैयारी।” ताराबाई साफ उत्तर देलक, “हम खरीदल सेवा चाहैत छी, अनधिकृत प्रश्न नहि।”

मईक परीक्षा नजिक आबि रहल छल। एक सन्ध्या ताराबाईक मोबाइलपर बिना परिचयक एक छोट सन्देश आयल—“सफलता सुनिश्चित। अंतिम पन्ना अलग दामपर।” ओ सन्देश गीता कैं देखौलक। गीता कहलक, “ई अनधिकृत वस्तु सन लगैत अछि; उत्तर नहि दिअ।” दुनू सन्देशक मूल क्रम सुरक्षित राखलथि, मुदा एकर प्रेषक केन्द्रक कर्मचारी छल कि अलग ठग, से नहि जानि सकलीह। अवनि फोनपर सुनिकय कहलक, “सावधान रहू; वैध प्रशिक्षणक भुगतान आ अनधिकृत प्रश्नक प्रस्तावक बीच फरक राखू। कोनो नब पैसा नहि पठाउ। लिखित सेवा-सूची, भुगतान रसीद आ सन्देशक मूल प्रति सुरक्षित राखू।” ताराबाईक आवाज काँपैत छल। “हम गलत काज नहि कएलहुँ, तैयो डर लगैत अछि।” अवनि उत्तर देलक, “डरक कारण सत्य लुकाउ नहि।”

पाँच मईक भोर। जोधपुरक आकाश धूसर छल, ठण्ढक नहि मुदा रातिक शेष हवा छल। गीता अपन प्रवेशपत्र बारम्बार गिनैत छलीह—फोटो, पहचान-पत्र, समय, केन्द्र। रुक्मिणी थारीमे थोड़ा दही रखलीह; गीता तीन कौरमे नाश्ता समाप्त कएलक। दयाराम घरक पुरान मोटरबाइक चमकौने छलाह। ताराबाई अपना मायकैं फोन कएलीह। कमला कहलीह, “पढ़ल बात याद राखब। कियो कागज देलक कि नहि, ताहिसँ तोहर बुद्धि कम नहि होएत।”

ताराबाईकेँ मायक भरोसा सुनि आँखिमे पानि आयल। ओ कापी बन्द कएलक। परीक्षाकेँ प्रवेशद्वार मानि सकैत छलीह; अपन अस्तित्वक पूरा फैसला नहि। तैयो जखन केन्द्रक दुआरि बन्द होएत, ओकर मनक एक अंश ओतहि बन्द रहि जायत, ई ओकरा पहिनेसँ बुझाइत छल।

परीक्षाक लम्बा समय दूनूक लेल अलग बीतल। गीता जीव-विज्ञानक किछु प्रश्नपर सहज छलीह; भौतिकीक एक उत्तरलेखनमे ओ दुइ बेर गणना कएलक। ताराबाई प्रथम पन्नापर नकारात्मक अंकक भयक कारण धीरे चलैत छलीह। एक प्रश्न ओकरा चन्दनाक प्रयोगक याद दिऔलक; ओ प्रयोगक विवरण नहि, नियम याद कएलक आ उत्तर चुनलक। परीक्षा समाप्त भेलापर बाहर कियो ‘सब आसान’ कहैत छल, कियो ‘सब खराब’ कहैत। गीता आ ताराबाई सड़कक कात एक झोलावाला लग पानी पीलीह। “कोना भेल?” गीता पुछलक। ताराबाई कहलक, “सभ प्रश्नक हिसाब एखन नहि करब। पहिने घर पहुँची।” ओकरा ई छोट निर्णय दिनक पहिल स्वाधीनता जेकाँ लगल।

मुदा सन्ध्या होइत-होइत सन्धिपथक सेवा-सम्पर्क बन्द भेल। ऐपपर देल अठारह सत्रमे केवल दू उपलब्ध देखाइत छल, आ ‘सहायता अधीन’ लिखल घेरा घूमि रहल छल। ताराबाई ईमेल लिखलक—“प्राप्त सेवा: दू पूर्व-रिकॉर्डित सत्र। शेष सोलह सत्रक तिथि, शिक्षक आ भुगतान-समायोजन बताउ।” स्वचालित उत्तर भेटल; वास्तविक हस्ताक्षर नहि। दुनूक घरमे परीक्षा-पछातिक विश्रामक ठाम शुल्कक खाता चर्चा बनि गेल। कमला चुपचाप करघा लग बैसलीह। बेटी धीरे कहलक, “माँ, हमर कारण एतेक पैसा गेल।” कमला सुई रोकि उत्तर देलीह, “पैसा देबामे हमर सहमति छल। जँ सेवा नहि देल गेल, तँ गलत व्यवहारक उत्तरदायित्व ओकर अछि जे वादा कएलक। मुदा हम सभक जाँचमे कोनो कमी नहि रहय, से देखब।”

गीता ओकरा अपन घर बजौलक। रुक्मिणी भात परोसैत कहलीह, “हमरा सब कखनो-कखनो दबावमे महँग रास्ता चुनय पड़ैत अछि। एहि मे लाज ककरा होएत, से आरोप तय करबाक पहिने बुझू।” दयाराम तकरा भुगतानक बैंक-पावती, सेवा-विज्ञापन, भेजल ईमेल आ कएल गेल कक्षा सभक तिथि एक कापीमे लिखबाक सलाह देलनि। ताराबाई एकेक पन्ना जोड़ि जे सूची बनौलक, ताहिमे भावनासँ बेसी पुख्ता क्रम छल। “जाँचक लेल एहि सूचीक

उपयोग होयत,” गीता कहलक। ताराबाई उत्तर देलक, “हम तऽ एखनहुँ आशा करैत छी जे कियो शिक्षक फोन उठाओत आ कहत—हँ, हम वर्ग नहि देलहुँ, पैसा वापिस करैत छी।” ओहि आशाक धीमा टूटब कोनो परीक्षा-सङ्कटक समाचारसँ कम यातनापूर्ण नहि छल।

चारि जूनक बिहान राष्ट्रीय परीक्षाक परिणाम प्रकाशित भेल। गीता अपन अङ्क देखबाक पहिने वेबसाइटक पन्ना तीन बेर फेर खोललक। परिणामक प्रतीक्षामे घरमे कियो ऊँच स्वरमे बात नहि करैत छल। दयाराम कार्यशालाक आधा उठल गाड़ी छोड़ि एलाह, रुक्मिणी भातक पानि चूल्हासँ उतारि देलीह। गीता जखन अङ्क देखलक तँ ओकरा प्रसन्नता भेल, मुदा तुरन्त एक प्रश्न उठल—जाहि श्रेणीमे ओ आवेदन देने छलीह, ताहि आधारपर अगिला परामर्शक वास्तविक अवसर की अछि? पिता कहलनि, “आज पढ़ल परिणाम देखैत छी; कॉलेजक सीट आ शुल्कक अलग हिसाब काल्हि करब।” ओ बेटीकेँ बधाई देलनि, मुदा अपूर्ण गणनाकेँ पूर्ण सफलता कहि नहि बतौलनि। गीता एहि संयमक भीतर अपन घरक पुरान स्नेह पहचानलक।

ताराबाई अपन परिणाम खोललक तँ ओकर अङ्क अपेक्षासँ कम छल। ओ फोनकेँ ओलटाकय मेजपर रखि देलक। गीता ओकरा लग आयल, मुदा ‘कोनो बात नहि’ सन सरल वाक्य नहि कहलक। बहुत देर बाद ताराबाई स्वयं बजलीह, “हमरा कतेको प्रश्न आब बुझाइत अछि, मुदा ओहि दिन नहि बुझल। एहि सालक सीटक सम्भावना घटि गेल अछि।” गीता पुछलक, “तूँ अपन दोसर पाठ्यक्रमक इच्छा छोड़ब?” ताराबाई कहलक, “नहि। जखन लोक कहैत अछि जे जीवनमे केवल एकहि परीक्षा अछि, तखन हमरा लगैत अछि जे हमर घरक बाकी जीवनक कथा कोनो पढ़ने नहि।” ओ गीता केँ कहलनि जे ओकर निराशाकेँ नीट परिणामसँ अलग सन्धिपथक धनहानि आ माय-बाबूक श्रम बेसी गहिर करैत अछि।

समाचार माध्यमपर ओहि समय असामान्य उच्च अङ्क, किछु परीक्षाकेन्द्रक समय-संबन्धी समस्या आ प्रश्नपत्र बाहर जाएबाक आरोपक चर्चा तेज भेल। गीता देखलक जे कतेको अज्ञात स्क्रीन-चित्र एके कथाकेँ दू विपरीत प्रमाण बतबैत अछि। एक चैनल सभ सफल विद्यार्थीपर शंका करैत छल, दोसर सभ शिकायतकेँ राजनीतिक नाटक कहैत। ताराबाई कहलक, “हमरा अपन पैसा केँ देखिकय लगैत अछि जे प्रश्न सचमुच बिकैत होयत।” गीता ओकर हाथ पकड़लक। “तोहर प्रशिक्षणक ठगी आ देशक प्रश्नपत्रक आरोप अलग बात अछि।

जँ हम दुनू मिला देब तँ तोहर शिकायतो कमजोर भऽ जायत।” ताराबाई मानि गेलि, मुदा समाचारक उतेजनामे ई अन्तर बचबेनाइ कठिन छल।

बेंगलुरुमे अवनि एहि विवादक समाचार सुनि अपन स्थानीय छात्रवृत्तिक मसौदावला पुरान कापी खोललक। ओ जखनहि परिचित गलत एकक देखलक, ओकर मनमे सनसनी पसरि गेल। मुदा धैर्यसँ ओ स्थानीय प्राधिकरणकेँ फोन कएलक आ लिखित उत्तरक तिथि पुछलक। एक अधिकारी कहलनि जे प्रश्न-समीक्षाक प्रवेश-पञ्जी जाँचल जा रहल अछि आ बाहरी अभ्यास-पत्रक स्रोत एखन सत्यापित नहि भेल। अवनि पुछलक, “नब राष्ट्रीय विवादक कारण एहि जाँचक निष्कर्ष बदलल गेल अछि?” अधिकारी कहला, “नहि, ई अलग छात्रवृत्ति परीक्षा अछि।” अवनि एहि उत्तरकेँ कापीमे लिखलक। सोशल-माध्यमपर कियो ओकर पुरान फोटो लऽ राष्ट्रीय नीट-लीकक कथा बनाबय चाहने छल, ताहि लेल ओ लिखित स्पष्टीकरण देलक—“एहि चित्रक नीटसँ कोनो प्रमाणित सम्बन्ध नहि अछि।”

जोधपुरक छात्रावासमे एक नव छात्र पन्नापर लाल अक्षरमे लिखलक—“जतेक मेहनत, ततेक धोखा।” मनस्वी एहि वाक्यकेँ देखिकय कहलीह, “दुःख साँच अछि, मुदा सभ मेहनती छात्रक परिश्रमकेँ झूठ कहला सँ किनकर भला?” विवेक मेघवाल जोड़लक, “जँ किछु केन्द्र पर नियम टूटल अछि तँ ओहि ठाम जाँच जरूरी; बिनु प्रमाण सभक परिणाम रद्द करब सेहो अन्याय भऽ सकैत अछि।” एक युवक भड़किकय कहलक, “अहाँ प्रशासनक पक्षमे छी?” विवेक उत्तर देलक, “हम प्रश्नक पक्षमे छी। जे भरसक निर्दोष छथि, हुनकरो भविष्य अछि; जे वंचित भेलाह, हुनकरो।” छात्रावासक बहस राति धरि चलल। पहिल बेर सभकेँ बुझायल जे परीक्षाक शुचिता आ परीक्षार्थीक अधिकार दू विरोधी पक्ष नहि, एकहि कठिन सम्बन्धक अङ्ग अछि।

एक परिचितक सलाहपर ताराबाई आ कमला सन्धिपथक कोटास्थित घोषित कार्यालय पहुँचलथि। छोट गलीमे किरायाक दुकानक बाहेर पुरान बैनर आधा उखड़ल छल। शटर पर नव ताला आ स्याहीसँ लिखल मकान-मालिकक नम्बर छल। मालिक पवन सोनी फोनपर कहला जे संस्थाक कर्मचारी दू महीना किराया नहि देने छल, मुदा ठीक कोन रकम ग्राहकसँ लेलक, से हुनका नहि मालूम। ताराबाई पुछलक, “देवेन्द्र कश्यप कहाँ छथि?” पवन कहला, “जे गोटे

कार्यालय लेनिहार छल, ओहि नामसँ अनुबन्ध अछि। हमर लग पहचान-पत्रक एक प्रति छैक; मगर तकर सत्यापन हम नहि करि सकैत छी।” कमला शटर छूबि देखलीह। भीतर जतेक उपकरण रहबाक दावा छल, तकर कोनो निशान नहि। जे वर्ग मोबाइलमे छल, से कोनो विद्यालयक समक्ष उपस्थित पाठ नहि बनल।

ओहि गलीक चायवाला बतौलक जे दुपहरिया किछु विद्यार्थी आएल छल, सायंकाल कर्मचारीसभ देर धरि मोबाइलपर बात करैत छल। “हमरा लग तऽ सब ठीक लगैत छल,” ओ कहलक। कमला प्रश्न कएलनि, “अहाँ ककरो एतय पढ़ाइत देखलहुँ?” चायवाला सोचिकय कहलक, “दू बेर कमराक खिड़कीसँ परदा पर चित्र देखलहुँ। विद्यार्थी बैठने देखल हो, से याद नहि।” ताराबाई अपन कापीमे ‘चायवाला निश्चित गवाही नहि’ लिखलक। ओकरा ई अजीब लगल जे सत्यक खोजमे लोककेँ कतेको बेर ई कहय पड़ैत अछि—“हम नहि जानैत छी।” गामक कथामे बुझनिहार लोक हर बातक उत्तर दैत छल; न्यायिक कथामे ई अनिश्चितता बचबेनाइ स्वयं एक उत्तरदायित्व छल।

दूनू पुनः जोधपुर आबि लिखित शिकायत तैयार कएलीह। रेवती झा ओहि सप्ताह दरभंगासँ एक अन्य मुकदमाक कागज देखैत जोधपुर अएने छलीह; कुसुमक माध्यमसँ ताराबाई हुनका भेटलीह। रेवती कहलीह, “पहिल प्रश्न—अहाँ किनबाक समय कोन सेवा मानने रही? दोसर—वास्तवमे की भेटल? तेसर—भुगतान कोन खातामे गेल? चारिम—नरेशक संदिग्ध सन्देश देवेन्द्रसँ प्रमाणित रूपमे जुड़ल अछि कि नहि?” ताराबाई क्रमसँ उत्तर देलक। रेवती जखन बुझलीह जे ताराबाई वास्तविक प्रश्नपत्र नहि मँगने छलि आ सम्भावित अनधिकृत सामग्री ठुकरौने छलि, तँ एकरा शिकायतमे तथ्यक रूपमे लिखबाक कहलनि; मुदा ई सेहो चेतौलीह जे केवल ताराबाईक कथन पर अन्तिम निष्कर्ष नहि होयत।

रेवतीक संग नव अधिवक्ता नलिनी देशपाण्डेक दूरभाषपर चर्चा भेल। नलिनी मुम्बईक अलग गोदाम-अभिलेखक मुकदमामे पहिनहि काज कएने छलीह। ओ स्पष्ट कएलनि जे प्रश्नपत्र-लीकक राष्ट्रीय अभियोग आ एक निजी कोचिंग सेवाक कथित छलकपट अलग अधिकारक्षेत्र आ प्रमाण-विषय राखैत अछि। “मुवक्किलकेँ नामचीन विवादसँ जोड़ि अखबारमे स्थान भेटि सकैत अछि,” नलिनी कहलीह, “मुदा ओकर रकम फिर्ता भेटबाक बाट कठिन भऽ

जायत जँ मूल शिकायत बदलि सनसनी बनि जाए।” रेवती सहमति देलीह। ओ ताराबाईकेँ बजाकय कागज पढ़ा देलीह। आवेदनमे केन्द्रक विज्ञापनक शब्द, अठारह सत्रक वादा, उपलब्ध दू पाठ, रकम आ बैंक-पावती स्पष्ट छल; वास्तविक राष्ट्रीय प्रश्नपत्र बिकबाक निश्चित दावा नहि छल।

थानामे पहिल भेट सरल नहि भेल। ड्यूटी पर बैसल कर्मी कहलक जे “पढ़ाईक सेवा ठीक नहि देनाइ दीवानी झंझट” सेहो भऽ सकैत अछि। रेवती कहलीह, “ठीक अछि, केवल अनुबन्ध तोड़ब अपने-आप अपराध नहि। मुदा भुगतान पाबय लेल शुरूहिसँ झूठ आश्वासन देल गेल कि नहि, कार्यालयक पहिचान आ लाभुक खाताक वास्तविक नियन्त्रण कोन? शिकायतमे एहि प्रश्नक तथ्य अछि।” अधिकारी आवेदन पढ़ि वरिष्ठ अधिकारीक समक्ष पठौलक। ओहि दिनहि अभियोग सिद्ध नहि भेल, न कियो गिरफ्तार भेल। ताराबाई बाहर निकलिकय कहलक, “हमरा लगैत छल कोनो कागज जमा करतहि पैसा भेटि जायत।” रेवती उत्तर देलीह, “फौजदारी जाँच आ निजी रकमक वसूलीक बाट अलग होइछ। दुनूमे समय लगत, आ कोनो परिणामक पहिने आश्वासन देब ठीक नहि।”

कमला अपन घरक आँगनमे पड़ोसिन सँ सुनलीह जे बेटी ‘पेपर खरीदबाक चक्करमे फँसि गेलि’। एहि अफवाहक स्रोत कियो बताबय नहि सकल। ओहि साँझ कमला गामक बैसारमे ठाढ़ भऽ कहलीह, “हम पढ़ाईक वर्ग लेल रकम देने रही। हमर बेटी जे गलत प्रस्तावक सन्देश पेलक, तकरा स्वीकार नहि कएलक। जँ हमर व्यवहारमे कोनो भूल अछि तँ दस्तावेज देखिकय कहू। खाली डर देखाकय परिवारकेँ दोषी नहि बनाउ।” किछु लोक शर्मसँ चुप भेला। मुदा कमलाकेँ राहत नहि भेटल; अपमानक प्रश्न छूटि सकैत छल, खाली भेल बचत खाताक प्रश्न नहि। ओ घर आबि पुरान बही निकालि लिखलीह—“अड़तालीस हजार: सेवा विवादित; वसूली शेष।” तखन ओ बेटीकेँ बजाकय अपन लिखावट देखौलीह। “हिसाब रखब आ जिनगी चलब, दूनू करब,” कहलीह।

देशभरि नीट परिणाम सम्बन्धी याचिका आ विरोधक समाचार घनघोर भऽ रहल छल। किछु छात्र संपूर्ण पुनर्परीक्षा चाहैत छलाह, किछु कहैत छलाह जे एहि सँ निर्दोष विद्यार्थीक महीनसभक श्रम नष्ट होएत। गीता अपन घरमे दू पन्नाक विचार लिखलक। पहिल पन्नामे

प्रश्नपत्रक गोपनीयता आ समान अवसर; दोसरामे भरोसेमन्द आँकड़ाक बिना सभक परीक्षा रद्द करबाक जोखिम। ओ लिखलक, “हमरा परिणामक रक्षा चाही, मुदा जे छात्रकेँ अनुचित लाभ भेटल हो ओकरा जाँचसँ अलग नहि छोड़ल जा सकैत।” दयाराम पन्ना पढ़ि कहला, “तूँ अपना अधिकारक लेल बोलैत छी, आ दोसरक अधिकारको देखैत छी। अही कठिनाइमे नागरिक बनल जाइत अछि।” गीता भितर एक बड़का भय सँ लडैत छलि—जँ फेर परीक्षा भेल तँ परिवारक समय आ पैसा कोना जुटत? तैओ ओ मनमे सबक प्रश्नपर आँखि बन्द नहि कएलक।

जूनमे एक सीमित संख्याक परीक्षार्थीक समय-हानि सम्बन्धी राहत आ पुनर्परीक्षाक समाचार आयल। गीता राष्ट्रीय प्राधिकरणक आधिकारिक सूचनासँ बुझलक जे एहि व्यवस्था सभ परीक्षार्थी लेल नहि छल। छात्रावासक चैटमे कियो लिखलक—“सभक फेर परीक्षा भऽ रहल अछि।” ताराबाई तुरन्त सूचना साझा करैत कहलक, “ई सन्देश सही नहि।” ओकरा पहिने स्वयं खबर बुझबाक धीरज कम छल; आब पैसा गंवा कऽ ओ मूल सूचनाक महत्त्व सीखल छलि। एक गोटे ओहि पर व्यंग्य कएलक—“प्रमाणक रानी।” ताराबाई उत्तर नहि देलक। ओ सोझाँ किताब खोललक आ कापीमे छोट अक्षरमे लिखलक—“जे नहि बुझल, ओकरा पुछबाक लाज नहि।”

नूर जतय एहि विवादपर रिपोर्ट लिखबाक लेल जोधपुर एलीह। हुनकर सम्पादक चाहैत छल जे शीर्षक हो—‘परीक्षाक प्रत्येक उत्तर बिक्रीपर’। नूर ई शब्द काटि देलीह। “निश्चित लीकक ठोस घटनाक प्रमाण आ सभ परीक्षार्थी दोषी होएबाक दावा एकहि नहि,” कहलीह। ओ गीता, ताराबाई, कोचिंग-शिक्षक आ स्थानीय विधि-अध्यापक सँ अलग-अलग बात कएलीह। ताराबाई पत्रकारकेँ अपन बैंक-पावती देखौलक, मुदा निजी नम्बर छपय सँ मना कएलक। “हमर नाम लिह, जँ आवश्यक हो; मुदा हमर माय-बाबूक खाता-नम्बर आ पता नहि,” कहलक। नूर एहि आग्रहक सम्मान कएलीह। समाचार लिखबा सँ पहिने ओ सन्धिपथक घोषित सम्पर्कपर उत्तर मँगौलीह, मुदा ईमेल वापस आयल। ओ रिपोर्टमे लिखलीह जे कम्पनीक स्पष्टीकरण एखन भेटल नहि।

रिद्धि विश्नोई ओहि समय सार्वजनिक आँकड़ाक अध्ययन करैत छलीह। गीता हुनका पुछलक, “परिणामक अङ्कमे असामान्यता देखाइत हो तँ ई प्रश्नपत्र लीकक प्रमाण?” रिद्धि छोट कागजपर तीन चित्र बनौलीह। पहिलमे प्रश्नपत्रक सुरक्षा-शृंखला; दोसरमे परीक्षाकेन्द्रक वितरण; तेसरामे परिणामक वितरण। “तीनू एक-दोसरासँ जुड़ल भऽ सकैत अछि, मुदा एकहि नहि,” ओ कहलीह। “अङ्कक वितरण असामान्य हो तँ जाँचक कारण बनैत अछि। मुदा कोन प्रश्न कखन ककरा भेटल, से जानबाक लेल स्वतंत्र स्रोत चाही।” विवेक पासमे बैसल छल। ओ कहलक, “कागजक सुरक्षाक उल्लंघन सिद्ध भेल तँ एकर विस्तार जाँचबाक होयत।” गीता पुछलक, “आ जँ विस्तार नहि भेटल?” रिद्धि कहलीह, “तखन निर्दोष परीक्षार्थीक हितकेँ जोड़ि निर्णय होयत।”

अवनि अपन अनुसन्धान-केन्द्रक सभामे एहि राष्ट्रीय विवादक उल्लेख कएलीह, मुदा सभसँ पहिने स्थानीय छात्रवृत्ति-पत्रक शंका सम्बन्धी लिखित प्रगति सुनौलीह। विभागक आन्तरिक जाँचमे तिथि-पञ्जीक एक प्रति सुरक्षित भेटल, पर बाहरी अभ्यास-पत्रक मूल फाइल एखन नहि भेटल छल। एक सदस्य कहला, “अहाँक गलत विकल्प कोचिंगक प्रश्नमे भेटल, तकर अर्थ स्पष्ट अछि।” अवनि उत्तर देलक, “यदि मूल तारीख आ वितरण-क्रम नहि मालूम तँ अनेक सम्भावना रहैत अछि। हमर मसौदासँ कियो देखल हो, पुरान अभिलेख गलतीसँ साझा भेल हो, अथवा पूर्व अभ्यासक समान वाक्य अहाँक प्रश्नमे पहुँचि गेल हो। प्रत्येक बाटक जाँच अलग चाही।” समिति सहयोगक लेल धन्यवाद देलक, मुदा ओहि बैठकमे कोनो व्यक्तिक नाम दोषी रूपमे दर्ज नहि कएल गेल।

पुनः जोधपुरमे ताराबाई थानासँ प्राप्त पावती लऽ रेवती लग पहुँचलि। एक आर्थिक अपराध शाखाक अधिकारी प्रारम्भिक परीक्षणमे बैंक खाताक केवाइसी, कम्पनीक पञ्जीकरण आ सेवा-पोर्टलक नियन्त्रणक विवरण मँगबेलनि। बैंकक लिखित उत्तरमे राशि वास्तवमे जाहि खाता पर गेल, तकर नाम प्रचार-पत्रक नामसँ पूरा मेल नहि खाइत छल। तथापि एकर सम्भावित कारण साझेदार संस्था, पञ्जीकृत व्यापारक भिन्न नाम अथवा जानि-बूझि छिपाओल लाभुक कोनो भऽ सकैत छल। रेवती कहलीह, “भिन्न नाम स्वयं अपराध नहि, मुदा अनुत्तरित प्रश्न अवश्य।” ताराबाई सोचलक जे जे शब्द ओकरा पहिने अत्यन्त कठिन लगैत

छल—‘लाभुक’, ‘व्यवहार-संख्या’, ‘अनुबंध’—ओ आब परिवारक जीवनक निर्णायक शब्द बनल अछि।

दूकानक मालिक पवन सोनी अपन किराया-अनुबन्धक प्रति अधिकारीकेँ देलनि। ताहिमे देवेन्द्र कश्यपक हस्ताक्षर छल, मुदा तिथि आ पञ्जीकृत ठिकानापर अधूरापन छल। अधिकारी पवनकेँ सचेत कएलनि जे ओ केवल अपन प्रत्यक्ष जानकारी दियथि। पवन हठात कहला, “हम थोड़बहुत पैसा लेलहुँ, मुदा बच्चासभकेँ धोखा देनिहार लोकक भागीदार नहि।” अधिकारी उत्तर देलनि, “अहाँक दोष आ निर्दोषता पर एखन कोनो निर्णय नहि। अहाँ जे देखलहुँ से कहू; जे नहि देखलहुँ तकर कल्पना नहि करू।” पवन एहि बातसँ नाराज भेला, मुदा शाममे ओ अपन किरायाक रसीद फेर गिनलनि। हुनकर लड़का सेहो एहि वर्ष प्रतियोगी परीक्षा देबाक छल; पहिल बेर ओ बुझलनि जे बंद शटरक पाछाँ केवल मकान-मालिकक अधूरा किराया नहि, कतेको घरक आशा अटकल अछि।

शहरक एक निजी प्रशिक्षक मेधा सक्सेना जाँचमे कहलीह जे सन्धिपथ हुनका दू ऑनलाइन पाठ रिकार्ड करबाक लेल अनुबन्धित कएने छल, भुगतान आधा भेल। “हमर कक्षाक चित्र देखिकय विद्यार्थी सोचि सकैत अछि जे हम पूरा कार्यक्रम चलबैत रही,” ओ कहलीह, “मुदा हमरा अठारह सत्रक सूची कखनो नहि देखाओल गेल।” ओ अपन ईमेल, पाठ-रिकॉर्डिङ्गक तिथि आ पाठक परिधि उपलब्ध करौलीह। ताराबाईकेँ ओकर नाम सुनि पहिल बेर राहत भेल—कम-सँ-कम दू पाठ वास्तवमे एक शिक्षिकाक श्रम छल। रेवती ओकरा कहलीह, “एहि तथ्यक सम्मान करब जरूरी अछि। आंशिक सेवा वास्तविक छल, तेँ पूरा राशि लेल आरोप करबामे ई विवरण छिपेनाइ स्वयं तोहर पक्षकेँ कमजोर करत।”

एक दिन ताराबाईक गामसँ खबर आयल जे कमलाक आँखिक तकलीफ बढ़ल अछि। लगातार महीन कढ़ाईमे ओ धागाक रङ्ग पहिचानबामे कठिनाइ अनुभव करैत छलीह। शहरक जाँच लेल पैसा चाही छल, आ बचत खातामे अड़तालीस हजारक घाव एखन टटका छल। ताराबाई ट्रेनक सस्ता टिकट खोजलक, मुदा फेर सोचलक जे माय तुरन्त चिकित्सकीय परीक्षण करबथि। गीता अपन पिता सँ बात कएलक; दयाराम परिवारक सहयोगसँ प्राथमिक जाँचक खर्चक व्यवस्था कएलनि। कमला सुनिकय कचोटलि—“हम तोहरा लोकसँ कर्ज नहि

लेब।” दयाराम कहला, “अहाँ कर्ज नहि, सहायता स्वीकार करैत छी। कल हमरा जरूरत पड़त तँ अहाँ सेहो देखब।” ताराबाई एहि बोलीमे पाठ्यपुस्तकसँ अलग स्वास्थ्य-नीतिक अर्थ देखलक। कोनो छात्रक चिकित्सक बनबाक सपना असली रोगीक आँखि जाँचब सँ शुरू होइत अछि, कोनो समाचारक शीर्षकसँ नहि।

जुलाईक आरम्भमे मेधा सक्सेनाक लिखित बयानक एक पन्ना सामाजिक माध्यमपर प्रसारित भऽ गेल। एक अज्ञात खातासँ लिखल गेल—“शिक्षिका स्वीकार कएलीह जे प्रश्नपत्र पहिने देखल गेल।” मेधाक मूल बयानमे एहन कोनो बात नहि छल; ओ केवल दू रिकॉर्ड कएल पाठक भुगतानक सम्बन्धमे उत्तर देने छलीह। नूर मूल बयानक सार्वजनिक करबाक योग्य अंशक पुष्टि करि रिपोर्ट लिखलीह—‘काटल सन्देशसँ दोष निर्धारित नहि’। मेधा हुनका फोनपर कहलीह, “हम छात्रकेँ रसायन पढ़ाबैत छी। आब लोग हमर नाम सामने झूठ अपराध जोड़ैत अछि। हमर विद्यार्थी पुछैत अछि जे मैडम जेल जाएती?” नूर कहलीह, “अहाँक खण्डन पूरा छापब। मुदा जे तथ्य पुलिस-जाँचक अधीन अछि, ताहि सँ बेसी नहि लिखब।” ओ राति घर पहुँचि अपन संपादकीय कापीमे एक पाँति जोड़लीह—“स्रोतक इज्जत, पत्रकारक अधिकारसँ कम नहि।”

रेवतीक कार्यालयमे ताराबाई पहिल बेर अपन शिकायतक प्रतिलिपि पूरा आवाजमे पढ़लक। ‘आरोपित संस्था नियमित अठारह सत्रक शुल्क लऽ दू रिकॉर्डित पाठ उपलब्ध करौलक; शेष सेवा आ वापसीक उचित हिसाब नहि देलक,’ ओ धीरे पढ़ैत गेलि। अन्तमे सन्देशक प्रसंग आयल तँ आवाज अटकि गेल। “अहाँ एतय “सन्देह” लिखने छी,” ओ कहलक, “जँ ई अपराधक प्रस्ताव छल तँ स्पष्ट “अपराध” किएक नहि?” रेवती उत्तर देलीह, “अपराध घटित भेल हो सकैत अछि। मुदा ई सन्देश ककर फोनसँ आयल, मूल प्रेषण-श्रृंखला ककरा लग अछि, आ कोन कानूनक तत्त्व सिद्ध होइत अछि—ई जाँचक विषय। अहाँक अनुभव पूरा अछि, मुदा ओकर विधिक अर्थ पर अदालत निर्णय देत।” ताराबाई पल भरि लेल क्रुद्ध भेलि, फेर बुझलक जे ई सावधानी ओकर बात घटा नहि रहल, टिकाउ बनबैत अछि।

जाँच अधिकारी नव बैंक-उत्तर लऽ एलाह। सन्धिपथ सेवा समूहक खातामे ताराबाईक अड़तालीस हजार जमा भेल छल, आ तकर बाद किछु राशि नियमित वेतन-भुगतान जेकाँ

बाहेर गेल, एक पैघ अंश दोसर सेवा-खातामे पहुँचल। ई दोसर खाता ‘अक्षर-सहयोग नेटवर्क’ नामसँ छल। तहकीकातमे एक अन्तर देखल गेल: प्रचार-पत्रक ग्राहक-सहायता नम्बर किछु सप्ताह पछाति बन्द भेल, मुदा बैंकक इलेक्ट्रॉनिक पञ्जीमे देवेन्द्र कश्यपक पहिल अनुमोदन-चिन्ह उपलब्ध छल। जाँच अधिकारी एहि कारण मात्र ओहि दोसर संस्थाक संचालककेँ दोषी नहि ठहरौलनि। ओकरा लेल लाभुकक वास्तविक नियन्त्रण, कारोबारक आधार आ कम्पनीसभक आपसी सम्बन्ध चाही छल। एहन जाँच क्रमशः चलैत छल; बीचमे छात्रसभक प्रवेश-परामर्शक तारीख बढ़ैत गेल।

ओम्हर सर्वोच्च न्यायालयमे नीट सम्बन्धी बहसक समाचार प्रतिदिन बदलैत छल। गीता टेलिविजनपर अदालतक प्रतिवेदन सुनैत छलीह, मुदा ककरो कथनकेँ अन्तिम आदेश नहि मानैत छलीह। एकदिन रिपोर्टमे प्रश्नपत्र बाहर जाएबाक विशिष्ट केन्द्रक उल्लेख छल, दोसर दिन परिणामक वितरणक अध्ययन। गीता अपन कापीमे लिखलक—“कहाँ, कहिया, कतेक विद्यार्थी धरि? दू प्रश्न।” रिद्धि ओकरा सुधारि कहलीह, “तीसर सेहो—ई अनुमान ककर मूल साक्ष्यपर आधारित अछि?” छात्रावासक छज्जापर वर्षाक पानि खसैत छल। कतहु टेलिविजन पर लोक विजय आ पराजयक नाम लगा रहल छल, मुदा गीता एहिसँ अधिक असहज छल जे जँ न्यायालय संपूर्ण परीक्षा रद्द कएलक तँ ओकर मेहनत फेर शून्य पर जायत; आ जँ कोनो वास्तविक अनुचित लाभ छूटि गेल तँ कोनो दोसर विद्यार्थीकेँ अहित होएत।

तेइस जुलाईक निर्णय सुनबाक दिन गीता दयारामक कार्यशालामे छलीह। मोटरक धुँआ आ हथौड़ीक चोटक बीच ओकर फोनपर समाचार आयल—सर्वोच्च न्यायालय देशव्यापी पुनर्परीक्षाक निर्देश नहि देलक। न्यायालय उपलब्ध प्रमाणक आधारपर समूची परीक्षाक प्रणालीगत शुचिता नष्ट भेल अछि, एहन निष्कर्ष धरि नहि पहुँचल। ज्ञात प्रश्नपत्र-लीक आ अनियमितताक जाँच समाप्त घोषित नहि भेल; दूषित लाभुकक पहिचान आ सम्बन्धित अनुसन्धानक बाट शेष रहल। दयाराम हाथ धोइत कहला, “तेँ एखन परामर्शक प्रक्रिया चलत?” गीता कहलक, “हाँ, मुदा अन्तिम संशोधित परिणाम आ घोषित नियम देखब। हमरा अपन अंक बचल अछि, ओकरा संग वाजिब अवसरक हिसाब अलग।” ओहि दिन ओ खुशीसँ बेसी थाकल अनुभव कएलक, मानो महीनसभ धरि रोखल साँस धीरे छुटल हो।

छब्बीस जुलाईक संशोधित परिणामक सूचना पछाति गीता अपन विवरण फेर देखलक। ओकर अङ्क आ श्रेणीक आधारपर पंजीकरणक मार्ग खुलल छल, मुदा ओकरा ई स्पष्ट छल जे पात्रता, परामर्शमे भाग लेबाक अधिकार आ महाविद्यालयमे सीट प्राप्ति एकहि बात नहि। रुक्मिणी ई भेद बुझबा लेल बेटी सँ पाँच बेर पुछलीह। गीता धैर्यसँ बुझौलक। “माए, हम योग्यता नहि हरौने छी। मुदा सीट कोन चरणमे आ कतय भेटत, से एखन तय नहि।” रुक्मिणी हौले कहलीह, “तोहर पढ़ाइ कखनो हमर घरक बरतन-भात सँ दूर नहि होयत। जे महाविद्यालय भेटत, तकर खर्च हम सभ बैसि गिनब।” ई वाक्य शासकीय परिणामक पटसँ बेसी वास्तविक लगल।

ताराबाई ओहि समाचारकेँ देखिकय घोर निराश नहि भेलि, मुदा अनुत्तरित क्रोध अपन भीतर पबैत छलि। “गीता, तोहर अधिकार सुरक्षित अछि,” ओ कहलक, “मुदा हमर अड़तालीस हजारक प्रश्न पर अदालत कोनो फैसला नहि देलक।” गीता ओकरा आलिंगन कएलक। “हमरा ओहि फैसला सँ तोहर पैसा बापस आबि जाएत, एहन सोचब नहि चाही। ई दू रास्ता अछि। हम तोहर संग थानामे सेहो जाएब।” ताराबाई पुछलक, “जँ हमरा पहिने तरह पढ़बाक अवसर नहि भेटल तँ हम की करब?” गीता कहलक, “तोहर विज्ञानक कापी छल, चन्दना मैडमक पाठ छल, आ अबो बहुत बाट अछि। मुदा हम तोहर नाराजगीकेँ भविष्यक परामर्श दऽ कऽ मिटायब नहि चाहैत छी।” एहि चुप्पीमे दुनूक मित्रता एक नव रूप लेने छल।

दू अगस्तक विस्तृत सर्वोच्च न्यायालय निर्णय अवनि सावधानीसँ पढ़लक। न्यायालय वास्तविक प्रश्नपत्र-लीकक विशिष्ट घटनासँ इनकार नहि कएने छल; ओकर मुख्य प्रश्न छल जे उपलब्ध सामग्रीसँ कतेक व्यापक प्रसार सिद्ध होइत अछि, आ दूषित-अदूषित परीक्षार्थीकेँ अलग करब सम्भव अछि कि नहि। न्यायालयक आलोचनामे परीक्षा संचालनक किछु गम्भीर त्रुटि आ सुधारक आवश्यकता सेहो आयल छल। अवनि अपन छात्रसभ लेल नोट बनौलक —“कोनो आरोपक पुष्टि, सम्पूर्ण व्यवस्थाक विफलता आ न्यायिक उपचारक अनुपात—तीन अलग निर्णयक स्तर।” फेर ओ ‘सम्पूर्ण व्यवस्थाक विफलता’क आगाँ ‘प्रमाणित’ जोड़लक। मैत्रेयी फोनपर हँसलीह—“भाषा साफ करयक अभ्यास निर्णयक अर्थ साफ करैत अछि।” अवनि कहलक, “आँकड़ा भी ओहिना, माय।”

मरुधरक एक खुला गोष्ठीमे नूर, अवनि, कुसुम आ चन्दना छात्रसभसँ बात कएलनि। कोनो विद्यार्थी सवाल कएलक, “जब लीक भेल, तखन फेर पूरा परीक्षा नहि किएक?” अवनि उत्तर देलक, “उल्लंघनक स्थान आ प्रसारक प्रश्न निर्णायक होइत अछि। सभ छात्रकेँ एकहि तरह दण्ड देब कानूनी रूपसँ उचित हो, ताहि लेल प्रमाण चाही।” दोसर विद्यार्थी पुछलक, “किछु छात्रकेँ अनुचित लाभ भेटल हो तँ हुनकर अधिकार?” कुसुम कहलीह, “जाँच आ उचित दण्डक प्रक्रिया अलग चलेत। ई काज लोकतन्त्रक कठिन परिश्रम अछि।” चन्दना नब छात्रसभक चेहरा देखिकय जोड़लीह, “असफलता आ धोखाक आरोपक बीच सेहो सीमा राखू; नहि तँ सभ मेहनती लोक अपन ऊपर अनावश्यक शंका लऽ बैसत।”

ओहि गोष्ठीक बाद अवनि स्थानीय छात्रवृत्ति-पत्रक अपन जाँच सम्बन्धी अंतिम प्रगति सभकेँ सावधानीसँ सुनौलक। मूल गलत विकल्पक फोटो एक छात्रक अभ्यास समूहमे पुनः भेटल छल, मुदा फोन बदललासँ ओकर पहिल प्रेषणक क्रम उपलब्ध नहि। प्रश्न-समीक्षा समितिक अन्तिम स्वीकृत प्रतिमे सही एकक छल, आ आयोजित परीक्षाक प्रश्नमे पुरान गलत विकल्प सम्मिलित नहि भेल छल। जाँच अधिकारी कहलनि जे बिना प्रेषण-श्रृंखलाक ककरो विरुद्ध जानि-बूझि गोपनीयता भङ्गक निष्कर्ष नहि निकालल जा सकैत। ताराबाई पुछलक, “तखन अहाँक शंका व्यर्थ छल?” अवनि उत्तर देलक, “नहि। शंका लिखित जाँचक कारण बनल; निष्कर्षक असमर्थता सेहो एक परिणाम अछि। सभ शंका अपराध बनि समाप्त नहि होइत।” ई उत्तर ताराबाईकेँ अपन अधूरे प्रशिक्षण-मुकदमाक याद दिऔलक।

जोधपुरमे सन्धिपथ प्रकरणक जाँचमे देवेन्द्र कश्यपकेँ पूछताछ लेल बजाओल गेल। ओ उपस्थित भऽ कहलक जे संस्था बाहरी शिक्षकसँ सामग्री लैत छल आ एक उपसेवा-दाता व्यवस्थित नब कक्षा उपलब्ध नहि कएने; कारोबारक विफलताक कारण शुल्क फिर्ता देरीसँ चलि रहल अछि। ओ अपन हस्ताक्षरवाला विज्ञापन स्वीकार कएलक, मुदा ‘पक्का प्रश्न’ सन्देशक सम्बन्ध अस्वीकार कएलक। अधिकारी पुछलनि, “तखन विज्ञापित अठारह सत्रक सूची कोन तिथिसँ तय भेल?” देवेन्द्र एक अधूरा समयपत्र प्रस्तुत कएलक। ओहि पर छपल तारीख भुगतानक बादक छल। देवेन्द्र कहलक जे ई संशोधित कार्यक्रम अछि। अधिकारी मूल

कार्यक्रम आ सेवा-दाताक पत्राचार मँगौलनि। ई बयान आरोपक खण्डन छल, दोषमुक्तिक अन्तिम प्रमाण नहि।

प्राथमिक बयानक बाद देवेन्द्रक अधिवक्ता हरिश मेहता कहला जे हुनकर मुवक्किलक विरुद्ध विवाद मूलतः सेवा-सम्बन्धी अछि; किछु पाठ उपलब्ध कराओल गेल अछि, आ शुल्कक आंशिक वापसी सम्भव अछि। रेवती एहि बातकेँ एकदम खारिज नहि कएलीह। “जतबा सेवा देल गेल, ओहि पर विवाद नहि। मुदा लिखित वादा आ जानि-बूझिकय देल आश्वासनक समयक परिस्थिति जाँचल जाए,” ओ कहलीह। हरिश उत्तर देलनि, “आरोप लिखल गेलासँ बेईमानीक मनशा सिद्ध नहि होइत।” रेवती कहलीह, “सही। ताहि लेल मूल विज्ञापन, प्राप्ति, खाताक नियन्त्रण आ ग्राहकक सहमत सेवा एक संग देखबाक आवश्यकता अछि।” दू वकीलक बहस तेज नहि छल, मुदा ओकरा भीतर कतेको घरक समय-सारणी अटकल छल।

ताराबाईक परिवार एकदिन वसूलीक नागरिक प्रक्रियाक सम्बन्धमे सेहो सलाह लेलक। स्थानीय अधिवक्ता बतौलनि जे उपभोक्ता-सेवा सम्बन्धी विवादक उपयुक्त मंच आ विशिष्ट तथ्यक आधारपर अधिकारक्षेत्रक प्रश्न बनि सकैत अछि; प्रशिक्षण-संस्थाक सेवा सम्बन्धी दावामे सामान्यीकृत निश्चित परिणामक आश्वासन देब उचित नहि। ताराबाई कहलक, “हमरा अदालती बाटक नामसँ बेसी खर्चक डर अछि।” अधिवक्ता कहला, “पहिने लिखित माँग-पत्र, हिसाब आ उपलब्ध वैधानिक उपाय देखल जाए; फौजदारी शिकायतमे पुलिसक जाँच अपने ढंगसँ चलत।” रेवती विशेष सावधानीसँ कहलनि जे निजी संस्थाक धन-वसूलीक मुकदमाकेँ राष्ट्रीय नीट-विवादक न्यायालयीन आदेशसँ नहि मिलाओल जाए। ताराबाई झोरा बान्हि घर लौटि गेलि; नव शुल्क देबाक निर्णय ओ एखन नहि लेलक।

सन्धिपथक पुरान सम्पर्क-संख्या सँ अचानक एक संदेश आयल—“अगिला अठवाड़ामे राशि लौटाओल जाएत, शिकायत वापस लिअ।” ताराबाईकेँ पहिल क्षण आनन्द भेल। कमला फोन लऽ पुछलीह, “कोनो नाम, तिथि आ स्पष्ट भुगतानक तरीका अछि?” नहि छल। रेवती मूल सन्देश सुरक्षित रखबाक आ ककरो दबावमे लिखित बयान बदलि नहि देबाक सलाह देलीह। ओ कहलीह, “रकम वैध रूपसँ प्राप्त भेल तँ ओकर उल्लेख निष्पक्ष रूपमे करब। मुदा

शर्त पहिने, रकम बाद—ई प्रक्रिया बिना स्पष्ट आश्वासनक स्वीकार नहि करू।” सप्ताह बीतल, खातामे कोनो रकम नहि पहुँचल। ताराबाई अपन कापीमे नब पाँति लिखलक—“रकम वापसीक अप्रमाणित वादा, प्राप्ति शून्य।” ओहि अंकक शून्य मायक महीनाभरक मेहनतसँ पैघ लगल।

ओहि बीच गीता छात्रवृत्ति आ परामर्शक उपलब्ध सरकारी माध्यमक सूची खोजैत छलीह। दयारामक एक ग्राहक कहलक जे निजी संस्थामे सीट ‘निश्चित’ कराओल जा सकैत अछि। गीता पूछलक, “कुन आधिकारिक पोर्टल, कोन वैधानिक सीट, कोन दस्तावेज?” ग्राहक कहलक, “एतेक प्रश्न पुछब तँ अवसर छूटि जायत।” दयाराम सौम्य स्वरमे उत्तर देलनि, “अवसर त्यागब आसान नहि; मुदा पैसा देनिहार घरक सवाल कोनो बाधा नहि।” गीता एक दिन बसमे बैठि सरकारी चिकित्सा महाविद्यालयक सूचना-कक्ष पहुँचलि। ओतय लम्बा पाँति छल, मुदा सूचना फलकपर शुल्क, पात्रता आ परामर्शक क्रम सार्वजनिक छल। ओ पाँति मे ठाढ़ रहि अपन प्रश्न लिखलक; कोनो गुप्त दुआरि खोजबाक कोशिश नहि कएलक।

ताराबाई एहि दिनसभमे गामक एक छोट स्वास्थ्य-शिविरमे स्वयंसेविका बनि गेलि। ओ डॉक्टर नहि छलि, ताहि लेल इलाजक सलाह नहि दैत; रोगीसभकेँ पञ्जीकरणक क्रम, पानीक व्यवस्था आ चिकित्सक धरि पहुँचबाक सहायता करैत छलीह। कमलाक आँखिक परीक्षणक पर्ची सेहो संग रहैत। एक बूढ़ कुम्हार पुछलनि, “बिटिया, तों मेडिकलमे नाम लिखाबने छी?” ताराबाई कहलक, “एखन प्रवेश नहि भेटल, पढ़ाइ चलैत अछि।” बूढ़ कहला, “नाम लिखाबक दिन हम अपन चाक बन्द कऽ मिठाई लऽ आएब।” ओ एहि सरल आश्वासनपर मुस्की देलक। घर आबि कापीमे रक्तचापक नियमत: नापबाक प्रक्रिया पढ़लक, पर अपन सीमा लिखलक —“बिना प्रशिक्षण रोगक निर्णय नहि।” विज्ञानक ई ईमानदारी परीक्षा-हॉलसँ बाहर सेहो चलैत छल।

अगस्तक अन्तिम सप्ताहमे पुलिस एक प्रारम्भिक लेखा-प्रतिवेदन तैयार कएलक। ताहिमे संस्था द्वारा प्राप्त किछु ग्राहक-भुगतान, दू वास्तविक शिक्षकक वेतन, अधूरा सेवा-पोर्टल आ शेष राशि दुसर व्यवसायिक खातामे पहुँचनाइ अलग-अलग मदमे लिखल छल। अठारह सत्रक पूर्ण शिक्षण-प्रदाय प्रमाणित नहि छल। मुदा रिपोर्टमे स्पष्ट लिखल गेल जे प्रारम्भिक सामग्रीसँ

सम्पूर्ण रकम ककर व्यक्तिगत उपयोगमे गेल, से एखन निश्चित नहि। देवेन्द्रक वकील एहि अनिश्चिततार्कें महत्त्व देलनि; शिकायतकर्ता पक्ष भुगतानक पहिने देल विज्ञापनक वस्तुस्थिति प्रश्नमे राखलक। जाँच अधिकारी दूनू बात दर्ज कएलनि। ताराबाई रिपोर्ट पढ़िकय कमला सँ कहलक, “कागज पैघ भऽ रहल अछि, मुदा खाते मे रकम एखनहुँ नहि।” कमला थाकल हँसीसँ कहलीह, “कागज पैघ होएब जरूरी, मुदा रोटी सेहो पकैत रहबाक चाही।”

पुलिसक जाँचक एक चरणमे देवेन्द्रक हिरासत सम्बन्धी प्रश्न स्थानीय दण्डाधिकारीक समक्ष आयल। अधिवक्ता हरिश मेहता आपराधिक दोषसिद्धि क आधार नहि होएबाक, उपलब्ध खाताक कागज आ जाँचमे उपस्थित रहबाक आधारपर सीमित शर्तक राहत माँगलनि। अभियोजनक ओरसँ कहल गेल जे किछु मूल उपकरण आ खाते सम्बन्धी जानकारी जुटेबाक आवश्यकता अछि। दण्डाधिकारी सभ दस्तावेजपर तात्कालिक विचार करि कारणयुक्त अन्तरिम आदेश देलनि; सहयोगक शर्त आ इलेक्ट्रॉनिक अभिलेख सुरक्षित रखबाक निर्देश संग देवेन्द्रक व्यक्तिगत स्वतन्त्रताक प्रश्न पर निर्णय भेल। ई आदेश ताराबाईक धन-वसूलीक फैसला नहि छल। बाहर निकलि कियो कहलक, “देखू, आरोपी छुटि गेल।” रेवती समझौलीह, “जमानत दोषमुक्ति नहि, आ हिरासत दण्ड नहि। एखन साक्ष्यक जाँच चलत।”

दण्डाधिकारीक बरामदामे ताराबाईक सामना देवेन्द्रक पत्नी सुलेखा सँ भेल। सुलेखा अपन छोट पुत्रकेँ गोदमे लएने छलीह। हुनकर चेहरा नींदक कमी सँ सूखल छल। ओ ताराबाई सँ कहलीह, “हमरा पति कहैत छथि जे व्यवसाय घाटामे गेल। हम नहि जानैत छी जे सभक पैसा कतय गेल। मुदा हमर बच्चाकेँ विद्यालयमे लोक ठगक बेटा कहैत अछि।” ताराबाई क्षणभरि निस्तब्ध रहलि। ओ अपन मायक खाली भेल खाते केँ याद कएलक। “हम अहाँक बच्चाक विरुद्ध नहि,” ओ कहलक, “हम जे रकम देलहुँ, तकर सेवा वा वापसी चाहैत छी। अहाँ जँ पैसा सम्बन्धी किछु जानैत छी तँ सही अधिकारीकेँ बताउ।” सुलेखा माथ नमा लेलीह। दुनू महिला बरामदाक अलग दिशि चलि गेलीह; ककरो दुःख दोसरक दावा समाप्त नहि कएलक।

नूरक अखबार एहि दिनक घटनाकेँ प्रमुख समाचार नहि बनौलक, मुदा ओ एक लेख लिखलीह—‘जमानत, शिक्षा-सेवा आ धनवसूली: तीन अलग सवाल’। सम्पादक अनिरुद्ध

कहलनि, “पाठक संक्षिप्त निर्णय चाहैत अछि—ठग पकड़ायल कि बचल?” नूर उत्तर देलीह, “हम जकरा नहि जानैत छी ओकर उत्तर देब तऽ पाठककेँ खोएब। एतय अदालत केवल स्वतन्त्रताक अन्तरिम प्रश्न देखलक; वसूली आ अभियोगक गुण-दोष अलग अछि।” अनिरुद्ध दीपरेखा कम्पनीक पुरान विवाद याद कएलनि, जतय दीवानी देनदारीकेँ भी लोक आपराधिक घोटाला कहि देने छल। ओ लेखमे नूरक शीर्षक रहने देलनि। पहिल बेर हुनका लगा जे सावधानी सेहो समाचारक आन्तरिक लय भऽ सकैत अछि।

सितम्बरक एक दिन राष्ट्रीय परामर्शक प्रारम्भिक चरण पछाति गीता लग शर्त सहित एक महाविद्यालयक अवसरक सूचना आयल। महाविद्यालय दूर छल, शुल्क आ छात्रावासक खर्चक पुष्टि शेष छल। परिवार रातिभरि कागज देखलक। रुक्मिणी अपन भोजन-कार्यक अगिला महीनाक आय लिखलीह; दयाराम कार्यशालाक किराया, औजार आ उधारीक पन्ना खोललनि। गीता कहलक, “जँ खर्चक व्यवस्था नहि भेल तँ हम दोसर वैधानिक विकल्प देखब। परिणामक नामपर हम घरक आधार नहि तोड़य चाहैत छी।” पिता कहला, “अहाँक पढ़ाइ हमरा सभक साझा इच्छा अछि। एकर बोझ सेहो मिलिकय देखब। मुदा कोनो कागज पर बिना पढ़ने हस्ताक्षर नहि।” महीनसभक अस्थिरता पछाति ई गणना ओकरा आश्वासन जेकाँ लगल। योग्यता बचल छल; अवसरक ठोस रूप एखन परिवारक सूझ-बूझ माँगैत छल।

अक्टूबरमे ताराबाईक प्रथम लिखित वापसी-माँगक उत्तर कम्पनीक अधिवक्ताक मार्फत आयल। उत्तरमे आंशिक सेवाक मूल्य घटाकय निश्चित रकम समायोजन करबाक बात छल, मुदा कोनो तिथि पर वास्तविक भुगतानक प्रस्ताव नहि, आ ग्राहकसभक कुल देनदारीक सत्यापित सूची नहि। ताराबाईक वकील लिखलनि जे वास्तविक दू पाठक उपयुक्त मूल्यक प्रश्न पर बातचीत सम्भव अछि, पर अठारह सत्रक शेष वादा आ बैंकक प्राप्त रकमक हिसाब अस्पष्ट अछि। कमला कागज पलटि पुछलीह, “आज हमरा कतेक रुपैया भेटल?” ताराबाई कहलक, “एक्को नहि।” माय फेर पुछलीह, “तखन ई उत्तरक महत्त्व?” बेटी कहलक, “पहिने ओ सभ कहैत छल जे केओ पैसा नहि लेने। आब कम-सँ-कम कारोबारक सम्बन्ध स्वीकार करैत अछि, मुदा पूरा हिसाब शेष अछि।” कमला सिर हिलौलीह। न्यायिक प्रगति आ घरक अभावक घड़ी अलग समय देखबैत छल।

नवम्बरमे चन्दना रविदास विज्ञान-केन्द्रक खुला दिवसपर गीता आ ताराबाईकेँ बजौलनि। विषय छल—‘सफलता, असफलता आ तथ्य’। ओ अपन तापमापकक पहिल असफल नमूना सबकेँ देखौलीह; बादक सुधारित नमूनाक बगलमे ओहि पुरान यन्त्रकेँ जानि-बूझिकय रखलनि। गीता पुछलक, “जँ वैज्ञानिक प्रयोग सफल नहि हो, तखन परियोजना व्यर्थ?” चन्दना कहलीह, “सही कारण आ प्रमाण सुरक्षित रहत तँ विफलतासँ ज्ञान भेटैत अछि। मुदा व्ययक हिसाब गड़बड़ हो तँ ओकरा “प्रयोग असफल छल” कहिकय टारि नहि सकैत।” ताराबाई मनमे सोचलक जे ओकर जीवनक दू प्रश्नक उत्तर एही वाक्यमे छिपल अछि। परीक्षा अपेक्षाक अनुरूप नहि भेल, मुदा पढ़ल ज्ञान नष्ट नहि; सेवा-शुल्कक गलत हिसाब अलग उत्तरदायित्व अछि।

ओहि कार्यक्रममे अवनि अपन लाल कापी छात्रसभ समक्ष खोलि एक गलत विकल्पक इतिहास सुनौलक। प्रश्न-समीक्षाक प्रारम्भिक मसौदामे एककक भूल छल; सुधारिकय अन्तिम संस्करणमे गलती नहि रहि गेल। बाहरी अभ्यास-पत्रमे समान गलती भेटबाक सूचना जाँच मे गेल, मुदा ककरो दोष एखन स्थापित नहि भेल। “हम ई कागज सबकेँ एहि लेल देखबैत छी,” अवनि कहलक, “जे वैज्ञानिक अनुशासनमे शंका उठायब आ शंका प्रमाणित होयब दू चरण अछि। पहिल प्रश्न बिना दोसर नहि, मुदा पहिल प्रश्नकेँ दोसर कहि देब सेहो गलती।” गीता श्रोता बीच बैसलि। ओकरा बुझायल जे परीक्षा देबाक समय उतावल मन केवल उत्तर माँगैत अछि; समाजमे न्याय करबाक लेल प्रश्नक पूरा जीवन देखबाक पड़ैत अछि।

दिसम्बरक आरम्भमे ताराबाई बैंकक अन्तिम विवरण निकाललक। खातामे अड़तालीस हजारक भुगतानक पाँति स्पष्ट छल; ओहि रकमक कोनो आंशिक वापसी नहि भेटल छल। थानाक जाँच-पत्र पर नब तारीख पड़ल, स्थानीय दण्डाधिकारी समक्षक प्रक्रिया अपन क्रममे चलैत छल, आ वकील किछु उपलब्ध अन्य उपायक व्यवहारिक लागत बुझा रहल छल। ताराबाई पैसा भेटबाक आशा समाप्त नहि मानलक, मुदा ‘अगिला सप्ताह अवश्य भेटत’ सन अनिश्चित आश्वासनक आधारपर भविष्यक योजना बनौनाइ छोड़ि देलक। ओ मायकेँ कहलक, “हमर अङ्क एहि बेर डाक्टरीक अवसर धरि नहि पहुँचाओलक। मुदा जे पढ़लहुँ, ओकरा लऽ

वैज्ञानिक सहायकक पाठ्यक्रम वा अगिला तैयारीक निर्णय करब। करघा बेचिकय फेर एहन केन्द्रमे पैसा नहि देब।” कमला पहिल बेर खुलिकय हँसलीह।

गीता दोसरे शहरक छात्रावासमे प्रवेशक तैयारी करैत छलीह। ओकर महाविद्यालयक वैधानिक कागज जाँचि फीसक व्यवस्था परिवार आ उपलब्ध सहाय-योजनाक आधारपर क्रमशः स्पष्ट भेल छल। ओ कोठरीक दीवारपर छोट कागज चिपकौलक—‘रोगीक नाम पहिने, रिपोर्ट बाद’। ताराबाई ओकरा विदा करबाक आयलि। गीता पूछलक, “तोहर पैसा जँ पूरा वापस नहि आयल तँ?” ताराबाई गहिर साँस लेलक। “तखन न्याय लेल जे सम्भव होयत करब; मुदा अपन पढ़ाइ कैं ओहि ठगक हाथमे बन्द नहि छोड़ब। हमर माय कहैत अछि जे रोटी पकैत रहबाक चाही।” गीता ओकरा अपन पुरान जीव-विज्ञानक प्रश्न-पुस्तिका देलक। पहिल पन्नापर लिखल छल—“असली प्रश्न बेचयवाला नहि, बुझयवाला खोजू।” दुनू हँसलीह, फेर आँखि फेरि लेलीह।

जोधपुरसँ बेंगलुरु लौटनिहार रेलमे अवनि खिड़की लग बैसि छलीह। फोनपर रेवतीक छोट सन्देश आयल—“ताराबाईक देनदारीक धन एखन नहि भेटल। पर शिकायतक मूल प्रति सुरक्षित, बैंक-पञ्जी जाँचमे, आ जमानत आदेशक मर्यादा स्पष्ट अछि।” अवनि सोचलक जे सभ दस्तावेजक अन्तिम रूप अनन्त काल धरि टारि नहि सकैत; कखनो न्याय पीड़ितक घर धरि पहुँचयक समयमे सेहो मापल जाए। ओ अपन लाल कापी खोलि लिखलक—“गीता योग्यता बचौलक; ताराबाई अपन आत्मसम्मान। पैसा एखन तक नहि लौटल। ई तीनू वाक्य एक-दोसराक बदला नहि अछि।” डब्बाक भीतर एक बालक पेंसिलसँ चन्द्रमा बना रहल छल। अवनि ओकरा कागज ठीक कऽ देलक, मुदा ओकर चित्रमे अपन तरहेँ कोनो रेखा नहि जोड़लक।

वर्षक अन्तिम सुनबाईमे रेवती एक पुरान कार्यालयक पुस्तक देखि ठमकि गेलीह। एखन भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता आ भारतीय साक्ष्य अधिनियम लागू भऽ चुकल छल; मुदा आरोपित व्यवहारक तिथि, जाँचक पहिल चरण आ न्यायालयक समक्ष लम्बित प्रक्रियाक सम्बन्धमे कोन प्रावधान लागू होयत, से केवल नब पुस्तकक नाम देखिकय निर्धारित नहि कएल जा सकैत। कार्यालयक सहायक पहिल आवेदनक पुरान विधिक

उल्लेखपर प्रश्न कएलक। रेवती कहलीह, “तारीख, अपराधक कथित समय आ बचत प्रावधान पढब। हम गलत संहिता लगा देब तँ पीड़ित आ अभियुक्त दूनूक हितक हानि होयत।” ओ अपन डेस्कपर पुरान आ नब दुनू पुस्तक राखलीह। खिड़की बाहर दिसम्बरक घाम उतरि रहल छल। प्रश्नपत्रक एक वर्ष समाप्त भेल, मुदा कानूनक बदलैत पन्नापर अगिला बहस आब शुरू होएवाली छल।

अध्याय ३१ — नव संहिता, पुरान अभियोग

दिल्ली, जोधपुर आ लुधियाना; जुलाई सँ दिसम्बर २०२४

जुलाईक पहिल भोरमे दिल्लीक एक जिला न्यायालयक बरामदामे किताबक दू गन्ध एक संग मिलि गेल छल। पुरान धूसर जिल्दवाली दण्ड प्रक्रिया संहिता आ भारतीय साक्ष्य अधिनियमक पन्ना अनेक हाथसँ पियर भऽ गेल छल; नव छपल भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता आ भारतीय साक्ष्य अधिनियमक जिल्दसँ एखन कागजक कड़गर गन्ध अबैत छल। सफाईकर्मिणी पार्वती भुइयाँ बरामदाक कोनमे पोछा लगबैत छलीह। अदालतक कर्मचारी प्रेमनारायण पाण्डे हाथमे एकटा बड़ पोटरी लऽ दौड़ैत आएलाह। पार्वती पुछलीह, “एहि सभ किताब बदललासँ हमरा बेटाक पुरान मामला फेरसँ शुरू होएत?” प्रेमनारायण ठमकि गेलाह। हुनकर हाथमे पुस्तक छल, मुदा एहन प्रश्नक उत्तर कोनो पुस्तकक मुखपृष्ठपर नहि लिखल छल।

प्रेमनारायणक बेटा रवि तीन वर्ष पहिने एक सड़क-दुर्घटनाक मुकदमामे गवाह बनल छल। घटना पुरान छल, बयान अधूरा छल, आ पोटरीमे नव विधानक आवरण देखिकय पार्वती डरि गेल छलीह जे फेर तीन वर्षक छुट्टी, भाड़ा आ प्रतीक्षा शुरु होएत। प्रेमनारायण कहला, “कानून बदलल अछि, मुदा सभ मुकदमा एकहि दिन नव जन्म नहि लैत।” पार्वती फेर पुछलीह, “तखन अदालतमे हमर बेटाकेँ फेर किएक बोलाओल गेल?” प्रेमनारायण चुप भेला। ओ तारीख देखलनि—पुरान गवाहक शेष प्रति-परीक्षण। “कारण एकर अलग अछि,” ओ कहला। “हम फाइल देखिकय बतायब, अनुमान नहि करब।” पार्वती अपन भीजल हथेली निचोड़ैत कहलनि, “अनुमानहिसँ तऽ गरीब लोकक दू दिनक मजदूरी चलि जाइत अछि।”

रेवती झा ओहि दिन दिल्ली पहुँचल छलीह। हुनकर थैलामे दरभंगाक पिता शिवनारायणक पुरान लाल पेन्सिल, एकटा नील रंगक डायरी आ दू अलग मुकदमाक कागज छल। पहिल दिल्लीक २०१३ क सारथी युवा क्रिकेट मण्डलक विवाद, जाहिमे राघव मिश्रक विरुद्ध सीमित आरोपक विचारण चलि रहल छल; दोसर जोधपुरक सन्धिपथ अध्ययन-सहायता केन्द्रक मामला, जतय ताराबाई भील अपन अड़तालीस हजारक हिसाब माँगि रहल छलीह। दुनू कागजक आवरणपर नाम, तिथि आ घटनाक आरम्भ लिखल छल। रेवती ओहि बिहान अदालतक सीढ़ी चढ़ैत पहिने फाइलक नाम नहि, घटनाक तिथि देखलीह। हुनका लगैत छल—एहि वर्ष तिथिये सभसँ पैघ गवाह बनत।

अरुणिमा दत्त कोर्टक गेट लग भेटलीह। हुनकर कन्हापर भारी बस्ता छल। “नव किताब अनलहुँ?” रेवती पुछलीह। अरुणिमा मुस्कुराएलीह, “अनलहुँ, मुदा आजुक पहिल सुनबाईमे पुरान पुस्तक खुलत।” ओ राघवक फाइल देखौलीह। पुलिसक प्रारम्भिक सूचना २०१३ मे दर्ज भेल छल, जाँच तखनहि शुरू भऽ गेल छल, आरोप निर्धारण आ अभियोजन-साक्षी सेहो पहिने होइत रहल। अरुणिमा धीमा स्वरमे कहलीह, “मुवक्किलकेँ कोनो कठिन धारा सुनबाक डर नहि; ओकर असल डर ई अछि जे दस वर्ष पहिनुक एक सन्देशक आधा वाक्य हुनका आजीवन अपराधी बनाकय नहि छोड़ि दय।” रेवती जवाब देलीह, “ताहि लेल पुरान प्रक्रिया आ वास्तविक साक्ष्य दुनूकेँ ठीकसँ चिन्हब आवश्यक अछि।”

राघव मिश्र अदालतक बाहर अपन माय पद्मा मिश्रक संग ठाढ़ छल। पद्मा दरभंगासँ अनल मखानक एक छोट डिब्बा अरुणिमाकेँ देबाक लेल रखने छलीह, मुदा बेटाक चेहरा देखिकय डिब्बा खोलब भूलि गेलीह। राघवक केशमे किछु असमयक पकेल रेखा स्पष्ट छल। ओ दिल्लीमे छोट लेखा-कार्यालयमे काज करैत छल, जतय ग्राहकक बाल-बाल हिसाब रखैत। “जतय हम अंक लिखैत छी, लोक पुछैत अछि—अहाँ ओही क्रिकेटक अंक लिखनिहार छी?” ओ रेवतीसँ कहलक। रेवती ओकरा भरोसा नहि देलीह जे मुकदमा आजे समाप्त भऽ जाएत। ओ कहलीह, “अहाँक विरुद्ध की सिद्ध होइत अछि, की नहि—ई अदालत कहत। मुदा नब कानूनक नामसँ पुरान विचारणक अधिकार घटायल नहि जा सकैत।” पद्मा एतेक सुनिकय अपन हथेली खोललीह।

अदालतक कोठरीमे पहिल आधा घंटा एकटा मामूली भूलक कारण रुकि गेल। सूचीमे राघवक प्रकरणक आगाँ नब संहिताक एक प्रक्रिया-धारा छपि गेल छल, जकर सम्बन्ध एहि लम्बित विचारणसँ नहि छल। नव नियुक्त कर्मचारी शशिभूषण साह कहलक जे कम्प्यूटरमे पुरान नमूनाक ठाम नव खण्ड स्वतः भरि जाइत अछि। सरकारी अधिवक्ता पुछलनि, “ई केवल सूचीकरणक त्रुटि अछि कि आवेदनमे सेहो नव प्रावधानक आधार राखल गेल अछि?” शशिभूषण फाइलक भीतरसँ प्रति बाहर कएलक। आवेदनक मुख्य भाग पुरान दण्ड प्रक्रिया संहिताक अन्तर्गत तैयार छल, मुदा उपरक नब छपल पन्नापर समकक्ष धारा लिखि देल गेल छल। निस्सन्देह ई छोट गलती छल, मुदा एहि गलतीक बलपर कोनो पक्ष प्रक्रियागत अधिकार खोए, से सम्भव छल।

न्यायाधीश दूनू पक्षकेँ सुनलनि। रेवती पुरान अभियोजनक आरम्भिक तिथि आ लम्बित विचारणक स्थिति देखौलीह। सरकारी अधिवक्ता सेहो स्वीकार कएलनि जे नव संहिता लागू होएबाक पूर्व विचारण लम्बित छल; सूचीपत्रक त्रुटि आरोप वा अपराधक प्रकृति बदलैत नहि। न्यायाधीश कर्मचारीकेँ अभिलेख दुरुस्त करबाक आदेश देलनि आ कहलनि जे मामलेक लागू प्रक्रिया विषयमे १ जुलाई २०२४ सँ प्रभावी बचाव-प्रावधान देखल जाए। अदालत ई सेहो स्पष्ट केलक जे पन्नाक माथपर नव धारा छपि गेलासँ कोनो पुरान कार्यवाही स्वतः अमान्य नहि बनैत। शशिभूषण अपन नील कलमसँ सुधारक तिथि लिखलक। ओकरा लागल, अदालतक पहिल पाठ कोनो व्याख्यान नहि—एकटा अक्षरक भार बुझब छल।

दुपहरियामे राघवक गवाहीक अगिला चरण पर विचार होएबाक छल। दयानन्द प्रसाद उम्रक कारण चलबामे असमर्थ भऽ रहलाह। हुनकर पहिनुक बयान २०१३ मे दर्ज भेल छल आ प्रति-परीक्षणक शेष अंश आइ सुनबाक लेल रखल गेल। दयानन्दक पुरान कापीमे अन्तिम ओवरक अङ्क दू हाथक लिखावटमे छल। अरुणिमा पुछलीह, “अहाँ ई दू लेखन अपन आँखिसँ कएल गेल देखलहुँ?” दयानन्द कहला, “हम अपन भाग लिखने रही; दोसर भाग राघव लिखलक कि नहि, से ओहि दिनक हड़बड़ीमे ठीकसँ नहि देखलहुँ।” अभियोजन हुनकर पहिल बयान देखबैत कहलक जे ओ समय हुनका किछु स्पष्ट स्मृति छल। न्यायाधीश दूनू कथन अभिलेखमे दर्ज

करौलनि। उम्रक कारण स्मृति धूमिल भेल, से तुरन्त झूठक प्रमाण नहि; पहिल बयान सेहो अन्तिम सत्य नहि।

कोठरीक पिछिला बेंचपर नवीन राणा बैसल छल। ओहि कालक खेल-मण्डलक युवा खेलाड़ी आब मुहल्लामे बालकसभकेँ नि:शुल्क गेंद फेकब सिखबैत छल। अदालतक बाहर ओकरा बारम्बार सुनबय पड़ैत—“तोरा दिनो परिश्रम कएल, तखन राघवक संग की भेल?” नवीन स्वयं सोचैत छल जे बड़ प्रतियोगितामे चयन नहि होएबाक पीड़ा कैँ अपराधक शंका सँ मिलायब उचित नहि। दयानन्दक गवाही सुनिते ओकरा २०१३ क मैदानक धूलि याद आबि गेल। ओ बुझलक जे दश वर्षक दूरीसँ देखल एक ओवरक गति अनेक लोकक स्मृतिमे अलग आकार लेने अछि। ओ एक कागजपर लिखलक—“हम जे खेललहुँ, ओहीक गवाही देब; जे सुनलहुँ, ओकर नहि।”

अदालतक विश्रामक समय प्रेमनारायण नब नियुक्त कर्मी शशिभूषणकेँ चाय लेल नीचाँ लऽ गेलाह। दूनू एक पुरान किताब-दूकानक सामने बैसलाह। दूकानदार रहमान मियाँ पुरान धारासँ भरल छोट जेबी पुस्तक सस्तामे बेचि रहल छलाह। शशिभूषण पुछलक, “एहि पुस्तक सभक आब की उपयोग? नव कागज आगि गेल तऽ पुरान कानूनकेँ राखल किएक?” रहमान मियाँ शांत स्वरमे उत्तर देलनि, “हमर पिताक मुकदमा १९८० क दशकमे शुरू भेल छल। कानूनक किताब पुरान भेलासँ तथ्य पुरान नहि होइत। आब जँ कियो बीस साल पहिनुक जुर्मक बात उठाओत, तऽ ओहि समयक नियम जानब आवश्यक।” प्रेमनारायण मियाँक बात सुनि हँसलाह। शशिभूषण चायक प्याला राखि सोचलक—छपल अक्षरक आयु कागजक बाजारसँ नहि, लोकक अधूरा न्यायसँ बनैत अछि।

दिल्लीक एहि कोठरी सँ दू हजार किलोमीटर दूर जोधपुरमे ताराबाई अपन मायक आँखिक दवाईक खर्चक हिसाब बना रहल छलीह। दिसम्बर २०२४ मे हुनका देवेन्द्र कश्यपक केन्द्रसँ एको रुपैया वापस नहि भेटल छल। कमला भील कढ़ाईक सूइकेँ झुकाकय देखैत कहलीह, “तोहर पढ़ाइक बचत खातामे लगल, ओ पैसा जँ नहि घूमि आएत, तँ फेर तूँ तैयारी कहिना करबेँ?” ताराबाई उत्तर नहि देलक। ओ चन्दना रविदासक खुले विज्ञान-सत्रमे स्वयंसेवी रूपमे पढ़बैत, किछु बालिकाकेँ प्रयोगक एकक बुझबैत आ अपना लेल फुरसतमे जीवविज्ञान दोहरबैत

छलीह। “माए,” ओ अन्तमे कहलक, “पैसा खातिर जे कागज लिखने छी, ओ छोड़ब नहि। मुदा ओकर प्रतीक्षामे किताब बन्द सेहो नहि करब।”

सन्धिपथक प्रकरणक पहिल शिकायत जून २०२४ मे थानामे प्राप्त भेल छल; प्रारम्भिक परीक्षण आ लेखा-संग्रहक लिखित क्रम सेहो ओहि महीनासँ चलि रहल छल। पुलिसक मुख्य अभिलेखमे एहि तिथिक उल्लेख छल, मुदा नव तैयार एक आवेदनमे १ जुलाई पछातिक संहिताक धारा बिनु कारण लिखल गेल। अधिवक्ता हरिश मेहता एहि पन्नाक प्रति रेवतीकेँ देखौलनि। “दूनू पक्षक लेल ई समान समस्या अछि,” ओ कहला। “जँ जाँच पहिनहिसँ चलि रहल छल तँ लागू प्रक्रियाक प्रश्न बिना देखल नब रूपरेखा लगा देनाइ उचित नहि।” रेवती कहलीह, “हम एहि पर अहाँसँ सहमत छी। मुदा मईमे भुगतानक समय कथित छल भेल कि नहि, ओ अलग प्रश्न अछि। प्रक्रियागत भूलसँ मूल विवाद समाप्त नहि होइत।”

ताराबाईक हाथमे एहि बेर तीनटा तिथि छल: अप्रैलक विज्ञापन आ भुगतान, जूनक लिखित शिकायत तथा दिसम्बरक अधूरा प्रतिवेदन। रेवती ओकरा कहलीह, “अपराध भेल कि नहि, से प्रमाणसँ निकलत। किन्तु जँ अप्रैलक व्यवहारक जाँच छठम महीनामे शुरू भऽ गेल छल तँ जुलाईमे नव संहिताक प्रकाशन देखिकय जूनक जाँचकेँ नव घटना नहि बनाओल जा सकैत।” ताराबाई पुछलक, “तखन न्यायालयमे हमर रूपैयाँक निर्णय भऽ जायत?” रेवती माथ हिलौलीह। “नहि। किछु अधिकारक रक्षा एहीसँ होएत जे गलत धारा सुधरि जाए। पैसा बापसीक प्रश्न तकर बादो अपन साक्ष्य माँगत।” ताराबाई कापीमे ई वाक्य लिखलक, मुदा लिखिते ओकरा अपन मायक औषधिक पर्ची याद आयल।

अहि बीच कानूनी सहायता केन्द्रमे नव प्रशिक्षु वकील अनमोल तिर्की एकटा सूचना-पट्ट लगौलक। पट्टपर तीनू नव कानूनक नाम छल आ नीचाँ एक वाक्य—“पुरान घटना लेल स्वत: नव दण्ड नहि।” किछु लोक पढ़ि ठाढ़ भऽ गेल। एक वृद्ध पुछलनि, “हमर गाममे जे जमीन-विवाद अछि, ओहो एही कानूनमे जाएत?” अनमोल मुस्कुराएब छोड़ि गम्भीर भेल। “नहि, ई आपराधिक विधिक परिवर्तन अछि। जमीनक सभ विवाद एही संहितासँ नहि चलत। अहाँक फाइल देखब तखन उपयुक्त मार्ग कहब।” ओ अपन पहिल सूचना मे एकटा दोसर पंक्ति

जोड़लक—“प्रत्येक विवादक अपन कानून आ मंच।” दोसर दिनसँ पट्टक सामने प्रश्नक भीड़ घटल नहि; मुदा गलत निष्कर्ष थोड़ा घटल।

सितम्बरक पहिल सप्ताहमे दिल्लीक जिला न्यायालयक कर्मचारिसभक बीच एक नब चर्चा फैलल। किछु वादीक फोनपर अदालतक नामसँ सन्देश पहुँचल छल—“पुरान फाइलक डिजिटल सत्यापन आवश्यक; निर्दिष्ट शुल्क जमा नहि कएलासँ अगिला तारीख प्रभावित होएत।” पहिल नजरिमे भाषा सरकारी सन छल, ऊपर छोट चिह्न सेहो छल, मुदा चिह्नक रङ्ग आ अक्षरक क्रम अधिक ध्यानसँ देखलापर अलग बुझाइत। पार्वती भुइयाँक फोनपर ई सन्देश देर राति आयल। ताहिमे रविक दुर्घटना-मामलाक एक सार्वजनिक सूची-संख्या आ अगिला तिथिक उल्लेख छल। पार्वती ठमकि गेलीह। हुनका अपन बेटाक गवाही छूटि जाएबाक भय भेटल, आ ओहिसँ बेसी भय ई जे अदालतक दुआरिपर दिनभरि काज कऽ कियो हुनका कागज न बुझबाक आरोप लगाएत।

सन्देशक नीचाँ एक भुगतान-सङ्केत छल। पार्वती अपन छोट बचत खातासँ छः हजार आठ सय रुपैया भेजि देलीह। भुगतान पछाति जे पन्ना खुजल, ताहिपर ‘सत्यापन पूर्ण’ लिखल आएल, मुदा कोनो सरकारी क्रमांक नहि। ओ राति रविक फोन नहि उठौलनि। भोरे अदालतक बरामदामे पोछा लगबैत हुनकर हाथ काँपैत छल। प्रेमनारायण पुछलनि, “आज तबियत ठीक नहि?” पार्वती कहलीह, “कागजक बात किछु अछि।” ओ चुप रहलि, किएक तँ अपन भूलकेँ ओ नोकरीक अयोग्यता बुझि बैसल छलीह। हुनका ज्ञात नहि छल जे वैध वादीकेँ फँसेबय लेल बनाओल झूठ सन्देशक कारणेँ हुनकर बुद्धि छोट नहि भऽ जाइत।

दुपहरियामे रवि पहुँचल। ओ अपन मायकेँ डाँटबाक बदला भुगतानक पावती देखलक। “एहि पन्नाक पता अदालतक वेबसाइटसँ अलग अछि,” ओ कहलक। पार्वतीक आँखिमे पानि आबि गेल। “हम रोज एही भवनमे पोछा लगबैत छी, तइयो अदालतक नाम देखिकय ठकि गेलहुँ।” रवि मायकेँ पीठपर हाथ रखलक। “हम दुर्घटनाक समय सड़कपर काज करैत छलहुँ। गाड़ी कता सँ आएल से देखने छी, मुदा चलौनिहारक मन की छल से नहि। आइयो तों जे देखलें से कहिहें। दोष दोसरक छल केँ अपन अपराध मत मानिहें।” एहि वाक्यमे मायकेँ पहिल बेर अपन बेटाक गवाहीक साधारण ईमानदारीक गम्भीर अर्थ बुझायल।

प्रेमनारायण ओहि छपल पावतीकेँ देखिते शशिभूषणकेँ बजौलनि। दूनू सत्यापित न्यायालयीन सूची आ प्राप्त सन्देशक क्रम मिलौलनि। अदालतक अभिलेखमे एहन शुल्कक कोनो आदेश नहि छल। तिथि वास्तवमे सूचीमे उपलब्ध छल, मुदा एकर अर्थ ई नहि जे संदेश अदालत पठौने छल। प्रेमनारायण पहिने अपन कोठरीक प्रभारीकेँ जानकारी देलनि, फेर पार्वतीकेँ उचित पुलिस-सहायताक बारेमे बतौलनि। ओ सावधानीसँ कहला, “कर्मचारीपर बिना प्रमाण लांछन नहि, आ नकली संदेशकेँ चुप रहिकय छूट सेहो नहि।” शशिभूषण मोबाइलक मूल संदेश सुरक्षित रखबाक, बैंकक आधिकारिक विवरण निकालबाक आ नकली लिंक फेर नहि खोलबाक बात लिखि देलक। पार्वती एखनहुँ काँपैत छलीह, मुदा पहिल बेर हुनकर भयकेँ कागजक रूप भेटल।

रेवतीकेँ एहि शिकायतक विषयमे अरुणिमा बतौलनि। ओ दुनू पार्वतीसँ न्यायालयक बाहर, भीड़सँ दूर बैसलीह। पार्वती पहिने कहलनि, “हमरा गाड़ी-वाला केसक मदद चाही, दोसर केस नहि।” रेवती कहलीह, “दूनू बात अलग रहत। रविक पुरान दुर्घटना-मामलामे आजुक नकली सन्देश स्वतः साक्ष्य नहि बनत। मुदा सितम्बरमे कियो अदालतक नामपर पैसा लैबाक छल केलक हो, तँ ओ नब व्यवहारक अलग जाँच अछि।” पार्वती पुछलीह, “हमर पैसा एखनहि फिर्ता कराओल जा सकैत?” अरुणिमा स्पष्ट कहलीह, “बैंकक शिकायत आ साइबर-अपराधक रिपोर्ट तुरन्त करब उपयोगी अछि; लेनदेन रोकल जा सकत की नहि, से समय आ खाताक स्थिति पर निर्भर करैत अछि। अदालत बिना वास्तविक प्रक्रिया तत्काल वापसीक गारण्टी नहि दैत।” पार्वतीक मुँहपर निराशा छल, मुदा एहि बेर निश्चय सेहो।

थानामे पदस्थ निरीक्षक माधव चौहान प्रथम सूचना सुनी चुप रहलाह। “अहाँक नाम?” ओ पुछलनि। पार्वती अपन नाम कहलीह। “रवि कखन पैसा पठौलक?” “पैसा हम पठौलहुँ,” पार्वती उत्तर देलीह। “आगाँसँ लिखू जे बचत हमर छल। बेटा ई काज नहि कएलक।” माधव पञ्जीमे सुधार कएलनि। एहि छोट आग्रहमे पार्वतीक जीवनक एक पैघ मान छल—हुनकर कमाइ बेटाक खाता नहि, अपन श्रमक अर्जन छल। अधिकारी लिखलनि जे कथित छलक सन्देश सितम्बर २०२४ मे पठाओल गेल, भुगतान ओही सप्ताहमे भेल; ताहि लेल एहि कथित नब अपराधक वर्गीकरणमे तत्काल लागू भारतीय न्याय संहिता आ जाँचक प्रक्रियामे भारतीय

नागरिक सुरक्षा संहिताक प्रावधान देखल जाएत। पुरान दुर्घटनाक प्रकरणसँ एकरा जोडि नहि देल गेल।

माधवक मेजपर नव साक्ष्य अधिनियमक प्रति छल। शशिभूषण पुलिसक माँगपर मूल फोन प्रस्तुत कएलक, मुदा जप्त करबाक आवश्यकता आ प्रक्रिया अधिकारी स्वयं जाँचबैत रहलाह। पुलिस संदेशक दृश्य-प्रतिलिपि, प्राप्ति-समय, उपकरणक विवरण आ सम्बद्ध खाताक औपचारिक जानकारी अलग-अलग मँगौलनि। पार्वती डरि पुछलीह, “हमर फोन लऽ गेलाह तँ बेटा संग बात कहिना करब?” अधिकारी ओकरा बतौलनि जे जाँचमे मूल डिजिटल स्रोत सुरक्षित रखनाइ जरूरी अछि, मुदा कतेक अवधि धरि उपकरण आवश्यक अछि आ कब प्रतिलिपि तैयार भऽ सकैत अछि, तकर कारण लिखित रूपमे दर्ज कएल जाएत। पार्वती पहिल बेर बुझलीह जे जाँचक शुद्धता मात्र पुलिसक सुविधा नहि, शिकायतकर्ताक दैनिक जीवनक प्रश्न सेहो अछि।

बैंकक शाखामे सरबजीत कौरक प्रशिक्षित सहकर्मी जसलीन सिद्धूक बदली हालहि दिल्लीमे भेल छल। पार्वतीक भुगतान एहि शाखाक खातामे नहि गेल छल, मुदा समन्वयक अनुरोधपर जसलीन शिकायत-पत्रक उचित मार्ग बुझौलीह। “पैसा पठौनिहारक खातासँ रकम कटबाक प्रमाण अछि,” ओ कहलीह। “मुदा जतय पहिल बेर रकम पहुँचल ताहि खाताक अन्तिम नियन्त्रण ककरा लग छल, तकरा लेल अलग अधिकृत अभिलेख आ अनुवर्ती लेनदेन देखब पड़त।” पार्वती एकदम सरल प्रश्न कएलीह, “हम जे नम्बर देखैत छी, ओहिकेँ अदालतक कहल से सही?” जसलीन उत्तर देलीह, “कोनो नाम स्क्रीनपर लिखलासँ खाता ओही संस्थाक नहि भऽ जाइत।” ओ अहाँक अस्पताल बिल, विद्यालयक फीस आ बाजारक भुगतानक उदाहरण देतहि पार्वतीक चेहरा पर बुझबाक भाव आयल।

दोसरे दिन नूर जतय एहि विषयपर समाचार लिखबाक लेल अदालत पहुँचल छलीह। कोनो कर्मचारी हुनका नकली लिंकक चित्र पठाओल छल। नूर पहिने शीर्षक लिखलीह —“अदालतक नामपर डिजिटल ठगीक शंका।” सम्पादक अनिरुद्ध चाहैत छलाह जे घटना अधिक सनसनीपूर्ण बनय। “अदालतक भीतरेसँ डाटा लीक?” ओ पुछलनि। नूर उत्तर देलीह, “एखन एहन प्रमाण नहि। तारीख सार्वजनिक सूचीसँ सेहो भेटि सकैत अछि।” अनिरुद्ध

कहला, “तखन पाठक ध्यान नहि देत।” नूर किछु पल चुप रहलीह। पार्वतीक काँपैत हाथक स्मृति हुनकर नजरिमे छल। “जे स्वयं अदालतमे सफाई करैत अछि ओकरा नकली नोटिस छल सकैत अछि—एतबामे कम गंभीर कथा नहि,” ओ कहलीह। एहि बेर शीर्षक बदलल नहि गेल।

नूर पार्वतीसँ पूछलीह जे रिपोर्टमे नाम देब स्वीकार अछि कि नहि। पार्वती पहिने घबरायलीह। “नोकरीक ठामपर लोक कहत जे हमरा एको कागज बुझि नहि पड़ैत।” नूर हुनका बतौलीह जे सार्वजनिक रिपोर्टमे निजी संख्या आ खाताक विवरण नहि छापल जाएत, आ नाम नहियो देल जा सकैत अछि। पार्वती अपन बेटासँ बात कएलीह। रवि कहलक, “तोहर कथा लोकक मदद कऽ सकैत अछि, मुदा तों तैयार नहि छी तँ बाध्यता नहि।” अन्तमे पार्वती अपन नाम देबाक अनुमति देलीह, बस एतेक शर्तपर जे रिपोर्टमे हुनका नासमझ नहि कहल जाए। “हम डरमे पैसा भेजलहुँ,” ओ कहलीह, “डर बेचबाक धन्धा जँ कियो करैत अछि, तँ ओकर विषयमे लोक बुझय।” नूरक कलम किछु देर रोकि गेल।

जोधपुरमे एहि समाचारक कतरन ताराबाईक फोनपर पहुँचल। ताराबाई पढ़ि कमलाकेँ सुनौलक। कमला एक वाक्यपर ठमकि गेलीह—‘अदालतक नामसँ भेजल मांग-पत्रक स्वतंत्र सत्यापन’। “तोरा सन्धिपथसँ जे शिकायत वापस लेबाक संदेश आयल छल, ओकरो हम विना पूरा नाम-ठेकानाक नहि मानलहुँ,” कमला कहलीह। ताराबाई मुस्कुरौलक, “अहाँ कहने रही जे रकम पहिने, शर्त बाद।” मुदा मायक आँखि अचानक भीजि गेल। “हमरा केओ अदालतक नामसँ डरौलक तँ?” ताराबाई ओकर हाथ पकड़लक। “तखन हम आधिकारिक कार्यालयसँ पुछब। एक सन्देशक भयमे जकरा जे भेजब उचित नहि, से नहि भेजब।” एहि भरोसाक पाछाँ सेहो खाली बचत खाताक टीस रहल।

शशिभूषण अपन कम्प्यूटर-कक्षमे एक नव तालिका तैयार कएलक, मुदा तालिकामे ना कोनो वादीक गोपनीय विवरण छल, ना अनुमानित दोषी। ओ तीन भेद लिखलक—घटनाक तिथि, न्यायिक कार्यवाही पहिने शुरू भेल छल कि नहि, आ कोन प्रकारक प्रमाण प्रस्तुत अछि। पहिल पाँतिमे राघवक २०१३ क अपराध-अभियोग आ लम्बित विचारण; दोसर पाँतिमे जूनमे प्रारम्भ भेल सन्धिपथक जाँच; तेसर पाँतिमे सितम्बरक पार्वतीक स्वतंत्र शिकायत।

प्रेमनारायण देखिते पूछलनि, “एहि तालिकाकेँ ककरा देखाएब?” शशिभूषण कहलक, “कार्यालयमे भीतर प्रशिक्षण लेल; बाहर ककरो व्यक्तिगत नाम दऽ नहि।” प्रेमनारायण सहमति देलनि। “अनाम उदाहरण बनाब। नागरिकक जिनगीकेँ पाठ्य-पुस्तक नहि बना दिअ।”

राघवक पिता आब नहि रहलाह। शिवनारायण झा हुनका मृत्यु-संवाद सुनलनि तँ अपन पुरान साथीकेँ पत्र लिखलनि। राघवक पिता २०१३ मे एक बेर कहने छलाह—“बेटा जँ दोषी हो तँ कानूनकेँ अपन बाट चलबाक दिअ, मुदा आरोपक नामसँ ओकर घरक प्रत्येक किछु जप्त मत करू।” शिवनारायण एहि वाक्यकेँ याद कएलनि। वयसक कारण हुनकर हाथ काँपैत छल, मुदा रेवतीकेँ पत्र लिखबाक समय अक्षर स्पष्ट राखलनि। ‘नव संहितामे पुरान न्याय केओ मिटाउल नहि चाहत,’ ओ लिखलनि। “जँ न्यायिक कार्यालय पुरान प्रकरणक पुस्तक बिसरि जाए, तँ दस वर्षक श्रम मात्र तारीख बनि जाएत। आ जँ नब अपराधक सही मार्ग नहि बनय, तँ पीड़ित दरबज्जापर फेर ठाढ़ रहत।”

अक्टूबरक एक सोम दिन राघवक मुकदमामे इलेक्ट्रॉनिक सन्देशक पुरान प्रति फेर खोलल गेल। अभियोजन एक मुद्रित पन्ना प्रस्तुत कएलक, जाहिपर खेलक एक समयक निकट ‘हिसाब मिलल’ लिखल छल। अरुणिमा पुछलीह, “ई वाक्य मूल मोबाइलसँ कतेक बेर प्रतिलिपि भेल? पहिल निकालल अभिलेखमे कतेक समय दर्ज छल?” अनुसन्धानक साक्षी अधिकारी अभिलेखमे देखलनि। ओ उत्तर देलनि जे तत्कालीन कार्यालय एक प्रतिलिपिक माध्यमसँ काम कएने छल आ उपकरणक घड़ीक सेटिंग सम्बन्धी टिप्पणी जाँच-पञ्जीमे छल। सरकारी अधिवक्ता कहलनि जे एहन त्रुटि अर्थक स्वतः विनाश नहि। रेवती प्रतिवाद कएलीह, “हमो से नहि कहैत छी। मुदा जँ संदेशक समय आरोपक केन्द्र अछि, तँ समय तय करबाक विधि प्रमाणक केन्द्र सेहो होएत।”

न्यायाधीश पुछलनि जे इलेक्ट्रॉनिक अभिलेख प्रस्तुत करबाक तत्कालीन विधिक आवश्यकता कोन छल। अरुणिमा भारतीय साक्ष्य अधिनियम, १८७२ क इलेक्ट्रॉनिक अभिलेख सम्बन्धी धारा ६५बीक प्रसंग उठौलनि। अभियोजन पुरान जाँचमे तैयार प्रमाण-पत्र, उपकरणक जप्ती-विवरण आ उपलब्ध प्रतिलिपि दाखिल करबाक अवसर माँगलक। अदालत

निर्देश देलक जे उपलब्ध मूल सामग्री आ प्रमाण-पत्रक स्थिति स्पष्ट लिखित रूपमे राखल जाए, तकर बाद स्वीकार्यता आ प्रमाणिक मूल्यक प्रश्न उचित चरणमे विचारल जाए। न्यायाधीश एहि समय कोनो सन्देशकेँ अन्तिम रूपसँ सत्य वा असत्य नहि घोषित कएलनि। राघव अपना सीटपर बैसल ई सुनैत छल जे ओकर भविष्य एक शब्दक अर्थसँ कम, ओहि शब्दक यात्रा सँ बेसी सम्बन्धित भऽ गेल अछि।

दीपेन्द्र भाटियाक नाम फेर आयल। ओ वर्षों पहिने दिल्लीक खेल-अनुबंधक कार्यालयमे खाताक सहायक छल आ विदेश जाइत समयक कागजमे जे तिथि छल, ओ एक साक्षीक कथनसँ मेल नहि खाइत। दीपेन्द्र अपन पूर्व बयानमे कहने छल जे ओहि विशिष्ट बैठकीमे स्वयं उपस्थित नहि रहल। अभियोजन पक्ष कहलक जे वीडियो-सम्पर्क आ यात्रा सम्भव होएबाक आधारपर अनेको व्याख्या खुला अछि; बचाव पक्ष कहलक जे केवल सम्भावना लिखिकय साक्षीक निश्चित उपस्थिति सिद्ध नहि होइत। न्यायाधीश दूनू कथन दर्ज करौलनि। दीपेन्द्रक यात्रा-पत्रक प्रमाणित प्रति आ सम्बन्धित कार्यालयक उपस्थिति-पञ्जी उपलब्ध कराबय लेल पृथक समय देल गेल। अदालतक भीतर एक पुरान कलमक टकटक सुनाइत रहल, मुदा पैघ निष्कर्ष फेर स्थगित भऽ गेल।

बाहर पद्मा मिश्र चायक दोकानपर बैसि छलीह। नूर हुनकर नजदीक गेलीह। “अहाँक बेटाक मामला बहुत दिनसँ चलि रहल अछि,” ओ कहलीह। पद्मा उत्तर देलीह, “दिन गिनल आसान अछि, प्रत्येक दिन जिअब कठिन।” नूर पूछलीह जे रिपोर्टमे पद्माक बात लिखि सकैत छथि। पद्मा थोड़ी देर बाद कहलीह, “लिखू, मुदा हमर करुणाकेँ निर्दोषिताक प्रमाण मत बनाउ। हम माए छी। माएक आंसू तथ्य नहि।” नूर देखलीह जे पद्मा अपन बेटाक बचावक सीमा स्वयं चिन्हैत छलीह। ई सावधानी एहन महिला सँ भेटल जे कखनो विधि-विद्यालय नहि गेल छलीह, मुदा लम्बित मुकदमाक दुआरिपर वर्षक दर वर्ष बैसि न्यायालयक भाषासँ कठिन एकटा नैतिक भाषा सीखने छलीह।

रेवती अदालतसँ निकलि शिवनारायणकेँ फोन कएलीह। पिता पुछलनि, “दयानन्दक गवाही?” “पुरान, स्मृति कम, मुदा कापी सुरक्षित अछि,” रेवती कहलीह। “इलेक्ट्रॉनिक प्रमाण?” “मूल आ प्रतिक बीच अन्तरक सुनबाई शेष।” शिवनारायण कहला, “याद राखू—

विचारणक विलम्ब स्वयं अभियुक्तक जीवनपर भार अछि, आ पीड़ित अथवा समाजक विश्वसनीय निर्णयक अधिकारपर सेहो। केवल ई कहिकय विलम्बक दोष गवाहपर नहि राखू जे ओकर वयस बढ़ि गेल।” रेवती चुपचाप सुनलीह। पिता फेर कहला, “अहाँक कार्यालयमे जे सहायक फाइल उठबैत छथि, हुनकरा सेहो पुछू—एहि दस वर्षमे कतेक बेर सूची बदली?” ई प्रश्न रेवतीक मनमे तेरह वर्षक अदालतक वास्तविक समय खोलि देलक।

ओहि साँझ अरुणिमा काज समाप्त कऽ एक छोट विद्यालयक सभामे गेलीह। हुनका विद्यालयक छात्रसभ नब कानून सम्बन्धमे प्रश्न पुछबाक लेल बजौने छल। एक विद्यार्थी कहलक, “जँ पुरान पुस्तक समाप्त भऽ गेल, तखन ओकर धारासँ सजाय की दऽ सकैत छी?” अरुणिमा बुझौलीह जे अपराधक समय लागू कानून आ नब कानूनक बचाव-प्रावधान महत्त्वपूर्ण छथि; पुरान अपराधक दण्डनीयता कानूनक नाम बदललासँ स्वतः नष्ट नहि होइत। दोसर छात्र पुछलक, “नब किताबमे लिखल कम या बेसी सजाय पुरान अपराधपर लागय?” अरुणिमा संविधानमे पूर्वप्रभावी दण्डक निषेधक बात उठौलनि, आ कहलनि जे एहन प्रश्नक सटीक उत्तर तथ्य, समय आ सम्बन्धित प्रावधान देखिकय देबाक चाही। छात्रसभक लेल कानूनी भाषा कठिन छल; ओ काली पट्टीपर दू तिथि लिखि धीरे-धीरे उदाहरण देलीह।

विद्यालयक सभामे एक किशोरी निशा अपने हाथ उठौलक। “हमर बापू कहैत छथि जे अदालतक नामसँ फोन आयल तऽ हर हालमे पैसा जमा करू, नहि तँ पुलिस आयत। ई सही अछि?” अरुणिमा पार्वतीक कथा याद कएलीह। ओ स्पष्ट कहलीह जे कोनो व्यक्तिगत मोबाइल-सन्देश अथवा अनजान लिंककेँ मात्र सरकारी भाषा देखिकय प्रमाणित नहि मानबाक चाही; सम्बन्धित न्यायालयक अधिकृत कार्यालय वा आधिकारिक माध्यमसँ पुष्टि करब आवश्यक अछि। निशा पूछलक, “हम साधारण फोन चलबैत छी, वेबसाइट नहि।” अरुणिमा उत्तर देलीह, “तखन अदालतक सहायता-कक्ष, वकील, विधिक सेवा कार्यालय, विश्वसनीय अधिकृत नम्बर—अनेक बाट अछि। डिजिटल ज्ञानक अभावक कारणेँ न्यायसँ वञ्चित करब उचित नहि।” निशाक आँखि चमकि उठल; ओ घरमे अपन बाबूजीकेँ ई बात बुझाएबाक निश्चय कएलक।

जोधपुरक पुरान न्यायालय भवनमे हरिश मेहता आ रेवती सन्धिपथक जाँच-अभिलेखपर फेर भेटलाह। हरिश पुलिसक नव प्रार्थना-पत्र देखौलनि, जाहिपर भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिताक धारा लिखल छल। “सरकारी पक्षकेँ सुधारबाक अवसर अवश्य भेटत,” ओ कहला, “मुदा जूनमे प्रारम्भ जाँचक १ जुलाईक दिनक स्थिति पहिले स्पष्ट हो।” रेवती कहलनि, “किछु अधिकारीक प्रतिवेदनमे “प्राथमिक शिकायत” आ “औपचारिक अनुसन्धान” केर भेद अछि। नाम मात्रसँ नहि, वास्तविक पञ्जी आ विधिक चरण देखल जाए।” दूनू सहमत भेला जे तिथि-सूची पेश कएल जाए। ताराबाई ओहि दिन अदालतमे उपस्थित नहि छलीह; ओकर परीक्षा-सत्र छल। रेवती एहि अनुपस्थितिक कारण लिखि देने छलीह, जाहिसँ कर्मचारी हुनका दोषी साक्षी जेकाँ नहि ताकय।

किछु दिन बाद पुलिसक अधिकृत अभिलेखसँ स्पष्ट भेल जे जूनक अन्तमे शिकायत प्राप्त होएबाक बाद जाँचक विधिवत आरम्भिक कार्यवाही दर्ज भऽ गेल छल। एहन स्थिति मे लम्बित अनुसन्धानक संक्रमण-प्रावधानपर विचार आवश्यक बनल। सरकारी अधिवक्ता अपन पहिल आवेदनक अधारा-सन्दर्भ सुधरबाक प्रार्थना कएलनि। हरिश मेहता विरोध नहि कएलनि जे लिपिकीय भूल सुधारल जाए; ओ केवल अनुरोध कएलनि जे सुधारक कारण आ आधार लिखित रहय। सक्षम दण्डाधिकारी कारणयुक्त आदेश देलनि—जाँचक तत्कालीन स्थितिक अभिलेख सुरक्षित रखल जाए, लागू पुरान प्रक्रिया सम्बन्धी आपत्ति स्पष्ट कऽ दर्ज हो, आ जाँचक वैध अधिकार एवं पक्षकारक संरक्षणक प्रश्न मूल प्रावधानक अनुसार विचारल जाए। ई आदेश देवेन्द्रकेँ दोषमुक्त नहि कएलक, नहि ताराबाईकेँ रकम दियौलक।

ताराबाईकेँ आदेशक प्रति भेटल तँ पहिल वाक्य पढ़िते माथ घुमि गेल। “एतय एतेक बचाव, धारा, तारीख लिखल अछि। हमर पैसा कतय लिखल अछि?” ओ रेवतीसँ पुछलक। रेवती पन्नाक कोनमे ओहि रकमक उल्लेख देखौलीह। “एहि चरणमे अदालत तिथिक हिसाब मिलौलक,” ओ कहलीह। ताराबाई कहलक, “आ हम दवाईक खर्चक हिसाब मिलबैत छी। हुनकर अदालत पूरा भेल, हमर घरक अदालत शेष।” रेवती एहि वाक्यपर प्रतिवाद नहि कएलीह। हुनका बुझाइत छल जे विधिक शुद्धताक उपलब्धि जतबा आवश्यक अछि, ततबा

अधूरी, जँ पीड़ितक जीवनमे सहायता नहि पहुँचय। ओ ताराबाईक बैंक-उत्तर आ नागरिक देनदारीक सम्भावित राहतक बाट फेर खोललीह, मुदा परिणामक झूठ आश्वासन नहि देलीह।

कमला एकदिन अपन पुरान कढ़ाईक कपड़ा बेचिकय बेटीकेँ पाँच सय रुपैया पठौलीह। ताराबाई फोनपर कहलक, “माए, अपनेक दवाईक खर्च बचाबू। एखन हमरा पुस्तक चाही, मुदा पाँच सयसँ अगिला वर्षक भविष्य नहि बनत।” कमला हँसलीह। “कापीक पहिल पन्नापर नाम लिखबाक लेल रुपैया चाही। एतेक हम करब।” ताराबाईक गला भरि गेल। ओ मोबाइलक उजासमे मायकेँ देखैत छलि। “अदालतमे कागज बहुत,” कमला कहलीह, “मुदा तोहर लिखल अक्षर सेहो कागज अछि। पढ़ब छोड़ब नहि।” ताराबाईक ओहि रातिक पाठ नहि याद रहल, मुदा मायकेँ सुनाओल वाक्य ओकर भीतर बसि गेल।

चन्दना रविदास विज्ञान-केन्द्रमे इलेक्ट्रॉनिक प्रमाण विषयपर एक खुला अभ्यास रखलीह। ओ छात्रसभकेँ दू चित्र देखौलीह—एक फोनक स्क्रीनक, दोसर ओही चित्रक काटल संस्करण। “कुनटा सत्य?” ओ पुछलीह। एक छात्र तुरन्त पहिल चित्र देखौलक। चन्दना कहलीह, “हम एखन कहियो नहि मानब जे पहिल चित्र पूरा सत्य अछि; एतय केवल एतबा जनैत छी जे दोसरामे एक भाग काटल गेल अछि।” रिद्धि विश्नोई ओहि सत्रमे आनि देल एक बहीमे स्रोत, समय, उपकरण आ नकल बनबाक क्रम लिखबाक अभ्यास करौलीह। विद्यार्थीसभ हँसि कहलनि जे ई विज्ञानसँ बेसी अदालतक प्रश्न अछि। चन्दना उत्तर देलीह, “सही मापन आ सही गवाही दुनूक आधार एक—जे नहि जानैत छी, से स्पष्ट कहब।”

रिद्धि अपन शोधक काजसँ जोधपुरमे रहैत छलीह। लोकसंवाद अध्ययन न्यासक खर्च-व्यवहारक पुरान अभिलेखमे ओ देखलथि जे चारि महिनाक डिजिटल प्रतिमे एकहि कार्यक्रमक नाम तीन ढंगसँ दर्ज भेल अछि। “कियो हिसाब बदललक?” नूर पुछलीह। रिद्धि कहलीह, “एखन केवल नामक अन्तर अछि; हो सकैत अछि लेखा-सॉफ्टवेयर बदलल हो, हो सकैत अछि अलग मद हो। मूल कार्यक्रमक दिन, लाभार्थी आ स्वीकृति मिलाएब आवश्यक।” एहि धैर्यसँ नूर प्रभावित भेलीह। रिद्धिक शोधक अभ्यास आब कागतसँ निकलि लोकक कथामे प्रवेश करैत छल, मुदा ओ एहि प्रवेशकेँ अनुसन्धानक अधिकारक रूपमे नहि, उत्तरदायित्वक रूपमे देखैत छलीह।

दिल्लीमे पार्वतीक शिकायतक जाँचमे एक नब जटिलता भेटल। पैसा पहिल खातामे पहुँचलाक किछु घण्टा भीतर आन खातामे गेल छल। अधिकारी बैंकसँ दस्तावेज मँगौलनि, मुदा पहिल खाताक नाम एक साधारण मजदूरक छल, जे कहलक जे ओकर फोन किछु सप्ताह पहिने हरायल छल। जाँच अधिकारी एकरा तत्काल अपराधक स्वीकारोक्ति नहि मानलनि; ओ पूछलनि जे हरायल फोनक सूचना कोन तिथिमे देल गेल, खातेपर ककर पहुँच छल, आ ओहि समयक डिजिटल प्रामाणिकता कोन रूपमे उपलब्ध अछि। पार्वतीक मन कखनो क्रोधसँ भरि जाइत, मुदा ओ अपना बेटाक वाक्य याद करैत—“जे देखलें से कहिहें।” जाहि आदमीक नाम खातेपर छल, ओकर दोष मात्र नामसँ सिद्ध नहि भेल।

पुलिस एक डिजिटल साक्ष्य-विशेषज्ञक सहायता मँगौलक। विशेषज्ञ दिव्या नायर बैंकक लेनदेनक प्रतिलिपि आ नकली पन्नाक उपलब्ध तकनीकी विवरणक परीक्षण शुरू कएलीह। ओ साफ कहलीह जे स्क्रीनशॉट तकर दृश्य रूप देखबैत अछि, पर मूल प्रेषकक पहचान, भुगतान-पन्नाक वास्तविक संचालक आ डेटाक परिवर्तनक प्रश्न लेल अलग स्रोत आ प्रमाणन आवश्यक अछि। नयाँ साक्ष्य-अधिनियममे इलेक्ट्रॉनिक अभिलेख सम्बन्धी धारा ६३क आवश्यकताक उल्लेख करैत ओ उपकरण, निर्माण-प्रक्रिया आ अभिलेखक अखण्डता सम्बन्धी प्रमाण संकलित करबाक बात कहलीह। पार्वती पुछलीह, “हैश कहैत छी, से की?” दिव्या कहलीह, “डिजिटल कागजक एक पहिचान-सङ्केत सन बुझू, मुदा ओकर अकेलासँ ककरो अपराध सिद्ध नहि होइत।” पार्वती शनैः-शनैः बुझय लगलीह।

दिव्या अपन कार्यालयमे दू युवककेँ प्रशिक्षण दैत छलीह। एक कहलक, “मूल संदेशक हैश सुरक्षित अछि, तखन केस सिद्ध।” दिव्या प्रश्न कएलीह, “केस कोन? संदेश अपरिवर्तित अछि, एहि सम्बन्धमे मदति भेटत। मुदा भेजनिहार कियो? खाताक अन्तिम उपयोगकर्ता कियो? दावा की छल? पैसेक हस्तान्तरण केना भेल? ई सभ अलग प्रश्न नहि?” युवक लज्जित भेल। दिव्या हँसलीह नहि। हुनका स्वयं पुलिसमे पहिल नियुक्तिक समय ई गलती भेल छल जे तकनीकी अङ्ककेँ मानवक मनशाक अन्तिम प्रमाण मानि लेने छलीह। अनुभव हुनका बुझौने छल जे उपकरण संसार देखैत अछि, मुदा संसारक सभ सम्बन्ध नहि।

आरोपित खाताधारकक पत्नी फुलो देवी एकदिन पार्वतीक घर लग पहुँचलीह। ओ अपन पति लेल भीख नहि, एक तथ्य कहबाक अवसर माँगैत छलीह। “हमरा लोकक नाम रकम पहुँचलाक पाँतिमे अछि,” ओ कहलीह, “मुदा ओहि सप्ताह हमर पति शहरक बाहर मिस्त्रीक काम करैत छलाह।” पार्वती उत्तर देलीह, “हमर पैसा चलि गेल अछि। हम ई नहि कहि सकैत छी जे अहाँक पति निरपराध छथि। मुदा हुनका विरुद्ध जे प्रमाण हो, ओहीपर बात हो।” फुलो आँखि नीचाँ कएलीह। “हम सेहो एतबे कहय आयल रही,” ओ कहलीह। दुनू महिला बरामदाक एकहि पटरीपर किछु बेर बैसलि। कोनो मेल-मिलापक नाटक नहि भेल, मुदा शत्रुताक स्थायी फैसला सेहो नहि।

दीर्घकालीक मुकदमाक फाइल आ नव अपराधक डिजिटल छायामे रेवतीक जीवन चिरफाड़ भऽ रहल छल। एक राति ओ होटलक छोट कोठरीमे बैसि तीन पन्ना खोललीह। पहिलमे राघवक तेरह वर्षक प्रतीक्षा; दोसरमे ताराबाईक अड़तालीस हजारक अनुपलब्ध धन; तेसरमे पार्वतीक छः हजार आठ सयक नकली शुल्क। तीनू फाइलक आकार भिन्न, न्यायिक मंच भिन्न, समयक नियम भिन्न। तइयो तीनू मे एक समान स्वर छल—“हम जे देलहुँ वा देखलहुँ, तकरा बिना प्रमाण आन अर्थ मत दिअ।” रेवती बुझलीह जे ओ अपन पिताक काजक उत्तराधिकार केवल कानूनक पुस्तकसँ नहि, एहन वाक्यसभसँ प्राप्त कएने छथि।

नवम्बरक बीच एक दिन जिला न्यायालयक प्रवेशद्वारपर विधिक सहायता शिविर लगल। प्रेमनारायण पाण्डे अपन चश्माक काँच पोंछि पंजीकरणक मेज सम्हारलनि। पार्वती भुइयाँ अपन ड्यूटी समाप्त कऽ थोड़ी देर शिविरमे ठाढ़ रहलीह। एक महिला पुछलीह, “जँ मुकदमा २०२२ क अछि आ गवाही एखन चलत, तँ कोन किताब?” शशिभूषण पटल पर अंकित लिखित उदाहरणक आधारसँ उत्तर देलक जे लम्बित विचारणक लागू व्यवस्था संक्रमणकालीन बचाव-प्रावधानसँ निर्धारित होएत; मुकदमाक पूरा अभिलेख देखिकय उचित निष्कर्ष निकालबाक चाही। दोसर आदमी पूछलक, “अदालतक नामसँ सन्देश आयल अछि, शुल्क देब?” पार्वती आगाँ बढ़लीह। “पहिने सही कार्यालयसँ पुछू,” ओ कहलीह। हुनकर आवाजमे ना अधिकारक आडम्बर छल, ना अपन ठगल जेबाक लाज।

शिविरमे एक युवा पुलिसकर्मी सेहो छल। ओकर नाम रविकान्त यादव छल; ओ हालहि नियुक्त भेल छल आ नव प्रक्रिया-पुस्तकक प्रशिक्षण लेल आएको छल। पार्वतीक अनुभव सुनि ओ कहलक, “हम शिकायत लिखबाक समय पहिने पैसा गेल तकर हिसाब पुछैत रही; आब बुझैत छी जे डर केना उत्पन्न कएल गेल, ई सेहो तथ्य अछि।” अनमोल तिर्की कहलक, “डरक कथा महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा जाँचमे भेजनिहारक भूमिका आ सत्यापित सन्देशो चाही।” दूनू एक-दोसराक बात स्वीकार कएलनि। न्यायालयक सामने पुलिस आ विधिक सहायता केन्द्रक कर्मचारीक ई छोट संवाद कोनो समारोहक भाषण नहि छल; मुदा सरकारी सेवाक भीतर एक-दोसरासँ सीखबाक सच्चा अवसर छल।

दिल्लीमे राघवक विचारणक अगिला तारीख फेर आयल। सरकारी पक्ष उपलब्ध पुरान इलेक्ट्रॉनिक प्रति, सम्बन्धित उपकरणक जप्ती-विवरण आ मूल प्रमाण-पत्रक स्थिति लिखित रूपमे रखलक। अरुणिमा देखलीह जे एक पन्नामे संग्रहणक तिथि स्पष्ट अछि, मुदा मोबाइलक मूल घड़ी-सम्बन्धी अनिश्चितता सम्पूर्ण रूपसँ दूर नहि भेल। न्यायाधीश कागज देखिकय कथन दर्ज कएलनि आ पक्षकारसभकेँ शेष साक्ष्य सम्बन्धी विधिक बहसक अवसर देलनि। ई कहि देल गेल जे प्रमाण प्रस्तुत करबाक औपचारिकता आ ओकर वास्तविक विश्वासनीयता एक नहि अछि; उचित प्रमाण-पत्र उपस्थित रहबो सामग्रीक अर्थकेँ स्वतः निर्विवाद नहि बनबैत। राघव अपन कुर्सीपर सँ उठैत गहरी साँस लेलक। ओ अजुन दोषमुक्त नहि भेल छल, मुदा कागजक आधा समय ओकरा विरुद्ध अन्तिम सत्य सेहो नहि बनल छल।

राघवक माय पद्मा एहि बेर मखानक पोटरी खोललीह। कोठरीसँ बाहर अबैत अरुणिमाकेँ कहलीह, “घरक वस्तु अछि, लेब।” अरुणिमा हँसलीह, “ई रिश्वत नहि ने?” पद्मा अकस्मात् घबरा गेलीह। रेवती तुरन्त कहलीह, “ओ मजाक करैत छथि, माए।” अरुणिमा पद्माक हाथ छुइत कहलीह, “माफ करू; अदालतक बाहर सेहो शब्दक असर बहुत दूर जाइत अछि।” पद्मा हौले हँसलीह। “हमर गाममे भेट देनाइ सदाचार अछि, अदालतमे ओकर अर्थ कखनो बदलि जाइत अछि,” ओ कहलीह। ई छोट प्रसंग रेवतीकेँ दिनभरि याद रहल—कानूनक भाषा जँ दैनिक जीवनक निर्दोष संकेतकेँ अकारण अपराधजेकाँ बना दय, तँ हुनक दायित्व ओकर भेद बुझेनाइ सेहो अछि।

ओहि सप्ताह शशिभूषणकेँ गलती सुधरल पहिल सूचीपत्रक अंतिम प्रति हस्ताक्षर लेल पठेबाक छल। ओ पुरान पन्ना नष्ट नहि केलक। कार्यवाहीक इतिहासमे की सुधार भेल, से देखबाक लेल पुरान प्रति ‘निरस्त मसौदा’ कहिकय कार्यालयक अभिलेखमे सुरक्षित रखलक; सुधरल प्रति मूल सूचीमे जोड़लक। प्रेमनारायण देखलनि आ प्रसन्न भेला। “अनेक बेर कर्मचारी ई सोचि फाइलक गलतीक पन्ना फाड़ि दैत अछि जे गलतीक नामे नहि रहत,” ओ कहला। “मुदा सुधारक इतिहास रहबाक चाही। नहि तँ काल्हि कियो कहत जे पहिने एहन पन्ना छलहि नहि।” शशिभूषणक लागल जे दिनभरि बदलैत कम्प्यूटर-नमूना बीच एकटा साधारण जिम्मेदारी पाबि गेल अछि—असत्यकेँ चुपचाप मिटायब नहि, सच्चा सुधारकेँ दर्ज करब।

रेवतीक कार्यालयमे एक दुपहर मनस्वी आएलीह। ओ मरुधर विश्वविद्यालयमे अपन शैक्षणिक पहचानक लम्बा संघर्ष पछाति आब नव विद्यार्थीक सहयोग करैत छलीह। हाथमे एक सूचना छल—छात्रावासक परामर्श-कक्ष अस्थायी रूपसँ बन्द। “ई आपराधिक मुकदमा नहि,” ओ कहलीह, “मुदा एतय सेहो कागजक प्रश्न अछि। एक विद्यार्थी बारम्बार सहायता माँगलक, अनुरोधक प्राप्ति-पत्र तक नहि भेटल।” रेवती ध्यानसँ सुनलीह। “प्रत्येक पीड़ा अदालतक आपराधिक फाइल नहि बनय,” ओ कहलीह, “मुदा संस्थाक लिखित उत्तरदायित्व तखनहुँ रहैत अछि।” मनस्वी कहलनि जे रिद्धि विश्वविद्यालयक नब रोजगार-सहायता कार्यक्रमक व्यय-अभिलेख देखबाक लेल आबि रहल छथि। रेवती हुनका कहलनि—पहिने विद्यार्थीक सुरक्षा, गोपनीयता आ सहायता; फेर लेखा-अन्वेषणक अधिकारक्षेत्र। मनस्वी सहमत भेलि।

रिद्धि विश्नोई ओही साँझ जोधपुर पहुँचल छलीह। रेलवे स्टेशनक बाहर कुसुम हुनका लेबाक आयलि। कुसुमक चेहरापर वयसक संग नब आत्मविश्वास छल; छात्रावासक पहिनुक भूमि-विवाद ओकरा वर्षों पहिने नागरिक अधिकारक भाषा सिखौने छल। रिद्धि पुछलीह, “विश्वविद्यालयक रोजगार-सहायता केन्द्र कतेक पुरान?” कुसुम कहलीह, “कार्यक्रम नव, मुदा भवन पुरान; एक कोठरी बन्द अछि, जकर भीतर रखल कम्प्यूटरक पहुँच ककरा लग अछि से स्पष्ट नहि।” रिद्धि तुरन्त कोठरी खोलबाक आग्रह नहि कएलीह। “पहिने कार्यक्रमक लिखित नियम, अनुदानक स्रोत आ विद्यार्थी-सूचनाक उपयोगक स्वीकृति देखब,” ओ कहलीह। कुसुम

उत्तर देलीह, “अहाँ नब बात नहि कहैत छी, मुदा एहि बातकेँ काजमे राखब एखनहुँ कठिन अछि।”

विद्यार्थीक एक छोट समूह स्टेशनक बाहर नौकरीक परचा बाँटैत छल। कागजमे चमकदार चित्र आ ‘निश्चित नियुक्ति’ लिखल छल। रिद्धि एक परचा रखलीह। एतय शुल्कक स्पष्ट विवरण नहि, अवसरक वैधानिक प्रकृति सेहो अस्पष्ट। कुसुम कहलीह, “हम छात्रसभकेँ एहन परचासँ सावधान रहबाक कहैत छी, मुदा बेरोजगारीक भय एतबा बड़ अछि जे लोक प्रलोभन सुनि लैत।” रिद्धि पुछलीह, “की एतय केओ पैसा देलक?” कुसुम कहलीह, “एखन हमरा ठोस जानकारी नहि। हम अनुमान नहि लिखब।” दुनू एक चाय-दोकानपर बैसि अगिला दिनक बैठकक सूची बनौलनि। चूल्हाक धुँआमे रिद्धिक नजरि अचानक अपन शोध-पञ्जीक एक पुरान नामपर पड़ल—बाहरी वित्तीय सेवा कम्पनी। ओ नामक बगलमे प्रश्नचिह्न बनौलीह, आरोप नहि।

दिसम्बरमे जोधपुरक सक्षम दण्डाधिकारी सन्धिपथक जाँचमे पृष्ठांक आ धारा-सन्दर्भक संशोधन सम्बन्धी लिखित आदेशक सत्यापित प्रति जारी कएलनि। पुलिसक अन्वेषण जारी रहत, लागू संक्रमण-प्रावधानक आधार अभिलेखमे स्पष्ट रहत, आ प्रत्येक संदिग्ध भुगतानक वास्तविक स्रोत आ उपयोगक परीक्षण बाकी रहत—एतबा दर्ज भेल। हरिश मेहता अपन मुवक्किल देवेन्द्रकेँ आदेश बुझौलनि। “गलत प्रावधान हटला सँ अहाँ निर्दोष सिद्ध नहि होइत छी,” ओ कहला, “मुदा प्रक्रियागत अधिकारक रक्षा भेल अछि।” देवेन्द्र पुछलक, “तखन मामला कब समाप्त?” हरिश कहला, “जखन जाँच आ अदालत अपन निर्धारित प्रक्रिया पूरा करत। अधूरा सेवाक हिसाब, भुगतानक समयक आश्वासन आ सम्भावित बेईमानीक मनशा अलग-अलग देखल जाएत।” देवेन्द्र अपन नयन झुका लेलक।

ताराबाई आदेश पढ़ि चन्दनाक विज्ञान-केन्द्र पहुँचलि। रेवतीक समझाओल बात ओकरा धीरे-धीरे बुझाइत छल—आरोपक तिथि, प्रक्रिया आरम्भक तिथि आ साक्ष्यक स्त्रोत तीनटा भिन्न घड़ी अछि। चन्दना एक पुरान प्रयोगक घड़ी देखौलीह जकर काँटा कखनो अटकैत छल। “ई घड़ी जँ बीस मिनट पाछाँ अछि,” ओ कहलीह, “तँ हम मानि नहि सकैत छी जे घटना बीस मिनट पाछाँ भेल। पहिने घड़ी जाँचब।” ताराबाई हँसि पड़लि। “हमर केस एहि घड़ीसँ बेसी

जटिल अछि,” ओ कहलक। चन्दना उत्तर देलीह, “सही। तों आदमीक मनशा सेहो जाँचबाक चाहैत छें, जकरा कोनो घड़ी सीधा नहि नापि सकैत अछि।”

नूर दिसम्बरक वर्षान्त समीक्षा लेल रिद्धि आ रेवतीक छोट बातचीत रिकार्ड कएलीह। ओ पुछलीह, “नव कानूनसँ न्याय जल्दी भेटत?” रेवती कहलीह, “एहि प्रश्नक उत्तर केवल अधिनियमक नामसँ नहि भेटत। कर्मचारीक प्रशिक्षण, उपयुक्त मंच, समयपर अभिलेख, साक्षीक सम्मान आ नागरिकक पहुँच सब किछु महत्त्वपूर्ण अछि।” रिद्धि जोड़लीह, “डेटा जतेक तेजी सँ जमा होइत अछि, ओतेक तेजी सँ अर्थ नहि बनैत।” नूर फेर पुछलीह, “तखन परिवर्तनक लाभ की?” रेवती कहलीह, “जतय प्रक्रिया बेहतर बने, ओकर लाभ स्वीकार करू; जतय पुरान मुकदमाक बचाव अनिवार्य हो, ओकरो सम्मान करू। न्यायकेँ प्रचारक पन्ना नहि बनाउ।” नूर ओहि वाक्यक शेष भाग काटि देलीह, किएक तँ ओ लेखकेँ भाषण नहि, लोकक जीवनमे टिकल देखबय चाहैत छलीह।

दिल्लीमे पार्वतीक शिकायतक पुलिस जाँचक एक अन्तरिम उत्तर आयल। कतिपय खाता-अभिलेख मँगाओल गेल छल, भुगतानक अगिला चरणक ठोस नियन्त्रण एखन निर्धारणाधीन छल। ओहि पत्रमे आरोपितक नामपर कोनो दोषसिद्धि नहि छल, आ रकम फिर्तीक निश्चित तिथि सेहो नहि। पार्वती पत्र लऽ रविक लग गेलीह। रवि पुछलक, “माए, निराश?” ओ उत्तर देलीह, “छः हजार आठ सय हमरा लेल बहुत अछि। मुदा हमर शिकायत अखन कागजमे जीवित अछि। हम फेर पूछब।” ओहि साँझ पार्वती न्यायालयक गेटक सामने ठाढ़ भेलि। ऊँच दीवारपर पड़ल प्रकाशकेँ देखि ओ सोचलीह—जकरा भीतर ओ रोज पोछा लगबैत छथि, न्याय ओकरो अधिकार अछि; सफाईक कपड़ासँ ओ अधिकार छोट नहि होइत।

प्रेमनारायण वर्षक अन्तिम कार्यालयी रजिस्टर बन्द करैत छलाह। एक कोनमे नव संहिताक पुस्तक व्यवस्थित छल, दोसर कोनमे पुरान संहिताक जीर्ण प्रति। ओ दूनूकेँ एकहि आलमारीमे रखलनि, मुदा अलग पाँतिमे। शशिभूषण पुछलक, “ई पुरान किताब एखन कखन धरि रहत?” प्रेमनारायण कहला, “जतबा दिन एकटा पुरान मुकदमाक प्रश्न बचल अछि। फेरो इतिहासक लेल तऽ रहबे करत।” शशिभूषण अपन सुधारल सूचीक प्रति अन्तिम बेर मिलौलक। एक खण्डक ऊपर लिखल छल—‘पुरान विचारण: योग्य बचाव’। दोसर खण्डक

ऊपर—‘नव घटना: वर्तमान प्रावधान’। पन्नाक बीचमे ताराबाईक एक जाँचक अन्तरिम टिप्पणी राखल छल: “जूनक स्थिति स्पष्ट।” कर्मचारी हुनकर नाम ढकिकय सूची व्यवस्थित कएलक।

रेवती राति दरभंगा लौटलि तँ शिवनारायण आगू बरामदामे बैसल छलाह। हाथमे पुरान लाल पेन्सिल छल, टेबुलपर चमकैत नब पुस्तक। रेवती हुनका तीनू मुकदमाक संक्षिप्त समाचार सुनौलीह। पिता पुछलनि, “गलत धारा?” “सुधरल।” “पुरान सन्देश?” “प्रमाणक जाँच शेष।” “नकली अदालत-शुल्क?” “नव शिकायतमे खाता-पथक जाँच चलि रहल अछि।” शिवनारायण धीरेसँ कहला, “तखन एहि वर्षक उपलब्धि तीनटा उत्तर नहि, तीनटा सही प्रश्न भेल।” रेवती पुछलीह, “एतेक वर्षसँ अहाँ ई कहैत एलहुँ, थाकल नहि?” पिता हँसलाह। “थाकैत छी। मुदा गलत प्रश्नपर देल उत्तम फैसला सँ बेसी भय हमरा आर किछु सँ नहि।” ओ अपन लाल पेन्सिल रेवतीकेँ देलनि।

लुधियानामे ओही सप्ताह सुनीता पासवान मजदूर संघक पुरान हिसाबक अलमारी खोललीह। रामलखनक बकाया मजदूरीक एक अंश बहुत वर्ष पहिने मिलि चुकल छल, मुदा शेष पञ्जीक विवाद अझुक सुनबाईमे जीवित छल। एक नव साथी पुछलक, “एखन तीनटा नब कानून लागू भेल अछि; हमर वेतनक केस सेहो ओकरा अधीन पड़त?” सुनीता पुरान पन्ना ओकरा देखौलीह। “हमर दावा श्रम-अधिकारक अपन विधिसँ चलैत अछि,” ओ कहलीह। “सभ कानूनी परिवर्तन एकहि भाँति प्रत्येक जीवनपर लागू नहि होइत।” बलदेव सिंह ओहि वाक्यपर माथ हिलौलनि। एक समय ओ सोचैत छलाह जे बड़ न्यायालयक आदेश भेटलासँ मजदूरक सभ समस्या सुलझि जाएत; आब ओ जानैत छलाह जे मासक अन्तिम दिनक सही वेतन सेहो नागरिक गरिमाक ठोस परीक्षा अछि।

सुनीताक नजरि फेर हरदेव चौहानक पुरान अनुत्तरित प्रविष्टिपर पड़ल। एक नव बैंक-कागजमे ‘एच. चौहान’ लिखल देखिकय कोनो साथी उत्तेजित भेल—“एकहि आदमी होएत!” सुनीता दू नामक अक्षर अलग-अलग पन्नापर लिखि देलीह। “नामक मेल प्रमाण नहि,” ओ कहलीह। “पहिने कर्मचारीक पहचान, कार्यालय, समय आ रकम जाँचू।” ओ कागज फेर बन्द कएलीह। ताहिसँ ककरो उत्साह नहि बढ़ल, मुदा जाँचक बाट अनावश्यक अनुमानसँ बचल।

कारखानाक बाहर साँझक हवा चलि रहल छल; रामलखन चुपचाप बेटीकेँ देखैत छलाह। हुनका लगल जे जखन ओ पहिल बेर मजदूरीक पञ्जी बेटीकेँ देलनि छल, तखन ई नहि सोचने छलाह जे ओ पञ्जी ओकरा भविष्यक अनेक अभिलेखक ओरि लऽ जाएत।

बरामदाक अन्तिम दीपकक उजासमे रेवती पिताक पेन्सिलसँ डायरीमे लिखलीह—“एक जुलाई कानूनक बदलल तिथि छल; मनुष्यक अपराध वा निर्दोषिताक जन्मतिथि नहि। पुरान अभियोगक बचाव करैत नव शिकायतक दरबज्जा बन्द नहि करब। प्रमाणपत्रक अभावमे सन्देशकेँ स्वतः सत्य नहि, आ प्रमाणपत्र उपस्थित रहलासँ ककरो मनशाकेँ स्वतः सिद्ध नहि मानब।” लिखि चुकलाक बाद ओ डायरी बन्द कएलीह। एहि बीच मनस्वीक फोन आयल—मरुधर विश्वविद्यालयक परामर्श-कक्ष बन्द छल, एक विद्यार्थीक लिखित आग्रहक उत्तर नहि भेटल छल, आ रिद्धि बाहरी रोजगार-सहायता कम्पनीक अभिलेखकेँ सुरक्षित रखबाक आवश्यकता देखैत छलीह। रेवती दीपकक बाती हौले नीचाँ कएलीह। “पहिने छात्र सुरक्षित छथि कि नहि, से बुझाउ,” ओ कहलीह। “फाइलक प्रश्न बिहान देखब।”

अध्याय ३२ — विश्वविद्यालयक बन्द कोठरी

जोधपुर आ कोटा; सन् २०२४ क समानान्तर घटनाक्रम

मरुधर विश्वविद्यालयक पुरान छात्रावासमे एकटा कोठरी छल, जकर दरबज्जापर नील रंगसँ ‘परामर्श’ लिखल गेल छल। वर्षा आ धूपसँ ओकर अन्तिम अक्षर आधा मेटा गेल छल। दरबज्जाक ऊपर घड़ी चलैत छल, मुदा ओहि कोठरीक भीतर बहुत दिनसँ कियो नहि बैसल छल। दिसम्बरक एक साँझ पायल रैगर ओतय पहुँचि अपन कापीक पाछूवला पन्नापर लिखल तीन प्रश्न फेर पढ़लक—राति नींद किएक नहि अबैत अछि, परीक्षा दऽ कऽ हाथ किएक काँपैत अछि, आ जँ एहि वर्ष नौकरी नहि भेटल तँ घरमे कोन मुँह लऽ जएब? चौथ प्रश्न ओकरा लिखबाक साहस नहि भेल—कोनो गोटे हमर बात सुनत कि नहि? दरबज्जाक बगलमे लगल सूचना कहैत छल जे परामर्श सेवा अस्थायी रूपसँ स्थगित अछि; वैकल्पिक सम्पर्क लेल एक कार्यालयक संख्या देल छल, जाहिपर गेल तीन दिनसँ कियो फोन नहि उठा रहल छल।

पायल विश्वविद्यालयक प्रथम वर्षक छात्रा नहि, अन्तिम वर्षक स्नातक विद्यार्थी छलीह। कोटाक समीप एक छोट कसबामे ओकर पिता मोतीलाल रैगर लकड़ीक काम करैत छलाह, माय मीनाक्षी सिलाइक संग घरक हिसाब जोड़ैत छलीह। पायल पहिने कोटामे दू वर्ष प्रवेश-परीक्षाक तैयारी कएने छलीह। प्रत्येक प्रातः एक विशाल भवनक पाँतिमे प्रवेश करैत समय ओकरा अपन नामक बदला एक क्रमाङ्क बुझाइत छल। ओ सभ कक्षा केवल भयक कोठरी नहि छल; ओतय एक शिक्षक ओकर गणितक जिज्ञासा सचमुच जगौने छलाह। मुदा साँझमे परीक्षा-अङ्कक सूची दीवारपर टाँगल जाइत तँ ओहि प्रसन्नता पर कागजक ठण्ढा हाथ पड़ि जाइत। जे प्रश्न ओ बुझि गेल छलीह, तकरा लेल प्रशंसा कम; जकर एक विकल्प गलत भेल, तकरा लेल अङ्कक अन्तर रातिभरि पीछा करैत छल। मेडिकल पढ़ाईक सपना बदलिए ओ

स्नातक सांख्यिकी पढ़बाक निर्णय कएलीह, मुदा असफलताक पहिल पुरान नाम ओकरा भीतर एखनहुँ उघरल पड़ल छल।

कोटाक एक किरायाक घरक स्मृति ओकरा एखनहुँ सँसारसँ बेसी स्पष्ट छल। घरमे चारि कोठरी, दू टेबल-पंखा, गलियारेमे एक नल आ बरामदापर माटिक गमला छल। ओकर संग रहनिहार आलिया परवीन एकदिन अपन पिता सँ फोनपर कहने छलीह, “अहाँ हमरा डॉक्टर देखबाक चाहैत छी; हम पढ़ब चाहैत छी, मुदा कखनो-कखनो शिक्षक बनबो चाहैत छी।” पिता उत्तर देलनि, “पहिने ई परीक्षा दऽ लिअ, फेर देखब।” आलिया फोन रखिकय दिनभरि पढ़लीह, मुदा ओहि राति ओ पायलसँ कहलीह, “हमरा अपन भविष्य चुनबाक मौका हर साल अगिला परीक्षा धरि टलैत रहैत अछि।” पायल ओहि वाक्यक अर्थ बहुत देर बाद बुझलीह। ओ समय दुनू किशोरी आक्रोशमे नहि, आशामे पढ़ैत छलीह; कठिनाई ई छल जे आशा केवल एकटा अङ्कक दास बनि गेल छल।

जनवरी २०२४ मे मीनाक्षी बेटीकेँ समाचारक एक कतरन पठौने छलीह। केन्द्र सरकार कोचिंग संस्थासभक विनियमन लेल दिशा-निर्देश राज्यसभकेँ विचारार्थ पठौने छल—भ्रामक सफलता-वादा रोकबाक, परामर्श उपलब्ध करयबाक, शुल्क आ अध्ययन-समयमे संयम रखबाक चर्चा। पायल ध्यानसँ पढ़लक, फेर कोटाक पुरान शिक्षक विजयकान्त सरक नाम मनमे उभरल। हुनका कक्षा छोड़ेबाक पहिने विद्यार्थीसभसँ कहैत छलाह—“गणितमे जे गलती करैत अछि, ओ निष्फल मनुष्य नहि।” मुदा ओहि संस्थाक प्रचार-पत्रमे केवल सर्वाधिक अङ्कबला चेहरा चमकैत छल। पायल रिद्धिक लग कतरन देखबैत पुछलक, “दिशा-निर्देश निकललासँ सभ संस्थापर तुरन्त कानूनी दण्ड लागू भऽ गेल?” रिद्धि कहलीह, “नहि। केन्द्र राज्यसभकेँ उपयुक्त कानून आ प्रशासनिक व्यवस्था बनयबाक लेल पठौने अछि। मार्गदर्शनक अर्थ आ बाध्यकारी प्रादेशिक नियमक अर्थ अलग-अलग अछि। मुदा विद्यार्थीसभ संस्था सँ अपन व्यवस्था बदलबाक माँग तखनहुँ करि सकैत छथि।” पायल कतरन मोड़िकय रखलक। ओकरा जानबाक छल जे विश्वविद्यालयक अपन परामर्श-कक्ष बन्द किएक अछि।

ओही दिन कुसुम छात्रावासक फाटक लग भेटलीह। सालसभ पहिने ओ छात्रावासक भूमिक विषयमे लड़ने छलीह; आब शिक्षण-सहायकक रूपमे प्रशासन आ छात्रसभक बीच

संवादक प्रयास करैत छलीह। पायल हुनका तीन पुरान आवेदन देखौलक। एकटापर पञ्जीकरणक मुहर छल, दोसरापर केवल डाकसँ पठाएल पत्रक रसीद, तेसरामे कम्प्यूटर प्रणालीक ‘सन्देश पहुँचि गेल’ चिह्न। “हम दू बेर परामर्शक समय माँगलहुँ,” पायल कहलीह, “तेसरी बेर केवल ई पुछलहुँ जे कोठरीक चाभी ककरा लग अछि।” कुसुम कागज देखिकय उत्तर देलीह, “प्राप्ति आ सेवा भेटब अलग बात अछि। मुदा तीनू आवेदनमे अलग-अलग विभागक नाम अछि; पहिने एकर बाट खोजब।” ओ पायलकेँ अपन कोठरीमे बैसा कऽ पानि देलनि। ओहि दिनक पहिल सहायता कोनो आदेश नहि, सहज कुर्सी आ बिना बीचमे टोकेल पाँच मिनट छल।

पायल अपन भयक सम्पूर्ण कथा कुसुमकेँ नहि कहलनि। ओ एतबा कहलीह जे परीक्षा नजदीक अएलापर भोजनक स्वाद गुम भऽ जाइत अछि, आ छात्रवृत्तिक अगिला किस्तक अनिश्चिततासँ घरक फोन उठा नहि पबैत छथि। ‘हम तुरन्त किछु खतरामे नहि छी,’ ओ स्पष्ट कएलीह, “मुदा ई बात नीक नहि भऽ रहल अछि। हमरा पेशेवर सहयोग चाही, मित्रक उपदेश नहि।” कुसुम सिर हिलौलीह। “हम चिकित्सक नहि छी,” ओ कहलीह। “हम अहाँकेँ सुनि सकैत छी, आ योग्य परामर्शदाता धरि पहुँचबामे संग देब। अहाँक बातक नाम बिना अनुमति ककरो बैठकमे नहि पढ़ब।” पायल ई अन्तिम वाक्य सुनिकय साँस छोड़लक। ओकरा पहिने कोचिंगक एक शिक्षक सभक सामने ओकर कम अङ्क कहि ठट्ठा कएने छलाह। ओहि दिनसँ ओ अपन कष्ट बताबय सँ सेहो डरैत छलीह।

दू दिन पछाति मनस्वी विश्वविद्यालय पहुँचल छलीह। अपन शैक्षणिक पहिचानक अभिलेख बदलाबय लेल ओ जे वर्षसभ लगौने छलीह, से हुनका सिखौने छल जे कोनो व्यक्तिगत विवरण संस्थाक गलियारेक गपक सामग्री नहि बनबाक चाही। ओ कुसुमसँ पुछलीह, “छात्रसभक नामक सूची किनका देखाओल गेल अछि?” कुसुम कहलनि, “अखन परामर्शक अनुरोधकेँ कोनो सार्वजनिक सूचीमे नहि रखलहुँ। छात्रा अपन नाम देबाक अनुमति नहि देलीह।” मनस्वी उत्तर देलीह, “एहि मामला मे पहिल प्रश्न व्यक्ति सुरक्षित छथि कि नहि; दोसर—सेवा किएक बन्द; तेसर—व्ययक लेखा। एहि तीनूकेँ मिलायब सँ व्यक्ति संस्था विरुद्ध प्रमाण बनि जाइत अछि।” कुसुम हँसि कहलनि, “अहाँ आ रिद्धि दुनू कागज सँ पहिने

लोकक सीमा देखैत छी।” मनस्वी कहलीह, “सीमा नहि देखब तँ प्रमाणक नामपर नब चोट बनि जायत।”

ओहि साँझ विश्वविद्यालयक साइन-बोर्डमे ‘रोजगार-सहायता आ कौशल सेतु’ लिखल नव कार्यालयक उद्घाटन-तिथि टाँगल गेल। कक्षा-पाछूक अलमारीमे विद्यार्थीक नाम, सम्पर्क-संख्या, पाठ्यक्रम आ प्रशिक्षणक रुचि सम्बन्धी पञ्जी राखल छल। कार्यक्रमक संयोजक अरविन्द पारीक दिनभरि दौड़ैत छलाह। ओ मानैत छलाह जे बेरोजगार स्नातकक लेल अवसरक सूचना जुटेनाइ विश्वविद्यालयक उचित कर्तव्य अछि। हुनका एकटा बाहरी संस्था ‘संगति वित्तीय सेवा प्राइवेट लिमिटेड’ सँ तकनीकी सहयोगक प्रस्ताव भेटल छल—अभ्यर्थी पञ्जीकरण, भुगतान-सत्यापन आ प्रशिक्षण-वृत्तिक वितरणक डिजिटल सुविधा। नाम सुनिते रिद्धि अपन पुरान शोध-पञ्जी खोलि राखलीह। ओ संस्था विषयमे किछु निष्कर्ष पर नहि पहुँचलीह; ओकरा केवल ई बुझबाक छल जे विद्यार्थी-सूचनाक उपयोगक अनुमति कोन कागजपर, कोन सीमा धरि देल गेल अछि।

रिद्धिक पहिलो बैठक नौकरीक चमकदार प्रस्तावपर नहि, सभाक कोना मे बैसल विद्यार्थी हिम्मत अंसारीक प्रश्नपर अटकि गेल। हिम्मत कम्प्यूटर विज्ञानक डिप्लोमा करैत छल; ओकर पिता जोधपुरक एक मोहल्लामे सिलाईक छोट दुकान चलबैत छलाह। ओ पुछलक, “ई रोजगार कार्यक्रमक बैनरमे “शत-प्रतिशत अवसर” लिखल अछि। कोनो विद्यार्थीकेँ वास्तवमे नौकरीक पत्र भेटल?” अरविन्द कहलनि, “अवसर आ नियुक्तिक अन्तर बुझू। हम अवसरक पञ्जी बनबैत छी, नियुक्तिक गारण्टी नहि।” हिम्मत अपन मोबाइल देखौलक, जतय बाहरी प्रचारक एक चित्रमे ‘निश्चित स्थान’ लिखल छल। अरविन्द ठमकि गेलाह। “ई चित्र हमर विश्वविद्यालयक आधिकारिक प्रचार नहि,” ओ कहला, “मुदा जँ हमर नामसँ प्रसारित भेल अछि, तऽ जाँचब।” विद्यार्थीसभमे हलचल भेल। सभक चेहरा रिद्धि देखलीह—आशा आ अविश्वासक बीच खाली जगहमे अनेक गलत व्यापार जन्म लैत अछि।

ताहि सप्ताह हिम्मत आ ओकर चारि साथी बन्द परामर्श-कक्षक बाहर शान्त बैसार आयोजित कएलनि। ओसभ कोनो दरबज्जा तोड़बाक प्रयत्न नहि कएलनि; विद्यार्थी कल्याण कार्यालयसँ सेवा आरम्भ करबाक लिखित तिथि माँगलनि। बरामदामे बाट सकरी छल,

अस्पताल जाएवला विश्वविद्यालयक एक गाड़ीकेँ मुड़बाक असुविधा सेहो भेल। सुरक्षाकर्मी कहलनि जे भीड़ मार्गसँ हटय। अधिकांश विद्यार्थी उठि गेल, मुदा हिम्मत बोलबाक लेल ठाढ़ रहल। साँझ धरि एक सूचना आयल—‘शैक्षणिक अनुशासन भङ्ग, सेवा-अनुशासनक उल्लंघन’; हिम्मतक पुस्तकालयमे रात्रिकालीन प्रवेश अस्थायी रूपसँ रोकल जाएत आ छात्रावासक उपलब्धिपर विचार कएल जाएत। सूचना देबाक पहिने हुनका आरोपक लिखित विवरण अथवा उत्तर देबाक समय नहि देल गेल छल। पायल एहि बीच अपन नामक चर्चासँ भयभीत होइत छात्रावास लौटलि।

हिम्मतकेँ ओहि पत्रसँ बेसी पीड़ा एहि बातसँ भेल जे एक सुरक्षा-प्रतिवेदनमे लिखल छल—‘परामर्श-कक्षकेँ लऽ भावनात्मक वातावरण बनाबयवला समूह’। ओ पुछलक, “कष्टक विषयमे बात करब भावनात्मक उकसावा अछि?” नसीमा, जे मरुधरक पूर्व छात्रा आ एखन स्थानीय विद्यालयमे पढ़बैत छलीह, ओकरा बुझौलीह, “नहि। मुदा रास्ता रोकल गेल वा आदेशक उल्लंघन भेल तँ संस्था ओकरा अलग देखत। अहाँक पक्ष कहबाक अधिकार ओहि प्रश्न सँ अलग अछि।” हिम्मत अपन साथीसभकेँ कहलनि, “हम बाट रोकबाक पक्षमे नहि छलहुँ। जे भेल ओकरा सही-सही लिखब, मुदा सभक नामपर गलती स्वीकार नहि करब।” नसीमा कहलीह, “ई न्यायसँ भागब नहि, ओकरा योग्य भाषा देब अछि।” ओ हाथसँ लिखल एक छोट निवेदनक मसौदा तैयार कएलनि।

परामर्श-सुविधाक पुरान अनुबन्ध ओहि वर्ष अगस्तमे समाप्त भेल छल। बाहरसँ सेवा देनिहार परामर्शदाता मीरा जैनक दू मासक भुगतान अटकल छल; हुनकर नियुक्तिक नवीकरण सम्बन्धी फाइल दू विभागक बीच घूमैत छल। मीरा विश्वविद्यालयसँ बाहर अपन कार्यालयमे काम करैत छलीह, मुदा कोनो छात्रा लग निजी शुल्क देबाक साधन नहि तँ ओ हुनका सरकारी स्वास्थ्य-सेवा आ उपलब्ध वैधानिक सहायता-मार्गक जानकारी दैत छलीह। कुसुम हुनका फोनपर स्थिति बुझौलीह। मीरा स्पष्ट कहलीह, “हम एखन विश्वविद्यालयक नामपर नियुक्ति देबाक वचन नहि दऽ सकैत छी। मुदा आपात जोखिम देखाइत हो तँ चिकित्सकीय सेवा तुरन्त उपलब्ध करयबाक चाही। नियमित कठिनाइ लेल विश्वसनीय परामर्शक अगिला समय लिखित

रूपमे देल जाए।” कुसुम ओहि संवादक एक वाक्य विश्वविद्यालयकेँ पठौलीह; पायल अथवा आन विद्यार्थीकेँ कोनो नाम नहि पठौलनि।

कोटामे ओहि समय आलिया परवीनक जीवन अपन दोसर बाट पकड़ि चुकल छल। ओ गणितक स्नातक कऽ एक सामुदायिक अध्ययन-केन्द्रमे अध्यापन करैत छलीह। ओकर पिता धीरे-धीरे ई मानि लेने छलाह जे घरक पहिल कल्पना अन्तिम निर्णय नहि होइत अछि। आलिया कोचिंग-भवनक आगू सँ गुजरैत विद्यार्थीसभक चेहरामे अपन पुरान थकान देखैत छलीह, मुदा सभक कठिनाइकेँ एकहि नाम नहि दैत। कोनो बच्चा केवल कठिन पाठक कारण उदास छल, कियो घरक कर्जासँ व्याकुल, कियो अपन मनक गम्भीर समस्या लेल उपचार खोजैत। ओ स्वयंसेवकसभकेँ कहैत छलीह, “हम सभक मन पढ़ि नहि सकैत छी। हम सुरक्षित सुनब, आवश्यकता हो तँ योग्य सेवाक बाट बतायब। प्रत्येक छात्राक कहानी ओकर अनुमति बिना सार्वजनिक नहि करब।” एक दिन पायल फोन कऽ कहलीह, “हम ओही बन्द कोठरीक सामने बैसलहुँ।” आलिया पूछलीह, “दरबज्जा बन्द छल, मुदा तोरा सुननिहार केओ भेटल?” पायल कुसुमक नाम लेलनि।

आलिया ओहि राति पायलकेँ अपन विद्यालयक एक छोट प्रसंग सुनौलीह। एक विद्यार्थी प्रश्नक सही उत्तर नहि देलापर रोइ पड़ल छल। आलिया ओकरा फेल घोषित करबाक बदला पुछने छलीह, “तों एतय धरि की बुझलें?” विद्यार्थी लिखने छल—“हम पहिल दू चरण जानैत छी।” आलिया ओकरा शेष दू चरण सीखौलनि। “एकटा उत्तरमे आधा गलती अछि,” ओ पायलसँ कहलीह, “मुदा एकटा मनुष्यक भीतर अनेक सही आरम्भ होइत अछि।” पायल हँसलि, फेर बहुत देर चुप रहलि। “तोहर ई बात हमरा सुन्दर लगैत अछि,” ओ कहलीह, “मुदा हम केवल बात सुनि नीक नहि होएब; हमरा अपन अध्ययन, नींद आ सहायता लेल व्यवस्थित बाट चाही।” आलिया उत्तर देलीह, “से तूँ ठीक कहैत छें।” एहि बेर दुनू मित्रक बीच आश्वासनक बदला यथार्थ सहमति छल।

विश्वविद्यालयक कुलसचिव उमा राठौड़केँ विद्यार्थीसभक निवेदन भेटलापर हुनका पहिल बेर बुझाइत भेल जे परामर्श-कक्षक बन्द रहब केवल एक विभागक विलम्ब नहि अछि। विद्यार्थी कल्याण विभाग कहैत छल—अनुबन्ध वित्त-शाखामे अटकल; वित्त-शाखा कहैत छल—

उपस्थिति-प्रतिवेदन अधूरा; अनुबन्ध-अधिकारी कहैत छल—बजट-मद बदलि गेल। तीनू कार्यालय अपन कागजमे सही भऽ सकैत छल, मुदा एहि बीच जे विद्यार्थी दरबज्जा धरि आएल से खाली हाथ लौटल। उमा अपन सचिवकेँ बजा कऽ पहिल आदेश देलनि—“अगिला सात दिन धरि वैकल्पिक सहायता-कक्ष, योग्य परामर्शदाताक निश्चित समय आ आपात संपर्कक स्पष्ट सूचना लगाउ।” सचिव पुछलक, “पहिने जाँच-समिति बनाबी?” उमा कहलीह, “जाँच भऽ सकैत अछि। सेवाक पुनर्स्थापन लेल जाँचक अन्तिम प्रतिवेदन धरि कोनो विद्यार्थीकेँ ठाढ़ नहि राखू।” कागजपर ई छोट निर्देश लिखैत हुनका एक क्षण लेल अपन बेटी स्मरण आयल, जे पहिल बेर घरसँ दूर पढ़य गेलीह तखन एक सप्ताह धरि फोन नहि कएने छलीह।

परामर्शक प्रश्नपर बैठकमे एक वृद्ध प्राध्यापक कहलनि, “हमर पीढ़ीमे एहन कोठरी नहि छल। छात्र मजबूत छलाह।” नसीमा उत्तर देलीह, “तखनहुँ कष्ट छल। केवल ओकरा बोलबाक स्थान कम छल।” प्राध्यापकक क्रोध जागल, मुदा ओ तुरन्त उत्तर नहि देलनि। हिम्मत जोड़लक, “हम ई नहि कहैत छी जे प्रत्येक परीक्षा-भय बीमारी अछि। हम कहैत छी जे कियो सहायता मँगय तँ दरबज्जा पर फोन नम्बर मात्र नहि, जीवित सेवा भेटय।” उमा सभकेँ शान्त करौलीह। “कक्ष चलएबाक लेल केवल करुणा पर्याप्त नहि,” ओ कहलीह, “प्रशिक्षित लोक, निश्चित बजट, गोपनीय अभिलेख आ जवाबदेहीक समय चाही।” ई वाक्यक भीतर हुनकर प्रशासनिक अनुभव छल; कुसुम बुझलीह जे एखन मुद्दा केवल सुभाषितक नहि रहल।

हिम्मतक अनुशासनात्मक पत्रपर दोसर बैठकमे अलग स्वर उठल। सुरक्षा-अधिकारी गोपालसिंह चौहान फोटो देखौने छलाह, जतय किछु विद्यार्थी मुख्य गलियारेमे बैसल छल। “आवागमन बाधित भेल,” ओ कहलनि। हिम्मत उत्तर देलक, “दस मिनट लेल बाट सङ्कुचित भेल छल; सुरक्षाकर्मी कहिते हम सभ उठलहुँ। जे सच छल से कहैत छी। मुदा हमरा उत्तर सुने बिना पुस्तकालय प्रवेश किएक रोकल गेल?” गोपालसिंह कहला, “प्रतिवेदनमे नाम छल।” उमा पुछलनि, “की अनुशासन-समितिक सुनबाई भेल?” सचिव उत्तर देलक, “अन्तरिम व्यवस्था समझि तुरन्त आदेश निकलल।” उमा पत्र देखलीह—ताहिमे कोनो अवधि निश्चित नहि, पुनर्विचारक मार्ग नहि, आ आरोपक मूल विवरण हिम्मतकेँ पहुँचाओल नहि गेल छल।

“अन्तरिम शब्द लिखला सँ आदेश निष्पक्ष नहि बनैत,” ओ कहलीह। “पहिने अस्थायी रोकक समीक्षा, तत्पश्चात् सूचित सुनबाई।”

ओहि समय पायल छात्रावासक भोजनालयमे थालि लऽ बैसल छलीह। ओकर मित्रा ईशा वाल्मीकि, जे नगरक एक सफाईकर्मीक बेटी छलीह, ओकरा पुछलक, “तों परामर्श लेल गेलें? नाम सभक सामने तँ नहि पढ़ल गेल ने?” पायल सिर हिलौलक। “हम एखन अपन निजी विवरण बाहर नहि देब चाहैत छी,” ओ कहलीह। ईशा आग्रह नहि केलक। ओ अपन थालिसँ एक रोटी तोड़ि पायलकेँ देलक, फेर हँसिकय कहलक, “हमर परीक्षा एही सप्ताह अछि। माए कहैत छथि जे अङ्क कम आए तऽ बर्तन धोएब सिखि लेब; मुदा जखन हम दू राति जागैत छी, माए भोरमे दूध लऽ अबैत छथि।” पायल बुझलीह जे अपन परिवारक कठोर शब्दक पाछाँ चिन्ता रहैत अछि, मुदा चिन्ता कखनो-कखनो एहन रूप धऽ लैत अछि जे बच्चा ओकरा प्रेम बुझि नहि पबैत। ओ राति पिता लग फोन करबाक निर्णय कएलीह, मुदा पहिने अपन कष्टक सही शब्द चुनबाक प्रयास कएलनि।

मोतीलाल फोन उठौने कहलनि, “घरमे सभ कुशल? परीक्षा-कागज भेटल?” पायल पहिल बेर कहलक, “बाबू, किछु दिनसँ हम ठीक सँ सुतैत नहि छी। विश्वविद्यालयक सहायता-कक्ष बन्द अछि, मुदा कुसुम दीदी सहयोग करैत छथि। हमरा परामर्शदातासँ भेंट चाही।” फोनक दोसर छोरपर खाँसीक छोट आवाज आयल। “तों बीमार पड़ि गेलें?” पिता पुछलनि। “हम एखन डॉक्टरसँ जाँच नहि करौने छी,” पायल उत्तर देलक, “एहि लेल पहिने भेटब चाहैत छी। अहाँ घबड़ाउ नहि, मुदा हमरा बात हलुक कहिकय टारू नहि।” मोतीलाल लम्बा साँस लेलनि। “हम लकड़ीक गुनिया गलत बैसला पर फेर नापैत छी,” ओ कहला, “तोहर मनक नाप हमरा नहि अबैत। जे जानैत छथि हुनका लग जा। पैसा चाही तँ कह।” पायल आँखि मुनलीह। ओकरा एतबा अनुमान नहि छल जे पिता अनाड़ी भाषा सँ सेहो उचित सहायता स्वीकार करि लेताह।

विश्वविद्यालयक नव रोजगार-सहायता कार्यक्रममे विद्यार्थी मुकुल मीणाकेँ एक अलग कठिनाइ भेटल छल। ओकरा मोबाइलपर ‘मरुधर नियुक्ति-सुविधा’ नामक सन्देश आएल, जाहिमे बाहरी कम्पनीक कर्मचारी बनि बात करनिहार एक व्यक्ति चयन-सत्यापन लेल सात

हजार पाँच सय रुपैया माँगने छल। मुकुल अपन बड़े भाइसँ उधार लऽ भुगतान केने छल; तीन दिन बाद फोन बन्द भेटल। विश्वविद्यालयक आधिकारिक वेबसाइटमे एहन शुल्कक उल्लेख नहि छल। मुकुल पहिने शर्मक कारण चुप रहल, फेर हिम्मत लग आबि कऽ रसीद देखौलक। हिम्मत ओकरा कहलनि, “हम स्वयंसेवक छी, पुलिस नहि। अपन खाताक विवरण, सन्देशक मूल प्रति आ समय सँ सुरक्षित रखू। जे नाम लिखल अछि तकरा अपराधी कहबाक जल्दी नहि करू।” मुकुल आँखि नीचाँ कएलक। “हमरा केवल पैसा वापस चाही,” ओ कहलक, “मुदा घरमे जे विश्वासक उधार लेलहुँ, तकर की?” हिम्मत अपन अनुशासन-पत्र मोड़ि जेबमे रखलक। ओकरा बुझाइत भेल जे रोजगारक प्रचारक विवाद पहिने अनुमान सँ बहुत गहिर छल।

मुकुलक संग आसमाँ बेगम सेहो आयलीह। ओ वनस्पतिशास्त्रमे स्नातकोत्तर पढ़ैत छलीह, अपन पैतृक गामसँ रोज बस बदलि आबैत छलीह। हुनका पाँच हजारक शुल्क माँगल गेल छल, मुदा ओ भुगतान नहि कएने छलीह; सन्देशमे ओकर पाठ्यक्रम आ फोन नम्बर सही लिखल छल। “ई विवरण वेबसाइटपर खुला छल?” रिद्धि पुछलीह। आसमाँ कहलीह, “फोन नम्बर आवेदनमे देल छलहुँ। सार्वजनिक सूचीमे नहि।” रिद्धि तुरन्त निष्कर्ष नहि निकाललीह। “कतेक गोटे एहि नम्बर धरि पहुँचि सकैत छल, से जनबाक चाही। कियो कागजक फोटो खींचि सकैत अछि, कियो फॉर्मक पहुँच पाबि सकैत अछि, कियो अहाँसँ पहिने सम्पर्कमे रहल भऽ सकैत अछि।” आसमाँ प्रश्न कएलीह, “तखन हमर निजी जानकारीक जिम्मेदारी ककरा?” रिद्धि उत्तर देलीह, “जे संस्था विवरण लेलक, तकर निश्चित उपयोगक सीमा आ सुरक्षाक व्यवस्था पूछबाक अहाँक अधिकार अछि। मुदा दोषी व्यक्तिक नाम जाँचक बादहि।”

बाहरी रोजगार-सहायता कार्यालयक प्रभारी देविका सेन एहि शिकायतसँ बेकल भेलीह। ओ कार्यक्रमक उपस्थिति-पञ्जी देखौलीह—बारह प्रशिक्षण-बैठक, तीन नौकरी-सूचना सत्र, पाँच विद्यालय आ दू स्थानीय उद्योग सँ सम्पर्क। “काज शून्य नहि भेल,” ओ कहलीह। रिद्धि सहमत भेलीह। “हम एहन दावा नहि करैत छी। मुदा एहि सूचीमे जे विद्यार्थीक नाम छथि, हुनका सँ कतेक गोटे कार्यक्रमक उपयोग लेल स्पष्ट सहमति देने छथि?” देविका एक फाइल खोलीह। ताहिमे उद्घाटन दिवसक समूह-हस्ताक्षर छल, किछु ऑनलाइन चिन्ह छल, आ किछु

आवेदन अलग रहल। “सहमतिक प्रारूप तखन बदलल छल,” ओ कहलीह। “दूनू रूपक तुलना करय पड़त।” रिद्धि हुनकर स्वरमे थकान सुनलीह। “हम अहाँक काजक मूल बही मेटाबय नहि आएल छी,” ओ कहलीह, “काज भेल अछि तँ सच्चा प्रमाण सेहो बचय चाही। गलत भुगतान अथवा गलत पहुँच भेटत तँ ओहो अलग चिह्नित होय।”

देविकाक घरमे ओहि साँझ हुनकर छोट पुत्र गीत गाबि रहल छल। देविका अपन पति सँ कहलीह, “आज एक विद्यार्थी हमरा पुछलक जे ओकर फोन नम्बर बाहर केना गेल। हमरा उत्तर नहि भेटल।” पति मुस्कुरा कऽ कहलक, “जखन उत्तर नहि भेटय तँ कागज खोजू; एतबामे अहाँ अपराधी नहि भऽ जाइत छी।” देविका उत्तर देलीह, “जकर कागज हमर कार्यालयमे अछि, ओकर रक्षा हमर जिम्मेदारी तँ अछि।” ओ मेजपर बैसि नियुक्तिक मूल अनुबन्ध फेर पढ़लीह। कार्यक्रमक उद्देश्य छात्रकेँ अवसर तक पहुँचबेनाइ छल; बाहरी सेवा कम्पनीकेँ सीमित पञ्जीकरण आ भुगतान-प्रक्रियाक काम देल गेल छल। मुदा एक परिशिष्टमे ‘सहयोगी कार्यकारी संस्था’ शब्द छल, जकर नाम अलग फाइलमे लिखल गेल छल। ओ फाइल कार्यालयक बन्द कोठरीक अलमारीमे होयबाक चाही। देविका अपन चाभी देखलीह—ताहिपर लाल धागा छल, मुदा ई चाभी केवल बहिरंग दरबज्जाक छल। भीतरक अलमारीक चाभी ककरा लग अछि, से हुनका स्मरण नहि आयल।

अगिला दिन रिद्धि, मनस्वी आ कुसुम विश्वविद्यालयक पुस्तकालयमे बैसल छलीह। रिद्धि टेबुलपर तीन गोला बनौलीह—विद्यार्थीक परामर्श-अनुरोध, संस्थाक अनुशासनात्मक आदेश, रोजगार-योजनाक वित्तीय अभिलेख। “तीनू विषय एक भवनमे भेटल,” ओ कहलीह, “मुदा ई एकटा षड्यन्त्र सिद्ध नहि करैत।” मनस्वी पहिल गोलामे लिखलीह—‘निजी; अनुमति बिना नाम नहि’। कुसुम दोसरामे लिखलीह—‘आरोपक प्रति, उत्तरक अवसर, कारणयुक्त आदेश’। रिद्धि तेसरामे लिखलीह—‘मूल अनुबन्ध, भुगतान आदेश, पहुँच-इतिहास’। विवेक मेघवाल ओतय पहुँचि कहलक, “लोक एहि छबि सँ तुरन्त लेख लिखि देत—बन्द कोठरीमे छल करोड़क घोटाला।” रिद्धि मुस्कुराइत कहलीह, “तेँ हम पहिने तीन गोला बनौने छी। कदाचित् कोठरीमे बन्द पंखा आ पुरान रजिस्टर मात्र हो। जँ किछु आन भेटय, ओकरा प्रमाणसँ कहब।”

नूर जतय नब समाचार लेल जोधपुर आयल छलीह। हुनका कोनो छात्रा नाम प्रकाशित नहि करबाक अनुरोध कएने छलीह। नूर अपन सम्पादक अनिरुद्धकेँ फोनपर कहलीह, “मानसिक स्वास्थ्य संकटक समाचार नाम, फोटो आ परीक्षा-अङ्ककक प्रदर्शनी नहि बनय। हम संस्था सँ सार्वजनिक व्यवस्था सम्बन्धी प्रश्न पुछब।” अनिरुद्ध उत्तर देलनि, “ठीक, मुदा बिना नामक लेखमे पाठक परिस्थिति बुझत?” नूर कहलीह, “कथा सुनायब सम्भव अछि, पहिचान खोलब आवश्यक नहि। बन्द कक्ष, नियुक्ति-विलम्ब, सहायता-पथक अनुपलब्धता आ सुधारक आदेश पर्याप्त ठोस बात अछि।” सम्पादक सहमत भेला। मुदा विश्वविद्यालयक द्वारपर एक स्थानीय पत्रकार नूरसँ पुछलक, “कोनो छात्राक जीवन जोखिममे छल?” नूर उत्तर देलीह, “हम ककरो व्यक्तिगत स्वास्थ्यक अनुमान सार्वजनिक नहि करब। जे विद्यार्थी तत्काल मदति चाहैत छथि, हुनक सुरक्षा पहिल; समाचारक शीर्षक पछाति।”

ओहि दिन मुकुल पुलिसक साइबर-अपराध सहायता केन्द्रमे शिकायत देलक। ओकरा ऑनलाइन भुगतानक सन्दर्भ-संख्या, फोनक मूल सन्देश आ कथित नियुक्तिक प्रस्तावक प्रति संलग्न करबाक कहल गेल। एक कर्मचारी पुछलक, “जे व्यक्ति फोन केने छल, ओकर आवाज चिन्हि सकैत छी?” मुकुल कहलक, “अछि तऽ, मुदा ओकर चेहरा नहि देखने छी।” कर्मचारी स्पष्ट कएलक जे परिचयक दावा आ वास्तविक खाताधारकक भूमिका अलग प्रश्न छथि। “एहि भुगतानक बैंक-पथ मँगाओल जाएत,” ओ कहलक, “मुदा केवल प्राप्तकर्ता खातामे रकम गेलासँ खाताधारकक ज्ञान आ अपराधक मनशा स्वतः सिद्ध नहि होइत।” मुकुल शिकायतक प्रति लऽ बाहर निकलल। ओकरा राहतक अनुभव धन फिर्ती सँ नहि, पहिल बेर भयक घटनाकेँ ठीक शब्दमे कहबाक अवसरसँ भेल।

मुकुल पुलिस चौकीसँ बाहर आयल तँ हिम्मत फाटकपर प्रतीक्षा करैत छल। “हमर कारण तोहर नाम छात्रसंघक कागजमे नहि जोड़ब,” हिम्मत कहलक। मुकुल हँसि उत्तर देलक, “हम अपन शिकायत अपन नामसँ देने छी। मुदा ओकर अर्थ ई नहि जे हम तोहर धरनापर बैसल रही।” दुनू चाय पीबय गेल। हिम्मतक अनुशासनात्मक रोकक कारण ओ रात्रिक पुस्तकालय नहि जा सकैत छल, ताहि लेल दिनमे कक्षा छूटि रहल छल। मुकुल कहलनि, “दूनूक कागज अलग रहबाक चाही। तोहर पुस्तकालयक दुआरि बन्द आ हमर सात हजार पाँच सय रुकेल—

एहि दुनूक जोड़ केवल एतबा जे प्रशासन आ बैंककेँ सही प्रश्न पुछबाक चाही।” हिम्मत आश्चर्यसँ ओकरा देखलक। “तों हमरा सँ नीक अधिवक्ता बनब,” ओ कहलक। मुकुल कहलनि, “हम नौकरी चाहैत छी। अधिवक्ता बनबाक खर्च फेर नब ऋण होयत।”

अगिला सप्ताह छात्र कल्याण विभाग अस्थायी सहायता-कक्ष खोललक। कोठरीक भीतर नीमक पत्तासँ बनल एक छोट चित्र टाँगल गेल; कोनो रङ्गीन नारा नहि। सूचनामे प्रशिक्षित परामर्शदाताक नियुक्त समय, परिसरक चिकित्सकीय सहयोगक केन्द्र आ आपात सम्पर्क लिखल छल। कुसुम पहिल दिन कोठरीक बाहर बैसलीह, ताकि विद्यार्थी जँ चाहथि तऽ बिना प्रश्नक भीतर जा सकथि। पायल भीतर गेलि, अपन लिखल तीन प्रश्न जेबमे राखि, परामर्शदाता मीरा जैनसँ एक लम्बी बातचीत कएलीह। बाहेर अबैत ओकर कठिनाइ जादू सँ समाप्त नहि भेल छल। ओकरा अध्ययन-क्रममे बदलाव, नींद सम्बन्धी स्वास्थ्य-परामर्श आ नियमित भेटक समय भेटल। ओ कुसुमसँ कहलीह, “आज हमरा केवल एकटा बात नीक बुझायल—अगिला बेर दरबज्जा खुलत कि नहि, तकर लिखित समय अछि।” कुसुम चुपचाप हुनकर हाथमे अगिला भेटक पर्ची देलीह।

पायलक पिता ओहि राति गाममे एक नब मेज बनबैत छलाह। लकड़ीक पातर टुकड़ा चिरैत हुनका बेटी सँ फोन आयल। “बाबू, हम अध्यापकक परीक्षा सेहो सोचि रहल छी,” पायल कहलक। मोतीलाल हाथ रोकलनि। “तोहर गणित नीक अछि; शिक्षक बनब छोट काज थोड़े?” ओ उत्तर देलनि। पायल कहलीह, “लोक कहत जे चिकित्साक परीक्षा छोड़िकय शिक्षक?” पिता हँसलाह, “जखन हमरा लकड़ीक अलमारी नहि बनि पबैत छल, हम दरबज्जा बनाबय सिखलहुँ। अहाँ जानैत छें जे ओहि दरबज्जाक कारण केतेक घरमे उजास गेल?” मीनाक्षी पाछूसँ कहलीह, “अध्ययन छोड़ब नहि, मुदा एकहि सपना बचबाक लेल सभ जीवन नहि दियौ।” पायल पहिल बेर माय-पिताक बातकेँ अपूर्ण आश्वासन नहि, अपन निर्णयक स्थान बनैत सुनलक।

आरोपक औपचारिक प्रति भेटिते हिम्मत देखलक जे ओहि पत्रमे दू तिथि एक-दोसरासँ अलग छल। सुरक्षाकर्मीक प्रतिवेदनक दिन बरामदामे बैसार भेल; पुस्तकालय प्रवेश रोकबाक आदेश ताहि साँझ निकलल; मुदा पत्रक माथपर ओहि सँ पहिलुक तिथि लिखल गेल छल। ओ

तिथि देखिकय उत्तेजित नहि भेल। सचिवालयमे पुछलक तँ कर्मचारी कहलनि, “प्रारूप पहिने बनल छल, अन्तिम स्वीकृति पछाति।” हिम्मत अपन उत्तरमे लिखलक जे प्रारूपक तिथि आ प्रभावी निर्णयक तिथि अलग स्पष्ट हो; अवरोधक समय आ स्थानक वास्तविक जानकारी देल जाए; आ रोकक अवधि तखन धरि स्थगित रहय जखन धरि ओकर पक्ष सुनल नहि जाए। ओ ई सेहो लिखलक जे छात्रावासक आपात निकास वा चिकित्सकीय मार्गपर भीड़ सँ असुविधा भेल हो तँ अगिला सभामे ओकर सुरक्षा सुनिश्चित कएल जाए। रेवती निवेदन पढ़िकय कहलीह, “सत्य स्वीकार करब आ अज्ञात दोष स्वीकार करब एक नहि अछि। एहि भेदकेँ बनौने राखू।”

अनुशासन-समितिक पहिल बैठकमे फोटो देखाओल गेल। एक चित्रमे हिम्मत सुरक्षाकर्मीसँ बात करैत छल; दोसरामे पाछूसँ कियो कागज उठबैत छल। समिति-अध्यक्ष हरिशंकर व्यास पुछलनि, “रास्ता रोकलहुँ?” हिम्मत उत्तर देलक, “किछु देर लेल भीड़ छल; हम सुरक्षाकर्मीक निर्देशक बाद उठबाक कहने रही। हमरा लग दू साक्षी छथि।” सुरक्षा-अधिकारी कहला, “ताहि बीच गाड़ीकेँ रुकय पड़ल छल।” हिम्मत ई बात अस्वीकार नहि केलक। “जँ असुविधा भेल,” ओ कहलक, “हम दुःखी छी। मुदा परामर्श-कक्ष खोलबाक माँग स्वयं अनुशासनहीनता नहि।” समिति-अध्यक्ष नोट लिखलनि। ओहि सुनबाईमे एक छात्र प्रतिनिधि पुछलक जे तत्काल रोक लगबैत समय कियो हिम्मतकेँ बोलबाक अवसर किएक नहि देलक। सचिव फाइल पलटैत कहलक, “भवनक सुरक्षा हेतु अन्तरिम कदम।” समिति-अध्यक्ष कहलनि, “तखन अवधि आ समीक्षा लिखित रहबाक चाही। एतय नहि अछि।”

दूसर दिन अनुशासन-समितिक निर्णय आयल—रात्रिक पुस्तकालय-प्रवेशपर लगाओल अन्तरिम रोक अगिला समीक्षा धरि हटाओल जाए; भविष्यमे सभाक स्थान, समय आ बाधित मार्गक सम्बन्धमे स्पष्ट दिशानिर्देश जारी हो; व्यक्तिगतरूपसँ लगाओल आरोपपर कारणयुक्त निर्णय सुनबाई पछाति। हिम्मत खुश भेल, मुदा ओकरा पत्रक अन्तिम पाँति खटकल —‘संस्थाक छविक हानि पहुँचबयवला प्रवृत्तिसँ बचू’। ओ पुछलक, “एकर अर्थ की? हम परामर्श सेवा फेर माँगब तँ छवि बिगड़त?” विवेक कहलक, “सामान्य सलाह केँ आरोप बनाबय नहि चाही।” रेवती कहलीह, “अस्पष्ट भाषा भविष्यक अनुचित दण्डक आधार बनि

सकैत अछि; संस्था सँ लिखित स्पष्टीकरण माँगू। अदालत जएबाक पहिने उपलब्ध आन्तरिक उपचारक प्रयोग करू।” हिम्मत कहलक, “ई तऽ फेर कागज।” रेवती उत्तर देलीह, “हँ, मुदा एहि बेर कागजक अर्थ राति पढ़बाक दुआरि खुलब सेहो अछि।”

परामर्श-कक्षक समय-पञ्जी संग एकटा नव असुविधा सामने आयल। केही कर्मचारी सहजतासँ विद्यार्थीक नाम उच्चारि गप्प करैत छलाह—“फलाँ छात्रा फेर भीतर गेल।” मनस्वी ई सुनिकय विद्यार्थी कल्याण अधिकारीसँ भेटलीह। “ककरो सहायता माँगबाक तिथि हुनकर चरित्रक परिचय नहि,” ओ कहलीह। अधिकारी तत्काल कार्यरत कर्मचारीकेँ निर्देश देलनि जे नाम, विवरण आ भेटक कारण केवल सम्बन्धित अधिकृत सेवा-कर्मचारी धरि सीमित रहत। परामर्शदाता मीरा जैन ई कहलनि जे आवश्यक अवस्थामे गोपनीयताक सीमासभ सेहो रहैत अछि, मुदा नियमित प्रशासनिक जिज्ञासाक आधारपर व्यक्तिगत बातचीत सार्वजनिक नहि कएल जा सकैत। पायल एहन निर्णयक समाचार सुनिकय प्रसन्न भेलि, मुदा ओ अपन नाम सूचनाक कागजपर देखबाक भयक कारण पूर्ण भरोसा तत्काल नहि कऽ सकलीह। भरोसा जे दिन टूटैत अछि, ओहि दिन फेर बनि नहि जाइत।

कुसुम छात्रावासक पुरान उपस्थिति-पञ्जी देखैत एक विचित्र बात भेटलीह। बन्द परामर्श-कक्षक बगलवाली कोठरीकेँ तीन सप्ताह पहिने “रोजगार योजना अभिलेख-भण्डार” कहल गेल छल; मुदा भवनक नक्शामे ओहि कोठरीक नाम एखनहुँ ‘सामुदायिक पठन-कक्ष’ छल। एक दिन सुरक्षा-कर्मचारी विद्यार्थीसँ कहने छल—“ई कमरा ठेका कम्पनीक होइ गेल।” कुसुम एहि वाक्यकेँ आधिकारिक स्थिति नहि मानलीह। ओ सम्पत्ति-अधिकारी लग गेलीह। अधिकारी भवनक मूल नक्शा खोलिकय कहलनि, “कोठरी विश्वविद्यालयक अछि। बाहरी कम्पनीकेँ केवल उपकरण स्थापित करबाक प्रवेश-दिन देल गेल छल, स्वामित्व नहि।” “तखन वर्तमान चाभी?” कुसुम पुछलीह। अधिकारी एक पत्रिका खोललनि, जाहिमे तीन चाभीक निर्गत-प्राप्तिक पाँति छल। अन्तिम हस्ताक्षर धुँधला छल। कुसुम एकर फोटो नहि खींचलीह; अधिकृत प्रति माँगबाक आवेदन देलीह।

उमा राठौड़ कुसुमक पत्र देखिकय कोठरी तुरन्त खोलबाक आदेश देबाक मन बनौने छलीह, मुदा देविका सेन कहलीह जे भीतर विश्वविद्यालयक संग बाहरी तकनीकी उपकरण सेहो अछि,

आ अचानक खोलला सँ अभिलेखक मूल स्थिति सम्बन्धी विवाद भऽ सकैत। रिद्धि सुझौलीह—“स्वामित्व, अनुबन्ध आ प्रवेश-अधिकार देखिकय विश्वविद्यालयक अधिकृत अधिकारी उपस्थित रहथि; सीलबन्द सूची बनय; उपकरण चलाओल अथवा बन्द करबाक समय लिखल जाए; निजी विद्यार्थी-अभिलेखक खुला प्रदर्शन नहि हो।” उमा कहलीह, “मात्र कोठरी बन्द रहलासँ ओकर भीतर अपराध प्रमाणित नहि। मुदा संस्थाक सम्पत्तिक सूची बनेब हमर दायित्व अछि।” विभागीय निरीक्षणक तिथि निश्चित भेल। खबर बाहर फैलल—“रहस्यमय कमरा खुलत।” नूर अपन कापीमे लिखलीह—“निरीक्षण।” ओ कोनो सनसनीखेज शीर्षक नहि चाहैत छलीह।

एहि बीच मुकुलक शिकायतक बैंक-पथ सम्बन्धी पहिल सूचना आयल। रकम एक भुगतान-संग्रह मंच धरि गेल छल; ओकर आगूक निपटान सम्बन्धी विवरण जाँच-अधिकारीक लिखित माँगपर उपलब्ध कराओल जाएबाक छल। मंचक व्यापारी-विवरणमे ‘सम्पर्क सुविधा’ नाम छल। केओ तुरन्त कहलक जे ई ‘संगति वित्तीय सेवा’ क गुप्त नाम होएत। रिद्धि दू शब्द लिखलीह—‘सम्पर्क’ आ ‘संगति’। “दूनू मे पहिल अक्षर सेहो एक नहि,” ओ कहलीह। “नामक समान ध्वनि सम्बन्धक प्रमाण नहि। भुगतान-संग्रह मंच, व्यापारीक वास्तविक पञ्जीकरण आ बाहरी अनुबन्धी कम्पनीक स्वामित्व-पथ अलग जाँचबाक चाही।” मुकुल निराश भेल। “तखन हमर रकमक की?” ओ पुछलक। जाँच-अधिकारी उत्तर देलक, “अधिकारयुक्त अनुरोधसँ उपयुक्त खाता-अभिलेख मँगाओल जा रहल अछि। रकम फिर्ती लेल अलग प्रक्रिया लागल रहि सकैत अछि।” मुकुलक चेहरापर तत्काल जीतक रङ्ग नहि आयल; ओकरा बुझाइत छल जे सही जाँच कखनो धीम होइत अछि।

मुकुल अपन घर गेल तँ ओकर बड़े भाइ रमेश मीणा उधारक सात हजार पाँच सयक हिसाब बहीमे लिखि रहल छल। रमेश पुछलक, “रिपोर्ट कऽ देलें, तँ पैसा आयत?” मुकुल कहलनि, “हुनका ठोस समय नहि बुझल अछि।” रमेश बही बन्द कएलक। “तोरा नौकरी नहि भेटल, ऊपरसँ उधार। हम क्रोध करैत छी, मुदा ककरा पर करब से नहि बुझैत।” मुकुल उत्तर देलक, “हम जल्दी विश्वास कएलहुँ; ई हमर गलती छल। मुदा जँ कियो गलत पहचानसँ पैसा लेलक, तऽ ओकर जाँचक प्रश्न अलग अछि।” रमेश माथ हिलौलक। “हम पैसा अपना मेहनत सँ

देलहुँ। तोहर एक प्रश्न सुनब सेहो हमर मेहनतक हिस्सा अछि।” अपन भाइसँ एहन उत्तर सुनि मुकुल बहुत देर धरि बहीक कोर देखैत रहल। ओकरा ई कर्ज कतेक भारी लगैत छल ताहि सँ बेसी ओकर ऊपर राखल विश्वास भारी छल।

पायलक शैक्षणिक परिणाम सेहो ओहि समय आयल। एक पत्रमे ओकरा आवश्यक अङ्कसँ कम भेटल छल, मुदा सांख्यिकी प्रयोगमे ओ वर्गक सर्वश्रेष्ठ जाँच-रिपोर्ट तैयार केने छलीह। विभागाध्यक्ष चन्दना रविदास, जे वैज्ञानिक केन्द्रक संग अतिथि शिक्षकक रूपमे काज करैत छलीह, ओकर प्रतिवेदन पढ़लीह। “तों प्रयोगक सीमा साफ लिखने छें,” ओ कहलीह। “एहि मे नीक वैज्ञानिकक गुण अछि।” पायल मुस्कुरा कऽ उत्तर देलीह, “मुदा प्रतियोगिता परीक्षामे एना लिखला सँ अङ्क नहि भेटत।” चन्दना कहलनि, “दूनूक नियम अलग अछि। प्रतियोगिता लेल आवश्यक अभ्यास करब, आ वैज्ञानिक चिन्तन लेल अपन ई सावधानी नहि छोड़ब।” पायल प्रयोगशालासँ बाहर अबैत समय अपन कम अङ्कवला पत्रकेँ झोरा मे रखलक; पहिल बेर ओ ओकरा अपन सम्पूर्ण परिचय नहि मानलक।

जनवरीक सरकारी मार्गदर्शक-पत्रक प्रसंग फेर विश्वविद्यालयक बैठकमे उठल। एक सदस्य कहलनि जे केन्द्रक कोचिंग-निर्देश जारी भेल अछि, अतः विश्वविद्यालयक प्रत्येक सहायता-कक्ष बन्द रहब स्वतः अपराध बनि गेल। रेवती शान्त स्वरमे कहलीह, “जे दस्तावेज राज्यसभकेँ विनियमन लेल पठाओल गेल अछि, ओकरा बिना सम्बन्धित लागू कानूनक पाठ देखल दण्डात्मक आदेशक समान नहि मानू। विश्वविद्यालयक अपन नियम, अनुबन्ध, सामान्य प्रशासनिक उत्तरदायित्व आ विद्यार्थीक हित एहि मामलाक ठोस आधार छथि।” मनस्वी जोड़लीह, “छात्रक सहायता लेल कानूनक गलत उद्धरण आवश्यक नहि। जे सेवा देबाक वचन विश्वविद्यालय लिखित देलक, ओहि वचनक पालनक प्रश्न पर्याप्त गम्भीर अछि।” समिति एहि आधारपर परामर्शक बजटक नियमित पुनरावलोकनक अनुशंसा कएलक, मुदा पुरान अनुबन्धक भुगतान-विलम्बक समाधान तत्काल नहि भेल।

नूर अपन समाचारक पहिल अनुच्छेद चारि बेर बदललीह। पहिल मसौदामे लिखने छलीह —“मरुधरक बन्द कक्षमे घपलाक आशंका।” दोसरामे—‘छात्रावासमे असुरक्षित सेवा’। तेसरामे—‘विद्यार्थी सहायता माँगैत, कार्यालय उत्तर खोजैत’। अन्ततः ओ लिखलीह जे

विश्वविद्यालयक परामर्श सेवा किछु समय बन्द रहल, विद्यार्थीसभ लिखित प्रतिनिधित्व कएलनि, संस्थान वैकल्पिक सेवा आरम्भ कएलक, आ अनुबन्ध-विलम्बक कारणक परीक्षण चलि रहल अछि। समाचारमे पायल वा आन परामर्श लएनिहारक नाम नहि छल। हिम्मतक अनुशासनात्मक आदेशक पृथक वर्णनमे विश्वविद्यालयक लिखित उत्तर सेहो दऽ देल गेल। अनिरुद्ध लेख पढ़िकय कहला, “एहि मे आगि कम अछि।” नूर उत्तर देलीह, “कम आगिक अर्थ कम सच्चाई नहि।” अनिरुद्ध हँसि पड़लाह। “कखनो-कखनो सम्पादककेँ सेहो ई सिखबाक पड़ैत अछि।”

दिसम्बरक पहिल सप्ताहमे अनुशासन-समितिक अन्तिम कारणयुक्त आदेश आयल। एतय हिम्मतकेँ गलियारेक यातायात बाधित रहबाक घटना सम्बन्धमे भविष्यक सभामे सावधानी बरतबाक लिखित परामर्श देल गेल; पुस्तकालय-प्रवेश आ छात्रावासक पात्रतापर असङ्गत रोक लगबैत पहिनुक आदेश वापिस भेल। ‘संस्थाक छवि’ सम्बन्धी अस्पष्ट पाँति अनुशासनात्मक आरोपक आधार नहि रहत—ई स्पष्ट लिखल गेल। हिम्मतक मित्रसभ ताली बजौलनि, मुदा ओ कुसुमसँ कहलक, “हम जीतब किछु अन्तिम नहि देखैत छी। जे सात राति हम पढ़ि नहि सकलहुँ, से कोन कागज फिर्ता करत?” कुसुम उत्तर देलीह, “एहि प्रश्नक कोनो सरल मुआवजा नहि। मुदा अगिला विद्यार्थीपर ओही आदेश बिना सुनबाईक नहि लागू हो, ताहि लेल लिखित सुधार महत्त्वपूर्ण अछि।” हिम्मत अपन किताब खोललक। ओहि राति ओ पुस्तकालय पहुँचल, मुदा पहिल आधा घण्टा किताब पढ़बाक बदला केवाड़क खुलल आवाज सुनैत रहल।

रेवती एहि आदेशक प्रति देखिकय कहलीह, “एखन सीमित राहत मिलल, तेँ अनिवार्य नहि जे सभ मामलाकेँ उच्च न्यायालय लऽ जाएब। जँ उचित प्रतिकार पूर्ण भेटल तँ उहय समाधान महत्त्वपूर्ण अछि।” हिम्मत पुछलक, “मुदा मुकुलक ठगी?” “ओ पृथक पुलिस-जाँच अछि,” रेवती उत्तर देलीह, “आ विश्वविद्यालयक विद्यार्थी-सूचनाक सुरक्षा तेसर प्रशासनिक प्रश्न।” ओ हर कागजक रङ्ग अलग फोल्डरमे रखलीह। कुसुम पुछलीह, “अहाँ एहि सभकेँ एकटा केस बनाबय सँ एतेक बचैत छी किएक?” रेवती कहलीह, “किएक तँ एक छात्रक कष्टक कथा सुनलाक बाद हम सभ जकर ऊपर संदेह अछि, तकर विरुद्ध सभटा बस्तु एकहि थैलामे नहि

राखि सकैत छी। पीड़ा सत्य भऽ सकैत अछि, मुदा ओकर कारणक अनेक रूप भऽ सकैत अछि।” हिम्मत पहिल बेर ओहि भेदकेँ अपन पक्षक सुरक्षा नहि, दोसर लोकक अधिकारक सुरक्षा सेहो बुझलक।

कोठरी निरीक्षणक दिन भोरमे मरुधर परिसरपर असाधारण ठण्ढ छल। छात्रावासक दू खिड़कीसँ रसोइक धुँआ उठैत छल आ पुस्तकालयक सामने कीकरक झाड़मे चिड़ैसभ बसल छल। निरीक्षण-समितिमे विश्वविद्यालयक सम्पत्ति-अधिकारी, सूचना-प्रणालीक एक कर्मचारी, देविका सेन, विद्यार्थी कल्याण विभागक प्रतिनिधि आ अनुबन्धी संस्थाक अधिकृत प्रतिनिधि माधव लोढ़ा उपस्थित छलाह। रिद्धिक भूमिका शोध-सहयोग आ उपलब्ध दस्तावेजक तुलना धरि सीमित राखल गेल। उमा राठौड़ स्पष्ट करौलीह—“ई पुलिसक तलाशी नहि, विश्वविद्यालयक अपन सम्पत्ति आ अनुबन्धीय अभिलेखक प्रशासनिक निरीक्षण अछि। ककरो निजी सामान वा अधिकारक सीमा लाँघि काज नहि हो।” माधव कहला, “हमर कम्पनीक किछु उपकरण एतय अछि। ओकर लाइसेन्स आ विन्यासक कागज चाही।” समिति हुनका एक प्रति देलनि। बन्द दरबज्जाक ऊपर ‘परामर्श’ लिखल पुरान पट्टी एखनहुँ टेढ़ छल; ओहि पट्टीक बगलमे ‘डेटा-कक्ष’ क नब कागज लटकि रहल छल। रिद्धिक नजरि ई दू नामक बीच अनकहल समयपर पड़ल।

सम्पत्ति-अधिकारी पहिने बाहरी ताला देखलनि, तकर तस्वीर तिथि सहित अभिलेखमे जोड़लनि, फेर निर्गत-चाभीक बहीक आधारपर दरबज्जा खोललनि। भीतर लोहेक दू अलमारी, एक पुरान मेज, तारक उलझल गठरी आ धूलसँ ढँकल कम्प्यूटर छल। खिड़कीक पल्ला आधा खुलैत साँझक पुरान पत्ता भीतर उड़ि आयल। ‘एहिमे तँ किछु नहि,’ एक कर्मचारी फुसफुसायल। रिद्धि ओकरा देखिकय कहलीह, “किछु नहि, ईहो निष्कर्ष सूची बनलाक बादहि।” अलमारीक पहिल खानेमे प्रशिक्षण-सत्रक उपस्थिति-पुस्तिका छल; ताहिमे जे विद्यार्थी सचमुच आएल छलाह, हुनकर हस्ताक्षर छल। देविका राहतक साँस लेलनि। दोसर खानेमे किछु खाली फॉर्म आ परामर्श-सत्रक खर्चक मसौदा छल, मुदा व्यक्तिगत परामर्शक विवरण नहि। मीरा जैनक दू महीनाक बकाया बिल तेसर पाँतिमे बन्द खाममे भेटल। कोठरी एकहि समय कार्यक्रमक अस्तित्वक प्रमाण आ सेवा-विलम्बक साक्षी बनि गेल छल।

कम्प्यूटरक बाहरी सूची बनबैत तकनीकी कर्मचारी देखलक जे एकटा बाहरी संग्रहण-उपकरण लगाओल अछि, जकर क्रम-संख्या अनुबन्धीय सम्पत्ति-पञ्जीसँ मेल नहि खाइत छल। माधव कहला, “सम्भवत: प्रतिस्थापनक उपकरण अछि; हमर कार्यालयसँ जाँच करब।” देविका अपन हस्ताक्षरित खरीद-पत्र खोजलीह, मुदा ताहिमे दोसर क्रम-संख्या छल। उमा हुनका डाँटलीह नहि। “एखन ई लिखू जे वास्तविक उपकरण आ पञ्जीक क्रम-संख्या अलग अछि,” ओ कहलीह, “कारण जाँचक विषय।” रिद्धि पुछलीह, “की डिजिटल अभिलेखक वर्तमान स्थिति बिगाड़ने बिना अधिकृत विशेषज्ञसँ संरक्षित प्रति लेल जा सकैत अछि?” सूचना-कर्मचारी उत्तर देलक जे उचित अनुमति, प्रवेश-लिखत आ तकनीकी जाँच-पद्धतिक बिना उपकरण चालू करब उचित नहि। समिति उपकरणक अस्तित्व, तकर जड़ल स्थिति आ स्थल-निरीक्षणक समय दर्ज कएलक; अनधिकृत नकल वा निजी डेटा देखबाक प्रयास नहि भेल।

तखन एक अलमारीक नीचाँ पातर पोटरी भेटल। ओहिमे एक पुरान पत्रक नकल, बाहरी कम्पनीक भुगतान-सूची आ २०२४ क दू महीनाक समायोजन-पत्र छल। समायोजन-पत्रमे विद्यार्थीक नामक स्थानपर क्रमाङ्क छल; किछु प्रविष्टिक आगाँ ‘आगन्तुक-सत्यापन’, किछुक आगाँ ‘प्रशिक्षण-वृत्ति’, आ किछुक आगाँ केवल ‘समायोजित’ लिखल छल। रिद्धि अपन कापीमे क्रमाङ्कसँ अधिक किछु नहि उतारलीह। देविका कहलीह, “ई रकमनामक व्याख्या वित्त-शाखा देत। एहि पाँतिसँ वास्तविक भुगतान सिद्ध नहि होइत।” रिद्धि सहमत भेलीह। “एक कागज भुगतानक निर्देश होय सकैत अछि, दोसर लेखा-समायोजन, तेसर वास्तविक बैंक-निष्पादन,” ओ कहलीह। कुसुम पाछू ठाढ़ ई सभ सुनैत छलीह। हुनका बन्द कोठरीक आरम्भिक भय याद आयल—एतय ककरो कष्ट लुकाओल नहि छल, मुदा कागजक लापरवाही हुनकर कष्टक कारण बनि सकैत छल।

माधव लोढ़ा एक पुरान फाइल देखिकय बेचैन भेला। “ई बाहरी परामर्शी सेवा कम्पनीक पुरान अन्तरिम सूची अछि,” ओ कहला, “हुनकर उत्तरदायित्व हमर संस्थासँ पृथक छल।” रिद्धि पुछलीह, “अनुबन्धमे उपसेवा-दाताक अनुमति कोन पन्नापर अछि?” माधव फाइल पलटैत रहला। “हम जानब; एतय स्मरण सँ नहि कहब,” ओ उत्तर देलनि। रिद्धि हुनकर एहि

उत्तरक सम्मान कएलीह। “जँ दस्तावेज भेटय तँ ओकर मूल तिथि, अनुमोदनकर्ता आ अवधि जाँचब,” ओ कहलीह। माधव मनमे सोचलनि जे पत्रकारसभ पहिने सँ हुनका दोषी मानि रहल होएत, मुदा एहि कोठरीमे हुनका हर उत्तर देबाक समय भेटि रहल छल। ओ अपन कम्पनीक अधिकारीकेँ फोन करबाक अनुमति माँगलनि। उमा कहलनि, “कानूनी प्रतिनिधित्व वा तथ्यक पुष्टि करब अधिकार अछि। निरीक्षणक वर्तमान सूची पर हस्ताक्षर करबाक पहिने अपन आपत्ति लिखि सकैत छी।”

निरीक्षण समाप्त होइत तीन घंटा लगल। सूची बनल जे कोन सामान विश्वविद्यालयक, कोन बाहरी ठेकाक दावा अनुसार, कोन वस्तुक स्वामित्व विवादित, आ कोन अभिलेखक पहुँच केवल अधिकृत व्यक्ति धरि सीमित रहत। उमा मूल सूचीपर हस्ताक्षर कएलनि, माधव अपन टिप्पणी लिखलनि, देविका उपस्थितिक पुष्टि देलीह। तकनीकी उपकरणक आगूक प्रतिलिपि-जाँच लेल अधिकृत समिति आ अनुबन्धीय अधिकारक लिखित पुष्टि अपेक्षित ठहरल। रिद्धि एक कागज अलग सँ माँगलीह—“भविष्यक जाँच धरि मूल अभिलेख अनधिकृत रूपसँ हटाओल, बदलल वा नष्ट नहि कएल जाए।” उमा एहि निर्देशकेँ विश्वविद्यालयक अभिलेख-संरक्षण आदेशक रूपमे जारी करौलनि। ओकरा कोनो अपराधक गिरफ्तारीक आदेशक समान प्रस्तुत नहि कएल गेल। कुसुम देखलीह जे एक बन्द कोठरी खुलेबाक सबसँ कठिन काज ताला खोलब नहि, कोठरीक भीतरक प्रत्येक वस्तुकेँ ओकर उचित अर्थ देब अछि।

ओहि साँझ वित्त-शाखाक सहायक विनोद सुथारक टेबुलपर समायोजन-पत्रक प्रति पहुँचल। ओ मासिक भुगतानक बही मिलाबय लगल। वास्तविक अनुदानक निर्गत किस्त, विश्वविद्यालयसँ बाहरी कम्पनीकेँ भेल भुगतान आ छात्रक नामसँ भरण-पोषण वृत्तिक स्वीकृति तीन अलग पञ्जीमे छल। विनोद एक पन्नापर लाल रेखा खींचलक; ओहि पन्नामे बीस भुगतान-निर्देश लिखल छल, मुदा बैंक-निष्पादनक पुष्टि मात्र चौदह प्रविष्टिक संग तत्काल भेटल। “बाकी छः कहाँ?” वरिष्ठ अधिकारी पुछलनि। विनोद कहलक, “एखन पुष्टिक अभाव अछि। सम्भव अछि निर्देश रद्द भेल, अगिला महीना भुगतान भेल, अथवा अभिलेख अलग फाइलमे रहि गेल। बैंक विवरण बिना एकरा गबन कहि नहि सकैत।” वरिष्ठ अधिकारी विनोदक

कापी देखलनि। “एहन उत्तर सुनब कठिन, मुदा आवश्यक,” ओ कहला। ओ छहो प्रविष्टिक सम्बन्धित पत्र मँगाओलनि।

रिद्धि रात्रिमे अपन शोध-कक्षमे लौटीह। टेबुलपर २०१८ क एक पुरान सरकारी व्यय सूची छल, जतय ओ पहिल बेर आवंटन आ वास्तविक भुगतानक अन्तर देखिलनि छल। सामने २०२४ क नव कार्यक्रमक अनुबन्ध, विद्यार्थी-सहमतिक दू प्रारूप आ समायोजन-पत्रक क्रमाङ्क छल। ओ पाँच गोटेक नामक अनुमान हटाकय फाइल बन्द कएलीह। नब कापीक पहिल पन्नापर लिखलीह—“अभिलेख बचल; अर्थ एखन निर्धारित नहि।” दोसर पन्नापर लिखलीह—“पहुँच-अधिकार; मूल स्रोत; अवधि; लाभार्थी; बैंकक पुष्टि।” तीसरा पन्ना खाली छोड़लीह। खाली पन्नाक ऊपर ओ एक छोट प्रश्न लिखलीह—“एक कार्यक्रमक विद्यार्थी-पञ्जी जे वित्तीय सेवा कम्पनीकेँ पहुँचि सकैत अछि, ओकरा भविष्यक किन-किन खाता-प्रक्रियासँ जोड़ल जाएब सम्भव?” प्रश्नक उत्तर हुनका एखन नहि भेटल छल; ई प्रश्न बादक वर्षसभमे हुनका बहुत दूर लऽ जायत।

मुकुलक शिकायतक अनुसन्धानक अन्तरिम पत्र विश्वविद्यालय पहुँचल। जाँच-अधिकारी संस्था सँ एतबा पूछने छल—‘मरुधर नियुक्ति-सुविधा’ नामसँ कियो अधिकृत प्रचार, शुल्क-संग्रह अथवा तृतीय पक्षक सम्पर्क केने छल कि नहि; पञ्जीकृत उपयोगकर्ताक सम्पर्क-सूचना ककरा उपलब्ध छल; आ सम्बन्धित अवधिक आवश्यक इलेक्ट्रॉनिक अभिलेख सुरक्षित रखल जाए। अरविन्द पारीक उत्तरमे आधिकारिक निःशुल्क सेवाक शर्त आ उपलब्ध प्रचार-सामग्रीक सूची संलग्न कएलनि। ओ एहि पत्रमे लिखलनि जे असत्यापित शुल्क माँगनिहार संस्थाक अधिकृत प्रतिनिधि सिद्ध नहि छथि। मुदा ओ ‘हमर परिसर सँ कोनो सूचना बाहर नहि गेल’ एहन निश्चित दावा सेहो नहि कएलनि। भिन्न स्तरक अनुमति आ सम्भावित त्रुटिक जाँच जारी रखबाक आग्रह कएलनि। मुकुल उत्तर पढ़िकय कहलक, “ई हमर पैसा नहि, मुदा कमसँ कम ओसभ ई नहि कहैत छथि जे हम झूठ बाजलहुँ।”

विद्यार्थीसभक वर्षान्त गोष्ठी एहि बेर कोनो प्रतियोगिताक रैंकसँ आरम्भ नहि भेल। आलिया परवीन कोटासँ आएलीह; चन्दना अपन प्रयोगक असफल नमूना अनलीह; कुसुम परामर्शक नव समय-पञ्जी; आ पायल सांख्यिकीक दू चार्ट। पहिल चार्टमे अंकक वितरण छल, दोसरामे

कक्षामे उपलब्ध अध्ययन-सुविधाक असमानता। पायल कहलनि, “एकहि अङ्कवला दू विद्यार्थीक घरमे पुस्तक, प्रकाश, स्वास्थ्य आ पारिवारिक सहारा एकहि भाँति नहि होइत। तुलना करब तँ एहि अन्तरक स्मरण राखू।” आलिया जोड़लीह, “आ एतयसँ ई निष्कर्ष नहि जे कठिन परीक्षा अनावश्यक अछि। उचित परीक्षा आ उचित सहायता एक-दोसराक विरोधी नहि।” चन्दना छात्रसभकेँ अपन उपकरणक भूल देखौलीह। “मापन गलत भऽ सकैत अछि; ताहि लेल पुनरावलोकनक साधन बनाओल जाए,” ओ कहलीह। सभागारमे आइ कोनो पहिल-दोसरक पुरस्कार नहि बाँटल गेल; एक दीवारपर विद्यार्थी अपन आगाँक सीखबाक इच्छा लिखैत गेलाह।

मीनाक्षी ओहि वर्षक अन्तिम सप्ताहमे जोधपुर बेटी लग आयलीह। छात्रावासक बाहर हुनका भव्य भवन देखिकय गर्व भेल, मुदा पायलक कोठरीक छोट मेज देखिते ओ अपन सिलाइक कामक एक पोटरी खोललीह। “तोहर पुस्तक लेल कपड़ाक थैला बना देलहुँ,” ओ कहलीह। पायल हँसलीह। ‘माए, हमरा एखनहु राति कखनो चिन्ता होइत अछि,’ ओ स्वीकार कएलीह। मीनाक्षी बेटीकेँ गले लगाबय चाहलीह, मुदा पायल पहिने कागज देखौलक—अगिला परामर्शक समय, परीक्षाक अभ्यासक नियत घण्टा, विश्रामक छोट अवधि, आ घर फोन करबाक दिन। “हम ई अपन हाथसँ बनौने छी,” ओ कहलीह। मीनाक्षी कागज देखिकय उत्तर देलीह, “तखन एहि मे समयक संग अपन मनक जगह सेहो राखिह।” पायल ओहि रात्रि पूर्ण निश्चिन्त नहि छलीह। मुदा ओकर पास आब कठिन दिन आए तखन सहायता माँगबाक ठोस उपाय छल।

वर्षक अन्तिम कार्यालयी दिन उमा राठौड़ सभ विभागक प्रतिवेदन देखलीह। परामर्श सेवा पुनः आरम्भ भेल, मुदा स्थायी निधिक स्वीकृति शेष छल। हिम्मतक अनुशासन-पत्रक अस्पष्ट रोक हटि गेल, मुदा संस्थाक सभ आ अनुशासन-नियमक व्यापक समीक्षा चलि रहल छल। मुकुलक डिजिटल ठगीक शिकायत पुलिसक जाँचमे छलीह; ओकर धन फिर्ती एखन नहि भेल छल। वित्तीय सेवा कम्पनीक संग अनुबन्धमे उपसेवा-दाताक अनुमति आ विद्यार्थी-सूचनाक सीमाक परीक्षण बाकी छल। उमा एक प्रतिवेदनपर ‘समाप्त’ लिखबाक बदला “अन्तरिम अनुपालन; शेष कार्य” लिखलनि। सचिव पुछलक, “एहि सँ विश्वविद्यालयक उपलब्धि कम

देखायत।” उमा उत्तर देलीह, “जे अधूरा अछि ओकरा पूरा कहब सँ काम पूरा नहि होइत।” ओ अपन मुहर लगौलीह।

रिद्धि विश्नोई अन्तिम बेर बन्द कोठरीक आगू पहुँचलि। एखन दरबज्जापर ‘अभिलेख-कक्ष: अधिकृत प्रवेश’ लिखल स्पष्ट पट्टी छल; परामर्श लेल बगलक नब कोठरी खुलि चुकल छल। भीतरक वस्तुक सूची सुरक्षित छल, डिजिटल उपकरणपर अधिकृत परीक्षणक आदेश विचाराधीन छल, आ वित्त-शाखा बैंक-पुष्टिक अभाववला छ: प्रविष्टिक उत्तर खोजि रहल छल। रिद्धि अपन कापीमे तारीख लिखलीह, फेर पुरान पन्नाक कोनमे एक अति छोट नाम देखलीह —‘संगति’। ओ ई नामक आगाँ अपराधक कोनो चिह्न नहि लगौलीह। कार्यक्रमक सहमतिपत्र, भुगतानक रेखा आ बाहरी कम्पनीक पहुँच-सीमा तीनूकेँ अलग रखलीह। ओकरा सामने जे बन्द कोठरी छल से आब खुलल छल; मुदा कोनो नामक वास्तविक अर्थ एखन एक दीर्घ प्रश्नक रूपमे बन्द छल।

राति आठ बजे रेवतीक फोन आयल। “विद्यार्थी सुरक्षित छथि?” ओ पहिल प्रश्न कएलीह। रिद्धि उत्तर देलीह, “पायल नियमित सहयोग लऽ रहल छथि; सहायता-कक्ष खुलल अछि। मुदा स्थायी व्यवस्था लेल पुन: जाँच होयत।” “आ अनुशासन?” “हिम्मतक पुस्तकालय खुलि गेल।” “मुकुलक रकम?” “जाँच शेष। लौटि नहि भेटल।” “अभिलेख?” रिद्धि क्षणभरि चुप रहलि। फेर कहलीह, “मूल बही आ उपकरणक सूची सुरक्षित कएल गेल अछि; अधिकारसँ बेसी किछु नहि खोललहुँ।” रेवतीक स्वरमे थकानक संग एक अनकहल संतोष छल। “ठीक,” ओ कहलीह, “जकरा सहायता चाही ओकरा सहायता, जकरा सुनबाई चाही ओकरा सुनबाई, आ जे कागज अर्थक प्रतीक्षा करैत अछि ओकरा सत्यापन। एहि तीनूकेँ फेर कहियो एकटा आरोप बनाकय नहि मिलाबी।”

रिद्धि फोन रखि छात्रावासक बरामदामे ठाढ़ भेलीह। दूर सँ पुस्तकालयक उजास देखाइत छल। हिम्मत भीतर बैसि परीक्षा-पत्र हल करैत छल; मुकुल अपन भाइकेँ अगिला नौकरी-आवेदनक जानकारी पठौने छल; पायल अगिला दिनक अध्ययनक पहिल पन्ना खोलने छलीह। विश्वविद्यालयक पत्थरक दीवारसभ एहि तीनू जीवनसँ बेखबर नहि रहबाक चाही, ई सोचि रिद्धि अपन थैला उठौलीह। थैलामे अभिलेखक कोनो चोरीक प्रति नहि, केवल अधिकृत

निरीक्षणक पावती, सार्वजनिक अनुबन्धक नकल आ अधूरा प्रश्नसभक सूची छल। आनेबला वर्षमे एहि सूचीसँ बहुत नाम जुड़त, बहुत रकमक अर्थ खुलत अथवा बदलत, आ बहुत निर्दोष लोक अपन नाम साफ करबाक बाट खोजत। एखन राति छल। बन्द कोठरीक एक पुरान चाभी विश्वविद्यालयक मुहरबन्द लिफाफामे राखल गेल छल; आगू खुलल सहायता-कक्षक मेजपर पानिक एक भरल गिलास राखल छल। दुनू वस्तु अपन-अपन अर्थमे साक्षी छल।

पञ्चम खण्ड — सत्ताइस वर्षक हिसाब

अध्याय ३३ — जुआक नव कानून

सन् २०२५ : दरभंगा, जोधपुर आ दिल्ली

सावनक अन्तिम सप्ताहमे दरभंगाक पुरान बाजारक छतसभपर बरखाक पानि ठहरल छल। नीलकान्त साह अपन दुकानक आधा शटर उठाकय भीतर गेलाह तँ मसालाक गन्धसँ पहिने हुनका एक मोबाइलक स्वर सुनाइ देलक। एहन स्वर जे प्रत्येक तेसर क्षणमे एकटा सिक्का गिरबाक आ फेर ढेर सिक्का खनखनएबाक अभिनय करैत छल। दुकानक पाछाँ हुनकर बेटा अमरेश बैसल छल। कनी दूरमे रामौतार नट अपन कमीजक भीजल कोन निचोड़ैत ठाढ़ छल। नीलकान्त पहिने बेटाकेँ देखलनि, फेर रामौतारकेँ। “आज माल नहि उठेने छी?” हुनकर प्रश्न व्यापारक छल, मुदा रामौतारक मुखपर उत्तर कर्जक रूपमे लिखल छल। ओ कहलनि, “माल उठब तखन जखन पिछिला मजदूरी बाँचत।” अमरेश मोबाइल उलटा कऽ मेजपर राखि देलक। सिक्काक खनखनाहट एकदम बन्द भऽ गेल, जेना ककरो मुट्ठीमे भरल उजास बुझा गेल हो।

रामौतार बाजारक छोटी-छोटी दुकानसभमे बोरा ढोइत छल। अपन परिश्रमक सप्ताहिक आमदनी सँ घरक भाड़ा, पत्नी चन्दाक सिलाइक धागा आ बेटी बिन्दियाक विद्यालयक खर्च चलबैत छल। ओकर जेठ बेटा अमित पहिने एक वितरण-कम्पनीमे सामान पहुँचबैत छल, मुदा कम्पनीक अनुबन्ध समाप्त भेलाक बाद साइकिल पर छोट-मोट काज करैत रहैत छल। तीन महीनासँ ओकर मोबाइलमे ‘रंगलहर’ नामक एकटा खेल छल, जतय हरेक पराजयक बाद स्क्रीनपर लिखल अबैत—“अगिला बेर अपन पुरान हानि पूरा करू।” अमित एहि वाक्यकेँ अपन देनदारक नामसँ बेसी नीक चिन्हैत छल। ओ पिता सँ एतेक किछु लुका लेने छल जे घरक अलमारीमे राखल बिन्दियाक छात्रवृत्तिक नकल धरि बेचबाक विचार ओकर मनमे आयल रहय; मुदा कागजक कोनो मूल्य नहि भेटैत देखि ओ लज्जासँ ओकरा फेर रखि देने छल।

नीलकान्त अपन चश्मा साफ करैत पुछलनि, “केहन मजदूरी बाकी अछि?” रामौतार कहलक, “मजदूरी हमरा सँ नहि, हमर बेटासँ पुछू। ओकर फोनमे पचास हजार जकाँ रुपैया गेल अछि। हम नहि जानैत छी जे कोना गेल, कतय गेल। जे रुपैया घरक नहि छल सेहो गेल।” नीलकान्त बेटाक दिस तकलनि। अमरेश धीरे सँ कहलनि, “बाबूजी, हर मोबाइलक खेल सट्टा नहि होइत। किछु खेलमे अभ्यास होइत अछि, प्रतियोगिता होइत अछि।” “से हम जानैत छी,” नीलकान्त उत्तर देलनि, “मुदा रामौतारक घरमे जे पचास हजारक गड्डा पड़ल अछि, ओ अभ्यासक प्रमाणपत्रसँ नहि भरत।” रामौतार एतबा सुनि चुप रहल। ओकरा पहिल बेर लागल जे बजारमे जकर लग ओ शिकायत लऽ आएल अछि, ओ ओकरा मूर्ख कहल बिना सुनैत अछि।

नीलकान्त साहक अपन युवावस्थाक एक मुकदमा छल। सन् २००० मे पुलिस जप्त बहीक आधारपर हुनका विरुद्ध स्थानीय सट्टा चलयबाक आरोप आनने छल। न्यायालयक वर्षसभमे किछु अलग उल्लङ्घन प्रमाणित भेल छल आ किछु व्यापक आरोप अभिलेखक कमजोरीक कारण सिद्ध नहि भऽ सकल छल। ओहि घटनाक बाद नीलकान्त कागजपर लिखल प्रत्येक नामक सीमा जानि गेलाह। “हमर समयमे पाँसाक शोर सुनाइत छल,” ओ रामौतार सँ कहला, “एखन खेलक भीतर आवाज, नियम आ अदृश्य बही अछि। मुदा पुरान बात एखनहुँ एक्के अछि—जे हानि उठौलक, ओकरा सुनबाक चाही; आ जकरा दोषी कहल जा रहल, ओकरा विरुद्ध प्रमाण चाही।” अमरेश अपन पिताक पुरान फाइलक नाम सुनि असहज भेल। ओ अपन फोनमे अमितक भेजल भुगतान-सन्देशक तस्वीर देखाबय लगल, मुदा नीलकान्त रोकलनि—“मूल सन्देश ओकर फोनपर रहय। ई तस्वीर मात्र शुरुआत अछि।”

चन्दा देवी ओहि साँझ रामौतारकेँ बिना डाँटल सुनलीह। सुइक नोकसँ धरल नील धागा हुनकर अँगुरीमे अटकि गेल छल। “अमित जे कएलक ओकरा हम उचित नहि कहब,” ओ कहलीह, “मुदा ओकर हानि पूरा करबाक नामपर जे नब उधार देल गेल, ताहि पर कतेक ब्याज लागल? पाँतिक अक्षर देखलहुँ?” रामौतार अपन जेब सँ एक कागज निकाललक। स्थानीय उधारदाता लगसँ तेरह हजार लेल गेल छल; देबाक नियत तिथि चारि सप्ताहक बाद छल, आ ब्याजक वचन मुखे-मुख छल। बिन्दिया कापी खोलिकय लिखलक—“तेरह हजार, देनिहार,

लेनिहार, तारीख।” चन्दा बेटीकेँ देखिकय कहलीह, “बाबूक रुपैया सँ पहिले ई लिखबाक कला हमरा घरमे बचाबय पड़त।”

अमित राति भोजनपर देरीसँ आयल। ओकर कपड़ामे सड़कक धूल छल, आ आँखिक भीतर हार मानबाक अटकल स्वर। ओ कहलनि, “हम आर नहि खेलब।” चन्दा तुरन्त विश्वास नहि देलीह। “ई वचन एतेक बेर सुनने छी जे एखन ओकरा अकेले नहि मानि सकब,” ओ कहलीह, “बैसि हिसाब खोल। कोनो पात नहि छुपाबी।” अमित मोबाइल निकाललक, बैंकक विवरण देखौलक, फेर एक-एक भुगतानक अगल-बगल खेलक पञ्जी खोलय लगल। किछु जमा आठ सय, किछु दू हजार, एक बेर पाँच हजार; एक जीतक तीन हजार चारि सय ओकर बैंकमे घुरल छल। बिन्दिया कहलक, “जमा, जीत, फेर जमा—सभटा जोड़ि कऽ एकहि हानि कहब गलत होएत।” अमित ओकरा देखलनि। बहिनक स्वरमे आरोप नहि, गणनाक आग्रह छल। तीन घंटा पछाति स्पष्ट भेल जे कुल जमा आ कुल वापसी एकरूप नहि; किछु स्थानपर भुगतान सफल देखल गेल, मुदा खेलक शेषराशिमे राशि भेटल नहि।

ओहि रात्रि चन्दा अपन सुइक डिब्बा बन्द करैत पुछलीह, “अमित, तों जे दोसर बेर खेलबाक निर्णय केलें, ओ निर्णयक घड़ीमे तोरा की देखाइत छल?” अमित नीचाँ तकलक। “पहिल बेर हानि भेल तँ लगल अगिला खेलमे उघारि लेब। फेर जखन चारि हजार जीतलहुँ, लगल सचमुच सम्भव अछि। किछु क्षणमे बुझैत छलहुँ जे ई रूपैयाक उपाय नहि, मुदा फोन बन्द करैत काल मन कहैत—एखन बन्द कएब तँ पहिनुक हानि स्थायी भऽ जाएत।” चन्दा कहलीह, “हानि तँ पहिने सँ छल, तों ओकरा स्वीकार नहि कएने छलें।” पति रामौतार बीचमे किछु कहय चाहल, मुदा पत्नी हाथ उठा कऽ रोकलीह। “आइ ओकरा सुनू। काल्हि हम सभ देनदार लग जाएब, मुदा आइ हमर घरमे जे भय छल ओकर नाम लिअ।” घरक बाहर वर्षाक पहिल तेज फुहार फेर शुरू भऽ गेल।

दिल्लीमे ओही सप्ताह युवा कार्यक्रम-निर्माता मेधा कुमारी तीन किशोरक संग एक इलेक्ट्रॉनिक खेलक अभ्यास करैत छलीह। ओकर खेलमे जीतबाक लेल आभासी नदीपर पुल बनायब पड़ैत छल; सीमित सामग्री, समय आ सामूहिक रणनीति सँ पुल बनैत। कम्प्यूटरक पर्दापर छोट धारीदार नाव जखन सुरक्षित पार पहुँचैत, तीनू विद्यार्थी एक-दोसराक हाथ धऽ

हँसि पड़ैत। प्रतियोगितामे प्रवेशक साधारण शुल्क छल, पुरस्कार आयोजकक घोषित निधिसँ अबैत; केओ जीतक आशामे अपन रुपैया दाँवपर नहि रखैत छल। मेधाक सहकर्मी तारिक अंसारी कहलक, “लोक सभकेँ एकहि नाम सँ बजबैत अछि—गेम। मुदा हमरा सभक खेलक हिसाब ओहि रकम लगेनिहार खेलक सन नहि।” मेधा उत्तर देलीह, “तेँ हमरा सभकेँ नियमक व्याख्या अपन ग्राहक मात्र नहि, अपन घरवालासभकेँ सेहो करबाक पड़त।”

मेधा मैथिलीक गामसँ दिल्ली पढ़य आएल छलीह। पिताक छोट खेत छल, माय विद्यालयमे सहायक कर्मचारी। ओ गेम बनबैत समय बार-बार मैथिली शब्दक प्रयोग करय चाहैत छलीह, मुदा निवेशक कहैत—“ग्रामीण भाषा राखब तँ ग्राहक कम भेटत।” मेधा हँसि कऽ कहलीह, “ग्राहक कम भेटत तँ हम अपना खेलमे दू भाषा राखब, मुदा बच्चाकेँ नदीक नाम कहबाक अधिकार नहि छीनब।” ओकर टोलीमे नागालैण्डसँ आयल एक चित्रकार, राजस्थानक एक सङ्गणक अभियन्ता आ दिल्लीक दू युवा खिलाड़ी छलाह। सभकेँ वेतन देबाक प्रश्न अगिला मास आयल छल। ताहि लेल जे आर्थिक नियमनपर बहस चलि रहल छल से हुनका सभ लेल खाली दार्शनिक प्रश्न नहि, कार्यालयक भाड़ा आ घर चलयबाक प्रश्न सेहो छल।

तारिकक फोनपर उद्योगक एक बैठकक सूचना आयल। किछु धनाधारित खेलक कम्पनी अपन सेवा अस्थायी रूपसँ सीमित करबाक योजना बना रहल छल। किछु युवा कर्मचारी डरैत छलाह जे सभ प्रकारक डिजिटल खेल एकहि दिनमे बन्द भऽ जाएत। मेधा बैठकमे कहलीह, “हमर खेलमे दाँव नहि, अभ्यास अछि। मुदा जँ सार्वजनिक चर्चामे ई अन्तर साफ नहि रहल तँ बच्चाक सीखबाक खेलपर सेहो संदेह पड़त।” एक कम्पनीक प्रतिनिधि उत्तर देलक, “आ जँ दाँव-रूपेयावला खेलमे सचमुच प्रशिक्षित प्रतिभा चाहैत ग्राहक छथि तँ हुनकर पसिनाक कौशलक कोनो मोल नहि?” मेधा कहलीह, “कौशलक सम्मान अलग, धनक दाँव अलग। नागरिकक अधिकार आ परिवारक हानि दुनूकेँ एकटा नारा सँ नहिं बुझल जा सकैत अछि।”

दरभंगामे अमरेश बाजारक एक ग्राहकसँ भेटि घुरल तँ देखलक जे नीलकान्त दूकानक पुरान सन्दूक खोलि रहल छथि। लकड़ीक पेटीमे सन २००० क जप्त-पञ्जीक प्रमाणित नकल, पुरान अदालती पावती आ एक छोटी लाल पेन्सिल छल। “एहि सभकेँ फेर किएक देखैत छी?” अमरेश पुछलक। “काल्हि रामौतारक बेटाक हिसाब देखिकय हमरा अपन पहिल दिनक

न्यायालय याद आयल,” नीलकान्त कहला। “ओहि दिन एकटा बहीमे हमर नाम छल, आ सभ लोक मानि लेने छल जे बहीक सभ हिसाब हमर। पछाति बुझल गेल—किछु प्रविष्टि हमर, किछु दोसराक, किछु अधूरा। एखन डिजिटल बहीमे सेहो नामक एक अक्षर समूचा जिनगीक निर्णय नहि हो।” अमरेश पिताक हाथक काँप देखलक। ओ पहिल बेर बुझलक जे पुरान मुकदमाक कथा हुनका लेल लज्जाक सङ्गे प्रामाणिकताक शिक्षा सेहो अछि।

अगिला भोर अमित स्वयं नीलकान्तक दुकान पहुँचल। ओ पिताकेँ नहि, अपन बहिन बिन्दियाकेँ संग आनने छल। “हम मोबाइलक मूल लेनदेन दिखाबय चाहैत छी,” ओ कहलक, “मुदा सम्पूर्ण खेलक पञ्जी डाउनलोड करबाक विकल्प बन्द भऽ गेल अछि।” बिन्दिया कहलीह, “हम ई नहि चाहैत जे बाबूजीक नामपर कियो खेलक ग्राहक सेवा सँ धमकी दियौ। हम तिथि, रकम, अपना बैंकक पूरा विवरण आ कम्पनीक आधिकारिक पता सुरक्षित करय चाहैत छी।” नीलकान्त हुनका सबकेँ मोबाइल सँ तात्कालिक छेड़छाड़ नहि करबाक सलाह देलनि। “जकरा लिखित शिकायत करब, ओकरा पहिले तथ्य दियौ; जे तोहर अपना नुकसान अछि से साफ लिखौ, आ जे अहाँ नहि जनैत छी से ताहि नामे छोड़ौ,” ओ कहला। अमितक चेहरा एखनो उतरल छल, मुदा ओकर दृष्टिमे एक छोट आत्मविश्वास घुरि रहल छल।

दिल्लीक एक समाचारक कार्यालयमे नूर जतय आ रिद्धि विश्नोई अलग-अलग स्क्रीनपर काम करैत छलीह। नूर ऑनलाइन खेलक नब विधेयक सम्बन्धी प्रारम्भिक परिचर्चाक सामग्री जुटबैत छलीह; रिद्धि मरुधर विश्वविद्यालयक रोजगार-सहायता कार्यक्रमक सार्वजनिक अनुबन्ध देखैत छलीह। नूर कहलनि, “कतेक कम्पनी अपना प्रचारमे लिखैत अछि—कौशल खेल, ताहि लेल जोखिम नहि।” रिद्धि उत्तर देलीह, “कौशल परिणामकेँ प्रभावित कऽ सकैत अछि, मुदा ग्राहकक धनक हानि स्वतः समाप्त नहि करैत। आ कानूनक नया प्रस्तावकेँ विद्यमान अपराधक धारा बुझि नहि लिखू।” नूर नोट कएलीह। पत्रकारितामे जे भेद अति कठिन छल, ओकरा छापबाक लेल छोट स्थान चाही; मुदा छोट स्थानमे कठिन भेद लिखबाक कला ओ आब सीखि लेने छलीह।

रिद्धिक सामने मरुधरक बन्द अभिलेख-कक्षसँ भेटल सार्वजनिक कागजक नकल छल। विद्यार्थी-सहमतिक एक प्रपत्रमे ‘नियुक्ति-सुविधा’ वाक्य छपल छल, आ निचाँ लघु अक्षरमे

‘तृतीय पक्षक उपयुक्त सम्पर्क’ लिखल छल। दोसर अनुबन्धमे बाहरी वित्तीय सेवाक नाम सँ पहिने ‘संगति’ शब्द छल। एहि कागजसभ सँ कोनो ऑनलाइन खेलक कम्पनीक उपस्थिति सिद्ध नहि होइत छल। तथापि रिद्धिक मनमे प्रश्न उठल—एक अध्ययन-संस्थानक विद्यार्थी-सूचना जँ सहमतिक अस्पष्ट पाँतिमे बाहरी सेवाकेँ भेटैत अछि, तँ ओकर आगूक उपयोग ककर नियंत्रणमे रहत? ओ प्रश्न लिखलीह, उत्तर नहि। ओहि दिनक काम एतबे छल जे दस्तावेजक क्रमाङ्क, अधिकृत स्रोत आ विद्यार्थीक शिकायतक तिथि अलग पन्नामे रखथि।

जोधपुरक मरुधर विश्वविद्यालयमे मुकुल मीणा वर्षक नव सत्र शुरू करबाक लेल कार्यालय पहुँचल। ओकर पुरान रोजगार-ठगी शिकायतमे सात हजार पाँच सय रुपैया एखनो वापस नहि आयल छल। भाई रमेश मीणा नव उधार नहि लेने छलाह, मुदा घरक पुस्तक खरीदबाक खर्च घटा देने छलाह। मुकुल कम्प्यूटर-कक्षमे देखलक जे विद्यार्थीसभ एक नव खेलक प्रतियोगिताक सूचना पढ़ैत छथि। ‘भर्ती सफल, पचास हजार जीतू’ लिखल एक रंगीन पोस्टर सेहो फोनपर घुमि रहल छल। ओ पोस्टरक पूरा पता खोजलक तँ कियो आधिकारिक आयोजक नहि भेटल। मुकुलक सहपाठी हिम्मत अंसारी कहलक, “किछु छात्र ई प्रचार आगू भेजि देत। हम पहिने विश्वविद्यालयसँ पुछब जे अधिकृत अछि कि नहि।” मुकुल उत्तर देलक, “हमरा पहिने पूछबाक आदत महँग पड़लाक बाद भेटल।”

ओहि साँझ पायल रैगर परामर्श-कक्षसँ निकलि पुस्तकालय धरि जाइत छलीह। हिम्मत हुनका पोस्टर देखौलक। पायल मोबाइलक छोट चित्रमे ‘पुरस्कार’ शब्दसँ बेसी ‘अगिला भुगतान’ शब्द पढ़लीह। “जे खेल प्रवेशक शुल्क लैत अछि, से सभटा गलत नहि,” ओ कहलीह, “मुदा जतय अगिला रुपैया जमा केलाक बाद पहिनुक हानि उघारबाक वचन हो, ओहि शब्द पर विशेष ध्यान देब।” मुकुल पुछलक, “अहाँ ई कोना जानैत छी?” पायल कहलीह, “हम अपन परीक्षा-परिणामक समय ई सीखनहुँ। किछु तिथि, किछु अङ्क, किछु आशा—लोक फेर एक बेर प्रयास करबाक कारण खोजैत रहैत अछि। मुदा प्रयासक प्रयोजन आ असहाय जुआक बीच रेखा होइत अछि।” पायल अपन उदाहरणकेँ खेलक रोगक बराबर नहि ठहरौलीह; ओ केवल आशाक कठिन व्यवहार देखबैत छलीह।

बेंगलुरुक एक लघु उद्योग-गोष्ठीमे मेधा आ तारिक हुनकर नब खेलक परीक्षण देखाबय गेलाह। दर्शकमे एक वित्तदाता पुछलक, “अहाँ सभ खेलक भीतर मुद्रा-जकाँ चमकनिहार अंक राखने छी; ग्राहक एकरा असली रूपैयामे बदलि सकैत छथि?” मेधा एक साफ उत्तर देलीह —“नहि। ई केवल सीखबाक स्तरक अंक अछि, खरीदि कऽ लाभ पाबयवला सिक्का नहि। हमर शुल्क साफ घोषित अछि; ई दाँव नहि।” वितरक कहलक, “तखन आमदनी सीमित रहत।” तारिक मुस्कुरौलक। “सीमित आयक उद्योग सेहो उद्योग अछि। हरेक विद्यार्थीकेँ जीतबाक लालच देबय सँ बेसी हमर इच्छा अछि जे ओ नदीक एक पुल समझि घर जाए।” पाछू बैसल चित्रकार लिसा आओ पहिल बेर अपन चित्रक नाम बजैत सुनलक—‘डूबैत पुलक हिसाब’।

रामौतारक परिवारमे सन् २०२५ क पहिल अर्धवार्षिक हिसाब बनल तँ तेइस दिनक कर्ज चुकायब बाकी छल। अमित दोसर वितरण-काज पकड़ने छल, मुदा रातिक समय ओकर फोन पाछू फेर बजैत छल। चन्दा मोबाइलकेँ अपन हाथमे राखि बन्द नहि करौलीह। “फोन नष्ट करब तँ काजक पता, बैंकक प्रमाण आ बहिनक विद्यालयक सन्देश सेहो नष्ट होएत,” ओ कहलीह। परिवार सहमति देलक जे अमित अपन जमा-सीमा लिखित राखत, खेलक भुगतान सँ अलग बैंक-सूचना चालू करत आ सहायताक लेल विश्वसनीय परामर्श लैत रहत। ओहि राति अमितक सपना एकटा स्क्रीन नहि छल; सपना छल जे बिन्दियाक विद्यालय-शुल्कक पावती फेर अलमारीमे पहिनुक स्थान पर रखल जाए।

आठ अगस्तक आसपास दिल्लीमे उमस एतेक घन छल जे साँझक चौक पर ठाढ़ रिक्शाचालकक पीठसँ पसीना टपकैत छल। संसदक आगूक समाचारक प्रतीक्षा करैत पत्रकारसभक बीच नूर एक बुजुर्ग शिक्षकसँ भेटलीह। शिक्षक अपन पोताक दू मोबाइल बिल देखाबय चाहैत छलाह। नूर कहलीह, “हम अहाँक निजी बिल सार्वजनिक नहि करब; पहिने बुझू जे अहाँ समाचारमे की कहय चाहैत छी।” शिक्षक उत्तर देलनि, “जतय लाखों रुपैयाक बहस चलैत अछि, ओतय हमर पोताक पाँच हजार छोट लगत। मुदा ओ पाँच हजारक कारण ओ विद्यालयक छमाही शुल्क नहि भरि सकल।” नूर शिक्षकक स्वर रिकॉर्ड करबाक अनुमति

पुछलीह, फेर हुनकर नाम छपायब आवश्यक अछि कि नहि से अलग पूछलीह। पत्रकारिता हुनका लेल ककरो दुखकेँ प्रमाण-पत्र बनायबाक अधिकार नहि छल।

२० अगस्तकेँ लोकसभामे ऑनलाइन गेमिंग सम्बन्धी विधेयक प्रस्तुत आ पारित भेल। अगिला दिन राज्यसभाक स्वीकृति आयल, आ २२ अगस्तकेँ राष्ट्रपतिक अनुमोदनक बाद ओ अधिनियम बनल। समाचार चैनलसभ एकसाथ कतेको शब्द प्रयोग करय लगल—प्रतिबन्ध, अनुमति, ई-क्रीड़ा, उद्योग, युवा, हानि। नूर अपन सम्पादकीय मेजपर चारि अलग पंक्ति लिखलीह—‘धन लगाकय पुरस्कारक अपेक्षावला ऑनलाइन खेल’, ‘दाँव रहित सामाजिक खेल’, ‘नियत शर्तवाली ई-क्रीड़ा’, ‘अधिनियमक प्रवर्तन-तिथि’। अन्तिम पंक्ति आगाँ ओ खाली स्थान छोड़लीह। किएक तँ अधिनियमक धारा १(३) सरकारी अधिसूचनासँ लागू होयबाक तिथि निर्धारित करबाक व्यवस्था करैत छल, आ अगस्त २०२५ मे एहन तिथि घोषित नहि भेल छल। खाली स्थान ओ जानि-बूझि छोड़ने छलीह।

साँझमे मेधाक कार्यालयमे एक कर्मचारी आँखिमे चिन्ता लऽ आयल। “हमर माय टीवीपर सुनलीह जे ऑनलाइन खेल बन्द भऽ गेल, तखन कहलीह—तोहर नौकरी सेहो बन्द। की हम सब काल्हि सँ कार्यालय नहिं आएब?” मेधा हुनका काँचक गिलासमे पानि देलीह। “हमर कामक प्रकृति तँ काल्हिहु ओही अछि,” ओ उत्तर देलीह, “मुदा बाजारक भ्रम सँ अनुबन्ध प्रभावित भऽ सकैत अछि। हम ग्राहकेँ लिखित रूपेँ नियम समझाएब। जँ भविष्यक लागू नियमक आवश्यकता बदलत तँ बदलाव करब। एखन ककरो वेतन रोकी देब ताहि लेल कानूनक भ्रम बहाना नहि बनत।” कर्मचारीक नाम वीणा थापा छल। ओ पुछलीह, “अहाँ सभक कारोबारमे दाँव नहि छैक तँ एतेक भय किएक?” मेधा उत्तर देलीह, “किएक तँ भय सेहो एकटा बाजार अछि, आ कखनो-कखनो ओ तथ्य सँ तेज दौड़ैत अछि।”

ओहि साँझ दरभंगामे रामौतारक घरक पुरान रेडियोपर कानूनक चर्चा चलि रहल छल। एक वक्ता कहैत छल जे सरकार युवाकेँ बरबाद करयवाला उद्योग रोकि देलक, दोसर कहैत छल जे लाखों रोजगार संकटमे अछि। चन्दा बेटासँ पुछलीह, “नब कानून बनल, तखन हमर पुरान रुपैया घुरि आएत?” अमित नीचाँ तकि उत्तर देलक, “नहि, माय। हमरा बुझायल जे ई कानून बनल अछि, मुदा लागू होयबाक दिन सरकारी सूचना सँ निश्चित होएत। आ जे रुपैया पहिनहि

गेल, ओकरा लेल लेनदेनक अलग दावाक रास्ता खोजय पड़त।” चन्दा पुछलीह, “आ तों आज खेललें?” “नहि।” “काल्हि?” अमित एक क्षण चुप रहल। “एक बेर खेलबाक मन भेल, मुदा बैंक पावती देखिकय फोन रखि देलहुँ।” चन्दा अपन सिलाइक काज फेर उठा लेलीह। ओ जानैत छलीह जे आदमीक सुधारक दिनक ऊपर कानूनक मुहर नहि लगैत।

रेवती झा दिल्लीमे एक विधिक परिचर्चासँ निकलैत छलीह। पत्रकारसभ हुनका प्रश्न करैत छलीह—“खेलमे कौशल हो तँ प्रतिबन्ध न्यायसङ्गत?” रेवती कहलीह, “संविधानमे व्यवसाय करबाक स्वतन्त्रताक अधिकार अछि, मुदा लोकहितमे उपयुक्त सीमाक प्रश्न सेहो होइत अछि। कौशलक उपस्थिति, ग्राहकक जमा, पुरस्कारक आशा, सामाजिक हानि, राज्यक नियामक क्षमता—सभ अलग तथ्य छथि। अन्तिम संवैधानिक निर्णय न्यायालय देत। एखन अधिनियम पारित भेल अछि, ओकर प्रवर्तनक तिथि आ चुनौतीक स्थिति अलग जाँचू।” एक पत्रकार तुरन्त शीर्षक बना लेलक—“वकील कहैत छथि, प्रतिबन्ध गैरकानूनी।” रेवती ओहि रिपोर्टक मसौदा देखिकय सम्पादककेँ विनम्र सुधार पठौलीह—“हम कानूनक संवैधानिक वैधतापर निष्कर्ष नहि देने छी।” नूर एहि सुधारकेँ अगिला समाचारमे प्रमुख स्थान देलीह।

रिद्धि विश्वविद्यालयक बहीक बीच एतेक डूबल छलीह जे दिल्लीक टीवी बहस हुनका दुर सँ अबैत आवाज जकाँ लगैत छल। मुदा एक पन्नापर ‘प्रशिक्षण शुल्क’ आ ‘प्रतियोगिता योगदान’ दू अलग राशि भेटल। विश्वविद्यालयक युवा-तकनीकी महोत्सवमे ई-क्रीड़ाक एक प्रदर्शन होयबाक प्रस्ताव छल; आयोजनक लागि एक कम्पनी आगाँ आयल छल। वित्त-शाखाक विनोद सुथार कहलक, “महोत्सवक प्रवेश-शुल्क वैध होएत कि नहि, विश्वविद्यालयक नियमक आधारपर देखब। ककरो खेलमे रुपैया दाँवपर लगैत हो तँ अलग प्रश्न।” रिद्धि पुछलीह, “आ आयोजक कम्पनीक देल प्रायोजन?” विनोद उत्तर देलक, “प्रायोजन लेखामे आय भऽ सकैत अछि, मुदा ओकर विनिमयमे संस्थाकेँ विद्यार्थी-सूचना देबाक छूट स्वतः नहि भेटैत। अनुबन्ध देखबाक चाही।”

ओहि दिन मेधा मरुधर विश्वविद्यालयमे डिजिटल शिक्षण आ खेलक विषयपर बोलय पहुँचलि। विद्यार्थीसभक बीच विवेक मेघवाल आ मनस्वी बैसल छलाह; पायल अन्तिम पाँतिमे अपन कापी खोलि रखने छलीह। मेधा पर्दापर अपन पुल-बनायब खेल चलौलीह। ओकर भीतर

छोट धारक पानि बढ़ैत छल; विद्यार्थीसभकेँ सीमित लकड़ी आ डोरीसँ पुल बनाबय पड़ैत छल। जखन एक टोली हारि गेल, पर्दापर ‘अगिला बेर रूपैया जमा करू’ नहि आयल; ओकर बदला देखायल—“किनाराक माटिक बल फेर नापू।” पायल हँसि पड़लीह। “ई बात तँ हमर सांख्यिकी शिक्षक कहैत छथि,” ओ कहलीह। मनस्वी पुछलीह, “जँ एहन खेल बच्चाक पठनमे सहायक अछि तँ नियमनक भय ओकरा किएक छुओत?” मेधा उत्तर देलीह, “भयकेँ असत्य कहिकय नहि हटाओल जा सकैत; वर्गीकरणक स्पष्टता आ ग्राहकक विश्वास चाही।”

कार्यक्रमक बाद मुकुल मेधाकेँ अपन फोन देखौलक। “ई सन्देश कहैत अछि—महोत्सवक अधिकृत चयन, अभी तीन हजार भेजू आ पच्चीस हजारक पुरस्कार निश्चित,” ओ पुछलक, “की ई अहाँक आयोजनसँ जुड़ल?” मेधा नाम देखलीह, फेर अपन कम्पनीक आधिकारिक वेबसाइट खोललीह। “नहि। हमर खेलमे कोनो निश्चित जीतक वचन नहि, आ आयोजनक शुल्क आयोजक प्रकाशित सूचीमे रहत। ई सन्देश हमर अधिकारिक नहि।” मुकुल अपन पुरान सात हजार पाँच सयक शिकायतक कापी निकाललक। “फेर एक बेर नाम बदलि कियो विश्वास माँगैत अछि,” ओ कहलक। मनस्वी तुरन्त समाचार देबाक विचार कएलीह, मुदा रिद्धि रोकलीह—“प्रेषकक पहचान आ विद्यार्थीकेँ पहुँचल वास्तविक सन्देशक मूल सुरक्षित करू; अनुमानक नाम सार्वजनिक नहि करू।” मुकुल अनुभवसँ एहि सावधानीक मोल बुझैत छल।

विश्वविद्यालयक अनुशासन-कक्ष एहि सन्देशक कारण छोट बैठक बोलौलक। अध्यक्ष उमा राठौड़ छलीह। एक सदस्य कहलक, “सभ खेलक प्रचार बन्द करि दी।” मेधा अपन प्रस्तुति फेर खोललीह। “जँ अहाँ हमरा बच्चासभक पठन-प्रयोग सेहो बन्द करएब तँ जकरा बचएबाक हेतु नियमनक चर्चा भेल, ओ बच्चा अपन उपयोगी साधन गमाओत,” ओ कहलीह। उमा समाधान देलीह—“आधिकारिक आयोजनक शर्त, आयोजनकर्ता, सम्पर्क-सूचना आ शुल्क-प्रकृति लिखित सार्वजनिक हो; बाहरी प्रचार स्पष्ट चिह्नित हो; शिकायतक उपाय बनाओल जाए।” आदेशमे ककरो आपराधिक दोष निर्धारण नहि भेल। रिद्धिक आग्रहपर विद्यार्थी-डेटाक उपयोगक सीमा अलग लिखल गेल। बन्द कोठरीक पुरान अनुभव प्रशासनकेँ सिखौने छल जे खुलल कार्यक्रमक सेहो अदृश्य दरवज्जा होइत अछि।

रामौतारक घरमे कर्जक समय आयल। उधारदाता चन्दाक सिलाइक मशीनक फोटो पठाकय लिखलक—“रुपैया नहि देब तँ मशीन लऽ जाएब।” चन्दा फोनक प्रकाशमे अपन हाथ देखलीह, जतय महीन धागाक निशान आ सुइक छोट घाव छल। ओ रामौतारकेँ कहलीह, “मशीन हम रोज चलबैत छी; ई कोनो खेलक जीतक सिक्का नहि।” रामौतार नीलकान्त लग गेल। नीलकान्त कहला, “कर्जक मूल, लिखित शर्त, देल भुगतान आ धमकीक सन्देश सुरक्षित करू। जरुरी सहायता लेल स्थानीय विधिक सेवा प्राधिकरणक कार्यालयसँ संपर्क करब। मुदा अमितक स्वयं निर्णयक उत्तरदायित्व परिवारकेँ बुझबाक पड़त।” रामौतार पुछलक, “कानून हमरा पाछू सँ बचाओत?” नीलकान्त कहला, “कानून न्याय माँगबाक बाट होइत अछि, अतीतक जादुई उलटफेर नहि।”

चन्दा अपन सुइक मशीनपर बैसि बिन्दियाक पुरान विद्यालय-पोशाक फेर सिला कऽ तैयार कएलीह। बिन्दिया पुछलीह, “माए, हम किताबक लेल किछु रूपैया विद्यालयसँ सहायता माँगि सकैत छी?” चन्दा उत्तर देलीह, “पुछिह, मुदा अपन बाप-भाइक लाज बताकय नहि। किताब चाही, एतबा कहिह।” बच्ची कहलनि, “हम मास्टरनीसँ कहब जे हमर घरमे कर्जा अछि; गुप्त राखू तँ सहयोगक अधिकार की छैक से बुझताह?” चन्दा ओकरा माथपर हाथ रखलीह। “अपन गरिमाक रक्षा करैत सत्य कहब सीखिह,” ओ कहलीह। बेटीकेँ ई शिक्षा देब समय हुनका भीतरक कड़वाहट थोड़े कम भेल। घरक आर्थिक गणना एखन कठिन छल, मुदा ओकर भीतर झूठ जोड़ल जाए तखन आर कठिन भऽ जाएत, से ओ बुझि गेल छलीह।

सितम्बरक पहिल सप्ताहमे दिल्लीमे ऑनलाइन गेमिंग अधिनियमक संवैधानिक वैधताकेँ चुनौती देल याचिकासभक समाचार आयल। किछु याचिकाक हस्तान्तरण सम्बन्धी विषय सर्वोच्च न्यायालय धरि पहुँचल। रेवती अपन कनिष्ठ सहकर्मी अरुणिमा लग कागज राखि कहलीह, “ई राष्ट्रीय संवैधानिक वाद अछि। हमर मुवक्किलक नाम ककरो आन राष्ट्रीय याचिकाक पक्षकारमे नहि जोड़बाक। खबरमे जे सवाल सामने अछि—विधायी क्षमता, व्यवसायिक स्वतन्त्रता, सार्वजनिक स्वास्थ्य, नियमनक अनुपात—तकर कानूनी विमर्श बुझबाक अछि।” अरुणिमा पुछलीह, “कानून प्रभावी नहि भेल अछि, तैयो संवैधानिक चुनौती

सम्भव?” रेवती कहलनि, “अधिनियमक अस्तित्व आ ओकर लागू होयबाक तिथि भिन्न बात। चुनौतीक ग्राह्यता आ अन्तरिम राहतक प्रश्न न्यायालय अपन प्रक्रिया सँ तय करत।”

उद्योग-समूहक खुला परिचर्चामे एक पुरान कम्पनीक प्रतिनिधि विक्रम राव कानाफूसी करैत छलाह—“सरकार सभ रस्ता बन्द कए देत।” दोसर प्रतिनिधि कौशल-आधारित खेलक रक्षाक बात करैत छल। मेधा सुनि कहलीह, ‘हमर मत ई अछि जे कम्पनीक कर्मचारीक वेतन आ ग्राहकक हानि दुनूक गिनती हो। कतबा लोक धरि ई सेवा पहुँचल, कितबा लोक धन गमौलक, कतेक शिकायतक निस्तार भेल—ई तथ्य बिना न ‘पूर्ण स्वतन्त्रता’ के अर्थ स्पष्ट अछि, न ‘पूर्ण संरक्षण’ क।’ विक्रम तीक्ष्ण स्वरमे कहला, “तखन अहाँ कारोबार बुझैत नहि छी।” मेधा उत्तर देलीह, “हम कारोबारक वेतन बही रोज देखैत छी। अहाँ ग्राहकक पूरा हानिक बही सार्वजनिक करबाक प्रश्न टारि रहल छी।” सभा क्षणभरि मौन रहि गेल।

नूर एहि बहसकेँ सनसनी बना सकैत छलीह। ‘उद्योग प्रतिनिधि सच छुपबैत’ शीर्षक पाठक खींचित। मुदा ओ लिखलीह जे खुला बैठकमे पारदर्शिता सम्बन्धी मतभेद छल, आ उपलब्ध आँकड़ाक स्रोत आ सीमा स्पष्ट नहि कएल गेल। विक्रमक कम्पनीक विरुद्ध आपराधिक आरोप नहि लिखल गेल। एक समाचारक तलमे ओ रामौतारक परिवारक अनुमतिसँ अनाम अनुभव जोड़लीह—कर्ज, मोबाइलपर हानिक पुनरावृत्ति आ परामर्शक आवश्यकता। नूर अपन लेख समाप्त करैत लिखलीह जे उपभोक्ताक जोखिमक समाधान विधिक निषेध मात्र नहि, सत्यनिष्ठ सूचना, वित्तीय शिक्षा आ वास्तविक शिकायत-निवारणक प्रश्न सेहो अछि। सम्पादक अनिरुद्ध कहलनि, “एहि मे पक्ष चुनल नहि देखाइत।” नूर उत्तर देलीह, “पीड़ितक पक्ष सुनब आ हर संशयकेँ अपराध कहब दू अलग बात अछि।”

दिल्लीक उपनगरमे मेधाक कार्यालयक भाड़ाक चेक देबाक दिन आयल। वीणा थापा बैंक-खाताक रकम जाँचि कहलीह, “दू ग्राहक अपन अनुबन्ध रोकि देलक। एखन हम सभक तीन मासक वेतनक व्यवस्था?” मेधा कागज खोललीह। “एक बड़ा ग्राहकक भुगतान देरीसँ अछि; दोसरक अनुबन्ध बदलब। हम निवेशककेँ लिखित विवरण देब। कोनो कर्मचारीक वेतनक वचन बदलबाक भए तकर कारण पहिने बताओल जाएत।” तारिक कहलनि, “बाजारक असुरक्षा सँ डरक कम्पनी सेहो बनि सकैत अछि—जे चेतावनीक नामपर ककरो खेलक समीक्षा बिना

सौंपि देत।” मेधा कहलीह, “भयक व्यापारक बदला भरोसाक पाठ बनाबी। अहाँ पाठ्य-खेलक मैथिली संस्करण पूरा करू।” वीणाक मुखपर हलुक मुस्कान आयल। कोनो अदालती आदेश नहि, एक पारदर्शी कार्यालयी हिसाब हुनका एहि दिन अधिक काम आयल।

जोधपुरक विश्वविद्यालयमे एक विद्यार्थी मोहन बैरवा लिखित शिकायत देलक। ओकरा छात्रवृत्ति सहायताक नामपर ‘प्रोत्साहन-क्रीड़ा’ खाता खोलबाक लेल कहल गेल, जाहिमे वैयक्तिक पहचानक प्रति आ बैंकक एकबारगी गुप्त अङ्क माँगल गेल। मोहन ओ अङ्क नहि देलक; तथापि डर ओकरा लागल जे ओकर छात्रवृत्ति रुकि जाएत। उमा राठौड़ स्पष्ट लिखलीह—“विश्वविद्यालयक छात्रवृत्ति लेल एहन बाहरी खेल-खाता आवश्यक नहि। छात्र परामर्श लए सकैत छथि; व्यक्तिगत प्रमाण अनधिकृत पक्षकेँ नहि देल जाए।” रिद्धि कहलीह, “ई सन्देश पुरान रोजगार-शुल्क शिकायतसँ स्वरमे मिलैत अछि, मुदा प्रेषकक स्रोत अलग जाँचबाक अछि।” मोहनक नाम सार्वजनिक रजिस्टरमे नहि राखल गेल।

मुकुल आ मोहनक भेट पुस्तकालयक बाहर भेल। मुकुल कहलक, “हम सात हजार पाँच सय गमा चुकल छी। तोरा रुपैया बचि गेल, एतबा सँ कथा समाप्त?” मोहन कहलक, “रुपैया बचि गेल, मुदा दू राति नींद नहि आयल। हमरा लागल जे भविष्यक छात्रवृत्ति हाथसँ गेल।” मुकुल हँसल नहि। “डरक सेहो हिसाब होइत अछि,” ओ कहलक, “तकर पावती नहि भेटैत।” मनस्वी दुनूकेँ विश्वविद्यालयक लिखित छात्र-सुरक्षा सूचनाक प्रति देलीह। “ई सूचना सर्वविद्यार्थीकेँ जाउ,” ओ कहलीह, “तखन कियो अपन भय लुकाकय गलत शुल्क नहि देत।” मुकुल अपन पुरान शिकायतक प्रतिलिपि फेर देखलक। ओ बुझल जे व्यक्तिगत ठगीक जाँच जखन अधूरा रहै, तखनो संस्थागत चेतावनी समयपर देल जा सकैत अछि।

सन्ध्याक रौद कम भेलापर रेवती अपन पिता शिवनारायण झाकेँ फोन कएलीह। ओ दरभंगाक बरामदामे बैसल रहथि। रेवती पुछलीह, “अहाँक पहिल सट्टा-मुकदमाक समय जप्त बहीमे की सभसँ बेसी प्रश्न उठैत छल?” शिवनारायण कहला, “एक बहीक नाम सँ ककरो हाथक काज सिद्ध होइत अछि कि नहि; जप्तीक समय के उपस्थित छल; जकर नाम लिखल से कब लिखल; आ मृत व्यक्तिक नामक अर्थ।” रेवती कहलीह, “आब इलेक्ट्रॉनिक खेलमे सेहो खाता, प्रयोगकर्ता, सेवा-दाता आ वास्तविक लाभार्थी अलग होएत।” वृद्ध अधिवक्ता धीरे

सँ हँसला। “माध्यम बदलल, प्रमाणक मर्यादा नहि,” ओ उत्तर देलनि। “मुदा एतय ईहो ध्यान राखिह जे एकटा कर्जदारक आँसु कानूनक धारा नहि, आ ओ आँसु निरर्थक सेहो नहि।” अक्टूबरक आरम्भमे दरभंगाक एक बैंक शाखाक बाहर दुर्गापूजाक सजावटक बाँस गाड़ल जा रहल छल। अमित अपन खाता-विवरण लऽ बैंकक सेवा-कक्ष पहुँचल। ओकरा दू भुगतानक स्थितिपर शंका छल—बैंकमे रकम घटल छल, मुदा खेलक पर्दापर ताहि रकमसँ कोनो खेप पूरा भेल देखाइत नहि छल। शाखाक कर्मचारी शैलजा ठाकुर कहलीह, “अहाँक खातासँ धन निकलल, एतबा एखन देखाइत अछि; ओकर आगूक भुगतान-संग्रहक स्थिति आ व्यापारीक स्वीकृति अलग अभिलेखक बात। जँ अहाँ स्वयं अनुमति देने छी तँ ओकरा अनधिकृत लेनदेन कहब सही नहि। मुदा जे दू प्रविष्टि विवादित अछि तकर लिखित शिकायत करू, सन्दर्भ क्रमाङ्क राखू।” अमित पुछलक, “ताहि सँ पैसा निश्चित घुरत?” शैलजा उत्तर देलीह, “निश्चित कहब बेइमानी होएत। जाँच, लागू शर्त आ वास्तविक कारणक आधारपर उत्तर भेटत।”

शैलजाक टेबुलपर बैठल वृद्ध महिला अपन पेंशनक एटीएम अटकलासँ परेशान छलीह। अमित पहिने हुनका सहायता दिलबौलनि, फेर अपन फॉर्म भरलक। जखन ओ शाखासँ बाहर निकलल तँ सड़कक आर-पार कुशलतासँ दौड़ैत युवकसभ देखाइ देलक। कियो पूजा-पण्डालक बिजलीक तार लऽ जा रहल छल, कियो मैदानमे भलिबॉलक जाल बान्हि रहल छल। अमितकेँ अचानक अपन विद्यालयक खेल-दिन याद आयल, जखन जीतबाक पुरस्कार एक पातर किताब छल। ओहि दिन ओ हारेबापर हँसि सकैत छल। मोबाइलक जुआमे ओ हारकेँ ऋणक अवसर बना देने छल। दुनू खेलक अन्तर ओकरा एहि दृश्यसँ बेसी स्पष्ट कखनहु नहि भेल छल।

नीलकान्त अपन दुकानपर एक पुरान साहूकारसँ बात करैत छलाह। साहूकार कहैत छल, “रामौतारक बेटा जँ स्वेच्छासँ रुपैया लगा देलक तँ ओकर पिताक शिकायतक की अर्थ?” नीलकान्त उत्तर देलनि, “स्वेच्छासँ कएल गलत निर्णयक जिम्मेदारी अछि, मुदा भ्रामक वचन, असत्य भुगतान-पञ्जी अथवा धमकीक शिकायत अलग। सबला एकहि वाक्यमे नहि निपटाबी।” साहूकार हँसला—“अहाँ तऽ सभकेँ वकील बना देब।” नीलकान्त मुस्कुरायलाह।

“सभकेँ वकील बनाउ नहि चाहैत छी, बस चाहैत छी जे जे अपन रकम गमौने अछि से कागज पढ़ि सकय।” हुनकर दुकानमे मसालाक बोरा एखन आधा खाली छल, मुदा पट्टीपर लिखल वजनक हिसाब स्पष्ट छल। जिनगीक बड़ हिसाब लेल ओ एही छोट स्पष्टताक उपयोग करैत छलाह।

रामौतारक घरमे एक दुपहर उधारदाता उपस्थित भेल। ओ मशीन नहि लऽ गेल, मुदा उधारक कागजपर एक नव रकम लिखि देबय चाहैत छल। चन्दा कहलीह, “हम मूल रकमक हिसाब देब; जे ब्याज अहाँ कहैत छी ओकर लिखित शर्त देखाउ।” उधारदाता खिसिया कऽ कहलनि, “तोरा कानून पढनाइ शुरू भऽ गेल?” चन्दा बिना आँखि झुकौने उत्तर देलीह, “नहि, पहिने हम अंक पढ़ैत छलहुँ; एखन अपन सिलाइकक मोल पढ़ैत छी।” तकर बाद ओ रामौतारकेँ बगलमे करि समझौतेक लिखित प्रस्ताव बनौलीह—कतेक किस्त, कतेक तिथि, विवादित ब्याजक पृथक उल्लेख। उधारदाता ओहि दिन सहमति नहि देलक, मुदा अपन हाथसँ पर्ची बदलि चलि जेबाक अवसर सेहो नहि भेटल। चन्दाकेँ बुझायल जे न्याय मांगब अनेक बेर पहिले लिखित हिसाब मांगबसँ शुरू होइत अछि।

दिल्लीमे मेधा आ तारिकक कार्यालयमे एहि बीच एक नव संकट उठल। एक कर्मचारी संजय बिष्टक पुरान नियोक्ता अपन वेब-साइटपर लिखि देलक जे ‘सभ डिजिटल खेल अनधिकृत’ छथि। ग्राहकसभ मेधाक आयोजनक अग्रिम शुल्क घुरएबाक मांग करय लगल। मेधा सभकेँ एके उत्तर नहि पठौलीह। जे आयोजन रद्द भेल ओकर घोषित शर्त अनुसार वापसी जाँचल गेल; जे कार्यशाला चलल ओहि लेल प्रमाणपत्र देल गेल; जे कार्यक्रम आगाँ होयबाक छल तकर ग्राहककेँ समय पर निर्णयक अवसर देल गेल। वीणा थापाकेँ ई कागजक काम भारी लगल। मेधा कहलीह, “वित्तीय भरोसा खेलक नियम-समान अछि—हारेनिहार नहि, भुगतान करनिहार सभकेँ बुझल रहबाक चाही।” कर्मचारीसभ देर राति धरि काज कएलनि, मुदा एहि बेर ओकर बादल रातिक परिणाम ककरो भ्रम नहि, एक-एक ग्राहकक साफ उत्तर छल।

उद्योगक किछु संगठन सर्वोच्च न्यायालय समक्ष उठल संवैधानिक प्रश्नपर सार्वजनिक परिचर्चा करय लगल। मेधा अपन टोलीक लेल लिखित टिप्पणी बनौलीह। ओकर प्रथम पाँतिमे छल—“दाँव रहित शैक्षणिक, मनोरञ्जनात्मक आ मान्य प्रतियोगितामूलक खेलक पहचान

स्पष्ट हो।” दोसर पाँतिमे—“धनाधारित सेवाक प्रभाव आ ग्राहकक हानिक विश्वसनीय आँकड़ा प्रकाशित हो।” तेसरमे—“नियमनमे उचित संक्रमण-अवधि आ कर्मचारीक आजीविकाक प्रश्न सुन्नल जाउ।” चौथमे—“निषेध लागू होएबाक तिथिसँ पहिने आपराधिक दण्डक कल्पना नहि कएल जाए।” तारिक ई चारि पाँति पढ़ि पुछलक, “अहाँ ककर पक्षमे छी?” मेधा उत्तर देलीह, “हम ओहि भविष्यक पक्षमे छी जतय बच्चा बिना भ्रम खेलि सकय, परिवार बिना बर्बादी बैंकक खाता खोलि सकय, आ कौशलवला युवा अपन जीविका चला सकय।”

रिद्धि मरुधरक उपकुलसचिव लग एक अनुमति-पत्र लेल गेलीह। बाहरी सेवा-कम्पनीसँ सम्बन्धित भुगतान-पञ्जीक किछु नकल शोधक निष्पक्ष नमूनाक लेल चाहैत छलीह। उपकुलसचिव कहलनि, “विद्यार्थीक निजी बैंक नम्बर देब सम्भव नहि। विश्वविद्यालयक सार्वजनिक मदक समेकित विवरण आ सम्बन्धित वित्तीय नियमक नकल उपलब्ध करा सकैत छी।” रिद्धि एही उत्तर पर सहमत भेलीह। “हमरा एखन ककरो निजी खाता नहि चाही,” ओ कहलीह, “कतेक मद स्वीकृत, कतेक निर्देशित आ कतेक बैंकसँ निष्पादित—ई श्रेणी अलग देखबाक अछि।” उपकुलसचिव आश्चर्य सँ पुछलनि, “तखन पाँच-सात विवादित नामक अनुमान नहि करब?” रिद्धि कहलीह, “अनुमानक आधारपर नाम लिखि देब तँ एक निर्दोष विद्यार्थीक भविष्य बिगड़ि सकैत अछि।”

विनोद सुथार वित्त-शाखामे रिद्धिक सन्दर्भ लेल पुरान बीस प्रविष्टिक पन्ना खोललक। चौदह बैंक-निष्पादनक पुष्टि उपलब्ध छल; शेष छः लेल बैंकसँ तिथि-आधारित उत्तर मांगल गेल छल। ओहि बीच लेखा-कम्पनीक एक उत्तर आयल—चारि निर्देश अगिला मासमे समायोजित, एक निर्देश निरस्त, आ एक प्रविष्टिक नम्बर अधूरा। विनोद अपन वरिष्ठ अधिकारीकेँ कहलक, “एखन एकक कारण अनिर्णीत अछि। मुदा ई कहबो सही नहि जे छः टा धन गायब अछि।” अधिकारी उत्तर देलनि, “जतबा स्पष्ट भेल ततबा लिखू। एक बाँकी रहबाक कारण सभटा निर्दोष साबित नहि, आ पहिलक शंका सभटा गलत साबित नहि।” विनोद फाइलमे नव दिनाङ्क जोड़कय अगिला लिखित पुष्टिक प्रतीक्षा करय लगल।

सन्ध्याक समय छात्रावासक गलियारामे मुकुलक भाई रमेश मीणा भेटबाक आएल। रमेश अपन खाता खोलि देखौलक जे मुकुलक रोजगार-शुल्क लेल जे रुपैया ओ देने छल, तकर

किस्तक अन्तिम समय नजदीक अछि। मुकुल कहलक, “अहाँ हमरा पढ़ाइ छोड़ि पैसा कमाबय नहि कहब?” रमेश बहुत बेर चुप रहल। “जे रकम गेल ओकर दुख हमरा अछि,” ओ कहलनि, “मुदा तोहर पढ़ाइ टूटि गेल तँ नुकसान दू बेर होयत। पढ़ाइ चलाब, संगहि अपन शिकायतक लिखित स्थिति पूछ।” मुकुल अपन कापीमे एक प्रश्न लिखलक—“व्यक्तिगत नुकसानक कारण परिवारक अगिला अवसर बन्द करब आवश्यक अछि?” ओहि प्रश्नक उत्तर नहि छल, मुदा भाइ आँखिसँ ओकरा बेर-बेर आश्वासन दैत रहलाह।

आन तरफ नूरक कार्यालयमे एक गुमनाम लिफाफा आयल। भीतर किछु अनुदान-पत्रक फोटो आ एक भड़कीला कागज छल—“मरुधरक खेल-प्रायोजनमे लाखोंक चोरी।” नूर फोटो देखलीह तँ सरकारी मुहरक आधा हिस्सा कटले छल, तिथि पढ़ायल नहि। अनिरुद्ध कहलनि, “ई छापब तँ तेज चर्चा होएत।” नूर कागजमे लिखल ‘लाखों’ शब्दक आगू प्रश्नचिह्न लगौलीह। “एहि मे दस्तावेजक मूल, लेनदेनक बैंक पुष्टिक सम्बन्ध आ जकरा दोषी कहल गेल ओकर पक्ष केओ नहि देलक। हम पहिने स्रोत खोजब,” ओ कहलीह। रिद्धि जखन दूरभाषपर उत्तर देलीह, ओ केवल एतबा कहलीह जे विश्वविद्यालयक अधिकृत अभिलेख-परीक्षण जारी अछि; ककरो व्यक्तिगत बैंक विवरणक चोरीक फोटो हुनका लग नहि अछि। नूर ओहि कागजकेँ समाचार नहि बनौलीह।

अक्टूबरक अन्तिम सप्ताहमे दरभंगाक पुस्तकालयमे नीलकान्तक पौत्री पीहू एक शैक्षणिक खेलक प्रदर्शन देखबाक गेलीह। प्रदर्शनक आयोजन शिक्षक अरुणकान्त झा करने छलाह। मेधाक कम्पनी डिजिटल माध्यमसँ जुड़ल छल। पीहूकेँ पानिक दू धार देखाकय पुछल गेल जे छोट बाँध कतय बनाओल जाउ। ओ अपन मायसँ सीखल बरखाक पानि-निकासक उपाय याद कएलक। फेर स्क्रीनपर चुनल दिशा बदलिएलाक बाद पानि गाँवक घर नोकसान नहि करैत आगाँ बढ़ल। रामौतार अपन बेटी बिन्दियाकेँ सेहो आनि देने छल। दूनू बच्ची जीतल बिनु हँसैत छल, किएक तँ प्रत्येक असफल प्रयासक बाद खेल प्रश्न पुछैत छल, रुपैया नहि। नीलकान्त दुआरि लग ठाढ़ कहला, “खेलक भीतर जे प्रश्न अछि, ओ देखि खेलक नाम राखू; जे जीतक लालच अछि, ओकर हिसाब अलग पूछू।”

प्रदर्शन समाप्त भेलापर अमित देर धरि पाछाँ ठाढ़ रहल। मेधाक संवाद पर्दापर चलि रहल छल। “एहि खेलमे हारि गेलाक बाद कियो फेर रुपैया देबाक आवश्यकता नहि,” ओ स्पष्ट कहलीह। अमित हँसल, मुदा हँसीमे आत्मग्लानि छल। बिन्दिया ओकर हाथ धरि कहलनि, “भैया, अहाँ हमरा सभकेँ गलतीक बाद बचबाक मार्ग सिखा सकैत छी।” अमित पुछलक, “हम कोना?” “अहाँ जतय फँसने छलहुँ तकर नाम बता सकैत छी; मुदा सभक सामने नहि, जे सुनय चाहय ओकरा।” अमित बहिनकेँ देखलक। पहिने ओ सोचैत छल जे नाम उघड़ल तँ अपमान होएत। एखन ओकरा बुझायल जे विवेकपूर्ण अनुभव बाँटलासँ कोनो नव युवक अपन पहिल जमा बचा सकैत अछि। ओ अपन कष्टकेँ उपदेशक बाजार नहि बनाबय चाहैत छल, मुदा सावधानीक मौन साहाय्य बनबय चाहैत छल।

नीलकान्त आ रामौतार पुस्तकालयसँ बाहर निकलला तँ वर्षाक बाद बाढ़ि उतरि गेलाक चिन्ह गलीक देवालपर छल। रामौतार कहलक, “नीलकान्त बाबू, हम बेटाकेँ फेर अपन घरक काजमे लगौने छी। ओकर कर्ज एखन बाकी अछि। मुदा ओ हमरा सँ आँखि नहि चुरबैत अछि।” नीलकान्त कहला, “हमर पुरान मुकदमाक समय अमरेश हमरा महीना धरि सीधा नहि देखैत छल। एक दिन ओ पुछलक—बाबूजी, अहाँ निर्दोष छी कि दोषी? हम कहने छलहुँ—जे सिद्ध भेल ताहि लेल उत्तरदायित्व स्वीकारब, जे नहि सिद्ध भेल ताहि लेल अपमान नहि सहब। एक वाक्यमे आदमीक सम्पूर्ण जीवनक अर्थ नहि समेटल जा सकैत।” रामौतार पहिल बेर नीलकान्तक नामक दर्द बुझलक। ओ हाथ जोड़ि चलि गेल।

नवम्बरक आरम्भमे मरुधरक विद्यार्थी-समूह एक खुला पत्र तैयार केलक। ओहिमे विश्वविद्यालयकेँ पूछल गेल जे बाहरी रोजगार-सेवा कम्पनीक संग छात्र-सूचना साझाकरणक लिखित सीमा की अछि, अधिकृत कार्यक्रमक शुल्क-सूची कतय प्रकाशित अछि, आ तृतीय पक्षक भ्रामक प्रचार रोकबाक औपचारिक व्यवस्था की बनल अछि। पत्रमे ककरो ‘ठग’ नहि कहल गेल। छात्रसभका प्रतिनिधि कुसुम बतौलीह जे ई प्रश्न प्रशासनिक उत्तरदायित्वक अछि। “जँ व्यक्तिगत ठगी भेल अछि तँ पुलिस अपन जाँच करत,” ओ कहलीह, “मुदा विद्यार्थीक सहमतिपत्र आ विश्वविद्यालयक प्रकाशित सूचना हम सभ अहिना सुधारबय चाहैत छी।” उमा राठौड़ लिखित पावती देलीह आ विभागवार उत्तरक समय-सारणी घोषित कएलीह।

एहि बैठकीमे एक अभिभावक अनाम पत्र देलनि। हुनकर बेटी पायल नहि, कोनो दोसर छात्रा छलीह, जे एखन अपन पढ़ाइ जारी रखय चाहैत छलीह। पत्रमे लिखल छल जे बाहरी वेबसाइट ओकरा ‘प्रतियोगिताक अनिवार्य पहचान-जाँच’ कहिकय बैंकक एकबारगी संकेत माँगने छल, आ अस्वीकार कएला पर छात्रवृत्ति बन्द करबाक धमकी देने छल। अभिभावक अपन बेटीकेँ सार्वजनिक विवादसँ बचाबय चाहैत छलाह। रिद्धि पत्रमे लिखल तिथि देखलीह; ओ विश्वविद्यालयक अधिकृत प्रतियोगिताक तिथि सँ मेल नहि खाइत छल। “ई सन्देश ककरा सँ आएल, से निर्धारण करब,” ओ कहलीह, “मुदा एखनहि छात्रा दोषी हो वा विश्वविद्यालय अपराधी, एहन निष्कर्ष नहि।” अधिकृत कर्मचारी पत्रक मूल लिफाफा आ पावती सुरक्षित रखलक।

रेवती झा ओहि सप्ताह एक पुरान दीवानी सुनबाई सँ लौटल छलीह। हुनका पटना सँ कोनो नव मुकदमाक सूचना नहि, बल्कि दरभंगाक शिवनारायणक स्वास्थ्य-सुधारक खबर भेटल। पिता फोनपर कहला, “तोरा लग बहुत कालसँ लोकक नाम आएल करैत अछि। कखनहुँ अपन नामक भी हिसाब रखिह।” रेवती हँसलीह। “हमर नामक?” “तोहर समय, तोहर नींद, तोहर खाइबाक तिथि। अधिकारक वकील जँ अपन शरीरक सुनबाई नहि करत तँ ओ कतेक दिन अधिकार बचाओत?” रेवती फोन राखलाक बाद घड़ी देखलीह। राति दस बजि रहल छल। ओ फाइल बन्द करि रसोइमे गेलीह। एहि छोट दृश्यक कोनो न्यायालयीन अभिलेख नहि बनल, मुदा ओकर आन्तरिक जीवनमे ई एक उपयोगी आदेश छल।

अगिला दिन हुनका कार्यालयमे एकटा सादा लिफाफा पहुँचल। ऊपर साफ अक्षरमे लिखल छल—“अधिवक्ता रेवती झा लेल; अभिभावकक निवेदन।” भीतर तीन पन्नाक पत्र छल। पहिल पन्नामे दरभंगाक रामौतार नटक परिवारक आर्थिक संकट आ अमितक डिजिटल खेलक जमा-वापसीक हिसाब लिखल छल। दोसर पन्नामे बिन्दियाक विद्यालयक शुल्क आ चन्दाक सिलाइक मशीनपर धमकीक उल्लेख छल। तेसर पन्नामे अभिभावकक एक प्रश्न—“जँ नब कानून बनल, मुदा एखन प्रभावी नहि भेल, तँ पुरान ग्राहकक विवाद कोन लागू कानून आ उपलब्ध उपायसँ जाँचल जाएत?”—नील स्याहीमे लिखल छल। रेवती एहि प्रश्नक अन्तमे

छोट रेखा खींचलीह। ओ बुझलीह जे पत्र कानूनक विरोध अथवा समर्थनक घोषणापत्र नहि; एक परिवारक तत्काल आवश्यकताक आवेदन अछि।

पत्रक संग एक छोट अलग कागज सेहो छल। ओ मरुधर विश्वविद्यालयक विद्यार्थी-अभिभावक समूहक हस्ताक्षरित निवेदन छल। हुनका पूछल गेल जे ‘मरुधर नियुक्ति-सुविधा’ नामसँ पठाओल शुल्क-सन्देश, छात्रक मोबाइल नम्बरक बाहरी उपयोग, रोजगार-परामर्शक अनुबन्ध आ खेल-प्रतियोगिताक अनधिकृत विज्ञापनक बीच संस्थागत सम्बन्ध अछि कि नहि। नव कागजक नीचाँ मुकुल मीणा आ मोहन बैरवाक शिकायत-सन्दर्भ लिखल छल; सभ नामक आगाँ रकम नहि छल, आ किछु अभिभावक निजी सूचनाक रक्षाक कारण नाम छपाबय मना केने छलाह। रेवती रिद्धिक पहिनुक वाक्य याद कएलीह—“अभिलेख बचल; अर्थ एखन निर्धारित नहि।” ओ लिफाफाक दू कागज अलग फोल्डरमे रखलीह। एक परिवारक धनहानि आ विश्वविद्यालयक सूचना-सम्बन्धी प्रश्नकेँ एक अपराध-प्रकरण बनाओल जाय, एहन कोनो प्रमाण नहि छल।

रेवती पहिले रामौतारकेँ फोन कएलीह। “अहाँक पत्र भेटल,” ओ कहलीह। रामौतार उतावलीसँ पुछलक, “कानून हमरा बचाओत?” रेवती उत्तर देलीह, “अहाँक प्रत्येक लेनदेन, कम्पनीक वचन, बैंकक विवरण आ उधारक शर्त अलग देखबाक पड़त। जे कानून २०२५ मे पारित भेल अछि, ओकर ताहि समयक प्रवर्तन-स्थिति सेहो देखब। हम एखन परिणामक वचन नहि देब, मुदा अभिलेख व्यवस्थित करबाक सूची पठा सकैत छी।” रामौतारक पाछाँ सुइक मशीनक घर्र-घर्र सुनाइत छल। चन्दा फोन नजदीक आबि कहलीह, “हमर मशीन बचि जाए, आ बेटा सच बोलय लागल अछि; एतबा सँ हमरा बहुत साहस भेटल।” रेवती हँसलीह। “एहि साहसक संग हम विधिक उत्तर खोजब,” ओ कहलीह।

तखन ओ रिद्धि विश्नोईकेँ फोन कएलीह। “मरुधरक अभिभावकसभ पत्र पठौने छथि,” रेवती कहलीह, “कोन कागज अधिकृत स्रोतसँ उपलब्ध अछि?” रिद्धि विवरण देलीह—छात्र-सेवाक घोषित निःशुल्क शर्त, बाहरी कम्पनीक अनुबन्ध, अस्पष्ट सहमतिक एक प्रारूप, बीसमे सँ उन्नैस भुगतान-निर्देशक स्थिति धीरे-धीरे स्पष्ट होयब, आ एक अधूरा प्रविष्टिक बैंक-पुष्टि शेष। “बैंकक खाता-सूचना हमरा निजी रूपेँ उपलब्ध नहि,” रिद्धि कहलीह, “आ हम

अनधिकृत ढङ्गसँ नहि लेब। जँ भविष्यक अनुसन्धानमे अनेक व्यक्ति जुड़े छथि तँ प्रत्येक खाताक वास्तविक भूमिका अलग जाँचबाक पड़त।” रेवती पुछलीह, “कोनो खेल-संस्थासँ सम्बन्ध सिद्ध?” रिद्धि कहलनि, “नहि। केवल किछु भ्रामक प्रचारक शब्दक समानता अछि। ओ सम्बन्धक प्रमाण नहि।”

जखन रिद्धिक फोन समाप्त भेल तँ रेवती अपन कानूनी सहायक शशिभूषणकेँ बोलौलीह। शशिभूषण पहिने सँ लिखने छल—“नव गेमिंग कानून अन्तर्गत तत्काल शिकायत”। रेवती ओ पाँति काटिकय कहलीह, “अगस्त २०२५ मे पारित अधिनियमक लागू होयबाक अधिसूचना ताहि समय नहि छल। जँ हम एहि आधारपर तत्काल आपराधिक दण्डक प्रार्थना लिखब तँ पीड़ितक वास्तविक समस्याकेँ गलत राह देखाएब। पहिने लेनदेनक अवधि, बैंकक विधिक शिकायत, अनधिकृत काटौतीक वास्तविक स्थिति, विज्ञापनक लिखित दाबी आ उधारदाताक व्यवहार देखू।” शशिभूषण पुछलक, “तखन विधेयकक बहसक कोनो उपयोग नहि?” रेवती कहलीह, “अछि—कानून बनबाक सार्वजनिक कारण समझबाक। मुदा बहस, पारित अधिनियम आ प्रभावी दण्ड अलग घटना छथि।” सहायक पहिल पन्ना फेर लिखलक।

सहर बानो, जे दरभंगाक बच्चासभ लेल एक छोट शिक्षण-कक्षा चलबैत छलीह, ओहि साँझ नूरकेँ एक पत्र पठौलीह। पत्रमे ओ प्रश्न कएने छलीह—“बच्चाकेँ हर डिजिटल खेलसँ दूर राखब उचित, कि हुनका भुगतानक वास्तविक अर्थ सिखाएब?” ओ अपन कक्षाक दृश्य लिखलीह। एक गरीब छात्र गणनाक खेलमे खूब तेज छल, मुदा घरमे मोबाइल नहि छल; दोसर छात्रक फोनमे धनाधारित खेलक विज्ञापन बारम्बार अबैत छल, मुदा ओ एखन धरि कोनो धन नहि लगौने छल। सहर दूनू बच्चाकेँ एकहि दोषक सूचीमे नहि राखय चाहैत छलीह। नूर ओहि पत्रक एक पाँति अपन लेखमे उद्धृत करबाक अनुमति माँगलीह। सहर लिखलीह—“अनुमति अछि, मुदा बच्चाक नाम नहि।” संवेदनशीलता कखनो-कखनो छोट वर्जनाक रूपमे सेहो सत्य बचबैत अछि।

नीलकान्तकेँ जखन रेवतीक उत्तरक समाचार भेटल तँ ओ अपन दूकानक एक खाली बही रामौतारकेँ देलनि। बहीक पहिल पन्नामे नीलकान्त अपन हाथसँ चारि शब्द लिखलनि —‘देनदारी’, ‘भुगतान’, ‘वापसी’, ‘विवाद’। रामौतार पुछलक, “एहि सँ हमर लड़काक खेल

सुधरत?” नीलकान्त उत्तर देलनि, “खेल नहि, मुदा हिसाब सच होएत। हिसाब सच होइत तखन लोक अपन कठिनाइकेँ निश्चय सँ देखैत अछि। सुधरबाक निर्णय तकर बाद हुनकर हाथमे रहत।” रामौतार बही झोरामे रखलक। अपन जीवनमे हजारों बोरा उठौने हाथ सँ पहिल बेर ओकरा एक कोरा कागज अधिक भारी बुझायल, मुदा एहि भारीपनमे किछु आश्वासन छल।

कार्यालयक देवालपर सन् २००० मे शिवनारायणक संग रेवतीक एक छोट तस्वीर टाँगल छल। तस्वीरमे ओ युवा विधि-विद्यार्थिनी छलीह; हाथमे कागजक पातर फाइल, आँखिमे प्रश्न। सन् २०२५ मे हुनकर टेबुलपर दू लिफाफा छल, एक परिवारक जमा रुपैया आ दोसर विद्यार्थीक सुरक्षित सूचना। ओ धीरे सँ तेसर खाली फोल्डर निकाड़लीह आ ऊपर लिखलीह—‘व्यक्तिगत भूमिका—प्रमाणक प्रतीक्षा’। ताहिमे एखन कोनो नाम नहि राखल गेल। बाहर साँझ उतरि रहल छल। दिल्लीक सड़कपर मोबाइलक विज्ञापन चमकैत छल—एक दिस कौशलक विजय, दोसर दिस तुरन्त धनक आशा। रेवती खिड़की बन्द कएलीह, मुदा विज्ञापनक प्रकाश भीतरक कागजपर किछु देर धरि पड़ैत रहल। जे देश सन् २००० मे जप्त बहीक नाम सँ बहस शुरू केने छल, ओ आब स्क्रीनक अदृश्य खाता सँ अपन अगिला गवाही खोजि रहल छल।

अध्याय ३४ — पाँच सय नामक बही

जोधपुर, लुधियाना, खरड़ आ मोहाली; दिसम्बर २०२५ सँ मार्च २०२६

पूसक एक ठण्ढ साँझ मरुधर विश्वविद्यालयक छात्रावासमे बिजली दू बेर चमकि गेल। आँगनक नीमक पात सिहरैत छल, आ बरामदामे राखल पुरान छापाक मशीन अपन भीतरक रोलरकेँ छोट-छोट आवाजमे घुमबैत छल। छात्रावासक सहायक कमला मेघवाल मशीनक मुँहसँ निकलैत कागज रोकबाक प्रयास कएलीह। कार्यालय बन्द भऽ चुकल छल, फेर एतेक पन्ना कोना निकलि रहल? पहिल पन्नापर विश्वविद्यालयक चिह्न नहि, एक बाहरी कार्यक्रमक सङ्क्षिप्त नाम छल। दोसरापर क्रमाङ्क, तेसरापर विद्यार्थी-जेकाँ नाम, चतुर्थपर बैंकक अन्तिम चारि अङ्क। मशीन रुकल तखन धरि पाँच सय क्रमाङ्कवाली सूचीक अधिकांश पन्ना बाहिर आबि गेल छल। कमला ओहि पन्नासभकेँ देखिकय न उछाह महसूस कएलीह, न रहस्यक सुख। हुनका याद छल जे एही छात्रावासमे पायल अपन परामर्श लेल लिखल कागज सार्वजनिक होयबाक भय सँ कतेक दिन चुप रहलीह। कमला सभटा पन्ना उलटिकय नहि पढ़लीह। ओ मशीनक स्विच बन्द कएलीह, कार्यालयक ताला देखलीह, आ प्राप्तिक समय अपन छोट ड्यूटी-बहीमे लिखि विश्वविद्यालयक अधिकृत अधिकारीकेँ फोन कएलीह।

कुसुम जखन पहुँचलि तँ कमला मेजपर एक सफेद चादर पसारि पन्नासभ ओकर भीतर रखि देने छलीह। “एतेक नाम अछि,” कमला कानाफूसीमे कहलीह, “जे एतय नहि पढ़ैत, हुनकरो नाम होए सकैत अछि। मुदा हम कोना जानब?” कुसुम कहलीह, “एहि लेल तखन धरि केओ एहि कागजकेँ छात्रावासक सूचना-पट्टपर नहि टाँगत।” हुनका पुरान भूमिविवादक ओ नक्शा याद पड़ल, जकर नकल देखि कियो अपन जमीन गमौने बुझने छल, जखन कि मूल नक्शाक जाँच शेष छल। एतय कागजक एक पाँति सँ कोनो छात्रक भविष्य प्रभावित भऽ सकैत छल। कुसुम सुरक्षा-कर्मीक उपस्थिति मे बंद लिफाफा बनौलनि; पन्नाक सङ्ख्या, छापाक मशीनक पहचान, समय आ उपस्थित गवाहक हस्ताक्षर लेलनि। छात्रावासमे ई पहिल

बेर छल जखन लोक एकटा बहीकेँ खोलबाक बदला ओकरा बन्द रखबाक लेल एतेक सावधानी बरतलक।

अगिला भोर रिद्धि विश्नोई विश्वविद्यालयक अभिलेख-कक्षमे बैसलीह। खिड़कीसँ दिसम्बरक प्रकाश भीतर अबैत छल, मुदा मेजपर पड़ल लिफाफा जेना रात्रिक शीत लऽ कऽ आयल छल। पायलक परामर्श-कक्ष फेर खुलि गेल छल, हिम्मतक पुस्तकालय-प्रवेश पुनः बहाल छल; मुदा बाहरी रोजगार-सहायता अनुबन्धक जाँचमे किछु प्रश्न अनुत्तरित रहि गेल छल। कार्यालयक प्रभारी उमा राठौड़ कहलनि, “छात्रावासक प्रिन्टर हमर सर्वरक संग जुड़ल अछि। मशीनक गतिविधि-पञ्जी हमरा तकनीकी शाखासँ मँगएबाक चाही।” रिद्धि सहमति देलीह, मुदा एक शर्त रखलीह—“अनुमति बिना हमरा नामसभक निजी बैंक विवरण नहि देखाओल जाए। पहिने स्रोत, जकर लग पहुँच छल, आ कागज छपबाक कारण जाँचू।” उमा हुनका घूरि नहि देखलीह। ओ अपन नोटपुस्तिकामे लिखलीह—“प्राप्त सूची सुरक्षित; वैयक्तिक विवरणक प्रयोग सीमित।” एहि वाक्यसँ जाँच बन्द नहि भेल; जाँचक पहिल मर्यादा निश्चित भेल।

छात्रावासक पहिल तल्लापर मुकुल मीणा अपन छतपर सुखाओल कमीज उतारि रहल छल। ओकर भाई रमेशक उधारक किस्तक समय फेर नजदीक छल; ‘मरुधर नियुक्ति-सुविधा’ क नामपर गेल सात हजार पाँच सय रुपैया एखनो वापस नहि आयल छल। मुकुलकेँ सूची भेटबाक खबर वॉर्डन नहि, छात्रसभक फुसफुसाहटसँ भेटल—“पाँच सय बैंक खाता पकड़ायल।” सुनिते ओकर पेटमे डरक गाँठि पड़ि गेल। ओ अपन नामक सूचीमे होयबाक आशंका सँ नहि, एहि बातसँ डरलक जे जँ सभ पाँच सयकेँ अपराधी कहि देल जाएत तँ ओकर वास्तविक शिकायत सेहो ओहि कोलाहलमे गुम भऽ जाएत। हिम्मत अंसारी सीढ़ीपर भेटलक। “ककरो नाम लिखल अछि?” मुकुल पुछलक। हिम्मत कहलक, “हम नहि देखलहुँ। जो देखल अछि से अधिकृत लोक छथि। हमर काज छात्रसभकेँ कहब जे अपन बैंकक गुप्त अङ्क ककरो नहि दिअ, आ अफवाहमे ककरो छवि नहि बिगाड़ू।” मुकुल घर फोन करबाक लेल गेला तखन सोचलक—आइ रमेशकेँ पहिने यही खबर नहि देब।

रिद्धिक पहिल सवाल मशीनसँ छल, नामसँ नहि। तकनीकी कर्मचारी रोहित चौहान लॉग देखौलनि। प्रिन्टरमे आधी राति सँ पहिने एक बाहरी संलग्न फाइल पठाओल गेल छल, मुदा पठेनिहारक खाताक पहिचानमे विश्वविद्यालयक सामान्य सेवा-पता देखाइत छल। “एहि पता सँ कतेको अधिकृत सूचना चलैत अछि,” रोहित कहलक, “मुदा फाइलक असली लेखक के छथि, से एतयसँ नहि बुझाइत।” रिद्धि पुछलीह, “की ई पूरा फाइल एही मशीनसँ निकसल?” रोहित कहलक, “जतेक पन्ना निकसल अछि ओकर क्रमाङ्क देखब। मशीन बीचमे कागज फँसलापर कतिपय पन्ना फेर छापि सकैत अछि।” सूचीमे पाँच सय क्रम लिखल छल, मुदा पन्नाक भौतिक गिनती पाँच सय प्रविष्टिक निश्चितता नहि दैत छल। कुसुम कहलीह, “तँ खबरमे “पाँच सय दोषी खाता” नहि, “पाँच सय क्रमाङ्कवाली अप्रमाणित सूची” लिखल जाए।” विश्वविद्यालयक कर्मचारीसभ पहिल बेर बुझलनि जे कखनहुँ-कखनहुँ एकटा विशेषण जीवन बचबैत अछि।

ओहि दिन रिद्धिक माय शारदा विश्नोई फल काटैत पुछलीह, “काज बहुत बढ़ि गेल अछि ने?” रिद्धि हुनका छात्रक नाम नहि सुनौलीह; केवल एतबा कहलीह जे पाँच सय पाँति लिखल एक फाइल भेटल अछि। शारदा कहलीह, “पाँच सय? कतबा लोकक घर होएत!” ओ संख्या रिद्धिक मनमे ओहि राति अटकले रहल। पाँच सय पन्नाक आँखि नहि होइत अछि; मुदा पाँच सय नामक पाछाँ कतेक गृहस्थी, कतेक गलत वर्तनी, कतेक फेर भरल आवेदन, कतेक नामसमान लोक, कतेक श्रमिकक उधार आ कतेक योग्य विद्यार्थी होयत! रिद्धि एकटा खाली पन्नापर दू स्तम्भ बनौलीह—‘प्रविष्टि’ आ ‘व्यक्ति’। पिता हुनका बचपनमे खेतक एक रोपनी आ ओकर कागजी माप देखौने छलाह; माप बदलने माटि नहि बदलैत। एखन रिद्धि एहि भेदकेँ मनुष्यपर लागू करय सँ डेराइत छलीह, कारण गलतीक हर्जाना कागज नहि, मनुष्य भरत।

विश्वविद्यालयक कार्यकारिणी समिति तत्काल बैठक बजौलक। अरविन्द पारीक, जे रोजगार-सहायता कार्यक्रमक संयोजक छलाह, अपन सामने पहिल अनुबन्ध रखलनि। ओ अनुबन्धमे ‘संगति वित्तीय सेवा प्राइवेट लिमिटेड’ केँ पञ्जीकरणक तकनीकी सहायता देबाक बात लिखल छल; विद्यार्थीकेँ अनिवार्य शुल्क देबाक कोनो आदेश नहि छल। दोसर पृष्ठमे सेवा-दाताकेँ किस डेटा धरि पहुँच देल गेल, ओकर भाषा अस्पष्ट छल। “हम नियुक्तिक अवसर

बढ़ेबाक लेल अनुबन्ध कएने रही,” अरविन्द कहलनि, “किछु छात्र वास्तवमे प्रशिक्षण भेटलनि। एखन हम सुनैत छी जे बाहरी संदेशमे हमर नामपर शुल्क माँगल गेल।” उमा पुछलीह, “अहाँ अनुबन्धक तेसर संशोधन पढ़ने छलहुँ?” अरविन्दक माथ झुकि गेल। “कागज चिट्ठी सँ आयल छल; हम केवल पहिल दू पृष्ठ देखलहुँ।” रिद्धिक कानमे ई स्वीकारोक्ति दोषक अन्तिम निर्णय नहि, कार्यालयक गंभीर लापरवाहीक सम्भावित प्रमाण बनि बजल। ओ कहलनि, “संशोधन असली अछि कि बादमे जोड़ल, तकरो जाँचबाक पड़त।”

समितिमे हिम्मत छात्र प्रतिनिधिक रूपमे बैसल छल। ओ प्रश्न कएलक जे बाहरी कम्पनीक प्रवेश-शर्त सभ विद्यार्थीकेँ किन दिन बताओल गेल। उमा प्रकाशित सूचना निकालि देखौलीह; ओतय एकटा लिंक छल, जे किछु महिना सँ निष्क्रिय पड़ल छल। हिम्मत कहलक, “हम सभ जखन शिकायत करैत रही, तखन हम सभकेँ नियम पढ़बाक लेल कहल गेल। जकर पन्ना खुलैतहि नहि, ओकरा हम कोना पढ़ितहुँ?” अरविन्द अपन कुर्सीमे कनी पाछाँ हटला। मनस्वी, जे छात्र हित सम्बन्धी सलाहकार समूहक सदस्य छलीह, पुछलीह, “ई सभ सूची सार्वजनिक कएलासँ जकरा परामर्श अथवा छात्रवृत्ति भेटैत अछि, हुनकर गोपनीयता पर की असर पड़त?” समितिक अध्यक्ष उत्तर देलनि, “सूचीक असली स्रोत जाँचे बिना हम प्रकाशित नहि करब।” बैठकक एहि एक निर्णयमे उत्साह कम छल, मुदा सभक शान्त स्वीकृति बनल।

कमला मेघवालकेँ साँझ धरि छात्रावासमे दू-चारि अजनबी फोन आयल। एक स्वर पुछलक—“अहाँ पाँच सय खाता देखलहुँ? कोन बैंक?” दोसर कहलक—“हम पत्रकार छी; सूची भेजि दिअ, विश्वविद्यालय बचि जाएत।” कमला दूनू बेर उत्तर देलीह, “हम अधिकृत कार्यालयकेँ जमा कऽ देलहुँ।” ओ फोन बन्द करिते देवालक सहारासँ बैसि गेलीह। हुनकर बेटा विक्रम सहरक एक छोट दुकानमे हिसाब लिखैत छल। ओ कहलक, “माय, यदि अहाँ सूची देब तखन रुपैया दऽ सकैत अछि।” कमला उठि कऽ रसोइमे गेलीह। “हमरा मासिक वेतन देरीसँ अबैत अछि, मुदा ओहि लेल हम ककरो बच्चाक बैंक नम्बर बेचब?” हुनकर प्रश्न बेटासँ बेसी अपन भीतरक भयकेँ देल उत्तर छल। विक्रम चुपचाप हुनका लेल चाय बना देलक।

जनवरी २०२६ क पहिल सप्ताहमे अधिकृत तकनीकी परीक्षणक पहिल सीमित प्रतिवेदन आयल। सूचीमे पाँच सय क्रमाङ्कवाली पाँति छल; किछु पाँतिमे एकहि विद्यार्थी-नामक

दोहराव, किछुमे छात्रावासक पुरान कक्ष-संख्या, किछुमे केवल मोबाइलक अन्तिम अङ्क, आ कतिपयमे बैंकक चारि अङ्क मात्र लिखल छल। रिद्धि गणना प्रस्तुत करबाक समय एक शब्द फेर-फेर इस्तेमाल कएलीह—‘प्रविष्टि’। एकहि आदमी दू बेर गिनल गेल होयत, एकहि नामक दू अलग व्यक्ति होयत, बिना सहमतिक विद्यालयक पुरान फाइल आयल होयत—एहि सभ सम्भावनाक सत्यापन अलग-अलग चाही। अनुराधा सेन, जे वित्तीय अभिलेख परीक्षणमे अनुभव रखैत छलीह, विश्वविद्यालयक अधिकृत परामर्शपर जुड़लीह। ओ पहिल पन्ना देखिते कहलीह, “एकटा सूची खाता चलबाक प्रमाण नहि होइत अछि। एतय “बैंक” लिखल अछि, मुदा धन कखन आयल-गेल, ओहि लेनदेनक मूल अभिलेख एखन अनुपस्थित अछि।”

अनुराधा अपना संग एकटा छोट काठक पट्टी लएने छलीह। ओ मेजपर तीन सफेद कागज राखलीह। पहिल पर लिखलीह ‘नाम’, दोसर पर ‘खाता’, तेसर पर ‘नियन्त्रण’। ‘ई तीनू एक नहि,’ ओ विद्यार्थीसभकेँ बुझौलीह। “खाता ककर नामपर खुलल, ककर अनुमति सँ पैसा आयल, आ ककरा लग गुप्त प्रवेश छल—तीनटा भिन्न प्रश्न। फेर चौथ प्रश्न अछि: रकमक असली उद्देश्य की?” रिद्धि हँसि पुछलीह, “आ पाँचम?” अनुराधा कहलनि, “जाँच-अधिकारी जे प्रश्न पूछय चाहैत छथि, तकर कानूनी अधिकारक सीमा। हम अपन उत्सुकतासँ बैंकक गोपनीयता नहि तोड़ब।” कुसुम ओहि दृश्यकेँ बत्तीसभक सभा जेकाँ नहि, विश्वविद्यालयमे अनुसन्धानक पहिल सही पाठ बुझलीह। छात्रसभक मुँहपर पहली बेर भयक जगह जिज्ञासा आयल।

मोहन बैरवा छात्रावासक एक कोनमे अपन पुरान फोन खोलि राखने छल। ओ पहिने ‘प्रोत्साहन-क्रीड़ा’ नामपर आयल अनधिकृत सन्देशमे बैंकक एकबारगी गुप्त अङ्क नहि देने छल। मुदा ओहि सन्देशक अगिला सप्ताह ओकर फोनपर एक भर्ती-सूचना आयल छल, जाहिमे छात्रवृत्तिक विभागक नाम छल। मोहन जखन विश्वविद्यालयक कार्यालयमे पूछलक तँ ओकरा कहल गेल—“ई हमर नहि।” ओ अपन डरताहि पछाति हुनका बुझायल जे केवल गुप्त अङ्क बचाओलासँ सभ समस्या नहि मिटैत; ओकर मोबाइल नम्बर कोना बाहर गेल, ओ प्रश्न शेष छल। रिद्धि ओकर अनुमति लऽ कऽ सन्देशक केवल प्रेषक-पहिचान आ समयक सीमित प्रतिलिपि अधिकृत परीक्षणमे जोड़लीह। मोहन पुछलक, “हमर नाम ओ पाँच सयमे अछि?”

रिद्धि उत्तर देलीह, “आइ जँ हम अहाँकेँ बिना जाँच कहि दिअ, से अहाँक हित नहि। सत्यापित जानकारीक विधि बनि रहल अछि।”

फरवरीक पहिल भोर लुधियानाक श्रमिक बस्तीमे सुनीता पासवान अपने घरे काठक पुरान सन्दूक खोलि रही छलीह। सन्दूकमे रामलखनक वेतन-पर्ची, २००९ क हस्ताक्षरित सूची, कारखानाक उपस्थितिक नकली आ असली मानल गेल पन्नाक नकल, आ एक एहन पत्र छल जाहिमे केवल ‘हरदेव चौहान’ लिखल रहय। माँ विमला पासवान खाटपर रखल ऊनक गेंदा सम्हारि कहलीह, “एतेक पुरान कागज एक दिन सड़ि जाएत, बेटी।” सुनीता उत्तर देलीह, “कागज सड़ब सँ पहिने ओकर अर्थ भेटि जाए तँ नीक।” पिता रामलखन एखन पूर्ण दिन मजदूरी नहि कऽ पबैत छलाह, मुदा बस्तीमे छोट बच्चासभकेँ कारखानाक सीटी आ दुपहरियाक समय चिन्हायब सिखबैत छलाह। सुनीताकेँ रिद्धिक फोन आयल—मरुधरक एक अप्रमाणित छात्र-सूचीक किनारपर एक सेवा-सङ्केत, ‘पूर्वोत्तर श्रमिक प्रशिक्षण लाभार्थी’, लिखल भेटल अछि। “एहि सँ हमर कारखानाक की सम्बन्ध?” सुनीता पुछलीह। रिद्धि कहलीह, “अखन केवल शब्दक मेल अछि; कोनो धन-सम्बन्ध नहि। हम अपन अध्ययन लेल अहाँसँ पुरान सार्वजनिक अनुबन्धक तिथि पुछि सकैत छी?”

सुनीताक भाई दीपक, जे औद्योगिक प्रशिक्षण पछाति एक औजार-दूकानमे काज करैत छल, बहिनकेँ फोनपर सुनैत रहल। ओ कहलक, “दस बरख पुरान हरदेवक नाम फेर?” सुनीता सिर हिलौलीह। “ई नाम जँ हजारों व्यक्तिक होय तँ?” दीपक कनी लजा गेल। बचपनमे ओ बहिनक बहीमे नामक मिलान देखि सारा दिन उत्साहित रहैत छल। आब ओकरा अपन दुकानक हिसाब समझमे आयल छल—एकहि नामक दू ग्राहकक उधार गलतीसँ जोड़ल गेल तँ निर्दोष व्यक्तिक मान गमैत अछि। सुनीता कागजक फोटो भेजबाक बदला रिद्धिक कानूनी अनुरोध लेल पत्र लिखबाक निर्णय कएलीह। ओ कहलीह, “जे कागज पहिने सार्वजनिक सुनबाईमे जमा भेल छल, तकर प्रमाणित प्रति भेटल तखनहि तुलना करब। हमर घरे रखल पुरान छायाप्रति विश्वविद्यालयक अभिलेख नहि बनि सकैत।” विमला चूल्हापर चढ़ल चाय उतारलीह। बेटाक हड़बड़ी आ बेटीक सावधानी दुनूकेँ ओ अपन परिवारक दू आँखि बुझैत छलीह।

लुधियानाक बैंक-शाखामे सरबजीत कौर दुपहरियासँ पहिने पहुँचलीह। शाखाक नब कनिष्ठ कर्मचारी गगनदीप कौर प्रशिक्षणमे छलीह। ओ एक ग्राहकक पर्ची देखि घबराएल स्वरमे कहलीह, “महोदया, भुगतान पञ्जीमे लाभार्थीक नाम दोहरायल अछि। की एकहि खातासँ फेर लेनदेन भेल?” सरबजीत पर्ची देखलीह। “दोहरायल नाम देखलासँ दोहरायल भुगतान नहि होइत,” ओ कहलीह। “लेनदेन सङ्ख्या, रकम, तिथि, रद्द आदेश आ वास्तविक प्रविष्टि अलग देखू।” गगनदीपक माँ बुनाईक घर-आधारित काज करैत छलीह; बैंकमे नौकरी भेटलाक बाद ओकरा लगैत छल जे प्रत्येक गड़बड़ हिसाब सभसँ पहिले पकड़बाक ओकर कर्तव्य अछि। सरबजीत ओकर उत्साह दबौलनि नहि। “सन्देह उठेनाइ उपयोगी अछि,” ओ कहलीह, “मुदा सन्देहकेँ खाताधारकक नामपर दाग बनबैयौ सँ पहिने प्रश्नक सही रूप बनाउ।” ओहि दिन शाखामे एक आधिकारिक साइबर-जाँचक अनुरोध सेहो पहुँचल, मुदा ओ मरुधरक सूचीसँ सम्बन्धित अछि कि नहि, एतबा सरबजीतकेँ नहि बुझायल।

बैंकक काम समाप्त भेला पर गगनदीप मोहल्लाक बसमे चढ़लीह। कन्धापर झोरा, भीतर प्रशिक्षणक पुस्तिका, आ गामसँ माय पठौने सूखल मखानाक छोट पुड़िया। सहयात्री एक वृद्धा पुछलीह, “बेटी, ई मोबाइलपर “खाता सत्यापन” कहिकय जे सन्देश अबैत अछि, से की बैंकसँ होइत?” गगनदीप बतौलीह जे बैंक गुप्त सङ्केत अथवा पासवर्ड एहन सन्देशमे नहि माँगत। वृद्धा कहलीह, “हमर पेंशनक रकम कम अछि, मुदा जँ ओतबे चलि गेल तँ दवाई कोना किनब?” गगनदीपक मनमे पाँच सय नामक कथा, जे शाखामे हल्का कानाफूसी बनि आयल छल, अचानक एकटा चेहरा पाबि गेल। बैंकक हिसाबकेँ ओ आब केवल कोष्ठक नहि बुझैत छलीह। ओ वृद्धाकेँ अधिकृत शाखामे जा कऽ सत्यापन करबाक सलाह देलीह आ घर पहुँचिकय अपन मायकेँ सेहो एही बात पुछलीह। माय उत्तर देलीह, “हमरा पासवर्ड नहि, अपन मजदूरीक मूल्य बुझाउ।”

मरुधरक समिति जखन विद्यार्थी सूचना-सम्बन्धी शिकायत स्थानीय पुलिसक साइबर इकाइ लग पठौलक, तखन ओकरा संग पूरा पाँच सय नामक बही नहि देल गेल; अधिकृत मुहरबन्द प्रति, प्राप्ति-पञ्जी, स्रोतक प्राथमिक प्रतिवेदन आ शिकायतकर्तासभक सहमति अनुसार सीमित विवरण देल गेल। जाँच-अधिकारी निरीक्षक सीमा चौधरी पहिल प्रश्न

कएलीह, “ककर पैसा गेल, कतय गेल आ ककरा झूठ आश्वासन देल गेल?” मुकुल सात हजार पाँच सयक पावती देखौलक। मोहन कहलक जे ओकर एकबारगी गुप्त सङ्केत कियो नहि पाबि सकल, मुदा छात्रवृत्तिक नामपर धमकी आयल। सीमा दूनू बयान अलग दर्ज कएलीह। “एक्के शिकायतमे पूरा समाज समेटबाक लोभ हमरा नहि होयबाक चाही,” ओ कहलीह। “पाँच सय पाँति एकटा संकेत अछि। आरोपक आधार किछु विशिष्ट घटना होएत।” रिद्धि एहि वाक्यकेँ मनमे राखलीह, मुदा अधिकारयुक्त आदेशक बिना व्यक्तिगत खाताक सम्पूर्ण विवरण पुलिसकेँ सेहो तुरन्त नहि सौंपल जा सकैत, से स्मरण दिलौलीह।

निरीक्षक सीमाक घरमे ओहि साँझ हुनकर बेटी नवमी कक्षाक गणितक प्रश्न लऽ बैसल छलीह। प्रश्न छल—एकहि वस्तु तीन ठाम गिनल गेल तखन कुल गिनती कतेक त्रुटिपूर्ण भेल? सीमा काजक फाइल बन्द करैत हँसलीह। बेटी पुछलक, “माँ, अहाँ अपराधी पकड़य गेल रही?” सीमा कहलीह, “हम ओहि लोककेँ खोजब जा रहल छी, जकर विरुद्ध विशिष्ट प्रमाण अछि। आ संगहि, जकर नाम गलतीसँ आयल अछि, ओकरा अनावश्यक भय सँ बचब।” बेटी कहलक, “एहिमे कतेक दिन लागत?” सीमा उत्तर नहि देलनि। कार्यालयक आदेशमे समय-सीमा छल, अदालतक लेल कार्रवाईक दर्ज निबन्धन छल, मुदा ओकर मनमे याद छल जे एक गलत पहिचानक दाग वर्षों धरि नहि मेटाए। बेटी प्रश्न हल कऽ देलक। सीमा ओहि कापीपर लाल टिक लगौलीह, अपने कागजपर कोनो नामक आगाँ टिक लगबैत समय जतेक सावधानी चाही, तकरा सँ एतेक सरल टिक नहि।

जाँचक प्रारम्भिक सामग्रीमे ‘मरुधर नियुक्ति-सुविधा’ नामक वेबसाइटक एक पुरान प्रतिरूप भेटल। ओकर पृष्ठपर विद्यार्थीसभकेँ ‘पञ्जीकरणक अनिवार्य सेवा-योगदान’ देबाक निर्देश छल, जबकि विश्वविद्यालयक आधिकारिक कार्यक्रम निःशुल्क छल। वेबसाइटक सम्बन्धित डोमेन पञ्जीकरणकाल, प्रचार-पत्रक निर्माण आ भुगतान-संग्रहक व्यापारी पहचान अलग स्रोतसँ अधिकारयुक्त अनुरोध कएल गेल। प्राविधिक कर्मचारी कहलक जे साइटक एक सम्पर्क संख्या खरड़ क्षेत्रक प्रचारक कार्यालयसँ जुड़ल देखाइत अछि। सीमा तुरन्त क्षेत्रक नाम आधारपर आरोप नहि बनौलीह। “खरड़सँ कम्पनीक वैध काज सेहो होइत अछि,” ओ कहलीह, “हमें बताउ जे ई नम्बर लिखल कागज ककर नियन्त्रणमे छल, आ वचन के देलक।”

एक अन्य अनुसन्धानमे मोहालीक एक प्रशिक्षण-कक्षसँ मिलैत-जुलैत विज्ञापनक डिजाइन भेटल छल। नूर जतय एहि सूचनापर समाचार लिखबाक प्रस्ताव सुनलीह, मुदा कार्यालयकेँ कहलीह—“स्थानक नाम अपराधक प्रमाण नहि; कारोबारी पहचान आ साक्ष्य अलग सत्यापित करब।”

खरड़क एक सँकरा गलीमे अमनदीप सूद नामक युवक अपन पिताक दवाईक बिल जोड़ि रहल छल। ओ स्थानीय ‘सेतुवाहक परामर्श’ नामक छोटी भर्ती-एजेंसीमे अस्थायी समन्वयक छल। एजेंसीक बोर्डपर पाँच राज्यक प्रशिक्षण अवसर लिखल छल; किछु ठाम वास्तविक नियुक्ति-पत्र देल गेल छल, किछु ठाम आवेदनक बादो जवाब नहि अएल छल। अमनदीपक कर्तव्य विज्ञापन बनायब नहि, विद्यार्थीसभक फोन उठेनाइ आ पूछल गेल कागज स्कैन करब छल—एहि बातपर ओ दृढ़ छल। ओकर सहकर्मी तरुण सेठी, जे भुगतानक अभियान देखैत छल, कहैत छल जे कम्पनीक सभ सेवा अधिकृत अछि। मुदा पञ्जीक एक पाँतिमे ‘गारण्टीक शुल्क’ लिखल देखिकय अमनदीप एक दिन पूछने छल—“विश्वविद्यालयक निःशुल्क कार्यक्रममे शुल्क किएक?” तरुण कहलनि, “ई अलग वैकल्पिक निजी सेवा अछि।” प्रश्न तखने बन्द भऽ गेल छल। पुलिसक सूचना आएलापर अमनदीप अपन कार्यालयक ई-मेल आ रोजगार-अनुबन्ध बचा कऽ राखलक। ओकरा भय छल जे नब सन्देहमे असली प्रश्नक उत्तर देनिहार ओ स्वयं नहि रहि जाए।

मोहालीमे सरदार हरपाल सिंहक किरायाक भवनक तेसर तल्लापर तीन कम्प्यूटरक छोट प्रशिक्षण-कक्ष छल। ओ भवन एकाधिक कम्पनीकेँ अलग-अलग समय किरायापर दैत छलाह। हरपालकेँ फरवरीमे पुलिसक अधिकृत पूछताछ भेटल तँ ओ भाड़ाक रसीद देखौलनि, मुदा कहलनि जे के कम्प्यूटरपर कोन फाइल बनौलक, तकर ज्ञान हुनका नहि। “किराया लेब अपराध नहि,” सीमा कहलीह, “मुदा कोठरीक वास्तविक उपयोगक पञ्जी जँ अछि तँ दियौ।” हरपालक बेटी जसलीन ई सुनि चकित भेलीह; ओ पिता सँ कहलीह जे प्रवेश-पञ्जीमे कतेको नाम अस्पष्ट अछि, हस्ताक्षरक जगह केवल मोबाइल नम्बर। हरपाल स्वीकार कएलनि जे कर्मचारीसभक सुविधा लेल ओ एतेक ढिलाइ केने छलाह। जाँच अधिकारी पञ्जीक मूल कागज सुरक्षित कएलनि। हुनका भवनक सभ किरायेदारकेँ एक कथित जालक भाग बनाबय

किछु कारण नहि भेटल। मुदा एक कम्प्यूटरक किरायाक तिथि आ विवादित प्रचार-पत्रक निर्माण-समय मिलैत छल, ताहि लेल अधिक परीक्षण आवश्यक भेल।

जोधपुरक छात्रावासमे पायल विश्वविद्यालयक परामर्शदाता सँ अपन साप्ताहिक भेट पूरा कऽ बाहर निकलि रही छलीह। गलियारामे कियो कहलक जे ‘पाँच सय नाम’ मे पायल सेहो अछि। ओ थमकि गेलीह। शरीर फेर ओहि पुरान कोटावला कक्षाक भय स्मरण करए लागल, मुदा एहि बेर ओ सीधे वॉर्डन लग गेलीह। “हमर परामर्शक निजी विवरणमे ककरा पहुँच अछि?” पायल पुछलीह। वॉर्डन उत्तर देलीह जे परामर्श-अभिलेख अलग सुरक्षित अछि, आ वित्तीय सूचीमे कोन नाम अछि ओकर सार्वजनिक पुष्टिक व्यवस्था नहि बनल। पायल कहलीह, “मुदा लोक हमरा विषयमे पूछैत छथि। हम चाहैत छी जे विश्वविद्यालय झूठ अफवाह खण्डन करय, बिनु हमर निजी कागज उघाड़ने।” मनस्वी एहि आग्रहक समर्थन कएलीह। अगिला दिन सूचना प्रकाशित भेल—ककरो नामक गोपनीय सूचीमे चर्चासँ दोष वा कियो विशेष सेवा लेल होयबाक निष्कर्ष नहि निकलैत। पायल ओ कतरन अपन अलमारीमे नहि, छात्रावासक साझा दीवारपर लगबौलीह।

अर्जुन नामक एक छात्र बस्तीमे दैनिक बससँ अबैत छल। ओकर खाता छात्रवृत्तिक पैसा लेल खुलल छल, आ बैंकक चिह्न छात्रावासक बाहर लगल शुल्क-संग्रहक पोस्टर पर सेहो देखाइत छल। अर्जुनक दोस्त हँसि कहलक, “पाँच सय खाताक बहीमे तोहर नाम अवश्य होयत, तूँ रोज ऑनलाइन भुगतान करैत छें।” अर्जुन हँसल नहि। ओकर पिताक खेतमे ओहि वर्ष बरखाक पानि असमय उतरि गेल छल, आ छात्रवृत्तिक अगिला किस्त सँ परिवारक उधारक ब्याज चुका सकैत छल। ओ रिद्धिक अधिकृत छात्र-सम्पर्क कैं लिखलक—“हम अपना नामक सत्यापन चाहैत छी, मुदा पूरा सूची सार्वजनिक नहि करबाक पक्षधर छी।” रिद्धि विश्वविद्यालयसँ एहन प्रक्रिया बनबौलीह जाहिमे सम्बन्धित व्यक्ति अपन ही सूचना उचित पहचान-पुष्टिपछि देखब, आपत्ति देब आ त्रुटिक सुधार माँगि सकब; दूसराक विवरण नहि। एहि छोट व्यवस्थापर कुसुम कहलीह, “ई न्यायक पहिल सीढ़ी अछि, जकरा चढ़बाक लेल अदालतक सीढ़ी नहि चाही।”

नूर जतय विश्वविद्यालयक बाहरी दुआरिपर कमलासँ भेंट करय पहुँचलि। कमला पहिने पत्रकारकेँ देखिते संकोचमे पड़ि गेलीह; हुनका अज्ञात फोनसभ याद छल। नूर स्पष्ट कहलीह, “हम सूची नहि माँगब। अहाँकेँ जँ सार्वजनिक करबाक अनुमति नहि तँ देबाक आवश्यकता नहि। हमरा केवल ई जानबाक अछि जे जखन कागज मशीनसँ निकसल, तखन अहाँ की कएलहुँ।” कमला अपन ड्यूटी-पञ्जी देखबैत कहलीह जे ओ फोन कएने छलीह आ समय लिखने छलीह; नाम नहि पढ़ने छलीह। नूर पुछलीह, “एतेक कागज छपल तँ अहाँकेँ उत्सुकता नहि भेल?” कमला उत्तर देलीह, “भेल। मुदा उत्सुकता हमरा हक नहि देलक।” नूरक लेखमे तकरा पछाति कोनो पाँच सय नाम नहि, एक अज्ञात सफाईकर्मीक ई नैतिक निर्णय प्रमुख बनल। समाचारक शीर्षक छल—‘सूची छुपेबाक नहि, बचेबाक जिम्मेदारी’। पाठकसभकेँ मुद्दाक तकनीकी पक्ष बुझाएब कठिन छल, मुदा कमलाक एक वाक्य ओ कठिनाईकेँ मानवीय स्वर देलक।

रिद्धि आ अनुराधा फरवरीक मध्य भागमे सूचीक स्रोत सम्बन्धी विश्वविद्यालयक आन्तरिक प्रतिवेदन तैयार कएलीह। ओहिमे लिखल छल जे पाँच सय क्रमाङ्कवाली फाइल एक तृतीय-पक्ष सेवा-खातासँ मशीन धरि पहुँचल, मुदा खाताक प्रयोगकर्ता निर्धारित करबाक लेल प्रणालीक मूल अभिलेख आ सेवा-दाताक उत्तर चाही। विद्यार्थी-अभिलेखक किछु अंश रोजगार-सहायता कार्यक्रमक अधिकृत पञ्जी सँ मेल खाइत अछि; किछु नाममे वर्तनीक विचलन अछि; किछु पाँति स्पष्ट रूपसँ पुरान निरस्त आवेदन सँ आयल अछि। ई मेल विद्यार्थीकेँ अपराधी नहि बनबैत; ई सम्भावना जनबैत अछि जे संस्था सँ सूचना बाहर गेल होय। अनुबन्धमे उपलब्ध पहुँचक सीमाक अतिक्रमण भेल कि नहि, से अन्तिम तकनीकी परीक्षण शेष छल। उमा रिपोर्ट पढ़ि कहलीह, “एखन कम सँ कम हमरा अपन गलत प्रश्न बुझाइत अछि। हम पूछैत रही जे पाँच सय अपराधी कियो अछि; हमरा पूछबाक चाही छल जे पाँच सय प्रविष्टि के जोड़लक आ किएक।”

निरीक्षक सीमाक कार्यालयमे तखन एक युवक अपन मायक संग आयल। ओकर नाम शैलेश कुमावत छल, आ ओ मरुधर विश्वविद्यालयक पूर्व विद्यार्थी छल। ओ पन्ना पर पन्ना अपन नियुक्ति-सम्बन्धी पत्र देखौलक। “हमरा नौकरी भेटल छल,” ओ कहलक, “आ

कम्पनी हमर प्रशिक्षणक दू महिना वेतन सेहो देने छल। लोक सभ कहैत अछि पूरा कार्यक्रम धोखा छल; हमर अनुभव तँ एहन नहि।” सीमा ओकर गवाही दर्ज कएलीह। ओहि दिन नसीमा, जे नब विद्यार्थीसभकेँ परामर्श दैत छलीह, शैलेशकेँ पुछलीह—“अहाँक वास्तविक नियुक्ति-पत्र ककरा सँ आयल? विश्वविद्यालय, बाहरी कम्पनी कि नियुक्तिक संस्था?” शैलेश तीनू कागजक अलग मुहर देखौलक। ओहि अन्तरमे उपयोगी सूचना छल। किछु वास्तविक प्रशिक्षणक अस्तित्वसँ शिकायतकर्ता मुकुलक धनहानि झूठ नहि होइत; किछु ठगीक सम्भावनासँ शैलेशक रोजगार असत्य नहि होइत। सीमा कहलीह, “एहि मुकदमामे हमरा सफल छात्रक बयान सेहो आवश्यक अछि, जाहिसँ सेवा आ छलक सीमा स्पष्ट होय।”

मुकुलक साक्ष्यमे एक समस्या आयल। ओकर फोनमे जखन भुगतानक सन्देश आएल छल, तखन ओ पहिल बेर केवल स्क्रीनक चित्र बचौने छल। मूल सन्देश एखनहुँ मोबाइलमे छल, मुदा बीचमे फोनक प्रणाली अद्यतन भेलाक कारण पुरान सूचना-पथ बदलि गेल छल। प्राविधिक जाँचकर्त्ता फोनक उपलब्ध मूल अभिलेख सँ तिथि, प्रेषक आ संलग्न लिंक सुरक्षित करबाक प्रक्रिया लिखलक। “चित्र मात्र मिथ्या नहि,” सीमा कहलीह, “मुदा ओकर मूल स्रोत जँ उपलब्ध अछि तँ पहिने ओहि सँ मिलान होय।” रेवती दूरभाष पर स्पष्ट कएलीह जे भारतीय साक्ष्य अधिनियमक इलेक्ट्रॉनिक अभिलेख सम्बन्धी आवश्यक प्रमाणन आ स्रोतक चर्चा जाँचक स्तर सँ चलबाक चाही। अदालतमे पेश कएल गेल प्रति केना बनल, ककर यन्त्र सँ, ककर अधिकारमे आ ओकर अखण्डता कोना राखल गेल—ई सभ प्रश्न बादक परिणाम बदलि सकैत अछि। मुकुलकेँ पहिल बेर बुझायल जे ओकर फोन दुखक उपकरण मात्र नहि, स्वयं एक महत्त्वपूर्ण साक्षी बनि गेल अछि।

साइबर-इकाईकेँ भुगतान-संग्रहक संस्थासँ अधिकृत उत्तर भेटल। मुकुलक सात हजार पाँच सय रुपैया ‘सम्पर्क सुविधा’ नामक व्यापारी-पहिचान मार्फत एक निपटान-खातामे गेल छल। ओ खातासँ आगाँ कतेक रकम कतय गेल, तकरा लेल बैंक-पथक अधिकृत पुष्टि आवश्यक छल। प्रारम्भिक हिसाबमे एक राशि प्रशिक्षण-कक्षक घोषित किरायासँ मिलैत छल, मुदा ताहि भरसँ ई नहि सिद्ध होइत जे मुकुलक भुगतान उचित छल। एहि बीच तीन आओर विद्यार्थी अलग-अलग राशि भुगतानक लिखित साक्ष्य लऽ पहुँचल। दू अभिभावक केवल धमकीवला

सन्देशक शिकायत कएने छलाह; हुनकर खाते सँ किछु कटने नहि छल। सीमा फाइलमे विशेष रूपसँ लिखवौलीह—“भुगतानकर्ता छह; बिना भुगतान धमकीक शिकायत अलग।” सहायक पुछलक, “सभकेँ एकटा प्राथमिकीमे जोड़ब?” सीमा कहलनि, “अपराधक घटना, कर्त्ता, स्थान आ सम्बन्ध जँ कानूनी रूपसँ मिलैत अछि, ताहि अनुसार उचित निर्णय। एकसमान प्रचार-वाक्य सँ स्वतः एकहि घटना नहि बनैत।”

तरुण सेठी एखन खरड़क कार्यालयमे देरी धरि बैसैत छल। ओकरा पर घरक किश्तक दबाव छल, आ पिताक पुरान औषधालय बन्द भऽ गेल छल। अमनदीप सूद एक दिन ओकरा पुछलक, “कम्पनीक घोषित निःशुल्क प्रशिक्षणक विज्ञापन सँ शुल्कक पृष्ठ कोना खुलि रहल?” तरुण उत्तर देलक, “एहि प्रश्नक जवाब अनुबन्ध-विभाग देत।” अमनदीप अपन सेवापत्र देखौलक, जतय ओकर काज विद्यार्थीकेँ जानकारी देनाइ छल, राशि वसूलब नहि। “हम फोनपर ककरो अनिवार्य शुल्क नहि कहने छी,” ओ कहलक। तरुण चिढ़ि कहलक, “जे काज छोड़य चाहैत छेँ तखन छोड़ि दे।” अमनदीप ओही राति अपना लग सुरक्षित अपन ई-मेलक वैध प्रति आ कामक दैनिक नोट बनौलक, मुदा कम्पनीक सर्वर सँ अनधिकृत नकल नहि निकाले। ओकरा पता छल जे अवैध तरीकासँ कागज बटोरलासँ ओकर सत्य सेहो संदिग्ध बनि सकैत अछि। ओ पिताकेँ कहलक—“हम नौकरी बचए चाहैत छी, मुदा ओहि लेल गलत बातक गवाही नहि देब।” पिता पहिल बेर ओकर आँखिमे भयसँ अधिक धैर्य देखलनि।

जाँच-अधिकारी सीमा जखन खरड़ पहुँचलि तँ ओ स्थानीय पुलिसक सहयोग सँ एक कार्यालयक अधिकृत निरीक्षण करौलनि। तरुणक उपस्थितिमे सूचीबद्ध कम्प्यूटर, भुगतान-सम्बन्धी प्रचारक ड्राफ्ट आ किरायाक रसीद सुरक्षित कएल गेल। जब्ती-पञ्जीमे प्रत्येक उपकरणक विवरण, सील, समय आ उपस्थित व्यक्तिक नाम लिखल गेल। ओहि घड़ी तरुणक एक कर्मचारी पाछाँ फुसफुसा कऽ कहलक जे कार्यालयक सन्देश-सञ्चय सँ किछु फोल्डर पूर्व-सन्ध्यामे हटाओल गेल। सीमा कर्मचारी सँ अलग बयान लेलनि। हटाओल फोल्डर वास्तवमे प्रशिक्षणक पुरान सामग्री छल कि भुगतान-अभियानक सम्बन्धित दस्तावेज, से डिजिटल परीक्षण बिना नहि कहि सकैत छलीह। तरुण इन्कार कएलक जे ओ कोनो साक्ष्य नष्ट करबाक आदेश देने छल। सीमा ओकर कथन सेहो लिखौलीह। निरीक्षण समाप्त होइत-

होइत गोधूलि उतरि गेल; कार्यालयक बाहर भुट्टा बेचैत वृद्धक आगि पर धुआँ उठि रहल छल। प्रदेशक सीमा बदलल छल, मुदा रोजी-रोटीक छोट दूकान सभ ठाम अपन समयपर जलैत छल।

मोहालीक हरपाल सिंहक भवनमे जांच-समूह एतेक सावधानीसँ गेल जे विद्यार्थीसभक निजी प्रशिक्षण फाइल अनावश्यक रूपसँ नहि उठाउल जाए। एक कोठरीमे महिला-स्वयं-सहायता समूहक सिलाइक पाठक पोस्टर छल; दोसरमे कम्प्यूटर प्रशिक्षणक पुरान फलक; तेसरमे विज्ञापनक छापाक बाकस। हरपाल कहला, “हमर भाड़ा देर सँ आयल, एहिसँ हम झगड़ा कएने रही। आब सभ कहत जे हमर भवन अपराधक ठिकाना?” सीमा कहलीह, “भवनमे अपराधक साक्ष्य भेटब आ भवन-मालिक अपराधी होयब अलग प्रश्न छथि।” जसलीन पिता लग एक पुरान रसीद आनलीह, जाहिमे किरायेदारक सम्पर्क नाम ‘टी. सेठी’ लिखल छल। रसीदक धन-प्राप्ति आ तरुणक वास्तविक स्वामित्वक सम्बन्ध एखन स्पष्ट नहि छल। सीमा मूल रसीदक छायाप्रति आ गवाही दर्ज कएलीह। हरपालक परिवार राति भोजन करैत बुझलक जे एक सही रसीद बचौने रखब कखनहुँ निद्राक रक्षा करैत अछि।

जोधपुरमे विश्वविद्यालयक अध्यापक परिषद दू भागमे बँटल। एक समूहक कहब छल—सभ बाहरी सेवा तत्काल बन्द करू, छात्रक हित बचत। दोसर समूह कहैत छल—जाहि प्रशिक्षण सँ किछु गरीब विद्यार्थीकेँ वास्तविक नौकरी भेटल, ओकरा बिना विचार बन्द करब अन्याय। उमा एक बैठकमे कहलनि, “व्यक्तिगत पहिचान-सङ्ग्रहक अधिकार रोकू, विवादित शुल्क-अभियान हटाउ, मुदा वैध शैक्षणिक कार्यक जाँच अलग करू।” अरविन्दक आँखि थाकल छल। ओ स्वीकार कएलनि जे पहिनुक अनुबन्धक लेखा जाँचबामे हुनका गलती भेल, मुदा ई विरोध कएलनि जे विश्वविद्यालयक प्रत्येक कर्मचारी मिलिकय ठगी कएने अछि। कुसुम कहलनि, “हमरा सभकेँ प्रशासनिक त्रुटि सुधारबाक अछि; जकर विरुद्ध आपराधिक भूमिका प्रमाणित होय, ओहि पर अलग प्रक्रिया होय। संस्थाक छवि बचाबय लेल विद्यार्थी चुप नहि रहत, मुदा विद्यार्थी बचेबाक नामपर सभ शिक्षककेँ दोषी सेहो नहि कहल जाए।” बैठकक अन्तमे सर्वसम्मति नहि भेल; तथापि सूचना-सुरक्षाक अन्तरिम व्यवस्था स्वीकृत भेल।

अध्ययनक एक साँझ रिद्धि पायलकेँ छात्रावासक बगैचामे भेटलीह। पायल कहलीह, “हमरा पहिने लागैत छल जे विश्वविद्यालय हमरा बात सुनत नहि; एखन लोक सब गुप्त सूची पर बात करैत छथि, मुदा हम अपने जीवनक बात ककरासँ कहब?” रिद्धि अपन कापी बन्द कएलीह। “अहाँ जँ चाहैत छी तँ हम पढ़ाइ, छात्रवृत्ति, अथवा परामर्शक व्यवस्था विषयमे सुनि सकैत छी। मुदा बैंकक सूची हमर उत्तरक केंद्र नहि बनत।” पायल अपन आगामी परीक्षाक तिथि कहलीह, फेर मायसँ भेल छोट मतभेद बतौलीह। ओहि राति दुनू पहिल बेर पाँच सय नामसँ बाहरक सामान्य जीवनपर बड़ समय धरि बात कएलीह। बातक अन्तमे पायल कहलीह, “हम अपन खराब दिनकेँ एक फाइलक नम्बर नहि बनबय चाहैत छी।” रिद्धि उत्तर देलीह, “एहि बहीमे नहि, एहि जीवनमे कियो केवल नम्बर नहि।” पायल हँसलीह—“अहाँ फेर पढ़बाक कोनो मोट किताबक पाँति बजैत छी।”

फाइलक ठोस साक्ष्य एक सप्ताह पछाति भेटल। भुक्तान-संग्रहक मूल व्यापारी-समझौतामे जकरा ‘सम्पर्क सुविधा’ कहि देखाओल गेल छल, ओकर प्राधिकृत हस्ताक्षर-वला पृष्ठमे तरुण सेठीक नामक सङ्केत छल। बैंकक प्रमाणित अभिलेखमे एक सीमित निपटान-राशि ओहि व्यापारी पहचान सँ सम्बद्ध खातामे गेल रहय। मुदा नामक सङ्केत आ वास्तवमे हस्ताक्षर के कएलक, तकर परीक्षण शेष छल। तरुण अपन पक्षमे कहलक जे पूर्व कर्मचारीक बनाओल कागजपर ओकर मुद्रित नाम लगल छल, हस्ताक्षर ओकर नहि। सीमा दस्तावेज-परीक्षणक अनुरोध कएलीह। एहि बीच एक शिकायतकर्ता सबेरे फोन कएलक—राति ओकरा अनजान नम्बर सँ कहल गेल जे पुलिसक शिकायत वापस लिअ। ओकरा धमकी देनिहारक पहिचान एखन अज्ञात छल। सीमा कॉलक मूल विवरण अधिकृत मार्गसँ माँगि, गवाहक सुरक्षाक व्यवहारिक उपाय कएलीह। ई धमकी तरुणक आदेशपर आयल अछि, एहन निष्कर्ष नहि निकालल गेल।

रेवती झा दिल्लीमे अपन कार्यालयक पुरान खिड़की लग बैसल छलीह। शशिभूषणक सामने दू अलग फाइल छल—रामौतार नटक ऑनलाइन खेलमे गमल धनक निजी उपभोक्ता-विवाद, आ मरुधरक रोजगार-शुल्क तथा सूचना-दुरुपयोगक शिकायत। सहायक कहलक, “दूनू डिजिटल भुगतान; एक मुकदमा बनि जायत?” रेवती कहलीह, “एक भुगतानक रूपमे

समानता अछि, मुदा कर्त्ता, घटना, कानूनी सम्बन्ध आ प्रमाण अलग। लोक अपन हानि सहित अएल छथि, हम हुनका हमर सुविधाक लेल एक कथामे नहि मिला सकैत छी।” ओ दरभंगामे पिताक संग सन् २००० क जप्त बही याद कएलीह—तखन सेहो पुलिसक एक व्यापक आरोपक भीतर भिन्न लेनदेन छल। एखन पच्चीस बरख पछाति स्क्रीन बदलल छल, मुदा वकालतक पहिल नियम नहि। शशिभूषण रामौतारकेँ उपभोक्ता-सम्बन्धी पृथक कागजक सूची पठौलक; मरुधरक लेल रेवती रिद्धि आ निरीक्षक सीमासँ अधिकारयुक्त अभिलेखक स्थिति पुछबाक तय कएलीह।

रिद्धि वकीलक फोन सुनिकय आश्वस्त भेलीह। ओ कहलीह, “हमरा लग अधिकृत संस्थागत कागज अछि, बैंकक निजी मूल लेनदेन नहि। पाँच सय नामक पन्नाक सबसँ खतरनाक बात ई अछि जे जनमानस ओकरा पाँच सय अपराधी बना देने अछि।” रेवती उत्तर देलीह, “तखन पहिल कर्तव्य ओ निष्कर्षकेँ रोकब अछि। दोसर—जकर धन गेल, ओकरा वास्तविक उपचार। तेसर—जकर खाता अथवा नाम गलत प्रयोग भेल, ओकरा अपन सूचना सुधारबाक मार्ग।” रिद्धि पुछलीह, “जँ पुलिस एक व्यक्ति पकड़ैत अछि तँ बाँकी नामक की?” रेवती कहलीह, “गिरफ्तार व्यक्ति अपन विषयक प्रक्रिया सँ गुजरत। बाँकी सभक विरुद्ध स्वतः कोनो धारा नहि लगत। कार्रवाईक प्रत्येक आधार अलग लिखल जाय।” फोन काटिकय रिद्धि कुर्सीपर पाछाँ झुकलीह। एतेक माह धरि ओ सूची पढ़ैत रही, मुदा आइ पहिल बेर हुनका तकरा सँ बाहर निकलबाक क्रम समझमे आयल।

मार्चक पहिल सप्ताहमे प्राथमिकी दर्ज भेल। आरोपक केन्द्र मुकुल सहित चिन्हित शिकायतकर्तासभसँ नौकरीक अधिकृत सत्यापनक झूठ आश्वासन देल जाएब, विशिष्ट राशि वसूलब आ सम्बन्धित डिजिटल सन्देश छल। विश्वविद्यालयक पाँच सय प्रविष्टिक फाइल जांचक एक सम्भावित सामग्रीक रूपमे दर्ज भेल, स्वतः अपराधी खाताधारकक सूचीक रूपमे नहि। निरीक्षक सीमा लिखित रूपेँ कारण दर्ज करौलनि जे तत्काल कोन साक्ष्य सुरक्षित रखबाक अछि, किनका उपस्थितिक सूचना देबाक अछि आ किनका विरुद्ध बलपूर्वक कार्रवाई आवश्यक भऽ सकैत अछि। अमनदीप सूद उपस्थितिक सूचना पाबि अपन वकीलक संग कार्यालय पहुँचल आ डिजिटल कार्य-निर्देशक सम्बन्धी अपन जानकारी देलक। ओकरा

गिरफ्तार नहि कएल गेल। तरुण सेठीक सम्बन्धमे किछु विशिष्ट भुगतान-प्राधिकरणक अभिलेख, विवादित कार्यालयी सन्देश आ साक्ष्य-परिवर्तनक आशंकासँ जुड़ल सामग्री एकत्र भेल छल। सीमा लिखित निर्णयमे एही सामग्री आ गिरफ्तारीक आवश्यकता अलग-अलग दर्ज कएलीह।

तरुणकेँ गिरफ्तार कएल गेल तँ ओकरा कारण बताओल गेल आ वकील सँ सम्पर्कक अवसर देल गेल। ओकर पत्नी रीतिका फोनपर पहिल बेर समाचार सुनि देर धरि चुप रहलि। दू बरखक बेटी सोना ओहि समय रंगक कागजपर घर बना रहल छलीह। रीतिका बच्चीकेँ पड़ोसिन लग छोड़ि थानामे पहुँचलि। ओ पूछलीह, “ओ दोषी अछि?” सीमा उत्तर देलीह, “गिरफ्तारी दोषसिद्धि नहि। जाँचक विशिष्ट कारण दर्ज अछि; न्यायालय ओकर वैधता आ आगूक आवश्यकता देखत।” रीतिका पुछलीह, “तखन आज ओकरा कत्तय रखब?” अधिकारी निर्धारित प्रक्रियाक जानकारी देलनि। रीतिका पास कानूनी शब्दसमूहक कतेक अर्थ तत्काल नहि छल; ओकरा केवल एतबा बुझायल जे बेटीकेँ बाबाक अनुपस्थिति बुझेबाक लेल हुनका राति फेर एक कथा बनबय पड़त। ओ बाहर निकलि अपन दुपट्टाक कोनमे चेहरा ढाँपलीह, फेर ध्यान आयल जे रीतिका स्वयं सेहो एक नाम नहि, एक जीवन अछि।

अगिला दिन तरुणकेँ सक्षम न्यायिक दण्डाधिकारी समक्ष पेश कएल गेल। कोठरीमे छत पर घूमैत पंखाक स्वर छल, यद्यपि बाहर मार्चक दुपहर गरम भऽ रहल छल। न्यायाधीश मीनल भाटी पहिने पुलिसक लिखित गिरफ्तारी-कारण देखलनि। सरकारी अधिवक्ता कहलनि जे भुगतानक इलेक्ट्रॉनिक स्रोत, हटाओल फोल्डरक वास्तविक स्थिति आ एक अन्य कार्यालयक सम्पर्कक जाँच करबाक अछि; सीमित पुलिस हिरासत आवश्यक अछि। प्रतिरक्षाक अधिवक्ता सुषमा बेनीवाल कहलनि, “कम्प्यूटर जब्त भऽ चुकल, ग्राहकक सन्देश सुरक्षित अछि, आ हमर पक्षकार भागल नहि छलाह। हिरासतक आवश्यकता अलग कारण सँ सिद्ध करबाक चाही। नौकरीक पद आ मुद्रित नाम अपराधक प्रमाण नहि।” न्यायाधीश पुछलनि, “जाँच पक्षक लग कौन विशिष्ट काम अछि जे बिनु शारीरिक हिरासत पूरा नहि भऽ सकैत?” सरकारी अधिवक्ता उपकरणक जाँच आ एक सम्बन्धित वस्तुक खोजक सीमित उत्तर देलनि; अदालतक समक्ष ओहि उद्देश्यक लिखित विवरण प्रस्तुत भेल। हुनकर आदेश कारण सहित

सीमित अवधि धरि दैहिक हिरासतक अनुमति देलक, व्यापक माँग स्वीकार नहि कएलक। दोषक प्रश्न सुनबाईक विषय नहि छल।

तरुण न्यायालयसँ बाहर निकलैत पत्नीकेँ दू क्षण देखलक। रीतिका पुछबाक चाहैत छलीह जे “तूँ किएक?” मुदा वकील सँ भेटबाक समय अल्प छल। ओ केवल कहलनि, “बेटीकेँ कहिहक जे बाबू जल्दी पत्र लिखत।” तरुण सिर झुकौलक। सुषमा रीतिकाकेँ अदालतक आदेशक सीमा बुझौलीह आ जमानतक उपलब्ध उपाय विषयमे कहलीह, मुदा परिणामक आश्वासन नहि देलीह। रीतिका चुप रहलीह, फेर पूछलीह, “जँ ओ वास्तवमे ककरो ठगल होय तँ?” सुषमा उत्तर देलीह, “तखन प्रमाणक आधारपर न्याय होयत। जँ ओहि आरोपक किछु भाग गलत होय, तकर निर्णय सेहो प्रमाण सँ। अहाँ ओकर पत्नी छी, ताहि लेल अहाँक पीड़ा वास्तविक अछि; मुदा अहाँक पीड़ा अकेले निर्णय नहि करि सकैत।” रीतिका ई उत्तर सुनि क्रुद्ध नहि भेलीह। हुनका पहिल बेर बुझायल जे वकीलक सही सान्त्वना हमेशा जीतक वचन नहि होइत।

मुकुल अदालतक गलियारामे अपन भाई रमेश संग उपस्थित छल। ओहि दिन ओकरा गवाही देबाक आवश्यकता नहि छल, मुदा ओ देखय चाहैत छल जे जकरा विरुद्ध शिकायत कएने अछि ओकरा न्यायालयमे कतेक सम्मान भेटैत अछि। रमेश कहलक, “जँ आरोपीकेँ एतेक सुनबाई भेटत तँ हमर सात हजार पाँच सय कहिया घुरत?” मुकुल उत्तर देलक, “हमरो प्रश्न अछि। मुदा जँ हमरा खोखला आरोपपर कियो पकड़ि लैत, तँ हमरो सुनबाई चाही।” रमेश बहिनक पढ़ाइक खर्च निकालबाक जकाँ सोचैत रहल, फेर कहलक, “तूँ पढ़िकय बहुत कठिन बात बजय लगलें। घरमे तखनो रुपैया नहि अछि।” मुकुल अपन कापीक एक कोनमे अदालतक तिथि लिखलक। ओ बुझैत छल जे परिवारक आर्थिक संकट कानूनी सिद्धान्तक व्याख्यासँ नहि मिटैत; मुदा उचित प्रक्रिया छोड़लासँ संकट दोसर घरमे पहुँचि सकैत अछि। ओ भाईकेँ चाय पियाबय लऽ गेल। चायक गिलासक काँपैत भाप दूनू भाइकेँ किछु समय एकहि तापमे बैसा लेलक।

सीमा चौधरी जाँच कार्यालय लौटि लिखित आदेशक शर्त अनुसार समय-सूची बनौलीह। तरुणसँ जे प्रश्न पुछल जाए, ओकर समय, उपस्थिति आ उत्तरक विवरण व्यवस्थित रखबाक

निर्देश देलनि। निजी बैंकक खाता-अभिलेख लेल अधिकृत मार्ग जारी छल, मुदा सभ पाँच सय नामपर एकहि बेर रोक लगेबाक मांगक कोनो ठोस आधार ओ स्वीकार नहि कएलीह। कनिष्ठ सहायक सन्दीप कहलक, “जँ तुरन्त रोक नहि लगौलहुँ तँ पैसा निकलि जाएत।” सीमा उत्तर देलीह, “जतय विशिष्ट संदिग्ध लेनदेन, जोखिम आ वैधानिक अधिकार अछि, ओतय त्वरित कार्रवाईक प्रश्न अलग देखू। मुदा पाँच सय पाँतिमे जकरा केवल छात्रवृत्ति आयल अछि, ओकर भोजनक पैसा रोकि देबाकेँ सावधानी नहि कहल जाएत।” सन्दीप चुप भेल। सीमा अपन आदेश-फाइलमे एक पन्ना जोड़लीह—“व्यक्तिविशेषक खाता आ लेनदेनक कारण पृथक बताओल जाय।” एहि पन्नाक महत्त्व एखन केओ पूरा नहि बुझल, मुदा अगिला मासक विवादक बीज ओहिमे छल।

गगनदीप बैंक-शाखामे एक छोट परिशिष्ट तैयार कएलीह। हुनका उपलब्ध अधिकृत दस्तावेजमे केवल निश्चित लेनदेनक विवरण छल; पूरा पाँच सय खाता हुनकर शाखाक नहि छल। एक सहकर्मी कहलक, “जँ पुलिसक चिट्ठी आए तँ सभ खाते बन्द करि दिअ।” सरबजीत कहलीह, “चिट्ठीमे जे लिखल अछि से पढ़ब, अधिकार-सीमा देखब, अनि जोखिमक समुचित उत्तर देब। बैंकक कर्तव्य जाँचमे सहायताक अछि, किन्तु आदेशक बाहर ककरो आजीविका रोकबाक नहि।” गगनदीप अपन पुस्तिकामे लिखलीह—“रोकक आदेश, खाताक पूरा स्थिति, वैध आयक स्रोत, समीक्षा।” हुनका माँक घर-आधारित बुनाईक मजदूरीक याद आयल। यदि एक छोट खातेपर गलतीसँ रोक लागल, तँ दवाई, किराया, विद्यालयक शुल्कक समय कोनो जाँचकर्ताक सुविधा लेल ठाढ़ नहि रहत। ओहि साँझ गगनदीप माँकेँ फोन कएलीह आ पुछलीह जे मेहनताना भेटल कि नहि। माय हँसलीह—“हमरा तेँ बैंकक सहूलियत नहि, अपन बेटीक आवाज चाही।”

सुनीता लुधियानासँ जोधपुर नहि गेलीह; ओ पुरान श्रम-विवादक प्रमाणित अभिलेख जुटेबामे लागलीह। बलदेव सिंह हुनका संग श्रम-कार्यालय पहुँचलाह। फाइलक किछु पन्ना पुरान धूलसँ करियाहट पकड़ने छल, मुदा पंजीक तिथिपर मुहर स्पष्ट छल। हरदेव चौहान नामक उपस्थिति-प्रविष्टि ओहि वर्ष दिसम्बर धरि चलैत देखाइत छल जखन एक सहकर्मी कहलने छल जे ओ महीनासँ कारखाना नहि आएल। सुनीता प्रमाणित प्रति लेल आवेदन

देलीह; कर्मचारी समय देलक। बलदेव कहला, “जे आदमी वर्षसभ सँ गुम छथि, हुनकर नाम एखन किएक याद पड़ल?” सुनीता उत्तर देलीह, “गुम नहि, पञ्जीमे उपस्थित। व्यक्ति जीवनमे कतय छलाह से हम नहि जनैत छी। ई अन्तर बुझबाक लेल हिसाब उठौलहुँ।” रामलखन बादमे कागज देखिते कहलनि, “हरदेव नामक दू मजदूर हमर समयमे अलग-अलग कारखानामे छल। हरदेव कहिते एकहि चेहरा नहि बनाइह।” बेटी पिताक ई स्मृति अपन नोटमे जोड़लीह।

रिद्धि प्रमाणित प्रतिक प्रतीक्षा करैत मरुधरक सूची फेर देखलीह। पाँच सय पाँतिक अन्तिम भागमे एक प्रविष्टि छल—‘एच. चौहान’; ओकर लग ‘पूर्व श्रमिक-संपर्क’ लिखल छल। बैंकक पूर्ण सङ्केत नहि, मोबाइलक अपूर्ण अङ्क आ एक अस्पष्ट सेवा-समय छल। रिद्धि एखन सुनीताकेँ ई पाँति देखौलनि नहि। पहिने ओ सूची बनाबयवला मूल प्रणालीक क्षेत्र-शीर्षक जाँचलीह—‘पूर्व श्रमिक-संपर्क’ वास्तवमे श्रमिकक पूर्व पदक वर्णन छल कि सॉफ्टवेयरक एक प्रशिक्षण-वर्ग? तकनीकी सहायक कहलक जे ई फॉर्मक पुरान विकल्प सेहो होय सकैत अछि। “तखन ई व्यक्ति-परिचयक प्रमाण नहि,” रिद्धि कहलीह। सहायक उत्तर देलक, “एखन नहि।” ई दू शब्द ओ अपन कापीमे लिखलीह। ई स्वीकृति भविष्यक काज रोकैत नहि छल, ओकर सीमा तय करैत छल।

कुसुम एहि बीच विश्वविद्यालयक एक खुला कार्यक्रम आयोजित कएलीह—“रोजगार, सूचना आ विद्यार्थीक अधिकार।” ओ कार्यक्रम पुलिसक अपराधी-खोज सम्मेलन नहि छल। वास्तविक नौकरी पओनिहार शैलेश, रकम गमौनिहार मुकुल, गुप्त अङ्क बचौने मोहन, आ डेटा-सम्बन्धी चिंता उठौनिहार पायल अलग-अलग बोललाह। पायल कहलनि, “हम एहि मंचपर अपन परामर्शक कथा नहि खोलब। मुदा विश्वविद्यालयक प्रत्येक सेवा लेल स्पष्ट सहमति चाही।” शैलेश कहलनि, “हमरा नौकरी भेटल, मुदा एहि कारण दोसरक शिकायत नकारि नहि सकैत छी।” मुकुल कहलक, “हमर पैसा जाएबाक सन्देश हमरा विरुद्ध मजाक नहि बनय।” मंचक आगू राखल खाली कुर्सीपर अरविन्द आ उमा पारीक एकाएक बैसला। अरविन्द कहलनि, “हम अनुबन्धक भाषा सुधारबाक जिम्मेदारी लैत छी।” हुनकर वाक्यमे पूर्ण

प्रायश्चित्त नहि छल, मुदा पहिल बेर प्रशासन आ विद्यार्थी एकहि टेबुलपर एक-दोसरकेँ सुनि रहल छल।

नूर जहाँक लेख प्रकाशित भेल—“पाँच सय पाँति, पाँच सय अभियुक्त नहि।” लेखमे कोनो व्यक्तिगत खाता-सङ्केत छपल नहि। ओ अदालतक आदेशक सीमाक चर्चा कएलीह, दूनू पक्षक कथन सत्यापित रूपमे रखलीह, आ जे प्रश्न अनुत्तरित छथि हुनका स्पष्ट रूपेँ अनुत्तरित कहलीह। एक पाठक नाराज पत्र लिखलक—“एतेक सावधानी सँ अपराधी बचि जाएत।” नूर उत्तर प्रकाशित नहि कएलीह, मुदा अपन निजी कापीमे लिखलीह—“असत्य आरोप छापि कऽ अपराधक जाँच मजबूत नहि होइत। पीड़ितक अधिकार आ आरोपितक निष्पक्ष विचारण एक-दोसराक विरोधी नहि।” ओहि दिन हुनका सहर बानोक फोन आयल। “हमर बच्चासभ अहाँक लेख पढ़ि पुछैत अछि,” सहर कहलीह, “नामक आगू जे सङ्ख्या अछि ओकर अर्थ की?” नूर कहलीह, “कहियौ, कागजकेँ मनुष्य बनबाक अनुमति नहि देब।” नूर अपन पुरान २०२४ क चुनावी अभिलेख सम्बन्धी काम याद कएलीह। पारदर्शिता आ अपमानक बीच सीमारेखा तखनहुँ एतेक स्पष्ट नहि छल।

मार्चक अन्तिम सप्ताहमे रेवती अपन पितासँ दरभंगामे भेट करबाक लेल गेलीह। शिवनारायण झा वृद्ध भऽ गेल छलाह; पुस्तकक पृष्ठ पलटैत अँगुरी काँपैत छल, मुदा प्रश्नक स्वर स्पष्ट छल। रेवती हुनका पाँच सय पाँतिक कथा संक्षेपमे कहलीह। पिता सुनि कहलनि, “सन् २००० मे नीलकान्तक जप्त बहीमे एक मृतकक नाम छल। तोरा याद अछि?” “अछि,” रेवती कहलीह, “एखन फेर नाम आ व्यक्ति बीच दूरी अछि।” शिवनारायण पुछलनि, “आन की बदलल?” रेवती उत्तर देलीह, “एखन बही मनुष्यक जेबमे नहि, अनेक सर्वरक बीच अछि; एक नकल एक रातिमे हजार लोक धरि पहुँचि सकैत अछि। एकरा सुरक्षित रखब जतेक कठिन, ततेक जरूरी।” पिता कहला, “तखन तोहर पहिल कर्तव्य सेहो ओहने अछि—जे कागज कहैत अछि, तकरा सँ बेसी नहि कहिह।” रेवती हुनकर पुस्तक बन्द कएलीह। दुआरिपर साँझक रङ्ग फैलि रहल छल।

अमनदीप सूदकेँ जाँच अधिकारीक सूचनापर उपस्थित भेलाक बाद खरड़ लौटबाक अनुमति भेटल, मुदा नौकरीक कार्यालय बन्द-जेकाँ छल। पिताक औषधालयक दवाईक पर्ची

मेजपर बिखरल छल। अमनदीपक छोट बहिन कृतिका अपन परीक्षा-प्रवेशपत्र लऽ पुछलक, “भैया, अहाँ एखन काममे छी कि नहि?” अमनदीप कहलक, “एखन नहि बुझाइत। मुदा जकर उत्तर जानैत छी से कहि देने छी; जकर नहि जानैत से नहि बनौने छी।” कृतिका अपन प्रवेशपत्रक नाम आ पिता नामक वर्तनी जाँचय लगलीह। अमनदीप सेहो एक दिन विद्यार्थीक नामक एहन सूची बनौने छल, जतय पुरान नामक त्रुटि ठीक करब ओकर छोट काज छल। आब ओकरा बुझाइत छल जे कोनो नामक ठीक वर्तनी बाँचेनाइ सेहो पेशागत जिम्मेदारी अछि। ओ अपन नियुक्तिपत्र, वेतन-पर्ची आ जाँचमे देल बयानक तिथि एक खाली फोल्डरमे रखलक। ओ आशा करैत छल जे ओकर वैध काजक लेखा ओकरा विरुद्ध चलैत अनुमानसँ अलग देखल जाएत; मुदा भविष्यक आदेशक परिणाम एखन अनिश्चित छल।

लुधियानामे गगनदीप कौर एक वृद्ध श्रमिक महिलाकेँ बैंकक काउण्टर लग बिठौलीह। महिलाक नाम शान्ति देवी छल, आ ओ अपन मजदूरीक खाता देखय आयल छलीह। फोनपर आयल सन्देशमे अनिवार्य पहचान-नवीकरणक बहानासँ एक दूरक कार्यालयमे पहुँचबाक सूचना छल। गगनदीप अधिकृत बैंक-प्रणाली सँ देखलीह जे शाखाक दिससँ एहन कोनो आदेश नहि गेल छल। ओ शान्तिक शिकायत पावती सहित दर्ज करबाक मार्ग बतौलीह, मुदा खाता बन्द करबाक सलाह नहि देलीह; मजदूरी आबयवला खाता बन्द भेल तँ संकट दोब्बर होइत। शान्ति कहलीह, “हम पहिने बुझैत रही जे खाताक चाभी बैंक लग अछि। एखन फोनमे सेहो कियो चाभी बनाबय चाहैत अछि।” गगनदीप हुनका सुरक्षित व्यवहारक बात बुझौलीह। काउण्टरक पाछाँ सरबजीत सुनैत छलीह। हुनका लागल जे अगिला दिनसभमे बैंकक असल परीक्षा केवल संदिग्ध रकम पकड़बाक नहि, वैध श्रमिकक कमाइ बचाबयबाक सेहो होएत।

ओहि साँझ सुनीताक फोन रिद्धि लग आयल। प्रमाणित श्रम-पञ्जी भेटि गेल छल, जाहिमे ‘हरदेव चौहान’ नामक पुरान प्रविष्टि छल। रिद्धि अपन अधिकृत सूचीक अस्पष्ट ‘एच. चौहान’ पाँति फेर देखलीह। दुनू पन्नाक नामक पहिल अक्षर आ एक श्रमिक-सम्पर्क सम्बन्धी शब्द मिलैत छल; समय, पूर्ण पहिचान, बैंकक मार्ग आ व्यक्ति-विशेषक नियन्त्रण एखन नहि मिलल छल। रिद्धि कहलीह, “अहाँक पन्ना आ हमर पन्ना सम्भवतः अलग इतिहासक छथि। हम एकर मूल स्रोतक विधिसम्मत तुलना करब; एखन एक आदमी कहि नहि सकैत छी।” सुनीता मुस्कुरौलीह। “हुनकर नामक दोष हमरा नहि चाही,” ओ कहलीह, “आ जँ हमर पुरान मजदूरीक रुपैया ककरो माध्यमसँ गेल अछि तँ ओकर प्रमाण चाही।” फोन काटिकय दुनू महिला अपन-अपन कागज अलग लिफाफामे रखलीह। एतबा निश्चित भेल जे सत्ताइस वर्षक दूर धरि फैलल कथा आब एक नव बहीक चौहद्दी लग आबि पहुँचल अछि। बहीमे पाँच सय क्रम छल; किन्तु एको मनुष्यक अन्तिम न्यायिक परिचय एखन नहि लिखल गेल छल।

अध्याय ३५ — खाता रोकल गेल

जोधपुर, लुधियाना, खरड़ आ दरभंगा; अप्रैल सँ सितम्बर २०२६

चैतक अन्तिम साँझ जोधपुरमे लू एखनो नहि उठल छल, मुदा दिनक धूपमे छात्रावासक पुरान खिड़कीक लोहा गरम भऽ गेल छल। अर्जुन मीणा बससँ उतरि विश्वविद्यालयक बैंक-सहायता केन्द्र पहुँचल। हाथमे छात्रवृत्तिक स्वीकृति-पत्र आ छोट बहिनक विद्यालय-शुल्कक पर्ची छल। खिड़कीक भीतर बैसल कर्मचारी ओकर खाता-सङ्ख्या कम्प्यूटरमे डालि देखलक आ फेर दोसर कर्मचारीकेँ बजौलक। “अहाँक खातापर निकासी रोक अछि,” ओ कहलक। अर्जुन पहिने बुझलक जे मशीन खराब अछि। ओकर खाता सँ जहिना पहिने तीन हजार निकालैत छल, ओही तरह आइयो निकालि लेत। कर्मचारी दोसर बेर स्क्रीन देखौलक। उपलब्ध रकम तेरह हजारसँ ऊपर छल, निकासी योग्य शून्य। अर्जुनक हाथक पर्चीमे लिखल शुल्कक अन्तिम तिथि अकस्मात् शब्द नहि, दुआरि बन्द होयबाक आवाज बनि गेल।

बैंकमे पाँति लगबैत एक वृद्ध शिक्षक अर्जुनक पीठपर हाथ रखि पुछलनि, “किछु कागज छुटि गेल अछि?” अर्जुन उत्तर नहि दऽ सकल। दू बरख पहिने ओकर पिता रेतीला खेत बेचने बिना पढ़ाइ जारी राखबाक लेल घरक एकमात्र बकरीक दाम जमा कएने छलाह। एखन छात्रवृत्तिक पैसापर रोक लगनाइ केवल बैंकक निर्देश नहि छल, परिवारक आगाँक महीनाक भोजनक प्रश्न छल। काउण्टरक कर्मचारी दया सँ देखलक, मुदा व्यक्तिगत दया सँ कम्प्यूटरक आदेश नहि हटैत। ओ एक आवेदन देलक, “रोक लगेनिहार कार्यालयक विवरण लिखितमे माँगू। जतेक बैंक बता सकैत अछि, देत।” अर्जुन पुछलक, “हम अपराध कएने छी?” कर्मचारी कहलक, “एहि स्क्रीन पर अपराधक निर्णय नहि लिखल अछि।”

ओहि भोर लुधियानामे सुनीता पासवानक श्रमिक सहायता-कक्षमे दू महिला एकहि समय पहुँचलि। पहिली शान्ति देवी, जिनकर वृद्ध पतिक दवाईक रुपैया बैंकमे छल; दोसर चम्पा देवी, जिनकर सिलाइ-कामक भुगतान पछिला रात्रि खातामे आयल छल, मुदा भोरमे सब्जीवला लग

भुगतान अस्वीकृत भऽ गेल। दुनू महिलाक समस्या देखबा सुनबामे एक-जेकाँ छल, मुदा खाता खोलबाक कारण, बैंक आ रोकक आधार अलग छल। सुनीता हुनका बिठाकय पानि देलीह। “पहिने लिखू—रोकक तिथि, शाखा, सूचना, उपलब्ध रकम आ आवश्यक भुगतान,” ओ कहलीह। चम्पा अपन फाटल रजिस्टर निकाललीह। “रुपैया अछि तँ घरमे चूल्हा किएक नहि जरत?” हुनकर प्रश्नक उत्तर सुनीता लग तुरन्त नहि छल।

दोपहरमे सुनीता बैंक अधिकारी सरबजीत कौरकेँ फोन कएलीह। सरबजीत साफ कएलीह जे चम्पाक खातापर बैंकक आन्तरिक परिचय-सत्यापनक अलग रोक छल; शान्तिक खातापर एक अन्य राज्यक साइबर-जाँचक अनुरोधक आधारपर निश्चित रकम सुरक्षित राखबाक सूचना छल। “एकरा एक नाम सँ नहि बजाउ,” सरबजीत कहलीह। “परिचयक अपूर्ण कागज, अनुसन्धानक विधिसम्मत रोक, आ अदालतक सम्पत्ति-सम्बन्धी आदेश तीन अलग मार्ग छथि।” सुनीता उत्तर देलीह, “हमर लोकक लेल सबक परिणाम एक अछि—रुपैया हाथमे नहि। मुदा उपचार अलग-अलग अछि, से हम बुझब।” सरबजीत हुनका शाखामे अधिकृत प्रतिनिधिसहित आबय कहलनि। ओ पुलिसक गोपनीय फाइल देखेबाक वचन नहि देलीह; केवल बैंक अपन आदेशक सीमा बुझा सकत, एतबे कहलनि।

सरबजीतक टेबलपर कनिष्ठ कर्मचारी गगनदीप एक पन्ना राखलीह। ओहि पन्नामे दू शब्दक बीच लकीर छल—‘निश्चित राशि सुरक्षित’ आ ‘पूरा खाता बन्द’। गगनदीप कहलनि, “काल्हि एक ई-मेलमे पाँच सय नामक सन्दर्भ देल गेल छल। ग्राहक सेवा-केन्द्रमे कियो सभक खाता बन्द करबाक सलाह देने छल।” सरबजीत पन्ना फेर पठौलनि। “पाँच सय प्रविष्टिक फाइल विश्वविद्यालयसँ भेटल, बैंकक पाँच सय अपराधी खाता नहि। एहन सामान्य आदेश ककर हस्ताक्षर सँ आयल? अपराधक विशिष्ट विवरण अछि? अधिकारीक अधिकार-सीमा की? बैंकक अपन कर्तव्य की?” गगनदीप पहिल बेर देखलीह जे सावधानी केवल रोक लगेनाइ नहि, गलत रोकसँ बचब सेहो अछि। हुनका माय एखनहुँ घरपर रद्दी कपड़ासँ ओढ़नी बनबैत छलीह; प्रत्येक सौ रुपैयाक मूल्य हुनका मालूम छल।

जोधपुरमे रिद्धि विश्नोई छात्रावासक कार्यालयक बन्द लिफाफा खोलि नहि, ओकर प्राप्ति-पञ्जी पढ़ि रही छलीह। पाँच सय क्रमाङ्कक फाइलक वास्तविक स्रोतक अधिकृत जाँच चलि

रहल छल। एखन विश्वविद्यालयमे नव अफवाह फैलल—‘पुलिस सभ पाँच सय खाता रोकलक’। रिद्धि अपन फोनपर एक-दू छात्रक असहज सन्देश देखलीह, मुदा सूची सार्वजनिक करबाक आग्रह टारि देलीह। हिम्मत अंसारी आ पायल रैगर हुनका भेटय एलाह। पायल कहलनि, “छात्रसभ बैंकमे पाँति लगा रहल अछि। जकर किछु रोक नहि, से सेहो डराइत अछि।” रिद्धि कहलीह, “हम अपन जानकारीक सीमा भीतर तथ्य बतायब। नामक गुप्त सूची वितरित करब समाधान नहि।” तखन अर्जुनक फोन आयल। ओकर आवाजमे क्रोधसँ बेसी अविश्वास छल—“हमर परीक्षा शुल्क आजु जमा नहि भेल।”

अर्जुनक घर जोधपुरसँ बहुत दूर नहि, मुदा बसक भाड़ा घरक साप्ताहिक हिसाबमे अलग लिखल जाइत छल। ओकर माय रेणु मीणा ढाकक पातपर सूखैत बाजरा उलटि रहल छलीह जखन बेटाक फोन आयल। पहिने ओ बैंकक समाचार सुनि नाराज भेलीह। “तूँ ककरो अपन खाता देलहीं?” अर्जुनक मुँहसँ तत्काल ‘नहि’ निकलल, फेर ओ चुप भऽ गेल। माय एहि चुप्पीकेँ सुनि सकलीह। “किछु भेटल छौ? सत्य कह,” ओ कहलीह। अर्जुन कहल—“पछिला बरख एक कार्यक्रममे परिचय देबाक मानधन आयल छल। हमरा लगल अधिकृत प्रशिक्षण छल।” माय कहलीह, “तखन ओहि बातक पावती राखल छौ ने?” अर्जुनकेँ कियो डाँटि नहि रहल छल; ओकरा अपन स्मृतिक भीतरक कोना टटोलबाक समय भेटल छल।

मरुधरक परिसरमे रिद्धि अर्जुनसँ सार्वजनिक गलियारामे नहि, छात्र-सहायता कक्षमे भेंट कएलीह। साथमे विश्वविद्यालयक विधिक सहायता-समन्वयक नसीमा आ छात्र-संघक प्रतिनिधि हिम्मत छल। रिद्धि स्पष्ट कएलीह जे ओ पुलिस नहि, न वकील; ओकर अधिकृत कार्य सूची-स्रोत आ छात्र-हितक संस्थागत तथ्य जुटेनाइ अछि। अर्जुन पहिने कहल जे ओकर बैंकमे छात्रवृत्तिक अंश छल। नसीमा पुछलीह—“किछु आन भुगतान आयल रहय?” अर्जुन बैसबाक ढंग बदललक। “एक बेर चारि हजार दू सय रुपैया आयल छल,” ओ कहल, “कम्पनीक लोक कहलक विद्यार्थीसभकेँ पञ्जीकरण बुझेलाक मानधन।” कोठरीक पंखा घूमैत रहल। एतबे स्वीकारोक्तिसँ कोनो अपराध तय नहि होइत; मुदा पहिल बेर पाँच सय पाँतिक पाछाँ एकटा ठोस, जाँचयोग्य लेनदेन उभरल।

रिद्धि अर्जुनक कथन अपन निजी कापीमे लिखबाक बदला ओकर अनुमतिसँ संस्थागत विवरण-पत्र तैयार कएलीह। रकमक तिथि, भुगतानक घोषित उद्देश्य, जे कर्मचारी मौखिक आश्वासन देलक, आ कार्यक्रमक कतेक छात्र वास्तवमे आयल छल—ई तथ्य रखल गेल। अर्जुन एकटा बात बादमे जोड़लक। “मानधन भेटलाक दू दिन पछाति एक अनजान व्यक्तिक फोन छल। ओ कहलक जे यदि हम फाइलक नाम बदलि देब तँ दोसर भुगतान भेटत। हम मना कऽ देलहुँ।” हिम्मत पुछलक, “फोनक सङ्ख्या अछि?” अर्जुन अपन पुरान मोबाइल निकाललक। ओहि मोबाइलक स्क्रीन टूटल छल; कॉल-पञ्जीमे समय देखाइत छल, मुदा बोलल गेल वाक्यक कोनो ध्वनि-साक्ष्य नहि छल। नसीमा कहलीह, “जे सुनलहुँ से अहाँक बयान अछि। फोनक अस्तित्व अलग जाँचल जाएत।”

खरड़क थानाक कोठरीमे तरुण सेठी अपन अधिवक्ता सुषमा कपूरसँ भेट करैत छल। मार्चक गिरफ्तारी पछाति अदालत पुलिस हिरासतक एक सीमित अवधि देलक छल; ओ अवधि समाप्त भेला पर न्यायिक हिरासतक आदेश भेल छल, आ जमानतक आवेदन लंबित छल। सुषमा ओकरा पूछलीह, “अहाँक खातासँ जे राशि निपटान-व्यापारीक रूपमे निकलल, ओकरा पर अहाँक वास्तविक नियन्त्रण छल?” तरुण कहलक, “कम्पनीक अनुमोदन बिना हम किछु नहि करैत छलहुँ।” सुषमा फेर प्रश्न कएलीह, “तखन अनुमोदन देनिहारक मूल पत्र कहाँ अछि?” तरुणक माथ नीचाँ झुकल। ओ स्वयम्कें निर्दोष कहैत छल, मुदा ‘हम कर्मचारी रही’ मात्र कथनसँ जमानत आवेदनक तथ्यगत कठिनाई दूर नहि होइत।

सुषमा जमानतक अर्जीक दोसर प्रति निकाललीह। अभियोजनक सामग्रीमे व्यापारी-पहिचान, कम्पनीक एक भुगतान-स्वीकृति, दू पीड़ितक लिखित शिकायत आ एक अधूरा सन्देश छल। बचाव पक्षक सामग्रीमे तरुणक मासिक वेतन-पर्ची, संस्थाक अधिकृत पद-विवरण, ओकर पत्नी रीतिकाक निवास-प्रमाण आ जाँचमे अपेक्षित कागज देबाक प्रस्ताव छल। सुषमा कहलनि, “जमानतपर सुनबाईमे अपराध सिद्ध होएत नहि; मुदा न्यायाधीश उपलब्ध आशंका, गवाहक सुरक्षा, साक्ष्यसँ छेड़छाड़क सम्भावना आ उपस्थिति सुनिश्चित करबाक बात देखताह।” तरुण पुछलक, “बैंक रोकल छैक, तखन अदालत हमर काज लेल

धरि की बुझत?” सुषमा स्पष्ट कएलीह—“हिरासत आ खाताक रोक दू अलग आदेश छथि। एकटा न्यायिक समस्या दोसरकेँ स्वतः समाप्त नहि करैत।”

तरुणक पत्नी रीतिका आब अपन सिलाइक छोट कारोबारक रोकल भुगतानसँ परेशान छलीह। ओहि खाताक नाम तरुणक नहि, रीतिकाक छल; मुदा ग्राहकक एक ऑनलाइन रकम कम्पनीक विवादित भुगतान-सङ्केतक संग मेल खयबाक आशङ्कामे बैंकक अनुपालन शाखा ओकरा किछु दिन जाँचमे रखने छल। रीतिका नन्हि बेटी सोनाक पुस्तकक देनदारी सोचैत शाखामे गेलीह। अधिकारी हुनका लिखित जानकारी देलक जे हुनकर व्यक्तिगत खाता पुलिसक निर्दिष्ट सूचीमे नहि, मुदा व्यापारिक भुगतान-प्रदाताक सत्यापन अधूरा अछि। रीतिका पुछलीह, “पति पर अनुसन्धान होयत तखन हमर सिलाइक रुपैया सेहो अपराधक मानल जाएत?” कर्मचारी कहलक, “नहि; मुदा स्रोतक कागज देखबाक आवश्यकता अछि।” रीतिका ओहि उत्तरमे सम्पूर्ण न्याय नहि, कमसँ कम एकटा स्पष्ट उपाय देखलीह।

लुधियानाक श्रमिक सहायताकेन्द्रमे सुनीता ओहि दिन तीन बैंक-पर्चीक अलग-अलग फोल्डर बनौलीह। एकमे चम्पाक परिचय-दस्तावेज पूरा करबाक सूची, दोसरमे शान्तिक खाताक विवादित एक हजार तीन सय पचास रुपैयाक सूचना, तेसरमे रामलखनक पहिनुक बकाया मजदूरीक आदेशक प्रमाणित प्रति। बलदेव सिंह धैर्य हारि कहलनि, “सभ कागज न्यायालयक कागज बनि गेल; हमर जीवन कोना चलत?” सुनीता कहलीह, “एहि तीनू फोल्डरक इलाज तीन तरहक होएत। चम्पाक दस्तावेज बैंकमे, शान्तिक सीमित रोकक कारण अधिकृत जाँचमे, आ बाबूक मजदूरी श्रम-प्राधिकारीक आदेशमे। जँ सभकेँ एकहि अर्जीक भीतर कऽ देब तखन एकर लाभ केओ नहि पाओत।” बलदेवकेँ उत्तर कठिन बुझायल, मुदा ओ कागज अलग करय लागलाह।

शान्ति देवी अपन पतिक दवाईक लेल तीन सय पचास रुपैया उधार कएने छलीह। हुनका बैंक कहलक जे एक हजार तीन सय पचास रुपैया संदिग्ध आर्थिक क्रमसँ जोडल अछि; मुदा पूरा खाता डेबिट नहि होयबाक सूचना भएयो मशीन अन्य रकम निकालय नहि दैत अछि। सरबजीत शाखाक प्राविधिक अधिकारीकेँ बजौलीह। पता चलल जे प्रणालीमे ‘रकम सुरक्षित’ आ ‘सब निकासी रोक’ क दू अलग विकल्प छल; एक अधिकारी अनिश्चित पत्र देखिकय

कठोर विकल्प चुनने छल। सरबजीत तुरन्त दोषारोपण नहि कएलीह। पहिने लिखित पत्रक भाषा, प्राप्ति-समय, शाखाक काम-काजक अभिलेख आ निरीक्षणक अधिकार जाँचलीह। “जँ निर्देश केवल विशिष्ट रकम लेल अछि, तखन पूरक शेष राशि पर रोक किएक?” हुनकर प्रश्न सुरक्षा अधिकारीक दफ्तर धरि गेल।

बैंकक क्षेत्रीय अनुपालन अधिकारी हरप्रीत बैंस वीडियो-बैसारमे जुड़लाह। हुनकर सामने २०२६ क सरकारी मार्गदर्शन आ हालक न्यायिक मतसभक विवरण छल। ओ साफ कहलनि जे अनुसन्धाने हेतु तुरन्त संदिग्ध धन सुरक्षित राखबाक आवश्यकता हो सकैत अछि, मुदा बैंककेँ ईहो देखबाक पड़त जे सूचना ककरा सँ आयल अछि, विशेष अपराध-क्रम कोन अछि, कतेक रकम विवादित अछि, आ सक्षम दण्डाधिकारीकेँ सूचना देबाक वैधानिक प्रक्रिया पूरा भेल कि नहि। “हम पुलिसक आदेशक न्यायाधीश नहि,” ओ कहलनि, “मुदा अस्पष्ट निर्देशकेँ स्वयं अपन विस्तार दऽ सभ ग्राहकक धन बन्द करबाको अधिकार नहि अछि।” सरबजीत चुनल शब्द अपन कार्य-पञ्जीमे लिखि लेलीह। गगनदीपक लेल ई कानूनक भाषण नहि, एक ग्राहकक दवाई लेल रोकल रकमक अर्थ छल।

दूरक खरड़मे अमनदीप सूदक पिता अपन औषधालयक पुरान गल्ला खोलि बैठल छलाह। दुकान बन्द भेला पछाति सँ ओ घरक अन्न, दवाई आ पुरान ऋण एकहि कापीमे लिखैत छलाह। अमनदीप जे नौकरी कएने छल, ओकर बैंक खातेपर नियमानुसार कोई रोक नहि छल, मुदा लोकसभक शंका ताहि रोकसँ कम कठोर नहि। पड़ोसिन कहलीह, “सेतुवाहकक लड़का पाँच सय खाता मे नाम देलक।” अमनदीप उत्तर देबाक इच्छा दबौलक। ओ जानैत छल जे प्रचारक फाइलक किछु अनियमितता ओकर आँखि सामने आयल छल, मुदा नौकरी छोड़बाक पूर्व ओ सभ बात दर्ज नहि कऽ सकल। एखन ओ बैंकमे गेल तँ कर्मचारी आदरपूर्वक व्यवहार कएने छल, मुदा हर लेनदेनक समक्ष अमनदीपकेँ अपन छवि बचबैत लगैत छल। कागजमे निर्दोष होएब आ मोहल्लाक मनमे निर्दोष बुझल जाएब अलग कथा छल।

अमनदीपक बहिन कृतिका बारहम कक्षाक परीक्षा लेल तैयार होइत छलीह। घरे पढ़बाक समय बाहिर पुलिसक वाहन निकलैत तखन ओ खिड़की दिस ताकैत छलीह। “भैया, हमरा पर प्रश्न पूछत?” ओ पूछलनि। अमनदीप कहलक, “अहाँ अपन पढ़ाइ करू; जँ अधिकृत

अधिकारी पूछताह तँ जे देखल अछि से कहब।” कृतिकाक गणित-पुस्तकमे प्रतिशतक अभ्यास छल। ओ कहलीह, “पाँच सयमे कतेक लोकक विरुद्ध प्रमाण अछि?” अमनदीप पुछलक, “तोरा ई प्रश्न के देलक?” ओ उत्तर देलीह, “गामक लोक।” अमनदीप थोड़े देर बाद कहल, “पाँच सय पाँति देखिकय कोनो प्रतिशत नहि निकालल जा सकैत अछि। पहिने पाँतिमे वास्तविक व्यक्ति कतेक छथि से बुझय पड़त।” एतबा साधारण उत्तर देबा लेल सेहो ओकरा पूरा वर्षक डर सँ लड़य पड़ल।

जोधपुरमे नसीमा छात्र-सहायता केन्द्रक देवालपर एक सूचना लगौलीह—“बैंक-खातासँ सम्बन्धित शिकायतमे निजी खाता-सङ्ख्या सार्वजनिक नहि करू।” ओहि पन्नामे शाखाक लिखित सूचना माँगबाक विधि, अधिकार प्राप्त शिकायत-मंच आ निःशुल्क विधिक सहायता कार्यालयक समय छल। कियो व्यङ्ग्य करैत कहल, “केवल सूचना लगबैत रहब? छात्रवृत्ति रोकल अछि।” नसीमा सहमति देलीह। “एहि लेल अर्जुनक मामलेमे लिखित आवेदन सेहो पठाओल गेल अछि। मुदा बिना अनुमति सभक खाता-जानकारी साझा कएल जाए तँ उपचारक नामपर दोसर अन्याय होएत।” पायल सूचना-पत्रक नीचाँ अपन हाथसँ लिखलीह —“परामर्शक गोपनीय जानकारी एहि आवेदनसँ पृथक राखू।” ओहि छोट पाँतिसँ हुनका अपन पुरान अनुभवक पीड़ा किछु कम भेल।

रिद्धि साँझ अपन कक्षमे अर्जुनक विवरणक दुनू प्रति देखलीह। एक प्रति छात्रवृत्ति-पञ्जीसँ सम्बन्धित, दोसर कथित परिचय-मानधनक। छात्रवृत्तिक स्वीकृति स्पष्ट छल, मुदा बैंकमे रोकक कारणवला पत्रक पूर्ण प्रति एखन नहि भेटल छल। रिद्धि अनुराधा सेनकेँ फोन कएलीह। “चारि हजार दू सयक रकम जाँचयोग्य अछि,” ओ कहलीह, “मुदा तेरह हजारक पूरा खाता रोकबाक आधार हमरा अज्ञात अछि।” अनुराधा उत्तर देलीह, “हम बैंकक गोपनीय मूल अभिलेख बिना निष्कर्ष नहि देब। अर्जुनक बयान लिखित अछि तँ अधिकृत जाँचकेँ देल जा सकैत अछि। विश्वविद्यालय ओकर छात्रवृत्ति वैध रूपेँ स्वीकृत भेल अछि कि नहि, से स्वतंत्र रूपेँ बताबय सकैत अछि।” रिद्धि फेर अपन कापीमे लिखलीह—“साहाय्यक अधिकार अपराध-निष्कर्ष नहि।”

अप्रैलक दोसर सप्ताहमे जोधपुरक एक छोट बर्तन-दुकान पर ‘निकासी निषिद्ध’ लिखल सूचना आइल। दुकानदार याकूब अंसारी लोहाक थारी चमकाबैत रहला। हुनका एक पाख सँ ग्राहकक उधार, दोसर पाख सँ थोक व्यापारीक देनदारी छल। एक विद्यार्थी पुरान पंखाक मरम्मति करबाक रुचि सँ हुनकर दुकान लग आयल रहय; ओ विद्यार्थी प्रशिक्षणक एक निजी पोर्टलमार्फत किछु सामग्री खरीदने छल। बादमे ओहि पोर्टलक भुगतान-सङ्केत एक साइबर शिकायतक लेनदेनक अनुक्रममे देखाओल गेल। याकूबक खातामे ओहि सामग्रीक बिक्रीक रकम छोट छल, मुदा पूरा व्यापारिक निकासी पर रोक लागल छल। ग्राहक सभ अपन बर्तन लऽ जाइत, याकूब थोक व्यापारीकेँ पैसा नहि दऽ सकैत। हुनकर पत्नी जमीलाक हिसाबमे हर दिन पाँच-सात आदमीक भरोसा घटैत गेल।

याकूब अपन दुकानक चाबी जमीलाकेँ दऽ नसीमाक कार्यालय पहुँचलाह। “हम न्यायालयमे वर्ष-वर्ष नहि लड़ि सकब,” ओ कहलनि। नसीमा हुनकासँ पहिने क्रय-बिक्रीक बीजक, माल पहुँचबाक रसीद, खाता-विवरण आ शाखाक सूचना माँगलीह। याकूब डरि गेलाह—“एतेक निजी कागज?” नसीमा बजलीह, “एहि कागजक बिना हमरो केहनो शब्द प्रमाण नहि होएत। मुदा ई सामग्री अनावश्यक रूपसँ सार्वजनिक नहि होएत।” जमीलाक सिलाइक समूहक दू सदस्य सेहो आएल छलीह। ओ कहलीह जे याकूबक दुकान बन्द भेलासँ सामुदायिक रसोइमे कुप्पी आ थारीक आपूर्ति प्रभावित होएत। समस्या केवल एक व्यपारीक लाभक नहि, शहरक असंख्य छोट आपसी निर्भरताक छल।

रेवती झा दिल्लीक कार्यालयमे याकूबक लिखित विवरण पढ़ि रही छलीह जखन शशिभूषण हुनका पुरान नीलकान्त साहक फाइल निकालि देलक। “सन् २००० मे तखन बहीक नामपर दुकानक दरवाजा पर मुहर लागल छल,” ओ कहलक। रेवती मुस्कुरौलीह नहि। “तखन घरे सीधा जप्ती छल, एखन मोबाइलक स्क्रीन पर कारोबार रुकैत अछि। मुदा अधिकारक प्रश्न ततेक पुरान अछि।” ओ याकूबकेँ फोन कऽ स्पष्ट कएलीह जे हुनकर मामला पुलिसक विशेष अनुसन्धानक हिस्सा अछि; तत्काल सबै खाते खोलबाक आदेशक वचन नहि देल जा सकैत। पहिने सही अधिकारक्षेत्र, पुलिसक लिखित सूचना आ खातेपर रोकक प्रमाण जुटय पड़त। याकूब उत्तर देलनि, “हमरा जल्दी न्याय चाही, मुदा झूठ भरोसा नहि।”

ओहि सप्ताह निरीक्षक सीमा चौधरीकेँ तीन राज्यक शाखासँ तीन तरहक लिखित उत्तर भेटल। एक बैंक किछु विशिष्ट लेनदेनक राशि मात्र सुरक्षित रखने छल। दोसर बैंक एक सामान्य जाँच-सन्दर्भ देखिकय पूरा निकासी बन्द कऽ देने छल। तेसर बैंक अपन ग्राहकक परिचय-नवीकरणक प्रश्नकेँ पुलिसक जाँचक रोकक सङ्गे मिला देलक छल। सीमा अपन कनिष्ठ अधिकारीकेँ कहलीह, “हम जे लिखलहुँ से देखू; बैंक जे बुझलक से अलग होए सकैत अछि।” मूल अनुरोधमे मुकुलक भुगतानक सात हजार पाँच सयक वित्तीय मार्ग, किछु निश्चित प्राप्तकर्ता-पहिचान आ अतिरिक्त अभिलेख माँगल गेल छल; पाँच सय प्रविष्टिपर सामूहिक रोकक स्पष्ट अधिकृत आदेश नहि छल। तखन प्रश्न उठल—कोन स्तरपर सन्देश विस्तार पाबि गेल?

सीमा अपन कार्यालयक निर्गत-पञ्जी जाँचलीह। एक प्रेषित ई-मेलक साथ संलग्न प्रारम्भिक सूचीमे ‘सम्भावित सम्बन्धित’ लिखल छल; आ अगिला कार्यालयक सार-सूचनामे ‘सम्बद्ध खाते’ शब्द आयल छल। कोन सहायक एहि सार-सूचनाकेँ बनौलक, ओकर समय-चिह्न देखल गेल। कनिष्ठ अधिकारी विनोद पालीवाल घबराहटमे कहलक, “हम सोचलहुँ बैंककेँ सतर्क रहबाक चाही।” सीमा कठोर स्वरमे नहि, स्पष्ट स्वरमे कहलीह, “सतर्कता आ रोक एक नहि। अहाँ जे शब्द लिखल, ओहि शब्दक कारण ककरो भोजन रोकिना जा सकैत अछि।” विनोद तुरन्त अपन त्रुटि सुधारेबाक पत्र तैयार करबाक अनुरोध कएलक। सीमा ओ पत्रकेँ मूल संचारक आधिकारिक सुधारक रूपमे पठेबाक निर्देश देलीह, मुदा पहिले सम्पूर्ण प्रवाहक नकल सुरक्षित करबौलीह।

पुलिसक विधिक परामर्शदात्री साधना माथुर दस्तावेज देखिकय कहलीह, “भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिताक अन्तर्गत अपराधसँ सम्बन्धित सम्पत्ति सुरक्षित रखबाक अधिकार, दण्डाधिकारीकेँ रिपोर्ट देबाक कर्तव्य आ सम्पत्तिक कुर्की अथवा पुनर्स्थापनाक पृथक प्रक्रिया अछि। एतय कोन आदेश वास्तवमे उपयोग कएल गेल—एही सँ शुरू करू। कानूनक दू धाराकेँ एकहि कागजपर घुसौला सँ अधिकार नहि बढ़ैत।” सीमा हुनका पुछलीह जे तत्काल अनियमितताक निराकरण कोना होयत। साधना उत्तर देलीह, “विशिष्ट संदिग्ध रकमक सुरक्षा आवश्यक रहल तँ ओकर कारण लिखू, न्यायिक पर्यवेक्षणक अभिलेख ठीक करू, आ

निर्दोषक अतिरिक्त रकमपर लटकल रोकक समीक्षा माँगू। जँ व्यापक रोक चाही तँ सक्षम वैधानिक प्रक्रिया अपनाबू, केवल कम्प्यूटरक डर नहि।”

इएह समय तरुणक जमानत अर्जीक तारीख आयल। अदालतक परिसरमे रीतिका अपन बेटी सोनाकेँ पड़ोसिनक संग छोड़ि आयल छलीह। सुषमा कपूर लिखित बहसमे कहलीह जे अधिकांश उपकरण जप्त भऽ चुकल अछि, तरुणक ठेगाना स्थिर अछि, आ जाँचमे उपस्थित रहबाक बाध्यता तथा साक्षीसभसँ सम्पर्क नहि करबाक शर्त राखल जा सकैत अछि। अभियोजनक प्रतिनिधि प्रतिवाद कएलनि—फाइलक स्रोतक एक संचालक एखन उपलब्ध नहि, आ भुगतानक मुख्य व्यापारिक पहचानक अधिकार-क्रम अधूरा अछि। न्यायाधीश मीनल भाटी दूनू पक्षसँ समय-चिह्न आ अनुसंधानक वास्तविक प्रगति पूछलनि। ओहि क्षण तरुणक घरक दरिद्रता अदालत लेल सहानुभूतिक तथ्य छल, मुदा आरोपक प्रमाणक परीक्षा तकर सँ पृथक छल।

न्यायाधीश आदेश पढ़ैत कहलनि जे अदालत एखन दोषक निर्णय नहि करैत अछि। जाँचक पहिल चरण समाप्त भऽ चुकल, महत्त्वपूर्ण सामग्री सुरक्षित अछि, मुदा किछु साक्षीक बयान शेष अछि। उपलब्ध विशिष्ट कारण तौलि तरुणकेँ निश्चित शर्तपर जमानत देल जा सकैत अछि: निर्धारित तिथिमे उपस्थित होएब, प्रमाणसँ छेड़छाड़ नहि करब, सम्बन्धित साक्षीकेँ दबाव नहि देब, आ यात्रा-विवरणक अनुपालन। अभियोजनकेँ जँ नव ठोस सामग्री भेटत तँ विधिसम्मत अनुरोधक अधिकार रहत। आदेश सुनिते रीतिका रोयबाक प्रयास रोकि देलीह। ओकरा एहि क्षण न्याय जीतल नहि बुझायल, केवल पति अपन बिछानापर फेर बैसि सकत—एतबासँ एकटा साँझक भार बदलल।

तरुण घर लौटलक तँ सोना दौड़ि ओकर घुटना पकड़लक। घरमे रीतिका सिलाइक मशीनक अधूरा चक्कर पूरा करैत छलीह। तरुण पुछलक, “हमर बैंकक खाता एखन?” रीतिका कहलनि, “अहाँक जमानतसँ बैंकक रोक नहि हटल। हमर व्यापारिक सत्यापनक फाइल अलग चलैत अछि।” तरुणक मुँहपर एखन बड़का जीतक हँसी नहि छल। ओ अपन छोट मेजपर बैठि बेटीकेँ वर्णमाला लिखेबय लगल। ‘अ’ लिखैत सोनाक हाथ डोलल। तरुण ओकर अँगुरी पकड़ि अक्षर पूरा करौलक। ओ सोचैत छल—जे मनुष्यक हस्ताक्षर सँ आदेश

निकलैत अछि, तकरा अगिला लोकक हाथ धरि पहुँचबाक लेल कतेक कड़ी पार करय पड़ैत अछि। एहि घरक छोट अभ्यास ओकरा अपन पुरान हस्ताक्षरसभ याद करबैत छल।

जोधपुरक अदालतमे याकूबक प्रार्थनापत्र पहिल सुनबाई लेल सूचीबद्ध भेल। रेवती स्वयं दूरस्थ संपर्कपर उपलब्ध छलीह, स्थानीय अधिवक्ता उषा पारीक उपस्थित छलीह। प्रार्थनाक मूल आग्रह छल—खातेपर लगाओल रोकक विधिक आधार स्पष्ट कएल जाए, वैध व्यापारिक लेनदेनक प्रमाण देखल जाए, आ विवादित रकम सँ अलग शेष धनक उपयोग सम्बन्धी उपयुक्त आदेश कएल जाए। राज्यक अधिवक्ता कहलक जे बहुराज्यीय जाँचमे धनक गति तेज होइत अछि आ समयपूर्व रोक हटेलासँ अनुसन्धान बाधित भऽ सकैत अछि। न्यायिक दण्डाधिकारी वकीलसभक तर्कक बाद पहिने मूल प्रेषित सूचना, जाँच-सन्दर्भ आ बैंकक वास्तविक रोकक विवरण मँगौलनि। ‘जे निर्णयक आधार अछि ओकरा देखे बिना राहत अथवा अस्वीकार दूनू अनुमान होएत,’ न्यायालयक टिप्पणी छल।

प्रार्थनाक नकल मँगबैत दण्डाधिकारी एक अन्य प्रश्नो उठौलनि—जँ बैंकक रोक मूल सूचनासँ अधिक विस्तृत अछि तँ ओकर समय, लगेनिहार कर्मचारी आ प्रणालीक प्रविष्टि ककर पास अछि? उषा पारीक कहलीह जे ग्राहककेँ केवल ‘कानूनी निर्देश’ कहल गेल छल; विस्तृत कागज बैंकक नियन्त्रणमे अछि। न्यायाधीश आदेशमे निश्चित समय भीतर अधिकृत शाखा-सूचना आ पुलिसक न्यायालयकेँ कएल गेल सूचना प्रस्तुत करबाक कहलनि। विवादित रकमक स्रोतक विषयमे एखन कोनो निष्कर्ष नहि देल गेल। याकूब बाहर निकलि जमीलाकेँ फोन कएलनि। “आइ पैसा नहि खुलल,” ओ कहलनि। जमीलाक उत्तर छल, “मुदा आब पुछबाक लेल कागज भेटत ने?” याकूब प्रथम बेर बुझलाह जे सुनबाईक आरम्भ आ उपयुक्त अन्तिम आदेशक बीचो मेहनतक दिन गिनल जाइत अछि।

ओहि दिन नूर जतय कार्यालयमे एक नव समाचार लिखय बैसलीह। पत्रकारिताक पहिले अनुभव हुनका सिखौने छल जे ‘पाँच सय खाते बन्द’ सन शीर्षक पाठककेँ शीघ्र पकड़ैत अछि, मुदा पाँच सय छात्रक मुँहपर एकहि दाग सेहो लगा सकैत अछि। ओ शीर्षक बदललीह—‘जाँचक पत्र, बैंकक रोक आ सामान्य नागरिकक हिसाब’। प्रकाशित कागजमे कोनो खाताक अन्तिम अङ्क, परामर्शक विवरण अथवा छात्रवृत्तिक नाम नहि राखल। समाचारमे

याकूबक अनुमतिसँ हुनकर व्यापारिक कठिनाइक उल्लेख छल, मुदा पुलिसक विरोधी कथनो शामिल छल जे विशिष्ट धनक सुरक्षा जाँच लेल आवश्यक अछि। सम्पादक कहलनि, “एहि शीर्षकमे सनसनी कम अछि।” नूर उत्तर देलीह, “कागजक मूल्य कखनो कम सनसनीमे होइत अछि।”

विद्यालयमे पायल रैगर एक गोष्ठीमे आमन्त्रित छलीह। विषय “विद्यार्थीक मन आ सार्वजनिक आरोप” छल। एक छात्र पुछलक जे जकर खातापर रोक लागल, ओकरा सँ दोस्ती राखब सुरक्षित अछि कि नहि। पायल उत्तर देलीह, “प्रश्न बैंक सँ शुरू भेल, मुदा अहाँ मित्रताक निर्णय अपराधक बिना प्रमाण करय चाहैत छी। ई दोसर तरहक चोट अछि।” ओ अपन पुरान मानसिक दबावक सूक्ष्म प्रसंग सुनौलीह, मुदा व्यक्तिगत चिकित्सकीय विवरण सार्वजनिक नहि कएलीह। छात्रसभ देखलनि जे गोपनीयता सत्य छिपेनाइ नहि, मनुष्यकेँ अनावश्यक उजाड़सँ बचेनाइ अछि। अर्जुन पाछाँ बैसल छल। सभक नजर ओकरा पर नहि छल, मुदा ओकरा अपन पाँजरक भीतर हृदयक चाल सुनाइत छल।

सन्ध्याकाल अर्जुनक मित्र ओमप्रकाश ओकरा घर लग आइल। ओमप्रकाश एक समय विश्वविद्यालयक प्रवेशमे रूहानीक प्रतिद्वन्द्वी-प्रतीक्षारत विद्यार्थी रहल छल, मुदा नियमसंगत प्रवेश बचलाक बाद दूनू अपन पढ़ाइमे लागि गेल छलाह। अर्जुन पुछलक, “तोरा लगैत अछि हम झूठ बाजि रहल छी?” ओमप्रकाश कहल, “हम तोहर बयानक जाँच नहि कऽ सकैत छी। मुदा तोरा संग बसमे बैसब बन्द करब सेहो उचित नहि।” ओ अपन भोजनक डिब्बा खोललक; बँटल रोटीपर अचार रखलक। दूनू रोटी खाति रहल। कानूनक कठिन शब्द गामक पथपर जँ केओ नहि बुझैत, तखनियो एकटा रोटी साझा करब दैनिक न्याय-जेकाँ होइत अछि—एहि बातकेँ अर्जुन शब्द नहि देलक, मुदा राति भरि मनमे रखलक।

अनुराधा सेन अपन अधिकृत निरीक्षणमे पाँच सय पाँतिक वर्गीकरण समाप्त करैत छलीह। सूचीमे दोहरायल नाम छल, पुरान छात्रावासक कक्ष-सङ्केत छल, आ कतिपय पाँतिक बैंकक अन्तिम चारि अङ्क समान देखाइत छल। बिना पूर्ण खाता-पहिचानक ओहि समानता किछु सिद्ध नहि करैत। ओ एक स्तम्भ बनौलीह—‘राशिक प्रमाण भेटल’; दोसर—‘केवल सेवा-पञ्जी’; तेसर—‘पहिचान अस्पष्ट’; आ एक खाली स्तम्भ—‘वास्तविक नियन्त्रण’। रिद्धि

पुछलीह, “ई अन्तिम स्तम्भ एखन खाली किएक?” अनुराधा कहलीह, “कतेको खाता ककरो नामपर होइत अछि, मुदा लेनदेनक निर्देश कियो आन दैत अछि। फेर कतेको खातामे प्राप्तकर्ता नाम देखला सँ कोनो अनधिकृत निर्देश सिद्ध नहि होइत। खाली घर भरबाकेँ तथ्य चाही।”

ओहि राति निरीक्षक सीमा अधिकृत बैंक-सूचना पाबि बैठक कएलीह। रिद्धि संस्थागत प्रतिनिधि रूपेँ केवल पाँच सय फाइलक स्रोतपर बोललीह; अनुराधा वित्तीय तुलना लेल अधिकृत सीमा भीतर उपस्थित छलीह। सीमा पहिने असामान्य सामान्यीकरण हटेबाक निर्देश देलीह। हुनकर टेबलपर अर्जुनक चारि हजार दू सय रुपैयाक प्रविष्टि सेहो छल। भुगतान एक व्यापारी-निपटान प्रणाली मार्फत आयल देखाइत छल, मुदा ओकर मूल स्रोतक दोसर चरण एखन बैंक-प्रमाणसँ पुष्ट नहि छल। “छात्रकेँ बयान लेल बजाउ,” सीमा कहलीह, “मुदा ओ अपन खातामे पैसा भेटल कहलासँ अपराध जानैत छल—एहन अनुमान मत लगाउ।” एक कनिष्ठ अधिकारी पुछलक, “तखन ओकर फोन लेब?” सीमा उत्तर देलीह, “आवश्यकता, अधिकार आ प्रक्रिया लिखिकय तय करब; जिज्ञासाक लेल वस्तु जप्त नहि होइत।”

लुधियानामे बैंकक तकनीकी शाखासँ संशोधित निर्देश पहुँचला पर शान्ति देवीक विवादित एक हजार तीन सय पचास रुपैया सुरक्षित रहैत, बाकी खाता-सन्तुलन पर निकासीक रोक हटाओल गेल। सरबजीत हुनका बैसाकय स्क्रीनक दू रकम बुझौलीह। शान्ति आँखि पर चश्मा चढ़ा देखलीह, फेर पुछलीह, “हम एखन दवाई ले सकैत छी?” “हाँ, विवादित रकम छोड़ि उपलब्ध शेषसँ,” गगनदीप उत्तर देलीह। शान्ति अपन हाथक झोरामे रखल पुरान पर्ची निकाललीह। ओ पहिले दवाई खरीदलीह, तकर बाद भाड़ाक खर्च राखलीह, आ बाँचल रकमकेँ घरक भोजन लेल जोड़लीह। हुनकर मुँहपर जीतक घोषणा नहि, एक दिन फेर सामान्य ढंगसँ जीबय पएबाक सुख छल। विवादित रकमक जाँच जारी छल; बैंकसँ बाहर निकलैत ओ एहि दूनू सत्यकेँ एक संग लऽ गेलीह।

चम्पा देवीक मामला अपेक्षाकृत साधारण छल, मुदा तकर समाधानमे हुनकर चारि दिनक मजदूरी-जेकाँ समय गेल। बैंक हुनका दोसर परिचय-पत्र आ पुरान ठेगानाक अन्तर सम्बन्धी प्रमाण माँगने छल। चम्पा पाछला वर्ष किरायाक घर बदलने छलीह। सुनीता हुनका आधार-पत्रक अद्यतन आ बैंकक अधिकृत प्रक्रिया बुझौलीह, किएक तँ चम्पा एक अनधिकृत एजेन्टकेँ

परिचय-सुधारक नामपर पैसा देबाक सोचि रहल छलीह। शाखामे वास्तविक सत्यापन पूरा भेलाक बाद खाता पुनः चलय लागल। चम्पा पुछलीह, “हमरा कतेक लोक चाही छल—एक छात्र, एक वकील, एक बैंक अधिकारी?” सुनीता हँसि कहलीह, “अहाँक हक लेल एतेक लोक नहि चाही; मुदा व्यवस्था गलत भए तखन असुविधाक भार नागरिकपर किएक पड़य? ई प्रश्न शेष अछि।”

रामलखन पासवानक साँस ओहि दिन सामान्यसँ भारी छल। सुनीता हुनका सरकारी चिकित्सालयसँ देखाकय घरे लऽ अएलीह। पिता पुछलनि, “तोहर कारखानाक न्याय कतेक बाकी अछि?” सुनीता जवाब देलीह, “किछु बकाया मिलल; किछु उपस्थितिक दिनक दावा एखन सुनबाईमे अछि।” रामलखन धीमे कहला, “हमर नाम पञ्जीमे छल तखनियो पूरा मजदूरी नहि भेटल; एक हरदेवक नाम महीनासँ महीना रहल, ओ लोक कोना भेटत?” सुनीता पिताक हाथ पकड़लीह। “नामक मेल देखिकय हम गलत आदमी धरि नहि पहुँचब,” ओ कहलीह। रामलखन कष्ट सँ हँसलाह। “पिताक लेल एतबा वचन बहुत अछि।” हुनकर हाथक पुरान घावसँ कारखानाक धातुक गन्ध जेना एखनहुँ उठैत छल।

ओहि राति सुनीता रिद्धिक पत्रक उत्तरमे प्रमाणित श्रम-पञ्जी संलग्न कएलीह। सूचीमे हरदेव चौहानक सेवा-सम्बन्धी पुरान दिनक अनिश्चितता छल; २००९ क एक सहकर्मी ओकरा बहुत महिना सँ कारखानामे नहि देखबाक कथन देने छल। मुदा पुरान अनुपस्थितिक कथन अकेले वेतनक धोखाधड़ीक निष्कर्ष नहि बनबैत। रिद्धि उत्तर देलीह—“हमर फाइलमे एच. चौहानक पूरा नाम, जन्मतिथि, खाता-पहिचान अथवा सेवा-कालक विश्वसनीय मेल एखन नहि भेटल। एखन ई सूचीक दोहरायल अक्षर मात्र अछि।” सुनीताकेँ निराशा नहि भेल। बहु वर्षक अनुभव हुनका सिखौने छल जे अधूरा प्रमाणकेँ पूरा बताओलासँ अन्ततः श्रमिककेँ नुकसान होइत अछि।

जेठक आरम्भमे याकूबक मामलाक दोसर सुनबाई भेल। बैंकक प्रमाणित विवरण आब न्यायालयक समक्ष छल। विवादित रकमक रूपमे दू हजार छह सय रुपैया चिन्हित कएल गेल छल; मुदा पूरा खातेपर लागल डेबिट-रोकक कारणवला अतिरिक्त पत्रमे एक सामान्य ‘सुरक्षा-अनुरोध’ बाहेक किछु स्पष्ट नहि छल। जाँच अधिकारीक संशोधित उत्तरमे लिखल छल

जे एखन उपलब्ध सामग्री दू हजार छह सयक मार्गसँ सम्बन्धित अछि; शेष वैध व्यापारिक भुगतानपर व्यापक रोकक पक्षमे विशिष्ट कारण नोंद नहि कएल गेल अछि। राज्यक अधिवक्ता कहलनि जे अनुसन्धानेक अधिकार सुरक्षित रहबाक चाही। उषा पारीक उत्तर देलीह, “अधिकार सुरक्षित रहत; मुदा जकर व्यापारक पूरा धन बन्द अछि ओकर अधिकार कोन ठाम लिखल जाएत?”

दण्डाधिकारी आदेशमे विस्तारसँ प्रमाण नापलनि। न्यायालय विवादित रकमक आवश्यक संरक्षण आ अन्वेषणक अधिकारकेँ यथास्थान मानैत, बैंककेँ अधिकृत जाँचक सङ्गतिमे खाताक गैरविवादित शेषपर सामान्य कारोबार चलय देबाक निर्देश दैत अछि। जाँचक अधिकारी उचित वैधानिक आधारपर बादमे किछु अतिरिक्त तथ्य प्राप्त करथि तँ नब आदेश माँगबाक अधिकार रहत। साथहि न्यायालयक समक्ष मूल सूचना, रकम आ उत्तरदायी कार्यालयक विवरण पञ्जीकृत रहबाक कहल गेल। याकूब आदेश सुनि उठि गेलाह, मुदा उषा हुनका रोकलीह—“एखन बैंकक प्रणालीमे लागू होयबाक प्रतीक्षा, लिखित पुष्टि आ शेष हिसाब बचल अछि। आदेशक प्रत्येक शब्द बुझिकय जाइ।” याकूब हुनकर बात मानलनि। राहतक समाचारकेँ ओ नगदी भऽ जेबमे रखि नहि सकैत छलाह।

याकूब दुकान पहुँचलाह तखन जमीलाक सिलाइक समूहक एक महिला प्रतीक्षा कऽ रहल छलीह। “आब थारीक सामान भेटत?” ओ पुछलीह। याकूब कहला, “बैंकक पुष्टि भेटत तखन खरीदब। जे दू हजार छह सय विवादित अछि ओकरा लेल प्रमाण दऽ रहल छी।” जमीलाक मनमे एकटा व्यङ्ग्य उठल—एकहि रकमक कारण हुनकर महीनाक कारोबार अटक गेल छल; आब ओही रकम अलग रखिते जीवन फेर चलि सकत। मुदा ओ पति सँ झगड़ा नहि कएलीह। हुनका पता छल जे थोक व्यापारी चारि सप्ताहक देरीपर ईमानदार ग्राहकक विश्वास खोइ देत। ओ अपन सिलाइक पुरान पावती निकालि आगामी सप्ताहक आपूर्ति नियत कएलीह। परिवारक जीत अदालतक कोठरीमे पूर्ण नहि, दुकानक पहिल नब बिक्रीपर होएत।

उमाक कार्यालयमे विश्वविद्यालयक कार्यकारिणी समिति विद्यार्थी-खाता पर व्यापक सुरक्षा-सूचना भेजबाक प्रस्तावपर विचार कए रहल छल। एक सदस्य कहलक जे पाँच सय पाँति सार्वजनिक कऽ देलासँ प्रत्येक छात्र अपन नाम देखत आ सचेत होएत। मनस्वी तुरन्त

पुछलीह, “कोन छात्र अपन नाम देखिकय स्वतः अपराधी घोषित भऽ जाएत, ओकर प्रतिकर के देत?” अरविन्द पारीकक सामने रोजगार-सहायता अनुबन्धक तीन संस्करण छल। ओ कहला, “हमर लापरवाहीक भाग जतेक अछि से लिखित रूपमे देब। मुदा परीक्षा देनिहार निर्दोष छात्रसभकेँ सार्वजनिक चौकमे नहि खड़ा करब।” उमा समिति सँ निर्णय करौलीह—मात्र पात्र छात्रकेँ गोपनीय माध्यमसँ विशिष्ट सूचना, आम छात्र लेल सावधानी-सन्देश, आ अधिकृत प्राधिकरणकेँ सुरक्षित मूल अभिलेख।

हिम्मत अंसारी छात्रसभक प्रश्न लेल खुलल बैठक केलनि, मुदा रिद्धिक आग्रहपर व्यक्तिक बैंक सूचना नहि पढ़ल गेल। एक विद्यार्थी पुछलक, “जँ हमर नाम सूचीमे अछि आ हमर खाता चालू अछि, की हम निश्चिन्त रही?” रिद्धि उत्तर देलीह, “अहाँक खाता चालू होएब जाँचक अन्तिम निष्कर्ष नहि, मुदा केवल सूचीक नाम अपराधक प्रमाण सेहो नहि। यदि व्यक्तिगत शिकायत भेटैत अछि तँ लिखित सूचना लिअ, विधिक सहायता पाबू, आ अपन अभिलेख सुरक्षित राखू।” दोसर विद्यार्थी कहलक, “हमरा तँ बैंक लोक कहि देलक जे खातापर रोक छै, कारण नहि कहत।” नसीमा शाखाक लिखित उत्तर मँगबाक प्रक्रिया बुझौलीह। बैठक डरक सामूहिक प्रदर्शन सँ नागरिक अधिकारक शान्त पाठशाला बनबाक प्रयास करैत छल।

रिद्धिक माय शारदा विश्नोई ओहि सप्ताह गाम गेल छलीह। खेतमे पानि छोड़बाक पहिल बारी रहय। रिद्धि मायकेँ फोन कएलीह तँ शारदा पुछलीह, “पाँच सय लोकक बातमे किछु साफ भेल?” रिद्धि कहलीह, “एखन धरि पाँच सय खाताक प्रमाण नहि; किछु प्रविष्टिक सत्यापन भेल।” शारदा अपन खेतक मेड़पर बैसि उत्तर देलीह, “जँ एक खेतक मेड़केँ नापि सौ खेतक हिसाब बनाओल जाए तँ गाममे मारि-पीटि भऽ जाएत। तोहर काज सेहो ओहिना बुझाइत अछि।” रिद्धिक नयनमे बचपनक मरुधर-भूमि आयल। पिता पुरान मापने भूमि देखबैत छलाह, आ रामदेव मण्डलक कूपक पगरिया लेल वर्षों लड़ाइ भेल छल। डिजिटल संख्या आ माटिक रेखा—दूनू दिस सही सीमा चिन्हेबाक नैतिकता एके छल।

जूनक पहिल सप्ताहमे अर्जुन पुनः अधिकृत पूछताछ लेल गेल। निरीक्षक सीमा चौधरी हुनका हिरासतमे नहि, लिखित सूचना अनुसार उपस्थित साक्षीक रूपमे प्रश्न पुछलीह। अर्जुन अपन चारि हजार दू सयक श्रेय-विवरण, प्रशिक्षणक प्रवेशपत्र, एक सामूहिक चित्र आ फोनक

उपलब्ध कॉल-पञ्जी देलक। ओ अपन पिताक आयक प्रमाण अथवा मायकेँ भेजल रकमक हिसाब सेहो लऽ आयल छल, मुदा सीमा आवश्यक कागज मात्र रखलीह। “तोहर निजी जीवनक सभ पन्ना हमरा नहि चाही,” ओ कहलीह। अर्जुन जखन पुरान कार्यशालाक चित्र देखौलक तँ त्यहाँ छह छात्र छल; भुगतान-पञ्जीमे आठ व्यक्तिक मानधन देखाइत छल। सीमा पुछलीह, “दू आन नाम ककर?” अर्जुन कहलक, “हम हुनका नहि देखलहुँ।” एहि उत्तरमे अनिश्चय छल, पर तकरा बदलि दोष-सिद्धि कएल नहि जा सकैत छल।

आठ नाममे सँ एक रिद्धि द्वारा पहिने चिन्हित विद्यार्थी मोहन बैरवा नहि छल, ई बात सीमा विशेष रूपेँ जाँचीह। कारण, मोहनक नाम एक अनधिकृत संदेशमे उपयोग भेल छल; छात्रसभ अकारण एक-दोसरासँ जोड़ि दैत छल। दोसर नाम ‘आर. मेहरा’ लिखल छल। विश्वविद्यालयक वर्तमान छात्र-पञ्जीमे ओहि सङ्क्षिप्त नामसँ मिलैत अनेक व्यक्ति छलाह। अनुराधा कहलीह, “नामक पहिल अक्षरक आधारपर कोनो खाता नहि चिन्हू।” सीमा बैंककेँ अधिकृत अनुरोध भेजलीह जे जँ ओहि मानधनक मूल प्रेषक-पथ उपलब्ध हो तँ प्रमाणित अभिलेख देल जाए। गोपनीय खाता-जानकारी विश्वविद्यालयकेँ नहि, जाँच-अधिकारीकेँ विधिसम्मत मार्गसँ उपलब्ध होयबाक छल। रिद्धि अपन सीमा जानैत छलीह; ओहि ज्ञानमे अनुसन्धानक शुचिता छल।

एहि बीच सरबजीतक शाखाकेँ अर्जुनक बैंक सँ अलग एक सूचना आयल। पुलिसक क्षेत्रीय कार्यालय प्रारम्भिक पत्रक अस्पष्ट शब्दक स्पष्टीकरण देने छल। सरबजीत गगनदीपकेँ देखौलीह जे सुधारक पत्र मात्र बुझबाक लेल नहि, पहिने लागू कएल व्यवस्थाक पुनर्परीक्षण लेल छैक। बैंकक प्रत्येक ग्राहकक कागज अलग जाँचि अतिरिक्त रोक हटेबाक अथवा अधिकृत विशिष्ट कारण सुरक्षित रखबाक कहल गेल। गगनदीप पुछलीह, “जँ पुरान गलतीसँ ग्राहकक हानि भेल तँ?” सरबजीत उत्तर देलीह, “शिकायत-निवारणक निर्धारित मार्ग अछि; बैंककेँ तथ्य आ अवधि लुकाएबाक अधिकार नहि। मुदा प्रतिकरक दावा अलग परीक्षणक विषय होएत।” ओ साक्ष्यक पन्नासँ ऊपर उठि गगनदीपक आँखि देखलीह—“अनुपालन डरक व्यापार नहि, उत्तरदायित्वक अभ्यास अछि।”

जोधपुरमे याकूबक खाताक गैरविवादित धन निकासी योग्य भेल तखन ओ पहिल भुगतान थोक व्यापारीकेँ कएलनि। व्यापारी फोनपर केवल ‘मिलि गेल’ कहलक, मुदा याकूबक कानमे

ओ छोट वाक्य न्यायालयक लम्बा आदेशसँ अधिक मधुर लागल। दोसर भुगतान ओ अपन दुकानक सहायक कमरुद्दीनकेँ देलनि। कमरुद्दीन पिछला सप्ताह बच्चाक पुस्तक उधारक पैसासँ खरीदने छल। याकूब कहला, “देरी हमर गलती नहि छल; मुदा कष्ट तँ तोहर भेल।” कमरुद्दीन उत्तर देलक, “आगाँ जँ फेर खाता रुकत, पहिले कहि देब।” जे व्यवस्था एक दिन कम्प्यूटरक ‘शून्य’ सँ आरम्भ भेल छल, ओकर असर कतेक घरक सम्बन्धपर पड़ल, तकर पूरा लेखा कोनो बैंकक विवरणमे नहि भेटैत।

आषाढ़क पहिल बरखा लुधियानाक कारखाना-बस्तीमे पड़ल तखन गल्लीक नाली भरि गेल। सुनीता सहायता-कक्षसँ बाहर निकलि भीजल कागज बचौलीह। चम्पा देवीक खाता चलय लगल छल, शान्तिक दवाईक खर्चक बाट सेहो खुजल छल; मुदा तीन अन्य श्रमिकक वेतनक रकम समयपर खातामे नहि आयल। कारखानाक नब लेखापाल कहलक जे बैंकक ‘सुरक्षा-परीक्षण’ चलि रहल। सुनीता सीधा बैंकक पत्र माँगलीह। पता चलल जे ओ तीनू खातापर कोनो जाँचगत रोक नहि, कम्पनीक अपन वेतन-सूची समयपर अधिकृत नहि भेल छल। ओ लेखापालकेँ कहलनि, “अहाँ बैंकक नाम सँ अपन देरी मत छिपाउ। जे देरी कम्पनीक अछि, तकर उत्तरदायित्व सेहो कम्पनीक।” लेखापाल दुस्साहस नहि करि सकल; ओकरा सचमे अनुमोदनक प्रबन्धक छुट्टीपर रहबाक समस्या छल। मुदा श्रमिकक बच्चा एकर कारण भूखल रहय, से उचित नहि।

धर्मपाल खुराना बूढ़ भऽ चुकल छलाह, मुदा कारखानाक नब प्रबन्धककेँ सुनीताक पत्र पहुँचल तखन ओ अपन अनुभव बताबय आयलाह। “सन् २००९ मे हम पञ्जी देखिकय अलग बुझैत रही,” ओ कहलनि, “एखन मशीनक गलतीक नाम सुनि लोक जिम्मेदारी नहि लेत।” सुनीता उत्तर देलीह, “मशीन दबाव नहि अनुभव करैत, श्रमिक करैत अछि। वेतनक स्वीकृति समयपर नहि भेल तँ मानवीय निर्णयक दोष अछि।” धर्मपाल कनी देर चुप रहलाह। रामलखनक मजदूरी-विवाद एखनहुँ हुनकर स्मृतिमे छल। ओ प्रबन्धकसँ तुरन्त वैध वेतन-सूची प्रस्तुत करबाक आग्रह कएलनि। अगिला दिन बकाया वेतन जमा भेल, मुदा सुनीताक पत्रमे लिखल देरीक वास्तविक कारणक विवरण सेहो माँगल गेल। एक दिनक राहत सँ पुरान अधिकारक प्रश्न समाप्त नहि होइत।

दरभंगामे शिवनारायण झा अपन घरक बरामदामे बैसल छलाह। वर्षाक पानि आँगनक टुटल नालीसँ बारी दिस जा रहल छल। रेवती हुनका फोनपर कहलनि जे हुनका एहि वर्ष पाँच अलग-अलग खाता-विवादक विवरण भेटल, मुदा प्रत्येकक वैधानिक आधार भिन्न अछि। शिवनारायण पूछलनि, “तोरा पहिल बही याद अछि?” रेवती कहलनि, “नीलकान्तक? हँ। ओहि बहीमे मुरलीधरक नाम मरलाक बादो रहल छल।” पिता कहलनि, “नाम एखन कागजसँ निकलि मशीनमे गेल, मुदा न्यायाधीशक प्रश्न एके अछि—ककरा बारेमे ई लिखल अछि, आ किएक?” रेवती पिता सँ नव कानूनी धाराक लम्बा व्याख्या नहि सुनौलीह। अपन बचपनक आँगनमे पानि रोकबाक छोट बाँध देखैत ओ समझैत छलीह जे अधिकारक सारा इतिहास अनेक छोट रोक-बाँध आ ओकर सही सीमा बनबैत चलल अछि।

सुनबाई लेल रेवती जोधपुर पहुँचलि तँ स्टेशन पर नसीमा भेटय आयल छलीह। रेवती हुनका पूछलीह जे छात्रसभक बीच डरक स्तर कम भेल कि नहि। नसीमा कहलीह, “जे खाता नहि रोकल ओकर डर कम भेल; जकर रोकल अछि ओकर घरमे प्रति राति समयक हिसाब चलैत अछि।” रेवती उत्तर देलीह, “कानूनक कारणयुक्त आदेशक दिन अलग गिनल जाइत अछि; भूखक दिन अलग।” एतय ओकरा संग मुकुलक सात हजार पाँच सयक दावा सेहो छल। मुकुल कहलक जे तरुण जमानतपर बाहर आयलासँ ओकर रुपैया नहि घुरल। रेवती समझौता करबाक बाध्यता नहि देलीह; शिकायतक चाल, दस्तावेजक सम्भावित मूल्य आ वैध धन-वापसीक अलग मार्ग बुझौलीह। मुकुल अपन मेहनतक रकमक दावासँ पाछाँ नहि हटलक।

न्यायालयक गलियारामे रेवतीक भेंट रीतिका सँ भेल। रीतिका अपन व्यापारक भुगतानक प्रमाण लऽ आयल छलीह, जे पति तरुणक जमानतक मुद्दासँ पृथक बैंक-शिकायतक भाग छल। रेवती ओकरा अपन मुवक्किल मानि नहि कएलीह; उलटे स्पष्ट कहलीह जे हुनकर हित आ मुकुलक हित टकरा सकैत अछि, तेँ रीतिकाकेँ स्वतन्त्र कानूनी सलाह चाही। रीतिका एतबा स्पष्ट उत्तर सुनि चकित भेलीह। “सब वकील हमरा एकसंग पति-पत्नी बुझैत छथि,” ओ कहलीह। रेवती उत्तर देलीह, “दूनू एक परिवार छी; मुदा दूनूक अलग खाता, अलग काम आ अलग अधिकार अछि।” रीतिका बादमे सुषमासँ एहि पृथक शिकायतक सलाह लेलीह।

न्यायालयक दालानमे एक स्त्रीक पहिचान ओकर पतिक आरोपसँ अलग होयबाक छोट स्वीकृति छल।

अनुराधा सेनकेँ बैंकक प्रमाणित निपटान-विवरणक एक सीमित भाग अधिकारपूर्वक भेटल। ओहि विवरणमे अर्जुनक चारि हजार दू सय रुपैयाक आय, ओहि दिनक अन्य भुगतान आ धन जमा करबयवला व्यापारीक पहिचान छल। मुदा मूल व्यापारीक पाछाँ कोन अनुबन्ध छल, ओहि सम्बन्धमे कागज एखन अधूरा छल। अनुराधा रिद्धिक समक्ष केवल देबाक अनुमति प्राप्त सारांश रखलीह। “आर. मेहराक प्रविष्टि आ अर्जुनक भुगतान एकहि दिन अछि,” ओ कहलीह, “मुदा इएह सभसँ एक व्यक्तिक निर्देश अथवा अपराध-ज्ञान सिद्ध नहि। छात्रवृत्तिक स्रोतक मार्ग स्पष्ट अछि; ओ धनकेँ संदिग्ध भुगतानसँ मिलायब गलत।” रिद्धि पुछलीह, “तखन अर्जुनक सम्पूर्ण खाता खुलेबाक प्रार्थना उचित?” अनुराधा कहलीह, “विधिसम्मत मंचेँ निर्णय देत, मुदा गैरविवादित छात्रवृत्ति-पैसाक प्रश्न अलग उठाउ।”

अर्जुन अपन मायकेँ सचक एक आ भाग कहल। चारि हजार दू सयक प्रस्ताव देनिहार प्रतिनिधि कहने छल जे प्रशिक्षणमे स्वयं आएल विद्यार्थीकेँ मानधनक अतिरिक्त भर्ती कराओल छात्रसभक गिनती पर सेहो भुगतान भेटत। अर्जुन दू परिचितक नाम देने छल, मुदा ओ दुनू वास्तविक प्रशिक्षणक लेल निबन्धित भेल कि नहि, से ओ देखल नहि। माय पुछलीह, “तोरा नाम दैब सँ पहिने हुनकर अनुमति छल?” अर्जुन सिर हिलेलक—एकक छल, दोसरक बारेमे ओ अनिश्चित छल। रेणु किछु क्षण चुप रहलि। “तूँ एतबा कह सकैत छेँ जे तोरा रुपैया भेटल; मुदा दोसरक नामक उपयोग ठीक कएलहीं कि नहि, एकरो उत्तर चाही।” अर्जुनकेँ लगल जे कागजक कानून सँ पहिने घरक कोठरीमे नैतिकताक एक कठोर न्यायालय बैसल अछि।

विद्यार्थीक मनक भय नहि बढ़य से कारण नसीमा हुनका एक योग्य स्वतन्त्र अधिवक्तासँ भेट करबौलीह। अधिवक्ता शालिनी सोलंकी अर्जुनकेँ पहिने ओकर अधिकार आ स्वेच्छासँ देल बयानक अर्थ बुझौलीह। ओ कहलीह जे साक्षी रूपेँ बोलल बातक प्रमाण-मूल्य अदालत देखत; ओ अपन दायित्वक बारेमे असत्य नहि बाजथि, मुदा अपूर्ण स्मृतिमे अनुमानक विस्तार सेहो नहि करथि। जँ आगामी जाँचमे ओकर कानूनी स्थिति बदलैत अछि तँ सक्षम सहायता लेबाक

अधिकार रहत। अर्जुन पूछलक, “हम चारि हजार दू सय वापस कऽ देब तँ सभ समस्या मिटत?” शालिनी उत्तर देलीह, “रकमक समुचित निपटान अलग प्रक्रिया अछि; सत्य जानबाक प्रश्न मात्र धन घुरौलासँ समाप्त नहि होइत।”

बरखाक दोसर राति अर्जुन अपन पुरान पुस्तकक भीतरसँ एक रङ्गीन पर्ची निकाललक। ओ प्रशिक्षणक दिन दऽ देल गेल छल। पर्चीमे ‘साथी बनाउ, प्रोत्साहन पाउ’ लिखल छल, आ एक छोट कोड छल, जकरा ओ पहिने ध्यान नहि देने छल। पर्चीक पाछाँ पेंसिलसँ दू नाम लिखल छल। एक नाम ओ अपन सहपाठीक कहि चिन्हलक; दोसर ओकरा यादे नहि आयल। ओ पर्ची रिद्धिक कार्यालयमे नहि छोड़लक, किएक तँ ओकरा कहल गेल छल जे मूल भौतिक कागजक प्राप्ति-पञ्जी जरूरी अछि। अगिला भोर ओ अधिवक्ताक सलाह अनुसार अधिकृत जाँच-अधिकारीकेँ मूल पर्ची उचित सूचीसहित प्रस्तुत करबाक निर्णय कएलक। एतेक दिनक भीतर ई ओकर पहिल निर्णय छल जाहिमे भयक बदला जिम्मेदारीक अंश अधिक छल।

अगिला सप्ताह छात्रवृत्तिक वैध राशि खुलबेबाक सीमित आवेदनपर सुनबाई लेल अर्जुनक अधिवक्ता उपस्थित भेलीह। राज्यक पक्ष कहलनि जे चारि हजार दू सय रुपैयाक संदिग्ध स्रोतक अधिकृत पुष्टि एखन आवश्यक अछि। अधिवक्ता छात्रवृत्तिक स्वीकृति-पत्र, शिक्षण-शुल्कक तिथि, बैंकक पूरक वैध जमा आ रोकल कुल रकमक विवरण रखलीह। न्यायालय बैंकसँ रोकक वर्तमान आधार तथा रकम-विशेषक स्थितिक स्पष्ट उत्तर मँगलक, आ अर्जुनकेँ अपन अध्ययनक तत्काल आवश्यकता सम्बन्धी कागज दाखिल करबाक अवसर देलक। कोनो व्यापक ‘सभ छात्रक खाता खोलू’ आदेश नहि भेल। अर्जुन लौटैत देखलक जे न्यायालयक पटपर ओकर नाम एक तिथि लेल लिखल अछि। ओ नाम एखन अभियुक्तक नाम नहि, राहत माँगनिहार व्यक्तिक नाम छल—ई अन्तर ओकरा भोरक हवा-जेकाँ लागल।

सावनक अन्त धरि बैंकक उत्तर आयल। अर्जुनक खाता पर रोक लगेनिहार मूल पत्रमे चारि हजार दू सयक भुगतान-मार्ग निर्दिष्ट छल, मुदा शाखाक प्रणालीमे पूरा निकासी बन्द कएल गेल रहय। जाँचक अधिकारी अतिरिक्त सम्पूर्ण रोक आवश्यक होयबाक कोनो नव ठोस कारण नहि प्रस्तुत कएने छल। न्यायालय दस्तावेजक सीमा देखैत, विचाराधीन रकम सुरक्षित राखबाक आ शेष वैध छात्रवृत्ति तथा निर्दिष्ट गैरविवादित धनक उपयोग सम्भव करयबाक

निर्देश देलक। अर्जुनकेँ एकहि आदेशसँ निर्दोष घोषित नहि कएल गेल; न ओकर चारि हजार दू सयक वास्तविक अर्थ तय भेल। मुदा परीक्षा-शुल्क जमा करबाक अवसर भेटल। ओ बैंकसँ निकलि सर्वप्रथम मायकेँ फोन कएलक। रेणु कहलीह, “रुपैया भेटल तँ पढ़ाइ कर। जकर प्रश्न बाकी अछि, ओकर उत्तर देबासँ पाछाँ नहि हटिह।”

परीक्षा-फार्म भरबाक दिन अर्जुनक हाथ काँपैत छल। ओ पिछला चारि महिनाक प्रकरणमे अपन स्मृतिक दू कमजोर ठाम देख चुकल छल—बिना लिखित शर्तक भुगतान स्वीकार करब, आ दोसर व्यक्तिक नामक सहमतिक पूरा प्रमाण नहि रखब। एहि दूनू गलतीसँ आपराधिक ज्ञान स्वतः सिद्ध नहि होइत, मुदा अपन निर्णयक उत्तरदायित्व सँ भागब सेहो उचित नहि। ओ आवेदन जमा कऽ घरे लौटैत बसमे खिड़की बाहर देखलक। बरखा सँ माटि गीला छल; दूर एक बालिका लाल झोरा लऽ विद्यालय जा रही छलि। अर्जुनकेँ लगा जे शिक्षा केवल अगिला परीक्षा उत्तीर्ण होयबाक नाम नहि; जे बात बुझि नहि सकेलहुँ से स्पष्ट कहबाक साहस सेहो शिक्षाक एक भाग अछि।

मुकुल मीणाक सात हजार पाँच सयक रकम एखनहुँ पूर्ण रूपेँ वापस नहि आयल छल। निरीक्षक सीमा हुनकर शिकायतमे धनक मार्गक दू नव प्रमाणित पड़ाव जोड़लीह, मुदा अन्तिम लाभार्थीक पहचान पर अलग सत्यापन शेष छल। मुकुल अपन भाई रमेशसँ कहलक, “सारा विश्वविद्यालयक खाता खुलि गेल, हमर रुपैया किएक नहि?” रमेश उत्तर देलक, “सभक खाता खुलल नहि; आ ककरो निर्दोष रकम खोललासँ तोहर दावा समाप्त नहि होइत।” मुकुल पहिने नाराज भेल, फेर शांत। ओ रिद्धिसँ भेंट करैत कहल, “हम चाहैत छी जकरा पैसा फँसल अछि ओ निकलय; मुदा हमर मेहनतक पैसा सेहो घुरय।” रिद्धि कहलीह, “ई दुनू चाहना एक-दोसराक विरोधी नहि। सही धन-पथ भेटब एही लेल आवश्यक अछि।”

जाँच-अधिकारीक कार्यालयमे अर्जुन अन्ततः दोसर बेर बयान देलक। एहि बेर ओकर अधिवक्ता उपस्थित छलि; प्रश्नसभ विशिष्ट छलाह। अर्जुन स्वीकार कएलक जे ओकर व्यक्तिगत खातामे चारि हजार दू सय रुपैया आयल, ओहि रकममे सँ दू हजार पाँच सय अपन विद्यालयी शुल्क आ घरक खर्चमे लगेलक, आ बाकी बैंकमे रहल। ओ दू परिचितक नाम प्रशिक्षण-पत्रमे लिखने छल, मुदा ओहि नामसभक बदलामे किछु अलग बैंक-रकम फेर आयल

कि नहि, से ओकरा ज्ञान नहि। सीमा पुछलीह, “ओ कम्पनीक लोक अहाँकेँ कोनो झूठ उपस्थिति-पत्र बनाबय कहने छल?” अर्जुन उत्तर देलक, “एक बेर नाम बदलबाक बात भेल छल। हम अस्वीकार कएने रही; मुदा पहिल बेर दोसरक नाम लिखबा समय हम सभ नियम नहि पढ़ने रही।”

सीमा एहि उत्तरक प्रत्येक भाग अलग दर्ज कएलीह—धन प्राप्त करबाक स्वीकार, खर्चक लेखा, प्रस्तावक मौखिक रूप, नाम देबाक परिस्थिति, आ अपराधक स्रोत सम्बन्धी अज्ञानक दावा। “एकटा स्वीकारोक्ति सभ प्रश्नक उत्तर नहि,” ओ अपन सहायककेँ कहलीह। अर्जुनकेँ प्रश्न कएल गेल जे जाहि कार्यक्रमक विज्ञापन विश्वविद्यालयक नामपर छल, ओकर प्रामाणिकता ओ कोन कागजसँ जाँचने छल। ओकर पास स्पष्ट उत्तर नहि छल। मुदा ओ ईहो कहल जे अधिकृत महाविद्यालय-भवनमे कार्यक्रम होयबाक कारण ओ विश्वास कएने छल। भवन किरायापर देल गेल छल अथवा विश्वविद्यालयक अनुमोदन छल—एहि बिन्दुपर अनुसन्धान जारी रखल गेल। अर्जुनक बयानक कोनो अंश ओकरा दोषी अथवा दोषमुक्त ठहराबय लेल एकलौता आधार नहि बनाओल गेल।

अनुराधा सेन ओहि राति व्यापक भुगतान-निपटानक नब सारणी देखलीह। अलग-अलग कम्पनीक नामक तले किछु रकम फेर-फेर आन्तरिक खाता सँ गुजरल देखाइत छल। ओ प्राय: दोहरायल विवरणक कारण कुल रकम कृत्रिम रूपसँ बढ़ि सकबाक सम्भावना देखैत छलीह। मुदा केवल गिनतीक संशोधन करबाक लेल मूल बैंक-प्रमाण, वास्तविक लाभार्थी आ समयक्रम आवश्यक छल। एक स्तम्भमे ‘विदेशी परामर्श’ लिखल देखाइत छल; ओ ओकरा देखिकय ककरो नाम नहि लिखलीह। रिद्धि पुछलीह, “एतयसँ किछु बड़ बात निकलत?” अनुराधा कहलीह, “बड़ संख्या निकलि सकैत अछि, मुदा बड़ अपराधक निष्कर्ष नहि। पहिने एकै रुपैया कतेक बेर जोड़ल गेल, से जाँचबाक अछि।” रिद्धि अपन समक्ष रखल पानि पीलक। मनुष्यक हानि गिनबाक कठिनाइ मात्र संख्याक विस्तारसँ दूर नहि होइत।

दरभंगामे रेवती पिता शिवनारायणकेँ अपन वर्षक अन्तिम पत्र लिखलीह। ओहिमे याकूबक दुकान खुलबाक बात छल, शान्तिक दवाईक धन भेटबाक बात छल, अर्जुनक परीक्षा-शुल्कक अनुमति छल, आ मुकुलक एखनहुँ नहि भेटल रकमक उल्लेख छल। ‘बाबू,’ ओ लिखलीह,

“न्यायालय सभटा दुख एकहि आदेशसँ नहि हरैत। मुदा कोन रकम किएक रोकल अछि से पूछबाक अधिकार मनुष्यक जीवनमे छोट नहि होइत।” पत्रक अन्तमे ओ एक वाक्य जोड़लीह —“अर्जुन भुगतान भेटबाक बात मानलक अछि; एहि भुगतानक अर्थ जानैत छल कि नहि, ई प्रश्न एखन खुलल अछि।” कलम राखिते बाहर मेघ गरजल। रेवतीकेँ सन् २००० क पहिल बहीमे मृतकक नाम आ आजुक पाँच सय प्रविष्टि एक दोसराकेँ पुकारैत सुनाइत छल, मुदा ओकरा मालूम छल जे पुकार आ प्रमाणक बीच लम्बा पथ अछि।

ओहि राति जोधपुरक छात्रावासमे पायल अपन बत्ती बुझौलनि, हिम्मत पुस्तकालयक अन्तिम दरवाजा बन्द कएलक, आ अर्जुन परीक्षा-पुस्तक खोलि बैसल। विश्वविद्यालयक अधिकृत कक्षमे पाँच सय नामक सूची एखनहुँ मुहरबन्द छल। ओकर बगलमे सुरक्षित वित्तीय सारणीक एक नव लिफाफा छल, जे विशेष आर्थिक-अपराध अनुसन्धानक वैधानिक मागपर अलग राखल गेल रहय। लिफाफाक बाहर केवल अभिलेख-सङ्ख्या आ प्राप्तिक समय लिखल छल, कोनो व्यक्ति कैँ अपराधी घोषित करनिहार शब्द नहि। भोरमे ओ सामग्रीक स्रोत, धनक पुनरावृत्ति आ कथित लाभार्थीक प्रश्न सक्षम विशेष न्यायालय धरि पहुँचबाक छल। मुदा एहि राति धरि छात्रावासक सबसँ महत्त्वपूर्ण सत्य इएह छल जे अर्जुन अपन खातामे पैसा अएबाक बात स्वीकार कएने छल—आ ई जानैत छल कि ओ पैसा ककर गलतीसँ वा अपराधसँ आयल, तकरा लेल न्यायालयकेँ एखनहुँ सुनब, जाँचब आ तौलय पड़त।

अध्याय ३६ — विशेष न्यायालयक कठोर प्रश्न

जोधपुर, मुम्बई, दरभंगा आ दुबई; सितम्बर–अक्टूबर २०२६

जोधपुरक विशेष न्यायालयक बरामदामे भोरक सात बजेसँ पहिने एकटा सफाइकर्मी पोछा लगा रहल छल। पीतरक पुरान नामपट्टपर बरखाक दू-चारि बूँद अटकल छल। परिसरक बाहरी फाटक लग चायवाला रफीक अपन केतली चढ़ौने छल आ सामने काठक पट्टीपर चाकसँ लिखने छल—“बिना चीनीक चायो भेटत।” लोकसभक दिन एतयसँ शुरू होइत छल, यद्यपि न्यायालयक दुआरि एखन बन्द छल। ओहि भोर एक मोट लिफाफा सरकारी गाड़ीमे आयल। ओकर भीतर पाँच सय क्रमाङ्कक विद्यार्थी-सूची नहि, ओकर एक अधिकृत प्रतिक स्रोत-सम्बन्धी विवरण, तीन बैंकक प्रमाणित पत्र आ एक विस्तृत वित्तीय सारणी छल। लिफाफा रखनिहार लिपिक ताराचन्द ओकर वजन हाँथमे नापैत नहि छल; ओ प्राप्तिक समय आ मुहरक अक्षर जाँचि पञ्जीमे लिखलक। ओकरा अनुभव छल जे अदालतमे भारी लिफाफासँ बेसी भारी होइत अछि ओ प्रश्न जकर उत्तर ओ लिफाफामे नहि होइत।

भोरक ओहि समय विश्वविद्यालयक छात्रावासमे अर्जुन मीणा अपन परीक्षा-पुस्तकक एक अध्याय दू बेर पढ़ि रहल छल। चारि हजार दू सय रुपैयाक आय स्वीकार करबाक बाद ओकर वैध छात्रवृत्तिसँ परीक्षा-शुल्क जमा भऽ चुकल छल, मुदा मनक ठहराव नहि घुरल छल। काल्हि ओकर सहपाठी पुछने छल—“विशेष अदालतमे तोहर नाम सेहो अछि?” अर्जुन उत्तर देने छल—“हमर विवरण जाँचमे अछि; आरोपितक नामक सूचीमे हमर स्थान नहि।” सहपाठी दोसर दिन माफी मँगलक, मुदा प्रश्न हवा छोड़ि गेल। माय रेणु फोनपर बजलीह, “दस्तावेज देलह, ओ ठीक कएलह। मुदा परीक्षा छोड़ब नहि।” अर्जुन अपन बिछौनाक नीचाँ राखल मूल पर्ची निकालि देखलक—“साथी बनाउ, प्रोत्साहन पाउ।” एहि छोट वाक्यक कारण ओ कएक महिना सँ अपन सहपाठीक आँखिमे पहिचानक अनचाहल खोज करैत छल।

रिद्धि विश्नोईकेँ न्यायालयक लिफाफा भेजल गेलाक सूचना आधिकारिक पत्रसँ भेटल। हुनकर कक्षमे पायल आ हिम्मत दू दिनसँ विद्यार्थी-सहायता शिविरक हिसाब लिखि रहल छलाह। पायल परामर्श-कक्ष फेर खुललासँ पूर्ण स्वस्थ होएबाक दावा नहि करैत छलीह, मुदा रातिक भयक नाम बजबाक साहस आयल छल। हिम्मत पुछलक, “पाँच सय नामक पुस्तकक गिनती सुधारि गेल?” रिद्धि उत्तर देलीह, “हमरा लग एखन पाँच सय क्रमाङ्क अछि। किछु दोहराव, किछु अधूरा नाम, किछु सेवासम्बन्धी चिह्न। केवल सूची देखिकय पाँच सय खाताधारी सेहो कहल नहि जा सकैत।” ओ कागज पर तीन रेखा खींचलीह—‘प्रविष्टि’, ‘वास्तविक खाता’, ‘ओहि खातापर नियन्त्रण’। “जाहि दिन ई तीनूकेँ एक शब्द बनायब,” ओ कहलीह, “ओहि दिन निर्दोष व्यक्तिक जीवन अनावश्यक रूपसँ छोट भऽ जाएत।”

विशेष न्यायाधीश संध्या पारीक अपन कक्षमे बैसि सम्बद्ध प्रार्थनापत्र देखैत छलीह। दिल्लीमे चलि रहल प्रमोद खन्ना आ फैजान अलीक पुरान पृथक धनशोधन प्रकरणक नाम ओ सुनने छलीह, मुदा एहि जोधपुरक नब अभियोजनसँ ओकर कोनो न्यायिक एकीकरण नहि छल। इहाँ मूल पुलिस-प्रकरणमे रोजगारक नामपर शुल्क लेबाक आरोप आ सेवाक असल आपूर्ति सम्बन्धी बयान छलाह। एक अभिलेखमे प्रशिक्षण देल गेलाक दू प्रमाणित दिवस छल, दोसरमे वादा कएल सत्रक दीर्घ सूची। किछु पक्षकार कहैत छलाह जे शुरुआतसँ कपट भेल; किछु कहैत छलाह जे व्यापार विफल भेल, अपराध नहि। विशेष न्यायालयक प्रश्न छल—जँ अनुसूचित अपराधसँ वास्तवमे सम्पत्ति प्राप्त भेल अछि, तँ ओ धन ककर निर्देश, ककर नियन्त्रण आ कोन प्रक्रियासँ आगाँ बढ़ल? न्यायाधीश कागजक पहिल पृष्ठपर पेंसिलसँ लिखलीह—“सन्देह, प्रथमदृष्टया सामग्री आ अन्तिम प्रमाण—तीन भिन्न अवस्था।”

ओम्हर मुम्बईक सहगल व्यापार गृहमे सुदर्शन सहगल वृद्ध भऽ गेल छलाह। हुनकर टेबलपर पुरान गोदामक लकड़ीक मापनी, पैंतीस वर्षक बिलक पेटी आ एक अधूरा पत्र पड़ल छल। सन् २००५ मे विक्रान्त हुनका कहने छल जे हस्ताक्षर आ वास्तविक मालक हिसाब अलग जाँचबाक चाही। ओहि वाक्यकेँ पिता एखनहुँ याद करैत छलाह। विक्रान्त बरखसभसँ दुबईमे वैध परामर्श-व्यवसाय करबाक दावा करैत छल, मुम्बई अबैत-जाइत छल, आ पिता-पुत्रक बीच फोनपर व्यापारक बात कम भेल छल। एहि सप्ताह एक स्थानीय समाचारपत्रमे ‘दुबईस्थित

सहगल’ नाम पढ़ि सुदर्शनक मन धकसँ रहि गेल। पूरा नाम छपल नहि छल, काजक विवरण सेहो अस्पष्ट छल। हुनका लग पहिने अपन बेटे अपराधी लगल, फेर समाचारक अधूरापनपर क्रोध आयल। ओ सारा दिन पिताक नातेसँ पुत्रकेँ बचबैत रहला, मुदा साँझ बुझलनि जे पुत्रकेँ बचेनाइ आ ओकर हर कागज सही मानि लेनाइ अलग बात अछि।

दुबईमे विक्रान्त सहगल समुद्रदिस खुलैत अपार्टमेण्टक परदाक पाछाँ बैसल छल। ओकर स्क्रीनपर दूनू देशक समय अलग देखाइत छल। भारतमे न्यायालय खुलबाक बेला ओतय भोरक काज शुरू भऽ रहल छल। विक्रान्त एक वित्तीय परामर्श कम्पनीक निदेशक छल, मुदा ओकर स्वामित्वक कागजमे दू वर्ष पहिने आंशिक परिवर्तन भेल छल। ई परिवर्तन वैध कर-योजनाक कारण छल कि किछु राशि लुकायबाक उपाय, तकरा लेल प्रमाणित अनुबन्ध चाही। ई कहि ओकर अधिवक्ता जयन्त मल्होत्रा नियमित रूपसँ प्रश्न पठबैत छल। एहि बेर पत्रमे एक नब प्रार्थना छल—सन् २०२४ सँ २०२६ धरि देल परामर्श-सेवाक मूल कामक विवरण, सेवा लएनिहारक निदेशक-मण्डलक निर्णय आ ग्राहकक भुगतान-पथ। विक्रान्त टेबलपर पुरान गोदाम-चिह्न ‘एस-१९’ क फोटो देखलक। बापसँ एतबा दूर पहुँचि ओ कागजक भाषा बदलने छल, मुदा सावधान रहबाक चुनौती वही रहल छल।

अनुराधा सेनक लेल ₹२,००० करोड़क संख्या समाचार बनबाक लेल बहुत आसान छल। ओकर समक्ष आयल एक सारणीमे पाँच वर्षक सकल आगमन, निर्गमन, अन्तर-खाता स्थानान्तरण, रद्द भेल प्रविष्टि आ विदेशी मुद्राक रूपान्तरण एकहि अन्तिम कोष्ठमे जोड़ल गेल छल। एक दिस पाँच लाखक दोहरावल हिसाब बारह बेर देखाएल छल; दोसर दिस एक करोड़क रकम कम्पनीसँ सम्बद्ध कम्पनीमे गेल आ फेर मूल खातामे घुरल छल। ‘एतय दू हजार करोड़ लिखल अछि,’ जाँच-दलक एक नव कर्मचारी उत्साहसँ कहलक। अनुराधा ओकरा रोकलीह—“एतय दू हजार करोड़क पंक्ति-योग अछि। ओहि रकमे सँ कतेक नब धन, कतेक घुमि आयल, कतेक केवल कागजी समायोजन, आ कतेक अपराधसँ प्राप्त—एकरो उत्तर अलग चाही।” ओ चारि कागज पर संख्या फेर लिखलीह; पहिलक नाम ‘सकल प्रविष्टि’ रखलीह, दोसर ‘शुद्ध वास्तविक प्रवाह’, तेसर ‘पहिचानयोग्य सम्पत्ति’ आ चौथ ‘अनुसूचित अपराधसँ सम्भावित सम्बन्ध’। चौथ कागज एखन लगभग खाली छल।

अनुराधाकेँ पहिने एकटा गलती करबाक इतिहास याद छल। अपन पहिल नौकरीमे ओ बैंक-आगमनक राशि ‘लाभ’ लिखने छलीह, जखन कि ओ वास्तवमे ग्राहकक अग्रिम जमा छल। वरिष्ठ लेखाकार ओकरा सार्वजनिक रूपसँ नहि डाँटने छल; केवल पुछने छल—“एक गोटे तीन बेर अपना रुपैया जमा-निकासी करय तँ तीन गोटे कमाइ करत?” ओहि दिनक लाज हुनकर सबसँ नीक गुरुदक्षिणा बनि गेल छल। आब ओ नव कर्मचारीकेँ अलगसँ समझौलीह। कर्मचारी चुप भऽ गेल, मुदा अगिला प्रश्न करबाक साहस जुटेलक—“तँ जतेक रुपैया वास्तवमे पीड़ितसभ गमौने छथि, से कत्तय अछि?” अनुराधा कहलीह, “ओ समाजक मूल प्रश्न अछि। मुद्राक कुल प्रवाह आ पीड़ितक वास्तविक हानि एकहि पुस्तकमे भेटि सकैत अछि, मुदा एक-एकटा बाट अलग चलि सकैत अछि।”

जाँच अधिकारी नीरजा राठौड़ अपन दलक बैठकमे सभसँ पहिने ई निर्णय कएलीह जे महाविद्यालयक पाँच सय नामक फाइल पर पूरा अपराधक प्रतिवेदन तैयार नहि कएल जाए। मुकुल मीणाक सात हजार पाँच सय रुपैयाक शिकायतमे धन प्राप्त करनिहार खाताक दू पड़ाव पुष्ट छलाह, मुदा ओकर पाछाँक वास्तविक लाभार्थी पर बैंकक नव प्रमाण चाही। तरुण सेठी जमानतपर छल, ओकरा समनक अनुपालन करबाक बाध्यता छल; पूर्व जमानत आदेशकेँ बदलबाक कोनो स्वतः अधिकार जाँच-दल नहि मानैत छल। किछु प्रशिक्षार्थी वास्तवमे दू अथवा तीन कक्षा पढ़ने छलाह। ओ सभ ठगि गेल कि सेवा अधूरी भेटल, तकर व्यक्तिगत बयान आ विज्ञापनक शर्त देखबाक छल। नीरजाक सहायक कहलक, “सभटा शाखाकेँ एक सञ्जाल मानि ली?” नीरजा उत्तर देलीह, “एकटा सञ्जाल जँ अछि तँ ओकर जोड़ प्रमाणित करू। पहिले मानि लेब तँ बादमे प्रमाण किछु देखायब बन्द कऽ देत।”

निरीक्षक सीमा चौधरीक मूल पुलिस-प्रकरण आ नीरजाक धनशोधन अनुसन्धान अलग विधिक बाटपर छल, मुदा दू-तीन निर्दिष्ट दस्तावेज सक्षम आदेशसँ साझा होइत छल। सीमा अपन सिपाहीकेँ सावधान कएलीह जे पुलिसक प्राथमिकी स्वयं धनशोधनक दोषसिद्धि नहि, आ वित्तीय सारणी स्वयं जाली प्रशिक्षण-वादा साबित नहि करैत। एक साक्षी छात्र कहलक जे ओकरा तीन महिना कम्प्यूटर सिखाओल गेल; दोसर कहलक एक दिन निबन्धनक बाद कोनो शिक्षक नहि आयल। दूनूकेँ एकहि पञ्जीमे ‘शून्य सेवा’ लिखब गलत रहित। सीमा कागजक

एक कोनमे ‘भिन्न शाखा, भिन्न अवधि’ लिखलीह। हुनकर कठिनाई छल जे हर बयान लेल तिथि चाही, हर तिथिक लेल मूल पञ्जी, आ हर मूल पञ्जीक लेल ओकर रखनिहार भेटबाक चाही। मुदा एहीमे न्यायिक जाँचक सम्मान छल।

रेवती झा दरभंगासँ जोधपुरक यात्रा पर निकलीह तँ स्टेशनक ठण्डा कोठरीमे पिता शिवनारायण हुनका एक पुरान पत्र देलनि। पत्र सन् २००० क नीलकान्त साहक मुकदमाक समयक छल; ओहिमे लिखल छल—“जप्त बहीमे मरि चुकल व्यक्तिक नाम लिखल अछि, मुदा ओकरा देखिकय जीबैत आदमीकेँ अपराधी ठहराबय नहि सकब।” रेवती पत्र पढ़ि कहलनि, “बाबू, एखन संख्या बड्ड पैघ भऽ गेल अछि।” शिवनारायण उत्तर देलनि, “संख्या कतेक पैघ भेल, तकरा सँ प्रश्नक कद नहि बदलैत। कानूनकेँ पहिने कहबाक चाही जे गनल की गेल।” ओ पुछलनि जे रेवती ककर पक्षमे जायत। रेवती कहलीह, “मुकुलक धन-वापसीक विषयमे हमर अलग भूमिका अछि; विशेष अदालतमे हमरा एक प्रभावित खाताधारकक सीमित आवेदनक सलाह देबाक अछि, जकर हित परस्पर टकराबय नहि चाही।” पिता हँसलाह —“एक वकीलक पहिल शपथ एही सावधानीमे रहैत अछि।”

लुधियानाक कारखानामे सुनीता पासवान पुरान वेतन-पञ्जीकेँ धूपमे नहि, कागजक पेटीमे राखि चलैत छलीह। एक श्रमिक फेर पुछलक, “हरदेव चौहान एतय काम नहि करैत छल तँ ओकर नाम कोना आयल?” सुनीता उत्तर देलीह, “हमरा केवल ई प्रमाण अछि जे पञ्जीमे नामक कात दर्ज किछु दिनक काम साथीसभ नहि देखलनि; ककर हस्ताक्षर, ककर भुगतान, आ कौन हरदेव—से स्पष्ट नहि।” नब वित्तीय सारणीमे ‘एच. चौहान’ देखल गेले छल, मुदा सुनीता दूनू नामक फोटो जोड़िकय कोनो खुला समूहमे नहि पठौलक। रामलखन पासवान आब बुढ़ा गेल छलाह, काँखिक बाम बाँहि झुकि गेल छल। ओ बेटीकेँ पुछलनि, “तोरा फेर पुरान हिसाबमे फँसय पड़त?” सुनीता कहलीह, “हिसाब नहि खोलब तँ ककरो नाम गलत जगह रहि जाएत। मुदा सभ जोड़ सत्य नहि होइत—ई अहाँएँ सिखौने छी।”

विशेष न्यायालयमे प्रथम सूचीबद्ध तिथिक दिन बरामदामे पत्रकार नूर जतय उपस्थित छलीह। हुनकर बैगमे नोटबुक, ओझरा गेल हेडफोन आ दू अदालतक आदेशक मुद्रित प्रति छल। एक टेलीविजन प्रतिनिधि कैमरा आगाँ कऽ पूछलक, “दू हजार करोड़क विदेशी घोटाला

साबित भऽ गेल ने?” नूर उत्तर देलीह, “अदालत एखन प्रारम्भिक सामग्री आ प्रक्रियाक विषयमे सुनबाई करबाक अछि। ई संख्या अभियोजनक सारणीक योग अछि, सिद्ध अपराधजन्य रकम नहि।” प्रतिनिधि मुँह बना देलक। नूर अपन डेस्ककेँ सन्देश लिखलीह —“शीर्षकमे “दू हजार करोड़क ठगी” नहि लिखब; “दोहराओल प्रविष्टि पर न्यायिक प्रश्न” लिखू।” सम्पादक पहिने विज्ञापनक चिन्ता कएलक, फेर कहलनि, “ठीक अछि, मुदा लोक पढ़त?” नूर उत्तर देलीह, “जकर खाता रोकल अछि, ओ पूरा पढ़त।”

प्रकरणक नाम पुकारल गेल। अभियोजनक अधिकृत अधिवक्ता अभय अवस्थी स्पष्ट कएलनि जे अभियोजनक शिकायतमे विक्रान्त सहगलकेँ कथित विदेशस्थित लाभार्थी बताओल गेल अछि, मुदा ओकरा विरुद्ध अभियोगक औपचारिक विचारण होयब एखन न्यायालयक प्रक्रियापर निर्भर अछि। कम्पनीक स्थानीय निदेशक सौमित्र बंसल अपन अधिवक्ता ईरा सक्सेनाक संग उपस्थित छल। विक्रान्त स्वयं उपस्थित नहि छल; ओकर नामपर वैध रूपसँ समन पहुँचल कि नहि, एहि प्रश्नक प्रमाण न्यायालय समक्ष पूरा नहि छल। न्यायाधीश संध्या पारीक कहलीह, “अनुपस्थिति अपनहि भीतर दोषसिद्धि नहि। समनक सेवा आ उपस्थिति-सम्बन्धी प्रत्येक आगामी कदमक अलग आधार चाही।” एहि वाक्यक बाद बरामदाक अनुमानमे एक क्षणक विराम आयल। अभियोजन अपन दस्तावेज राखलक, बचाव पक्ष अभिलेखक पूरा अनुक्रम माँगलक, आ अदालत स्पष्ट कएलक जे आइ दोषी-निर्दोषक अन्तिम निर्णयक दिन नहि।

अभय अवस्थी काठक मेजपर एक छाँटल सारणी राखलनि। “माननीय न्यायालय,” ओ कहलनि, “किछु भुगतान प्रशिक्षण-शुल्कक रूपमे जमा भेल, फेर समायोजनक नामपर एक स्थानीय कम्पनी, ओतयसँ दोसर, आ तत्पश्चात् विदेशी परामर्शक मदमे देखाइत अछि। एहि निरन्तर गतिविधिक अनुसन्धान भेल अछि। हमर आग्रह अछि जे उपस्थित स्थानीय अभियुक्तक विरुद्ध दायर शिकायतक प्रारम्भिक परीक्षण कएल जाए, आ अनुपस्थित व्यक्तिक सम्बन्धमे विधिसम्मत प्रक्रियाक निर्देश भेटय।” न्यायाधीश बीचमे पुछलीह, “अहाँ जकरा धनशोधनक सम्भावित स्रोत कहैत छी, तकर अनुसूचित अपराधक अधिकृत अभिलेख कोन अछि?” अधिवक्ता पुलिसक मूल प्राथमिकी, आरोपित कपट-विवरण आ एक लम्बित

अनुसन्धानक वर्तमान स्थिति प्रस्तुत कएलनि। न्यायाधीश कहलीह, “लम्बित अनुसन्धानक परिणाम जे एखन भेल नहि, ओकरा घटित मानिकय अगिला निष्कर्ष नहि बनायब। प्रत्येक कथित रकमक मार्ग अलग बताउ।”

ईरा सक्सेना उठलीह। “मोर मुवक्किल सौमित्र बंसल स्थानीय कम्पनीक निदेशक छथि,” ओ कहलीह, “मुदा हुनकर हस्ताक्षर जाहि भुगतान-अनुमोदनपर अछि, ओ भुगतान सेवा-प्रदाय सम्बन्धी वैध ऋणक समायोजन सेहो भऽ सकैत अछि। अभियोजनक सारणीमे एकहि रकमक आवागमन तीन बेर जोड़ल गेल अछि। आ विदेशक परामर्शक शुल्कक एक भागपर जीएसटी विवरण आ सेवा-रिपोर्ट जमा अछि। ई सबटा प्रमाण सही मानि ली, ई हमर आग्रह नहि; जाँच बिना एकरा झूठ मानि ली, सेहो उचित नहि।” अभय कहलनि, “अनुचित मदमे देल रकमक कर-पावती ओकर वास्तविक स्रोतकेँ स्वतः स्वच्छ नहि करैत।” न्यायाधीश सहमति देखेबाक बदला नोट कएलीह—“कर-पावती, सेवा-अस्तित्व, धन-स्रोत—पृथक परीक्षण।” अदालतक दीवालपर चलैत पंखाक आवाज अचानक सबसँ स्पष्ट सुनाइत छल।

बाहरी गलियारामे सौमित्रक पत्नी काव्या एक थैला लऽ आयल छलीह। ओहिमे पतिक रक्तचापकेँ दबायबवला औषधि, एक सफेद रुमाल आ ओकर आठ बरखक बेटीक बनाओल छोट चित्र छल। बेटीक चित्रमे घरक ऊपर तीन रङ्गक बादल छल। काव्या पति लग चित्र नहि पहुँचबौलीह, किएक तँ अदालतक समय ई उचित नहि छल। ओ रेवतीकेँ देखिकय पुछलीह, “अहाँ सभक लेल हमरा पति केवल एक खाता छथि?” रेवती साभार उत्तर देलीह, “नहि, मुदा हम अहाँक पतिक वकील नहि छी। जे कागज अछि, ओकर अधिकारपूर्वक परीक्षण होयत। अहाँकेँ हुनकर प्रतिरक्षाक अधिवक्तासँ स्पष्ट बात करबाक चाही।” काव्या आँखि पोछि कहलीह, “लोकक कोनो रकम गमौल गेल हो तँ ओहो परिवार अछि। हमर बच्चीकेँ सेहो सभटा सूनब नहि चाही।” हुनकर एहि वाक्यकेँ रेवती सारा दिन याद कएने छलीह।

मुकुल मीणा बरामदामे एकदम पाछाँ बैसल छल। ओकर जेबमे सात हजार पाँच सय रुपैयाक पुरान बैंक-पावती गोटाएल छल। सुबहे ओ बसमे एक सहयात्रीकेँ कहैत सुनने छल —“आइ विशेष अदालतमे दू हजार करोड़ खुलत।” मुकुलकेँ लागल छल जे जतेक बड़ संख्या, ततेक छोट ओकर पावती। मुदा सुनबाईक बीच न्यायाधीशक एक प्रश्न ओकर मनमे

बसि गेल—“मूल भुगतानक स्वीकृति कोन व्यक्तिक खाते अन्ततः पहुँचल?” ओ पुछय चाहैत छल जे सात हजार पाँच सयक उत्तर कखनो भेटत कि नहि। अदालतमे बिना अनुमति बाजबाक साहस ओकरा नहि भेल। बाहर निकलि रिद्धिसँ कहलक, “हमर पावती एहि दू हजार करोड़मे अछि कि नहि, से तँ कियो नहि कहलक।” रिद्धि उत्तर देलीह, “एहि लेल पृथक धन-पथ आ दावाक आदेश चाही। बड़ शब्द अहाँक छोट प्रमाणकेँ निगलय नहि देब।”

अनुराधा न्यायालयक पूर्व अनुमति बिना न्यायाधीश लग जाकेँ अपन सारणी प्रस्तुत नहि कएलीह। ओ अधिकृत अनुसन्धान-दलक तकनीकी सहायिका रूपेँ उपलब्ध छलीह; अभियोजन द्वारा प्रस्तुत ओकर विश्लेषण आ मूल बैंक-विवरणक बीचक अन्तर ईरा अपन तर्कमे उठौलीह। न्यायालय दस्तावेजक स्रोत, निर्माणक तिथि आ प्रमाणित प्रतिक उपलब्धतापर लिखित स्पष्टीकरण माँगलक। “कम्प्यूटरमे बनल सारणी स्वयं बैंकक मूल खाता नहि,” संध्या पारीक कहलीह। “एहि सारणीमे देखल योग, दोहराव आ धनक अन्तिम स्थानक मिलानक लेल उपयुक्त व्यक्ति आ मूल सामग्री चाही। प्रमाणक ग्राह्यता आ ओकर अन्तिम अर्थ पर जे प्रश्न अछि, ओ उचित चरणमे तय होयत।” ई भाषणक समय नहि छल; चारि पाँतिक आदेशमे कतेको परिवारक अपेक्षाक सीमा निर्धारित भऽ रहल छल।

दुबईमे विक्रान्तकेँ जयन्त मल्होत्राक फोन आयल। “प्रथम तिथिपर न्यायालय वैध समन-सेवाक प्रमाण माँगल अछि,” अधिवक्ता कहलनि। “जँ समन पहुँचत तँ ओकर उत्तर उचित माध्यमसँ देबय पड़त। बिना कारण अनुपस्थित रहब अलग जोखिम अछि। कागज भेजबासँ पहिने मूल आ अनुवादक मेल जाँचू।” विक्रान्त पुछलक, “ओ सभ हमरा पहिनहि भगोड़ा कहि रहल होएत?” जयन्त उत्तर देलक, “अखबारक शब्द आ अदालतक प्रक्रियागत स्थिति एक नहि। अहाँक विरुद्ध किस आदेशक सेवा भऽ चुकल, ओकरा पहिले बुझू। एक दिन बाहर रहबासँ न्यायालय अपना आप फरार घोषित नहि करैत।” फोन कटिते विक्रान्त अपन कार्यालयक खातापञ्जी खोललक। ‘परामर्श’ शीर्षक नीचाँ कतिपय परियोजनाक नाम स्पष्ट छल, कतिपयक बदला केवल तीन अक्षरक सङ्केत। एहन सङ्केत अपन कम्पनीमे किएक राखल गेल, से ओकरा ज्ञात छल कि नहि—ओहि प्रश्नक उत्तर पाठककेँ एखन नहि भेटल।

विक्रान्तक कार्यालयमे कार्यरत फ़रीदा नामक युवा लेखाकार विगत दू बरखसँ भुगतानक मासिक मिलान करैत छलीह। ओकर भाइ भारतमे इंजीनियरिङ पढ़ैत छल आ फ़रीदाक वेतनसँ ओकर छात्रावास चलैत छल। ओ एक पुरान प्रविष्टिमे कम्पनीक सेवा-रिपोर्टक सङ्केत देखलीह, जकर मुख्य फाइल पिछला सूचना-प्रणालीक रूपान्तरणमे पुरान भण्डारणमे चलि गेल छल। फ़रीदा वरिष्ठ अधिकारीसँ पुछलीह, “मूल सेवा-पत्र सुरक्षित अछि ने?” उत्तर भेटल, “आन्तरिक समीक्षा चलि रहल अछि, एखन किछु नहि पठाउ।” ओ जानैत छलीह जे अनधिकृत रूपसँ ककरो गोपनीय फाइल बाहर पठेनाइ गलत अछि; मुदा मूल अभिलेख नष्ट करब अथवा गायब होएबाक आशंका सेहो काजक नैतिक प्रश्न छल। फ़रीदा परिवर्तनक प्रत्येक सूचना अधिकृत पञ्जीमे दर्ज कएलीह, अपन अलग निजी गुप्त प्रति नहि बनौलीह। ओ कतिपय लोकक नजरिमे केवल कर्मचारी छलीह; अपन नजरिमे हिसाबक सत्यक एक आवश्यक रखबारि।

दोसरा दिन नीरजा अपन दलसँ पुछलीह जे विदेशनामधारी देनदारीक संख्या एकर मूल स्रोतक अपेक्षा बहुत पैघ किएक देखाइत अछि। गणनाक पहिल उत्तर सरल छल—एक कम्पनीक एक करोड़ आगमन, ओतयसँ देल पचहत्तर लाख, फेर सहायक कम्पनीक साठ लाख निर्गमन—तीनूकेँ जोड़ि देलासँ दू करोड़ पैंतीस लाखक लेनदेन लिखल जाइत अछि; मुदा नब बाहरसँ आयल धन पचहत्तर आ साठ लाख जोड़िकय नहि बढ़ैत। दोसर उत्तर कठिन छल—किछु प्रवेशमे बैंकक मूल्यतिथि आ लेखांकनक दिन अलग छल। तेसरमे विदेशी मुद्रा बदलबाक समय विनिमय-दरक अन्तर छल। नीरजा अपन सहायककेँ कहलनि, “ई समझब ककरो बचेनाइ नहि, वास्तविक दोषक सीमाक पता लगेनाइ अछि। जँ छलबाजीक धन अछि तँ ओकरा ओहि रूपमे देखाउ; लेखाक घुमावकेँ अपराधक रकम बनाकय नहि।”

अभियोजनक भीतर ई सावधानी सभकेँ पसिन नहि पड़ल। एक अधिकारी कहलनि, “दू हजार करोड़ लिखिते उच्च कार्यालय ध्यान देत; छोट राशि लिखलासँ मामला हलुक बुझत।” नीरजा आँखि उठौलीह। “हमरा हलुक-बड़का मामला नहि, समर्थित आरोप चाही,” ओ कहलीह। “जे व्यक्ति शुल्क गमौने अछि ओकर क्षति कतेक, आ जे व्यक्ति वास्तवमे धन लुकौने अछि ओकर भूमिका की—ई दुनू देखबाक अछि।” अधिकारी पुछलक, “तँ प्रेसमे की

देब?” नीरजा उत्तर देलीह, “अनुसन्धान चलि रहल अछि, निर्धारित दावाक जाँच होइत अछि—एतबहि। जतेक सार्वजनिक कएल जा सकैत अछि, ओकरा सभटा सत्य कहिकय नहि।” ओ जानैत छलीह जे असत्यक राजनीतिक लाभ छोट घड़ीक लेल पैघ होइत अछि, मुदा ओकर प्रभाव कानूनी निर्णयक वर्षसभ धरि रहि सकैत अछि।

सरबजीत कौरकेँ मुम्बईक एक बैंकसँ सीमित सत्यापन-सूचना आयल। ओ आब अनुभवी अनुपालन अधिकारी छलीह; २०१६ क नोटबन्दीक पाँति सँ मनुष्यक भय केना कागज पर उतरैत अछि, से देख चुकल छलीह। ई बेर हुनका केवल एक समूहक आन्तरिक निपटान-पद्धतिक व्याख्या देबाक छल, न ग्राहकक गोपनीय सूचनाक सार्वजनिक घोषणा। ओ अनुराधाकेँ अधिकृत माध्यमसँ कहलनि, “एकहि रकम दू बैंकक विवरणमे आगमन-निर्गमन भऽ देखाइत अछि; सङ्कलित आँकड़ा बनबैत समय खाताक आन्तरिक स्थानान्तरण चिह्नित करू। आ जकर खाता रोकल अछि ओकर गैरविवादित जीविका-रकमक स्थिति अलग लिखू।” अनुराधा पुछलीह, “सभटा रोक कानूनी कारणसँ लगैत अछि?” सरबजीत कहलीह, “कागजक वैधानिक कारण एकटा प्रश्न, बैंकक सॉफ्टवेयर ओहि कारणकेँ कतेक चौड़ा लागू कएलक—दोसर प्रश्न। अर्जुनक अनुभव तेँ महत्वपूर्ण छल।”

लुधियानामे शान्ति देवीक औषधि किनेबाक लेल बैंकसँ सीमित रकम भेटब शुरू भेल छल, मुदा पतिक उपचारक ऋण कम नहि भेल। चम्पा देवी सुनीतासँ कहलनि, “हमरा एहन लगैत अछि जे सभ किछु धनक पाछाँ जा रहल अछि—मजदूरी, पढाइ, दवाइ, कोर्ट।” सुनीता कहलीह, “धन मनुष्यक जीवनक एक अंग अछि; मुदा जकर कागज पर नाम अछि, ओकर साँस केकरो संख्यासँ बनैत नहि।” ओ मजदूर सहायता-कक्षमे नव पञ्जी बनौलक—केकरा कतेक बकाया, केकरा बैंक रोकक लिखित कारण भेटल, केकरा ककरो प्रमाण देबाक अछि। पुरान हरदेव चौहानक पन्ना ओहि पञ्जीमे अपराधक नामेँ नहि, ‘पहिचान अप्रमाणित’ शीर्षक नीचाँ राखल गेल। रामलखन बेटीकेँ पुछलनि, “एखन तोरा कखन आराम भेटत?” सुनीता कहलीह, “जे दिन प्रश्न पूछबा लेल सभकेँ हमर लग नहि आबय पड़त।”

मुकुलक घरमे ओहि मास एक छोट घटना भेल। ओकर बहिन रानी विद्यालयक विज्ञान प्रदर्शनी लेल पुठ्ठाक पुल बनबैत छलीह। ओ पिता सँ पाँच सय रुपैया माँगलीह; पिता हँसि

कहलनि, “हमर बेटा साढ़े सात हजार गमौने अछि, आ बेटी पाँच सयमे पुल बनौत।” मुकुल चुपचाप अपन बचल मजदूरीमे सँ रकम देलक। रानी पुछलीह, “तोहर पैसा अदालतसँ कखन घुरत?” मुकुल कहल, “हमरा नहि पता।” ओ बच्चीकेँ आश्वासनक नामपर गलत दिन नहि देलक। ओ अपन दावा जारी राखत, मुदा रानीक पुलपर उसका रोजक क्रोध नहिं उतारत। राति जे पुल बनल ओकर बीचमे कागजक एक पट्टी पर लिखल छल—“भार बँटि जाए तँ पुल टिकैत अछि।” मुकुलकेँ लगा जे छोट बहिन गणित पढ़ैत-पढ़ैत ओकरा एक नब प्रश्न दऽ देलक।

रेवतीक एक सीमित आवेदन अर्जुनक गैरविवादित छात्रवृत्ति खोलबाक पूर्व आदेशक अनुपालनसँ सम्बन्धित छल; विशेष धनशोधन प्रकरणमे ओहि खाताधारकक भूमिका स्वतः आरोपितक नहि बनैत। हुनकर सहयोगी शालिनी सोलंकी न्यायालयक अधिकारक्षेत्रक विवरण लिखितमे मिलौलीह। दूनू तय कएलीह जे जतय विशेष अदालतक समक्ष वित्तीय अभिलेखक विशिष्ट प्रश्न अछि, ओतहि ओ प्रश्न उठत; सामान्य बैंक-त्रुटिक समाधानक लेल सक्षम अन्य मंच छोड़ल नहि जाएत। रेवती कहलीह, “ककरो नाम सूचीमे देखिकय ओकरा सभटा मुकदमामे खींचनाइ आसान, बाहर निकालब कठिन।” शालिनी उत्तर देलीह, “एहि लेल प्रक्रियामे व्यक्ति-विशेषक सूचना आ सुनबाईक अधिकार अछि।” ओ राति अर्जुनकेँ पत्र लिखलीह—“अहाँक अध्ययनक कागज सुरक्षित अछि; जाँचक जानकारी देबाक उचित आग्रह अबय तँ विधिसम्मत रूपसँ सहयोग करू, मुदा अफवाहक उत्तर देब अनिवार्य नहि।”

नूर जतय ‘दू हजार करोड़’ शीर्षकक आकर्षण सँ दूर रहिते अपन लेखमे तीन परिवारक नाम बदलबाक अनुमति लेलनीह। मुकुल अपन अनुभव प्रकाशित करब मानि गेल, मुदा पावतीक पूरा खाता-सङ्ख्या नहि छापबाक शर्त रखलक। शान्ति देवी कैमरा समक्ष नहि आयलीह; हुनकर औषधि आ बैंक-रोकक घटनाक अनाम विवरण प्रकाशित भेल। काव्या अपन बच्चीक चित्र प्रकाशित करब अस्वीकार कएलीह। नूरक लेखक पहिल पाँति छल—“बड़ वित्तीय सारणीमे किछु वास्तविक पीड़ा अछि, मुदा प्रत्येक पाँति एक नागरिकक जीवन नहि, आ प्रत्येक नागरिक पाँति मात्र नहि।” सम्पादक कहलनि, “बहुत लम्बा अछि।” नूर उत्तर

देलीह, “न्यायक कहानी छोट करब तँ जकर दुख बचल अछि, ओकर स्थान कटि जाएत।” अखबारमे अन्ततः आधा पृष्ठ भेटल, मुदा मुख्य शीर्षकमे रकमक अतिशयोक्ति नहि छल।

सौमित्र बंसलक वकील ईरा सक्सेना बैंकक एक प्रमाणित पत्रक प्रतीक्षा करैत छलीह। ओ अपना मुवक्किलकेँ पुछलीह, “पछिला वर्ष ई भुगतानक स्वीकृति किएक देलहुँ?” सौमित्र कहलक, “सामग्री भेटल छल।” “केकरा?” “सेवा-कम्पनीकेँ।” “सेवा कोन विद्यार्थीकेँ भेटल?” सौमित्र नजरि नीचाँ कएलक। “हमरा केवल मासिक कुल सत्रक प्रतिवेदन देखाओल गेल छल।” ईरा कहलीह, “तखन ताहि सीमा धरि सच लिखू। जे नहि देखने छी ओकर प्रत्यक्ष ज्ञानक दावा नहि करू।” सौमित्र पुछलक, “एहिसँ हमर बचाव कमजोर पड़त?” ईरा उत्तर देलीह, “जे प्रतिवेदन अहाँ नहि जाँचने छी, ओकरा जाँचल कहब रक्षा नहि, अगिला असत्यक आधार होएत।” सौमित्र अपन बेटी द्वारा बनाओल चित्रक बारेमे सोचलक, आ पहिल बेर कागजक खाली ठामकेँ एहन देखलक जे ओहि ठाममे अपन अज्ञान लिखल जा सकैत छल।

उसी समय दुबईमे फ़रीदा अपन पुरान सेवा-पञ्जीक सूची अधिकृत कम्पनी-प्रमुखकेँ ई-मेल कएलीह। ओ स्पष्ट लिखलीह जे एक परियोजनाक ‘काम पूरा’ लिखल प्रविष्टिक संग अन्तिम स्वीकृति-पत्र नहि भेटल, आ एक दोसर परियोजनाक पैसा तीन खातामे घुमि अन्ततः मूल ग्राहक लग घुरि गेल अछि। ओ पत्रमे अपराध अथवा शुचिता—कुनू निष्कर्ष नहि लिखलीह। विक्रान्तकेँ ई पत्रक प्रति भेटल। ओकर मुँहक रङ्ग बदलल। ओ फ़रीदाकेँ कार्यालयमे बजाकय पुछलक, “अहाँ ई जाँच एखन किएक कएलहुँ?” फ़रीदा कहलीह, “किएक तँ कानूनी कागज मागल गेल अछि, आ पुरान भण्डारण रूपान्तरणसँ पहिने अभिलेख सुरक्षित करब आवश्यक अछि।” विक्रान्त कहलक, “अहाँ हमरा अविश्वास करैत छी?” ओ कहलीह, “विश्वासक प्रमाण हिसाबक सत्यापनक बदला नहि होइत।” विक्रान्त हुनका तत्काल नहि निकाललक, मुदा दू दिन धरि हुनकासँ नजरि बचबैत रहल।

अक्टूबरक पहिल सप्ताहमे न्यायालयक आदेशानुसार अभियोजन एक पूरक सूची प्रस्तुत कएलक। ओहिमे कथित स्रोत-अपराधक विशिष्ट प्राथमिकी, प्रशिक्षण-शुल्कक प्राप्ति, सात सेवा-प्रदायकक नाम, आ तीन बैंकक मूल विवरणक प्रमाणित अंश अलग-अलग पृष्ठपर रहल। एकटा गलती तत्काल देखाएल: जाहि खाताक अन्तिम चारि अङ्क ‘७३२१’ लिखल छल,

ओहि अङ्कसँ दू अलग शाखाक खाता मिलैत छल। मुकुलक रकम जकर मार्गसँ गेल, ओकर खाता सत्यापनक योग्य छल, मुदा दोसर खाताक ग्राहक एक औषधि-विक्रेता निकसल, जे पूर्णतः अलग व्यावसायिक भुगतान प्राप्त कएने छल। दूनूकेँ एक मानिकय बनाओल प्रारम्भिक रंगीन चित्र हटेबाक पड़ल। नीरजा स्वयं संशोधन पर हस्ताक्षर कएलीह। सहायक पुछलक, “एहि सँ अभियोजन कमजोर होएत?” ओ कहलीह, “गलत चित्रपर ठाढ़ अभियोजन कतहु नहि पहुँचैत। जे बाकी अछि ओहि सामग्रीक शक्ति एखन देखू।”

औषधि-विक्रेता याकूब अंसारीकेँ अपन व्यापारमे बेसी रुचि छल; ककरो नामक चर्चा सँ ओकर मुनाफा नहि बढ़ैत छल। मुदा खाताक अङ्कक गलत मेलक कारण पुलिसक एक प्रश्नपत्र हुनका लग आयल छल। ओ बैंकक प्रमाणित खाता-विवरण देलक आ दवाईक बिक्री-पावती रखलक। निरीक्षक सीमा उचित जाँच पछाति एहि विशिष्ट भुगतानक वास्तविक ग्राहक-पहिचान स्पष्ट कएलनि। याकूब कहलनि, “एक गलत अङ्क हमर व्यापारकेँ अपराधी बना सकैत छल?” सीमा उत्तर देलीह, “एक गलत अङ्कसँ आरोप नहि टिकबाक चाही। तथापि जँ कोनो शंका बनल अछि तँ एकरा लेखा द्वारा दूर करब हमरो जिम्मेदारी अछि।” याकूब कक्षसँ बाहर निकलि बेटीक विद्यालयक बसक लेल दौड़लक। ओकरा आजुक न्यायालयीन राहतक बेसी नाम नहि मालूम छल; बस एतबा जे दुकानक ताला लगाओल जाएबाक भय थोड़ कम भेल।

अर्जुन अपन परीक्षाक बाद मित्र मोहन बैरवा लग बैसल छल। मोहनक नाम पाँच सय सूचीक एक अनधिकृत सन्देशमे उपयोग भेल छल; ओ वास्तवमे ओकरा प्रमाणित वित्तीय सूचीमे आरोपितक रूपमे चिन्हित नहि कएल गेल छल। मोहन पुछलक, “तोरा न्यायालयमे बाजय पड़त?” अर्जुन कहलक, “एखन कहल नहि गेल अछि। हम अधिकृत अधिकारीकेँ मूल पर्ची देने छी, प्राप्ति-पत्र अछि।” मोहन खिड़की बाहर देखैत कहलक, “पहिने कॉलेजमे के खण्डणी लेलक, के पढ़ल, ओकर चर्चा होइत छल। एखन केकर खाता फ्रीज भेल, से पूछैत छथि।” अर्जुन उत्तर देलक, “खाता पढ़ाइमे प्रवेश नहि दैत; पढ़ाइ खाताक बाहर सेहो करबाक पड़ैत अछि।” दूनू हँसल। ई हँसीक भीतर भय समाप्त नहि भेल छल, मुदा ओ अपन शरीरमे हलुक जगह बना रहल छल।

दरभंगामे शिवनारायण झा साँझ छोट बगियामे बैसल छलाह। हुनकर हाथक कँपनी बढ़ि गेल छल; रेवतीक नव पत्र खोलबामे हुनका समय लागल। पत्रमे विक्रान्त सहगलक नाम देखिते ओ पुरान सहगल व्यापार गृहक एक प्रश्न याद कएलनि। “मालक चलान आ कागजक चलान,” ओ धीरे बजलाह, “दुनू अलग होइछ।” प्रीति नामक नातिन हुनका पुछलीह जे वकालतमे सबसँ कठिन प्रश्न की। ओ उत्तर देलनि, “ककरा बात नब बुझल, से स्वीकार करब।” बच्ची निश्चिन्त भावसँ कहलक, “हम ककरो कहि सकैत छी जे हम नहि बुझलहुँ।” शिवनारायण हँसलाह। जकरा बीस वर्ष पहिने अदालतमे लोक मान-सम्मानक कमजोरी बुझैत छल, बच्ची ओकरा पढ़ाइक सामान्य बात मानि रहल छल। अपन वृद्धावस्थामे ओ एतबा परिवर्तनकेँ छोट उपलब्धि नहि मानैत छलाह।

जोधपुरमे रेवती अपना दस्तावेजसँ एक सूची तैयार कएलीह, जाहिमे प्रत्येक प्रभावित नागरिकक अधिकारक अलग मार्ग लिखल छल। शान्तिक गैरविवादित दवाईक रकम बैंक-आदेशक अनुपालनसँ जुड़ल; अर्जुनक छात्रवृत्तिक धनक उपयोगपर पहिनहि सीमित अनुमति भेटल; मुकुलक शुल्क-वापसी अलग शिकायतक विषय छल; तरुणक जमानत आ अभियोजन-परीक्षण अलग चलैत छल; सौमित्रक प्रतिरक्षा ओकर अधिवक्ताक हाथमे छल; विक्रान्तक वैध समन-सेवाक स्थिति विशेष अदालत देखैत छल। रेवतीकेँ अपन सहयोगी कहलक, “अहाँ एतेक फाइलकेँ एक कादम्बरी बनायब तखन कतेक लम्बा होएत!” रेवती उत्तर देलीह, “कादम्बरी हो कि मुकदमा, कोनो पात्रक जीवनकेँ दोसरा पात्रक दोषक नीचे दाबब नहि। ई हिसाबकेँ बराबर रखबाक सबसँ कठिन काज अछि।”

ओहि दिन विशेष न्यायालयमे अभियोजनक पूरक प्रतिवेदनपर संक्षिप्त सुनबाई भेल। अभय अवस्थी स्वीकार कएलनि जे प्रारम्भिक वित्तीय सारणीमे सकल प्रवाहक रूपमे ₹२,००० करोड़क योग छल; ओहि राशिक प्रत्येक घटककेँ पृथक अपराधजन्य रकम कहल उचित नहि। तथापि ओ कहलक जे किछु प्रमाणित भुगतान-श्रृंखलामे निबन्धन-शुल्कक स्रोत, सम्बन्धित कम्पनीक बीच नियन्त्रण आ विदेशस्थित सेवाक वास्तविकता पर ठोस प्रथमदृष्टया सामग्री भेटल अछि। ईरा सक्सेना उत्तर देलीह जे समूहक कम्पनीसभमे साझा निदेशक होएब स्वयं अपराध नहि, आ खाताक मार्गक अर्थ लिखित अनुबन्ध, प्रत्यक्ष सेवा आ स्वीकृत भुगतानक

सहारे तय करबाक चाही। न्यायाधीश सभ पक्षक बात सुनलीह आ पुछलीह—“अहाँक पुनर्मिलानक आधार बैंकक मूल प्राप्ति-निवेश अछि अथवा केवल जाँच-दलक आन्तरिक सारणी?” एहि प्रश्नपर अभियोजनक पहिल उत्तर अधूरा रहल।

न्यायाधीश पुछलीह, “जाहि तीन राशिक पाछाँ वास्तविक विद्यार्थीक भुगतानक दावा अछि, ओ सभमे सँ केकरा पक्षमे कतेक मूल पावती अछि?” अभय अपना सहयोगीसँ जानकारी लेलनि। एक भुगतान मुकुलक पावतीसँ मेल खाइत छल, मुदा धनक अन्तिम स्थानक एक पड़ाव एखन अस्पष्ट छल। दोसरमे प्रशिक्षणक वास्तविक दू दिवसक प्रमाण छल; ओहि भागक वैध सेवा-मूल्य कतेक, विवादित छल। तेसरमे देनदार कम्पनी स्वयं धन लौटा देनेक दावा करैत छल, जकरा बैंक एखन प्रमाणित नहि कएने छल। न्यायाधीश कहलीह, “एहि तीनू बातकेँ जोड़ि एक पूर्ण ठगी नहि लिखू। जे बात सिद्ध होयबाक सम्भावना अछि, ओकरा प्रमाणित करबाक बाट खुला अछि। जे बात एखन विवादित, ओकरा विवादित लिखू।” एहि छोट निर्देशसँ अदालतक भीतरक तर्क बहुत बदलि गेल।

बाहर पत्रकारसभ फेर जमा छलाह। एक चैनल बयान चाहैत छल जे ‘सम्पूर्ण आर्थिक साम्राज्य ढहि पड़ल’। नूर बजाय एहि के रानीक विज्ञान-पुलक कथा सुनब सम्भव मानलीह—मुकुलक बहिन पाँच सय रुपैयामे पुल बनौने छलीह; बड़ संख्या सँ सेतु नहि बनैत, भारक सही बाँट चाही। मुदा ओ ई घरेलू घटना बिना परिवारक अनुमति प्रकाशित नहि कएलीह। अपन लेखमे केवल लिखलीह जे न्यायालय कुल लेनदेनक योग आ विशिष्ट अपराधजन्य धनक बीच भेद माँगने अछि, आ विदेशस्थित कथित लाभार्थीक विधिवत् समन-सेवा एखन पूर्ण सत्यापनक विषय अछि। सम्पादक पुछलक, “तँ एखन आरोप सिद्ध होइबाक सम्भावना कतेक?” नूर कहलीह, “प्रतिशत बताबयवला खेल नहि अछि ई। कोनो व्यक्ति सम्बन्धमे अदालत जे कहने नहि, से हम नहि कहब।”

सुदर्शन सहगलकेँ विक्रान्तक एक पत्र भेटल। पत्रमे पुत्र लिखने छल जे ओकर कम्पनीक दू परियोजनाक कागज पुनः मिलाओल जा रहल अछि; प्रारम्भिक संख्या अधूरी होयबाक आशंका अछि, आ समन-सेवाक विधिक प्रश्नपर अधिवक्ता कार्य करैत छथि। सुदर्शन जवाबमे पुछलनि, “तोहर कामक वास्तविक सेवा ककरा भेटल?” विक्रान्त फोनपर कहलनि, “किछु

पूर्ण भेल छल, किछुक विवाद अछि।” पिता पुछलनि, “जकरा पूरा नहि भेटल, ओकर पैसा कोना राखल गेल?” पुत्र चुप भेल। सुदर्शन फेर कठोर शब्द नहि बजलाह। ओ केवल कहलनि, “हम तोरा निर्दोष कहि पर्चा नहि निकालब; दोषी सेहो नहि कहब। घरमे आवि सभ कागज देखाउ।” विक्रान्त उत्तर देलक, “देश आबि सकब कि नहि, अधिवक्ता बतौत।” एहि बेर पिता ओकरा डरपोक नहि कहलनि। हुनका ज्ञात छल जे जखन कानूनक बोलावट अछि, तखन साहसक अर्थ बिना बुझने विमान पकड़ब मात्र नहि।

फ़रीदाक लेखा-जाँचमे एक नब विरोधाभास भेटल। जहि रिपोर्टमे भारतीय ग्राहकक लेल साठ दिनक तकनीकी परामर्श लिखल छल, ओहि फाइलक ई-मेलमे चालीस दिनक काजक स्वीकृति छल। शेष बीस दिनक कोनो विवरण ओ नहि पाबि सकलीह। मुदा बैंकमे प्राप्त रकम साठ दिनक बिल अनुसार छल। वरिष्ठ अधिकारीक निर्देश छल—“ग्राहक लग सँ पुष्टिक प्रतीक्षा करू।” फ़रीदा अपन कार्य-पञ्जीमे तिथि लिखलीह, मूल डेटा नष्ट नहि होए तकर अनुरोध कएलीह आ निर्धारित विधिक माध्यमसँ देबाक योग्य सामग्रीक सूची तैयार कएलीह। ओकरा कोनो न्यायालय समन नहि भेजने छल, तेँ ओ स्वतः भारतक अदालतमे साक्षी बनबाक घोषणा नहि कएलीह। आत्मविश्वासक अर्थ ओकरा लेल एके छल—जे नहि भेटल तकरा ‘भेटल’ नहि लिखब।

जाँच-दलक एक बैठकमे रिद्धिक विश्वविद्यालयक सूची फेर आयल। नीरजा स्पष्ट कएलीह जे सूचीमे पाँच सय क्रमाङ्क अछि, मुदा एकल लाभार्थीक पाँच सय स्वतन्त्र खाता सिद्ध नहि। किछु पाँतिमे नाम दुहराओल, किछु नामक संग खाताक केवल चारि अङ्क; अधिकांश पर असल नियन्त्रणक प्रमाण नहि। “हमर विद्यार्थीसभक सहमति आ निजी जानकारीक क्या भेल?” रिद्धि पुछलीह। नीरजा कहलीह, “ओ प्रश्न जाँचक सीमासँ बाहर नहि; जे प्रकरणमे डिजिटल अभिलेख चाही ओहि लेल विधिसम्मत आदेश, सीमित पहुँच आ स्रोत-इतिहास चाही।” अनुराधा धीरे कहलीह, “नामक गिनतीकेँ खाताक गिनती, खाताक गिनतीकेँ अपराधीक गिनती, आ फेर अपराधीक गिनतीकेँ धनशोधनक रुपैया मानब—ई चारि गलती एक पंक्तिमे समा सकैत अछि।” सभकेँ एहन सरल वाक्यक आवश्यकता छल, जकरा आगाँ तकनीकी कठिनाईक असल काज आरम्भ होइत।

उसी सारणीमे ‘एच. चौहान’ लिखल एक पुरान सम्पर्क फेर उभरल। रिद्धि सुनीताक प्रमाणित वेतन-पञ्जीक प्रति मँगबाक पहिने अपन संस्थागत अधिकार जाँचलीह। सुनीता जे अनुमति देने छलीह, ताहि सीमा भीतर एक समय-सीमा-तुलना तैयार भेल। २००९ क कथित हरदेव चौहानक कामक समय आ २०२५ क सम्पर्क-पञ्जीक प्रविष्टिक बीच सोलह वर्षक अन्तर छल; साझा उपनाम प्रमाण नहि। जाँच अधिकारी कहलनि, “कदाचित् पिता-पुत्र?” अनुराधा तुरन्त उत्तर देलीह, “कदाचित् कियो दोसर, कदाचित् केवल सङ्केत। वंशावलीक अनुमानसँ बैंक-खाता नहि जुड़ैत।” रिद्धि पुछलीह, “तखन ई पृष्ठ राखब कि हटायब?” नीरजा कहलीह, “स्रोतसहित सुरक्षित राखू। ओहि पर व्यक्ति-विशेषक निष्कर्ष नहि लिखू।” एक नामकेँ जल्दबाजीसँ अपराधी बनेबाक अधिकार ककरो नहि छल।

साँझमे जोधपुरक रस्ता पर एक पहिचान-पत्र बनबेबाक दुकानक बाहर दू छात्र झगड़ि रहल छलाह। एक कहैत छल—“पाँच सय नामक मामला अछि, सभ छात्र बेचैन छथि।” दोसर कहैत छल—“सभ छात्र नहि। जेकरा बैंक रोक लगल ओ बेसी पीड़ित।” रिद्धि एहि तर्ककेँ देखलीह, मुदा शिक्षकक भावसँ बीचमे नहि पड़लीह। रस्ता पार करैत हुनका याद आयल जे मरुधर परिसरक आरम्भिक वर्षमे पगरिया आ जलनिकासक अधिकारपर झगड़ा छल। ओहि कालहूँ लोक सभ भूमि नामक एक वस्तु देखैत छलाह, जबकि प्रत्येक परिवारक पथ अलग छल। डिजिटल सूचीमे सेहो सभकेँ एके चिह्न देखाइत छल, मुदा वास्तविक सम्बन्धक मार्ग परखबाक पड़ैत। ओ अपन घरक दुआरि पर पहुँचलि तखन तक आकाश पर पतझरक पहिल कम लालिमाक विस्तार छल।

अक्टूबरक मध्य भागमे विशेष न्यायालयक समक्ष लिखित आदेश पढ़ल गेल। संध्या पारीक कहलीह जे अभियोजनक शिकायत आ संलग्न अधिकृत सामग्रीक परीक्षण एहि चरणमे जे नियम माँगैत अछि, अदालत ओही सीमा भीतर विचार करैत अछि। अदालत अनुसूचित अपराधक अधिकृत स्थिति, कथित अपराधजन्य धनक प्रत्येक विशिष्ट स्रोत, रकमक अन्तिम पथ आ सम्बद्ध व्यक्तिक भूमिकाक विवरण स्पष्ट करबाक निर्देश देलक। विदेशी पतेपर समनक विधिसम्मत सेवा होयबाक अलग प्रमाण आवश्यक ठहरल; बिना प्रमाण विक्रान्तक अनुपस्थितिक विरुद्ध कठोर अगिला कदम एहि तिथिपर नहि उठाओल गेल।

सौमित्रक अधिकारपूर्वक उपलब्ध प्रतिक प्रश्नपर बचाव पक्षकेँ उपयुक्त अवलोकनक अवसर देबाक निर्देश भेल। ई आदेश आरोपकेँ निष्फल घोषित नहि करैत छल, न ओकर सत्यता अन्तिम रूपसँ स्वीकार करैत छल; परीक्षणक नियम तय करैत छल।

अदालत विशेष रूपसँ वित्तीय सारणीक योगपर लिखलक जे ओकरा ‘कथित कुल परिसंचरण’ कहबाक सामग्री अछि, मुदा ₹२,००० करोड़केँ एखन ‘सिद्ध अपराधजन्य धन’ अथवा ‘पीड़ितसभक कुल हानि’ कहल उचित नहि। न्यायाधीश संकेत देलीह जे बैंकक मूल विवरण, आन्तरिक स्थानान्तरणक विलोपन, विनिमय-दरक गणना, निबन्धन-शुल्कक वैध-अवैध अंश आ कम्पनीक वास्तविक सेवा एकाधिक कसौटी छथि। पुनर्गणनाक प्रतिवेदन निर्धारित तिथिमे दाखिल हो। जाँचक बाधा बिना उचित समय देबाक बात सेहो लिखल गेल। एहि आदेशमे अदालत उद्योगक प्रत्येक कम्पनीकेँ निर्दोष नहि ठहरौलक, न सभ छात्रक रकम घुरेबाक एक सार्वत्रिक निर्देश देलक। जकरा वैधानिक राहत चाही, ओकरा अपन उपयुक्त आवेदन आ प्रमाण सहित सक्षम मंच धरि पहुँचबाक मार्ग खुला रहल।

अभय अवस्थी आदेश सुनि बाहर निकललाह तँ हुनका एक सहकर्मी कहलनि, “ई तँ अदालत संख्यापर भरोसा नहि कएलक।” अभय उत्तर देलनि, “अदालत भरोसा करबाक अपेक्षा परीक्षण माँगल अछि। अभियोजनक काज इएह अछि।” घर लौटिते ओ अपन बेटीकेँ स्कूलक गणितक गृहकार्य करबैत छलाह। बेटी पुछलीह, “पापा, पाँच आ पाँच दस होइत अछि, ने?” ओ कहलनि, “हँ।” “आ एके पाँचकेँ दू बेर लिखी तँ दस रुपैया भऽ जाएत?” अभय बेटीकेँ देखैत रहि गेलाह। ओ लिखलीह, “नहि, एके रुपैया दू बेर गनलासँ रुपैया बढ़ैत नहि।” जकरा अदालतमे पूरा दिन कहबाक पड़ल, ओहि बातकेँ बच्ची एक पाँतिमे समेटि देलखिन। अभय मुस्कुरायलाह, मुदा हुनकर मनमे वास्तविक पीड़ितसभक रकम घुरबाक कठिन यात्रा फेर उभरि आयल।

ईरा सक्सेना काव्याकेँ आदेश बुझौलीह। “अहाँक पति पर आरोप एखन अछि; नहि समाप्त भेल अछि, नहि सिद्ध। प्रक्रिया चलत।” काव्या पुछलीह, “ओ घर आबि सकताह?” ईरा कहलीह, “जे उपस्थितिक शर्त लागू अछि, ओकर पालन आवश्यक। अहाँक पारिवारिक आवश्यकताक योग्य आवेदन अलग देखल जा सकैत अछि।” काव्या अपन बेटी द्वारा बनाओल

चित्र देखबैत कहलीह, “ओ रोज पूछैत अछि जे अदालत घरकेँ दोष देलक कि पापा कैँ।” ईरा उत्तर देलीह, “घर ककरो अपराधक न्यायिक इकाई नहि। कानून व्यक्तिक भूमिका जाँचैत अछि। मुदा परिवार जे पीड़ा भोगैत अछि, ओकरा हम नकारि नहि सकैत छी।” काव्या पहिल बेर अधिवक्ताकेँ धन्यवाद देलीह, यद्यपि हुनका कोनो वांछित अन्तिम निर्णय एखन नहि भेटल छल।

मुकुलक लेल आजुक आदेशक अर्थ बहुत सामान्य छल। सात हजार पाँच सय रुपैया एखन नहि घुरल, मुदा ओकर पावतीक विशिष्ट पथक जाँच समाप्त नहि भेल अछि। बसमे घर जाइत ओ अपन बहिन रानीकेँ फोन कएलक। रानी पुछलीह, “न्यायालयमे तोहर पैसा भेटल?” मुकुल उत्तर देलक, “नहि।” “तँ कियैक गेलह?” “जँ नहि जाएब तँ हमर सात हजार पाँच सय एहन संख्यामे हराइत जायत जकरा केओ नीकसँ नहि गनलक।” रानी कहलीह, “हमर पुल एखनहुँ ठाढ़ अछि।” मुकुल कहल, “तँ ओकर एक फोटो पठाउ।” रानी फोटो पठौलीह—पुठ्ठाक पुलक नीचाँ नील कागजक नदी छल, आ दूनू कात अलग-अलग ईंटक सहारा। मुकुल ओ फोटो अपन फोनमे सुरक्षित रखलक, मुद्राक प्रमाणक सङ्ग नहि, अपन धैर्यक प्रमाणक रूपमे।

ओम्हर नीरजा राठौड़ आदेशक बाद कार्यालयमे अपन दलकेँ किछु प्रश्न बाँटि देलीह। एक समूह मूल स्रोत-अपराधक शिकायतक अनुसूची आ समयरेखाक प्रमाणित स्थिति जाँचत; दोसर वास्तविक शुल्क-प्राप्तिक बैंक-मार्गक पुनर्मिलान करत; तेसर विदेशी सेवाक बिल, कर-विवरण आ सेवा-स्वीकृतिक प्रामाणिकता पर विधिसम्मत सहायता माँगत; चौथ गोपनीय विद्यार्थी-सूचीक उपयोग-सीमा देखत। ओ विशेष रूपसँ कहलनि—“आरोपितक परिवार, विद्यार्थीक जाति, जन्मठाम, भाषा आ परदेशमे रहब हमरा लेल अपराधक कसौटी नहि। प्रमाण व्यक्ति-विशेषक हो।” ओहि क्षण खिड़की बाहर पुरान नीमक पात झरि रहल छल। कियो बहस नहि कएलक। प्रत्येक अधिकारी अपन अलग कामक पर्ची लऽ उठि गेल, आ कागजक संख्या एक भोरक निर्णायक नारा बनबाक बदला काजक निश्चित सूची बनि गेल।

अनुराधा सेन दू हजार करोड़ लिखल प्रारम्भिक सारणीक मुँह पर लाल रेखा नहि खींचलीह; ओ ओकर उपरि एक नब शीर्षक देलीह—‘पुनर्मिलान शेष’। किछु भागमे तिथिक पुनरावृत्ति,

किछुमे आन्तरिक स्थानान्तरण, किछुमे विनिमय-दरक अन्तर, आ किछुमे समायोजनक कागजी प्रविष्टि छल। एक भाग एखनहुँ वास्तविक बाह्य प्राप्तिक रूपमे देखाइत छल, जकर विशिष्ट अपराधसँ सम्बन्धक स्वतन्त्र जाँच आवश्यक छल। ओ अपन सहकर्मीकेँ कहलीह, “भ्रमक संख्या हटाउ; मुदा जे राशि प्रश्न उठबैत अछि, ओकरा झाड़िकय मत फेकू।” सहकर्मी पुछलक, “अन्तिम परिणाम की होएत?” ओ कहलीह, “भविष्यक उत्तरक अनुमान एखन देब नहि। जँ अन्तिम परिणाम हमरा प्रिय मतक विरुद्ध गेल, तकरो लेल स्थान राखब एक लेखाकारक धर्म अछि।”

आगाँक सप्ताहमे वैध माध्यमसँ विदेशी समन पठेबाक कागजक तैयारी शुरू भेल। विक्रान्तकेँ अपन अधिवक्ता सलाह देलक जे अनधिकृत मध्यस्थक फोनपर भरोसा नहि करथि; अधिकृत नोटिस आ उपयुक्त न्यायिक निर्देशक पालन करथि। विक्रान्त फ़रीदाक सूची पढलक। साठ दिनक प्रतिवेदनमे बीस दिनक अंतर उस पार कम्पनीक वास्तविक सेवा-विवाद छल कि जानबूझि बनाओल बिल, तकरा बुझबाक लेल ओ भारतीय ग्राहकक मूल कामक पत्र मँगौल। उत्तरमे ग्राहक कहलक जे विभागक कर्मचारी बदलि गेल, किछु कार्य-परिणाम भेटल, शेषक प्राप्तिक प्रमाण नहि। एहि उत्तरकेँ विक्रान्त अपन मनमाफिक ‘सभ काम पूरा’ नहि लिखलक। ओ चुपचाप जयन्तकेँ मूल सन्देश पठौलक आ कहल—“जे अछि, ओहीपर कानूनी उत्तर बनाउ।” ओकर भीतर अपराध-बोध छल वा पेशागत सावधानी—एखन ई कथाक अनुत्तरित प्रश्न रहि गेल।

मुम्बईमे सुदर्शन सहगल पत्रक प्रति देखिकय बेटाक बाल्यावस्थाक दृश्य याद कएलनि। विक्रान्त बारह बरखक छल, एक बेर गोदाममे मापबाक समय तीन बेर उही पेटी गनने छल आ सौ पेटीक बदला एक सय दू लिखि देने छल। पिता कहने छलाह—“एक पेटी दू बेर देखिते दू पेटी नहि होइत।” विक्रान्त ओहि दिन रोएने छल, किएक तँ ओकरा लगा जे पिता ओकरा अविश्वास करैत छथि। सुदर्शन ओकरा गोदाम फेर देखौने छलाह। एखन पिता एतबा वर्ष बाद फोन पर कहलनि, “बेटा, जतेक सही अछि से लिख। जे गलत अछि ओकरा बचेबामे हमरा नाम नहि जोड़िह।” विक्रान्त फोनक एहि कात देर धरि चुप रहल। बादमे कहलक, “बाबूजी,

अहाँ हमर विरोधी नहि छी?” सुदर्शन कहलक, “सत्यकेँ विरोधी बनायब तँ पिता सेहो किछु बचा नहि सकत।”

जोधपुरमे अर्जुनक परीक्षा-परिणामक प्रतीक्षा शुरू भऽ गेल छल। ओ अपन कक्षमे बैसल दोसर विद्यार्थीकेँ ई बात नहि कहलक जे ओकर खाता पूरी तरह शुचि सिद्ध भऽ गेल; ओकरा मालूम छल जे चारि हजार दू सयक अर्थक परीक्षण जारी अछि। तथापि शिक्षककेँ छात्रवृत्तिक वैध रकम खोलेबाक आदेशक प्रति देखायब आवश्यक भेल तँ ओ दिखेलक। शिक्षक एक पाँति पढ़ि पूछलनि, “तोहर न्यायालयक मामला पढ़ाइमे बाधा नहि देत?” अर्जुन कहलक, “जाँच लेल जखन बजाओल जाएत तँ जाएब। मुदा एखन अध्ययन करैत छी।” पायल ओकरा पुस्तकालयमे एकाग्र देखिकय प्रसन्न भेलीह। किछु महिना पहिने ओ स्वयं परामर्शक बन्द कोठरीक कारण भयभीत छलीह; एखन ओ बुझि रहल छलीह जे संस्थागत सहायता दोषमुक्तिक घोषणा नहि, रोजक जीवन चलैत रखबाक एक आवश्यक व्यवस्था अछि।

नूर जतय अपन अगिला लेख लेल सुनीतासँ फोनपर बात कएलीह। “हरदेव चौहानक प्रविष्टिक बारेमे अहाँ की निश्चित कहि सकैत छी?” नूर पुछलीह। सुनीता कहलीह, “वेतन-पञ्जीमे नाम अछि, तिथिसँ सम्बन्धित उपस्थिति विवादित अछि, आ ओहि नामक व्यक्ति ककरा रूपमे काज करैत छल—एखन जाँच बाकी अछि। २०२५ क “एच. चौहान”केँ ओही मनुष्य कहबाक प्रमाण हमरा नहि।” नूर ई पूरा वाक्य लिखलीह। फेर सुनीता पुछलीह, “मजदूरक बकाया पर सेहो लिखब?” नूर कहलीह, “अवश्य। केवल रहस्यक नाम छीपि रहल हो तँ लोक पढ़ैत अछि; मुदा जकर महीनाक श्रम काटल गेल, ओकरा भूलल जाए—ई गलत।” सुनीता अपन पञ्जीकेँ देखलीह। बरख बदलैत रहल, परिवारक रसोइ दिन-प्रतिदिनक आवश्यकतासँ चलैत रहल।

साँझक साढ़े छः बजे रेवती उच्च न्यायालयक एक पुरान आदेशक प्रति पढ़ि रहल छलीह। अगले सप्ताह हुनका खाताक रोकक एक पृथक रिट-प्रकरणमे उपस्थित होएबाक छल। विशेष न्यायालयक नव आदेश ओहि प्रकरणक सम्पूर्ण आधार नहि, मुदा अनुपालन, समानुपातिकता आ कारणयुक्त रोकक प्रश्नमे सन्दर्भ देबाक सम्भावना छल। ओ अपन कागज दू ढेरीमे रखलीह—एकपर ‘धनशोधन अभियोजनक गुण-दोष’, दोसरपर ‘निर्दोष वा गैरविवादित धनक

उपयोगक अधिकार’। एहि दू ढेरीकेँ न मिलेनाइ साधारण काज नहि छल; दूनूक बीच अर्जुनक शुल्क, शान्तिक दवाई आ मुकुलक प्रतीक्षाक दिन राखल छल। ओ पिता द्वारा देल पुरान पत्र निकाललीह। कागज पर सन् २००० क स्याहीक रङ्ग फीका पड़ि गेल छल, मुदा एक वाक्य साफ पढ़ल जाइत छल—“नाम लिखल मात्रसँ आदमी नहि बनैत।”

ओहि राति विशेष न्यायालयक सुरक्षित कक्षमे ₹२,००० करोड़क पुनर्मिलान शेष सारणी, पाँच सय क्रमाङ्ककक स्रोत-पञ्जी आ तीन विशिष्ट बैंक-श्रृंखलाक अलग-अलग दस्तावेज राखल गेल। अदालतक एक लिपिक प्रत्येक लिफाफाक क्रमाङ्क मिलेलक, प्राप्तिक तिथि देखलक आ अलमारीक ताला बन्द कएलक। बाहर नगरक सड़कपर ठेला खींचैत एक युवक दिनक कमाइ गनैत जा रहल छल। ओकरा एहि न्यायालयक विषयमे किछुओ ज्ञान नहि छल; ओ बस अपन दैनिक हिसाबमे एकटा सिक्का दू बेर नहि गनबाक सावधानी राखैत छल। भीतरक संख्याकेँ बुझबाक लेल लाख पृष्ठ लगि सकैत छल, मुदा बाहरक ओकर सावधानीक सिद्धान्त एके छल। कागजमे लिखल दू हजार करोड़क चमक नहि, ओकर भीतर कतेक वास्तविक धन आ ककर वास्तविक अधिकार अछि—आगाँक सुनबाईमे एही प्रश्नक कठिन उत्तर चाही।

रेवती रेलक खिड़कीसँ अन्हार देखैत छलीह। दूर गाँवक पोखरिक कात किछु दीप झिलमिला रहल छल। ओ अपन लिखल पर्चीमे अगिला सुनबाईक तिथि रखलीह आ खाली पृष्ठपर लिखलीह—“सत्ताइस वर्षक बादो न्यायालयक पहिल प्रश्न: ई नाम ककर अछि?” ओकरा लगल जे दरभंगाक जिला अदालतक पहिल बरामदासँ जोधपुरक विशेष न्यायालयक सुरक्षित अलमारी धरि सारा यात्रा एक सीधा पथ नहि, अनेक अधूरा पगरियाक मिलान अछि। ओहि पगरियामे कतहु श्रमिकक मजदूरी छल, कतहु छातीक दवाई, कतहु परीक्षा-शुल्क आ कतहु विदेशी कम्पनीक बहु-पृष्ठीय विवरण। एक व्यक्ति दोषी हो सकैत अछि, दोसर निर्दोष, तेसरक बारेमे एखन जानकारी अधूरी। रेवती कलम बन्द कएलीह। अगिला प्रश्न उच्च न्यायालयमे उठबाक छल—जाँच जरूरी रहलोपर ककरा जीवनक कतेक हिस्सा रोकि राखल जा सकैत अछि?

अध्याय ३७ — उच्च न्यायालयमे सत्ताइस वर्ष

जोधपुर आ दरभंगा; अक्टूबर–दिसम्बर २०२६

अक्टूबरक एक ठण्ढगर भोर रेवती झा जोधपुरक उच्च न्यायालय दिस जाइत छलीह। रेलसँ उतरला बाद शहरक हवा हुनका सन् २००१ क ओहि पहिल यात्राक स्मरण करौलक, जखन मरुधरक जमीनक नक्सा लेल हुनकर पिता शिवनारायण झा अदालतक एक कार्यालयमे घण्टों ठाढ़ रहल छलाह। एहि बेर रेवतीक हाथमे जमीनक नक्सा नहि, बैंकक एक मोट फाइल छल। ओकर पहिल पृष्ठपर अर्जुन मीणाक नाम आ अन्तिम पृष्ठपर चारि हजार दू सय रुपैयाक विवरण छल। बीचमे सैकड़ो पन्ना एहन छल जाहिमे संख्या, हस्ताक्षर आ कार्यालयक मोहर बहुत छल, मुदा एहि प्रश्नक सीधा उत्तर कम छल जे छात्र अपन वैध छात्रवृत्तिक पैसा किएक आ कतेक दिन धरि नहि निकालि सकैत अछि।

उच्च न्यायालयक पुरान भवनक सीढ़ी चढ़ैत हुनका पिता द्वारा कहिल एक वाक्य याद आयल—“नामक दोष नामसँ नहि, प्रमाणसँ ठहरैत अछि।” सन् २००० मे दरभंगाक दण्डाधिकारीक समक्ष नीलकान्त साहक बहीमे मरि चुकल व्यक्तिक नाम छल। ओहि नामसँ लोक अपराधक निष्कर्ष निकालि रहल छल, जखनकि बहीक लेखक, भुगतानक समय आ लाभार्थीक अस्तित्वक प्रश्न अलग-अलग छल। सत्ताइस वर्ष पूरा होयबाक लग पहुँचल समयमे कागजक बहीक ठाम डिजिटल सारणी आबि गेल छल; मृत व्यक्तिक नामक स्थानपर अज्ञात खाताक अन्तिम चारि अङ्क छल। रेवतीकेँ भय ई नहि छल जे न्यायालय उत्तर नहि देत; भय छल जे सुन्नर बनाओल सूची प्रश्न पुछबाक धीरज छीनि लेत।

अर्जुन मीणा अपन अधिवक्ता शालिनी सोलंकीक संग परिसरक एक कोनमे बैसल छल। ओकर कन्धापर ओही झोरा छल जाहिमे परीक्षाक तैयारीक पुस्तक रखैत छल। पिछला

सुनबाईमे छात्रवृत्तिक मूल रकम उपयोग योग्य भेल छल, तथापि खातामे चारि हजार दू सय रुपैयाक एक संदिग्ध प्रविष्टि सुरक्षित रहि गेल छल; बैंकक प्रणालीमे रोक हटबाक सूचना कतिपय दिन देरिसँ पहुँचल छल। ई रिट केवल चारि हजार दू सय रुपैया मुक्त करबाक निवेदन नहि छल। अर्जुन चाहैत छल जे ओकर नाम पर चढ़ल व्यापक संदेहक कारण लिखित रूपमे स्पष्ट हो, ओकर वैध भविष्यक भुगतान फेर बिना कारण न अटकि जाए, आ जाँचमे देल गेल निजी जानकारी विश्वविद्यालयक अफवाहक वस्तु न बनए।

शालिनी कहलनि, “हम याचिकाक पहिल प्रार्थना सँ एक शब्द हटौने छी। “निर्दोष घोषित करू” एखन उच्च न्यायालयसँ नहि माँगब। एहि मंचपर हम उपलब्ध आदेशक वैधता, रोकक सीमा आ उचित उपचार माँगब।” रेवती सहमति देलीह। “याचिकाक उद्देश्य अभियोजनक निर्णय पहिने सँ लिखब नहि थिक। जँ चारि हजार दू सयक वास्तविक स्रोतमे अपराधक विश्वसनीय कड़ी अछि तँ ओहि कड़ीक निष्पक्ष जाँच हो। मुदा छात्रवृत्ति, घरसँ आयल रकम आ ओहि एक प्रविष्टिक बीच अनिश्चित सीमाकेँ राज्य अनन्तकाल धरि अस्पष्ट नहि रखि सकैत अछि।” अर्जुन दुनूक मुँह दिस ताकैत रहल। पहिल बेर ओकरा बुझायल जे अधिवक्ताक अडिग भाषा सदिखन ‘हम जीति गेलहुँ’ नहि होइत अछि।

अदालतक सूचीमे मामला ‘अर्जुन मीणा बनाम राज्य एवं अन्य’ लिखल छल। ओकर संग बैंकक एक प्रतिवेदन, सम्बन्धित जाँच-अधिकारीक शपथपत्र आ शिक्षण संस्थानक सीमित दस्तावेज जोड़िल छल। दुसर राज्यक शान्ति देवी, चम्पा देवी आ रीतिका एहि रिटक याचिकाकर्ता नहि छलीह; हुनकर शिकायत आ उपयुक्त न्यायिक उपचार अपन क्षेत्राधिकारमे चलि रहल छल। रेवती स्पष्ट रखलनि जे अलग-अलग राज्यक रोककेँ एकहि उच्च न्यायालयक एक आदेशसँ समाप्त करबाक आग्रह विधिक रूपसँ असावधान होएत। मुदा ओहि जीवनसभक समाचार हुनकर मानससँ अलग नहि छल। ककरो दवाई रुकैत छल, ककरो सिलाइ मशीनक किश्त, आ अर्जुनक जीवनमे परीक्षाक फॉर्म आ बसक किराया।

राज्यक अधिवक्ता भानु प्रताप माथुर जाँचक कागज पढ़ि रहल छलाह। हुनका निर्देश भेटल छल जे प्रारम्भिक साइबर-जाँचक क्रममे छात्रक खातामे आयल चारि हजार दू सय रुपैयाक स्रोत एक कथित भ्रामक प्रशिक्षण-शुल्कक मार्गसँ जुड़ि सकैत अछि। ई जानकारी धनशोधनक

व्यापक अभियोजनक किछु पङ्क्तिसँ मेल खाइत छल, मुदा दुनू मुकदमाक प्रत्येक पक्ष, प्रत्येक वैधानिक आदेश आ प्रत्येक अधिकारीक शक्ति एक नहि छल। भानु अपना कनिष्ठकेँ कहलनि, “आदेशक मूल प्रति माँगू। पुलिसक पत्र अछि कि सक्षम धनशोधन अधिकारीक लिखित रोक? आ बैंक मूल पत्रमे जे लिखल अछि, ओ प्रणालीमे कतेक दूर लागू कएलक?” कनिष्ठ अचरजसँ पूछलक, “सर, राज्यक पक्षमे ई प्रश्न पुछब?” भानु उत्तर देलनि, “राज्यक पक्षमे असत्यक बचाव करब ककरो काज नहि।”

बरामदामे रिद्धि विश्नोई विश्वविद्यालयक अधिकृत प्रतिनिधि रूपेँ नहि, अर्जुनक अनुमति सँ एक सहायक दस्तावेज लऽ पहुँचल छलीह। पाँच सय क्रमाङ्कक सूची सम्बन्धी जाँच अलग चलि रहल छल; ओकर असत्यापित नामसभ एतए संलग्न करबाक अनुमति नहि छल। रिद्धि अपन कागजमे केवल अर्जुनक छात्रवृत्तिक स्वीकृति, शिक्षण संस्थानक शुल्कक तिथि आ छात्र-सहायता केन्द्र द्वारा भेजल प्रमाणित पत्र रखलीह। ओ कहलीह, “विद्यालयमे पढ़ैत हमर विद्यार्थी सभ अपन नामक सत्यापन बिना बैंकक चारि अङ्क देखिते सहमि जाइत अछि। एहन भय सेहो क्षति अछि, मुदा एहि न्यायालयमे हम ओ क्षतिक नाप बिना प्रमाण नहि बना सकैत छी।” रेवती हुनका धन्यवाद देलीह।

सुनबाईसँ पहिने अदालतक पुस्तकालयमे रेवती अपन पिता द्वारा सन् २००० मे लिखल पहिल नोटक प्रति खोललीह। कागज पर फिक्का स्याहीसँ चारि प्रश्न छल—ककरा विरुद्ध आरोप, कोन तथ्य, कोन स्रोत, आ कोन अधिकार? बादमे शिवनारायण पाँचम प्रश्न जोड़ने छलाह: “एहि काजक असर कोन व्यक्तिपर?” किछु अंश पानि लगलासँ मिटि गेल छल। रेवती ओहि प्रश्नसभक बगलमे नब पर्ची रखलीह—“ककर आदेशसँ खाता रुकल? कोन विधि? कोन रकम? कोन दिनसँ? समीक्षा कखन?” सत्ताइस वर्षक विधिक भाषा बदलल छल, मुदा लोककेँ गलत नामसँ बचाबयवला प्रश्न किछु खास नहि बदलल छल।

पहिल पुकार पर शालिनी उठलीह, रेवती हुनकर संग उपस्थित भेलीह। दू न्यायाधीशक खण्डपीठ छल; अध्यक्षता करैत न्यायमूर्ति इला राठौड़ आ संग बैसल न्यायमूर्ति देवांश त्रिवेदी एहि प्रकरणक अभिलेख देखैत छलाह। न्यायमूर्ति इला पहिल प्रश्न पुछलनि, “ई याचिका चारि हजार दू सय रुपैयाक विवादित प्रविष्टिक विरुद्ध अछि कि पूरे खातापर लगल एक समयक

रोकक विरुद्ध? आ एखन वास्तविक रोक कतेक अछि?” शालिनी तीन तिथिक बैंक-उत्तर रखलीह। पहिल पत्रमे व्यापक निकासी निषेध, दोसरमे रकम सीमित करबाक स्पष्टीकरण, तेसरमे छात्रवृत्तिक निकासी पुनः चालू भेलाक पुष्टि। न्यायमूर्ति देवांश कहलनि, “तखन न्यायालयकेँ पुरान हानिक प्रश्न आ वर्तमान संरक्षणक प्रश्न अलग देखय पड़त।”

राज्यक अधिवक्ता कहलनि जे विद्यार्थीक व्यक्तिगत खातामे आयल भुगतान प्रशिक्षण-कार्यक्रमक एक भ्रामक प्रोत्साहन-संरचनासँ जुड़बाक जाँच अछि। न्यायमूर्ति इला तुरन्त पुछलनि, “स्रोत-अपराधक कौन अभिलेख एहि विशेष रकमक धरातल अछि? सार्वजनिक चर्चा नहि, अधिकृत कागज देखाउ।” राज्यक पक्ष दर्ता शिकायतक प्रमाणित अंश रखलक, जेहिमे शुल्कक बारेमे किछु विशिष्ट आरोप छल। शालिनी स्वीकार कएलीह जे शिकायतक अस्तित्वक निषेध ओ नहि करैत छथि। मुदा हुनकर प्रश्न छल जे अर्जुनक व्यक्तिगत खाते धरि पहुँचल चारि हजार दू सयकेँ कथित शुल्क-श्रृंखलासँ जोड़बाक कोण-कोण मूल प्रविष्टि अधिकृत रूपमे उपलब्ध अछि। अध्यक्ष न्यायाधीश कहलीह, “शिकायतक अस्तित्व आ एहि खाताक विशेष सम्बन्ध दू अलग बात अछि।”

अभिलेखमे पहिल विरोधाभास बैंकक तकनीकी रोकक तिथिमे भेटल। जाँच कार्यालयक पत्रमे ‘विशिष्ट कथित राशि सुरक्षित रखू’ सन आशय छल, मुदा शाखाक प्रणाली आरम्भमे पूरा खातेपर डेबिट रोक लगा देने छल। बैंकक अनुपालन प्रतिनिधि स्वीकार कएलनि जे शाखा केन्द्रसँ स्पष्टीकरण माँगने छल; उत्तर अएलाक बाद रोक सीमित भेल। न्यायमूर्ति देवांश पूछलनि, “जाँच अधिकारीक लिखित निर्देशक परिधि बैंक स्वयं बढ़ौलक कि नब आदेश छल?” उत्तर भेटल—प्रमाणित नब आदेशक प्रति एखन अभिलेखमे नहि। अदालत बैंककेँ दू पृष्ठक तथ्यपरक शपथपत्र देबाक निर्देश देलक; एहि सुनबाईमे ककरो लापरवाहीकेँ सिद्ध अपराध न मानल गेल।

रेवती अपन बहसमे कहलनि, “महोदय, एक ताबेदार प्रणालीक पर्दापर “पूरा खाता बन्द” देखायब आ लिखित स्रोत-पत्रमे “विशिष्ट राशि सुरक्षित” रहब बीचक अन्तरक मूल्य नागरिक अपन दिनचर्यामे चुकबैत अछि। ओ मूल्य कोनो काल्पनिक हानि नहि; शुल्कक अन्तिम दिन, दवाईक बटुआ, किरायाक तिथि, मजदूरीक चक्का—एहि रूपमे देखा पड़ैत अछि। मुदा हम

प्रतिवादीकेँ जांच रोकबाक आदेश नहि माँगैत छी। हम एतबे माँगैत छी जे शक्ति अपन वैधानिक आकारमे रहए, आ जकरा ऊपर ओकर भार पड़ैत अछि ओकरा जाँचयोग्य उत्तर भेटए।”

न्यायमूर्ति इला प्रश्न कएलनि, “अहाँ समानुपातिकता कहैत छी। मानू जाँचक सामग्री देखबैत अछि जे पूरा खाताक एकाधिक भुगतान सन्दिग्ध अछि; तखन की न्यायालय सीमित रोकक आग्रह ही स्वीकार करत?” रेवती उत्तर देलीह, “नहि। तखन प्रमाणित सामग्री, सक्षम प्राधिकारी आ विधिसम्मत प्रक्रिया अनुसार व्यापक संरक्षण सम्भव भऽ सकैत अछि। मुदा जखन राज्य स्वयं एक विशिष्ट रकमक मार्ग बतबैत अछि, तखन सम्पूर्ण वैध जीवनक रकम रोकबाक अलग कारण माँगल जा सकैत अछि। हम अधिकारक निरपेक्षता नहि, कारण आ साधनक मेलक प्रश्न उठा रहल छी।” अदालत एहि उत्तरकेँ नोट कएलक।

न्यायाधीशसभ एक आरो भेद स्पष्ट कएलनि। धनशोधन-निवारण विधिक अन्तर्गत सक्षम प्राधिकारी द्वारा सम्पत्तिक अस्थायी कुर्की अथवा खोज-जब्तीक क्रममे खाताक रोक लेल स्वतन्त्र शर्त आ न्यायनिर्णायक प्राधिकरणक प्रक्रिया होइत अछि; सामान्य साइबर-अन्वेषणक बैंक-सूचनाक स्रोत आ उपचार कखनो अलग होइत अछि। रेवती प्रत्येक नोटिसकेँ ‘धनशोधन आदेश’ कहबाक गलती नहि कएलीह। न्यायमूर्ति देवांश राज्यकेँ निर्देश देलनि जे एहि विशिष्ट अर्जुन-खाताक रोक ककर अधिकारसँ लगल, कोन लिखित कारणपर, कोन तिथि सँ, आ कोन मंचपर ओकर समीक्षा सम्भव अछि, से शपथपत्रमे साफ कएल जाए। केसक भव्य नाम कानूनक उचित रास्ता तय नहि करैत।

बाहर पायलक फोन आयल। पायल रैगर विद्यालयक बालसभा सँ बोलि रही छलीह। दू विद्यार्थी एक चित्र बनौने छल—एक दिस अन्तरिक्षयान, दोसर दिस विद्यालयक बैंक-शुल्कक पर्ची। बच्चा सभ पूछने छल जे वैज्ञानिक खोजपर देश गर्व करैत अछि तँ छात्रक छोट रकमक प्रश्नपर समाज किएक जल्दी अधीर भऽ जाइत अछि। रेवती शालिनीकेँ फोन देलीह, ओ पायलसँ कहलनि जे बच्चासभक चित्र प्रकाशित करबाक पहिने अनुमति लिअ; बैंकक विवादक बीच हुनकर नाम नहि जोड़ू। वैज्ञानिक स्वप्नकेँ एक निजी आरोपक खूँटासँ बाँधबाक कोनो कारण नहि छल।

अदालत मध्याह्न अवकाश घोषित कएलक। अर्जुनक मुँह पर भोजनक रङ्ग नहि छल। नसीमा ओकरा विश्वविद्यालयक भोजनालयसँ लाओल डिब्बा देलीह। ओ एक कौर खा रुकि गेल। “आइ जँ फैसला नहि भेल तँ?” ओ पुछलक। शालिनी उत्तर देलीह, “आइ न्यायालय किछु प्रश्न लिखने अछि। प्रत्येक प्रश्नक उत्तर माँगब सेहो कार्यवाहीक हिस्सा अछि। चारि हजार दू सय पर जाँच चलत, आ तोहर पढ़ाइ पूर्ण रूपेँ रोकबाक कोनो नब आदेश एखन सामने नहि।” अर्जुन अपन बही खोललक। ओकर परीक्षाक अगिला विषय ‘राज्य आ नागरिक’ छल। पृष्ठक ऊपर मुद्रित प्रश्न ओकरा तीक्ष्ण लगल: “राज्यक शक्ति सीमित किएक होइत अछि?”

अवकाशक समयमे न्यायालयक पाछाँक नीम तर मोहर्रिर आ अधिवक्ता अपन-अपन फाइल सँ जुड़ल प्रश्न पर बात कऽ रहल छलाह। रेवतीकेँ ओहि नीमक छाहरिमे सन् २००४ क अण्डमान याद आयल। सुनामीक बाद अनीश हलदरक परिवारक कागज बहि गेल छल; राहतक सूचीमे मृत पिताक नाम गलत लिखला सँ जीबैत बेटाक हक अटकि गेल छल। तखन कागज नहि रहबाक दुख छल; एखन बहुत कागज रहबाक बीच असल प्रमाण दबि जाएबाक भय छल। दुनू स्थितिमे जे लोक कागजक मालिक नहि, ओकरा सामने कार्यालय अपना सत्यक शर्त रखैत अछि। रेवती सोचलीह जे न्यायिक प्रश्न ‘दस्तावेज अछि कि नहि’ सँ बढ़ि ‘दस्तावेज कोन तथ्य वास्तवमे सिद्ध करैत अछि’ धरि पहुँचना चाही।

ओहि समय लुधियानामे सुनीता पासवान अस्पतालक दवाई-वितरण खिड़की लग शान्ति देवीसँ भेंट करैत छलीह। शान्तिक खातामे विवादित एक हजार तीन सय पचास रुपैया सुरक्षित छल, बाँकी रकम निकासी योग्य बनि गेल छल। मुदा फार्मेसीक एक भुगतान एखनो पुरान प्रणालीक विफल सन्देश देखबैत छल। सुनीता बैंकक सरबजीत कौरकेँ फोन कएलीह। सरबजीत लिखित पुष्टि आ प्रणाली सुधारक समय अलग-अलग देखौलीह। “हमरा बुझाइत अछि,” सुनीता कहलीह, “कानून एक ठाम खुलैत अछि, मशीन दोसर ठाम। बीचमे रोगीक साँस अटकल रहैत अछि।” सरबजीत जवाब देलीह, “तेँ बैंकक काज केवल निर्देश टाइप करब नहि, ओकर सही कार्यान्वयन जाँचब सेहो अछि।”

सुनीता अपन पिता रामलखन पासवान लेल साँझक दवाई लेलनि। पिता अस्पतालक दुआरि पर कहलनि जे सन् २००९ मे कारखानाक वेतन-पञ्जीमे नाम गलत लिखल तखन

कतेको मजदूर पगारसँ वञ्चित भेल छल। “हमरा वेतनक हिसाब समझाइत छल,” ओ कहला, “मुदा हमर नाम ओकर खाता मे काहि लेल गलत छल, से केओ नहि बुझौलक।” सुनीता उत्तर देलीह, “आब नाम मशीनमे अछि, मुदा गलतीक बोझ हमरहि लोकपर अछि।” पिता हँसबाक चेष्टा कएलनि। “मशीनक संगो हम सभकेँ अपना लिखल तारीख रखबे पड़त।” सुनीता पुरान वेतन-पञ्जीक प्रमाणित प्रतिक पन्ना बन्द कएलीह। ओहि पन्नामे हरदेव चौहानक पुरान प्रविष्टि छल, मुदा ओ २०२५ क एच. चौहानक निश्चित परिचय नहि बनैत छल।

दरभंगामे शिवनारायण झा रेडियो पर विज्ञानक समाचार सुनि रहल छलाह। अन्तरिक्ष-अनुसन्धानक एक नव प्रयोगक वर्णन आबि रहल छल; हुनकर नातिन प्रीति फोनपर कहलीह जे विद्यालयमे चन्द्रयान, उपग्रह आ दूरसञ्चार पढ़ाओल जाइत अछि। शिवनारायणकेँ सन् २००८ क ओ दिन याद आयल जखन देश चन्द्रयान-१ क प्रक्षेपण देखैत छल, आ ओ एक गरीब परिवारक दस्तावेजक सत्यापन लेल कार्यालय घुमि रहल छलाह। ओ नातिनकेँ कहलनि, “आकाश नापबाक बुद्धि आ धरती पर मनुष्यक अधिकार जोगेबाक बुद्धि अलग नहि रहबाक चाही।” प्रीति पुछलीह, “तँ न्यायालयो विज्ञान पढ़ैत अछि?” ओ कहला, “हाँ, मुदा ओ विज्ञानकेँ प्रमाणक तरह उपयोग करैत अछि, चमत्कारक तरह नहि।”

रेवतीक कार्यालयमे अनुराधा सेनक एक सीमित विश्लेषणात्मक टिप्पणी पहुँचल। न्यायालयक नियमानुसार प्रासंगिक भाग पक्षसभकेँ उपलब्ध कराओल जाएबाक प्रश्न अलग छल; गोपनीय अनुसन्धान-सामग्रीकेँ निजी संदेशमे घुमायब स्वीकार्य नहि छल। अनुराधा अपन टिप्पणी अधिकृत मार्गसँ पठेने छलीह। ओ साफ लिखने छलीह जे अर्जुनक चारि हजार दू सय रुपैयाक भुगतानक आरम्भिक निपटान-रास्ता दोसर रकमसभक संग एके दिन बैचमे देखाइत अछि, मुदा बैचमे संग रहब सँ सभ भुगतानक मालिक वा प्रयोजन एक नहि बनैत अछि। भुगतान-संकेत, मूल शुल्क-पावती, खाता-नियन्त्रण आ वास्तविक लाभार्थीक तुलना एखन शेष छल।

जाँच अधिकारी नीरजा राठौड़ एहि संक्षिप्त टिप्पणी केँ पढ़ि अपन सहकर्मीकेँ कहलनि, “दू हजार करोड़क सारणीमे जे गलती देखलहुँ, ओकर दोसर छोट रूप एतए नहि दोहराउ।” सहकर्मी पुछलक, “मुदा चारि हजार दू सय स्वीकार कएने तऽ छात्र?” नीरजा उत्तर देलीह,

“प्राप्ति स्वीकार कएलाक अर्थ उपयोग आ मानसिक जानकारीक प्रत्येक प्रश्नक उत्तर नहि होइत अछि। ओहि दिन ओकरा की कहल गेल, कोन कार्यक्रम भेल, केकरा कहने ओ नाम दऽ देलक, आ भुगतान करबयवला खातेपर नियन्त्रण ककर छल—एक-एक तथ्य जाँचू।” ओकरा अपन संस्थागत कर्तव्यक एहि सूक्ष्मतामे समय बेसी लगैत छल, मुदा ओ समय नहि देला पर एखनो बेसी लोकक हानि सम्भव छल।

अनुराधा एक दोसर कागजमे ₹२,००० करोड़ लिखल वृहद् सारणीक शीर्षक फेर जाँचलीह। मूल रिपोर्टमे सकल प्रवाह, कम्पनीक भीतरक पुनःस्थानान्तरण, प्रत्यावर्तन आ विनिमय-दरक परिवर्तित मूल्य एकहि कोष्ठकमे जमा छल। ओ सहकर्मीकेँ कहलीह, “एक सौ रुपैया तीन खाता पार कएलक तऽ संकलित प्रवाह तीन सौ देखायब सम्भव अछि; मुदा तीन सौ रुपैया तीन अलग पीड़ितसँ अएल, ई अलग दावा थिक। ओकरा सिद्ध करबाक अलग आधार चाही।” एहि गणितसँ अपराधक सम्भावना समाप्त नहि होइत छल। किछु भुगतान-श्रृंखला एखनहुँ गम्भीर जाँच माँगैत छल, विशेषतः जाहिमे वास्तविक प्रशिक्षण-सेवाक बिल आ स्वीकृत सेवाक अवधि बीच अन्तर छल।

नीरजा अपन दलकेँ निर्देश देलीह जे अपराधजन्य धनक कथित स्रोतक पहिल सूची, दोहराओल लेनदेन घटेबाक दोसर सूची, आ विक्रान्त सहगलसँ व्यक्तिगत सम्बन्धक तेसर सूची अलग-अलग राखल जाए। विक्रान्त दुबईमे छल; ओकर अनुपस्थिति न अपने आप दोषसिद्धि छल, न ओकर विरुद्ध वैधानिक समनक आवश्यकता समाप्त करैत छल। सौमित्र बंसलक कम्पनीक निर्णयक अभिलेखो पृथक देखल जा रहल छल। अनुराधाक काम आँकड़ाक परीक्षण छल, अभियुक्तक दोष घोषित करब नहि। अधिकारीक जाँच रेवतीक रिटसँ प्रेरित भेल कि विशेष न्यायालयक आदेशसँ, ई कोनो सरल कथा नहि छल—दुनू मंचक काज अलग विषयकेँ छूबैत छल आ समयक एके नदीमे आगाँ बढ़ैत छल।

सन्ध्या पर नूर जतय सम्पादकीय कक्षमे पहुँचलि। हुनकर सहकर्मी एक शीर्षक तैयार रखने छल—‘उच्च न्यायालयक कठघरामे दू हजार करोड़’। नूर ओ शीर्षक काटि देलीह। एहि रिटमे दू हजार करोड़क समग्र अभियोजनक गुण-दोषक सुनबाई नहि छल। समाचारक वास्तविक विषय सीमित बैंक-रोकक आधार आ खाताधारकक उपचार छल। ओ लिखलीह जे एक

छात्रक खातामे संदिग्ध बताओल चारि हजार दू सय रुपैया सुरक्षित रहब आ अन्य वैध रकम खोलल जाएब एक अलग प्रक्रिया थिक; एहि संख्याक तुलना व्यापक वित्तीय अनुसन्धानक सकल प्रवाहसँ करब भ्रम उत्पन्न करत। सम्पादक पुछलनि, “एहन शीर्षक के पढ़त?” नूर कहलीह, “जकर चारि हजार दू सय अटकल अछि, ओ पढ़त। बाकी लोक नहि पढ़थि तँ मुद्दा छोट नहि होइत।”

रिद्धि राति विश्वविद्यालयक पुस्तकालयमे विद्यार्थीक एक छोट समूहसँ भेट कएलीह। ओ सभ अन्तरिक्ष भौतिकीक एक खुलल व्याख्यान सुनि लौटल छलाह। व्याख्यानमे वैज्ञानिक कहलनि जे दूरस्थ ताराक प्रकाश अलग-अलग माध्यम सँ गुजरैत पृथ्वी धरि अबैत अछि; स्रोतक पहचान लेल प्रत्येक माध्यमक प्रभाव घटेबाक पड़ैत अछि। अर्जुन ओहि बातकेँ वित्तीय प्रवाहक सुनबाईसँ जोड़ि देखलक, मुदा रिद्धि सावधान कएलीह—“उपमा विचार स्पष्ट करबाक लेल ठीक अछि, प्रमाणक बदला नहि।” विद्यार्थीसँ कियो पुछलक जे विज्ञानमे गलत परिणाम सुधरल जा सकैत अछि, मुदा अदालतमे गलत शंका कतेक दिन चलैत अछि। रिद्धि कहलीह, “दुनू क्षेत्रमे सुधारक साहस चाही, आ लोकक जीवनमे देरिसँ भेल सुधारक कीमत सेहो होइत अछि।”

ओहि राति अर्जुन अपन माय रेणु मीणाकेँ फोन कएलक। खेतमे पानि देबाक बारी बदलल रहय; रेणु टॉर्च हाथमे लऽ बाहर बैसल छलीह। अर्जुन कहलक जे न्यायालय एखन अन्तिम निर्णय नहि देने अछि, मुदा प्रश्न विस्तारसँ सुनलक। रेणु पुछलीह, “चारि हजार दू सय वापस भेटत?” अर्जुन कहलक, “नहि जनैत छी। जाँच बाकिये अछि।” माय किछु देर मौन रहलीह। “जँ तौँ अपन नामक सच लऽ गेलहेँ आ अदालत सुनलक, तऽ पढ़ाइ छोड़बाक बात फेर नहि करिहेँ,” ओ कहलीह। अर्जुन पुस्तकमुख बन्द कएलक। ओकरा एहन नहि लगल जे माय कानून बुझैत नहि छलीह; ओ अधिकारक मूल व्याकरण बहुत पहिने सँ बूझैत छलीह।

तीन दिन पछाति उच्च न्यायालयमे प्रतिवादी बैंकक नब शपथपत्र आयल। ओकरा संग प्रणालीक घटनाक्रमक एक अभिलेख जुड़ल छल: अमुक तिथिपर प्रारम्भिक सूचनाक प्राप्ति, ओहि दिन स्वचालित पूर्ण-निकासी-रोक, दू दिन पछाति शाखाक स्पष्टीकरण-पत्र, आ किछु सप्ताह पछाति विशिष्ट राशि धरि रोक सीमित करबाक पुष्टि। घटनाक्रम पढ़ि शालिनी पुछलीह,

“शाखा जे दिन स्पष्टीकरण मँगलक, ओहि दिन खाताधारककेँ एक लाइनक जानकारी किएक नहि देलक?” बैंकक अधिवक्ता जवाब देलनि जे अनुसन्धानक गोपनीयता आ प्रणालीक निर्देशकेँ देखल गेल छल। शालिनी कहलीह, “गोपनीयताक कतेक सीमा छल, तकर प्रमाण देब उचित अछि; केवल गोपनीयता शब्द लिखि ककरो पूरा जीवन बन्द नहि होइत।”

खंडपीठक सामने एहि बेर बैंकक क्षेत्रीय अधिकारी स्वयम् उपस्थित छलाह। न्यायमूर्ति इला राठौड़ पुछलनि, “अहाँक प्रणालीमे संदेहक सन्देश आबिते जे स्वचालित रोक लगैत अछि, ओकर समीक्षा करनिहार कोन मनुष्य रहैत अछि?” अधिकारी उत्तर देलनि जे जोखिम-चिह्नित फाइल अनुपालन केन्द्रकेँ जाएत अछि। “कतेक समयमे?” न्यायमूर्ति फेर पुछलनि। अधिकारी अलग-अलग सामान्य प्रक्रियाक समय कहलनि, मुदा अर्जुनक विशिष्ट अभिलेखमे जखन ओ मानक अवधि पार भऽ गेल छल से स्वीकार कएलनि। न्यायमूर्ति देवांश कहला, “हम प्रणालीक अस्तित्वकेँ अनुचित नहि कहि रहल छी; मुदा स्वचालित त्रुटिक सुधार लेल कोनो उत्तरदायी व्यक्ति चाही। नहि तँ व्यवस्था एक बिनादरबज्जाक कोठरी बनि जाएत।”

शालिनी अपन मुवक्किलक अनुभवक प्रमाण रखने छलीह—परीक्षा-शुल्कक अन्तिम तिथिक सूचना, बैंकसँ अस्वीकृत निकासीक पर्ची, विश्वविद्यालय द्वारा बादमे देल वैकल्पिक भुगतानक अनुमति, आ अर्जुनक लिखित निवेदन। मुदा ओ एक मेडिकल पर्ची जोड़बाक प्रस्ताव अस्वीकार कएलीह। ओ पर्ची शान्ति देवीक पतिक छल, जे एहि मुकदमाक पक्षकार नहि। “दोसरा लोकक पीड़ा हाम्रो तर्ककेँ भावनात्मक बनबैत अछि,” शालिनी कहलीह, “मुदा ओकर व्यक्तिगत अभिलेख ओकर अधिकारसँ बाहर हम नहि रखब।” रेवती एहि निर्णयमे छोट विधिक शिष्टाचारसँ बेसी देखलीह। एतए नागरिकक गोपनीयताकेँ बचबैत तर्कक शुचिता सेहो बचल छल।

राज्यक पक्षक नब शपथपत्रमे लिखल छल जे चारि हजार दू सय रुपैयाक भुगतान एक प्रशिक्षण-संस्था द्वारा जारी बैचसँ आयल, जाहि बैचमे कथित रूपसँ भ्रामक परिचय-प्रोत्साहनक किछु प्रविष्टि छल। शालिनी पुछलीह, “बैचक नाम मिलल, मुदा एहि विद्यार्थीकेँ अपराधक उद्देश्यक ज्ञान छल, से कोन स्वतंत्र तथ्य दर्शबैत अछि?” भानु प्रताप माथुर कहला, “ज्ञानक प्रश्न एखन जाँचाधीन अछि। राज्य एखन ओकर दोष सिद्ध भेलाक दावा नहि करैत

अछि।” न्यायमूर्ति इला कहलीह, “ई सही सीमा अछि। आजुक प्रश्नमे जाँचक सम्भावना आ नागरिकक वैध रकमक उपलब्धता एकसाथ देखब। अभियुक्त, साक्षी आ संदिग्ध खाताधारकक लेबल जाँचक अलग चरणमे बदलिए सकैत अछि, मुदा अधिकारीकेँ हर चरणमे सटीक शब्द चाही।”

रेवती गवाहीक प्रारूप पर नजर देलीह। अर्जुन पहिने चारि हजार दू सय रुपैया प्राप्त करबाक बात स्वीकार कएने छल; ओकरा कहल गेल छल जे प्रशिक्षणमे भाग लएबाक मानधन अछि आ दोसर विद्यार्थीकेँ जानकारी देबाक प्रोत्साहन सेहो सम्भव अछि। ओ स्वीकार कएने छल जे किछु नाम देलक, मुदा तकर पाछाँक संस्थागत खर्च, कथित अवैध शुल्क आ व्यक्तिसभक नियत विषयमे अपन जानकारी सीमित बतौने छल। रेवती एहि बयानकेँ निर्दोषताक अन्तिम प्रमाण नहि मानलीह। हुनका अपन पिता सिखौने छलाह जे सचक एक भाग स्वीकार करब कखनो अन्य भागक स्वत: पुष्टि नहि करैत। हुनकर बहस एहि कारण सरल छल: बयानक प्रत्येक घटक अपन प्रमाण आ उचित कानूनी निष्कर्ष माँगैत अछि।

न्यायमूर्ति देवांश प्रकरणक सीमापर लौटला। “अर्जुनक खातामे आयल चारि हजार दू सय पर विशिष्ट संरक्षणक प्रश्न जाँचक अधीन रहि सकैत अछि। मुदा की राज्य एखन ई कहि सकैत अछि जे छात्रक आगामी छात्रवृत्ति अथवा पारिवारिक वैध प्रेषण सेहो रोकब आवश्यक अछि?” भानु कहलनि, “एखन उपलब्ध निर्देश एहन व्यापक रोकक नब आधार नहि बतबैत अछि।” बैंक सहमति जनौलक जे सुलभ शेषपर निकासी चालू अछि। अदालत कहलक जे एहि कथनकेँ अभिलेखपर स्पष्ट राखल जाए; किएक तँ न्यायालयमे कहल आश्वासन आ बैंकक पर्दापर उतरबाक बीच अन्तर पाठकक नहि, खाताधारकक प्रश्न अछि।

ओहि दिन अदालतमे एक दोसर मुकदमाक पुकार भेल जे एक चिकित्सालयक उपकरण-भुगतानसँ सम्बन्धित छल। ओकर एहि वित्तीय सञ्जालसँ कोनो प्रमाणित सम्बन्ध नहि छल। न्यायाधीशसभ ओहि वादक अपन अलग कार्यवाहीमे बढ़लाह। रेवती बरामदामे बैसल एतबे देखलीह जे समूचा देश एक मुकदमाक परिधिमे नहि समा सकैत अछि। जोधपुरक चिकित्सक रोगीकेँ समयपर परीक्षण देबाक चिन्तामे छथि; लुधियानाक मजदूर मासिक औषधि जोगबैत छथि; अण्डमानक नौका-चालक मौसमक सूचनाकेँ देखैत छथि; राजधानीक प्रयोगशालामे

शोधकर्ता दूहराओल परीक्षणकेँ स्वीकृत परिणामसँ अलग रखैत छथि। अपराधसँ असम्बद्ध एहि श्रमसभक अपन पूर्ण कथा अछि।

जोधपुरक एक छोट चिकित्सालयमे डॉ. नलिनी बेनीवाल नब श्वसन-उपकरणक परीक्षण कए रहल छलीह। हुनका कोविडक वर्षसभ याद छल जखन कागजक आदेश आ वास्तविक उपलब्ध बिछानाक बीच अन्तर कतेको जीवनपर पड़ल। सन् २०२० मे ऑक्सीजन, प्रशिक्षण आ चिकित्सा-अनुसन्धानक विवेकसँ हुनकर विश्वास बढ़ल छल; संगहि गलत दावाक भय सेहो। एक कनिष्ठ चिकित्सक वित्तीय घोटालाक समाचार देखाकय कहलनि, “मैडम, सभ डिजिटल प्रणालीपर संदेह होइत अछि।” नलिनी उत्तर देलीह, “डिजिटल रेकॉर्डक उपयोग छोड़ब उपाय नहि। ओकर स्रोत, संशोधन आ जिम्मेदारी जाँचब उपाय अछि। जँ प्रत्येक आँकड़ा झूठ होइत तँ हम रोगीक रिपोर्टो नहि पढ़ि सकितहुँ।”

एक साहित्यिक गोष्ठीमे कवयित्री फारिहा परवीन एक पुरान कविता पढ़ि रही छलीह। कविता मजदूर महिलाक खातामे गलत नाम चढ़बाक विषयपर छल, मुदा कतिपय श्रोता ओकरा तत्काल २०२६ क आर्थिक जाँचक ‘संकेत’ बुझय लागल। फारिहा स्पष्ट कहलीह, “कविता एक कालक साझा पीड़ा कथैत अछि; एक-एक पङ्क्तिसँ कोनो आजुक व्यक्तिक अपराध सिद्ध नहि होइत अछि।” नूर जतय एहि वाक्यपर ध्यान देलीह। लेखा-पत्रक संख्या आ कविताक प्रतीक दुनूकेँ अनुचित निश्चितितामे बदलि देबाक लोकक इच्छा एके समाजमे चलैत छल। रेवती ओहि गोष्ठीमे उपस्थित नहि छलीह, मुदा नूरक लेखसँ ई बहस बादमे हुनका भेटल।

मुम्बईमे सुदर्शन सहगल अपन पुरान गोदामक हिसाब बन्द करैत छलाह। विक्रान्तक विदेशसँ आयल अधिकृत पत्रक बात घरमे किछु लोक जानैत छल, मुदा बाहर पड़ोसी दू तरहक समाचार कहैत छलाह—किछु कहैत अपराध सिद्ध, किछु कहैत सभ राजनीतिक शंका। सुदर्शन दुनू कथन अस्वीकार कएलनि। ओ बेटाकेँ उत्तरमे लिखलनि जे वास्तविक सेवा-स्वीकृति, बिलक संशोधन आ कम्पनीक निर्णयक अभिलेख वकीलकेँ देब; परिवारक प्रतिष्ठा दस्तावेज छिपेबाक कारण नहि, आ सार्वजनिक आरोप अपन आप सत्य नहि। हुनकर पत्नी पत्र पढ़ि केवल पुछलीह, “जँ ओ वापस अएत तँ घरक लोक ओकरा प्रश्न पूछि सकत?” सुदर्शन कहलनि, “घरक प्रश्न अदालतक साक्ष्य नहि, मुदा बेटाकेँ उत्तर दए पड़त।”

दुबईमे विक्रान्त सहगल अपन विधिक सलाहकारक संग बैठल छल। विदेशी समन-सेवाक अधिकृत प्रक्रिया चलि रहल छल, एखन ओकर सम्पूर्ण सेवा-स्थिति आ अभियोजनक अगिला कदम निश्चित नहि छल। ओ कौनो अनधिकृत समझौताक बदलामे फाइल रोकबेबाक प्रस्ताव अस्वीकार कएलक। सलाहकार कहलक जे कम्पनीक साठ दिनक परामर्श-बिल आ चालीस दिनक सेवा-स्वीकृतिक अन्तर जाँचमे महत्त्वपूर्ण अछि; ई अन्तर कागजी गलती, विवादित करार वा जानबूझि बनाओल बिल, तकरा दस्तावेज तय करत। विक्रान्त जवाब देलक, “हम जे जानैत छी ओ कहब; जे नहि जानैत छी ओकर उत्तर गढ़ब नहि।” परामर्शदाता कहलक, “आ एतबा सेहो याद राखू—अदालतक अधिकृत समनक विषयमे विलम्ब करब निर्णय नहि।”

शहरक दोसर छोरपर सौमित्र बंसलक पत्नी काव्या अपन बेटीकेँ गृहकार्य करबैत छलीह। बेटीक प्रश्न छल जे बड़ कंपनीक सभ कर्मचारी अपराधी होइत अछि कि नहि। काव्या कहलीह, “कोनो संस्थामे काम करब दोषक प्रमाण नहि। जे काज के केलक आ के ककरा सहयोग देलक, से अलग पूछल जाइत अछि।” बेटी फेर पुछलीह जे पापा घर कखन अएताह। काव्या सहज उत्तर नहि देलीह; सौमित्रक उपस्थिति-शर्त, प्रतिरक्षा आ जाँचक प्रक्रिया चलि रहल छल। ओ बेटीकेँ अगिला दिनक विद्यालयक पुस्तक खोलबा लेल कहलीह। घरक मौन कोनो न्यायालयीन आदेश नहि छल, मुदा कानूनी अनिश्चितताक दीर्घ छाया ओकर भीतर छल।

नवम्बरक आरम्भमे खण्डपीठक समक्ष मामलाक तेसर सूची आयल। बैंकक अनुपालन अधिकारीक अतिरिक्त शपथपत्रमे लिखल छल जे आरम्भिक पूर्ण रोकक समय प्रणाली एक सामान्य जोखिम-सङ्केत लागू कएने छल; ओ सङ्केत जाँच कार्यालयक विशिष्ट रकमक निर्देशसँ अधिक व्यापक बनि गेल। बैंक इहो लिखलक जे सुधारक बाद सुलभ शेषपर निकासी चलि रहल अछि। न्यायमूर्ति इला राठौड़ पुछलनि, “ई गलती केवल अतीतक एक घटना थिक, कि जाँचक अगिला सामान्य ई-मेल अयिते प्रणाली फेर पूरा खाता बन्द कऽ देत?” अधिकारी उत्तर नहि दऽ सकलाह। ओ कहलनि जे केन्द्रमे नब नियन्त्रण-सूचना प्रस्तावित अछि। अदालत कहलक, “प्रस्ताव आ लागू नियन्त्रणक बीच जे अन्तर अछि, ओहि पर लिखित जिम्मेदारी चाही।”

रेवती ओहि दिन अपन तर्कक पहिल पृष्ठपर ‘कठिन अधिकार’ लिखने छलीह। न्यायमूर्ति देवांश पुछलनि जे एहि शब्दक अर्थ की। रेवती कहलीह, “नागरिकक अधिकारक कठिनाई तखन सामने अबैत अछि जखन राज्यक काजो आवश्यक हो। जँ जाँचक कोनो कारण नहि होइत तँ प्रश्न सरल रहैत। एतए ठगीक शिकायत अछि, पीड़ितक रकमक दावा अछि, बहुस्तरीय खाताक प्रवाह अछि। राज्यकेँ साक्ष्य जोगेबाक चाही। मुदा ई आवश्यकता जकर वैध धन अछि तकर सामान्य जीवन केँ बिना विशिष्ट कारण रोकबाक अधिकार नहि बनि सकैत। अतः कठिन प्रश्न शक्ति राखब कि हटायब नहि, बल्कि ओकर सीमाबद्ध प्रयोग आ प्रभावी समीक्षा सुनिश्चित करब अछि।”

भानु प्रताप माथुर जवाबमे कहला जे खातामे आयल सन्दिग्ध भुगतानकेँ तत्काल स्थानान्तरित होबासँ रोकब जाँच लेल आवश्यक भऽ सकैत अछि; नहि तँ अपराधक लाभ अनेक ठाम छितरा सकैत अछि। रेवती एतबा स्वीकार कएलनि, मुदा जोड़लनि जे ‘तत्काल’ शब्दक अपन समय सीमा रहैत अछि। जे सूचना प्रारम्भिक अवस्था लेल उपयोगी छल, ओकरा दिन, सप्ताह आ महिना पार करैत रहबाक कारण नव-समीक्षा माँगि सकैत अछि। भानु कहला जे राज्यक पास जाँच समय-सीमाक भीतर देबाक योजना अछि। न्यायमूर्ति इला स्पष्ट कएलीह जे अदालत समय तय करैत अनुसन्धानक वास्तविक जटिलता नजरअन्दाज नहि करत, मुदा अनिश्चित कालक निष्क्रियता सेहो स्वीकार नहि करत।

अदालतक समक्ष अर्जुनक अधिवक्ता एक छोट तालिका देलीह। पहिल पाँतिमे छात्रवृत्तिक मूल रकम, दोसरमे पारिवारिक वैध जमा, तेसरमे चारि हजार दू सयक विवादित प्रवेश; अगिला स्तम्भमे प्रत्येक स्रोतक प्रमाणपत्र आ वर्तमान निकासी-स्थिति। तालिकाक उद्देश्य राशि जोड़ि कोनो अपराध सिद्ध करब नहि छल। न्यायमूर्ति देवांश पुछलनि, “ई सूचीमे तिथि बरोबर अछि?” शालिनी मूल बैंक-विवरणसँ तिथि मिलौलीह। एक प्रविष्टिमे जमा-तिथि आ बैंकद्वारा निपटान-तिथि अलग छल। ओ तुरन्त न्यायालयकेँ अन्तर बतौलीह। न्यायाधीश कहलनि, “जँ अहाँ अपन अनुकूल सूचीमे सेहो एहन त्रुटि स्पष्ट करैत छी तँ हम ओकरा भरोसाक कारण मानब। अदालतकेँ निर्दोष आंकड़ा नहि, सत्यापित आंकड़ा चाही।”

रेवती भीतरसँ काँपलीह। हुनका सन् २००० क नीलकान्त साहक पुरान बही फेर याद आयल; तखन अदालत प्रश्न उठौने छल जे खाताक शब्द आ समय वास्तविक व्यापारसँ कतेक मेल खाइत अछि। ओहि समय बचाव पक्षक एक तर्क बादमे कमजोर पड़ल छल, किएक तँ नीलकान्त किछु लिखावट स्वीकार कएने छल। शिवनारायण ओहि स्वीकारोक्तिक बाद अपना पहिल व्यापक निषेध सँ हटि गेल छलाह। रेवती सीखने छलीह जे अधिवक्ताक नैतिकता अपन मुवक्किलक पक्षमे सत्यक अनुकूल भाग राखब मात्र नहि, प्रतिकूल सिद्ध तथ्यकेँ सेहो सही नाम देब अछि। एहि कारण अर्जुनक चारि हजार दू सयक स्वीकारक बात ओहि दिन फाइलसँ नहि हटाओल गेल छल।

उच्च न्यायालयमे लम्बा दिनक बाद रेवती दरभंगा फोन कएलीह। शिवनारायणकेँ कान लग फोन धरबाक प्रयासमे प्रीति सहायता कए रहल छलीह। रेवती कहलीह, “बाबूजी, चालीस बरखक अभ्यासमे अहाँ कखनहुँ एहन मामला देखलहुँ जाहिमे जाँच सही छल, मुदा आदेश जरूरतसँ बेसी?” पिता धीमे उत्तर देलनि, “बहुत। आ एहन मामले सेहो, जाहिमे रोक जरूरी छल मुदा आदमी बचावक नामपर प्रमाण हटाबय चाहैत छल। न्यायाधीशक कठिनाई दुनूक वास्तविकता देखब अछि।” थोड़ी देर रुकि ओ जोड़लनि, “तों जकर पक्षमे बहस करैत छह, ओकर बात पूरा सुनिहें। राज्यक पक्षकेँ सेहो अधूरा नहि काटिहें। न्याय तकर बाद भेटत।”

सन् २०१२ क एक पुरान गोष्ठीक स्मृति रेवतीक मनमे उठल। छात्र सभ एक पत्रिकाक प्रतिबन्धक विरोधमे चर्चा करैत छलाह; ओहि समय एक वक्ता कहने छल जे राज्यक प्रत्येक आदेश नागरिकक शत्रु थिक। शिवनारायण एहि सरल निष्कर्षसँ असहमत रहल छलाह। ओ कहने छलाह जे मनुष्यक बचाव लेल कखनो राज्यक निष्पक्ष हस्तक्षेप चाही; जँ प्रमाण नष्ट होइत अछि तँ पीड़ितक अधिकार सेहो खत्म होइत अछि। संविधानक कठिनाई यहि दुई भयक संग जीवन बनायब अछि। रेवती आइ ओहि बातकेँ बैंक-सूचनाक क्रममे देखैत छलीह—जँ रकम सहज भागि जाए तँ पीड़ितक हानि, आ जँ समूचा खाता बिना सीमा रुकि जाए तँ सामान्य नागरिकक हानि।

शहरमे एक उद्योग-परिषदक बैठक छल जाहिमे उद्यमी डिजिटल भुगतानक अनुपालन पर चर्चा करैत छलाह। जोधपुरक छोट बर्तन-व्यापारी याकूब अंसारी सेहो निमन्त्रित छलाह, कारण

हुनकर पूर्व खातारोक आब सीमित आदेशक बाद ठीक भऽ चुकल छल। ओ भाषण नहि देलनि, अपन तीन रसीद देखौलनि—आदेशक प्रति, बैंकसँ तकर प्राप्ति-पत्र आ वास्तविक निकासीक पहिल प्रमाण। “तीनू कागज बीच चारि सप्ताह गेल,” ओ कहलनि, “ई चारि सप्ताह हमरा लेल थोक मालक कमी छल।” एक उद्यमी पुछलक, “अहाँ जाँचक विरोधमे छी?” याकूब उत्तर देलनि, “नहि। हमरा नामक गलती सुधारल गेल, तकर प्रमाण अछि। हम चाहैत छी जे दोसर ग्राहककेँ से गलती पुनः नहि सहबय पड़ए।”

याकूबक उदाहरण नूर जहाँक लेखमे आबि गेल, मुदा ओ स्पष्ट लिखलीह जे हुनकर बैंक-प्रकरणक प्रारम्भिक राशि आ न्यायालयक उपचार अर्जुनक विवादसँ स्वतन्त्र छल। पाठक ‘एके आर्थिक घोटाला’क सरल कथा चाहैत छलाह, मुदा नूर प्रत्येक फाइलक अधिकारक्षेत्र आ तारीख अपन स्थानपर रखलीह। हुनका सन पत्रकार लेल ई परिश्रम विज्ञापनक आँकड़ासँ नहि मापल जा सकैत छल। किछु पाठक हुनका ‘अपराधीसभक पक्षधर’ कहल, दोसरसभ ‘राज्यक प्रवक्ता’। ओ दुनू आरोपक उत्तर नहि देलीह; अगिला लेखमे सुधार-नोट छापलनि जे एक शाखाक आदेश दिनांक पहिने गलत लिखल गेल छल। सत्यक प्रति निष्ठा ककरो शिविरक नाम नहि माँगैत।

अण्डमानमे अनीश हलदर नाव घाट पर डाकिया सँ छोट चिट्ठी लेलनि। पुनर्वासक पुरान जमीनक नामांकन-विवादक एक प्रमाणित प्रति भेटल छल। सन् २००४ सँ शुरू भेल ओकर परिवारक दस्तावेजक यात्रा बहुत हद धरि स्थिर भेल छल, मुदा एक सरकारी नक्शामे छोट संशोधन एखन बाकी छल। अनीश अपन पुत्रकेँ कहलक, “जे दिन समुद्र हमर घर बहा देलक, ओ दिन नाम बचत कि नहि, ई प्रश्न छल। आब नाम ठीक अछि, मुदा जमीनक रेखा मिलबाक बाकी।” पुत्र पुछलक, “एहन गलती न्यायालय तक किएक जाइत अछि?” अनीश उत्तर देलक, “कानूनक किताब दूर अछि, मुदा जकर घरक सीमा बदलैत अछि ओकरा लेल ओ बहुत लग अछि।”

महाविद्यालयमे अर्जुन गणितक परीक्षा दैत छल। एक प्रश्नमे छोट राशिक बहुस्तरीय स्थानान्तरणक साधारण समीकरण छल; ओ अनायास धनक जाँचक प्रसंग याद करलक। तुरन्त स्वयंकेँ टोकलक। परीक्षा ककरो अपराधक वित्तीय सारणी नहि छल। शिक्षक

उत्तरपुस्तिकामे ज्ञान चाहैत छलाह; रिद्धि बारंबार कहने छलीह जे विद्यार्थीकेँ न्यायालयक समाचारसँ अलग विद्यार्थी रहबाक अधिकार अछि। परीक्षा समाप्त भेला पर अर्जुन बगिया दिस गेल आ मित्र मोहन बैरवासँ मौसम आ नौकरीक विषयमे बात कएलक। मोहन अनधिकृत सूचीमे अपन नाम देखबाक अपमान एखनो भुला नहि सकल छल। दुनू एक क्षण लेल कानूनक चर्चा नहि कएलक, आ ई मौन हुनका दुर्लभ सुख बुझायल।

दिसम्बरक पहिल सप्ताह खण्डपीठक सामने लिखित बहसक अन्तिम दौर आयल। शालिनी अपन प्रार्थना तीन भागमे समेटलीह—अर्जुनक खातापर वर्तमान रोकक सटीक सीमा अभिलेखित हो, वैध छात्रवृत्ति आ नव असम्बद्ध जमा पर बिना नब वैधानिक कारण व्यापक निषेध नहि लगाओल जाए, आ चारि हजार दू सयक सम्बन्धी जाँचक उचित समीक्षा निश्चित समयपर हो। ओकर अतिरिक्त ओ चाहेतीह जे अपन जानकारीक दुरुपयोग होएबाक आशंकापर अर्जुनकेँ सक्षम शिकायत-मंचक सूचना भेटए। रेवती कहलीह, “हम एतए ₹२,००० करोड़क सारणीक गुण-दोषपर न तर्क करैत छी, न ओकर निष्कर्ष माँगैत छी। ओ प्रश्न विशेष न्यायालय आ सक्षम प्राधिकरणक नियत प्रक्रियामे जायत।” न्यायमूर्ति इला एहि सीमारेखाकेँ सराहलीह, मुदा फैसला लिखित आदेशमे दएबाक कहलनि।

भानु प्रताप माथुर राज्यक पक्षसँ एक महत्त्वपूर्ण आश्वासन देलनि जे अर्जुनकेँ केवल वित्तीय पूछताछमे उपस्थित भेलाक कारण विश्वविद्यालयक अनुशासनात्मक दोषी मानबाक कोनो निर्देश राज्य द्वारा नहि देल गेल अछि। अदालत पुछलक, “विद्यालयक आन्तरिक जाँच अपन स्वतन्त्र नियमसँ चलि सकैत अछि, मुदा केओ अधिकारी बैंकक गोपनीय जानकारी अनधिकृत व्यक्ति लग पठेलक अछि?” उत्तर छल जे प्रारम्भिक अनधिकृत सूचीक स्रोतक एक पृथक जाँच चलि रहल अछि। अदालत तत्काल ककरो नामपर निष्कर्ष नहि देलक। ओ कहलक जे जँ अर्जुन लिखित विशिष्ट शिकायत देत तऽ सम्बन्धित प्राधिकारी विधिसम्मत प्रक्रिया अनुसार ओकर निपटारा करत; एहि रिटमे अनधिकृत पाँच सय क्रमाङ्कक सम्पूर्ण तथ्य-जाँचक स्थान नहि अछि।

न्यायमूर्ति देवांश राज्यक अधिवक्तासँ पुछलनि, “अहाँक अधिकारी जे लिखित कारण दर्ज कएलनि, की तकर सार सम्बन्धित नागरिककेँ बताओल जा सकैत अछि, गोपनीय साक्षी आ

जाँचक आवश्यक हिस्साक रक्षा करैत?” भानु कहला जे कारणक किछु अंश प्रकाशित करबासँ धनक पथ बदलय सकैत अछि; मुदा सामान्य आदेशक अस्तित्व, लागू सीमा आ सक्षम शिकायत-पद्धतिक सूचना देबाक व्यवस्था पर राज्य विचार करैत अछि। न्यायालय एहि उत्तरकेँ पूर्ण सहमति नहि मानलक। न्यायमूर्ति इला कहलीह, “गोपनीयता उचित कारण होएत, एक शब्दक जादू नहि। राज्य अदालतकेँ पर्याप्त अधिकृत सामग्री देत, आ नागरिककेँ जे बात बिना जाँच बाधित केने कहल जा सकैत अछि, से स्पष्ट करत।”

दू घण्टा बाद लिखित अन्तरिम आदेश पढ़ल गेल। आदेशक आरम्भमे अदालत कहलक जे ई रिटक सीमित चरण अछि; एहि आदेशसँ अर्जुनक चारि हजार दू सय रुपैयाक कथित स्रोत वैध वा अवैध घोषित नहि होइत अछि, कोनो अभियुक्त दोषी अथवा निर्दोष निर्धारित नहि होइत अछि, आ विशेष न्यायालयक अन्य कार्यवाही बाधित नहि होइत अछि। अदालत सरकारी शपथपत्र, बैंकक सत्यापित घटनाक्रम आ उपलब्ध सीमित दस्तावेजक आधारपर केवल वर्तमान रोकक आकार आ समीक्षा पर विचार करैत अछि। एहि सावधानीसँ रेवतीकेँ सन्तोष भेल। ओ जनैत छलीह जे बहुत लोक निर्णयक पहिल वाक्यक उत्सव मनबैत अछि आ ओकर सीमा पढ़बाक धीरज नहि रखैत अछि।

आदेशमे बैंककेँ निर्देश देल गेल जे अर्जुनक गैरविवादित वैध छात्रवृत्ति, प्रमाणित पारिवारिक जमा आ ओहि स्रोतसँ आयल नब असम्बद्ध रकमक सामान्य निकासीपर पुरान व्यापक रोक पुनः लागू नहि हो, जाधरि सक्षम प्राधिकारी ककरो नव विधिसम्मत विशिष्ट आदेश द्वारा अन्यथा नहि निर्देश दैत अछि। मौजूदा विवादित चारि हजार दू सय रुपैया तत्काल मुक्त करबाक निवेदन एहि अन्तरिम चरणमे स्वीकार नहि भेल; ओकर संरक्षणक आवश्यकताक प्रश्न जाँचक सत्यापित परिणाम आ सम्बन्धित अधिकारक प्रक्रिया पर निर्भर राखल गेल। बैंककेँ अपन अनुपालनक स्पष्ट लिखित सूचना अर्जुन आ अधिकृत अनुसन्धान अधिकारी दुनूकेँ देबाक कहल गेल। एहि आदेशमे न जाँचक मूल साक्ष्यक सार्वजनिक प्रकटीकरण अनिवार्य कएल गेल, न सामान्य सूचनाकेँ असीम अधिकार देल गेल।

राज्यकेँ अपन मूल रोक-पत्रक वैधानिक स्रोत, शेष विवादित रकमक सम्बन्धक वर्तमान स्थिति आ समीक्षा करबाक प्रशासनिक-पद्धतिक संक्षिप्त प्रतिवेदन नियत अगिला तिथि धरि

दाखिल करबाक निर्देश भेटल। न्यायालय कहलनि जे आवश्यकता अनुसार याचिकाकर्ता अन्य उपलब्ध वैधानिक मंचक सहारा लऽ सकैत अछि; उच्च न्यायालयक एहि हस्तक्षेपक अर्थ अधिनियममे निर्दिष्ट न्यायनिर्णायक प्राधिकारीक समस्त काम अपन हाथमे लेब नहि। बैंकक प्रारम्भिक पूर्ण रोकक कारण अर्जुनकेँ जे वास्तविक शैक्षणिक कठिनाई भेल, तकर वैधानिक उपचारक प्रश्न एखन खुलल राखल गेल। प्रतिवादीसभक उत्तर आबि गेलाक बादे कोर्ट ओहि पहलू पर आगाँ विचार करत।

अदालत आदेशक एक विशेष पाँतिमे लिखलक जे प्रणालीक तकनीकी कार्यान्वयन न्यायिक उत्तरदायित्वसँ बाहर नहि अछि। प्रशासनिक पत्रमे निर्दिष्ट रकमक सीमा आ बैंकक व्यवहारमे लागू रोकक सीमा बीच अन्तर भेटला पर सक्षम अधिकारीकेँ ओकर कारण, अवधि आ सुधारक प्रमाण देखेबाक पड़ि सकैत अछि। मुदा एहि पाँतिसँ समस्त बैंक-रोक स्वतः अवैध घोषित नहि भऽ गेल। प्रत्येक खाताक वास्तविक स्थिति अलग देखल जाएत। रेवतीक लेल यही अनुपात निर्णयक आत्मा छल—कथित अपराधजन्य रकम सुरक्षित रहि सकैत अछि, मुदा अस्पष्ट मशीनक निर्णय मनुष्यक सम्पूर्ण वैध जीवनपर अकारण अन्हार नहि पसारए।

सुनबाई समाप्त भेला पर अर्जुन पूछलक, “तँ हम जीति गेलहुँ?” शालिनी उत्तर देलीह, “तोहर पढ़ाइ लेल जे गैरविवादित धन खुलल छल, ओकर सीमा आब न्यायालयक आदेशमे साफ अछि। मुदा चारि हजार दू सयपर जाँच बाकी अछि। एकर बाद समीक्षा होएत। एखनो अंतिम जीत-हारक भाषा उपयुक्त नहि।” अर्जुन मुस्कुरौलक नहि। ओकरा बुझायल जे आदेशक तात्कालिक महत्त्व छल, मुदा घरमे माय पूछतीह जे एखन चारि हजार दू सय अटकल अछि कि नहि। ओ हुनका हँ कहत। तखन फेर बुझौत जे बाँकी वैध धन सुरक्षित अछि। एहि दू वाक्यक बीच जे सूक्ष्म अन्तर छल, ओ पिछला महीनासँ ओकर जीवनक मुख्य पाठ बनि गेल छल।

रेवती न्यायालयक सीढ़ी पर ठाढ़ भेलीह। पाछाँ सँ भानु प्रताप माथुर आयलाह। ओ कहलनि, “अहाँ एको बेर राज्यक जाँचक अधिकार समाप्त करबाक माँग नहि कएलहुँ। एहि कारण बहस स्पष्ट रहल।” रेवती उत्तर देलीह, “आ अहाँ बैंकक तकनीकी गलती छिपेबाक चेष्टा नहि कएलहुँ। राज्यक हित एक कार्यालयक प्रत्येक निर्णयक बचावसँ बड़ होइत अछि।”

भानु हँसलाह। “जनता एहि बातचीतकेँ बहुत नरम समझत।” रेवती कहलीह, “लोककेँ कठोर सत्य चाही, कठोर स्वर जरूरी नहि।” दुनू विपरीत दिशामे चलि गेलाह। अदालतक बरामदामे ई सामान्य शिष्टाचार एक दुर्लभ सार्वजनिक विश्वास बनि सकैत छल, मुदा ओकरा समाचारक शीर्षक बनब कठिन छल।

न्यायमूर्ति इला अपन कक्षमे आदेशक अन्तिम पृष्ठपर हस्ताक्षर कएलीह। हुनकर सहकर्मी पुछलनि जे एहन छोट रकमक प्रकरणमे खण्डपीठक समय देब उचित छल कि नहि। ओ उत्तर देलीह, “रकम छोट अछि, मुदा प्रश्न कोनो छोट प्रमाणपत्र नहि। एक आदेशक भाषा हजार बैंक-शाखामे गलत पढ़ल जा सकैत अछि, आ एक सही सीमा एक व्यक्तिक जीवन बचा सकैत अछि। मुदा हम सेहो सावधान रहब जे एक विद्यार्थीकेँ राहत देबाक बहाने समूचा अनुसन्धानक निर्णय एहि कक्षमे नहि लिखि दी।” सहकर्मी फेर पुछलनि, “ई प्रश्न आगाँ उच्चतर न्यायालय जाएत?” ओ कहलीह, “सम्भावना न्यायिक उपाय आ वास्तविक विवादपर निर्भर अछि, भविष्यक अनुमानपर नहि।”

ओहि साँझ अनुराधा सेनकेँ एक नब अधिकृत वित्तीय फाइल भेटल। एहिमे परामर्श-शुल्क, प्रचार-सामग्रीक भुगतान, संस्थागत प्रशिक्षण आ कतिपय जनसहायता-संस्थाक नाम छल। एक प्रारम्भिक सन्देशमे दावा कएल गेल छल जे कथित रकमक पञ्चानबे प्रतिशत नकद निकालि लेल गेल। अनुराधा सन्देश पढ़ि फाइलक ऊपर स्पष्ट लिखलीह—“दावा; स्रोत-परीक्षण शेष।” ओ बुझि गेलीह जे आगाँक जाँचमे एक कठिन भेद राखबाक पड़त: वास्तविक परोपकारी संस्थाक सेवा, वैध प्रचार-व्यय, झूठ्ठा बिल आ कथित छद्म-समूहक अलग प्रमाण। सन्देशक प्रतिशतए अपराधक परिमाण नहि बतबैत छल। जे नकद निकासी लिखल अछि, ओकर बैंक-प्रमाण, लाभार्थी, तिथि आ रूपान्तरण सभ जाँचना बाकी छल।

नीरजा राठौड़ अनुराधाकेँ फोन कएलीह। “उच्च न्यायालयक आदेश पढ़लहुँ,” ओ कहलीह। “ई हमर जाँचपर रोक नहि अछि; मुदा उत्तरदायित्वक प्रश्न स्पष्ट अछि।” अनुराधा उत्तर देलीह, “हमर पुनर्मिलानमे सेहो सामान्य शीर्षक कम करब पड़त। एक भ्रम पैदा करनिहार प्रतिशत पूरे समाजमे अपराधक कहानी लिखि दैत अछि।” नीरजा कहलीह, “अधिकृत स्रोत जे अछि से राखू। जे नहि अछि, ओकरा शून्य कहि नहि, अज्ञात कहू।” दुनू

महिला किछु समय मौन रहलीह। सत्ताइस वर्षक न्यायिक यात्रामे ई एक महत्त्वपूर्ण नैतिक व्याकरण बनि गेल छल—अज्ञातकेँ मनमाफिक दोष अथवा मुक्ति नहि कहब।

जोधपुरक छात्रावासमे अर्जुन आदेशक प्रति अपन झोरामे रखलक। मोहन बैरवा किताब लऽ आयल आ पुछलक, “अब तोँ पुस्तकालय चलब?” अर्जुन कहलक, “चलि।” गलियारामे किछु छात्र हुनका देखिकय कानाफूसी कएलक, मुदा हिम्मत अंसारी खुलल सभामे फेर स्मरण करौलक जे खाताक नाम सार्वजनिक आरोपक प्रमाण नहि थिक। पायल रैगर ओहि दिन बच्चासभक विज्ञानक चित्रक प्रदर्शनी लगौने छलीह। चित्रक एक कोनमे छोट पङ्क्ति लिखल छल—“सही नापसँ सही पुल बनैत अछि।” रानी अपन बनाओल कागजक पुलक तस्वीर भेजने छलीह। अर्जुन ओकरा देखिकय पहिल बेर निःशङ्क हँसल।

लुधियानामे सुनीता पिता लेल दवाई किनेबाक बाद श्रम-सहायता कक्षक टेबुल पोंछलीह। शान्ति देवीक बचेबाक प्रयोजनक गैरविवादित रकम उपलब्ध छल, चम्पाक परिचय-पत्रक समस्या सुलझि गेल छल, आ रीतिकाक सिलाइक भुगतान सम्बन्धी स्वतन्त्र मामला एखनो अपन बैंक-मार्गमे चलैत छल। सुनीता अपना पुरान वेतन-पञ्जीकेँ कपड़ाक आवरणमे राखलीह। ओ नूरकेँ छोट संदेश पठौलीह: “लोकक नाम छापबाक पहिने ओकर प्रसंग बूझू। हमर २००९ क पञ्जी २०२५ क एच. चौहानक पहिचानक प्रमाण एखनो नहि।” नूर उत्तर देलीह —“ई सावधानी सम्पादकीय अभिलेखमे राखल जाएत।” एक साधारण पत्राचारमे अपराधक गप्पसँ दूर, नागरिकक गरिमा बचैत छल।

मुकुल मीणा अपन सात हजार पाँच सय रुपैयाक पावतीक प्रति खोली। विशेष न्यायालयक कठोर प्रश्नसँ ओकर रकम स्वयं वापस नहि भेल छल, उच्च न्यायालयमे अर्जुनक अन्तरिम आदेशसँ सेहो नहि। ओ निराश छल, मुदा अपन शिकायतक क्रमाङ्क सुरक्षित रखने छल। ओकर बहिन रानी कहलीह, “तोँ सब न्यायालयक आदेश पढ़ैत छह; हमरा पर्ची आओर बुझाबह।” मुकुल उत्तर देलक, “एकटा आदेश चारि हजार दू सयक, हमर सात हजार पाँच सय अलग। एके बैंक-रस्ता पर चलि सकैत अछि, मुदा एकहि क्षतिक नाम नहि।” रानी अपन गणितक कापीमे दू अलग वृत्त बनौलीह। मुकुल ई चित्र देखिकय बुझलक जे बहिनक सीखब न्यायालयक भाषासँ कम स्पष्ट नहि।

दरभंगामे शिवनारायणकेँ रेवतीक लिफाफा भेटल। भीतर उच्च न्यायालयक आदेशक प्रमाणित प्रति नहि, ओकर मुख्य पङ्क्तिक साफ लिखल सारांश आ बेटी द्वारा लिखल निजी पत्र छल। रेवती लिखने छलीह जे सन् २००० सँ २०२६ धरि ओ नाम, अभिलेख, भूख, राहत, श्रम, छात्रवृत्ति, विज्ञान आ रोगक अनेक अलग कथा देखलीह। हुनकर प्रश्न एक अपराध-सञ्जालक समग्र उत्तर नहि थिक; प्रश्न ई अछि जे कानून कमजोर मनुष्यक जीवनपर अपन वास्तविक असरकेँ मानैत अछि कि नहि। पत्र पढ़ैत शिवनारायण अपन पुरान बही निकाललनि। पहिल पृष्ठपर नीलकान्त साहक समयक चारि प्रश्न छल, पाँचम पृष्ठपर “असर कोन व्यक्तिपर?” ओ पाँचम प्रश्नक नीचाँ कम्पित हाथसँ लिखलनि—“समयपर समीक्षा।”

जोधपुरक एक विद्यालयमे विज्ञानक पाठ समाप्त कऽ शिक्षक विद्यार्थीसँ पुछलनि जे उपग्रहसँ भेटल चित्रकेँ कखन विश्वसनीय मानब। एक छात्र कहलक, “जखन चित्र साफ हो।” दोसर कहलक, “जखन यन्त्र सही हो।” शिक्षक बोर्डपर लिखलनि—समय, स्रोत, जाँच आ फेरसँ परीक्षण। ककरो एहि पाठक सम्बन्ध अर्जुनक रिटसँ नहि छल; बच्चासभ अपना पाठ्यक्रमक प्रश्न बुझि रहल छल। मुदा दूर रेवतीक मनमे एतबे बात छल जे प्रमाणक सभ संसारमे साफ देखाइत बातक पाछाँक यन्त्र आ तरीका पूछब पड़ैत अछि। अन्तरिक्ष-अनुसन्धानक गौरव अपन ठाम छल, नागरिकक बैंक-नोटिस अपन ठाम; दुनूक अनुशासन समान रूपेँ मनुष्यक श्रमसँ बनैत छल।

कानूनक विद्यार्थी शालिनी सोलंकीकेँ पूछलनि जे एहन अन्तरिम आदेशकेँ पाठ्यपुस्तकमे अधिकारक अन्तिम नियम मानि लेब उचित अछि कि नहि। शालिनी कहलीह, “एहि प्रकरणक तथ्य, आदेशक अन्तरिम स्वरूप, लागू विधि आ प्रार्थनाक सीमा सब देखू। एक छात्रक राहत सभ खाताधारकक स्वतः राहत नहि। न्यायालय अपन सामने राखल अभिलेखपर निर्णय करैत अछि; भिन्न तथ्य पर निष्कर्ष भिन्न भऽ सकैत अछि।” विद्यार्थी फेर पुछलक, “तखन सत्ताइस वर्षक अनुभवक की अर्थ?” शालिनी कहलीह, “शायद एतबा जे समान सिद्धान्तक उपयोग अलग लोकक जीवनमे कतेक सावधानीसँ करबाक चाही, से सीखनाइ।”

रेवतीक मेजपर एक पुरान टिकट राखल छल। सन् २००० मे पिता दरभंगाक दण्डाधिकारीक अदालत जाएत समय जे बसक टिकट सुरक्षित रखने छलाह, ओकर एक

फटकल कोन बेटीकेँ बादमे देल गेल छल। कागज पर भाड़ा मुश्किलसँ पढ़ल जाइत छल; ओ दिनक मुकदमाक नाम आबो स्पष्ट छल। रेवती टिकटकेँ नव आदेशक प्रति लग नहि रखलीह। एकटा निजी स्मृति छल, दोसर सार्वजनिक न्यायिक अभिलेख। सबसँ कठिन घड़ीमे सेहो दुनूकेँ अलग रखब हुनकर पेशागत सत्ताइस वर्षक हासिल छल।

रातिक अन्तिम पहर रेवती होटलक कोठरीमे एक कागजपर दू सम्भावित मार्ग लिखलीह। पहिल—अर्जुनक विशिष्ट रोकक शेष वैधानिक समीक्षा, सक्षम न्यायाधिकरण वा अन्य मंच पर उपलब्ध उपचार आ उच्च न्यायालयक अगिला सुनबाई। दोसर—जँ विभिन्न प्रकरणमे वैधानिक प्रक्रिया, नागरिकक जानकारी आ बैंकक कार्यान्वयनक विषयपर सचमुच व्यापक संवैधानिक विवाद बने, तखन उपयुक्त न्यायिक मार्गसँ उच्चतर न्यायालयमे प्रश्न जा सकैत अछि। ओ दोसर पङ्क्तिक बगलमे मोट अक्षरमे लिखलीह: “स्वतः अपील नहि; वास्तविक विवाद आ विधिसम्मत प्रक्रिया आवश्यक।” एहन संयम कथाक नाटककेँ छोट करैत छल, मुदा न्यायिक जीवनकेँ सच्चा रखैत छल।

खिड़की खोलिते दूर मेहरानगढ़क अन्हार किलाक छाया दिखाई देलक। रेवती पिताक पुरान फाइल आ अपन नव पत्र एकसाथ रखलीह। सत्ताइस वर्षक अन्तरमे दरभंगाक बहीखातासँ देशक डिजिटल खाता धरि यात्रा भेल छल, मुदा कोनो अदालत एक दिनमे सभ नामक न्याय नहि कऽ सकैत छल। न्यायालय आइ एतबा कहने छल जे जाँचक कारण स्पष्ट हो, रोक अपन विधिक सीमामे रहए, आ जकर जीवनपर ओकर असर पड़ैत अछि ओकरा समीक्षाक रास्ता भेटए। ई अन्तिम निर्णय नहि, एक खुलल दुआरि छल। तखने अनुराधाक नब फाइलक एक अज्ञात प्रतिशत हुनकर मनमे कौंधल—असत्यक मूल्य कोन चुकाओत? अनुराधाक नब फाइलक स्रोत जाँचल जाएब एखन बाँकी छल।

अध्याय ३८ — असत्यक मूल्य

जोधपुर, लुधियाना, दरभंगा, मुम्बई आ दुबई; नवम्बर–दिसम्बर २०२६

नवम्बरक एक भोर जोधपुरमे सर्दी एतेक नहिएँ छल जे लोक कम्बलमे पड़ल रहथि, मुदा अदालतक बाहर चाय बनौनिहार रफीकक हाथ जरूर काँपि रहल छल। केतली उबलैत काल ओकर फोनपर एक तस्वीर चमकल। तस्वीरमे वित्तीय अभिलेखक आधा पृष्ठ छल, ऊपर लाल अक्षरमे लिखल—“पञ्चानबे प्रतिशत रकम नगद गायब।” नीचाँ एक पत्रकारक नाम बिना समाचारक सन शीर्षक छल। रफीक पहिने कागजक मुँह देखलक, फेर सामने चाय पीबय आएल लिपिक ताराचन्दक। “साहेब, एतेक पैघ बात?” ताराचन्द फोन छूबय सँ मना कएलनि। “अहाँ जकर पृष्ठ देखैत छी, ओकर पहिल आ अन्तिम पन्ना कतय अछि?” रफीक हँसि देलक, मुदा तस्वीर मेटेलक नहि। भोरक छह बजेतक ओ चित्र पचास गोटेक फोनपर पहुँचि चुकल छल। तस्वीरक कियो प्रमाणपत्र नहि छल; ओकर प्रसारक संख्या दिनक पहिल सफल व्यापार बनि रहल छल।

ओही समय अनुराधा सेन अधिकृत वित्तीय परीक्षण-कक्षमे एकटा छोट शब्दक असंगति देखैत छलीह। काँचक अलमारीमे मूल दस्तावेजक मुहरबन्द प्रति राखल छल। कंप्यूटरक निर्यातित सारणीमे एक स्तम्भ ‘C/ADJ’ लिखल छल; एक स्थानीय प्रतिलिपिमे ओकर अर्थ ‘नगद निकासी’ बनाओल गेल छल। मुदा मुख्य प्रणालीक शब्दकोशमे ओ अक्षरक अर्थ ‘समायोजन अथवा नगदसम्बन्धी लेखा-वर्ग’ छल, जकरा अन्तर्गत अन्तःखाता सुधार, पुरान देयक समायोजन आ वास्तविक नगद लेनदेन तीनू आबि सकैत छल। अनुराधा अपन सहयोगी देवेनकेँ पुछलीह, “ई अर्थ कोन अभिलेखसँ लिखल गेल?” देवेन मूल प्रणालीक निर्देशिका निकालि देखौलक। “हमरा भेजल फाइलमे तऽ पूरा शब्द छल नहि,” ओ कहलक। “तखन “नगद” के लिखलक?” प्रश्नक उत्तर बटन दबौलासँ नहि भेटल; ओकरा लेल कागजक यात्राक इतिहास देखबाक छल।

एहि यात्राक पहिल पड़ाव एक दिन पहिने बनल आन्तरिक प्रारूप छल। एक कनिष्ठ विश्लेषक बीस चुनल प्रविष्टिक समूहमे उन्नैस प्रविष्टि ‘C/ADJ’ वर्गक देखल, आ छोट टिप्पणी लिखने छल—“चयनित समूहमे उन्नैस प्रविष्टिक समान वर्गीकरण; मूल स्वरूप जाँचबाक।” प्रारूपसँ चारि शब्द कटि गेल, एक टेबुल काटिकय चित्र बनल, आ अगिला फोनमे ‘९५% निकासी’ बनि गेल। जे पञ्चानबे प्रतिशत छल, ओ बीस चुनल पाँतिमे उन्नैसक गणित छल; सम्पूर्ण सञ्जालक रुपैयाक प्रतिशत नहि। अनुराधा पन्ना पढ़ैत अनुभव कएलीह जे अंकक सबसँ भयावह रूप ओ नहि जखन गणित गलत हो, बल्कि जखन गणित सही होइतो प्रश्न गलत हो। ओ अपन प्रतिवेदनमे पहिल पाँति लिखलीह—“उन्नैस/बीस अभिलेख-वर्गीकरणक अनुपात अछि; नगद निकासीक मूल्य-प्रतिशत नहि।”

देवेन कहलक, “जँ एहि दावाक भ्रम तत्काल साफ कऽ दी, तँ लोग कहत जे हम आरोपीक पक्षमे छी।” अनुराधा कुर्सीसँ उठि खिड़की लग पहुँचलि। बाहर विद्यालय जाएवला बच्चा मफलर बाँधि रहल छल। “जाँचक पक्ष एकटा होइत अछि—जकरा साँच कहल जा सकए,” ओ कहलीह। “भ्रम सुधरला पर वास्तविक अपराधक सम्भावना समाप्त नहि होइत। आ जँ किछु अपराध भेल अछि तँ ओकर विश्वसनीय प्रमाण असत्यक बैसाखी पर नहि टिकब चाही।” हुनका ईहो बुझल छल जे प्रारम्भिक गलतीक जिम्मेवारी तय करब निरीह कर्मचारीकेँ बलि बनायब नहि थिक। कोन फाइल के बनौलक, के ओकर सन्दर्भ हटौलक, के सार्वजनिक करलक—तीन अलग प्रश्न छल। अनुराधा कानूनी अधिकृत माध्यमसँ स्रोत-संरक्षणक अनुरोध पठौलीह।

पत्रकार नूर जहाँक समाचार-कक्षमे तस्वीर रातिसँ पहुँचि रहल छल। सम्पादक निखिल कहलक, “हम सभ पाछाँ रहि जाएब; सभ चैनल पञ्चानबे प्रतिशत कहि रहल अछि।” नूर उत्तर देलीह, “सभक कहना समाचारक मूल स्रोत नहि।” ओ तस्वीरकेँ साक्ष्यक तरह मुद्रित नहि कएलीह; ओकर ऊपर लाल पेन्सिलसँ लिखलीह—“अप्रमाणित; प्रकाशित नहि।” निखिल दोसर पर्दापर दर्शक-संख्या देखौलक। किछु वेबसाइट विक्रान्त सहगलक फोटो संग विद्यार्थीसभक चित्र जोड़ि देने छल। “अहाँक रिपोर्टमे एहन फोटो रहत?” निखिल पुछलक। नूर कहलीह, “जेकरा विरुद्ध आरोपक स्थिर स्थिति तक नहि, ओकर छवि आरोपक निष्कर्ष

बना कऽ किएक छापी? आ विद्यार्थीक नाम, अनुमति बिना तस्वीर, बैंकक अन्तिम चारि अङ्क—ई सब हम नहि देब।” सम्पादक दीर्घ साँस लेलनि; हुनका समाचारक गति आ प्रकाशित असत्यक स्थायित्व बीचक अन्तर कठिन लगैत छल।

नूरकेँ दू दिन पहिने मुकुल मीणा अपन पुरान पावतीक स्पष्ट तस्वीर भेजने छल। ओकर सात हजार पाँच सय रुपैया घुरल नहि छल। “लोक दू हजार करोड़ पढ़ि हमर सात हजार पाँच सय सुनै छै कि नहि?” मुकुल पुछने छल। नूर ओकर प्रश्न फोनक पाछाँ सँ सुनलीह। एखन ओ नहि चाहैत छलीह जे नब भयावह शीर्षक एहि छोट वास्तविक दुखकेँ फेर दबा दे। ओ मुकुलकेँ उत्तर लिखलीह—“अहाँक पावती, लेनदेनक तिथि आ शिकायतक वर्तमान स्थिति परखने छी; पैसा वापस भेल अछि, एहन नहि लिखब। आ पञ्चानबे प्रतिशतक सनसनी पर एखन प्रमाण नहि।” मुकुल फोन राखिकय स्कूल सँ आबि रहल बहिन रानीक लेल पानी भरबाक गेल। ओकरा लेल पत्रकारक सावधानी तुरन्त राहत नहि छल; मुदा एतेक दिनमे कमसँ कम एक लोक ओकरा गलत जीतक शुभकामना नहि पठौने छल।

लुधियानाक बाहरी इलाकामे ‘साँझ-सहारा लोकसेवा न्यास’ नामक एक छोट संस्था पुरान प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रक परित्यक्त कोठरीमे महिलासभकेँ कागज भरबाक सहायता दैत छल। ओकर काम बिल्कुल सामान्य—श्रमिक परिवारक टीकाकरण-पर्ची पढ़ा देब, विधवा पेंशनक आवेदनक भाषा समझा देब, विद्यालयक शुल्कमुक्तिक सूचना पहुँचा देब। संस्थाक प्रमुख ज़रीना बेगम चालीस वर्षसँ समुदायमे रहैत छलीह। हुनकर सभसँ महत्त्वपूर्ण सम्पत्ति चारि अलमारीक फाइल आ कोठरीक खिड़कीक ताला छल। एक दिन अखबारक अधूरा खबरमे ‘सहायता न्याससभ प्रचार-धनक माध्यम’ लिखल भेटते दू दाता अपन मासिक सहयोग रोकि देलनि। ज़रीना पुछलीह, “कोन संस्था? कोन भुगतान? ककर दस्तखत?” जवाबमे वेबसाइटक छापल लाल शीर्षक आएल।

ओहि दिन सुनीता पासवान संस्था लग दवाईक फार्म लऽ पहुँचलि। ज़रीनाक आँखिमे नींदक कमी देखिकय पुछलीह, “की भेल?” ज़रीना फोटो देखौलीह। “हमर संस्था पर आरोप अछि?” सुनीता प्रश्न कएलीह। “नाम नहि,” ज़रीना कहलीह, “मुदा लोक सभ एकहि शब्द देखैत अछि—न्यास। काल्हि पाछाँक मुहल्लासँ एक माय बच्चाकेँ लऽ नहि आयली। लोक

कहलक जे एतए खाताक कागज जमा करब खतरनाक अछि।” सुनीताक पुरान वेतन-पञ्जी ओकर थैलामे छल। ओ जानैत छलीह जे कागजक गलतीसँ श्रमिकक वेतन रुकि सकैत अछि; एखन अधूरा समाचारसँ ककरो जरूरी सहायता रोकि जाइत छल। “हम मददक पावती क्रमवार देखैत छी,” ओ कहलीह, “मुदा प्रमाण देबाक जिम्मेवारी आरोप लगेनिहारक सेहो अछि।”

ज़रीना अपन कार्यालयक आगन्तुक-पञ्जी, दान-प्राप्तिक रसीद आ तीन महिनाक सेवा-प्रतिवेदन लऽ बैसलीह। एक दिनमे चौंतीस परिवारकेँ सहायता देल गेल छल, मुदा हर परिवारक नाम प्रकाशित करब उचित नहि। एहन प्रकाशनसँ रोग, जाति, विधवा-पेंशन आ परिवारक निजी कठिनाई सार्वजनिक भऽ जाएत। सुनीता सुझौलीह जे नियत परीक्षणक लेल प्रासंगिक दस्तावेज अधिकृत संस्थाकेँ उचित गोपनीयतासहित उपलब्ध कराओल जाए; अखबारक सामने रोगीक सूची नहि खोलल जाए। ज़रीना पुछलीह, “साँच देखेबाक लेल लोकक पर्दा खोलब जरूरी अछि?” सुनीता कहलीह, “नहि; साँचक खोजो मर्यादासँ होइत अछि।” एहि एक वाक्य पर दुनूकेँ निश्चय भेल जे असत्यक मूल्य केवल गलत आरोपक दुख नहि, अपन सत्य सिद्ध करबाक अनावश्यक व्यय सेहो होइत अछि।

मरुधर परिसरमे रिद्धि विश्नोई छात्रसभक लेल सूचनाफलक पर छोट घोषणा टाँगलीह—“कोनो गोपनीय सूची, बैंक-विवरण अथवा अधूरी रिपोर्टकेँ सत्यापित तथ्य मानि प्रसारित नहि करू।” ओहि घोषणा पर एक विद्यार्थी लाल कलमसँ लिखलक, “तखन अपराधी बचि जायत?” रिद्धि काटलीह नहि। तकरा नीचाँ उत्तर लिखलीह—“नहि; उचित प्रमाणक बिना दोषारोपणसँ निर्दोष आ वास्तविक पीड़ित दुनूकेँ हानि होइत अछि।” किछु छात्र भड़कला जे विश्वविद्यालय मामलेकेँ दबा रहल अछि। हिम्मत अंसारी आग्रह कएलक जे खुलल बैठक हो, मुदा बैंक नाम आ व्यक्तिगत सूची न पढ़ल जाए। रिद्धि मानि गेलीह। विश्वविद्यालयक सावधानी सुरक्षा बनि सकैत छल, तखने जखन ओकरा प्रश्न पूछि सकबाक अधिकारक संग राखल जाए।

बैठकमे अर्जुन मीणा पाछाँक कतारमे बैसल छल। ओकर छात्रवृत्तिक गैरविवादित रकम उच्च न्यायालयक सीमित आदेशक बाद उपयोग योग्य छल; चारि हजार दू सय रुपैयाक सम्बन्धक जाँच अलग चलि रहल छल। एक विद्यार्थी उठि पुछलक, “तोहर खाते पैसा आयल

तऽ तूँ शुद्ध कोना?” अर्जुन उत्तर देबाक पहिने ठमकल। “हम “शुद्ध” शब्दक प्रमाणपत्र नहि माँगैत छी,” ओ कहलक, “हम कहैत छी जे पैसा आयल, आ हमर जानकारीक बारेमे जाँच होए। मुदा एहि आधारपर हमर हर मित्र, हर शुल्क आ हमर पढ़ाइक सभ दिन अपराध नहि बनि सकैत।” कक्षक भीतर अचानक चुप्पी पसरि गेल। रिद्धि बुझलीह—विद्यालय जँ परीक्षा-अंकक भाषा मात्र पढ़बैत अछि, तँ निर्दोषताक जटिल भाषा पढ़ेबाक स्थान के लेत?

अर्जुनक माय रेणु फोनपर सभ सुनलीह तँ कहलनि, “हमरा तोहर उत्तर सुन्दर नहि, साँच चाही। जँ किछु मालूम छल तँ कहिह।” अर्जुन माथ झुका कऽ उत्तर देलक, “माय, साथी जोड़ला पर प्रोत्साहन भेटत कहल गेल छल। हम ओ बात भरोसा कएने रही। ई जानकारी अधिकारीकेँ दऽ देलहुँ। आ जे नहि बुझलहुँ, तकरा जानी कऽ नहि कहब।” रेणु रसोइक चूल्हा धीमा कएलीह। “हमर डर ई अछि जे तोहर एक गलती होयत तँ पूरा जीवनक नाम बदलि जाएत,” ओ कहलीह। अर्जुन उत्तर देलक, “हमर डर ईहो जे हमर डरक कारण दोसर पीड़ितक सत्य नहि छिपि जाए।” माँ-बेटाक ई बातचीत कोनो अदालती अभिलेख नहि छल; मुदा आनेक रातिक अपेक्षा ओ राति ओकरे कारण चैनसँ सुतल।

दुबईमे विक्रान्त सहगल जयन्त मल्होत्राक संग अधिकृत अभिलेखक उत्तर तैयार करैत छल। फ़रीदा लेखाकार साठ दिनक एक परामर्श-प्रकल्पसँ चालीस दिनक स्वीकृति-पत्र मिलौने छलीह। बीस दिनक बाकी कामक भुक्तानी वास्तवमे देय छल कि नहि, एहि प्रश्नपर कागज अधूरा छल। विक्रान्त कहलक, “समाचारमे पञ्चानबे प्रतिशत लिखल अछि। एक झूठक कारण हमर सभ बिल गलत मानल जाएत।” फ़रीदा शान्त स्वरमे कहलीह, “समाचार गलत होएत तँ मूल बिल अपने-आप सही नहि भऽ जाएत। जे चालीस दिनक काम स्वीकृत अछि ओकर प्रमाण अछि; शेषक अलग जाँच हो।” विक्रान्त पहिने रुष्ट भेल, फेर पत्र पर अपना हस्ताक्षर रोकि देलक। ओकरा तत्काल बचावक भाषा चाही छल, फ़रीदाकेँ खातामे हर अज्ञात स्थान खाली छोड़बाक साहस चाही छल।

जयन्त कानूनी माध्यमसँ सूचित कएलनि जे विशेष न्यायालयमे विदेशी समन-सेवाक स्थिति एखन स्वतन्त्र प्रक्रियामे अछि। “अदालतक वैधानिक पत्रक उचित उत्तर देब आवश्यक अछि,” ओ कहलनि, “मुदा टीवीक शीर्षकक उत्तर ट्वीटसँ दऽ कऽ साक्ष्य बनाओनाइ उचित

नहि।” विक्रान्त पुछलक, “हमर कथन जँ सार्वजनिक नहि होए तँ एकतरफा छवि?” जयन्त कहलक, “सार्वजनिक छवि महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा ओ कानूनी अभिलेखक विकल्प नहि। जँ दस्तावेजक अधिकारपूर्वक प्रस्तुति होयत, प्रतिपक्ष ओकर परीक्षण करि सकत। जँ नहि होयत तँ हमर समर्थक सेहो हमर स्थानमे साक्षी नहि बनि सकैत छथि।” फ़रीदा विदेशक समयरूपी दू घड़ीक बीच ठाढ़ सुन्नि रहल छलीह। एक घड़ी समाचारक छल, दोसर न्यायिक प्रक्रियाक; दुनूक काँटा एकहि गति सँ नहि चलैत छल।

जोधपुरसँ बाहर एक कृषि-उपज मण्डीमे हरिराम जाखड़ नामक आढ़तिया भोरसँ अनाजक बोरा गनैत छल। ओकर कारोबार बड़ा नहि छल; किसानक माल राखब, तौल करब, बिक्री पर स्वीकृत मेहनताना काटब आ शेष रकम दऽ देब—ई ओकर रोजक काज। गेल वर्ष ओकर गोदामक गोहीमे एक संस्थागत प्रशिक्षण-दल दू दिवस ठहरने छल। दलक लोक डिजिटल विपणन सिखेबाक लेल किसानसभक परिचय लऽ गेल छल, आ हरिरामक नामपर एक छोट सभाक चाय-पानीक भुगतान भेल छल। आब लीक भेल सूचीमे ‘एच. जाखड़—प्रचार सहायता’ लिखल देखिकय मण्डीक एक व्यापारी ओकरा दलाल कहि देलक। हरिराम पुछलक, “दू दिनक प्रशिक्षककेँ जगह देनाइ अपराध अछि?” व्यापारीक लग उत्तर नहि छल; ओकर लग दोसर फोनपर वही तस्वीर छल।

किसान तेजाराम गुर्जर अपन बाजराक ढेर लग ठाढ़ ई बात सुनि रहल छल। प्रशिक्षणक पहिल दिन ओ वास्तविक रूपसँ उपस्थित छल; हुनका मोबाइलपर बजारक भाव देखेबाक तरीका सिखाओल गेल, मुदा वादा कएल गेल किसान-ऋणक सुविधा कखनो भेटल नहि। ओ कहलक, “दोसर बात कहू। सिखेनिहार आयल छल, ई सही। मुदा ओ जे कहने छल जे तीन महिना बाद हमरा सीधा ग्राहक भेटत, से नहि भेल। यदि ओकरा लेल भुगतान भेल, तकर हिसाब चाही।” हरिराम कहलनि, “हमर गोदामक किराया समय पर देल गेल। ओ धन प्रशिक्षण-शुल्कक छल कि ककरो प्रचारक, ई हम कोना जानी?” तेजाराम उत्तर देलक, “जे नहि जनैत छी, से नहि कहू; मुदा हमर असफल आशाकेँ सफल कार्यक्रमक फोटो मत बनाउ।” मण्डीक तौल-तराजू लग सत्यक दू स्वर छल—किछु सेवा भेल, किछु वादा अधूरा रहल।

हरिरामक खाता बैंकमे सरबजीत कौरक शाखाक नहि छल; तथापि ओकर अधिकृत बैंक प्रतिनिधि प्रमाणित तिथिसहित विवरण देबाक तरीका समझौलक। हरिराम अपन मोबाइलक असम्पूर्ण स्क्रीनशॉट नहि, शाखासँ सत्यापित विवरण मँगौल। ओकर खातामे सन् २०२५ क एक छोट सेवा-रकमक प्रवेश स्पष्ट छल, आ ओहि रकमक आगाँ मण्डी शुल्क आ गोदाम-मजदूरक भुगतान देखाइत छल। ओहि सामान्य व्यापारसँ व्यापक धनशोधन-सञ्जालक निष्कर्ष नहि बनैत। मुदा प्रवेश-पत्रक संलग्न अनुबन्ध पर जे हस्ताक्षर छल, ओकरा पहिचानय मे हरिराम रुकि गेल। “ई हमर कर्मचारीक हस्ताक्षर नहि,” ओ कहलक। शाखा अधिकारी तुरन्त लिखलक—“हस्ताक्षर विवादित; विशेषज्ञ अथवा मूल प्रतिक परीक्षण आवश्यक।” हरिरामकेँ बुझायल जे ओकर निर्दोष होयबाक आशा आ अनुबन्धक वास्तविक प्रामाणिकता दुनूकेँ एके समय परखल जा सकैत अछि।

तेजारामक घरमे साँझक भोजन समय बेटी मानसी पुछलक, “बाबूजी, लोक किसानक फोटो लगा प्रचार किएक करैत अछि?” तेजाराम उत्तर देलक, “फोटो देखेबा लेल ठीक अछि, मुदा हमर नामक अनुमति बिना ओहि फोटोसँ कहब जे सभ किसान धनी भऽ गेल, गलत अछि।” मानसी अपन विद्यालयक निबन्धक शीर्षक देखौलक—‘डिजिटल भारतक गाम’। ओ लिखने छलीह जे मोबाइलसँ भाव देखब लाभदायक अछि, मुदा खेतक रास्ता, पानि, ऋण आ तौल अभीयो हाथे सँ सुधरेबाक अछि। पिता ओकर लेख पढ़ि हँसला। नगरक प्रचारक लेल किसान एक दृश्य होइत अछि; किसानक बेटी लेल ओकर परिवारक दिनचर्या। असत्यक मूल्य कतेको बेर एही दूरीमे जमा होइत अछि।

अनुराधाक दल तीन वित्तीय श्रेणी अलग कएलक। पहिल, वास्तविक सेवाक दस्तावेज सहित भेटल भुगतान—जकर स्रोत अलग जाँचयोग्य रहत। दोसर, सेवा-पत्र अछि मुदा कामक स्वीकृति, उपस्थितिक प्रमाण अथवा अधिकृत अनुबन्ध अधूरा अछि। तेसर, प्रचार-विषयक बिल जाहिमे जकर सेवा देबाक दावा अछि, ओहि ठामक लोक सेवा पाओल स्वीकृति नहि करैत। दलक एक सदस्य उत्साहित भऽ कहलक, “तेसर श्रेणी तँ झूठ्ठा बिल सिद्ध!” अनुराधा रोकलीह। “नहि। ई विरोधाभास अछि। हुनका कहबाक अवसर, मूल चालान, भुगतानक उद्देश्य आ सेवा-ग्राहकक उत्तर लेल जाउ। शंका आवश्यक अछि, पहिने सँ लिखल फैसला नहि।” ओ

आँकड़ाक पाँतिमे ‘झूठ्ठा’ शब्द हटाकय ‘सेवा-पुष्टि अपूर्ण’ लिखौलीह। एहि एक शब्दक दूरीमे भविष्यक न्यायिक विवेचना लेल जगह बचल।

चयनित भुगतानमे ‘जनदिशा मीडिया समन्वय’ नामक एक प्रचार-समूह फेर-फेर देखाइत छल। ओकर पञ्जीकृत कार्यालयक पता देल गेल छल, मुदा ओहि ठाम गेल अधिकृत दलकेँ एक साझा व्यावसायिक परिसर भेटल, जतय अनेक कम्पनीक डाक स्वीकार होइत छल। पतेपर डाक भेटब कम्पनीक कामक प्रमाण नहि, आ पतेपर स्थायी कर्मचारी नहि भेटब स्वयं अपराधक प्रमाण नहि। दल भवनक प्रवेश-पञ्जी आ अधिकृत किराया-समझौताक वैधानिक प्रति माँगलक। एक बिलमे स्थानीय विद्यालयक ‘युवा कौशल प्रदर्शनी’ आयोजित करबाक दावा छल। विद्यालयक प्रधानाध्यापिका कहलीह जे ओहि नामक कोनो कार्यक्रम हुनकर संस्थामे सूचीबद्ध नहि। मुदा ओ एहि बातक शपथपत्र देबासँ पहिने वार्षिक पञ्जी फेर देखबाक समय मँगलीह। नीरजा राठौड़ कहलीह, “समय दिअ; ठोस नकारात्मक प्रमाणो जाँचि कऽ बनैत अछि।”

दोसरी दिस ‘साँझ-सहारा’ क नाम पर जे सामान्य संशय फैलल छल, ओकर ‘जनदिशा’ सँ कोनो अभिलेखीय सम्बन्ध सामने नहि छल। दूनूक शब्दकोशमे ‘सहायता’, ‘समुदाय’ आ ‘प्रशिक्षण’ छल, मुदा साझा शब्दक अर्थ साझा नियन्त्रण नहि। ज़रीना अपन ट्रस्टक वित्तीय सलाहकारसँ विशिष्ट प्रतिवेदन तैयार करबौलीह। एक पृष्ठपर दानक स्रोत, दोसरपर संस्थागत वैध खर्च, तेसरपर सेवाक सत्यापनक गोपनीय पद्धति। ओ लिखलीह—“हम जाँचसँ बचबाक लेल नहि, अपन लाभार्थीक निजी जीवनक सुरक्षा लेल अनावश्यक सार्वजनिक प्रकटनसँ मना करैत छी।” सुनीता ई भाषा पढ़ि कनी सुधार कएलीह—“जँ वैधानिक अधिकारी विशिष्ट सामग्री माँगथि, तँ आवश्यक पद्धतिसँ देबाक तत्परता सेहो लिखू।” ज़रीना सहमति देलीह। पारदर्शिता आ प्रदर्शनमे अंतर रहैत अछि; दुनूकेँ एक शब्द मानि लेलासँ संस्था आ व्यक्ति दुनू असुरक्षित भऽ जाइत छथि।

नूर जतय समाचारक लेल संस्थासँ बात कएलीह। ज़रीना हुनका पूरा नाम छपबाक अनुमति देलीह, मुदा सहायता पबनिहार महिलासभक नाम नहि। नूर पुछलीह, “अहाँक संस्था कैं कोनो जाँच कार्यालयसँ नोटिस भेटल?” ज़रीना उत्तर देलीह, “नहि। दानदाताक प्रश्न भेटल

अछि, सरकारी आरोप नहि।” नूर अपन नोटमे एहि अन्तरकेँ मोट कलमसँ चिन्हित कएलीह। पत्रकारिता कएक बेर ‘आरोप लागल’ लिखि दैत अछि जखन वस्तुतः आरोप सोशल-मीडिया कऽ रहल होइत अछि। ओ निर्णय कएलीह जे बिना नोटिस संस्थाकेँ ‘जाँचक घेरेमे’ नहि लिखतीह। निखिल सम्पादक एखनहुँ शीर्षकक खोजमे छल, मुदा ओकरा स्वीकार करबाक पड़ल जे इएह स्पष्ट वाक्य समाचारकेँ विश्वसनीय बनबैत अछि—“एहि संस्थाक विरुद्ध एखन कोनो अधिकृत आरोप देखाओल नहि गेल अछि।”

नीरजा राठौड़ अधिकृत जाँचक बैठकमे पाँच टेबुल पर अलग-अलग दस्तावेज राखलीह। पहिल पर कथित प्रशिक्षण-शुल्कक मूल प्राप्ति, दोसर पर खातासँ निर्गमन, तेसर पर परामर्शक अनुबन्ध, चौथ पर सेवा-स्वीकृति, पाँचम पर प्रत्येक व्यक्तिक निर्देश वा नियन्त्रणक चिह्न। “एक टेबुल पर नाम अएलासँ ओकरा पाँचम टेबुलक मालिक मत बना दिअ,” ओ कहलीह। एक अधिकारी पुछलक जे जाहि कम्पनीक निदेशक सौमित्र बंसल छथि, ओ कम्पनीक सभ प्रविष्टि ओकर व्यक्तिगत ज्ञानक प्रमाण होएत कि नहि। नीरजा उत्तर देलीह, “नहि। हस्ताक्षर, बैठकक विवरण, अधिकृत प्रवेश, मूल सन्देश, अनुपालन आ सम्भावित विरोधाभास सब देखू। जिम्मेवारी पदसँ आरम्भिक प्रश्न बनैत अछि, अन्तिम उत्तर नहि।”

दलक तकनीकी विशेषज्ञ अपर्णा मलिक एक बाहरी पेन-ड्राइवक प्रति अदालतमे भेजबाक पहिने ओकर निर्माणक इतिहास जाँचि रहल छलीह। ई प्रति बैंकक मूल सर्वर नहि छल; अधिकृत अनुरोधपर तैयार निर्यातित संग्रह छल। कोन अधिकारीक निरीक्षणमे संग्रह बनल, ककर उपकरणमे, की प्रणालीक तिथि स्थिर छल, फाइल निकलबाक बाद अदलाबदलीक शंका कतेक अछि—एहि सभक उत्तर अलग संकलित कएल गेल। अपर्णा अधिकृत प्रक्रियामे डिजिटल हस्ताक्षरक सत्यापन आ हैश-मूल्यक तुलना दर्ज कएलीह, मुदा कहलनि, “हैश मेल खाइत अछि तँ ई प्रति संचित प्रति सँ नहि बदलल, एतेक प्रमाण भेटैत अछि। ई साँच नहि बनबैत जे निर्यातक पहिल स्रोतमे कोनो गलतीए नहि छल।” नीरजा अपन कापीमे लिखलीह —“अखण्डता आ तथ्यक सत्यता अलग।”

पुरान फाइलक एक भाग सन् २०२३ क छल, दोसर २०२५ क। अपर्णा पुछलीह, “कानून बदललाक समय एहि सामग्रीक ग्राह्यता कोना देखल जाएत?” विधि-अधिकारी कहलनि जे

इलेक्ट्रॉनिक अभिलेखक प्रमाण सम्बन्धी लागू विधि, प्रक्रियाक संक्रमण आ जकर समयमे अभिलेख पेश भऽ रहल अछि ओकर विशेष परिस्थिति जाँचबाक पड़त। सन् २०२४ क पहिल जुलाईसँ लागू भारतीय साक्ष्य अधिनियमक धारा ६३ क व्यवस्था अदालतक सामने प्रासंगिक भऽ सकैत अछि; प्रमाणपत्रक रूप, उपकरणक विवरण आ संबंधित विशेषज्ञक घोषणा जँ लागू अछि तँ विधिसम्मत रूपमे तैयार कएल जाए। मुदा केवल धारा लिखला सँ सत्य सिद्ध नहि होइत। सभ अधिकारी सहमत छलाह जे पुरान घटना, वर्तमान मुकदमा आ विभिन्न मंचक विधिक शर्त एकहि पर्चीमे मिलाकय नहि लिखल जाए।

सरबजीत कौर लुधियानाक बैंक-शाखामे ग्राहकक कतार समाप्त भेलाक बाद अनुपालन विभागक आन्तरिक प्रशिक्षण लेबैत छलीह। ओ तीन प्रकारक स्क्रीन देखौलीह—व्यापारक सामान्य खाता-विवरण, सक्षम आदेशक अनुपालन-पर्दा आ अनुसन्धान लेल प्रमाणित निर्यात। “ग्राहकक स्क्रीनशॉटक समय आ मूल बैंक-लेजरक मूल्यतिथि अलग हो सकैत अछि,” ओ समझौलीह, “आ कार्यालयक एक कर्मचारी द्वारा लिखल टिप्पणी मूल लेनदेनक अर्थक अन्तिम निर्णय नहि।” नव कर्मचारी पुछलक, “जँ स्क्रीनमे लाल चिह्न अछि तँ रकम दूषित?” सरबजीत उत्तर देलीह, “लाल चिह्न सावधानी अथवा रोकक सूचना हो सकैत अछि। जकर आधार लिखित अछि, ओकर स्रोत देखू; जे नहि अछि, ओकरा अनुमानसँ भरि नहि दिअ।” हुनकर मनमे शान्ति देवीक दवाईक दिन एखनहुँ ताजा छल।

मुकुलक पावतीक विशिष्ट मार्गपर जाँचक उत्तर आयल जे ओकर प्रारम्भिक सात हजार पाँच सय रुपैया एक प्रशिक्षण-शुल्क संकलन खाते पहुँचल; ओहि खातासँ अनेक भुगतान कएल गेल, मुदा मुकुलक मूल रकमक कोन अंश अन्ततः कोन व्यक्ति लग गेल, ई एखन निश्चित रूपसँ अलग नहि भेल। समाचारक पटकथामे ई वाक्य छोट छल, मुदा मुकुल लेल ई पहिल यथार्थवादी उत्तर छल। ओ रानीकेँ कहलक, “हमर पैसा वापस नहि आएल, मुदा ई अब कहल जा रहल अछि जे पहिल ठाम कहाँ गेल।” रानी गणितक कापी खोलि कहलीह, “नदीक पहिल मोड़ भेटल तऽ दोसर खोजल जा सकैत अछि।” मुकुल ओकर कापीमे बनल पुल दिस देखलक। “हाँ, मुदा मोड़ भेटलासँ नदीक अन्त नहि देखाइत,” ओ कहलक। रानी एहि बातकेँ अपन चित्रक नीचाँ लिखि लेलक।

विशेष न्यायालयक अगिला निर्धारित तिथिसँ दू दिन पहिने अनुराधा सेन अपन प्रतिवेदनक प्रारूप नीरजाकेँ देलीह। प्रारूपमे सम्पूर्ण खातासभक ‘सकल परिसंचरण’ आ ‘अलग पहिचान भेल प्रारम्भिक बाह्य प्राप्ति’ लेल दू पृथक खण्ड छल। पहिल खण्डमे पुरान ₹२,००० करोड़क दावा कतेक बेर एके रुपैया गनैत छल, ओकर परीक्षण चलि रहल छल। दोसरमे किछु बैंकद्वारा सत्यापित विशिष्ट प्राप्ति देखल गेल, मुदा तकर अपराधजन्य स्वरूपक अन्तिम परीक्षण शेष छल। नीरजा पुछलीह, “की अहाँ एहि दोसर खण्डकेँ समग्र हानि मानि सकैत छी?” अनुराधा कहलीह, “नहि। भुगतानक वास्तविक प्रवेश भेटब एक तथ्य; प्राप्तिक अपराधसँ सम्बन्ध, पीड़ितक विशिष्ट हानि आ व्यक्तिगत लाभ तीन अलग परिणाम। आ किछु रकम हम एखनहुँ स्वतन्त्र स्रोतक रूपमे पुष्टि नहि करि सकलहुँ।”

प्रतिवेदनक एक उदाहरण अदालत लेल राखल गेल। नवम्बर २०२५ क एक दिन एक संकलन खातासँ ‘जनदिशा’क पक्षमे बारह लाख चालीस हजार रुपैयाक बैंक-स्थानान्तरण सत्यापित छल। ओहि दिनक बाद एक आरो चारि लाख दस हजारक निर्गमन सम्बन्धित कम्पनीसँ देखाइत छल। प्रारम्भिक सारणी एहि दुनूकेँ अलग नब धन जोड़ि देखौने छल; अनुराधा स्पष्ट कएलीह जे दोसर निर्गमन पहिल प्राप्तिक अंश हो सकैत अछि, अतः स्वतन्त्र नब स्रोतक रूपमे एकरा जोड़ब उचित नहि। बारह लाख चालीस हजारक भीतर कतेक वास्तवमे कथित प्रशिक्षण-शुल्कसँ आयल, कतेक वैध सेवाक रकम छल, से स्रोतवार पहिचान बाँकी छल। एहि संख्याक उल्लेखक उद्देश्य धनशोधन सिद्ध करब नहि, एक विशिष्ट सत्यापित प्रवेशक अगिला परीक्षणक आधार स्पष्ट करब छल।

दोसर उदाहरणमे छः लाख पच्चीस हजार रुपैया एक पृथक संस्थागत प्रचार-मदसँ भुगतान भेल छल। बैंक एहि निर्गमनक तिथि आ प्राप्तकर्ता-खाताक पुष्टि करैत छल; मुदा जकर विज्ञापन देबाक दावा भेल, ओकर प्रकाशनक मूल आदेश आ वास्तवमे प्रकाशित सामग्री बीच अन्तर छल। भुगतानक स्रोत प्रशिक्षण-शुल्कक समान सञ्जालसँ सम्बन्धित हो सकैत अछि, मुदा एखन स्वतंत्र प्राप्तिक रूपमे पूर्णतः विभाजित नहि भेल। अनुराधा एहि दुनू उदाहरणक जोड़ि ‘अपराधजन्य धन’ शीर्षक बनबासँ मना कएलीह। ओ कहलीह, “दू प्रवेशक योग आसान अछि, मुदा दुनू स्वतंत्र छथि कि नहि, कोन राशि ककर भुक्तानीसँ बनल, आ

नियमबद्ध अपराधक स्रोत एतए सिद्ध होइत अछि कि नहि—एहि तीन प्रश्नक पहिने जोड़ि गम्भीर भ्रान्ति होएत।” नीरजा प्रतिवेदनक एहि शब्द सभकेँ रहने देलीह।

जाँचमे एक वास्तविक छोट नगद निकासी सेहो भेटल। एक कार्यालयक प्रमाणित विवरणमे अड़तीस हजार रुपैयाक शाखा-निकासी छल, जाहि सम्बन्धमे कर्मचारीक यात्रा-व्ययक पावती प्रस्तुत कएल गेल। ओ पावती पूर्ण सत्यापित नहि छल; तखनहुँ ई एक निकासी अपन तथ्यक सीमा धरि प्रमाणित छल। एक सहयोगी कहलक, “तखन हम कहि सकैत छी जे नगद निकासी भेला।” अनुराधा कहलीह, “हाँ, एतबा। मुदा एहि अड़तीस हजारसँ “पञ्चानबे प्रतिशत” नहि बनत, आ यात्रा-पावतीक अस्तित्वसँ नगदक अन्तिम वैधता सेहो सिद्ध नहि।” कागज पर अड़तीस हजारक पाँतिसँ बड़ पैघ खाली स्थान छल। शोधक नैतिकता ओहि खाली स्थानकेँ खाली रहय देबाक कठिन कला छल।

दलक एक अधिकारीकेँ ‘जनदिशा’क प्रचार-सामग्रीक फाइलमे स्थानीय समाचार-पोर्टलक एक आलेख भेटल। आलेखक शीर्षक छल—“कौशलसँ समृद्ध मरुधरक नौजवान।” भीतर विद्यार्थीक फोटो लगल छल, मुदा ककर अनुमति सँ फोटो लेल गेल, स्पष्ट नहि छल। शुल्क लेनिहार परियोजनाक संचालक आलेखकेँ सेवा-प्रमाण कहैत छल, जबकि पोर्टल कहैत छल जे सामग्री विज्ञापनक रूपमे भेजल गेल छल। नीरजा पुछलीह, “पत्रकारिता आ खरीदी गेल प्रचार अलग चिन्हित छल कि नहि?” संपादकक पुरान मेलमे विज्ञापन चिह्न लगा देबाक आग्रह छल, मुदा प्रकाशित पृष्ठमे ओ चिह्न खसि गेल छल। एहि त्रुटिसँ पाठक स्वतंत्र समाचारक भ्रम पाबि सकैत छल। फेरो ई त्रुटि स्वयं धनशोधनक अपराध नहि; ओहि प्रचारक भुगतान, उद्देश्य आ वास्तविक निर्देशनक अलग जाँच जरूरी छल।

नूर जतय ई पुरान आलेख पढ़ि ओ पोर्टलक सम्पादकसँ बात कएलीह। सम्पादक कहलक, “हमर दोसर कर्मचारी अपलोड कएने छल; पन्नाक आरम्भक चिह्न नहि रहल।” नूर पुछलीह, “सुधार छापल?” उत्तर भेटल, “नहि। मामला पुरान छल।” नूर कहलीह, “पुरान समाचार समाप्त होइत अछि, मुदा ओकर बनाओल विश्वास बाँचि रहैत अछि।” ओ पुरान विज्ञापनक छवि अपन लेखमे लगायबाक बदला पद्धतिक प्रश्न लिखलीह—प्रायोजक के छल, प्रकाशित सामग्रीकेँ पाठक केना बुझलक, मूल बिल कोन सेवा लेल छल, आ तकर उपयोग अनुसन्धानमे

कतेक विश्वसनीय रूपसँ हो सकैत अछि। निखिल सम्पादक पहिल बेर स्वयं शीर्षक सुझौलनि—‘प्रचारक पर्चा आ अपराधक प्रमाण एक नहि’। नूरक चेहरा पर थाकल मुस्की आयल; एहन शीर्षक हल्लासँ कम बिकैत छल, मुदा पाठककेँ ठगेबाक सम्भावना कम छल।

विशेष न्यायालयमे सुनबाईक दिन न्यायाधीश संध्या पारीक सामान्य समय पर आसन ग्रहण कएलीह। अदालतक लिपिक ताराचन्द तीन पैकेट क्रमवार रखलक—मूल बैंकक प्रमाणित अभिलेख, डिजिटल निर्यातक उत्पत्ति-विवरण आ अनुराधाक विश्लेषणात्मक सारणी। अभियोजनक अधिवक्ता अभय अवस्थी ठाढ़ भेला। “माननीय न्यायालय, पूरक सामग्री दाखिल करबाक अनुमति चाहैत छी,” ओ कहलनि। संध्या पारीक पुछलीह, “प्रस्तुत सामग्रीमे कोन अभिलेख मूल स्रोतक, कोन प्रमाणित प्रतिक, आ कोन विशेषज्ञ द्वारा तैयार व्याख्याक अछि?” अभय पहिल बेर तीन अलग सूचीक सहारा लेलनि। अदालतक प्रश्न केवल भाषा सुधारबाक नहि छल; ओहि सूचीअनुसार बचाव पक्षकेँ प्रतिवादक साधन भेटबाक छल।

ईरा सक्सेना सौमित्र बंसलक ओरसँ उठलीह। “एक निर्यातित सारणीमे पञ्चानबे प्रतिशत नगद निकासीक दावा सार्वजनिक भेल अछि,” ओ कहलीह, “एहि दावाकेँ अभियोजनक अधिकृत तर्कक रूपमे अदालत मानैत अछि कि नहि?” अभय उत्तर देलनि, “नहि। सार्वजनिक चित्रक उत्पत्ति जाँचमे अछि; संशोधित प्रतिवेदन ओ गणनाक समर्थन नहि करैत।” ईरा आग्रह कएलीह जे ए बात आदेशमे दर्ज हो। संध्या पारीक कहलीह, “अदालत स्वीकार करैत अछि जे दायर प्रतिवेदन व्यापक दावाकेँ समर्थित नहि करैत; मुदा सार्वजनिक चित्रक दुरुपयोगक प्रश्न एहि प्रकरणक गुण-दोषसँ स्वतन्त्र भी हो सकैत अछि। हम एखन ककरो जानबूझि मिथ्या सूचना प्रसारित करबाक निष्कर्ष नहि दैत छी।” अदालतक रोजनामचामे एतबा स्पष्टता एक साहसक काम छल; उपहासपूर्ण सुर्खी बनब आसान रहितै, मुदा न्यायाधीश ओ राह नहि चुनलीह।

अभय फेर कहला, “प्रतिवेदन व्यापक प्रतिशत अस्वीकार करैत अछि, तथापि विशिष्ट भुगतानक सन्दिग्ध श्रृंखला प्रस्तुत करैत अछि।” संध्या पारीक कहलीह, “एहि तर्ककेँ दोसर दावाक छाया सँ मुक्त राखू। अनुसूचित अपराधक अधिकृत स्थिति कोन अछि? बारह लाख चालीस हजारक पहिल प्राप्तिमे कथित अपराधक कोन स्रोत देखाइत अछि? चारि लाख दस

हजारक अगिला स्थानान्तरणमे कोन व्यक्तिक निर्देश अछि? भुगतान पाबनिहार संस्थाक सेवा देबाक विरुद्ध कोन विश्वासयोग्य सामग्री अछि?” अभय प्रत्येक प्रश्नक उत्तर लेल अलग पृष्ठ संख्या रखलनि। किछु उत्तर तत्काल उपलब्ध छल, किछु लेल अतिरिक्त मूल अभिलेखक विधिसम्मत संग्रह शेष छल। अदालत ई भेद स्वीकार कएलक, मुदा अपूर्णता कैँ सफल उत्तरक रूपमे लिखबाक अनुमति नहि देलक।

ईरा बंसलक हस्ताक्षरवला एक बोर्ड-निर्णयक प्रति देखौलीह। निर्णयमे ‘क्षेत्रीय जनसंपर्क सामग्री’क सामान्य स्वीकृति छल। “ई दस्तावेज भुगतानक व्यवसायिक कारण देखबैत अछि,” ओ कहलीह। अभय प्रश्न कएलनि जे विशिष्ट विज्ञापनक सामग्री, असल सेवा आ अन्तिम लाभार्थी एहि सामान्य प्रस्तावसँ सिद्ध नहि होइत। न्यायाधीश दुनूकेँ सुनलनि। “एक साधारण प्रस्ताव सम्पूर्ण भुगतानक अन्तिम वैधता नहि; मुदा प्रस्तावक अस्तित्वकेँ अर्थहीन कहि देब सेहो उचित नहि। मूल मिनट्स-बुक, बैठकीक उपस्थिति आ निर्णय लागू करनिहारक अधिकार जाँचू। आरोपीक नाम बोर्ड़मे अछि, से व्यक्तिक वास्तविक ज्ञानक परीक्षणक बदला नहि लेत।” सौमित्र पाछाँक कुर्सीमे बैसि रहल। ओकर चेहरा पर राहत आ असुविधा दूनू छल; प्रकरण एखनहुँ ओकर जीवनसँ हटने नहि छल।

विशेष न्यायाधीश इलेक्ट्रॉनिक अभिलेखक स्रोत-परीक्षणपर आबि ठहरलीह। बैंक-पत्रक प्रमाणित प्रति एक स्रोतसँ आयल छल, निर्यातित फाइल दोसर प्रक्रियासँ, आ लीक भेल छवि तेसर अज्ञात मार्गसँ। “एकर सबकेँ एके नाम “डिजिटल प्रमाण” देबासँ पर्याप्त नहि,” ओ कहलीह। अदालत लागू साक्ष्य-विधिक आवश्यकताक अनुरूप स्रोत, यन्त्र, निर्माण-विधि, अधिकृत प्रमाणपत्र आ विशेषज्ञक विवरण व्यवस्थित करबाक निर्देश देलक। ग्राह्यताक आपत्ति कखन आ कोन आधारपर तय होएत, ताहि प्रश्नपर पक्षकारकेँ सुनबाक अवसर राखल गेल। न्यायाधीश सावधान कएलीह जे प्रमाणपत्रक औपचारिक पूर्णता होएबाक बादो अभिलेखक भीतर लिखल प्रत्येक व्यापारिक दावा स्वतः सत्य सिद्ध नहि होइत। एक सजीव अदालतमे प्रमाणक प्रवेश-द्वार आ ओकर वजन दू भिन्न पड़ाव छल।

अभय निवेदन कएलनि जे किछु मूल उपकरणक जाँच जारी अछि, अतः समस्त सामग्रीक अन्तिम मूल्यांकन एहि तिथिपर नहि हो। ईरा कहलीह जे जाँचक ई स्थिति बचाव पक्षक

अभिलेख देखबाक विधिसम्मत अधिकारक स्थानापन्न नहि बनय। न्यायाधीश आदेशमे लिखबौलीह जे संवेदनशील व्यक्तिगत जानकारीक समुचित संरक्षणक संग आवश्यक प्रकटन आ न्यायसंगत अवसरक विषय पृथक निपटाओल जाए। “विद्यार्थीक गोपनीयता बचबाबू,” ओ कहलीह, “मुदा बचाव पक्षकेँ जकर आधारपर आरोप जाँचबाक अछि, तकर वैधानिक रास्ता बाधित नहि करू।” अदालत छात्रसभक मूल नामवाली पाँच सय क्रमाङ्कक सूची खुला न्यायालयमे पढ़बाक आग्रह अस्वीकार कएलक। अज्ञात व्यक्ति पर दोषक छाया फैलायब सत्यक खोजक अनिवार्य शर्त नहि छल।

बारह बजे अवकाशमे ताराचन्द एक अधिवक्तासँ कहलनि, “पहिने लोक कागज असली अछि कि नहि पूछैत छल, आब फाइलक हैश आ निर्यातक इतिहास पूछैत अछि।” अधिवक्ता हँसि कहलक, “कागज सेहो झूठ बजि सकैत छल।” ताराचन्द पुरान मुहर-पञ्जी उठेलक। “हमर बाबू नीलकान्त साहक समयमे तहसील कार्यालयमे काम करैत छलाह,” ओ कहलक, “हुनका कहल जाइत छल जे कागजक हर मोहर देखू। मुदा मोहर देखिकय लेखकक मन नहि देखाइत।” ओहि क्षण एक प्रशिक्षु लिपिक पूछलक, “तँ कागज देखबाक जरूरत किएक?” ताराचन्द उत्तर देलक, “किएक तँ बिना पहिल सीढ़ी चढ़ने दोसर पर नहि पहुँचल जा सकैत अछि। मुदा पहिल सीढ़ीए छत नहि।” अदालतक रोजक काज मे एक इतिहास चुपचाप घर बना रहल छल।

बाहर मुकुलकेँ एक टीवी प्रतिनिधि भेटल। “अहाँ कहि सकैत छी जे पञ्चानबे प्रतिशत धन नगद निकासीक बात गलत भऽ गेल?” प्रतिनिधि पुछलक। मुकुल कहलक, “हम जतेक बुझैत छी, ओ दावा प्रमाणित नहि। मुदा हमर सात हजार पाँच सय एखन घुरल नहि।” प्रतिनिधि फेर कैमरा नजदीक कएलक। “तखन अहाँ ककरा दोषी मानैत छी?” मुकुल थाकल स्वरमे कहलक, “जकरा विरुद्ध जतेक प्रमाण होए, ओकरा कानून देखत। हमर शिकायतक निबटारा हम चाहैत छी।” प्रतिनिधिक सहायक कहलक जे एहि उत्तरमे कार्यक्रमक ‘तेज हिस्सा’ नहि बनत। मुकुल घर जाएवाली बस पकड़लक। ओकरा पहिल बेर बुझायल जे कम रोचक उत्तर दऽ कऽ सेहो मनुष्य अपना सम्मानक रेखा खींचि सकैत अछि।

अवकाशक बाद अभियोजन एक विद्यालयक प्रधानाध्यापिकाक सत्यापित लिखित उत्तर रखलक। हुनकर वार्षिक पञ्जीमे ‘जनदिशा’ द्वारा दावा कएल ‘युवा कौशल प्रदर्शनी’क कोनो आयोजन दर्ज नहि छल; परन्तु ओ कहने छलीह जे विद्यालय परिसरक बाहरी मैदानमे अन्य संस्थाक कोनो निजी कार्यक्रम भेल हो तँ नगरपालिका अथवा मैदान-प्रबन्धकक अभिलेख अलग देखबाक पड़त। न्यायाधीश पुछलीह, “तखन विद्यालयमे कार्यक्रम भेलाक दावा वर्तमान दस्तावेजसँ असमर्थित अछि, मुदा कोनो कार्यक्रम कतहु नहि भेल, एहन व्यापक निष्कर्ष एखन सम्भव नहि?” अभय ‘हाँ’ कहलनि। ईरा सेहो सहमत भेलीह। ई सहमति क्षणिक छल, मुदा मूल्यवान छल। पक्षकार एकहि तथ्यपर सहमत होइत समय न्यायालयक दीवाल ढहि नहि जाइत; उल्टे विवादक वास्तविक सीमा स्पष्ट होइत अछि।

दोसरा पैकेटमे तिथि-विषयक एक विचित्रता छल। एक कथित ‘प्रशिक्षण पूरा’ प्रमाणपत्रक निर्मितिक समय ओहि कार्यक्रमक निर्धारित तिथिसँ पहिने पड़ैत छल। अभियोजन एकरा असत्यक संकेत मानैत छल; प्रतिरक्षा कहैत छल जे पहिने सँ बनल प्रारूपमे बादमे नाम भरल गेल हो सकैत अछि। अपर्णा तकनीकी विशेषज्ञक प्रारम्भिक टिप्पणी देलीह—फाइलक मेटाडेटा एकाकी मनुष्यक कपटक अन्तिम प्रमाण नहि; प्रारूप, समय-अंचल, यन्त्रक घड़ी आ निर्यात-विधि जाँचब आवश्यक। न्यायाधीश पूछलनि, “की ई मूल फाइल अछि?” उत्तर छल —“नहि, अधिकृत प्रति।” अदालत मूल स्रोतक विधिसम्मत जाँचक निर्देश देलक, मुदा संवादक दौरान हॉलमे बैसल लोकसभक चेहरा पर पहिल बेर वास्तविक कठोरता देखायल। एहि विशिष्ट विरोधाभासक ककरो सरल उत्तर नहि छल।

नीरजा राठौड़ अपन कार्यालय लौटि एक कनिष्ठ अधिकारीकेँ कहलनि, “समाचारक असत्य सुधारलासँ जाँच बन्द नहि भेल। उल्टे एक निश्चित भुगतानपर अधिक श्रम लागल अछि।” अधिकारी पुछलक, “एहि सीमित प्रमाणक बदला अपन सार्वजनिक प्रभाव कम पड़त।” नीरजा उत्तर देलीह, “हमर काम प्रभाव पैदा करब नहि। जे प्रमाण टिकत ओ न्यायालयक प्रश्न सहि सकत, शेष गमि जाएत। जनता केँ जे बताओल जा सकैत अछि ओ ठीक बताउ; जे अनुसन्धान गोपनीय राखब आवश्यक अछि ओकरा अनुचित प्रसारसँ बचाउ।” ओहि समय हुनका एक पत्र भेटल—किछु विद्यार्थीक निजी विवरण लीक होयबाक शिकायत।

ओ लिफाफा खोलिकय अलग पञ्जीमे दर्ज कएलीह। धनक अपराधक प्रश्न आ जानकारीक अनधिकृत प्रकटनक प्रश्न आपसमें जुड़ि सकैत छल, मुदा एक दोसराक प्रमाणक विकल्प नहि।

रिद्धि विश्नोई लीक भेल चित्रक कारण छात्रावासमे उठल नब डरक सूची तैयार करैत छलीह। हिम्मत कहलनि जे पाँच विद्यार्थी अपन परिचय-पत्र बदलाबय चाहैत छथि, किएक तँ हुनका फोटो एक अनधिकृत समूहमे घूमि रहल अछि। रिद्धि विश्वविद्यालयक अधिकारीसँ विद्यार्थीक शिकायत दर्ज करबाक, संबंधित सामग्री सुरक्षित रखबाक आ अनावश्यक सार्वजनिक नामोच्चारण टारबाक उपायपर चर्चा कएलीह। ओ ई सेहो स्पष्ट कएलीह जे कोनो विद्यार्थीक फोन जबर्दस्ती खंगालब विश्वविद्यालयक सर्वशक्तिमान अधिकार नहि। पायल छात्रपरामर्श-कक्षमे बैसल एक नव विद्यार्थीकेँ कहलीह, “तोहर डर वास्तविक अछि, मुदा अफवाहक उत्तरमे दोसर विद्यार्थीपर आरोप मत लगाबह।” बच्चा पुछलक, “की ई सभ कखनो खत्म होएत?” पायल कहलीह, “किछु जाँच समाप्त होएत, किछु स्मृति देर धरि रहत; हम सभ तोहर पढ़ाइ आ विश्राम बीचक रास्ता बचा सकैत छी।”

ज़रीनाकेँ अखबारमे नूर जहाँक सावधान समाचार देखाइ देलक। शीर्षकमे हुनकर संस्थाक नाम बिना प्रमाण अपराधसँ नहि जोड़ल गेल छल, आ रिपोर्ट स्पष्ट करैत छल जे सामाजिक सेवा करनिहार वास्तविक संगठनसभ आ जाँचाधीन प्रचार-समूहसभक अस्तित्व मात्र एके श्रेणी नहि। खबरक अगिला दिन एक दाता फोन कए कहलनि जे सहयोग पुनः शुरू करताह, मुदा दोसर दाता चुप रहलाह। ज़रीना सुनीतासँ कहलीह, “सुधारक खबर एक पृष्ठ अछि, पहिल अफवाह दस हजार फोनमे।” सुनीता उत्तर देलीह, “ई क्षतिक हिसाब कियो देत कि नहि, एखन नहि जानैत छी। मुदा हम रोजक सेवा बन्द नहि करब।” ओहि दिन केन्द्रमे एक युवती मातृत्व-सुविधाक आवेदन भरबाक आयली। ओकरा न ‘पञ्चानबे प्रतिशत’ मालूम छल, न विशेष न्यायालयक नाम; ओकरा फार्ममे मायकेँ जीवित लिखबाक कोष्ठक चाही छल। ज़रीना कलम उठौलीह।

नूरक लेख प्रकाशित भेला बाद अनाम नम्बर सँ संदेश आयल—“अहाँ अपराधीकेँ बचा रहल छी।” दोसर नम्बर लिखलक—“अहाँ सरकारी जाँचकेँ बदनाम करैत छी।” दुनू विपरीत

आरोप एके दिन पहुँचल। नूर अपन सम्पादक निखिलकेँ कहलीह, “हमर लेख तऽ केवल एतबा कहलक जे ९५ प्रतिशत नगद निकासी क पुष्टि नहि, आ कुछ विशिष्ट मार्गक अनुसन्धान जारी अछि।” निखिल उत्तर देलनि, “कतेको पाठक चाहैत अछि जे पत्रकार पहिनहिसँ अंतिम पक्ष चुनि ले।” नूर टेबुलसँ पुरान विज्ञापनक प्रति उठा ली। “मुदा हम सभ प्रचारक ठेकेदार नहि,” ओ कहलीह, “आ जँ हमर पुरान लेखमे भूल भेटत तँ ओहो सुधारेब।” ओ अपन अगिला पृष्ठ पर एक खुलल संशोधन-खण्ड शुरू कएलीह—कोन बात पहिने लिखल गेल, कोन दस्तावेज नव भेटल, आ कोन प्रश्न अभीयो अनुत्तरित अछि।

सौमित्र बंसलक घरमे काव्या बेटीकेँ पढ़ा रहल छलीह। आठ बरखक बच्ची पुछलक, “पापा अखबारमे छथि तँ स्कूलमे सभ पुछैत किएक अछि?” काव्या उत्तर देलीह, “किएक तँ लोक सभ जखन डरल रहैत अछि तँ छोट वाक्य जल्दी कहैत अछि। मुदा पापा पर आरोप अछि; अदालत अभी जाँच रहल अछि।” बच्ची पूछलक, “जँ पापा गलत काम कएने होथि तँ?” काव्या रुकि गेलीह। ओ कहि सकैत छलीह—‘कखनो नहि’—मुदा हुनका अपन पति हस्ताक्षरक प्रत्येक पन्नाक अर्थ नहि बतौने छलाह। ओ कहलनि, “तखन जे प्रमाण होएत, कानून ओकरा देखत। आ अहाँ पापा सँ प्रेम कऽ सकैत छी, सत्यक प्रश्नो पूछ सकैत छी।” बच्ची कापी बन्द कएलक। काव्या अनुभूति कएलीह जे परिवारक रक्षा झूठ्ठा सर्वज्ञता सँ नहि, असहज सत्यक जगह बचाएबासँ होइत अछि।

सुदर्शन सहगलकेँ बेटाक पत्र भेटल। विक्रान्त लिखने छल जे चारि परामर्श-प्रकल्पक मूल स्वीकृति-विवरण अधिकृत अधिवक्ताकेँ उपलब्ध कराओल जा रहल अछि; एक प्रकल्पक बीस दिनक काजक प्रमाण एखन नहि भेटल। पिता पत्र दुबारा पढ़लनि। पहिल बेर बेटा अपन लेखामे ‘नहि भेटल’ शब्द स्वीकार कएने छल। ओ फोन कए पुछलनि, “जकरा नहि भेटल कहैत छह, तकर खोज जारी राखिह। आ जँ काज नहि भेल होए तऽ सही बात कहिह।” विक्रान्त एहि बेर प्रतिवाद नहि कएलक। पिता कहला, “हमर पुरान गोदाममे एक बेर खाली पेटी पर भरल पेटीक नम्बर लागि गेल छल। हम ओकरा खोलेनहुँ, मुदा खाली निकसल।” विक्रान्त मुस्कराएल नहि। “खाली पेटी देखब कठिन नहि छल, बाबूजी,” ओ कहलक, “जकरा भीतर खोलबाक अनुमति नहि भेटैत अछि ओकर उत्तर कठिन अछि।”

फ़रीदा ओहि संवादक समय अनुपस्थित छलीह। ओ अपन अधिकृत भण्डारण-कक्षमे पुरान पत्रव्यवहारक सूची तैयार करैत छलीह, जाहिसँ प्रमाणित अनुरोध भेटला पर उचित व्यक्ति स्रोत देखौथ। हुनका एक आन्तरिक मेल भेटल, जाहिमे ‘कार्य-स्वीकृति प्रेषित’ लिखल छल, मुदा संलग्नक नाम खुलि नहि रहल छल। ओ तकनीकी विभागसँ अधिकृत पुनर्प्राप्तिक निवेदन कएलीह, मुदा मनहि मन कोनो निष्कर्ष नहि बनौलीह। हुनकर भाइ फोनपर कहलक, “दीदी, एहि झमेलासँ नौकरी जाएत?” फ़रीदा उत्तर देलीह, “साँच राखला सँ नौकरीक जोखिम होएत, झूठ राखला सँ अपन मुँह देखबाक जोखिम।” भाइ एहन उत्तरक लेल तैयार नहि छल। ओ कहलक, “तखन सावधानी सँ काज करू।” फ़रीदा कहलीह, “ठीक ओही करैत छी।”

दरभंगामे शिवनारायण झा शामक प्रकाशमे एक पुरान अदालतक पर्ची पढ़ि रहल छलाह। बेटी रेवती फोन करैत कहलीह जे विशेष न्यायालयमे लीक भेल प्रतिशतक आधार न भेटल, मुदा विशिष्ट लेनदेनक परीक्षा कठोर भऽ गेल अछि। शिवनारायण कहला, “सन् २००० मे एक मृत व्यक्तिक नाम बहिखातामे देखिकय सभ लोक पहिले कहने छल जे मालिकेँ सारा अपराध मालूम। जखन लिखावट जाँचल गेल तँ बात अनेक भागमे बँटल। तखन सेहो अपराधक किछु आरोप बचल रहि गेल छल।” रेवती कहलीह, “एक गलत अनुमान टूटलासँ सब अभियोग टूटि नहि जाइत, आ एक सही प्रविष्टिसँ सब अभियोग सिद्ध नहि होइत।” पिता चुप रहला। टेलिफोनक एहि कात एक पिता अपन बेटीकेँ पच्चीस बरख पहिले जतेक सिखौने छलाह, तकर परिपक्व उत्तर सुनि रहल छलाह।

रेवतीकेँ उच्च न्यायालयक अर्जुन-रिटक अगिला अनुपालन-प्रतिवेदन सेहो भेटल। बैंक गैरविवादित छात्रवृत्तिक उपयोग पर व्यापक रोक फेर नहि लगाने छल; चारि हजार दू सयक विशिष्ट स्थिति सम्बन्धित प्रक्रियामे लिखित रूपसँ स्पष्ट कएल जा रहल छल। मुदा विद्यालयसँ एक संदेश आयल जे अर्जुनक नामक पुरान स्क्रीनशॉट फेर घूमि रहल अछि, जाहिसँ किछु शिक्षकक व्यवहार बदलि गेल अछि। रेवती शालिनी सोलंकीकेँ कहलीह, “न्यायालय आदेशक सीमामे रकमक प्रश्न स्पष्ट कऽ सकैत अछि, मुदा सड़कक अफवाह रातोरात नहि हटत।” शालिनी उत्तर देलीह, “तखन कानूनी उपाय आ सामाजिक सुधार दूनू अपन-अपन काम करय

पड़त। हम सामान्य प्रतिष्ठा-विवादकेँ एहि विशिष्ट रिटमे बिना आधार नहि जोड़ब।” रेवती सहमत भेलीह। प्रत्येक घावक लेल एकहि न्यायालयक फाइल पर्याप्त नहि छल।

शालिनी एक विधि-छात्रक बनाओल नोट रेवतीकेँ देखौलीह। नोटमे लिखल छल—“विशेष न्यायालयक पूरक आदेशसँ उच्च न्यायालयक अन्तरिम आदेश स्वतः अन्तिम निर्णय भऽ गेल।” रेवती लाल कलम उठाकय पूरा वाक्य काटलीह। “दू मंचक अलग विषयक कारण दू अलग न्यायिक परिणाम,” ओ समझौलीह। “विशेष न्यायालय अपराधजन्य धनक विशिष्ट आरोप आ प्रमाणक दिशा देखैत अछि; अर्जुनक रिट खाताक रोकक वैधानिक सीमा आ उपचारक प्रश्न देखैत अछि। कोनो एकटा आदेश दोसरक सम्पूर्ण तथ्य-सिद्धि नहि।” विद्यार्थी पुछलक, “तखन व्यापक मार्गदर्शन कोन मंचसँ?” रेवती कहलीह, “यथार्थ विवाद, विधिसम्मत याचिका अथवा अपील, अधिकारक्षेत्र आ सुनबाइक पात्र प्रश्न जँ बनत, तखन उच्चतर न्यायिक परीक्षण सम्भव अछि। मात्र अखबारक शीर्षकसँ सर्वोच्च न्यायालयमे प्रश्न नहि पहुँचि जाइत।”

दिसम्बरक पहिल सप्ताहमे विशेष न्यायाधीश संध्या पारीक पूरक दस्तावेजक सीमित आदेश तैयार कएलीह। हुनकर आदेशमे दर्ज भेल जे अनधिकृत सार्वजनिक ‘९५ प्रतिशत नगद निकासी’ दावा प्रस्तुत अधिकृत वित्तीय सामग्रीसँ समर्थित नहि अछि; ओहि दावाक प्रसारक स्रोतक विषयमे निष्पक्ष पद्धतिसँ अलग जाँच हो सकैत अछि। अभियोजनकेँ विशिष्ट रकमक स्रोत-सम्बन्ध, मूल बैंकदस्तावेज, संदिग्ध सेवा-बिलक सत्यापन आ व्यक्तिवार भूमिका स्पष्ट करबाक अवसर देल गेल। बचाव पक्षकेँ यथायोग्य अभिलेखक अवलोकन आ आपत्ति प्रस्तुत करबाक अवसर राखल गेल। कोनो व्यापक निरपराधिता घोषित नहि भेल, कोनो समग्र दोषसिद्धि नहि भेल। अदालत लिखलक—“एहि अवस्थामे जे तथ्य निश्चित अछि, ओकरा निश्चित; जे विवादित अछि, ओकरा विवादित; आ जे अज्ञात अछि, ओकरा अज्ञात रूपमे प्रस्तुत कएल जाए।”

आदेश सुनिते अभय अवस्थी अपना फाइलक पहिल पृष्ठसँ लाल चिह्न हटा देलनि। ई पराजय नहि छल; अभियोजनक काज आब अधिक संकीर्ण आ श्रमसाध्य भऽ गेल छल। ईरा सक्सेना अपन मुवक्किलकेँ समझौलीह जे व्यापक आरोपक एक अनुप्रमाणित हिस्सा हटबाक

अर्थ विशिष्ट प्रश्नक उत्तर देबाक जिम्मेवारी समाप्त होएब नहि। सौमित्र धीमे स्वरमे पुछलक, “यदि मैं सभ कागज देब तँ छुटि जाएब?” ईरा कहलीह, “कागजक सत्य जाँचल जाएत; ओहि बाद लागू विधि अनुसार न्यायिक परिणाम होएत। पहिने सँ आश्वासन देब मुमकिन नहि।” सौमित्र अपना बेटीक चित्र जेबमे छूबि लेलनि। अदालतमे सत्यक मूल्य तत्काल मुक्ति नहि, अनिश्चितताक बीच अनुशासित उत्तरदायित्व छल।

संध्या पारीकक कक्षसँ बाहर रफीक चायवाला फेर फोन देखलक। एखन एक नब तस्वीर चलि रहल छल—“पञ्चानबे प्रतिशतक दावापर प्रश्न।” कोनो समूह लिखने छल ‘पूरा मामला झूठ’; दोसर लिखने छल ‘अपराध साबित’। रफीक ताराचन्दकेँ कहलक, “साहेब, फेर दू तरहक बात!” ताराचन्द चाय लेलनि आ उत्तर देलनि, “न्यायाधीश जे नहि कहलीह, तकरा लोक सभ अपन-अपन इच्छा सँ जोड़ि दैत अछि।” रफीक ए बेर तस्वीर आगाँ नहि पठौलक। ओ पूरा आदेश पढ़बाक लेल दोसर दिनक समाचारपत्र मँगाएबाक विचार कएलक। ई बहुत छोट परिवर्तन छल, मुदा कोनो बड़ अभियानक उद्घोषणासँ अलग, वास्तविक निर्णय छल—एक आदमी अपन अँगूठाक दबाव रोकि लेलक।

मुकुल साँझक बससँ छात्रावास घुरल तँ रानी ओकरा कागजक पुलक नब चित्र देखौलक। पुरान चित्रमे नदी एक रेखा छल; नब चित्रमे ओ तीन शाखामे बँटल छल। “ई किएक?” मुकुल पुछलक। रानी कहलीह, “एकहि पानिक तीन राह भऽ सकैत अछि, मुदा पानि बाढ़ी तऽ घर अलग-अलग डूबत।” मुकुल अपन पावतीक प्रति नब लिफाफामे रखलक। “हमर सात हजार पाँच सयक राह एखन नहि पूरा भेटल,” ओ कहलक। “तँ खोज बन्द करब?” रानी पुछलक। “नहि। मुदा जकर प्रमाण नहि, ओहि बारेमे बड़-बड़ नहि बाजब।” रानी पुलक नीचाँ एक छोट दीप बनौलक। ओकर चित्रमे न्यायालय नहि छल; मात्र घर धरि पहुँचबाक आकांक्षा छल।

रेवती जोधपुरक स्टेशनपर रात्रिक गाड़ी पकडबाक पूर्व एक नोटबुक खोललीह। ऊपर लिखलीह—“असत्यक मूल्य।” नीचाँ चारि पाँति बनली—एक अफवाहसँ रोकल दान; एक गलत नामसँ भयभीत छात्र; एक असमर्थित प्रतिशतसँ विचलित सार्वजनिक विश्वास; एक वास्तविक विशिष्ट भुगतान जकर परीक्षा अफवाहक कोलाहलमे दबि सकैत छल। ओ पन्नाक दोसर कात लिखलीह जे न्यायिक न्याय केवल निर्दोषपर लगल अनावश्यक कलंक हटेबाक

नाम नहि; पीड़ितक वास्तविक हानि जाँचबाक कठोरता सेहो चाही। एहन उत्तर कठिन छल, किएक तँ ककरो सम्पूर्ण विजयक कथा एखन नहि बनल। रेवती अपन पिता द्वारा कहल पहिल पाँच प्रश्न फेर पढ़लीह। नाम, तथ्य, स्रोत, अधिकार आ असर—एहि पाँचूक बीच असत्य प्रवेश कए सकैत छल; सत्य कैं प्रत्येक दुआरिपर नब प्रमाण चाही छल।

ट्रेन चलबाक पहिने शालिनीक सन्देश आयल। बैंकक अनुपालनक शेष प्रश्नपर उच्च न्यायालयमे अगिला तिथि निर्धारित भेल छल, आ विधिक उपायसभक परीक्षणक बाद किछु पक्षकार व्यापक संवैधानिक प्रश्नक उपयुक्त न्यायिक मार्गपर विचार करैत छलाह। शालिनी लिखने छलीह—“एखन सर्वोच्च न्यायालयमे कोनो स्वतः अपील नहि; सक्षम प्रार्थना, वास्तविक विवाद आ प्रक्रियागत शर्तक परीक्षण आवश्यक।” रेवती ओहि सावधानीक उत्तरमे केवल ‘ठीक’ लिखलीह। ट्रेन अन्हारमे चलि गेल। दूर खेतमे किछु किसान देरिसँ पानि दऽ रहल छलाह। कोनो डिजिटल सारणी ओ दृश्यकैं अपराधक हिस्सा नहि बना सकैत छल; मुदा प्रमाणित अपराधक एक वास्तविक शृंखला भेटला पर कानून ओकरा नाम, पैसा आ शक्ति केर पाछाँ जएबाक दायित्वसँ मुक्त सेहो नहि भऽ सकैत छल। सन् २०२७ एखन शुरू नहि भेल छल। अगिला बरखक न्यायालयक दुआरि दूर छल, मुदा ओहि दुआरिक पहिल प्रश्न आब स्पष्ट भऽ रहल छल—राज्य जाँच करत, नागरिक जियैत रहत, आ दुनूक बीच सत्यक कसौटी के तय करत?

अध्याय ३१ — सर्वोच्च न्यायालयक समक्ष

दिल्ली, जोधपुर, दरभंगा, लुधियाना, मुम्बई आ अण्डमान; जनवरी–फरवरी २०२७

जनवरी २०२७ क पहिल सोमदिन जोधपुरक बिहानमे एहन ठण्ढ छल जे स्टेशनपर चायवाला रफीक कपकेँ दूनू हाथसँ थामि रहल छल। पिछला वर्षक अन्तिम अदालतक आदेशक चर्चा अखबारसँ उतरि लोकक फोनमे टिकल छल, मुदा अर्जुन मीणाक छात्रावासक घड़ी अखबारक गति पर नहि चलैत छल। ओकर परीक्षा शुरू होएवाली छल। ओ बैंकक नव विवरण, छात्रवृत्तिक प्राप्ति-पत्र आ चारि हजार दू सय रुपैयाक विवादित प्रविष्टिक अलग पर्ची एक लिफाफामे राखि शालिनी सोलंकीक कार्यालय पहुँचल। “माय कहैत छथि जे ई रकम छोट अछि, मुदा कागजक संख्या एतेक किएक?” अर्जुन पुछलक। शालिनी लिफाफा खोलैत उत्तर देलीह, “रकमक आकार आ ओकरा रोकबाक शक्तिक आकार एक चीज नहि। ताहि शक्ति ककरा, कोन कारणसँ, कतेक काल लेल भेटल, ई बहुत पैघ प्रश्न अछि।” बाहर शहर सामान्य व्यापारमे लगल छल; भीतर एक विद्यार्थी अपन साधारण दिनचर्याक लेल लिखित स्पष्टता खोजैत छल।

उच्च न्यायालयक अन्तरिम आदेशक अनुपालनमे बैंक अपन शाखा-प्रणाली सुधारने छल। गैरविवादित छात्रवृत्तिक निकासी चलि रहल छल, तथापि चारि हजार दू सय रुपैया सुरक्षा-समीक्षाक चिह्नसहित यथावत सुरक्षित छल। राज्यक नब शपथपत्रमे एतबा स्वीकार कएल गेल जे प्रथम जाँच-पत्रमे विशिष्ट प्रविष्टिक चर्चा छल आ आरम्भिक प्रणाली पूरा खातेपर रोक लगा देने छल; बाकी रकमपर बादमे खुलल सुविधा एहि अन्तरक सुधार छल। मुदा राज्यकेँ चिन्ता छल जे उच्च न्यायालयक अन्तरिम आदेशक किछु वाक्य दूरक शाखासभ व्यापक नियम बुझिकय जाँचक आवश्यक संरक्षण कमजोर नहि कऽ देथि। एहि व्यावहारिक विवादपर राज्यक विधि-विभाग उच्चतर न्यायिक परीक्षणक विकल्प देखलक। बैंक सेहो अपन लिखित

स्थिति अलग तैयार कएलक। दुनू संस्थाक हित एक नहि छल, यद्यपि अखबार हुनका एके ‘सरकार’ कहि दैत छल।

भानु प्रताप माथुर फाइलक ऊपर लिखलनि—“अनुच्छेद १३६ अन्तर्गत विशेष अनुमति याचिकाक सम्भावना; आदेश अन्तरिम; राहत सीमित।” सहयोगी अधिकारी उत्साहसँ कहलक, “तखन हम सीधा सर्वोच्च न्यायालय जाइत छी, आ पिछला आदेश रद्द।” माथुर कलम रोकलनि। “सीधा जाइत छी, ई याचिका देबाक बात अछि। सुनबाइ आ अनुमति भेटत कि नहि, से न्यायालयक विवेकाधीन प्रश्न। उच्च न्यायालयक प्रत्येक अन्तरिम शब्दसँ असहमति सर्वोच्च न्यायालयमे नियमित अपील नहि बनि जाइत।” ओ आदेशक तीन पृष्ठ अलग कएलनि—एकमे वास्तविक रोक, दोसरमे बैंकक अनुपालन, तेसरमे समीक्षाक माँग। “हमरा ठीक-ठीक बताबय पड़त जे कोन विधिक प्रश्न उठबैत छी। छात्रक पढ़ाइ रोकिनाइ सरकारक घोषित लक्ष्य नहि, आ सन्दिग्ध चारि हजार दू सय तत्काल मुक्त भेल सेहो नहि अछि। एहन स्थितिमे विवाद वास्तविक अछि कि केवल भाषा-संबंधी, न्यायालय ईहो पूछि सकैत अछि।”

रेवती झा दरभंगामे पिता शिवनारायणक संग माघक पहिल भोर बैसल छलीह। बरामदाक खम्भामे जाड़क घाम लागल छल; टेबुलपर सन् २००० क पुरान बहीखाता आ २०२६ क मुद्रित बैंक-विवरण अलग-अलग रखल छल। शिवनारायण पुरान पन्ना उलटैत पुछलनि, “एहि बेर दिल्ली जाएब?” रेवती उत्तर देलीह, “राज्य यदि विशेष अनुमति याचिका विधिसम्मत रूपेँ दर्ता करत तँ जवाब देब पड़ि सकैत अछि। मुदा दिल्लीमे जाएबासँ मामला स्वतः समूचा देशक अपराध-मुकदमा नहि बनत।” पिता हँसलाह। “सत्ताइस वर्षमे अहाँ सभक कागज नीक भऽ गेल, शब्द आओर तेज भऽ गेल। मुदा पहिल प्रश्न बदलल?” बेटी कहलनि, “नहि। ककर आदेश, कोन तथ्य, कोन व्यक्ति—आ आब प्रश्न ई सेहो जे डिजिटल आदेशक असर कतेक लोकक दिनपर पड़ल।”

शिवनारायणक पहिल अदालतमे दरभंगाक नीलकान्त साहक बहीमे मृत व्यक्तिक नाम भेटल छल। ओहि नामक कारण परिवारक कोठरी, बच्चाक विद्यालय आ व्यापारीक विश्वसनीयता तीनू एकसाथ संकटमे पड़ल छल। चारि वर्षक विचारणक अन्तमे किछु विशिष्ट

हिसाबक दोष प्रमाणित भेल, मुदा सभ आरोप नहि। शिवनारायण बेटीकेँ ओहि आदेशक फटकल प्रति देखौलनि। “एहि पन्नामे हम एक वाक्य काटने छलहुँ—“सारा मामला बनावटी अछि।” ओ सही नहि छल। किछु लिखावट वास्तविक छल, किछु गलत आदमीक नामपर चढ़ल। बचाव करब झूठ बचाएब नहि।” रेवती पुरान स्याहीक दाग छुबलीह। आगामी सुनबाईमे राज्यक आवश्यक जाँचक पक्षकेँ उचित शब्द देब हुनकर अपन पेशागत शपथक विरुद्ध नहि, बल्कि ओही शपथक अंश छल।

दिल्लीमे सर्वोच्च न्यायालयक रजिस्ट्रीमे राज्यक विशेष अनुमति याचिका पहुँचला पर पहिल दिन कोनो नाटकीय घण्टी नहि बाजल। कागजमे उच्च न्यायालयक आदेशक प्रमाणित प्रति, समयसीमा-संबंधी विवरण, पक्षकारक सही पता आ आवश्यक संलग्नक देखल गेल। एक तकनीकी आपत्ति रहल—बैंकक अनुपालनक ताजा पत्रक अनुक्रमणिका आ याचिकाक अभिलेखमे एक पृष्ठक क्रम भिन्न छल। माथुरक दल त्रुटि सुधारलक। बादमे मामला सूचीबद्ध भेल। समाचारक तेज शीर्षक एहि नीरस प्रक्रियाकेँ ‘सर्वोच्च न्यायालयमे धनशोधन प्रकरणक अन्तिम सुनबाई’ कहि देलक; नूर जतय अपन प्रकाशनमे साफ लिखलीह जे ई विशेष अनुमति चरणक सीमित बैंक-रोक विवाद अछि, मूल धनशोधन विचारण नहि। कागजक उपयुक्त क्रम सेहो न्यायिक सत्यक पहिल संरचना बनैत अछि, ई बातक मूल्य कम्प्यूटरक चमकमे कम देखाइत अछि।

अर्जुनक घरमे सूचना पहुँचल तँ हुनकर माय पहिने घबराएलीह। “तोरा दिल्लीक अदालत किएक बुलौलक? तोहर नाम फेर अखबारमे जाएत?” अर्जुन कहलनि जे पक्षकारकेँ विधिसम्मत सूचना देल गेल अछि; व्यक्तिगत उपस्थितिक आवश्यकता वकीलक परामर्श आ न्यायालयक निर्देशपर निर्भर करैत अछि। ओ स्वयं उपस्थित भऽ अपन जीवनक प्रश्न बुझय चाहैत छल, मुदा परीक्षाक दू पेपर छोड़ि नहि सकैत छल। शालिनी ओकरा लिखित सहमति, निजता-संबंधी वरीयता आ अध्ययनक समयक बीच संतुलन सुझौलीह। रेवती फोनपर कहलीह, “सर्वोच्च न्यायालयक नाम सुनिते अहाँक जीवन नब तमाशा नहि बनबाक चाही। अहाँक निजी बैंक-संख्या, विद्यालयक प्रमाणपत्र आ आवासक पता केवल आवश्यक न्यायिक

उपयोग धरि सीमित रहत।” विद्यार्थी पहिल बेर बुझलक जे अपन नाम बचबाबय लेल सेहो कोनो स्पष्ट निर्देश कहबाक पड़ैत अछि।

लुधियानामे सुनीता पासवान अपन श्रम-सहायता कक्षमे एक अखबार टाँगलनि, जाहिमे अदालतक विषयक नाम छोट अक्षरमे लिखल छल। सहकर्मी कहलक, “दिल्ली फैसला करत तँ शान्ति देवीक दवाईक खाता सेहो स्वतः खुलि जाएत?” सुनीता उत्तर देलीह, “शान्तिक मामला अलग राज्यक अलग आदेशपर चलैत अछि। ओकर गैरविवादित रकमक पहुँच पहिनहि सुधरल अछि; बाकी जाँच अपन मंचमे होएत। न्यायालय जँ कोनो व्याख्याक मार्ग देखाए, तकर लागू होयबाक विधि सेहो देखल जाएत।” ओ २००९ क वेतन-पञ्जी निकालि मजदूरसभक अदत्त समयक हिसाब देखौलीह। एक वृद्ध श्रमिक कहलक जे कागज पर नाम नहि रहला सँ ओकर ओवरटाइम लुप्त भेल छल। सुनीता समझलीह जे डिजिटल बैंकक न्याय आ पुरान वेतनक न्याय अलग लड़ाइ अछि, मुदा दुनूमे सामान्य प्रश्न अछि—संस्था अपन हिसाबक त्रुटि मानबाक लेल तैयार अछि कि नहि।

मरुधर छात्रावासमे रिद्धि विश्नोई पाँच सय छात्र-संबद्ध खाताक सूची पर अन्तिम अनुसंधान टिप्पणी लिखि रही छलीह। क्रमाङ्क, खाताक अधूरा संकेत आ प्रचारक कथाक बीच एक-दोसर नाम मिलैत रहल छल; ताहि कारण ई सूची स्वयं अपराधीसभक पञ्जी नहि बनि सकैत छल। ओ अध्यापिका फिरदौस कौलसँ कहलनि जे किछु पाठक हुनकर शोधकेँ न्यायालयक प्रकरणमे निर्णायक प्रमाण मानि रहल छथि। फिरदौस उत्तर देलीह, “शोधक प्रश्न, सर्वेक्षणक अनुमति, विधि-अनुसन्धानक अधिकार आ न्यायालयमे ग्राह्य इलेक्ट्रॉनिक सामग्री चारि भिन्न काम अछि। अहाँक सूची सामाजिक जोखिम देखाबि सकैत अछि; ओकरा अपराधी-चिह्न बनेब अधिग्रहण होएत।” रिद्धि अपना आलेखक पहिल पन्नासँ ‘सन्दिग्ध विद्यार्थी’ शब्द हटाकय ‘जाँच-आवश्यक खाताक प्रसंग’ लिखलीह। ई परिवर्तन कियो वाहवाही सँ नहि नापल, मुदा एहीमे अनेक विद्यार्थीक सम्मान बचल।

मुम्बईमे अनुराधा सेन एक अधिकृत सारणीक नब प्रतिलिपि बनौलीह। पिछला दिसम्बरमे फैलल ‘पञ्चानबे प्रतिशत नगद निकासी’क दावा बीस चुनल प्रविष्टिक वर्गचिह्नकेँ रकमक प्रतिशत मानबाक त्रुटिपर आधारित छल। मुदा ₹१२.४० लाखक एक प्रमाणित अन्तरण,

ओकर बादक ₹४.१० लाखक मार्ग आ किछु सेवा-बिलक सम्बन्ध अबो परीक्षणक विषय छल। अनुराधा प्रत्येक पाँतिक तीन भिन्न रंगक चिह्न रखलीह—मूल बैंक-प्रमाण उपलब्ध, सेवा अथवा लाभक उद्देश्य अपरीक्षित, अपराधजन्य स्रोतसँ सम्बन्ध अनिर्णीत। सहयोगी देवेन पुछलक, “अहाँ एहन विस्तृत विभाजन किएक करैत छी, जखन अदालत एक नतीजा माँगत?” अनुराधा कहलीह, “किएक तँ बड़ रकमक डर एकर दोष सिद्ध नहि करैत। एक सही धन-प्रवाह सेहो ओकर वैधता आ अन्तिम लाभार्थीक प्रश्नक अन्तिम उत्तर नहि।”

नीरजा राठौड़ विशेष अनुसन्धानक एक बैठकमे स्पष्ट कएलीह जे सर्वोच्च न्यायालयमे चलबाक सम्भावित सुनबाई मूल धनशोधन अभियोजनक प्रमाण-संग्रहक बदला नहि लेत। ओ अपनी टीमकेँ अनुसूचित अपराधक अधिकृत अभिलेख, सेवा-प्रमाणक भौतिक पुष्टि, विदेशी संचारक विधिसम्मत मार्ग आ व्यक्तिवार भूमिकाक पृथक प्रपत्र सँबंधित काज बाँटि देलीह। एक अधिकारी कहलक, “यदि बैंक-रोक सम्बन्धी नियम कड़ा भेल तँ जाँचमे देरी होएत।” नीरजा उत्तर देलीह, “कानून अधिकार देत अछि, कागज-रहित सुविधा नहि। त्वरित संरक्षण आवश्यक हो तँ तकर समुचित कारण आ स्रोत समयपर सुरक्षित करब जाँचक कौशल अछि।” ओ सहगल परिवारक समाचारक कटिंग फाइलसँ हटाकय विशिष्ट गवाहक बयान रखलीह। समाचार-चित्रक चेहरा ककरो दोषक प्रमाण नहि छल, आ चुप्पी सेहो निर्दोषताक गारंटी नहि।

विक्रान्त सहगल दुबईमे अपन अधिकृत अधिवक्ताकेँ चारि परामर्श-प्रकल्पक कागज भेजलक। तीन प्रकल्पक कार्य-विवरण, भुगतानक चरण आ किछु ग्राहकक स्वीकृति-पत्र भेटल छल; चौथाक बीस दिनक कामक प्राथमिक प्रतिवेदन एखनो अनुपलब्ध छल। अधिवक्ता लिखलनि जे अनुपलब्ध कागजक अर्थ स्वतः कपट नहि, मुदा ओकरा उपलब्ध कहब सेहो उचित नहि। विक्रान्त अपन पिताकेँ फोन कएलक। सुदर्शन सहगल पुछलनि, “दिल्लीक सुनबाईसँ तोहर प्रकरणक अन्त होएत?” बेटा उत्तर देलक, “नहि। ओ खाताक रोकक प्रश्न अछि, हमर विशेष अदालतक मामला अलग।” पिता कहला, “तखन अपन बचावमे जकर सच अछि से राखिह। जकर नहि, ओकर खोज करिह।” समुन्दरक ओहि पार विक्रान्तक अलगाव ओकरा अनुपस्थितिक विधिसम्मत सेवा आ कार्यवाहीक दायित्वसँ मुक्त नहि करैत छल।

नूर जहाँक समाचार-कक्षमे जनवरीक मध्याह्न नब विज्ञापन आयल—“सर्वोच्च न्यायालय कहत, हजारो खाता खुलत।” निखिल सम्पादक पत्र पढ़िकय कहलक जे विज्ञापनक भाषा कानूनसँ बहुत आगाँ दौड़ि गेल अछि। नूर कहलीह, “एहि प्रकरणमे न अनुमति देल गेल, न अन्तिम निर्णय। सुनबाई तय भेल एतबा खबर अछि।” विज्ञापन लौटा देल गेल। समाचारक अगिला अङ्कमे नूर उच्च न्यायालयक अन्तरिम आदेशक पाँच स्पष्ट सीमा प्रकाशित कएलीह—गैरविवादित रकम, विवादित ₹४,२००, बैंकक तकनीकी विस्तार, सक्षम अधिकारीक अधिकार, आ शेष विचाराधीन उपचार। ओ अर्जुनक फोन नम्बर आ विद्यालयक असम्बद्ध विवरण छापल नहि। एक प्रशिक्षु पुछलक, “ई खबर कम बिक्री होएत?” नूर उत्तर देलीह, “सही सीमा बतौनिहार शब्दक मूल्य बिक्रीक पहिल घण्टासँ दूर धरि रहैत अछि।”

दिल्ली जाएबाक पूर्व रेवती अपन पिताकेँ सन् २००४ क अण्डमानक एक पत्र पढ़ि सुनौलीह। अनीश हलदरक सुनामीमे बहि गेल प्रमाणपत्रक कारण राहतसूचीमे मृत पिता आ जीवित पुत्रक नाम बदलि गेल छल। तखन कार्यालय कहने छल—‘मूल कागज आनू’; समुद्र ओ कागज खा लेने छल। वर्षसभक धैर्य, साक्षी आ स्थानीय सत्यापनसँ पहिचान सुधरल। “ओहि समय गलती निवारणक रास्ता कोना बनल?” शिवनारायण पुछलनि। “एक अधिकारी तथ्य देखबाक लेल तैयार भेल,” रेवती कहलीह, “आ एक सक्षम मंच आदेशक भाषा स्पष्ट कएलक।” पिता उत्तर देलनि, “अदालत सभ इतिहास नहि लिखैत, मुदा एहन आदेश देत जे एक पृष्ठ सँ आदमी अपन जीवन फेर लिखि सकए।” रेवती महसूस कएलीह जे एहि सुनबाईमे अनीश पक्षकार नहि, तथापि ओकर स्मृति न्यायिक तर्कक भीतर नैतिक अनुशासन देत।

दिल्लीक जाड़मे सर्वोच्च न्यायालयक द्वारिपर कागज जाँचब आ पहचान देखब सामान्य नियम छल। रेवती शालिनी संग पहुँचलि, जखनकि अर्जुन अपन परीक्षाक दोसर पत्र समाप्त कऽ रातिक गाड़ीसँ अबैवाला छल। राज्यक पक्षसँ भानु प्रताप माथुर आ वरिष्ठ अधिवक्ता मृदुल वर्मा उपस्थित छलाह; बैंकक अधिवक्ता वेदिका दीक्षित अपन स्पष्ट तकनीकी प्रतिवेदन संग छलीह। ककरो संग विशेष न्यायालयक समूचा आरोपपत्र नहि छल, केवल प्रासंगिक अधिकृत अंश सभ छला। न्यायालयक सूचीमे न्यायमूर्ति मृणालिनी देशमुख आ न्यायमूर्ति अयान रज़ाकक खण्डपीठक समक्ष विशेष अनुमति याचिका अंकित छल। दर्शकसभ बाहर

फोटो लेबय चाहैत छलाह, मुदा फाइलक भीतरक नाम आ निजी विवरण अदालतक अलग मर्यादामे रहबाक छल।

पहिल प्रश्न न्यायमूर्ति देशमुख राज्यक अधिवक्तासँ पुछलनि—“अहाँ कोन आदेशपर विशेष अनुमति चाहैत छी? उच्च न्यायालय तऽ केवल गैरविवादित रकमपर पूर्वक व्यापक रोकक पुनरावृत्ति टारबाक बात कहने अछि; चारि हजार दू सयक संरक्षण समाप्त नहि कएने अछि।” मृदुल वर्मा उठि कहला जे राज्यक चिन्ता एक विशेष पाँतिक व्याख्या अछि, जाहिसँ दूरक शाखासभ सक्षम अन्वेषणक तात्कालिक संरक्षणक निर्देशमे अनावश्यक हिचकिचाहट महसूस कऽ सकैत अछि। न्यायमूर्ति रज़ा फेर पुछलनि, “शाखाक भयक प्रमाण अछि, कि भविष्यक अनुमान?” वेदिका बैंकक दू वास्तविक शाखा-संचारक प्रति रखलीह, जाहिमे आदेशक परिधि सम्बन्धी प्रश्न छल, मुदा कोनो रोक स्वतः निष्क्रिय भऽ गेल, एहन प्रमाण नहि छल। अदालत प्रारम्भहिमे कहि देलक जे संभावना आ घटित घटना एक वस्तु नहि।

शालिनी प्रतिवादमे कहलीह, “महोदय, अर्जुनक मुकदमा कानूनक सभ सम्भव रोकपर सार्वभौम निर्णय माँगैत नहि अछि। प्रारम्भिक पत्र केवल विशिष्ट प्रविष्टिक संरक्षण कहैत छल, मुदा बैंकक तकनीकी प्रणाली सम्पूर्ण खाताक निकासी रोकि देलक। उच्च न्यायालय एहि असमानता पर कारण माँगने अछि। एहि बीच वैध छात्रवृत्ति खुलि गेल, विवादित प्रविष्टि सुरक्षित अछि। राज्य यदि नव सामग्रीसँ व्यापक वैधानिक आदेश प्राप्त करैत अछि तँ अन्तरिम आदेश ओकरा नहि रोकैत।” न्यायमूर्ति देशमुख पुछलनि, “तखन अहाँकेँ सर्वोच्च न्यायालयसँ की चाही?” शालिनी उत्तर देलीह, “अंतरिम आदेशक वास्तविक सीमा सुरक्षित रहए, नागरिकक सूचना आ समीक्षा अर्थपूर्ण हो, आ जाँचक दायित्व कमजोर नहि बनए।” अदालत सुनलक, मुदा एखन ककरो समर्थन घोषित नहि कएलक।

रेवतीकेँ जखन बोलबाक अवसर भेटल, ओ अपन बहसक आरम्भ कोनो पैघ संवैधानिक उद्घोषणासँ नहि कएलीह। “एहि मुकदमाक पाँच प्रश्न अछि,” ओ कहलीह। “पहिल, विधिसम्मत शक्ति ककरा प्राप्त अछि? दोसर, लिखित आदेशमे कोन विशिष्ट कारण अछि? तेसर, बैंक ओ आदेशक कतेक हिस्सा मशीनमे लागू करैत अछि? चारिम, प्रभावित व्यक्तिक गैरविवादित जीविका आ जानकारीक रक्षा कोना होएत? पाँचम, समयपर कारणसहित समीक्षा

कोन मंचपर उपलब्ध अछि?” न्यायमूर्ति रज़ा बीचमे पुछलनि, “अहाँ चाहैत छी कि प्रत्येक जाँचक गोपनीय सूचना खाताधारक देखथि?” रेवती उत्तर देलीह, “नहि। वैधानिक गोपनीयता आ न्यायिक परीक्षणक सीमा रहत। मुदा गोपनीयताक एक शब्दसँ अनिश्चित व्यापक रोक, अज्ञात अवधि आ उपचारहीन स्थिति उचित नहि ठहरत।”

मृदुल वर्मा प्रतिवादमे उच्चतम स्तरक आर्थिक अपराधक अन्वेषणक जटिलता रखलनि। कतेक स्थानान्तरण एक रातिमे देशान्तर पार कऽ सकैत अछि; अधिकारीक लेल प्रमाणक स्रोत सुरक्षित करबाक अवसर कम पड़ि सकैत अछि। “जँ प्रत्येक खाताधारककेँ सम्पूर्ण मार्ग बताओल जाए,” ओ कहला, “तँ कुछ लाभार्थी प्रमाण हटेबाक आ नब खातामे धन पठेबाक उपाय खोजि सकैत छथि।” न्यायमूर्ति देशमुख उत्तर देलीह, “राज्यक एहि चिन्ताक वास्तविक आधार अछि। मुदा अहाँक उत्तरमे “सम्पूर्ण मार्ग” आ “एक अर्थपूर्ण, उपयुक्त सूचना” बीचक भेद कतय गेल? अदालत ई नहि कहैत जे जाँच अधिकारी अपन गोपनीय स्रोत सार्वजनिक करथि। प्रश्न ई अछि जे शक्ति असीमित रहि सकैत अछि कि नहि।” बहसक स्वर ऊँच नहि भेल; शब्दक परिधि मात्र अधिक स्पष्ट भेल।

न्यायमूर्ति रज़ा बैंकक अधिवक्ता वेदिका दीक्षितसँ पूछि बैसलाह, “शाखाकेँ “विशिष्ट रकम सुरक्षित” कहला पर पूरा खातेपर डेबिट-निषेध किएक लागल?” वेदिका एक तकनीकी प्रवाह-चित्र प्रस्तुत कएलीह। बैंकक पुरान प्रणालीमे ‘सतर्कता’ नामक विकल्प प्रमुखतः खाता-स्तरपर काम करैत छल; रकम-स्तरपर सीमा लगाबय लेल अतिरिक्त अनुमोदन आ मानवीय हस्तक्षेप चाही। अर्जुनक मामलामे शाखा पहिल विकल्प चुनने छल, पश्चात् सुधारक अनुरोध पठौने छल। न्यायमूर्ति देशमुख पुछलनि, “तकनीकी सुविधा विधिक अधिकारक नया स्रोत बनि सकैत अछि?” वेदिका कहलीह, “नहि, महोदया। प्रणाली निर्देशकेँ कार्यान्वित करबाक साधन मात्र अछि।” “तखन प्रणालीक डिजाइन, त्रुटिक सूचना आ सुधारक अभिलेख बैंकक उत्तरदायित्वसँ अलग नहि,” न्यायमूर्ति कहलीह। अदालत ई स्वीकार नहि कएलक जे प्रत्येक तकनीकी त्रुटि दण्डनीय अपराध होइत अछि; मुदा वास्तविक प्रभावक निराकरणक दायित्वसँ संस्था भागि नहि सकैत।

माथुर मूल अन्वेषण-पत्रक अधिकृत प्रति खोललनि। ओ पत्रमे एक कथित प्रशिक्षण-शुल्कक प्रवाहसँ अर्जुनक खातामे चारि हजार दू सय रुपैया अएबाक सम्भावना दर्ज छल। अभियोजनक प्रारम्भिक आरोपकेँ प्रमाणित निर्णायक तथ्य मानि लेबाक पद्धति ओ स्वयं अस्वीकार कएलनि। “हम एतय ई नहि कहैत छी जे एहि व्यक्तिक दोष सिद्ध अछि,” ओ कहलनि। “हम एतबा कहैत छी जे विशिष्ट धन-प्रवाह जाँच-अधीन अछि, अतः कानूनसम्मत संरक्षणक आवश्यकता हो सकैत अछि।” न्यायमूर्ति रज़ा उत्तर देलनि, “बहुत नीक। आब ई देखाउ जे अधिकारीक अनुरोध आ बैंकक व्यवहारमे जो अन्तर भेल, ओकर समीक्षा कोना दर्ज कएल गेल।” माथुर तीन तिथिक अलग पत्र रखलनि। अदालत महसूस कएलक जे बहसक वास्तविक मूल्य आरोपक आकारमे नहि, पत्रक क्रममे अछि।

सुनबाईक मध्य शालिनी अर्जुनक माय द्वारा पठाओल एक आवेदनक संक्षिप्त अंश पढ़लीह। आवेदनमे लिखल छल जे छात्रवृत्तिक पैसा उपलब्ध नहि रहला सँ विद्यार्थी एक परीक्षा-आवेदनक शुल्क दऽ नहि सकल, तथापि बादमे सम्बन्धित संस्थान अवधि बढ़ा देलक आ ओकर पढ़ाइ बचि गेल। रेवती सहमति देलीह जे एहि कठिनाईक क्षति, उपचार आ जिम्मेवारी उपयुक्त मंचमे प्रामाणिक रूपसँ परीक्षणयोग्य प्रश्न छथि; एहि अपीलीय चरणमे सारा क्षतिक अनुमानक रकम तय करब सम्भव नहि। न्यायमूर्ति देशमुख पुछलनि, “तखन छात्रक अनुभव केवल भावनात्मक बयान अछि?” रेवती कहलीह, “अनुभव मानवीय तथ्य अछि; ओकर कानूनी परिणाम लेल तिथि, दस्तावेज आ कारण-संबंध चाही। दुनूक सम्मान अलग राखब जरूरी अछि।” अदालत छात्रक आवेदन सुरक्षित सीमित अभिलेखमे राखबाक अनुमति देलक।

न्यायमूर्ति रज़ा अदालती फाइलक एक पृष्ठपर लाल चिह्न लगौलनि। “एतए बैंक कहैत अछि जे रोक पुलिसक पत्रपर छल। दोसर पन्नामे केओ धनशोधन-सम्बन्धी प्राधिकारीक नाम जोड़ने अछि। एहि प्रकरणमे वास्तवमे कोन शक्ति प्रयुक्त भेल?” राज्यक अधिवक्ता उत्तर देलनि जे अर्जुनक विशिष्ट खाताक प्रारम्भिक रोक पुलिसक साइबर-अन्वेषणक एक लिखित निवेदनसँ जुड़ल छल; व्यापक धनशोधन विशेष अदालतक अभिलेखसँ समान नामक कारण भ्रम पैदा भेल, मुदा ओकरा स्वतः एके वैधानिक आदेश मानल नहि जा सकैत। न्यायमूर्ति

देशमुख कहलनि, “तखन एतए स्वच्छ विभाजन चाही। अलग अधिनियमक कुर्की, जप्ती, रोक आ न्यायनिर्णायक समीक्षा अपन-अपन शर्त राखैत अछि। बड़ा आरोपक शीर्षक बिना शर्त सभ प्रकारक शक्ति मिला नहि सकैत।” आदेशक मसौदामे एहि वाक्यक अर्थ नपल जाएत।

सुनबाईक अवकाशमे रेवती बरामदामे बैसि शिवनारायणकेँ छोट सन्देश पठौलीह—“अदालत तकनीकी रोकक स्रोत पुछैत अछि।” पिता उत्तर देलनि, “नीलकान्तक बहीमे मृत नामक लेखक पुछल गेल छल। प्रश्न बदलल अछि कि रूप?” रेवती लिखलीह, “रूप बदलल; अधिकारक परीक्षा गहिर भेल।” फोन बन्द कए ओ बरामदामे बैसल एक वृद्ध महिला दिस देखलीह। महिला अपन पेंशन-सम्बन्धी अलग मामलामे अधिवक्ताक प्रतीक्षा करैत छलीह; हुनकर विवादक अर्जुनक मुकदमासँ कोनो सम्बन्ध नहि छल। तथापि न्यायालयक सीढ़ी पर बैसल विभिन्न लोकक चेहरामे ओ एक समान बाधा देखैत छलीह—राज्य अथवा संस्था जे अभिलेख बनबैत अछि, नागरिक ओहीक आधारपर अपन जीवन चलाबय विवश होइत अछि। एहि असमानता पर कानूनक प्रश्न उठाएब, संस्था-विरोध नहि, उत्तरदायित्वक माँग छल।

दोपहरि फिरदौस कौल अधिकृत तकनीकी विशेषज्ञक रूपमे प्रस्तुत कएल एक लिखित टिप्पणीपर स्पष्टीकरण देबय आयलीह। हुनकर टिप्पणी बैंकक प्रणाली-संरचनाक विषयमे छल, अर्जुनक कथित अपराधजन्य धनक नैतिकता अथवा वैधता पर नहि। न्यायमूर्ति देशमुख पुछलनि, “एक कम्प्यूटर-रिपोर्टक प्रामाणिकता आ ओहि रिपोर्टमे दर्ज अनुमानक सत्यता केना अलग राखब?” फिरदौस उत्तर देलीह, “स्रोतक पहिचान, यन्त्रक स्थिरता, अभिलेख बनबाक क्रम, अधिकृत निकास आ लागू विधिक प्रमाणन पहिल पक्ष अछि। तकर बाद डेटा जकरा दर्शबैत अछि, ओकर वास्तविक अर्थ—कोड, अपवाद, दोहराओल प्रविष्टि आ तथ्यसँ सम्बन्ध—दोसर पक्ष। पहिल प्रमाणित भेलासँ दोसर अपने आप सत्य नहि होइत।” न्यायालय स्पष्ट कएलक जे इलेक्ट्रॉनिक अभिलेखक ग्राह्यता आ साक्ष्य-मूल्यक प्रश्न उपयुक्त विचारण मंचमे कानूनक अनुसार निपटत; एतय तकनीकी भ्रम केवल खाताक रोकक प्रसंगमे देखल जा रहल अछि।

फिरदौसक उत्तर सुनिते रेवतीकेँ सन् २००८ क विज्ञानक समाचार याद आयल। चन्द्रयान-१ क उड्डयन देखबाक समय एक बालिका पायल पूछने छलीह जे आकाशक दूरक तस्वीर पर विश्वास कोना कएल जाए। शिक्षक कहने छल—यन्त्र, समय, नाप आ स्वतन्त्र पुष्टि। रेवती ओहि बालिकाकेँ मानसिक रूपसँ धन्यवाद देलीह। प्रमाणक सावधानी वैज्ञानिक उपलब्धिक विरोध नहि, ओकर आधार अछि; वित्तीय जाँचमे सेहो एकहि तकनीकी अनुशासन चाही। ओहि दिन जोधपुरक एक विद्यालयमे विज्ञान-शिक्षक नव छात्रसभकेँ उपग्रहक कक्षा पढ़ा रहल छलाह। ओ बच्चासभकेँ कोनो अदालतक नाम नहि सुनौलनि; ओ कहलनि जे सुन्दर तस्वीर पर्याप्त नहि, मापनक पद्धति आवश्यक अछि। देशक वैज्ञानिक भविष्य अपन स्वतन्त्र पाठशालामे बनि रहल छल, भलेहुँ रेवतीक फाइलमे ओकर हल्का प्रतिध्वनि छल।

नीरजा राठौड़ दूरसँ सुनबाईक अधिकृत सार्वजनिक प्रतिवेदन पढ़ि एक टिप्पणी लिखलीह। “जाँचक वास्तविक संरक्षणक आवश्यकता अदालतकेँ स्पष्ट देखेबाक अछि,” ओ अपन सहयोगीकेँ कहलीह, “मुदा सार्वजनिक पन्नामे गवाहक निजी पता, एन्क्रिप्टेड संचारक तकनीकी सूत्र अथवा अज्ञात विद्यार्थीक पूरा खाता नहि रखबाक चाही। सक्षम न्यायिक माँगपर उचित सुरक्षित पद्धतिसँ सामग्री प्रस्तुत करब अलग बात अछि।” सहयोगी पुछलक जे ई सावधानी बचाव पक्षक प्रतिवादक अवसर कम करि देत कि नहि। नीरजा कहलीह, “न्यायिक जाँचमे जकरा आरोपक अर्थ बुझबाक वैधानिक अधिकार अछि, ओकरासँ प्रासंगिक बात अनिश्चित काल धरि छिपाएब सेहो गलत। सार्वजनिकता, पक्षकारक अधिकार आ संरक्षण—तीनू लेल उचित अलग व्यवस्था चाही।” एहि अनुशासनक पालन पहिने भेल होइत तँ पाँच सय विद्यार्थीक नामक अफवाह कदाचित कम फैलित।

अवकाशक बाद मृदुल वर्मा सर्वोच्च न्यायालयक अधिकारक्षेत्रपर पुनः लौटला। ‘एहि प्रकरणमे उच्च न्यायालयक रिटक अन्तिम निर्णय शेष अछि,’ ओ स्वीकार कएलनि। “राज्यक आग्रह अछि जे अन्तरिम व्यवस्थाक विधिक अर्थमे असङ्गति नहि रहए।” न्यायमूर्ति रज़ा पुछलनि, “जँ हम अहाँक विशेष अनुमति याचिका एहि अवस्थामे नहि सुनू, तखन अहाँ उच्च न्यायालयमे संशोधन अथवा स्पष्टिकरण माँगि सकैत छी कि नहि?” मृदुल स्वीकार कएलनि जे ताहि प्रकारक उपाय सम्भव अछि। न्यायमूर्ति देशमुख कहलीह, “अनुच्छेद १३६ क प्रयोग

स्वचालित नब मुकदमा शुरू करबाक यन्त्र नहि। हमरा देखबाक अछि जे एहि विशिष्ट अभिलेखक भीतर कोनो एहन सार्वजनिक महत्वक वास्तविक प्रश्न अछि, जकर सीमित स्पष्टीकरण आवश्यक अछि।” पक्षकारकेँ अहसास भेल जे सर्वोच्च न्यायालयक मंचक पैघता बहसक सीमा घटाबय सेहो कहैत अछि।

अगिला तिथिपर न्यायालय राज्यक संकीर्ण प्रश्न आ बैंकक वास्तविक प्रणालीगत अंतरक आधारपर विशेष अनुमति दऽ सीमित अपील सुनबाक निर्णय कएलक। आदेशमे स्पष्ट छल जे अनुमति प्रदान करबाक अर्थ उच्च न्यायालयक तथ्यात्मक निष्कर्ष असत्य ठहराएब नहि; अदालत केवल रोकक वैधानिक स्रोत, कार्यान्वयनक सीमा, आवश्यक सूचना आ प्रभावी समीक्षाक विषयमे विचार करत। मूल धनशोधन अभियोजन, कथित प्रशिक्षण शुल्कक अपराध, विक्रान्त सहगलक स्थिति आ आरोपित सेवा-बिल सभ विशेष न्यायालय अथवा सम्बद्ध सक्षम मंचमे रहत। उच्च न्यायालयक लम्बित रिटक अन्य प्रार्थना स्वयं एहि अपीलमे स्थानान्तरित नहि भेल। रेवती आदेश ध्यानसँ पढ़लीह। किछु समाचार-संस्थान ‘सुप्रीम कोर्टमे मामला स्वीकार, दोषक फैसला निकट’ लिखि देलक; नूर अपन रिपोर्टमे अनुमति आ अन्तिम अपीलीय निर्णयक अन्तर अलग स्पष्ट कएलीह।

रात्रिमे अर्जुन दिल्ली पहुँचल। स्टेशनपर शालिनी ओकरा लेबय आयलीह। ओकर बैगमे दू किताब, माय द्वारा देल सत्तू आ परीक्षाक प्रवेश-पत्र छल। न्यायालयक प्रवेशद्वार लग ककरो फोटो खिंचेबाक उत्साह अर्जुनकेँ नहि छल। ओ पूछलक, “मोर केसक बात लोक देशभरि पढ़त, तखन हमरा पहचानल जाएत?” शालिनी कहलीह, “सार्वजनिक न्यायिक कार्यवाहीक अपन नियम अछि; मुदा अनावश्यक निजी अभिलेखक प्रकाशन पर प्रतिवाद करब सम्भव अछि। हम अदालतसँ आवश्यक सुरक्षित प्रस्तुति पर बात करब।” अर्जुन पुछलक, “हमरो बात कहबाक अवसर भेटत?” शालिनी उत्तर देलीह, “अहाँक तथ्य शपथपत्र आ अधिवक्ताक बहसमे पहुँचत। अदालत जँ व्यक्तिगत स्पष्टीकरण चाहे, विधिसम्मत अवसर देत। मुदा अहाँक जीवन केवल मंचपर ठाढ़ होएबाक नाम नहि।”

एक छिन्नभिन्न परिवारक स्मृतिसँ अगिला भोर रेवती जागलीह। सन् २००२ क हिंसामे घर गमौने परिवारक एक सदस्य अपन स्कूल प्रमाणपत्र जरा जाएबाक कारण नाम फेर लिखबौने

छल। सन् २००४ क सुनामीमे अनीशक परिवारक कागज समुद्रमे गेल छल। सन् २००९ मे सुनीताक वेतन-पञ्जी मशीनसँ नहि, हस्तलिखित अङ्कसँ संघर्ष करैत छल। महामारीक बरखमे रोगीक पहचान, दवाईक उपलब्धता आ असहाय परिवारक फॉर्मक प्रश्न देखल गेल छल। आब २०२७ मे अर्जुनक बैंक-संकेत लऽ कऽ न्यायालयक समक्ष नव विवाद छल। ई सभ प्रकरण एकहि षड्यन्त्रक अंश नहि छल। रेवतीक सत्ताइस वर्षक गवाहीक असल व्यापकता एतबे छल जे अलग-अलग समयक अलग-अलग पीड़ा समान रूपेँ जाँचयोग्य तथ्य आ मनुष्यक गरिमा माँगैत छल।

मुकुल मीणा एखनहुँ अपन ₹७,५०० क पावती सुरक्षित रखने छल। दिल्लीक सुनबाईक खबर पाबि बहिन रानीक संग ओ फोटो देखलक। रानी पुछलक, “भैया, सुप्रीम कोर्ट सबकेँ पैसा वापस देत?” मुकुल कहलनि, “हमरा शिकायतक रकम एतय निर्णय लेल रखल नहि अछि। अर्जुनक मामलामे ओकर खाताक रोकक सीमा देखल जा रहल अछि।” रानी कोरा कापीपर तीन डब्बा बनौलक—‘रोक’, ‘जाँच’, ‘वापसी’। ओ पुछलक, “तीनू एक नहि?” मुकुल उत्तर देलक, “नहि। रोकल धनक वैधता अलग; अपराधक जाँच अलग; नुकसान घुरेबाक अधिकारक रास्ता अलग।” रानी एखन बहुत कम उम्रक छलीह, मुदा ओहि तीन डब्बाक भीतर देशक हजारो जटिल समाचारक एक सहज वर्गीकरण बनि गेल छल। मुकुल बहिनक कापी देखि पहिल बेर एक वयस्कक सन धैर्य अनुभव कएलक।

सर्वोच्च न्यायालयक अगिला पूर्ण सुनबाईमे वेदिका दीक्षित बैंकक सुधार-प्रक्रियाक तीन सम्भव स्तर रखलीह। पहिल स्तर—विधिसम्मत पत्रक प्रेषक आ अधिकार सत्यापित करब; दोसर—रोकक सीमा, अवधि आ लागू तकनीकी विकल्प दर्ज करब; तेसर—अस्पष्टता भेटला पर त्वरित स्पष्टीकरण माँगब आ बाध्यकारी नब आदेश भेटला पर अभिलेखसहित सुधार करब। न्यायमूर्ति देशमुख पुछलनि, “एहि सभमे अदालत बैंककेँ नब सार्वभौम नीति लिखबाक निर्देश देत कि अहाँक वर्तमान कानूनी दायित्वक सुसंगत पालन अपेक्षित अछि?” वेदिका उत्तर देलीह, “हम अपन संस्थागत पद्धति सुधारि सकैत छी, मुदा विधिक स्रोतक अन्तिम व्याख्या अदालतक। बैंक अधिकारी अधिकृत आदेशक स्थानपर स्वेच्छा सँ अपराधक निर्णय नहि करि

सकैत।” अदालत एहि उत्तरकेँ प्रासंगिक मानलक, मुदा बैंकक प्रस्तावित समयसीमा आ शिकायत-निवारणक वास्तविक क्षमता पर प्रश्न शेष रखलक।

एक विशेष बहसमे शालिनी निजताक प्रश्न उठौलीह। “अर्जुनक खाताक संक्षिप्त जानकारी जाँचक आवश्यकता लेल एक अधिकृत कार्यालय तक पहुँचल,” ओ कहलीह, “मुदा पाँच सय विद्यार्थी-संबद्ध खाताक स्क्रीनशॉट निजी संदेश समूहमे घूमल। ई दू घटनाक कानूनी स्रोत आ उत्तरदायित्व अलग छला। हम एहि अपीलमे अज्ञात लीकक दोषी तय करबाक अनुरोध नहि करैत छी, मुदा खाताधारकक गोपनीय जानकारी आवश्यक प्रक्रियासँ बाहर नहि फैलए, से एही रोकक व्यवस्थामे महत्त्वपूर्ण पक्ष अछि।” राज्यक पक्ष कहलक जे लीक पर स्वतन्त्र शिकायत दर्ज अछि; ओकर जाँचक परिणाम एखन घोषित नहि। न्यायमूर्ति रज़ा टिप्पणी कएलनि, “प्रत्येक दस्तावेजक व्यापक सार्वजनिक प्रदर्शन न्यायमे पारदर्शिता नहि। कखनो न्यूनतम आवश्यक जानकारी आ न्यायसंगत पहुँच दुनू रक्षा करब पड़ैत अछि।” अदालत खुला बहसक लिखित विवरणमे अर्जुनक पूरा खाता नम्बर नहि दोहरौलक।

राज्यक वरिष्ठ अधिवक्ता कहला जे किछु तत्काल स्थितिमे प्रभावित व्यक्तिक पूर्व सूचना देलासँ जाँच निष्फल भऽ सकैत अछि। रेवती एहि बातकेँ सामान्य रूपसँ अस्वीकार नहि कएलीह। ओ कहलीह, “किछु विधि तत्काल संरक्षणक अनुमति दैत अछि, आ कखनो पूर्व सूचना अनुपयुक्त होइत अछि। मुदा एकर अर्थ नहि जे तथ्यपरक निर्णयक बादो समुचित समयपर न्यायसंगत सूचना अथवा समीक्षा अनिश्चित काल टारल जाए। सूचना लेल कोन विस्तार सम्भव अछि, कोन जानकारी वैधानिक अपवादमे सुरक्षित रहत, ई वास्तविक आदेश आ सम्बन्धित अधिनियम पर निर्भर करए।” न्यायमूर्ति देशमुख कहलनि जे अदालत ककरो विधिक अपवाद समाप्त नहि करैत, मुदा अपवादकेँ नियमक रूपमे असमर्थित विस्तार देबाक अनुमति सेहो नहि देत। बहस एक निरपेक्ष घोषणासँ बचि विधिक संदर्भक भीतर पहुँचि गेल।

रेवती अपन दलीलमे एक पुरान शब्द उठौलीह—‘समीक्षा’। “राज्य कहैत अछि जे नागरिक उचित मंचपर जा सकैत अछि,” ओ कहलीह। “मुदा जँ नागरिककेँ ई नहि बुझाए जे रोक कोन अधिकृत स्रोतसँ आयल, तखन ओ कोन मंच चुनत? जँ बैंक कहए “पुलिस”, पुलिस कहए “प्रणाली”, प्रणाली कहए “केन्द्रीय निर्देश”, तँ प्रभावी उपचारक दुआरि कोना

खुलत?” न्यायमूर्ति रज़ा पुछलनि, “तखन अहाँ प्रत्येक आवेदनपर अदालतक निगरानी चाहैत छी?” रेवती उत्तर देलीह, “नहि। सक्षम प्रशासनिक अथवा वैधानिक मंच अपन काम करए। अदालत सुनिश्चित करए जे नागरिककेँ ओकरा तक पहुँचबाक वास्तविक रास्ता अछि, कागजपर लिखल भ्रमित पतेक सूची नहि।” न्यायाधीशसभ एहि अन्तर पर दू प्रश्न लिखौलनि—उत्तरदायी कार्यालय आ सुधारक समय।

अरुण नामक एक कनिष्ठ सरकारी अधिवक्ता अवकाशमे माथुरसँ कहलनि जे निजी जीवनक प्रकरणमे राज्यक पक्ष धारण करब कठिन होइत अछि। माथुर एकर उत्तर एक अनुभवसँ देलनि। “सन् २०१२ मे हम एक सरकारी विद्यालयक विवादमे परामर्श देने छलहुँ। संस्थानक पहिल जवाब छल—“सभ नियम पालन भेल।” दस्तावेज देखला पर एक छात्रवृत्तिक पत्र गलत ठाम गेल छल। हम लिखने छलहुँ—“प्रशासनिक भूल सुधरल जाए”; तखनहि राज्यक वास्तविक पक्ष विश्वसनीय बनल। सरकारक वकील राज्यक प्रत्येक कम्प्यूटरक अपराजेयता प्रमाणित करबाक लेल नहि बैसैत।” अरुण पूछलक, “आ जँ अधिकारी नीक विश्वासमे गलती कएल हो?” माथुर कहला, “तखन सेहो गलत आदेशक असर सुधारब आवश्यक भऽ सकैत अछि। व्यक्ति-दोष, संस्थागत उत्तरदायित्व आ उपचार तीनू अलग प्रश्न छथि।”

दिल्लीक अस्पतालमे एही समय डाक्टर सायरा अहमद एक युवा रोगीक जाँच करैत छलीह। रोगीक परिवारक डिजिटल भुगतानक एक नब सामान्य समस्या छल, मुदा ओ अर्जुनक रिट अथवा धनशोधनक जाँचसँ सम्बन्धित नहि छल। अस्पतालक वित्तीय कर्मचारी भुगतानक वैकल्पिक स्वीकृत माध्यम बतौलक, जाहिसँ उपचार नहि रुकल। सायरा अपन टीमकेँ कहलीह जे चिकित्सा निर्णय रोगीक आवश्यकता आ सहमतिक आधारपर होएत; एक मशीनक अस्थायी सन्देश रोगक निदान नहि। हुनकर ई वाक्य ककरो न्यायालयीन बहसमे दर्ज नहि भेल। तथापि ओहि दिन देशक अस्पतालसभमे गिनतीक अनेक छोट निर्णय नागरिक जीवनक निरन्तरता बचा रहल छल। बड़ संवैधानिक बहसक समानान्तर ई स्वतंत्र मानवीय अनुशासन महत्त्वपूर्ण छल।

अर्जुन अदालतक दर्शकदीर्घामे बैसि अपन नोटबुकमे कानूनी शब्द लिखैत छल—अन्तरिम आदेश, विशेष अनुमति, वैधानिक स्रोत, गैरविवादित धन। बगलमे बैसल एक व्यक्ति अपन फोनपर जोर-जोरसँ समाचार पढ़ैत छल जे ‘सभी खाते मुक्त’। अर्जुन ओकरा धीरे कहलनि, “एखन निर्णय भेल नहि।” व्यक्ति ओकरा पहचानल नहि। “तोहर की मतलब?” ओ पुछलक। अर्जुन उत्तर देलक, “हम एक एहन खाताधारक छी जकर कुछ धन पर जाँच चलैत अछि, बाँकी छात्रवृत्ति उपयोगमे अछि। एहि दू स्थितिक अन्तर नहि बुझला सँ लोक हमरा अपराधी सेहो कहैत अछि आ सबटा धन वापस भेल कहि बधाइ सेहो दैत अछि। दुनू गलत।” ओहि अपरिचित व्यक्ति फोनक शीर्षक फेर पढ़लक आ आवाज धीमी कएलक। कखनो अदालतक शिक्षा तर्कशास्त्रक मोट पुस्तकसँ नहि, एक विद्यार्थी द्वारा अपन साधारण परिचय स्पष्ट करबासँ फैलैत अछि।

अगिला सुनबाईक भोरमे सरकारी दलक समक्ष अनुराधाक एक संक्षिप्त तथ्यपत्र पहुँचल। ओ चारि पृष्ठक दस्तावेज मूल धनशोधन अभियोजनक निष्कर्ष नहि, वित्तीय भाषाक भेदक स्पष्टीकरण छल। ‘सकल स्थानान्तरणक योग’, ‘अद्वितीय मूल जमा’, ‘पुनरावृत्त अन्तरखाता प्रवाह’ आ ‘अपराधजन्य स्रोतसँ प्रमाणित सम्बन्ध’ चारि पृथक शीर्षक छला। दू हजार करोड़क प्रचारित समष्टि कएक चक्रमे दोहराओल स्थानान्तरण जोड़ि बनबाक सम्भावना छल; वास्तविक अपराधजन्य रकम कतेक, से स्वतन्त्र अनुसूचित अपराध आ स्रोत-परीक्षण बिना निर्धारित नहि। अदालत एहि दस्तावेजक महत्त्व सीमित रूपसँ देखलक—आर्थिक संख्याक सटीक अर्थ पूछबाक चेतावनी, अर्जुनक चारि हजार दू सयक स्वचालित निर्णय नहि। नीरजाक कार्यालय लिखित रूपमे कहलनि जे विशेष अदालतक अन्वेषण आ ग्राह्यताक प्रश्न अपन प्रक्रियामे सुरक्षित रहत।

न्यायमूर्ति देशमुख पुछलनि, “दू हजार करोड़क उल्लेख एतय किएक आयल? एहि अपीलक केन्द्र एक छात्रक बैंक-रोकक सीमा अछि।” राज्यक अधिवक्ता कहलनि जे सार्वजनिक चर्चाक कारण विभिन्न दस्तावेज मिश्रित भऽ रहल अछि, आ अदालतसँ सन्दर्भ स्पष्ट करबाक आशा अछि। न्यायमूर्ति रज़ा उत्तर देलनि, “अदालत अफवाहक सम्पादक नहि। हम प्रत्यक्ष विवादमे प्रासंगिक तथ्य देखब। खास संख्याक शोर निर्णयक दायरा बढ़ेबाक कारण

नहि होएत।” रेवती एहि प्रश्नक अन्तर्गत अपन नोटमे लिखलीह—“बृहद् आरोप जाँचक गम्भीरता बढ़बैत अछि, छोटे नागरिकक अधिकार घटबैत नहि।” कथन कोनो नारा बनबाक लेल नहि, अपन आगामी बहसक सीमा बुझबाक लेल छल। अदालत दू हजार करोड़पर कोनो तथ्यात्मक निष्कर्ष देबाक आग्रह अस्वीकार कएलक, मुदा वित्तीय अनुसन्धानक स्वायत्त कानूनी मार्ग स्पष्ट राखलक।

ओहि समय सौमित्र बंसल अपन अधिवक्ता ईरा सक्सेनाक कार्यालयमे विशेष अदालतक नब तिथिक पत्र पढ़ैत छल। ईरा कहलीह, “सर्वोच्च न्यायालय अर्जुनक खाताक रोक सम्बन्धी प्रश्न सुनैत अछि। ई अहाँक बोर्ड-निर्णय, सेवा-बिल अथवा हस्ताक्षरक सत्यापनक अपील नहि अछि। कृपया काल्हि अदालतमे जे मूल कार्य-स्वीकृति कागज माँगल गेल छल, ओकर स्रोतक जानकारी आनू।” सौमित्र अपन कागजमे एक अनुपलब्ध संलग्नक खोजलक। ओकरा भीतरी असुविधा भेल जे एक दूरक संवैधानिक समाचारक चमकमे अपन उत्तरदायित्व ओ टारि सकैत नहि। काव्या बच्चीक स्कूलक किताब सम्हारैत कहलीह, “सत्यक उत्तर अहाँक पास जे कागज अछि ओकरासँ शुरू होएत, समाचारक शीर्षकसँ नहि।” सौमित्र एहि बातपर चुप रहल, मुदा अगिला भोर आन्तरिक अभिलेखक लिखित अनुरोध भेजलक।

विशेष न्यायालयमे संध्या पारीक अपन नियमित कार्यवाहीक सूची देखैत छलीह। अभियोजन अनुपलब्ध मूल सेवा-बिलक स्रोत प्राप्त करबाक प्रगति दाखिल कएलक, बचाव पक्ष वास्तविक आयोजनक समर्थनमे दू स्वतन्त्र अभिलेखक जाँच माँगलक। न्यायाधीश लिखलनि जे सर्वोच्च न्यायालयक सीमित अपीलीय बहस एहि पक्षकारक दोष, सम्पत्तिक आपराधिक स्वरूप अथवा अन्तिम लाभक निर्धारण नहि करैत। विशेष अदालत अपन अधिकारक्षेत्र, साक्ष्यक ग्राह्यता आ व्यक्तिगत भूमिकाक परीक्षण कानूनानुसार जारी राखत। नीरजा राठौड़ आदेशक प्रति पाबि एतबा कहलीह—“जाँच करबाक अधिकार बाँचल अछि; चिह्नित तथ्यक उत्तर देबाक दायित्व सेहो।” न्यायालयमे उपस्थित रफीक चायवाला एहि दिन कोनो फोटो तुरन्त नहि पठौलक। ओ दू पृष्ठ पूरा पढ़ि अपन दोकानक एक ग्राहककेँ केवल एतबा बुझौलक जे ‘एतए केओ दोषी घोषित नहि भेल’।

सर्वोच्च न्यायालयक अन्तिम तर्क-चरणमे रेवती पाँचम प्रश्नपर अधिक ठहरलीह। “मानू, लिखित आदेश तकनीकी रूपसँ ठीक अछि,” ओ कहलीह, “मुदा प्रभावित नागरिक महिनों धरि बुझि नहि सकैत जे सुधार कोना माँगब। जाँच अधिकारी दोसर शहरमे, बैंक शाखा तेसर, डिजिटल पोर्टल चौथ। तखन अधिकारक नाम रहि गेल, ओकर प्रयोग गुम भऽ गेल।” मृदुल वर्मा उत्तर देलनि जे अन्वेषणक विभिन्न विधिक मार्गक अलग-अलग आवेदन आ समीक्षा-प्रावधान छथि। रेवती एहि भिन्नताक महत्त्व स्वीकार कएलीह। न्यायमूर्ति देशमुख कहलीह, “उचित मंचक पहिचान बिना अधिकारक प्रवचन अधूरा अछि। मुदा एतय अदालत सम्बन्धित अधिनियमसभक विकल्पकेँ बिना विचारे एक नब समान अदालतमे नहि बदलि सकैत।” अदालत पक्षकारसँ एक संक्षिप्त तिथि-सारणी आ उपलब्ध समीक्षा-मंचक सूची माँगलक।

शालिनी अपन अन्तिम निवेदनमे राज्यक अधिकारपर एक अनिवार्य स्वीकृति रखलीह। “यदि अर्जुनक खाते धरि अपराधजन्य धन पहुँचल अछि आ ओ सम्बन्ध विधिसम्मत साक्ष्यसँ स्थिर होइत अछि, तँ सम्बन्धित विधि अनुसार सक्षम प्राधिकारी आवश्यक संरक्षणक वैध निर्णय लऽ सकैत छथि,” ओ कहलीह। “मुदा एहि सम्भावनाक कारण केवल छात्रक नामवरि लागल सम्पूर्ण जीवनक रकम बिना पृथक कारण रोकल नहि रहबाक चाही। राज्य भविष्यक जाँचक छूट राखि सकैत अछि; नागरिक आजक कारणक उत्तर माँगि सकैत अछि।” न्यायमूर्ति रज़ा पुछलनि जे पूर्वक तकनीकी गलतीक कारण क्षतिपूर्ति पर न्यायालय आब निर्णय देत? शालिनी कहलीह, “नहि, एहि सीमित अपीलमे से मुद्दा प्रमाणक साथ समुचित मंचमे शेष रहए।” एहि संयमसँ बहसक विश्वसनीयता घटल नहि, बल्कि बढ़ल।

राज्यक समापनमे मृदुल वर्मा सेहो दायित्वक एक अंश स्वीकार कएलनि। “बैंकक प्रारम्भिक पूर्ण रोकक तकनीकी प्रभाव अधिकृत पत्रक सीमासँ व्यापक छल,” ओ कहलनि। “राज्य एहि विशिष्ट घटनाक तथ्यकेँ नकारि नहि रहल अछि। हमरा केवल ई सुनिश्चित करबाक अछि जे कानूनसम्मत त्वरित संरक्षणक साधन एक सामान्य यान्त्रिक निर्देशसँ निष्क्रिय नहि हो।” न्यायमूर्ति देशमुख कहलीह, “एहि सहमतिसँ विवादक वास्तविक आकार समझाइत अछि। अदालत न त प्रत्येक रोक अवैध कहल चाहैत अछि, न तकनीकी चूककेँ अधिकारक अपरिहार्य मूल्य।” न्यायमूर्ति रज़ा जोड़लनि जे स्पष्ट दायित्वको प्रमाणक आधारपर निर्धारित

करबाक पड़त, किएक तँ अन्वेषण, बैंकक कार्यान्वयन आ न्यायिक समीक्षा तीन संस्थागत स्थान छथि। न्यायाधीशसभ निर्णय सुरक्षित रखलनि। बाहर भीड़ अपन मनक परिणाम घोषित करय चाहैत छल, मुदा आदेश एखन लिखल जएबाक छल।

निर्णय सुरक्षित भेला बादक सप्ताह रेवती दिल्लीसँ दरभंगा गेलीह। शिवनारायण आब बहुत धीमे चलैत छलाह। बेटी पिताकेँ अदालतक बहस निबटाकय नहि सुनौलीह; ओ पूछलीह जे घरक पुरान बहीक पहिल प्रश्न लिखल पन्ना कतय अछि। पिता लकड़ीक पेटी खोललनि। “पहिल प्रश्न छल—ककर नाम? दोसर—ककर लिखावट? तेसर—कोन समय? चारिम—कोन अधिकार? पाँचम—एहि सभक असर कोन लोकपर?” रेवती कहलीह, “सर्वोच्च न्यायालयमे हम सभ पहिल चारिक बगलमे समीक्षा जोड़लहुँ।” शिवनारायण मुस्की देलनि। “समीक्षा शब्द नीक अछि। मुदा जकरा न्याय चाही ओकरा ई मत कहिह जे केवल दुआरि देखू। दुआरि खोलबाक उचित चाभी सेहो बुझाबह।” बाहरोर एक मजदूर अपन दैनिक मजदूरीक हिसाब लऽ स्थानीय कार्यालय जाएबाक तैयारी करैत छल। ओकर दिनक न्याय एखन एहि शहरमे छल, दिल्लीमे नहि।

अनीश हलदर अण्डमानमे अपन नावक पुरान डोरी बदलैत छल, जखन रेवतीक पत्र ओकरा पहुँचल। ओ अदालतक बहसक पक्षकार नहि छल; पत्रमे रेवती लिखने छलीह जे २००४ क सुनामीक बाद अनीशक परिवारक पहचानक लम्बा संघर्षसँ ओ प्रशासनिक अभिलेखक त्रुटिक मूल्य बुझने छलीह। अनीश उत्तर लिखलक—“समुन्दर हमरा घर लऽ गेल, मुदा ओ दिनक पाछाँ समाज हमरा फेर नाव बनाबय सिखौलक। सरकारी कागज देरिसँ सुधरल, तखनहि पुनर्वासक किछु अधिकार व्यवस्थित भेल। मुदा हमर रोजक जीवन केवल अदालतक फाइलमे नहि रहैत अछि।” ओ छौड़ा अनीश आब स्वयं नावक मालिक छल, साँझमे स्थानीय बालकसभकेँ समुद्री धाराक पद्धति बुझबैत छल। रेवती ओकर पत्र पढ़ि समझलीह जे न्यायिक निर्णयक बादो एहि संघर्षसभसँ जुड़ल लोकक जीवन आगाँ बहैत रहत।

फैसला घोषित करबाक दिन न्यायालयक कक्षमे अनावश्यक हलचल नहि छल। न्यायमूर्ति देशमुख आदेशक आरम्भमे उल्लेख कएलनि जे ई एहि प्रकरणक सीमित अपीलीय निर्णय अछि; विवाद उच्च न्यायालयक अन्तरिम आदेशक किछु विधिक अर्थ, बैंकक तकनीकी

विस्तार आ प्रभावी समीक्षा सम्बन्धी अछि। न्यायालय विशेष अनुमति प्रदान कए सीमित अपील सुनने छल; एहि स्थितिमे ओकर समक्ष मूल अनुसूचित अपराधक सम्पूर्ण साक्ष्य, धनशोधन अभियोजनक अन्तिम तथ्य अथवा प्रत्येक प्रभावित व्यक्तिक अलग रोक-अधिकार उपलब्ध नहि छल। अतः आदेशक दायरा ओही संकीर्ण रहत। रेवती ध्यान देलीह जे निर्णयक पहिल पंक्तिए अदालत अपन शक्तिक सीमा स्वीकार करैत अछि। जे पाठक सभ मंचसँ सभ न्याय एके दिन माँगैत छथि, हुनकर अधैर्यक लेल ई भाषा कठिन होएत; मुदा विधिसम्मत ठहरावक ई आधार छल।

आदेशक पहिल सिद्धान्तमे खण्डपीठ स्पष्ट कएलक जे बैंकखातापर कोनो रोकक वैधानिक स्रोत आ सक्षम अधिकारीक अधिकार पहिने पहिचानल जाए। सामान्य साइबर-जाँचक अधिकार, विशिष्ट सम्पत्तिक वैधानिक कुर्की आ विशेष धनशोधन अभियोजनक स्वतन्त्र प्रक्रिया स्वतः एक नहि। दोसर सिद्धान्तमे कहल गेल जे अधिकृत निर्देशकेँ बैंकक तकनीकी प्रणालीमे लागू करैत समय रकम, अवधि, विषय आ आवश्यक प्रतिबन्धक सीमा जतेक आदेशमे निर्धारित अछि, ओकरा बिना पर्याप्त वैधानिक आधार अनावश्यक रूपसँ विस्तार नहि देल जाए। यदि प्रणालीमे एहन विस्तार आरम्भिक रूपसँ भऽ गेल हो तँ ओकर कारण, सुधारक क्रम आ तिथिक विश्वसनीय अभिलेख राखल जाए। अदालत एकर अर्थ जाँचक वैध तत्परता खत्म करब नहि मानलक; आवश्यकता अनुसार सक्षम प्राधिकारी लागू कानूनमे उपलब्ध नब समुचित आदेश प्राप्त करि सकैत अछि।

तेसर सिद्धान्तमे आदेश कहलक जे खाताधारककेँ अधिकार आ प्रक्रियाक उपयुक्त सीमा भीतर एतबा अर्थपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराओल जाए जे ओ रोकक स्वरूप बुझि सक्षम उपचार तक पहुँचि सकए। जखन वैध अनुसन्धानक कारण विशेष विवरण रोकि राखब आवश्यक हो, तखन सम्बद्ध विधि, न्यायिक निगरानी आ संरक्षणक शर्तक अनुसार सूचनाक सीमा तय हो; ‘गोपनीय’ शब्द अनिश्चित अस्पष्टताक स्वतः छूट नहि। चारिम सिद्धान्त प्रभावित व्यक्तिक गैरविवादित धन, प्रमाणित आजीविका आ आवश्यक भुगतानक वास्तविक प्रभावकेँ समीक्षा-प्रक्रियामे प्रासंगिक तथ्य मानबाक छल; मुदा अदालत घोषणा नहि कएलक जे एहन प्रत्येक रकम सभ परिस्थिति मे स्वतः मुक्त होयत। पाँचम सिद्धान्तमे संस्थासभकेँ विधिसम्मत

प्रतिवेदन, अनुपालनक स्पष्ट पथ आ समुचित समयपर कारणसहित समीक्षा सुनिश्चित करबाक कहल गेल—जतेक सम्बद्ध कानून अनुमति दैत अछि, ओहि सीमा भीतर।

आदेश अर्जुनक विशिष्ट स्थितिमे उच्च न्यायालयक अन्तरिम संरक्षणक मूल प्रभावमे हस्तक्षेप आवश्यक नहि मानलक। बैंकक सुधारल कार्यान्वयनमे गैरविवादित छात्रवृत्तिक उपयोग चलैत छल; विवादित चारि हजार दू सय रुपैया एखन संबंधित वैधानिक जाँच आ योग्य समीक्षाक अधीन सुरक्षित रहत। राज्य चाहे तँ नब विश्वसनीय तथ्यक आधारपर सक्षम वैधानिक मंचक समक्ष उपयुक्त आवेदन कऽ सकैत अछि। उच्च न्यायालय अपन लम्बित रिटमे शेष तथ्य, अनुपालन, पूर्वक असुविधाक संभावित उपचार आ पक्षकारक अन्य प्रार्थना स्वतन्त्र रूपसँ कानूनानुसार विचारत। न्यायालय साफ लिखलक जे एहि निर्णयसँ विक्रान्त सहगल, सौमित्र बंसल अथवा अन्य ककरो दोषसिद्धि अथवा निरपराधिता तय नहि होइत। विशेष न्यायालयक कार्यवाही, बचावक अधिकार आ अभियोजनक प्रमाणभार अपन-अपन वैधानिक सीमामे सुरक्षित रहत।

न्यायमूर्ति रज़ा अपन सहमतिक संक्षिप्त टिप्पणीमे लिखलनि जे बैंकक स्क्रीनपर देखाओल निषेध नागरिक लेल वास्तविक प्रतिबन्ध अछि; ओकर स्रोतक कागज, कार्यान्वयनक यन्त्र आ समीक्षा-पद्धति सार्वजनिक संस्थासभकेँ स्पष्ट करबाक दायित्वसँ मुक्त नहि करैत। मुदा तकनीकक प्रत्येक त्रुटि आपराधिक आशय नहि, आ न्यायालयक प्रत्येक अनुपालन आदेश दोषक अन्तिम निर्धारण नहि। ‘प्रमाणक कमीकेँ संदेहक पक्षमे स्वतः जीत आ राज्यक आशंकाकेँ अपराधक स्वतः सिद्धि—दूनू रूपमे नहि पढ़ल जाए,’ टिप्पणीक आशय छल। न्यायमूर्ति देशमुख एहि सीमित सहमतिक बाद अपील निपटौलीह। निर्णयक वास्तविक महत्त्व एतबा छल जे नागरिकक जीवन आ राज्यक शक्ति बीचक दुआरिपर ककरो उत्तरदायित्व अज्ञात नहि रहए।

बाहर पत्रकारसभक भीड़मे पहिल प्रश्न उठल—“सुप्रीम कोर्ट सरकारकेँ हारि देलक कि विद्यार्थीकेँ जीत?” रेवती उत्तर देलीह, “अदालत सीमित प्रश्न निपटौने अछि। अर्जुनक गैरविवादित छात्रवृत्तिक वर्तमान उपलब्धता सुरक्षित अछि; ₹४,२०० पर विधिसम्मत जाँच जारी रहत। बैंकक कारण, सीमा आ समीक्षाक स्पष्ट पथपर आदेश अछि। मूल आर्थिक

अभियोजनक दोषी-निर्दोष निर्णय एतय नहि भेल।” दोसर पत्रकार पुछलक जे दू हजार करोड़क कथित घोटाला समाप्त? रेवती कहलीह, “एहि अपीलमे एहन निष्कर्ष देल नहि गेल। सकल लेनदेन, दोहराओल प्रवाह आ अपराधजन्य स्रोतक अलग प्रश्न अलग मंचमे जाँचाधीन छथि।” नूर जतय एतेक उत्तर जस्ताक तस नहि, अर्थ सुरक्षित रखैत प्रकाशित कएलीह। चिल्लाइत भीड़क बीच सही सीमा बतौनिहार पत्रकारिताक काज एखन समाप्त नहि छल।

अर्जुन अदालतसँ बाहर निकलि मायकेँ फोन कएलक। “माय, हमर पढ़ाइ लेल जे पैसा खुलल छल से चलत,” ओ कहलक, “आ चारि हजार दू सय पर जाँच जारी रहत।” माय पुछलीह, “तखन तोहर नाम साफ भऽ गेल?” अर्जुन किछु क्षण बाद उत्तर देलक, “अदालत एतय हमरा अपराधी नहि घोषित कएलक; मुदा एहन सामान्य प्रमाणपत्र सेहो नहि देलक। जकरा जे गलत बुझाइत अछि, ओकरा आदेश पढ़बाक कहब।” माय फोनक दोसर कात चुप रहलीह। फेर पुछलीह, “परीक्षाक अगिला पेपर कखन अछि?” अर्जुन हँसल—“परसू।” ओहि हँसीक भीतर निरपराधिताक उद्घोषणा नहि, दिनचर्या घुरि भेटबाक एक छोट अधिकार छल। रेवती दूर ठाढ़ ओ हँसी सुनलीह आ बुझलीह जे सत्ताइस वर्षक न्यायिक यात्राक ई एक वास्तविक, सीमित प्रतिफल अछि।

एहि निर्णयक एक प्रति बैंकक आन्तरिक प्रशिक्षण-कक्षमे पहुँचल तँ सरबजीत कौर कनिष्ठ कर्मचारीसभक संग बैठकी कएलीह। एक नव नियुक्त कर्मचारी पुछलक, “हमरा एतबा लिखि देल जाए जे ककरो खातापर व्यापक रोक नहि लगायब, तँ भूल नहि होएत?” सरबजीत कहलीह, “एहन एक पाँतिक नियम फेर दोसर भूल पैदा करत। सक्षम आदेशमे यदि कानूनसम्मत कारणसहित व्यापक संरक्षण आवश्यक अछि तँ ओकरा कार्यान्वित करबाक पड़त। मुदा आदेश विशिष्ट रकम धरि सीमित अछि तँ मशीनक सुविधा लेल ओकरा बढ़ाएब अनुचित भऽ सकैत अछि। पहिने आदेश पढ़ू, अधिकार जाँचू, शंका हो तँ अधिकृत स्पष्टीकरण माँगू, आ जे सुधार भेल तकर समय लिखू।” कर्मचारी नोट कएलक। सरबजीत फेर कहलीह, “खाताधारक तोहर प्रशिक्षणक अभ्यास नहि; ओकर दवाई, फीस आ भोजन एतय जुड़ल भऽ सकैत अछि।” एहि छोट प्रशिक्षणक कोनो फोटोक अखबारमे जगह नहि भेटल, मुदा न्यायिक वाक्यक वास्तविक परीक्षण एहि काउण्टरसँ शुरू होइत छल।

ओम्हर जोधपुरमे विशेष न्यायालयक कक्ष खुलैत छल, लुधियानामे सुनीता नव वेतन-पञ्जी पर हस्ताक्षर करबैत छलीह, मरुधरमे रिद्धि शोधक एक गोपनीयता-संबंधी टिप्पणी जोड़ैत छलीह, अण्डमानमे अनीश समुद्रक पानि देखिकय मछुआरासभकेँ हवाक बदलावक संकेत दैत छल। मुकुलक ₹७,५०० एखन घुरल नहि छल; नीरजाक जाँच पूरा भेल नहि छल; विक्रान्तक अनुपस्थितिक विधिसम्मत प्रश्न शेष छल। शिवनारायण दरभंगाक पुरान बही फेर पेटीमे राखलनि। रेवतीकेँ ओ फोनपर कहला, “फैसला आइ भेल, मुदा न्याय काजमे उतरब काल्हि सँ शुरू होएत।” रेवती हुनका कहलीह जे ओ जिला अदालतक पुरान बरामदामे फेर जएबाक चाहैत छथि। ओतय एक नव वादी अपना हाथमे कागज लऽ प्रतीक्षा करैत अछि, आ भारतक अगिला गवाही एखन लिखल जएबाक अछि।

अध्याय ४० — जिला अदालतक बरामदा

दरभंगा, जोधपुर, लुधियाना, बेंगलुरु आ अण्डमान; मार्च–अप्रैल २०२७

मार्च २०२७ क एक भोर दरभंगाक जिला अदालतक पुरान बरामदामे धूप एहन ढंगसँ पसरल जे खम्भाक आधा हिस्सा उज्जर आ आधा हिस्सा अन्हार रहि गेल। बरसोंसँ बिछल पत्थरक पट्टीक बीच घासक बारीक जड़ देखाइत छल। बरामदाक एक कात नोटिस-पट्टपर कागज सटल छल, दोसर कात अधिवक्तासभक बस्ता, पानीक बोतल आ फाटक लग चाय बेचैत मोहनक केतलीक भाप छल। रेवती झा ओतय कोनो विजय-समारोह लेल नहि आयल छलीह। दिल्लीमे सर्वोच्च न्यायालयक निर्णय सुनलाक बाद हुनकर पहिल इच्छा छल—देखब जे न्यायालयक शब्द ओहि ठाम कोना पहुँचैत अछि जतय लोक अपन हाथसँ आवेदन लिखैत अछि। पिता शिवनारायण झा धीमे कदमसँ हुनका संग चलैत छलाह। ओ पहिल खम्भाक लग ठमकि कहला, “सन् २००० मे एतय एकटा बेंच टूटल छल। तखन न्यायालयक बड़का प्रश्न छल जे सरकारी जप्तीमे नाम के लिखलक। आइ एतय कम्प्यूटर अछि, मुदा बेंच फेर ओहने डगमगाइत अछि।” रेवती बैठबाक पहिने बेंचक एक पयर नीचाँ पड़ल ईंट ठीक कएलीह।

ओहि बरामदामे एक नव युवक फाटल फाइलक ऊपर हथेली रखने ठाढ़ छल। ओकर नाम श्यामनन्दन मण्डल छल; ओ मनीगाछीक एक छोट कृषि-उद्यममे काम करैत छल, जतय सुखाओल मखानाक पैकेट बनैत छल। उद्यमक मालिकसँ ओकर वेतनक बकाया विवाद चलैत छल, मुदा आजुक आवेदनक विषय अलग छल—जन्म-तिथिक दू भिन्न प्रविष्टिक कारण ओकर स्वर्गीय माएक नाम जमीनक उत्तराधिकार-संबंधी राजस्व अभिलेखमे गलत चढ़ि गेल छल। एक लिपिक ओकरा कहलकैँ जे पहिने आवश्यक प्रमाण लऽ सम्बन्धित कार्यालयमे सुधारक अर्ज़ी देअ; जिला अदालतमे पहुँचि जाएब स्वयं उत्तर नहि अछि। युवक निराश होइत फाइल मोड़लक। रेवती ओकरा पुछलीह, “अहाँकेँ के कहल जे ईएह कक्ष पहिल मंच अछि?”

ओ एक मोबाइल संदेश देखौलक—“कोर्ट जाइए, सब ठीक होगा।” शिवनारायण सन्देश पढ़ि मुस्की नहि देलनि। “पहिने जाँचू जे जे निर्णय चाहैत छी ओकर अधिकार ककरा अछि,” ओ कहला।

रेवती युवककेँ अदालतक भीतरी सूची देखौलीह, मुदा एकदम आवेदन लिखबाक निर्देश नहि देलीह। ‘उत्तराधिकारक प्रमाण आ राजस्व प्रविष्टिक सुधार हमेशा एके प्रक्रिया नहि,’ ओ बुझौलीह। “अहाँक वास्तवमे कोन अधिकार प्रभावित भेल अछि, कोन अधिकारीक लिखित निर्णय भेटल अछि, आ कोन वैधानिक उपचार उपलब्ध अछि, पहिने से बुझू। काजक बकाया दावा अलग अछि; ओकरा जमीनक कागजसँ जोड़ि एक अनिश्चित मुकदमा नहि बनाउ।” श्यामनन्दन कहलक, “हमरा जतेक जगह पठाओल गेल, सभ ठाम कहल गेल जे दोसर ठाम जाउ।” रेवती अपन पन्नापर दू कार्यालयक नाम लिखलीह आ स्थानीय विधिक सेवा-केन्द्रमे सहायता उपलब्ध होयबाक जानकारी देलीह, जाहिसँ पात्रता आ लागू प्रक्रियाक पुष्टि भऽ सकए। ओ ककरो परिणामक आश्वासन नहि देलीह। युवक पहिल बेर प्रश्नकेँ अपन शब्दमे अलग-अलग लिखबाक लेल बैसल।

एहि बीच बरामदाक दोसर कात नीलकान्त साहक बेटा अमरेश एक छोट थैला लऽ आयल। नीलकान्तक बाल पातर भऽ गेल छल, आ कारोबारक मूल घर आब अमरेश देखैत छल। ओ रेवतीकेँ पहचानि कहलक, “अहाँ हमरा पहिने सेहो एतय देखने छलहुँ, मुदा हम तखन स्कूलमे छलहुँ। बाबूक पुरान मामला एतेक वर्ष बाद कोनो अखबार नहि पूछैत, मुदा जखन व्यवसाय लेल नब उधारी माँगैत छी, पुरान नाम फेर उठि जाइत अछि।” शिवनारायण एक पलक ओकरा देखलनि। २००० क जप्त बही आ २००४ क मिश्रित निर्णयक स्मृति हुनकर मनमे सहज खुलि गेल। ओ कहला, “अदालत जकर दोष प्रमाणित मानलक, ओकरा ओही सीमा धरि पढ़बाक चाही। जे आरोप सिद्ध नहि भेल, ओकरा पिढ़ीसँ पिढ़ी संचित ऋण बना देब उचित नहि।” अमरेश पूछलक जे अतीतक सामाजिक छाया हटेबाक कोनो कागज भेटत कि नहि। रेवती उत्तर देलीह, “कागज पूरा इतिहास नहि बदलि सकैत, मुदा निर्णयक सही प्रति, ओकर सीमा आ बादक वास्तविक आचरण गलत कथाकेँ चुनौती देबामे सहायक होइत अछि।”

नीलकान्त अपन थैलासँ एक छोट पुस्तक निकाललनि। ओ अपन कारोबारक हिसाब सँ सीखल गलतिसभक कथा गामक युवकसभक लेल लिखबौने छल; भाषा ठेठ, पन्ना कम, बीच-बीचमे हिसाबक उदाहरण। ओ कहला, “जिनगीक एक भागमे हम जे कएल, ताहि लेल उत्तर देबाक पड़ल। दोसर भागमे जे नहि कएल, ताहि लेल सभ दिन उत्तर देब पड़ल। हमर बेटाकेँ तेसर भाग भोगय नहि पड़य।” शिवनारायण पुस्तक लेलनि, मुदा ओतहि ठाढ़ होइत नीलकान्तक पाछिला दोषपर क्षमा-पत्र नहि लिखलनि। हुनकर बीचक सम्मान एतय छल जे दुनू लोक अपन इतिहासक असुविधाजनक अंश नहि छिपबैत छल। रेवतीकेँ लागल जे सत्ताइस वर्षक पूरा यात्रा एहि खम्भाक छाँहमे किछु देर एकत्र भऽ गेल—अपराधक उचित उत्तरदायित्व आ अनुचित दीर्घकालीन कलङ्कक बीचक अन्तर।

दरभंगाक ताहि भोरक समय जोधपुरमे अर्जुन मीणा अपन छात्रावासक मेजपर चारिटा कागज राखने छल। पहिल बैंकक वर्तमान विवरण, दोसर २०२६ क आरम्भिक व्यापक रोकक स्क्रीन-छवि, तेसर उच्च न्यायालयक अन्तरिम आदेश, चारिम सर्वोच्च न्यायालयक सीमित निर्णयक प्रमाणित प्रति। ओकर मित्र तेजपाल कहलक, “एखन तँ दिल्लीक न्यायाधीश कहि चुकल छथि, तखन ₹४,२०० तुरन्त किएक नहि भेटल?” अर्जुन उत्तर देलक, “जतए जाँच जरूरी अछि, ओतए न्यायालय खाताक सभटा हिसाबक अन्तिम निर्णय नहि देलक। गैरविवादित छात्रवृत्ति चलैत अछि। विवादित रकम लेल जे निर्धारित समीक्षा अछि, ओहिमे मूल स्रोतक नव कागज देब पड़त।” तेजपाल पुछलक, “एतेक घुमावक बादो की फायदा?” अर्जुन परीक्षा-पुस्तक बन्द करैत कहलक, “कमसँ कम आब बैंक ई नहि कहैत अछि जे पूरा खाता एकहि क्लिकमे बन्द अछि आ ककरो जिम्मेवारी नहि।” ओकर दिनक पहिल काज गणितक अभ्यास छल, अदालतक आदेश नहि।

सरबजीत कौर बैंकक क्षेत्रीय अनुपालन कार्यालयमे ओहि मामला लेल बनल सुधार-पञ्जी खोललीह। ओतय प्रत्येक आवेदनक संग वैधानिक स्रोतक विवरण, रोकक लागू तकनीकी सीमा, जाँचक अधिकृत सम्पर्क, सूचना देबाक सम्भव सीमा आ अगिला समीक्षाक तिथि अलग कोष्ठमे राखल जाइत छल। एक युवा प्रबन्धक कहलक जे अत्यधिक कागजसँ कामक गति कम भऽ रहल अछि। सरबजीत उत्तर देलीह, “पहिने अज्ञात रोकक शिकायत खोजबामे जे

दस दिन लागैत छल, ओकरा की हिसाबमे राखलहुँ? एक गलत रोक सुधारबाक खर्च मशीनक परदेपर नहि देखाइत, मुदा प्रभावित परिवारक खर्चमे देखाइत अछि।” ओ अधिकारीसभकेँ कहलीह जे सर्वोच्च न्यायालयक आदेशकेँ सभ बैंकपर लागू नब एकरूप दण्ड-विधान बुझब भ्रम होएत; प्रत्येक रोक संबंधित कानून, आदेश आ वास्तविक तथ्य अनुसार परखल जएत। प्रशिक्षणमे पहिल उदाहरण अर्जुनक छल, मुदा गोपनीय खाता-सङ्ख्या आ व्यक्तिगत संपर्ककेँ शिक्षा-सामग्रीसँ हटाओल गेल छल।

चारि हजार दू सय रुपैयाक भुगतानक स्रोतपर अर्जुनक आवेदनमे एक नब दस्तावेज जुड़ल। महाविद्यालयक स्वीकृत छात्र-सेवा कार्यालय बतौलक जे ओ तिथिमे एक डिजिटल मंच द्वारा छात्रावासक सुरक्षा-जमा सम्बन्धी वापसीक सामूहिक प्रक्रिया चलल छल। मुदा केवल संस्था द्वारा लिखल पत्र निर्णायक नहि छल। जाँच अधिकारीक निर्देशपर अधिकृत बैंक-शाखा मूल भुगतान-सन्देशक सङ्केत, तत्काल पूर्ववर्ती खाता आ वापसी-अनुमोदनक क्रम अलग मिलौलक। एक सहयोगी कर्मचारी द्रुत निष्कर्ष देब चाहलक—“जमा वापसी अछि तखन शुद्ध।” नीरजा राठौड़ फोनपर कहलीह, “कागजक दावाक सत्यापन करू। जे भुगतान-पथ मिलल नहि अछि ओकरा साफ लिखू। वैध होयबाक समर्थन आ अपराधक ज्ञान नहि होयबाक प्रश्न एकटा सतहपर नहि पड़ैत।” ओ छात्रक जीवनक असुविधा जानैत छलीह, मुदा सहानुभूतिक कारण प्रमाणक पद्धति छोड़बाक चाहना हुनका नहि छल।

अर्जुनक परिवार राजस्थानक एक छोट कस्बामे रहैत छल। ओकर माय जसोदा फोनपर पूछैत छलीह जे लड़का रोज बैंकक चक्कर काटैत अछि कि पाठ पढ़ैत अछि। अर्जुन कहलक जे ओ आब सप्ताहमे केवल एक दिन कार्यालयक स्थिति पूछैत अछि; बचल दिन पुस्तकालय जाइत अछि। माय हँसि कहलीह, “हमरा अदालतक कागज नहि बुझाइत, मुदा ई बात बुझाइत अछि जे तूँ फेर पढ़ि रहल छह।” पिता श्यामलाल ओकर परीक्षा-शुल्कक रसीद देखिकय पुछलनि जे पुरान रोकक कारण देरी भेल शुल्कपर कोनो उपयुक्त उपचार अछि कि नहि। अर्जुन ओ प्रश्न अधिवक्ता शालिनी सोलंकी लग अलग भेजलक। ‘जतए वास्तविक क्षति भेल अछि,’ शालिनी लिखलीह, “ओकर प्रमाण, कारण-सम्बन्ध आ उपलब्ध मंच अलग देखबाक

पड़त। चारि हजार दू सयक वापसी आ देरीक सम्भावित क्षतिपूर्ति एकहि आदेशक स्वतः परिणाम नहि।” एहि उत्तरमे जल्दीक सान्त्वना कम छल, मुदा झूठ आशा सेहो नहि।

अप्रैलक पहिल सप्ताह अधिकृत समीक्षा-प्राधिकारीक लिखित आदेश आयल। उपलब्ध प्रमाणित भुगतान-विवरण, संस्थाक मूल वापसी-पञ्जी आ जाँचदलक तथ्य-टिप्पणी मिलाकय अर्जुनक निर्दिष्ट ₹४,२०० पर पहिले लगाओल संरक्षण जारी रखबाक पर्याप्त वर्तमान आधार नहि भेटल। आदेश ताहि सीमित रकमक रोक हटेबाक निर्देश देलक; यथावश्यक भविष्यमे नब तथ्यपर कानूनसम्मत कार्यवाहीक सम्भावना अलग सुरक्षित रहल। बैंक आदेश लागू कएलक आ खाताक नब विवरणमे रकम उपलब्ध देखाइत भेला पर अर्जुन ओकर फोटो मित्र-समूहमे नहि डाललक। ओ केवल मायकेँ कहलकैँ, “एहि प्रविष्टिक रोक हटि गेल। ई एहि रकमक समीक्षा अछि; हमर नामक सन्दर्भमे सभ मुकदमाक अन्तिम प्रमाणपत्र नहि।” माय पुछलीह, “तखन किताब किनबह?” अर्जुन उत्तर देलक, “पहिने प्रयोगशालाक शुल्क भरब, फेर किताब।” दुनू काजक बीच ओकर अपन भविष्य फेर थोड़ा स्पष्ट भेल।

जोधपुरमे दोसर परिवार एहि प्रगतिसँ नहि बदलल। मुकुल मीणाक गमल ₹७,५०० अबहुँ एक अलग शिकायत-पथपर छल। ओकरा ओ रकम एक तथाकथित रोजगार-प्रशिक्षण शुल्कक नामपर देबाक लेल बहकाओल गेल छल, आ जे मध्यवर्ती खाता पेमेण्ट-पथमे देखाइत छल ओकर धारकक वास्तविक भूमिका एखन विवादित छल। मुकुलक बहिन रानी पुठ्ठाक पुलक नब मॉडल बनबैत-पाछाँ पुरान कापी बाहर निकालि पुछलक, “भैया, भैया, पुल तो बनल, पइसा पार किएक नहि पहुँचल?” मुकुल मुस्की दैत कहलक, “एक बैंकसँ दोसरा बैंकक रास्ता मिल गेल अछि, मुदा जे गोटे लोककेँ पैसा देबाक आशा दऽ ई शुल्क लेलनि, हुनकर जिम्मेवारी सिद्ध करबाक अछि।” रानी कापीमे तीन शब्द लिखलक—शिकायत, जाँच, वापसी। मुकुल ओकरा चौथ शब्द जोड़य कहलकैँ—समय।

मुकुलक शिकायत पर सम्बन्धित प्राधिकारी किछु पृथक खाताक लेनदेन-श्रृंखला सुरक्षित कएलक। एक सेवा-प्रदाता अपन अभिलेखमे ₹३,००० क अपूर्ण आदेश-पुनर्भुगतानक स्वीकार कएलक; नियत दावा-परीक्षण आ सत्यापन पछाति ओहि अंशक वापसीक अनुमति देल गेल। बाकी ₹४,५०० पर दावाक परीक्षण जारी रहल; दोषी व्यक्ति, नागरिक क्षतिपूर्ति आ

आपराधिक कार्यवाहीक प्रश्नसभ स्वतन्त्र छल। मुकुल घर पहुँचि ₹३,००० क सन्देश मायकेँ देखौलक। ओ कहलीह, “एहि पैसासँ रानीक परीक्षा-शुल्क देब?” मुकुल उत्तर देलक, “देब। मुदा शेष रकमक पावती नहि फेकब।” ओ पहिल बेर बुझलक जे आंशिक राहतक अर्थ पूरा अन्याय समाप्त नहि, आ अधूरा दावाक अर्थ पहिल राहत व्यर्थ सेहो नहि। एक दिनमे ओकर चुप्पी पूर्ण उत्सवमे नहि बदलल; ओ अपन बहीमे सही शेष लिखबाक काम करैत रहल।

मुकुलक पिता एक सादा हिसाबक कापीमे ₹७,५०० लिखि ओकर नीचाँ ₹३,००० घटौलनि। बचल ₹४,५०० क आगाँ ओ प्रश्नचिह्न नहि, तारीख लिखलनि। पुत्र पुछलक, “बाबूजी, एतेक साल अहाँ हर बकाया लग तारीख लिखैत रहलहुँ?” पिता कहला, “तिथि लिखलासँ पैसा नहि घुरैत, मुदा हमरा याद रहैत अछि जे हम ककरासँ कखन की माँगलहुँ। जे दिन पूरा हिसाब भेटि जाए, तखन प्रश्नचिह्न लगायब बन्द करब।” रानी अपन पुलक मॉडलमे एकटा ओर छोट खम्भा जोड़लक। ओ कहलक, “पुलमे एक कात भुरका रहि गेल तखन सगर पानि ओकरा सँ नहि निकसैत।” सभ हँसल, मुदा मुकुल बुझलक जे कानूनी प्रक्रियाक भाषा आ बहिनक खेलक भाषा एकटा दृश्यक दो अलग बोध अछि। एकर अर्थ ई नहि जे प्रत्येक परिवार अपन वकील बनि जाए; अर्थ केवल जे अपन हानिक सही परिमाण छोड़ि नहि दे।

जोधपुरक विशेष न्यायालयमे अप्रैलक एक दुपहर पुनर्गणनाक तकनीकी कागज जमा भेल। न्यायाधीश संध्या पारीक समक्ष अभियोजन-अधिवक्ता अभय अवस्थी, बचावक ईरा सक्सेना आ निर्धारित विधिक अनुमति अनुसार उपयुक्त अभिलेखसहित उपस्थित तकनीकी विशेषज्ञसभ अपन-अपन स्थानपर छलाह। अनुराधा सेनक वित्तीय मिलानमे तीन स्तम्भ पहिने सँ छल, मुदा आब चारिम स्तम्भमे ‘प्रविष्टिक स्रोत तक पुनः पहुँचबाक मार्ग’ लिखल गेल। एक सहयोगी एहि नव स्तम्भकेँ अनावश्यक मानैत छल। अनुराधा कहलीह, “जखन हम एक बैंकसँ दोसरा बैंकक बीच ₹१२.४० लाखक मार्ग चिन्हित करैत छी, तखन ई सेहो कहबाक चाही जे मूल रकम पहिने कोन खातामे आयल, ओहिसँ पहिले की, आ कतेक प्रवाह खाली आन्तरिक समायोजन छल। लाख-सैकड़ा फाइलक जोड़ समाचारमे आकर्षक अछि; न्यायालयमे स्रोतक सूत चाही।” अदालतकेँ पहिल बेर किछु प्रविष्टि अलग पहिचानयोग्य रूपमे देखबाक अवसर भेटल, मुदा आपराधिक स्रोतक शेष प्रश्न नहि मिटायल।

अभय अवस्थी एक बैंकक प्रमाणित आगमन-विवरण प्रस्तुत करैत कहला जे निर्दिष्ट सेवा-कम्पनीक खाते धरि ₹१२.४० लाख पहुँचल, तकर बाद आंशिक रकम दोसर सम्बन्धित संस्थामे गेल। ओ एतबा कहलनि जे ई प्रवाहक तथ्य अधिकृत अभिलेखसँ समर्थित अछि, मुदा जखन प्रतिरक्षा प्रश्न कएलक जे उक्त रकम प्रशिक्षण-शुल्कक धोखाधड़ीसँ जुड़ल छल वा वैध सेवा-मूल्य छल, अभय ओकर मूल स्रोतक अतिरिक्त साक्ष्यक चर्चा कएलनि। ईरा फाइलसँ स्थल-उपस्थिति, कर-चालान आ सेवा-दिवसक सूची उठा ली। “भुगतान भेल अछि,” ओ कहलीह, “मुदा भुगतानक वास्तविक प्रयोजन विवादित अछि। एकहि कम्पनीक दू अनुबन्धमे समयक मेल होयब स्वयं अपराधजन्य निधिक निष्कर्ष नहि।” संध्या पारीक लिखलनि जे भुगतानक अस्तित्व, प्रतिफलक वास्तविकता, स्रोत-अपराधसँ सम्बन्ध आ अभियुक्तक चेतन भूमिका चार अलग जाँच-पथ अछि। बरामदामे ठाढ़ एक पत्रकार पूरा वाक्य नोट करबाक कोशिशमे अपना फोनक स्क्रीन दो बेर बदलेलक।

नीरजा राठौड़ दायर जाँच-प्रगति रिपोर्टमे स्पष्ट कएलीह जे मूल अनुसूचित अपराधक पञ्जी आ धनशोधन अभियोजनक अभिलेख एकमे विलीन नहि कएल गेल अछि। पहिलमे प्रशिक्षण-शुल्क लेबाक शिकायत, कथित मिथ्या आश्वासन, विभिन्न व्यक्तिक कथित भूमिका आ तकर परिणामक परीक्षण चलैत छल; दोसरमे जँ अपराधजन्य सम्पत्ति पहिचानयोग्य भेटल, तँ ओकरा लुकाएब, कब्जामे रखब, उपयोग अथवा निर्मल देखेबाक कथित प्रक्रियासँ किनका जोड़ल जा सकैत अछि, से आवश्यक विधिक मानकपर परखल जाइत छल। पुलिस निरीक्षक सीमा चौधरी अपना क्षेत्रक दू साक्षीक बयानक प्रमाणित स्थिति अलग पठौलीह। नीरजा अपन कनिष्ठकेँ कहलीह, “अपराधक स्रोत अस्पष्ट अछि तँ धनशोधनक आख्यान केवल कम्पनीसभक विदेशी नामपर नहि टिकत। आ स्रोतक शिकायत सिद्ध होएबाक संभावना सँ अकेले प्रत्येक निदेशकक मानसिक दशा सिद्ध नहि भऽ जाइत।” एहि भेदक कारण अनुसन्धान द्रुत नहिं, मुदा अधिक भरोसेमन्द भेल।

एक पृष्ठपर फेर ‘₹२,००० करोड़’ लिखल छल। अभियोजन ओकरा मूल प्रस्तुत कुल परिसंचरणक ऐतिहासिक सारांश बतौलक, आरोपित धनक अन्तिम परिमाण नहि। अनुराधा प्रतिवेदनमे एक अनुकरण देलीह—जँ एकहि मूल रकम पहिने मुख्य कम्पनीमे, फेर आन्तरिक

सेटलमेण्टमे, फेर सेवा-शाखामे, फेर फेर मुख्य कम्पनीक समायोजनमे चलल, तँ सकल प्रवेश-निर्गमन जोड़िते अनेक बेर गनती होएत। एहि दोहरावकेँ घटेलाक बादो किछु प्रविष्टिक स्वतंत्र स्रोत स्पष्ट नहि भेल छल; तेँ बड़ संख्या घटला मात्रसँ ओकर सभ रकम वैध ठहरि नहि सकैत। संध्या पारीक पुछलीह, “अहाँ जे घटौलहुँ, ओकर हर घटाव पहिचानयोग्य अछि?” अनुराधा कहलीह, “जतय बैंकक मूल पहचान पूर्ण अछि, ओतय हँ। जतय अभिलेख आंशिक अछि, ओतय अनुमानक चिन्ह देल अछि।” न्यायालय ओहि अनिश्चित हिस्साकेँ स्पष्ट रंगक पेंसिलसँ नहि, लिखित टिप्पणीसँ चिह्नित करबाक निर्देश देलक—किएक तँ रंगक अर्थ छपल प्रतिमे बदलि सकैत छल।

सौमित्र बंसल अपन वकीलक संग कक्षमे बैसल छल। ओकरा लग किछु वास्तविक सेवा-पावती छल, मुदा चारि स्वीकृति-पत्रमे सँ एक पन्नाक आधार-रिपोर्ट नहि भेटल। ईरा पुछलीह, “अहाँ जाहि बैठकमे भुगतान स्वीकृत कएलहुँ, ओतय काज पूरा भेल कहबाक सूचना के देलक?” सौमित्र एक सहायकक नाम लेलक, फेर कहलनि जे ओहि समयसँ सहायक कम्पनी छोड़ि चुकल। “तखन कागज कहत,” ईरा कहलीह, “आ यदि कागज नहि अछि तँ जे नहि मालूम से स्वीकार करू। बादमे गढ़ल स्मृति अभिलेखक खाली ठाम नहि भरत।” सौमित्र अपन बेटी द्वारा बनाओल तीन बादलवला चित्र फाइलक भीतर राखने छल। ओहि चित्रकेँ देखिते ओकरा घरमे काव्याक प्रश्न याद आयल—“जे निर्णय अहाँ नहि पढ़ि कएलहुँ, ओकर जिम्मेदारी कतय शुरू होइत अछि?” ओकरा बेसी भय दण्डक कल्पनासँ नहि, अपन हस्ताक्षरक वास्तविक अर्थ कहबाक घड़ीसँ होइत छल।

काव्या बंसल घरमे बेटीकेँ विद्यालय पठबैत कहलीह जे पिता अदालतमे छथि, मुदा परीक्षामे बच्चीक प्रश्नपत्र पिताक अपराधक प्रमाणपत्र नहि। विद्यालयक एक अभिभावक समूहमे खिचल पुरान फोटो फेर साझा भेल छल। काव्या हुनका कानूनी धमकी पठेबाक बदला विद्यालयसँ बच्चासभक बीच निजी परिवारक आरोपक चर्चा रोकबाक विनम्र आग्रह कएलीह। विद्यालय लिखित रूपमे सहमत भेल जे ककरो बच्चाक पढाइ आ सुरक्षा पर असम्बद्ध आरोपक असर नहि देल जायत। ओहि साँझ सौमित्र घर लौटल तँ बेटी पुछलक, “अदालत अहाँसँ साँच पुछलनि?” पिता कहलक, “एखन किछु साँच परखल जा रहल अछि; हमरा सेहो जे बुझल

अछि से साफ कहबाक अछि।” बेटी उत्तर देलक, “तखन काल्हि हमर चित्र देखू।” ई छोट साधारण आग्रह सौमित्र लेल राहत नहि, दायित्व छल—सच्चा उत्तर देलाक पाछाँ सेहो जीवनमे उपस्थित रहब।

विशेष न्यायालयक विचारण-पूर्व प्रक्रियामे एक कनिष्ठ बिल-समन्वयक कर्मचारीक सम्बन्धमे प्रस्तुत दस्तावेज आ पक्षकारक तर्कक पृथक परीक्षण भेल। ओकर विरुद्ध मात्र एक संकलन-पञ्जीमे नाम आ एक वैधानिक वेतन-प्राप्तिक तथ्य भेटैत छल; कथित अपराधजन्य सम्पत्तिक विशिष्ट उपयोग अथवा प्रक्रियासँ जोड़बाक अपेक्षित सामग्री एहि चरणमे प्रस्तुत नहि छल। न्यायालय उपलब्ध प्रक्रियागत मानक अनुसार ताहि व्यक्तिपर आरोप निर्धारित करबाक आधारक अभावक सीमित निर्णय देलक; निर्णयक कारण लिखल गेल, आ अन्य व्यक्तिक विरुद्ध जाँचक दायरा आपोआप नहि घटल। कर्मचारीक पत्नी अदालतसँ बाहर निकलि पुछलीह, “आब तऽ सभ खत्म?” अधिवक्ता कहलनि, “ई आदेश एहि आरोप आ एहि चरणक अछि। अधिकृत प्रति राखू; जे उचित वैधानिक मार्ग होय, ओकरा जानू।” पत्नी अपन बच्चाक फीस-पत्र निकाललक। ओकरा लग आजुक परिणामक अर्थ छल जे परिवार अपन अस्थायी भयक एक अध्याय बन्द कऽ सकैत अछि, सभ राज्यक प्रत्येक कार्यवाहीक बारेमे घोषणा नहि करि सकैत।

सौमित्रक सम्बन्धमे अदालत किछु निर्दिष्ट आरोपक प्रथमदृष्टया परीक्षणक लेल अगिला प्रक्रिया निर्धारित कएलक। साक्ष्यक मूल्यांकन, प्रतिपरीक्षण आ अन्तिम निर्णयक घड़ी एखन आगाँ छल। अभियोजनकेँ सम्बद्ध मूल दस्तावेज प्रस्तुत करबाक, बचावकेँ विधिसम्मत अवलोकनक आ पक्षकारसभकेँ लागू कानून अनुसार आपत्ति उठेबाक अवसर सुरक्षित रहल। बरामदामे एक न्यूज-चैनलक युवक अपन साथीकेँ कहलक, “आरोप तय करबाक मतलब दोष सिद्ध?” नूर जतय ओहि शब्द सुनि बीचमे एतबे कहलीह, “नहि। ई चरणक अर्थ अलग अछि। तिथि आ आदेशक भाषा पढ़ू।” युवक झुँझलाकय कहलक, “आम दर्शक एतबा भेद नहि बुझत।” नूर उत्तर देलीह, “तखन हमसभक काज बुझेनाइ अछि, दर्शककेँ गलत कहबाक स्वतंत्रता देनाइ नहि।” ओ एहि बेर समाचारक शीर्षकमे किसी एक अङ्क अथवा एक चेहराकेँ बिकाउ प्रतीक नहि बनौलीह।

विक्रान्त सहगल विदेशमे छल। वैधानिक समन-सेवाक लिये जे अधिकृत परस्पर-सहायता आ सक्षम चैनल उपलब्ध छल, ओकरा माध्यमसँ भेजल पत्रक स्थिति न्यायालयमे पृथक रखल गेल। एक प्रशासनिक पुष्टि भेटल जे निर्दिष्ट पतेपर कागज पहुँचल, मुदा प्राप्तकर्ताक पहचान आ विधिसम्मत सेवा पूर्ण होयबाक प्रश्न पर पक्षकारसभक दलील शेष छल। न्यायाधीश संध्या पारीक केवल ‘विदेशमे अछि’ सुनिकय दोषसिद्धि अथवा प्रक्रिया-संबंधी कठोर अनुमान नहि कएलीह। विक्रान्त अपन अधिवक्ता जयन्त मल्होत्रासँ पूछलक, “हम जँ भारतीय न्यायालयक आदेशक उत्तर देबाक चाही तँ कोन मान्य तरीका अछि?” जयन्त उत्तर देलक, “एहि चरणमे ठीक प्रक्रिया आ न्यायालयक निर्देश जाँचब; विदेशक कार्यालयसँ भेजल हर ईमेल स्वतः उपस्थितिक समतुल्य नहि।” विक्रान्त फोन काटि अपन लेखा-कक्षमे गेल। ओकर लग किछु कागज अबहुँ अनखुलल छल; ओ हुनका नीक नहि लगैत छल।

फ़रीदा अपन कार्यालयमे पुरान परियोजनाक ईमेल-संग्रहक अधिकृत पुनर्प्राप्ति परिणाम पाबि चुकल छलीह। चालीस दिनक सेवा-स्वीकृति दस्तावेज भेटल; शेष बीस दिनक लेल एक कार्यक्रम-कैलेंडर आ यात्रा-व्ययक संकेत भेटल, मुदा ग्राहकक पूर्ण स्वीकृति-पत्र नहि। ओ अपन वरिष्ठकेँ लिखलीह जे उपलब्ध सामग्रीक भीतर जकर समर्थन अछि, ओकरा समर्थित कहब; जकर केवल सङ्केत अछि ओकरा ‘अवधारणा’ नहि बनाउ। वरिष्ठ कहलक, “इतना सावधान रहलीह तँ कम्पनीक नाम बिगड़त।” फ़रीदा उत्तर देलीह, “गलत बात ठीक लिखलासँ नाम बाँचत? आ सही बात छिपेलासँ कम्पनी बचत?” ओकर प्रश्नमे क्रान्तिक उद्घोष नहि छल। भाईक छात्रावास शुल्कक तिथि निकट छल; नौकरीक भय वास्तविक छल। तैयो ओ अधिकृत अभिलेख-संरक्षण नीति अनुसार मूल डेटा सुरक्षित रखलीह, आ जे विधिसम्मत माँगल जायत तकर निर्धारित माध्यमसँ सहयोग करबाक सहमति देलीह।

मुम्बईमे सुदर्शन सहगल अपन पुरान गोदामक एक कोठरी बन्द करबैत छलाह। ओथय लकड़ीक पेटीपर अभीयो ‘एस-१९’ चिह्न देखाइत छल। हुनका याद छल जे एक बेर खाली पेटीक चलान भरल पेटीक संख्यासँ मेल खा गेल छल; तखन आर्थिक हानि भेल छल, मुदा कर्मचारीकेँ अपराधी ठहराबाक पहिने हुनका पता लगाबय पड़ल जे गलत माल-चिह्न कोन पारीमे चढ़ल। आब बेटाक कम्पनीक विस्तार एहि पुरान गलतीसँ बहुत पैघ छल, आ

सार्वजनिक प्रश्न सेहो बेसी कठोर। ओ विक्रान्तकेँ पत्र लिखलनि—“घरक दुआरि अहाँ लेल खुलल अछि। मुदा जे अभिलेख अदालत माँगत, ओकर साँचक दुआरि बन्द नहि करू। परिवारक प्रेमक कारण सत्य बदलि नहि जाइत।” पत्र पठाकय ओ कोठरीक चाभी अपन पोता आयानक हाथमे देलनि, जे गोदामक इन्वेण्टरी-सूची नव सिरेँ बनबैत छल। पीढ़ीक बीच विश्वास केवल धन नहि, गलतिसँ सीखबाक सामर्थ्य सेहो देब चाहैत छल।

अनुराधा सेन एक रात्रि रिपोर्ट बन्द करैत बरामदाक छोट झरोखासँ उजास देखलीह। हुनकर सहयोगी पुछलक जे जे केस एतेक बहुस्तरीय अछि, तकर अन्त कखन? ओ कहलीह, “लेखा-काजक एक चरण पूरा भेल। अब अदालतमे स्रोत, साक्षी, बचाव आ अन्तिम न्यायिक निर्णयक स्वतंत्र चरण छथि। हम विशेषज्ञ रूपमे जे कहि सकैत छी, ओकरा अदालतक निर्णय बनाकय नहि लिखि सकैत।” सहयोगी फेर पुछलक, “तखन अहाँक मेहनतक मूल्य की?” अनुराधा एक सही कएल तालिका देखौलीह—दूहराओल प्रविष्टिक एक रेखा काटल गेल छल, मुदा मूल रकमक मार्ग एखन देखाइत छल। “मूल्य एतबा जे गलत संख्या ककरो निर्दोष नहि बनाओत, आ सही संख्या ककरो प्रमाणित अपराध लुकेबाक ढाल सेहो नहि बनत।” ओ टेबुलक बत्ती बन्द कएलीह। कागजपर कोनो विजय-रङ्ग नहि छल; मात्र संशोधित हिसाबक निश्छल कठिनाई छल।

नीरजा राठौड़ एही सप्ताह एक गुमनाम सूचनाकेँ दर्ता कएने छलीह, जाहिमे एक कथित प्रमुख लाभार्थीक नाम छल आ ओकर विरुद्ध बहुधा जाति-सामुदायिक परिचयक आधारपर शंका उठाओल गेल छल। ओ प्राप्ति-पञ्जीमे सूचना सुरक्षित रखलीह, मुदा सहयोगी अधिकारीकेँ कहलीह जे परिचय, शहर अथवा समुदाय स्वयं वित्तीय दोषक प्रमाण नहि। “जकरा विरुद्ध विशिष्ट लेनदेन, प्रामाणिक स्रोत आ जानबूझि भूमिका भेटत, ओकरा जाँचमे आनू,” ओ कहलीह। “अनाम सन्देशक शब्दक भार सँ ककरो गिरफ्तारीक औचित्य नहि बनैत।” सहयोगी पुछलक, “यदि सूचना सही हो?” नीरजा कहलीह, “तखन प्रमाणसँ ओकर सत्यापन होयत। यदि झूठ हो तखन हम ककरो जिनगीक क्षति किएक करब?” ओ फाइलकेँ बादक परीक्षणक लेल रखलीह, मीडिया विज्ञप्तिक लेल नहि।

लुधियानामे अप्रैलक गरमी कारखानाक टिनक छतपर बहुत पहिनेसँ उतरि चुकल छल। सुनीता पासवान अपन सहायता-केन्द्रक कक्षमे दू तरहक कापी खोलने छलीह—एक नवीन बैंक-रोकक आवेदनक, दोसर २००९ सँ चलैत श्रमिक वेतनक बकाया हिसाबक। सहयोगी हिना कहलक, “सुप्रीम कोर्टक निर्णय आबि गेल, तखन हमरा सभकेँ आब पुरान कापी पर लौटि जायबाक चाही।” सुनीता कहलीह, “फैसला आबि गेल, मुदा ओकर लागू होयबाक प्रक्रिया प्रत्येक प्रकरणमे अलग अछि। आ पुरान मजदूरीक हिसाब छोड़ी तँ जखन श्रमिक अपन हक माँगत, हम कहब—बड़ अदालतमे जीतलहुँ, एतय नाप-तौल नहि?” ओहि प्रश्नपर हिना पुरान पञ्जीक एक फाटल पन्ना सही क्रममे राखलक। न्यायिक उपलब्धिक महत्त्व सुनीता लेल तखने छल जखन ओ रोजक मेहनतक हिसाबमे छुइ सकय।

शान्ति देवीक चिकित्सा लेल जे गैरविवादित रकमपर पहिने व्यवस्थित पहुँच शुरू भेल छल, ताहि सम्बन्धमे बैंक नब स्पष्ट सूचना देलक। जे विशिष्ट प्रविष्टि जाँचाधीन रहल, ओकरा चिन्हित करबाक कारणक सीमित विवरण अधिकृत पथसँ देल गेल; शेष पैसा लेल बारम्बार शाखा घुरबाक जरूरत घटल। शान्ति अपन पतिक औषधि किन्न छलि। दवाईवला बिलक संख्या सुनौलक तँ ओ पर्स खोलिकय पुछलीह, “एहि बेर भुगतान होएत कि फेर मशीन मना करत?” मशीन भुगतान स्वीकार कएलक। हुनकर आँखिमे एहन कोनो उत्सव नहि छल जे फोटोमे स्पष्ट देखाए; ओ दवाईक थैली ठीकसँ बन्द करैत कहलीह, “हमरा एतबा चाही जे अगिला मास सेहो दवाइमे रुकावट नहि हो।” सुनीता सुनि कहलीह, “एक बेरक भुगतान आ स्थायी विश्वासक बीच अभीयो काज बाकी अछि।”

वेतन-पञ्जीक सम्बन्धमे कारखाना प्रबन्धन आ श्रमिक प्रतिनिधिसभ बीच एक औपचारिक मिलान-बैठक भेल। धर्मपाल खुराना कहला जे पुरान वर्षक सभ दावाक हिसाब एके छलाँगमे पूर्ण करब सम्भव नहि; अनेक पाली, ठेका, ओवरटाइम आ निवृत्त कर्मचाग़ीक अभिलेख अलग-अलग स्थानमे अछि। सुनीता हुनका समक्ष सत्यापित नमूना रखलीह—जतय उपस्थितिक मूल हस्ताक्षर भेटल, जतय केवल वेतन-रसीद उपलब्ध, आ जतय दावाक समर्थन अभीयो खोजब पड़त। “जे स्पष्ट अछि, ओकर भुगतान रोकबाक की कारण?” ओ पुछलीह। प्रबन्धन पहिल सत्यापित समूहक निर्विवाद बकाया विधिसम्मत प्रक्रिया अनुसार देबाक

लिखित कार्यक्रम स्वीकार कएलक; शेष दावापर उपयुक्त श्रम-मंच आ बातचीतक अधिकार सुरक्षित रहल। श्रमिकसभ ताली बजौलनि, मुदा सुनीता हुनका याद देलीह जे तालिकेँ अदत्त वेतन नहि बुझल जाए। तिथिक पालन देखब, तकर बादे निर्णयक मूल्य ठहरत।

रामलखन पासवान अपन पहिल सत्यापित बकाया किश्तक पावती देखैत घरक चौखटपर बैसल छलाह। शरीर आब पुरनका मशीनक गति स्वीकार नहि करैत छल। ओ सुनीताकेँ कहलनि, “हम तखन तेरे हाथमे किताब दैत कहने छलहुँ जे पढ़ि लिखि ले, जेना हमरा सन पालीक हिसाबमे फँसय नहि पड़ए।” सुनीता उत्तर देलीह, “बाबूजी, हम पढ़लहुँ एहि लेल जे अहाँक पालीक हिसाब कियो चुपचाप बदलि नहि सकय।” फूलकुमारी चुल्हिक लगसँ कहलनि, “बस, एतेक कानूनक बाद काल्हि सवेरे बच्चाक टिफिन सेहो बनायब।” सभ हँसि पड़ल। घरमे तहस-नहस करैत संघर्षक वर्षसभक बीच ई साधारण घरेलू आदेश एक प्रकारक सुख छल। सुनीता बुझलीह जे अधिकारक लड़ाइ केवल घायल स्मृतिमे जीबैत नहि; ओकर लक्ष्य रसोईघर, पढ़ाइ आ विश्रामक सामान्य समय बचाएब अछि।

माया अपन पति अशोक मिस्त्रीक पुरान औषधि-पत्र आ अस्पतालक प्राप्ति-पञ्जीकेँ धूलिसँ बचौलनि। २०२१ क महामारीमे जे चिकित्सकीय विवरण अस्पष्ट रहि गेल छल, तकर एक हिस्सा औपचारिक आवेदनक बाद उपलब्ध भेल। किछु समय-प्रविष्टिक मिलानमे विरोधाभास छल, जकरा स्वास्थ्य-संस्था लिखित स्पष्टीकरण सहित चिन्हित कएलक; मायक समक्ष उपचारक सम्पूर्ण कारण-श्रृंखला एखन सेहो खुलल नहि छल। ओ सुनीतासँ कहलीह, “हम एखन हर्जाना तय करबाक लेल नहि दौड़ैत छी। हमरा ई जानबाक अछि जे अन्तिम राति की भेल छल।” सुनीता ओकरा कहलीह जे उपलब्ध चिकित्सा-विशेषज्ञक स्वतंत्र परामर्श आ कानूनी पथ अलग जाँचबाक चाही। माया घर लौटि बेटी रागिनीक बनाओल पंखा आ खुलल आकाशक पुरान चित्र सँभाललीह। स्मृतिमे अशोकक शरीर नहि लौटल; मुदा अभिलेखक सत्य माँगब शोकसँ विश्वासघात सेहो नहि छल।

डाक्टर सायरा अहमद एक सरकारी चिकित्सालयक प्रशिक्षणमे युवा नर्ससभकेँ बतबैत छलीह जे डिजिटल भुगतान अथवा परिचय-पत्रक समस्या कारण वैध आपातकालीन चिकित्सकीय प्राथमिकताकेँ अनावश्यक रूपसँ उलझेबाक नहि चाही। हुनकर अनुभवमे देशक

बड़ न्यायिक निर्णयसँ अलग लाखो छोट संस्थागत प्रश्न रहैत अछि। एक परिचारिका पुछलीह, “यदि मरीजक परिवारक खाता रोकिने रहए तँ अस्पताल कोना काम करत?” सायरा उत्तर देलीह, “चिकित्सकीय आवश्यकता, उपलब्ध नियमानुसार सहायता, शुल्कक उचित व्यवस्था आ वैधानिक दायित्व—सभकेँ एकसाथ देखबाक चाही। डॉक्टर स्वयं बैंकक जाँच-अधिकारी नहि।” ओ एक रोगीक स्थिति-पत्रमे स्पष्ट लिखलीह जे उपचारक निर्णय चिकित्सकीय आधारपर भेल। एहि छोट हस्ताक्षरमे जिम्मेदारीक सीमा छल; अधिकारक विस्तार नहि।

सुनीताक सहायता-केन्द्रमे ज़रीना एक नब दान-पञ्जी लऽ अयलीह। पिछला वर्ष ‘९५ प्रतिशत नगद निकासी’क अपुष्ट चर्चासँ संस्था पर जे संदेह पसरल छल, ओकर किछु दाता पुनः सहयोग करैत छलाह, किछु अबहुँ दूरी पर। ज़रीना कहलीह, “एकटा असत्य दावा गलत सिद्ध भेलाक बादो विश्वास अपन गति सँ लौटैत अछि।” सुनीता पुछलीह, “नब पञ्जी सार्वजनिक करबह?” ज़रीना उत्तर देलीह, “नियत पारदर्शिता राखब, मुदा सहायता लेनिहार महिलासभक निजी परिस्थिति बाहर नहि देब। दानक सही हिसाब आ लाभार्थीक गरिमा एक-दोसरक शत्रु नहि।” संस्था एक स्वतन्त्र लेखा-परीक्षणक सारांश प्रकाशित कएलक, गोपनीय व्यक्तिगत नाम हटाकय। किसानक स्वास्थ्य शिविर आ नवजात शिशुक सहायता सामान्य रूपसँ चलैत रहल। संस्थाक कोनो सेवा-काज अपराधीक प्रमाण नहि छल; जाँचाधीन छद्म समूहक अलग प्रश्न अपन मंचमे सुरक्षित रहल।

जोधपुरक मरुधर विश्वविद्यालयमे रिद्धि विश्नोई अपन शोधक अन्तिम प्रस्तुति लेल सभागारमे गेलीह। स्क्रीनपर पहिने जे पाँच सय क्रमाङ्कक सूची दिखेबाक आग्रह भेल छल, ओकरा ओ अनामिकीकृत नमूना-वर्गमे बदलने छलीह। फिरदौस कौल प्रस्तुति शुरू होयबाक पहिने पुछलनि, “अहाँक आँकड़ाक स्रोतक अनुमति के देल? कौन हिस्सा प्रामाणिक बैंक अभिलेख अछि, कौन हिस्सा विश्वविद्यालयक प्रशासनिक नमूना, आ कौन हिस्सा सामाजिक प्रचारक अनधिकृत सूची?” रिद्धि एक-एक वर्गक सीमा बतौलीह। परीक्षा समितिक सदस्य कहला, “एहि सावधानीसँ शोधक शीर्षक कम नाटकीय भऽ गेल।” रिद्धि उत्तर देलीह, “यदि शीर्षकक नाटक लेल पाँच सय विद्यार्थीकेँ सन्दिग्ध बनाबी तँ ई शोध नहि, दोसर अन्याय

होएत।” ओ लिखित प्रतिवेदनमे गलत गनतीक सम्भावना, अद्वितीय खाताक सत्यापन आ सूचित सहमतिक अभावक सीमा स्पष्ट दर्ज कएलीह।

प्रस्तुतिक बाद छात्रावासमे मनस्वी रिद्धिसँ भेटलीह। ओ वर्षसभ पहिने विश्वविद्यालयक अभिलेखमे अपन परिचय-संबंधी निजी विवरणक अनावश्यक पहुँच विरुद्ध लड़ने छलीह। “हमरा एकबेर लगैत छल जे सही नाम दर्ज भेलासँ काम समाप्त,” मनस्वी कहलीह, “मुदा जखन पुरान पञ्जीक नब प्रतिलिपि बनल, वही त्रुटि फेर घुरि आयल। अहाँ अपन पाँच सय सूचीक कोनो गोपनीय मूल प्रति कहाँ राखब?” रिद्धि बतौलीह जे संस्थागत अनुमति अनुसार सीमित पहुँचवला संरक्षण-पद्धति, अवधिक नियम आ जाँच-समाप्ति पछाति आवश्यक नीति लागू होयत; छात्रसभक असम्बद्ध सूचना व्यक्तिगत लैपटॉपमे जमा नहि राखल जायत। मनस्वी मुस्की देलीह, “एतबा सावधानी लिखित रूपमे रहए, तखन अगिला विद्यार्थीकेँ फेर शुरुआतसँ लड़बाक नहि पड़त।” रिद्धि सोचलीह जे शोधक असल निष्कर्ष अक्सर सारणीमे नहि, अगिला प्रयोक्ताक अधिकारमे भेटैत अछि।

फिरदौस कौल अपन पुरान फाइलक पाछू एक चिट्ठी जोड़लीह। छात्र-डेटाक प्रशासनिक अनुबन्ध, गोपनीयता-संगत आन्तरिक उत्तरदायित्व, बाहरी सेवा-प्रदायकक पहुँच आ सुधारक सीमा सम्बन्धी सिफारिश प्रबन्धन समितिक समक्ष फेर रखल गेल। समिति किछु तत्काल सुधार स्वीकार कएलक, किछु खर्च आ तकनीकी संरचनाक कारण अगिला समीक्षा लेल रखलक। ओ पूरा विजय नहि छल, मुदा कागज फेर अज्ञात अलमारीमे नहि गेल। फिरदौस एक युवा प्राध्यापिकाकेँ कहलीह, “हमरा अपन भाषा, जाति, शहर अथवा मतक कारण किसी छात्रपर स्वतः शंका रखबाक अधिकार नहि। प्रमाणक जाँच जरुरी अछि, मुदा शिक्षाक संस्थाकेँ विद्यार्थीक सम्भावना बचएबाक सेहो काम अछि।” बाहर छात्रसभ परिचय-पत्रक पाँतिमे ठाढ़ छलाह; ओहिमे कियो न्यायालयक फैसला नहि पढ़ने छल, तथापि ओकर जीवनपर एहि नियमसभक असर पड़ि रहल छल।

अवनि झा बेंगलुरुक प्रयोगशालामे एक छोट परीक्षणक ग्राफ देखैत छलीह। सन् २०२३ क चन्द्रयानक स्मृति घरमे उत्सवक तरह राखल छल, मुदा वर्तमान काज एक नब संवेदकक त्रुटि-दर घटेबाक छल। सहकर्मी कहलक, “एक हजार परीक्षणमे चारि परिणाम खराब—ई छोट

गलती अछि।” अवनि उत्तर देलीह, “माप होइत अछि तखन मात्र छोट कहि सकैत छी। विफलता कहाँ भेल से नहि जानब तखन अगिला यन्त्रमे ओ दोहराओत।” माय मैत्रेयीक विद्यालयमे एही मास विज्ञान-पाठक एक छोट मैथिली पुस्तिका पहुँचल। छात्रा पुछलीह जे चन्द्रमा धरि पहुँचल देशमे गामक प्रयोगशालाक यन्त्र पुरान किएक अछि। मैत्रेयी कहलीह, “उपलब्धि प्रश्न समाप्त नहि करैत; नब प्रश्न पूछबाक साहस दैत अछि।” विज्ञानक कथामे कोनो बैंक-अपराधक छाया नहि छल, केवल सीखबाक स्वतन्त्र कठिनाई छल।

अवनि साँझ घरमे पिता निरंजन झाकेँ फोन कए कहलीह जे ओकर नब यन्त्रक परीक्षण एखन प्रयोग-पूर्व चरणमे अछि। पिता पुछलनि, “काल्हि सब ठीक भऽ जायत?” अवनि हँसि उत्तर देलक, “काल्हि जतेक मापन होयत, ओतेकेँ कहब। परिणाम पहिने तय नहि करू।” घरक दोसर कात मैत्रेयी अपन विद्यार्थीक चित्र सुधारैत छलीह—नील आकाशमे अर्धचन्द्र, नीचाँ विद्यालयक छत। अवनि माएक आवाज सुनि कहलीह, “हम एहि बेर गामक छात्रसभ लेल विज्ञानक छोट कार्यशाला लेब। प्रयोगक असफलता लुकायब नहि।” जखन फोन बन्द भेल, ओ एक वाक्य अपन शोध-कापीमे लिखलक—मापनक मर्यादा। देशक अदालतसँ दूर प्रयोगशालाक ई वाक्य अपन काजमे पूर्ण छल; ओकरा मुख्य न्यायिक विवादसँ अर्थ लेबाक आवश्यकता नहि छल।

दरभंगामे लेखिका अनुपमा झा अपन पुरान पुस्तक ‘देहक नाम, नामक देह’क नब संस्करणक प्रूफ देखैत छलीह। प्रकाशक कहने छल जे सन् २०२७ क समाचारक सन्दर्भ जोड़ि पुस्तकक नाम बदलब उचित होएत। अनुपमा अस्वीकार कएलीह। “हमर २०१८ क पात्रसभ अपन समयक भीतर जन्मल छथि,” ओ कहलीह। “आजुक अदालतक खबर जोड़ि हुनकर दुखक मूल्य नहि बढ़त। नव प्रश्न पर नब कथा लिखब, मुदा पुरान कथाकेँ अखबारक अनुसार नचाएब नहि।” ओ एक नवीन कहानीक पहिल वाक्य लिखलीह—एक स्त्री सरकारी दफ्तरमे कहल जाइत अछि जे ओकर नाम अभिलेखमे अछि, मुदा उपस्थितिक प्रामाणिकता नहि। कलम रुकि गेल। अनुपमा बुझलीह जे कहानीक आरम्भमे न्यायालय नहि, स्त्रीक अपन स्वर चाही। ओ पहिल वाक्य काटिकय लिखलीह—“हम एतय छी,” स्त्री कहलक, आ बाबू पन्ना पलटैत रहल।

सौरभ झा पुस्तकालयमे अनुपमाक नब संस्करणक सूची तैयार करैत छल। ओ मूल प्रकाशन-वर्ष आ नब संस्करणक वर्ष अलग राखलक। कनिष्ठ कर्मचारी कहलक, “दू बेर नाम लिखब? एके किताब अछि।” सौरभ उत्तर देलक, “पाठककेँ जानबाक चाही जे कौन पाठ कखन छपल। संशोधनक इतिहास मेटि देब भविष्यक शोधमे भ्रम बनाओत।” अगिला पन्नापर ओकर अपन सहकर्मी अक्षय एक दुर्लभ मैथिली ग्रन्थक फाटल आवरणक फोटो जोडि रहल छल। दुनूकेँ एखन कोनो न्यायालयमे उपस्थित नहि होयबाक छल; हुनकर अधिकारक पुरान संघर्ष निजी जीवनक एक अंश भऽ चुकल छल, सम्पूर्ण परिचय नहि। साँझ ओ दुनू पुस्तकालयक दुआरि बन्द कएलनि। बाहर पाँतिमे उगैत आमक बौरक गन्ध छल; ओ गन्धक कोनो सरकारी सूचकाङ्क नहि छल।

अण्डमानक तटपर अनीश हलदर अपन नावक तख्ता बदलैत छल, आ दू किशोर ओकरासँ हवाक दिशा पढ़बाक शिक्षा लऽ रहल छल। समुद्रक रङ्ग हर घड़ी एक नहि रहैत—फेरोजी जलक नीचाँ गहिर गाढ़ लहर, तकर ऊपर छोट सफेद फेन। एक छात्र पुछलक, “दादा, तूँ जखन छोट छलह तखन समुद्र सभ किछु लऽ गेल?” अनीश किछु देर चुप रहल। “घरक बहुत किछु गेल,” ओ कहलक, “मुदा लोक सभ फेर घर बनौलक। कागज गुमल तखन पहचान लेल सालसभ लागल। एहि बेर हम नावक कागज आ बचावक नक्शा दो अलग सुरक्षित ठाम राखैत छी।” किशोर पुछलक, “कागज रहला सँ तूफान रुकत?” अनीश उत्तर देलक, “नहि। मुदा तूफानक बाद अपन अधिकारक खोजमे गुम नहि होएब। तूफानक पहिने जीवन बचाबक अभ्यास आ बादमे न्यायिक सहायता—दुनू अलग उपयोगक वस्तु अछि।”

अनीश रेवतीकेँ एक पत्र लिखलक। ओहिमे दिल्लीक आदेशक चर्चा कम छल, मछुआरासभक नब नाव-सहकारी समितिक विवरण बेसी। पत्रमे लिखल छल जे सुनामीक बाद पुनर्वासक अधूरा कागज सुधारबाक लेल जे संघर्ष शुरू भेल छल, ओकर बहुत हिस्सा निपटल, किछु भूमि-सीमा आ उत्तराधिकारक प्रश्न एखन अलग कार्यालयमे बाँकी अछि। मुदा ओकर पुत्री नीलिमा एहि वर्ष विद्यालयमे समुद्री पारिस्थितिकी पढ़ैत अछि, आ माँ पुरान मछलीक जाल बुनबाक पद्धति ओकरा सिखबैत छलीह। ‘हमर बेटी हमरा केवल आपदाक बचल आदमी नहि बुझय,’ अनीश लिखलक। “ओ हमरा मछुआरा, पिता आ समुद्रक पढ़निहार आदमी

बुझय।” रेवती पत्र पढ़ि पेटीमे नहि रखलीह। ओ तकर एक प्रति अपन स्मृति-कापीमे राखलीह, किएक तँ एहि वाक्यसँ हुनका बुझायल जे ककरो अधिकारक संघर्ष हुनकर सम्पूर्ण जीवनक परिचय नहि होएबाक चाही।

नूर जतय अपन समाचार-कक्षमे एक लम्बा आलेखक शीर्षक रखलीह—‘फैसलाक बादक दिन’। सम्पादक निखिल कहला जे उपन्यास-जेकाँ फैलल सत्ताइस वर्षक कथा पाठक एके बेर नहि पढ़ि सकत। नूर उत्तर देलीह, “तखन हम एहन दावा नहि करब जे एक अदालत सब मामले समाप्त कए देलक।” लेखमे ओ तीन अवस्था स्पष्ट रखलीह: सर्वोच्च न्यायालयक सीमित बैंक-रोक सम्बन्धी मार्गदर्शक निर्णय; अर्जुनक विशिष्ट रकमक नव प्रमाणपर समीक्षा; विशेष न्यायालयक स्वतन्त्र विचारण, जतय दोषसिद्धि-निर्दोषताक अन्तिम निर्णय नहि भेल। तकर बाद मुकुलक आंशिक वापसी, सुनीताक श्रमिक हिसाब आ संस्थाक गोपनीयता-सुधारक अलग प्रसंग रखलीह। ओ ककरो निजी बैंक-खाताक पूरा नम्बर प्रकाशित नहि कएलीह, एक छात्रक पुरान गलतीक स्क्रीनशॉट मेटा देलीह, आ गलत शीर्षक छापने दू वेबसाइटसँ संशोधनक अनुरोध कएलीह। किछु वेबसाइट ठीक कएलक, किछु नहि। असत्यक निशान एक दिनमे धुलैत नहि छल।

रेवती दरभंगाक बरामदामे फेर पहुँचलि तखन चैतक पाछिला घाम खम्भासभक छाँह छोट कऽ रहल छल। शिवनारायण ओहि दिन हुनका सँग कागजक दू गट्ठर लऽ आएल छलाह। एकमे सन् २००० क बहीखाताक नकल, दोसरमे अनेक वर्षक पेशागत नोट। “एतबा कागज किएक?” रेवती पुछलीह। पिता कहला, “हम चाहैत छी जे जे फाइल सार्वजनिक आदेश रूपमे सुरक्षित रखबाक योग्य अछि, ओकर सही प्रति सम्बन्धित अभिलेखागारमे रहय; जे निजी विवरण अछि, ओकरा बिना अधिकार ककरो नहि देल जाए। हम चलि जाएब, मुदा कागजक गलत अर्थ नहि चलय।” रेवती हुनका कहलीह जे निजीकृत पक्षकार-पत्र आ न्यायालयक सार्वजनिक निर्णयक श्रेणी अलग राखबाक लेल पहिने सूची बनत। शिवनारायण मुस्की देलनि। “अहाँ आब हमरा अभिलेख-संरक्षण सिखा रहल छी?” बेटी हँसलीह, “अहाँ तँ पहिनहिसँ सिखौने छलहुँ, बस आब विधि बदलि गेल अछि।”

पिता बेटीकेँ एक पुरान दिन स्मरण करौलनि। सन् २००० मे अदालतक बरामदामे रेवती एक युवकक नाम जप्त बहीमे देखिकय पूछने छलीह—“ई दोषी अछि?” शिवनारायण तखन कहलनि जे नाम, लिखावट आ वास्तविक व्यक्ति बिना जाँच एक नहि। आब सत्ताइस वर्ष बाद रेवती दिल्ली, जोधपुर आ अनेक अदालतक बहसक बीच घुमिकय ओही प्रश्नक नब रूप खोजने छलीह। “हम तखन समझने छलहुँ जे कागज पढ़ि लेब तँ साँच भेटि जाएत,” रेवती कहलीह। “आब बुझैत छी—कागज ककरा बनाओल, के देखलक, कखन बदलल, जकर सम्बन्ध अछि ओकरा उत्तर देबाक अवसर भेटल कि नहि, आ आदेशक परिणाम ओकर जीवनमे की भेल—सभ पूछबाक पड़ैत अछि।” शिवनारायण माथ डोलौलनि। “आ हम आब बूढ़ भऽ गेलहुँ,” ओ कहला, “तेँ हमरा नब प्रश्नक उत्तर तोहरासँ पूछबाक चाही।” दुनूक बीच न गुरु बनल रहल, न छात्र; केवल दू पीढ़ीक अधूरा संवाद छल।

श्यामनन्दन मण्डल फेर अदालतक बरामदामे देखाइ देलक। ओ एहि बेर मोबाइल सन्देश नहि, सम्बन्धित कार्यालयसँ प्राप्त लिखित पत्र लऽ आयल छल। पत्रमे राजस्व प्रविष्टिक सुधार लेल आवश्यक दस्तावेजक कमी बताओल गेल छल, मुदा कोन दस्तावेजक विकल्प ग्राह्य हो सकैत अछि से स्पष्ट नहि छल। श्यामनन्दन कहलक, “हमरा लग मायसँ जुड़ल पुरान विद्यालय-पञ्जी अछि, आ ममहरक गवाही। मुदा अधिकारी मौखिक कहैत छथि जे ई पर्याप्त नहि।” रेवती पुछलीह, “अहाँ लिखित कमी-पत्र देखौलहुँ? निर्णय भेल कि केवल सामग्री माँगल गेल?” युवक पत्र फेर पढ़लक। ई अन्तिम अस्वीकृति नहि, स्पष्टीकरणक आग्रह छल। रेवती कहलीह, “जवाबमे जे उपलब्ध अछि, ओकर विधिसम्मत प्रमाणक सूची दिअ। जे अनुपलब्ध अछि, तकर विकल्पक नियम पूछू। यदि बादमे प्रतिकूल निर्णय हो तँ कोन निर्धारित उपचार अछि, से कारणसहित जानू।” युवक कहलकेँ, “हमरा कोनो पक्षकारक नाम बनाकय समाचारमे नहि पहुँचेबाक अछि; माय केर सही नाम चाही।”

ओहि दिन परिसरक एक कोठरीमे स्थानीय विधिक सेवा-सहायताक अधिकारी रेखा कुमारी आवेदकसभक पात्रता, आवश्यक कागज आ उपयुक्त मंचक विषयमे परामर्श दैत छलीह। कखनो ओ लोककेँ राजस्व कार्यालय पठबैत, कखनो श्रमक सक्षम मंच, कखनो अदालतक समक्ष आवेदनक सही तरीका बुझबैत। रेवती हुनकर काज देखलीह। एक विद्यार्थी पुछलक,

“सुप्रीम कोर्ट एतेक कहि देने अछि, तखन एतय किएक अबैत छी?” रेखा कहलीह, “ऊपरक निर्णयक अर्थ ठोस स्थितिमे लागू करबाक लेल सक्षम संस्था, सही तथ्य आ समय चाही। कोनो सर्वोच्च निर्णय आवेदनक अभिलेख अपनहि नहि बनबैत।” एक वृद्धा पुछलीह जे हुनकर विधवा-पेंशनक प्रश्न जिला अदालतमे तुरन्त सुनल जएत कि नहि। रेखा उचित विभागीय उपचार आ जरूरत पड़ला पर विधिक सहायताक मार्ग बुझौलीह। कोठरीक बाहर कोनो कैमरा नहि छल। मुदा ओतय लोकक हाथमे पहिल बेर अस्पष्ट भयक बदला ठोस अगिला कदम अबैत छल।

दोपहरक बेला जिला न्यायालयक एक सक्षम कक्षमे पुरान भूमि-संबंधी वादक सुनबाई चलैत छल। वादीक दलील छल जे राजस्व नक्साक एक रेखा गलत खींचल गेल अछि; प्रतिवादीक पक्ष पुरान दखल आ सर्वेक्षणक कागज देखबैत छल। न्यायाधीश पक्षकारसभकेँ सुनलनि, आवश्यक मूल रजिस्टरक स्थिति पूछलनि आ केवल तत्काल उपलब्ध साक्ष्यक सीमा भीतर अगिला प्रक्रिया निर्धारित कएलनि। बरामदामे प्रतीक्षा करैत श्यामनन्दन कोनो संयोगसँ अपन मामला एतहि निपटि जाएबाक आशा नहि रखलक। ओ अपन आवेदनक सही मंचक पथ पर अगिला सप्ताह जाएब तय कएलक। ई सुनबाई रेवतीक सर्वोच्च न्यायालयक मुकदमे सँ अलग छल, मुदा एक समान अनुशासन देखबैत छल—सामने ठाढ़ मनुष्यक दुःखकेँ सुनब आवश्यक अछि, तथापि कानूनी परिणाम उचित अधिकार आ प्रमाण बिना नहि देल जाए।

शिवनारायणक नातिन प्रीति विद्यालयसँ लौटि बरामदामे हुनका भेटय आयलीह। ओ किताबक बस्ता नीचाँ राखि पुछलक, “नाना, अहाँक अदालतक सत्ताइस वर्ष पूरि गेल, आब किताब बन्द?” शिवनारायण हँसलाह। “हमर बस्ता जरूर पुरान भऽ गेल,” शिवनारायण कहला, “मुदा एतय कागज लऽ अनिहार लोकक दिन अबहियो चलैत अछि।” प्रीति कहलक, “हम विद्यालयमे न्यायपर निबन्ध लिखलहुँ। शिक्षक कहला जे न्याय सबकेँ बराबर भेटबाक चाही। मुदा कतए जे शिक्षक कम छथि, ओतए बच्चे सभकेँ बराबर पढ़ाइ कोना?” रेवती बच्चीक प्रश्न सुनि किछु क्षण रुकलीह। न्यायालयक नियमक बाहरोर स्कूलक संसाधन, घरक श्रम आ सामाजिक अवसरक असमानता छल। ओ कहलीह, “बराबरीक अर्थ कखनो सभकेँ

एके पृष्ठ देब नहि; जकरा पढ़बाक साधन नहि, ओकरा पहुँच देबाक प्रश्न सेहो अछि।” प्रीति फेर पुछलक, “एहि लेल सेहो अर्ज़ी देब?” रेवती उत्तर देलीह, “कखनो विद्यालयक समिति, कखनो प्रशासन, कखनो न्यायालय। पहिने समस्या ठीकसँ बुझू आ संग मिलिकय पूछू।”

साँझक पहिल झोंका उठला पर मोहन चायवालाक केतलीक भाप एक कात मुड़ि गेल। बरामदाक पुरान बेंचपर श्यामनन्दन, अमरेश आ एक नव वृद्धा अलग-अलग कागज लऽ बैसल छलाह। हुनकर कागज एक-दोसरासँ मिलैत नहि छल, ताहि कारण कोनो एक संयुक्त आदेश ओ सभक उत्तर नहि बनि सकैत छल। रेवती एक क्षण लेल सोचलीह जे न्यायालयक इमारतकेँ कतेको लोक अंतिम आश्रय मानि अबैत अछि, जखन कि अनेकों विवादक पहिल समाधान शिक्षण संस्था, बैंक, श्रम-मंच, राजस्व कार्यालय, पंचायत, अस्पताल अथवा साधारण सचेत बातचीतमे सेहो बनि सकैत अछि। मुदा जँ संस्थासभ जवाबदेहीसँ हटैत अछि, तखन अदालतक दुआरि खुलल रहब लोकतन्त्रक आवश्यक भरोसा होइत अछि। ताहि दुआरिक अर्थ सभ विवाद अपने अधिकारमे समेटि लेब नहि, सही मंच धरि पहुँचबाक बाटक रक्षा करब अछि।

अदालतक अभिलेख-कक्षमे ओहि दिन नब लिपिक सुधीर पुरान पञ्जीक पन्नासभक क्रम मिलाबैत छल। एक कर्मचारी कहलक जे इलेक्ट्रॉनिक सूची बनि रहल अछि, आब ई सभ पुरान कागजक का आवश्यकता। सुधीर एक पीयर पड़ल पन्ना देखौलक, जाहिमे पहिल सुधारक तारीख लिखल छल मुदा डिजिटल प्रतिमे केवल बादक प्रविष्टि बचल छल। “अहाँ बादक सही नाम देखैत छी,” ओ कहलक, “मुदा कखनो अदालतकेँ ई जानबाक पड़त जे पहिले गलत नाम कतय सँ आयल।” ओ मूल अभिलेखक संरक्षणक नियम अनुसार पन्ना रखलक, आ डिजिटल प्रतिक सीमाक लिखित टिप्पणी जोड़लक। सुधीरक ई काज एहन शांत छल जे ओकरा लेल कोनो समाचार नहि बनत; तथापि न्यायिक स्मृतिक एक आवश्यक धागा बचि गेल।

रेवती अपन बस्ता बन्द कएलीह। शिवनारायण पुछलनि, “एतेक वर्षक बहस पछाति लोककेँ अहाँ की कहबह?” रेवती बरामदाक खम्भाक छायामे ठमकि गेलीह। “मुकुलक पूरा रुपैया एखन नहि घुरल। विशेष न्यायालयक विचारण चलि रहल अछि। किछु घरमे राहत पहुँचल, किछु घाव एखन भरल नहि। मुदा अर्जुन फेर पढ़ि रहल अछि; सुनीताक साथी अपन

सही पालीक हिसाब पढ़ि सकैत छथि; अनीशक नाव फेर पानिमे उतरैत अछि; अनुपमा अपन भाषामे किताब लिखैत छथि।” शिवनारायण बस्ता हाथमे लेबाक लेल बढ़लाह, मुदा रेवती स्वयं उठा लेलीह। “हम एतबा कहब जे ककरो नामक पाछाँ एकटा जिअल जीवन अछि।” पिता एक क्षण बरामदाक अन्तिम सीढ़ी दिसि तकलनि। ओहि मौनमे रेवतीकेँ अपन विधि-विद्यार्थिनी दिन स्मरण भेल।

निकलैत समय श्यामनन्दन फेर उठि ठाढ़ भेल। ओकर हथेलीमे माएक विद्यालयक पुरान प्रमाणपत्रक किनार निचुड़ि गेल छल। ओ रेवतीकेँ रोकि पुछलक, “दीदी, जँ हम सही दस्तावेज देब आ फेरो हमर बात नहि सुनल जाए, तखन?” रेवती ओकरा ठोस उत्तर देलीह—“तखन जे अधिकारी सुनबाक दायित्वमे छथि, हुनकर लिखित निर्णय माँगू। कारण देखू। कानून जे उपचार देलक अछि ताहि सीमा भीतर अपील, समीक्षा वा उचित न्यायिक रास्ता चुनू। प्रमाण बदलल जाए तँ ओकरा छिपाउ नहि; जे नहि भेटल से नहि गढ़ू। अहाँक बात सुनब ककरो कृपा नहि, उचित प्रक्रियाक प्रश्न अछि।” युवक अपन फाइलक ऊपर एक नब पन्ना चढ़ा देलक। ओ पन्नापर लिखलक—“मायक नाम; उपलब्ध प्रमाण; अगिला तिथि।” कोनो भारी न्यायिक शब्द ओकरा जरूरी नहि लगल।

बरामदाक दीवालपर लटकल घड़ी पाँच बजबासँ थोड़ा पाछाँ छल। अदालतक भीतरक आवाज क्रमशः कम भेल, झाड़ूक धूलि प्रकाशमे उठि फेर बैसि गेल, आ लोहेक फाटक लग किछु लोक अगिला तारीख पूछैत रहल। शिवनारायण एक बेर घुरि खम्भा देखलनि, जे सत्ताइस वर्ष पहिनेओ ओतहि छल। हुनका स्मरण भेल—जप्त बहिमे मरि चुकल व्यक्तिक नाम; रेवतीकेँ स्मरण भेल—एक छात्रक खातेपर कम्प्यूटरक गलत विस्तार; आ बरामदामे ठाढ़ श्यामनन्दनकेँ केवल अपन मायकेँ सही नामसँ दर्ज करएबाक संघर्ष देखाइत छल। तेसरे स्मृतिमे कोनो कम महत्त्व नहि छल।

रेवती पिताक बाँहि पकड़ि सीढ़ी उतरलीह। आकाशमे चैतक हलुक बादल छल, सड़कपर साइकिलक घण्टी बजल, आ भीतरसँ एक लिपिक अगिला दिनक सूची लगा रहल छल। अदालतक सभ फाइल बन्द नहि भेल छल; न भऽ सकैत छल। किछु निर्णय लिखि देल गेल, किछु अपीलक प्रतीक्षामे रहल, किछु नामक ठीक अर्थ एखन खोजल जा रहल छल। एहि

बरामदामे न्याय कोनो अन्तिम मूर्ति बनि ठाढ़ नहि छल। ओ प्रश्न पूछनिहार आवाज, लिखित उत्तरक आग्रह, गलती सुधारबाक साहस आ प्रमाणक कठिन मर्यादा बनिकय लोकक संग घर घुरि रहल छल। दूरसँ श्यामनन्दनक आवाज आयल—“काल्हि फेर आएब।” रेवती घुरि देखलीह। ओ युवक मुँहमे मुस्की रखने फाइल बगलमे दबौने छल। ओकर आगाँक न्यायिक परिणाम अज्ञात छल, मुदा ओकर प्रश्न आब स्पष्ट छल। अगिला गवाहीक पहिल पन्ना खुलि गेल छल।

भारत २०२७

(मैथिली कादम्बरी) · सत्ताइस वर्षक गवाही

जुलाई २००० क दरभंगा। भिजल कचहरीक आँगन, साड़ीक कोरमे बन्हल कागज आ बरामदामे लोकक अन्तहीन प्रतीक्षा। एतहिसँ शुरू होइत अछि सत्ताइस वर्षक एहन गवाही, जे दरभंगासँ जोधपुर, लुधियाना, दिल्ली आ अण्डमान धरि पसरैत अछि।

रेवती आ हुनक पिता शिवनारायण झाक आँखिसँ देखल एहि कादम्बरीमे धनशोधन, डिजिटल लेन-देन, सूचनाक अधिकार, जनान्दोलन, नव विधि आ अदालतक बदलैत स्वरूप—सभ एक-दोसरासँ गुथल अछि। पाँच खण्ड, चालीस अध्याय।

“अदालतक सभ फाइल बन्द नहि भेल छल; न भऽ सकैत छल।”

www.videha.co.in
विदेह · मुख्य वेबसाइट

videha-ejournal.github.io/videha
विदेह · ई-जर्नल

विदेह · ISSN 2229-547X

© २०२७ गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुर · प्रथम संस्करण : २०२७ · सर्वाधिकार सुरक्षित।

साहित्यिक सूचना : एहि कादम्बरीक पात्र, अभियोजन, न्यायालयीन संवाद आ २०२७ क न्यायिक परिणति काल्पनिक छथि। ऐतिहासिक घटना आ विधिक पृष्ठभूमिक सन्दर्भ कथा-निर्माणक प्रयोजनसँ देल गेल अछि।